मुग़ल कालीन भारत

हुमायूँ भाग २

HISTORY OF THE MUGHUL RULE IN INDIA
HUMAYUN Part II

समकालीन तथा निकट-समकालीन इतिहासकारों द्वारा

(इबराहीम इब्ने जरीर, ख्वर शाह बिन कुबाद शाह, मुल्ला अहमद, ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद, मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी, फ़िरिश्ता, मोतमद ख़ां, मीर अबू तुराब वली, सिकन्दर इब्ने मुहम्मद उर्फ़ मञ्झू, अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने उमर, मीर मुहम्मद मासूम नामी, शेख रिज़कुल्लाह मुश्ताकी, गौसी शत्तारी तथा मंझन)

अनुवादक

सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी

एम० ए०, पी-एच० डी०

यू० पी० एजूकेशनल सर्विस



प्रकाशक

हिस्ट्री डिपार्टमेंट, अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी

अलीगढ

१९६२

Publication of the Department of History, Aligarh Muslim University, No

Source Book of Medieval Indian History in Hindi

Vol X

HISTORY OF THE MUGHUL RULE IN INDIA

HUMAYUN Part II

By Saiyid Athar Abbas Rizvi, M A, Ph D

All rights reserved in favour of the Publishers

FIRST EDITION

1962

PRINTED BY THE JOB PRINTERS 99 HEWETT ROAD, ALLAHABAD

FOR THE DEPTT OF HISTORY, ALIGARH MUSLIM UNIVERSITY

डाक्टर ज़ाकिर हुसेन ख़ां

उप राष्ट्रपति

के

कर कमलों में

सादर समर्पित

भूमिका

देहली के सुल्तानों (१२०६–१५२६ ई०) से सम्बन्धित फारसी तथा अरबी इतिहासों का हिन्दी अनुवाद ६ भागों में प्रकाशित करने के उपरान्त मुगल बादशाहों में बाबर के इतिहास से सम्बन्धित आधारभूत सामग्री का हिन्दी भाषांतर १९६० ई० में प्रकाशित किया गया था जिसमें लगभग पूरे "बाबर नामे" का तो अनुवाद सम्मिलित ही था साथ ही साथ अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का भी अनुवाद प्रस्तुत किया गया था। १९६१ ई० में हुमायूँ के इतिहास से सम्बन्धित प्रथम भाग प्रकाशित हो चुका है। इसमें ख्वान्द मीर के "कानूने हुमायूनी", मीर्ज़ा हैदर की "तारीखे रशीदी", मीर अलाउद्दौला की 'नफायसुल मआसिर', गुलबदन बेगम के "हुमायूँ नामे", जौहर आफ़्ताबची के "तज़किरतुल वाकेआत", बायज़ीद ब्यात के "तज़किरये हुमायूँ व अकबर", एवं शेख अबुल फ़ज़्ल के "अकबर नामे" का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। इसमें "कानूने हुमायूनी" तथा 'तज़किरतुल वाकेआत" नामक दो ग्रंथ पूरे के पूरे अनूदित हैं। गुलबदन बेगम का बाबर से सम्बन्धित इतिहास "बाबर नामा" में प्रकाशित किया गया था। शेष भाग का अनुवाद इस ग्रंथ में प्रस्तुत कर दिया गया है। इस प्रकार इस पूरे ग्रंथ का अनुवाद भी समाप्त हो गया। अबुल फ़ज़्ल के 'अकबर नामा भाग १" का बाबर से सम्बन्धित इतिहास "मुग़ल कालीन भारत—बाबर' नामक ग्रंथ में प्रकाशित किया गया था और हुमायूँ से सम्बन्धित इतिहास इस ग्रंथ में प्रकाशित किया गया है। इस प्रकार लगभग पूरे ग्रंथ का अनुवाद हिन्दी भाषा में प्रकाशित हो चुका है। बायज़ीद के "तज़किरये हुमायूँ व अकबर" का आधा भाग हुमायूँ से सम्बन्धित है। इसका पूरा अनुवाद इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया जा रहा है। शेष भाग अकबर से सम्बन्धित है जो आगे के ग्रंथों में प्रकाशित किया जायेगा।

हुमायूँ के इतिहास की जानकारी के लिए अफ़ग़ानों के इतिहास का भी अध्ययन परमावश्यक है। यद्यपि शेर शाह तथा उसके उत्तराधिकारियों से सम्बन्धित इतिहास अलीगढ़ विश्वविद्यालय ने अलग से प्रकाशित करना निश्चय किया है किन्तु हुमायूँ तथा शेर शाह के संघर्ष से सम्बन्धित अब्बास खाँ सरवानी के 'तोहफ़ये अकबरशाही" अथवा "तारीखे शेरशाही" के महत्वपूर्ण अंशों का अनुवाद प्रस्तुत ग्रंथ के फुटनोट में प्रकाशित कर दिया गया है। "तारीखे शेरशाही" अभी तक प्रकाशित नहीं हो सकी है अतः अनुवाद करते समय इलाहाबाद विश्वविद्यालय, अलीगढ़ विश्वविद्यालय तथा डा० परमात्मा शरण की हस्तलिपियों के अतिरिक्त बाडलिएन पुस्तकालय की हस्तलिपि नं० १७६, १७७ तथा १७८ का भी प्रयोग किया गया है। हस्तलिपि नं० १७६ तो इलियट की ही हस्तलिपि है और इसी के आधार पर उसने अंग्रेज़ी अनुवाद अपने प्रसिद्ध ग्रंथ के भाग ४ में प्रकाशित किया था। बाडलिएन की हस्तलिपि नं० १७७ तथा १७८ इबराहीम बतनी द्वारा सम्पादित की गई है। अब्बास खाँ सरवानी की हस्तलिपि में कुछ अंश बड़े ही अस्पष्ट हैं किन्तु उनका समाधान इबराहीम बतनी द्वारा सम्पादित ग्रंथ से कर दिया गया है।

इस प्रकार जौहर आफ्ताबची के "तज़क्रिरतुल वाक़ेआत" का भी अभी तक कोई सस्करण तैयार नही हो सका। अलीगढ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा० नूरुल हसन ने इस कार्य को कुछ वर्ष पूर्व प्रारम्भ किया था और लगभग आधे ग्रथ का बडी विद्वता से सम्पादन भी कर डाला है किन्तु अभी तक कार्य पूरा नही हो सका है। पिछले ग्रथ में उनकी पाडुलिपि से बडा लाभ उठाया गया है। इसके अतिरिक्त वह अनुवाद अलीगढ विश्वविद्यालय की चार हस्तलिपियो तथा ब्रिटिश म्युजियम की हस्तलिपि के आधार पर प्रकाशित किया गया है। "तज़क्रिरतुल वाकेआत" का दूसरा सस्करण "हुमायूँशाही" के नाम से अकबर के ही राज्यकाल मे फ़ैजी सरहिन्दी ने तैयार किया था। इस सस्करण द्वारा "तज़किरतुल वाकेआत" के अनेक भ्रमात्मक अश स्पष्ट हो जाते हैं, अत "हुमायूँशाही" की कैम्ब्रिज यूनीवर्सिटी की हस्तलिपि तथा इडिया आफिस, लन्दन की हस्तलिपिया का भी प्रयोग पिछले अनुवाद मे किया गया है। "तज़क्रिरतुल वाकेआत" तथा "हुमायूँशाही" के अतिरिक्त इसका एक अन्य सस्करण 'जवाहरशाही" के नाम से भी इडिया आफिस में उपलब्ध है। अनुवाद मे इसका भी प्रयोग किया गया है।

देहली के सुल्ताना के इतिहास से सम्बन्धित जो भाग प्रकाशित हो चुके हैं उनमे कुछ महत्वपूर्ण ग्रथ पूरे के पूरे हिन्दी भाषा में आ गय हैं। इनमें मिनहाज सिराज की 'तबकाते नासिरी" (हिन्दुस्तान से सम्बन्धित भाग), जियाउद्दीन बरनी की तारीखे फीरोजशाही", इब्ने बत्तूता की यात्रा का *विवरण (हिन्दुस्तान से सम्बन्धित भाग)*, अफीफ की तारीखे फीरोज़शाही" एव 'फ़ुतूहाते फीरोजशाही" सम्मिलित हैं। 'तारीखे मुबारकशाही", "तारीखे मुहम्मदी', 'तबकाते अकबरी", "वाकेआते मुश्ताकी", "तारीखे दाऊदी", "तारीखे शाही" तथा 'अफ्सानये शाहान" के देहली के सुल्तानों से सम्बन्धित पूरे भागा का हिन्दी भाषान्तर प्रकाशित हो गया है। एसामी की 'फ़ुतूहुस्सलातीन", और अमीर खुसरो की रचनाओ मे से "दीवाने दस्तुल हयात", "केरानुस्सादैन", 'मिफ्ताहुल फुतूह", "खज़ायनुल फ़ुतूह", 'दिवलरानी खिज्र खा", "नुह सिपेहर' तथा 'तुगलुक नामा" का सक्षिप्त भाषान्तर प्रकाशित किया जा चुका है और केवल उन्ही अशा का अनुवाद *नही किया गया है* जो भाषा के सौन्दर्य की दृष्टि से लिखे गये थे और जिनमें कोई भी ऐतिहासिक विवरण प्राप्त नही। इस ग्रथ माला में कुछ ऐसे ग्रथा के भी अनुवाद प्रकाशित किए गए है जिनका इलियट के समय मे पता न था और या जा उसकी दृष्टि में महत्वपूर्ण न थे। इन्ही मे "तारीखे फ़ख्रउद्दीन मुबारक शाह", "आदाबुलहर्ब वश्शुजाअत", 'जफ़हल वालेह", "सियरुल औलिया", "खैरुल मजालिस", "इन्शाये माहरू', "फ़तावाये जहादारी', तथा "दीवाने मुतहर" सम्मिलित है। इनके अतिरिक्त अन्य आवश्यक ग्रथा के अनुवाद भी प्रस्तुत किए गए हैं। तीमूर के बाद के उत्तरी हिन्दुस्तान के स्वतत्र प्रान्तीय राज्या के इतिहास से सम्बन्धित आवश्यक ग्रथो का भी बिना कुछ छोडे हुए अनुवाद प्रकाशित किया गया है। मूल ग्रथा की पृष्ठ-सख्या कोष्ठ में लिख दी गई है।

जिन ग्रथो के सक्षिप्त अनुवाद किए गए है उनका अनुवाद करते समय इस बात का प्रयत्न किया गया है कि कोई भी महत्वपूर्ण घटना अथवा सास्कृतिक, सामाजिक एव आर्थिक महत्व की बात छूटने न पाये। अग्रेज़ी अनुवाद के ग्रथा में पारिभाषिक शब्दा के अग्रेजी अनुवाद मे दोष रह गए है। *इस कारण मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अनेक भ्रमपूर्ण रूढियों को आश्रय मिल गया है।* इस प्रकार की त्रुटिया से बचने के उद्देश्य से पारिभाषिक और मध्यकालीन वातावरण के परिचायक

शब्दो को मूल रूप ही में ग्रहण किया गया है। ऐसे शब्दो की व्याख्या टिप्पणियो मे कर दी गई है। समकालीन मिथ्या प्रवादो का विवेचन भी, समकालीन तथा उत्तरवर्ती इतिहासो के आधार पर, टिप्पणियो में किया गया है। नगरो के नाम प्राय समकालीन रूप में ही रहने दिए गए हैं। अपरिचित स्थानो की व्याख्या भी टिप्पणियो में कर दी गई है किन्तु खेद है कि कुछ व्याख्याये इसलिए न की जा सकी कि जिस समय अनुवाद प्रकाशित हुए उस समय मुझे कुछ आकर ग्रथ न मिल सके। "खलजी कालीन भारत" का इतिहास तो बडी ही विचित्र परिस्थिति में प्रकाशित हुआ। इस कारण उसमें व्याख्याओ की कमी है किन्तु अगले सस्करण में इसका समाधान कर दिया जायेगा।

हुमायूँ से सम्बन्धित "तारीखे इबराहीमी", 'तारीखे एलचीए निजाम शाह', "तारीखे अल्फी", "तबकाते अकबरी भाग २", 'मुन्तखबुत्तवारीख भाग १", 'तारीखे फिरिश्ता", मोतमद खा के 'इकबाल नामये जहागीरी भाग १", मीर अबू तुराब वली की तारीखे गुजरात', मिरआते सिकन्दरी", "ज़फरुल वालेह", सैयिद मुहम्मद मासूम की "तारीखे सिन्ध', वाकेआते मुश्ताकी', एव गौसी शत्तारी की 'गुलजारे अबरार" से हुमायूँ से सम्बन्धित अशो का अनुवाद प्रस्तुत ग्रथ में प्रकाशित किया जा रहा है। इन दोनो भागो को मिला कर हुमायूँ से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण सामग्री का हिन्दी भाषान्तर उपलब्ध हो जायेगा।

पिछले ग्रथो का प्रकाशन डा० ज़ाकिर हुसेन खा, भूतपूर्व उप-कुलपति, अलीगढ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के सतत् प्रयत्नो के फलस्वरूप हुआ। डा० राम प्रसाद त्रिपाठी मुझे "खलजी कालीन भारत" के प्रकाशन के बाद से सर्वदा ही प्रोत्साहन देते रहे हैं। इन दोनो महानुभावो के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मेरा परम कर्त्तव्य है। प्रस्तुत ग्रथ की पाण्डुलिपि प्रथम भाग के साथ अलीगढ यूनिवर्सिटी के आदेशानुसार प्रसिद्ध इतिहासकार डा० तारा चन्द के पास आवश्यक सुझावो के लिए भेजी गई थी। डा० साहब ने बहुत ही कम समय में हस्तलिपि का अध्ययन करके मुझे बडे बहुमूल्य सुझाव दिए और उन्ही सुझावो के आधार पर पाडुलिपि में सशोधन करके उसे प्रस्तुत ग्रथ के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है, अत उनके प्रति आभार प्रदर्शित करने के लिए मुझे किसी प्रकार शब्द मिल ही नही सकते। इस ग्रथ-माला की तैयारी में अलीगढ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर डा० नूरुल हसन, एम० ए० डी० फिल्० (आक्सन) द्वारा मुझे विशेष प्रेरणा तथा सहायता मिलती रही है। उन्होने मेरी कठिनाइयो को दूर किया है और अपने सत्परामर्श एव अपनी मृदु आलोचनाओ द्वारा मेरे कार्य को सुचारु बनाने की कृपा की है। अलीगढ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की रिसर्च तथा पब्लिकेशन कमेटी के अध्यक्ष एव अलीगढ विश्वविद्यालय के उप-कुलपति कर्नल सैयिद बशीर हुसेन जैदी एव अन्य सदस्यो ने इस ग्रथ के प्रकाशन में जो सहृदयता प्रदर्शित की उसके लिये मैं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। पुस्तको के मिलने की समस्त कठिनाइया विश्वविद्यालय के भूतपूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष श्री सैयिद बशीरुद्दीन की उदार कृपा से दूर होती रही। उनको धन्यवाद देना भी मेरा कर्त्तव्य है। अलीगढ विश्वविद्यालय के राजनीति विभाग के भूतपूर्व प्रोफेसर मुहम्मद हबीब द्वारा मुझे बराबर प्रोत्साहन मिलता रहा है। इसके लिये मैं उनका आभारी हूँ।

प्रूफ की देख भाल का कार्य सदा की भाति श्री श्रवण कुमार श्रीवास्तव द्वारा बडी ही सलग्नता से होता रहा। इसके लिए मैं इन को विशेष धन्यवाद देता हूँ। जाब प्रिन्टर्स, इलाहाबाद,

के सहयोग से पुस्तक इस रूप में प्रस्तुत की जा रही है अत मैं उनका भी आभारी हूँ।

अपने इस कार्य में मुझे अपने सभी मित्रों से हर प्रकार की सहायता मिलती रही है। स्थानाभाव के कारण मैं उनके नाम नहीं लिख सका हूँ, किन्तु मुझे विश्वास है कि वे अपने प्रति मेरे भावों से परिचित हैं।

सचिव
स्वतन्त्रता संग्राम इतिहास
परामर्श समिति, नजरबाग
लखनऊ
मार्च १९६२

सैयिद अतहर अब्बास रिज़वी
एम० ए०, पी–एच० डी०
यू० पी० एजूकेशनल सर्विस

समीक्षा

इबराहीम इब्ने जरीर

तारीखे इबराहीमी

इस ग्रथ के लेखक इबराहीम बिन जरीर जिसे कही-कही हरीर भी लिखा गया है के विषय में कोई ज्ञान प्राप्त नही हो सका है। केवल यही कहा जा सकता है कि उसने इस ग्रथ की रचना लगभग ९५७ हि० (१५५० ई०) में समाप्त की। इसमे हजरत आदम से लेकर ९५६ हि० (१५४९ ई०) तक का बडा ही सक्षिप्त इतिहास लिखा गया है। हुमायूँ के इतिहास म ९५२ हि० (१५४५ ४६ ई०) तक की घटनाओ का उल्लेख है, पुस्तक के अतिम भाग मे हिन्दुस्तान के सुल्ताना, गुजरात के सुल्ताना एवं तीमूर तथा उसके उत्तराधिकारियो का हाल लिखा है।

किन्तु यह इतिहास भी बडा ही सक्षिप्त है और पूरा विवरण लगभग सौ पक्तियो में समाप्त कर दिया गया है। इस ग्रथ को इस कारण कि इसका लेखक हुमायूँ का समकालीन था, बडा ही महत्व प्राप्त है। विशेष रूप से इसमे जो तारीखें दी हुई है उनसे कई घटनाओ को समझने में बडी सहायता प्राप्त होती है।

यह ग्रथ अभी तक प्रकाशित नही हुआ है और इसकी हस्तलिपियाँ भी यूरोप में केवल चार स्थाना पर ही मिलती है जिनम इडिया आफिस, ब्रिटिश म्युजियम तथा बाडलिएन की हस्तलिपियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अलीगढ विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में भी इस महत्वपूर्ण ग्रथ की एक अच्छी हस्तलिपि उपलब्ध है किन्तु इसमें पुस्तक नकल करने वाले ने कही-कही तारीखो को सावधानी से नकल नही किया है। अनुवाद इसी हस्तलिपि से किया गया है।

खुर शाह बिन कुबाद अल हुसैनी

तारीखे एलचीए निजाम शाह

खुर शाह बिन कुबाद अल हुसैनी एराक का निवासी था और वह अहमदनगर के सुल्तान बुरहान निजाम शाह प्रथम (९१४ हि०/१५०८ ई०-९६१ हि०/१५५३ ई०) के दरबार के सेवको में सम्मिलित हो गया। सुल्तान ने उसे अपनी ओर से राजदूत बनाकर शाह तहमास्प सफ्वी के दरबार में भेजा। उसने ९५२ हि० (१५४५ ई०) में शाह तहमास्प से भेंट की। शाह ने उससे सुल्तान एव शाह ताहिर के विषय में, जिसके कारण बुरहान निजाम शाह प्रथम शीआ हो गया था अनेक प्रश्न किये। वह ९७१ हि० (१५६३-६४ ई०) तक शाह तहमास्प के दरबार में रहा और इस बीच में वह शाह के अनेक युद्धा में उसके साथ गया और अपने इतिहास की भी रचना प्रारम्भ कर दी। उसने अपने इतिहास में ईरान के अनेक स्थाना के विषय में बहुत कुछ अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर लिखा है।

फिरिश्ता ने अपने इतिहास में उसका परिचय देते हुए लिखा है कि एराक के शाह खवर शाह नामक एक व्यक्ति ने इबराहीम कुतुब शाह के राज्यकाल मे इतिहास से सम्बन्धित एक बृहत् ग्रथ की रचना की और उसमें कुतुबशाही सुल्ताना का विस्तार से उल्लेख किया है किन्तु यह ग्रथ उसे न प्राप्त हो सका[1]। खवर शाह की मृत्यु गोलकुडा में २५ जीकाद ९७२ हि० (२४ जून १५६५ ई०) में हुई।

उसने अपने ग्रन्थ की प्रस्तावना में इतिहास के ज्ञान के लाभ बताते हुए लिखा है कि वह निरन्तर पर्यटन में सलग्न रहने एव अन्य कार्यों मे व्यस्त रहने के बावजूद सरल एव सुबोध भाषा में ससार के इतिहास की रचना के विषय मे सोचा करता था और अन्त में उसने इस इतिहास की रचना की। उसने इस इतिहास की रचना में निम्न कित ग्रथा का प्रयोग किया है

तारीखे तबरी, जामेउल हिकायात, जामेउत्तशार ख जलाली, मजमउर्रवायात, मुख्तसर बंजावी क़िससुल अम्बिया, उयूनुत्तवारीख, रौजतुश् शुहदा, उमदतुल मतालिब, फुसूलिल मुहिम्मा, बहरे मुनाकिब, कश्फुल गुम्मा, किताबे मोजम फिल अखबार, रौजतुस्सफा भाग ३, लुब्बुत्तवारीख, वाक़ेआते शेख जैन, तारीखे गुजीदा, हबीबुस्सियर, जफर नामा, मुक़द्दमये जफर नामा तथा नुस्खे जहाँ आरा।

यह ग्रथ एक प्रस्तावना और सात भागो (मकालो) में विभाजित है। प्रत्येक मकाले में कई-कई गुफ्तार (अध्याय) है।

१—प्रस्तावना अथवा मुकद्दमा —ससार की सृष्टि की रचना, आदम एव नूह का विवरण।

२—मकाला प्रथम —पाँच गुफ्तारा म विभाजित

(१) पेशदादी तथा उनके समकालीन पैगम्बर
(२) कयानी तथा उनके समकालीन पैगम्बर
(३) सिकन्दर, अशकानी, मुलूकुत्तवायफ तथा उनके समकालीन पैगम्बर एव दार्शनिक इत्यादि
(४) सासानी वश के सुल्ता
(५) यमन तथा रोमन राज्य के कुछ बादशाह।

३—मकाला द्वितीय —पाच गुफ्तारा में विभाजित

(१) हज़रत मुहम्मद
(२) प्रथम तीन खलीफा
(३) अली तथा इमाम
(४) बनी उमय्या तथा उन शीओ का हाल जिन्होने इमाम हुसैन की हत्या का बदला लेने के लिये बनी उमय्या पर आक्रमण किये
(५) बनी उमय्या का पतन तथा बनी अब्बास के वश का अभ्युदय।

४—मकाला तृतीय —अब्बासी खलीफाओ के समकालीन वश १३ गुफ्तारा में

(१) ताहिरी
(२) सफ्फारी

[1] तारीखे फिरिश्ता (नवल किशोर) मकाला ३, रौजा ४, पृ० १६७।

(३) सामानी
(४) बोवय्या
(५) गज़नवी
(६) गूर तथा गुरजिस्तान के सुल्तान
(७) मगरिब के इस्माईली
(८) सलजूक
(९) नीमरोज के सुल्तान
(१०) कुद सुल्तान
(११) मौसल, आजरबाईजान फारस एव लुरिस्तान के अताबक
(१२) ख्वारज़मशाही सुल्तान
(१३) किरमान के कराखताई।

५—मकाला चतुथ —चार गुफ्तारा म विभाजित

(१) तुर्कों की वशावली एव चिंगज के पूवज
(२) चिंगेज खा उक्तई खा तथा उसके उत्तराधिकारी कुबलई खा तक तथा करा हलाकू एव उसके मावराउन्नहर के उत्तराधिकारी तीमूर के समय तक उत्तर एव मावराउन्नहर मे जूजी के उत्तराधिकारी पीर मुहम्मद तक तथा लेखक के समकालीन बल्ख के सुल्तान ९७० हि० (१५६२ ६३ ई०) तक
(३) हलाकू खा तथा उसके ईरान के उत्तराधिकारी ८१३ हि० (१४१० ११ ई०) तक
(४) मुजफ्फरी वश के सुल्तान।

६—मकाला पचम —तीन गुफ्तारा में विभाजित

(१) अमीर तीमूर (ज़फरनामे पर आधारित)
(२) शाहरुख तथा उसके उत्तराधिकारी मीर्ज़ा मुहम्मद ज़मान के बाबर को समर्पित करने तक (९२३ हि०/१५१७ ई०)
(३) बाबर, हुमायूँ अकबर। अकबर का हाल बडा ही सक्षिप्त है। उसमें बैराम खा के विद्रोह तथा ९७० हि० (१५६२ ६३ ई०) तक का इतिहास दिया गया है।

७—मकाला षष्ट —पाच गुफतारा म

(१) करा कुईनलू
(२) आक कुईनलू
(३) शाह इस्माईल सफवी
(४) शाह तहमास्प सफवी
(५) रूम (टर्की) के बादशाह।

८—मकाला सप्तम —हिन्दुस्तान के सुल्तान पाँच गुफ्तारा में

(१) देहली के सुल्तान
(२) देहली के अफगान वश

(३) बगाल तथा माडू के खलजी
(४) गुजरात के सुल्तान।
(५) दक्षिण के बहमनी सुल्तान।

इस ग्रथ का अभी तक कोई विशेष प्रयोग नही हुआ है। १९५८ ई० के त्रिवेन्द्रम के इतिहास काग्रस के अधिवेशन में डा० सुकुमार रे ने एक लेख प्रस्तुत किया था जिसम हुमायूँ के उस पत्र का उल्लेख है जो कि उसने अपने सिंहासनारोहण के समय मीर्ज़ा कामरान का लिखा था[1] और जिसमे बाबर के निधन तथा अपने सिंहासनारोहण की सूचना देते हुए पारस्परिक मेल जोल पर जोर दिया था। इसके अतिरिक्त भी इस इतिहास मे हुमायूँ के सम्बन्ध में बहुत सी ऐसी सामग्री है जिसका अन्य इतिहासा में उल्लेख नही, विशेष रूप से सुल्तान बहादुर का एक अन्य पत्र जो उसने हुमायूँ से सधि के विषय मे अन्त में लिखा था।[2] पुस्तक नकल करने वालो ने तारीखो का नकल करने में बहुत से स्थाना पर भूलें करदी हैं जिनसे कही कही घटनाआ को समझने मे कठिनाई होती है किन्तु इस ग्रथ के उपलब्ध हो जाने से बहुत से भ्रमा का खडन हो जाता है। इसकी केवल तीन हस्तलिपिया का पता चल सका जिसमें दा ब्रिटिश म्युज़ियम लन्दन[3] और एक अधूरी आसफ़िया लाइब्रेरी हैदराबाद (आंध्र प्रदेश) में है।

शेख रिज़कुल्लाह मुश्ताकी

वाकेआते मुश्ताकी

शेख रिज़कुल्लाह मुश्ताकी के पूर्वज आगा मुहम्मद तुर्क बुखारा से सुल्तान अलाउद्दीन खलजी के राज्यकाल मे अपने परिवार एव परिजना के साथ देहली पहुँचे। सुल्तान ने उनका बडा आदर सम्मान किया और जमादी उल अव्वल ६९८ हि० (फरवरी मार्च १२९९ ई०) में गुजरात पर आक्रमण करने के लिए जो सेना उलुग खा एव नुसरत खा के अधीन जा रही थी, उसके साथ उन्हे कर दिया। गुजरात विजय के उपरान्त आगा मुहम्मद तुर्क कुछ समय तक गुजरात में रहे, परन्तु जो सेना गुजरात विजय हेतु नियुक्त हुई थी उसके कुछ अमीरा स मतभेद हो जाने के कारण वे देहली वापस आ गय और सुल्तान अलाउद्दीन खलजी ने उनका पुन अत्यधिक आदर सम्मान किया। वे कुतुबुद्दीन मुबारक शाह तथा सुल्तान तुगलुक शाह के राज्यकाल म भी अपने पुत्रा एव परिजना के साथ बडे आदर-सम्मान से जीवन व्यतीत करते रहे। कहा जाता है कि उनके १०१ पुत्र थे किन्तु शीघ्र ही वे सब के सब मृत्यु का प्राप्त हा गये और केवल मलिक मुइज़्जुद्दीन जीवित रह गय। आगा मुहम्मद तुर्क के ऊपर मुसीबत का पहाड टूट पडा। वे सासारिक जीवन त्याग कर शेख सलाहुद्दीन सुहरवर्दी की खानक़ाह में, जो शेख नसीरुद्दीन चिराग देहलवी की खानकाह के समीप

[1] Dr Sukumar Ray 'A Letter of the Mughal Emperor Humayun to his Brother Kamran', Proceedings of the Twenty First Session of *Indian History Congress* Trivandrum (1958), pp 318 319

[2] देखिए अनुवाद।

[3] Rieu *Descriptive Catalogue of the Persian Manuscripts in the British Museum* I, p 107a, Supp no ३२, आसफ़िया लाइब्रेरी के ग्रथों की सूची भाग १ पृ० ६४ पुस्तक न० १३३० ।

थी, बस रहे। शेख ने उन्हे अत्यधिक सान्त्वना दी। उनकी मृत्यु १७ रबी-उल-आखिर ७३९ हि० (२ नवम्बर १३३८ ई०) को हुई। मलिक मुइज्जुद्दीन के पुत्र मलिक मूसा को भी तुगलुको के काल में बडा आदर-सम्मान प्राप्त हुआ किन्तु सुल्तान फीरोज शाह की मृत्यु के उपरान्त देहली में जो उथल-पुथल हुई उसके कारण वे देहली से पुन मावराउन्नहर वापस चले गये परतु १३९८ ई० में जब तीमूर ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया तो वे उसकी सेना के साथ देहली लौट आये और फिर आजीवन देहली न छोडा। उनके पुत्रो मे शेख फीरोज़ को अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई। सुल्तान बहलोल लोदी उनका बडा आदर सम्मान करता था। वे बडे अच्छे सैनिक भी थे और कवि भी। जौनपुर के सुल्तान हुसेन शर्की तथा बहलोल लोदी के युद्ध के विषय में उन्होने एक काव्य की भी रचना की किन्तु वह काव्य शेख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी के समय मे ही अप्राप्य हो गया था। शेख अब्दुल हक को केवल दो शेर याद रह गये थे जिन्हे उन्होने अपनी प्रसिद्ध रचना "अख्बारुल अखियार" में उद्धृत किया।[1]

शेर

'हे वह जिसने देहली पर अधिकार जमा लिया है, सुन ले
यदि तू अपना जीवन चाहता है तो यहाँ से चला जा।
मै राज्य पर अधिकार जमाये हूँ, हमारा है राज्य,
ईश्वर ने दिया हमे, ईश्वर का है राज्य।'

शेख फीरोज ८६० हि० (१४५५-५६ ई०) मे बहराइच के किसी युद्ध मे मारे गये और वही दफन कर दिये गये। उनके पुत्र शेख सादुल्लाह का जन्म उनकी मृत्यु के बाद हुआ। वे शेख मुहम्मद मगन नामक एक प्रसिद्ध सूफी के शिष्य हो गये। शेख मुहम्मद मगन का सुल्तान सिकन्दर बडा आदर-सम्मान करता था। उनकी मृत्यु ९०० हि० (१४९४-९५ ई०) में हुई और वे कन्नौज के समीप मल्लावाँ नामक स्थान पर दफन हुए। इसी कारण शेख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी ने उनका नाम मुहम्मद मल्लावाँ लिखा है[2]। शेख सादुल्लाह के दो पुत्र बडे प्रसिद्ध हुये। शेख रिज़कुल्लाह एव शेख सैफुद्दीन जो शेख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी के पिता थे। शेख सादुल्लाह बडे ही विद्वान् एव सत स्वभाव के व्यक्ति थे। वे सुल्तान सिकन्दर लोदी के प्रतिष्ठित अमीर खाने जहाँ के उत्तराधिकारी जैनुद्दीन के आश्रित थे। सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु के उपरान्त जैनुद्दीन पदच्युत हो गया और उसके स्थान पर अहमद खा वल्द खाने जहाँ को अधिकार प्राप्त हो गया। जैनुद्दीन बडी ही दीन अवस्था में अपना समय व्यतीत करने लगा। उसके साथी एक एक करके उससे पृथक् हो गये। केवल शेख सादुल्लाह ने उसका साथ न छोडा। शेख सादुल्लाह के मित्रो ने समझाया कि जो लोग पूर्व में मियाँ की सेवा मे थे वे न रहे। आपने २-३ साल तक उनका साथ दिया, यह ईश्वर की कृपा है किन्तु इस प्रकार समय व्यतीत न हो सकेगा। वे उत्तर देते थे कि "जिन लोगो का उद्देश्य धन तथा रोज़गार था वे इन वस्तुओ के चले जाने के उपरान्त न रहे। हमारा जो कुछ उद्देश्य है वह अपने स्थान पर है।" जब लोग उनके उद्देश्य के विषय मे पूँछते

१ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी : अख्बारुल अखियार (देहली १३३२ हि०), पृ० २९९ ३००।
२ वही, पृ० १७३ १७४।

तो वे कहते थे, "बाल्यावस्था से इस समय तक हमारा उद्देश्य आप लोगो के प्रति निष्ठा है। इसमें कोई भी कमी नही। आप लोगा के सौभाग्य से मैं यह समझता हूँ कि २-३ वर्ष तक मैं काम चला ले जाऊँगा।" मित्रगण कहते कि "हमें भली-भाँति ज्ञात है कि आपके घर में कुछ भी नही है।" इसका उत्तर वे यह देते कि, "भवन बेचकर खायेंगे और पुस्तकालय भी इतना बडा है कि उसे बेचकर खाते रहेगे। जब तक इस सम्पत्ति का चिह्न है मुझे कोई दु ख नही[1]।" वे ईश्वर के प्रेम मे इतने भावो से भर जाते थे कि उनका अधिकाश समय विलाप एव ईश्वर के ध्यान में व्यतीत होता था। उनकी मृत्यु २२ रबी-उल-अव्वल ९२८ हि० (१९ फरवरी १५२२ ई०) को हुई। शेख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी ने अपने पिता एव चाचा की गोष्ठियों की तुलना करते हुए लिखा है कि शेख रिज्कुल्लाह की गोष्ठी भावो की उत्तेजना एव गरमी को देखते हुए ऐसी थी जैसे राख के नीचे आग दबी हो जैसे ही जरा सा उसको छेडा आग निकल आई। इसके विपरीत पिता (सैफुद्दीन) की यह दशा थी जैसे किसी वस्तु से निरन्तर जल टपकता रहे। उन्हे यदि साधारण सा भी कष्ट होता तो तुरन्त आँसू बहने लगते थे। वे बडे ही तपस्वी एव ईश्वर के भक्त थे।

शेख रिज्कुल्लाह को भी उनके पिता के समान ही ईश्वर में बडी श्रद्धा थी। उनका जन्म ८९७ हि० (१४९१ ९२ ई०) में हुआ।[2] वे फारसी तथा हिन्दी दोना ही भाषाओ के कवि थे। हिन्दी में उन्होंने अपना उपनाम 'राजन' रक्खा था। 'ज्योति निरजन' नामक उनकी हिन्दी कविताओ का सग्रह १६वी शती ई० में बडा प्रसिद्ध था। वे तत्कालीन भक्ति आन्दोलन से वडे प्रभावित थे। एक बार उन्होंने अपने पिता शेख सादुल्लाह से पूँछा कि, "कबीर, जो कि बडे ही विख्यात हैं, मुसलमान थे अथवा काफिर।" सादुल्लाह ने बताया कि, "वे मुवहहिद (एकेश्वर-वादी) थे।" शेख रिज्कुल्लाह ने फिर पूँछा कि, 'क्या कोई व्यक्ति मुसलमान भी न हो और काफिर भी न हो, फिर भी मुवहहिद हो सकता है?' शेख सादुल्लाह ने उत्तर दिया कि, "इस बात का समझना बडा कठिन है, धीरे-धीरे समझ मे आ जायेगा।" यद्यपि शेख रिज्कुल्लाह को उनके पिता ने शेख मुहम्मद मगन का शिष्य बना दिया था किन्तु वे शत्तारी सिलसिले के प्रसिद्ध सत शेख बुढन के मुरीद हो गये थे।[3] यही कारण है कि शत्तारी सिलसिले के अन्य मतो की भाति उन्हे हिन्दी से विशेष अनुराग हो गया। उनका हिन्दी कविताओ का सग्रह अप्राप्य है। उनकी रचनाओं मे **वाके आते मुश्ताकी** का विशेष स्थान प्राप्त है। उन्होंने अपने इस इतिहास की भूमिका में लिखा है कि वे अपने समकालीन विद्वाना की सेवा में उपस्थित रहा करते थे और उनकी बातो से लाभान्वित होते रहते थे। शेख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी ने भी लिखा है कि उन्हे सूफी सतो तथा भारतवर्ष के इतिहास का वडा अच्छा ज्ञान था। उनकी जानकारी का साधन वे विचित्र कहानियाँ एव आश्चर्यजनक घटनाएँ थी जो उन्होने अनेक विद्वानो से सुनी तथा अपनी आँखो से देखी थी। जब उन विद्वानो एव महान् व्यक्तियो का, जिनसे मुश्ताकी ने कहानियाँ सुनी थी, निधन हो गया तो वे उन कहानियो को अन्य लोगो को सुनाया करते थे। बाद में अपने किसी मित्र

१ **वाकेआते मुश्ताकी** (ब्रिटिश म्युजियम मैनुस्क्रिप्ट, रियु, भाग २ पृ० ८०२ ब) पृ० ५८, रिजवी उत्तर **तैमूर कालीन भारत भाग १** (अलीगढ़ १९५८ ई०), पृ० १४०।

२ **अख्बारुल अखियार**, पृ० १७४।

३ **अख्बारुल अखियार** पृ० २००।

के आग्रह पर उन्होने उन कहानियो को पुस्तक के रूप मे सकलित किया और उसका नाम "वाके-आते मुश्ताकी" रखा।

इसमें सुल्तान बहलोल के राज्यकाल से लेकर सुल्तान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह के राज्यकाल तक की विभिन्न घटनाओ और लोदी वश के सुल्तानो[१], बाबर[२], हुमायूँ,[३] अकबर तथा सूर वश के सुल्तानो से सम्बन्धित विभिन्न कहानियो का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त मालवा के गयासुद्दीन खलजी तथा नासिरुद्दीन खलजी एव गुजरात के मुजफ्फर शाह से सम्बन्धित कहानियो की भी चर्चा की गई है। रिज्कुल्लाह मुश्ताकी ने किसी स्थान पर भी इस बात का दावा नही किया है कि उन्होने किसी इतिहास की रचना की है। केवल उन्होने कहानियो का सकलन किया है। लोदी सुल्तानो से सम्बन्धित बहलोल, सिकन्दर तथा इबराहीम के विषय में उन्होने जिन कहानियो का उल्लेख किया है वे लोदी वश के सुल्तानो के इतिहास की जानकारी का मुख्य साधन है। यद्यपि उन्होने अपनी इस पुस्तक की रचना अकबर के राज्यकाल में की किन्तु उनके पिता का तथा स्वय उनका अफगान अमीरो से विशेष सम्पर्क था। वे उनके आश्रित रह चुके थे अत उन्होने जिन कहानियो का विवरण दिया है वे बडी ही महत्वपूर्ण है। कहानियो के प्रसग में उन्होने तत्कालीन सामाजिक एव सास्कृतिक जीवन की भी झाँकी प्रस्तुत की है। सुल्तानो से सम्बन्धित कहानियो के साथ साथ रिज्कुल्लाह ने अमीरो के विषय में भी बहुत सी कहानियो का उल्लेख किया है और इस प्रकार बहुत से अमीरो के व्यक्तित्व को बडे स्पष्ट रूप में प्रस्तुत कर दिया है।

यद्यपि उनकी कहानियो में बहुत सी अद्भुत तथा अलौकिक कहानियाँ भी है जिन्हे पढे बिना यह विश्वास हो ही नही सकता कि किस प्रकार उस युग के लोग ऐसी बातो पर श्रद्धा रखते थे तथापि इन्ही कहानियो में कही कही शासन प्रबन्ध सम्बन्धी भी काम की बातें मिल जाती है। हुमायूँ का उल्लेख उन्होने अपने इतिहास में बडे ही सक्षिप्त रूप में किया है। शेर शाह के चरित्र का विवरण देते हुए वे मुगलो से ही प्रभावित ज्ञात होते है।

शेख रिज्कुल्लाह मुश्ताकी की मृत्यु २० रबी-उल-अव्वल ९८९ हि० (२४ अप्रैल १५८१ ई०) को हुई।[४] वाकेआते मुश्ताकी की किसी भी प्रतिलिपि का भारतवर्ष में कोई पता नही चल सका। इसकी केवल दो प्रतियाँ ब्रिटिश म्युजियम मे प्राप्य है। ब्रिटिश म्युजियम के रियू के कैटालाग के दूसरे भाग के पृष्ठ ८०२ ब पर जो हस्तलिखित ग्रथ है उसके रोटोग्राफ के आधार पर अनुवाद किया गया है किन्तु ब्रिटिश म्युजियम में एक अन्य प्रतिलिपि भी वाकेआते मुश्ताकी की है जिसके कुछ अश उपर्युक्त प्रतिलिपि से भिन्न है और कही कही वे उपर्युक्त प्रतिलिपि से अधिक स्पष्ट भी है। अत अनुवाद में उससे भी सहायता ली गई है।

१ इस भाग का अनुवाद उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग १ में कर दिया गया है।
२ इस भाग का अनुवाद मुगल कालीन भारत—बाबर में कर दिया गया है।
३ इस भाग का अनुवाद उत्तर तैमूरकालीन भारत भाग २ में कर दिया गया है।
४ अखबारुल अखियार, पृ० १७४।

मुल्ला अहमद तथा आसफ खा इत्यादि

तारीखे अलफी[१]

अकबर के राज्यकाल की इस सुप्रसिद्ध रचना में हजरत मुहम्मद के निधन[२] से लेकर ९९७ हि० (१५८८-८९ ई०) तक की मुख्य घटनाओ का इतिहास है। अकबर के राज्यकाल में इस्लाम के एक हजार वर्ष पूरे हो रहे थे अत उसने हजरत मुहम्मद की मृत्यु से इस एक हजार वर्ष तक के प्रत्येक वर्ष का अलग अलग हाल लिखवाने की योजना बनाई। ९९० हि० (१५८२-८३ ई०) में उसने इतिहासकारो तथा विद्वानो का एक बोर्ड इस कार्य हेतु नियुक्त किया। हजरत मुहम्मद की मृत्यु के बाद के प्रथम वर्ष के इतिहास की रचना नकीब खा[३] के, दूसरे वर्ष के इतिहास की रचना शाह फतहुल्लाह शीराजी[४] के, तीसरे वर्ष के इतिहास की रचना हकीम हुमाम[५] के, चौथे वर्ष के इतिहास की रचना हकीम अली[६] के, पाँचवे वर्ष के इतिहास की रचना हाजी इबराहीम सरहिन्दी[७] के, छठे वर्ष

१ एक हजार वर्ष का इतिहास।

२ हजरत मुहम्मद का निधन ११ हि० (६३२ ई०) में हुआ।

३ मीर गयासुद्दीन अली इब्न अब्दुल्लतीफ, मीर यहया कजवीनी का पौत्र था। वह अपने पिता मीर अब्दुल्लतीफ के साथ १५५६ ई० में अकबर के दरबार में पहुँचा और अकबर का बहुत बड़ा विश्वासपात्र बन गया। ९८८ हि० (१५८० ई०) में उसे नकीब खा की उपाधि प्रदान हुई। मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी के अनुसार अरब तथा ईरान में इतिहास के ज्ञान में कोई भी उसका मुकाबला न कर सकता था। वह अकबर को पुस्तकें पढ़ कर सुनाया करता था। **महाभारत** का फ़ारसी अनुवाद भी उसी की देखरेख में हुआ। १०२३ हि० (१६१४ ई०) में उसकी मृत्यु हो गई। (बदायूनी **मुन्तखबुत्तवारीख** भाग ३, पृ० ९६, शाह नवाज खा **मआसिरुल उमरा** भाग ३, पृ० ८१२-८१७)।

४ शाह फतहुल्लाह शीराजी शीराज से दक्षिण भारत में पहुँचा और बीजापुर के अली आदिल शाह के दरबार के सेवकों में सम्मिलित हो गया। ९९० हि० (१५८२-८३ ई०) में वह अकबर के निमत्रण पर अकबर के दरबार में उपस्थित हुआ। वह भी अकबर का बहुत बड़ा विश्वासपात्र हो गया। अकबर के राज्यकाल के राजस्व के सुधारों में टोडरमल के समान उसका भी बहुत बड़ा हाथ था। वह वैज्ञानिक, दार्शनिक एव इजीनियर भी था। उसने इलाही सवत् का पचाग तैयार किया और बहुत सी मशीनों का आविष्कार किया। उसकी मृत्यु ९९७ हि० (१५८८-८९ ई०) में हो गई। (बदायूनी **मुन्तखबुत्तवारीख** भाग २ पृ० ३१५-१८, ३६९, भाग ३ पृ० १५४, शाह नवाज खा **मआसिरुल उमरा** भाग १, पृ० १००-१०५)।

५ हकीम हुमाम इब्न मीर अब्दुर्रज्जाक गीलानी, हकीम अबुल फतह गीलानी का अनुज था। वह अपने बड़े भाई के साथ हिन्दुस्तान पहुँचा और अपने बड़े भाई के समान वह भी अकबर का बहुत बड़ा विश्वास पात्र था।

६ हकीम अली गीलानी अपने समय का सुप्रसिद्ध चिकित्सक था, उसने इब्ने सीना के **'क़ानून'** नामक ग्रथ की टीका तैयार की थी। वह बड़ा कुशल इजीनियर था और उसने अकबर के राज्यकाल के ३९वें वर्ष में एक आश्चर्यजनक हौज का निर्माण किया। वह भी अकबर का बहुत बड़ा विश्वास पात्र था। अकबर की अतिम रुग्णावस्था के समय अकबर की चिकित्सा उसी के सुपुर्द थी। उसकी मृत्यु १०१८ हि० (१६०९ ई०) में हो गई। (बदायूनी **मुन्तखबुत्तवारीख** भाग ३, पृ० १६६)।

७ हाजी इबराहीम सरहिन्दी अकबर के दरबार के प्रसिद्ध आलिमों में से था और अकबर के राज्यकाल के प्रारम्भ में मख्दूमुल-मुल्क शेख अब्दुल्लाह सुल्तानपुरी एव शेख अब्दुन्नबी के समान उसे भी अत्यधिक अधिकार प्राप्त थे। अकबर के इबादतखाने के वाद-विवाद में वह बड़ा ही महत्वपूर्ण भाग लिया करता था। उसकी मृत्यु ९९४ हि० (१५८६ ई०) में हुई। (बदायूनी **मुन्तखबुत्तवारीख** भाग २, पृ० १८७-८८)।

के इतिहास की रचना निज़ामुद्दीन अहमद[१] के और सातवें वर्ष के इतिहास की रचना मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी[२] के सुपुर्द हुई। इसी क्रम से ३५ वर्ष के इतिहास की रचना इन लोगो को सौंपी गई किन्तु यह योजना सफल न हो सकी अतः ९९३ हि० (१५८५ ई०) में हकीम अबुल फतह की सिफारिश पर इस इतिहास की रचना, मुल्ला अहमद थट्टवी के सुपुर्द हो गई। मुल्ला अहमद ने जो भाग पूर्व में लिखे जा चुके थे उनमें भी सशोधन किये और गाज़ान खा (१२९५-१३०४ ई०) के समय तक का इतिहास लिखा किन्तु ९९६ हि० (१५८८ ई०) में उसकी हत्या कर दी गई। सम्भवतः मुल्ला अहमद ने अपनी रचना नकीब खा की देख-रेख मे की, तदुपरान्त आसफ खा ने ९९७ हि० (१५८८-८९ ई०) तक का शेष इतिहास लिखा। १००० हि० (१५९१-९२ ई०) में मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी को इस रचना मे सशोधन करने का आदेश दिया गया। लाहौर के मुल्ला मुस्तफा कातिब को भी उसका सहायक बना दिया गया। मुल्ला अहमद ने जो कुछ लिखा था उसका इन लोगो ने दो वर्ष के भीतर सशोधन कर लिया। साथ ही साथ आसफ खा ने स्वय जिस भाग को लिखा था, उसमें भी सुधार कर दिये। इसके प्राक्कथन की रचना अबुल फज़ल ने की। "तारीखे अलफी' में निम्नलिखित तीन विशेषताएँ हैं —

(१) इसमें जिस सवत् का प्रयोग किया गया है वह रेहलत सवत् है जो हज़रत मुहम्मद की मृत्यु से प्रारम्भ किया गया है।

(२) घटनाओ का विवरण प्रत्येक वर्ष के अन्तर्गत अलग अलग किया गया है। विभिन्न वशो तथा देशो का इतिहास पृथक् नही लिखा गया है।

(३) अकबर के आदेशानुसार इस बात का प्रयत्न किया गया है कि जो कुछ भी लिखा जाय वह यथा-सम्भव निष्पक्ष भाव से लिखा जाय। जो कुछ लिखा जाता था उसे पढ़वाकर अकबर स्वय सुनता रहता था और इस बात की जाँच कर लेता था कि जो कुछ भी लिखा गया है वह पक्षपात से शून्य है अथवा नही। इसके अतिरिक्त अकबर ने यह भी आदेश दे दिया था कि इस इतिहास की रचना सरल एव सुबोध भाषा में की जाय तथा अतिशयोक्ति एव अरबी और फारसी के शेरो इत्यादि को उद्धृत करके ग्रथ को भारी भरकम बनाने का प्रयत्न न किया जाय।

यद्यपि इतने बड़े इतिहास में इस बात की आशा नही की जा सकती कि इसमें जिन घटनाओ का उल्लेख किया गया है वे अन्य स्थानो पर न मिलेंगी, फिर भी इस ग्रथ के विद्वान् लेखको ने अपने सूत्रो का बडी सावधानी एव निष्पक्ष भाव से प्रयोग किया है। किन्ही किन्ही देशो तथा कालो का पूरा इतिहास एक ही स्थान पर लिख दिया गया है और घटनाओ को तोड कर विभिन्न वर्षों में विभाजित करने का प्रयत्न नही किया गया। सुल्तान मुहम्मद बिन तुग़लुक़ के इतिहास, अफगान सुल्तानो के इतिहास एव हिन्दुस्तान के सुल्तानो के राज्य के पतन के उपरान्त प्रान्तीय राज्यो का इतिहास तथा सूर वश का इतिहास अलग-अलग नही दिया गया है, अपितु विभिन्न वर्षों के अन्तर्गत एक ही स्थान पर दे दिया गया है। मुग़लो का इतिहास बड़े विस्तार से दिया गया है। कही-कही कुछ महत्वपूर्ण घटनाए भी छूट गयी हैं किन्तु बहुत से स्थानो पर ऐसी घटनाए भी दी गई है जिनका उल्लेख अन्य इतिहासो में नही मिलता।

१ तबक़ाते अकबरी का लेखक।
२ मुन्तख़बुत्तवारीख़ का लेखक।

मुल्ला अहमद अपने समय का एक बहुत बडा विद्वान् था। उसके पूर्वज सुन्नी थे किन्तु वह अपनी युवावस्था मे शीआ हो गया था। २२ वर्ष की अवस्था में वह थट्टा से ईरान पहुँचा और वहाँ के बहुत से स्थानो की सैर की तथा वहाँ के प्रसिद्ध विद्वानो से मिला। तदुपरान्त वह शाह तहमास्प सफ्वी के दरबार के सेवको में सम्मिलित हो गया। जब शाह तहमास्प सफ्वी का उत्तराधिकारी शाह इस्माईल द्वितीय सुन्नी हो गया और उसने शीआ का दमन प्रारम्भ कर दिया तो मुल्ला अहमद ईरान से एराक, मदीना तथा मक्का पहुँचा। तदुपरान्त वह दक्षिणी भारत में गोलकुडा के कुतुबशाही सुल्तानों के दरबार के सेवकों में सम्मिलित हो गया। ९९० हि० (१५८२-८३ ई०) में वह अकबर के दरबार में उपस्थित हुआ। ९९६ हि० (१५८८ ई०) मे मीर्जा फौलाद बरलास नामक एक कट्टर सुन्नी ने उसकी हत्या कर दी। मुल्ला अहमद ने "**खुलासतुल हयात**" नामक दर्शन शास्त्र सम्बन्धी एक ग्रथ की भी रचना की।

मीर्जा क़िवामुद्दीन जाफर बेग, जो आसफ खा की उपाधि द्वारा सुशोभित हुआ, ९८५ हि० (१५७७-७८ ई०) में अकबर की सेवा में पहुँचा। वह कजवीन का निवासी था। अकबर तथा जहागीर के राज्यकाल में उसे मुख्य सैनिक पद प्राप्त रहे। १०२१ हि० (१६१२-१३ ई०) मे बुरहानपुर में उसकी मृत्यु हो गई। सेनापति एव विद्वान् होने के साथ साथ वह कवि भी था और उसने '**खुसरो व शीरी**" नामक एक मसनवी की भी रचना की।

हुमायूँ का इतिहास भी विभिन्न वर्षो के सक्षिप्त इतिहास के अन्तर्गत दिया गया है। शेर शाह का हाल ९५२ हि० के इतिहास के प्रसग में लिखा गया है। यद्यपि हुमायूँ का इतिहास बडे सक्षिप्त रूप से दिया गया है किन्तु समस्त महत्वपूर्ण घटनाओ का सक्षिप्त विवरण दे दिया गया है। "**तबकाते अकबरी**" में हुमायूँ का इतिहास "**तारीखे अलफी**" से ही उदधृत है। घटनाओ को पृथक् वर्षो के अन्तर्गत लिखने के कारण कुछ घटनाओं को, जो कई कई वर्ष तक चलती रही, विभाजित करके विभिन्न वर्षों के अन्तर्गत लिखा गया है, इस कारण पिछले वर्ष के इतिहास से क्रमबद्ध करने के लिये वही कही घटनाओ की पुनरावृत्ति करनी पड गई है। पुस्तक नक्ल करने वालो ने भी शीर्षक में सनो के लिखने मे बडी भूलें की है, फिर भी इस महत्वपूर्ण इतिहास की उपेक्षा बडी कठिन है।

तारीखे अलफी अभी तक प्रकाशित नही हुई है। इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ हिन्दुस्तान, ईरान एव यूरोप के फारसी हस्तलिखित ग्रथो के पुस्तकालयो म भी प्राप्य हैं। आगे के पृष्ठो में हुमायूँ के इतिहास से सम्बन्धित भाग का अनुवाद ब्रिटिश म्युजियम लन्दन एव अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी लखनऊ की हस्तलिखित लिपि के आधार पर किया गया है।

ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद

तबक़ाते अकबरी

ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद के पिता का नाम ख्वाजा मुहम्मद मुक़ीम हरवी था। वह बाबर का बडा विश्वासपात्र तथा दीवाने ब्यूतात था। बाबर की मृत्यु के उपरान्त जब हुमायूँ ने गुजरात विजय कर लिया और १५३५ ई० में मीर्जा अस्करी को अहमदाबाद प्रदान कर दिया तो ख्वाजा मुक़ीम को उसका वज़ीर नियुक्त किया। १५३९ ई० में जब हुमायूँ शेर शाह से चौसा के युद्ध

में पराजित होकर आगरा पहुँचा तो ख्वाजा मुहम्मद मुक़ीम उसके साथ था। ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद के अनुसार ख्वाजा मुकीम अकबर के राज्यकाल के १२वें वर्ष में आगरा में शाही सेवा कर रहा था।[1]

ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद ने अपने जन्म के विषय में किसी स्थान पर कोई प्रकाश नहीं डाला है किन्तु बदायूनी के अनुसार निज़ामुद्दीन अहमद की मृत्यु ४५ वर्ष की अवस्था म अकबर के शासनकाल के ३८वे वर्ष में अर्थात् २३ सफर १००३ हि० (७ नवम्बर १५९४ ई०) को हुई[2]। इस प्रकार उसकी जन्म तिथि ९५८ हि० अथवा १५५१ ई० होती है। हमें ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद की बाल्यावस्था तथा बाद की शिक्षा के विषय में भी कोई प्रामाणिक ज्ञान नहीं किन्तु "तबक़ाते अकबरी" के अध्ययन से पता चलता है कि ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद को अवश्य ही अपने समय के बड़े-बड़े विद्वानों द्वारा शिक्षा प्राप्त हुई होगी। जिस समय वह गुजरात में था तो बदायूनी के अनुसार अमानी[3], वकाई[4], हयाती[5] तथा सरफी[6] सरीखे कवि उसके द्वारा आश्रय प्राप्त करते रहते थे। अकबर ने उसे "तारीखे अलफी" के संकलन-कर्ताओं के बोर्ड में भी सम्मिलित किया था[7]।

वह एक उच्च कोटि का सैनिक था और उसने अकबर के विभिन्न अभियानों में महत्वपूर्ण भाग लिया। अकबर के राज्यकाल के २९वें वर्ष में वह गुजरात का बख्शी नियुक्त किया गया। ९९६ हि० (१५८७-८८ ई०) में अकबर ने उसे दरबार में बुलवा लिया और वह उसकी सेवा में लाहौर में, जहाँ वह उस समय था, उपस्थित हुआ। उसे नित्यप्रति उन्नति प्राप्त होती रही और सम्भवत अजमेर, गुजरात तथा माल्वा की खाल्सा की भूमि की देखरेख भी उसके सुपुर्द कर दी गई। ९९९ हि० (१५९०-९१ ई०) में उसे शम्साबाद नामक परगना जागीर के रूप में प्रदान हुआ। १५९१-९२ ई० में जब राज्य के बख्शी आसफ खाँ को काबुल के अभियान हेतु नियुक्त किया गया तो निज़ामुद्दीन अहमद को उसके स्थान पर बख्शी बना दिया गया। निज़ामुद्दीन अहमद अकबर के साथ कश्मीर तथा लाहौर में कुछ समय तक रहा किन्तु ४५ वर्ष की अवस्था में १४ सफ़र १००३ हि० (२९ अक्तूबर १५९४ ई०) को लाहौर के समीप ज्वर से पीडित होकर वह २३ सफ़र (७ नवम्बर १५९४ ई०) को रावी नदी के तट पर मृत्यु को प्राप्त हो गया।

निज़ामुद्दीन अहमद ने "तबक़ाते अकबरी" के प्राक्कथन में लिखा है कि उसने इस ग्रंथ में उन घटनाओं का विवरण दिया है जो हिन्दुस्तान मे इस्लाम के अभ्युदय अर्थात् ३६७ हि० (९७७-७८ ई०) से लेकर १००१ हि० (१५९२-९३ ई०) तक घटीं, किन्तु वास्तव में इसमें ३७७ हि० (९८७-८८ ई०) से लेकर १००२ हि० (१५९३-९४ ई०) तक का भारतवर्ष का इतिहास

१ तबक़ाते अकबरी भाग २ पृ० २११।
२ मुन्तख़बुत्तवारीख भाग २ (कलकत्ता) पृ० ३९५-९६।
३ मुन्तख़बुत्तवारीख भाग ३ (कलकत्ता) पृ० १८८।
४ मुन्तख़बुत्तवारीख पृ० ११६-११७।
५ मुन्तख़बुत्तवारीख पृ० २११।
६ मुन्तख़बुत्तवारीख पृ० २६०।
७ मुन्तख़बुत्तवारीख भाग २ पृ० ३१८।

उपलब्ध है। सम्भवत लेखक ने १००१ हि० मे इसकी रचना समाप्त कर ली थी और १००२ हि० की घटनाएँ बाद मे जोड दी। इस इतिहास को उसने ९ खडो मे विभाजित किया है

प्रस्तावना —गजनवियो का इतिहास

१—देहली का इतिहास १००२ हि० (१५९३ ई०) तक।

२—दक्षिण का इतिहास ७४८ हि० (१३४७ ई०) से १००२ हि० (१५९३ ई० तक)।

३—गुजरात के सुल्तानो का इतिहास ७९३ हि० (१३९० ई०) से ९८० हि० (१५७३ ई०) तक।

४—मालवा के सुल्तानो का इतिहास ८०९ हि० (१४०६ ई०) से ९७७ हि० (१५६९ ई०) तक।

५—बगाल के सुल्तानो का इतिहास ७४१ हि० (१३४० ई०) से ९८४ हि० (१५७६ ई०) तक।

६—जौनपुर के सुल्तानो का इतिहास ७८४ हि० (१३८२ ई०) से ८८१ हि० (१४७६ ई०) तक।

७—कश्मीर के सुल्तानो का इतिहास ७४७ हि० (१३४६ ई०) से ९९५ हि० (१५८६ ई०) तक।

८—सिंध के सुल्तानो का इतिहास ८६ हि० (७०५ ई०) से १००१ हि० (१५९२ ई०) तक।

९—मुल्तान के सुल्तानो का इतिहास ८४७ हि० (१४४३ ई०) से ९२३ हि० (१५१७ ई०) तक।

अन्त में वह भौगोलिक विवरण भी लिखना चाहता था किन्तु सम्भवत उस भाग की वह रचना न कर सका कारण कि किसी प्राप्य हस्तलिखित पोथी मे यह विवरण नही मिलता।

"अकबरनामा" के अतिरिक्त उसने निम्नलिखित २८ इतिहासो पर "तबकाते अकबरी" को आधारित किया है—

१—तारीखे यमीनी
२—तारीखे जैनुल अखबार
३—रौजतुस्सफा
४—ताजुल-मआसिर
५—तबकाते नासिरी
६—खजायनुल फुतूह
७—तुगलुकनामा
८—तारीखे फीरोजशाही (जिया बरनी)
९—फुतूहाते फीरोजशाही
१०—तारीखे मुबारकशाही
११—फुतूहुस्सलातीन
१२—तारीखे महमूदशाही हिन्दवी (मन्डवी, रियु के अनुसार)
१३—तारीखे महमूदशाही खुर्द हिन्दवी (मन्डवी, रियु के अनुसार)
१४—तारीखे महमूदशाही गुजराती

१५—मआसिरे महमूदशाही गुजराती
१६—तारीखे मुहम्मदी
१७—तारीखे बहादुरशाही
१८—तारीखे बहमनी
१९—तारीखे नासिरी
२०—तारीखे मुजफ्फरशाही
२१—तारीखे मीर्जा हैदर
२२—तारीखे कश्मीर
२३—तारीखे सिन्ध
२४—तारीखे बाबरी
२५—वाकेआते बाबरी
२६—तारीखे इबराहीमशाही
२७—वाकेआते मुश्ताकी
२८—वाकेआते हजरत जन्नत आशियानी हुमायू बादशाह

इन ग्रथो में "तारीखे महमूदशाही मन्डवी", 'तारीखे महमूदशाही खुर्द मन्डवी', "तबकाते बहादुरशाही", तथा 'तारीखे महमूदशाही गुजराती", मआसिरे महमूदशाही गुजराती", तारीखे बहमनी" का अभी तक कोई पता नही चल सका है और कुछ ग्रथ ऐसे हैं जिनका नाम अभी कुछ वर्षो से ही लिया जाने लगा है और केवल १ या २ प्रतियाँ कही कही उपलब्ध हो रही है। इस प्रकार "तबकाते अकबरी" उन इतिहासो के अभाव के कारण जो अब उपलब्ध नही है, इतनी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है कि इसकी उपेक्षा सम्भव नही।

इसके अतिरिक्त निजामुद्दीन अहमद मे कट्टरपन तथा पक्षपात एव इसी प्रकार के अन्य दोष, जो उसके बहुत से समकालीन एव पूर्व के इतिहासकारो में पाये जाते थे बहुत कम पाये जाते हैं। माल्वा के सुल्तान महमूद को पराजित करने के उपरान्त राणा सागा ने उसे केवल मुक्त ही नही कर दिया अपितु उसका राज्य भी वापस कर दिया। इससे पूर्व गुजरात के सुल्तान मुजफ्फर ने भी सुल्तान महमूद की सहायता प्रदान की थी। सुल्तान मुजफ्फर तथा राणा सागा दोनो के पौरुष एव उदारता की तुलना करते हुए निजामुद्दीन अहमद ने राणा सागा की उदारता एव पौरुष को सुल्तान मुजफ्फर की उदारता से कही अधिक महत्वपूर्ण बताया है और राणा सागा की अत्यधिक प्रशसा की है,[१] यद्यपि उसके एक अन्य समकालीन 'मिरआते सिकन्दरी' के लेखक सिकन्दर बिन मझू ने इसी घटना का उल्लेख करते हुए यह लिखा है कि राणा सागा ने सुल्तान महमूद को इस कारण मुक्त कर दिया कि उसे गुजरात एव देहली के सुल्तानो का भय था[२]। निजामुद्दीन अहमद ने समस्त घटनाएँ ऐतिहासिक क्रम को दृष्टि में रखते हुए अत्यधिक छान-बीन के उपरान्त लिपिबद्ध की है। गुजरात में बहुत समय तक निवास करने के

१ तबकाते अकबरी भाग ३, पृ० १०३ १०४, रिज़वी उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २, पृ० २३८।
२ मिरआते सिकन्दरी, पृ० १५४ १५५, रिज़वी उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २, पृ० ३५६।

९८१ हि० (१५७४ ई०) के अन्त में वह हुसैन खा से पृथक् होकर बदायूं से होता हुआ आगरा पहुँचा और जलाल खा कूरची तथा हकीम ऐनुल मुल्क की सहायता से अकबर के दरबार में उपस्थित हुआ[१]। ९८२ हि० (१५७४-७५ ई०) में वह इमाम[२] और ९८३ हि० (१५७५-७६ ई०) में सात इमामा में से बुद्ध के दिनकी नमाज पढाने के लिये इमाम नियुक्त हुआ। उसी वर्ष उसे मददे मआश के रूप में बसावर में एक हजार बीघा भूमि प्रदान हुई किन्तु ९९७ हि० (१५८८-८९ ई०) में उसे बसावर के स्थान पर बदायूं में भूमि दे दी गई। ९८२ हि० (१५७४ ई०) से अपनी मृत्यु तक वह अकबर के दरबार के साहित्यिक कार्यों में मुख्य भाग लेता रहा। कभी उसे संस्कृत के ग्रथा के अनुवाद का कार्य सौंप दिया जाता, कभी इतिहास की रचना और कभी कोई अन्य साहित्यिक कार्य। कभी-कभी उसे ऐसे अनुवाद के कार्य भी सौंपे गये जिनमें उसे कोई रुचि न थी किन्तु फिर भी शासन के आदेशानुसार उसे उन कार्यों को सम्पन्न करना पडता था। **मुन्तखबुत्तवारीख** के अतिरिक्त उसने निम्नांकित ग्रथा की रचना की

१—**किताबुल अहादीस**—इसमें ४० हदीसें हैं जिनमें जिहाद की विशेषता बताई गई है। इसकी रचना उसने ९७८ हि० (१५७०-७१ ई०) में की और यह ९८६ हि० (१५७८ ई०) में अकबर को समर्पित की गई[३]। अब इस पुस्तक का कोई पता नही।

२—**नामए खिरद अफ्जा**—यह सिंहासन बत्तीसी नामक संस्कृत ग्रंथ का फारसी भाषांतर है जो उसने अकबर के आदेशानुसार ९८२ हि० (१५७४ ई०) में कुछ पडिता की सहायता से प्रारम्भ किया[४]। यद्यपि **सिंहासन बत्तीसी** के अनेका अनुवाद उपलब्ध है किन्तु अब्दुल कादिर बदायूनी का कोई भी अनुवाद प्राप्य नही।

३—**रज्मनामा**—यह **महाभारत** का फारसी अनुवाद है। इसे उसने अकबर के आदेशानुसार ९९० हि० (१५८२-८३ ई०) में प्रारम्भ किया[५]। यह अनुवाद मुख्य रूप से नकीब खा के सुपुर्द था किन्तु मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी को भी इस कार्य में सहायता करनी पडी। बहुत से पडित भी अनुवाद में सहायता करने के लिये नियुक्त हुये। इसके अनुवाद की प्रस्तावना अबुल फज्ल ने लिखी जिसमें उसने विस्तार से अनुवादा के विषय में अकबर की नीति पर प्रकाश डाला है। मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी ने अबुल फज्ल की इस प्रस्तावना के विषय में लिखा है कि उसने इस प्रस्तावना मे अपने आयतल कुर्सी[६] के अनुवाद का खडन किया है जो उसने दरबार में प्रविष्ट होने के समय अकबर की सेवा में समर्पित किया था[७]। **महाभारत** का अनुवाद एव प्रस्तावना दोना ही नवल किशोर प्रेस द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं किन्तु प्रस्तावना में कही एक शब्द भी आयतल कुर्सी के सम्बन्ध मे अबुल फज़्ल ने नहीं लिखा है। इसकी हस्तलिपियां भी बहुत से स्थाना पर प्राप्य है जिनमें अलीगढ विश्वविद्यालय की एक हस्तलिपि बडी ही महत्वपूर्ण है।

१ मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० १७२।
२ मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० २०६।
३ मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० २५५।
४ मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० १८३-१८४।
५ मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० ३११।
६ कुरान शरीफ के एक सूरे का एक खड।
७ मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० ३२१।

४—**रामायण का अनुवाद**—अकबर के आदेशानुसार मुल्ला क़ादिर बदायूनी ने ९९२ हि० (१५८४ ई०) में कुछ पंडितों की सहायता से रामायण का अनुवाद प्रारम्भ किया और उसके महत्वपूर्ण अंशों का अनुवाद लगभग चार वर्ष में पूरा करके ९९७ हि० (१५८९ ई०) में अकबर की सेवा में समर्पित किया।[1]

५—**तारीखे अलफी**—इसकी रचना में भी उसने महत्वपूर्ण भाग लिया।

६—**नजातुर्रशीद**—इसकी रचना मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी ने ९९९ हि० (१५९०-९१ ई०) में की।[2] इसमें ऐतिहासिक कहानियाँ एवं सूफ़ी धर्म से सम्बन्धित अन्य समस्याओं के ऊपर प्रकाश डाला गया है। महदवी आन्दोलन की भी उसने विस्तार से इस ग्रंथ में चर्चा की है। इसकी हस्तलिपियाँ एशियाटिक सोसायटी बंगाल, आसफिया लाइब्रेरी हैदराबाद एवं अलीगढ़ विश्वविद्यालय लाइब्रेरी में हैं।

७—**तरजुमये तारीखे कश्मीर**—९९९ हि० (१५९० ई०) में उसने मुल्ला शाह मुहम्मद शाहाबादी द्वारा अनूदित कश्मीर के इतिहास सम्भवतः राज्य तरंगिणी का संक्षिप्त फारसी अनुवाद तैयार किया।[3] इसकी भी किसी प्रति का अभी तक कोई पता नहीं चल सका।

८—**तरजुमये मोजमुल बुल्दान**—९९९ हि० (१५९० ई०) में दस या बारह इराकी तथा हिन्दुस्तानी विद्वानों को याकूत के इस महत्वपूर्ण अरबी ग्रंथ के फारसी अनुवाद का आदेश हुआ। जो हिस्सा बदायूनी को सुपुर्द हुआ था उसे उसने एक महीने में पूरा कर लिया[4]। इस अनुवाद का भी अब कहीं कोई पता नहीं।

९—**इन्तख़ाबे जामये रशीदी**—१००० हि० (१५९१-९२ ई०) में उसे कुछ अन्य विद्वानों के साथ **जामये रशीदी** के अरबी से फारसी भाषान्तर एवं उसके संक्षिप्त संस्करण की तैयारी का आदेश हुआ। इसमें उसे अबुल फ़ज़्ल से परामर्श करने का आदेश दिया गया। वह लिखता है कि, "उसमें से अब्बासी, मिस्र के एवं बनी उमय्या के ख़लीफाओं के शजरा, जिनका अन्त हज़रत मुहम्मद पर होता है और जो बाद में हज़रत आदम तक पहुँचते हैं और इसी प्रकार समस्त सम्मानित नबियों के सम्बन्धों का विस्तार से अरबी से फारसी में अनुवाद करके बादशाह की सेवा में समर्पित किया गया। उसे शाही ख़ज़ाने में दाखिल कर दिया गया।"[5]

१०—**बहरुल असमार**—कश्मीर के सुल्तान जैनुल आब्दीन (८२० हि० ८७२ हि०/ १४१७ ई०–१४६७ ई०) के आदेशानुसार संस्कृत की कुछ कहानियों का एक संग्रह तैयार किया गया। **बहरुल असमार** उन्हीं कहानियों का फारसी संस्करण है। उसे १००३ हि० (१५९५ ई०) में इसका नया संस्करण तैयार करने का आदेश हुआ।[6] इस ग्रंथ का भी अब तक कहीं कोई पता नहीं।

१ **मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० ३३६, ३६६।**
२ **मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० २०८।**
३ **मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० ३७५।**
४ **मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० ३७५।**
५ **मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० ३८४।**
६ **मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० ४०१-४०२।**

इसके अतिरिक्त सम्भवत उसने **आयुर्वेद** के भी अनुवाद का प्रयत्न किया किन्तु उस कार्य को वह पूरा नही कर सका।

उसका सबसे महत्वपूर्ण ग्रथ **मुन्तखबुत्तवारीख** है जिसे उसने तीन भागो में विभाजित किया। पहले भाग में सुबुक्तगीन (३६७ हि०/९९७-९८ ई०) से हुमायूँ की मृत्यु तक का इतिहास, दूसरे भाग में अकबर के राज्यकाल के १००४ हि० (१५९५-९६ ई०) तक का इतिहास और तीसरे भाग में समकालीन सूफियो, विद्वानो, हकीमो तथा कवियो की सक्षिप्त जीवनियाँ दी है। कवियो की जीवनियाँ '**नफायसुल मआसिर**" पर आधारित है। उसने अपने इतिहास की प्रस्तावना में लिखा है कि ९९९ हि० (१५९० ई०) मे उसे कश्मीर के इतिहास के सकलन करने के उपरान्त कुछ अवकाश प्राप्त हो गया अत उसे इस बात की इच्छा हुई कि देहली के बादशाहो का सक्षिप्त इतिहास भी लिख डाले। इसका यह कारण है कि उसे इतिहास से बाल्यावस्था ही से बडी रुचि थी और उसे दरबार मे भी इतिहास से सम्बन्धित कार्य सौंपे जाते थे। इसी बीच में उसके आश्रयदाता निज़ामुद्दीन अहमद की भी मृत्यु हो गई अत उसने अपने इतिहास को **तारीखे मुबारकशाही** एव **निज़ामुत्तवारीखे निज़ामी**[1] के आधार पर तैयार किया और उसका नाम **मुन्तखबुत्तवारीख** रखा[2]।

यद्यपि उसने अपने इतिहास को **तबकाते अकबरी** का सक्षिप्त सस्करण बताया है और प्राय राजनीतिक घटनाएँ **तबकाते अकबरी** ही से उद्धृत की है किन्तु उसके इतिहास को उसके धार्मिक दृष्टिकोण एव उसकी साहित्य सम्बन्धी कुशलता के कारण बडा ही महत्व प्राप्त है। उसने अपने इतिहास के भाग एक की प्रस्तावना मे इतिहास के ज्ञान को बडा ही महत्वपूर्ण बताया है और अपनी रचना के सम्बन्ध में लिखा है कि उससे केवल उन लोगो को लाभ होगा जो न्यायकारी एव बुद्धिमान् है। उसके ग्रथ से उन लोगो को कोई भी लाभ न होगा जो शरा का पालन नही करते और उसके नियमो की उपेक्षा किया करते है[3]। अत उसके इतिहास को पढने के पूर्व उसके इतिहास मे सम्बन्धित दृष्टिकोण एव उसके जीवन-काल की विभिन्न परिस्थितियो का पूर्ण रूप से ध्यान रखना परमावश्यक है।

वह अबुल फज़ल तथा फैजी का सहपाठी था और सम्भवत शेख मुबारक नागौरी के स्वतत्र धार्मिक विचारो से वह बडा प्रभावित था। जब वह विद्यार्थी ही था तो उसने मख़दूमुल मुल्क मुल्ला अब्दुल्लाह सुल्तानपुरी को मीर जमालुद्दीन के **रौज़तुल अहबाब** नामक ग्रथ[4] की प्रशसा करके, जिसे

१ अर्थात् **तबक़ाते अकबरी**।
२ **मुन्तखबुत्तवारीख भाग १ पृ० ५**।
३ **मुन्तखबुत्तवारीख भाग १ पृ० ३**।
४ अमीर जमालुद्दीन अताउल्लाह बिन फ़ज़लुल्लाह अल हुसेनी अल दश्तकी अल शीराज़ी, सुल्तान हुसेन के समय में हिरात का सर्वोत्कृष्ट आलिम था। उसने **रौज़तुल अहबाब फी सियरिन्नबी वल आल वल असहाब** की रचना मीर अली शेर के आग्रह पर की और इसे ९०० हि० (१४९४ ९५ ई०) में पूरा किया। यह तीन मक़सद अथवा भागों में विभाजित है
(१) हज़रत मुहम्मद का इतिहास।
(२) प्रथम तीन ख़लीफ़ाओं का इतिहास।
(३) हज़रत अली एव अन्य ११ इमामों का इतिहास।
यह ग्रथ लखनऊ से १२९७ हि० (१८८० ८२ ई०) में प्रकाशित भी हो चुका है।

मख्दूमुल मुल्क जलवा देना चाहता था, रुष्ट कर दिया था। जब वह अकबर के दरबार में प्रस्तुत किया गया तब उसके प्रति लोगो को बडी आशायें थी। लोगो का यह विचार था कि यह उस समय के कट्टर आलिमो के धार्मिक अधविश्वासो का खडन कर सकेगा। उसे प्रस्तुत करते समय यह कहा गया था कि बदायूँ का यह विद्वान् हाजी इबराहीम सरहिन्दी का सिर तोड देगा। उस समय का सर्वोत्कृष्ट आलिम एव सद्र शेख अब्दुन्नबी भी उससे प्रसन्न न था कारण कि उसने दरबार में उपस्थित होने के लिये उसके सहारे की उपेक्षा की थी[1]। उसने उसे उसकी इच्छानुसार काई भी मददे मआश न प्रदान[2] की और यदि अबुल फजल दरबार में न आया होता तो सम्भवत आलिमो का ज़ोर तोडने के लिये उससे अधिक स्वतन्त्र विचारो का कोई आलिम न मिल पाता। अबुल फजल तथा फैजी एव अन्य लोगो को जो उन्नति अकबर के दरबार में प्राप्त हुई उसके कारण बदायूनी दरबार तथा दरबार के वातावरण से ही पूर्ण रूप से रुष्ट हो गया किन्तु उसका मेल समकालीन आलिमो से भी न हो सका। उसने अबुल फज़्ल को चापलूस बनाकर उसकी घोर निन्दा की है किन्तु उसने स्वय दरबार में चापलूसी करने में कोई कसर न उठा रखी थी। जब ९८७ हि० (१५७९-८० ई०) में उसके एक पुत्र का जन्म हुआ तो उसने अकबर की सेवा में अशर्फियाँ प्रस्तुत करके बालक का नाम रखने की प्रार्थना की, अपने साथी इमाम हाफिज मुहम्मद अमीन खतीब की सलाह को, कि इस अवसर पर बालक के दीर्घायु होने के लिये कुरान का पाठ कराया जाय, ठुकरा दिया। महाराणा प्रताप के विरुद्ध युद्ध में वह इस कारण भाग लेना चाहता था कि उसे वह जिहाद समझता था किन्तु उसने अकबर से उस युद्ध की अनुमति लेते समय जिहाद की इच्छा को छिपाते हुए अपना उद्देश्य यह प्रकट किया कि वह स्वामी भक्ति के कारण अपनी काली दाढी रक्त से रगना चाहता है।[3] जब उसे अनुमति मिल गई तो स्वत अकबर के चरणो का चुम्बन भी करना चाहा।[4] उसने अपनी ओर से अकबर के उससे रुष्ट होने का कारण यह बताया है कि जब उसे १५९०-९१ ई० में बदायूँ जाने की अनुमति दे दी गई थी तो उसने सद्रे जहाँ के परामर्श पर भी सिज्दा करना स्वीकार न किया[5] किन्तु १५९४ ९५ ई० में जब उसे **बहरुल असमार** की रचना का आदेश हुआ तो उसने स्वय जमीन बोस किया।

उसने सम्भवत १५९० ई० मे ही अपने इतिहास के लिये सामग्री एकत्र करनी प्रारम्भ कर दी थी। उसी वर्ष उसे बदायूँ जाने की भी अनुमति प्रदान कर दी गई किन्तु शम्साबाद पहुँचकर वह रुग्ण हो गया और बदायूँ मे अवकाश से अधिक ठहर गया। उसी समय शाही पुस्तकालय से **खिरद अफज़ा** नामक ग्रथ कहीं खो गया था और सलीमा सुल्तान बेगम को अध्ययन हेतु उस ग्रथ की आवश्यकता थी। सम्भवत लोगो का यह विचार था कि यह ग्रथ मुल्ला अब्दुल कादिर के पास ही है। सतोषजनक उत्तर न प्राप्त होने के कारण उसकी मददे मआश रोक दी गई और उस ग्रथ की उससे माँग की गई। अकबर का उससे रुष्ट हो जाना स्वाभाविक ही था। शेख अबुल फज़्ल ने भी अकबर से उसकी

१ मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० १७३।
२ मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० २७५ २७६।
३ मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० २२८ २२९।
४ मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० ३७६।
५ मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० ४०२।

सिफारिश की कि सम्भवत किसी कारणवश न आया होगा किन्तु अकबर ने कोई बात न सुनी[1] वह अकबर के शिविर में भीमबर नामक स्थान पर उपस्थित हुआ और हकीम ऐनुल मुल्क का बीमारी का सर्टिफिकेट पेश किया किन्तु अकबर ने उसपर विश्वास न किया[2]। बदायूनी ने फैंजी को, जो उस समय दक्षिण के सुल्तानो के पास राजदूत बनाकर भेजा गया था, सिफारिश करने के लिये दो पत्र कश्मीर से लिखे। फैंजी ने २३ फरवरी १५९२ ई० को अहमदनगर से सिफारिश करते हुए एक पत्र बदायूनी के विषय में अकबर को लिखा[3] जिससे अकबर उसकी ओर से सन्तुष्ट हो गया किन्तु फिर भी फैंजी तथा अबुल फजल के प्रति उसके रोष में कमी न हुई और उसने उनके विषय में हर स्थान पर बडे कठोर शब्दो का प्रयोग किया है।

इन्ही कठिनाइयो एव निराशा के वातावरण में उसने अपनी सामग्री का सकलन किया किन्तु उसने अपने ग्रथ की रचना १५९४-९६ ई० के बीच में की जब कि अकबर के प्राय आदेश जारी हो चुके थे। उन्हे उन सब के विषय में ज्ञात तो अवश्य था किन्तु उनका क्रम उसे निश्चित रूप से सम्भवत याद न था। अत उसने सभी आदेशो को विभिन्न वर्षो और विशेष रूप से ९८६ हि० (१५७८-७९ ई०) के इतिहास के अन्तर्गत इस प्रकार लिखा है जिससे यह पता चलता है कि अकबर ने उसी वर्ष इस्लाम के विरुद्ध अनेक आदेश दिये और वह केवल इस्लाम का विरोधी ही नही अपितु नास्तिक भी हो गया था किन्तु उसने इस वर्ष के इतिहास के प्रसग में स्वय स्वीकार किया है कि "क्योंकि इन छोटी-छोटी बातो का सविस्तार उल्लेख तथा इन घटनाओं का सकलन सन् अनुसार असम्भव था अत इतने ही को पर्याप्त समझा गया। मैंने इन घटनाओं के लिखने की धृष्टता, जिनका लिखना सावधानी की दृष्टि से बडा ही अनुचित था, केवल दीन के दर्द तथा इस्लाम के 'स्वर्गीय धर्म' के प्रति जो अब अनका के समान अप्राप्य हो गया है शोक के कारण किया है[4]।" उसने अपने इतिहास के अन्त मे भी लिखा है कि इस्लाम के १००० वर्ष पूरे हो जाने के कारण इस धर्म के अधिनियमो मे बडी उथल पुथल हो रही है और जो कोई दो वाक्य भी लिख सकता है वह धर्म से अनभिज्ञता प्रदर्शित करता तथा अपने स्वार्थवश सत्य को छिपा रहा है अत उसने किसी सांसारिक लोभ पर ध्यान दिये बिना केवल इस्लाम के हित पर ध्यान रखते हुए इस ग्रन्थ की रचना की है।[5]

यद्यपि उसने इस बात का दावा किया है कि जो कुछ उसने लिखा है वह सब सच-सच लिखा है किन्तु बहुत सी बातें जो एक ही स्थान पर लिखी है उनका खडन उसी की रचना के अन्य अशो

१ मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० ३७६ ३७७।
२ मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० ३८३।
३ मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० ३०३ -३०५।
४ मुन्तखबुत्तवारीख भाग २ पृ० २६४। जियाउद्दीन बरनी ने भी मुहम्मद तुगलुक के इतिहास को क्रम से न लिखने का कारण इसी प्रकार बताया है। वह लिखता है "यदि मैं उसके राज्यकाल के प्रत्येक वर्ष का हाल लिखू और जो कुछ उस वर्ष में हुआ उसका सविस्तार उल्लेख करू तो कई ग्रन्थ हो जायेंगे। मैंने इस इतिहास में सुल्तान मुहम्मद की राज्य व्यवस्था तथा उसके शासन सम्बन्धी समस्त कार्यों का सक्षिप्त उल्लेख किया है। प्रत्येक विजय के आगे पीछे घटने तथा प्रत्येक हाल और घटना के पहले या अन्त में घटने पर कोई ध्यान नहीं दिया है क्योंकि बुद्धिमानों को शासन नीति एव राज्य व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों के अध्ययन से शिक्षा प्राप्त होती है।" (जियाउद्दीन बरनी : तारीखे फीरोजशाही पृ० ४६७ ६८, रिजवी : तुग़लुक कालीन भारत भाग १ पृ० ३७)।
५ मुन्तखबुत्तवारीख भाग ३ पृ० ३६३ ३६५।

से हो जाता है। यदि उसने धार्मिक अधिनियमो को किसी क्रम से लिख दिया होता तो अकबर के धार्मिक विचारो के विकास एव धार्मिक नीति का बडा अच्छा ज्ञान प्राप्त हो जाता और उसके इतिहास का महत्व बहुत ही बढ जाता किन्तु उसका मूल उद्देश्य इस्लाम के कल्पित ह्रास का चित्र प्रस्तुत करना था। उसके इतिहास की इस कारण उपेक्षा असम्भव है कि उसमें सुन्नी धर्म के कट्टर अनुयायियो का दृष्टिकोण भली भाँति प्रस्तुत किया गया है किन्तु केवल उसी के इतिहास अथवा उसी के जैसा दृष्टिकोण रखने वालो की रचना के आधार पर, चाहे वे जेसुइट पादिरी हो अथवा हजरत मुजद्दिद अल्फेसानी शैख अहमद सरहिन्दी, अकबर के विषय में घटनाओ का निष्पक्ष भाव से विश्लेषण किये बिना कोई धारणा बना लेनी उचित नही। इसमें सन्देह नही कि उस रचना शैली मे बडी ही कुशलता प्राप्त थी। उसने प्राय थोडे से शब्दो से ही वह प्रभाव उत्पन्न कर दिया है जो सम्भवत लम्बे चौडे विवरण से न हो सकता था।

हुमायूँ के इतिहास के प्रसग मे उसने उस समय के शीआ सुन्नी मतभेदो एव अन्य समकालीन लोगो के धार्मिक विचारो की बडे रोचक ढग से चर्चा की है। हुमायूँ के समय के कवियो की सक्षिप्त जीवनियो तथा उनकी कविताओ के उद्धरणो ने भी उसकी रचना के महत्व को बहुत ही बढ़ा दिया है और यद्यपि राजनीतिक घटनाए **तबकाते अकबरी** ही से ली गई है किन्तु उन्हे जिस प्रकार उसने अपने ढग से प्रस्तुत किया है उसके कारण उसकी रचना बडी ही बहुमूल्य हो गई है।

मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह फिरिश्ता

गुलशने इबराहीमी अथवा तारीखे फिरिश्ता

मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह अस्तराबादी, जो फिरिश्ता के नाम से प्रसिद्ध है, गुलाम अली हिन्दू शाह का पुत्र था। वह अपनी युवावस्था मे अहमदनगर के सुल्तान मुरतजा निजाम शाह की सेवा में, जिसने १५६५ से १५८८ ई० तक राज्य किया, प्रविष्ट हो गया। अहमदनगर ही में उसने हिन्दुस्तान के मुसलमान बादशाहो तथा सूफी सन्तो का इतिहास लिखना निश्चय कर लिया था किन्तु अहमदनगर मे उसे आवश्यक ग्रन्थ न मिल सके। २८ दिसम्बर १५८९ ई० को वह बीजापुर के सुल्तान के दरबार मे पहुँच गया। जुलाई १६०४ ई० में फिरिश्ता, इबराहीम आदिल शाह की पुत्री बेगम सुल्तान की पालकी के साथ साथ बीजापुर से गोदावरी पर स्थित पैठान नामक स्थान पर, जहाँ बेगम सुल्तान का विवाह अकबर के पुत्र दानियाल से हुआ, पहुचा। तदुपरान्त वह बुरहानपुर लौट आया। जहाँगीर के राज्य काल के प्रारम्भ में इबराहीम आदिल शाह ने फिरिश्ता को किसी कार्य से लाहौर भेजा। १६१४ ई० मे वह अमीरगढ के किले में पहुचा और सम्भवत वह १६२३-२४ ई० तक जीवित रहा। फिरिश्ता को इबराहीम आदिल शाह द्वारा भी इतिहास की रचना की प्रेरणा प्राप्त हुई।

फिरिश्ता ने "गुलशने इबराहीमी" जिसे "तारीखे फिरिश्ता" भी कहते है, इबराहीम आदिल शाह को १०१५ ई० (१६०६-७ ई०) में समर्पित की। १०१८ हि० (१६०९-१० ई०)

में इसी इतिहास को उसने "तारीखे नौरस" के नाम से इबराहीम आदिल शाह को समर्पित किया। यह इतिहास एक प्रस्तावना तथा १२ खडो में विभाजित है —

प्रस्तावना—मुसलमानों के राज्य के पूर्व के हिन्दू राजाओ का इतिहास —
मकाला (खण्ड) १ लाहौर के गजनवियो का इतिहास

२ देहली के सुल्ताना का इतिहास

३ दक्षिण के सुल्ताना का इतिहास छ भागो मे.

(१) बहमनी (२) आदिलशाही (३) निजामशाही (४) कुतुबशाही (५) एमादशाही (६) बरीदशाही।

४ गुजरात

५ मालवा

६ बुरहानपुर

७ बगाल तथा जौनपुर के शर्की सुल्तान

८ सिन्ध, थट्टा तथा मुल्तान

९ सिन्ध के जमीदार

१० कश्मीर

११ मलाबार

१२ हिन्दुस्तान के सूफी सन्त तथा हिन्दुस्तान का सक्षिप्त विवरण।

"तबक़ाते अकबरी" की भाँति फिरिश्ता ने भी अपनी इस महत्वपूर्ण रचना के लिये बहुत से ग्रथ एकत्र किये। उसने लगभग ३५ ऐतिहासिक ग्रथो का अध्ययन किया और कुछ ऐसे ग्रन्थों का भी उपयोग किया जो सम्भवत निज़ामुद्दीन को उपलब्ध न थे। उनमें से ऐसे ८ मुख्य ग्रथ निम्नाकित हैं —

१ मुलहिकते शेख ऐनुद्दीन बीजापुरी
२ बहमन नामा लेखक शेख आज़री
३ तारीखे मिनाकिती
४ तुहफतुस्सलातीन बहमनी लेखक मुल्ला दाऊद बीदरी
५ तारीखे अलफी
६ हबीबुस्सियर
७ तारीखे बगाला
८ मसनवे क़ुतुबी

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में जो प्रसिद्धि "तारीखे फिरिश्ता" को प्राप्त हुई है वह किसी अन्य इतिहास को न मिल सकी। और बहुत समय तक शोध सम्बन्धी कार्यों में केवल इसी ग्रथ का प्रयोग होता रहा। इसमें सन्देह नही कि फिरिश्ता ने अपने इतिहास की रचना के लिये जितनों

सामग्री एकत्र की उतनी किसी अन्य इतिहासकार ने नही की। दक्षिण के सुल्तानो के इतिहास के सम्बन्ध में उसकी रचना को विशेष महत्व प्राप्त है।

मीर अबू तुराब वली

तारीखे गुजरात

मीर अबू तुराब वली शीराज के सलामी सैयिदो के वश से सम्बन्धित था। उसके पिता शाह कुतुबुद्दीन शुकुल्लाह तथा उसके चाचा कमालुद्दीन फतहुल्लाह शाह का गुजरात में बडा आदर सम्मान किया जाता था। उसका दादा मीर गयासुद्दीन[1], जो सैयिद मीर कहलाता था अमीर सद्रुद्दीन बिन मीर गयासुद्दीन मसूर शीराजी का शिष्य तथा बडा प्रसिद्ध विद्वान् था। सैयिद शाह मीर गुजरात में सर्वप्रथम सुल्तान कुतुबुद्दीन (८५५ हि०/१४५१ ई०–८६३ हि०/१४५९ ई०) के राज्य काल में पहुँचा किन्तु उसने सुल्तान महमूद बेगरह के राज्यकाल (८६३ हि०/१४५९ ई०—९१७ हि०/१५११ ई०) में ८९८ हि० (१४९२-९३ ई०) में चाम्पानीर मे निवास प्रारम्भ किया। शाह कुतुबुद्दीन शुकुल्लाह एव शाह कमालुद्दीन हुमायूं के भी बडे विश्वासपात्र हो गये थे और उनके द्वारा हुमायूँ को गुजरात के अभियान में बडी सहायता मिली। मीर अबू तुराब वली ने भी उचित रूप से हुमायूं का साथ दिया।

९७४ हि० (१५६६ ६७ ई०) में मीर अबू तुराब वली गुजरात के अमीर चिंगीज खा का विश्वासपात्र हो गया था जिसने उसे एतमाद खा से सधि की वार्ता करने के लिये भेजा। *चिंगीज खा की सफर ९७५ हि० (अगस्त सितम्बर १५६७ ई०) मे हत्या हो गई* और ९८० हि० (१५७२ ७३ ई०) में जब अकबर गुजरात मे प्रविष्ट हुआ तो एतमाद खा ने मीर अबू तुराब के हाथ अकबर की सेवा मे एक पत्र भेजा जिसमें उससे गुजरात राज्य पर अधिकार जमा लेने का आग्रह किया। अकबर ने मीर अबू तुराब वली को नाना प्रकार से सम्मानित किया।

९८५ हि० (१५७७ ई०) में अकबर ने उसे मीरे हज नियुक्त कर दिया और वह दरबारियो एव बेगमो के एक समूह को हज हेतु मक्का ले गया। ९८७ हि० (१५७९ ई०) मे वह एक बहुत बडा पत्थर[2] लेकर वापस हुआ जिसके विषय में कहा जाता था कि उसके ऊपर हजरत मुहम्मद के चरण का चिह्न बना है। सूरत पहुँचकर उसने अपने आगमन की सूचना अकबर को भेजी। अकबर ने यह आदेश दिया कि वह आगरा पहुँच कर चार मील पर ठहर जाय। अकबर उस पत्थर को आदरपूर्वक अपनी राजधानी मे ले गया। ९८८ हि० (१५८० ई०) मे जब अबू तुराब को गुजरात वापस जाने की अनुमति प्रदान की गई तो उसे उस पत्थर को भी ले जाने की अनुमति दे दी गई। वह उसे अहमदाबाद के समीप असावल लेकर पहुचा और उसके ऊपर एक गुम्बद तथा खानकाह का निर्माण करा दिया। ९९२ हि० (१५८३ ई०) में एतमाद खा को गुजरात का

१ मीर सद्रुद्दीन मुहम्मद अल हुसैनी बिन मीर गयासुद्दीन मसूर शीराजी का जन्म शीराज में ८२८ हि० (१४२५ ई०) में हुआ। वे अपने समय के बहुत बडे विद्वान् थे। बायदरी तुर्कमानों ने ९०३ हि० (१४९७ ई०) में *उनकी हत्या कर दी।*

२ कदमे रसूल।

हाकिम तथा अबू तुराब को अमीने सूबा नियुक्त कर दिया गया। वह १३ जमादी-उल-अव्वल १०३३ हि० (२४ जनवरी १५९५ ई०) को मृत्यु को प्राप्त हो गया और असावल में दफन कर दिया गया।

उसने अपने संक्षिप्त इतिहास में केवल उन्हीं घटनाओं का उल्लेख किया है जिनका उसे स्वयं ज्ञान था। हुमायूँ के गुजरात अभियान सम्बन्धी उसने जिन घटनाओं का उल्लेख किया है, उनकी उसे स्वयं जानकारी थी और अनेक घटनाओं में उसके पिता, चाचा तथा स्वयं उसने भाग लिया था।

तारीखे गुजरात में बहादुर शाह (९३२ हि०/१५२६ ई०—९४३ हि०/१५३६ ई०) से ९९२ हि० (१५८४ ई०) तक की महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख है। इसकी अभी तक केवल एक ही प्रति का पता चल सका है जिसे ई० डेनिसन रोस ने कलकत्ते से १९०९ ई० में प्रकाशित कराया था।

सिकन्दर बिन मुहम्मद मंझू

मिरआते सिकन्दरी

सिकन्दर बिन मुहम्मद मंझू बिन अकबर, गुजरात के सूबेदार खाने आजम अजीज कोका की सेवा में कुछ समय तक रहा और उसने गुजरात के सुल्तान मुजफ्फर शाह तृतीय के विरुद्ध मीर्जा अजीज कोका के साथ युद्ध किया। मुजफ्फर शाह तृतीय १००० हि० (१५९१ ई०) में राजसिंहासन से पृथक् कर दिया गया। १०२६ हि० (१६१७ ई०) में वह जहाँगीर की सेवा में अहमदाबाद में उपस्थित हुआ। जहाँगीर ने उसके विषय में "तुजुक" में लिखा है कि, 'उसे गुजरात के इतिहास का बड़ा अच्छा ज्ञान है।' सिकन्दर बिन मुहम्मद मंझू ने "**मिरआते सिकन्दरी**" १०२० हि० (१६११ ई०) अथवा १०२२ हि० (१६१३ ई०) में समाप्त की।

इसमें जफर खाँ (मुजफ्फर शाह प्रथम) से लेकर सुल्तान मुजफ्फर शाह तृतीय की मृत्यु १००० हि० (१५९१ ई०) तक के गुजरात के सुल्तानों का इतिहास दिया गया है। राजनीतिक घटनाओं के साथ साथ सिकन्दर ने विभिन्न नगरों के निर्माण तथा अन्य सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर भी कहीं-कहीं प्रकाश डाला है। उसने बहुत-सी घटनाएं अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर भी लिखी है। "**जफरुल वालेह**" का लेखक हाजी उद्दबीर भी "**मिरआते सिकन्दरी**" से लाभान्वित हुआ है। गुजरात के कुछ अन्य इतिहास, जो इस समय अप्राप्य हैं, सिकन्दर को प्राप्त थे अतः उसका इतिहास बड़ा ही महत्वपूर्ण है। हुमायूँ तथा बहादुर शाह के इतिहास के प्रसंग में उसने बहुत सी घटनाओं का अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर उल्लेख किया है।

अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर अल मक्की

जफरुल वालेह बे मुजफ्फर व आलेह

अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर अल मक्की अल आसफी उलुग खानी का जन्म सम्भवतः १५४० ई० में हुआ था। वह १५५५ ई० में भारतवर्ष पहुँचा और अपने पिता के साथ अहमदाबाद में निवास करने लगा। १५५९ ई० में वह गुजरात के एक प्रमुख अमीर ...

सेवा में प्रविष्ट हो गया। १५६० ई० में उसने बगौदा के निकट एक युद्ध में बड़ा महत्वपूर्ण भाग लिया जिसके फलस्वरूप उसे दो गाँव प्रदान किये गये। १५७३ ई० में जब अकबर ने गुजरात के बहुत बड़े भाग को अपने अधिकार में कर लिया तो उसके पिता को बहुत से वक्फो का प्रबन्ध सौंप दिया। इन वक्फो की आय मक्का मदीना भेजी जाती थी और यह कार्य लेखक के सुपुर्द था। इस प्रकार उसके इतिहास से पता चलता है कि वह १५७४ ई० में मक्का में था। १५७६ ई० में उसके पिता की मृत्यु हो गई और सम्भवत वक्फ का प्रबन्ध उसके हाथ से निकल गया। तदुपरान्त वह गुजरात के एक अन्य अमीर सैफुलमुल्क की सेवा में प्रविष्ट हो गया। १५९५ ई० मे उसकी माता की मृत्यु हो गयी। तत्पश्चात् वह खानदेश के एक प्रमुख अमीर फौलाद खा की सेवा में पहुच गया। १६०५ ई० में फौलाद खा की मृत्यु हो गई।

सम्भवत हाजी उद्दबीर ने अपने इतिहास की रचना १६०५ ई० में समाप्त कर ली थी किन्तु वह उसमें बाद मे भी सशोधन करता रहा और कई स्थानो पर उसने "मिरआते सिकन्दरी" का उल्लेख किया है जिसकी रचना १६११ अथवा १६१३ ई० में समाप्त हुई। इससे पता चलता है कि लेखक उस समय भी अपनी पाँडुलिपि को सकलित करने में व्यस्त था। उसने मुख्य रूप से अपने ग्रन्थ में निम्नलिखित इतिहासो के हवाले दिये है :—

१—तबकाते हुसाम खानी अथवा तारीखे बहादुरशाही,

२—तुहफतुस्सादात, लेखक आराम कश्मीरी,

३—तारीखे आजमी।

"तारीखे बहादुरशाही" की चर्चा "मिरआते सिकन्दरी" में भी कई स्थानो पर हुई है किन्तु "तुहफतुस्सादात" का उल्लेख केवल एक ही बार "मिरआते सिकन्दरी" में किया गया है। दुर्भाग्यवश इसमें से तीनों ग्रन्थों का इस समय तक कोई पता नहीं चल सका है।

"जफरुल वालेह" में हाजी उद्दबीर ने गुजरात के सुल्तानो के इतिहास के साथ साथ बीच बीच मे अन्य ऐतिहासिक घटनाओ, जीवनियों तथा वशो का विवरण भी दिया है। इस प्रकार जौनपुर, मालवा, खानदेश तथा देहली के सुल्तानों का इतिहास भी आ गया है।

गुजरात में बहुत समय तक सेवा करने तथा उन इतिहासो को जो अब अप्राप्य हैं, अपनी रचना में उद्धृत करने के कारण "जफरुल वालेह" को अत्यधिक महत्व प्राप्त है। मालवा तथा गुजरात के सुल्तानो के विषय में उसने जिन घटनाओं का उल्लेख किया है उनमे से बहुत सी घटनाए किसी अन्य ग्रथ मे नही मिलती। इस प्रकार बहुत से ऐतिहासिक विवरणो का एकमात्र साधन केवल हाजी उद्दबीर ही है और उसकी उपेक्षा करना असम्भव है। हुमायूँ तथा गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह के सम्बन्ध में भी उसने अनेक ऐसी घटनाओ का उल्लेख किया है जिनकी चर्चा अन्य इतिहासकारो ने नही की है। उसने इस प्रसग में अकबरनामे का भी बड़ी आलोचनात्मक दृष्टि से प्रयोग किया है।

मीर मुहम्मद मासूम नामी

तारीखे सिन्ध

मीर मुहम्मद मासूम नामी बिन सैयिद सफाई अल हुसैनी अल तिरमिजी अल भक्करी, भक्कर के एक शेखुल इस्लाम का पुत्र था। ९९१ हि० (१५८३ ई०) में वह अपने पिता की मृत्यु के

रान्त गुजरात पहुँचा और **"तबकाते अकबरी"** के लेखक निजामुद्दीन अहमद का मित्र हो गया। १५९५-९६ ई० में अकबर के दरबार के सेवकों में सम्मिलित हो गया और २५० का मसब प्राप्त या। १०१२ हि० (१६०३-४ ई०) में उसे शाह अब्बास सफवी के पास राजदूत बनाकर ईरान भा गया। जब वह वहाँ से वापस आया तो जहाँगीर ने उसे अमीरुल मुल्क की उपाधि प्रदान की। ' १०१५ हि० (१६०६-७ ई०) में भक्कर लौट गया और सम्भवत उसी के कुछ समय बाद उसकी मृत्यु हो गयी।

"तारीखे सिन्ध" में, जिसे "तारीखे मासूमी" भी कहा जाता है, उसने सिन्ध के सुल्तानो इतिहास की, जो मुसलमानों की विजय से लेकर अकबर के शासन-काल तक राज्य करते रहे, र्चा की है और इसे चार खडो मे विभाजित किया है

१—सिन्ध की विजय

२—हिन्दुस्तान के बादशाहों द्वारा नियुक्त गवर्नरों का इतिहास, ८०९ हि० (१३९९ ई०) क, तथा सूमरा एव सुम्मा वश का इतिहास ९१६ हि० (१५१० ई०) तक।

३—अरगून वश का इतिहास, मुल्तान महमूद खा ८९२ हि० (१५७४ ई०) तक तथा ट्टा के कुछ सुल्तानों का इतिहास ९९३ हि० (१५८५ ई०) तक।

४—सिन्ध का इतिहास, ९८२ हि० (१५७४ ई०) से अकबर की विजय १००८ हि० १५९९-१६०० ई०) तक।

मीर मुहम्मद मासूम को सिन्ध के इतिहास का विशेष ज्ञान था और उसने अपनी जानकारी , आधार पर सिन्ध की प्राचीन ऐतिहासिक छोटी-छोटी घटनाओ को सकलित करके अपना तिहास तैयार किया है। सम्भवत ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद की मित्रता से भी उसे बडा लाभ आ होगा और उसने अपने इतिहास को यथासम्भव बिना किसी पक्षपात के प्रस्तुत करने का यत्न किया है। हुमायूँ के सिन्ध के निवास काल के विषय में उसने जो कुछ भी लिखा है, उसकी उपेक्षा सम्भव नही।

गौसी शत्तारी

ुलजारे अबरार

मुहम्मद गौसी बिन हसन बिन मूसा शत्तारी अथवा मुहम्मद बिन हसन मान्डू निवासी ने **गुल-जारे अबरार** की रचना ९९८ हि० (१५९० ई०) में प्रारम्भ कर दी थी किन्तु १०१० हि० (१६०२ ई०) तक उसे इस कार्य को स्थगित ही रखना पडा। वास्तव में उसने अपने इस ग्रथ की रचना १०२० हि० (१६११ ई०) तथा १०२२ ई० (१६१३ ई०) के बीच में की। इसमें लगभग ५७५ हिन्दुस्तानी सूफियो की जीवनियाँ दी गई है जिनमें से प्राय गुजरात निवासी थे। यह ५ चमनो (भागो) में विभाजित है। पहले, दूसरे और तीसरे चमन में ७वी, ८वी और ९वी शती हिजरी के सूफियो का उल्लेख है। चौथे चमन में १०वी शती और प्रारम्भिक ११वी शती हिजरी के सूफियो का उल्लेख एव पाँचवें चमन में शत्तारियो की चर्चा है। मुहम्मद गौसी को शत्तारी सत परम्परा का पूर्ण ज्ञान था। १५वी शती के मध्य से लेकर १७वी शती ई० के मध्य तक शत्तारियो ने भारतवर्ष के धार्मिक, राजनीतिक एव सामाजिक जीवन में बडा ही महत्वपूर्ण भाग लिया। भारत-वर्ष के अन्य धर्मों के प्रति शत्तारी सूफिया को बडी सहानुभूति थी। उन्हें भारतीय सतो के ग्रथा,

उनकी कविताओ एव भारतीय परम्परा में बडी ही रुचि थी। जन साधारण की भाषा में काव्यों की रचना करना वे अपने लिये बडे श्रेय की बात समझते थे। गौसी शत्तारी को इन सभी सूफियो का बडा ही उत्तम ज्ञान था। उसने उनकी जीवनियाँ बडे ही रोचक ढग से प्रामाणिक सूत्रो के आधार पर लिखी है। गौसी को अपने समकालीन सतो से भेंट करने और उनकी जीवनियो उनकी रचनाओ एव उनके कार्यो की जानकारी प्राप्त करने की बडी तीव्र इच्छा भी रहती थी और उसी लगन के कारण **गुलज़ारे अबरार** की रचना इतने उत्तम ढग से सम्भव हो सकी। उसका उन अमीरो से भी सम्पर्क था जिन्हे सूफी सतो तथा उनकी कीर्तियो से सहानुभूति थी। अनेक स्थानो पर उसने बडे-बडे अमीरों तथा अन्य सूफी सतो के वाद विवाद एव उनकी वार्ताओ का भी उल्लेख किया है। अनेक राजनीतिक घटनायें, जिनका तत्कालीन इतिहासो मे कोई उल्लेख नही, **गुलज़ारे अबरार** में प्राप्य हैं। **गुलज़ारे अबरार** का अध्ययन केवल भारतीय इतिहास से रुचि रखने वालो के लिये ही आवश्यक नही अपितु हिन्दी साहित्य के इतिहास के शोधको के लिये भी लाभदायक हैं। यह ग्रथ अभी तक प्रकाशित नही हो सका है। इसकी प्रतियाँ लिन्डेसियाना, बुखारा, एशियाटिक सोसाइटी बगाल, आसफिया लाइब्रेरी हैदराबाद, रिज़ा लाइब्रेरी रामपुर तथा अलीगढ विश्वविद्यालय (हबीबगज सग्रह) में प्राप्य है। लिन्डेसियाना की प्रति के रोटोग्राफ से मुहम्मद गौस एव मझन की जीवनियो का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है।

शरीफ़ बिन दोस्त मुहम्मद "मोतमद खां"

इक़बालनामए जहाँगीरी

मुहम्मद शरीफ बिन दोस्त मुहम्मद ईरान के एक साधारण वश से सम्बन्धित था। उसने जहाँगीर के सिंहासनारोहण के समय भी जहाँगीर की अत्यधिक सहायता की और उसके राज्य-काल के तीसरे वर्ष में अहदियो का बख्शी नियुक्त हुआ तथा मोतमद खा की उपाधि द्वारा सम्मान प्राप्त किया। जहाँगीर ने अपने राज्यकाल के १७वें वर्ष (१०३१ हि० । १६२२ ई०) में दक्षिण से वापस होते हुए अधिक अस्वस्थ हो जाने के कारण उसे आदेश दिया कि वह उसकी **तुज़ुक** को लिखता रहे। शाहजहाँ के राज्यकाल के दूसरे वर्ष में वह दूसरे न० का बख्शी और १०वें वर्ष में मीर बख्शी नियुक्त हुआ। शाहजहाँ के राज्यकाल के १३वें वर्ष अर्थात् १०४९ हि० (१६३९-४० ई०) में उसकी मृत्यु हो गई।

उसने अपने इतिहास की सामग्री का उल्लेख करते हुए लिखा है कि, "शाहशाह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह के आदेशानुसार शेख अबुल फज़ल ने उनके सिंहासनारोहण से लेकर अपनी मृत्यु के समय तक का अकबर के राज्यकाल का इतिहास **अकबरनामा** में लिखा है और उसे तीन भागो में विभाजित किया है: प्रथम भाग में अकबर के सम्मानित पूर्वजो का सक्षिप्त हाल है, दूसरे भाग में अकबर के सिंहासनारोहण से लेकर ४७वें इलाही वर्ष तक का हाल है और इसे दो खडो में विभाजित किया गया है - प्रथम खड मे सिंहासनारोहण से लेकर एक करन तक का हाल, दूसरे खड मे ४७वें वर्ष तक का हाल है। उसी वर्ष शेख अबुल फज़ल की मृत्यु हो गई। तीसरे भाग में उन अधिनियमो एव कानूनो का उल्लेख है जिन्हे अकबर शाह गाज़ी ने कवायदे मतीन तथा शरए मुबीन[1] के अनुसार चलाया। दूसरे और तीसरे खड को उसने प्रयत्न करके प्राचीन

१ शरा के सच्चे एवं दृढ सिद्धान्तों के अनुसार।

फारसी में लिखा है जो कानों को बड़ी बुरी एव अपरिचित लगती है और सर्वसाधारण के लिये उसका पढ़ना तथा समझना बड़ा कठिन है[1]। ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद ने हिन्दुस्तान के सुल्तानो का इतिहास सक्षिप्त रूप से सकलित किया है और उसका नाम **तबक़ाते अकबरी** रक्खा है। हज़रत खाकानी के राज्यकाल की घटनाओं के ३७ वर्ष का हाल सक्षिप्त रूप से उसमें लिखा है। ख्वाजा अता[2] बेग कज़वीनी ने भी उनकी सल्तनत का थोडा सा हाल अपनी योग्यतानुसार लिखा है किन्तु उसे पूरा करने का अवसर उसको न मिल सका अत. इस हीन एव तुच्छ व्यक्ति दोस्त मुहम्मद शरीफ ने, जिसकी उपाधि मोतमद खा है और जिसे इस सम्मानित दरबार के खानाज़ाद होने का सम्मान प्राप्त है और जो हज़रत के आश्रय के हुकूक इस फिदाई के ऊपर साबित है, अपनी युवावस्था इस समय तक इतिहास के अध्ययन एव भूतकाल के हाल की खोजबीन में विशेष रूप से इस उत्कृष्ट वश से सम्बन्धित घटनाओं एव विवरण को लिखने मे व्यतीत की है, अत. उसकी इच्छा हुई कि अनन्त तक रहने वाले इस राज्य के इतिहास की रचना की जाय और उसे बनावट एव अलंकारो से पृथक् करके प्रचलित भाषा मे लिखा जाय ताकि उससे सभी लोग लाभान्वित हो सकें। वह रचना-विधि के विषय में लिखता है, "इस विषय में मैं प्रयत्न करता रहा। घटनाओं एव वाकेआत के शोध के सम्बन्ध मे मैं बडी सावधानी से कार्य करता रहा। जो कुछ मैंने अपनी आँखो से देखा था उसे बिना घटाये बढाये लिख दिया। जो कुछ इस तुच्छ की जानकारी के पूर्व घटा था उसके विषय में शेख़ (अबुल फज़ल) के शोध को शेख़ निज़ामुद्दीन अहमद एव ख्वाजा अता बेग की रचना से मिला कर विश्वस्त एव वृद्ध लोगो से सशोधित कराने के उपरान्त, लिखा किन्तु सर्वदा सेवा में उपस्थित रहने तथा कार्य की अधिकता के कारण जो कुछ लिखा था उसे सुव्यवस्थित करने का अवसर न मिल सका यहाँ तक कि १०२९ हि० (१६२० ई०) अर्थात् जहाँगीरी राज्य के १५वें शम्सी वर्ष के बाद, कश्मीर के रमणीक एव हृदयग्राही भूभाग मे अपनी पाँडुलिपि को पुस्तक का रूप दिया।"

१ **अकबर नामा** का विभाजन इस प्रकार है :—

१—अकबर के जन्म, उसके पूर्वजों तथा अकबर के शासन काल के १७वें वर्ष तक का इतिहास जो कि निम्नांकित खंडों में विभाजित है :—

(अ) अकबर का जन्म, तीमूरियों की वंशावली, बाबर तथा हुमायूं के राज्य का सविस्तार हाल।

(ब) अकबर के सिंहासनारोहण से लेकर १७वें वर्ष के मध्य तक का हाल। यह भाग शाबान १००४ हि० (अप्रैल १५९६ ई०) अथवा अकबर के शासन काल के ४१वें वर्ष में पूरा हुआ।

२—अकबर के शासनकाल के १७वें वर्ष के मध्य से लेकर ४६वें वर्ष तक का उल्लेख।

प्रथम भाग के अ और ब खंडों को साधारण रूप से अबुल फ़ज़ल के समय के कुछ बाद से ही भाग १ और भाग २ के रूप में अलग अलग नक़ल किया जाने लगा और उसके दूसरे भाग को उपर्युक्त क्रम से तीसरा भाग कहा जाता था।

"अकबर नामा" का तीसरा भाग **"आईने अकबरी"** है। अबुल फ़ज़ल ने **"अकबर नामा"** के साथ साथ उसकी भी रचना प्रारम्भ कर दी थी किन्तु इसने एक पृथक् ग्रन्थ का ही रूप धारण कर लिया है। इसमें अकबर के राज्य काल से सम्बन्धित आँकड़ों तथा राज्य व्यवस्था सम्बन्धी अन्य नियमों एवं समस्याओं का सविस्तार उल्लेख किया गया है।

२ ख्वाजा अमद बेग।

उसने इस इतिहास को तीन भागो में विभाजित किया। प्रथम भाग मे अकबर के पूर्वजो का हाल जिसमें जो कुछ शेख (अबुल फजल) ने लिखा था उसमें बहुत कम घटाया बढाया है। दूसरे भाग में अकबर के सिंहासनारोहण से अकबर की मृत्यु तक का हाल और तीसरे भाग में नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर का हाल।

यद्यपि मोतमद खां ने अकबर का हाल प्राय **अकबर नामा** के आधार पर लिखा है किन्तु **अकबर नामा** की भाषा के जटिल होने के कारण कहीं-कहीं घटनाओं को समझने मे जो कठिनाई हो जाती है उसका निराकरण उसने अपनी इस रचना में कर दिया है। अबुल फजल की अशुद्धिया को भी ठीक करने का प्रयत्न किया है किन्तु प्राय अशुद्धियाँ उसी रूप में रह गई है और इस सम्बन्ध में उसके ग्रथ से अधिक सहायता नही मिलती। उसने कही कही नई सामग्री का प्रयोग भी किया है अत: उसका इतिहास बडा ही महत्वपूर्ण है।

विषय-सूची

भाग अ

पृष्ठ	संख्या
(क) तारीखे इबराहीमी	३
(ख) तारीखे एलचीए निज़ामशाह	६
(ग) तारीखे अलफी	४१
(घ) तबक़ाते अकबरी भाग २	६१

भाग ब

(क) मुन्तखबुत्तवारीख भाग १	१४१
(ख) गुलशने इबराहीमी	१६३
(ग) इक़बाल नामये जहांगीरी भाग १	२३६

भाग स

(क) तारीखे गुजरात	४०६
(ख) मिरआते सिकन्दरी	४३१
(ग) ज़फरुल वालेह् बे मुज़फ्फर व आलेह्	४४५
(घ) तारीखे सिन्ध अथवा तारीखे मासूमी	४६६

परिशिष्ट

(अ) वाकेआते मुश्ताकी	४८५
(ब) गुलज़ारे अबरार	४६१
(स) मधु मालती	४६५
मुख्य सहायक ग्रन्थो की सूची	५०१
नामानुक्रमणिका	५११

भाग अ

मुख्य इतिहासकार

इबराहीम इब्ने जरीर

(क) तारीखे इबराहीमी

ख़ुर शाह बिन क़ुबाद शाह

(ख) तारीखे एलचीए निज़ाम शाह

मुल्ला अहमद इत्यादि

(ग) तारीखे अलफ़ी

ख़्वाजा नि ामुद्दीन अहमद

(घ) तबक़ाते अकबरी भाग २

तारीखे इबराहीमी

अथवा

तारीखे हुमायूनी

लेखक—इबराहीम इब्ने जरीर

(अलीगढ विश्वविद्यालय मैनुस्क्रिप्ट)

मुहम्मद हुमायूं पादशाह

मुहम्मद[1] हुमायूं पादशाह गाज़ी का जन्म ३ ज़ीक़ाद ९१३ हि० (५ मार्च १५०८ ई०) को हुआ[2]। ९२५ हि० (१५१९ ई०) को अपने सम्मानित पिता के आदेशानुसार विलायतें ज़फर एवं बदख्शा के राज्यों की अधालन[3] के लिए काबुल से रवाना हुए। हिन्द के युद्ध मे जो विजयें प्राप्त हुई उनमें वे अपने सम्मानित पिता की शुभ रिकाब के साथ थे। उन विजयो को उनके प्रतिष्ठित नाम मे सम्बन्धित किया गया। उनके पिता की मृत्यु के उपरान्त शुक्रवार ९ जमादी उल-अव्वल ९३७ हि०। २९ दिसम्बर १५३० ई०[4] को दारुल खिलाफा आगरा की जामा मस्जिद में उनके नाम का खुत्बा पढा गया तथा सभी लोगो की प्रसन्नता, हर्ष एवं उल्लास में वृद्धि हुई। सिक्कों को उनके शुभ नाम से शोभा प्राप्त हुई। सिंध की अन्तिम सरहद तथा कन्धार की विलायत[5] से लेकर बिहार के अन्त तक के भूभाग उनकी कृपा की छाया में आ गये और उन्होंने आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। बदख्शा तथा उस प्रदेश के भूभाग से गुजरात के राज्य की सरहद तक के प्रदेश काल के कुचक्र से मुक्त होकर उनकी कृपा की छाया मे प्रविष्ट हो गये। उन्होंने काबुल तथा लाहौर

१ अनावश्यक विशेषणों का अनुवाद नहीं किया गया है।

२ गुल बदन बेगम के अनुसार '४ ज़ीक़ाद ९१३ हि० (६ मार्च १५०८ ई०)'। [गुल बदन बेगम : हुमायूं नामा, पृ० ९; मुग़ल कालीन भारत-बाबर, पृ० ३६०। अकबर नामा के अनुसार ४ ज़ीक़ाद ९१३ हि० (६ मार्च १५०८ ई०)। अकबर नामा भाग १, पृ० १२१, रिज़वी मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १, पृ० ३]।

३ वाली, गवर्नर होकर।

४ देखिये गुल बदन बेगम : हुमायूं नामा, पृ० २५, अलाउद्दौला बिन यहया क़ज़वीनी : नफायसुल मआसिर, अबुल फ़ज़्ल : अकबर नामा भाग १, पृ० १२१ (रिज़वी : मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १, पृ० ५, ४५१, ५०३)।

५ राज्य।

इत्यादि मीर्ज़ा मुहम्मद कामरान को प्रदान कर दिये। कन्धार, गरमसीर[१] एवं जमीनदावर[२] की अयालत मुहम्मद अस्करी मीर्ज़ा को प्रदान की। मुहम्मद हिन्दाल मीर्ज़ा को अलवर[3] का राज्य एवं अन्य स्थान प्रदान हुए। बदख्शां के राजसिंहासन पर सुलेमान मीर्ज़ा इब्ने खान मीर्ज़ा आरूढ़ हुआ। कालपी[४] की विलायत एवं उसके आसपास के स्थान महदी ख्वाजा को प्रदान हुए। जौनपुर प्रदेश मीर हिन्दू बेग के सुपुर्द हुआ। दारुलमुल्क[५] देहली का दारोगा[६] मीर फ़ख्वर अली बनाया गया। समस्त सुल्तानों एवं आतंकमय अमीरों को विशाद एवं समृद्ध विलायतों[७] की अयालत एवं अत्यधिक इनाम द्वारा सम्मानित किया गया। समस्त पदाधिकारियों एवं प्रतिष्ठित लोगों के आदर सम्मान में वृद्धि की गई।

९४१ हि० (१५३४-३५ ई०) में न्यायकारी पादशाह की विजयी पताकाएं हिन्द तथा गुजरात की ओर रवाना हुईं। उनके प्रस्थान के कारण उस स्थान के वाली बहादुर सुल्तान का ऐश्वर्य एवं वैभव कम्पित हो उठा। उसका समस्त राज्य उस विजयी पादशाह को प्राप्त हो गया। उन्होंने अहमदाबाद के भू-भाग की अयालत, जो उस प्रदेश की राजधानी है, मुहम्मद अस्करी मीर्ज़ा को प्रदान की। पटन[८] की अयालत यादगार नासिर मीर्ज़ा को दी गई और उसके प्रति नाना प्रकार की कृपा प्रदर्शित की गई। समस्त विशाद, किले एवं नगर प्रतिष्ठित अमीरों को प्रदान किये गए। दक्खिन के वालियों तथा हाकिमों ने सेना की पंक्तियों को तोड़ने वाले पादशाह की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली और बाज व ख़राज[९] प्रेषित किया। उनके नाम द्वारा ख़ुत्बे तथा सिक्के को शोभा प्रदान की।

१ गरम भू-भाग। बाबर ने लिखा है, "काबुल के अधीनस्थ स्थानों में गरमसीर ही कुछ बातों में हिन्दुस्तान से मिलता जुलता है और कुछ में नहीं।" (बाबर नामा, पृ० १३८)। अरब भूगोल वेत्ता साधारणतः फ़ारस को एक लाइन द्वारा दो भागों में विभाजित करते थे जो पूर्व से पश्चिम को जाती थी, एक भाग को वे ठंडा और दूसरे को गरम कहते थे।

२ वह चौड़ी चकली घाटी, जिसके नीचे से हेलमन्द नदी बहती हुई हिन्दूकुश से बुस्त को जाती है, जमीनदावर कहलाती है। मध्य युग में यहां बड़ी घनी आबादी थी और यह स्थान बड़ा ही उपजाऊ था। इसके अधीनस्थ चार मुख्य कस्बे थे—दरताल, दरग़श, बग़नीन तथा शरवान।

३ २७ ५' तथा २८°५' अक्षांश और ७६°१०' तथा ७७°१५' देशान्तर के मध्य में। (राजपूताना गजेटियर, भाग ३, १८८० ई०, पृ०१६)।

४ जिला जालौन (उत्तर प्रदेश) में प्रसिद्ध प्राचीन कस्बा जो २६°८' उत्तर तथा ७९°४५' पूर्व में यमुना नदी पर स्थित है। (*The Imperial Gazetteer of India*, Vol. XIV, pp 318-320)।

५ राजधानी देहली के लिये प्रायः दारुलमुल्क एवं आगरा के लिये दारुलख़िलाफ़ा शब्द का प्रयोग हुआ है।

६ बख्शी के अधीन एक मुख्य पद।

७ कस्बों तथा प्रदेशों।

८ बड़ौदा में २३°५१' उत्तर तथा ७२°१०' पूर्व में जो पहिले अन्हिलवाडा कहलाता था।

९ कर (Tribute)।

उन्होंने ९४५ हि०[1] (१५३८-३९ ई०) में बंगाले के राज्य की विजय किया और अमीर जहाँगीर कुली को वहां का वाली नियुक्त कर दिया। तदुपरान्त विजयी फरहरा वापसी हेतु राजधानी की ओर उड़ाया। क्योंकि ईश्वर की यही इच्छा थी कि वह उन्हें अपने जमाल तथा जलाल,[2] समृद्धि तथा परिवर्तन, कृपा एवं क्रोध, दया एवं कठोरता द्वारा सम्मानित करे और उनकी प्रतिष्ठा एवं उनके यश में वृद्धि करे, अतः सफर ९४६ हि० (मई १५३९ ई०)[3] में बंगाला तथा हिन्द के कुछ स्थान एवं राजधानी देहली उनके शत्रुओं के अधिकार में आ गये। उस वर्ष के रजब मास में उन्होंने[4] लाहौर को भी अपने चरणों से नष्ट किया। आकाश सरीखे रिकाब वाले पादशाह ने सिंध की ओर प्रस्थान किया। २६ रमजान को वे बक्कर[5] पहुँचे। कुछ समय तक वे निष्ठुर आकाश के कारण सूर्य के समान संसार में इधर उधर चक्कर लगाते रहे। कभी उन्हें प्रसन्नता प्राप्त होती तो कभी दुःख। १२ जमादी-उल आखिर ९५० हि० (१२ सितम्बर १५४३ ई०) को उन्होंने सिंध नदी पार की और हज के उद्देश्य से खुरासान[6] के मार्ग से रवाना हुए। उस वर्ष के ज़ीकाद मास (जनवरी-फरवरी १५४४ ई०) में उनके आगमन के कारण राजधानी हिरात[7] को अत्यधिक शोभा प्राप्त हुई। उन्होंने उस स्थान के प्रतिष्ठित संतों एवं सूफियों के मज़ारों के दर्शन किये। उस वर्ष के ज़िलहिज्जा मास (फरवरी-मार्च १५४४ ई०) के प्रारम्भ में शेख जाम[8] के रौज़े के तवाफ

१ मूल में '९५५ हि०'। यह पुस्तक नकल करने वाले की भूल है।

२ ईश्वर के दो गुण, कृपा एवं कोप।

३ मूल में 'सफ़र ९५६ हि०'। यह पुस्तक नक़ल करने वाले की भूल है।

४ शत्रुओं ने।

५ भक्कर सिन्ध नदी पर भली-भाँति सुरक्षित एक जज़ीरा २७°४३' उत्तर तथा ६८°५३' पूर्व में सक्कर तथा रोहरी नगर के मध्य में। एक भक्कर पंजाब के मियाँवाली जिले में है (३१°३७ उत्तर तथा ७१°४ पूर्व में)।

६ सूर्योदय वाला देश (खुर—सूर्य, आसान—उदय)। ईरान के पूर्व में एक विशाल प्रदेश जिसमें आमू दरिया (जैहून) के दक्षिण एवं हिन्दूकुश के उत्तर के प्रदेश सम्मिलित रह चुके हैं। मावराउन्नहर (Transoxiana) सिजिस्तान (Sakastana) भी इसमें सम्मिलित थे। अरब भूगोल वेत्ताओं के अनुसार इस देश की सीमायें इस प्रकार थीं : पूर्व में सिजिस्तान एवं हिन्दुस्तान, पश्चिम में रय एवं जुरजान, उत्तर में मावराउन्नहर और दक्षिण में ईरान के रेगिस्तान। इसके मुख्य नगर नीशापुर, मर्व, शाहजहान, हिरात एवं बल्ख थे। आधुनिक खुरासान में प्राचीन एवं मध्यकालीन खुरासान का केवल आधा भाग सम्मिलित है। शेष में पूर्व की ओर का भाग जो उत्तर में सरख्स से प्रारम्भ होकर दक्षिण में मशहद एवं हिरात के बीच का भाग अफ़ग़ानिस्तान में सम्मिलित हो गया है और जो भूभाग मर्व से आक्सस तक फैला है, वह रूस में सम्मिलित हो गया है। आधुनिक खुरासान की राजधानी मशहद है।

७ अफ़ग़ानिस्तान में ३४°२२' उत्तर तथा ६२°१' पूर्व में। [९१६ हि० (१५१० ई०) में शाह इस्माईल सफ़वी ने शैबानी ख़ाँ को पराजित करके इस पर अधिकार जमा लिया। देखिये रिज़वी **मुग़ल कालीन भारत—बाबर**, पृ० ३१६-१८]।

८ अबू नस्र अहमद जाम ज़िन्दा पील नीशापुर (ईरान) के बड़े प्रसिद्ध सूफ़ी थे। उनका जन्म ४४१ हि० (१०४९ ई०) में हुआ। वे १८ वर्ष तक जंगलों एवं पर्वतों में घोर तपस्या करते रहे। तदुपरांत उन्होंने विवाह किया और कहा जाता है कि उनके ३९ पुत्र एवं ३ पुत्रियाँ हुईं। शेख़ अहमद जाम ने कई ग्रन्थों की रचना भी की। रजब ५३६ हि० (फरवरी ११४२ ई०) में उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के समय उनके पुत्रों में १४ पुत्र जीवित थे। वे सब भी अपने समय के बड़े भारी विद्वान् एवं सन्त समझे जाते थे।

द्वारा सम्मानित हुए। तदुपरान्त उन्होंने इमाम रिज़ा[1] के रौज़े के तवाफ़[2] के उद्देश्य से प्रस्थान किया और १५ मुहर्रम ९५१ हि० (८ अप्रैल १५४४ ई०) को उस चौखट के चुम्बन द्वारा सम्मानित हुए। रबी-उल-अव्वल (मई-जून १५४४ ई०) मे उन्होंने बायज़ीद बुस्तामी[3] एवं शेख अबुल हसन खरकानी[4] के रौज़ों के दर्शन किये। रबी उस्सानी के अन्त (लगभग २० जुलाई १५४४ ई०) मे उन्होंने शेख रुक्नुद्दौला सिमनानी[5] के रौज़े का तवाफ़ किया। वहा से वे एराक, अजम एवं आज़रबाईजान की ओर रवाना हुए। जमादी-उल-अव्वल (जुलाई-अगस्त १५४४ ई०) में सुल्तानिया में दो शुभ नक्षत्रो का समागं हुआ अर्थात् शाह तहमास्प सफवी से भेंट हुई।

उस जम सरीखे शाह[6] के आग्रह पर धर्म की शरण देने वाले पादशाह ने तबरेज से काबुल की ओर, जो उनके पिता की राजधानी थी, प्रस्थान किया। वहा जाते हुये इमाम रिज़ा के रौज़े की चौखट का चुम्बन किया। तदुपरान्त वे शेखुल इस्लाम अहमद अल-जामी के, जिनके वंश की कुछ स्त्रियों से हज़रत पादशाह के वंश का सम्बन्ध था, रौज़े के तवाफ़ हेतु रवाना हुए। मुज़फ्फरुद्दीन बहराम खा[7] को सेनापति होने का सम्मान प्राप्त हुआ। मशायख,[8] प्रतिष्ठित एवं सम्मानित लोगों के रौज़े के दर्शन तथा सभी छोटे तथा बड़ो को सम्मानित करते हुए वे अपने उद्देश्य की ओर रवाना हुए और निरन्तर यात्रा करते हुए कन्धार की ओर पहुँचे। ११ मुहर्रम ९५२ हि० (२५ मार्च १५४५ ई०) को कन्धार जम सरीखे सम्मान वाले पादशाह[9] के प्रकाश द्वारा आकाश की ईर्ष्या का विषय बन गया। उस वर्ष के जमादी-उल-अव्वल मास (जुलाई-अगस्त १५४५ ई०) मे उन्होंने उस किले को विजय कर लिया और मीर्ज़ा मुहम्मद अस्करी के अपराधों को क्षमा कर दिया।

१ अली मूसी रिज़ा शीओं के ८वें इमाम तथा मूसी काज़िम ७वें इमाम के पुत्र, जिनका जन्म ७६४ अथवा ७६६ ई० में हुआ और जो ९ सफ़र २०३ हि० (१२ अगस्त ८१८ ई०) में मृत्यु को प्राप्त हुये। खलीफ़ा मामून ने इनसे अपनी पुत्री का विवाह करके अपना वलीअह्द भी बना दिया था किन्तु बाद में विष द्वारा उन्हें शहीद करा दिया गया। उनका रौज़ा तूस में है जिसे अब मशहद कहा जाता है।

२ एक प्रकार की परिक्रमा।

३ बायज़ीद बुस्तामी इब्ने ईसा, बुस्ताम के प्रसिद्ध सूफ़ी सन्त हुये हैं। इनका जन्म १६० हि० (७७७ ई०) में हुआ और यह २३१ हि० अथवा २३४ हि० (८४५ ई० या ८४८ ई०) में मृत्यु को प्राप्त हुये।

४ अली बिन जाफ़र शेख अबुल हसन खरकानी, शेख बायज़ीद बुस्तामी के शिष्य, परम्परा से सम्बन्धित थे। वे बड़े प्रसिद्ध सूफ़ी सन्त हुये हैं। उनका निधन ४२५ हि० (१०३३-३४ ई०) में हुआ।

५ रुक्नुद्दौला अबुल मकारिम शेख अलाउद्दौला सिमनानी वहदतं शुहूद नामक सूफ़ी सिद्धात के बहुत बड़े समर्थक थे और उन्होंने इब्ने अरबी के सिद्धात वहदत वुजूद का बड़ा विरोध किया। शेख अहमद सरहिन्दी ने, जो मुजद्दिद अल्फ़े सानी के नाम से प्रसिद्ध हैं, इन्हीं के सिद्धांत के आधार पर जहाँगीर के राज्य काल में सुन्नी धर्म के संकीर्ण कट्टर रूप का उद्धार करने का प्रयत्न किया। अलाउद्दौला की मृत्यु २२ रजब ७३६ हि० (६ मार्च १३३६ ई०) को हुई।

६ शाह तहमास्प से तात्पर्य है।

७ बैरम खाँ से तात्पर्य है।

८ सूफ़ी सन्त।

९ हुमायूँ से तात्पर्य है।

शावान मास के मध्य (अक्तूबर-नवम्बर १५४५ ई०) में अपनी सेना की सख्या की कमी पर ध्यान न देते हुए वे काबुल की ओर रवाना हुए। मीर्ज़ा मुहम्मद कामरान अत्यधिक सेना के बावजूद युद्ध को असम्भव समझ कर बिना युद्ध किये सिंध की ओर भाग खड़ा हुआ। हज़रत जहाँबानी ने १५ रमज़ान (२० नवम्बर १५४५ ई०) को काबुल में उसी प्रकार पड़ाव किया जिस प्रकार शरीर में आत्मा एव वाटिका में फूल का प्रवेश हो। लोगो को उनकी कृपा एव दया की छाया में शान्ति प्राप्त हो गई।

तारीखे एलचीए निज़ाम शाह

लेखक—ख्वर शाह बिन कुबाद अल हुसैनी

(ब्रिटिश म्यूज़ियम मैनुस्क्रिप्ट, ऐड २३५१३)

जहीरुद्दीन बाबर पादशाह की मृत्यु के उपरान्त मुहम्मद हुमायूँ का आगरा में सिंहासनारोहण

(४१८ ब) शुक्रवार जमादी उल-अव्वल ९३७ हि० (दिसम्बर १५३० ई०) की राजधानी आगरा की जामा मस्जिद में मुहम्मद हुमायूँ के उत्कृष्ट नाम एवं उपाधि में खुत्बे[1] को प्रसिद्धि प्राप्त हुई। संसार वालों के हृदय से बधाइयों ने निकल कर नीले आकाश को पार कर लिया ...[2]

जब संसार के पादशाह हज़रत मुहम्मद हुमायूँ नमाज़ एवं परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता से निवृत्त हो लिये तो मस्जिद से निकले और उन्होंने शाहज़ादों, अमीरों, राज्य के उच्च पदाधिकारियों एवं प्रतिष्ठित लोगों के परामर्श से सौभाग्य एवं सफलता के राजसिंहासन पर अपने चरण रख कर उसे बहुत बड़ा ऐश्वर्य एवं गौरव प्रदान किया। सर्व साधारण को न्याय एवं उपकार के सुखद समाचार पहुँचाये और अपनी ज़बान को शरीअत के नियमों को उन्नति देने एवं इस्लाम को शोभा प्रदान करने के लिये खोला। उनके गम्भीर वाक्यों से राज्य का गौरव बहुत बढ़ गया। मौलाना शिहाबुद्दीन मुअम्माई[3] ने उनके सिंहासनारोहण की तारीख के लिये इस कितए की रचना की। . [4]

वे बड़े ही वैभवशाली पादशाह थे। वे बड़ी ही फसाहत[5] एवं अत्यधिक गुणों के स्वामी थे। गणित एवं दर्शनशास्त्र की शाखाओं में उन्हें अत्यधिक दक्षता प्राप्त थी। वे सर्वदा पांडित्य-

१ खुत्बा :—वह प्रवचन जो शुक्रवार के दिन ज़ुहर (मध्याह्नोपरान्त की नमाज़ एवं ईदुल फ़ितर तथा ईदुज्जुहा की नमाज़ के अवसरों पर पढ़ा जाता है। इसमें ईश्वर की स्तुति, हज़रत मुहम्मद, उनकी सन्तान एवं उनके असहाब (मित्रों) व सहायकों की प्रशंसा के साथ साथ समकालीन सुल्तान का उल्लेख होता है। खुत्बा एवं सिक्का एक राज्य में केवल एक ही पादशाह का चल सकता है। यदि कोई अधीनस्थ हाकिम अपने नाम का खुत्बा पढ़वा देता था तो यह विद्रोह तथा स्वतन्त्र राज्य के दावे का द्योतक होता था।

२ शेरों का अनुवाद नहीं किया गया है; विशेषणों का भी अनुवाद नहीं किया गया है और केवल सारांश दिया गया है।

३ अलंकार आदि से रचना को गम्भीर बनाये बिना सादा एवं दैनिक प्रयोग के शब्दों तथा सरल सुबोध वाक्यों द्वारा रचना की एक विधि।

४ 'हुमायूँ बुवद वारिसे मुल्के वै' किताए का अनुवाद नहीं किया गया।

५ खुला हुआ एवं चौड़ा मार्ग। इस्लाम के धार्मिक क़ानून जिनका आधार क़ुरान, हज़रत मुहम्मद के आदेश एवं उनके समय की परम्परा हैं।

पूर्ण विद्याओं के सीखने एवं आश्चर्यजनक आविष्कार करने में संलग्न रहते थे। उनकी उत्कृष्ट बुद्धि द्वारा जिन बातों का आविष्कार हुआ, उनका उल्लेख अमीर गयासुद्दीन ने, जो ख्वन्दमीर के नाम से प्रसिद्ध हैं, बड़े ही रोचक ढंग से किया है।[1] उसमें से थोड़ा सा यदि ईश्वर ने चाहा तो इस पादशाहे साहिब किरान के इतिहास के वर्णन के उपरान्त लिखा जायगा। वे अपने गम्भीर स्वभाव, प्रतिभा, उत्कृष्ट मनोवृत्ति एवं उन गुणों के कारण जो उन्होंने प्राप्त किये थे, अपने समकालीन सुल्तानों एवं खाकानों में सर्वोच्च थे। वे वीरता एवं पौरुष में आदर्श, न्याय एवं उदारता तथा उपकार में अद्वितीय थे। उत्कृष्ट आलिमों एवं गुणवानों को उनके दरबार में आदर सम्मान प्राप्त होता रहता था और उन्हें नाना प्रकार से इनाम इक्राम दिया जाता रहता था।

(४१९ अ) **अमीरों की विभिन्न प्रदेशों में नियुक्तियाँ**—उन्होंने अपने सिंहासनारोहण के प्रारम्भ में ही अपने खास व आम सभी की आशायें बहुत बड़ी सीमा तक पूरी की। जहाँ से हिन्द का राज्य प्रारम्भ होता है वहाँ से बिहार के अन्त तक न्याय की पताकायें बलन्द कर दी और स्वर्ग के उद्यान के समान उन्हें समृद्ध एवं सन्तुष्ट कर दिया। जौनपुर का राज्य स्वर्गीय बादशाह ने मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा को प्रदान कर दिया था। उसे उन्होंने उसी के पास रहने दिया। लाहौर से काबुल तथा उसके अधीनस्थ एवं उससे सम्बन्धित स्थानों का अधिकार, जैसा कि निश्चय हो चुका था, मीर्ज़ा कामरान को प्रदान हुआ। अस्करी मीर्ज़ा का कन्धार एवं दावर ज़मीन[2] के राज्य द्वारा सम्मानित किया गया। आकाश रूपी ऐश्वर्य वाले पादशाह के आदेशानुसार बदख्शाँ की हुकूमत पर शाह सुलैमान बिन खान मीर्ज़ा आरूढ़ हुआ। अलवर की विलायत तथा उसके आस पास के एवं उससे सम्बन्धित स्थान मुहम्मद हिन्दाल मीर्ज़ा को प्रदान हुए। काबुल की सरकार तथा उससे सम्बन्धित स्थान महदी ख्वाजा को प्रदान हुए। सम्भल की विलायत में अमीर हिन्दू बेग ने सम्मान की पताका बलन्द की।

१　गयासुद्दीन मुहम्मद, जिसकी उपाधि ख्वन्दमीर थी, ख्वाजा हुमामुद्दीन मुहम्मद का पुत्र तथा प्रसिद्ध इतिहासकार मीर ख्वन्द का नाती था। उसका जन्म ८७९ अथवा ८८० हि० (१४७४ अथवा १४७५ ई०) में हुआ होगा। उसकी रचना में सबसे अधिक प्रसिद्ध **हबीबुस्सियर** है। [बाबर सम्बधी इतिहास के लिये देखिये, **मुग़ुल कालीन भारत—बाबर**, पृ० ५८९-६०५]। १० जमादी-उल अव्वल ९३४ हि० (१ फरवरी १५२८ ई०) को वह कन्धार से हिन्दुस्तान की ओर चल खड़ा हुआ और ४ मुहर्रम ९३५ हि० (११ सितम्बर १५२८ ई०) को आगरा पहुँचा। बाबर ने उसे अत्यधिक प्रोत्साहन प्रदान किया और वह ९३५ हि० (१५२९ ई०) के पूर्व के अभियान में उसके साथ गया। बाबर के निधन के उपरान्त हुमायूं ने ख्वन्दमीर के प्रति अत्यधिक आदर सम्मान प्रदर्शित किया और उसे अमीरुल अख्बार की उपाधि प्रदान की। ख्वन्दमीर ने हुमायू के आदेशानुसार **क़ानूने हुमायूनी** नामक ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ का अनुवाद **मुग़ुल कालीन भारत—हुमायूं** भाग १ में कर दिया गया है (पृ० २७१-४३५)। ख्वन्दमीर हुमायू के साथ ९४१ हि० (१५३४ ई०) में गुजरात गया किन्तु ९४२ हि० (१५३५ ई०) में उसकी मृत्यु हो गई। उसकी लाश देहली में शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया एवं अमीर खुसरो के मक़बरे में दफ़न कर दी गई।

प्रस्तुत ग्रन्थ में पृ० ४२८ अ से पृ० ४३० व तक इन आविष्कारों का उल्लेख **क़ानूने हुमायूनी** के आधार पर किया गया है अतः इन पृष्ठों का अनुवाद नहीं किया गया है।

२　ज़मीनदावर।

मीर्ज़ा शाह हुसैन अरगून ने सिन्ध प्रदेश अपने अधीन समृद्ध एवं आबाद कर दिया। अमीर फ़क़्र अली दारुलमुल्क देहली का दारोग़ा नियुक्त हुआ। इसी प्रकार उन्होंने सभी लोगों को उनकी श्रेणियों के अनुसार आश्रय प्रदान करके शाहाना कृपाओं द्वारा सम्मानित किया। अपने छोटे भाई मीर्ज़ा कामरान को, जो उन दिनों लाहौर अथवा क़ाबुल में निवास कर रहा था, एक पत्र भेज कर स्वर्गीय पादशाह की मृत्यु एवं अपने सिंहासनारोहण की सूचना भेजी।

मुहम्मद हुमायूँ शाह का अपने भाई मीर्ज़ा कामरान को पत्र एवं घटनाओं का विवरण

ख़िलाफ़त एवं जहाँबानी[1] के उद्यान की शुभ बहार, सल्तनत एवं किश्वर सितानी[2] के बाग़ के समीर, ऐश्वर्य एवं गौरव के भाग्यशाली पौधे, वैभव एवं दीन परवरी[3] के राज्य के चमकते हुए सूर्य के बादशाह, पादशाही के ख़ज़ाने के अद्वितीय जौहर, शहंशाही के कोश के दुर्रे यतीम[4], अर्थात् अत्यधिक प्रिय भाई, परमेश्वर की कृपा के प्रतीक, सम्मानित शरीअत को शक्ति प्रदान करने वाले, पवित्र मिल्लत[5] को ताक़त पहुँचाने वाले, उन्नतशील राज्य के बाज़ू, सल्तनत एवं गौरव के केन्द्र मुहम्मद कामरान बहादुर, सर्वसाधारण में श्रेष्ठ एवं उन्नत, कृपा एवं दया को बढ़ाने वाली इच्छाओं के समीर की पताका, प्रेम एवं अभिलाषा के इत्र की सुगंधि, जिसने मेल जोल एवं निष्ठा के उद्यान को सुगंधित कर दिया है, अपनी अन्तःकरण के पृष्ठ पर यह बात लिखी हुई समझें कि क़ज़ा व क़दर[6] के सामने मुझ पर तथा प्राणों के समान उस प्रिय भाई पर यह विपत्ति आई और ऐसी दुर्घटना घटी कि न तो उसका उल्लेख सम्भव है और न उसका छिपाना लाभदायक है। यह सम्भव नहीं कि मैं उसकी चर्चा कर सकूँ और न शुभ ज़बान में इतनी शक्ति है कि इसे छिपा सकूँ। मैंने यह सोचा था कि स्वयं कुछ वाक्य उत्तम शैली में लिख कर इस विषय की ओर संकेत करूँगा, किन्तु दुःख की अधिकता के कारण शक्ति की लगाम हाथ से निकल चुकी है अतः उत्तम शैली में रचना करने वाले मुंशियों को आदेश दिया कि वे इस दुर्घटना का उल्लेख करें। इस दुर्घटना की सविस्तार चर्चा पत्र में निहित रहेगी किन्तु मुझे यह ज्ञात नहीं कि इस होश हवास छीन लेने वाली दुर्घटना को सुनकर प्रिय भाई की क्या दशा होगी और वह इस प्राण विदारक दुर्घटना को किस प्रकार सुनेगा अतः मैंने यह सोचा कि उससे धैर्य धारण करने के लिये कहा जाय और इस विषय में कुछ उपदेश लिखे जायें। बे-सब्री की आग भड़क उठी और इस आयत ने—तुम वह

१ राज्य व्यवस्था।
२ देशों की विजय।
३ धर्म को उन्नति देना।
४ वह बड़ा तथा चमकदार मोती जो सीप में अकेला पैदा हुआ हो।
५ इस्लाम धर्म से तात्पर्य है।
६ ईश्वर द्वारा निश्चित भाग्य में किसी का हाथ न होने का सिद्धांत।

बात कह रहे हो जो स्वय नही कर रहे—उपदेश से रोक दिया। ईश्वर मुझे तथा तुम्हे पर्याप्त धैर्य प्रदान करे और कल्याण हो। बुद्धि को हर लेने वाली एव शाक की धूल उडाने वाली इस दुर्घटना के पूर्व उस गुणवान् पादशाह ने लोगो पर प्रभुत्व की लगाम हमारे भाग्यशाली हाथों में सौंप दी और आदेश दिया कि न्याय एव कृपा के द्वार सर्वसाधारण के लिये खोल देना और इसमें किसी प्रकार की कमी न होने पाये। यद्यपि मैं इस समय दु ख का पहाड उठाये हुये एव अत्यधिक पीडित तथा शोक ग्रस्त हूँ किन्तु सर्वसाधारण के हृदय से शोक एव दु ख का भार हटा दिया है। प्रजा की सहायता एव नगरों की प्रतिरक्षार्थ प्रयत्न हेतु कटिबद्ध हो गया हूँ। आशा है कि प्रिय भाई जिस प्रकार समझेंगे तथा जिस प्रकार सम्भव होगा सहायता करेंगे। हमारे हृदय को वह अपनी उन्नति एव सौभाग्य की वृद्धि की ओर पूर्ण रूप से आकृष्ट समझ कर अपनी इच्छाओं के मुख से गोपन के आवरण को हटा दें।[1]

सिंहासनारोहण के बाद जश्न

जब पादशाहे आलमियान[2] को हिन्दुस्तान का राज्य प्राप्त हो गया तो सफल भाइयो एव प्रतिष्ठित अमीरो ने अपने सिर आज्ञाकारिता के फदे में डाल दिये। हजरत पादशाहे आलमपनाह ने जो "अस्सुल्तानो जिल् ल्ल्लाह"[3] के वाक्य के प्रतीक हैं राजधानी आगरा में जश्न एव समारोह (४१९ ब) तथा आनन्द मगल के उत्सव मनाने का आदेश दिया। राज्य के उच्च पदाधिकारी एव प्रतिष्ठित लोग, अमीर, वजीर तथा सर्वसाधारण—कृषकों से शिल्पकारो तक—जश्न की तैयारी में व्यस्त हो गये। आगरे की समस्त दूकानो एव बाजारो को फिरगी अतलस एव किमखाब तथा उत्तम प्रकार के विभिन्न रगो के वस्त्रा द्वारा सजा कर चीन के चित्रालय के समान बना दिया। कुशल शिल्पकारो एव गुणवान् इजीनियरों न नाना प्रकार के आविष्कार करके तथा विचित्र कारीगरी के प्रदर्शन द्वारा मनुष्यो के विभिन्न समहो के लिये हर्ष व उल्लास के द्वार खोल दिये। लगभग एक मास तक जश्न होता रहा। सुलेमान[4] के समान उत्कृष्ट पादशाह प्राय भोग विलास की सभाओं में आनन्द मगल का फर्श बिछवाते। अमीरो, विश्वास-पात्रो, दरबार के विशेष लोगो को अपने स्वर्ग रूपी दरबार मे गोष्ठी आयोजित करने का आदेश देते थे। अपने विश्वास पात्रो

१ 'बायद कि आँ बिरादरे अजीज दर इम्दाद व तक़्वियत बदाचे दानद व तवानद इह्तेमाम नुमायद व हमगीये खातिरे मारा मुतवज्जहे हुसूल व आमाल व इज़दियादे दौलते खेश दानिस्ता परदये खफ़ा अज वुजूहे मक़ासिदे खेश बे कुशायद वस्सलाम'।

باید که آں برادر عزیز در امداد و تقویت بدانچه داند و تواند اهتمام نماید و همگی خاطر مارا متوجه حصول و آمال و ازدیاد دولت خویش دانسته پرده خفا از وجوه مقاصد خویش بکشاید' والسلام

२ संसार वालों के पादशाह।

३ सुल्तान, अल्लाह की छाया होता है।

४ एक प्रतापी पैग़म्बर जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिए बडे प्रसिद्ध थे और कहा जाता है कि वे हवा पर भी राज्य करते थे।

की प्राय अत्यधिक कृपाओ द्वारा सम्मानित करते। कुछ कवियों एव विद्वानो के प्रति, जिन्होंने शुभ सिंहासनारोहण के विषय मे कविताओ की रचनायें की थी, उनकी श्रेणी के अनुसार उदारता प्रदर्शित की और उन्हें दया एव दान-पुण्य द्वारा सम्मानित किया। मौलाना शिहाब मुअम्माई ने इस कविता की रचना की

पद्य

"कौन सा ऐसा हृदय है जो इस सुखद समाचार से प्रसन्न न हुआ,
प्राणों के राज्य के बादशाह का ससार प्रदान हुआ।
एक फिरिश्ता परी की सुन्दरता लेकर एव हूर का रूप धारण करके,
प्रकट हुआ और आदम की सतान का शहशाह हुआ।
सुख शान्ति का आधार बादशाह जिसका नाम हुमायूँ है,
जिसकी आज्ञाकारिता के भार से आकाश का शरीर झुक गया है।
ससार वालो के लिये कयामत तक को यह सम्मान पर्याप्त है,
कि वह सम्मानित व्यक्ति ससार का पादशाह हुआ।"

जलालुद्दीन उवैस ने भी एक किताए की रचना की। यह दो-तीन शेर उसी में से है

शेर

"हे पादशाह, ससार को शरण प्रदान करने वाले, इस समय
तुझे पादशाही के राजसिंहासन पर आरूढ होना शोभा देता है।
तू है युग का कुतुब[1], तेरे कारण यह ससार है आबाद, अन्यथा,
यह प्राचीन भवन विनाश की ओर सर्वदा अग्रसर रहता है।
मैं ससार का अस्तित्व उसके व्यक्तित्व से सम्बन्धित पाता हूँ,
हे ईश्वर उसके पवित्र व्यक्तित्व को ससार में चिरस्थायी रख।"

उत्तम स्वर के गायकों को, जो अपने रूप एव आकर्षक संगीत से शुक्र ग्रह को उसकी सभा से बुलवा लेते थे, दीनार एव दिरम प्रदान किये गए। भोजन के प्रबन्धक नाना प्रकार के अत्यधिक भोजन एव पेय प्रबन्ध करके क्षण-क्षण पर स्वर्ग रूपी दरबार में प्रस्तुत करते थे। उन्हे भी शाहाना खिलअतो एव कृपाओ द्वारा सम्मानित किया गया। अन्तिम के तीन दिनों में अमीरो एव राज्य के उच्च पदाधिकारियों को दावत दी गई। उस भाग्यशाली समूह में से प्रत्येक ने अपनी-अपनी श्रेणी एव अपने सामर्थ्य के अनुसार उपहार एव पेशकश[2] प्रस्तुत किये और अपनी निष्ठा के जवाहर, प्रार्थना के थाल पर रख[3]। दानी पादशाह के हाथो ने समस्त नक्द धन एव उपहार फकीरो एव दरिद्रो को बाँट दिये। अमीरो एव राज्य के उच्च पदाधिकारियो को बहुमूल्य खिलअतो, अरबी घोड़ों, सुनहरी जीन और लगाम सहित एव अन्य शाहाना इनाम द्वारा सम्मानित किया।

१ पृथ्वी का धुरा, सूफियों के अनुसार वह सूफी सत जिनके सुपुर्द कोई बहुत बड़ा इलाका हो।
२ नज़राना।
३ निष्ठा प्रदर्शित की।

मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा एवं बायज़ीद अफ़ग़ान का विद्रोह

भाग्यशाली राज्य के गुप्तचरों ने राज्य के विभिन्न प्रदेशों से उपस्थित होकर कुछ समाचार उत्कृष्ट शाही कानों तक पहुँचाये। उन समाचारों में से एक समाचार यह था कि खुलासतुस्सला-तीनुल उज़्ज़ाम[1] मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा ने जो जौनपुर[2] में निवास करने लगा था अपने प्रभुत्व एवं अपनी शक्ति के भरोसे पर एक बहुत बड़ी भीड़ एकत्र कर ली है और उसकी आकांक्षाओं का शहबाज़[3] सल्तनत की प्राप्ति के लोभ में उड़ा करता है। दूसरी ओर से शेख बायज़ीद अफ़ग़ान ने एक बहुत बड़ी सेना एकत्र कर ली है और संयम के मार्ग से पाँव बाहर निकाल कर, असावधानी में अपने हाथ पाँव मारने लगा है। इन समाचारों की प्राप्ति के उपरान्त आकाश सरीखे सम्मान वाले पादशाह ने सभाओं को विसर्जित करके युद्ध का संकल्प कर लिया। सम्मानित आदेश हुआ कि बहराम[4] रूपी तवाची[5] असंख्य सेनायें एकत्र करनी प्रारम्भ कर दें। विजयी सेनाओं के एकत्र हो जाने के उपरान्त सुलेमान सरीखे सम्मान वाले पादशाह कन्नौज[6] एवं उस क्षेत्र की ओर (४२० अ) रवाना हुए।

मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा की पराजय

जब उत्कृष्ट पादशाह के प्रस्थान के समाचार मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा को प्राप्त हुए तो उसने भी बहुत बड़ी संख्या में सैनिक एवं चौपायों को लेकर, जिनके कारण भूमि पर स्थान न मिलता था गंगा नदी की ओर प्रस्थान किया और अपने शिविर गंगा तट पर लगवा कर युद्ध एवं संग्राम की योजनायें बनाने लगा। विजयी लश्कर ने भी गंगा नदी के दूसरी ओर पड़ाव कर दिया। इसी बीच में कुछ अमीरों ने भी, जो अपनी सूझ बूझ एवं अपने अनुभव के कारण अपने समकालीनों की अपेक्षा सर्वश्रेष्ठ थे, बीच में पड़ कर उपदेश एवं शिक्षाओं के जल से मलिनता तथा कटुता की धूल को धो डाला और संसार विजय करने वाले पादशाह के हृदय में यह शेर बिठा दिया

शेर

"यदि शत्रु युक्ति द्वारा वश में आ जाय,
तो तलवार को मियान के बाहर न निकालना चाहिये।"

१ उत्कृष्ट सुल्तानों (शाहज़ादों) में सर्वोत्कृष्ट।
२ मूल पुस्तक में 'चित्तौड़'।
३ बड़ा बाज़, शिकारी बाज़।
४ मंगल राशि। एक ईरानी नरेश।
५ सेना के सरदार।
६ यह प्राचीन कस्बा फ़र्रुख़ाबाद (उत्तर प्रदेश) ज़िले की तहसील है। यह २७°३' उत्तर (अक्षांस) एवं ७९°५९' पूर्व (देशांतर) में पहले गंगा तट पर स्थित था किन्तु अब नदी ४ मील पूर्व हट गई है। (*District Gazetteers*, Farrukhabad, Vol IX, p 271)।

पवित्र हृदय वाले पादशाह ने अमीरों की बातों को स्वीकृति के कानों मे सुना और महदी ख्वाजा को कुछ विश्वासपात्रों के साथ मुहम्मद जमान मीर्जा के पास भेज कर प्रतिज्ञा एव वचन द्वारा उसके हृदय को सतुष्ट कर दिया और उसे पादशाह की सेवा में लाया गया। कुछ दिन तक हज़रत पादशाह उसकी दावत करके उसके प्रति अपार कृपाये एव अत्यधिक उपकार प्रदर्शित करते रहे। जब विश्व विजय करने वाले पादशाह के प्रकाश युक्त अन्तःकरण को, जो समस्त गुप्त बातों एव रहस्यो का ज्ञाता है, इस बात का पता चल गया कि मुहम्मद जमान मीर्जा को अभिमान के राक्षस ने आज्ञाकारिता के सम्मार्ग से विचलित कर दिया है और वह विद्रोह एव षड्यत्र न त्यागेगा तो उसे मदिरापान की गोष्ठी में बन्दी बना कर अली तगाई के सुपुर्द करके ब्याना की विलायत मे भेज दिया और उसके कुछ अमीरों एव सेवकों में से प्रत्येक को जो इस विद्रोह की जड था नाना प्रकार से कठोर दड दिये ।

बायजीद के विरुद्ध प्रस्थान

मुहम्मद जमान मीर्जा के विद्रोह की ओर से निश्चिन्त होकर उन्होने अपने घोडे की लगाम अफगानो के विद्रोह के दमन हेतु मोडी और गगा नदी पार की तथा लक्नूर[1] की विलायत में दौरन[2] नामक स्थान पर दोनो सेनाओं की मुठभेड हुई।

मुहम्मद हुमायूँ शाह का हिन्द के अफ़गानो की सेना से युद्ध, उन पर विजय पाना तथा उनका थोडा सा हाल

स्वर्गीय पादशाह बाबर की मृत्यु के समाचार पाकर अफ़गानो का समूह जो असफलता की घाटी में छिपता फिरता था, प्रसन्न हो गया और अपने पूर्वजों के राज्य पर अधिकार जमाने के उद्देश्य से सगठित होकर एक स्थान पर एकत्र हुआ और शेख बायजीद एव उस समूह के कुछ अन्य

१ मूल पुस्तक में 'लनकूर'। 'लखनऊ' से तात्पर्य है।

२ जौहर के अनुसार 'ददरा'। **तज़किरतुल वाक़ेआत** की हस्तलिपियों में इसे ददरा एव दौरा दोनों लिखा गया है। एक ददरा जिला बाराबकी (उत्तर प्रदेश) में ८१°१८ उत्तर तथा २७°५४ पूर्व में बाराबकी नगर से ६ मील दक्षिण पूर्व, गोमती नदी से ११ मील उत्तर पूर्व में है। दूसरा ददरा जिला सुल्तानपुर (अवध—उत्तर प्रदेश) की मुसाफिरखाना तहसील के मुसाफिरखाना परगने में है। लखनऊ जौनपुर का मार्ग इसी परगने के मध्य से होकर गुजरता है। डा० नूरुल हसन ने अकबर के समय का जो महत्वपूर्ण मानचित्र बनाया है, उसमें यही ददरा दर्शाया है। **तज़किरतुल वाक़ेआत** में इसे गुती नदी के तट पर स्थित बताया है। किंतु इस नाम की अथवा इससे मिलती जुलती किसी नदी का पता नहीं चलता। **तारीखे शेरशाही** के अनुसार यह युद्ध लखनऊ के समीप हुआ। यद्यपि मुसाफिरखाने का ददरा भी लखनऊ की विलायत में है और **आईने अकबरी** में इसे लखनऊ सरकार में बताया गया है (**आईने अकबरी** भाग २ नवलकिशोर लखनऊ १८९२ ई०, पृ० ८२) किन्तु जहां तक लखनऊ से समीप होने का प्रश्न है, बाराबकी का ददरा अधिक उचित है किन्तु अन्तिम रूप से निर्णय देना कठिन है। [रिज़वी **मुग़ल कालीन भारत—हुमायूँ** भाग १, पृ० ५८३ ५८४]।

सरदारों तथा प्रतिष्ठित लोगों से मुग़लों के विनाश हेतु बैअत ली। जब उन्हें भाग्यशाली सेना के आगमन के समाचार प्राप्त हुए तो उन्होंने अपनी सेना को सशस्त्र करके युद्ध एव हत्याकांड की पताका बलन्द की जब मुग़लों ने अफ़ग़ानों की धृष्टता देखी तो उस समूह से युद्ध करना निश्चय करके विद्युत् रूपी तलवार से उस धिक्कृत समूह के जीवन के खलिहान में भय की अग्नि डाल दी।[1] तदुपरान्त उनकी सेना के दायें एव बायें भाग का छिन्न-भिन्न कर दिया। शेख बायज़ीद तथा उस सेना के कुछ अन्य प्रतिष्ठित लोग उस युद्ध में मारे गए। शेष भाग खड़े हुए और पुन युद्ध के निकट न फटके।

(४२० ब) उत्कृष्ट पादशाह इस प्रसिद्ध विजय के उपरान्त चुनार[2] के किले की ओर, जो शेर खां अफ़ग़ान के अधिकार में था और जिसने उस समय विद्रोह कर दिया था, रवाना हुये। उपर्युक्त किले के समीप पहुँचने के उपरान्त सम्मानित आदेश हुआ कि विजयी सेना किले को घेर कर, किले की विजय के लिये प्रयत्न प्रारम्भ कर दे। लश्कर के अमीरों एव सरदारों ने सम्मानित पादशाह के आदेशानुसार किले का अवरोध प्रारम्भ कर दिया। उस्ताद अली कुली तोपची, जो तोप चलाने में अद्वितीय था बड़ी बड़ी बादल के समान गरजने वाली एव किला विजय करने वाली तोपे लगवाने मे व्यस्त हो गया। शेर खां इस भयानक घटना के कारण चिन्तित एव व्याकुल हो गया। उसने बार बार उपहारों सहित राजदूत, उत्कृष्ट दरबार में भेजे और आज्ञाकारिता एव अधीनता प्रदर्शित करके, दीनता एव विनय के लिये ज़बान खोली और सदेश भेजा कि "यदि ससार को आश्रय प्रदान करने वाले हज़रत पादशाह इस किले को न विजय करे तो मैं हर वर्ष अत्यधिक धन पेशकश के रूप में ससार को शरण प्रदान करने वाले दरबार मे भेजता रहूँगा। इस समय मैं ५ मन सोना प्रस्तुत करता हूँ और अपना एक पुत्र आकाश रूपी चौखट में भेजता हूँ। जब कभी पादशाह को सहायता की आवश्यकता पड जायगी तो मैं अपनी समस्त कौम वालों एव सेना को लेकर सिर को पाँव बनाकर आऊँगा।" यद्यपि ससार वालों के पादशाह हृदय से शेर खां से सधि करना न चाहते थे किन्तु, इस कारण कि उन्हीं दिनों मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा ब्याना[3] की विलायत मे एक रात को अपने साथियों को सगठित करके अली तगाई एव समस्त पहरे दारों की हत्या करके गुजरात की विलायत में चला गया था और विद्रोह की पताका बलन्द कर दी थी, न्यायकारी पादशाह ने शेर खां से सधि कर ली और शेर खां ने अपने पुत्र को हिन्दुस्तान की तोल के हिसाब से ५ मन सोने सहित ससार का शरण प्रदान करने वाले दरबार में भेज दिया और पवित्र लश्कर ने

१ उन्हें आतंकित कर दिया।

२ चुनार, परगना हवेली चुनार, तहसील चुनार ज़िला मिर्ज़ापुर (उत्तर प्रदेश)। यह प्रसिद्ध पहाड़ी किला २५°७' उत्तर (अक्षांस) एव ८२°५४' पूर्व (देशांतर) में मिर्ज़ापुर ज़िले से २१ मील तथा बनारस से ११ मील पर स्थित है। (*District Gazetteers*, Mirzapur, 1911, p 301)।

३ भरतपुर में २६°५५' उत्तर तथा ७७°८' पूर्व, भरतपुर नगर के दक्षिण पश्चिम में दक्षिण की ओर। (*The Imperial Gazetteer of India*, VII, 1908, p 137)। ब्याना के किले के विषय में देखिये बाबर नामा, पृ० २०८।

उस स्थान से प्रस्थान करके दारुल खिलाफा आगरा की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में उन्होंने यादगार नासिर मीर्ज़ा को अमीरों एवं सेना के रईसों[1] के एक समूह के साथ मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा के विरुद्ध नियुक्त किया।

मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा को जब विजयी लश्कर की वापसी एवं वैभवशाली सेना के उससे युद्ध करने के उद्देश्य से प्रस्थान के समाचार प्राप्त हुए तो वह भाग खड़ा हुआ और गुजरात के वाली सुल्तान बहादुर के पास चला गया। सुल्तान ने उस सम्मानित शाहज़ादे के आगमन का बहुत बड़ी देन समझते हुए उत्तम खिलअतें एवं उचित अक्तायें[2] प्रदान कीं। बलोदरा[3] नामक स्थान, जहाँ से पर्याप्त राजस्व प्राप्त होता था, शाहज़ादे के व्यय हेतु प्रदान किया। मुहम्मद ज़मान के सुल्तान बहादुर की सेवा में पहुँचने के पूर्व, सुल्तान बहादुर एवं प्रतापी बादशाह[4] के पास एक दूसरे के राजदूत आते जाते रहते थे और उन्होंने एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं निष्ठा के बन्धनों को दृढ़ कर दिया था एवं यह निश्चय हो गया था कि वे एक दूसरे के मित्र के मित्र तथा एक दूसरे के शत्रु के शत्रु रहेंगे किन्तु उस वर्ष भी बहुत से अभागे अफ़गान मुग़लों की खून बहाने वाली तलवार के भय से सुल्तान बहादुर की कृपा की छाया में एकत्र हो गए थे और उसने सबको आश्रय प्रदान किया था और बहुमूल्य अक्तायें प्रदान की थीं। जब सुलेमान सरीखे पादशाह को मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा के गुजरात की ओर प्रस्थान करने और उस विलायत के वाली द्वारा कृपा एवं प्रोत्साहन प्राप्त करने के समाचार प्राप्त हुए तो वे बड़े रुष्ट हुए और उन्होंने अपने सम्मानित दरबार के उपस्थितगण से कहा कि, "बहुत समय से गुजरात का वाली हमारे साथ निष्ठा एवं मेल-जोल का दावा करता आया है किन्तु जो लोग आकाश रूपी दरबार से भाग कर उससे सहायता चाहते हैं, वह उन सब का प्रोत्साहन प्रदान करता है और प्रतिज्ञा एवं वचन भंग होने की चिन्ता नहीं करता।" इस कारण उन्होंने मौलाना कासिम अली सद्र को गयासुद्दीन अली क़ूर्ची के साथ राजदूत बना कर सुल्तान बहादुर के पास चेतावनी देने के लिये भेजा और यह सन्देश प्रेषित किया कि "यदि वह सल्तनत शिआर[5] इस वंश से निष्ठा एवं सफ़ाई का दावा करता है तो वह उस समूह को, जो इस शाही वंश की कृपाओं एवं देनों का बदला अवज्ञा से देकर उस ओर पहुँच गया है और उससे मिल गया है, संसार को शरण प्रदान करने वाले दरबार में भेज दे अथवा अपने राज्य से निकाल दे ताकि यह बात हमारे पारस्परिक मेल एवं प्रेम में वृद्धि का कारण बन सके।" जब संसार को शरण प्रदान करने वाले पादशाह के राजदूत गुजरात के वाली के दरबार में पहुँचे तो सुल्तान बहादुर ने उनका

१ सरदारों।

२ अक्ता का अनुवाद प्रायः जागीर किया जाता है किन्तु अक्ता वह भूभाग था जो सेना के सरदारों को सेना रखने और उसका उचित प्रबन्ध करने के लिये दे दिया जाता था। हिन्दुस्तान के भिन्न-भिन्न भागों पर विजय प्राप्त कर लेने के उपरान्त तुर्क जिस भाग को अपने अधिकार में करते थे उसको विभिन्न अक्ताओं (टुकड़ों) में विभाजित करके प्रत्येक भाग एक सरदार को प्रदान कर देते थे। सरदार के वृद्ध हो जाने अथवा कार्य-योग्य न रहने पर भूमि दूसरों को दे दी जाती थी।

३ सम्भवतः बड़ौदा से तात्पर्य है।

४ हुमायूँ।

५ सल्तनत का स्वामी।

आदरपूर्वक स्वागत किया और मित्रता एवं मेल जोल के विषय में जो संदेश हज़रत पादशाह ने भेजा था उसके विषय में दृढ़ प्रतिज्ञायें की किन्तु पादशाह ने मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा एवं अन्य (४२१ अ) अपराधियों के विषय में जो संदेश प्रेषित किया था, उनके सम्बन्ध में सुल्तान ने न स्वीकार होने वाले बहानों से काम लेते हुए कोई ठीक उत्तर न दिया। अपने विश्वासपात्र नूर मुहम्मद खलील को नये प्रतिज्ञा-पत्र के साथ पादशाह के राजदूत के साथ भेजा। जब (हज़रत पादशाह) के राजदूत नूर मुहम्मद खलील के साथ राजसिंहासन के समक्ष पहुँचे तो नूर मुहम्मद खलील ने फ़र्श का चुम्बन करके संदेश पहुँचाया और जो प्रतिज्ञा-पत्र लाया था, दरबार के विश्वास-पात्रों के अध्ययन हेतु प्रस्तुत किया। सुल्तान बहादुर की वह बातें जिनसे कोई परिणाम न निकलता था, पादशाहे आलम पनाह को अच्छी न लगीं और उन्होंने उन बातों के उत्तर में यह पत्र लिखवा कर भेजा।

मुहम्मद हुमायूँ का सुल्तान बहादुर के नाम पत्र

"ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने तथा हज़रत मुहम्मद पर दुरूद[1] के उपरान्त लिखा जाता है कि इस बीच में क़ाज़ी अब्दुल क़ादिर एवं मुहम्मद मुक़ाम फ़िरिश्ता के स्थान वाली चौखट[2] पर पहुँचे और उस सल्तनत के स्वामी के वचन तथा प्रतिज्ञा के समाचार पहुँचाये। कीमिया[3] रूपी हृदय में मेल-जोल का मार्ग, जो कि प्रजा के हित में परमावश्यक है और जिसके फलस्वरूप नगरों तथा क़स्बों की आबादी में वृद्धि होती है, दृढ़ हो गया। हमारे प्रकाशयुक्त हृदय में कभी यह बात न आई कि आप 'ईमान वालो अपनी सच्ची प्रतिज्ञा का पालन किया करो' नामक आयत का उल्लंघन करेंगे तथा हज़रत मुहम्मद के इस आदेश की उपेक्षा करेंगे कि, 'निःसंदेह प्रतिज्ञाओं का पालन करना धर्म का सर्वोत्कृष्ट रूप है।' तदनुसार हमने इख्लासुल मुल्क मौलाना क़ासिम अली सद्र का गयासुद्दीन कूरची[4] के साथ यह संदेश देकर भेजा कि यदि आप समाग एवं सीधे रास्ते पर दृढ़ हैं तो यह उचित होगा कि आप उस दुष्ट समूह को, जिसने हमारी कृपाओं को कृतघ्नताओं में परिवर्तित कर दिया है और भागकर आपकी शरण में पहुँच गया है, संसार को शरण प्रदान करने वाले दरबार में भेज दें अथवा इस विद्रोही समूह को अपने पास से भगाकर उस देश से निर्वासित कर दें और फिर कभी उन लोगों को, जो इस चौखट के दासों में सम्मिलित हैं, मार्ग-भ्रष्ट न होने दें। उन्हें यह आदेश दिया गया था कि वे इसका उत्तर लायें ताकि समुद्र रूपी हृदय की धूल संगठन के जल से शुद्ध हो जाय तथा मित्रता का वृक्ष प्रतिज्ञा की वाटिका में फल देने लगे। जब वे लोग नूर मुहम्मद खलील के साथ उत्कृष्ट राजसिंहासन के समक्ष पहुँचे और आपने जो प्रतिज्ञापत्र भेजा था, वह प्रस्तुत किया तथा उत्तर में आपकी बातों को बतलाया तो आपने जो कुछ कहा था एवं प्रतिज्ञा-पत्र में जो कुछ लिखा था उससे अभीष्ट उत्तर भली-भाँति प्राप्त न हुआ। इससे बड़ा आश्चर्य हुआ। आपने मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा के विषय में लिखा है कि सुल्तान मुज़फ़्फ़र तथा सुल्तान सिकन्दर में जो

१ हज़रत मुहम्मद के प्रति शुभ-कामनायें एवं सलाम।
२ हुमायूँ के दरबार से तात्पर्य है।
३ रसायन, सोना-चाँदी बनाने की कला।
४ अस्त्र-शस्त्र की देख-रेख करने वाला। अगरदक, अस्त्रधारी सैनिक।

मित्रता एव सधि थी, उसमे इस कारण कि सुल्तान अलाउद्दीन तथा अन्य सुल्तान आगरे से गुजरात पहुँचे और भली-भाँति सम्मानित किये गए, कोई विघ्न न पडा, अत इस प्रकार मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा यदि इस स्थान पर रहे और आश्रय प्राप्त करे तो क्या आपत्ति है। यह बात ठीक नही ज्ञात होती कारण कि जो दलीलें प्रस्तुत की गई है उनमें वडा अन्तर है। इस दलील को उस घटना पर नही लगाना चाहिये। यह बात छिपी न रहनी चाहिये कि हमारी मित्रता के दृढ रहने की केवल यही शर्त है कि आप उपर्युक्त बातो को स्वीकार कर ले और उन दुष्टो को उत्कृष्ट राजसिंहासन के समक्ष भेज दे अथवा उन लोगो को आश्रय मत दे और उन्हे उस प्रदेश में न रहने दें। यदि आप ऐसा करेगे तो आपकी निष्ठा मध्याह्न के सूर्य के समान स्पष्ट हो जायगी और यह पता चल जायेगा कि आपने जो प्रतिज्ञाएँ की हैं, उनके सम्बन्ध में आपकी ज़बान तथा हृदय दोनो एक है तथा आप जो कुछ कहते हैं वह करते हैं, अन्यथा किस दलील से उस प्रतिज्ञापत्र पर विश्वास किया जा सकता है।

शेर

'हे वह ! जो इस बात का दावा करता है कि मैं हृदय से आशिक हूँ,
यह बडा शुभ है, यदि आपकी ज़बान तथा आपका हृदय एक है।'

आपको सम्भवत ज्ञात होगा कि हज़रत साहिब किरान[1], ईलदरम बायज़ीद द्वारा शत्रुता प्रदर्शित करने पर भी हृदय से रूम[2] पर आक्रमण करना एव उस प्रदेश को विध्वस करना न चाहते थे, कारण कि वह फिरगी काफिरो से युद्ध कर रहा था। जब करा यूसुफ तुर्कमान एव सुल्तान अहमद जलायर ने विजयी सेना के आतक से भागकर रूम के वाली के दरबार में शरण ले ली तो हज़रत साहिब किरान ने कई बार राजदूत भेजे और उन्हे आश्रय देने से रोकते हुए उनके निर्वासन का आदेश दिया। जब ईलदरम बायज़ीद ने स्वीकार न किया तो उनसे जो कुछ हो सका उन्होंने किया।

इसके अतिरिक्त आपने जो पत्र पूर्व मे मुहम्मद मुकीम द्वारा भेजा था, उसमें उस ओर के चिन्ता-जनक समाचार एव उथल पुथल का हाल लिखा था अत हम आक्रमण के उद्देश्य से ग्वालियर की ओर पहुँचे। जब नूर मुहम्मद खलील आपका प्रतिज्ञा-पत्र लाया तो हमने उसका अवलोकन किया। उसे विदा करके शेख इबराहीम[3] को, जो कि आकाश रूपी दरबार के विश्वास-पात्रो में से है, इस आशय से भेजा जाता है कि वह उस प्रतिज्ञा-पत्र का उत्तर लेकर शीघ्रातिशीघ्र आ जाय।

१ तीमूर।
२ टर्की।
३ निम्नाकित वाक्य मूल में नहीं है और शाह अबू तुराब वली की तारीखे गुजरात से लेकर इस वाक्य का अनुवाद किया गया है :
و اورا رخصت داده شیخ ابراهیم که یکی از مخصوصان درگاه فلک اشتباه است ارسال نمودیم
(तारीखे गुजरात, पृ० ८)

पूर्व उल्लिखित अभियान को भी कुछ दिन के लिये स्थगित कर दिया गया है।[1] क्योंकि उसे पत्र पहुँचाने के लिये भेजा गया है अत उसे शीघ्र विदा कर दिया जाय।

शेर[2]

'मित्रता का पौधा लगा ताकि मनोकामनायें पूरी हों,
शत्रुता के पौधे को उखाड डाल कारण कि उससे अत्यधिक कष्ट पहुँचते हैं।'

इससे अधिक और क्या लिखूँ।

शेर

'यदि[3] ससार में किसी के पास सौभाग्य है,
तो सादी[4] के प्रवचन का एक अक्षर पर्याप्त है।
यदि तुझे पसन्द है तो सुन
कि यदि शत्रुता का काँटा हो तो निकाल डाल।"

जब सुल्तान बहादुर ने यह पत्र पढ़ा तो वह बडा रुष्ट हुआ और जो बातें उसकी शक्ति एव उसके सामर्थ्य के बाहर थी, उत्तर में लिखी।

हुमायूँ पादशाह के पत्र का सुल्तान बहादुर द्वारा उत्तर

"ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने तथा हजरत मुहम्मद पर दुरूद के उपरान्त लिखा जाता है कि[5] जो दूत आपने नूर मुहम्मद खलील के साथ हमारे फिरिश्ता रूपी दरबार में भेजा था उसने धरती चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया और विचित्र शैली का लिखा हुआ पत्र पहुँचाया। अभिमान से परिपूर्ण जो बातें उसमें लिखी हुई थी वह सुल्तानों को शरण प्रदान करने वाले दरबार को भली भाँति ज्ञात हो गईं। जो बाते उसमें लिखी थीं उसमें एक यह थी कि कासिम अली तथा ग़यासुद्दीन कूरची को हमारे राजसिंहासन के समक्ष इस आशय से भेजा गया था कि वे इस बात की प्रार्थना करें कि जिन लोगों ने इस दरबार में शरण ले ली है उन्हें यदि राज्य से निर्वासित कर दिया जायेगा तो निष्ठा एव सगठन प्रकट होंगे। वास्तव में यह नितान्त असत्य है कारण कि आपके दूतों ने निष्ठा एव प्रतिज्ञा की पुष्टि के अतिरिक्त कोई अन्य बात नहीं कही। यदि उनकी प्रार्थनाओं से इस बात का पता चल जाता अथवा इसमें से कोई बात हमारे

१ अभियान के स्थगित करने का उल्लेख तारीखे गुजरात एवं मिरआते सिकन्दरी में नहीं है।
२ यह शेर तारीखे गुजरात तथा मिरआते सिकन्दरी में नहीं है।
३ केवल प्रथम शेर ही मिरआते सिकन्दरी में है दूसरा शेर नहीं है, तारीखे गुजरात में दोनों शेरों में से कोई नहीं है।
४ प्रसिद्ध फारसी कवि शेख मुसलेहुद्दीन सादी शीराज़ी का जन्म ५७१ हि० (११७५ ई०) में तथा निधन ६९१ हि० (१२९२ ई०) में हुआ। उनकी रचनाओं में गुलिस्ताँ एवं बोस्ताँ को बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त है।
५ पत्र का केवल सारांश दिया गया है।

तानों तक पहुँच जाती तो बात यहाँ तक न पहुँचती कि कष्ट उठाते हुये ग्वालियर तक पहुँच जाते। यह एक बडी ही असम्भव कल्पना एव झूठा लोभ है। खास व आम सबको ज्ञात है कि आपने शाही वश के उस उत्तराधिकारी सुल्तान मुहम्मद जमान मीर्जा से निष्ठा एव भ्रातृ-भाव सबधी प्रतिज्ञा की थी और शपथ द्वारा उसकी पुष्टि की थी किन्तु जब आपको उस पर अधिकार प्राप्त हो गया तो आपने उस प्रतिज्ञा का भग कर दिया तथा सच्चाई एव निष्ठा की ओर से विमुख होकर विरोध एव शत्रुता की ओर अग्रसर हो गए। उपर्युक्त बादशाहजादे ने इस वश द्वारा राज्य एव राजसिंहासन प्रदान करने का हाल ससार तथा ससार वालों से सुना था कि जब सुल्तान महमूद खलजी ने हिन्दुओ के अपहरण एव प्रभुत्व के कारण इस भाग्यशाली चौखट की शरण ली थी तो हजरत फिरदौस मकानी [1] सुल्तान मुजफ्फर [2] ने उसे कितना अधिक आश्रय प्रदान किया और उसकी कितनी अधिक सहायता की। (जब मुहम्मद जमान मीर्जा ने) अपने सौभाग्य के पथप्रदर्शन के कारण इस दरबार मे प्रार्थना की है और हमारे समक्ष दीनता एव विनय की जिह्वा खोल कर फरियाद की कि उस वचन भग करने वाले द्वारा उस पर कितना अत्याचार हुआ है तो हमने धर्म की रक्षा एव न्याय की दृष्टि से तथा हजरत मुहम्मद के इस आदेश के कारण कि, 'पीडितों की सहायता करनी चाहिये', अपने आश्रय एव अपनी सहायता की छाया उसके ऊपर इस आशय से डाली है कि ईश्वर की कृपा से उसकी आशाओं तथा हमारे प्रयास में फल निकल सके। यद्यपि आपके प्रतिज्ञापत्र का तथ्य प्रकट हो गया है किन्तु फिर भी मैंने प्रत्येक मुसलमान के प्रति अपने शुद्ध विश्वासों एव उदार विचारों के कारण काजी अब्दुल कादिर एव मोतमिदुलमुल्क के समक्ष कुरान की शपथ ले ली और हम उसे पर्याप्त समझते हैं।

क्योंकि इन दिनों फिरगियों का समूलोच्छेदन हमें परमावश्यक ज्ञात हुआ अत हमें बन्दरदीव[3] की ओर जाना पडा। आपने इस विषय में सुनकर इस अवसर से लाभ उठा लिया और निसकोच एव निर्भय होकर ग्वालियर तक पहुँच गए और अपने मस्तिष्क से कुरान का यह आदेश निकाल दिया कि, 'अपनी प्रतिज्ञाओं को दृढ करने के उपरान्त मत तोडो।' जब आपके इस अनुचित व्यवहार की सूचना हमे प्राप्त हुई और हमारी विजयी सेनायें दीव से वापस हुईं तो आपने तुरन्त समझ लिया कि आप जितना आगे बढे हैं, वही पर्याप्त है और आपकी शक्ति एव क्षमता से अधिक है और जिस प्रकार आये थे, उसी प्रकार वापस चले गए। आपके प्रतिज्ञा भग करने का एक रूप यह है कि जिन स्थानों को हमारे नाम के खुत्बे द्वारा शोभा प्राप्त थी वहाँ आपने अपने नाम का खुत्बा पढवाने के उपरान्त क्षमा-याचना भी न की। इसके बावजूद आपने हमारी प्रार्थना पर कोई ध्यान नहीं दिया। आपके इस आचरण एव व्यवहार से निसन्देह आपकी अत्यधिक वीरता प्रदर्शित होती है। इस प्रकार आपने अपने सातवें पितामह[4] के कारनामा पर अभिमान प्रदर्शित किया है। यदि आप

१ हजरत मुहम्मद के प्रति शुभ कामनायें एवं सलाम।
२ उसकी श्रेष्ठता एवं उसकी मुक्ति के प्रति शुभ कामनाओं से सम्बन्धित वाक्य।
३ दियू।
४ तैमूर।

पने किसी कार्य के विषय में कुछ लिखते तो कोई बात होती किन्तु यह स्पष्ट है कि आपने अभी क कोई ऐसा कार्य ही नहीं किया जिसपर आप गर्व कर सकते अथवा उसे लिख सकते। यदि पका उद्देश्य कहानियाँ पढ़ना है तथा किस्से से आपको रुचि है तो हमारे कारनामों में से थोड़ा ा अपने हृदय-पट पर शिक्षा की दृष्टि से लिख लें कि अल्प समय में हमने कैसे कैसे कार्य किये जिनका उदाहरण किसी इतिहास में नही मिल सकता।

शेर

'यदि तेरी तलवार मे युद्ध की जबान नही[1]
तो जबान की तलवार को डींग द्वारा कष्ट मत दे।
हे पुत्र! यदि तेरी तलवार मे कोई मोती नही[2]
तो पिता के सामने मोती की तलवार पर मत डींग मार।
यदि तेरे पाँव छोटे हैं, तो इस आशय से लकड़ी मत बाँध,
कि बालकों की दृष्टि में ऊँचा दिखाई पड़े।'

ईश्वर की सहायता एव उसकी कृपा से यह सभी को ज्ञात है कि जब से सल्तनत एव ाज्य व्यवस्था के सिंहासन को हमारे अस्तित्व द्वारा शोभा प्राप्त हुई है, किसी भी पादशाह का मारी शक्तिशाली सेना से युद्ध करने का साहस नही हो सका है और आप साधारण अफगानो मे द्ध कर रहे हैं। फिर आप ऐसी बातें किस कारण सोचते हैं?

शेर

'यदि तू मधुशाला वालों का अतिथि है तो मस्तों के साथ आदरपूर्वक व्यवहार कर,
कारण कि उद्दंडता खुमार की मस्ती को दूर कर देती है।'

आपको इस आयत पर आचरण करना चाहिये कि, 'शैतान तुझे मार्ग भ्रष्ट न कर दे' ौर आप अभिमान को अपने मस्तिष्क से निकाल दे।

शेर

'कि अभिमान सिर से टोपी पृथक् करा देता है,
किसी को अपनी शक्ति पर अभिमान न करना चाहिये।'

विश्वास है कि थोड़े ही दिनों में जो ईश्वर की इच्छा होगी वह पूरी होगी।

1 युद्ध की शक्ति नहीं।
2 तेजी अथवा काट से तात्पर्य है।

शेर

'जाहिद[1] को कौसर[2] की मदिरा की आकाक्षा एव हाफिज[3] को प्याले की इच्छा रहती है,
परिणाम से ही पता चलेगा कि ईश्वर की इच्छा क्या है।"

गुजरात के वाली सुल्तान बहादुर का मुहम्मद हुमायूँ से युद्ध एवं गुजरात विजय

तातार खां की पराजय तथा हत्या

क्योंकि ईश्वर की यह इच्छा हो चुकी थी कि सुल्तान बहादुर का राज्य एव गुजरात की विलायत नष्ट भ्रष्ट हो जाय अत सुल्तान के भाग्य के लिखे ने उसे अपनी सीमा से बाहर कदम निकालने पर प्रेरित किया और उसने अभिमान वश ऐसे वचन कहे जो औचित्य की सीमा एव मार्ग से दूर थे।[4]

जब सुल्तान बहादुर का अनुचित पत्र पादशाह के विश्वासपात्रों ने पढ़ा और उसमें जो कुछ लिखा था उसकी पादशाह को सूचना हुई तो व क्रोध के कारण आग बबूला हो गए और गुजरात के वाली के वश के विनाश का सकल्प कर लिया। बहराम रूपी तवाचियों को विजयी सेना के एकत्र करने का फरमान देकर गुजरात की ओर पताका बलन्द की। ज़ि क़ाद ९४१ हि० (मई-जून १५३५ ई०) में दारुलमुल्क देहली के फीरोजाबाद से, जहाँ वे उस समय पडाव किये हुए थे, समस्त अमीरों, राज्य के उच्च पदाधिकारियों एव प्रतिष्ठित लोगों को लेकर, नदी के मार्ग से दारुल खिलाफा आगरा की ओर रवाना हुए। मीर्ज़ा हिन्दाल को दारुल खिलाफत मे अयालत[5] का पद प्रदान किया और प्रतिष्ठित अमीरों के एक समूह को उसकी सेवा मे छोड दिया। (४२२ ब) शुभ लश्कर ने गुजरात पर आक्रमण के उद्देश्य से प्रस्थान किया।

उन दिनों में सुल्तान बहादुर ने एक वैभवशाली सेना लेकर चित्तौड विजय के उद्देश्य से, जो उस समय राणा साँगा के पुत्र के अधिकार मे था, प्रस्थान कर दिया था और वह चित्तौड के किले को घेरे हुए था। उसने तातार खाँ अफ़गान को लगभग १०,००० अश्वारोहियों के साथ ब्याना की विलायत में भेज दिया था।

१ मुसलमानों में संयम नियम तथा जप-तप करने वाला व्यक्ति।
२ स्वर्ग का एक कुन्ड अथवा हौज़।
३ शम्सुद्दीन मुहम्मद ख्वाजा हाफ़िज़ का जन्म शीराज़ में हुआ था और वे ७९१ हि० (१३८९ ई०) को शीराज़ में मृत्यु को प्राप्त हुये। उनकी फ़ारसी ग़ज़लें बड़ी ही अद्वितीय समझी जाती हैं।
४ शेरों का अनुवाद नहीं किया गया है।
५ वाली नियुक्त किया।

जब विजयी पादशाह ने गंगा तट पर पड़ाव किया तो गुप्तचरों ने समाचार पहुँचाये कि तातार लगभग १०,००० अश्वारोहियों को लेकर बयाना की विलायत में प्रविष्ट हो गया है और पौरुष का घोड़ा विद्रोह के रण-क्षेत्र में कुदा रहा है। उसने अत्याचार प्रदर्शित करने में कोई कसर उठा नहीं रक्खी है। हजरत पादशाह ने अमीर तरदी बेग[1] को ३०० वीर अश्वारोहियों के साथ समाचार लाने के लिये आगे भेज दिया। उसके पीछे मीर्ज़ा अस्करी को ४,००० अश्वारोहियों सहित तातार खां के विनाश हेतु रवाना किया। एक विचित्र संयोग यह हुआ कि अस्करी मीर्ज़ा के पहुँचने के पूर्व अमीर तरदी बेग अपने सहायकों सहित प्रातःकाल तातार खां के लश्कर के समीप पहुँच गया। शत्रुओं का पूर्ण रूप से असावधान देख कर वह ईश्वर की कृपा पर भरोसा करके अपने ३०० मशस्त्र अश्वारोहियों सहित शत्रुओं की सेना पर टूट पड़ा। शत्रु उस आक्रमण के कारण भाग खड़े हुए और अभागा तातार अन्य लोगों के साथ उस युद्ध में मारा गया। वह तातार खां के सिर को ससार को शरण प्रदान करने वाले दरबार में भेज कर उसी स्थान पर ठहर गया। जब इस यशवान् विजय के समाचार हजरत पादशाह को प्राप्त हुए तो वे अपनी पवित्र सेना को उस स्थान से लेकर निरन्तर यात्रा करते हुए राय सग[2] नामक स्थान पर पहुँचे। राय सग के किले को, जो सलाहुद्दीन की सतान के अधीन था, विजयी सेना ने न्यायकारी पादशाह के आदेशानुसार घेर लिया।

सुल्तान बहादुर का हुमायूँ के पास दूत भेजना

जब तातार खां की हत्या एव विजयी सेना के राय सग पहुचने के समाचार चित्तौड़ के किले के नीचे सुल्तान बहादुर को प्राप्त हुए तो उसके दृढ़ता के स्तम्भ काँप उठे[3] और उसने दुःख एव चिन्ता के कारण अत्यधिक भयभीत होकर एक वाक्पटु एव बात बनाने वाले राजदूत को उत्कृष्ट दरबार में भेज कर नम्रतापूर्वक सन्देश प्रेषित किया कि, "मैंने ईश्वर के जिहाद[4] सम्बन्धी आदेश के कारण इस्लाम की दृढ़ता एव सर्वसाधारण के कल्याण हेतु चित्तौड़ की विजय के लिये, जो मुशरिकों[5] एव शत्रुओं के अधिकार में है, चढ़ाई की है। वह समय लगभग समीप आ गया है जब कि विजय प्राप्त हो जाय किन्तु बड़े आश्चर्य की बात है कि आप इस्लाम को शक्तिशाली बनाने एव उन्नत करने के दावे के बावजूद अपार सेनायें लेकर दुष्ट काफ़िरों की सहायता हेतु खड़े हुए हैं। हमें विश्वास है कि यह बात मुसलमानों के शोक एव अधर्मियों की प्रसन्नता का साधन होगी।"

१ मूल में 'बरदी बेग'।

२ 'राय सेन' होना चाहिये। राय सेन भोपाल के पूर्व में ३०° २० उत्तर तथा ७७° ४७ पूर्व में है। पूर्वी मालवा के इतिहास में इस स्थान को हमेशा बड़ा महत्व प्राप्त रहा। अब यह साधारण सा स्थान बन कर रह गया है। (*The Imperial Gazetteer of India*, XXI, Pp 62-63)।

३ घबड़ा गया।

४ इस्लाम के लिये अन्य धर्म वालों से युद्ध।

५ वे लोग जो ईश्वर को एक नहीं मानते अपितु उसके गुणों में औरों को भी सम्मिलित करते हैं। यहाँ हिन्दुओं से तात्पर्य है।

मिसरा

'मत कर, मत कर ऐसा, कारण कि भले लोगों ने कभी ऐसी बात नहीं की है।'

हुमायूं का राजदूत को उत्तर

जब सुल्तान बहादुर का राजदूत उत्कृष्ट राजसिंहासन के पायों में पहुँचा और जम[1] सर्द के सम्मान वाले पादशाह को इस बात की सूचना मिली तो उन्होंने उत्तर दिया कि, 'उस समय से लेकर जब से गुजरात के वाली ने इस उत्कृष्ट चौखट से मित्रता एवं मेलजोल त्याग दिया आज तक मैंने कभी यह न सोचा था कि उसकी विलायत[2] पर आक्रमण करूँ और अपने लश्कर द्वारा वहाँ के निवासियों का छिन्न भिन्न करूँ। यद्यपि उसने बार-बार प्रतिज्ञा एवं वचन के विरुद्ध कार्य किया और उन लोगों को, जो इस शाही वंश की दया एवं कृपाओं की उपेक्षा करके भाग खड़े हुए और उसके पास शरण ली, हमारी इच्छा के विरुद्ध प्रोत्साहन प्रदान किया और उनकी सहायता की, किन्तु हम उसके प्रति प्रतिज्ञानुसार निष्ठा प्रदर्शित करते रहे और हमने उसे चेतावनी युक्त पत्र प्रेषित किया। तुम्हारे वाली ने डींग मारते हुए ऐसी बातें लिखीं जो उसके जैसे मनुष्यों के कहने योग्य न थीं अतः इस समय हमारे लिये यह आवश्यक हो गया कि उसे उचित रूप से दंड (४२३ अ) दें ताकि अन्य लोग शिक्षा ग्रहण कर सकें। [3] क्योंकि उसने इस समय चित्तौड़ के काफ़िरों पर चढ़ाई कर दी है और वहाँ के किले का अवरोध कर लिया है अतः हमारी शुभ सेना कुछ समय तक यहीं ठहरी रहेगी ताकि उस किले पर उसे विजय प्राप्त हो जाय, तदुपरान्त विजयी पताकायें उस क्षेत्र में बुलन्द होंगी।"

सुल्तान बहादुर का ख्वाजा अय्यूब को हुमायूं की सेवा में भेजना

जब (सुल्तान बहादुर के) राजदूतों ने लौट कर अपने आश्रय-दाता की सेवा में यशस्वी पादशाह के सन्देश पहुँचाये और जो कुछ सुना था उसके विषय में भी निवेदन किया तो सुल्तान बहादुर ने यह समझ कर कि विजयी सेनाओं से युद्ध करना उसके सामर्थ्य के बाहर है उस पत्र को जिसका पूर्व में उल्लेख हो चुका है प्रेषित करने पर लज्जित होने की वजह से यह उचित समझा कि जनाब फ़ज़ीलत शिआर, फ़साहत आसार ख्वाजा अय्यूब अबुल बरका को, जो बड़ा ही खुश तबा एवं शीरीं कलाम[4] था और सर्वदा हास्यप्रद चुटकुले एवं कवितायें पढ़ा करता था, दूत बनाकर संसार के पादशाह मुहम्मद हुमायूँ के दरबार में भेजे ताकि सम्भवतः वह उनके दरबार में अपने सुन्दर भाषण एवं रोचक कहानियों द्वारा कटुता की धूल को, जो उन दोनों सम्मानित पादशाहों के मध्य में प्रधान रूप धारण कर चुकी है, बैठा दे। तदनुसार उसने ख्वाजा अय्यूब को यथोचित रूप से

१ जमशेद, प्राचीन काल के ईरान का एक प्रतापी बादशाह।
२ राज्य।
३ शेर का अनुवाद नहीं किया गया है।
४ परिहास-प्रिय एवं उत्तम वार्तालाप में दक्ष।

प्रोत्साहन देकर अत्यधिक आदर-सम्मान सहित आकाश सरीखे उत्कर्ष वाले पादशाह के दरबार में भेजा।

ख्वाजा अय्यूब का हुमायूं से मिल जाना

ख्वाजा अय्यूब ने विजयी सेना के समीप पहुँचने के उपरान्त जो उपहार एवं तुहफे सुल्तान बहादुर ने उसके साथ भेजे थे उन्हें सुल्तान के सेवकों को सौंप कर कहा कि, "सुल्तान से कह देना कि दास ने राजदूत का जो यह कार्य स्वीकार किया था, उससे उसका उद्देश्य यह था कि वह संसार को शरण प्रदान करने वाले शाह तक पहुँच जाय। मार्गों के सुरक्षित न होने के कारण मैं न पहुँच सकता था। अब सुल्तान की कृपा द्वारा मुझे अपना उद्देश्य प्राप्त हो गया। मैं राजदूत एवं हाजिब के कर्त्तव्यों का पालन नहीं कर सकता अतः पत्र एवं उपहार सुल्तान बहादुर के सेवकों को सुपुर्द करके उन्हें वापस करता हूँ। वे जिसे भी उचित समझते हों उसे भेज दें।" जब यह समाचार सुल्तान बहादुर को प्राप्त हुए तो उसने कहा कि ख्वाजा अय्यूब सरीखे आदमी का यह आचरण बड़ा विचित्र एवं आश्चर्यजनक प्रतीत होता है।

हुमायूं का मंदसौर की ओर प्रस्थान

पूर्व में उल्लेख हो चुका है कि जिस समय सुल्तान बहादुर चित्तौड़ के किले का अवरोध किये हुये था, हज़रत पादशाह आलम पनाह[1] ने राय सग के किले के अवरोध का, जो सलाहुद्दीन के अधिकार में था, आदेश दे दिया था किन्तु सलाहुद्दीन की सन्तान एवं उसके परिजनों ने आज्ञाकारिता एवं अधीनता स्वीकार करते हुए अत्यधिक पेशकश सोना एवं उत्तम जवाहर प्रस्तुत किये और इस बात की प्रार्थना की कि विजयी सेना उसपर अधिकार न जमाये। इसी बीच में समाचार प्राप्त हुए कि सुल्तान बहादुर ने चित्तौड़ के किले पर अधिकार जमा कर वहाँ से मंदसौर[2] की ओर प्रस्थान कर दिया है। विजयी हज़रत पादशाह ने राय सग के किले का अवरोध त्याग कर उसे सलाहुद्दीन की सन्तान को सौंप दिया और सुल्तान बहादुर पर आक्रमण के उद्देश्य से प्रस्थान किया तथा अमीर हिन्दु बग को सेना का अग्र भाग प्रदान करके आगे भेज दिया। [3]

हुमायूं तथा सुल्तान बहादुर का युद्ध

सुल्तान बहादुर को जब कयामत सरीखे लश्कर के प्रस्थान के समाचार प्राप्त हुए तो उसने आदेश दिया कि अमीर लोग एवं लश्कर वाले शिविर के चारों ओर खाई खोद कर अराबों[4] की व्यवस्था कर दें। उसके आदेशानुसार उसके शिविर को चारों ओर खाई खोद कर अराबों द्वारा दृढ़ बना दिया गया और निशाने में न चूकने वाले तोपची एवं सहस्त्र प्यादे अराबों के

१ हुमायूं।
२ मूल में 'दस्मौर' अथवा 'दस्तौर' किन्तु यह 'मंदसौर' है।
३ शेर का अनुवाद नहीं किया गया है।
४ गाड़ियाँ।

पीछे नियुक्त कर दिये गये। खुरासान खाँ, जो सुल्तान बहादुर के समस्त अमीरों में सर्वश्रेष्ठ था, सेना के अमीरों एवं रईसों की बहुत बड़ी संख्या सहित क़रावली[१] के उद्देश्य से शत्रु की सेना की ओर रवाना हुआ। कुछ दूर जाने के बाद उसकी मुठभेड़ शाहे आलम पनाह[२] के क़रावलों से हो गई। दोनों (४२४ब) में युद्ध होने लगा। ख़ुरासान खाँ मारा गया। अल्लाह शाही आदेशानुसार ख़ुरासान का सिर काटकर एक बन्दी की गरदन में लटका दिया गया और उसे सुल्तान बहादुर की सेवा में भेज दिया गया। यह देख कर सुल्तान अपितु समस्त गुजरात वाले बुरी तरह भयभीत हो गये। जब शुभ सेना ने सुल्तान के अरावों के समीप पड़ाव कर दिया तो मुग़लों ने वीरता एवं पौरुष की आस्तीन से हाथ निकाल कर शत्रुओं के शिविर के आस पास छापे मारना प्रारम्भ कर दिया। जो कोई गुजरात वाला उन्हें मिल जाता वे उसकी हत्या कर देते।

सुल्तान बहादुर का पलायन

कहा जाता है कि उस आक्रमण के समय सुल्तान बहादुर की सेना में ५ लाख अश्वारोही एवं पदाती थे और जमसरीखे पादशाह के लश्कर में ७०,००० अश्वारोहियों से अधिक न थे। इतनी अधिक सेना के बावजूद गुजरातियों का इस बात का साहस न होता था कि वे अरावों के घेरे से बाहर पाँव रख सकें। अल्प समय में सुल्तान बहादुर के लश्कर में अकाल पड़ गया। बहुत बड़ी संख्या में रोटी की कमी के कारण लोग मृत्यु को प्राप्त हो गये। अन्ततोगत्वा सुल्तान अपनी चिन्ता में पड़ गया। लगभग ५० दिन तक अरावों के घेरे में रहने के उपरान्त एक रात में बड़ी-बड़ी तोपों में, जिनमें से एक का नाम बहादुर शाही और दूसरी का लैला व मजनूं था, बारूद भर कर आग लगवा दी और उन्हें तुड़वा डाला। अपने साथ कुछ अमीरों एवं सेना को लेकर, जिसमें उसका साथ देने का सामर्थ्य था, उसी रात में मन्दू[३] की ओर रवाना हो गया। रात बड़ी ही भयानक थी और क़यामत का दृश्य प्रस्तुत था जब कि भाई, माँ, बाप, स्वामी एवं दास कोई भी एक दूसरे का साथ न देता। इतनी अधिक सामग्री एवं अस्त्र-शस्त्र तथा तैयारी के बावजूद सैनिक किसी न किसी स्थान को भाग खड़े हुए। उस कठोर रात्रि के बाद प्रातःकाल जब सुल्तान के पलायन के समाचार कैलाश शाकी पादशाह को प्राप्त हुए तो उन्होंने कुछ अमीरों एवं सरदारों को उसका पीछा करने के लिये भेजा। वे लोग उसके पीछे रवाना हुए किन्तु सुल्तान बहादुर २०,००० अश्वारोहियों सहित मन्दू के किले में पहुँच गया और उस किले के द्वार एवं बुर्जों को दृढ़ बनाने का अत्यधिक प्रयत्न करने लगा।

हुमायूं द्वारा मन्दू का अवरोध

शव्वाल मास के अन्त में हज़रत पादशाह ने स्वयं नाल्चे में, जो मन्दू के किले से एक फ़रसख़[४] पर है, पड़ाव किया और अमीरों एवं सैनिकों को उस अत्यधिक दृढ़ किले को घेर लेने का

१ शत्रुओं का पता लगाने वाला दस्ता अथवा सेना का अग्र भाग।
२ हुमायूं।
३ मूल में 'मन्द'।
४ लगभग १८००० फ़ीट की दूरी।

आदेश दे दिया। उनके आदेशानुसार किले को चारों ओर से घेर लिया गया और वे इस बात का प्रयत्न करने लगे कि किसी प्रकार अपने सोच विचार की कमन्द को उस किले की विजय के कंगूरे पर फेंकें कि अचानक सुल्तान बहादुर किले से रात के अंधेरे को अपनी कुशलता के वस्त्र बनाकर अपनी सेना एवं परिजनों सहित किले के बाहर निकला और भाग खड़ा हुआ।

हुमायूँ का मन्दू पर अधिकार

हज़रत पादशाहे इस्लाम[१] ने मन्दू के किले को अपने पवित्र चरणों के प्रकाश से संसार की ईर्ष्या का विषय बना दिया। वे तीन दिन तक उस किले में रहे और तीन दिन उपरान्त अपने एक सम्मानित अमीर को नगर एवं मन्दू के किले की प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त करके स्वयं सौभाग्य एवं सफलता के साथ उसी प्रकार रवाना हुये जिस प्रकार सिंह शिकार के पीछे प्रस्थान करता है।

हुमायूँ का सुल्तान बहादुर का पीछा करना

सुल्तान बहादुर ने अभी चम्पानीर[२] के किले में स्थान भी ग्रहण न किया था कि उसे शक्तिशाली शत्रु[३] के प्रस्थान के समाचार प्राप्त हुए। यह सुनकर चिन्ता एवं परेशानी की अवस्था में चम्पानीर को, जो उसकी राजधानी थी, खाली छोड़ कर और राज्य की आशा त्याग कर अपने अन्तःपुर, सम्बन्धियों एवं माल असबाब में जो कुछ ले जा सकता था, दीव[४] नामक बन्दरगाह की ओर भेज दिया और स्वयं २० ज़िलहिज्जा को चम्पानीर नगर में आग लगवा दी। इख़्तियार ख़ाँ को वहाँ (के किले) की व्यवस्था एवं शासन-प्रबन्ध हेतु नियुक्त करके कम्बायत[५] की ओर रवाना हुआ। जब संसार की विजय करने वाले पादशाह चम्पानीर पहुँचे और उन्हें ज्ञात हुआ कि सुल्तान बहादुर कम्बायत की ओर भाग गया है तो वह उसके पीछे रवाना हुये। सुल्तान अपने प्राणों के भय से कम्बायत में आग लगा कर बन्दर दीव की ओर भाग खड़ा हुआ। उस बन्दरगाह में पहुँचने के उपरान्त नौकाओं को तैयार करके आसफ़ ख़ाँ को, जो उसके विश्वास पात्रों एवं सहायकों में (४२४ अ) से था, मोतियों जवाहर एवं समस्त उत्तम वस्तुओं के कुछ सन्दूकों सहित मक्का भेज दिया और स्वयं इस बात की प्रतीक्षा करने लगा कि परोक्ष से भाग्य क्या दिखाता है। [६]

१ हुमायूँ।

२ चम्पानीर अथवा चाम्पानीर, पंच महल (बम्बई) के कलोल तालुका का एक उजड़ा हुआ कस्बा, २२°२९′ उत्तर तथा ७३° ३२′ पूर्व बड़ौदा के उत्तर में २५ मील पर। (*The Imperial Gazetteer of India*, Vol X, p 135)।

३ हुमायूँ।

४ डियु।

५ खम्बायत कैम्बे, गुजरात के पश्चिमी भाग में २२° ९′ तथा २२° ४१ उत्तर एवं ७७° २० तथा ७३°३५′ पूर्व में। इसके उत्तर में कैरा ज़िला, पूर्व में कैरा के भाग तथा बड़ौदा, दक्षिण में कैम्बे की खाड़ी और पश्चिम में साबरमती नदी है। (*The Imperial Gazetteer of India*, IX, p 292 296)।

६ शेर का अनुवाद नहीं किया गया है।

हजरत पादशाह सुल्तान बहादुर के बन्दर दीव चले जाने के उपरान्त समुद्र की हवा की गन्दिगी से घृणा के कारण कम्बायत से पुन चम्पानीर की ओर रवाना हुए और अपने उच्च साहस को उस किले की विजय की ओर लगा कर उसे जबरदस्ती अपने अधिकार में कर लिया। विजयी सेना को वहाँ अपार धन-सम्पत्ति प्राप्त हो गई। चम्पानीर के किले की विजय के बाद (हजरत पादशाह ने) गुजरात के समस्त विलाद[१] एव कस्बे सम्मानित शाहजादो एव विजयी अमीरो को बाँट दिये। अहमदाबाद अपने भाई अस्करी मीर्जा को प्रदान किया और अमीर हिन्दू बेग को उसकी प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त किया। चम्पानीर एव किले की कोतवाली मीर तरदी बेग को प्रदान की। यादगार मीर्जा को कम्बायत का वाली बनाया। कासिम हुसैन मीर्जा को बरौज, वारा[२] एव उस क्षेत्र का राज्य प्रदान किया।

उन्ही दिनो मे विजयी पादशाह ने सुल्तान बहादुर को बन्दी बनाने के लिये पुन बन्दर दीव की ओर प्रस्थान किया। जब वे कम्बायत पहुँचे तो उनकी तबीअत खराब हो गई और वहीं दो तीन दिन तक ठहरे रहे। जब बन्दर दीव में सुल्तान बहादुर को यह समाचार प्राप्त हुए तो वह बडा दुखी एव भयभीत हुआ। अत्यधिक विवश होकर यह पत्र लिख कर ससार को शरण प्रदान करने वाले दरबार में भेजा।

सुल्तान बहादुर का पादशाहे आलीजाह मुहम्मद हुमायूं के नाम पत्र

" [३] इसके पूर्व जो पत्र मैंने भेजा था वह पहुँचा होगा। उस पत्र में पिछले पत्र का हवाला दिया गया था और मेरी ओर से कुछ आपत्तिया लिखी गई थी। आपको यह ज्ञात होना चाहिये कि उसमें मैं कुछ अत्यधिक दुष्ट लोगों के बहकाने से सयम के मार्ग से विचलित हो गया था। मैंने कई बार सोचा कि उसके विषय में क्षमा-याचना की जाय। खैर जो कुछ हुआ वह हुआ। [४]

यदि आप कहे तो मैं सद्र खा को वकीले मुतलक[५] नियुक्त करके भेज दूँ। जो कुछ भी खान से आपके दरबार में निश्चय होगा मैं उसपर दृढ रहूँगा। यदि इसके अतिरिक्त आपके हृदय मे कोई बात आये तो खान को हमारे पास वापस भेज दे। सक्षेप मे, विश्वासपात्रो का इस आशय से भेज रहा हूँ ताकि खान को भेजा जाय। आप जो पत्र भेजें उसमे खान को मेरे पास भेजने का कृपा-पूर्वक साफ साफ उल्लेख करें। मैं यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि खान आपकी मसलहत का विरोध न करेगा। वस्सलाम।"

१ नगर से तात्पर्य है।
२ यह नाम स्पष्ट नहीं। अबुल फजल के अनुसार बरौच, नौसारी तथा सूरत। (अबुल फजल अकबर नामा भाग १)।
३ केवल सारांश दिया गया है और अनावश्यक विशेषणों का अनुवाद नहीं किया गया है।
४ यहां पर हजरत यूसुफ पैगम्बर का अपने भाइयों को क्षमा करने का उल्लेख है।
५ पूर्ण अधिकार-सम्पन्न मुख्य वजीर।

मन्दू की ओर हुमायूँ की वापसी

जब आकाश रूपी दरबार के विश्वास-पात्रों ने यह पत्र पढ़ा तो हज़रत पादशाह को सुल्तान बहादुर की दीनता एवं शक्ति हीनता पर दया आ गई और वे कम्बायत से चम्पानीर की ओर पुनः लौट गये। क्योंकि शुभ मिजाज उस प्रदेश की गन्दिगी के कारण बिगड़ चुका था एवं (इस स्थान से) घृणा करने लगा था अतः उन्होंने शाहज़ादों एवं अमीरों को गुजरात की विलायत की विजय एवं सुव्यवस्था सौंप कर, विजयी सेना सहित मन्दू की ओर प्रस्थान किया। उस वर्ष दक्खिन के राज्यों एवं बेजानगर के वालियों तथा हाकिमों ने अत्यधिक उपहार एवं पेशकश सुरय्या[1] रूपी राजसिंहासन को प्रेषित किये और आज्ञाकारिता एवं अधीनता प्रदर्शित की। यह घटना ९४४ हि० (१५३७-३८ ई०) में घटी। एक कवि ने इस विजय की तारीख के सम्बन्ध में इस किते की रचना की :

क़ितआ

"हुमायूँ शाह ग़ाज़ी जिसके हैं,
सहस्रों दास जमशेद सरीखे।
विजय करने जब वह पहुँचा गुजरात की ओर,
विजय प्राप्त की उस तैमूर की सन्तान की शोभा ने।
बहादुर जब अपमानित एवं तिरस्कृत हुआ,
(४२४ ब) उसकी तारीख हुई 'ज़िल्ले बहादुर'।"

सुल्तान बहादुर द्वारा मुग़ुल अमीरों की पराजय

जब गुजरात की विलायत में मुग़ुलों को रहते हुए एक वर्ष व्यतीत हो गया तो गुजरात वाले सैनिक से प्रजा तक मुग़ुलों के अनुचित व्यवहार से तंग आ गये और वे षड्यन्त्र रचने लगे तथा रक्तपात में संलग्न हो गए। चूँकि मुग़ुलों को गुजरात में अपार धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई थी और उनके परिवार वाले एवं सम्बन्धी आगरा तथा देहली में थे अतः उनका इस विलायत में निवास करने को ज़रा भी दिल न चाहता था। इस कारण वे प्रजा से यथोचित व्यवहार न करते थे। अन्ततोगत्वा गुजरात वाले प्रजा एवं सैनिक सुल्तान बहादुर की सहायता की छाया में एकत्र हुए और उसे शत्रुओं से युद्ध करने के लिये प्रेरित किया। जब सुल्तान ने अपनी पताका के नीचे एक बहुत बड़ी भीड़ एकत्रित देखी और हज़रत पादशाह को मन्दू में ठहरे हुए पाया तो वह वीरता प्रदर्शित करता हुआ बन्दर दीव से कम्बायत की ओर रवाना हुआ। यादगार नासिर मीर्ज़ा[2] एवं क़ासिम हुसैन मीर्ज़ा जिन्हें उस भूभाग की हुकूमत एवं अयालत प्राप्त थी, उपेक्षा करके अहमदाबाद पहुँचे। अस्करी मीर्ज़ा जो अहमदाबाद का वाली था शाहज़ादों एवं अमीरों को एक स्थान पर एकत्र करके गुजरात वालों से

१ तीसरा नक्षत्र, कृत्तिका।
२ मूल में 'यादगार मीर्ज़ा व नासिर मीर्ज़ा'।

युद्ध करने के विषय म परामर्श करने लगा। उन लोगों में उसने अत्यधिक मतभेद पाया। प्रत्येक किसी न किसी रास्ते पर लगा हुआ था। अन्ततोगत्वा वे बिना तलवार एवं भाले का प्रयोग किये हुए चम्पानीर की ओर चल दिये। अमीर तरदी बेग जो उस भूभाग की प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त था शाहज़ादों एवं अमीरों की सेवा में पहुँचा और उन्हें शत्रुओं से युद्ध करने के लिए प्रेरित किया। क्योंकि उनमें से अधिकांश आगरा तथा देहली चले जाना चाहते थे और जाने के लिए बहाना ढूँढ रहे थे अत उस समय कोई भी युद्ध हेतु तैयार न हुआ। वे चाहते थे कि अमीर तरदी बेग को बन्दी बनाकर चम्पानीर के क़िले के ख़ज़ाने को नष्ट भ्रष्ट कर दें। अमीर तरदी बेग ने यह बात भाँप ली। वहाँ किले के भीतर चला गया और पुन बाहर न निकला। अस्करी मीर्ज़ा समस्त शाहज़ादों एवं अमीरों को लेकर मन्दू की ओर चल खड़ा हुआ। उन लोगों के जाने के दो तीन दिन बाद तक अमीर तरदी बेग चम्पानीर के किले में ठहरा रहा। जब उसने समझ लिया कि मुग़ल लोग वापस न होंगे तो वह जितनी भी धन सम्पत्ति अपने साथ ले जा सकता था लेकर अमीरों के पीछे चल दिया। सुल्तान बहादुर ने पुन अपने पूर्वजों के राज्य पर अधिकार प्राप्त कर लिया।

जब शाहज़ादे एवं अमीर लोग मन्दू में राजसिंहासन के समक्ष पहुँच गए तो विजयी पादशाह ने शेर खा एवं उसके प्रभुत्व के भय से राजधानी की ओर प्रस्थान किया और मुहर्रम ९४३ हि० (जून-जुलाई १५३६ ई०) में विजयी होकर आगरा पहुँचे और वहाँ के निवासियों के लिए न्याय एवं उपकार के द्वार खोल दिए। न्याय एवं उपकार के उस प्रतीक के सौभाग्य एवं प्रताप के समान राजधानी में पहुँचने के उपरान्त चारों ओर के हाकिम, सम्मानित एवं प्रतिष्ठित लोग शीघ्रातिशीघ्र सल्तनत की चौखट पर पहुँचे और उन्होंने फर्श चूमने का सम्मान प्राप्त किया और नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा प्रतिष्ठित हुए। तदुपरान्त शुभचिन्तक अपने अपने स्थानों को चले गए।

संसार के पादशाह हुमायूँ का शेर खा के विद्रोह को शान्त करने के लिये बंगाला की ओर प्रस्थान

जिस समय वह यशस्वी एवं गुणवान् पादशाह विजयी पताकाओं सहित गुजरात की ओर गया हुआ था तो शेर खा अफ़ग़ान ने जिसका थोड़ा सा हाल पूर्व में लिखा जा चुका है, विजयी पादशाह के विरुद्ध विद्रोह की पताका बलन्द कर दी और षीरव का घोड़ा खाली मैदान में दौड़ाने लगा। अव्यवस्थित अफ़ग़ानों के लिये, जो इधर उधर दरिद्रता में ग्रस्त थे, लूटमार के द्वार खोल दिए। इस कारण उस धूर्त के चत्र के नीचे एक बहुत बड़ा समूह एकत्र हो गया और उसने पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त कर लिया। इस बीच में जब पादशाहे आलमियान[1] दारुलमुल्क मन्दू से आगरा की ओर रवाना हुए तो शेर खा बंगाला विजय की आकांक्षा से अत्यधिक सेना सहित उस प्रदेश की ओर रवाना हुआ। बंगाला के वाली ने उसकी आकांक्षा एवं उसकी योजनाओं से अत्यधिक भयभीत होकर पादशाहे

१ हुमायूँ।

आलम पनाह के दरबार में राजदूत भेजे और शेर खा की महत्वाकाँक्षाओं की अत्यधिक शिकायत (४२५ अ) की। उसके प्रभुत्व एव उसकी शक्ति की शुभ दरबार के विश्वास-पात्रों को सूचना दी। ससार को विजय प्रदान करने वाले पादशाह ने जब यह समाचार सुने तो ९४४ हि० के अन्त (१५३८ ई० के प्रारम्भ) में शासन प्रबन्ध अपने भाई मीर्ज़ा हिन्दाल को सौंप कर तथा कुछ भाग्यशाली अमीरों को उनके साथ करके वैभव की पताका बगाला की ओर बलन्द की . .[1]

हुमायूं द्वारा चुनार की विजय

जब शुभ लश्कर ने निरन्तर यात्रा करते हुए चुनार के किले के समीप, जो शेर खा के अधिकार मे था, पडाव किया तो सम्मानित आदेश हुआ कि प्रतिष्ठित अमीर एव विजयी सेना किले पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से किले का अवरोध कर ल । कुछ अमीरो एव राज्य के उच्च पदाधिकारियों ने धरती-चुम्बन करके निवेदन किया कि, "दास लोग यह उचित समझते हैं कि शुभ लश्कर निरन्तर यात्रा करता हुआ बगाला की ओर प्रस्थान करे और शेर खा को उस विलायत में अधिकार न प्राप्त करने दे कारण कि बगाले की विलायत उसके भरे हुए एव अत्यधिक खजानो सहित उसके अधिकार में आते हो नि सन्देह उसका प्रभुत्व एव उसकी शक्ति अत्यधिक बढ जायगी और युद्ध मे अधिक समय लग जायगा।" अमीरों की बात हज़रत पादशाह को पसन्द आ गई। वे उस स्थान से प्रस्थान करना चाहते थे कि अली कुली तोपची ने जो उनका बहुत विश्वास-पात्र था और जो किला विजय करने की कला के सम्बन्ध में कुछ सेवायें सम्पन्न करना चाहता था, पादशाहे आलम पनाह से निवेदन किया कि, "मैं अल्प समय में इस किले को विजय कर लूंगा।" हज़रत पादशाह उसकी प्रार्थना पर किला विजय करने के लिए तैयार हो गए। यद्यपि वह किला आकाश की बराबरी का दावा करता था और किसी भी किला विजय करने वाले की कल्पना का पक्षी उड़कर उसके कगूरे तक न पहुँच सका था तथापि हज़रत पादशाह के प्रताप के आशीर्वाद से वह ४० दिन में विजय हो गया और विजयी सेना ने उस किले को विजय के उपरान्त बगाला की ओर प्रस्थान किया।

हुमायूं का बंगाल की ओर प्रस्थान

मार्ग में बगाले का वाली, जो सैयिदो के वश से बताया जाता था, शेर खा से युद्ध के कारण घायल होकर बड़ी परेशानी में भाग खडा हुआ और उत्कृष्ट शिविर मे पहुँच गया। दो तीन दिन उपरान्त घावों के कारण उसकी आत्मा का पक्षी, शरीर के पिंजरे से उड गया। शुभ सेना निरन्तर यात्रा करती हुई रवाना हुई । जब आकाश रूपी सेना के प्रस्थान के समाचार शेर खा ने बगाला मे सुने तो वह काँप उठा और भाग खडा हुआ किन्तु अत्यधिक सोना एव जवाहर, जो दी काल से वहाँ एकत्र हुए थे, उसे तथा उसकी सेना वालो को प्राप्त हो गए । सफर ९४ हि० के प्रारम्भ (जून १५३८ ई० के अन्त) में विजयी पताकाओं के चन्द्र ने बगाला की राजधा पर अपनी छाया डाली। वहाँ के निवासी शाही कृपा द्वारा सम्मानित हुए।

१ शेर का अनुवाद नहीं किया गया है।

हुमायूं की वापसी

जब उस प्रदेश में विजयी सेना के पड़ाव को लगभग एक वर्ष व्यतीत हो गया तो जम सरीखे पादशाह को ज्ञात हुआ कि मीर्जा हिन्दाल के नेत्रों पर असावधानी के परदे छा गए हैं और वह राजधानी आगरा में स्वतंत्र रूप से शासन करना चाहता है तथा उसने अपने नाम का खुत्बा पढ़वा दिया है और राजसिंहासन पर आरूढ़ हो गया है, उसने शेख बहलूल[1] की हत्या करा दी है और देहली की विजय हेतु पताका बलन्द कर दी है। आकाश सरीखे उत्कर्ष वाले पादशाह को जब मीर्जा हिन्दाल की महत्वाकांक्षाओं का पता चला तो उन्होंने जहाँगीर कुली मीर्जा को बंगाला का वाली नियुक्त कर दिया और अधिकांश प्रतिष्ठित अमीरों एवं समस्त विजयी सेना को उसके अधीन कर दिया और सैयिदों, आलिमों एवं दरबार के विश्वासपात्रों के एक समूह को लेकर आगरा की ओर रवाना हुए। शेर खां, जो उस समय पलायन की विलायत में ठहरा हुआ था,[2] जम सरीखे पादशाह के थोड़ी सी सेना सहित प्रस्थान के विषय में अवगत होकर अत्यधिक सेना सहित शुभ लश्कर के मार्ग में पहुँच गया। घोर युद्ध होने लगा। .[3]

हुमायूं का ईरान की ओर प्रस्थान करने का संकल्प

सम्मानित पादशाह ने ईश्वर की कृपा पर आश्रित होकर अजम के समस्त प्रदेशों एवं तबरिस्तान के बादशाह हज़रत शाह तहमास्प के पास जाना निश्चय कर लिया। सर्वप्रथम उन्होंने एक वाक्पटु राजदूत द्वारा शुभ चिन्ता एवं निष्ठा सम्बन्धी पत्र संसार को शरण प्रदान करने वाले दरबार में[4] भेजा और अपने संकल्प की सूचना दी। शाह जम सरीखे हज़रत पादशाह के प्रस्थान सम्बन्धी पत्र को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ, और उसने खुरासान की विलायत के हाकिमों को अलंघनीय फरमान लिख कर आदेश दिया कि जब हुमायूं पादशाह हमारी राजधानी में पहुँचने के उद्देश्य से हमारे राज्य में प्रविष्ट हों तो उनके आदर सम्मान एवं उनकी सेवा तथा उनके आतिथ्य एवं उन्हें पेशकश और उपहार प्रस्तुत करने में कोई कसर न उठा रक्खी जाय। ऐसे पादशाह की जैसी सहायता करनी चाहिये और उसके साथ जिस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये उसके अनुसार उन्हें सम्मानित दरबार में भेजा जाय। जब जल तथा स्थल के पादशाह को यह सुखद समाचार प्राप्त हुए तो वे निष्ठापूर्वक उस मुर्तजा[5] के वंश के पादशाह की भेंट हेतु रवाना हुए।

१ यह नाम विभिन्न हस्तलिपियों एवं ग्रन्थों में विभिन्न प्रकार से लिखा है : बहलूल, फूल एवं फूला। वह शेख मुहम्मद गौस ग्वालियरी का बड़ा भाई था। शेख मुहम्मद गौस के विषय में, मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूनी की मुन्तखबुत्तवारीख भाग ३ देखिये (पृ० ४-६)। वे शेख बायज़ीद बुस्तामी से अपना सिलसिला मिलाते थे। डा० ईश्वरी प्रसाद ने 'शेख फरीदुद्दीन अत्तार' लिखा है जो ठीक नहीं है।

२ भागा भागा फिर रहा था।

३ हुमायूं की पराजय एवं ईरान की ओर प्रस्थान के पूर्व से सम्बन्धित घटना का पृष्ठ अलीगढ़ विश्वविद्यालय के रोटोग्राफ में नहीं है।

४ शाह तहमास्प के पास।

५ हज़रत अली की उपाधि।

हुमायूं पादशाह का हज़रत खिलाफत पनाह शाह तहमास्प[1] बिन शाह इस्माईल हुसेनी की सेवा मे खुरासान के मार्ग से ईरान को प्रस्थान

२२ जमादी-उल आखिर ९५० हि० (२२ सितम्बर १५४३ ई०) को भाग्यशाली हज़रत पादशाह अपने सौभाग्य के पथ-प्रदर्शन द्वारा सिन्ध नदी के पार हुए और सौभाग्य एव प्रताप के साथ खुरासान की ओर रवाना हुए। यात्रा करते हुए उस वर्ष के ज़ीकाद (जनवरी फरवरी १५४४ ई०) को राजधानी हिरात के समीप पहुँचे। हिरात के हाकिम मुहम्मद खा ने श्लघनीय आदेशानुसार स्वागत करके आदर-सम्मान प्रदर्शित करने मे कोई कसर न उठा रखी। हिन्दुस्तान के पादशाह २० दिन तक रागान नामक उद्यान मे ठहरे रहे और एमारतो के निरीक्षण, बागो की सैर एव प्रतिष्ठित वलियो तथा उत्कृष्ट पवित्र लोगो के मज़ार के तवाफ में व्यस्त रहे। तदुपरान्त जाम[2] के मार्ग से मशहदे मुकद्दस की ओर रवाना हुए। जिलहिज्जा के प्रारम्भ (फरवरी १५४४ ई० के प्रारम्भ) में जाम की विलायत में पहुँचे तथा शख जाम के रौज़े की जियारत द्वारा सम्मानित हुए। वहाँ से प्रस्थान करके मशहदे मुकद्दस[3] के समीप इमाम मूसी अरिजा के रौज़े के तवाफ का एहराम[4] बाँध कर मुहर्रम ९५१ हि० (मार्च-अप्रैल १५४४ ई०) मे उस उत्कृष्ट भूभाग में पहुँचे। (४२६ ब) सम्मानित सैयिद लोगो एव शाह कुली इस्तजलू ने स्वागत किया और हज़रत पादशाह को उचित रूप से नगर में ले गए तथा उनकी सेवा में सलग्न हो गए। हज़रत पादशाह ने फिरिश्तो के निवास की चौखट[5] के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया। दर्शन, तवाफ, एबादतो एव एतकाफ[6] के उपरान्त अपनी इच्छायें एव अभिलाषाएँ उस पवित्र गृह में जो कि आवश्यकता ग्रस्त लोगो का किब्ला[7] है विनयपूर्वक एव गिडगिडा कर ध्यान की ओर अपनी प्रार्थना के स्वीकार होने के सुखद समाचार परोक्ष के उद्घाटक से सुनकर बडी सच्चाई एव निष्ठा से हृदयग्राही एराक की ओर प्रस्थान किया। वे जिस प्रदेश में पहुँचते वहाँ के सैयिद लोग, आलिम एव मशायख

१ ईरान के बादशाह शाह तहमास्प सफवी का जन्म २६ जिलहिज्जा ९१९ हि० (२२ फरवरी १५१४ ई०) को हुआ और वह अपने पिता शाह इस्माईल सफवी प्रथम, जो ईरान के शीआ सफवी वश का सस्थापक था, के स्थान पर १९ रजब ९३० हि० (२४ मई १५२४ ई०) को सिंहासनारूढ हुआ। बडी सफलता से राज्य करने के उपरान्त १५ सफ़र ९८४ हि० (१५ मई १५७६ ई०) को वह मृत्यु को प्राप्त हुआ।

२ हिरात का एक प्रात जो कोहिस्तान के उत्तरी पूर्वी कोने पर हिरात नदी के समीप स्थित है। हम्दुल्लाह मुस्तौफ़ी क़ज़वीनी ने उसे बडा ही हरा भरा एव फलों तथा रेशम के लिये प्रसिद्ध बताया है।

३ हज़रत इमाम रिज़ा के रौज़े के कारण मशहद को मशहदे मुक़द्दस (पूज्य) कहा जाता है।

४ हाजियों का वस्त्र, बिना सिली हुई दो चादरें जिनमें से एक बाँधी और एक ओढी जाती है। इस शब्द का प्रयोग हज़रत इमाम रिज़ा के रौज़े की ज़ियारत के उल्लेख के कारण किया गया है।

५ हज़रत इमाम रिज़ा के रौज़े से तात्पर्य है।

६ एकान्त में ईश्वर की तपस्या।

७ मक्का में वह स्थान जहाँ हजरे असवद (काला पत्थर) स्थापित है, और जिसकी ओर मुह करके मुसलमान नमाज़ पढते हैं।

९५२ हि० (२५ मार्च १५४५ ई०) को कन्धार प्रदेश पर अपने न्याय की छाया डाली और उस वर्ष के जमादी-उल-अव्वल मास (जुलाई-अगस्त १५४५ ई०) में कन्धार का किला विजय हो गया। अस्करी मीर्जा जिसने विद्रोह की पताका बलन्द कर दी थी, पश्चाताप प्रकट तथा क्षमा याचना करता हुआ बाहर निकला। परोपकारी हज़रत पादशाह ने मीर्जा अस्करी के अपराध क्षमा कर दिये।

हज़रत पादशाह ने अपने वचनानुसार कन्धार प्रदेश को उसके खजानों सहित शाह-(४२७ अ) जादा सुल्तान मुराद के अधिकार में दे दिया। यद्यपि कोमल शाहज़ादा उसी वर्ष मृत्यु को प्राप्त हो गया किन्तु कन्धार की विलायत हज़रत शाह दीन पनाह शाह तहमास्प के गुमाश्तों[1] के अधिकार में रही और उनका भतीजा सुल्तान हुसेन मीर्जा वल्द बहराम मीर्जा उनके आदेशानुसार उस विलायत का शासन प्रबन्ध करता रहा।

सम्मानित पादशाह मुहम्मद हुमायूं की विजय, खिलाफत पनाह शाह तहमास्प की सेना को कन्धार में छोड़ना और स्वयं काबुल तथा हिन्द के समस्त प्रदेशों की विजय हेतु प्रस्थान करना

इसका संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है कि जब विजयी हज़रत पादशाह कन्धार की विजय की ओर से निश्चिन्त हो गए तो उन्होंने हज़रत शाहे दीन पनाह के अमीरों एवं सेना वालों को वापस जाने की अनुमति दे दी और स्वयं परमेश्वर पर भरोसा करके घोर युद्ध करने वाली सेना को लेकर काबुल की ओर प्रस्थान किया। जब कामरान मीर्जा को, जो उस विलायत का स्वतंत्र रूप से वाली था, यह समाचार प्राप्त हुए तो उसकी दृढ़ता में बाधा पड़ गई और वह लश्कर एवं सेना सहित सिन्ध की ओर भाग गया और पादशाहे आलमियान ११ रमज़ान[2] को काबुल में उसी प्रकार प्रविष्ट हो गए जिस प्रकार शरीर में आत्मा अथवा वाटिका में फूल। प्रजा को सुख शान्ति प्रदान की।

हज़रत पादशाह ने काबुल की विलायत की सुव्यवस्था एवं वहाँ के शासन-प्रबन्ध का ठीक करने के उपरान्त विजयी पताकायें बदख्शाँ की ओर बलन्द कीं। जब सिन्ध में मीर्जा कामरान को यह समाचार प्राप्त हुए तो उसने अवसर से लाभ उठाते हुए सिन्ध के वाली मीर्जा शाह हुसैन अरगून से षड्यंत्र की पुजारी सेना लेकर काबुल पर शीघ्रातिशीघ्र चढ़ाई कर दी, और उस प्रदेश को छल एवं धूर्तता द्वारा अपने अधिकार में कर लिया और पुनः अपने प्रभुत्व का फरहरा उड़ाने लगा। पादशाह के कुछ अमीरों को, जो उस प्रदेश की प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त थे, हत्या करा दी और उनमें से दो व्यक्तियों को जो सैयिद कहे जाते थे, अन्धा बना दिया। जब यह समाचार हज़रत पादशाह को बदख्शाँ में प्राप्त हुए तो वे शीत ऋतु के बावजूद, जब कि हवा बड़ी ठंडी थी और अत्यधिक बरफ गिर रही थी, किलये ज़फर से काबुल की ओर रवाना हुए। मीर्जा कामरान

१ नियुक्त किया हुआ अभिकर्त्ता।

२ ११ रमज़ान ९५२ हि० (१६ नवम्बर १५४५ ई०)।

पुन अपने कार्यों के विषय में चिन्ता में पड गया और भागने के अतिरिक्त उसके पास कोई उपाय न रहा। विवश होकर वह रूस्ताक के क़िले की ओर रवाना हुआ और उसे अपने शरण एव शान्ति का स्थान समझ कर उस किले के बुर्ज एव चहारदीवारी का दृढ बनाने का प्रयत्न करने लगा। जब ससार के पादशाह काबुल पहुँचे तो उन्हें मीर्ज़ा कामरान के रूस्ताक़ के क़िले में पहुँचने के समाचार प्राप्त हुए। उन्होने यह निश्चय कर लिया कि अविलम्ब उक्त क़िले को घेर लिया जाय। सम्भवत वह उद्दड विद्रोही बन्दी बना लिया जाय और षड्यत्र का दमन हो जाय। तदनुसार विजयी पताकाओ को उन्ही दिनो में उस विलायत की ओर रवाना कर दिया। जब हज़रत पादशाह की पताकायें रूस्ताक के समीप पहुँची तो कामरान मीर्ज़ा युद्ध के उद्देश्य से निकला और उन्हे पीछे हटाने के लिए अग्रसर हुआ। लगभग ४० दिन तक सूर्योदय से सायकाल तक युद्ध होता रहता था और बाण एव बन्दूक द्वारा बडी सख्या में लोग मारे जाते थे। अन्ततोगत्वा विजय का समीर जल तथा स्थल के पादशाह[1] की पताका की ओर प्रवाहित हुआ। मीर्ज़ा कामरान विनयपूर्वक दीनता प्रदर्शित करता हुआ उस किले के बाहर निकला और ससार को शरण प्रदान करने वाले दरबार की ओर रवाना हुआ। उसके अपराधो को क्षमा कर दिया गया और उसके प्रति नाना प्रकार की कृपायें प्रदर्शित की गई और उसे पुन तबल[2] पताका, सेना एव परिजन प्रदान करके सम्मानित किया गया। उसे कौलाबा की विलायत का, जो बडी ही समृद्ध थी, वाली बना दिया गया। हज़रत पादशाह उसको प्रोत्साहन प्रदान करने का अधिक से अधिक प्रयत्न करने लगे, किन्तु मीर्ज़ा कामरान ने सौभाग्य से वचित होने के कारण पादशाहे आलमियान की इन समस्त अनुकम्पाओ को भूल के ताख़ पर रख दिया और कौलाबा में थोडा सा समय व्यतीत करने के उपरान्त पुन विद्रोह कर दिया और कृतघ्नता को अपनी प्रथा बनाते हुए पहिले से भी अधिक विरोध का प्रयत्न करने लगा। अन्त मे जब उसने अपने आपको युद्ध में असमर्थ पाया तो सलीम शाह वल्द शेर खा से, जो उस (४२७ व) समय हिन्दुस्तान के समस्त प्रदेशो का वाली था, सहायता माँगी। हिन्दुस्तान के वाली ने उसके साथ ३०,००० वीर अश्वारोही एव कुछ प्रतिष्ठित अमीर हज़रत पादशाह की विलायत की ओर भेजे। हज़रत पादशाह सूचना पाकर १०,००० वीर अश्वारोहियो सहित दुष्ट शत्रु के विनाश का सकल्प करके ईश्वर की सहायता की छाया में रवाना हुए। जब दोनो सेनाओ में तेज़ी से युद्ध होने लगा तो हज़रत पादशाह की विजय प्राप्त हो गई और शत्रु बुरी तरह पराजित हो गए। प्रत्येक किसी न किसी दिशा की ओर भाग गया किन्तु मीर्ज़ा हिन्दाल इस युद्ध में मारा गया।[3]

मीर्ज़ा कामरान भाग कर समीप के एक क़बीले के पास चला गया। उनके एक सरदार ने उसे बन्दी बनाकर हज़रत पादशाह के पास भेज दिया। हज़रत पादशाह मीर्ज़ा कामरान को हर बार की भाँति शाहाना कृपाओं द्वारा सम्मानित करना चाहते थे किन्तु प्रतिष्ठित अमीरो अपितु लश्कर के सभी छोटे बडे लोगो ने निवेदन किया कि मीर्ज़ा कामरान का अस्तित्व षड्यत्र एव विद्रोह की जड है। हज़रत पादशाह के सिंहासनारोहण के समय से लेकर इस समय तक उसने जो जो

१ हुमायूँ।
२ दुंदुभि, नक़्क़ारा।
३ इस युद्ध का विवरण इस इतिहास में सभी इतिहासों से भिन्न है और ठीक नहीं है।

षडयन्त्र रचे थे उन्हे एक एत्र करके हज़रत पादशाह के समक्ष ब्यान किया और कहा कि उसने जो दुष्टतायें की हैं उनमें से हाल की एक दुष्टता यह है कि उसने दो प्रतिष्ठित सैयिदों को अन्धा बना दिया। जब हज़रत पादशाह ने यह देखा कि अमीर लोग एव सेना वाले इस बात का आग्रह कर रहे हैं कि मीर्ज़ा कामरान की हत्या करा देना चाहिए तो उन्होंने उसकी हत्या कराने की अनुमति तो न दी किन्तु इस्लाम के काज़ियों से परामर्श करके सैयिदों को मुद्दई बना कर 'आँख के स्थान पर आँख' के सिद्धान्तानुसार उसे अन्धा बनवा दिया और उसे मक्का-मदीना चले जाने की अनुमति दे दी। वह बन्दर दीव से जहाज़ पर बैठ कर रवाना हो गया और कुछ वर्ष तक उस सम्मानित स्थान पर निवास करता रहा और वहीं अन्त मे मृत्यु को प्राप्त हो गया। सुना जाता है कि जिन दिनों मीर्ज़ा कामरान अन्धा बनाया गया मीर्ज़ा अस्करी भी मृत्यु को प्राप्त हो गया।

मुहम्मद हुमायूँ शाह का लाहौर की ओर प्रस्थान और बैराम खा खाने खानां का सलीम शाह बिन शेर खा से युद्ध हेतु भेजा जाना

९६२ हि० के प्रारम्भ (१५५४ ई० के अन्त) में जब हज़रत पादशाह अपने सौभाग्य एव प्रताप की सहायता से भाइयों की ओर से निश्चिन्त हो गए तो उन्होंने ससार वालो के लिए उपकार एव न्याय के द्वार खोल दिए। भाइयों के विद्रोह के समय जो अव्यवस्था फैल गई थी उसे दूर कर दिया और हिन्दुस्तान की विजय का सकल्प करके विजयी फरहरा हिन्दुस्तान की ओर फहराया। निकट तथा दूर मे विजयी पताकाओ को एव शहशाह के आकाश रूपी छत्र की छाया मे सेना एकत्र करके निरन्तर यात्रा करते हुए रवाना हुए। रबी उल-आखिर के अन्त (मार्च १५-५५ ई० के मध्य) में लाहौर प्रदेश की वायु शुभ सेना की गर्द से अम्बर के समान सुगन्धित हो गई। हज़रत पादशाह अत्यधिक हर्ष एव प्रसन्नता के कारण लाहौर के क्षेत्र में ठहर गए और बैराम ख़ा (४२८ अ) का जो खाने खाना की उपाधि द्वारा सुशोभित था ५ ००० प्रतिष्ठित अश्वारोहियों सहित, जिनमें से प्रत्येक दूसरा रुस्तम एव इस्फन्दयार था, राजधानी देहली की ओर रवाना किया। उन दिनों सलीम शाह बिन शेर खा की मृत्यु हो चुकी थी और अफगानों के समूह से सिकन्दर नामक एक व्यक्ति हिन्दुस्तान में राज्य कर रहा था। बैराम खा विजयी सेनाओ को लेकर लाहौर के भूभाग से सरहिन्द[1] पहुँचा और वहाँ के निवासियों को क्षमा एव शान्ति का सन्देश देकर दया एव उपकार के निमत्रण द्वारा सतुष्ट कर दिया। उस स्थान पर बैराम खा एव सिकन्दर सुल्तान में जिसके साथ ५०,००० अश्वारोही थे, घोर युद्ध हुआ। दोनों सेनाओ के वीरो एव योद्धाओ ने बहुत बडी सख्या मे लोगो की हत्या कर दी अफगान लोग जिनके सौभाग्य का अन्त हो चुका था भाग खडे हुए। प्रत्येक किसी न किसी दिशा में चल दिया। बैराम खा ने इस विजय का हाल लिख कर

१ मूल में यह नाम स्पष्ट नहीं।

राजसिंहासन के पायो में भेज दिया और शत्रुओं के पीछे रवाना हुआ। उनमें से जितने लोगों के विषय में सम्भव हो सका उन्हें छिन्न-भिन्न कर दिया। हज़रत पादशाह ने अपनी विजय एवं सफलता की पताका देहली की ओर बलन्द की। ...

शाबान मास (जून-जुलाई १५५५ ई०) में हज़रत पादशाह ने अपनी शुभ छाया राजधानी देहली पर डाली और पुन अपने चरणों के आशीर्वाद से राजसिंहासन को आकाश की ईर्ष्या का विषय बना दिया और न्याय एवं उपकार के प्रसार तथा अत्याचार एवं शत्रुओं के दमन का अत्यधिक प्रयत्न किया। न्याय के विषय में फरमान निकाले और हिन्दुस्तान का राज्य उनके अधिकार में आ गया तथा कोई भी प्रतिस्पर्धी न रहा। तीन वर्ष इसी प्रकार राज्य करने के उपरान्त ९६५ हि० (१५५७-५८ ई०)[1] को वे मृत्यु को प्राप्त हो गए।

वे ५२ वर्ष तक जीवित रहे और उन्होंने २८ वर्ष तक राज्य किया तथा दो पुत्र छोड़े। एक सुल्तान जलालुद्दीन अकबर जो सौभाग्य एवं प्रताप से अपने पिता के स्थान पर सिंहासनारूढ हुए...और दूसरे[2] काबुल में उनके आदेशानुसार हुकूमत करते हैं। . .[3]

१ यह तारीख शुद्ध नहीं।
२ मीर्ज़ा मुहम्मद हकीम।
३ इसके बाद लेखक ने क़ानूने हुमायूनी से हुमायूँ के आविष्कारों का उल्लेख किया है। इन पृष्ठों का अनुवाद नहीं किया गया है।

तारीखे अलफ़ी

लेखक—मुल्ला अहमद इब्न नसुल्लाह देवली टट्टवी, आसफ खा इत्यादि

(ब्रिटिश म्युजियम मैनुस्क्रप्ट, रियु भाग १ पृ० ११७ अ[1])

९३८ हि०[2]

(१५ अगस्त १५३१ ई०—२ अगस्त १५३२ ई०)

[3] . . (५५५व) इस वर्ष हजरत जन्नत आशियानी मुहम्मद हुमायूँ पादशाह ने कालिंजर विजय हेतु प्रस्थान किया और कुछ समय के अवरोध के उपरान्त वहाँ के राजा ने प्रयत्न करके संधि कर ली तथा आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। हज़रत पादशाह ने उसके अपराधों को क्षमा कर दिया और बिबन तथा बायज़ीद के विनाश हेतु रवाना हुए।

(५५६ व) (इसी वर्ष) सुल्तान बहादुर ने राय सेन का किला विजय कर लिया। कालपी का हाकिम सुल्तान आलम, जिसके राज्य पर देहली के पादशाह ने अपना अधिकार जमा लिया था, सुल्तान बहादुर के पास पहुँच गया था। उसे राय सेन के किले पर शासन प्रबन्ध करने के लिए नियुक्त किया गया। .

९३९ हि०[4]

(३ अगस्त १५३२ ई०—२२ जुलाई १५३३ ई०)

(५५९ अ) इस वर्ष हुमायूँ पादशाह बिबन तथा बायजीद के विनाश हेतु रवाना हुए और उनका समूलोच्छेदन कर दिया। लौटते समय बनारस को अपने अधिकार में कर लिया। विजय तथा सफलता प्राप्त करके आगरा लौटे और आदेश दिया कि आगरा में एक बहुत बड़े जश्न का प्रबन्ध किया जाय। बाजारों की "आईन बन्दी"[5] की गई। इस जश्न में बारह हज़ार व्यक्तियों को खिल-

१ इस अनुवाद में अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी लखनऊ की हस्तलिपि RP 954 022 N 32 T से भी सहायता ली गई है। यह हस्तलिपि अपूर्ण है और इसमें ९४६ हि० तक की ही घटनाओं का उल्लेख है।

२ ब्रिटिश म्युजियम की हस्तलिपि के अनुसार '९३६ हि०'। लखनऊ हस्तलिपि में भी छील कर ९३६ हि० बनाया गया है किन्तु जिस क्रम से घटनाओं का उल्लेख हुआ है, उसे देखते हुये ९३८ हि० ही उपयुक्त है।

३ केवल हिन्दुस्तान (देहली के पादशाह) से सम्बन्धित अंशों का अनुवाद किया गया है।

४ ब्रिटिश म्युजियम की हस्तलिपि में भी तारीख मिटाई गई है और '९४० हि०' लिखा है।

५ सजावट।

अतें प्रदान की गईं जिनमे एक हज़ार पोस्तीने थी। दो हज़ार व्यक्तियों को जडाऊ एव सोने के तुकमे[1] सहित बालापोश[2], ७० अरबी एव एराकी घोडे, १०० तुर्की घोडे, १२ कितार[3] ऊँट, १२ कितार खच्चर प्रदान किए गए।

९४० हि०[4]

(२३ जुलाई १५३३ ई०—१२ जुलाई १५३४ ई०)

(५६० अ) इस वर्ष मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा वल्द बदी-उज़्ज़मान मीर्ज़ा इब्ने सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा[5] ने सगठित होकर उस अभिमान के कारण जो मुग़ुल सुल्तानो में पाया जाता है विद्रोह कर दिया। हज़रत (जहाँबानी) ने उन सब को बन्दी बना लिया। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा को यादगार बेग तगाई को इस आशय से सौंप दिया कि उसे बयाना के किले में बन्दी रक्खे। यादगार बेग के कुछ सेवकों ने मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा से मिलकर उसे भगा दिया। वह सुल्तान बहादुर के पास गुजरात चला गया। मुहम्मद सुल्तान एव वली खूब[6] की आँखों मे सलाई फेर देने का आदेश हुआ। जिस व्यक्ति का मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा की आँखों मे सलाई फेरने का आदेश था उसने आदेश की उपेक्षा करते हुए भली-भाँति सलाई न फेरी। वली खूब सुल्तान अन्धा हो गया। मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा एव उसका पुत्र उलुग मीर्ज़ा भागकर कन्नौज पहुँचे और षड्यत्र तथा उपद्रव प्रारम्भ कर दिया। हज़रत (जहाँबानी) ने आदमियों को भेजकर मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा की माँग की। सुल्तान बहादुर ने कोई ऐसी बात न कही जिससे कोई लाभ हो सकता। विवश होकर उन्होंने गुजरात पर आक्रमण करना निश्चय कर लिया। वे इस वर्ष स्वय ग्वालियर की सैर हेतु रवाना हुए और दो मास तक वहाँ ठहर कर पुन आगरा लौट आये।

सुल्तान बहादुर गुजराती ने इस वर्ष चित्तौड के किले की विजय का सकल्प किया। सुल्तान बहादुर गुजरात लौट आया और हिन्दू[7] पर विजय तथा इस अभियान की सफलता के कारण अत्यधिक अभिमानी हो गया। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा के प्रति अत्यधिक आदर सम्मान प्रदर्शित करने लगा। सुल्तान अलाउद्दीन भी, जो सुल्तान बहलोल लोदी का वशज था, उसके पास पहुँच गया। वह उसे सर्वदा राजधानी पर आक्रमण करने के लिये प्रेरित किया करता था। तातार खाँ (५६१ अ) सुल्तान अलाउद्दीन का पुत्र था। वह इन लोगों में अपने पौरुष के लिए बडा प्रसिद्ध

१ बटन के स्थान पर लगायी जाने वाली घुंडी।
२ सब कपड़ों के ऊपर पहिनने वाला लबादा।
३ पंक्ति। ऊँटों की पंक्ति से तात्पर्य है जिसमें १० अथवा इससे अधिक ऊँट होते थे।
४ यह तारीख भी हस्तलिपियों में भिगाकर '९४१ हि०' बनाई गई है।
५ यह वाक्य स्पष्ट नहीं। सम्भवत: मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा तथा उसके पुत्र उलुग मीर्ज़ा का उल्लेख होगा।
६ मूल में यह शब्द स्पष्ट नहीं।
७ चित्तौड़ के राणा।

था। सुल्तान बहादुर ने उसको आश्रय प्रदान करके उसे तीस करोड[1]प्रदान किए और रणथम्बोर के किले के हाकिम बुरहानुल मुल्क के पास भेजा ताकि तातार खा उसे अफगान सेना पर व्यय करे।[2] तातार खा ने सेना एकत्र करनी प्रारम्भ कर दी और लगभग ३० ४० हजार अश्वारोही एकत्र कर लिये तथा हजरत जनत आशियानी के राज्य पर छापे मारने लगा।

मीर्जा हैदर बदख्शां से काबुल होता हुआ लाहौर पहुँचा और मीर्जा कामरान का बहुत बडा विश्वासपात्र बन गया।

९४१ हि०[3]

(१३ जुलाई १५३४ ई०—१ जुलाई १५३५ ई०)

(५६१ ब) जब मुहम्मद जमान मीर्जा सुल्तान बहादुर गुजराती के पास चला गया तो हजरत जनत आशियानी ने कई बार सुल्तान बहादुर को लिखा कि 'मुहम्मद जमान मीर्जा को यदि तुम (हमारे) दरबार म नही भेजते तो अपने राज्य से निकाल दो।" सुल्तान बहादुर ने अभिमानवश उन दोनो शर्तों में से किसी का भी पालन न किया। हजरत पादशाह ने बदला लेने के लिए गुजरात पर आक्रमण की तैयारी प्रारम्भ कर दी।

तातार खा लोदी के पास, जिसे सुल्तान बहादुर ने आश्रय प्रदान किया था, अफगानों का एक बहुत बडा समूह इस कारण एकत्र हो गया था कि वह राज्य का उत्तराधिकारी है। वह ब्याना के विरुद्ध पहुँचा और ब्याना के किले को अपने अधिकार मे कर लिया। हजरत (जनत) आशियानी ने हिन्दाल मीर्जा को बहुत बडी सेना सहित उससे युद्ध करने के लिए भेजा। जब हिन्दाल मीर्जा तातार खा के समीप पहुँचा तो जो लोग उसके पास एकत्र हुए थे वे ठहर न सके और छिन्न भिन्न हो गए। इस प्रकार तातार खा के पास दो हजार से अधिक आदमी न रह गए। वह अत्यधिक लज्जा के कारण सुल्तान बहादुर के पास भी न जा सकता था क्योंकि उसने उससे अत्यधिक धन लेकर कृतघ्न अफगानों पर व्यय कर दिया था। विवश होकर वह युद्ध हेतु बाहर निकला और हिन्दाल मीर्जा की सेना के मध्य भाग पर आक्रमण किया और ३०० व्यक्तियों सहित मारा गया। उसके विद्रोह का दमन हो गया। ब्याना पुन हिन्दाल मीर्जा के अधिकार मे आ गया।

(५६२ अ) हजरत जनत आशियानी इस विजय के उपरान्त बहादुर से युद्ध करने के लिए रवाना हुए। सुल्तान बहादुर ने इस वर्ष पुन चित्तौड विजय का सकल्प करके अत्यधिक सेना एव किले पर अधिकार करने की सामग्री लेकर चित्तौड की ओर प्रस्थान किया। चित्तौड के किले के नीचे उसे तातार खा की पराजय तथा हजरत जनत आशियानी की विजय के समाचार प्राप्त हुए। वह अत्यधिक व्याकुल हुआ।

१ यह शब्द स्पष्ट नहीं।

२ मूल में यह वाक्य स्पष्ट नहीं।

३ हस्तलिपियों में ९४१ हि० के ऊपर ९४२ हि० लिखा गया है।

इस वर्ष कामरान मीर्ज़ा ने लाहौर से कन्धार पर आक्रमण किया कारण कि शाह तहमास्प के भाई साम मीर्ज़ा ने हेरी[१] के हाकिम अगज़वार खां को साथ लेकर कन्धार पर आक्रमण कर दिया था। इससे पूर्व ईरान के बादशाह ने हिरात की हुकूमत अगज़वार खां से लेकर सूफियान खलीफा को प्रदान कर दी थी। सूफियान खलीफा जब हिरात की ओर रवाना हुआ तो अगज़वार खां खिन्न होकर साम मीर्ज़ा को शाह के आदेश के विपरीत कन्धार के विरुद्ध इस बहाने से ले गया कि उसे अधिकार में कर ले किन्तु वास्तव में वह अपने भागने के लिये एक शान्ति का स्थान चाहता था। ख्वाजा कलां[२], जो मीर्ज़ा कामरान की ओर से कन्धार का हाकिम था, किले में बन्द हो गया। साम मीर्ज़ा तथा अगज़वार खां आठ मास तक कन्धार के किले का अवरोध किए रहे। क्योंकि ख्वाजा कलां बेग[२] वीर तथा अनुभवी था, अतः किज़िलबाश लोग सफलता प्राप्त न कर सके। कामरान मीर्ज़ा ख्वाजा कलाँ बेग[२] की सहायतार्थ रवाना हुआ और कन्धार के किले के द्वार पर साम मीर्ज़ा से युद्ध किया। ख्वाजा कलाँ बेग की वीरता के कारण मीर्ज़ा कामरान को विजय प्राप्त हो गई। अगज़वार खां युद्ध में बन्दी बना लिया गया और उसकी हत्या करा दी गई। साम मीर्ज़ा बड़ी बुरी दशा में भाग गया।

९४२ हि०[३]

(२ जुलाई १५३५ ई०—१९ जून १५३६ ई०)

इस वर्ष हज़रत जन्नत आशियानी, सुल्तान बहादुर के राज्य पर आक्रमण करने के लिये रवाना हुए। सुल्तान को चित्तौड़ के किले के नीचे इस बात की सूचना मिली। उसने अपने अमीरों से परामर्श किया। उसकी सेना के अधिकांश लोगों ने कहा कि, "चित्तौड़ के अवरोध को त्याग देना चाहिये।" सुल्तान बहादुर के सर्वश्रेष्ठ अमीर सद्र खां ने कहा कि, "हमने काफ़िरों का (५६२ ब) अवरोध कर लिया है। इस समय यदि मुसलमान पादशाह हमारे ऊपर आक्रमण करेगा तो उसका यह आक्रमण काफ़िरों की सहायता होगी। यह बात क़यामत तक उसके विषय में मुसलमान लोग कहते रहेंगे। उचित यही है कि हम यहीं पर ठहरे रहें, कारण कि सम्भवतः हज़रत (जन्नत आशियानी) इस समय हमारे ऊपर आक्रमण न करेंगे।"

हज़रत जन्नत आशियानी जब सारंगपुर पहुँचे तो उनसे यह बात कही गई। वे इस कारण ठहर गए। सुल्तान बहादुर निश्चिन्त होकर चित्तौड़ को घेरे रहा। ३ रमज़ान ९४२ हि० (२५ फरवरी १५३६ ई०) को उसे अधिकार में कर लिया। लूट में अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई। उसने इस विजय पर बहुत बड़े जश्न का आयोजन कराया। जो कुछ लूट की धन सम्पत्ति प्राप्त की

१ हिरात।

२ कुछ स्थानों पर 'ख्वाजा कमाल बेग'।

३ यह तारीख़ भी हस्तलिपियों में मिटाई गई है और ९४२ हि० को मिटाकर ९४३ हि० बनाया गया है।

थी, वह सेना वालों को बाँट दी तथा हज़रत जन्नत आशियानी ने युद्ध हेतु रवाना हुआ। वे भी इस विजय के समाचार प्राप्त करते ही उसकी ओर चल खड़े हुए। [1]के पास दोनों सेनायें एक दूसरे के समीप पहुँच गईं। अभी खेमे भी न लग पाये थे कि सैयिद अली खाँ एवं खुरासान[2], जो सुल्तान बहादुर के क़रावल थे, मुग़लों की विजयी सेना द्वारा पराजित होकर सुल्तान बहादुर की सेना में पहुँच गए। गुजरात वालों की सेना ने हतोत्साहित होकर पड़ाव किया। सुल्तान बहादुर ने अमीरों से युद्ध की विधि के विषय में परामर्श किया। सद्र खाँ ने कहा कि, "कल पंक्तियाँ सुव्यवस्थित करके युद्ध करना चाहिये कारण कि सेना वालों के दिल चित्तौड़ विजय के कारण बढ़े हुए हैं। अभी तक उनकी दृष्टि मुग़लों की सेना पर नहीं पड़ी है।" रूमी खाँ ने जिसे सुल्तान बहादुर के बहुत बड़े तोपख़ाने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था, कहा कि, "पंक्तियाँ जमाकर युद्ध करने में तोप एवं तोपख़ाने से कोई लाभ नहीं होता। इस सरकार में बहुत बड़ा तोपख़ाना एकत्र हो गया है और रूम[3] के क़ैसर के अतिरिक्त इतना बड़ा तोपख़ाना किसी के पास नहीं है। अतः यह उचित होगा कि सेना के चारों ओर खाई खोद ली जाय और नित्य-प्रति युद्ध किया जाय। मुग़लों की सेना जब निकट आये तो तोप तथा तुफ़ग[4] द्वारा उनकी बहुत बड़ी संख्या की हत्या कर दी जायेगी।" सुल्तान बहादुर को यह राय पसन्द आ गई। उसने अपने शिविर के चारों ओर खाई खुदवा दी। दो मास तक दोनों सेनाएँ एक दूसरे के सामने पड़ाव किए रहीं और प्रायः युद्ध के इच्छुक जवान बाहर निकल कर वीरता एवं पौरुष प्रदर्शित करते थे। मुग़ल सैनिक तोप तथा तुफ़ग के समीप बहुत कम जाते थे। हज़रत जन्नत आशियानी ने एक बहुत बड़ी सेना को इस आशय से नियुक्त कर दिया कि वह सुल्तान बहादुर के शिविर के चारों ओर छापे मारती रहे और उसके शिविर में बाहर से जो कुछ भी भेजा जा रहा हो उसे नष्ट कर दिया जाय। कई दिन इसी प्रकार व्यतीत हो गए। सुल्तान बहादुर के शिविर में अकाल पड़ गया। अनाज अप्राप्य हो गया। जो चारा निकट था वह सब समाप्त हो गया। मुग़ल धनुर्धारियों के भय के कारण किसी को भी अपने लश्कर से दूर जाने एवं अनाज तथा चारा लाने का साहस न होता था। बहुत बड़ी संख्या में घोड़े, हाथी तथा आदमी भोजन के अभाव के कारण (५६३ अ) मृत्यु को प्राप्त हो गए। गुजरात की सेना निराश हो गई। सुल्तान बहादुर ने जब यह देखा कि अब अधिक ठहरने में बन्दी बना लिये जाने का भय है तो उसने अपने विश्वास पात्र अमीरों में से पाँच व्यक्ति, जिनमें से एक बुरहानपुर का हाकिम और दूसरा मालवा का हाकिम कादिर शाह था, अपने साथ लिये और सरापर्दः[5] के पीछे से निकल कर मन्दू की ओर भाग गया। जब सेना वालों को सुल्तान के पलायन का पता चला तो उनमें से प्रत्येक सेना ने किसी न किसी दस्ते के साथ भाग गया। जब हज़रत जन्नत आशियानी को शत्रु के पलायन का पता चला तो उन्होंने उनका पीछा किया और सद्र खाँ के पास, जो एक बहुत बड़ी सेना सहित मन्दू के मार्ग से जा रहा था, पहुँच

१ मूल में छूटा हुआ है। 'नवाहिये मन्दू' अथवा 'मन्दू के पास' होना चाहिये।
२ 'ख़ुरासान खाँ' होना चाहिये।
३ टर्की।
४ बन्दूक।
५ बड़ा खेमा, शाही खेमा।

गए। इस भ्रम में कि यह सुल्तान बहादुर होगा उन्होंने उसपर आक्रमण किया। उनके साथ उस समय तीन-चार हजार व्यक्तियों से अधिक न थे। शेष शाही लश्कर लूटमार में व्यस्त था। गुजरात की सेना में से अत्यधिक लोग मारे गए। हज़रत जन्नत आशियानी ने मन्दू के किले तक उन लोगों का पीछा किया। सुल्तान बहादुर ने किले को बन्द कर लिया। अवरोध में अधिक समय लग गया। अन्त में मुग़लों की एक सेना रात्रि में किले के भीतर पहुँच गई। सुल्तान बहादुर सो रहा था। कोलाहल होने लगा। गुजराती लोग घबड़ा कर किसी न किसी ओर भागने लगे। सुल्तान बहादुर ५-६ अश्वारोहियों सहित गुजरात की ओर भाग गया। सद्र खां, एवं सुल्तान आलम ने सुगर नामक किले में शरण ली[1]। वे एक दिन उपरान्त बाहर निकले। सद्र खां जो किघायल हो चुका था, शाही सेवा में प्रविष्ट हो गया। सुल्तान आलम की एड़ी की नस कटवा दी गई। हज़रत (जन्नत आशियानी) तीन दिन उपरान्त मन्दू के किले के नीचे उतरे और गुजरात की ओर रवाना हो गए।

सुल्तान बहादुर ने चम्पानीर के किले का खज़ाना एवं जवाहर बन्दर दीव की ओर भेज दिये। हज़रत (जन्नत आशियानी) चम्पानीर के किले के नीचे पहुँचे। सुल्तान बहादुर मुकाबला न कर सका और कम्बायत की ओर भाग गया। अहमदाबाद[2] नगर मुग़लों के अधिकार में आ गया और उसे लूट कर नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया। अत्यधिक लूट की धन सम्पत्ति प्राप्त हुई। तदुपरान्त हज़रत (जन्नत आशियानी) शीघ्रातिशीघ्र उसके पीछे रवाना हुए। जब सुल्तान बहादुर कम्बायत पहुँचा तो उसने थके हुए घोड़ों को बदल कर ताजा दम घोड़े ले लिये और बन्दर दीव की ओर रवाना हो गया। हज़रत जहाँबानी जिस दिन बहादुर भागा था उसी दिन के अन्त में कम्बायत पहुँचे। वे दो दिन तक कम्बायत में ठहरे रहे। दूसरे दिन के अन्त में एक वृद्ध[3] पीड़ितों के समान मार्ग में उपस्थित हुआ और उसने निवेदन किया कि, "आज की रात में इस प्रदेश के आसपास के लोग छापे मारेंगे।" हज़रत पादशाह ने उससे पूँछा कि, "तुझमें इस सेना के प्रति यह महानुभूति कैसे उत्पन्न हो गई?" उसने उत्तर दिया, "मेरा पुत्र इस सेना में बन्दी है। मैं चाहता हूँ कि कोई ऐसी सेवा करूं जिसके कारण अपने पुत्र को मुक्त करा सकूं।' हज़रत (जन्नत आशियानी) ने वह रात्रि बड़ी सावधानी से व्यतीत की। प्रात काल के समीप लगभग ५-६ हजार प्यादों ने छापा मारा। सैनिक सावधान होने के कारण खेमों से निकल पड़े और अपने शिविर के बाहर एकत्र हो गए। शिविर मे जो कुछ था वह नष्ट भ्रष्ट हो गया। जब सूर्य उदय हुआ तो चारों ओर से मुग़लों ने गुज-(५६३ ब) रातियों को घेर लिया। उनमें से बहुत बड़ी सख्या की हत्या कर दी गई। जाम फ़ीरोज़, जो कि पूर्व में तता[4] का हाकिम था और अरगूनों की सेना से पराजित होकर गुजरात पहुँचा था तथा जिसने अपनी पुत्री का विवाह सुल्तान बहादुर से कर दिया था, सुल्तान बहादुर की पराजय के समय हज़रत जन्नत आशियानी की सेना द्वारा बन्दी बना दिया गया था। इस रात्रि में उसके रक्षकों ने इस भय

१ यह मन्दू के क़िले का था।
२ मूल में 'महमदाबाद'।
३ अन्य ग्रन्थों में 'वृद्धा'।
४ टट्टा, थट्टा या ठट्टा।

से कि कहीं वह भाग न जाय, उसकी हत्या करा दी। इसी प्रकार सद्र खा गुजराती, जो मन्दू के सुगर[1] के किले में रह गया था और शाही सेवकों मे सम्मिलित हो गया था, मार डाला गया।

दूसरे दिन विजयी लश्कर ने चम्पानीर की ओर प्रस्थान किया और किले का अवरोध कर लिया। किले का रक्षक इख्तियार खा किले की प्रतिरक्षा का प्रयत्न करता रहा। किले में कई वर्ष की सामग्री थी[2]। किले के एक ओर से, जो कि बहुत ऊँचा तथा दृढ था और जिसके नीचे एक बहुत बडा जगल था, जमींदारों की सहायता से घी तेल तथा अनाज रस्सियों से ऊपर पहुँचा दिया जाता था। हजरत किले के चारो ओर सैर कर रहे थे कि उनकी दृष्टि कुछ लोगों पर पडी जो कि जगल से आ रहे थे। वे लोग सेना को देखकर भय के कारण पुन जगल मे प्रविष्ट हो गए। हजरत पादशाह ने सेना के एक दस्ते को उन लोगों का पीछा करने का आदेश दिया। उनमें से कुछ लोग बन्दी बना लिए गए। उनसे पूँछताँछ की गई। हजरत (जन्नत आशियानी) स्वय उस स्थान पर जहाँ से अनाज ऊपर खींचा जाता था पहुँचे और सावधानी से स्थान का निरीक्षण करके उस दृढ पर्वत में दाई तथा बाई ओर लोहे के खूँटे गडवा दिए। लोग ऊपर चढने लगे। क्योंकि किले वाले इस ओर से पूर्णत सतुष्ट थे। अत उन्हे कोई सूचना न हुई। जब ३९ व्यक्ति[3] जिनमें अन्तिम बैराम खा था ऊपर पहुँच गए तो हजरत (जन्नत आशियानी) भी ऊपर चढ गए। सूर्योदय तक ३९९ व्यक्ति किले के ऊपर पहुँच गए। उसी स्थान पर किले वालों के अनाज का भडार घी, तेल, एव खजाना तथा आवश्यक वस्तुएँ थीं। जब उजाला हो गया तो सेना वाले एकबारगी किले की ओर रवाना हुए। हजरत (जन्नत आशियानी) ऊपर से तकबीर[4] कहते हुए द्वार की ओर बढे। सेना वालों के लिए द्वार खोल दिए। इतना दृढ किला अल्प समय मे विजय हो गया। इख्तियार खा ने किले के अरक[5] मे, जो कि मूलिया के नाम से प्रसिद्ध है, शरण ली। किले के अधिकाश लोग मार डाले गए। अत्यधिक स्त्रियाँ एव वीर किले के नीचे से कूद-कूद कर नष्ट हो गए। इख्तियार खा प्राणो की हानि न पहुँचाये जाने का आश्वासन देकर बाहर निकला और सेवा में उपस्थित हुआ क्योंकि वह गुजरातियों मे अपनी योग्यता के कारण सर्वश्रेष्ठ था अत उसे आश्रय प्रदान हुआ और वह उनके विशेष दरबार के नदीमों[6] मे सम्मिलित हो गया। गुजरात के पादशाहों का खजाना जो वर्षों (के प्रयत्न से) एकत्र हुआ था, अधिकार में आ गया। अत्यधिक धन सेना को बाँट दिया गया। रूम, फिरग, खिता तथा आसपास के देशों के वस्त्र एव बहुमूल्य सामग्री जो गुजरात के हाकिमों के खजाने में थी लूट ली गई। चूँकि सेना वालों को अत्यधिक

१ सोनगढ अथवा सोने का किला।
२ जखीरा, खाद्य सामग्री तथा अन्य असबाब।
३ मूल में स्पष्ट नहीं और ३३ ज्ञात होता है।
४ 'अल्लाहो अकबर' का नारा।
५ भीतरी दुर्ग।
६ मुसाहिबों।

धन सम्पत्ति प्राप्त हो गई थी अतः उस वर्ष किसी ने भी गुजरात की तहसील[1] की ओर ध्यान न दिया (५६४ अ) हालांकि उस वर्ष कृषि को किसी प्रकार की कोई हानि न हुई थी।

९४३ हि०[2]

(२० जून १५३६ ई०—६ जून १५३७ ई०)

पिछले वर्ष साम मीर्ज़ा कन्धार मे पराजित हो गया था। तहमास्प हिरात से ज़मीनदावर तथा कन्धार की ओर रवाना हुआ। ख्वाजा कला बेग, जो कन्धार के किले में था, वहाँ ठहर न सका और बक्कर के मार्ग से लाहौर पहुँच गया। ज़मीनदावर तथा कन्धार एवं उसके अधीनस्थ समस्त स्थान किज़िलबाशों के अधिकार मे आ गए। बूदाग खाँ उस विलायत के शासन हेतु नियुक्त हुआ। शाह का लश्कर हिरात लौट गया।

हिन्दुस्तान का हाल

जब हज़रत जन्नत आशियानी ने अत्यधिक लूट की धन सम्पत्ति के कारण तहसीले माल[3] की ओर ध्यान न दिया तो गुजरात की प्रजा ने किसी को सुल्तान बहादुर के पास इस आशय से (५६४ ब) भेजा कि यदि गुजरात का कोई अमीर नियुक्त कर दिया जाय तो जो माले वाजिबी[4] उन्हे अदा करना है उसे वे खज़ाने में पहुँचा दें। सुल्तान बहादुर ने अपने एक दास एमादुलमुल्क को, जो पौरुष तथा सूझ-बूझ में प्रसिद्ध था, इस सेवा हेतु नियुक्त किया और उसे राज्य तथा राजस्व संबंधी अधिकार प्रदान कर दिए। उसे अहमदाबाद की ओर विदा कर दिया। एमादुलमुल्क सेना एकत्र करने लगा। जब वह अहमदाबाद के समीप पहुँचा तो उसके पास अत्यधिक सेना एकत्र हो गई थी। कुछ लोगों का अनुमान है कि उसमें ५० हज़ार सैनिक थे। उसने अहमदाबाद में पड़ाव करके राज्य का राजस्व वसूल करना प्रारम्भ कर दिया।

चम्पानीर की विजय के उपरान्त यह समाचार हज़रत पादशाह को प्राप्त हुए। वे चम्पानीर का किला तरदी बेग को सौंप कर अहमदाबाद की ओर रवाना हुए। उस समय गुजरात की लूट की धन सम्पत्ति में से सेना वालों को अत्यधिक धन बाँट दिया और निरन्तर यात्रा करते हुए अहमदाबाद पहुँचे। महमूदाबाद[5] के समीप एमादुलमुल्क ने मीर्ज़ा अस्करी से, जो विजयी सेना के अग्र भाग का सेनापति था, युद्ध किया और पराजित हुआ। दोनों ओर से अत्यधिक लोग मारे गए। हज़रत पादशाह ने अहमदाबाद में पड़ाव किया। वे अहमदाबाद की सैर करके लौट गए और बुरहानपुर तशरीफ ले गए। वहाँ से मन्दू पहुँचे।

१ माल गुज़ारी वसूल करने।
२ मूल में छील कर '९४४ हि०' बनाया गया है।
३ राजस्व वसूल करने की ओर।
४ जो राजस्व अदा करनी है।
५ तबकाते अकबरी के अनुसार अहमदाबाद से १२ कुरोह (कोस) पर।

यादगार नासिर मीर्ज़ा को पटन तथा नहरवाला[१], हुसैन सुल्तान को बरौच[२] प्रदान किया।[३] खाने जहाँ शीराज़ी एवं हिन्दू बेग को कुमक हेतु नियुक्त किया।

सुल्तान बहादुर नौसारी[४] की ओर एक दृढ़ स्थान बनाकर सेना एकत्र करने लगा था। उसने नौसारी को अपने अधिकार में कर लिया। रूमी खाँ सूरत बन्दरगाह से खाने जहाँ के साथ बरौच के विरुद्ध पहुँचा। क़ासिम हुसैन मुक़ाबला न कर सका और वह चम्पानीर भाग गया। इसी प्रकार गुजरातियों ने चारों ओर से विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। समस्त मुग़ल अहमदाबाद में एकत्र हुए। जब सुल्तान बहादुर को यह समाचार प्राप्त हुए तो वह अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ। अस्करी मीर्ज़ा एवं यादगार नासिर मीर्ज़ा[५] ने सोचा कि "सुल्तान बहादुर से गुजरात में युद्ध करना बड़ा कठिन है। क्योंकि हज़रत पादशाह मन्दू में ठहर गए हैं अतः यह उचित होगा कि आगरा पहुँचकर उस प्रदेश को अपने अधिकार में कर लें।" उन्होंने प्रतिज्ञा की कि मीर्ज़ा अस्करी पादशाह नियुक्त हो और हिन्दू बेग वकील तथा अन्य मीर्ज़ा लोग जिस प्रदेश को चाहें अपने अधिकार में कर लें। इस उद्देश्य से वे चम्पानीर की ओर रवाना हुए और गुजरात सुल्तान बहादुर के लिए छोड़ दिया। जब वे चम्पानीर के क़िले के समीप पहुँचे तो चम्पानीर के ख़ज़ाने को नष्ट भ्रष्ट करने का विचार किया। तरदी बेग ने रोका और क़िले को दृढ़ बना लिया। हज़रत जन्नत आशियानी को उनके उद्देश्य की सूचना दी। हज़रत ने यही उचित समझा कि इससे पूर्व कि मीर्ज़ा लोग आगरा पहुँचकर उपद्रव मचायें वे आगरा पहुँच जायें। निरन्तर यात्रा करते हुए वे आगरा की ओर रवाना हुए। सुल्तान बहादुर ने चम्पानीर की ओर प्रस्थान किया। तरदी बेग मुक़ाबला न कर सका। जो कुछ ख़ज़ाना वह ले जा सका लेकर पादशाह की सेवा में चल खड़ा हुआ। (५६५ अ) मीर्ज़ा लोगों को जब हज़रत जन्नत आशियानी के आगरा की ओर प्रस्थान के समाचार मिले तो उनके पास हर ओर से निराश होकर हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में अत्यधिक लज्जा प्रदर्शित करते हुए उपस्थित होने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न रहा। वे कात करखो[६] के समीप सेवा में उपस्थित हुए और उन्होंने निवेदन किया कि, "सुल्तान बहादुर के कारण हम लोग

१ मूल में नाम स्पष्ट नहीं।

२ भड़ौच—२१°२५' तथा २१°१५' उत्तर और ७२°३१' तथा ७३°१०' पूर्व जिसके उत्तर में माही नदी बहती है और इसे कैम्बे (खम्बायत) से पृथक करती है। इसके पूर्व तथा दक्षिण-पूर्व में बड़ौदा एवं राजपीपला, दक्षिण में कीम नदी है जो उसे सूरत से पृथक् करती है। पश्चिम में खम्बायत की खाड़ी है। (*The Imperial Gazetteer of India*, IX, p 18)।

३ अकबर नामा में विभाजन का उल्लेख इस प्रकार है, "मीर्ज़ा यादगार नासिर को पटन तथा कासिम हुसैन सुल्तान को बरौच, नौसारी और सूरत का बन्दरगाह प्रदान किया"।

४ बड़ौदा में २०°५७' उत्तर तथा ७२°५६ पूर्व में बम्बई से १७४ मील पर। यह बड़ा ही प्राचीन कस्बा है और टोलमी के भूगोल में इसका उल्लेख नसरिपा के नाम से हुआ है। ईरान में मुसलमानों की धर्मान्धता से तंग आकर वहाँ के जरतश्ती (पारसी) बड़ी संख्या में नौसारी पहुँचे और वहीं निवास करने लगे। (*The Imperial Gazetteer of India*, XVIII, p. 425)।

५ मूल में 'यादगार मीर्ज़ा व नासिर मीर्ज़ा'।

६ नाम स्पष्ट नहीं।

गुजरात की प्रतिरक्षा न कर सके। हज़रत ने अपनी उदारता के कारण, इस बात के बावजूद कि उन्हे उनके षड्यंत्र की सूचना थी और गुजरात सरीखा प्रदेश जो इतने परिश्रम से विजय हुआ था उन्होंने हाथ से निकल जाने दिया था, उनकी प्रार्थना स्वीकार करने योग्य न होने पर भी स्वीकार कर ली और उस ओर से उपेक्षा करके निरन्तर यात्रा करते हुए आगरा पहुँचे।

गुजरात तथा चम्पानीर पुनः सुल्तान बहादुर के अधिकार में आ गए। वह १० दिन तक चम्पानीर में ठहरा रहा। तदुपरान्त सूरत तथा जूनागढ की ओर रवाना हो गया। इसका कारण यह था कि उसने अपनी परेशानी के समय फिरंगियों से सहायता मांगी थी। उसे इस बात का विश्वास था कि बन्दरगाह खाली है। उसने निश्चय किया कि उस क्षेत्र में पहुँच कर जिस प्रकार सम्भव हो फिरंगियों को अपने राज्य के बाहर निकाल दे। जब वह वहाँ कुछ दिन सैर व शिकार में व्यतीत कर चुका तो उसे समाचार प्राप्त हुए कि ५-६ हजार फिरंगी पहुँच गए हैं। जब फिरंगी निकट पहुँचे तो उन्हे ज्ञात हुआ कि हज़रत पादशाह लौट गए और सुल्तान बहादुर को पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त हो गया है। वे अपने आगमन पर लज्जित हुए। उन्होंने यह निश्चय किया कि जिस प्रकार सम्भव हो बन्दर दीव को अपने अधिकार में कर लें। उनके सरदार ने बीमारी का बहाना बनाकर इसकी प्रसिद्धि कर दी ताकि उसे सुल्तान बहादुर के पास न जाना पड़े। सुल्तान ने उसे बुलाने के लिए कई बार आदमी भेजे और उसे वही उत्तर मिला। अन्ततोगत्वा उसने यह सोच कर कि फिरंगी लोग भयभीत हो गए हैं, वह स्वयं थोड़े से आदमियों सहित जहाज़ पर बैठ कर उन्हे तसल्ली देने रवाना हुआ। फिरंगियों ने सुल्तान बहादुर को मुफ्त में पाकर, विश्वासघात करना निश्चय कर लिया। सुल्तान ताड़ गया और अपनी नौका से वापस होने लगा। फिरंगियों ने अपनी नौकायें सुल्तान की नौका के पास से हटा लीं[1]। सुल्तान फिरंगियों की नौका से पृथक् हो गया और अपनी नौका में पहुँचा[2] तथा समुद्र में एक डुबकी खा गया। जैसे ही उसने सिर निकाला एक फिरंगी ने उसके सिर पर भाले का वार किया। वह डूब गया। बन्दर दीव में अत्यधिक कोलाहल होने लगा। गुजरात की सेना वहाँ फिर और न ठहर सकी। वे लोग अहमदाबाद चले गए। फिरंगियों ने दूसरे दिन बन्दर दीव पर अधिकार जमा लिया।

इस वर्ष के प्रारम्भ में मीर्ज़ा कामरान को लाहौर में शाह तहमास्प की वापसी का पता चला। उसने कन्धार की ओर प्रस्थान कर दिया। जो किज़िल्बाश किले के भीतर थे, वे मुक़ाबला न कर सके और अवरोध के समय किले से निकल कर एराक की ओर चल दिए। कन्धार पुनः चग़ताइयों के अधिकार में आ गया।

९४४ हि०[3]
(१० जून १५३७ ई०—२९ मई १५३८ ई०)

(५६५ ब) इस वर्ष हज़रत जन्नत आशियानी आगरा में भोग-विलास में समय व्यतीत

१ उसे समुद्र में डुबाने के उद्देश्य से।
२ सम्भवत अपनी नौका में आते हुये समुद्र में गिर गया।
३ मूल में छील कर '९४५ हि०' बनाया गया है।

करते रहे। सुल्तान बहादुर ने अपनी पराजय के समय मुहम्मद जमान मीर्ज़ा को इस आशय से हिन्दुस्तान भेज दिया था कि वह वहाँ विघ्न डाले। वह लाहौर के समीप तक पहुँच गया था। जब उसे पादशाह की वापसी के समाचार प्राप्त हुए तो वह गुजरात लौट गया। जैसे ही वह अहमदाबाद पहुँचा उसे सुल्तान बहादुर की हत्या के समाचार प्राप्त हुए। उसने दिखाने के लिए अत्यधिक शोक प्रकट किया और शोक के वस्त्र धारण किए। सुल्तान के खज़ाने पर अधिकार जमाने के उद्देश्य से, सुल्तान की माता एवं उस सेना के स्वागतार्थ जो बन्दर दीव से आ रही थी, रवाना हुआ। जब वह गुजरातियों के लश्कर में पहुँचा तो सुल्तान बहादुर की माता ने यथा-सम्भव दावत का सामान भी मीर्ज़ा के पास भेजा और उसे शोक के वस्त्र से बाहर निकाला। मीर्ज़ा खज़ाने का पता लगा कर (लश्कर के) प्रस्थान के समय खजाने तक पहुँच गया और प्रसिद्ध है कि सात सौ सोने के भरे हुए सदूक[1] अपने अधिकार में कर लिए। जितने मुग़ल गुजरात में थे वे उसके पास एकत्र हो गए। (गुजरात वालों ने) असीर तथा बुरहानपुर के हाकिम मुहम्मद शाह को, जो सुल्तान बहादुर का भागिनेय था, १२००० उत्तम व्यक्तियों एवं सामान सहित बुलवाया कारण कि सुल्तान बहादुर कहा करता था कि मीरान शाह मुहम्मद मेरा उत्तराधिकारी है। उन लोगों ने एमादुलमुल्क को बहुत बड़ी सेना सहित मीर्ज़ा मुहम्मद जमान से युद्ध करने के लिए भेजा। मुहम्मद जमान मीर्ज़ा, जो कि विलासप्रिय था, थोड़े से युद्ध के बाद पराजित हो गया और सिन्ध की ओर भाग गया।

९४५ हि०[2]

(३० मई १५३८ ई०—१८ मई १५३९ ई०)

(५६६ अ) हज़रत जन्नत आशियानी इस वर्ष १४ सफ़र (१२ जुलाई १५३८ ई०) को चुनार एवं बंगाले की विजय हेतु रवाना हुए। रूमी खाँ, जो पूर्व में सुल्तान बहादुर का सेवक था, अब हज़रत पादशाह की सेवा में आ गया था। उसे अत्यधिक प्रोत्साहन प्राप्त हुआ था। जब चुनार के किले के निकट हज़रत पादशाह की सेना ने पड़ाव किया तो उसने निवेदन किया कि, "इस किले पर विजय प्राप्त कर लेने का मैं आश्वासन दिलाता हूँ। इस बात की आवश्यकता नहीं कि इस किले के युद्ध के लिए अनुभवी जवानों को नष्ट कराया जाय।" हज़रत ज्हाबानी ने उसे पूर्ण अधिकार प्रदान कर दिए और आदेश दिया कि, "किले की विजय हेतु वह जो कुछ भी माँगे उसकी व्यवस्था की जाय।" रूमी खाँ ने किले के चारों ओर नजर दौड़ाई। उसे ज्ञात हो गया कि तीन ओर से किला इतना अधिक दृढ़ है कि किसी प्रकार उसे हानि नहीं पहुँचाई जा सकती अतः उस ओर से जिधर नदी थी एक बहुत बड़ी नौका की व्यवस्था करके "मुकाबिल कोब[3]" की तैयारी प्रारम्भ कर दी। जब मुकाबिल कोब बहुत बलन्द हो गया और एक नौका उसके भार को सभाल न सकी तो उसने एक अन्य नौका को इस ओर से और एक नौका को उस ओर से प्रथम नौका के साथ बंधवाकर मुकाबिल

१ मूल में यह वाक्य स्पष्ट नहीं।
२ मूल में यह तारीख छील कर '९४६' बनाई गई है।
३ वह ऊँचा स्थान अथवा मचान जहाँ से क़िले पर आक्रमण करने तथा उसे हानि पहुँचाने में सुगमता हो। अन्य ग्रन्थों में 'सरकोब' लिखा गया है।

कोब को पुन बलन्द करवाया। इस प्रकार जब-जब भार अधिक हो जाता तो दो अन्य नौकाएँ सहायता हेतु लगा दी जाती थी। यहाँ तक कि किले का सरकोब तैयार हो गया। दूर से मुक़ाबिल कोब नदी में छोड दिया गया और वह नदी से किले तक पहुँच गया। किले पर विजय प्राप्त हो गई। इस उत्तम सेवा के कारण रूमी खा को अत्यधिक आश्रय प्रदान किया गया। तोपचियों के एक बहुत बडे समूह के, जिनकी विजयी सेना को सूचना मिल गई थी, रूमी खा के परामर्श तथा हजरत पादशाह के आदेशानुसार हाथ कटवा लिए गए।[१]

(५६६ब) उस समय शेर खा अफगान बगाला के हाकिम से युद्ध कर रहा था। बगाले का हाकिम घायल होकर पादशाह के दरबार में पहुँचा। हजरत (पादशाह) निरन्तर यात्रा करते हुए बगाले की ओर रवाना हुए। शेर खा बगाले के हाकिम का पीछा कर रहा था। उसने अपने पुत्र एव दास ख्वास खा को गौड[२]-बगाले में नियुक्त कर दिया था। वह गौड-बगाला वापस हुआ और अपने पुत्र तथा ख्वास खा को गढी की, जो कि बगाले के मार्ग में है प्रतिरक्षा हेतु भजा। उक्त गढी एक बडा ही दृढ स्थान है कारण कि इसके एक ओर एक बडा ऊँचा पर्वत तथा घना जगल है जिनको किसी प्रकार पार नही किया जा सकता और दूसरी ओर गगा नदी है जिसे पार करना अत्यधिक कठिन है। गढी विहार तथा बगाले की विलायत में सबध स्थापित करती है।

हजरत जहाँबानी ने जहाँगीर बेग, मुगुल बेग किजिक[३] को गढी की विजय हेतु नियुक्त किया। हिन्दाल मीर्जा उन लोगों[४] के विनाश हेतु नियुक्त हुआ और आगरा की ओर भज दिया गया। मुहम्मद जमान मीर्जा ने गुजरात में कोई सफलता न प्राप्त करने के कारण अपने दूत भेजकर क्षमा याचना की। उसे क्षमा प्रदान कर दी गई। वह दरबार की ओर रवाना हुआ। जब जहाँगीर वेग गढी पहुँचा तो कुतुब खा वल्द शेर खा एव ख्वास खा शीघ्रातिशीघ्र बढते हुए सेना के पडाव के समीप पहुँच गए और जहाँगीर बेग को पराजित कर दिया। जहाँगीर बेग घायल होकर पादशाह की सेवा में पहुँचा। हजरत पादशाह गढी के पास पहुँचे। कुतुब खा तथा ख्वास खा मुकाबला न कर सके और भाग खडे हुए। हजरत पादशाह ने निश्चिन्त होकर गढी पार की और बगाले को अपने अधिकार में कर लिया। क्योंकि शेर खा अफगान में मुकाबले की शक्ति न थी अत वह बिहार तथा रोहतास[५]

१ 'ब मश्लाहे रूमी खाँ व हुक्मे आँ हजरत मक़्तूल शुदन्द'।

२ गौड, पूर्वी बंगाल तथा आसाम के माल्दा जिले में २४°५४' उत्तर तथा ८८°८' पूर्व में बगाल की मध्य-कालीन राजधानी।

३ यह नाम स्पष्ट नहीं।

४ शेर खाँ के अधीन अफ़ग़ानों से तात्पर्य है।

५ रोहताम अथवा रोहतास गढ़ बिहार के शाहाबाद जिले के सहसराम सब-डिवीजन में २४°३७ उत्तर तथा ८३ ५५' पूर्व, सहसराम कस्बे से ३० मील दक्षिण में।

की ओर चल दिया। हजरत ने तीन मास तक बगाले में पडाव किया और गौड नगर का नाम जन्नताबाद[1] रख दिया।

मीर्ज़ा हिन्दाल तथा आगरा के अमीरो ने अवसर पाकर विद्रोह प्रारम्भ कर दिया। शेख बहलूल को, जो हजरत जन्नत आशियानी का बहुत बडा विश्वासपात्र था, इस बहाने से कि वह अफगानो से मिल गया है और उन्हे अस्त्र-शस्त्र भेजा करता है, हत्या करा दी एव विद्रोह कर दिया। अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया तथा देहली की जो हिन्द की राजधानी है विजय हेतु रवाना हुआ।

जब हजरत जन्नत आशियानी को यह समाचार प्राप्त हुए तो उन्होने बगाले को जहाँगीर इब्ने इबराहीम बेग किजिक मुगुल को सौप दिया और पाँच हज़ार व्यक्ति उसकी सहायतार्थ नियुक्त कर दिये। (उन्होने) स्वय आगरा की ओर प्रस्थान किया। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा इब्ने बदीउज्जमान मीर्ज़ा ने उस समय लज्जित होकर सेवा मे उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। हज़रत जहाँबानी ने उसके अपराध पूर्ण रूप से क्षमा कर दिए और उसके विरुद्ध कोई बात अपनी ज़बान से न निकाली।

लम्बी चौडी यात्रा तथा बगाले का जलवायु की खराबी के कारण हज़रत पादशाह की सेना के अधिकाश घोडे नष्ट हो गए। वे बडी अव्यवस्थित दशा मे चौसा[2] पहुँचे। जो अमीर जौनपुर, चुनार तथा अवध में थे, वे सेवा मे उपस्थित हुए। शेरखा को पादशाह की सेना की अव्यवस्थित दशा के समाचार मिल गए। वह समीप पहुँचा। हज़रत पादशाह ने अफगानो के सामने पडाव किया। तीन मास तक मुकाबला होता रहा।

(५६७ अ) मीर्ज़ा कामरान कन्धार से लाहौर लौटने के उपरान्त मीर्ज़ा हिन्दाल के विद्रोह, पादशाह की वापसी तथा शेर खा के प्रभुत्व से अवगत होकर आगरा की ओर रवाना हुआ। जब मीर्ज़ा हिन्दाल देहली के समीप पहुँचा तो मीर फख्र अली, मीर्ज़ा यादगार नासिर को किले के भीतर ले आया और किला बन्द कर लिया। मीर्ज़ा हिन्दाल ने युद्ध तथा सधि जिस प्रकार भी सम्भव हो सका था उस प्रकार किले को विजय करना चाहा किन्तु उसे विजय प्राप्त न हो सकी। इसी बीच मे मीर्ज़ा कामरान देहली के समीप पहुँच गया। मीर्ज़ा हिन्दाल ने विवश होकर मीर्ज़ा कामरान से भेंट की। मीर फख्र अली किले के बाहर निकला और मीर्ज़ा कामरान की सेवा मे उपस्थित हुआ। उसने कहा कि "मीर्ज़ा यादगार नासिर किले को अपने अधिकार से नही छोडता, अत यही उचित है कि आप आगरा चले जाये। यदि आगरा तथा अन्य प्रदेश आपके अधिकार मे आ जायेंगे तो देहली

१ गौड का नाम जन्नताबाद बगाल के सुल्तान गयासुद्दीन आज़म शाह के सिक्कों पर भी खुदा है जिसने बगाल में ७६२ हि० से ७६६ हि० (१३८६ से १३९६ ई०) तक राज्य किया। (H N Wright: *Catalogue of Coins in the Indian Museum* Vol II, p 156, Edward Thomas *Chronicles of the Pathan Kings of Delhi*, p 153)। सम्भवत: हुमायूँ ने जब उसका यह नाम रक्खा तो उसे इसके प्राचीन नाम का ज्ञान न रहा होगा। फ़िरिश्ता के अनुसार नाम के परिवर्तन का कारण यह था कि इसका सम्बन्ध एक अनुचित वस्तु गोर (क़ब्र) मे था।

२ कर्मनासा तथा गगा के सगम पर, बक्सर (बिहार) कस्बे के ४ मील दक्षिण में।

भी आपके अधीन हो जायेगी। इस समय युद्ध करने से कोई लाभ नहीं।" मीर्ज़ा कामरान विवश होकर निरन्तर यात्रा करता हुआ आगरा की ओर रवाना हुआ।

आगरा के समीप मीर्ज़ा हिन्दाल मीर्ज़ा कामरान से पृथक् होकर अलवर चला गया।

९४६ हि०[1]

(१९ मई १५३९ ई०—७ मई १५४० ई०)

(५६७ ब) जब हज़रत जनत आशियानी ने चौसा में शेर खां के मुक़ाबिले में पड़ाव कर दिया तो मीर्ज़ा हिन्दाल के विद्रोह एवं मीर्ज़ा कामरान के देहली पहुँचने के कारण उस सेना के लोगों के हृदय में और भी व्याकुलता उत्पन्न हुई। शेर खां ने अवसर पाकर हज़रत पादशाह के लश्कर पर जबकि वह असावधान था छापा मारा; उन्हें युद्ध की व्यवस्था का अवसर न मिला। इस कारण शत्रुओं को विजय प्राप्त हो गई। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा गंगा नदी पार करते हुए डूब गया। हज़रत (पादशाह) आगरा की ओर रवाना हुए। कामरान मीर्ज़ा हज़रत (पादशाह) के पहुँचने के एक मास पूर्व आगरा पहुँच गया था और हिन्दाल मीर्ज़ा अलवर में लज्जित होकर समय व्यतीत कर रहा था। जब हज़रत (पादशाह) आगरा पहुँचे तो मीर्ज़ा कामरान ने सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। मीर्ज़ा हिन्दाल के अपराध भी क्षमा कर दिये गए। वह सेवा में उपस्थित हुआ। समस्त भाई एवं सम्बन्धी आगरा में एकत्र हुए। मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा एवं उसका पुत्र भी, जो दीर्घकाल से विद्रोह कर रहे थे, किसी न किसी बहाने से सेवा में उपस्थित हुए। परामर्श प्रारम्भ हो गया। मीर्ज़ा कामरान जो लाहौर तथा काबुल वापस जाना चाहता था इस विषय में अत्यधिक आग्रह करने लगा और इस सम्बन्ध में अनुमान से अधिक आशाएँ प्रकट करने लगा। हज़रत पादशाह ने अत्यधिक उदारता के कारण वापसी के अतिरिक्त उसकी समस्त प्रार्थनाएँ स्वीकार कर ली। ख़्वाजा कलाँ बेग[2] ने, जोकि चग़ताई सेना का बहुत बड़ा स्तम्भ था, कामरान मीर्ज़ा की वापसी के विषय में प्रयत्न किया। हज़रत पादशाह ने यद्यपि कामरान मीर्ज़ा को अत्यधिक सदेश भेजे कि शेर खां से मिलकर युद्ध करना चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि बस वह सब पर अधिकार प्राप्त कर ले, किन्तु मीर्ज़ा कामरान ने कोई ऐसा उत्तर न दिया जिससे कोई काम चल सकता। ६ मास तक इस बातचीत में व्यतीत हो गए। मीर्ज़ा कामरान को इस बीच में विरोधाभासी रोग लग गया, यहाँ तक कि वह चलने फिरने से भी असमर्थ हो गया। उसे इस बात की शंका हो गई कि उसका यह रोग विष के कारण है जो

१ मूल में ९४६ हि० को छील कर ९४७ हि० बनाया गया है।

२ ख़्वाजा कलाँ बेग, ख़्वाजा उबैदुल्लाह एहरार के दूसरे पुत्र यहया का पौत्र तथा बाबर का बहुत बड़ा विश्वास पात्र था। बाबर की पानीपत की विजय के उपरान्त उसने हिन्दुस्तान में ठहरने का बड़ा विरोध किया। जब उसे काबुल जाने की अनुमति मिल गई तो उसने अपने देहली के भवन पर यह शेर लिखवा दिया -

शेर

'यदि मैं कुशलतापूर्वक सिन्ध पार कर लूं,
तो मेरा मुँह काला हो जाय यदि मैं हिन्द की इच्छा करूँ।'

बाबर नामा, पृ० २०५। ४ मार्च १५२९ ई० को बाबर ने अपने वक़ाये की एक प्रतिलिपि उसे भिजवाई। (बाबर नामा, पृ० ३१०)।

हजरत पादशाह के आदेशानुसार उसे दे दिया गया है। इस कारण वह प्रस्थान करने का अत्यधिक प्रयत्न करने लगा। वह उसी प्रकार अव्यवस्थित एव बुरी दशा मे लाहौर की ओर रवाना हुआ। ख्वाजा कलाँ को अपने आगे भेज दिया। यह निश्चय हुआ था कि वह अपने उत्तम आदमियों का एक समूह कुमक हेतु आगरा में छोड जायगा। निश्चय के विरुद्ध वह अपने समस्त एतबार के आदमियों को अपने साथ ले गया। सिकन्दर[1] के नेतृत्व मे हजार[2] व्यक्ति आगरा मे छोड गया। मीर्जा हैदर दूगलात[3], जो मीर्जा कामरान के साथ था, उससे पृथक् होकर हजरत जनत आशियानी के पास ठहर गया। उसे अत्यधिक आश्रय प्रदान हुआ। मीर्जा कामरान आगरा के सैनिकों की एक बहुत बडी सख्या का अपने साथ ले गया।

इस फूट के कारण शर खा युद्ध के उद्देश्य से गगा तट पर पहुँचा। एक बहुत बडी सेना (५६८अ) को नदी के पार कराया और इटावा तथा काल्पी के विरुद्ध भेजा। कासिम हुसैन सुल्तान ऊजबेक ने, जो कि कराकुरम सुल्तानो मे था, यादगार नासिर मीर्जा एव इस्कन्दर को साथ लेकर काल्पी के समीप अफगानो से युद्ध किया। शेर खा के पुत्र को, जो इस सेना का सरदार था, पराजित कर दिया। उसकी तथा उसके अत्यधिक सेवकों की हत्या करा दी। शेर खा के पुत्र कुतुब खा एव अत्यधिक प्रतिष्ठित अफगानो के सिर हजरत जनत आशियानी की सेवा मे आगरा भेज दिये।

हजरत जनत आशियानी शेर खा से युद्ध करने के लिए गगा तट की ओर रवाना हुए। एक मास तक दोनो सेनाएँ, जिनकी सख्या १ लाख से अधिक थी,[4] गगा तट पर पडी रहीं। मुहम्मद सुल्तान मीर्जा एव उसके पुत्र, जो कृतघ्नता के आदी थे, पुन हजरत पादशाह की सेना से अकारण पृथक् हो गए और हिन्दुस्तान मे इधर-उधर चल दिये। हिन्दुस्तान की वर्षा ऋतु आ गई। वर्षा होने लगी। जिस स्थान पर पादशाह के लश्कर का पडाव था वह जलमग्न हो गया। बुद्धिमानो एव सूझ-बूझ रखने वालो ने यह उचित समझा कि वहाँ से प्रस्थान करके किसी ऊँचे स्थान पर पडाव करना चाहिये ताकि वर्षा द्वारा सेना को पुन हानि न पहुँच सके। मीर्जा हैदर तथा एक सेना को शिविर हेतु स्थान चुनने के लिए नियुक्त किया गया। उन्होंने उचित स्थान चुना।

९४७ हि०[5]

(८ मई १५४० ई०—२६ अप्रैल १५४१ ई०)

इस वर्ष की १० मुहर्रम (१७ मई १५४० ई०) को हजरत जनत आशियानी ने गगा तट पर शेर खा अफगान से युद्ध किया। अमीरो की पारस्परिक फूट एव कुछ लोगो की शिथिलता के

१ इस्कन्दर सुल्तान।

२ मूल से एक अथवा दो निश्चित रूप से ज्ञात नहीं। तबकाते अकबरी, जिसमें पूरा विवरण तारीखे अलफी से लिया गया है, में 'दो हजार' है।

३ तारीख रशीदी के लेखक। (देखिये मुग़ल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १, पृ० १४ से १७)।

४ सम्भवत '१ १ लाख से अधिक थी' से तात्पर्य है।

५ मूल में छील कर ९४८ हि० बनाया गया है।

कारण विजय प्राप्त न हो सकी और वे विवश होकर आगरा लौट आये। शत्रु निकट पहुँच गए और (हज़रत पादशाह आगरा में) न ठहर सके और लाहौर की ओर रवाना हुए। इस वर्ष की १ रबी-उल-अव्वल (६ जुलाई १५४० ई०) को समस्त चग़ताई सुल्तान एवं अमीर लाहौर में एकत्र हुए। प्रत्येक अपनी-अपनी धुन एवं चिन्ता में मग्न था। सुल्तान मुहम्मद मीर्ज़ा एवं उसके पुत्र, जो सहस्रों उपद्रव तथा षड्यन्त्र की जड़ थे, अफ़ग़ानों से भागकर लाहौर पहुँचे और पुन लाहौर से भागकर मुल्तान चले गए। मीर्ज़ा हिन्दाल एवं मीर्ज़ा यादगार नासिर ने यह उचित समझा कि बक्कर एवं तत्ता की ओर प्रस्थान कर दें। उनका विचार था कि उस विलायत[1] की विजय एवं मीर्ज़ा शाह हुसेन अरग़ून को पराजित कर देने के उपरान्त गुजरात सुगमतापूर्वक विजय हो जायगा। मीर्ज़ा कामरान को इस बात की चिन्ता थी कि शीघ्रातिशीघ्र इस सेना को छिन्न भिन्न करके अकेला काबुल चला जाय। हज़रत जन्नत आशियानी बहुत समय तक इस बात का प्रयत्न करते रहे कि किसी न किसी प्रकार भाई लोग सगठित और शत्रुओं का विनाश करने के लिये तैयार हो जायें। जब उन्हें इस बात का विश्वास हो गया कि इन लोगों का सगठित होना असम्भव है तो वे बड़े दुखी हुए। एक दिन समस्त सुल्तान, अमीर तथा राज्य के उच्च पदाधिकारी एकत्र हुए और विचार-विमर्श करने लगे। हज़रत पादशाह ने कहा कि, बिना सगठन के कोई कार्य सफल नहीं होता अत जो लोग उपस्थित थे उन्होंने प्रतिज्ञा की तथा शपथ ली कि वे सगठित रहेंगे। समस्त उपस्थित गणों ने कागज़ पर गवाही लिख दी और विचार-विमर्श प्रारम्भ कर दिया। मीर्ज़ा हैदर दूगलात ने, जिसने सुल्तान सईद खा के समय में जैसा कि उल्लेख हो चुका है कश्मीर पर अधिकार जमा लिया था, निवेदन किया कि, "कश्मीर सुगमतापूर्वक विजय हो सकता है। वह बड़ा दृढ़ स्थान है अत सैनिकों को कश्मीर की ओर प्रस्थान करने का निश्चय करना चाहिये एवं अपने परिवार तथा धन-सम्पत्ति वहाँ भेज देनी चाहिये। सिंध नदी से गगा तथा यमुना तक पर्वत के आँचल के सभी स्थानों पर वहाँ से दृष्टि रक्खी जा सकती है। अफ़ग़ान कोतह सलाह हैं।[2] तोप एवं ज़र्बज़न को पर्वतों में ले जाना अत्यधिक कठिन है।' मीर्ज़ा कामरान ने, जो अपनी चिन्ता में था, कहा, "यह कार्य बड़ा कठिन है। शत्रु निकट पहुँच चुका है, कहीं ऐसा न हो कि कश्मीर पर विजय न प्राप्त हो सके और सैनिकों के परिवार वालों के पास कोई सुरक्षित स्थान न रह जाये तथा वे नष्ट हो जायें। मैं यह उचित समझता हूँ कि हज़रत पादशाह तथा मीर्ज़ा लोग जरीदा[3] हो जायें चाहे कश्मीर जायें चाहे अन्य स्थान को। अपने समस्त परिवार तथा असबाब को मेरे साथ कर दें ताकि मैं उन्हें काबुल पहुँचा दूँ और उनकी ओर से सतुष्ट होकर सेवा में लौट आऊँ।" क्योंकि इससे एव

१ सिन्ध से तात्पर्य है।

२ "अफ़ग़ाना कोतह सलाह अन्द" अर्थात् अफ़ग़ानों के अस्त्र शस्त्र ऐसे हैं जिनसे दूर के व्यक्तियों को हानि नहीं पहुँचायी जा सकती। इसका तात्पर्य यह है कि अफ़ग़ान लोग या तो तलवार एवं कटार से लड़ सकते हैं और या तोप अथवा ज़र्बज़न से। आगे चलकर यह बताया गया है कि अफ़ग़ानों में अच्छे धनुर्धारी न थे। इरविन के अनुसार, "French *armes* blanche which include swords, shields, battle-axes, spears and daggers" (Irvine *Army of the Indian Mughals*, p 79.)।

३ थोड़े सैनिकों के साथ।

क्षण पूर्व परस्पर संगठित रहने एवं षड्यंत्र के परित्याग के विषय में उसने शपथ ली थी अतः समस्त दरबार वाले इस बात से, जो षड्यंत्र से परिपूर्ण थी और जिसका मूल उद्देश्य यह था कि वह किसी न किसी प्रकार मुक्ति प्राप्त करले तथा काबुल पर अधिकार जमा ले, चकित रह गए। सभी ने एकमत होकर कहा कि, "यदि सैनिकों के परिवार हिन्दुस्तान के बाहर चले जायेंगे तो इतनी नदियों एवं पर्वतों के बाच में होने के कारण कौनसा ऐसा सैनिक है जो हिन्दुस्तान में इतनी चिन्ता और ऐसे शत्रु की उपस्थिति के बावजूद ठहर सकेगा ?" मीर्जा कामरान ने जो बात सोची थी वह उसी पर दृढ रहा और दरबार विसर्जित हो गया। इसी प्रकार दिन व्यतीत होने लगे। कोई बात निश्चय न होती थी। यहाँ तक कि शेर खाँ सुल्तानपुर[1] के निकट पहुँच गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने मीर्जा हैदर एवं अन्य सैनिकों को, जिन्होंने कश्मीर की सेवा स्वीकार कर ली थी, उस ओर भेज दिया। ख़्वाजा कलाँ बेग को भी आदेश दिया कि वह मीर्जा हैदर के पीछे रवाना (५६९ अ) हो। मीर्जा हैदर नवशहर में पहुँचा और ख़्वाजा कलाँ बेग सियाल्कोट चला गया। शेर खाँ ने सुल्तानपुर नदी[2] पार की। १ रजब (१ नवम्बर १५४० ई०) को हज़रत जन्नत आशियानी ने लाहौर नदी पार की। मीर्जा कामरान भीरा[3] के समीप तक साथ गया। ख़्वाजा कलाँ बेग ने सियाल-कोट[4] में यह समाचार सुने। वह शीघ्रातिशीघ्र (पादशाह के) शिविर में पहुँच गया। मीर्जा हैदर कश्मीर पहुँचा। कश्मीर वालों में आपस में बड़ी फूट थी। उनमें से एक समूह मीर्जा हैदर से मिल गया। उनकी सहायता से बिना युद्ध किए हुए कश्मीर मीर्जा हैदर के अधिकार में आ गया। मीर्जा हैदर २२ रजब (२२ नवम्बर १५४० ई०) को कश्मीर में हाकिम हो गया।

भीरा के समीप मीर्जा कामरान तथा मीर्जा अस्करी, हज़रत जन्नत आशियानी से पृथक् होकर ख़्वाजा कलाँ बेग के साथ काबुल की ओर चल दिए। हज़रत जन्नत आशियानी सिंध की ओर रवाना हुए। मीर्जा हिन्दाल एवं यादगार नासिर मीर्जा (पादशाह की) सेवा में साथ थे। कुछ पड़ाव की यात्रा के उपरान्त दोनों ने मिलकर विद्रोह कर दिया। २० दिन हज़रत पादशाह से पृथक् रह कर मारे मारे फिरते रहे। तदुपरान्त मीर्जा अबुल बका के समझाने के कारण पुनः हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित हो गए।

सिंध नदी तट पर (पादशाह के) लश्कर में अकाल पड़ गया और नदी पार करने के लिये नौकायें न मिलती थीं। बख़्शू लगाह ने बहुत सी नौकाएँ अनाज से भरी हुई शिविर में पहुँचा दीं और सम्मानित हुआ। सेना ने नदी पार की और बक्कर की ओर रवाना हुई। लुहरी[5] नामक क़स्बे

१ कपूरथला (पंजाब) में ३१° १२' उत्तर तथा ७५°१२ पूर्व, कपूरथला क़स्बे से १६ मील दक्षिण में।
२ ब्यास नदी।
३ भीरा : झेलम नदी पर ३१°२८'—७२°५६' पंजाब के शाहपुर ज़िले में। (देखिये बाबर नामा, पृ० ९९ १०२, १०५, १०६, ११३)।
४ लाहौर से ७२ मील पर, ३२°३०' उत्तर तथा ७४°३२' पूर्व में।
५ यहाँ 'रोहरी' से तात्पर्य है। रोहरी सक्कर ज़िले का ताल्लुका है और २७°४' तथा २७°५०' उत्तर एवं ३८°३५ तथा ६९°४८ पूर्व में स्थित है। रोहरी क़स्बा २७°४१' उत्तर तथा ६८°५६' पूर्व में सिंध नदी के बायें अथवा पूर्वी तट पर स्थित है। (*The Imperial Gazetteer of India*, Pp 309 10)।

में पड़ाव हुआ। मीर्ज़ा हिन्दाल पात[1] (नामक स्थान पर) चला गया कारण कि वहाँ सेना की आवश्यकता की वस्तुएँ सुगमतापूर्वक प्राप्त होती थी और लुहरी में, जो कि बक्कर के किले के समीप था, वे अप्राप्य थी। वह वहाँ से ७० कुरोह पर था। हज़रत पादशाह ने मीर ताहिर सद्र को शाह हुसेन अरग़ून के पास राजदूत बनाकर तत्ता भेजा। समुन्दर[2], जो कि हज़रत पादशाह के विश्वासपात्रों में से था, शाह हुसेन अरग़ून के पास घोड़े तथा खिल्अत ले गया और संक्षिप्त रूप में यह सदेश पहुँचाया कि, "वे आवश्यकतावश बक्कर तथा तत्ता प्रदेश में पहुँचे हैं और गुजरात पर अधिकार जमाना चाहते हैं। उसे सेवा में उपस्थित हो जाना चाहिये ताकि गुजरात के विषय में परामर्श किया जा सके।" शाह हुसेन ५-६ मास तक उत्तर के विषय में टालमटोल करता रहा। तदुपरान्त उसने यह सदेश भेजा कि "बक्कर की विलायत की आय बहुत कम है। यदि शाही लश्कर तत्ता की विलायत के समीप चला जाय तो अच्छा है।" (इस प्रकार) उसने बातचीत में ६ मास निकाल दिए। (वह समझता था) कि इसके बाद जब शाही सेना निकट आ जायेगी तो जो कुछ उचित होगा वह किया जायगा।

क्योंकि बक्कर में अनाज न प्राप्त होता था अत हज़रत ने वहाँ से प्रस्थान किया और पात में, जहाँ मीर्ज़ा हिन्दाल ठहरा हुआ था, तशरीफ ले गए, कारण कि उन्होंने सुना था कि मीर्ज़ा हिन्दाल कन्धार चला जाना चाहता है।

९४८ हि०[3]

(२७ अप्रैल १५४१ ई०—१६ अप्रैल १५४२ ई०)

(५६९ब) हज़रत जन्नत आशियानी जिस समय मीर्ज़ा हिन्दाल के शिविर में ठहरे हुए थे, उन्होंने हज़रत मरियम मकानी हमीदा बानू बेगम से विवाह किया। कुछ दिन मीर्ज़ा हिन्दाल के शिविर में आनन्द मगल में व्यतीत किए। उन्होंने मीर्ज़ा हिन्दाल को कन्धार जाने से रोका और पुन लुहरी के उद्देश्य से रवाना हुए। कराचा खा ने, जो कन्धार का हाकिम था, मीर्ज़ा हिन्दाल के पास प्रार्थना-पत्र भेजकर उसे कन्धार बुलाया। मीर्ज़ा हिन्दाल ने कन्धार की ओर प्रस्थान किया। हज़रत

१ पात, पातर अथवा बातर **आईने अकबरी** के अनुसार मुल्तान सूबे की सिविस्तान सरकार में था। इसका राजस्व २,०२०,८८४ दाम था। निज़ामुद्दीन हैदर के अनुसार यह लुहरी (रोहरी) से ५० कोस तथा जौहर के अनुसार सिंध नदी के पश्चिम में २० मील पर। इसे 'पाता" भी कहते थे। मेजर जनरल हेग के अनुसार, "पात कस्बे के अवशेष, जहाँ हुमायूं ने अगस्त १५४१ ई० में हमीदा से विवाह किया और जहाँ कुछ समय पश्चात् (लगभग १५४५ ई०) में उसके भाई कामरान ने शाह हुसेन की पुत्री से विवाह किया, इसी नाम के आधुनिक ग्राम के पूर्व में हैं जो ककर परगने में स्थित है और पात कुहना (प्राचीन पात) कहलाता है। इस ग्राम के प्राचीन स्थान के पश्चिम में एक पुरानी नदी है जो इसे नये ग्राम से पृथक करती है। अब इस नदी ने एक तालाब का रूप धारण कर लिया है। एक स्थानीय इतिहास के अनुसार नदी हुमायूं के समय में उसी तालाब के स्थान से बहती थी। इस प्रकार बकरलो (रोहरी के थोड़ा सा दक्षिण में) से भेनानी (कन्धियारा में) तथा दरबेलने से होते हुए आते समय हुमायूं को कोई नदी न पार करनी पड़ी। अब यह नदी (अथवा कुछ वर्ष पूर्व) पात के ५१ मील पूर्व तथा ३ मील दक्षिण में बहती थी। [Major- General M R Haig: *The Indus Delta Country* (London 1894, p. 91)]

२ समुन्दर बेग।

३ मूल में काटकर '९४९ हि०' बनाया गया है।

पादशाह को जब इस बात की सूचना मिली तो उन्होंने भाइयों की फूट पर बडा खेद प्रकट किया। मीर्ज़ा यादगार नासिर भी शाही शिविर से दो कुरोह पर पडाव किए हुए था। नदी बीच में थी। उसने भी कन्धार जाना निश्चय किया। हज़रत पादशाह को इस बात की सूचना मिली। मीर्ज़ा अबुल क़ासिम को उन्होंने मीर्ज़ा यादगार को समझाने बुझाने के लिए भेजा। अमीर अबुल बक़ा ने नाना प्रकार से उपदेश एव शिक्षाए देकर उसे कन्धार जाने से रोका। उसके लौटते तथा नदी पार करते समय एक सेना किले के बाहर निकली और नौका वालों पर बाणो की वर्षा कर दी। मीर अबुल बक़ा के मर्म स्थान पर बाण लगा और वह शहीद हो गया। हज़रत पादशाह उसकी मृत्यु पर बडे दुखी हुए। मीर्ज़ा यादगार नासिर नदी पार करके हज़रत पादशाह के शिविर में पहुँचा। अत्यधिक विचार विमर्श के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि मीर्ज़ा यादगार नासिर बक्कर में रहे और हज़रत जनत आशियानी तत्ता की विजय हेतु प्रस्थान करे। मीर्ज़ा शाह हुसेन की ओर से इस बीच मे मेल तथा निष्ठा के चिह्न दृष्टिगत न हुए। हज़रत पादशाह जब तत्ता की ओर रवाना हुए तो उनकी सेना वालो का एक बहुत बडा समूह पृथक् होकर बक्कर मे ठहर गया। मीर्ज़ा यादगार नासिर को शक्ति प्राप्त हो गई, कारण कि उस वर्ष बक्कर की कृषि को भूमि तथा आकाश की किसी विपत्ति का सामना नही करना पडा था। हज़रत जनत आशियानी निरन्तर यात्रा करते हुए सेहवान[1] के किले के समीप पहुँचे। सैनिको का एक समूह, जो नौका मे था, किले के निकट नौका से बाहर निकला और कुछ लोगो पर, जो किले के बाहर आ चुके थे, आक्रमण किया। वे मुकाबला न कर सके और किले मे प्रविष्ट हो गए। वह समूह लौटकर हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ और उस किले की विजय का बडा सरल बताया। (५७० अ) हज़रत पादशाह ने नदी पार की और किले का अवरोध कर लिया। उनके पहुँचने के पूर्व मीर्ज़ा शाह हुसेन के अमीरो की एक सेना किले में प्रविष्ट हो गई। उन्होंने यथा-सम्भव किले को दृढ बनाने का प्रयत्न किया। मीर्ज़ा शाह हुसेन अरगून का जब हज़रत पादशाह के प्रस्थान एव किले के अवरोध का पता चला तो वह नौका मे बैठ कर शाही लश्कर के समीप पहुँचा। हज़रत के लश्कर मे अनाज के आने जाने का मार्ग बन्द हो गया और सेना वाले बडी कठिनाई में पड गए। यहाँ तक कि प्राय लोग पशुओं (के माँस) पर जीवन व्यतीत करने लगे। अवरोध मे लगभग ७ मास लग गए। विजय न प्राप्त हो सकी। उन्होंने विवश होकर मीर्ज़ा यादगार नासिर के पास इस आशय से बक्कर आदमी भेजे और (कहलाया कि) "किले की विजय तुम्हारे आगमन पर निर्भर है कारण कि यदि हम मीर्ज़ा शाह हुसेन से युद्ध एव उसके विनाश हेतु प्रस्थान करते है तो किले वाले मुक्त हो जायेंगे। अनाज के अभाव के कारण किले के समीप ठहरना सम्भव नही। हम बडी कठिनाई में है। तुम उस ओर से मीर्ज़ा सुल्तान हुसेन पर आक्रमण करो कारण कि उसमें मुक़ाबला करने की शक्ति नहीं।" मीर्ज़ा यादगार नासिर ने सर्वप्रथम अपने सैनिको मे से एक समूह

[1] इसे सीवी अथवा सीमी भी लिखते थे। इसके पूर्व में सिन्ध नदी और पश्चिम में पर्वत है। यहां सिन्ध नदी की अरल नामक शाखा से, जो तरकना से आती है, सिंचाई होती है। सेहवान क़स्बा लक्की की पहाड़ियों के समीप है। (Erskine : *History of India*, Vol. II, p. 223)।

को उनकी सहायता हेतु भेजा किन्तु उनके आगमन से कोई लाभ न हुआ। पुन मीर्ज़ा को बुलाने के लिए आदमी पहुँचा। अब्दुल गफ़ूर नामक एक व्यक्ति, जो हज़रत पादशाह का मीर माल[१] था, मीर्ज़ा को लाने के लिए नियुक्त हुआ। अब्दुल गफ़ूर जब यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास पहुँचा तो उसने हज़रत पादशाह की सेना की परेशानी के विषय मे कुछ ऐसी बातें कहीं जो उसे कहनी न चाहिये थी। मीर्ज़ा यादगार नासिर एव सेना वालों ने यही उचित समझा कि वे बक्कर मे ठहरे रहे। मीर्ज़ा शाह हुसेन ने भी अपने आदमी मीर्ज़ा यादगार के पास भेजे और उसको धोखा देने के लिये उसकी आज्ञाकारिता स्वीकार करने और अपनी पुत्री का उससे विवाह कर देने तथा उसके नाम का खुत्बा पढवा देने का आश्वासन दिलाया। मीर्ज़ा अत्यधिक प्रसन्न होकर उसके चकमे में आ गया और हज़रत जन्नत आशियानी का विरोध करने लगा। जब मीर्ज़ा शाह हुसेन, मीर्ज़ा यादगार नासिर की ओर से सन्तुष्ट हो गया और जब उसे पादशाह के लश्कर की शक्तिहीनता का विश्वास हो गया तो उसने निकट पहुँचकर पादशाह के लश्कर की नौकाओ पर अधिकार जमा लिया। हज़रत पादशाह क़िले के समीप फिर न ठहर सके और विवश होकर बक्कर की ओर चल दिए। बक्कर के समीप उन्होने मीर्ज़ा यादगार नासिर से नदी पार करने के लिए नौका माँगी। मीर्ज़ा ने, जो तत्ता वालो से मिला हुआ था, उन्हे सदेश भेजा कि रात्रि में आकर नौकाओं पर अधिकार जमा ले। प्रात काल उसने बहाना कर दिया कि शत्रु लोग नौकाओ को ले गए। हज़रत पादशाह कई दिन तक नौकर की प्रतीक्षा करते रहे। अन्ततोगत्वा बक्कर के ज़मीदारो मे से दो व्यक्ति हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुए। जो नौकायें नदी में डुबा दी गयी थी उन्हे बाहर निकाला और हज़रत पादशाह ने नदी पार की। मीर्ज़ा यादगार नासिर को जब उनके नदी पार करने के समाचार प्राप्त हुए तो उसने अत्यधिक विस्मय एव लज्जा के कारण हज़रत पादशाह की सेवा मे उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किए बिना मीर्ज़ा शाह हुसेन पर, जो कि असावधान था, आक्रमण कर दिया। तत्ता वालों की एक बहुत बडी (५७० ब) सेना, जो कि नौका के बाहर आ चुकी थी, पहुँच गई। उनमे से बहुत बडी सख्या की हत्या कर दी और एक समूह का बन्दी बनाकर वापिस लौटा। मीर्ज़ा शाह हुसेन भी युद्ध के उपरान्त तत्ता लौट गया। मीर्ज़ा (यादगार नासिर) लज्जा एव पश्चाताप प्रकट करते हुए हज़रत पादशाह की सेवा में पहुँचा। शत्रुओ के सिर प्रस्तुत किए। हज़रत पादशाह ने उसके अपराध पुन क्षमा कर दिए और जो कुछ हो चुका था उसके विषय में एक शब्द भी अपनी ज़बान से न निकाला।

मीर्ज़ा शाह हुसेन अरगन एव मीर्ज़ा यादगार नासिर एक बार फिर एक दूसरे से मिल गए। मीर्ज़ा शाह हुसेन ने मीर्ज़ा यादगार नासिर स उन दो ज़मीदारो को, जिन्होंने हज़रत पादशाह को नौकाये दी थी, माँगा। उन्हे जब इस बात की सूचना मिली तो वे शरण हेतु पादशाह के लश्कर में चले गए। मीर्ज़ा ने प्रार्थना-पत्र भेजा कि, 'इन दो व्यक्तियों के विषय मे बक्कर का विलायत से सम्बन्धित, जो कि मुझे जागीर में प्रदान कर दी गई है, राजस्व सम्बन्धी मामले चल रहे हैं।" हज़रत पादशाह ने कहा कि, "कुछ लोग ज़मीदारो के साथ जायें और उस विषय में जब निर्णय हो जाय तो उन्हे शाही लश्कर में ले आयें।" जब यादगार नासिर मीर्ज़ा की दृष्टि उन लोगों पर पडी तो उसने तत्काल दोनो को पादशाही आदमियों से ज़बरदस्ती छीन लिया और मीर्ज़ा शाह हुसेन के पास

१ बादशाह की व्यक्तिगत सम्पत्ति की देख रेख करने वाला अधिकारी।

भेज दिया और पुन विद्रोह कर दिया तथा हजरत पादशाह की सेवा में फिर न आया। पादशाही सेना के आदमी, जिनकी दशा बडी ही शोचनीय हो गई थी, भाग-भागकर १-१, २-२ करके मीर्जा यादगार नासिर के पास जाने लगे। मुनइम खा तथा उसका भाई भी भाग जाने के विषय में सोच रहे थे। हजरत पादशाह को इस बात की सूचना मिल गई। उन्होने उन्हे बन्दी बनाने का आदेश दे दिया। मीर्जा यादगार नासिर ने अत्यधिक धृष्टता प्रदर्शित करते हुए हजरत पादशाह से युद्ध करना निश्चय किया और इस उद्देश्य से सवार हुआ। हजरत पादशाह को भी इसकी सूचना मिल गई। वे भी युद्ध हेतु सवार हुए। हाशिम[1] नामक एक व्यक्ति ने, जो मीर्जा का बडा विश्वासपात्र था, उसे इस दुष्टता से रोका और किसी न किसी प्रकार वापस ले गया। हजरत पादशाह को पता चल गया कि "यदि वे यहीं ठहरे रहेंगे तो लोग पृथक् होकर यादगार नासिर मीर्जा के पास जाते रहेंगे। वह बडा ही धृष्ट है। अन्त में बडी ही परेशानी होगी।"

विवश होकर वे मालदेव के राज्य की ओर, जो कि हिन्दुस्तान के प्रतिष्ठित जमींदारो में से था, और जिसके बराबर उस समय हिन्दुओं में कोई अन्य शक्तिशाली न था, रवाना हुए। इसका कारण यह है कि मालदेव ने कई बार प्रार्थना-पत्र भेजकर आज्ञाकारिता प्रदर्शित की थी और हिन्दुस्तान की विजय के लिए सहायता का आश्वासन दिलाया था। जैसलमीर के मार्ग से शाही लश्कर मालदेव के राज्य की ओर रवाना हुआ। जैसलमीर[2] के हाकिम ने अपने सिर पर निष्ठुरता की धूल डालकर[3] सेना के एक दस्ते को उनके विरुद्ध भेजा। हजरत पादशाह के साथ जो थोडी सी सेना थी, उसने युद्ध किया और उन्हें बुरी तरह पराजित कर दिया, किन्तु उनकी ओर के भी बहुत से लोग घायल हुए। हजरत पादशाह शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए मालदेव की विलायत की ओर पहुँचे। अतका खा को मालदेव के पास जोदपुर[4] भेजा। कई दिन तक वे उसी मंजिल पर ठहरे रहे।

(५७१ अ) जब मीर्जा हिन्दाल कन्धार के समीप पहुँच गया तो कराचा खा उसके स्वागत हेतु बाहर निकला और कन्धार उसे समर्पित कर दिया। जब मीर्जा कामरान को इस बात की सूचना मिली तो वह कन्धार की ओर रवाना हुआ। चार मास तक कन्धार का अवरोध किए रहे। मीर्जा हिन्दाल विवश होकर सधि करके बाहर निकला। मीर्जा कामरान ने कन्धार मीर्जा अस्करी को प्रदान कर दिया और मीर्जा हिन्दाल को गजनी ले गया। कुछ दिन उपरान्त उसने गजनी भी उससे ले लिया। जब मीर्जा हिन्दाल ने यह समझ लिया कि मीर्जा कामरान शत्रुता पर तुला हुआ है तो उसने विवश होकर राज्य का त्याग दिया और काबुल में एकान्तवास ग्रहण कर लिया। मीर्जा कामरान ने काबुल, कन्धार तथा गजनी में स्वतंत्र रूप से राज्य करना प्रारम्भ कर दिया और अपने नाम का खुत्बा तथा सिक्का चलवा दिया।

१ हाशिम बेग।
२ २६°५५' उत्तर तथा ७०°५५' पूर्व, राजपूताना का एक प्रसिद्ध राज्य था।
३ निष्ठुरता प्रदर्शित करते हुये।
४ जोधपुर।

९४९ हि०[1]

(१७ अप्रैल १५४२ ई०—५ अप्रैल १५४३ ई०)

हज़रत जन्नत आशियानी मालदेव के राज्य की सरहद पर अत्का खाँ की प्रतीक्षा करने लगे। राय मालदेव को जब हज़रत पादशाह के पहुँचने की सूचना मिली और यह पता चला कि उनके साथ बहुत थोड़ी सी सेना है तो वह चिन्ता में पड़ गया कारण कि दुस्साहस एवं वीरता के अभाव की वजह से उसमें शेर खाँ से युद्ध करने की शक्ति न थी। शेर खाँ ने भी मालदेव के पास राजदूत भेजे थे और अत्यधिक आश्वासन दिलाया था। राय मालदेव ने अत्यधिक निष्ठुरता प्रदर्शित करते हुए यह निश्चय किया कि यदि सम्भव हो तो उन्हें बन्दी बनाकर शत्रु को सौंप दे कारण कि नागौर[2] की विलायत एवं उसके अधीनस्थ स्थान शेर खाँ के अधिकार में आ गए थे। उसे यह भय था कि कहीं शेर खाँ उससे रुष्ट न हो जाय। उसने इस उद्देश्य से एक सेना हज़रत पादशाह के विरुद्ध भेजी। हज़रत पादशाह को असावधान रखने के उद्देश्य से वह अत्का खाँ को विदा न करता था। अत्का खाँ ने उसके व्यवहार से उसके हृदय की बात भाप ली और आज्ञा बिना लौट गया। हज़रत पादशाह का एक किताबदार[3] पराजय के समय हिन्दुस्तान से मालदेव की शरण में चला गया था। उसने इस समय हज़रत पादशाह के दरबार में प्रार्थनापत्र भेजा कि, "मालदेव विश्वासघात करना चाहता है। आप शीघ्रातिशीघ्र राज्य के बाहर चले जायें।" अत्का खाँ के प्रयत्न एवं किताबदार के चेतावनी-युक्त प्रार्थनापत्र के कारण वे तत्काल अमरकोट की ओर रवाना हो गए। दो हिन्दुओं को, जो गुप्तचर बनकर आये थे, बन्दी बना लिया गया और हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित किया गया। पूँछ ताँछ के समय दोनों ने अपने आपको मुक्त करा लिया और दो व्यक्तियों से जो उनके निकट खड़े हुए थे चाकू एवं कटार छीनकर १७ नर-नारियों एवं घोड़ों को घायल करके मार डाला। दोनों की हत्या करा दी गई। हज़रत पादशाह की सवारी का घोड़ा भी मारा गया। क्योंकि हज़रत पादशाह के अख्ताजियों[4] के पास हज़रत पादशाह की सवारी हेतु दूसरा घोड़ा न था, अतः उन्होंने तरदी बेग से, जिसके पास कुछ घोड़े थे, एक घोड़ा माँगा। उसने निष्ठुरता की धूल अपने सिर पर डालकर आपत्ति प्रकट की। हज़रत पादशाह ऊँट पर सवार हो गए। नदीम कोका स्वयं पैदल था। उसकी माता उसके घोड़े पर सवार थी। उसने घोड़ा पादशाह की सेवा में प्रस्तुत करके अपनी माता को ऊँट पर सवार कर दिया। क्योंकि उस मार्ग में रेगिस्तान ही रेगिस्तान है अतः जल अप्राप्य है। हज़रत पादशाह की सेना वालों को अत्यधिक कठिनाई हुई। क्षण-क्षण पर मालदेव के निकट पहुँचने के समाचार प्राप्त होते रहते थे। हज़रत पादशाह ने ईसान तिमूर, मुनइम खाँ तथा अमीरों के एक अन्य समूह को आदेश दिया कि वे ठहर ठहर कर तथा धीरे-धीरे शाही लश्कर के पीछे-पीछे आयें। यदि शत्रु लोग पहुँच जायें तो वे युद्ध करें।

१ मूल में मिटा कर '९५० हि०' बनाया गया है।
२ नागौर : जोधपुर (राजपूताना) में २७°१२' उत्तर तथा ७३°४४' पूर्व। १२वीं शती ई० से लेकर १६वीं शती ई० तक उसे बड़ा महत्व प्राप्त रहा। (*The Imperial Gazetteer of India*, XVIII, pp 298-299)।
३ पुस्तकालय अध्यक्ष।
४ अस्तबलों।

जब रात हो गई तो वे लोग मार्ग भूल गए। प्रातःकाल के समीप शत्रु की सेना की सियाही[१] दृष्टिगत हुई। शख अली बेग, दरवेश कोका एवं नदीम कोका, कुल मिलाकर २२ व्यक्ति थे। रोशन बग वल्द बाकी जलायर उन्ही लोगो मे था। वे शत्रुओं से युद्ध करने के लिये रवाना हुए। सयोग से जिस समय वे उन लोगों के समीप पहुँचे तो वे एक सकर माग में प्रविष्ट हो चुके थे। शेख अली ने पहिले ही वाण से शत्रुओं के सरदार की हत्या कर दी। इन लोगों के चिल्ले से जो वाण भी निकलता था वह शत्रुओं के किसी न किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को घायल कर देता था। वे ठहर न सके। एक बहुत बडी सेना थोडे से आदमियों के सामने से भाग खडी हुई। भागते समय उनमें से बहुत से लोग मारे गए। बहुत से लोग हजरत पादशाह के सैनिकों द्वारा बन्दी बना लिये गए। इस विजय के समाचार हजरत पादशाह को प्राप्त हुए। उन्होने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। एक स्थान पर, जहाँ बहुत थोडा सा जल था, पडाव किया। जो अमीर रात मे मार्ग भूल गए थे, वे भी इसी समय पहुँच गए। इससे और भी अधिक प्रसन्नता बढ गई। दूसरे दिन उन्होंने पुन प्रस्थान किया। तीन दिन तक जल प्राप्त न हुआ। चौथे दिन वे एक ऐसे कुएँ पर पहुँचे जहाँ जल इतनी दूरी पर मिलता था कि जब १०० गज से अधिक रस्सी डाली जाती थी तब कहीं जाकर वह जल तक पहुँचती थी। लोग प्यास के कारण अत्यधिक व्याकुल हो चुके थे। जब वे कुएँ पर पहुँचे तो चार-पाँच व्यक्ति डोल पर गिर पडे और रस्सी टूट गई। डोल सहित वे कुएँ में गिर कर नष्ट हो गए। बहुत से लोग जान बूझकर कुएँ में कूद पडे। प्यास के कारण बहुत बडी सख्या में लोग मर गए। पुन प्रस्थान किया गया। दूसरे दिन जब हवा बडी गरम थी वे जल पर पहुँचे। घोडे तथा ऊँट, जिन्होने कई दिनों से जल न पिया था, जल पर पहुँच कर इतना अधिक जल पी गए कि उनमें से अधिकांश मर गए। इसी प्रकार अत्यधिक कष्ट भोगते हुए वे अमरकोट पहुँचे।

(५७२ अ) अमरकोट का राणा सौजन्य द्वारा सुशोभित था। वह स्वागतार्थ पहुँचा। जो कुछ भी उससे सम्भव हो सका उससे अधिक उसने प्रयत्न किया। सेना वाले कई दिन तक उस नगर मे कष्ट मे मुक्त रहे। हजरत पादशाह के पास खजाने में जो कुछ था वह (उन्होने) सेना वालों को बाँट दिया। जब कुछ लोगों को कुछ न प्राप्त हुआ तो उन्होंने तर्दी बेग तथा अन्य लोगों से कुछ धन सहायता के रूप में लिया। राणा तथा उसके पुत्रों को, जिन्होंने उत्तम सेवाएँ सम्पन्न की थीं, धन, पेटी तथा कटार प्रदान करके सम्मानित किया। क्योंकि मीर्जा शाह हुसैन अरगून ने राणा के पिता की हत्या करा दी थी अत राणा आसपास से अत्यधिक सेना एकत्र करके हजरत पादशाह के साथ भक्कर की ओर रवाना हुआ। वे अपने परिवार एवं असबाब को अमरकोट में छोड गए। ख्वाजा मुअज्जम को उनकी देखरेख हेतु नियुक्त किया। क्योंकि विश्वासघात करना युग की प्राचीन प्रथा है अत दिन हजरत पादशाह की इच्छानुसार न व्यतीत होते थे।

हजरत पादशाह के अनन्त तक तथा स्थायी रहने वाले राज्य के प्रताप को अभी तक शक्ति न प्राप्त हुई थी अत विधाता ने ऐसा किया कि कुछ दिनों की परेशानी का बदला इस प्रकार दिया कि उसका असर क़यामत तक दुनिया मे बाकी रहे . अर्थात् रविवार ५ रजब ९४९ हि० को (१५ अक्तूबर १५४२ ई०) अत्यन्त शुभ मुहूर्त एवं घडी में हजरत जहाँबानी के प्रताप के नेत्रों को पुत्र

१ सेना की भीड़।

के भाग्यशाली प्रकाश से चमकाया। अलौकिक पिताओं एवं लौकिक माताओं के विवाह का उद्देश्य इसके अतिरिक्त कोई अन्य नहीं कि उसके अस्तित्व के पवित्र नूर से सृष्टि को कयामत तक शोभा प्राप्त रहे। इस वंश की जाहिरी सल्तनत का मूल उद्देश्य इस आध्यात्मिक बादशाह के व्यक्तित्व से उसी प्रकार सम्बन्धित था जिस प्रकार सूर्य से प्रकाश। जो कोई माँ के पेट से अन्धा पैदा हुआ हो वह देखे कि किस प्रकार

शेर

'वह भाग्य का मुकुट के नीचे शुभ बनाता है,
सातों बादशाहतें उसे खराज भेजती हैं।
वह संसार में राज्यों को विजय करता है,
वह एक संसार से दूसरे संसार में बादशाही करता है।'

तरदी बेग खाँ ने अमरकोट के समीप यह शुभ समाचार हज़रत पादशाह को पहुँचाये। वे इतना अधिक प्रसन्न हुए कि इसका उल्लेख सम्भव नहीं। उनकी जन्म कुंडली देख कर हज़रत पादशाह की प्रसन्नता और भी बढ़ गई।

शेर

'नक्षत्रों द्वारा यह ज्ञात हुआ,
कि उन्हें संसार की कुंजी मिल गई।'

उनके एक सच्चे विश्वासपात्र का कथन है कि वे प्राय एकान्त में जाकर (अपने पुत्र की) शुभ जन्म कुंडली देखा करते थे। एक बार वह उन्हें सूचना दिए बिना उस एकान्त के स्थान पर पहुँचा तो उसे पाँव की आवाज़ सुनाई पड़ी। क्योंकि कोई अन्य वहाँ न जा सकता था अतः ध्यानपूर्वक देखने पर पता चला कि हज़रत पादशाह अत्यधिक प्रसन्न होकर नृत्य कर रहे हैं। जब उन्हें पता चला कि किसी को इस विषय में सूचना हो गई है तो उन्होंने बताया कि उनके नृत्य का कारण वह प्रसन्नता है जो अपने भाग्यशाली पुत्र की जन्म कुंडली देख कर उत्पन्न होती है।

शेर

'वाटिका में एक नई फूल की कली खिली,
जिसके कारण आज की रात प्रातःकाल तक बुलबुल नहीं सोया।
उसने वाटिका की रौनक को इतना अधिक बढ़ा दिया,
माली खुशी के कारण नाचता रहा।
तू न समझ कि मेरा भाग्य सो रहा है,
आज की रात सैकड़ों सूर्यों का मिलन हुआ।'

दैवी प्रेरणा से, जिसका सविस्तार उल्लेख उचित स्थान पर किया जायगा, उन्होंने पुत्र का नाम मुहम्मद अकबर रक्खा। वे वहाँ से बक्कर की ओर रवाना हुए और शाहज़ादे आलमियान की प्रतिरक्षा का अत्यधिक ध्यान रखते थे।

यहाँ तक कि हज़रत जन्नत आशियानी जोन[1] परगने मे पहुँचे और बहुत समय तक वहाँ रहने के पश्चात् प्रस्थान किया। अपने परिवार वालो को बुलवाया। अपने भाग्यशाली पुत्र के दर्शन से अपने नेत्रों को प्रकाश प्रदान किया। जो लोग इधर उधर एकत्र हुए थे, वे इस बीच में, जब कि वे ठहरे हुए थे, छिन्न-भिन्न हो गए। शख अली बेग को, जो कि बडा वीर एव उदार सरदार था, तत्ता के एक परगने मे, मीर्ज़ा शाह हुसैन की सेना वालो में से किसी ने मार डाला। हज़रत पादशाह के लश्कर में एक-एक करके लोगो ने भागना प्रारम्भ कर दिया। यहाँ तक कि मुनइम खाँ भी लश्कर से भाग गया। (हज़रत पादशाह) ने उस प्रदेश मे अधिक समय रहना उचित न देख कर, कन्धार की ओर प्रस्थान किया। बैराम खाँ गुजरात से इस समय सेवा में उपस्थित हुआ। हज़रत पादशाह ने मीर्ज़ा शाह हुसैन के पास आदमी भेज कर नदी पार करने के लिये नौकायें माँगी। मीर्ज़ा शाह हुसैन ने इसे अपना बहुत बडा सौभाग्य समझ कर ३० नौकायें एव ३०० ऊँट भेजे। हज़रत पादशाह नदी पार करके क़न्धार की ओर रवाना हुए।

६५० हि०[2]

(६ अप्रैल १५४३ ई०—२४ मार्च १५४४ ई०)

इस वर्ष हज़रत जन्नत आशियानी क़न्धार की ओर रवाना हुए। मीर्ज़ा शाह हुसैन ने मीर्ज़ा अस्करी तथा कामरान मीर्ज़ा के पास आदमी भेजकर सूचना कराई कि हज़रत पादशाह क़न्धार की ओर रवाना हो गये है। मीर्ज़ा अस्करी, जो कन्धार में था, कृतघ्नता प्रदर्शित करते हुए विरोध करने लगा। जब हज़रत पादशाह का शिविर साल मस्तान[3] के समीप पहुँचा तो वह एक बहुत बडी सेना सहित शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करता हुआ उनके विरुद्ध रवाना हुआ। समाचार लाने तथा मार्ग की खोज के लिये उन्होंने ख्वाली ऊज़बक नामक एक व्यक्ति को आगे रवाना किया। ख्वाली हज़रत पादशाह के नमक का पाला हुआ था। विदा होते समय उसने मीर्ज़ा से एक मज़बूत घोडा माँगा। जब उसे घोडा मिल गया तो वह बडी ही तीव्र गति से हज़रत जन्नत

१ आइने अकबरी के अनुसार जाजकान सरकार में। इस सरकार के महालों में यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण था। सम्भवत थट्टा तथा सेहवान के मध्य में सिंध नदी के पूर्वी तट पर। यह रन के उत्तर-पश्चिम में जाजकान के सिरे पर सिन्ध नदी की पूर्वी शाखा पर स्थित है जो रेगिस्तान से होती हुई कच्छ की पश्चिमी सीमा बन जाती है। इसे बहुत सी छोटी-छोटी नदिया काटती है। (Erskine ; *History of India under Baber and Humayun* II, p 253) हेग के अनुसार सिंध डेल्टा प्रदेश मे अमरकोट से ७५ मील दक्षिण-पश्चिम तथा थट्टा से ५० मील उत्तर-पूर्व में, रन के बायें तट पर। उद्यानों एवं नदियों से भरे हुये इस भू-भाग में हुमायूँ ने अपने बहुमूल्य समय का कुछ भाग आनन्द-मंगल में व्यतीत किया। इसी स्थान पर शाहज़ादा दारा शिकोह कुछ समय के लिए उस समय जब कि वह अपने भाई के कारण भागा फिर रहा था १६५८ ई० में ठहरा और यहीं उसकी पत्नी की मृत्यु हुई। जोन के हाकिम ही ने मित्रता का बहाना बनाकर उसे धोखे से बन्दी बनवा दिया और उसे उसके भाई को सौंप दिया। आधुनिक टाँडा गुलाम हैदर के दक्षिण पूर्व में दो मील पर जोन के अवशेष अब भी मिलते हैं। [Major-General M R. Haig. *The Indus Delta Country* (London 1894, p 91-93)]

२ मूल मे '९५१ हि०' बताया गया है।

३ शाल मस्तंग।

आशियानी के लश्कर में पहुँच गया। जब वह दौलतखाने[1] के समीप पहुँचा तो घोड़े से उतर पड़ा और पूँछा कि, "बैराम बेग का डेरा कहाँ है?" लोगों ने पता बताया। जब वह बैराम बेग के खेमे में पहुँचा तो उसने यह सूचना दी कि "मीर्ज़ा अस्करी हज़रत पादशाह पर आक्रमण करने के लिए आ रहा है।" बैराम खां तत्काल हज़रत पादशाह की सेवा में रवाना हुआ और सरापरदे के पीछे से पहुँच कर पूँछा कि "हज़रत जाग रहे हैं?" पादशाह ने उत्तर दिया कि, "बैराम क्या बात है?" उसने भी मीर्ज़ा अस्करी के समाचार पहुँचाये। हज़रत पादशाह ने कहा कि, "कन्धार एवं काबुल का क्या मूल्य है जो मैं कृतघ्न भाइयों से झगड़ा करूँ।" वे तत्काल सवार हो गए और ख्वाजा मुअज्ज़म को मेहदे उलिया[2] को लाने के लिए भेजा। वह शीघ्रातिशीघ्र हज़रत मरियम मकानी[2] को सवार करके हज़रत पादशाह के पास लाया। क्योंकि उनकी सरकार में घोड़ों की संख्या बहुत कम थी अतः उन्होंने तरदी बेग से घोड़ा मांगा। उसने निष्ठुरता की धूल अपने सिर पर डालकर घोड़ा देने में आपत्ति प्रकट की और साथ रवाना भी न हुआ। मीर्ज़ा अस्करी थोड़ी देर बाद शिविर के समीप पहुँच गया। उसे सूचना मिली कि हज़रत कुशलतापूर्वक चले गए। उसने कुछ लोगों का शिविर पर अधिकार जमाने के लिए नियुक्त कर दिया। दूसरे दिन अत्यधिक निर्लज्जता प्रदर्शित करते हुए हज़रत जन्नत आशियानी के दीवानखाने में पड़ाव किया। हज़रत जन्नत आशियानी हज़रत पादशाह[3] को, इस भय से कि शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते समय कहीं उन्हें कोई हानि न पहुँच जाय, अत्का खां की देखरेख में छोड़ गये थे। अत्का खां उन्हें मीर्ज़ा अस्करी की सेवा में ले गया। मीर्ज़ा अस्करी के आदेशानुसार तरदी बेग बन्दी बना लिया गया। कठोर मुहस्सिल[4] हज़रत पादशाह के ब्यूतात[5] का पता लगाने एवं धन सम्पत्ति पर अधिकार जमाने के लिए नियुक्त हुए। नाना प्रकार से कष्ट देकर जो कुछ भी उन लोगों से सम्भव हो सका, मीर्ज़ा के दीवानखाने में पहुँचा दिया। हज़रत शाहज़ादा को कन्धार ले गया और अपनी पत्नी सुल्तानम बेगम को सौंप दिया। उसने उनके प्रति कृपा प्रदर्शित करने में कोई कमी न की। हज़रत जन्नत आशियानी के साथ २२ व्यक्ति थे जिनमें बैराम खां, ख्वाजा मुअज्ज़म, बाबा दोस्त बख्शी, ख्वाजा गाज़ी, हैदर मुहम्मद आख़्ता बेगी, मीर्ज़ा कुली बेग, शेख़ यूसुफ, इबराहीम ईशक आका, हसन अली ईशक आगा[6] थे। बिना किसी निश्चित मार्ग के वे लोग चल खड़े हुए। सूर्यास्त के बाद बिलोची मिला और उसने मार्ग दर्शाया। अत्यधिक कष्ट भोग कर वे बाबा हाजी के किले में पहुँचे। वहां के निवासियों के पास जो कुछ था वह उन्होंने उपस्थित किया और अपनी ओर से कोई भी कमी न होने दी।

ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद ने, जो मीर्ज़ा अस्करी के पूर्व उस विलायत का राजस्व वसूल करने के लिए आया था, हज़रत पादशाह के आगमन से अवगत होकर तत्काल उनकी सेवा में उपस्थित

१ शाही खेमे।
२ हमीदा बानो बेगम।
३ अकबर।
४ हिसाब किताब करने वाले।
५ धन सम्पत्ति से तात्पर्य है।
६ आका एवं आगा दोनों ही रूप में यह शब्द मिलता है और दोनों का अर्थ एक ही है।

होने का सम्मान प्राप्त किया। घोड़े, ऊँट तथा खच्चर जो कुछ भी यात्रा के लिए आवश्यक थे, भेंट किए।

दूसरे दिन हाजी मुहम्मद कोका मीर्जा अस्करी के पास से भागकर हज़रत पादशाह के पास पहुँच गया। क्योंकि भाइयों तथा सम्बन्धियों की निष्ठुरता के कारण ठहरने योग्य कोई स्थान न (५७४अ) रह गया था, अत वे विवश होकर खुरासान तथा एराक की ओर रवाना हुए। सीस्तान[1] की विलायत के प्रारम्भ होते ही अहमद सुल्तान शामलू ने, जो शाह तहमास्प के आदेशानुसार वहाँ का हाकिम था, स्वागत करके उपहार प्रस्तुत किए। वे कुछ दिन तक सीस्तान में ठहरे रहे। अहमद खा ने अपने सामर्थ्य से अधिक आतिथ्य का प्रबन्ध किया। अपनी स्त्रियों को कनीज़ों की भाँति मरियम मकानी की सेवा में भेज दिया। अपने समस्त असबाब एव सामग्री पेशकश के रूप में भेट करके स्वय दासो की माला में सम्मिलित हो गया। हज़रत पादशाह ने विवशता के कारण जो कुछ आवश्यक था वह स्वीकार कर लिया और शेष उसी को प्रदान कर दिया। अहमद खा ने परामर्श के समय निवेदन किया कि "तबस कीलकी[2] के मार्ग से एराक की ओर प्रस्थान करना उचित है कारण कि वह मार्ग बडे निकट का है। यह तुच्छ दास मार्ग दर्शा कर एराक में सेवा में उपस्थित होगा।" हज़रत पादशाह ने कहा कि, "मैंने हिरात नगर की बडी प्रशसा सुन रक्खी है। उस मार्ग से जाने को जी चाहता है।" अहमद सुल्तान, हज़रत पादशाह के साथ ऊक[3] नामक किले के मार्ग से हिरात की ओर रवाना हुआ। उस समय शाह तहमास्प का ज्येष्ठ पुत्र, सुल्तान मुहम्मद मीर्जा हिरात का हाकिम था। मुहम्मद खा शरफुद्दीन ऊगली तकलू शाहजादे का अतालक[4] था। हज़रत पादशाह के पहुँचने के समाचार पाकर उन लोगों ने अली सुल्तान को, जो कि तकलू अमीरों में से था, शीघ्रातिशीघ्र स्वागतार्थ भेजा। उसने जहाँ से हिरात की विलायत प्रारम्भ होती है हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। हज़रत पादशाह के साथ-साथ हिरात की ओर रवाना हुआ। ईरान का शाहज़ादा अपने परिजनो एव सहायकों सहित स्वागतार्थ उपस्थित हुआ और आदर सम्मान प्रदर्शित करने में कोई कसर न उठा रखी। मुहम्मद खा ने चरण चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। शुभ शिविर हिरात नगर मे लगे। मुहम्मद खा ने इस प्रकार आतिथ्य का प्रबन्ध किया कि इस समय तक उस प्रकार किसी को भी ऐसा सौभाग्य न प्राप्त हुआ होगा। हज़रत पादशाह उसके सौजन्य से बडे सतुष्ट हुए। हज़रत पादशाह की राज्य सम्बन्धी सामग्री एव यात्रा की आवश्यकताओं की मुहम्मद खा ने इस प्रकार व्यवस्था कर दी कि शाह तहमास्प की भेंट के समय तक उन्हे किसी चीज़ की भी आवश्यकता न हुई।

१ सीस्तान अथवा सिजिस्तान, खुरासान के दक्षिण में ईरान एव अफ़ग़ानिस्तान की सरहद पर।

२ तबसे कीलकी अथवा तबस गीलकी या तबस तसर, फ़ारस के प्रसिद्ध रेगिस्तान लूत की, जो किरमान को खुरासान से पृथक् करता है, सरहद पर स्थित है। यहाँ पर बहुत से मार्ग मिलते है अत बलाज़ुरी ने इसे खुरासान का फाटक लिखा है। यह सीस्तान से क़ज़वीन के, जो हुमायूँ के समय में ईरान की राजधानी था, मार्ग पर स्थित था।

३ रैवर्टी ने तबकाते नासिरी के अनुवाद में ऊक को फ़राह एवं ज़रंज (सीस्तान) के मध्य में बताया है।

४ गुरू एवं संरक्षक।

जब वे हिरात के समस्त दर्शनीय भवनों एवं उद्यानों का निरीक्षण कर चुके तो हिरात से तूस[1] की ओर रवाना हुए। मशहद के हाकिम शाह कुली सुल्तान इस्ताजलू ने भी यथा-शक्ति सेवा करने का प्रयत्न किया। इसी प्रकार शाह तहमास्प के आदेशानुसार वे जिस मंज़िल पर पहुँचते थे वहाँ का हाकिम यथासम्भव पेशकश उपस्थित करता था। शाह तहमास्प के शिविर से शाह के आदेशानुसार एराक के सम्मानित तथा प्रतिष्ठित लोग उनके स्वागतार्थ रवाना हुए और यह निश्चय हुआ कि दामगान[2] से शाह के शिविर तक प्रत्येक मंज़िल पर उनमें से एक आतिथ्य का प्रबन्ध करे। शाह की सरकार से आतिथ्य की सामग्री भी निश्चित की गई। प्रत्येक मंज़िल पर उनके सम्मान में जश्न होता था। शाह का पड़ाव सूरलीक[3] के किले में यीलाक[4] हेतु था। बैराम खाँ को हज़रत पादशाह ने शाह के पास भेजा। जो पत्र वह ले गया था, उसका वह वहाँ से उत्तर लाया।[5]

९५१ हि०[6]

(२५ मार्च १५४४ ई०—१४ मार्च १५४५ ई०)

(५७५ अ) इस वर्ष के जमादी-उल-अव्वल मास[7] में ईरान के पादशाह तथा हिन्दुस्तान के शहंशाह की सूरलीक के यीलाक में भेंट हुई। शाह तहमास्प ने आदर सम्मान प्रदर्शित करने में कोई कसर न उठा रक्खी एवं जश्न का प्रबन्ध किया। दोनों ओर के सम्मान को देखते हुए आतिथ्य की जो आवश्यकताएँ थीं, उनकी पूर्ति की। जो घटनाएँ घटी थीं उनके विषय में वार्तालाप के समय उन्होंने[8] अपनी शुभ जिह्वा से कहा कि, "यह घटनाएँ भाईयों की फूट के कारण घटीं।" शाह तहमास्प का भाई बहराम मीर्ज़ा, जो इस दरबार में उपस्थित था, बड़ा रुष्ट हुआ। जब तक हज़रत पादशाह एराक में रहे, बहराम मीर्ज़ा उनकी ओर से कुपित रहा किन्तु उसके विपरीत शाह तहमास्प की बहिन सुल्तानम, जो ईरान के शाह की दृष्टि में अत्यधिक विश्वस्त थी और राज्य तथा राजस्व सम्बन्धी पूर्ण अधिकार की स्वामिनी थी, यथा-सम्भव उनकी देखभाल करती रही। क़ाज़ी जहाँ कज़वीनी, जो दीवान का नाज़िर[9] था तथा हकीम नूरुद्दीन मुहम्मद तबीब ने, जिन्हें अत्यधिक विश्वास एवं सम्मान प्राप्त था, हज़रत जन्नत आशियानी की शुभ चिन्ता में कोई कसर उठा न रक्खी। हकीम नूरुद्दीन, जो कि महरम[10] था, बाहर तथा भीतर जब उसे अवसर मिलता हज़रत पादशाह के कार्यों की व्यवस्था का प्रयत्न किया करता था।

१ तूस, जहाँ आजकल मशहद आबाद है।
२ यह प्राचीन कूमीस प्रान्त (आधुनिक खुरासान का एक भाग) की राजधानी था। इब्ने हौक़ल ने यहाँ अन्न के अभाव की शिकायत की है। मुस्तौफ़ी क़ज़वीनी ने दामगान के समीप कोहे जर पर सोने की खान का उल्लेख किया है।
३ सुल्तानिया के समीप।
४ वह स्थान जहाँ ग्रीष्म ऋतु व्यतीत की जाती है।
५ इसी वर्ष के विवरण में हुमायूँ के बल्ख़ के आक्रमण का हाल पुस्तक नक़ल करने वाले ने नक़ल कर दिया है।
६ मूल में '९५२ हि०' बताया गया है।
७ जमादी-उल अव्वल ९५१ हि० (जुलाई-अगस्त १५४४ ई०)।
८ हुमायूँ।
९ अधीक्षक से तात्पर्य है।
१० जिससे अन्तःपुर की बेगमें परदा करती थीं।

उन दिनों में शाह तहमास्प ने हजरत जहाँबानी को प्रसन्न रखने के लिए तीन बार घेरे के शिकार का प्रबन्ध कराया और प्रत्येक बार अत्यधिक जानवर मारे गए। इन्हीं शिकारों में से एक शिकार के अवसर पर जब हजरत जन्नत आशियानी, शाह तहमास्प एवं बहराम मीर्ज़ा अमीरों के एक समूह के साथ बाण चलाने में व्यस्त थे तो बहराम मीर्ज़ा ने कासिम खाँ[1] से प्राचीन शत्रुता (५७५ ब) के कारण शिकार के बहाने से उसकी ओर बाण चलाया। वह बाण उसके मार्मिक स्थान पर लगा। वह तत्काल मृत्यु को प्राप्त हो गया।

शाह तहमास्प हजरत पादशाह को विदा करने का प्रबन्ध करने लगा। अतिथि योग्य समस्त शाही सामग्रियों की व्यवस्था की और अपने पुत्र शाह मुराद को दस हज़ार अश्वारोहियों सहित हजरत पादशाह की सहायतार्थ नियुक्त किया। हजरत जन्नत आशियानी ने कहा कि, "मैं तबरेज़ तथा अदबेल की सैर करना चाहता हूँ।" शाह ने उन स्थानों के हाकिमों को फ़रमान भेज दिए कि आदर सम्मान प्रदर्शित करने का यथा-सम्भव प्रयत्न करें। हजरत उन स्थानों की सैर करके कन्धार की ओर रवाना हुए और निरन्तर यात्रा करते हुए मशहद, जो तूस कहलाता था, पहुँचे। उनके गोस्तान में पहुँचने के पूर्व सब के सब किज़िलबाश अमीर उनकी सेवा में पहुँच गए। यद्यपि यह निश्चय हुआ था कि दस हजार व्यक्ति उनके साथ जायेंगे किन्तु किज़िलबाश अमीर लगभग २०,००० व्यक्ति अपने साथ लाये। बुदाग खाँ अफशार को, जो अत्का नियुक्त किया गया था, उस सेना के पूर्ण अधिकार प्राप्त थे। गरमसीर का किला उस सेना के एक दस्ते ने पहुँचते ही अधिकार में कर लिया। किज़िलबाश अमीरों का एक समूह आगे रवाना हुआ और कन्धार पहुँच गया। एक बहुत बड़ी सेना किले के बाहर निकली। उसने यथा-सम्भव प्रयत्न किया किन्तु पराजित हुई। कन्धार में किज़िलबाश सेना ने अपने शिविर लगा दिये। हजरत पादशाह पाँच दिन उपरान्त कन्धार पहुँचे और किले का अवरोध कर लिया। तीन मास तक रोज़ाना युद्ध होता रहा। दोनों ओर से अधिक संख्या में लोग मारे गए।

बैराम खाँ मीर्ज़ा कामरान के पास दूत बनाकर काबुल भेजा गया। मार्ग में हज़ारा कौम का एक समूह (निकला और उससे) युद्ध हुआ। बैराम खाँ को विजय प्राप्त हो गई। उसने काबुल पहुँच कर मीर्ज़ा कामरान से भेंट की। मीर्ज़ा हिन्दाल, मीर्ज़ा सुलेमान वल्द मीर्ज़ा खान एवं मीर्ज़ा यादगार नासिर, जो बब्बर से बड़ी अव्यवस्थित दशा में भागा था, से भेंट हुई। मीर्ज़ा कामरान ने मेहदे उल्या खानजादा बेगम को बैराम खाँ के साथ कन्धार भेज दिया ताकि कदाचित् संधि की कोई व्यवस्था हो जाय।

९५२ हि०[2]

(१५ मार्च १५४५ ई०—३ मार्च १५४६ ई०)

(५७६ अ) इस वर्ष शेर खाँ की, जो हिन्दुस्तान के अधिकांश प्रदेशों का स्वामी था, मृत्यु हो गई। शेर खाँ का पिता, जिसका नाम मियाँ हसन था, इस्कन्दर अफगान[3] के समय में जौनपुर के हाकिम का नौकर था। वह बड़ा ही अज्ञात एवं साधारण व्यक्ति था। शेर खाँ, जिसका नाम

१ अबुल कासिम खलफा।
२ मूल में '९५३ हि०' बताया गया है।
३ सिकन्दर लोदी।

फरीद था, अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त जमाल खा का सेवक हो गया और उसे जागीर में दो ग्राम प्रदान किए गए। कुछ समय तक वह इसी प्रकार जीवन व्यतीत करता रहा।

जब हजरत फिरदौस मकानी ने हिन्दुस्तान विजय कर लिया तो जुनैद बरलास को जौनपुर का हाकिम नियुक्त कर दिया। उस समय जब कि अफगान लोग सेवा न करते थे,[1] शेख फरीद नौकर हो गया। उसके वही दोनों ग्राम उसे अकना में प्रदान हुए। अपनी उत्तम सेवाओं के कारण वह सुल्तान जुनैद बरलास का विश्वासपात्र हो गया और उसके विश्वास में नित्यप्रति वृद्धि होने लगी। सुल्तान जुनैद से उसे जो कुछ भी प्राप्त होना था उसे वह अफगानों के ऊपर व्यय कर देता था। इस प्रकार उसने बहुत बडी सख्या में लोगों को एकत्र कर लिया। यहाँ तक कि सुल्तान जुनैद को उसके सगठन का पता चल गया। इस कारण कि उसके पास अफगान लोग एकत्र हो गए थे, वह चिन्ता में पड गया और उसे नष्ट करने की योजना बनाने लगे। शेख फरीद ने उसके हृदय की बात भाँप ली और वह सहसराम की विलायत की ओर भाग गया। बहुत समय तक वह वहाँ निवास करता रहा और जलाल खा अफगान लोहानी वल्द दरिया खा के पास जिसने बिहार में अधिकार जमा लिया था, चला गया। अपने उत्तम व्यवहार के कारण वह जलाल खा का भी अत्यधिक विश्वासपात्र हो गया। बिहार के उत्तम परगनों में से एक उसे जागीर में प्रदान हो गया।

हज़रत जन्नत आशियानी ने हज़रत फिरदौस मकानी के निधन के उपरान्त एक सेना बिहार तथा हाजीपुर की विजय हेतु भेजी। अफगानों के जो समूह बिहार, हाजीपुर, चुनार[2] तथा सारन में थे, वे बिबन तथा बायजीद के साथ मिलकर युद्ध हेतु रवाना हुए। जलाल खा लोहानी वल्द दरिया खा बालक होने के कारण स्वयं युद्ध हेतु न गया। शेख फरीद के नेतृत्व में एक हज़ार अश्वारोही अफगानों की कुमक हेतु भेज दिए और उसे शेर खा की उपाधि प्रदान की। अफगानों ने मुगल सेना पर विजय प्राप्त कर ली। बिबन तथा बायजीद जौनपुर पहुँचे। हज़रत जन्नत आशियानी ने, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, उन्हें नष्ट कर दिया। बिबन तथा बायजीद के द्वारा युद्ध के उपरान्त शेर खा, उनसे पृथक् होकर बिहार की ओर रवाना हुआ। जलाल खा ने, जो सेना उसके साथ कर दी थी, उसे उसने मिला लिया और बिहार में पहुँचा। उसने जलाल खा की शेष सेना को भी किसी न किसी युक्ति से मिलाकर जलाल खा को बन्दी बना लिया। जलाल खा तथा दरिया खा द्वारा सचित धन सम्पत्ति उसके अधिकार में आ गई और उसकी शक्ति बढ गई। वह एक वर्ष तक बिहार की विलायत को अपने अधिकार में किए रहा। अफगानों की बहुत बडी सख्या उसके पास एकत्र हो गई। हज़रत जन्नत आशियानी ने जब जौनपुर एव अवध की सरकार बिबन तथा बायज़ीद के अधिकार से छीन ली तो मुस्तफा फरमुली, जो कि अफगानों में सर्वश्रेष्ठ और अवध (५७६ ब) का हाकिम था, भाग कर अत्यधिक सेना सहित हाजीपुर चला गया। शेर खा ने उसके साथ विश्वासघात की दृष्टि से उसके पास सदेश भेजा कि हाजीपुर में ठहरने से कोई लाभ नहीं।

१ मुग़लों की सेवा से तात्पर्य है।
२ मूल में 'चुनारन' जिसे 'चम्पारन' भी पढ़ा जा सकता है।

शीघ्र मुगुल लोग पीछा करेंगे। नदी पार करके विहार में आ जायें कारण कि दास पूर्ण रूप से आज्ञाकारिता स्वीकार करने के लिए तैयार है। हम लोग मिलकर मुगुलों को सुगमतापूर्वक नष्ट कर सकेंगे। मुस्तफा चकमे में आ गया और विहार पहुँचा। शेर खा ने कुछ दिनो तक उसके आतिथ्य एव आदर सम्मान का अत्यधिक प्रवन्ध किया। जब उसने मुस्तफा के सैनिकों को मिला लिया तो अवसर पाकर मुस्तफ़ा की हत्या कर दी। मुस्तफा के खजाने से उसे अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई। उसे उसने सैनिकों को बाँट दिया। उसकी शक्ति अत्यधिक बढ गई। क्योंकि वह अपने परिवार की ओर से निश्चिन्त न था अत उसने रोहतास के किले को अधिकार में करने की योजना बनाई। यह हिन्दुस्तान का बडा प्रसिद्ध किला है। वहाँ की हुकूमत राजा गणेश राय[1] से सम्बन्धित थी। उस किले पर युद्ध द्वारा अधिकार करना किसी प्रकार सम्भव न था। उसने राजा के पास अत्यधिक उपहार सहित आदमी भेजे और सदेश प्रेषित किया कि, "मेरे पास बहुत थोडा सी विलायत है और अत्यधिक सेना एकत्र हो गई है। मैं बगाले को विजय करना चाहता हूँ। क्योंकि मुगुलों की ओर से सतुष्ट रहना चाहता हूँ, अत मैं अपने तथा समस्त सैनिकों के परिवार एव धन-सम्पत्ति को आपके पास किले में भेज देना चाहता हूँ, ताकि वे लोग निश्चिन्त होकर बगाले की विलायत में प्रविष्ट हों।" राजा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार न की। शेर खा ने उसके पास पुन आदमी भेजे और उसे तथा उसके निकटवर्तियों को धोखा देने के लिए उनके पास अत्यधिक धन भेजकर सदेश प्रेषित किया कि "स्त्रियाँ तथा धन सम्पत्ति को किले में भेजने के अतिरिक्त हमारा कोई अन्य उद्देश्य नहीं। यदि हम बगाले को विजय कर लेते हैं और कुशलतापूर्वक लौट आते हैं तो आपके अत्यधिक आभारी होंगे और आपको कोई हानि न होगी। यदि इसके विरुद्ध कुछ हो गया तो हमारे परिवार वाले एव हमारी धन सम्पत्ति आपके पास सुरक्षित रहेगी और मुगुलों के हाथ में, जो हमारे प्राचीन शत्रु हैं, न आ सकेगी।" राजा को देखने में यह बात बडी ही उचित ज्ञात हुई। उसने स्वीकार कर लिया। शेर खा ने एक हजार डोलियाँ तैयार की। जिस प्रकार हिन्दुस्तान में स्त्रियाँ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डोली में जाती हैं, उसने प्रत्येक डोली में अपने दो विश्वासपात्र विठाल दिए और ५०० व्यक्तियों के सिर पर धन सम्पत्ति के थैले लदवाकर किले के समीप भेजा और स्वय सेना लेकर तैयार रहा कि अवसर पाकर किले में प्रविष्ट हो जाय। जब राजा तथा उसके वकील की दृष्टि अत्यधिक धन सम्पत्ति एव डोलियों पर पड़ी तो वे बडे प्रसन्न हो गए और उन सब को अपने लिये हलाल[2] की धन सम्पत्ति समझकर ऊपर पहुँचाने में जल्दी करने लगे। जब समस्त धन सम्पत्ति एव डोलियाँ किले में प्रविष्ट हो गई तो अचानक उन लोगों ने, जिन्हें राजा ने स्त्रियाँ समझ रक्खा था, वीरता प्रदर्शित करते हुए तलवारें खींच ली और बाहर निकल आये। द्वार पर पहुँचकर अधिकांश लोगों की हत्या कर दी। राजा हजारों कठिनाइयाँ सहन करते हुए भाग गया और रोहतास का क़िला, जिसे हिन्दुस्तान के (५७७ अ) सुल्तानों में से कोई भी विजय न कर सका था, शेर खा के अधिकार में आ गया। रोहतास (का किला) इतना दृढ है कि ससार भर के यात्रियों ने उसके समान कोई अन्य स्थान नहीं देखा है। अफगान लोग अत्यधिक सतुष्ट एव प्रसन्न हो गए और अपने परिवार वालों को किले के

१ इसे 'राना कंम राय' भी पढ़ा जा सकता है किन्तु 'कनेस' अथवा 'गणेश' अधिक उचित है।

२ जाइज़, जिसका खाना पीना धर्म में वर्जित न हो।

भीतर ले गए और किले की प्रतिरक्षा का अत्यधिक प्रयत्न करने लगे। जब रोहतास की विजय के समाचार प्रसिद्ध हो गए तो अफगान लोग प्रत्येक दिशा से उस ओर पहुँचे। शेर खा अत्यधिक शक्तिशाली हो गया। जब अफगानों के परिवार वाले किले में प्रविष्ट हो गए तो उसने उन्हे भी अपने वश में करके पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त कर लिया। उसने मुगेर के, जो बगाले तथा बिहार में मध्यस्थ के रूप में हैं, हाकिम से मित्रता प्रारम्भ कर दी। जब उसने यह समझ लिया कि वह उसे नष्ट कर सकता है तो नष्ट करने की योजना बनाने लगा। हज़रत जन्नत आशियानी उस समय गुजरात विजय मे व्यस्त थे। वह उस ओर से भी निश्चिन्त था। मुगर के हाकिम कुतुब शाह ने जो बगाले के हाकिम नुसरत शाह का सम्बन्धी था, शेर खा से युद्ध किया किन्तु पराजित हो गया। उसकी हत्या करा दी गई। वह विलायत भी शेर खा के अधिकार मे आ गई। वह बगाले की ओर रवाना हुआ। बगाल की सेना वाले गढ़ी की प्रतिरक्षा हेतु पहुँचे। एक मास तक युद्ध होता रहा। अन्तता-गत्वा गढी अफग़ानों के अधिकार मे आ गई। बगाले का हाकिम युद्ध की शक्ति न देखकर पर्वतीय किले मे बन्द हो गया। शेर खा दीर्घकाल तक किले का अवरोध किए रहा।

क्योंकि बिहार में वहाँ के एक जमींदार ने उपद्रव मचा रक्खा था, अत वह बिहार की ओर वापस हुआ। अपनी सेना को किले के अवरोध हेतु छोड़ गया। अवरोध एक वर्ष से अधिक बढ़ गया। किले में अनाज अप्राप्य हो गया। विवश होकर बगाले का हाकिम नौका द्वारा हाजीपुर भाग गया। बगाला शेर खा के आदमियों के अधिकार में आ गया। बगाले के हाकिम ने अवरोध के समय हज़रत पादशाह के दरबार मे निरन्तर प्रार्थना पत्र भेजकर कुमक की प्रार्थना की थी। हज़रत पादशाह गुजरात विजय के उपरान्त जैसा कि उल्लेख हो चुका है, आगरा लौटे और शेर खा से युद्ध हेतु रवाना हुए। उन्हे कड़ा मानिकपुर मे समाचार प्राप्त हुए कि शेर खा ने बगाल पर अधिकार जमा लिया है। बगाले का हाकिम उनकी सेवा मे उपस्थित हुआ। शेर खा को उनके प्रस्थान के समाचार प्राप्त हुए। वह बगाला पहुँचा और उस खज़ाने को, जो कि बगाले के हाकिम ने दीर्घकाल से एकत्र कर रक्खा था, तथा वहाँ के हाकिम के परिवार को, अपने अधिकार में कर लिया। गढी को दृढ़ बनाकर अपनी सेना के अधिकांश आदमियों को वहाँ भेज दिया। जब हज़रत जन्नत आशियानी गढी के समीप पहुँचे तो जैसा कि उल्लेख हो चुका है, जहाँगीर बग को गढी की विजय हेतु भेजा। अफग़ानों ने जहाँगीर से युद्ध करके उसे पराजित कर दिया। हज़रत पादशाह स्वय गढी की ओर रवाना हुए। क्योंकि शेर खा में युद्ध करने की शक्ति न थी अत उसने बगाले में जो कुछ प्राप्त किया था उसे पर्वतों तथा झारखण्ड[1] के मार्ग से रोहतास के किले में पहुँचा दिया। हज़रत जन्नत

[1] इसे छोटा या छोटा नागपुर बताया गया है और कहीं कहीं इसे मिदनापुर के जगली महालों से सम्बन्धित बताया गया है। बेवरिज का विचार है कि सम्भवत भूल से भारकुड अथवा बीर भूमि के लिये इसका प्रयोग होता है। [Beames. Notes on Akbar's Sarkars, *Journal Royal Asiatic Society* (London 1896, p 97)]। भारकुड सरकार शरीफाबाद में थी। हॉडीवाला ने लिखा है कि 'झारखण्ड (जगली प्रदेश) का तात्पर्य बड़े विस्तृत भौगोलिक भू भाग से है जिसको निश्चित रूप से बताना कठिन है। ब्लाखमैन ने लिखा है कि अकबर नामा में बीर भूमि तथा पचेत से रतनपुर (मध्य भारत) तथा रोहतास गढ़ दक्षिणी बिहार से उड़ीसा तक की सरहद का भूभाग झारखण्ड अथवा जगली प्रदेश कहलाता है। यह कोई निश्चित भू भाग नहीं और छोटिया (छोटा) नागपुर के भू-भाग के लिए, जो रोहतास से बीर-भूमि तक फैला है, प्रयोग में आता है।

आशियानी बगाले में प्रविष्ट हो गए और उस प्रदेश पर अपना अधिकार जमा लिया। शेर खा ने विहार की विलायत, जो कि बगाले के मार्ग में है, अपने अधिकार में कर ली। हजरत पादशाह बहुत समय तक बगाले के शासन की व्यवस्था हेतु वहाँ ठहरे रहे। बगाले की जलवायु के कारण प्राय सैनिकों के घोड़े नष्ट हो गए। आगरा तथा बगाले के यातायात के साधन बन्द हो गए। सैनिक अत्यधिक परेशान हो गए। हजरत पादशाह ने विवश होकर बगाले को जहाँगीर को प्रदान किया और उसे पाँच हजार व्यक्तियो सहित बगाले में ठहरने का आदेश दिया। वे स्वय वहाँ से वापस हो गए। शेर खा ने इस बीच में निश्चिन्त होने के कारण अत्यधिक सेना एकत्र कर ली थी। चौसा के समीप उसने हजरत पादशाह के लश्कर पर छापा मारा। जैसा कि उल्लेख हो चुका है वह युद्ध मुगलों की इच्छानुसार सम्पन्न न हुआ। हजरत जन्नत आशियानी आगरा पहुँचे। उनके भाई लोग, जो कि घर के शत्रु थे, बगाले के शत्रु को नष्ट करने के लिये सगठित न हुए। जैसा कि उल्लेख हो चुका है कन्नौज में पुन युद्ध हुआ। हजरत पादशाह के अधिकार से हिन्दुस्तान निकल गया और शेर खा के अधिकार म पूर्ण रूप से आ गया। [1]

हजरत जन्नत आशियानी का इतिहास

कन्धार के अवरोध, बैराम खा के दूत बनाकर काबुल भेजे जाने तथा खानजादा बेगम के साथ बैराम खा की वापसी के उपरान्त भी मीर्जा अस्करी उसी प्रकार युद्ध करता रहा। किजिलबाश सेना अवरोध मे अधिक समय लग जाने के कारण चिन्तित होकर लौटने के विषय में सोचने लगी क्योंकि उसका विचार था कि जब हजरत पादशाह कन्धार के समीप पहुँचेंगे तो चगताई उलूस[2] उनके पास पहुँच जायेंगे। जब बहुत समय व्यतीत हो गया और कोई भी न आया तो उन्हें अत्यधिक चिन्ता हुई। सयोग से उन्ही दिनो मीर्जा हुसैन खा, मुनइम खा का भाई फ़ज़ील बेग, मीर्जा कामरान के पास से भागकर हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुए। तुर्कमानों की आशाएँ बढ गईं। कुछ दिन उपरान्त मुहम्मद सुल्तान मीर्जा, उलुग मीर्जा, कासिम हुसैन मीर्जा

ब्लाखमैन ने छोटा नागपुर के विषय में लिखा है "In the *Akbarnama* the whole tract from Birbhum and Pachet to Ratanpur in Central India, and from Rohtasgarh in South Bihar to the frontier of Orissa, is called 'Jharkhand,' or jungle land There are several geographical names that have the same signification, we find them specially in such districts as are now inhabited by aboriginal races Thus the Gond word *dangur* means 'a jungle,' 'wilderness,' and hence the numerous Dongars, Dongris, Dongarpur Dongarganws, Dongartals in Western and Central India. Even the word 'bir' in Birbhum, notwithstanding the various etymologies which have been proposed, is, I believe, nothing else but the Mundari bir, a forest (H Blochmann Notes from Muhammadan Historians on Chutia Nagpur Pachet, and Palamau, *J. A S B* Calcutta 1871, p 111).

१ शेर शाह के राज्य एव उसकी मृत्यु के इतिहास का अनुवाद नहीं किया गया है।

२ कबीले।

एव शेर अफगन भी भागकर कन्धार आ गए। किजिलबाश सेना और भी सतुष्ट हो गई। मुईद बेग, जो कि किले मे बन्दी था, किसी न किसी बहाने से मुक्त होकर कन्धार के किले से रस्सी लटका कर नीचे उतर आया। हजरत पादशाह ने उसे अत्यधिक आश्रय प्रदान किया। एक अन्य सेना कराचा खा के भतीजे अबुल हसन, मुनव्वर बेग वल्द नूर बेग के नेतृत्व में कन्धार के किले से बाहर आई। मोर्ज़ा अस्करी ने अत्यधिक व्याकुल होकर क्षमा याचना की। हजरत पादशाह ने अत्यधिक उदारता के कारण उसे क्षमा प्रदान कर दी। किजिलबाश अमीरो को बुलवा कर उन्होंने निश्चय किया कि "क्योंकि चग़ताई उलूस के परिवार कन्धार मे बडी सख्या में है अत तुर्कमान लोग तीन दिन तक किले वालों में से किसी को कोई हानि न पहुँचायें।" जैसा कि निश्चय हो चुका था तीन दिन उपरान्त किले वाले अपने परिवार सहित बाहर निकले और मोर्ज़ा अस्करी अत्यधिक लज्जा प्रदर्शित करता हुआ दरबार मे उपस्थित हुआ। जो घटनाएँ घटी थी उनमे से किसी का भी उल्लेख नहीं किया गया। चग़ताई उलूस के अमीर हाथ मे तलवार तथा गरदन में कफन लपेटे हुए सेवा में उपस्थित हुए और उन्हें सम्मानित किया गया। केवल मुकीम बेग अत्यधिक अपराधों के कारण बन्दी बना लिया गया।

क्योंकि किजिलबाश सेना से यह निश्चय हो गया था कि विजय के उपरान्त कन्धार का क़िला उन्हें सौंप दिया जायेगा, हजरत पादशाह ने यद्यपि उनके अधिकार में कोई अन्य राज्य न था तथापि कन्धार उन्हें सौंप दिया। बुदाग खा, मोर्ज़ा मुराद वल्द शाह तहमास्प को किले के भीतर ले गया और उस प्रदेश पर अधिकार जमा लिया। जो किजिलबाश अमीर सहायतार्थ आये थे उनमे से अधिकाश एराक लौट गए और बुदाग खा, अबुल फतह सुल्तान अफशार, एव सूफी वली सुल्तान रूमलू के अतिरिक्त मीर्ज़ा मुराद की सेवा मे कोई अन्य न रह गया। शीत ऋतु आ गई। चग़ताई उलूस के पास कोई सुरक्षित स्थान न रह गया। विवश होकर उन्होंने बुदाग खा के पास सन्देश भेजा कि, "इस शीत ऋतु में मेरी सेना को किसी सुरक्षित स्थान की आवश्यकता है।" उस निष्ठुर ने उस बात के उत्तर में कोई ऐसी बात न कही जिससे काम चल सकता। चग़ताई उलूस बडे व्याकुल हुए। अब्दुल्लाह खा तथा जमील बेग, जो किले के बाहर निकले थे, भागकर काबुल चले गए। मीर्ज़ा अस्करी भी अवसर पाकर भाग गया। कुछ लोगों ने उसका पीछा किया और उसे बन्दी बना कर लाये तथा हज़रत पादशाह के समक्ष प्रस्तुत किया। उसे बन्दी बना लिया गया। चग़ताई उलूस सरदारो ने एकत्र होकर परामर्श के उपरान्त यह निश्चय किया कि, "कन्धार के किले को आवश्यकतावश किजिलबाशो से ले लिया जाय और काबुल तथा बदख़्शाँ की विजय के उपरान्त पुन उन्हे सौंप दिया जाय।" सयोग से उन्हीं दिनो में मीर्ज़ा मुराद का स्वाभाविक मृत्यु के कारण निधन हो गया। इस योजना का सकल्प कर लिया गया। एक बहुत बडी सेना इस सेवा हेतु नियुक्त की गई। हाजी मुहम्मद खा तथा बाबा कश्का अपने दो सेवको सहित सबसे आगे किले के दरवाज़े की ओर पहुँचे। तुर्कमानो का विचार था कि हजरत पादशाह कन्धार पर आक्रमण करेंगे। अत उन दिनों वे किसी भी चग़ताई उलूस को नगर मे प्रविष्ट न होने देते थे। जिस समय ऊँटो की एक किनार खाद्य सामग्री लादे हुए नगर मे प्रविष्ट होने लगी, हाजी मुहम्मद खा अवसर पाकर द्वार में प्रविष्ट हो गया। द्वार के रक्षको ने रोकना चाहा। उसने अत्यधिक वीरता प्रदर्शित करते हुए तलवार खीच कर उनपर आक्रमण किया। वे मुकाबला न कर सके और भाग खडे हुए। एक अन्य सेना उसके पीछे पीछे पहुँचकर किले में प्रविष्ट हो गई। मीर्ज़ा उलुग बेग तथा बैराम खा भी किले मे प्रविष्ट हो गए। किजिलबाशो को जब सूचना मिली तो वे परेशान हो गए।

हजरत पादशाह स्वय सवार हुए और किले में पहुँचे। बुदाग खा अत्यधिक घबडा कर दरबार में उपस्थित हुआ। उसे एराक चले जाने की अनुमति दे दी गई। चगताई उलूस संतुष्ट हो गए।

९५३ हि०[१]
(४ मार्च १५४६ ई०—२० फरवरी १५४७ ई०)

जब कन्धार (हजरत पादशाह) के अधिकार में आ गया तो वे काबुल की विजय के उद्देश्य से रवाना हुए। बैराम खा को कन्धार का हाकिम नियुक्त कर दिया।

मीर्जा यादगार नासिर तथा मीर्जा हिन्दाल दोनों मिलकर मीर्जा कामरान के पास से भाग गए। मार्ग में हजारा उलूस द्वारा अत्यधिक कष्ट भोगकर वे हजरत पादशाह की सेवा में पहुँचे और उनके साथ प्रस्थान करके काबुल के क्षेत्र में आये। जमील बेग, जो उस क्षेत्र में था, हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ। मीर्जा कामरान, जिसके पास उत्तम लश्कर एव सामान था, युद्ध के उद्देश्य से बाहर निकला। प्रत्येक रात्रि में कोई न कोई सेना उससे पृथक् होकर हजरत पादशाह के पास पहुँच जाती था, यहाँ तक कि बाबूस बेग भी, जो कि मीर्जा का प्रतिष्ठित अमीर था, अपनी करावली के समय पृथक् होकर हजरत पादशाह के पास आ गया। हजरत पादशाह के लश्कर ने प्रस्थान किया और मीर्जा कामरान की सेना से आधे कुरोह[२] पर पडाव किया। इस रात्रि में मीर्जा कामरान के अधिकाश सैनिक भागकर हजरत पादशाह के लश्कर में पहुँच गए। मीर्जा कामरान ने घबडा कर कुछ मशायख[३] को दरबार में क्षमा की प्रार्थना करने के लिये भेजा और उन्होंने इस शर्त पर उसके अपराध क्षमा कर दिए कि वह सेवा में उपस्थित हो जायें। मीर्जा कामरान ने स्वय आना स्वीकार न किया और काबुल के किले के अरक में भाग गया। उसकी सेना के समस्त लोग हजरत पादशाह के लश्कर में पहुँच गए। उसी रात्रि में मीर्जा कामरान बीनी हिसार की ओर से गजनी भाग गया। हजरत पादशाह को उसके पलायन के समाचार ज्ञात हुए। मीर्जा हिन्दाल को उसका पीछा करने का आदेश दिया और स्वय किले में प्रविष्ट हो गए। क्योंकि रात हो गई थी अत काबुल निवासियों ने प्रसन्नता के कारण समस्त नगर में दीप जला कर उसे दिन के समान बना दिया था। हजरत के किले में प्रविष्ट होने के उपरान्त बेगमों ने शाहजादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह को हजरत पादशाह की सेवा में उपस्थित किया। हजरत ने अपने नेत्रों को उस नेत्रों की ठडक के दर्शन द्वारा प्रकाश प्रदान किया और कृतज्ञता के सिज्दे किए। यह विजय १० रमजान, ९५३ हि० (४ नवम्बर १५४६ ई०) को प्राप्त हुई। कुछ लोगों ने ९५२ हि० में बताई है।[४]

विजय के उपरान्त उन्होंने अपने परिवार को, जो कन्धार में था, बुलाने के लिए आदमी भेजे। मीर्जा यादगार नासिर, मरियम मकानी के साथ काबुल में उपस्थित हुआ। उन दिनों में बहुत बडे

१ मूल में '९५४ हि०' बताया गया है।
२ कोस।
३ सूफी-सन्तों को।
४ अबुल फजल के अनुसार १२ रमजान ९५२ हि० (१७ नवम्बर १५४५ ई०) लिखा है। (देखिये रिजवी : मुगुल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १, पृ० १९७)।

जश्न आयोजित हुए और हज़रत शाहजादे के खतने की सुन्नत की रस्म सम्पन्न की गई। इस वर्ष का शेष भाग आनन्द मगल में व्यतीत हो गया।

मीर्ज़ा कामरान भागकर ग़ज़नी पहुँचा। वह नगर में प्रविष्ट न हो सका और हज़ारा (कबीले) की ओर चल दिया। वहाँ से ज़मीनदावर की ओर भाग गया। मीर्ज़ा उलुग बेग को ज़मीनदावर का हाकिम नियुक्त करके मीर्ज़ा कामरान से युद्ध करने के लिए भेजा गया।

६५४ हि०[1]
(२१ फरवरी १५४७ ई०—१० फरवरी १५४८ ई०)

(५८० अ) हज़रत जन्नत आशियानी इस वर्ष बदख़्शाँ की ओर रवाना हुए। मीर्ज़ा ख़ान का पुत्र मीर्ज़ा सुलेमान बुलाने के बावजूद भी सेवा में उपस्थित न हुआ। उन्होंने बदख़्शाँ की ओर प्रस्थान करने का सकल्प कर लिया। मीर्ज़ा यादगार नासिर के विषय में जिसने बक्कर में विद्रोह किया था प्रस्थान के समय पुन भागने का सदेह हुआ। हज़रत को इस बात का पता चल गया। उन्होंने उसके बन्दी बना देने का आदेश दे दिया। कुछ दिन उपरान्त मुहम्मद कासिम मीर्ज़ा ने हज़रत पादशाह के आदेशानुसार उसकी हत्या कर दी और ससार वाला को उसकी दुष्टता से मुक्ति दिला दी। हिन्दूकुश दर्रे को पार करके उन्होंने शुत्रगरान[2] में पड़ाव किया। मीर्ज़ा सुलेमान ने भी बदख़्शाँ की सेना एकत्र करके युद्ध का सकल्प किया। प्रथम आक्रमण में ही वह पराजित हो गया और दूर के पर्वतों मे प्रविष्ट हो गया। हज़रत पादशाह तालीकान[3] एव किश्म[4] की ओर रवाना हुए। शीत ऋतु व्यतीत करने के लिए लश्कर ने क़िलये ज़फ़र की ओर प्रस्थान किया। क़िलये ज़फ़र एव किश्म के मध्य मे हज़रत जन्नत आशियानी रुग्ण हो गए और उनका रोग नित्यप्रति बढने लगा, यहाँ तक कि लोगों को चिन्ता हो गई। उनके विश्वासपात्रों के अतिरिक्त किसी को भी उनके जीवित होने की सूचना न थी। इस कारण सेना मे परेशानी फैल गई। कराचा खाँ ने मीर्ज़ा अस्करी की निगरानी प्रारम्भ कर दी और बदख़्शाँ वाले प्रत्येक दिशा से विरोध करने लगे। हज़रत पादशाह ने स्वस्थ होकर अपनी कुशलता के समाचार चारों ओर भेज दिए। सभी उपद्रवों का अन्त हो गया। वे क़िलये ज़फ़र के समीप पहुँचे। हज़रत मरियम मकानी के भाई ख़्वाजा मुअज़्ज़म ने इस समय ख़्वाजा रशीदी को, जो एराक से उनके साथ आया था, हत्या करा दी और काबुल की ओर भाग गया। वहाँ वह पादशाह के आदेशानुसार बन्दी बना लिया गया।

मीर्ज़ा कामरान को जब बक्कर में हज़रत पादशाह के बदख़्शाँ की ओर प्रस्थान करने की सूचना मिली तो उसने एक सेना सगठित करके ग़ज़नी तथा काबुल की ओर प्रस्थान किया।

१ "बे जग गिरिफ़्त मुल्के काबुल अज़ वे"

بی جنگ گرفت ملک کابل از وی

से ६५२ हि० निकलता है। हुमायूँ के नाम की ६५२ एव ६५३ हि० की शाहरुख़िया भी प्राप्त हो गई है। (Whitehed *Punjab Museum Catalogue of Mughal Coins*, Vol II, Nos 53-54)।

२ यह नाम कई रूप से मिलता है उश्तुर कराम एव उश्तुर ग्राम।

३ तुर्किस्तान का एक कस्बा, बल्ख एव मर्व अल-रूद के मध्य में।

४ ८वीं शती हि० (१४वीं शती ई०) में जब तीमूर ने बदख़्शा पर आक्रमण किया तो किश्म ही बदख़्शाँ की राजधानी थी। यह आवसस नदी के ऊपरी द्रोणी (basin) में है।

मार्ग में उसे कुछ व्यापारी मिले। उसने अत्यधिक घोड़े अधिकार में कर लिये और अपने समस्त आदमियों को दो अस्पा[1] बना दिया। वह गज़नी के समीप पहुँचा। गज़नी वालों में से कुछ लोगों ने उसे किले में दाखिल कर लिया। वहाँ के हाकिम ज़ाहिद बेग को, जो कि असावधानी की निद्रा में सो रहा था,[2] हत्या कर दी। वे काबुल के मार्ग की इस आशय से रक्षा करने लगे कि वहाँ इस बात के समाचार न पहुँचने पायें। गज़नी की ओर से सतुष्ट होकर वह शीघ्रातिशीघ्र काबुल की ओर रवाना हुआ। मुहम्मद अली तगाई, फज़ील बेग एव जो लोग काबुल में थे, उन्हें इस बात की सूचना उस समय मिली जब मीर्ज़ा कामरान नगर में प्रविष्ट हो चुका था। मुहम्मद अली तगाई, जो हम्माम[3] में था, बन्दी बना लिया गया और उसकी तत्काल हत्या करा दी गई। मीर्ज़ा कामरान काबुल में प्रविष्ट हो गया। फज़ील बेग तथा मेहतर वकील को बन्दी बनाकर अधा बना दिया। अपने आदमी बेगमो तथा शाहज़ादये आलमियाँ की निगरानी के लिए नियुक्त कर दिए। यह समाचार किश्मे ज़फर के समीप हज़रत जनत आशियानी को प्राप्त हुए। हज़रत पादशाह ने बदख्शाँ एव कुन्दुज़[4] की, जो मीर्ज़ा हिन्दाल को प्रदान कर दिये गये थे, हुकूमत का फरमान मीर्ज़ा सुलेमान को भेज दिया और निरन्तर यात्रा करते हुए काबुल की ओर रवाना हुए। मीर्ज़ा कामरान को जैसा अवसर मिला उसके अनुसार उसने सेना एकत्र कर ली। शेर अफगन बेग उससे मिल गया। शेर अली नामक मीर्ज़ा कामरान का सेवक जुहाक[5] तथा गूरबन्द[6] पहुँचा एव मार्ग पर अधिकार जमाने में व्यस्त हो गया। हज़रत पादशाह आबदरा[7] से जुहाक पहुँचे। शेर अली ने यथा-सम्भव युद्ध किया किन्तु पराजित हो गया। सेना ने कुशलतापूर्वक दर्रा पार कर लिया। शेर अली ने पुन सेना वाला के पिछले भाग को हानि पहुँचायी। हज़रत पादशाह ने देह अफगानान में पड़ाव किया। दूसरे दिन शेर अफगन बेग तथा मीर्ज़ा कामरान के समस्त आदमी युद्ध हेतु बाहर निकले। उलग[8] में घोर युद्ध हुआ। सर्वप्रथम हज़रत जनत आशियानी के आदमी छिन्न भिन्न हो गए। अन्त में मीर्ज़ा हिन्दाल, कराचा खा तथा हाजी मुहम्मद खा के प्रयत्न से मीर्ज़ा कामरान के आदमी, जिन्हें विजय

१ दो घोड़ों का स्वामी।

२ असावधान था।

३ स्नान गृह, विशेष रूप से जहाँ गरम जल का प्रबंध होता है।

४ उत्तरी अफ़गानिस्तान में इस नाम की नदी तथा नगर दोनों ही हैं। इसके पूर्व में बदख्शाँ, पश्चिम में तख़ारिस्तान, उत्तर में आमू तथा दक्षिण में हिन्दूकुश है। हिन्दूकुश के दर्रों का उल्लेख करते हुये बाबर लिखता है कि, "हिन्दूकुश पर्वत से होकर, जो काबुल को बल्ख़ कुन्दुज़ तथा बदख्शाँ से पृथक् करता है, सात दर्रे हैं'। (बाबर नामा, पृ० १६)।

५ काबुल तथा खुरासान के मार्ग में।

६ गूरबद अथवा गूर दर्रा, हिन्दूकुश की ऊँची पहाड़ियों के दक्षिण में स्थित है और बल्ख़ से काबुल के मार्ग का मुख्य दर्रा है। यहाँ से तीन मार्ग निकलते हैं। (बाबर नामा, पृ० १६)। बाबर ९१२ हि० (१५०६ ७ ई०) में खुरासान जाते हुये इन स्थानों से गुज़रा था। (बाबर नामा, पृ० ५५)।

७ हिन्दूकुश का एक दर्रा जो बदख्शाँ से काबुल जाता है। बाबर नामा के अनुसार केवल यही दर्रा जाड़े में खुला रहता था, (बाबर नामा, पृ० ७७)। इसके अतिरिक्त इसके विषय में देखिये बाबर नामा, पृ० ७५, तारीखे रशीदी (मुग़ल कालीन भारत—बाबर पृ० ६२० ६२२)।

घास का मैदान; अन्य ग्रन्थों में 'अलगे यूरत चालाक'।

प्राप्त कर ली थी, पराजित हो गए। शेर अफगन बेग बन्दी बना लिया गया। जब उसे हज़रत पादशाह की सेवा में प्रस्तुत किया गया तो उसकी हत्या करा दी गई। मीर्ज़ा कामरान के अधिकांश आदमियों को भी हत्या करा दी गई। जो लोग बच रहे वे भाग खड़े हुए। शेर अली, जो पौरुष के गुणों से सुशोभित था, नित्यप्रति किले से बाहर निकलकर यथा-सम्भव युद्ध करता रहता था। एक बार शेर अली तथा हाजी मुहम्मद खा की एक दूसरे से मुठभेड़ हो गई। हाजी मुहम्मद खा घायल हुआ।

समाचार प्राप्त हुए कि एक कारवान जिसके पास अत्यधिक घोड़े हैं, चारीकारान में पहुँच गया है। शेर अली ने मीर्ज़ा कामरान से मिल कर यह निश्चय किया कि एक सेना को लेजाकर घोड़ों को नगर मे ले आना चाहिये। मीर्ज़ा कामरान के अधिकांश उत्तम आदमी शेर अली के साथ इस सेवा हेतु रवाना हुए। हज़रत जन्नत आशियानी को जब इस बात की सूचना मिली तो वे किले के समीप पहुँच गए और यातायात का मार्ग पूर्णत बन्द कर दिया। शेर अली तथा उस सेना के लौटने के उपरान्त किले में प्रविष्ट होने का मार्ग न मिला। एक बार मीर्ज़ा कामरान ने यह निश्चय किया कि किले के बाहर निकल कर युद्ध करके शेर अली तथा उस सेना को किले में ले आये। बाहर के लोगों को पता चल गया। जब वे बाहर निकले तो उन्होंने तोप तथा तुफंग से युद्ध करके उन्हें पराजित कर दिया। बाक़ी सालेह तथा जलालुद्दीन बेग, जो मीर्ज़ा कामरान के प्रतिष्ठित अमीरों में थे, उस समय मार डाले गए। शेर अली तथा जो लोग उसके साथ थे, नगर में प्रविष्ट होने की ओर से निराश हो गए। प्रत्येक किसी न किसी दिशा को ओर चल दिया। हज़रत जन्नत (५८१ अ) आशियानी ने एक सेना को उनका पीछा करने के लिये भेजा। उनमें से अधिकांश को हत्या हो गई। एक समूह बन्दी बना लिया गया। मीर्ज़ा कामरान किले में व्याकुल हो गया। आसपास से सेनाएँ जन्नत आशियानी की सेवा में आने लगीं। मीर्ज़ा सुलेमान ने बदख़्शाँ से कुमक भेजी। मीर्ज़ा उलुग बेग कन्धार से आया। कासिम हुसेन सुल्तान, बैराम खा के सेवकों के साथ कन्धार से सहायता हेतु पहुँचा। मीर्ज़ा कामरान संधि की प्रार्थना करने लगा। हज़रत पादशाह ने यह शर्त रखी कि वह सेवा मे उपस्थित हो किन्तु मीर्ज़ा कामरान को सेवा मे उपस्थित होने में सकोच था अत वह भाग जाने का प्रयत्न करने लगा। चगताई उलूस के अमीर मीर्ज़ा कामरान को अपने स्वार्थ के हित मे बन्दी बनाना चाहते थे। उन्होंने उसे संदेश भेजा कि, "हज़रत जन्नत आशियानी इन दिनों में किले के लिए युद्ध करेंगे। अब अधिक ठहरना उचित नहीं।" मीर्ज़ा कामरान ने, जो बाबूस बेग तथा कराचा बेग से अत्यधिक रुष्ट था, बाबूस बेग के तीन छोटे-छोटे बालकों को किले में अत्यधिक कष्ट देकर हत्या करा दी और किले की दीवार से नीचे फिकवा दिया। भीतर तथा बाहर के लोग मीर्ज़ा कामरान की निष्ठुरता से रुष्ट हो गए। उसने कराचा बेग के पुत्र सरदार बेग को भी किले की चहारदीवारी से बन्धवा दिया। कराचा बेग को हज़रत जन्नत आशियानी ने अत्यधिक सांत्वना दी। कराचा बेग किले के समीप पहुँचा और उसने चिल्ला कर कहा कि, "यदि मेरे पुत्र की हत्या कर दी गई तो किले पर अधिकार जमाने के उपरान्त मीर्ज़ा कामरान तथा मीर्ज़ा अस्करी की हत्या करा दी जायेगी।" मीर्ज़ा कामरान सभी ओर से निराश होकर ख़्वाजा रिवाज[1] की ओर से किले की दीवार मे छेद करके उस स्थान से जिधर अमीरों ने

१ मूल में स्पष्ट नहीं है। तबकाते अकबरी में 'ख़्वाजा ख़िज़्र'।

उसे बताया था होता हुआ अपने प्राणों को कुशलतापूर्वक बाहर निकाल ले गया। हज़रत पादशाह ने हाजी मुहम्मद को एक सेना सहित उसका पीछा करने के लिए भेजा। हाजी मुहम्मद मीर्ज़ा कामरान के समीप पहुँचा। मीर्ज़ा ने उसे पहचान कर तुर्की भाषा मे कहा कि, "क्या मैंने तेरे पिता बाबा कश्का की हत्या नहीं की है?" हाजी मुहम्मद खा, जो सर्वदा षड्यत्र रचने का प्रयत्न किया करता था, जान-बूझकर लौट आया और मीर्ज़ा सुलेमान कुशलतापूर्वक भाग गया। हज़रत जन्नत आशियानी उस रात्रि में किले मे प्रविष्ट ही गए और मीर्ज़ा कामरान के अधिकाश आदमी बन्दी बना लिए गए। हज़रत शाहज़ादये आलमियान उनकी सेवा में उपस्थित हुए और उन्होंने कृतज्ञता प्रकट करते हुए फकीरों तथा दरिद्रों को अत्यधिक दान दिया।

मीर्ज़ा कामरान किले से बाहर निकलकर बड़ी अव्यवस्थित दशा में काबुल पर्वत के आँचल में पहुँचा। हज़ारा लागो ने उसके समीप पहुँचकर उसके पास जो कुछ था, लूट लिया। अन्त में उनमें से एक ने मीर्ज़ा कामरान को पहिचान लिया और उन्होंने अपने सरदार को सूचना दी। उस उलूस के सरदारों ने भी मीर्ज़ा को ज़ुहाक एव बामियान[1] में, जहाँ मीर्ज़ा कामरान का सेवक शेर अली थोड़े से आदमियों के साथ था, पहुँचा दिया। वह वहाँ एक सप्ताह तक ठहरा रहा। मीर्ज़ा के पास लगभग १५० अश्वारोही एकत्र हो गए। मीर्ज़ा कामरान गूरी की ओर रवाना हुआ। गूरी के हाकिम मीर्ज़ा बेग बरलास ने ३०० अश्वारोहियों तथा एक हज़ार पदातियों सहित (५८१ ब) मीर्ज़ा से युद्ध किया और पराजित हुआ। उन लोगों के घोड़े तथा असबाब मीर्ज़ा के लश्कर के अधिकार में आ गए। उसे शक्ति प्राप्त हो गई। वहाँ से वह बल्ख की ओर रवाना हुआ। उसने बल्ख के हाकिम पीर मुहम्मद खा से भेंट की। पीर मुहम्मद खा स्वय मीर्ज़ा की सहायता हेतु बदख्शाँ पहुँचा। मीर्ज़ा ने गूरी तथा बकलान पर अधिकार जमा लिया। आसपास के सैनिक उसकी सेवा में उपस्थित हो गए। पीर मुहम्मद खा अपनी विलायत को वापस चला गया। मीर्ज़ा कामरान ने सुलेमान एव इबराहीम मीर्ज़ा पर चढ़ाई की। वे मुकाबला न कर सके और तालीक़ान से वोलाब[2] की ओर भाग गए। मीर्ज़ा कामरान ने बदख्शाँ की विलायत के कुछ भाग मे पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया।

कराचा खा तथा अन्य अमीर, जिन्होंने इन दिनों उत्तम सेवाएँ की थी, अभिमान प्रदर्शित करने लगे और हज़रत पादशाह से ऐसी आशायें करने लगे जो सम्भव न थी। उनमे से ख्वाजा गाज़ी वज़ीर की हत्या और उसके स्थान पर ख्वाजा कासिम की नियुक्ति थी। हज़रत पादशाह को यह बात पसन्द न थी। उन्होंने उनकी इच्छानुसार उत्तर न दिया। अमीर लोग आपस में मिल कर नाश्ते के समय सवार हुए और हज़रत पादशाह के गल्ले[3] को, जो ख्वाजा रियाज मे था, भगाते हुए बदख्शाँ की ओर रवाना हो गए। हज़रत पादशाह को जब इस बात की सूचना मिली तो वे सेना एकत्र करके सवार हुए और उन्होंने उनका पीछा किया। शत्रु लोग शीघ्रातिशीघ्र यात्रा

१ गूर का पूर्वी भाग जो इस्लाम के पूर्व बौद्धों का बहुत बड़ा केन्द्र था।
२ आक्सस के उस पार।
३ घोड़ों का गल्ला।

करते हुए गूरवन्द[1] पहुँचे और पुल को पार करके उसे नष्ट कर दिया। हज़रत पादशाह के आदमी उनके पहुँचने के पूर्व वहाँ पहुँच गए और कुछ लोगों को दंड दिया। रात्रि हो गई। तदुपरान्त हज़रत पादशाह इस आशय से काबुल लौट आये कि तैयारी करके बदख़्शाँ की ओर प्रस्थान किया जाय। वे लोग मीर्ज़ा कामरान के पास किश्म चले गए।

९५५ हि०[2]

(११ फरवरी १५४८ ई०—२९ जनवरी १५४९ ई०)

(५८२ अ) जब अमीर लोग मीर्ज़ा कामरान के पास बदख़्शाँ चले गए तो तिमुर अली शिगाली को इस आशय से [3] छोड़ गए कि वह हज़रत पादशाह के लश्कर के समाचार उन लोगों तक पहुँचाता रहे। हज़रत पादशाह ने बदख़्शाँ की ओर प्रस्थान करने का संकल्प करके मीर्ज़ा सुलैमान, मीर्ज़ा इबराहीम तथा मीर्ज़ा हिन्दाल के पास फ़रमान भेजे। मीर्ज़ा इबराहीम परियान नामक किले के मार्ग से पंजशीर के समीप पहुँचा। तिमुर अली शिगाली के समाचार पाकर उसने उसपर आक्रमण किया और उसकी हत्या कर दी और काबुल के कराबाग में हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित होकर सम्मानित हुआ।

मीर्ज़ा कामरान ने शेर अली को उन दिनों उसकी प्रार्थना के अनुसार कुन्दुज़ की विजय तथा मीर्ज़ा हिन्दाल के विनाश हेतु भेजा। मीर्ज़ा हिन्दाल के सैनिकों ने शेर अली को बन्दी बना लिया। इश्किमीश में मीर्ज़ा हिन्दाल हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ। शेर अली को बन्दी बनाकर उनकी सेवा में उपस्थित किया। हज़रत पादशाह ने अत्यधिक उदारता प्रदर्शित करते हुए उसके अपराध क्षमा कर दिए और उसे गूरी प्रदान कर दिया। मीर्ज़ा कामरान ने कराचा ख़ाँ तथा एक अन्य सेना को, जो काबुल से आई थी, किश्म में छोड़ दिया और स्वयं तालीकान की ओर रवाना हो गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने मीर्ज़ा हिन्दाल तथा हाजी मुहम्मद काको को एक सेना के साथ अग्र दल में नियुक्त करके किश्म भेज दिया। कराचा ख़ाँ ने मीर्ज़ा कामरान को समाचार भेजे कि मीर्ज़ा हिन्दाल के साथ बड़ी थोड़ी सेना है। पादशाह दूर हैं, शीघ्रातिशीघ्र पहुँचकर आक्रमण कर देना चाहिए ताकि मिलकर मीर्ज़ा हिन्दाल को नष्ट किया जा सके। तदुपरान्त हज़रत पादशाह से भी युद्ध करना सरल हो जायेगा। मीर्ज़ा शीघ्रातिशीघ्र किश्म पहुँचा। जिस समय मीर्ज़ा हिन्दाल तथा उसके लश्कर वाले तालीकान नदी पार कर चुके, वह नदी तट पर उसके समीप पहुँच गया। उसे प्रथम आक्रमण में ही विजय प्राप्त हो गई। मीर्ज़ा हिन्दाल का समस्त असबाब एवं उसकी सेना नष्ट भ्रष्ट हो गई। हज़रत जन्नत आशियानी भी उसी समय नदी तट पर पहुँच गए और घाट की खोज में थोड़ी देर प्रतीक्षा की। उनके नदी पार कर लेने के उपरान्त हज़रत पादशाह की सेना का अग्र भाग मीर्ज़ा कामरान के आदमियों के पास पहुँच गया। मीर्ज़ा कामरान

१ गूरबन्द अथवा गूर दर्रा, हिन्दूकुश की ऊँची पहाड़ियों के दक्षिण में स्थित है और बल्ख़ से काबुल के मार्ग का मुख्य दर्रा है। वहाँ से तीन मार्ग निकलते हैं। (बाबर नामा, पृ० १६)। बाबर ९१२ हि० (१५०६-७ ई०) में ख़ुरासान जाते हुये इस स्थान से गुज़रा था। (बाबर नामा, पृ० ५५)।

२ मूल में मिटा कर '९५६' बनाया गया है।

३ मूल में स्पष्ट नहीं है, सम्भवतः पंजशीर।

हज़रत पादशाह की सेना के अग्र भाग पर आक्रमण करने के लिये वापस हुआ। जब दोनों सेनाओं का आमना सामना हुआ तो हज़रत जन्नत आशियानी की पताकायें मीर्ज़ा कामरान को दृष्टिगत हुईं। वह अधिक ठहर न सका और तालीकान की ओर भाग गया। जो कुछ उसने लूटा था अथवा जो कुछ उसके पास था, वह सब लूट लिया गया। दूसरे दिन तालीकान का क़िला घेर लिया गया। मीर्ज़ा सुलैमान उन दिनों में सेवा में उपस्थित हुआ। मीर्ज़ा कामरान ने ऊज़बेकों से सहायता मांगी। जब वह उनकी ओर से निराश हो गया तो अत्यधिक व्याकुल होकर उसने विनयपूर्वक मक्का जाने की अनुमति चाही। हज़रत पादशाह को उसके ऊपर दया आ गई। उन्होंने उसकी प्रार्थना इस शर्त पर स्वीकार कर ली कि वह विद्रोही अमीरों को दरबार में भेज दे। मीर्ज़ा कामरान ने बाबूस के अपराध क्षमा कर देने की प्रार्थना की और अन्य अमीरों को सेवा में भेज दिया। वे लज्जित होकर अपनी गरदनों में तलवारें लटकाये हुए दरबार में उपस्थित हुए। हज़रत पादशाह ने उनके अपराधों को पुनः क्षमा कर दिया। मीर्ज़ा कामरान क़िले के बाहर निकला और दो फ़रसख यात्रा की। क्योंकि उसे इस बात की आशा न थी कि हज़रत पादशाह पुनः अधिकार प्राप्त कर लेने के बावजूद उसे क्षमा कर देंगे अतः वह यह उदारता देखकर बड़ा लज्जित हुआ और हज़रत पादशाह की सेवा में उपस्थित होने का संकल्प करके लौट आया। जब हज़रत को यह समाचार प्राप्त हुए तो वे अत्यधिक प्रसन्न हुए। बहुत से मीर्ज़ाओं को स्वागतार्थ भेजा और भेंट के समय अत्यधिक कृपा प्रदर्शित की। मीर्ज़ा कामरान को सल्तनत के असबाब पुनः सुव्यवस्थित करा दिये[१]। वे तीन दिन तक उसी मंज़िल पर ठहरे रहे और दावतें होती रहीं। कुछ दिन उपरान्त कोलाब की विलायत मीर्ज़ा कामरान को अक्ता के रूप में दे दी गई। उसे मीर्ज़ा अस्करी के साथ विदा कर दिया गया और वह कोलाब पहुँचा। मीर्ज़ा हिन्दाल आदेशानुसार कुन्दुज़ में ठहर गया। मीर्ज़ा सुलैमान तथा मीर्ज़ा इबराहीम किश्म में निवास करने लगा। सम्मानित लश्कर काबुल की ओर रवाना हुआ और शीत ऋतु के प्रारम्भ में वे काबुल पहुँच गए। उन्होंने आदेश दिया कि लश्कर बल्ख पर आक्रमण की तैयारी करे।

९५६ हि०[२]

(३० जनवरी १५४९ ई०—१९ जनवरी १५५० ई०)

(५८३ ब) इस वर्ष के अन्त में हज़रत जन्नत आशियानी बल्ख की विजय के उद्देश्य से काबुल से रवाना हुए और मीर्ज़ा कामरान तथा मीर्ज़ा अस्करी को बुलवाने के लिए कोलाब आदमी भेजे। मीर्ज़ा सुलैमान, मीर्ज़ा इबराहीम तथा मीर्ज़ा हिन्दाल जब (हज़रत पादशाह) बदख़्शाँ पहुँच गए तो उनकी सेवा में उपस्थित हुए। मीर्ज़ा इबराहीम, मीर्ज़ा सुलैमान की प्रार्थना पर किश्म में ठहर गया। मीर्ज़ा कामरान तथा मीर्ज़ा अस्करी ने पुनः विद्रोह कर दिया और सेवा में उपस्थित न हुए। हज़रत पादशाह निरन्तर यात्रा करते हुए ऐबक नामक क़िले के समीप पहुँचे। बल्ख के हाकिम पीर मुहम्मद खाँ के अतालीक ने, प्रतिष्ठित अमीरों की एक सेना सहित ऐबक के क़िले को बन्द कर लिया। हज़रत पादशाह ने क़िले का अवरोध कर लिया। ऊज़बेक लोग घबड़ा कर क़िले के बाहर

१ राज्य के लिये जिन वस्तुओं की आवश्यकता थी उनकी व्यवस्था करा दी।
२ मूल में तारीख स्पष्ट नहीं है।

निकले। क्योंकि मीर्ज़ा कामरान सेवा में उपस्थित न हुआ था अतः अमीरों ने एकत्र होकर परामर्श करना प्रारम्भ कर दिया कि कहीं ऐसा न हो कि जब (पादशाह का) लश्कर बल्ख की ओर रवाना हो तो मीर्ज़ा कामरान काबुल पर आक्रमण कर दे। हज़रत पादशाह ने कहा कि, "चूँकि हमने इस युद्ध का सकल्प कर लिया है अतः ईश्वर पर भरोसा करके प्रस्थान कर रहे हैं।" वे (५८४ अ) अपने सौभाग्य के पाव राज्य की रिकाब में रखकर बल्ख की ओर रवाना हुए किन्तु अधिकाश सैनिक मीर्ज़ा कामरान के न आने के कारण चिन्तित थे। जब वे बल्ख के समीप पहुँचे तो लश्कर वालों के पड़ाव करने के समय, शाह मुहम्मद सुल्तान[1] ३०० अश्वारोहियों सहित पहुँच गया। एक सेना उससे युद्ध हेतु भेजी गई। घोर युद्ध हुआ। मुहम्मद कासिम खाँ मौजी का भाई काबुली इस युद्ध में मारा गया। ऊज़बेक सरदारों में से एक बन्दी बना लिया गया। दूसरे दिन पीर मुहम्मद खाँ नगर से बाहर निकला। अब्दुल अज़ीज़ खाँ वल्द अब्दुल्लाह खाँ एवं हिसार के सुल्तान भी उसकी कुमक हेतु आये थे। मध्याह्नोपरान्त दोनों सेनायें एक दूसरे के समक्ष पहुँच गईं। युद्ध होने लगा। हज़रत पादशाह ने युद्ध के अस्त्र-शस्त्र धारण किए। मीर्ज़ा सुलैमान, मीर्ज़ा हिन्दाल एवं हाजी मुहम्मद सुल्तान ने शत्रुओं की सेना के अग्र भाग को पराजित करके नगर में भगा दिया। पीर मुहम्मद खाँ एवं उसके सहायक भी लौट कर बल्ख पहुँच गए। सूर्यास्त के समय चगताई सेना, जो नगर के समीप पहुँच गई थी, लौट गई।

क्योंकि अधिकाश चगताई उलूस मीर्ज़ा कामरान के न आने के कारण चिन्तित थे, और काबुल में उनके परिवार थे अतः उस रात्रि में जब यह निश्चय था कि दूसरे दिन प्रातःकाल बल्ख पर अधिकार प्राप्त हो जायगा, एकत्र होकर उन्होंने हज़रत पादशाह से निवेदन किया कि, 'बल्ख की नदी को पार करना राज्य के हित में ठीक है। यही उचित होगा कि गज नामक दर्रे की ओर प्रस्थान किया जाय, और वहाँ लश्कर के लिए कोई दृढ़ स्थान बना लिया जाय।" अल्प समय में बल्ख तथा हिसार के लोग अधीनता स्वीकार कर लेंगे। उन्होंने इस विषय में अत्यधिक आग्रह किया। हज़रत पादशाह विवश होकर चल खड़े हुए। क्योंकि गज दर्रा काबुल की ओर है अतः मित्र तथा शत्रु जिन्हें इस परामर्श की सूचना न थी, इसे पादशाह के लश्कर की वापसी समझे। ऊज़बेक लोगों ने धृष्टतापूर्वक उनका पीछा किया। मीर्ज़ा सुलैमान तथा हुसैन कुली सुल्तान मुहरदार ने, जो मुग़ल सेना के पीछे के भाग की प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त थे, ऊज़बेक सेना के अग्र भाग से थोड़ा सा युद्ध किया और पराजित हुए। पादशाह का लश्कर काबुल वापस चला जाना चाहता था अतः प्रत्येक व्यक्ति को जिधर इच्छा हुई उधर चल खड़ा हुआ। किसी के बनाये कुछ न बन सका। लगभग तीस हज़ार शत्रु पहुँच गए। हज़रत ने इस युद्ध में स्वयं शत्रुओं पर आक्रमण किया और भाले से एक व्यक्ति को, जो सबसे आगे था, घोड़े से गिरा दिया। अपनी भुजाओं की शक्ति से बहुत बड़ी सेना के मध्य से बाहर निकल आये। मीर्ज़ा हिन्दाल, तरदी बेग खाँ, मुनइम खाँ एवं एक अन्य समूह अमीरों से युद्ध करता हुआ कुशलतापूर्वक बाहर निकल आया। शाह बुदाग खाँ तथा तूलक खाँ कूचीन ने इस युद्ध में अत्यधिक पौरुष का प्रदर्शन किया। हज़रत पादशाह कुशलतापूर्वक काबुल चले गए, और इस वर्ष का शेष भाग काबुल में व्यतीत किया।

१ शाह मुहम्मद सुल्तान ऊज़बेक।

९५७ हि०–९६१ हि०[1]

(२० जनवरी १५५० ई०–२५ नवम्बर १५५४ ई०)

(५८४ ब) जब हज़रत जन्नत आशियानी बल्ख के अभियान से लौटकर काबुल पहुँचे तो मीर्ज़ा कामरान कोलाब में रह गया। चाकर अली बेग कोलाबी ने मीर्ज़ा कामरान से युद्ध किया। अत्यधिक सेना लेकर कोलाब के आसपास के स्थान नष्ट कर दिये। मीर्ज़ा कामरान ने भी मीर्ज़ा अस्करी को उससे युद्ध हेतु भेजा। मीर्ज़ा अस्करी पराजित हुआ। वह एक बार फिर भाई के आदेशानुसार युद्ध हेतु गया किन्तु पूर्व की भाँति लौट आया। मीर्ज़ा सुलेमान तथा मीर्ज़ा हिन्दाल भी किश्म तथा कुन्दुज़ से उसके विरुद्ध रवाना हुए। मीर्ज़ा कामरान फिर कोलाब में अधिक ठहर न सका और रुस्ताक के समीप पहुँचा। ऊज़बेकों की एक सेना ने उस समय उस पर आक्रमण किया और उसकी अधिकांश सम्पत्ति नष्ट कर दी। मीर्ज़ा कामरान बड़ी ही शोचनीय दशा में खूस्त की ओर इस आशय से रवाना हुआ कि जुहाक एवं बामियान के मार्ग से हज़ारा लोगों के पास चला जाय। जब हज़रत पादशाह को यह समाचार प्राप्त हुए तो उन्होंने लश्कर के अमीरों एवं एक बहुत बड़ी सेना को इस आशय से जुहाक तथा बामियान भेजा कि वे उस विलायत की प्रतिरक्षा करें। कराचा खाँ एवं कासिम हुसैन सुल्तान तथा कृतघ्न अमीरों के एक समूह ने, जो हज़रत पादशाह की सेवा में था, मीर्ज़ा कामरान के पास इस आशय से आदमी भेजे कि, "आप किबचाक के मार्ग से आयें। उस समय हम सब लोग सेवा में उपस्थित हो जायेंगे।" मीर्ज़ा कामरान उन लोगों के मतानुसार जुहाक पहुँचा। हज़रत पादशाह किबचाक पहुँचे। जब मीर्ज़ा कामरान की सेना दृष्टिगत हुई तो कराचा खाँ एवं अन्य अमीर निष्ठुरता की धूल अपने सिर पर डालकर हज़रत पादशाह से पृथक् हो गए और मीर्ज़ा कामरान से मिल कर युद्ध हेतु तैयार हो गए। यद्यपि हज़रत पादशाह के साथ जो आदमी थे उनकी संख्या बड़ी कम थी तथापि उन्होंने (५८५ अ) अत्यधिक वीरता प्रदर्शित करते हुए घोर युद्ध किया। पीर मुहम्मद आख्ता एवं अहमद वल्द मीर्ज़ा कुली इस युद्ध में मारे गए। मीर्ज़ा कुली घायल होकर घोड़े से गिर पड़ा। हज़रत पादशाह ने स्वयं इतना घोर प्रयत्न किया कि उनके पवित्र सिर पर तलवार का घाव लगा और उनकी सवारी का घोड़ा भी आहत हो गया। हज़रत पादशाह उस भाग्य द्वारा जो उनके हाथ में था शत्रुओं को हटाकर कुशलतापूर्वक निकल गए और जुहाक एवं बामियान की ओर रवाना हुए। जो लोग उस ग्राम की ओर गए थे, हज़रत पादशाह के पास पहुँच गए।

मीर्ज़ा कामरान ने पुनः काबुल पर अधिकार जमा लिया। हज़रत पादशाह हाजी मुहम्मद खाँ एवं एक अन्य समूह सहित, जो उनके साथ था, बदख्शाँ की ओर रवाना हुए। शाह बुदाग खाँ, तूलक कूचीन, मजनूँ काकशाल एवं कुछ अन्य लोगों को, जिनकी संख्या १० थी, काबुल के समाचार लाने के लिये भेजा। तूलक कूचीन के अतिरिक्त उस समूह से कोई भी उनकी सेवा में वापस न आया। हज़रत पादशाह ने सेवकों की कृतघ्नता पर आश्चर्य प्रकट करते हुए अन्दराब के समीप पड़ाव किया। जब सुलेमान मीर्ज़ा, इब्राहीम मीर्ज़ा एवं हिन्दाल मीर्ज़ा को हज़रत पादशाह के आगमन के समाचार प्राप्त हुए तो वे अपनी सेना सहित (हज़रत पादशाह की) सेवा में

१ मूल में तारीख स्पष्ट नहीं।

उपस्थित हुए। ४० दिन उपरान्त हजरत पादशाह काबुल की ओर रवाना हुए। अकबा तथा उश्तुर कराम के मध्य मे मीर्जा कामरान, कराचा खा तथा काबुल की सेना के साथ युद्ध हेतु पहुँचा। दोनो ओर से घोर युद्ध हुआ। उस समय ख्वाजा अब्दुस् समद चित्रकार भी मीर्जा कामरान की सेना से भागकर हजरत पादशाह की सेवा मे उपस्थित हो गया और उसे अत्यधिक प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। मीर्जा कामरान प्रथम आक्रमण ही को सहन न कर सका और पराजित हो गया। बडी अव्यवस्थित दशा में वह मदरौद[1] पर्वत के दामन में भाग गया। कराचा खा नमकहराम भागते समय बन्दी बना लिया गया। जिस व्यक्ति ने उसे बन्दी बनाया था वह उसे हजरत पादशाह की सेवा में ला रहा था। मार्ग में कम्बर अली महारी, जिसके भाई की कराचा खा के आदेशानुसार कन्धार में हत्या करा दी गई थी, मिला। उसने अवसर पाकर कराचा खा की हत्या करदी। हजरत पादशाह के लश्कर वालो ने मीर्जा अस्करी को भी बन्दी बना लिया। हजरत पादशाह विजय तथा सफलता प्राप्त करके काबुल पहुँचे और एक वर्ष तक निश्चिन्त होकर काबुल में निवास करते रहे।

एक बार फिर कुछ षड्यन्त्रकारी सैनिकों का एक समूह मीर्जा कामरान के पास भाग गया। उसके पास लगभग एक हजार अश्वारोही एकत्र हो गए। हाजी मुहम्मद खा, हजरत पादशाह की अनुमति लिए बिना गजनी चला गया। हजरत पादशाह बिवश होकर मीर्जा कामरान से युद्ध करने के लिए लमगानात[2] की ओर रवाना हुए। वह मुकाबला न कर सका और महमन्द व खलील एव दाऊद जई अफगानो तथा लमगानात के मालिकों की सहायता से सिंध नदी की ओर भाग गया। हजरत पादशाह बहुत समय तक लमगानात में शिकार खेलते रहे। तदुपरान्त काबुल लौट आये।

मीर्जा कामरान अफगानों के पास फिर पहुँच गया। हजरत पादशाह उसे नष्ट करने के लिए पुन रवाना हुए। कन्धार के हाकिम बैराम खा को आदेश भेजा गया कि वह जिस प्रकार सम्भव हो सके गजनी पहुँच कर हाजी मुहम्मद खा को बन्दी बना ले। हाजी मुहम्मद खा ने मीर्जा (५८५ ब) कामरान के पास आदमी भेजा कि, "आप गजनी पहुँच जायें। दास आपका आज्ञाकारी एव यह राज्य आपके अधीन है। मीर्जा कामरान पेशावर की बिलायत से बगश[3] तथा गिरदीज के मार्ग से गजनी रवाना हुआ। किन्तु उसके पहुँचने के पूर्व बैराम खा गजनी पहुँच गया। हाजी मुहम्मद खां विवश होकर उसके पास पहुँचा। वे दोनो काबुल पहुँचे। मीर्जा कामरान मार्ग में हाजी मुहम्मद खा के काबुल पहुँचने के समाचार पाकर पेशावर लौट गया। हजरत जन्नत आशियानी लमगानात से काबुल लौट आये। उनके काबुल पहुँचने के कुछ दिन पूर्व हाजी मुहम्मद खा काबुल मे भाग कर गजनी पहुँचा। हजरत पादशाह ने काबुल में बैराम खा को बहुत से अमीरो के साथ उसके विनाश हेतु भेजा। हाजी मुहम्मद खा पुन बैराम खा के साथ दरबार मे उपस्थित हुआ और उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की गई। मीर्जा अस्करी को हजरत पादशाह के आदेशानुसार ख्वाजा जलालुद्दीन मुहम्मद ने बदख्शाँ ले जाकर मीर्जा सुलेमान

१ मूल में स्पष्ट नहीं और 'कोह दावर' तथा 'मन्दावर' दोनों ही पढ़ा जाता है।

२ काबुल के पूर्व में (बाबर नामा, पृ० १३)।

३ काबुल का एक तूमान। बाबर इसके विषय में लिखता है "इसके चारों ओर अफ़गान लुटेरे आबाद हैं। उदाहरणार्थ खूगियानी, खिरिलची, तूरी तथा लन्दर। दूर स्थित होने के कारण यहाँ के लोग स्वेच्छा से राज-कर नहीं अदा करते।" (बाबर नामा, पृ० २७)।

को सौंप दिया ताकि वह उसे बल्ख के मार्ग से मक्का भेज दे। मीर्ज़ा सुलेमान ने उसे बल्ख भेज दिया। इस यात्रा में मीर्ज़ा अस्करी की मृत्यु हो गई।

मीर्ज़ा कामरान को अफ़गान लोग अपने पास ठहराये रहे और सेना एकत्र करने का प्रयत्न करते रहे। हज़रत पादशाह ने आवश्यक्तावश पुन उसके विनाश हेतु प्रस्थान किया। हाजी मुहम्मद को इस युद्ध मे उसके अपराधो की अधिकता के कारण उसके भाई सहित हत्या करा दी गई।

इस बार मीर्ज़ा कामरान ने अफ़गानो से मिलकर हज़रत पादशाह के लश्कर पर रात्रि में छापा मारा। मीर्ज़ा हिन्दाल इस रात्रि में शहीद हो गया। मीर्ज़ा कामरान कोई सफलता न प्राप्त कर सका और पराजित हो गया। हज़रत पादशाह ने मीर्ज़ा हिन्दाल के सेवक एव परिजन शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा को प्रदान कर दिये। गज़नी तथा उसके अधीनस्थ स्थान उन्हे अक्ता मे दे दिए। जब हज़रत पादशाह अफ़गानो के विरुद्ध रवाना हुए तो वे कामरान मीर्ज़ा की रक्षा न कर सके। वह प्रत्येक स्थान से निराश होकर हिन्दुस्तान की ओर भाग गया। महमन्द एव खलील अफ़गानो ने उसके कबीले तथा असबाब नष्ट कर दिये। हज़रत पादशाह काबुल लौट आये। कुछ दिन उपरान्त जब सेना आराम कर चुकी तो वे बगश तथा गिरदीज के मार्ग से हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुए। आसपास के समस्त विद्रोहियो को उचित रूप से दड दिया गया। दनकोट तथा नीलाब के मध्य से हज़रत पादशाह ने सिंध नदी पार की।

मीर्ज़ा कामरान हिन्दुस्तान के हाकिम सलीम खा की निष्ठुरता के कारण रुष्ट होकर पजाब के पर्वतीय प्रदेश में प्रविष्ट हो गया और अत्यधिक प्रयत्न करके सुल्तान आदम की विलायत मे पहुँचा। उसने उसकी रक्षा करते हुए इस विषय मे हज़रत पादशाह के पास प्रार्थना-पत्र भेज दिए। हज़रत पादशाह ने उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए आदेश दिया कि सुलतान आदम गक्खर के निवास स्थान पर जाकर उस तथा मीर्ज़ा कामरान को परहाला के समीप सेवा मे उपस्थित करे। हज़रत पादशाह अत्यधिक उदारता के कारण उसे क्षमा कर देना चाहते थे। चगताई अमीर तथा कबीले एव सेना वाले मीर्ज़ा कामरान के विद्रोहो के कारण नाना प्रकार के कष्ट भोग चुके थे। उन्होंने मिलकर हज़रत पादशाह से निवेदन किया कि, "हम लोगो के कबीलो तथा परिवार का जीवन एव उनको मर्यादा की रक्षा मीर्ज़ा की हत्या पर निर्भर है।" हज़रत पादशाह ने उनको अत्यधिक सान्त्वना दी। किन्तु उससे कोई लाभ न हुआ। वे लोग मीर्ज़ा कामरान द्वारा निरन्तर विश्वासघात देख चुके थे। विवश होकर हज़रत पादशाह ने उसे अधा बना देने की अनुमति (५८६ अ) दे दी। अली दोस्त, सैयिद मुहम्मद पकना एव गुलाम अली शशअगुश्त ने मीर्ज़ा की आँख मे नश्तर लगा कर उसे अधा बना दिया। मीर्ज़ा ने इस दुर्घटना के उपरान्त हज करने की अनुमति ले ली और अपनी इच्छानुसार यात्रा की व्यवस्था करके रवाना हुआ। इस यात्रा[१] मे उसकी मृत्यु हो गई।

हज़रत पादशाह रोहतास[२] के किले के नीचे पहुँचे। उनसे निवेदन किया गया कि, "इस

१ इसका तात्पर्य यह नहीं कि मक्का जाते हुये वह मृत्यु को प्राप्त हो गया अपितु हिन्दुस्तान न लौट सकने से तात्पर्य है।

२ रोहतास जहाँगीर ने लिखा है, "क्यों कि यह भू भाग गक्खरों के प्रदेश के समीप है और वे सबसे बड़े विद्रोही एवं उद्दंड हैं अत (शेर खां ने) उस क़िले का विशेष रूप से इस आशय से निर्माण प्रारम्भ कराया कि उसने उन लोगों के दमन का संकल्प कर लिया था। जब थोड़ा-सा कार्य हो गया तो शेर

पर्वत में बीराना[1] नामक एक व्यक्ति है जिसने इस स्थान की दृढ़ता के कारण किसी अफगान के सामने सिर नहीं झुकाया है। इस समय वह अपने परिवार एवं धन सम्पत्ति की प्रतिरक्षा करते हुए शान्ति में बैठा है।" हज़रत पादशाह उसके विरुद्ध रवाना हुए। घोर युद्ध के उपरान्त विजय प्राप्त कर ली। शत्रुओं की बहुत बड़ी सेना मारी गई तथा सैनिकों को अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई।

हज़रत पादशाह ने कश्मीर विजय का सङ्कल्प कर लिया। अमीरों ने निवेदन किया कि "क्योंकि सलीम खाँ अत्यधिक शक्तिशाली है और उसके पास अपार साधन हैं अतः कहीं ऐसा न हो कि आप इधर कश्मीर के पर्वतीय प्रदेश में प्रविष्ट हों उधर विजय के पूर्व अफगानों की सेना बाहर जाने का मार्ग रोक ले। कश्मीर भी अधिकार में न आ पाये और कठिनाई हो जाय।" हज़रत पादशाह ने अपने उच्च साहस के कारण उनकी वार्ता की ओर ध्यान न दिया किन्तु कूच के समय अमीर तथा लश्कर वाले, जो कश्मीर जाना न चाहते थे, एकबारगी काबुल की ओर चल पड़े हुए। हज़रत पादशाह को जब यह पता चला कि कोई भी इस आक्रमण हेतु नहीं जाना चाहता तो वे काबुल की ओर लौट गए और सिंध नदी पार करके बिकराम के किले के निर्माण का आदेश दिया। लश्कर वालों ने अत्यधिक प्रयत्न करके अल्प समय में उस किले को पूरा कर लिया। इस्कन्दर खाँ ऊज़बेक उस किले के शासन प्रबन्ध हेतु नियुक्त किया गया। हज़रत पादशाह ने काबुल पहुँच कर शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्ज़ा को ग़ज़नी भेज दिया। ख्वाजा जलालुद्दीन मुहम्मद[2] एवं अमीरों तथा उच्च पदाधिकारियों का एक समूह उनकी विजय रिकाब के साथ ग़ज़नी पहुँचा।

कुछ समय उपरान्त हज़रत पादशाह ने कन्धार पर आक्रमण करने का सङ्कल्प किया। वे ग़ज़नी के मार्ग से कन्धार पहुँचे। कन्धार का हाकिम बैराम खाँ तुर्कमान सेवा में उपस्थित होकर सम्मानित हुआ। वे बहुत समय तक कन्धार में शान्तिपूर्वक निवास करते रहे। लौटते समय उन्होंने कन्धार का राज्य मुनइम खाँ को प्रदान किया। मुनइम खाँ ने निवेदन किया कि, "क्योंकि हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का सङ्कल्प किया जा चुका है अतः हाकिमों के परिवर्तन के कारण सेना छिन्न-भिन्न हो जायेगी। हिन्दुस्तान की विजय के उपरान्त जैसा राज्य के हित को देखते हुये उचित हो, किया जाय।" कन्धार का राज्य उसी प्रकार बैराम खाँ के पास रहने दिया गया। ज़मीनदावर, बहादुर खाँ शैबानी को अक्ता में प्रदान हुआ। शाही लश्कर वापस हो गया और हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने की तैयारी होने लगी।

ज़िलहिज्जा ९६१ हि० (अक्तूबर नवम्बर १५५४ ई०) में हज़रत पादशाह ने सौभाग्य

खाँ की मृत्यु हो गई। उसके पुत्र सलीम खाँ ने उसे पूरा कराया। प्रत्येक द्वार पर किले का व्यय एक पत्थर पर खुदवाकर लगवा दिया। १६ करोड़ १० लाख दाम तथा कुछ और उस इमारत पर व्यय हुये। हिन्दुस्तान के हिसाब से ४० लाख २८ हज़ार रुपये एवं ईरान के लेन-देन के हिसाब से १२०,००० तूमान और तूरान के हिसाब से १ अरब २१ लाख तथा ७७५ हज़ार रुपये, जो ख़ानी कहलाते हैं, व्यय हुये।" (तुज़ुके जहाँगीरी, सर सैयिद संस्करण, पृ० ४६-४७)। यह ३५° ५५' उत्तर तथा ७३° ४८' पूर्व में झेलम कस्बे (पंजाब) के उत्तर पश्चिम में १० मील पर स्थित है।

१ इसे 'पराना' भी पढ़ा जा सकता है।

२ ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद।

के पाँव रिकाब मे रक्खे और हिन्दुस्तान की विजय हेतु प्रस्थान किया। इस बीच में हिन्दुस्तान में जो घटनायें घटी वे इस प्रकार हैं। . . [1]

९६२ हि०[2]
(२६ नवम्बर १५५४ ई०—१५ नवम्बर १५५५ ई०)

(५८८ अ) हजरत जन्नत आशियानी ने इस वर्ष के मुहर्रम मास की अंतिम तारीख[3] को पेशावर में पड़ाव किया। कन्धार के हाकिम बैराम खा ने आदेशानुसार इस समय सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया। हजरत पादशाह विजय तथा सफलता सहित सिंध नदी के पार हुए। बैराम खा, खिज्र ख्वाजा खा, तरदी बेग खा, इस्कन्दर सुल्तान एवं प्रतिष्ठित अमीरो की एक सेना को अग्र भाग में नियुक्त करके आगे भेज दिया। तातार खा काशी, रोहतास का हाकिम, किले की दृढ़ता के बावजूद उसमें ठहर न सका और भाग खड़ा हुआ। आदम ककर यद्यपि इससे पूर्व सेवा प्रदर्शित कर चुका था किन्तु इस समय उसने सेवा का सौभाग्य न प्राप्त किया। हजरत पादशाह निरन्तर यात्रा करते हुए लाहौर की ओर रवाना हुए। लाहौर के अफगान भी भाग खड़े हुए। हजरत पादशाह ने बिना युद्ध के लाहौर नगर पर अधिकार प्राप्त कर लिया। जो अमीर अग्र दल में थे वे जालधर की ओर रवाना हुए। पंजाब के परगने, सरहिन्द तथा हिसार बिना युद्ध के चगताई कबीलों के लश्कर के अधिकार मे आ गए। अफगानो की एक सेना शहबाज खा तथा नसीर खा के अधीन दीबालपुर में एकत्र हुई। जब हजरत पादशाह को उसकी सूचना मिली तो उन्होने मीर्जा अबुल मआली एवं अली कुली शैबानी को उनसे युद्ध करने के लिये भेजा। युद्ध के उपरान्त अफगान लोग पराजित (५८८ ब) हो गए। उनकी धन सम्पत्ति एवं परिवार वाले नष्ट हो गए।

इस्कन्दर अफगान ने, जो देहली का स्वामी था, तीस हजार सैनिकों को तातार खा तथा हैबत खा के अधीन सरहिन्द के अमीरों से युद्ध हेतु भेजा। चगताई कबीलो के अमीर जालधर में एकत्र हुए। शत्रुओ की अधिकता एवं मित्रो की कमी के बावजूद उन्होंने युद्ध करना निश्चय किया और सतलज नदी पार की। अफगानो की सेना दिन के अंतिम पहर में उन लोगो द्वारा नदी पार करने के समाचार से अवगत होकर युद्ध हेतु रवाना हुई। चगताई कबीलो के अमीर शत्रुओं की शक्ति के बावजूद युद्ध हेतु दृढ़ हो गए। सूर्यास्त के समय दोनो सेनाओ का आमना सामना हुआ। घोर युद्ध होने लगा। मुगलो ने बाणो की वर्षा प्रारम्भ कर दी। अंधेरे के कारण अफगान लोग व्याकुल हो गए। मुगल धनुर्धारी दिखाई न पड़ते थे। बाणो की अधिकता के कारण उन्हे अपनी आँखें खोलने का भी अवसर न मिलता था। अफगान सैनिक बाण चलाना, जो कि सैनिकों का बहुत बड़ा गुण है, बिल्कुल न जानते थे। उन्होने व्याकुल हो कर निकट के एक गाँव में आग लगा दी। क्योंकि हिन्दुस्तान के ग्रामों में समस्त घर छप्पर के होते हैं, अत आग की लपट उठने लगी और रणक्षेत्र में रोशनी हो गई। धनुर्धारी अग्नि के प्रकाश में शान्तिपूर्वक अपने कार्य में व्यस्त हो गए। शत्रु, जो अग्नि की रोशनी मे बाण का लक्ष्य बन गए, अधिक ठहर न सके और भाग खड़े हुए। बहुत बड़ा विजय प्राप्त हो गई। अत्यधिक हाथी, घोड़े एवं धन सम्पत्ति मुगल सैनिकों

१ उन घटनाओं का अनुवाद नहीं किया गया है।
२ मूल में '९५१ हि०', सम्भवतः रेहलत—हजरत मुहम्मद की मृत्यु के—बाद से ९५१ वर्ष।
३ २५ दिसम्बर १५५४ ई०।

के अधिकार में आ गई। विजय के शुभद समाचार लाहौर पहुँचे। हज़रत पादशाह बड़े प्रसन्न हुए और अमीरों को सम्मानित किया। समस्त पंजाब, सहरिन्द एवं (सरहिन्द) हिसार फ़ीरोज़ा उनके अधिकार में आ गया। मुग़ल लोगों ने देहली के कुछ परगनों पर भी अधिकार जमा लिया।

इस्कन्दर अफ़ग़ान को जब अपनी सेना की पराजय के समाचार प्राप्त हुए तो वह अस्सी हज़ार अश्वारोहियों को, जिनमें से प्रत्येक अपने आप को दूसरा रुस्तम तथा इस्फ़न्दयार[1] समझता था, लेकर प्रतिकार हेतु रवाना हुआ। उसके साथ इतनी अधिक युद्ध की सामग्री, तोप तथा तुफ़ंग थी कि उन्हें ले जाना भी बड़ा कठिन था। उस वर्ष जमादी उस्सानी मास[2] में वह सहरिन्द पहुँचा। अपनी सेना के चारों ओर उसने खाईं खोद कर किला तैयार कर लिया। चग़ताई क़बीलों के अमीर यथा-शक्ति वीरता प्रदर्शित करने लगे और प्रार्थना पत्र लाहौर भेज कर हज़रत पादशाह से पधारने का आग्रह किया। सम्मानित पताकाएँ विजय तथा सफलता सहित सहरिन्द की ओर रवाना हुई। उनके निकट पहुँच जाने पर अग्र भाग की सेना के अमीरों ने उनका स्वागत करके सेना की पंक्तियाँ सुव्यवस्थित कीं। उन्होंने शत्रुओं की सेना का जो कि मुग़लों की सेना से कई गुना अधिक थी, मुक़ाबला किया, कुछ समय तक जब युद्धप्रिय तथा यश के इच्छुक रणक्षेत्र में उपस्थित होकर कई बार वीरता एवं पौरुष प्रदर्शित कर चुके तो शाबान मास[3] में जिस दिन शाहज़ादये आल-(५८९ अ) मियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर के सेवकों की करावली का दिन था, घोर युद्ध हुआ। एक ओर से बैराम ख़ाँ ख़ाने ख़ाना तथा दूसरी ओर से इस्कन्दर ख़ाँ, अब्दुल्लाह ख़ाँ ऊज़बेक, शाह अबुल मआली, अली कुली ख़ाँ तथा तरदी बेग ख़ाँ ने शत्रुओं पर आक्रमण किया। इन ख़ानों में से प्रत्येक ने उस दिन इतनी अधिक वीरता एवं इतना पौरुष प्रदर्शित किया कि वह मनुष्य की शक्ति के बाहर है। शाही लश्कर को सफलता प्राप्त हुई। अफ़ग़ानों की सेना जिसमें लगभग एक लाख सैनिक थे, थोड़े से आदमियों से पराजित हो गई। जब तक उसमें शक्ति रही तब तक वह युद्ध करती रही। तदुपरान्त विवश होकर किले में प्रविष्ट हो गई।

मुंशियों ने शाही आदेशानुसार शाहज़ादये आलमियान के नाम, जिनके सेवकों के उत्तम प्रयत्नों द्वारा विजय प्राप्त हुई थी, विजय-पत्र लिखा। विजय-पत्र दूर-दूर के स्थानों तक भेज दिया गया। सिकन्दर ऊज़बेक देहली की ओर रवाना हुआ। मुख्य लश्कर सामाना के मार्ग से हिन्दुस्तान की राजधानी की ओर रवाना हुआ। देहली में अफ़ग़ानों की जो सेना थी, वह अपने प्राण लेकर भाग गई। सिकन्दर ख़ाँ नगर में प्रविष्ट हो गया।

मीर्ज़ा अबुल मआली को हज़रत पादशाह ने लाहौर की ओर इस्कन्दर के, जो उस प्रदेश के पर्वतों में प्रविष्ट हो गया था, विनाश हेतु नियुक्त किया। रमज़ान मास[4] में हज़रत पादशाह देहली में प्रविष्ट हुए। पुनः हिन्दुस्तान के अधिकांश भाग पर वे स्वतंत्र रूप से हाकिम हो गए। विजयी रिकाब के साथ जिन लोगों ने घोर प्रयत्न किए थे, उन्हें उचित रूप से सम्मानित किया गया।

१ ईरान के प्राचीन कयानी वंश का पाँचवाँ बादशाह गश्तास्प का पुत्र जो बड़ा ही शूरवीर एवं प्रसिद्ध योद्धा हुआ है। कहा जाता है कि रुस्तम ने इसकी हत्या कर दी थी।
२ जमादी-उस्सानी ९६२ हि० (अप्रैल-मई १५५५ ई०)।
३ शाबान ९६२ हि० (जून-जुलाई १५५५ ई०)।
४ रमज़ान ९६२ हि० (जुलाई-अगस्त १५५५ ई०)।

हिन्दुस्तान की प्रत्येक विलायत का किसी न किसी को हाकिम नियुक्त कर दिया गया। इस वर्ष का शेष भाग आनन्द मंगल में व्यतीत किया।

९६३ हि०
(१६ नवम्बर १५५५ ई०—३ नवम्बर १५५६ ई०)

(५८९ ब) हजरत जन्नत आशियानी को देहली में समाचार प्राप्त हुए कि मीर अबुल मआली, जो सिकन्दर से युद्ध करने के लिए भेजा गया था, उन अमीरों के साथ जो कुमक हेतु नियुक्त हुए थे, भली-भाँति व्यवहार नहीं करता और उनकी अक्तायें अपने अधिकार में कर ली हैं तथा खास्से के खजाने[1] में भी हस्तक्षेप कर रहा है। सिकन्दर नित्यप्रति शक्तिशाली होता जा रहा है। हजरत पादशाह ने आवश्यकतावश बैराम खाँ को शाहजादये आलमियान का अतालीक[2] नियुक्त किया और उनको रिकाब के साथ सिकन्दर से युद्ध हेतु भेजा। आदेश हुआ कि अबुल मआली हिसार फीरोजा तथा उस क्षेत्र में पहुँच जाय।

उन्हीं दिनों में कम्बर दीवाना नामक एक व्यक्ति ने दोआब तथा सम्भल के मध्य में एक सेना को अपने साथ मिलाकर लूट मार प्रारम्भ कर दी। अल्पदर्शी तथा षड्यन्त्रकारी चारों ओर से उसके पास एकत्र हो गए। अली कुली खाँ शैबानी उससे युद्ध हेतु नियुक्त हुआ। उसने अल्प समय में उसे बन्दी बना लिया और उसके सिर को दरबार में भेज दिया।

७ रबी-उल-अव्वल[3] को सूर्यास्त के समय हजरत जन्नत आशियानी किताबखाने के कोठे पर पहुँचे। कुछ देर वहाँ बैठे रहे। उतरते समय अजान देने वाले ने सायंकाल के समय की नमाज की अजान देनी प्रारम्भ कर दी। हजरत पादशाह दूसरे जीने पर सम्मान हेतु बैठ गए। उठते समय उनका पवित्र पाँव फिसल गया और सीढ़ी से पृथक् हो गया। दरबार वाले घबड़ा उठे। हजरत पादशाह को, जो अचेत हो गए थे, महल के भीतर पहुँचाया गया। कुछ क्षण उपरान्त उन्हें थोड़ा सा आराम हुआ और उन्होंने बातचीत की। चिकित्सकों ने उपचार का अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु कोई लाभ न हुआ। दूसरे दिन वे अत्यधिक कमजोर हो गए। नजर शेख चोली को शाहजादये आलमियान की सेवा में पंजाब की ओर भेजा गया। ११ रबी-उल-अव्वल ९६३ हि०[4] को सूर्यास्त के समय उनका निधन हो गया। यह बड़ी विचित्र बात है कि इस मिसरे से तारीख निकली.

मिसरा

'हुमायूँ पादशाह कोठे से गिर पड़े'।

उन्होंने लगभग २५ वर्ष तथा कुछ दिन राज्य किया। उनकी अवस्था ५० वर्ष की हो गई

१ वह खजाना जो विशेष रूप से बादशाह के अधीन हो।
२ संरक्षक।
३ ७ रबी उल अव्वल ९६३ हि० (२० जनवरी १५५६ ई०)।
४ २४ जनवरी १५५६ ई०। फारसी लिपि में यादहुम یازدهم (११) और پانزدهم (१५) में लिखने में अधिक अन्तर नहीं अतः इसे १५ रबी उल अव्वल (२८ जनवरी १५५६ ई०) भी पढ़ा जा सकता है।

थी। उनके पौरुष तथा दान-पुण्य की प्रशसा मित्र तथा शत्रु सभी करते थे। उन्होंने कई व
स्वय रणक्षेत्र में तलवार चलाई । हिन्दुस्तान की विजय के उपरान्त, जो कि समस्त ससार
विजय के अनुरूप हैं, वे (सिंहासनारोहण के) जश्न के अतिरिक्त जीवित न रहे। उन
व्यक्तित्व नाना प्रकार के गुणों से सुशोभित था। गणित मे उन्हे अत्यधिक कुशलता प्राप्त थ
और वे बहुत अच्छी कविता करते थे। गद्य रचना मे भी उन्हे बडी योग्यता प्राप्त थी। वे इत
अधिक उदार थे कि यद्यपि उनके भाइयो ने उनके प्रति इतनी अधिक निष्ठुरता प्रदर्शित की वि
कोई शत्रु भी नही कर सकता था तथापि जब उन्हे अधिकार प्राप्त हुआ उन्होने उन्हे क्षमा प्रदान क
दी। मीर्ज़ा कामरान को कई बार उन्होंने बन्दी बना लिया। क्योकि उनका विश्वास था वि
जब वह आँख के सामने से ओझल हो जायगा तो वह ठीक हो जायगा अत वे आश्रय प्रदान करके उ
विदा कर देते थे। अन्तिम बार जब वह बन्दी बनाया गया तो वे अपने स्वभाव के अनुसार उस
(५९० अ) प्रति उदारता प्रदर्शित करना चाहते थे। किन्तु चगताई कबीलो के अमीरो ने, जो वि
भाइयों के झगडो के कारण अपने अधिकाश परिवार एव धन सम्पत्ति को नष्ट कर चुके थे, एकमत
होकर निवेदन किया कि, "उसका जीवन समस्त कबीलो की मृत्यु के अनुरूप है।" विवश होक
उन्होंने मीर्ज़ा कामरान का आँखो में सलाई फिरवाने का आदेश दिया। इस दुघटना के उपरान्त वे बहुत
समय तक चिल्ला चिल्लाकर विलाप करते रहे।

सक्षेप में, नज़र शेख चोली, जो उनके अत्यधिक कमज़ोर होने के उपरान्त पजाब की ओर रवाना हुआ, कलानूर मे हज़रत शाहज़ादये आलमियान की सेवा में पहुँचा और इस दुर्घटना के समाचार पहुँचाये। इसी के उपरान्त हज़रत पादशाह की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुए। विजयी रिकाब के साथ के अमीरों विशेष रूप से बैराम खा ने सवेदना प्रकट करने के उपरान्त सर्व-सम्मति से उसी वर्ष की २ रबी-उस्सानी[१] को कलानूर के कस्बे में एक भव्य जश्न का आयोजन किया।

१ १४ फरवरी १५५६ ई०।

तबक़ाते अकबरी भाग २

लेखक—ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद

(प्रकाशन कलकत्ता १६३१ ई०)

खाकाने सईद[1] हुमायूँ पादशाह बिन बाबर पादशाह गाजी

मीर खलीफा का षड्यंत्र

(२७) क्योंकि इस उत्कृष्ट वंश को पारिभाषिक उपाधियों में बादशाहे जहाँपनाह[2] को जन्नत आशियानी लिखा जाता है अतः यह तुच्छ भी उस सफल बादशाह के सम्मानित नाम के (२८) स्थान पर इसी उपाधि का प्रयोग करता है। संक्षेप में, जब हज़रत फिरदौस मकानी बाबर पादशाह का आगरा में निधन हो गया, तो उन दिनों इस इतिहास के संकलनकर्ता का पिता मुहम्मद मुकीम हरवी[3] उनके सेवकों में सम्मिलित था और दीवानये ब्यूतात[4] की सेवा हेतु नियुक्त था। क्योंकि अमीर निज़ामुद्दीन अली खलीफा, जिसपर शासन प्रबन्ध के कार्य अवलम्बित थे, भाग्यशाली शाहज़ादे मुहम्मद हुमायूँ मीर्ज़ा से किन्हीं कारणों से जो संसार में घटते रहते हैं, भयभीत था अतः वह उनके बादशाह होने के पक्ष में न था। जब वह ज्येष्ठ पुत्र के पक्ष में न था तो छोटे पुत्रों के पक्ष में कैसे हो सकता था? क्योंकि हज़रत फिरदौस मकानी का दामाद[5] महदी ख्वाजा, दानी एवं

१ भाग्यशाली खाकान (बादशाह)।
२ संसार को शरण प्रदान करने वाले बादशाह (हुमायूँ)।
३ हिरात निवासी।
४ शाही भवनों।
५ दामाद का अर्थ बहारे अजम नामक फ़ारसी शब्दकोश में इस प्रकार है, "दुलहिन के सामने, हिन्द में उस व्यक्ति को कहते हैं जिससे पुत्री ब्याही जाय किन्तु उत्तम शैली के स्वामियों की रचना में यह शब्द इस प्रकार प्रयुक्त नहीं हुआ है।" फ़रहंगे नफ़ में इस शब्द का अर्थ 'किसी की पुत्री का पति'। स्टेइनगैस में, "A son in-law, a father in-law, a husband of the king's sister, a near ally, a wooer, a lover" है। निज़ामुद्दीन ने दामाद शब्द का प्रयोग बादशाह की बहिन के पति के अर्थ में किया है, जामाता के अर्थ में नहीं। "चूं महदी ख्वाजा, दामादे हज़रत फ़िरदौस मकानी जवाने सख़ी व बाज़िल बूद, ब अमीर खलीफा राब्तये मुहब्बत दाश्त।"

چون مهدی خواجه ' داماد حضرت فردوس مکانی ' جوان سخی و باذل بود و با امیر
خلیفه رابطهٔ محبت داشت

इस वाक्य में 'जवान' शब्द से भी इतिहासकारों को भ्रम हो गया है। जवान का अर्थ केवल युवक ही नहीं होता। यहाँ इसका अर्थ व्यक्ति है, दानी एवं उदार व्यक्ति। खेद है कि मैंने मुग़ल कालीन भारत—बाबर में दामाद शब्द का अर्थ जामाता कर दिया और इस शब्द के इस स्थान पर शुद्ध अर्थ की ओर ध्यान नहीं दिया (पृ० ४३५, ४६१)।

उदार जवान था और अमीर खलीफा की उससे बडी घनिष्ठता थी, अत अमीर खलीफा ने उसे पादशाह बनवाना निश्चय कर लिया। लोगो में यह बात प्रसिद्ध हो गई। वे महदी ख्वाजा के अभिवादन हेतु जाने लगे। वह भी इस बात को समझ कर लोगो से बादशाहो के समान व्यवहार करने लगा।

सयोग[1] से मीर खलीफा, महदी ख्वाजा से भेंट करने गया हुआ था। वह एक खरगाह में था। मीर खलीफा, सकलनकर्त्ता के पिता मुहम्मद मुकीम एव महदी ख्वाजा के अतिरिक्त उस खरगाह में कोई अन्य न था। मीर खलीफा थोडी देर ही बैठा था कि हजरत फिरदौस मकानी ने उसे बुलवा लिया। जब मीर खलीफा, महदी ख्वाजा के खेमे में बाहर जाने लगा तो महदी ख्वाजा खरगाह के द्वार तक उसके साथ-साथ उसे पहुँचाने गया और द्वार के मध्य में खडा हो गया। सकलनकर्त्ता का पिता उसके सम्मान के कारण उसके पीछे पीछे रहा। महदी ख्वाजा के विषय में कहा जाता था कि वह अपने थोडे बहुत पागलपन के लिए प्रसिद्ध[2] था। वह सकलनकर्त्ता के पिता की उपस्थिति को भूल कर मीर खलीफा को विदा के उपरान्त दाढी पर हाथ फेर कर कहने लगा, "ईश्वर ने चाहा तो सर्वप्रथम मैं तेरी खाल खिचवाउगा।" यह कहने के उपरान्त उसकी दृष्टि सकलनकर्त्ता के पिता पर पडी। उसने उसके कान पकड कर कहा, कि, "हे ताजीक !"

मिसरा

'लाल जिह्वा हरे सिर को हवा में उडा देती है।'[3]

(२९) मेरा पिता विदा होकर बाहर आया और शीघ्रातिशीघ्र मीर खलीफा के पास पहुँच कर कहने लगा कि, "आप मुहम्मद हुमायूँ मीर्जा एव उनके भाइयो सरीखे योग्य व्यक्तियो के होते हुए नमकहलाली को त्याग कर यह चाहते थे कि राज्य अन्य वश में चला जाये। इसका परिणाम इसके अतिरिक्त कोई अन्य नही।" यह कहकर उसने महदी ख्वाजा की बात कही। मीर खलीफा ने तत्काल किसी को मुहम्मद हुमायूँ मीर्जा को शीघ्रातिशीघ्र बुलाने के लिए भेजा। यसावलो[4] को भेज कर उसने महदी ख्वाजा को सूचना भिजवाई कि, "हजरत पादशाह का आदेश है कि तुम अपने घर चले जाओ।" उस समय महदी ख्वाजा के लिए दस्तरख्वान पर भोजन लगवाया जा चुका था। यसावलो ने निरन्तर पहुँच कर उसे जबरदस्ती उसके घर भेज दिया।

तदुपरान्त मीर खलीफा ने आदेश दिया कि, 'ढिंढोरा पिटवा दिया जाये कि कोई भी महदी ख्वाजा के घर न जाये और उसके प्रति अभिवादन न करे, और वह भी दरबार में उपस्थित न हो।"

१ कुछ हस्तलिपियों में यह वाक्य भी है, "हजरत फ़िरदौस मकानी के अत्यधिक रुग्ण हो जाने के उपरान्त एक दिन महदी ख्वाजा बादशाही दरबार में गया और बडा ही अभिमान प्रदर्शित किया"।

२ ब शायबये जुनूँ मन्सूब बूद ' به شائبهٔ جنون منصوب بود

३ 'मूर्खतापूर्ण बात अथवा बकवास से मनुष्य नष्ट हो जाता है'। यह वाक्य ज़ियाउद्दीन नक्शबी के तूती नामे की एक कहानी पर आधारित है। महदी ख्वाजा ने इसके द्वारा मीर मुकीम को चेतावनी दी है कि यदि वह इस बात को किसी से कहेगा तो उसे कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। (होडीवाला, पृ० ५०५)।

४ सेना तथा दरबार का प्रबन्ध करने वाला निम्न श्रेणी का एक कर्मचारी।

हुमायूं का सिंहासनारोहण

जब हजरत बाबर पादशाह का निधन हो गया तो मुहम्मद हुमायूं मीर्जा सम्बल से पहुँचे। अमीर निजामुद्दीन अली खलीफा के प्रयत्न से, जो सल्तनत का वकील था, ९ जमादी उल-अव्वल ९३७ हि० (२९ दिसम्बर १५३० ई०) को सिंहासनारूढ हुए और आगरा को संसार की ईर्ष्या की वस्तु बना दिया। उनके सिंहासनारोहण की तिथि 'खैरुल मुलूक'[१] के अक्षरों से निकलती है। दान-पुण्य एवं इनाम इकराम द्वारा अमीरों तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियों को सम्मानित किया। हज़रत फिरदौस मकानी के राज्यकाल में जिन लोगों को जो मनसब तथा पद प्राप्त थे, वे उन्हीं के पास रहने दिये अपितु प्रत्येक को नई कृपाओं तथा अपार उदारता प्रदर्शित करके प्रसन्न किया।

हिन्दाल का आगमन

उन्हीं दिनों में मीर्जा हिन्दाल बदख्शाँ से पहुँचा और नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा सम्मानित हुआ। प्राचीन सुल्तानों के खजानों में से, जो प्राप्त हुए थे, दो खज़ाने उसे इनाम में दे दिए गए। क्योंकि सोना कश्तियों में रख कर बाटा गया अतः उसकी तिथि "कश्तिये ज़र[२]" के अक्षरों से निकलती है।

राज्य का विभाजन

हज़रत पादशाह ने राज्य का विभाजन किया और मेवात मीर्जा हिन्दाल को जागीर में (३०) प्रदान कर दिया। पंजाब, काबुल तथा कन्धार मीर्जा कामरान को जागीर में दिये। सम्बल, मीर्जा अस्करी को प्रदान हुआ। प्रत्येक अमीर की जागीर एवं मिल्क[३] में वृद्धि कर दी गई।

कालिंजर विजय

राज्य की सुव्यवस्था हो जाने के उपरान्त उत्कृष्ट पताकाएँ कालिंजर के किले की ओर

---

१ خیرالملوک

خ	(खे)	६००
ی	(ये)	१०
ر	(रे)	२००
خیر	(खैर)	८१०
ا	(अलिफ)	१
ل	(लाम)	३०
م	(मीम)	४०
ل	(लाम)	३०
و	(वाव)	६
ک	(काफ)	२०
الملوک	(अल मुलूक)	१२७
خیرالملوک	(खैरुल मुलूक)	९३७

२ नौका रूपी स्वर्ण थाल।

३ नवल किशोर द्वारा प्रकाशित तबकाते अकबरी में 'खलसा व जागीर'।

रवाना हुई। वहाँ का राजा आज्ञाकारिता एवं दासता प्रदर्शित करते हुए राजभक्तों की श्रेणी में सम्मिलित हो गया।

अफ़ग़ानों के विद्रोह का दमन

क्योंकि उन दिनों सुल्तान महमूद बिन सुल्तान सिकन्दर लोदी ने बिबन, बायजीद[1] एवं अफ़गान अमीरों से मिलकर विद्रोह की पताका बलन्द कर दी थी और जौनपुर तथा उसके आस पास के स्थान अपने अधिकार में कर लिये थे अतः विजयी पताकायें उनसे युद्ध एवं उनके विनाश हेतु रवाना हुईं। उन्हें विजय तथा सफलता प्राप्त हो गई और वे प्रताप एवं सौभाग्य के साथ आगरा लौट आईं।

एक भव्य जश्न का आयोजन हुआ। अमीरों तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियों में से प्रत्येक को बहुमूल्य खिलअतें एवं द्रुतगामी घोड़े प्रदान किए गये। कहा जाता है कि उस भव्य जश्न में बारह हज़ार व्यक्तियों को खिलअतें दी गईं। उनमें से दो हज़ार व्यक्तियों को तुक्मे एवं जड़ाऊ ज़रदोज़ी के बालापोश[2] प्रदान हुए।

शेर

'जब पादशाह को अपने शत्रु पर प्रभुत्व प्राप्त हो जाता है,
जब लश्कर वालों के हृदय प्रसन्न एवं वे सन्तुष्ट होते हैं।
यदि खज़ाने को सैनिकों का प्रदान करने में संकोच किया जाय,
तो वह तलवार की ओर हाथ ले जाने में संकोच करता है।'

मीर्ज़ाओं का विद्रोह

उस समय की विचित्र घटनाओं में एक यह है कि मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा वल्द बदी-उज़्ज़मान मीर्ज़ा बिन सुल्तान हुसैन मीर्ज़ा बाईक़रा ने, जो इससे पूर्व बल्ख़ में फ़िरदौस मकानी की शरण में आ गया था, विद्रोह कर दिया किन्तु बन्दी बना लिया गया। उसे यादगार तग़ाई के सुपुर्द करके बयाना के क़िले में भेज दिया गया और आदेश दिया गया कि उसकी आँखों में सलाई फेर दी जाय और उसे अंधा बना दिया जाय। यादगार बेग के सेवकों ने उसकी पुतलियों को सलाई द्वारा कोई हानि न पहुँचने दी। वह अल्प समय में बन्दीगृह से भाग गया और उसने सुल्तान बहादुर के पास पहुँच कर शरण ली। उन्हीं दिनों में मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा अपने दोनों पुत्रों, उलुग मीर्ज़ा (३१) एवं शाह मीर्ज़ा, के साथ भाग खड़ा हुआ और क़न्नौज पहुँच कर विरोध करने लगा। जन्नत आशियानी ने प्रेम की भावनाओं से परिपूर्ण पत्र सुल्तान बहादुर गुजराती को भेजा और मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा को माँगा।[3] सुल्तान बहादुर ने अभिमानवश अनुचित उत्तर दिए और उद्दंडता एवं

---

१ प्रकाशित ग्रंथ में 'बिबन बायज़ीद'।

२ खिलअत के ऊपर से पहिनने का सम्भवतः कोई गाउन।

३ **तबक़ाते अकबरी भाग ३** में गुजरात के सुल्तानों के इतिहास के प्रसंग में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है, "सुल्तान चित्तौड़ पर विजय प्राप्त करने का संकल्प करके दीप में कम्बायत और वहाँ से अहमदाबाद पहुँचा। सम्मानित सूफ़ियों एवं अपने पूर्वजों के मज़ारों के दर्शन करके, सेनायें एकत्र कीं और दीप एवं गुजरात के तोपख़ानों सहित चित्तौड़ की ओर रवाना हुआ। उस समय मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा, हुमायूँ बादशाह के पास से

विद्रोह प्रदर्शित किया। पादशाही मर्यादा को ठेस लगी और उन्होंने गुजरात पर आक्रमण तथा सुल्तान बहादुर को दड देना निश्चय कर लिया।

हुमायूं की ग्वालियर की सैर

उसी समय विजयी पताकाओं ने ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया। दो मास सैर तथा शिकार करके वे लौट आईं।

तातार खां लोदी की पराजय

सयोग से उसी समय सुल्तान बहादुर ने गुजरात तथा मालवा की सेना सहित चित्तौड के किले का अवरोध कर लिया था और राणा सांगा[1] से युद्ध कर रहा था। उसने अपने प्रतिष्ठित अमीर तातार खा लोदी को अत्यधिक धृष्टता एव उद्दडता प्रदर्शित करते हुए ब्याना के किले तथा आसपास के स्थानों की विजय हेतु भेजा। उसने ब्याना के किले पर अधिकार जमा लिया और आगरा तक छापा मारने लगा। हज़रत जन्नत आशियानी ने मीर्ज़ा हिन्दाल को उसके विनाश हेतु भेजा। उसकी अधिकाश सेना मीर्ज़ा हिन्दाल के आगमन के समाचार पाकर छिन्न-भिन्न हो गई। उसने तीन सौ व्यक्तियों सहित मीर्ज़ा की विशेष सेना पर आक्रमण किया। घोर युद्ध हुआ। वह अपने समस्त साथियों सहित मारा गया। ब्याना तथा उसके आसपास के स्थान राज्य के उच्च पदाधिकारियों के अधिकार में आ गए। सुल्तान बहादुर यह समाचार पाकर बड़ा ही चिन्तित एव व्याकुल हुआ।[2]

भाग कर उसके पास फरियाद लेकर पहुँचा। जब बहादुर शाह चित्तौड पहुँचा तो राणा ने किला बन्द कर लिया। अवरोध में तीन मास लग गये। प्रायः दोनों ओर से वीर योद्धा रणक्षेत्र में पहुँच कर वीरता प्रदर्शित करते थे। अधिकाश गुजरात वालों को विजय प्राप्त होती थी। अन्ततोगत्वा राणा ने विनय एव नम्रता प्रदर्शित करते हुए अत्यधिक पेशकश भेंट की। ताज एव जड़ाऊ पेटी, जो मालवा के हाकिम सुल्तान महमूद खलजी से प्राप्त की थी, हाथियों एवं घोड़ों सहित अपने प्राण पर से न्योछावर कर दी और सुल्तान को गुजरात लौटा दिया।

इस विजय, मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा के आगमन एव सुल्तान बहलोल लोदी की संतान के उसके पास एकत्र हो जाने के कारण वह अभिमानी हो गया और यही बात मुहम्मद हुमायू बादशाह से युद्ध छेड़ने का कारण बनी। इस इच्छा की पूर्ति हेतु तातार ख़ाँ बिन सुल्तान अलाउद्दीन बिन सुल्तान बहलोल को, जो वीरता एवं पौरुष में अपने समकालीनों से श्रेष्ठ था, आश्रय देकर रणथम्बोर के हाकिम बुरहानुल मुल्क को ३० करोड की धन-सम्पत्ति इस आशय से प्रदान की ताकि उसके परामर्श से तातार खा सेना पर व्यय करे। अल्प समय में लगभग ४० हजार अश्वारोही तातार खा के पास एकत्र हो गये और हज़रत जन्नत आशियानी के राज्य की विभिन्न दिशाओं में आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। ९४१ हि० (१५३४-३५ ई०) में सुल्तान बहादुर के पास हज़रत हुमायूं पादशाह के कई बार पत्र आये कि 'यदि तू मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा को मेरे दरबार में नहीं भेजता तो अपने राज्य से निकाल दे'। उसने अत्यधिक अभिमान के कारण (संतोषजनक) उत्तर न दिये"। (तबकाते अकबरी भाग ३, पृ० २२७-२२८)।

१ विक्रमादित्य, राणा सांगा का पुत्र जो रतन सिंह के बाद १५३१ ई० में सिंहासनारूढ हुआ।

२ इस घटना का उल्लेख **तबक़ाते अकबरी भाग ३** में गुजरात के सुल्तानों के इतिहास के प्रसंग में इस प्रकार हुआ है. "तातार ख़ाँ ने ब्याना पर आक्रमण करके उस पर अधिकार जमा लिया। हज़रत जन्नत आशियानी ने हिन्दाल मीर्ज़ा को उससे युद्ध करने के लिये भेजा। मीर्ज़ा जब ब्याना के क्षेत्र में पहुँचा तो जो लोग उसके (तातार ख़ाँ के)

रवाना हुई। वहाँ का राजा आज्ञाकारिता एवं दासता प्रदर्शित करते हुए राजभक्तों की श्रेणी में सम्मिलित हो गया।

अफ़ग़ानों के विद्रोह का दमन

क्योंकि उन दिनों सुल्तान महमूद बिन सुल्तान सिकन्दर लोदी ने बिबन, बायज़ीद[1] एवं अफगान अमीरों से मिलकर विद्रोह की पताका बलन्द कर दी थी और जौनपुर तथा उसके आस पास के स्थान अपने अधिकार में कर लिये थे अतः विजयी पताकायें उनसे युद्ध एवं उनके विनाश हेतु रवाना हुई। उन्हें विजय तथा सफलता प्राप्त हो गई और वे प्रताप एवं सौभाग्य के साथ आगरा लौट आईं।

एक भव्य जश्न का आयोजन हुआ। अमीरों तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियों में से प्रत्येक को बहुमूल्य खिलअतें एवं द्रुतगामी घोड़े प्रदान किए गये। कहा जाता है कि उस भव्य जश्न में बारह हज़ार व्यक्तियों को खिलअतें दी गईं। उनमें से दो हज़ार व्यक्तियों का तुक्में एवं जड़ाऊ ज़र्दोज़ी के बालापोश[2] प्रदान हुए।

शेर

'जब पादशाह को अपने शत्रु पर प्रभुत्व प्राप्त हो जाता है,
जब लश्कर वालों का हृदय प्रसन्न एवं वे सन्तुष्ट होते हैं।
यदि खज़ाने को सैनिक का प्रदान करने में सकोच किया जाय,
तो वह तलवार की ओर हाथ ले जाने में सकोच करता है।'

मीर्ज़ाओं का विद्रोह

उस समय की विचित्र घटनाओं में एक यह है कि मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा वल्द बदी-उज़्ज़मान मीर्ज़ा बिन सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा बाईकरा ने, जो इससे पूर्व बल्ख में फ़िरदौस मकानी की शरण में आ गया था, विद्रोह कर दिया किन्तु बन्दी बना लिया गया। उसे यादगार तगाई के सुपुर्द करके बयाना के किले में भेज दिया गया और आदेश दिया गया कि उसकी आँखों में सलाई फेर दी जाय और उसे अंधा बना दिया जाय। यादगार बेग के सेवकों ने उसकी पुतलियों को सलाई द्वारा कोई हानि न पहुँचने दी। वह अल्प समय में बन्दीगृह से भाग गया और उसने सुल्तान बहादुर के पास पहुँच कर शरण ली। उन्हीं दिनों में मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा अपने दोनों पुत्रों, उलुग मीर्ज़ा (३१) एवं शाह मीर्ज़ा, के साथ भाग खड़ा हुआ और कन्नौज पहुँच कर विरोध करने लगा। जन्नत आशियानी ने प्रेम की भावनाओं से परिपूर्ण पत्र सुल्तान बहादुर गुजराती को भेजा और मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा को माँगा।[3] सुल्तान बहादुर ने अभिमानवश अनुचित उत्तर दिए और उद्दण्डता एवं

१ प्रकाशित ग्रंथ में 'बिबन बायज़ीद'।
२ खिलअत के ऊपर से पहिनने का सम्भवतः कोई गाउन।
३ तबक़ाते अकबरी भाग ३ में गुजरात के सुल्तानों के इतिहास के प्रसंग में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है, "सुल्तान चित्तौड़ पर विजय प्राप्त करने का संकल्प करके दीव से कम्बायत और वहाँ से अहमदाबाद पहुँचा। सम्मानित सूफ़ियों एवं अपने पूर्वजों के मज़ारों के दर्शन करके, सेनायें एकत्र कीं और दीव एवं गुजरात के तोपख़ानों सहित चित्तौड़ की ओर रवाना हुआ। उस समय मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा, हुमायूँ बादशाह के पास से

विद्रोह प्रदर्शित किया। पादशाही मर्यादा को ठेस लगी और उन्होंने गुजरात पर आक्रमण तथा मुल्तान बहादुर को दड देना निश्चय कर लिया।

हुमायू की ग्वालियर की सैर

उसी समय विजयी पताकाओं ने ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया। दो मास सैर तथा शिकार करके वे लौट आईं।

तातार खा लोदी की पराजय

सयोग से उसी समय सुल्तान बहादुर ने गुजरात तथा मालवा की सना सहित चित्तौड के किले का अवरोध कर लिया था और राणा सागा[1] से युद्ध कर रहा था। उसने अपने प्रतिष्ठित अमीर तातार खा लोदी को अत्यधिक धृष्टता एव उद्दडता प्रदर्शित करते हुए ब्याना के किले तथा आसपास के स्थानो की विजय हेतु भेजा। उसने ब्याना के किले पर अधिकार जमा लिया और आगरा तक छापा मारने लगा। हजरत जन्नत आशियानी ने मीर्जा हिन्दाल को उसके विनाश हेतु भेजा। उसकी अधिकाश सेना मीर्जा हिन्दाल के आगमन के समाचार पाकर छिन्न-भिन्न हो गई। उसने तीन सौ व्यक्तियों सहित मीर्जा की विशेष सेना पर आक्रमण किया। घोर युद्ध हुआ। वह अपने समस्त साथियो सहित मारा गया। ब्याना तथा उसके आसपास के स्थान राज्य के उच्च पदाधिकारियो के अधिकार में आ गए। सुल्तान बहादुर यह समाचार पाकर बडा ही चिन्तित एव व्याकुल हुआ।[2]

भाग कर उसके पास फरियाद लेकर पहुँचा। जब बहादुर शाह चित्तौड पहुँचा तो राणा ने किला बन्द कर लिया। अवरोध में तीन मास लग गये। प्राय दोनों ओर से वीर योद्धा रणक्षेत्र में पहुँच कर वीरता प्रदर्शित करते थे। अधिकाश गुजरात वालों को विजय प्राप्त होती थी। अन्ततोगत्वा राणा ने विनय एव नम्रता प्रदर्शित करते हुए अत्यधिक पेशकश भेंट की। ताज एव जडाऊ पेटी, जो मालवा के हाकिम सुल्तान महमूद खलजी से प्राप्त की थी, हाथियों एव घोडों सहित अपने प्राण पर से न्योछावर कर दी और सुल्तान को गुजरात लौटा दिया।

इस विजय, मुहम्मद जमान मीर्जा के आगमन एव सुल्तान बहलोल लोदी की सतान के उसके पास एकत्र हो जाने के कारण वह अभिमानी हो गया और यही बात मुहम्मद हुमायू बादशाह से युद्ध छेड़ने का कारण बनी। इस इच्छा की पूर्ति हेतु तातार खाँ बिन सुल्तान अलाउद्दीन बिन सुल्तान बहलोल को, जो वीरता एँव पौरुष में अपने समकालीनों से श्रेष्ठ था, आश्रय देकर रणथम्बोर के हाकिम बुरहानुल मुल्क को ३० करोड की धन-सम्पत्ति इस आशय से प्रदान की ताकि उसके परामर्श से तातार खा सेना पर व्यय करे। अल्प समय में लगभग ४० हजार अश्वारोही तातार खा के पास एकत्र हो गये और हजरत जन्नत आशियानी के राज्य की विभिन्न दिशाओं में आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। ९४१ हि० (१५३४ ३५ ई०) में सुल्तान बहादुर के पास हजरत हुमायूँ पादशाह के कई बार पत्र आये कि 'यदि तू मुहम्मद जमान मीर्जा को मेरे दरबार में नहीं भेजता तो अपने राज्य से निकाल दे'। उसने अत्यधिक अभिमान के कारण (सतोषजनक) उत्तर न दिये"। (तबकाते अकबरी भाग ३, पृ० २२७-२२८)।

१ विक्रमादित्य, राणा सागा का पुत्र जो रतन सिंह के बाद १५३१ ई० में सिंहासनारूढ हुआ।

२ इस घटना का उल्लेख तबकाते अकबरी भाग ३ में गुजरात के सुल्तानों के इतिहास के प्रसग में इस प्रकार हुआ है, "तातार खा ने ब्याना पर आक्रमण करके उस पर अधिकार जमा लिया। हजरत जन्नत आशियानी ने हिन्दाल मीर्जा को उससे युद्ध करने के लिये भेजा। मीर्जा जब ब्याना के क्षेत्र में पहुँचा तो जो लोग उसके (तातार खा के)

सुल्तान बहादुर द्वारा विद्रोह

इस समय जन्नत आशियानी ने सुल्तान बहादुर को दड देना अपने उच्च साहस का विषय बना लिया और आगरा से यह सत सकल्प करके रवाना हुए। इस बार सुल्तान बहादुर पुन गुजरात से पहुँचा और उसने चित्तौड का अवरोध कर लिया।

मीर्ज़ा कामरान का ईरानियो को पराजित करना

इसी वर्ष मीर्ज़ा कामरान लाहौर से कन्धार पहुँचा और उसे विजय कर लिया। इसका सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है कि जब शाह तहमास्प ने हिरात का राज्य अगरखार खा से ले लिया और सूफियान खलीफा को प्रदान कर दिया तो अगरखार खा साम मीर्ज़ा को जा कि शाह का भाई (३२) था, मार्ग भ्रष्ट करके कन्धार के विरुद्ध लाया ताकि कन्धार विजय के बहाने से अपने लिये एक शरण का स्थान पैदा कर ले। ख्वाजा कलाँ बेग जो कामरान मीर्ज़ा की ओर से कन्धार का हाकिम था, न किले की प्रतिरक्षा प्रारम्भ कर दी। साम मीर्ज़ा तथा अगरखार खाँ आठ मास तक कन्धार के किले का अवरोध किए रहे। क्योंकि ख्वाजा कलाँ बग अत्यधिक वीर एव अनुभवी था, अत किज़िलबाश लोग कोई सफलता न प्राप्त कर सके और कामरान मीर्ज़ा ख्वाजा की कुमक हेतु लाहौर से रवाना हुआ। कन्धार के समीप उसने साम मीर्ज़ा से युद्ध किया। ख्वाजा कलाँ बग की वीरता एव सूझबूझ के कारण विजय प्राप्त कर ली। अगरखार खा इस युद्ध में बन्दी बना लिया गया और उसकी हत्या कर दी गई। साम मीर्ज़ा हतोत्साहित एव परेशान होकर शाह के पास भाग गया। इस दुघटना की तारीख इस मिसरे से निकलती है

> ज़दा बादशहे कामरान साम रा।'[1]

बहादुर शाह द्वारा चित्तौड विजय

जब सुल्तान बहादुर का ससार विजय करने वाली पताकाओं के प्रस्थान के समाचार प्राप्त हुए तो वह आपस मे परामर्श करने लगा। उसके अधिकाश सैनिको ने कहा कि किले का अवरोध त्याग देना चाहिये। सद्र खान, जो उसका सर्वोत्कृष्ट अमीर था कहा कि, 'हम लोग काफिरो का अवरोध किए हुए हैं। यदि इस समय मुसल्मान बादशाह हमपर आक्रमण करेगा तो इस प्रकार वह काफिरो की सहायता करेगा। इस बात पर कयामत तक मुसलमान उसकी निन्दा करते रहेंगे।

पास एकत्र हुये थे, छिन्न-भिन्न हो गये। २००० अश्वारोहियों से अधिक उसके पास न रहे। कृतघ्न सेना पर अत्यधिक धन व्यय कर देने की लज्जा एव पश्चाताप के कारण सुल्तान बहादुर की सेवा में जाकर सहायता न माग सका। विवश होकर युद्ध हेतु तैयार हो गया। जब दोनों सेनाओं का सामना हुआ तो उसने मीर्ज़ा हिन्दाल की सेना के मध्य भाग पर आक्रमण किया। ३०० व्यक्तियों सहित मारा गया। मीर्ज़ा के राज्य के सहायकों को बयाना का किला प्राप्त हो गया। हज़रत जन्नत आशियानी इस विजय से फ़ाल लेकर सुल्तान बहादुर से युद्ध हेतु अग्रसर हुये। (तबकाते अकबरी भाग २, पृ० २२८)।

१ बादशाह कामरान ने मारा (पराजित किया) साम को (زده بادشاه کامران سام را)। इससे ९४२ हि० (१५३५ ३६ ई०) निकलती है।

उचित यही होगा कि हम लोग दृढ रहे, सम्भवत हजरत पादशाह इस समय आक्रमण न करें[1]।" हजरत जन्नत आशियानी जब सारगपुर में, जो मालवा के अधीन है, पहुँचे तो उनसे यह बात कही गई। इस कारण वे ठहर गए। सुल्तान बहादुर निश्चिन्त होकर चित्तौड का अवरोध किए रहा और उसे जबरदस्ती अपने अधिकार मे कर लिया। अत्यधिक लूट की धन सम्पत्ति प्राप्त हुई। इस विजय के कारण ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए उसने एक भव्य जश्न का आयोजन किया। उसे जो कुछ भी लूट की धन सम्पत्ति प्राप्त हुई थी उसने सैनिकों को बाँट दी और जन्नत आशियानी से युद्ध हेतु रवाना हुआ।

हुमायूँ तथा बहादुर शाह का युद्ध

हजरत पादशाह भी चित्तौड-विजय के समाचार पाकर उसकी ओर रवाना हुए। मालवा के अधीनस्थ मन्दू[2] के समीप दोनों सेनाएँ एक दूसरे के मुकाबले पर पहुँच गई। अभी खेमे न लग (३३) थे कि सैयिद अली खा तथा खुरासान खा, जो कि सुल्तान बहादुर की सेना के अग्र भाग (के सरदार) थे, पादशाही सेना द्वारा पराजित होकर सुल्तान बहादुर के पास पहुँच गए। गुजरात की सेना वालो के दिल टूट गए। उन्होने पडाव कर दिया। सुल्तान बहादुर ने अमीरो से युद्ध के विषय मे परामर्श किया। सद्र खा ने कहा कि, "कल पक्तिया जमाकर युद्ध करना चाहिए कारण कि चित्तौड विजय की वजह से हमारी सेना के दिल बढ हुए हैं। अभी उनकी दृष्टि मुगुल सेना पर नही पडी है।" रूमी खा ने, जो सुल्तान बहादुर के तोपखाने का मुख्य अधिकारी था, कहा कि, "पक्तियों के युद्ध मे तोप तथा बन्दूक से कोई काम नही चल पाता। बहुत बडा तोपखाना एकत्र हो गया है। इस प्रकार रूम के कैसर[3] के अतिरिक्त किसी के पास इतना बडा तोपखाना नही है अत यह उचित होगा कि सेना के चारो ओर खाई खोद ली जाय और नित्यप्रति युद्ध किया जाय। जब मुगुल सेना सामने आयेगी तो तोप तथा तुफग द्वारा उसमें से अधिकाश नष्ट हो जायगी।" सुल्तान

१ गुजरात के सुल्तानों के इतिहास के प्रसग में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है "सुल्तान बहादुर पुन चित्तौड का किला विजय करने के उद्देश्य से अत्यधिक सेना एव किला विजय करने की सामग्री लेकर चल खड़ा हुआ था। जब वह चित्तौड के किले के नीचे पहुँचा तो उसे तातार खां की हत्या एव हजरत जन्नत आशियानी के आक्रमण के समाचार प्राप्त हुये। वह अत्यधिक व्याकुल हो कर परामर्श करने लगा। अधिकांश अमीरों का यह मत था कि अवरोध त्याग कर (हुमायू से) युद्ध हेतु प्रस्थान करना चाहिये। सद्र खा ने, जो अमीरों में सबमे अधिक प्रतिष्ठित था, निवेदन किया कि हम लोग काफिरों को घेरे है। यदि इस समय मुसलमानों का बादशाह हमसे युद्ध करने आता है तो यह बात काफिरों की सहायता समझी जायगी और क़यामत तक मुसलमान लोग इस बात की निन्दा करते रहेंगे। राज्य के लिए यही उचित है कि हम लोग अवरोध को न त्यागें। अधिक विश्वास यह है कि वे इस समय हम पर आक्रमण न करेंगे। हजरत जन्नत आशियानी जब सारगपुर पहुँचे तो उनसे इस परामर्श के विषय में निवेदन किया गया। वे कुछ दिन तक ठहरे रहे यहां तक कि सुल्तान बहादुर ने साबात तैयार करवा कर क़िले पर जबरदस्ती अधिकार जमा लिया। बहुत बड़ी सख्या में राजपूत मार डाले गये।" (तबक़ाते अकबरी भाग ३, पृ० २२८-२२९)।

२ मांडू।

३ कुस्तुन्तुनिया (कॉस्टैन्टीनोपुल के शहंशाह को अरबी, फ़ारसी इतिहासों में 'क़ैसर' लिखा जाता था।

बहादुर ने यह राय पसन्द कर ली। अपनी सेना के शिविर के चारों ओर खाई खुदवा दी। दो मास तक दोनों सेनायें एक दूसरे के समक्ष पडाव किए रहीं। अधिकांश दिनों में दोनों ओर के वीर निकल कर युद्ध करते थे। मुग़ल सैनिक तोप तथा तुफग के समक्ष बहुत कम जाते थे।

जन्नत आशियानी ने सनायें नियुक्त करके सुल्तान बहादुर के लश्कर को चारों ओर से घेर लिया और अनाज, चारा तथा ईंधन पहुँचना रोक दिया। जब कई दिन इस प्रकार व्यतीत हो गए तो सुल्तान बहादुर के शिविर में अकाल पड गया और अनाज अप्राप्य हो गया। जो खाद्य-सामग्री उस समय थी वह समाप्त हो गई। कोताह सलाह[1] गुजराती मुग़लों के ज़िरह बक्तर भेदने वाले बाणों के भय से खाद्य सामग्री लाने के लिये दूर नहीं जा सकते थ। खाद्य सामग्री के अभाव के कारण बहुत बडी सख्या मे घोडे, ऊँट तथा आदमी नष्ट हो गए और गुजरात की सेना निराश हो गई। सुल्तान बहादुर ने जब यह समझ लिया कि अब अधिक ठहरने पर वह बन्दी बना लिया जायगा तो वह अपने पाँच विश्वासपात्र अमीरों के साथ, जिनमें एक बुरहानपुर का हाकिम था और दूसरा माल्वा का हाकिम कादिर शाह था, सरापरदे के पीछे से बाहर निकला और मन्दू की ओर भाग गया। (३४) जब सेना वालों को सुल्तान के पलायन के समाचार प्राप्त हुए तो उनमें स प्रत्येक किसी न किसी ओर भाग गया। इस घटना की तिथि ज़िल्ले बहादुर[2] शाह के अक्षरों स निकलती है।

सक्षेप में, हज़रत जन्नत आशियानी शत्रुओं के पलायन से अवगत होकर उनका पीछा करने के लिए सवार हुए। वे सद्र खा के पास, जो बहुत बडी सेना लिए हुए मन्दू के मार्ग से जा रहा था, पहुँचे। उनका विचार था कि वह सुल्तान बहादुर है। उन्होंने उस पर आक्रमण कर दिया। उनके साथ ३-४ हज़ार से अधिक सैनिक थे। शेष सेना वाले लूटमार म व्यस्त थ। गुजरात की सेना के बहुत से लोगों की हत्या कर दी गई और उन्होंने मन्दू के किले तक उसका पीछा किया। सुल्तान बहादुर मन्दू के किले में बन्द हो गया। कई दिन तक अवरोध होता रहा। अन्त मे विजयी सेना एक रात्रि में किले में प्रविष्ट हो गई। सुल्तान बहादुर सो रहा था कि कोलाहल होने लगा। गुजरात वाले व्याकुल हो गए और उनमें से प्रत्येक किसी न किसी ओर भाग गया। सुल्तान बहादुर ५–६ सवारों को लेकर गुजरात के मार्ग की ओर चल दिया। सद्र खा तथा सुल्तान आलम[3] न सुङ्कर[4] नामक किले की ओर, जो कि मन्दू के किले का अरक[5] है, शरण ली। एक दिन उपरान्त वे बाहर निकले। सुल्तान आलम एव सद्र खा को बन्दी बनाकर (हज़रत जन्नत आशियानी के समक्ष) प्रस्तुत किया गया। सद्र खा जो कि घायल था बन्दी बना दिया गया और सुल्तान आलम की एडी की नस[6] काट डाली गई। तदुपरान्त सद्र खा जन्नत आशियानी की सरकार मे सेवक हो गया।

१ गुजराती जिनके अस्त्र शस्त्र ऐसे न थे जिनसे दूर के शत्रु को हानि पहुँचाई जा सके।
२ ظل بهادر जल = ७३० , बहादुर = २१२ (९४२ हि० / १५३५—३६ ई०)।
३ आलम खां लोदी।
४ 'सोनगढ़' अधिक शुद्ध है।
५ भीतरी किला।
६ "पै बुरीदन्द" (कुछ अंग्रेज़ी अनुवादों में 'पाव काट डाले' किन्तु यह अशुद्ध है) इसका अर्थ घुड नस अथवा एड़ी की नस है।

(हज़रत पादशाह) तीन दिन उपरान्त किले के नीचे आये और गुजरात की ओर रवाना हो गए। सुल्तान बहादुर उस खजाने तथा जवाहिरात, जो कि चाम्पानीर के किले में थे, को लेकर अहमदाबाद की ओर रवाना हो गया। व जब चाम्पानीर के किले के समीप पहुँचे तो सुल्तान बहादुर मुकाबला न कर सका और अहमदाबाद से कम्बायत[1] की ओर भाग गया। अहमदाबाद नगर मुग़लों के अधिकार में आ गया और नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया। लूट की अपार धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई। वे पुन (३५) शीघ्रातिशीघ्र सुल्तान बहादुर का पीछा करने के लिए रवाना हुए। जब सुल्तान बहादुर कम्बायत पहुँचा तो थके हुए घोड़ों के स्थान पर ताज़ा दम घोड़े ले लिये और दीप[2] बन्दरगाह की ओर चल दिया। हज़रत (पादशाह) उसी दिन, जिस दिन बहादुर ने प्रस्थान किया था, कम्बायत पहुँचे। दूसरे दिन के अन्त में एक व्यक्ति[3] न्याय याचना करने वालों के समान मार्ग में उपस्थित हुआ और निवेदन किया कि, "आज की रात इस विलायत के चारों ओर के लोग छापा मारेंगे।" हज़रत (पादशाह) ने पूछा कि, "इस लश्कर के प्रति तेरी यह कृपा किस प्रकार उत्पन्न हुई?" उसने उत्तर दिया "मेरा पुत्र इस सेना में बन्दी है। मैं चाहता हूँ कि आपके ऊपर कोई हक़ सिद्ध करके अपने पुत्र को मुक्त करा लूँ।" हज़रत ने वह रात्रि पूर्ण रूप से सावधान रहकर व्यतीत की। प्रातःकाल ५-६ हज़ार प्यादों ने छापा मारा। सेना वाले, जो सावधान थे, खेमों से निकले और शिविर के बाहर एकत्र हुए। शिविर में जो कुछ था, वह नष्ट हो गया। सूर्योदय के उपरान्त मुग़लों ने गुजरातियों को चारों ओर से घेर कर उनमें से बहुतों की हत्या कर दी। जाम फ़ीरोज़, जो इससे पूर्व ठट्टा[4] का हाकिम था और अरगून सेना से पराजित होकर गुजरात पहुँच गया था तथा जिसने अपनी पुत्री का विवाह सुल्तान बहादुर से कर दिया था, सुल्तान बहादुर की पराजय के समय हज़रत जन्नत आशियानी की सेना द्वारा बन्दी बना लिया गया था। इस रात्रि को उसके रक्षकों ने इस भय से कि कहीं वह भाग न जाय, उसकी हत्या कर दी। इस प्रकार सद्र खाँ गुजराती, जो सुकर के किले में उपस्थित हुआ था, मार डाला गया[5]।

दूसरे दिन विजयी शिविर ने चाम्पानीर के किले की ओर प्रस्थान करके किले को घेर लिया। इख्तियार खाँ ने, जो कि किले का प्रबन्धक था, किले की प्रतिरक्षा का प्रयत्न किया। एक दिन हज़रत (जन्नत आशियानी) किले के चारों ओर सैर कर रहे थे कि उनकी दृष्टि कुछ लोगों पर पड़ी जो कि जंगल के बाहर आ रहे थे। वे लोग सेना को देखकर भय के कारण पुन जंगल में प्रविष्ट हो गए। हज़रत जन्नत आशियानी ने कुछ लोगों को उनका पीछा करने के लिये भेजा। उनमें से कुछ बन्दी बना लिए गए। ज्ञात हुआ कि वे आसपास के ज़मींदारों की सहायता से किले में अनाज तथा तेल घी[6] ले जाते थे। उस स्थान पर पर्वत बड़ा ही ऊँचा, सीधा तथा तलवार की धार के समान पैना था। जन्नत आशियानी स्वयं उस स्थान पर जहाँ से अनाज ऊपर खींचा जाता था पहुँचे

१ खम्बायत, कैम्बे।
२ नवल किशोर द्वारा प्रकाशित पोथी में 'डियु'।
३ अकबर नामा के अनुसार 'वृद्धा'।
४ अन्य पोथियों में 'धत्ता' 'यट्टा' तथा 'तत्ता'।
५ यह स्पष्ट नहीं कि वह हुमायूँ की सेना द्वारा मारा गया अथवा बहादुर शाह की।
६ रोग़न।

(३६) और सावधानी से उस स्थान का निरीक्षण करके लौट गए। उन्होंने सोचा कि पर्वत के दृढ होने के कारण किले वाले इस ओर से निश्चिन्त होंगे और प्रतिरक्षा एवं पहरे का प्रबन्ध कम होगा। अधिक संख्या में फ़ौलाद के खूँटे मँगवाकर लगवाये गए। दिन में किले के चारों ओर युद्ध होता रहा और रात्रि में तीन सौ व्यक्ति उसी स्थान पर पहुँचे और फ़ौलादी खूँटे किले के दायें और बायें लगाते हुए ऊपर चढ़ गए। क्योंकि किले वाले इस ओर से निश्चिन्त थे अतः उन्हें इसकी सूचना न हुई। ३९ व्यक्ति, जिनमें से अन्तिम बैराम खाँ था, जब ऊपर पहुँच गए तो हज़रत (जहाँबानी) स्वयं भी चढ़ गए।

शेर

'वीरता मनुष्य का आभूषण है,
यह आदमी के गुणों को प्रदर्शित करती है।
प्राणों से खेलना वीरों के लिए गर्व का विषय होता है,
साहसी लोग सिर को ढाल बनाना गर्व का विषय समझते हैं।'

सूर्योदय तक सभी तीन सौ व्यक्ति किले के भीतर प्रविष्ट हो गए। उसी स्थान पर किले वालों की खाद्य-सामग्री, घी-तेल एवं असबाब का भंडार था। जब उजाला हो गया तो लश्कर वाले किले की ओर रवाना हुए। हज़रत तकबीर[1] कहते हुए द्वार पर पहुँचे और सेना वालों के लिये द्वार खोल दिया। इतना दृढ किला विजय हो गया। इख्तियार खाँ किले के अरक में, जो मूलिया[2] के नाम से प्रसिद्ध है, शरण हेतु चला गया। किले के अधिकांश लोग मार डाले गए और बहुत सी स्त्रियाँ तथा युवक किले के नीचे कूद कर नष्ट हो गए। इख्तियार खाँ, यह आश्वासन लेकर कि उसे कोई हानि न पहुँचाई जायगी, किले से बाहर निकला और उसने हज़रत से भेंट की। क्योंकि इख्तियार खाँ गुजरात वालों में अपनी श्रेष्ठता के लिए प्रसिद्ध था अतः उसे प्रोत्साहन देकर दरबार के नदीमों[3] में सम्मिलित कर लिया गया। गुजरात के पादशाहों के खजाने, जो उन्होंने वर्षों में एकत्र किए थे, अधिकार में कर लिये गए। सेना वालों को धन बाँटा गया। रूम, फिरंग[4], खिता[5] एवं संसार के अन्य भागों के जो वस्त्र गुजरात के हाकिमों के खजाने में एकत्र थे, वे नष्ट हो गए।

(३७) इस कारण कि अत्यधिक धन सम्पत्ति एवं सामग्री सेना वालों को प्राप्त हो गई थी, उस वर्ष कोई भी व्यक्ति गुजरात की तहसील[6] के लिए न पहुँचा। गुजरात की प्रजा ने सुल्तान बहादुर के पास आदमी भेजकर संदेश प्रेषित किया कि क्योंकि गुजरात के अधिकांश परगनों में मुग़ुल गुमाश्ते[7] नहीं हैं अतः यदि कोई सेना नियुक्त कर दी जाय तो हम अपने माले वाजिबी[8]

१ 'अल्लाहो अकबर' का नारा।
२ आईने अकबरी के अनुसार 'पावह'।
३ मुसाहिबों।
४ कुस्तुन्तुनिया एवं योरप।
५ चीन।
६ राजस्व वसूल करने।
७ राजस्व वसूल करने वाले, एजेंट।
८ जो राजस्व अदा करनी है।

को अदा कर दे।" सुल्तान बहादुर ने अपने दास एमादुल मुल्क[1] को, जो वीरता के लिए प्रसिद्ध था, इस कार्य हेतु भेजा। एमादुल मुल्क ने सेना एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया। जब वह अहमदाबाद के समीप पहुँचा तो अत्यधिक सैनिकों एवं जमीदारों का लश्कर उसके पास एकत्र हो गया। इस प्रकार ५० हजार अश्वारोहियों का अनुमान लगाया गया और उसने अहमदाबाद में पड़ाव करके राजस्व वसूल करना प्रारम्भ कर दिया।

चाम्पानीर की विजय के उपरान्त जब यह समाचार जन्नत आशियानी को प्राप्त हुए तो उन्होंने गुजरात की लूट की धन-सम्पत्ति में से अत्यधिक धन पुन: सिपाहियों को बाँट दिया और चाम्पानीर को तरदी बेग को सौंप कर स्वयं अहमदाबाद की ओर रवाना हो गए। मीर्जा अस्करी, मीर्जा यादगार नासिर तथा हिन्दू बेग को सेना के अग्र भाग में नियुक्त करके अपनी (सेना से) एक मंजिल आगे भेज दिया। महमूदाबाद के समीप, जो अहमदाबाद से १२ कुरोह पर है, एमादुलमुल्क ने मीर्जा अस्करी से युद्ध किया और पराजित हुआ। दोनों ओर से बहुत से लोग मारे गए। इस तुच्छ ने अपने पिता से, जो उस समय मीर्जा अस्करी का वज़ीर था, सुना है कि दोपहर के समय हवा बड़ी गर्म हो गई थी। गुजरात वाले अहमदाबाद से बड़ी तेजी से पहुँचे। मीर्जा यादगार नासिर मीर्जा अस्करी के दाईं ओर आधे कुरोह पर पड़ाव किए हुए था। अमीर हिन्दू बेग भी इतनी ही दूर पर मीर्जा के बाईं ओर पड़ाव किये था। गुजराती इतनी तेज़ी से पहुँचे कि मीर्जा को सेना को सुव्यवस्थित करने का अवसर न मिला। कुछ लोगों को लेकर वह काटों के खारबन्द[2] में खड़ा हो गया। गुजरात वालों ने मीर्जा से युद्ध न किया और लूटमार में व्यस्त हो गए तथा अत्यधिक धन सम्पत्ति लेकर छिन्न भिन्न हो गए। इस समय मीर्जा यादगार नासिर तथा मीर[3] हिन्दू बेग (३८) सेनायें सुव्यवस्थित करके प्रकट हुए। गुजराती लोग भाग खड़े हुए। मीर्जा अस्करी भी उस खारबन्द के बाहर निकला और अपनी पताका तथा नक्कारे को प्रकट किया। उन लोगों ने अहमदाबाद तक गुजरातियों का पीछा किया। दो हज़ार से अधिक आदमी उस युद्ध में मारे गए।

संक्षेप में, विजय उपरान्त हजरत जन्नत आशियानी ने अहमदाबाद तथा उसके अधीनस्थ स्थान मीर्जा अस्करी को जागीर में दे दिए तथा नहरवाला पटन मीर्जा यादगार नासिर को प्रदान कर दिया। बरौज[4] मीर हिन्दू बेग तथा चाम्पानीर तरदी बेग को और कासिम हुसेन सुल्तान को बरौदा प्रदान हुआ। खान जहाँ शीराजी एवं अन्य अमीर उसकी कुमक हेतु नियुक्त किए गए। जन्नत आशियानी सफलता एवं सौभाग्य के साथ वापस हुए तथा बुरहानपुर पहुँचे और वहाँ से मन्दू चले गए।

कुछ समय उपरान्त सुल्तान बहादुर के एक अमीर ने नौसारी की ओर, जो सूरत के समीप है, एक दृढ़ स्थान बना लिया और सेना एकत्र करके नौसारी को अधिकार में कर लिया।

१ फिरिश्ता के अनुसार 'एमादुल मुल्क चरकस', चिंगीज़ खाँ मक़तूल (जिसकी हत्या करा दी गई हो) का पिता। (तारीखे फिरिश्ता मक़ाला २, पृ० २१५)।
२ काँटों इत्यादि से प्रतिरक्षा हेतु जो घेरा तैयार किया जाता था।
३ उसे मीर तथा अमीर दोनों लिखा गया है।
४ भड़ौच।

रूमी खा[1] को सूरत के बन्दरगाह से खाने जहाँ के साथ भरौच भेजा गया। कासिम हुसेन सुल्तान मुकाबला न कर सका और चाम्पानीर भाग गया। इसी प्रकार गुजरात वालों ने चारों ओर से विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। प्रत्येक दिशा से उपद्रव उठ खड़ा हुआ।

संयोग से मीर्ज़ा अस्करी ने मदिरा-पान की सभा में नशे में कहा कि, "मैं बादशाह जिल्लल्लाह[2] हूँ।" मीर्ज़ा के कोका गज़नफर ने, जो महदी कासिम खा का भाई था, धीरे से कहा कि, "हो, लेकिन अधिक नशे में हो।" जो लोग उसके पास बैठे थे वे हँसने लगे। मीर्ज़ा हँसने का कारण ज्ञात करके बड़ा क्रोधित हुआ और गज़नफर को बन्दीगृह में डाल दिया। वह कुछ दिन उपरान्त बन्दीगृह से भाग कर सुल्तान बहादुर के पास पहुँचा और उसे अहमदाबाद पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित करने लगा और कहा कि, "मुझे मुग़लों के विचारों की सूचना है, सब लोग भागने पर तुले हैं (३९) और बहाने की खोज में हैं। मुझे बन्दी बना कर आप मुग़लों पर आक्रमण करें। यदि मुग़ल युद्ध करें तो मेरी हत्या करा दें।" सुल्तान बहादुर ने सूरत की विलायत के जमींदारों से मिलकर सेना एकत्र की और अहमदाबाद की ओर रवाना हो गया।

उस समय अमीर हिन्दू बेग ने मीर्ज़ा अस्करी को इस बात पर तैयार करना चाहा कि वह अपने नाम का खुत्बा एवं सिक्का चला दे तथा सल्तनत की पताका बलन्द करे[3]। सैनिक भी (उन्नति की) आशा में उसकी सेवा में प्राण त्यागेंगे। मीर्ज़ा अस्करी ने यह बात स्वीकार न की और इसके लिए तैयार न हुआ। अन्त में अत्यधिक कहने सुनने के बाद यह निश्चय हुआ कि मीर्ज़ा अस्करी, मीर्ज़ा यादगार नासिर, अमीर हिन्दू बेग तथा अन्य अमीर अहमदाबाद से निकलकर असावल[4] के पीछे सरकोज[5] के सामने सेना के शिविर लगायें। सुल्तान बहादुर ने भी सरकोज में पड़ाव करके मुकाबला किया। संयोग से मीर्ज़ा अस्करी की सेना से एक तोप द्वारा सुल्तान बहादुर की बारगाह गिर पड़ी। सुल्तान बहादुर ने व्याकुल होकर गज़नफर को अपनी सेवा में बुलवाया और उसकी हत्या करानी चाही। गज़नफर ने कहा कि, "युद्ध तक मुझे क्षमा किया जाय कारण कि मुझे समाचार प्राप्त हुए हैं कि मीर्ज़ा अस्करी रात्रि में पलायन कर जायेगा।" जब रात हो गई तो मीर्ज़ा अमीरों के साथ फालतू खेमों को छोड़कर चाम्पानीर की ओर रवाना हो गया और दस कुरोह पर पड़ाव किया। सुल्तान बहादुर ने उसका पीछा करके अपने आपको वहाँ पहुँचा दिया।

१ रूमी खा की उपाधि उस्मानियों के तुर्कों के राज्य के उन अधिकारियों को सामान्यतः दी जाती थी जो तोप इत्यादि चलाने में कुशल होते थे किन्तु यह उपाधि केवल उन्हीं लोगों तक सीमित न थी। यह रूमी खां, रूमी खा खुदावन्द खां नहीं जो मन्दू की पराजयोपरान्त सुल्तान बहादुर के पास से भाग कर हुमायूँ के पास चला गया था और जिसने चुनार विजय में महत्वपूर्ण भाग लिया। यह रूमी खां सूरत के किले का निर्माता था और उसका नाम 'सफ़र' था। (B De. *The Tabaqat-i-Akbari* of Khwajah Nizam-ud Din Ahmad, Vol II, Calcutta, 1936, p 58 note 2)

२ ईश्वर की छाया।

३ बादशाह घोषित कर दे।

४ अहमदाबाद के समीप एक स्थान।

५ यह नाम विभिन्न हस्तलिपियों में विभिन्न रूप से लिखा है. सरकज, हरकज, सरकज़, सरखज, सरगंज।

उस समय मीर्ज़ा अस्करी तथा अमीर लोग सुल्तान बहादुर से युद्ध हेतु सवार हुए और हरकतिल मज़बूही[1] करके लौट गए।

जब वे चाम्पानीर पहुँचे तो तरदी बेग ने विरोध एवं विद्रोह प्रारम्भ कर दिया तथा किला बन्द करके बैठ रहा। हज़रत जन्नत आशियानी को सूचना भेजी कि मीर्ज़ा अस्करी ने विद्रोह करना निश्चय कर लिया है। उसकी आकांक्षा यह है कि वह आगरा पहुँच कर सल्तनत की पताका बलन्द करे। मीर्ज़ा अस्करी के अहमदाबाद से पलायन करने के पूर्व सख़ुन साज़ों एवं वाक़ेआ तलबों[2] ने वह सब बातें, जो मीर हिन्दू बेग ने मीर्ज़ा अस्करी से पादशाह होने के सम्बन्ध में कही थी और (४०) जिन्हें यद्यपि मीर्ज़ा ने स्वीकार न किया था, हज़रत जन्नत आशियानी को लिख भेजीं और सूचना दी कि मीर्ज़ा अस्करी विद्रोह करना चाहता है।

कामरान का कन्धार पर पुनः अधिकार जमाना

संक्षेप में, हज़रत जन्नत आशियानी शीघ्रातिशीघ्र मन्दू से आगरा की ओर रवाना हुए। मार्ग में मीर्ज़ा अस्करी सेवा में उपस्थित हुआ और वास्तविक स्थिति के विषय में निवेदन किया। सुल्तान बहादुर ने चाम्पानीर को तरदी बेग से संधि द्वारा ले लिया।

इस वर्ष के प्रारम्भ में शाह तहमास्प, मीर्ज़ा साम का बदला लेने के लिए कन्धार के विरुद्ध पहुँचा। ख़्वाजा कलाँ बेग किले को ख़ाली करके लाहौर चला गया। कहा जाता है कि ख़्वाजा कलाँ बेग ने चीनीख़ाना[3] अत्यधिक सजाकर तैयार किया था। पलायन के समय उत्तम फ़र्श एवं सुन्दर बरतन सजे हुए छोड़कर चला गया। शाह को वे बहुत पसन्द आये। शाह कन्धार को अमीरों को सौंपकर एराक़ चला गया। मीर्ज़ा कामरान ने पुनः लाहौर से कन्धार पर चढ़ाई की। तुर्कमान लोग मुक़ाबला न कर सके। अवरोध के समय हानि न पहुँचाये जाने का आश्वासन लेकर किले से निकले और एराक़ चले गए। कन्धार पर पुनः अधिकार प्राप्त हो गया।

मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा द्वारा अशान्ति उत्पन्न करने का असफल प्रयास

जब हज़रत जन्नत आशियानी आगरा पहुँचे तो एक वर्ष वहाँ ठहरे रहे एवं आनन्द मंगल तथा आमोद-प्रमोद में समय व्यतीत करते रहे। इससे पूर्व सुल्तान बहादुर ने अपनी पराजय के समय मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा को इस आशय से हिन्द[4] भेज दिया था कि वह वहाँ पहुँचकर अशान्ति उत्पन्न करे। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा ने, जिस समय मीर्ज़ा कामरान कन्धार गया हुआ था, लाहौर का अवरोध कर लिया था। जब उसे हज़रत पादशाह के लौटने के समाचार प्राप्त हुए तो वह पुनः गुजरात चला गया।

१ हरकतिल मज़बूही —जिस प्रकार ज़िबह के समय जानवर अथवा पक्षी फड़फड़ाते हैं। इसका अर्थ कमज़ोर एवं अन्तिम कोशिश है।

२ षड्यन्त्रकारियों एवं षड्यन्त्रकारियों से तात्पर्य है।

३ चीन का घर, ऐसा घर जिसमें चीन के बरतन सजे हों।

४ उत्तरी हिन्दुस्तान से तात्पर्य है।

शेर खां से युद्ध

क्योंकि शेर खां अफ़गान ने बिहार, जौनपुर तथा चुनार के किले को अपने अधिकार में कर लिया था और जितने समय हज़रत जन्नत आशियानी गुजरात तथा मालवा में थे, उसने पूर्ण शक्ति एवं अधिकार प्राप्त कर लिया था अतः हज़रत जन्नत आशियानी ने उसके विद्रोह के दमन को अत्यधिक महत्वपूर्ण समझकर १४ सफ़र ९४२ हि०[1] (१४ अगस्त १५३५ ई०) को एक (४१) सुसज्जित सेना सहित शेर खां से युद्ध हेतु प्रस्थान किया। जब विजयी पताकायें चुनार के किले के समीप पहुँचीं तो रूमी खां, जिसने सुल्तान बहादुर के पास से उनकी सेवा में पहुँचकर आश्रय प्राप्त किया था, ने उस किले की विजय का बीड़ा उठाया। हज़रत ने उसे पूर्ण अधिकार देकर आदेश दिया कि जो कुछ भी वह किले की विजय हेतु माँगे वह एकत्र किया जाय। रूमी खां ने किले की समस्त दिशाओं का निरीक्षण करके पता लगाया कि किले से मिले हुए खुश्की के जो भाग हैं वे अत्यन्त दृढ़ हैं। किसी उपाय से उस ओर से किला विजय नहीं हो सकता। तदुपरान्त उसने नदी की ओर से एक बहुत बड़ी नौका तैयार करके उसके ऊपर मुकाबिल कोब तैयार किया। जब मुकाबिल कोब[2] ऊँचा हो गया और एक नौका उसका बोझ न उठा सकी तो उसने एक नौका इस ओर से और एक नौका उस ओर से ले जाकर प्रथम नौका में बाँधी और कोब को पुनः उठाया। इसी प्रकार जब नौका बोझ न उठा पाती तो वह अन्य नौका सहायता हेतु ले आता, यहाँ तक कि किले का सरकोब[3] तैयार हो गया। उसने मुकाबिल कोब को ले जाकर किले से मिला दिया और किला विजय हो गया। किले के सरदारों ने जब यह देखा कि कोई सफलता सम्भव नहीं तो वे एक रात्रि में नदी से नौका पर बैठकर बाहर चले गए। हज़रत जन्नत आशियानी की ओर से रूमी खां नाना प्रकार से सम्मानित हुआ। इस किले में जो तोपची थे, सम्मानित आदेशानुसार उनके हाथ कटवा दिए गए[4]।

१ यह तारीख शुद्ध नहीं। हुमायूं ने चाम्पानीर पर ९ सफ़र ९४२ हि० (نه شهر صفر بود) (नुह शहरे सफ़र बूद) को अधिकार जमाया और चुनार का अवरोध वहां पहुँच कर १४ शाबान ९४४ हि० को प्रारम्भ किया।

२ सरकोब, आगे की पंक्तियों में इसे मुकाबिल कोब कहा गया है। क्योंकि किला विजय करने के लिये खुश्की की ओर से कोई सरकोब न तैयार किया जा सकता था अतः नदी की ओर से नौकाओं पर सरकोब तैयार करके किले के समीप दीवारों को तोड़ने के लिये भेजा गया। जौहर ने इस विजय का एक अन्य सविस्तार विवरण दिया है।

३ इस स्थान पर इसी को सरकोब लिखा है।

४ इस बीच में शेर खां ने अवसर पाकर बिहार की विलायत को साफ़ करके अत्यधिक लश्कर एकत्र कर लिया था और अत्यधिक शक्ति एवं प्रभुत्व प्राप्त कर लिया। जब हज़रत जन्नत आशियानी गुजरात के अभियान से लौट कर आगरा पहुँचे और शेर खां के प्रभुत्व के समाचार उनके सम्मानित कानों तक पहुँचे तो उन्होंने उसके विनाश को अत्यधिक महत्त्वपूर्ण समझ कर विजयी पताकाओं को चुनार की ओर भेजा। शेर खां, गाज़ी सूर एवं एक अन्य सेना को चुनार के किले की प्रतिरक्षा हेतु छोड़ कर भरकुन्दा की पहाड़ियों की ओर चला गया। जब चुनार के किले के अवरोध में छः मास व्यतीत हो गये, रूमी खां ने जो बादशाही तोपखाने का प्रबन्धक था, नदी में सरकोब तैयार करके किले वालों को परेशान कर दिया। किला संधि द्वारा नित्य प्रति उन्नत राज्य के अधिकारियों को, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, प्राप्त हो गया।

हज़रत जन्नत आशियानी दोस्त बेग को किले में छोड़ कर शेर खां से युद्ध हेतु रवाना हुये। इस बीच में जब कि जन्नत आशियानी, चुनार के अवरोध में संलग्न थे, शेर खां ने अपने पुत्र जलाल खां एवं ख़वास खां एवं अपनी

शेर खा अफगान उस समय बगाले के हाकिम[1] से युद्ध कर रहा था। बगाले का हाकिम घायल होकर उसके सामने से भाग खड़ा हुआ और ससार को शरण प्रदान करने वाले दरबार में पहुँचा। जन्नत आशियानी निरन्तर यात्रा करते हुए बगाले की ओर रवाना हुए। शेर खा ने अपने पुत्र जलाल खा तथा ख्वास खा[2] को गढी[3] की, जो कि बगाले के मार्ग में है, प्रतिरक्षा हेतु भेजा। यह गढी बडा ही दृढ स्थान है। इसके एक ओर ऊँचे-ऊँचे पवत और बडे-बडे जगल हैं जिनका पार करना किसी प्रकार सम्भव नही और दूसरी ओर गगा नदी है। यह गढ़ी बिहार तथा बगाले को जोडती है[4]।

(४२) हज़रत जहाँबानी ने जहाँगीर बग मुग़ुल को गढी के विरुद्ध नियुक्त किया। हिन्दाल मीर्ज़ा मुगेर तक विजयी रिकाब के साथ रहा। तदुपरान्त मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, उलुग मीर्ज़ा एव शाह मीर्ज़ा क विनाश हेतु, जो हज़रत पादशाह के पास से भागकर राज्य में विघ्न डाल रहे थे, आगरा का ओर रवाना हुआ। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा जब गुजरात में कोई सफलता न प्राप्त कर सका तो उसने हज़रत पादशाह के पास दूत भजे और यह आश्वासन प्राप्त किया कि उसे कोई हानि न पहुँचाई जायगी। तदुपरान्त वह दरबार की आर रवाना हुआ। जहाँगीर बेग जब गढी पहुँचा तो जलाल खा वल्द शर खा एव ख्वास खा शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए सेना के पडाव करने के समय पहुँच गए। जहाँगीर बेग को पराजित कर दिया। जहाँगीर बेग, घायल होकर (हज़रत पादशाह की) सेवा में उपस्थित हुआ। हज़रत जहाँबानी रवाना होकर गढी क द्वार पर पहुँचे। जलाल खा तथा ख्वास खा मुकाबला न कर सके और भाग खडे हुए। हज़रत जहाबानी गढी से होते हुए बगाले पहुँचे। शेर खा मुकाबला न कर सका और झारखड के मार्ग से रोहतास[5]

अधिकाश सेना को बगाला विजय हेतु भेज कर उसे अपने अधिकार में कर लिया। जब जन्नत आशियानी गढ़ी में, जो बगाला की सीमान्त पर है, पहुँचे तो जहाँगीर कुली बेग एव अन्य अमीरों को आगे भेजा। जलाल खां [वल्द शेर खां ने, जो गढ़ी में था, पादशाह क अमीरों से युद्ध किया और विजय प्राप्त कर ली। जन्नत आशियानी अन्य बार सेनायें भेज कर स्वयं निकट पहुँच गये और गढी पर विजय प्राप्त कर ली गई। जलाल खां] अपने पिता के पास पहुँचा। जब जन्नत आशियानी गढ़ी को पार कर चुके तो शेर खां, गौड नगर को खाली करके झारखन्द की ओर चला गया। [तबकाते अकबरी भाग २ 'शेर शाह', पृ० ९९ १००]।

१ महमूद शाह अथवा सुल्तान महमूद।

२ 'शेर खां पिसराने खुद जलाल खां व ख्वास खा (शेर खां ने अपने पुत्रों जलाल खा व ख्वास खा)'। पृ० ९९ पर वाक्य अधिक स्पष्ट है, "शेर खा, जलाल खा एव पिसरे खुद व ख्वास खां (शेर खां ने अपने पुत्र जलाल खां एवं ख्वास खा को)"। ख्वास खां, शेर खां का पुत्र न था। बदायूनी ने उसे "मशहूर गुलामे शेर खा" लिखा है।

३ तिलिया गढ़ी।

४ 'वास्ता अस्त'।

५ शेर शाह के इतिहास के सम्बन्ध में तबक़ाते अकबरी में आगे के पृष्ठों में लिखा है, "शेर खां गौड नगर को खाली करके झारकड (झारखड) की ओर चला गया। उसने रोहतास के क़िले के राजा को संदेश भेजा कि, 'क्यों क मुग़ुल लाग हमारा पीछा करते हुये आ रहे हैं अत मेरे परिवार वालों को क़िले में स्थान दे दो।' उसे बहला फुसला कर उसने राज़ी कर लिया। उसने १,००० डोलियां तैयार कराई और प्रत्येक डोली में एक चुने हुये वीर अफ़ग़ान जवान को अस्त्र-शस्त्र देकर क़िले के ऊपर भेज दिया। कुछ डोलियों में जो सामने थीं स्त्रियां बैठा दीं। जब द्वारपाल लोग डोलियों की जांच करने लगे तो शेर खां ने राजा को संदेश भेजा कि 'मैं स्त्रियों को किसी को नहीं दिखा सकता...

पहुँचा। हजरत जहाँबानी तीन मास तक बगाले[1] मे ठहरे रहे और गौड नगर का नाम जन्नताबाद रख दिया।

मीर्जा हिन्दाल ने ९४३ हि० (१५३६-३७ ई०) मे आगरा में अवसर पाकर षड्यन्त्रकारियो के बहकाने पर विरोध प्रारम्भ कर दिया। शख बहलूल को, जो उस समय के बहुत बडे सन्तो में से था और दावते इसमा[2] के ज्ञान मे अद्वितीय था और हजरत जहाँबानी को जिसके प्रति प्रेम एव श्रद्धा थी, षड्यन्त्रकारियों के बहकाने से, जो यह चाहते थे कि मीर्जा को हजरत जन्नत आशियानी की दृष्टि में निन्दनीय बना दें, इस बहाने से कि वह अफगानो से मिला हुआ है, हत्या करा दी। उसने अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया। जब यह समाचार हजरत जन्नत आशियानी को प्राप्त हुए तो उन्होंने बगाले को जहाँगीर बग को सौंप दिया और पाँच हजार चुने हुए व्यक्ति उसकी सहायतार्थ नियुक्त करके आगरा की ओर प्रस्थान किया। मुहम्मद जमान मीर्जा इब्न बदी-उज्जमान मीर्जा उस समय गुजरात से अत्यधिक लज्जा प्रदर्शित करता हुआ सेवा में पहुँचा। हजरत (पादशाह) (४३) ने उसके अपराध क्षमा कर दिये और एक बात भी न कही। मार्ग की दूरी तथा बगाले की जलवायु की खराबी के कारण अधिकाश सिपाहियो के घोडे नष्ट हो गए और वे बडी अव्यवस्थित दशा में चौसा पहुँचे। जो अमीर जौनपुर, चुनार तथा अवध में रह गए थे वे सेवा में उपस्थित हुए। शेर खा मुगल सेना की परेशानी से परिचित होकर निकट पहुँचा। हजरत ने उसके समक्ष पडाव कर दिया और तीन मास तक मुकाबला होता रहा।

मीर्जा कामरान कन्धार से लौटने के उपरान्त लाहौर पहुँचा। वह मीर्जा हिन्दाल के विद्रोह, पादशाह के लौटने तथा शेर खा के प्रभुत्व एव शक्ति की सूचना पाकर आगरा की ओर रवाना हुआ। मीर्जा हिन्दाल जब देहली पहुँचा तो मीर फख्र अली, मीर्जा यादगार नासिर को किले में ले गया और किला बन्द कर लिया। यद्यपि मीर्जा हिन्दाल ने बहुत कुछ प्रयत्न किया किन्तु वह देहली को विजय न कर सका। जब इस बीच में मीर्जा कामरान देहली के समीप पहुँचा तो मीर्जा हिन्दाल ने विवश होकर उससे भेंट की। मीर फख्र अली भी किले से निकलकर मीर्जा कामरान से मिला और उसने कहा कि, 'मीर्जा यादगार नासिर देहली के किले को समर्पित नहीं करता, यही अच्छा है कि आप आगरा की ओर रवाना हो। यदि वह राज्य आपके अधिकार में आ जायगा तो देहली आप ही के अधीन रहेगी।" विवश होकर मीर्जा कामरान आगरा की ओर रवाना हुआ। आगरा के समीप मीर्जा हिन्दाल, मीर्जा कामरान से पृथक् होकर अलवर की ओर चला गया।

जब मीर्जा हिन्दाल के विरोध एव मीर्जा कामरान के देहली पहुँचने के समाचार जन्नत

किले में प्रविष्ट हो गईं तो अफगान लोग अस्त्र-शस्त्र लेकर राजा के घर की ओर रवाना हुये। कुछ लोग द्वार पर पहुँच गये। शेर खा भी अपनी सेनाओं सहित तैयार होकर द्वार पर पहुँच गया और रोहतास का किला, जिसके समान कोई दृढ किला हिन्दुस्तान में न था, सुगमतापूर्वक अधिकार में कर लिया। अपने परिवार वालों एव आश्रितों को किले में छोड़कर वह निश्चिन्त हो गया।" [तबकाते अकबरी भाग २, पृ० १००]।

१ आगे के पृष्ठ में, "गौड नगर में जो भूतकाल के लोगों के ग्रन्थों में लखनौती लिखा जाता है ठहरे रहे और आनन्द मगल में समय व्यतीत करते रहे।"

२ ईश्वर के सम्मानित नामों की सहायता से जिनका ज्ञान बड़े-बड़े सूफियों के अतिरिक्त किसी को नहीं, लोगों की कठिनाइयों के समाधान का प्रयत्न।

आशियानी को चौसा में प्राप्त हुए तो उससे उनके हृदय को अत्यधिक कष्ट हुआ। शेर खां ने शेख खलील नामक एक दरवेश को, जिसे वह अपना मुर्शिद[1] कहता था, जन्नत आशियानी की सेवा में भेजकर संधि का प्रयत्न किया। उसने निश्चय किया कि 'बंगाले[2] को छोड़कर वह समस्त विलायत त्याग देगा' और कुरान शरीफ की शपथ लेकर संधि का प्रस्ताव रखते हुए पादशाह के नाम का खुत्बा तथा सिक्का चलवाना स्वीकार किया। हज़रत जन्नत आशियानी सन्तुष्ट हो गए। दूसरे दिन प्रातःकाल शेर खां ने शाही लश्कर को असावधान पाकर आक्रमण कर दिया। शाही सेना सुव्यवस्थित न हो सकी और पराजित हो गई। अफगान लोगों ने पहिले ही से पुल पर पहुँचकर पुल (४४) का तोड़ डाला और नौकाओं में बैठकर नदी में पहुँच गए। सेना वालों में से जिसे भी वे नदी में पाते थे, भाला मार-मार कर विनाश के समुद्र में डुबा देते थे। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा नदी में डूब गया। हज़रत ने नदी में घोड़ा डाल दिया और आधे डूब गए थे कि एक सक्के की सहायता से बाहर निकले और आगरा की ओर रवाना हुए।

कामरान मीर्ज़ा इससे पूर्व ही आगरा पहुँच गया था। हिन्दाल मीर्ज़ा उन दिनों अलवर में बड़ी लज्जा[3] की अवस्था में जीवन व्यतीत कर रहा था और अपने जीवन को इस शेर के अनुकूल बना दिया था —

शेर

'लज्जा के कारण मैं अपना सिर नहीं उठा सकता,
यदि पूछा जाय कि तूने अपनी अवस्था से क्या प्राप्त किया।'

जब हज़रत जन्नत आशियानी कुछ अश्वारोहियों सहित, जो इस तीव्र गति की यात्रा में उनके साथ थे और जिनमें से एक संकलनकर्त्ता का पिता था, आगरा पहुँचे तो मीर्ज़ा कामरान को कोई भी सूचना न थी। जन्नत आशियानी अचानक मीर्ज़ा कामरान के सरापरदे में पहुँचे। मीर्ज़ा ने (हज़रत पादशाह) के चरणों के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया और दोनों भाइयों की आँखों में आँसू डबडबा आये। हिन्दाल मीर्ज़ा के अपराध जब क्षमा कर दिए गए तो वह हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में उपस्थित हुआ। मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा और उसके पुत्र भी, जो कि बहुत समय से विरोध करते चले आये थे, मेल के उद्देश्य से[4] सेवा में उपस्थित हुए और परामर्श करने लगे। मीर्ज़ा

१ गुरु।

२ तबकाते अकबरी में आगे के पृष्ठों में इस प्रकार है "शेर खां ने संदेश भेजा कि 'बिहार की विलायत गढ़ी तक राज्य के सहायकों के अधिकार में छोड़कर, हज़रत पादशाह के सम्मानित नाम का खुत्बा तथा सिक्का चलवा दूँगा'। जब संधि की बातचीत हो गई तो हज़रत पादशाह के लश्कर वालों को अन्य दिनों की अपेक्षा कोई चिन्ता न रही। उन्होंने चौसा नदी पर पुल तैयार कराया। शनिवार ९४६ हि० (१५३९ ई०) को शेर खां अपनी सेना सुव्यवस्थित करके पर्वत रूपी हाथियों को लेकर युद्ध हेतु निकला। पादशाही सेनाओं को तैयार होने का अवसर न मिल सका। वे पराजित हो गईं।" (तबकाते अकबरी भाग २, पृ० १०१)।

३ तबकाते अकबरी (नवल किशोर) में 'मुराफियत', कलकत्ता के प्रकाशन में 'खिजालत' है। यही शुद्ध है।

४ 'बमासलत अंगेख्ता'।

पहुँचा। हज़रत जहाँबानी तीन मास तक बगाले[1] मे ठहरे रहे और गौड नगर का नाम जन्नताबाद रख दिया।

मीर्ज़ा हिन्दाल ने ९४३ हि० (१५३६-३७ ई०) में आगरा मे अवसर पाकर षड्यन्त्रकारियो के बहकाने पर विरोध प्रारम्भ कर दिया। शेख बहलूल को, जो उस समय के बहुत बडे सन्तो में से था और दावते इसमा[2] के ज्ञान मे अद्वितीय था और हज़रत जहाँबानी को जिसके प्रति प्रेम एव श्रद्धा थी, षड्यन्त्रकारियो के बहकाने से, जो यह चाहते थे कि मीर्ज़ा को हज़रत जन्नत आशियानी की दृष्टि में निन्दनीय बना दें, इस बहाने से कि वह अफगानो से मिला हुआ है, हत्या करा दी। उसने अपने नाम का खुत्बा पढ़वा दिया। जब यह समाचार हज़रत जन्नत आशियानी को प्राप्त हुए तो उन्होने बगाले को जहाँगीर बेग को सौंप दिया और पाँच हजार चुने हुए व्यक्ति उसकी सहायतार्थ नियुक्त करके आगरा की ओर प्रस्थान किया। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा इब्न बदी-उज्ज़मान मीर्ज़ा उस समय गुजरान से अत्यधिक लज्जा प्रदर्शित करता हुआ सेवा में पहुँचा। हज़रत (पादशाह) (४३) ने उसके अपराध क्षमा कर दिये और एक बात भी न कही। मार्ग की दूरी तथा बगाले की जल्वायु की खराबी क कारण अधिकाश सिपाहियों के घोडे नष्ट हो गए और वे बडी अव्यवस्थित दशा मे चौसा पहुँचे। जो अमीर जौनपुर, चुनार तथा अवध में रह गए थे, वे सेवा में उपस्थित हुए। शेर खा मुग़ल सेना की परेशानी से परिचित होकर निकट पहुँचा। हज़रत ने उसके समक्ष पडाव कर दिया और तीन मास तक मुकाबला होता रहा।

मीर्ज़ा कामरान कन्धार से लौटने के उपरान्त लाहौर पहुँचा। वह मीर्ज़ा हिन्दाल के विद्रोह, पादशाह के लौटने तथा शेर खा के प्रभुत्व एव शक्ति की सूचना पाकर आगरा की ओर रवाना हुआ। मीर्ज़ा हिन्दाल जब देहली पहुँचा तो मीर फख्र अली, मीर्ज़ा यादगार नासिर को किले में ले गया और किला बन्द कर लिया। यद्यपि मीर्ज़ा हिन्दाल ने बहुत कुछ प्रयत्न किया किन्तु वह देहली को विजय न कर सका। जब इस बीच मे मीर्ज़ा कामरान देहली के समीप पहुँचा तो मीर्ज़ा हिन्दाल ने विवश होकर उससे भेंट की। मीर फख्र अली भी किले से निकलकर मीर्ज़ा कामरान से मिला और उसने कहा कि, 'मीर्ज़ा यादगार नासिर देहली के क़िले को समर्पित नही करता, यही अच्छा है कि आप आगरा की ओर रवाना हों। यदि वह राज्य आपके अधिकार म आ जायगा तो देहली आप ही के अधीन रहेगी।" विवश होकर मीर्ज़ा कामरान आगरा की ओर रवाना हुआ। आगरा के समीप मीर्ज़ा हिन्दाल, मीर्ज़ा कामरान से पृथक् होकर अलवर की ओर चला गया।

जब मीर्ज़ा हिन्दाल के विरोध एव मीर्ज़ा कामरान के देहली पहुँचने के समाचार जन्नत

किले में प्रविष्ट हो गई तो अफ़ग़ान लोग अस्त्र-शस्त्र लेकर राजा के घर की ओर रवाना हुये। कुछ लोग द्वार पर पहुँच गये। शेर खा भी अपनी सेनाओं सहित तैयार होकर द्वार पर पहुँच गया और रोहतास का क़िला, जिसके समान कोई दृढ़ क़िला हिन्दुस्तान में न था, सुगमतापूर्वक अधिकार में कर लिया। अपने परिवार वालों एव आश्रितों को किले में छोड़कर वह निश्चिन्त हो गया।" [तबकाते अकबरी भाग २, पृ० १००]।

१ आगे के पृष्ठ में, "गौड़ नगर में जो भूतकाल के लोगों के ग्रन्थों में लखनौती लिखा जाता है ठहरे रहे और आनन्द मंगल में समय व्यतीत करते रहे।"

२ ईश्वर के सम्मानित नामों की सहायता से जिनका ज्ञान बडे-बडे सूफ़ियों के अतिरिक्त किसी को नहीं, लोगों की कठिनाइयों के समाधान का प्रयत्न।

आशियानी को चौसा में प्राप्त हुए तो उससे उनके हृदय को अत्यधिक कष्ट हुआ। शेर खा ने शेख खलील नामक एक दरवेश को, जिसे वह अपना मुर्शिद[1] कहता था, जन्नत आशियानी की सेवा में भेजकर संधि का प्रयत्न किया। उसने निश्चय किया कि 'बंगाल[2] को छोड़कर वह समस्त विलायत त्याग देगा' और कुरान शरीफ की शपथ लेकर संधि का प्रस्ताव रखते हुए पादशाह के नाम का खुत्बा तथा सिक्का चलवाना स्वीकार किया। हज़रत जन्नत आशियानी संतुष्ट हो गए। दूसरे दिन प्रातःकाल शेर खा ने शाही लश्कर को असावधान पाकर आक्रमण कर दिया। शाही सेना सुव्यवस्थित न हो सकी और पराजित हो गई। अफ़ग़ान लोगों ने पहिले ही से पुल पर पहुँचकर पुल (५४) का तोड़ डाला और नौकाओं में बैठकर नदी में पहुँच गए। सेना वालो में से जिसे भी वे नदी में पाते थे, भाला मार-मार कर विनाश के समुद्र में डुबा देते थे। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा नदी में डूब गया। हज़रत ने नदी में घोड़ा डाल दिया और आधे डूब गए थे कि एक सक्के की सहायता से बाहर निकले और आगरा की ओर रवाना हुए।

कामरान मीर्ज़ा इससे पूर्व ही आगरा पहुँच गया था। हिन्दाल मीर्ज़ा उन दिनों अलवर में बड़ी लज्जा[3] की अवस्था में जीवन व्यतीत कर रहा था और अपने जीवन को इस शेर के अनुकूल बना दिया था —

शेर

'लज्जा के कारण मैं अपना सिर नही उठा सकता,
यदि पूछा जाय कि तूने अपनी अवस्था से क्या प्राप्त किया।'

जब हज़रत जन्नत आशियानी कुछ अश्वारोहियों सहित, जो इस तीव्र गति की यात्रा में उनके साथ थे और जिनमें से एक सकलनकर्ता का पिता था, आगरा पहुँचे तो मीर्ज़ा कामरान को कोई भी सूचना न थी। जन्नत आशियानी अचानक मीर्ज़ा कामरान के सरापरदे में पहुँचे। मीर्ज़ा ने (हज़रत पादशाह) के चरणों के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया और दोनों भाइयों की आँखों में आँसू डबडबा आये। हिन्दाल मीर्ज़ा के अपराध जब क्षमा कर दिए गए तो वह हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में उपस्थित हुआ। मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा और उसके पुत्र भी, जो कि बहुत समय से विरोध करते चले आये थे, मेल के उद्देश्य से[4] सेवा में उपस्थित हुए और परामर्श करने लगे। मीर्ज़ा

१ गुरु।

२ तबक़ाते अकबरी में आगे के पृष्ठों में इस प्रकार है "शेर खाँ ने संदेश भेजा कि 'बिहार की विलायत गढ़ी तक राज्य के सहायकों के अधिकार में छोड़कर, हज़रत पादशाह के सम्मानित नाम का खुत्बा तथा सिक्का चलवा दूँगा'। जब संधि की बातचीत हो गई तो हज़रत पादशाह के लश्कर वालों को अन्य दिनों की अपेक्षा कोई चिन्ता न रही। उन्होंने चौसा नदी पर पुल तैयार कराया। शनिवार ९४६ हि० (१५३९ ई०) को शेर खाँ अपनी सेना सुव्यवस्थित करके पर्वत रूपी हाथियों को लेकर युद्ध हेतु निकला। पादशाही सेनाओं को तैयार होने का अवसर न मिल सका। वे पराजित हो गये।" (तबक़ाते अकबरी भाग २, पृ० १०१)।

३ तबक़ाते अकबरी (नवल किशोर) में 'मुहाफ़िज़त', कलकत्ता के प्रकाशन में 'खिजालत' है। यही शुद्ध है।

४ 'बमारूफ़ यगानगी'।

कामरान ने उस समय लाहौर की ओर वापस होना निश्चय कर लिया और उसे अपार आशायें दिखाई देती थीं। हज़रत ने उसकी समस्त प्रार्थनायें इसके अतिरिक्त कि वह वापस जाय, स्वीकार कर ली। ख्वाजा कलाँ बेग, मीर्ज़ा की वापसी के विषय में प्रयत्न कर रहा था। इस बातचीत में छ मास व्यतीत हो गए। इसी बीच में मीर्ज़ा कामरान नाना प्रकार के रोगों[1] में ग्रस्त हो गया और स्वार्थी लोगों की इस बात पर विश्वास कर बैठा कि यह बीमारी विष के कारण है जो हज़रत जन्नत आशियानी के आदेशानुसार उसे दे दिया गया है। इसी रोग की अवस्था में वह लाहौर पहुँचा। उसने ख्वाजा कलाँ बेग को आगे भेजकर यह निश्चय किया था कि वह अपनी अधिकांश सेना को कुमक (४५) के रूप में आगरा छोड़ जायगा। किन्तु इस प्रस्ताव के विरुद्ध वह सबको अपने साथ लेता गया। दो हज़ार व्यक्तियों को इस्कन्दर के अधीन आगरा में छोड़ गया। मीर्ज़ा हैदर दूग़लात कश्मीरी[2], जो मीर्ज़ा कामरान के साथ था, हज़रत जन्नत आशियानी के पास ठहर गया और उन्होंने उसे आश्रय प्रदान किया। मीर्ज़ा कामरान आगरा के अधिकांश सैनिकों को भी अपने साथ लेता गया।

आपस की इस फूट के कारण शेर खाँ की धृष्टता में वृद्धि हो गई। वह गंगा तट पर पहुँचा और एक सेना को नदी के उस पार काल्पी तथा इटावा के विरुद्ध भेजा। कासिम हुसैन सुल्तान ऊज़बक तथा यादगार नासिर मीर्ज़ा एवं इस्कन्दर सुल्तान ने मिलकर अफ़ग़ानों के साथ काल्पी के समीप युद्ध किया। शेर खाँ के एक पुत्र[3] की, जो उस सेना का सरदार था, अत्यधिक लोगों सहित हत्या करा दी गई। उसका सिर आगरा में पादशाह की सेवा में भेज दिया गया। हज़रत जन्नत आशियानी शेर खाँ से युद्ध करने के लिए गंगा तट की ओर रवाना हुये। कन्नौज के सामने नदी पार करके एक मास तक शत्रु के मुकाबले में डटे रहे। उस समय पादशाह की सेना की संख्या १ लाख अश्वारोहियों तक पहुँच गई थी। अफ़ग़ान सेना की संख्या ५० हज़ार से अधिक न थी। ऐसे अवसर पर मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा एवं उसके पुत्र कृतघ्नता प्रकट करके पुनः हज़रत जन्नत आशियानी की सेना से बिना किसी कारण के पलायन कर गए। जिन लोगों को मीर्ज़ा कामरान ने कुमक हेतु नियुक्त किया था, वे भी लाहौर भाग गए। यह प्रथा प्रचलित हो गई और सेना वाला में से बहुत बड़ी संख्या छिन्न भिन्न हो गई और वे हिन्दुस्तान के विभिन्न भागों में भाग गए। वर्षा ऋतु आ गई और वर्षा होने लगी। जिस स्थान पर सेना के शिविर लगे थे, वहाँ जल भर गया। यह निश्चय हुआ कि वहाँ से प्रस्थान करके किसी ऊँचे स्थान पर पड़ाव किया जाय। ऐसा ही किया गया।

उस समय शेर खाँ ने सेनाएँ एकत्र करके युद्ध प्रारम्भ कर दिया। यह युद्ध इस वर्ष १० मुहर्रम[4] को हुआ। अधिकांश अभागे सैनिक बिना युद्ध किए भाग गए। थोड़े से जवान पौरुष प्रदर्शित करते हुए रणक्षेत्र में प्रविष्ट हुए। क्योंकि कार्य हाथ से निकल चुका था अतः जन्नत आशियानी की सेना पराजित हो गई। हज़रत जन्नत आशियानी गंगा नदी में घोड़े से पृथक्

१ 'अमराज़े मुतज़ादा (एक दूसरे के विरुद्ध रोग)'।
२ कुछ पोथियों में 'मीर्ज़ा हैदर दूग़लात जो कश्मीरी प्रसिद्ध था'।
३ क़ुतुब खाँ।
४ आगे के पृष्ठों में '१० मुहर्रम ९४७ हि० (१७ मई १५४० ई०)'।

हो गए थे; शम्सुद्दीन मुहम्मद ग़ज़नवी की सहायता से, जो अन्त में हज़रत ख़लीफ़ये इलाही का (४६) अत्का हो गया था और जिसे ख़ाने आज़म की उपाधि द्वारा सम्मानित किया गया था, नदी से निकल कर आगरा वापस हुए। कहा जाता है कि शेर ख़ाँ ने जब हज़रत जन्नत आशियानी के सुरक्षित निकल जाने का समाचार सुना तो खेद प्रकट करता हुआ बोला कि, मैं तो उन्हें मात देना चाहता था किन्तु बर्द हो गया[1]"।

हुमायूँ का लाहौर तथा सिंध की ओर पलायन

क्योंकि शत्रु निकट पहुँच गए थे अतः वे आगरा में न ठहर सके और लाहौर की ओर चल दिए। इस वर्ष के १ रबी-उल-अव्वल[2] को समस्त चग़ताई अमीर एवं सुल्तान लाहौर में एकत्र हुए। मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा तथा उसके पुत्र, जो लाहौर पहुँच गए थे, लाहौर से भागकर मुल्तान पहुँचे। मीर्ज़ा हिन्दाल तथा मीर्ज़ा यादगार नासिर ने भक्कर एवं ठट्टा की ओर जाना उचित बताया। मीर्ज़ा कामरान यह योजना बनाने लगा कि जो लोग एकत्र हुए हैं वे शीघ्रातिशीघ्र छिन्न भिन्न हो जायें और वह काबुल चला जाय।

मिसरा

'उपासक किसी चिन्ता में रहता है और प्रेमी किसी चिन्ता में।'

संक्षेप में, जब हज़रत जन्नत आशियानी को विश्वास हो गया कि भाइयों एवं अमीरों को, जिनके मस्तिष्क हवा में हैं, संगठित करना असम्भव है तो वे बड़े दुखी हुए। अत्यधिक परामर्श उपरान्त मीर्ज़ा हैदर को, जिसने कश्मीर में सेवा[3] करना स्वीकार कर लिया था, सेना सहित उस ओर भेज दिया और यह निश्चय किया कि ख़्वाजा कलाँ बेग भी मीर्ज़ा के पीछे पीछे रवाना हो। जब मीर्ज़ा हैदर नवशह्र पहुँचा और ख़्वाजा कलाँ बेग सियालकोट की ओर रवाना हुआ तो जन्नत आशियानी को समाचार प्राप्त हुए कि शेर ख़ाँ सुल्तानपुर नदी[4] को पार करके लाहौर से ३० कुरोह पर पहुँच गया है। उस वर्ष १ रजब[5] को हज़रत जन्नत आशियानी ने लाहौर नदी पार की। मीर्ज़ा कामरान बड़ी बड़ी शपथों के, जो उसने ली थीं कि जो कुछ निश्चय होगा उसका उल्लंघन न करेगा, पतन उपरान्त विशेष कारणों से भीरा के समीप तक साथ गया। ख़्वाजा कलाँ बेग यह समाचार सुन कर सियालकोट से शीघ्रातिशीघ्र रवाना होकर शाही शिविर में पहुँच गया।

(४७) मीर्ज़ा हैदर कश्मीर पहुँचा। कश्मीरियों में, जो आपस में एक दूसरे का विरोध किया करते थे, से कुछ लोगों ने आकर मीर्ज़ा हैदर से भेंट की। उनकी सहायता से बिना युद्ध

१ शतरंज के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। जब शतरंज के खिलाड़ी के शाह के अतिरिक्त समस्त मुहरे पिट जाते हैं तो मात नहीं अपितु बर्द होती है। इस वाक्य का तात्पर्य यह है कि 'मैं तो बादशाह को नष्ट करना चाहता था किन्तु सेना ही नष्ट हो सकी'।

२ १ रबी-उल अव्वल ९४७ हि० (६ जुलाई १५४० ई०)।

३ कश्मीर विजय तथा उस पर अधिकार।

४ व्यास नदी।

५ १ रजब ९४७ हि० (१ नवम्बर १५४० ई०)।

के कश्मीर मीर्ज़ा हैदर के अधिकार मे आ गया। २२ रजब[1] को मीर्ज़ा हैदर कश्मीर नगर का हाकिम हो गया। इसका विवरण कश्मीर के सुल्तानो के इतिहास मे कर दिया गया है।

मीर्ज़ा कामरान मीर्ज़ा अस्करी सहित, भीरा के समीप हज़रत जन्नत आशियानी से पृथक् होकर ख्वाजा कलाँ बेग के साथ काबुल चला गया[2]। जन्नत आशियानी सिन्ध की ओर रवाना हुए। मीर्ज़ा हिन्दाल तथा मीर्ज़ा यादगार नासिर सेवा में थे। कुछ मञ्ज़िल उपरान्त उन्होंने विरोध प्रकट किया और २० दिन तक उनसे पृथक् होकर मारे-मारे फिरते रहे। पुन मीर अबुल बक़ा के समझाने पर हज़रत की सेवा में उपस्थित हुए। सिंध नदी तट पर ज्हाँ शिविर मे अकाल पड गया था और पार करने के लिये नौका न मिलती थी, बख्शू लगाह ने बहुत सी नौकायें अनाज से भरी हुई शिविर मे भेज दीं और अत्यधिक प्रोत्साहन प्राप्त किया। सेना न नदी पार की और वे भक्कर की ओर रवाना हुए। लुहरी[3] कस्बे में भाग्यशाली शिविर का पडाव लगा। मीर्ज़ा हिन्दाल सिन्ध नदी पार करके पातर[4] कस्बे मे पहुँचा ताकि वहाँ सेना के लिए जो कुछ आवश्यक हो वह सुगमतापूर्वक प्राप्त हो सके। लुहरी से, जो कि भक्कर के समीप है पातर तक ५० कुरोह की दूरी है।

मीर ताहिर सद्र राजदूत बनकर ठट्टा के हाकिम शाह हुसेन अरगून के पास पहुँचा। समुन्दर बेग, जो कि हज़रत जहाँबानी का विश्वासपात्र था, घोडा तथा खिलअत शाह हुसेन अरगून के लिए ले गया और उसे सेवा में उपस्थित होने के लिए प्रेरित किया। संक्षिप्त रूप से सदेश यह था कि, "भक्कर तथा यत्ता की विलायत में आगमन आवश्यक्तावश है। हमारा उद्देश्य गुजरात को मुक्त कराना[5] है; इस समय तुझे सेवा में उपस्थित होना चाहिये ताकि गुजरात विजय के विषय में परामर्श किया जा सके।" शाह हुसेन अरगून ५-६ मास तक नाना प्रकार के बहाने करके (४८) टालता रहा और उसने उत्तर दिया कि "भक्कर की विलायत मे कुछ प्राप्त नही होता। यदि शिविर यत्ता की विलायत में निकट आ जाय तो अच्छा है'। उसका उद्देश्य यह था कि बातचीत में ५-६ मास (और) व्यतीत हो जाये और जब वे निकट पहुँच जायें तो जो कुछ उचित हो वह किया जाये। जब भक्कर में अनाज अप्राप्य हो गया तो हज़रत जहाँबानी उस स्थान से कूच करके

१ २२ रजब ९४७ हि० (२२ नवम्बर १५४० ई०)।

२ तबकाते अकबरी में शेर शाह के इतिहास के सम्बन्ध में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है, "शेर खाँ पीछा करता हुआ लाहौर तक पहुँचा। जन्नत आशियानी सिंध की ओर रवाना हो गये। मीर्ज़ा कामरान काबुल पहुँचा। इसका उल्लेख अपने स्थान पर किया जा चुका है। शेर खाँ पीछा करता हुआ खुशाब तक पहुँचा। इस्माईल खाँ, ग़ाज़ी खाँ, फ़त्ह खाँ बिलोच, एवं दवाई (डे के अंग्रेजी अनुवाद में 'वदाई', डे पृ० १६७) ने, जो बिलोच समूहों के सरदार थे, आकर शेर खाँ से भेंट की। शेर खाँ ने नन्दना की पहाड़ियों एव बालनाथ पहाड़ी के आस पास के स्थानों का निरीक्षण करके जिस स्थान पर इस समय रोहतास का क़िला है, वहाँ क़िले का निर्माण कराया। तदुपरांत ख्वास खाँ एवं हैबत खाँ नियाज़ी को बहुत बड़ी सेना सहित छोड़कर हिन्दुस्तान लौट गया।" (तबकाते अकबरी भाग २, पृ० १०२)।

३ रोहरी।

४ सिविस्तान (सेहवान) सरकार में।

५ विजय करना।

पातर मे, जहाँ मीर्ज़ा हिन्दाल पडाव किए हुए था, पहुँचे कारण कि उन्होंने सुना था कि मीर्ज़ा हिन्दाल कन्धार जाने का सकल्प कर रहा है।

हज़रत जन्नत आशियानी ने इस वर्ष, जिस समय वे मीर्ज़ा हिन्दाल के शिविर में पडाव किए हुए थे, खलीफये इलाही की माता हज़रत मरियम मकानी हमीदा बानो बेगम से विवाह किया[१]। कुछ दिन तक वे मीर्ज़ा हिन्दाल के शिविर मे आनन्द मगल से समय व्यतीत करते रहे। वे मीर्ज़ा हिन्दाल को कन्धार जाने से रोक कर पुन लुहरी कस्बे को चले गए।

कराचा खा ने, जो कन्धार में हाकिम था, मीर्ज़ा हिन्दाल के पास प्रार्थनापत्र लिखकर उसे कन्धार बुलवाया। मीर्ज़ा कन्धार की ओर रवाना हो गया। हज़रत जहाँबानी को जब इस विषय की सूचना मिली तो वे भाइयो के मतभेद के कारण आश्चर्यचकित हुए। मीर्ज़ा यादगार नासिर ने भी, जो पादशाह के शिविर से १० कुरोह[२] पर पडाव किए हुए था और नदी भी बीच में थी, कन्धार जाने का सकल्प कर लिया। हज़रत जहाँबानी को यह समाचार प्राप्त हुए। उन्होंने मीर अबुल बका[३] को मीर्ज़ा यादगार नासिर को सतुष्ट करने के लिए भेजा। मीर अबुल बका ने नाना प्रकार से शिक्षा देकर एव समझा-बुझा कर मीर्ज़ा (यादगार) नासिर को कन्धार जाने से रोक दिया। उसके लौटते तथा नदी को पार करते समय भक्कर के किले से एक सेना ने निकल कर नौका वालो पर बाणो की वर्षा कर दी। एक बाण अबुल बका के लगा और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। हज़रत जहाँबानी को उसकी मृत्यु का बडा शोक हुआ। मीर की मृत्यु की तारीख अबजद[४] के हिसाब से सरवरे काएनात[५] अक्षरो से जो ९४७[६] के बराबर है निकलती है।

(४९) सक्षेप मे, मीर्ज़ा यादगार नासिर नदी पार करके हज़रत जहाँबानी के शिविर मे पहुँचा और अत्यधिक परामर्श उपरान्त यह निश्चय हुआ कि मीर्ज़ा यादगार नासिर भक्कर मे रहे और हज़रत जन्नत आशियानी थत्ता विजय हेतु रवाना हो कारण कि मीर्ज़ा शाह हुसैन की ओर से इस बीच मे मित्रता तथा निष्ठा के कोई भी चिह्न दृष्टिगत न हुए। जब हज़रत थत्ता की ओर रवाना हुए तो उनके सैनिकों का एक बहुत बडा समूह उनके लश्कर से पृथक् होकर भक्कर में ठहर गया। मीर्ज़ा यादगार नासिर भी भक्कर में ठहर गया और उसने अधिक शक्ति प्राप्त कर ली कारण कि उस वर्ष भक्कर की कृषि को दैवी विपत्तियों के कारण कोई हानि न पहुँची थी। हज़रत जन्नत आशियानी निरन्तर यात्रा करते हुए सेहवान[७] के क़िले के समीप पहुँचे। सैनिकों का एक समूह जो नौका मे था, क़िले के समीप, नौका के बाहर निकला और उसने कुछ लोगो

१ इस विवाह के विषय में गुलबदन बेगम के हुमायूँ नामा तथा जौहर के तज़किरतुल वाकेआत का अनुवाद देखिये (रिज़वी मुग़ल कालीन भारत—हुमायूँ)।
२ हस्तलिपियों में 'दो कुरोह' भी है।
३ एक हस्तलिपि में 'मीर अबुल क़ासिम व मीर अबुल बक़ा'।
४ अलिफ़, बे, जीम, दाल के क्रम से तारीख़ निकाली जाती है। इसमें प्रत्येक अक्षर की सख्या निर्धारित है।
५ सृष्टि का स्वामी।
६ 'सरवरे काएनात' से ९४८ निकलते हैं। ९४८ हि० (१५४१-४२ ई०) ही शुद्ध है।
७ प्रकाशित ग्रन्थ में 'सिपाहियान' है जो अशुद्ध है। हस्तलिपियों में 'सियाहवान' है किन्तु इसे 'सेहवान' होना चाहिये।

के कश्मीर मोर्ज़ा हैदर के अधिकार में आ गया। २२ रजब[1] को मीर्ज़ा हैदर कश्मीर नगर का हाकिम हो गया। इसका विवरण कश्मीर के सुल्तानो के इतिहास मे कर दिया गया है।

मीर्ज़ा कामरान मीर्ज़ा अस्करी सहित, भीरा के समीप हज़रत जन्नत आशियानी से पृथक् होकर ख्वाजा कलाँ बेग के साथ काबुल चला गया[2]। जन्नत आशियानी सिन्ध की ओर रवाना हुए। मीर्ज़ा हिन्दाल तथा मीर्ज़ा यादगार नासिर सेवा में थे। कुछ मंजिल उपरान्त उन्होंने विरोध प्रकट किया और २० दिन तक उनसे पृथक् होकर मारे-मारे फिरते रहे। पुन मीर अबुल बका के समझाने पर हज़रत की सेवा मे उपस्थित हुए। सिंध नदी तट पर ज्हाँ शिविर में अकाल पड गया था और पार करने के लिये नौका न मिलती थी, बख्शू लगाह ने बहुत सी नौकायें अनाज से भरी हुई शिविर में भेज दी और अत्यधिक प्रोत्साहन प्राप्त किया। सेना ने नदी पार की और वे भक्कर की ओर रवाना हुए। लुहरी[3] कस्बे में भाग्यशाली शिविर का पडाव लगा। मीर्ज़ा हिन्दाल सिन्ध नदी पार करके पातर[4] कस्बे मे पहुँचा ताकि वहाँ सेना के लिए जो कुछ आवश्यक हो वह सुगमतापूर्वक प्राप्त हो सके। लुहरी से, जो कि भक्कर के समीप है, पातर तक ५० कुरोह की दूरी है।

मीर ताहिर सद्र राजदूत बनकर ठट्टा के हाकिम शाह हुसैन अरगून के पास पहुँचा। समुन्दर बेग, जो कि हज़रत जहाँबानी का विश्वासपात्र था, घोडा तथा खिलअत शाह हुसैन अरगून के लिए ले गया और उसे सेवा मे उपस्थित होने के लिए प्रेरित किया। संक्षिप्त रूप से संदेश यह था कि, "भक्कर तथा थत्ता की विलायत मे आगमन आवश्यकतावश है। हमारा उद्देश्य गुजरात को मुक्त कराना[5] है; इस समय तुझे सेवा में उपस्थित होना चाहिये ताकि गुजरात विजय के विषय मे परामर्श किया जा सके।" शाह हुसैन अरगून ५-६ मास तक नाना प्रकार के बहाने करके (४८) टालता रहा और उसने उत्तर दिया कि "भक्कर की विलायत में कुछ प्राप्त नहीं होता। यदि शिविर थत्ता की विलायत में निकट आ जाय तो अच्छा है"। उसका उद्देश्य यह था कि बातचीत मे ५-६ मास (और) व्यतीत हो जायें और जब वे निकट पहुँच जायें तो जो कुछ उचित हो वह किया जाये। जब भक्कर में अनाज अप्राप्य हो गया तो हज़रत जहाँबानी उस स्थान से कूच करके

१ २२ रजब ९४७ हि० (२२ नवम्बर १५४० ई०)।

२ **तबकाते अकबरी** में शेर शाह के इतिहास के सम्बन्ध में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है, "शेर ख़ाँ पीछा करता हुआ लाहौर तक पहुँचा। जन्नत आशियानी सिन्ध की ओर रवाना हो गये। मीर्ज़ा कामरान काबुल पहुँचा। इसका उल्लेख अपने स्थान पर किया जा चुका है। शेर ख़ाँ पीछा करता हुआ खुशाब तक पहुँचा। इस्माईल ख़ाँ, ग़ाज़ी ख़ाँ, फ़त्ह ख़ाँ बिलोच, एवं दवाई (डे के अंग्रेज़ी अनुवाद में 'बदाई', डे पृ० १६७) ने, जो बिलोच समूहों के सरदार थे, आकर शेर ख़ाँ से भेंट की। शेर ख़ाँ ने नन्दना की पहाड़ियों एव बालनाथ पहाड़ी के आस पास के स्थानों का निरीक्षण करके जिस स्थान पर इस समय रोहतास का क़िला है, वहाँ क़िले का निर्माण कराया। तदुपरांत ख्वास ख़ाँ एवं हैबत ख़ाँ नियाज़ी को बहुत बड़ी सेना सहित छोड़कर हिन्दुस्तान लौट गया।" **(तबकाते अकबरी भाग २, पृ० १०२)।**

३ रोहरी।

४ सिविस्तान (सेहवान) सरकार में।

५ विजय करना।

पातर में, जहाँ मीर्ज़ा हिन्दाल पडाव किए हुए था, पहुँचे कारण कि उन्होंने सुना था कि मीर्ज़ा हिन्दाल कन्धार जाने का सकल्प कर रहा है।

हज़रत जन्नत आशियानी ने इस वर्ष, जिस समय वे मीर्ज़ा हिन्दाल के शिविर मे पडाव किए हुए थे, खलीफये इलाही की माता हजरत मरियम मकानी हमीदा बानो बेगम से विवाह किया[1]। कुछ दिन तक वे मीर्ज़ा हिन्दाल के शिविर में आनन्द मगल से समय व्यतीत करते रहे। वे मीर्ज़ा हिन्दाल को कन्धार जाने से रोक कर पुन लुहरी कस्बे को चले गए।

कराचा खा ने, जो कन्धार में हाकिम था, मीर्ज़ा हिन्दाल के पास प्रार्थनापत्र लिखकर उसे क़न्धार बुलवाया। मीर्ज़ा कन्धार की ओर रवाना हो गया। हज़रत जहाँबानी को जब इस विषय की सूचना मिली तो वे भाइयो के मतभेद के करण आश्चर्यचकित हुए। मीर्ज़ा यादगार नासिर ने भी, जो पादशाह के शिविर से १० कुरोह[2] पर पडाव किए हुए था और नदी भी बीच में थी, कन्धार जाने का सकल्प कर लिया। हज़रत जहाँबानी को यह समाचार प्राप्त हुए। उन्होंने मीर अबुल वक़ा[3] को मीर्ज़ा यादगार नासिर को सतुष्ट करने के लिए भेजा। मीर अबुल वका ने नाना प्रकार से शिक्षा देकर एव समझा-बुझा कर मीर्ज़ा (यादगार) नासिर को कन्धार जाने से रोक दिया। उसके लौटते तथा नदी को पार करते समय भक्कर के किले से एक सेना ने निकल कर नौका वालो पर बाणो की वर्षा कर दी। एक बाण अबुल वका के लगा और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। हज़रत जहाँबानी को उसकी मृत्यु का बडा शोक हुआ। मीर की मृत्यु की तारीख अबजद[4] के हिसाब से सरवरे काएनात[5] अक्षरो से जो ९४७[6] के बराबर है निकलती है।

(४९) सक्षेप मे, मीर्ज़ा यादगार नासिर नदी पार करके हज़रत जहाँबानी के शिविर में पहुँचा और अत्यधिक परामर्श उपरान्त यह निश्चय हुआ कि मीर्ज़ा यादगार नासिर भक्कर में रहे और हजरत जन्नत आशियानी थत्ता विजय हेतु रवाना हो कारण कि मीर्ज़ा शाह हुसैन की ओर से इस बीच में मित्रता तथा निष्ठा के कोई भी चिह्न दृष्टिगत न हुए। जब हज़रत थत्ता की ओर रवाना हुए तो उनके सैनिको का एक बहुत बडा समूह उनके लश्कर से पृथक् होकर भक्कर में ठहर गया। मीर्ज़ा यादगार नासिर भी भक्कर में ठहर गया और उसने [illegible] प्राप्त कर ली कारण कि उस वर्ष भक्कर की कृषि का दैवी विपत्तियों के कारन [illegible] न पहुँची थी। हज़रत जन्नत आशियानी निरन्तर यात्रा करते हुए सेहवान[7] के [illegible] सैनिको का एक समूह जो नौका मे था, किले के समीप, नौका के बाहर [illegible]

१ इस विवाह के विषय में गुलबदन बेगम के हुमायूं नामा तथा जौहर के [illegible] देखिये (रिज़वी मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं)।
२ हस्तलिपियों में 'दो कुरोह' भी है।
३ एक हस्तलिपि में 'मीर अबुल क़ासिम व मीर अबुल बक़ा'।
४ अलिफ़, बे, जीम, दाल के क्रम से तारीख़ निकाली जाती है। [illegible]
५ सृष्टि का स्वामी।
६ 'सरवरे काएनात' से ९४८ निकलते है। ९४८ हि० ([illegible]
७ प्रकाशित ग्रन्थ में 'सिपाहियान' है जो अशुद्ध है। [illegible] चाहिये।

पर जो किले के बाहर थे, आक्रमण किया। वे लोग मुकाबला न कर सके और किले में प्रविष्ट हो गए। सैनिक लौटकर हजरत जहाँबानी की सेवा में पहुँचे। किले की विजय हज़रत जहाँबानी की सेवा में बड़ी ही सरल बताई। हजरत जहाँबानी ने नदी पार करके सेहवान के किले का अवरोध कर लिया किन्तु उनके पहुँचने के पूर्व मीर्ज़ा शाह हुसैन के कुछ अमीर किले में प्रविष्ट हो कर किले को दृढ बनाने का यथा-सम्भव प्रयत्न करने लगे। मीर्ज़ा शाह हुसैन का जब हज़रत के प्रस्थान एवं किले के अवरोध के समाचार प्राप्त हुए तो वह नौका पर बैठकर शिविर के समीप पहुँचा तथा हज़रत के लश्कर में अनाज का पहुँचना रोक दिया। सेना वाले बड़े कष्ट में पड़ गए। इस प्रकार अधिकांश लोग पशुओं के मांस पर जीवन व्यतीत करने लगे। लगभग ७ मास तक अवरोध होता रहा और विजय प्राप्त न हो सकी। विवश होकर उन्होंने मीर्ज़ा यादगार नासिर के पास भक्कर में एक आदमी भेजकर यह कहलाया कि, 'किले की विजय तुम्हारे आगमन पर निर्भर है। यदि हम मीर्ज़ा शाह हुसैन से युद्ध हेतु एवं उसे पीछे हटाने के लिए अग्रसर होंगे तो किले वाले मुक्त हो जायेंगे तथा किले में खाद्य-सामग्री पहुँचा कर पुनः तैयारी कर लेंगे। नमक एवं अनाज के अभाव के कारण (हमारा) किले के समीप ठहरना सम्भव नहीं। यदि उस ओर से (५०) तुम मीर्ज़ा शाह हुसैन के विरुद्ध प्रस्थान करो तो वह मुकाबला न कर सकेगा।" मीर्ज़ा यादगार नासिर ने सर्व प्रथम अपने कुछ सैनिक सहायतार्थ भेजे किन्तु उस समूह के आगमन से कोई लाभ न हुआ। उन्होंने मीर्ज़ा को बुलाने के लिए पुनः आदमी भेजे। अब्दुल गफ़ूर नामक एक व्यक्ति, जो हज़रत का मीर माल था, मीर्ज़ा को लाने के लिए नियुक्त हुआ। अब्दुल ग़फ़ूर जब मीर्ज़ा (यादगार नासिर) के पास पहुँचा तो उसने कुछ बातें, जो शाही लश्कर की परेशानी से सम्बन्धित थीं, बताईं। मीर्ज़ा यादगार नासिर तथा उसके सैनिकों ने अपने हित में यही उचित समझा कि वे न जायें और भक्कर विजय कर लें।

मीर्ज़ा शाह हुसैन ने भी मीर्ज़ा यादगार नासिर के पास आदमी भेजे और उसे चकमा देकर आज्ञाकारिता स्वीकार करने तथा अपनी पुत्री का विवाह कर देने एवं उसके नाम का ख़ुत्बा पढ़वाने का वचन दिया। मीर्ज़ा बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने चकमे में आकर हज़रत जन्नत आशियानी का विरोध करने लगा। जब मीर्ज़ा शाह हुसैन मीर्ज़ा यादगार की ओर से एवं हज़रत जन्नत आशियानी की सेना की परेशानी तथा शक्तिहीनता के कारण सन्तुष्ट हो गया तो हज़रत पादशाह के लश्कर के अधिक समीप पहुँच कर उनकी नौकाओं को अपने अधिकार में कर लिया। हज़रत पादशाह के लिए इससे अधिक किले के समीप ठहरना सम्भव न हो सका। विवश होकर वे भक्कर की ओर लौटे और भक्कर के समीप मीर्ज़ा यादगार नासिर से नदी पार करने के लिए नौकायें माँगी। मीर्ज़ा ने, जो कि थत्ता वालों से मिला हुआ था, उन्हें संदेश भेजा कि रात्रि में आकर नौकाओं को अधिकार में कर लें। प्रातःकाल उसने यह बहाना कहला भेजा कि शत्रु नौकाओं को ले गए। हज़रत जहाँबानी को कई दिन तक नौकाओं के कारण ठहरना पड़ा। अन्त में भक्कर के जमींदारों में से दो व्यक्ति हजरत जहाँबानी की सेवा में पहुँचे। कुछ नौकाएँ जो कि जल में डुबा दी गई थीं उन्होंने बाहर निकालीं। हज़रत जहाँबानी ने नदी पार की। मीर्ज़ा यादगार नासिर को जब उनके पार करने की सूचना मिली तो उसने अत्यधिक आश्चर्य एवं लज्जा के कारण हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में उपस्थित हुए बिना मीर्ज़ा शाह हुसैन पर, जो कि असाव-(५१) धान था, शीघ्रातिशीघ्र पहुँच कर आक्रमण कर दिया और थत्ता वालों की बहुत बड़ी

सख्या पर जो नौका से निकल चुकी थी, टूट पडा। उनमें से बहुत से लोगों की उसने हत्या कर दी और कुछ लोगों को बन्दी बना कर लौट गया। मीर्ज़ा शाह हुसैन भी इस युद्ध उपरान्त पत्ता लौट गया। मीर्ज़ा यादगार नासिर लज्जा प्रदर्शित करता हुआ हज़रत जहाँबानी की सेवा में पहुँचा और शत्रुओं के सिर प्रस्तुत किए। हज़रत जन्नत आशियानी ने उसका अपराध पुन क्षमा कर दिया और (उसके विरुद्ध) कोई बात भी न कही। मीर्ज़ा शाह हुसैन न मीर्ज़ा यादगार नासिर का पत्र लिखकर पुन मिला लिया। मीर्ज़ा शाह हुसैन न मीर्ज़ा यादगार नासिर से उन दो व्यक्तियो को, जिन्होने हज़रत पादशाह की सेवा म नौकाएँ भेजी थी, मागा। उन लोगो न इस बात की सूचना पाकर हज़रत पादशाह के शिविर म शरण ले ली। मीर्ज़ा (यादगार नासिर) न आदमी भेजकर कहलाया कि, "इन दो आदमियों से भक्कर की विलायत के राजस्व का, जो मुझे जागीर में प्रदान हुई है, मामला चल रहा है।' हज़रत न आदेश दिया कि कुछ लोग ज़मीदारो के साथ जायें और जब उस मामले की जाँच हो जाय तो शाही शिविर म उन्हे वापस ले आयें। जब मीर्ज़ा यादगार नासिर न उन लोगो को देखा तो उसन तत्काल उन दोनो को पादशाही आदमियो से जबरदस्ती छीन कर मीर्ज़ा शाह हुसैन के पास भेज दिया और पुन विद्रोह करके फिर हज़रत जहाँबानी की सेवा में न उपस्थित हुआ। हज़रत जहाँबानी के लश्कर के आदमी, जो कि बडी दुर्दशा को प्राप्त हो चुके थे, एक-एक, दो-दो करके मीर्ज़ा यादगार नासिर के पास पहुँचने लगे। मुनइम खाँ तथा उसके भाई भी भागने के विषय में सोचने लगे। यह बात हज़रत पादशाह को ज्ञात हो गई। उन्होंने उन्हे बन्दी बनाने का आदेश दे दिया। मीर्ज़ा यादगार नासिर अत्यधिक धृष्टता प्रदर्शित करते हुए हज़रत जन्नत आशियानी से युद्ध करने का सकल्प करके निकला और इस उद्देश्य से वह सवार हुआ। हज़रत जन्नत आशियानी को भी सूचना मिल गई और वे भी युद्ध के लिए सवार हुए। मीर्ज़ा के एक विश्वासपात्र हाशिम बेग ने उसे इस कुकर्म से रोक लिया और किसी न किसी प्रकार लौटा ले गया।

हुमायूँ का मालदेव के राज्य की ओर प्रस्थान

(५२) हज़रत पादशाह को ज्ञात हो गया कि "जितना ही अधिक इस स्थान पर ठहरा जायेगा लोग पृथक् होकर मीर्ज़ा यादगार नासिर के पास पहुँचने रहेंगे। वह बडा ही निर्लज्ज है। अन्त म वह खराबी पैदा करेगा।" विवश होकर वे मालदेव की ओर, जो हिन्दुस्तान का एक प्रतिष्ठित ज़मीदार था और उस समय जिसकी शक्ति एवं दल-बल का हिन्दुओं में कोई भी अन्य ज़मीदार न था, रवाना हुए। मालदेव ने कई बार प्रार्थनापत्र भेजकर आज्ञाकारिता प्रदर्शित की थी और हिन्दुस्तान की विजय हेतु सहायता देना स्वीकार किया था। वे जैसलमीर के मार्ग से मालदेव के राज्य की ओर रवाना हुए। जैसलमीर के हाकिम ने अपने सिर पर निष्ठुरता की धूल डालकर एक सेना हज़रत जन्नत आशियानी के विरुद्ध भेजी। उनके साथ जो थोडी सी सेना थी उसने उनसे युद्ध करके उन्हें पराजित कर दिया किन्तु इस ओर के भी बहुत से लोग घायल हुए। वे शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए मालदेव के राज्य में पहुँचे। अतका खाँ को मालदेव के पास, जो जोधपुर मे था, भेजा और कुछ दिन तक उसी पड़ाव में ठहरे रहे।

जब मीर्ज़ा हिन्दाल कन्धार के समीप पहुँचा तो क़राचा खाँ उसके स्वागतार्थ निकला और कन्धार नगर उसे समर्पित कर दिया। मीर्ज़ा कामरान यह सूचना पाकर वापस लौटा और कन्धार की ओर रवाना हुआ। वह चार मास तक कन्धार के किले को घेरे रहा। अन्त में मीर्ज़ा हिन्दाल

ने परेशान होकर संधि कर ली और बाहर निकला। मीर्ज़ा कामरान ने कन्धार को मीर्ज़ा अस्करी को दे दिया और मीर्ज़ा हिन्दाल को गज़नी ले गया। कुछ दिन उपरान्त उससे गज़नी भी ले लिया। मीर्ज़ा हिन्दाल ने जब यह समझ लिया कि मीर्ज़ा कामरान शत्रुता पर तुला हुआ है तो उसने विवश होकर राज्य त्याग दिया और काबुल में एकान्तवास ग्रहण कर लिया। मीर्ज़ा कामरान काबुल, कन्धार तथा गज़नी में स्थायी रूप से बादशाह हो गया तथा उसने अपने नाम का ख़ुत्बा पढ़वा दिया।

हज़रत जन्नत आशियानी राय मालदेव के राज्य की सीमान्त पर अत्का खां की वापसी की प्रतीक्षा करने लगे। जब राय मालदेव को हज़रत जहाँबानी के पहुँचने के समाचार प्राप्त हुए और यह ज्ञात हुआ कि उनके साथ बहुत थोड़ी सी सेना है तो वह बड़ा चिन्तित हुआ कारण कि (५३) वह अपने में शेर खां का मुक़ाबला करने की शक्ति न पाता था। शेर खां ने भी मालदेव के पास राजदूत भेजकर अत्यधिक आश्वासन एवं धमकियाँ दिखाई थीं। राय मालदेव ने अत्यधिक निष्ठुरता प्रदर्शित करते हुए यह निश्चय किया कि यदि सम्भव हो सके तो उन्हें बन्दी बनाकर शत्रु को सौंप दे कारण कि नागौर की विलायत तथा उसके अधीनस्थ स्थान शेर खां के हाथ आ चुके थे, अतः उसे भय था कि कहीं शेर खां उससे रुष्ट न हो जाय। इस उद्देश्य से उसने एक बहुत बड़ी सेना हज़रत जन्नत आशियानी के विरुद्ध भेजी। अत्का खां को इस कारण कि वह हज़रत को सावधान न कर दे, जाने की अनुमति न दी। अत्का खां ने उसके व्यवहार से उसके हृदय की बात भाँप ली और बिना आज्ञा के लौट गया। हज़रत जन्नत आशियानी के एक किताबदार ने, जो पराजय के समय हिन्दुस्तान में राजा मालदेव के पास चला गया था, एक प्रार्थनापत्र उनकी सम्मानित सेवा में भेजा कि "मालदेव विश्वासघात कर रहा है, आप जितने शीघ्र उसके राज्य से निकल जायं, अच्छा है।" अत्का खां के प्रयत्न तथा किताबदार के पत्र के कारण वे तत्काल अमरकोट की ओर चल दिए। दो हिन्दू, जो गुप्तचर के रूप में आये थे, बन्दी बना लिए गए। उन्हें हज़रत जन्नत आशियानी के समक्ष प्रस्तुत किया गया। जाँच के समय वास्तविक बात का पता चलाने के लिये एक आदमी की हत्या का आदेश दे दिया गया। उन दोनों ने अपने आपको छुड़ाकर दो व्यक्तियों से, जो उनके निकट थे, चाकू तथा कटार छीन ली और आदमियों तथा घोड़ों में से १७ को घायल कर दिया। दोनों की हत्या करा दी गई। घायल घोड़ों में हज़रत के ख़ासे[1] का भी घोड़ा था। क्योंकि कोई दूसरा घोड़ा हज़रत जन्नत आशियानी की सवारी के लिए न था अतः हज़रत जन्नत आशियानी ने आख़्ताचियों[2] ने तरदी बेग से घोड़ा तथा ऊँट देने के लिए बड़ा आग्रह किया किन्तु उसने अपने सिर पर निष्ठुरता की धूल डालकर आपत्ति प्रकट की। हज़रत ऊँट पर सवार हो गए। नदीम कोका ने, जो कि प्यादा था और जिसकी माता उसके घोड़े पर सवार थी, घोड़ा हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में प्रस्तुत कर दिया और अपनी माता को ऊँट पर सवार कर दिया।

हुमायूं की मालदेव के राज्य की ओर से वापसी

(५४) क्योंकि उस मार्ग में बालू उड़ती रहती थी अतः जल के अप्राप्य होने के कारण हज़रत के सैनिकों को अत्यधिक कष्ट भोगने पड़े। क्षण-क्षण पर मालदेव की सेना के निकट

१ पादशाह की सवारी का घोड़ा।
२ घोड़ों की देख रेख करने वालों ने।

हुँचने के समाचार प्राप्त होते रहते थे। हजरत पादशाह ने तीमूर सुल्तान, मुनइम खा एव क अन्य समूह को आदेश दिया कि वे लश्कर के पीछे धीरे धीरे आयें। यदि शत्रु लोग पहुँच ायें तो वे युद्ध करें। जब रात हो गई तो सयोग से वे लोग मार्ग भूल गए और प्रातःकाल शत्रुओं सैनिक दृष्टिगत हुए। शेख अली बेग, दरवेश कोका, एव अन्य लोगों ने, जिनकी सख्या लगभग २ थी और जिनमें रोशन बेग वल्द बाकी जलायर भी था, शत्रुओं की ओर प्रस्थान किया। सयोग जिस समय वे हिन्दुओं के समीप पहुँचे तो हिन्दू लोग एक सकरे मार्ग पर पहुँच चुके थे। शेख ली बेग ने प्रथम बाण से ही शत्रुओं के एक सरदार को भूमि पर गिरा दिया। जो बाण भी इन ोगों के चिल्ले से निकलता था उससे शत्रुओं का कोई न कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति घायल हो जाता ा। वे मुकाबला न कर सके। एक बहुत बडी सेना थोडे से लोगों के सामने से भाग खडी हुई। ागते समय उनमें से बहुत से लोग मारे गए। अत्यधिक ऊँट (शाही) सैनिकों को प्राप्त हो गए। वजय के समाचार हजरत को प्राप्त हुए और उन्होंने कृतज्ञता प्रकट की।

उन्होंने एक कुएँ पर जिसमें थोडा सा जल था पडाव किया। जो अमीर रात्रि में मार्ग भूल गए थे वे इस समय पहुँच गए। इससे उन्हे अत्यधिक प्रसन्नता हुई। दूसरे दिन उन्होंने पुन प्रस्थान किया। तीन दिन तक जल प्राप्त न हुआ। चौथे दिन वे एक ऐसे कुएँ पर पहुँचे जहाँ डोल के जल तक पहुँच जाने के उपरान्त ढोल बजाया जाता था ताकि जो व्यक्ति बैल हाँक रहा हो वह ठहर जाय। यह कुएँ की गहराई की वजह से था, कारण कि आवाज न पहुँच पाती थी। सक्षेप में, लोग प्यास के कारण व्याकुल हो चुके थे। ४-५ व्यक्ति डोल पर कूद पडे। रस्सी टूट गई और डोल पुन कुएँ में गिर पडा। लोग व्याकुल होकर विलाप करने लगे। बहुत से लोग जान-बूझकर कुएँ में कूद पडे। इस प्रकार अत्यधिक लोग प्यास के कारण नष्ट हो गए। उन्होंने (५५) पुन प्रस्थान किया। दूसरे दिन जब हवा बडी गरम हो चुकी थी, वे जल पर पहुँचे। जब ऊँट तथा घोडे, जिन्हे कई दिन से जल न मिला था, वहाँ पहुँचे तो उन्होंने इतना अधिक जल पी लिया कि वे मृत्यु को प्राप्त हो गए।

अमरकोट पहुँचना

सक्षेप में, अत्यधिक कष्ट भोगकर वे पुन अमरकोट पहुँचे। अमरकोट थत्ता से १०० कुरोह पर है। अमरकोट का हाकिम जिसका नाम राणा था और जो सौजन्य के गुणों से सुशोभित था, स्वागतार्थ उपस्थित हुआ और उसे जो कुछ भी प्राप्त हो सका उसने प्रस्तुत किया। सेना वाले उस नगर में कुछ दिन तक कष्ट से मुक्त रहे। हजरत पादशाह के पास जो कुछ खजाने में था उसे उन्होंने सेना वालो को बाँट दिया। जब कुछ लोगों को (कुछ भी) प्राप्त न हुआ तो उन्होंने तरदी बेग तथा अन्य लोगों से ऋण के रूप में धन लिया। राणा तथा उसके पुत्रों को, जिन्होंने उत्तम सेवायें की थी, धन-सम्पत्ति, पेटी तथा कटार प्रदान की। क्योंकि मीर्जा शाह हुसन अरगून ने राणा के पिता की हत्या करा दी थी अत राणा ने आसपास से अत्यधिक लोग एकत्र किए और उनके अधीन भक्कर की ओर रवाना हुआ। परिवार वाले आदेशानुसार अमरकोट में छोड दिए गए। मरियम मकानी का भाई ख्वाजा मुअज्जम उस समूह की देखभाल के लिए नियुक्त हुआ।

अकबर का जन्म

युग की कृतघ्नता के कारण, जो कि उसकी प्राचीन प्रथा है, वे दिन हजरत पादशाह की इच्छानुसार न व्यतीत होते थे। प्रताप में जो हजरत पादशाह के अनन्त तक स्थायी रहने वाले

सौभाग्य का सहायक था अभी इतनी शक्ति उत्पन्न न हुई थी। आकाश के समस्त चक्कर इस बात का प्रयत्न कर रहे थे कि उन थोड़े से दिनों की परेशानी का बदला इस प्रकार चुकाये कि संसार के पृष्ठों पर उसका प्रभाव कयामत तक रहे अर्थात् रविवार ५ रजब ९४९ हि० (१५ अक्तूबर १५४२ ई०) को अत्यन्त शुभ मुहूर्त एवं मुबारक घड़ी में, हजरत पादशाह के भाग्यशाली नेत्रों को पुत्र के शुभ जन्म द्वारा, (जो अलौकिक पिताओं एवं लौकिक माताओं के विवाह का परिणाम है), प्रकाश प्राप्त हुआ। युग की दशा की जिह्वा यह गाना गा रही थी

शेर

(५६) 'जब तक तूने इस गली में कदम (न) रक्खा,
अस्तित्व का शून्य के प्रति अत्यधिक लज्जा थी।'

तरदी बेग खां ने अमरकोट के समीप यह समाचार पहुँचाये। हजरत जहाँबानी ने दैवी प्रेरणा से जिसका उल्लेख उचित स्थान पर किया जायेगा, हजरत शहंशाह का नाम जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर रक्खा और निरन्तर यात्रा करते हुए भक्कर की ओर रवाना हुए। शाहजादये आलमियान की देख रेख का अत्यधिक ध्यान रखने के लिये पत्र लिखा। जब जन्नत आशियानी जोन[1] परगने में पहुँचे तो कुछ समय तक वहाँ ठहरने के उपरान्त अपने परिवार को बुलवा लिया और वहीं उनके नेत्रों को इस भाग्यशाली पुत्र के दर्शन द्वारा प्रज्वलित प्रकाश प्राप्त हुआ।

हुमायूं की सिन्ध में वापसी

जो लोग आसपास से एकत्र हो गए थे वे जोन में ठहरने के समय छिन्न भिन्न हो गए। शेख अली, जो कि बड़ा वीर एवं उच्च स्वभाव का सरदार था, थत्ता के एक परगने में मीर्ज़ा शाह हुसेन अरगून के सैनिकों द्वारा मार डाला गया। हजरत (पादशाह) के लश्कर वालों में से एक-एक करके लोगों ने भागना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार मुनइम खां भी भाग गया। हजरत जन्नत आशियानी ने उस प्रदेश में अधिक ठहरना उचित न समझ कर कन्धार की ओर प्रस्थान किया। बैराम खां गुजरात की ओर से इस समय सेवा में उपस्थित हुआ। हजरत पादशाह ने मीर्ज़ा शाह हुसेन के पास आदमी भेजकर नदी पार करने के लिए कुछ नौकाएँ मँगवाईं। मीर्ज़ा शाह हुसेन ने इस बात को अपने लिए बहुत बड़ी मुक्ति समझकर ३० नौकाएँ तथा ३०० ऊँट भेजे। वे नदी पार करके कन्धार की ओर रवाना हुए।

इसी समय मीर्ज़ा शाह हुसेन ने मीर्ज़ा अस्करी तथा मीर्ज़ा कामरान के पास आदमी भेजकर उन्हें सूचना दी कि हजरत कन्धार की ओर रवाना हो गए हैं। मीर्ज़ा कामरान ने मीर्ज़ा अस्करी को लिखा कि पादशाह को मार्ग में रोक कर बन्दी बना लिया जाय। मीर्ज़ा अस्करी ने कृतघ्नता

१ कर्नल हेग के अनुसार रेन नदी के बायें तट पर अमरकोट से दक्षिण पश्चिम में ७५ मील पर ठट्टा के उत्तर-पूर्व में ५० मील पर स्थित है। उसके खण्डहर कर्नल हेग के समय में आधुनिक टांडा गुलाम हैदर के दक्षिण-पूर्व में दो मील पर प्राप्य थे।

(५७) प्रकट करते हुए, जिस समय हज़रत साल ज़मिस्तान[१] कस्बे के समीप पहुँचे तो उसने कन्धार से शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करके हवाली[२] नामक एक ऊजबेक को समाचार लाने तथा मार्ग का पता लगाने के लिए आगे भेज दिया। क्योंकि वह हज़रत के नमक का पला हुआ था अत उसने मीर्ज़ा अस्करी से एक मजबूत घोडा मांगा और स्वय बडी तीव्र गति से उनके शिविर मे पहुँच गया। जब वह दौलतखाने[३] के समीप पहुँचा तो घोडे से उतर पडा और बैराम खा के खेमे मे प्रविष्ट होकर मीर्ज़ा अस्करी के हज़रत पादशाह को बन्दी बनाने के उद्देश्य से आगमन के समाचार पहुँचाये। बैराम खा तत्काल पादशाह की सेवा में खेमे के पीछे से पहुँचा और मीर्ज़ा अस्करी के आगमन के समाचार दिये। हज़रत ने कहा, "कन्धार तथा काबुल हमारे लिए इतना अधिक महत्व नही रखते कि हम कृतघ्न भाइयो से उनके लिए युद्ध करें।"

शेर

'तेरा निवास स्थान आकाश पर है, तेरे लिए यह लज्जा का विषय है,
कि एक तिन्के के लिए तू झगडा करे तथा अपने सिर पर धूल डाले।'

वे तत्काल सवार हो गए। ख्वाजा मुअज़्ज़म तथा बैराम खा को भीतर मरियम मकानी के पास भेजा। वे लोग शीघ्रातिशीघ्र मरियम मकानी तथा शाहज़ादये जहानियाँ अक्बर शाह को सवार करके हज़रत के पास लाये। क्योंकि उनको सरकार में घोडो की कमी थी अत उन्होंने तरदी बेग से घोडा मांगा। उसने पुन निष्ठुरता की धूल अपने सिर पर डालकर घोडा देने मे आपत्ति प्रकट की और साथ भी न गया। हज़रत जन्नत आशियानी एराक की ओर कुछ लोगो को साथ लेकर रवाना हुए। मरियम मकानी को अपने साथ ले लिया। शाहज़ादये जहानियाँ को, जिनकी अवस्था एक वर्ष थी, वायु की ऊष्णता के कारण शिविर में छोड दिया।

मीर्ज़ा अस्करी एक क्षण-उपरान्त (हुमायूँ) के शिविर के समीप पहुँचा। उसे यह समाचार प्राप्त हुए कि हज़रत कुशलतापूर्वक चले गए। उसने सेना के एक दस्ते को शिविर पर अधिकार जमाने के लिए नियुक्त कर दिया। दूसरे दिन वह अत्यधिक निर्लज्जता प्रदर्शित करते हुए उत्कृष्ट दीवानखाने में पहुँचा। अत्का खा शाहज़ादये जहानियाँ अक्बर शाह को मीर्ज़ा अस्करी के पास ले गया। तरदी बेग, मीर्ज़ा अस्करी के आदेशानुसार बन्दी बना लिया गया। हज़रत जन्नत आशियानी (५८) के व्यूतात के विषय में पता लगाने के लिए मुहसिल[४] नियुक्त कर दिए गए। मीर्ज़ा अस्करी हज़रत शाहज़ादे को कन्धार ले गया और उसे अपनी पत्नी सुल्तान बेगम को सौंप दिया। उसने उनके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करने में किसी प्रकार की कमी न की।

१ हस्तलिपियों में 'क़स्बये शाल व मस्तान', 'कस्बये शाल व मुश्क' का शाल तथा मस्तान (मश्तंग) से तात्पर्य है। **अकबर नामा** के अनुसार शाल (कोएटा) कंधार से ३० फ़रसख (१५० मील) है। आधुनिक नाप अनुसार यह क़धार के दक्षिण-पूर्व में १३० मील पर है। मश्तग अथवा मस्तग कोएटा के दक्षिण पश्चिम में दक्षिण की ओर ३० मील पर है।

२ हस्तलिपियों में जवाने, हूलीं, एव चोली कई रूप से यह नाम लिखा गया है।

३ शाही खेमों के घेरे से तात्पर्य है।

४ जाच करने वाले तथा कर वसूल करने वाले।

हुमायूँ का ईरान की ओर प्रस्थान

हजरत जन्नत आशियानी २२ व्यक्तियों सहित जिनमें बैराम खा, ख्वाजा मुअज्जम, बाबा दोस्त बख्शी, ख्वाजा गाजी, हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी, मीर्जा कुली, शेख यूसुफ, इबराहीम ईशक आका, हसन अली ईशक आकासी थे, (मार्ग के विषय में) कुछ निश्चित किए बिना रवाना हो गए। वे थोडी दूर गए थे कि बिलोची[1] मिल गया और उसने मार्ग दिखाया। अत्यधिक कष्ट भोगने के उपरान्त वे बाबा हाजी के किले में पहुँचे। वहाँ के तुर्कों के पास जो कुछ था उन्होंने प्रस्तुत करके अभिवादन किया। ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद जो कि मीर्जा अस्करी के पूर्व उस प्रदेश का राजस्व वसूल करने के लिए आया था, हजरत के पहुँचने के विषय में सूचित होकर सेवा में उपस्थित हुआ और घोड, ऊँट तथा जो कुछ आवश्यक वस्तुएँ थी वह प्रस्तुत की। दूसरे दिन हाजी मुहम्मद काकी, जो मीर्जा अस्करी के पास से भाग गया था, सेवा में उपस्थित हुआ। क्योंकि भाइयों तथा सम्बन्धियों की निष्ठुरता के कारण उस क्षेत्र मे ठहरने योग्य कोई स्थान न था अत वे विवश होकर खुरासान तथा एराक की ओर रवाना हुए।

जब वे सीस्तान की विलायत में प्रविष्ट हुए तो अहमद सुल्तान शामलू ने, जो शाह तहमास्प की ओर से वहाँ हाकिम था, स्वागत किया। वे कुछ दिन तक सीस्तान मे ठहरे रहे। अहमद सुल्तान ने अपने सामर्थ्य से अधिक आतिथ्य का प्रबन्ध किया और अपनी स्त्रियो को हजरत मरियम मकानी की सेवा में सेविकाओ के रूप मे सेवा हेतु भेज दिया तथा अपनी समस्त सम्पत्ति एव अन्य वस्तुएँ उपहार स्वरूप भेंट की और अपने आपको दरबार के दासो में सम्मिलित कर लिया। हजरत (पादशाह) ने अपनी आवश्यकतानुसार उसमे से थोडा सा लेकर शेष उसी को प्रदान कर (५९) दिया। परामर्श के समय अहमद सुल्तान ने निवेदन किया कि, "तबस कीलगी के मार्ग से एराक जाना उचित है कारण कि वह अत्यधिक निकट का मार्ग है अत दास मार्ग दर्शक एराक तक सेवा में उपस्थित रहेगा।" हजरत (पादशाह) ने कहा कि, 'मैंने हिरात नगर की अत्यधिक प्रशसा सुन रखी है मैं उस मार्ग से जाना चाहता हूँ।" अहमद सुल्तान उनके साथ हिरात की ओर रवाना हुआ।

उस समय शाह तहमास्प का ज्येष्ठ पुत्र सुल्तान मुहम्मद मीर्जा हिरात का हाकिम था और मुहम्मद खा शरफुद्दीन ऊगली तकलू शाहजादे का अतालीक था। जब उसे उनके आगमन के समाचार प्राप्त हुए तो उसने अली सुल्तान को, जो कि तकलू अमीरों में से था, शीघ्रातिशीघ्र स्वागतार्थ भेजा। वह हिरात की विलायत के प्रारम्भ में उनकी सेवा म पहुँच गया और उनके साथ-साथ हिरात की ओर रवाना हुआ। ईरान का शाहजादा अपने सेवको तथा परिजनों सहित उनके स्वागतार्थ उपस्थित हुआ और आदर प्रदर्शित करने में कोई कसर न उठा रखी। मुहम्मद खा चरणो का चुम्बन करके सम्मानित हुआ और हिरात नगर में शाही शिविर लगे। मुहम्मद खा ने इस प्रकार आतिथ्य का प्रबन्ध किया जैसा कि उसके समकालीनो मे किसी ने न किया होगा। हजरत उसके सौजन्य से बडे सतुष्ट हुए। हजरत की यात्रा की समस्त आवश्यकताये एव सल्तनत की सामग्री मुहम्मद खा ने पूरी की। इस प्रकार शाह तहमास्प से भेंट करने के समय तक किसी अन्य वस्तु की आवश्यकता न हुई।

१ अकबर नामा के अनुसार 'हाती बिलोच'।

जब वे हिरात में समस्त दर्शनीय भवनों एवं उद्यानों का निरीक्षण कर चुके तो वहाँ से प्रस्थान करके मशहदे मुक़द्दस[1] की ओर रवाना हुए। मशहद के हाकिम शाह कुली[2] सुल्तान इस्ताजलू ने भी यथा-सम्भव सेवा का प्रयत्न किया। इसी प्रकार शाह तहमास्प के आदेशानुसार प्रत्येक मंजिल पर वहाँ का हाकिम जो कुछ भी उसे प्राप्त हो सकता था, वह उपहार स्वरूप भेंट करता था। शाह तहमास्प के शिविर से शाही आदेशानुसार एराक के अत्यधिक प्रतिष्ठित एवं सम्मानित (६०) लोग उनके स्वागतार्थ रवाना हुए और निश्चय हुआ कि दामगान से शाह के शिविर तक प्रत्येक मंजिल में उनमें से एक एक आतिथ्य का प्रबन्ध करे। आतिथ्य की वस्तुएँ शाही सरकार से निश्चित हुईं। प्रत्येक मंजिल पर उन्हें दावत दी जाती थी, यहाँ तक कि वे कज़वीन पहुँच गए। शाह का शिविर यीलाक़ सूरलीक रवाना हो चुका था। बैराम खाँ को हज़रत ने शाह के पास भेजा। वह जाकर शाह का पत्र लाया जिसमें उनके हर्षवर्धक चरणों के आगमन पर बधाई दी गई थी। वे एक मंजिल से दूसरी मंजिल की यात्रा करने लगे और जिस मंजिल पर भी पहुँचते थे वहाँ वाले सेवा एवं अभिवादन करते थे।

सूरलीक़ के यीलाक़[3] में हज़रत जन्नत आशियानी तथा शाह तहमास्प की भेंट हुई। शाह तहमास्प ने आदर सम्मान प्रदर्शित करने में कोई कमी न की और एक भव्य जश्न का आयोजन करके दोनों ओर वालों के (सम्मान की दृष्टि से) जिस प्रकार का आतिथ्य उचित था उसका प्रबन्ध कराया। संयोग से वार्तालाप के मध्य में शाह ने पूँछा कि, "आपकी पराजय का क्या कारण है?" हज़रत जन्नत आशियानी ने कहा कि, 'भाइयों का विरोध तथा विश्वासघात।" [4]इस बात से शाह तहमास्प का भाई बहराम मीर्ज़ा उनसे रुष्ट हो गया और उनकी शत्रुता पर कटिबद्ध हो गया। वह शाह को इस बात के लिए तैयार करने लगा कि वह उनको नष्ट कर दे। इसके विपरीत शाह की बहिन सुल्तानम[5] ने, जो कि शाह की बड़ी विश्वासपात्र थी और राज्य के समस्त प्रबन्धों में जिसे पूर्ण अधिकार

१ पवित्र मशहद।

२ हस्तलिपियों एवं अन्य ग्रन्थों में 'शाह कुली सुल्तान इस्ताजलू'।

३ ग्रीष्म ऋतु में ठहरने का स्थान।

४ तारीखे फ़िरिश्ता में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है जमादी उल अव्वल ९५१ हि० (जुलाई अगस्त १५४४ ई०) में उन्होंने ईरान के बादशाह शाह तहमास्प सफ़वी से भेंट की। उसने उसी आतिथ्य के आतिथ्य के लिये जिन बातों की आवश्यकता थी उनका प्रबंध कराया। एक दिन हज़रत शाह ने वार्तालाप के समय पूछा कि, "किस कारण शक्तिहीन शत्रु को प्रभुत्व प्राप्त हो गया?" जन्नत आशियानी ने कहा कि, 'भाइयों की फूट के कारण।" हज़रत शाह ने कहा कि, "जिस प्रकार भाइयों के प्रति आपने व्यवहार किया वह न चाहिये था।" जब भोजन का दस्तरख्वान उपस्थित किया गया, शाह तहमास्प के भाई बहराम मीर्ज़ा ने जो उस गोष्ठी में हाथ बाँधे हुये नम्रतापूर्वक खड़ा था तश्त एवं आफ़्ताबा लेकर हज़रत शाह के हाथ पर जल डाला और सेवकों के समान सेवा की। उस समय हज़रत शाह ने जन्नत आशियानी की ओर आकृष्ट होकर कहा कि, "भाइयों को इस प्रकार रखना चाहिये।" बहराम मीर्ज़ा इस बात पर अत्यधिक खिन्न हो गया। जब तक जन्नत आशियानी एराक़ में रहे उसने शत्रुता की लगाम अपने हाथ से न छोड़ी। उसने कुछ लोगों को मिला लिया और जब कभी उसे अवसर मिलता वह अपशब्द बातें किया करता था। उसने दलीलों द्वारा हज़रत शाह को समझा दिया कि, "यह उचित नहीं कि साहिब किरान (तीमूर) की सन्तान हिन्दुस्तान में, जो ईरान का पड़ोसी है, राज्य करे।" (तारीखे फ़िरिश्ता मक़ाला २, पृ० २३९)।

५ कुछ हस्तलिपियों में 'सुल्तान बेगम'।

प्राप्त था, यथा-सम्भव (हजरत जहाँबानी की) सहायता का प्रयत्न किया। काजी जहाँ कजवीनी ने, जो कि शाह का दीवान था तथा हकीम नूरुद्दीन मुहम्मद तबीब ने जिसे पूर्ण प्रभुत्व एवं विश्वास प्राप्त था, हजरत जन्नत आशियानी की निष्ठा में कोई कमी न की। हकीम नूरुद्दीन जो कि महरम था भीतर तथा बाहर, जब उसे अवसर मिलता हजरत के लिए समस्त व्यवस्थाओं का प्रयत्न करता रहता था। उस समय शाह तहमास्प ने हजरत जन्नत आशियानी की प्रसन्नता हेतु अपने उच्च (६१) पदाधिकारियों तथा अमीरों सहित बाण द्वारा शिकार का प्रबन्ध करवाया। बहराम मीर्जा ने, जो अबुल कासिम खलफा के प्रति बहुत समय से ईर्ष्या रखता था, शिकार के बहाने से उसकी ओर बाण चलाया। बाण उसके ऐसे स्थान पर लगा जिससे वह तत्काल मृत्यु को प्राप्त हो गया।

हुमायूं का ईरान से कन्धार की ओर प्रस्थान

शाह तहमास्प ने हजरत को बिदा करने के लिए सल्तनत की समस्त सामग्री एकत्र की। अपने पुत्र शाहजादा मुराद को, जो कि दूध पीता बालक था, दस हजार अश्वारोहियों सहित हजरत की कुमक हेतु नियुक्त किया। हजरत जन्नत आशियानी ने कहा कि, "मैं तबरेज तथा अर्दबेल की सैर करना चाहता हूँ।" शाह तहमास्प ने उन स्थानों के हाकिमों के पास फरमान भेजे कि यथा-सम्भव आदर सम्मान प्रदर्शित करने का प्रयत्न करें। वे उस क्षेत्र की सैर करके कन्धार की ओर रवाना हुए और निरन्तर यात्रा करते हुए मशहदे मुकद्दस की जियारत हेतु पहुँचे।

किजिलबाश अमीर जो साथ आये थे एवं शाहजादे का अतालीक बुदाग खाँ अफशार जिसे उस सेना का पूर्ण अधिकार प्राप्त था, जब गरमसीर के क़िले के समीप पहुँचे तो गरमसीरात[1] अपने अधिकार में कर लिया। जब वे कन्धार पहुँचे तो बहुत बड़ी संख्या में लोगों ने किले के बाहर निकल कर यथा-सम्भव प्रयत्न किया किन्तु वे पराजित हो गए। किजिलबाश सेना ने कन्धार में पड़ाव किया। हजरत जहाँबानी भी ५ दिन उपरान्त कन्धार पहुँच गए और किले का अवरोध कर लिया। तीन मास तक नित्य-प्रति युद्ध होता रहा। दोनों ओर से बहुत बड़ी संख्या में लोग मारे जाते थे।

बैराम खाँ राजदूत बनकर कामरान मीर्जा के पास काबुल पहुँचा। मार्ग में हजारा लोगों ने उसपर आक्रमण कर दिया, युद्ध हुआ। बैराम खाँ को विजय प्राप्त हो गई और वह काबुल चला गया। उसने मीर्जा कामरान से भेंट की। मीर्जा हिन्दाल, मीर्जा सुलेमान वल्द खान मीर्जा एवं मीर्जा यादगार नासिर से, जो कि भक्कर से बड़ी अव्यवस्थित दशा में आया था, भेंट हुई। मीर्जा कामरान ने मेहदे उलिया खानजादा बेगम[2] को बैराम खाँ के साथ कन्धार भेज दिया कि सम्भव है संधि की कोई राह निकल आये। जिस समय बैराम खाँ खानजादा बेगम को लेकर (६२) हजरत जन्नत आशियानी की सेवा में कन्धार पहुँचा तो मीर्जा अस्करी उसी प्रकार युद्ध कर रहा था। किजिलबाश सेना अवरोध में अधिक समय लग जाने के कारण चिन्तित थी और लौटना चाहती थी। उनका यह विचार था कि जब हजरत (जहाँबानी) कन्धार पहुँच जायेंगे तो चग़ताई उलूस[3] उनके पास आने लगेंगे। जब बहुत समय व्यतीत हो गया और कोई भी न

१ गरमसीर प्रदेश।
२ बाबर की बहिन।
३ क़बीले।

आया तथा मीर्जा अस्करी की सहायतार्थ मीर्जा कामरान के पहुँचने के समाचार प्रसिद्ध हुए तो किजिलबाश लोग अत्यधिक चिन्ता में पड गए।

उन्हीं दिनों में सयोग से मीर्जा कामरान का भाग्य उससे विमुख हो गया। मीर्जा हुसैन खा, फज़ायल बेग, मुनइम खा का भाई, कामरान मीर्जा के पास से भाग कर हज़रत की सेवा में उपस्थित हुए। तुर्कमान लोगों की आशाओं मे वृद्धि हो गई। कुछ दिन उपरान्त मुहम्मद सुल्तान मीर्जा, उलुग मीर्जा, कासिम हुसैन सुल्तान एव शेर अफगन बेग भी भाग कर पहुँच गए। इससे किजिलबाश सेना और भी सतुष्ट हो गई। मुईद बेग[1], जो कि किले में बन्दी था, किसी न किसी युक्ति से अपने आपको मुक्त करके कन्धार के किले से रस्सी के सहारे उतरा। हज़रत जहाँबानी ने उसके प्रति अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की। एक अन्य समूह कराचा खा के भतीजे अबुल हसन एव मुनव्वर बेग वल्द नूर बेग के साथ कन्धार के किले से बाहर आ गया।

हुमायू द्वारा क़न्धार पर अधिकार

मीर्जा अस्करी ने अत्यधिक व्याकुल होकर क्षमा-याचना कर ली। हज़रत जहाँबानी ने पूर्ण सौजन्य प्रदर्शित करते हुए उसे क्षमा प्रदान कर दी। किजिलबाश अमीरों को बुलवाकर उनसे यह निश्चय किया कि, "क्योंकि कन्धार के किले में चगताई उलूस के परिवार बहुत बडी सख्या में हैं अत तीन दिन तक कोई तुर्कमान किले वालों को हानि न पहुँचाये।" जैसा निश्चय हो चुका था तीन दिन में क़िले वाले सपरिवार बाहर निकल आये। मीर्जा अस्करी अत्यधिक लज्जित होकर दरबार में उपस्थित हुआ। जो कुछ हो चुका था उसके विषय में कोई बात न हुई। चगताई उलूस के अमीर गरदन में तलवार लटकाये एव हाथ में कफन लिए हुए सेवा में उपस्थित हुए (६३) तथा सम्मानित किए गए। क्योंकि किजिलबाशों से यह निश्चय हो चुका था कि विजय उपरान्त कन्धार उनके सुपुर्द कर दिया जायेगा अत हज़रत जहाँबानी ने किसी अन्य राज्य के अधिकार में न होने के बावजूद कन्धार उन्हें दे दिया। बुदाग खा, शाह तहमास्प के पुत्र मीर्जा मुराद को किले के भीतर ले गया और कन्धार पर अधिकार जमा लिया। जो किजिलबाश अमीर सहायतार्थ आये थे, उनमें से अधिकाश एराक लौट गए। बुदाग खा, अबुल फतह सुल्तान अफ़शार, सूफी वली सुल्तान शामलू[2] के अतिरिक्त मीर्जा की सेवा में कोई भी न रह गया।

शीत ऋतु आ गई और चगताई उलूस के पास कोई सुरक्षित स्थान न था। हज़रत जन्नत आशियानी ने विवश होकर बुदाग खा के पास आदमी भेजे और कहलाया कि, "इस शीत ऋतु में सेना वालों को सुरक्षित स्थान की आवश्यकता है।" उस निष्ठुर ने कोई ऐसी बात, जो उपयोगी हो सकती हो, न कही। चगताई उलूस परेशान हो गए। अब्दुल्लाह खा एव जमील बेग, जो किले के बाहर आ गए थे, भागकर काबुल चले गए। मीर्जा अस्करी भी अवसर पाकर भाग गया। बहुत बडी सख्या में लोगों ने उसका पीछा किया और उसे बन्दी बनाकर हज़रत जहाँबानी के पास लाये। उसे बन्दी बना दिया गया। चगताई उलूस के सरदारों ने एकत्र होकर परामर्श उपरान्त यह निश्चय किया कि कन्धार का किला आवश्यकतानुसार क़िजिलबाशों से ले लिया

१ अकबर नामा के अनुसार गुलबदन बेगम का पति खिज्र ख्वाजा खाँ, मुईद बेग से भी पहिले हुमायूं की सेवा में आ गया था।

२ हस्तलिपियों में 'शामलू मत' इत्यादि।

व्यस्त हो गया। हजरत जहाँबानी आब दर्रे से जुहाक पहुँचे। शेर अली ने यथा सम्भव युद्ध किया और पराजित हुआ। (हजरत पादशाह की) सेना दर्रे से कुशलतापूर्वक पार हो गई[1]। शेर अली ने पुन सेना के पीछे वालो पर आक्रमण किया। हजरत जहाँबानी ने देहे अफगानान[2] में पडाव किया। दूसरे दिन शेर अफगन बेग एव मीर्जा कामरान के समस्त आदमी युद्ध के लिए निकले। यूरत चालाक के उलग[3] में भीषण युद्ध हुआ। सर्वप्रथम जन्नत आशियानी के आदमी छिन्न भिन्न हो गए किन्तु अन्त में मीर्जा हिन्दाल, कराचा खा तथा हाजी मुहम्मद खा के प्रयत्न से मीर्जा कामरान के आदमी बुरी तरह से पराजित हो गए। शेर अफगन बेग बन्दी बना लिया गया। जब वह हजरत जहाँबानी की सेवा में प्रस्तुत किया गया तो अमीरो के प्रयत्न से उसकी हत्या कर दी गई। मीर्जा कामरान की सेना की बहुत बडी सख्या उस दिन मार डाली गई। जो बच गए वे किले मे भाग गए। शेर अली जो वीरता से सुशोभित था, नित्यप्रति किले के बाहर निकल कर यथा-सम्भव युद्ध करता था। एक बार शेर अली तथा हाजी मुहम्मद खा की एक दूसरे से मुठभेड हो गई। हाजी मुहम्मद खा घायल हो गया।

सयोग से समाचार प्राप्त हुए कि एक कारवान जिसके पास अत्यधिक घोडे हैं, (६८) चारी कारान पहुँच गया है। शेर अली ने मीर्जा कामरान से निश्चय किया कि वह एक सेना को लेकर घोडो को नगर में लाये। मीर्जा कामरान के अधिकाश आदमी शेर अली के साथ इस सेवा हेतु रवाना हुए। हजरत जन्नत आशियानी को इस विषय में सूचना मिल गई । वे किले के समीप पहुँचे। किले में आने जाने का मार्ग पूर्ण रूप से बन्द हो गया। शेर अली तथा उसके सहायकों को वापसी उपरान्त किले में प्रविष्ट होने का माग न मिल सका। एक बार मीर्जा कामरान ने यह निश्चय किया कि किले के बाहर निकल कर युद्ध करके शेर अली तथा उस समूह को किले में ले आये। बाहर वालो को सूचना मिल गई। उनके निकलने के समय उन्होने तोप तथा बन्दूक से उन्हे पराजित कर दिया।

बाकी, सालेह एव जलालुद्दीन बेग जो कि मीर्जा कामरान, के बहुत बडे विश्वास-पात्र थे, उस समय हजरत जन्नत आशियानी की सेवा मे पहुँचे। शेर अली तथा उसके सहायक नगर मे प्रविष्ट होने की आर से निराश हा गए। किले का अवरोध कडा हो गया। मीर्जा कामरान ने अत्यधिक निष्ठुरता के कारण आदेश दिया कि हजरत शाहजादा अकबर शाह को कई बार किले के कगूरे पर जहाँ कि तोप तथा बन्दूक के गोले बहुत बडी सख्या में पहुँच रहे हो, बैठा दिया जाय। महाम अनका उन्हें गोद में लेकर बैठ गई और अपने आपको सामने कर देती थी। (वह मुख) शत्रु की ओर किये थी[4]। ईश्वर ने अपने चुने हुए व्यक्ति की रक्षा की।

१ कुछ हस्तलिपियों एव नवल किशोर प्रेस के सस्करण में इसी प्रकार है, "सेना दर्रे से कुशलतापूर्वक पार हो गई"। अन्य हस्तलिपियों में, 'सेना ने धूरबन्द में, दर्रे को पार किया और काबुल की ओर रवाना हुई।"
२ काबुल के उपान्त में।
३ घास के मैदान, चरागाह।
४ 'बरुनिब ग़नीम मी दाश्त'।

इसी बीच में हज़रत जहाँबानी रुग्ण हो गए और उनका रोग नित्यप्रति बढ़ने लगा, यहाँ तक कि लोग चिन्तित रहने लगे। उनके निकटवर्तियों के अतिरिक्त किसी को उनके जीवित होने के विषय में सूचना न थी। इस कारण लश्कर में अव्यवस्था फैल गई। कराचा ख़ाँ, मीर्ज़ा अस्करी की रक्षा किया करता था। बदख़्शाँ वालों ने प्रत्येक दिशा में विद्रोह करना प्रारम्भ कर दिया। दो मास उपरान्त हज़रत जहाँबानी स्वस्थ हो गए और उनकी कुशलता के समाचार चारों ओर भेज दिए गए। समस्त उपद्रव शान्त हो गया। इस शेर का आशय युग वालों के कानों में पहुँच गया

शेर

'उस कुशलता से जो सफल बादशाह ने प्राप्त की,
उद्यान खिल उठे, मानो बहार का शीतल पवन मिल गया हो।'

उत्कृष्ट लश्कर क़िलये ज़फ़र के समीप पहुँचा। हज़रत मरियम मकानी के भाई ख़्वाजा मुअज़्ज़म ने उस समय ख़्वाजा रशीदी की, जो एराक़ से हज़रत पादशाह के साथ आया था, हत्या कर दी और काबुल भाग गया। वहाँ उसे हज़रत पादशाह के आदेशानुसार बन्दी बना दिया गया।

मीर्ज़ा कामरान द्वारा काबुल पर अधिकार

मीर्ज़ा कामरान को जब भक्कर में हज़रत जहाँबानी के बदख़्शाँ से प्रस्थान के विषय में सूचना मिली तो उसने एक सेना को अपने साथ मिलाकर गूरबन्द तथा काबुल की ओर शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान किया। मार्ग में उसे कुछ व्यापारी मिले। उसने उनके अत्यधिक घोड़े छीन कर अपने समस्त आदमियों को दो-अस्पा[1] बना दिया तथा ग़ज़नी के समीप पहुँच गया। ग़ज़नी के कुछ निवासियों ने उसे क़िले के भीतर लिया। वहाँ का हाकिम ज़ाहिद बेग, जो कि असावधानी की निद्रा में था, मार डाला गया। मीर्ज़ा के आदेशानुसार काबुल के मार्ग की रक्षा प्रारम्भ कर दी गई ताकि उस स्थान पर कोई समाचार न पहुँचे। ग़ज़नी की ओर से सन्तुष्ट होकर वह शीघ्रातिशीघ्र काबुल की ओर रवाना हुआ। मुहम्मद कुली[2] तग़ाई, फ़ज़ायल बेग एवं एक अन्य समूह जो काबुल में था, उस समय सावधान हुये जब मीर्ज़ा कामरान नगर में प्रविष्ट हो गया। मुहम्मद (६७) कुली तग़ाई, जो हम्माम में था बन्दी बना लिया गया। उसकी तत्काल हत्या कर दी गई। मीर्ज़ा कामरान काबुल के क़िले में प्रविष्ट हो गया। फ़ज़ायल बेग एवं मेहतर वकील को बन्दी बना कर अन्धा कर दिया गया। उसने कुछ लोग बेगमों तथा शाहज़ादे की रक्षा हेतु नियुक्त कर दिए।

यह समाचार हज़रत जन्नत आशियानी के पास, जब वे क़िलये ज़फ़र के समीप थे, पहुँचे। हज़रत जहाँबानी ने बदख़्शाँ तथा कुन्दुज़ की हुकूमत का फ़रमान, जो मीर्ज़ा हिन्दाल को प्रदान हुआ था, मीर्ज़ा सुलेमान के पास भेजा और शीघ्रातिशीघ्र काबुल की ओर अग्रसर हुए। मीर्ज़ा कामरान उतने समय में जितनी सेना एकत्र कर सकता था, वह उसने एकत्र की। शेर अफ़गन उससे मिल गया। मीर्ज़ा कामरान का एक सेवक शेर अली, ज़ुहाक एवं गूरबन्द पहुँचा और मार्ग रोकने में

१ दो घोड़ों वाला।
२ अन्य ग्रन्थों में 'मुहम्मद अली'।

व्यस्त हो गया। हज़रत जहाँबानी आब दर्रे से जुहाक पहुँचे। शेर अली ने यथा-सम्भव युद्ध किया और पराजित हुआ। (हज़रत पादशाह की) सेना दर्रे से कुशलतापूर्वक पार हो गई[1]। शेर अली ने पुन सेना के पीछे वालों पर आक्रमण किया। हज़रत जहाँबानी ने देहे अफगानान[2] में पडाव किया। दूसरे दिन शेर अफगान बेग एवं मीर्ज़ा कामरान के समस्त आदमी युद्ध के लिए निकले। यूरत चालाक के उलग[3] में भीषण युद्ध हुआ। सर्वप्रथम जन्नत आशियानी के आदमी छिन्न भिन्न हो गए किन्तु अन्त में मीर्ज़ा हिन्दाल, क़राचा खा तथा हाजी मुहम्मद खा के प्रयत्न से मीर्ज़ा कामरान के आदमी बुरी तरह से पराजित हो गए। शेर अफगान बेग बन्दी बना लिया गया। जब वह हज़रत जहाँबानी की सेवा में प्रस्तुत किया गया तो अमीरो के प्रयत्न से उसकी हत्या कर दी गई। मीर्ज़ा कामरान की सेना की बहुत बडी सख्या उस दिन मार डाली गई। जो बच गए वे किले मे भाग गए। शेर अली जो वीरता से सुशोभित था, नित्यप्रति किले के बाहर निकल कर यथा-सम्भव युद्ध करता था। एक बार शेर अली तथा हाजी मुहम्मद खा की एक दूसरे स मुठभेड हो गई। हाजी मुहम्मद खा घायल हो गया।

सयोग से समाचार प्राप्त हुए कि एक कारवान जिसके पास अत्यधिक घोडे हैं, (६८) चारी कारान पहुँच गया है। शेर अली ने मीर्ज़ा कामरान से निश्चय किया कि वह एक सेना को लेकर घोडो को नगर में लाये। मीर्ज़ा कामरान के अधिकाश आदमी शेर अली के साथ इस सेवा हेतु रवाना हुए। हजरत जनत आशियानी को इस विषय में सूचना मिल गई। वे किले के समीप पहुँचे। किले मे आने जाने का मार्ग पूर्ण रूप से बन्द हो गया। शेर अली तथा उसके सहायको को वापसी उपरान्त किले में प्रविष्ट होने का मार्ग न मिल सका। एक बार मीर्ज़ा कामरान ने यह निश्चय किया कि किले के बाहर निकल कर युद्ध करके शेर अली तथा उस समूह को किले में ले आये। बाहर वालो को सूचना मिल गई। उनके निकलने के समय उन्होने तोप तथा बन्दूक से उन्हे पराजित कर दिया।

याकी, सालेह एव जलालुद्दीन बेग जा कि मीर्ज़ा कामरान, के बहुत बडे विश्वास-पात्र थे, उस समय हजरत जनत आशियानी की सेवा में पहुँचे। शेर अली तथा उसके सहायक नगर मे प्रविष्ट होने की ओर से निराश हो गए। किले का अवरोध कडा हो गया। मीर्ज़ा कामरान ने अत्यधिक निष्ठुरता के कारण आदेश दिया कि हजरत शाहज़ादा अकबर शाह को कई बार किले के कगूरे पर जहाँ कि तोप तथा बन्दूक के गोले बहुत बडी सख्या मे पहुँच रहे हो, बैठा दिया जाय। महाम अनका उन्हे गोद में लेकर बैठ गई और अपने आपको सामने कर देती थी। (वह मुख) शत्रु की ओर किये थी[4]। ईश्वर ने अपने चुने हुए व्यक्ति की रक्षा की।

१ कुछ हस्तलिपियों एव नवल किशोर प्रेस के सस्करण में इसी प्रकार है, "सेना दर्रे से कुशलतापूर्वक पार हो गई"। अन्य हस्तलिपियों में, "सेना ने गुरबन्द में, दर्रे को पार किया और काबुल की ओर रवाना हुई।"
२ काबुल के उत्तर में।
३ घास के मैदान, चरागाह।
४ 'बजानिब ग़नीम मी दाश्त'।

बल्ख पर अधिकार जमाने में असफलता

(७३) इस वर्ष के अन्त में हज़रत जन्नत आशियानी बल्ख की विजय के उद्देश्य से काबुल से रवाना हुए[1] और मीर्ज़ा कामरान एव मीर्ज़ा अस्करी को बुलवाने के लिए आदमी भेजे। मीर्ज़ा हिन्दाल एव मीर्ज़ा सुलेमान हज़रत जन्नत आशियानी के बदख्शाँ पहुँचने पर सेवा में उपस्थित हुए। मीर्ज़ा इबराहीम, मीर्ज़ा सुलेमान की प्रार्थनानुसार किश्म में ठहर गया। मीर्ज़ा कामरान एव मीर्ज़ा अस्करी ने पुन विद्रोह कर दिया और वे सेवा में उपस्थित न हुए। हज़रत जन्नत आशियानी निरन्तर यात्रा करते हुए ऐबक नामक किले पर पहुँचे। बल्ख के हाकिम पीर मुहम्मद खाँ का अतालीक[2] अपने प्रतिष्ठित अमीरों की सेना को लेकर ऐबक के किले में बन्द हो गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने किले का अवरोध कर लिया। उज़बेक लोग परेशान हो गए और वे हानि न पहुँचाये जाने का आश्वासन लेकर बाहर निकले।

जब मीर्ज़ा कामरान सेवा में न उपस्थित हुआ तो अमीरों ने एकत्र होकर परामर्श किया कि कहीं ऐसा न हो कि, "सेना बल्ख की ओर रवाना हो और मीर्ज़ा कामरान काबुल पर आक्रमण कर दे।" हज़रत जन्नत आशियानी ने कहा कि, 'क्योंकि इस अभियान का सकल्प हो चुका है अत ईश्वर पर भरोसा करके हम प्रस्थान करते हैं।" सौभाग्य के पाँव रिकाब में रखकर वे बल्ख की ओर रवाना हुए। अमीर तथा अधिकाश सैनिक मीर्ज़ा कामरान के न आने के कारण चिन्तित थे। जब वे बल्ख के समीप पहुँचे तो सेना के पड़ाव के समय शाह मुहम्मद सुल्तान उज़बेक ३००० अश्वारोहियों सहित पहुँच गया। सेना का एक दल उससे युद्ध करने के लिए रवाना हुआ। घोर युद्ध हुआ। मुहम्मद क़ासिम खाँ मौजी का भाई काबुली उस युद्ध में मारा गया। ऊज़बेकों का एक सरदार बन्दी बना लिया गया। दूसरे दिन पीर मुहम्मद खाँ नगर के बाहर निकला। उबैद खाँ का पुत्र अब्दुल अज़ीज़ खाँ एव हिसार का सुल्तान भी उसकी सहायतार्थ पहुँच गए थे। मध्याह्नोपरान्त दोनों सेनाओं का मुक़ाबला हुआ और युद्ध प्रारम्भ हो गया। हज़रत जहाँबानी ने अस्त्र शस्त्र धारण किए। मीर्ज़ा सुलेमान, मीर्ज़ा हिन्दाल तथा हाजी मुहम्मद सुल्तान ने शत्रुओं के अग्र भाग को पराजित करके नगर की ओर भगा दिया। पीर मुहम्मद खाँ तथा उसके सहायक भी भाग कर बल्ख पहुँचे। सूर्यास्त के समय चग़ताई सेना, जो नगर के समीप पहुँच गई थी, लौट आई। क्योंकि अधिकाश चग़ताई अमीर मीर्ज़ा कामरान के न आने के कारण काबुल तथा अपने परिवार के विषय में चिन्तित थे, (७४) अत इस रात्रि में, जिसकी प्रात को बल्ख अधिकार में आ जाता, एकत्र हुए और हज़रत की सेवा में निवेदन किया कि, 'बल्ख की नदी पार करना राज्य के लिए उचित नहीं। यह उचित होगा कि दर्रा गज़ की ओर प्रस्थान किया जाय। एक दृढ स्थान शिविर के लिए निश्चित कर ले। अल्प समय में बल्ख तथा हिसार वाले सेवा में उपस्थित हो जायेंगे।" उन्होंने इतना अधिक आग्रह किया कि हज़रत जहाँबानी ने विवश होकर कूच कर दिया।

१ तारीखे फ़िरिश्ता में इस अभियान का कारण इस प्रकार दिया गया है क्योंकि बैरम खाँ तुर्कमान को उज़बेकों द्वारा नाना प्रकार के कष्ट पहुँचे थे अत बदले के उद्देश्य से ६५६ हि० (१५४६ ई०) में वे हिन्दाल मीर्ज़ा एव सुलेमान मीर्ज़ा को लेकर बल्ख की ओर रवाना हुये। (तारीखे फ़िरिश्ता मकाला २, पृ० २३६)।

२ गुरु, उसका नाम ख्वाजा बाग अथवा ख्वाजा बाक़ था।

आशियानी ने मीर्ज़ा हिन्दाल एवं हाजी मुहम्मद कोका[१] को हिरावल[२] के रूप में किश्म की ओर रवाना किया। कराचा खाँ ने मीर्ज़ा कामरान के पास समाचार भेज दिया कि, "मीर्ज़ा हिन्दाल के साथ थोड़े से लोग हैं, पादशाह दूर हैं, शीघ्र आक्रमण कर देना चाहिये ताकि मिलकर मीर्ज़ा हिन्दाल को पराजित कर दिया जाय। तदुपरान्त हज़रत जहाँबानी से सुगमतापूर्वक युद्ध हो सकेगा।" मीर्ज़ा कामरान शीघ्रातिशीघ्र किश्म पहुँचा। तालीकान नदी पर, जहाँ मीर्ज़ा हिन्दाल एवं उसके सैनिक नदी पार कर चुके थे, पहुँच गया। प्रथम आक्रमण में उसे विजय प्राप्त हो गई। मीर्ज़ा हिन्दाल तथा उस समूह का समस्त असबाब लूट लिया गया। हज़रत जन्नत आशियानी भी उसी समय नदी तट पर पहुँच गए। घाट की खोज में कुछ देर प्रतीक्षा की गई। नदी पार करने के (७२) उपरान्त हज़रत जहाँबानी की सेना का अग्र भाग मीर्ज़ा कामरान के आदमियों के पास पहुँच गया। शेख़ीम ख्वाजा खिज्री एवं इस्माईल बेग दूल्दाई को बन्दी बनाकर पादशाह की सेवा में उपस्थित किया गया। मीर्ज़ा कामरान हज़रत जहाँबानी की सेना के अग्रभाग से युद्ध करने के लिये लौटा। जब दोनों की मुठभेड़ हुई तो हज़रत जन्नत आशियानी की पताकाएँ मीर्ज़ा कामरान को दृष्टिगत हुईं। मीर्ज़ा ठहर न सका और तालीकान की ओर भाग गया। जो कुछ उसने लूटा था और जो कुछ उसके पास था, वह नष्ट हो गया।

दूसरे दिन तालीकान का अवरोध कर लिया गया। मीर्ज़ा सुलेमान उस समय (हज़रत पादशाह की) सेवा में पहुँचा। मीर्ज़ा कामरान ने ऊज़बेकों[३] से सहायता माँगी। जब उसे सहायता की आशा न रही तो वह बड़ा व्याकुल हुआ। विनयपूर्वक उसने मक्का जाने की अनुमति माँगी। हज़रत जन्नत आशियानी ने उसपर कृपा करके उसकी प्रार्थना इस शर्त पर स्वीकार कर ली कि वह विद्रोही अमीरों को दरबार में भेज दे। मीर्ज़ा कामरान ने बाबूस बेग के अपराधों को क्षमा करने की प्रार्थना की और अन्य अमीरों को सेवा में भेज दिया। वे लज्जित होकर दरबार में पहुँचे। हज़रत जहाँबानी ने उनके अपराध क्षमा कर दिये। मीर्ज़ा कामरान किले के बाहर निकल कर २ फरसख आगे पहुँचा। क्योंकि उसे इस बात की आशा न थी कि हज़रत जहाँबानी अधिकार-सम्पन्न होने के बावजूद उसे क्षमा कर देंगे अतः वह इस कृपा से अत्यधिक प्रभावित होकर हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा के उद्देश्य से लौटा।

जब हज़रत जन्नत आशियानी को यह समाचार प्राप्त हुए तो वे बड़े प्रसन्न हुए। मीर्ज़ा लोगों को उसके स्वागतार्थ भेजा और भेंट के समय अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की। मीर्ज़ा कामरान की सल्तनत के असबाब पुनः सुव्यवस्थित हुए। तीन दिन तक उसी मंज़िल पर पड़ाव किया गया। दावतें तथा जश्न हुए। कुछ दिन उपरान्त कोलाब की विलायत मीर्ज़ा कामरान को अक्ता के रूप में प्रदान कर दी गई। मीर्ज़ा सुलेमान एवं मीर्ज़ा इब्राहीम किश्म में रह गए। सम्मानित शिविर काबुल की ओर रवाना हुआ। शीत ऋतु के प्रारम्भ में वे काबुल पहुँच गए और आदेश दिया कि सेना वाले सेना की तैयारी में व्यस्त हो जायें।

१ अधिकांश हस्तलिपियों में 'हाजी मुहम्मद कोकी'।
२ सेना का अग्र भाग।
३ पीर मुहम्मद खाँ ऊज़बेक।

बल्ख पर अधिकार जमाने में असफलता

(७३) इस वर्ष के अन्त में हज़रत जन्नत आशियानी बल्ख की विजय के उद्देश्य से काबुल से रवाना हुए[1] और मीर्ज़ा कामरान एवं मीर्ज़ा अस्करी को बुलवाने के लिए आदमी भेजे। मीर्ज़ा हिन्दाल एवं मीर्ज़ा सुलेमान हज़रत जन्नत आशियानी के बदख्शाँ पहुँचने पर सेवा में उपस्थित हुए। मीर्ज़ा इबराहीम, मीर्ज़ा सुलेमान की प्रार्थनानुसार किश्म में ठहर गया। मीर्ज़ा कामरान एवं मीर्ज़ा अस्करी ने पुनः विद्रोह कर दिया और वे सेवा में उपस्थित न हुए। हज़रत जन्नत आशियानी निरन्तर यात्रा करते हुए ऐबक नामक किले पर पहुँचे। बल्ख के हाकिम पीर मुहम्मद खाँ का अतालीक[2] अपने प्रतिष्ठित अमीरों की सेना को लेकर ऐबक के किले में बन्द हो गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने किले का अवरोध कर लिया। ऊज़बेक लोग परेशान हो गए और वे हानि न पहुँचाये जाने का आश्वासन लेकर बाहर निकले।

जब मीर्ज़ा कामरान सेवा में न उपस्थित हुआ तो अमीरों ने एकत्र होकर परामर्श किया कि कहीं ऐसा न हो कि, "सेना बल्ख की ओर रवाना हो और मीर्ज़ा कामरान काबुल पर आक्रमण कर दे।" हज़रत जन्नत आशियानी ने कहा कि, "क्योंकि इस अभियान का सकल्प हो चुका है अतः ईश्वर पर भरोसा करके हम प्रस्थान करते हैं।" सौभाग्य के पाँव रिकाब में रखकर वे बल्ख की ओर रवाना हुए। अमीर तथा अधिकाश सैनिक मीर्ज़ा कामरान के न आने के कारण चिन्तित थे। जब वे बल्ख के समीप पहुँचे तो सेना के पड़ाव के समय शाह मुहम्मद सुल्तान ऊज़बेक ३००० अश्वारोहियों सहित पहुँच गया। सेना का एक दल उससे युद्ध करने के लिए रवाना हुआ। घोर युद्ध हुआ। मुहम्मद क़ासिम खाँ मौजी का भाई काबुली उस युद्ध में मारा गया। ऊज़बेकों का एक सरदार बन्दी बना लिया गया। दूसरे दिन पीर मुहम्मद खाँ नगर के बाहर निकला। उबैद खाँ का पुत्र अब्दुल अज़ीज़ खाँ एवं हिसार का सुल्तान भी उसकी सहायतार्थ पहुँच गए थे। मध्याह्नोपरान्त दोनों सेनाओं का मुक़ाबला हुआ और युद्ध प्रारम्भ हो गया। हज़रत जहाँबानी ने अस्त्र-शस्त्र धारण किए। मीर्ज़ा सुलेमान, मीर्ज़ा हिन्दाल तथा हाजी मुहम्मद सुल्तान ने शत्रुओं के अग्र भाग को पराजित करके नगर की ओर भगा दिया। पीर मुहम्मद खाँ तथा उसके सहायक भी भाग कर बल्ख पहुँचे। सूर्यास्त के समय चग़ताई सेना, जो नगर के समीप पहुँच गई थी, लौट आई। क्योंकि अधिकाश चग़ताई अमीर मीर्ज़ा कामरान के न आने के कारण काबुल तथा अपने परिवार के विषय में चिन्तित थे, (७४) अतः इस रात्रि में, जिसको प्रातः को बल्ख अधिकार में आ जाता, एकत्र हुए और हज़रत की सेवा में निवेदन किया कि, "बल्ख की नदी पार करना राज्य के लिए उचित नहीं। यह उचित होगा कि दर्रा गज़ की ओर प्रस्थान किया जाय। एक दृढ़ स्थान शिविर के लिए निश्चित कर लें। अल्प समय में बल्ख तथा हिसार वाले सेवा में उपस्थित हो जायँगे।" उन्होंने इतना अधिक आग्रह किया कि हज़रत जहाँबानी ने विवश होकर कूच कर दिया।

१ तारीखे फ़िरिश्ता में इस अभियान का कारण इस प्रकार दिया गया है : क्योंकि बैरम खाँ तुर्कमान को ऊज़बेकों द्वारा नाना प्रकार के कष्ट पहुँचे थे अतः बदले के उद्देश्य से ९५६ हि० (१५४९ ई०) में वे हिन्दाल मीर्ज़ा एवं सुलेमान मीर्ज़ा को लेकर बल्ख की ओर रवाना हुये। (तारीखे फ़िरिश्ता मकाला २, पृ० २३१)।

२ गुरु; उसका नाम ख्वाजा बाग अथवा ख्वाजा बाक़ी था।

क्योंकि दर्रा गज काबुल की ओर है अत मित्र तथा शत्रु जो इस परामर्श से अवगत न थे इसे वापसी समझने लगे। ऊजबेकों ने धृष्ट होकर पीछा किया। मीर्ज़ा सुलेमान तथा हसन कुली सुल्तान मुहरदार ने, जो सेना के पीछे के भाग की रक्षा हेतु नियुक्त हुए थे, ऊजबकों की सेना के अग्र भाग से युद्ध किया और पराजित हुए। जो सैनिक काबुल की ओर प्रस्थान करना चाहते थे, उनमे से प्रत्येक व्यक्ति जिस ओर उसकी इच्छा हुई, चल दिया। किसी प्रकार का कोई अधिकार न रहा। लगभग ३० हजार शत्रु पहुँच गए। हज़रत जन्नत आशियानी ने स्वय इस युद्ध में शत्रुओं पर आक्रमण किया। अपने भाले द्वारा एक व्यक्ति को, जो सबसे आगे था, घायल करके घोडे से गिरा दिया और अपनी भुजाओं की शक्ति से इस समूह के बाहर निकल आये। मीर्ज़ा हिन्दाल, तरदी बेग खा, मुनइम बेग खा एव अमीरों का एक अन्य समूह युद्ध करता हुआ बाहर निकला। शाह बुदाग खा एव तूलक खा कूचीन ने इस युद्ध में पौरुष का प्रदर्शन किया। हज़रत पादशाह कुशलता पूर्वक काबुल पहुँचे। इस वर्ष का शेष भाग उन्होने काबुल में व्यतीत किया।

मीर्ज़ा कामरान कोलाब मे रह गया था। चाकर अली बेग कोलाबी, मीर्ज़ा कामरान से युद्ध करने लगा। उसने अत्यधिक सेना लेकर कोलाब के आस पास के भाग पर आक्रमण किया। मीर्ज़ा कामरान ने मीर्ज़ा अस्करी को उससे युद्ध के लिए भेजा। मीर्ज़ा अस्करी पराजित हो गया। (७५) वह पुन अपने भाई के आदेशानुसार उससे युद्ध के लिए रवाना हुआ किन्तु पूर्व की भाँति लौट आया। मीर्ज़ा सुलेमान एव मीर्ज़ा इबराहीम किश्म तथा कुन्दुज़ से उसके विरुद्ध रवाना हुये। मीर्ज़ा कामरान पुन युद्ध न कर सका और रूस्ताक के समीप पहुँचा। ऊज़बेकों की एक सेना ने उस समय उस पर आक्रमण करके उसके अधिकाश घोडो को नष्ट कर दिया। मीर्ज़ा कामरान यह चाहता था कि जुहाक एव बामियान के मार्ग से हजारा लोगों में प्रविष्ट हो जाय।

क़िबचाक के युद्ध में हुमायूं की पराजय

हज़रत जन्नत आशियानी को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने अमीरों एव सैनिको की एक बहुत बडी सख्या को जुहाक एव बामियान इस आशय से भेजा कि वे उस क्षेत्र की रक्षा करें। कराचा खा एव कासिम हुसेन सुल्तान तथा कृतघ्न अमीरों के एक समूह ने, जो हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में थे, मीर्ज़ा कामरान के पास सदेश भेजा कि, 'वह किबचाक के मार्ग से आ जाय। युद्ध के समय वे सब लोग उसकी सेवा में पहुँच जायेंगे।" जब मीर्ज़ा कामरान दृष्टिगत हुआ तो कराचा खा एव उसके मित्र निष्ठुरता की धूल अपने सिर पर डालकर हज़रत जहाँबानी से पृथक् हो गए और मीर्ज़ा कामरान से मिल गए तथा युद्ध के लिए तैयार हो गए। यद्यपि उनके साथ बहुत थोडे से लोग थे, उन्होंने वीरतापूर्वक घोर युद्ध किया। पीर मुहम्मद अख्ता बेगी तथा मीर्ज़ा कुली का पुत्र अहमद इस युद्ध में मारे गए। मीर्ज़ा कुली घायल होकर घोडे से गिर पडा। हज़रत जन्नत आशियानी ने स्वय इतना घोर प्रयत्न किया कि उनके पवित्र सिर पर तलवार लगी। उनकी सवारी का घोडा भी घायल हो गया। हज़रत जन्नत आशियानी बाण चलाते हुए शत्रुओ को अपने से दूर करके बाहर निकले और जुहाक एव बामियान की ओर रवाना हुए। जो सेना उस मार्ग से गई थी, वह उनसे मिल गई। मीर्ज़ा कामरान ने पुन काबुल पर अधिकार जमा लिया।

हज़रत जहाँबानी ने हाजी मुहम्मद खाँ एवं अन्य सैनिकों सहित, जो उनकी सेवा (७६) में उपस्थित थे, बदख़्शाँ की ओर प्रस्थान किया। शाह बुदाग, तूलक कूचीन, मजनूँ काकशाल एवं एक अन्य समूह, जिसमें कुल १० व्यक्ति थे, को समाचार लाने के लिए काबुल भेजा। उस समूह में से तूलक कूचीन के अतिरिक्त कोई भी सेवा में लौटकर न आया। हज़रत जन्नत आशियानी ने सेवकों की कृतघ्नता पर आश्चर्य करके अन्दराब के समीप पड़ाव किया। सुलेमान मीर्ज़ा, इब्राहीम मीर्ज़ा एवं मीर्ज़ा हिन्दाल को जब हज़रत के आगमन की सूचना मिली तो वे अपनी सेना सहित सेवा में उपस्थित हुए। ४० दिन उपरान्त वे काबुल की ओर रवाना हुए। अक़रा एवं उश्तुर कराम[1] के मध्य में मीर्ज़ा कामरान ने क़राचा खाँ एवं काबुल की सेना को लेकर मुक़ाबला किया। दोनों ओर से युद्ध हुआ। उस समय ख़्वाजा अब्दुस्समद मन्सूर, मीर्ज़ा कामरान की सेना से भागकर हज़रत की सेवा में पहुँचा और सम्मानित किया गया। मीर्ज़ा कामरान मुक़ाबला न कर सका। पराजित होकर बड़ी अव्यवस्थित दशा में मन्दरुद[2] पर्वत के आँचल में भाग गया। क़राचा खाँ नमकहराम भागते समय बन्दी बना लिया गया। एक व्यक्ति उसे हज़रत की सेवा में ला रहा था। मार्ग में क़म्बर अली सहारी[3], जिसका भाई क़राचा खाँ के आदेशानुसार कन्धार में मार डाला गया था, मिला। उसने अवसर पाकर क़राचा खाँ की हत्या कर दी। मीर्ज़ा अस्करी इस युद्ध में हज़रत जहाँबानी के सैनिकों द्वारा बन्दी बना लिया गया। हज़रत विजय तथा सफलता प्राप्त करके काबुल चले गए और एक वर्ष काबुल में शान्तिपूर्वक समय व्यतीत करते रहे।

षड्यन्त्रकारी सैनिकों का एक समूह पुनः भाग कर मीर्ज़ा कामरान के पास चला गया। लगभग १,५०० अश्वारोही उसके पास एकत्र हो गए। हाजी मुहम्मद खाँ हज़रत पादशाह से आज्ञा लिए बिना ग़ज़नी पहुँचा। विवश होकर मीर्ज़ा कामरान के विनाश हेतु वे लमग़ानात की ओर रवाना हुए। वह मुक़ाबला न कर सका और महमन्द, ख़लील, एवं दाऊद ज़ई अफ़ग़ानों तथा लमग़ानात के मलिकों की सहायता से सिंध की ओर भाग गया। हज़रत जन्नत आशियानी बहुत समय तक लमग़ानात में शिकार खेलते रहे, तदुपरान्त काबुल लौट गए।

मीर्ज़ा कामरान से संघर्ष

(७७) मीर्ज़ा कामरान पुनः अफ़ग़ानों के मध्य में पहुँचा। हज़रत जन्नत आशियानी फिर उसके विनाश हेतु रवाना हुए। कन्धार के हाकिम बैराम खाँ को फ़रमान भेजा कि जिस प्रकार सम्भव हो ग़ज़नी पहुँचकर हाजी मुहम्मद खाँ को बन्दी बना ले। हाजी मुहम्मद खाँ ने मीर्ज़ा कामरान के पास आदमी भेजे कि, "आप ग़ज़नी पहुँच जायें कारण कि दास आपका सेवक है। ग़ज़नी की विलायत आपको समर्पित कर दी जायगी।" मीर्ज़ा कामरान पेशावर से बंगश तथा गिरदीज़ होता हुआ ग़ज़नी की ओर रवाना हुआ किन्तु उसके पहुँचने के पूर्व ही बैराम खाँ ग़ज़नी पहुँच गया था। हाजी मुहम्मद खाँ विवश होकर उसके पास पहुँचा और वे काबुल पहुँचे। मीर्ज़ा कामरान को मार्ग में हाजी मुहम्मद खाँ के काबुल पहुँचने के समाचार प्राप्त हुए। वह पेशावर की ओर लौट गया।

१ उश्तर ग्राम।
२ कुछ हस्तलिपियों में 'मदरावद'।
३ कुछ हस्तलिपियों में 'बहारी'।

हज़रत जन्नत आशियानी लमगानात से काबुल की ओर वापस चले गए। हज़रत जहाँबानी के काबुल पहुँचने के पूर्व हाजी मुहम्मद खा काबुल से भाग कर गजनी चला गया। हज़रत जहाँबानी ने काबुल से बैराम खा को बहुत से अमीरो सहित उसके विरुद्ध भेजा। हाजी मुहम्मद खा पुन बैराम खा के साथ दरबार में उपस्थित हुआ और उसे सम्मानित किया गया।

मीर्ज़ा अस्करी को ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद हज़रत पादशाह के आदेशानुसार बदख्शाँ ले गया। उसने उसे मीर्ज़ा सुलेमान को सौप दिया ताकि वह बल्ख के मार्ग से उसे मक्का की ओर विदा कर दे। मीर्ज़ा सुलेमान ने उसे बल्ख भेज दिया। इस यात्रा में रूम की विलायत में मीर्ज़ा अस्करी की मृत्यु हो गई।

मीर्ज़ा कामरान को अफगानो ने अपने पास रख लिया और सेना एकत्र करने लगे। हज़रत जन्नत आशियानी विवश होकर उससे युद्ध करने के लिए रवाना हुए। हाजी मुहम्मद की इस अभियान में अपराधो की अधिकता के कारण उसके भाई सहित हत्या करा दी गई। इस बार मीर्ज़ा कामरान ने अफगानो से मिलकर हज़रत जहाँबानी के शिविर पर रात्रि में छापा मारा। मीर्ज़ा हिन्दाल इस रात्रि में मारा गया। उसकी मृत्यु की तारीख "शब खून[1]" शब्द से निकलती है। मीर्ज़ा कामरान सफलता न प्राप्त कर सका और पराजित होकर लौट गया। मीर्ज़ा हिन्दाल के सैनिको (७८) एव परिजनों का हज़रत जन्नत आशियानी ने शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अक्बर को प्रदान कर दिया। गजनी तथा उसके अधीनस्थ स्थान उन्हे अक्ता में दे दिये।

मीर्ज़ा कामरान की मृत्यु

जब हज़रत (जन्नत आशियानी) अफगानो के विरुद्ध रवाना हुए तो वे मीर्ज़ा कामरान की रक्षा न कर सके। वह सबसे निराश होकर हिन्दुस्तान भाग गया और सलीम खा अफगान के पास रवाना हुआ। उसके समस्त परिवार एव कबीले वाले अफगानो द्वारा नष्ट कर दिए गए। हज़रत जन्नत आशियानी काबुल लौट गए। कुछ दिन उपरान्त जब सैनिक आराम कर चुके तो उन्होने बगश एव गिरदोज के मार्ग स हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान किया। आस पास के दुष्टों को उचित रूप से दड दिया गया। दनकोत[2] एव नीलाब के मध्य में हज़रत जन्नत आशियानी ने सिंध नदी पार की। मीर्ज़ा कामरान हिन्दुस्तान के हाकिम सलीम खा के दुर्व्यवहार के कारण उससे रुष्ट होकर सिवालिक[3] पवतो की ओर भाग गया और अत्यधिक परिश्रम उपरान्त सुल्तान आदम गक्खर की विलायत में पहुँचा। सुल्तान ने उसकी निगरानी करते हुए दरबार में इस आशय का प्रार्थनापत्र भेजा। हज़रत जन्नत आशियानी ने उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए मीर्ज़ा के बुलवाने का आदेश भेजा। मुनइम खा सुल्तान आदम के स्थान पर पहुँचा और वे मीर्ज़ा कामरान को लेकर परहाला के समीप सेवा मे उपस्थित हुए। उस अवसर पर भी हज़रत जन्नत आशियानी ने अत्यधिक उदारता

१ 'रात्रि का छापा'। शब (शीन+बे=३०२), खून (खे+वाव+नून=६५६), शब खून=९५८ हि० (१५५१ ई०)।
२ दनकोट।
३ नवल किशोर द्वारा प्रकाशित पोथी में 'सियालकोट'।

प्रदर्शित करते हुए इस लोकोक्तिनुसार कि, "अत्यधिक शक्तिशालियों की शक्ति क्षमा है" मीर्जा कामरान के अधिकांश अपराधों को क्षमा कर दिया किन्तु सैनिकों, अमीरों एवं चगताई उलूस ने, जो मीर्जा कामरान के विद्रोह के कारण नाना प्रकार के कष्ट भोग चुके थे, मिलकर निवेदन किया कि "चगताई उलूस एवं परिवार वालों की मर्यादा एवं उनका जीवन मीर्जा कामरान की मृत्यु पर निर्भर है कारण कि वह अनेकों बार प्रतिज्ञा भंग कर चुका है।" विवश होकर हज़रत जन्नत आशियानी ने उसे अंधा कर देने की अनुमति दे दी। अलीदोस्त बारबेगी, सैयिद मुहम्मद पकना एवं गुलाम अली शश अंगुश्त ने मीर्जा की आँखों में नश्तर लगा कर उसे दृष्टि से वंचित कर दिया। इस घटना की तारीख नीश्तर[1] के अक्षरों से निकलती है। मीर्जा कामरान ने इस दुर्घटना (७९) के उपरान्त हज करने की अनुमति ले ली और इच्छानुसार असबाब लेकर रवाना हुआ। वह मक्का पहुँचा और वहीं मृत्यु को प्राप्त हो गया।

हुमायूँ द्वारा हिन्दुस्तान पर आक्रमण की तैयारी

हज़रत जन्नत आशियानी रोहतास के किले के नीचे पहुँचे और कश्मीर विजय का संकल्प किया। इसी बीच में निवेदन किया गया कि "बीराना नामक एक ज़मींदार ने इस पर्वत में उस स्थान की दृढ़ता के कारण अभी तक किसी सुल्तान की आज्ञाकारिता स्वीकार नहीं की है। कहीं ऐसा न हो कि वह बाहर निकलने के मार्ग को रोक दे और कश्मीर भी अधिकार में न आये तथा हम कठिनाई में पड़ जायें।" हज़रत जन्नत आशियानी ने अपने उच्च साहस के कारण उन लोगों की बातों पर ध्यान न दिया और रवाना हो गए। उसी समय सलीम खाँ अफ़गान के हिन्दुस्तान से पंजाब पहुँचने के समाचार प्राप्त हुए। इसमें सेना अस्त-व्यस्त हो गई।

अमीर तथा सैनिक जो कश्मीर न जाना चाहते थे (उस ओर) प्रस्थान के समय काबुल की तरफ चल दिये। जब हज़रत जन्नत आशियानी को यह पता चला कि कोई भी इस अभियान से सहमत नहीं है तो वे काबुल लौट गए। सिंध नदी पार करके बिक्राम[2] के किले के निर्माण का आदेश दिया। समस्त सैनिकों ने अत्यधिक परिश्रम एवं प्रयास से अल्प समय में वह किला पूरा कर लिया। इस्कन्दर[3] ऊज़बेक उस किले के प्रबन्ध हेतु नियुक्त किया गया।

हज़रत जहाँबानी काबुल पहुँचे। शाहज़ादये आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर मीर्जा को गज़नी भेज दिया। ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद एवं उच्चाधिकारियों का एक समूह विजयी रिकाब के साथ गज़नी की ओर रवाना हुआ। कुछ समय उपरान्त सलीम खाँ की मृत्यु एवं अफ़गानों के (पारस्परिक) विरोध के समाचार हिन्दुस्तान से प्राप्त हुए। क्योंकि स्वार्थियों ने यह निवेदन किया था कि, "बैराम खाँ विद्रोह करना चाहता है, अतः हज़रत जहाँबानी कन्धार पर आक्रमण हेतु रवाना हुए। बैराम खाँ ने स्वागत करके दासता एवं निष्ठा प्रदर्शित की। वापसी के समय कन्धार मुनइम खाँ को दे दिया गया। मुनइम खाँ ने निवेदन किया कि, "क्योंकि हिन्दुस्तान पर

१ नून=५०, ये=१०, शीन=३००, ते=४००, रे=२००, नीश्तर=९६० हि० (१५५३ ई०)।
२ पेशावर का प्राचीन नाम। हुमायूँ ने केवल उसकी मरम्मत कराई थी।
३ उसे 'इस्कन्दर' तथा 'सिकन्दर' दोनों लिखा गया है।

(८०) आक्रमण करना निश्चय हो चुका है अत अधिकारियो के स्थानान्तरण से सेना में विघ्न पड जायेगा। हिन्दुस्तान की विजय उपरान्त जैसा उचित हो, कार्य करना राज्य के लिए ठीक होगा।" कन्धार का राज्य उसी प्रकार बैराम खा के अधीन रहा। ज़मीनदावर, अली कुली खा सीस्तानी के भाई बहादुर खा को अक्ता मे प्रदान कर दिया गया।

महान् लश्कर ने काबुल की ओर प्रस्थान किया और वे हिन्दुस्तान की विजय की तैयारी में व्यस्त हो गए। सयोग से वे एक दिन सैर एव शिकार हेतु सवार हुए[1]। उन्होने कहा, 'क्योकि हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का सकल्प हो चुका है, अत तीन व्यक्ति जो निरन्तर दृष्टिगत हो उनसे नाम पूछकर फाल निकाली जाय।" सर्वप्रथम जो व्यक्ति मिला उससे उसका नाम पूँछा गया। उसने कहा कि, "मेरा नाम दौलत ख्वाजा है।" हज़रत ने उससे शुभ सवाद प्राप्त किया। जब वे कुछ दूर आगे गए तो एक ग्रामीण मिला। उसका नाम पूँछा गया। उसने अपना नाम मुराद ख्वाजा बताया। हजरत जहाँबानी ने कहा कि, "क्या ही अच्छा हो यदि तीसरा व्यक्ति अपना नाम सआदत ख्वाजा बताये।" जब थोडी दूर जा चुके थे तो एक व्यक्ति दृष्टिगत हुआ। उसने अपना नाम सआदत ख्वाजा बताया। सबको इस विचित्र घटना पर बडा आश्चर्य हुआ और वे हिन्दुस्तान विजय की आशा करने लगे।

हिन्दुस्तान विजय हेतु हुमायूँ का प्रस्थान

ज़िलहिज्जा ९६१ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १५५४ ई०) मे उन्होने भाग्यशाली रिकाब में सौभाग्य के पाँव रखकर हिन्दुस्तान विजय का सकल्प किया। जब उन्होने पेशावर मे पडाव किया तो कन्धार का हाकिम बैराम खा आदेशानुसार सेवा मे उपस्थित हुआ। सम्मानित पताकाओ ने सिंध नदी पार की। बैराम खा, खिज्र ख्वाजा खा, तरदी बेग खा, इस्कन्दर सुल्तान एव अमीरो का एक अन्य समूह हिरावल के रूप में आगे भेजा गया। तातार खा काशी, जो रोहतास का हाकिम था, किले के दृढ होने के बावजूद ठहर न सका और भाग खडा हुआ। आदम गक्खर यद्यपि पूर्व में सेवा कर चुका था किन्तु इस समय दुर्भाग्यवश उपस्थित न हुआ। वे निरन्तर यात्रा करते हुए लाहौर की ओर रवाना हुए। लाहौर के अफगान भाग्यशाली सेना के पहुँचने के समाचार से अवगत होकर भाग खडे हुए।

शेर

(८१) 'शुभ एव विजयी पताकायें अभी दूर थी,
कि चारो ओर विजय एव सफलता के समाचार प्रसिद्ध हो गए।'

हज़रत जहाँबानी बिना किसी सघर्ष के लाहौर पहुँच गए। हिरावल के अमीर, जालधर तथा सरहिन्द की ओर रवाना हुए। पजाब के परगने, सरहिन्द एव हिसार बिना युद्ध के चगताई उलूस के सैनिको को प्राप्त हो गए।

उस समय अफगानो का एक समूह शहबाज़ खा एव नसीर खा अफगान के नेतृत्व में दीबालपुर में एकत्र हुआ। हज़रत जन्नत आशियानी को जब इस बात की सूचना मिली तो उन्होने

१ ख्वन्दमीर के अनुसार यह घटना बदख्शाँ में, जब हुमायूँ शाहजादा था, घटी [देखिये रिज़वी मुग़ल कालीन भारत—हुमायूँ, पृ० ३८७, ३८८]। निज़ामुद्दीन को इस सम्बध में भ्रम हो गया।

मीर अबुल मआली एव अली कुली सीस्तानी को उनसे युद्ध करने के लिए भेजा। युद्ध उपरान्त अफगान लोग पराजित हो गए। उनकी धन सम्पत्ति एव परिवार नष्ट हो गए। इस्कन्दर अफगान ने, जो देहली पर अधिकार जमाये हुए था, ३० हज़ार सैनिक तातार खा एव हुंबत खा[1] के नेतृत्व में सरहिन्द के अमीरो से युद्ध करने के लिये भेजे। चगताई अमीरो ने जालधर में एकत्र होकर शत्रुओं की अधिकता एव मित्रो की कमी के बावजूद युद्ध करना निश्चय किया। उन्होंने प्रस्थान करके सतलजनदी पार की। अफगानो की सेना को दिन के अन्तिम पहर उनके पार करने की सूचना मिली। वे युद्ध के उद्देश्य से रवाना हुए। चगताई अमीर शत्रुओं की शक्ति के बावजूद युद्ध के लिए तैयार हो गए। सूर्यास्त के समय दोनों सेनाओं की एक दूसरे से मुठभेड हुई। घोर युद्ध हुआ। मुगुलों ने बाणों की वर्षा प्रारम्भ कर दी। रात के अधेरे के कारण मुगुल धनर्धारी दिखाई न पडते थे। अफगानो ने घबडाहट में समीप के एक गाँव मे आग लगा दी। क्योंकि हिन्दुस्तान के अधिकाश घर छप्पर से छाये होते है अत आग की लपट उठने लगी। प्रकाश के कारण रण-क्षेत्र भली-भाँति दिखाई देने लगा। धनुर्धारी अग्नि के प्रकाश में बाहर निकले और निश्चिन्त होकर अपने कार्य में व्यस्त हो गए।

शेर

'जिन लोगों ने जाल बिछाया, वे जाल में फँस गए,
जिन लोगों ने कुआं खोदा वे कुएँ मे गिर पडे।'

शत्रु जो अग्नि के प्रकाश के कारण बाण का लक्ष्य बन गए थे, मुकाबला न कर सके (८२) और भाग खडे हुए। बहुत बडी विजय प्राप्त हुई। अत्यधिक हाथी, घोडे एव असबाब मुगुल सेना को प्राप्त हो गए।

हिन्दुस्तान विजय

जब विजय के सुखद समाचार लाहौर पहुँचे तो हज़रत जन्नत आशियानी बडे प्रसन्न हुए और अमीरो को अत्यधिक सम्मानित किया। समस्त पजाब, सरहिन्द एव हिसार फीरोज़ा अधिकार मे आ गए। मुगुलों ने देहली के कुछ परगनों पर भी अधिकार जमा लिया। जब सिकन्दर अफगान को अपनी सेना की पराजय के समाचार प्राप्त हुए तो वह ९०,००० अश्वारोहियो, पर्वत रूपी हाथियों एव बहुत बडे तोपखानों को लेकर प्रतिकार हेतु रवाना हुआ और सरहिन्द पहुँचा। अपनी सेना के चारों ओर खाई खोद कर उसकी गढबन्दी कर ली। चगताई उलूस के अमीरों ने सरहिन्द के शहर बन्द[2] को दृढ बनाकर यथा-सम्भव पौरुष प्रदर्शित किया और प्रार्थनापत्र लाहौर भेज कर जन्नत आशियानी के विजयी चरणो के आगमन की प्रार्थना की। सम्मानित पताकायें विजय एव सफलता के साथ सरहिन्द की ओर रवाना हुईं। उनके निकट पहुँचने पर अग्र भाग के अमीर स्वागतार्थ एव अभिवादन हेतु सेवा में उपस्थित हुए। सेनायें सुव्यवस्थित हुईं। उन्होंने बडे ऐश्वर्य से शत्रु का, जो कि मुगुल सेना की अपेक्षा कई गुना अधिक सख्या मे थे, मुकाबला किया।

१ हस्तलिपियों में 'हैबन खां' तथा 'हबीब खां' दोनों है।
२ प्रतिरक्षा का घेरा।

कुछ दिन तक जब दोनों ओर के वीर पौरुष प्रदर्शित कर चुके तो एक दिन जब शाहज़ादये आलमियान मुहम्मद अकबर के सेवकों की[1] करावली[2] की बारी थी, पंक्तियों का युद्ध प्रारम्भ हो गया[3]। एक ओर से बैराम खां खाने खानां और दूसरी ओर से सिकन्दर खां, अब्दुल्लाह खां ऊज़बेक, शाह अबुल मआली, अली क़ुली खां था बहादुर खां ने शत्रुओं पर आक्रमण किया। खानों में से प्रत्येक ने उस दिन इतनी अधिक वीरता एवं इतना पौरुष प्रदर्शित किया जो मनुष्य की शक्ति के बाहर था। ईश्वर ने सेना के वीरों की सहायता की। अफ़गानों की सेना जिसकी संख्या लगभग एक लाख थी, थोड़े से आदमियों से पराजित हो गई। सिकन्दर भाग खड़ा हुआ। विजयी सेना ने शत्रुओं का पीछा किया। उनमें से बहुत बड़ी संख्या की हत्या कर दी और अत्यधिक लूट (८३) की धन सम्पत्ति प्राप्त हुई। वे विजय एवं सफलता प्राप्त करके हज़रत की सेवा में उपस्थित हुए और बधाई दी। मुंशियों ने शाही आदेशानुसार हज़रत शाहज़ादे के नाम पर फ़तहनामा[4] लिखा कारण कि उनके सेवकों के उत्तम प्रयत्न के फलस्वरूप ही विजय प्राप्त हुई थी। फ़तहनामे निकट तथा दूत के स्थानों को भेज दिए गये। सिकन्दर खां ऊज़बेक देहली की ओर रवाना हुआ। सम्मानित लश्कर सामाना के मार्ग से हिन्दुस्तान की राजधानी की ओर चल पड़ा। अफ़गानों का एक समूह, जो देहली में था, एक पाँव से प्राण लेकर भाग गया।[5] सिकन्दर खां नगर में प्रविष्ट हुआ। मीर अबुल मआली को इस्कन्दर से, जो सिवालिक पर्वत में भाग गया था, युद्ध करने के लिए लाहौर की ओर भेजा गया।

रमज़ान[6] मास में हज़रत जन्नत आशियानी देहली पहुँचे। दूसरी बार हिन्दुस्तान के अधिकांश प्रदेशों में उनके सम्मानित नाम से खुत्बे एवं सिक्के को शोभा प्राप्त हुई। विजयी रिकाब के साथ जिन लोगों ने कठिनाइयाँ भोगी थीं, उन्हें उत्तम रूप से नाना प्रकार से सम्मानित किया गया। प्रत्येक किसी न किसी विलायत का हाकिम नियुक्त कर दिया गया। उस वर्ष का शेष भाग आनन्द-मंगल में व्यतीत हुआ।

शाह अबुल मआली ने, जो सिकन्दर को नष्ट करने के लिए भेजा गया था, अपने सहायक अमीरों के प्रति उचित रूप से व्यवहार न किया और उनकी अक्ताओं का अपहरण करके शाही खज़ाने में भी हस्तक्षेप करने लगा था, अतः सिकन्दर को नित्यप्रति शक्ति प्राप्त होती गई। जब यह समाचार हज़रत जन्नत आशियानी को प्राप्त हुए तो उन्होंने बैराम खां को शाहज़ादे का अतालीक़ नियुक्त करके उनके अधीन इस्कन्दर से युद्ध करने के लिये भेजा। आदेश हुआ कि शाह अबुल मआली हिसार फ़ीरोज़ा तथा उस क्षेत्र में पहुँच जाय।

१ 'अकबर' से तात्पर्य है।
२ हिरावल के रूप में शत्रुओं के अचानक आक्रमण को रोकने तथा पहरे इत्यादि की देख रेख।
३ ऐसा युद्ध प्रारम्भ हो गया जिसमें दोनों ओर सैनिकों ने पंक्तियाँ सुव्यवस्थित कर लीं।
४ विजय पत्र लिखा। इस प्रथा तथा बाबर के फ़तहनामों के लिए देखिये **बाबर नामा**, पृ० २३७-२४६।
५ बच कर भाग गया।
६ रमज़ान ९६२ हि० (जुलाई १५५५ ई०)।

उन्ही दिनो मे कम्बर दीवाना ने दोआब एव सम्भल के मध्य मे एक सेना को अपने साथ मिलाकर लूटमार प्रारम्भ करदी। अल्पदर्शीय एव अशान्ति प्रिय लोग प्रत्येक दिशा से उसके चारो ओर एकत्र हो गए। अली कुली खा सीस्तानी[1] उसे नष्ट करने के लिए नियुक्त हुआ। कम्बर (८४) दीवाना बदायूँ के किले में बन्द हो गया और कुछ दिन तक युद्ध करता रहा। अन्त में किला अधिकार में आ गया। कम्बर बन्दी बना लिया गया और उसकी हत्या करा दी गई। उसका सिर दरबार में भेज दिया गया।

उस समय की आश्चर्यजनक घटनाओ मे यह घटना है कि ७ रबी-उल-अव्वल[2] को सूर्यास्त के समीप हज़रत जन्नत आशियानी किताबखाने[3] की छत के ऊपर पहुँचे। वहाँ कुछ देर ठहरे रहे। उतरते समय अज़ान देने वाले ने नमाज की अज़ान देना प्रारम्भ कर दी। हज़रत जन्नत आशियानी दूसरे ज़ीने पर आदर सम्मान प्रदर्शित करने के लिए बैठ गए। उठते समय उनका शुभ चरण फिसल गया। सीढ़ी से पृथक् होकर भूमि पर आ रहे। दरबारी परेशान हो गए। वे बेहोश हो गए थे। उन्हे उठा कर महल के भीतर ले गये। थोडी देर उपरान्त उन्हे चेत हुआ और वे बातचीत करने लगे। चिकित्सको ने उपचार का अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु कोई लाभ न हुआ। दूसरे दिन जब वे अत्यधिक शक्तिहीन हो गए और रोग उपचार के क्षेत्र से निकल गया तो नज़र शख जोली[4] को शाहज़ादे की सेवा मे पजाब की ओर भेजकर इस घटना की सूचना कराई गई। १५ रबी-उल-अव्वल ९६३ हि०[5] को सूर्यास्त के समय उन्होने प्राण त्याग दिय। इस मिसरे स इस घटना की तारीख निकलती है .

'हुमायूँ बादशाह कोठे से गिर गये[6]।'

उनके सासारिक राज्य की अवधि २५ वर्ष तथा कुछ अधिक दिन रही। उनकी शुभ अवस्था ५१ वर्ष की थी। उनका फ़िरिश्ता रूपी व्यक्तित्व मानवी निपुणता से सुशोभित था। वीरता एव पौरुष में वे ससार के सुल्तानो में सर्वश्रेष्ठ थे। दान पुण्य में पूरे हिन्दुस्तान की आय उनके लिए पूरी न होती थी। ज्योतिष तथा गणित में वे अद्वितीय थे। कविता बडी सुन्दर करत थे। ससार के उस नेता की गोष्ठी मे सर्वदा विद्वान्, आलिम एव प्रतिष्ठित लोग उपस्थित रहते थे। रात के पहिले पहर से प्रात काल तक हमेशा गोष्ठी होती रहती थी। उनके दरबार में अत्यधिक शिष्टाचार प्रदर्शित किया जाता था। उनके स्वर्ग रूपी दरबार मे सर्वदा पाण्डित्यपूर्ण वाद-विवाद (८५) होते रहते थे। उनके राज्यकाल में कलाकारो एव गुणवानो की अत्यधिक उन्नति प्राप्त हो गई थी। उनमें इतना अधिक सौजन्य पाया जाता था कि मीर्ज़ा कामरान एव चग़ताई अमीरो ने अनेको बार विद्रोह किया, बन्दी बनाए गए किन्तु उनके अपराध क्षमा कर दिये गए। वे सर्वदा

१ हस्तलिपियों में 'अली कुली सीस्तानी' तथा 'अली कुली शैबानी' दोनों ही लिखा गया है।
२ ७ रबी उल अव्वल ९६३ हि० (जनवरी १५५६ ई०)।
३ पुस्तकालय।
४ उसे 'नज़र शेख जूना' तथा 'चोली' दोनों ही लिखा गया है।
५ २८ जनवरी १५५६ ई०।
६ 'हुमायूँ पादशाह अज़ बाम उफ़्ताद'।

वजू किए रहते थे। ईश्वर का नाम बिना वजू के कभी न लेते थे। एक दिन उन्होने मीर अब्दुल हई सद्र को अब्दुल कहकर सम्बोधित किया। जब वजू कर चुके तो मीर से कहा कि, "क्षमा करना, मैं वजू न किए हुए था। हई ईश्वर का नाम है अत मैंने तुम्हारा पूरा नाम न लिया।" उनके फ़रिश्ता सरीखे गुणों के व्यक्तित्व में आध्यात्मिक एव सांसारिक सभी गुण पूर्ण रूप से विद्यमान् थे। उनपर ईश्वर की अत्यधिक अनुकम्पा हो।

सक्षेप में, नज़र शेख चोली[1], जो उस समय जब कि वे अत्यधिक शक्तिहीन हो गए थे, पजाब की ओर रवाना हुआ था, कलानूर में हज़रत शाहज़ादये आलमियान की सेवा में पहुँचा और इस विचित्र घटना का उल्लेख किया। उसके पीछे हज़रत की मृत्यु के समाचार प्राप्त हुए। जो अमीर विजयी रिकाब के साथ थे, विशेष रूप से बैराम खा खानेखानाँ ने शोक सम्बन्धी प्रथाओं के उपरान्त उनके राज्य से सहमत होकर रबी उस्सानी[2] को कलानूर के कस्बे में एक भव्य जश्न का आयोजन कराया। हज़रत जहाँबानी ने शासन की मसनद पर पाँव रखकर ससार तथा ससार वालों को दुर्घटनाओं से मुक्ति दिला दी।

१ मूल में 'जोली'।
२ २ रबी-उस्सानी ९६३ हि० (१४ फरवरी १५५६ ई०)।

भाग ब

बाद के इतिहासकार

मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूनी

(क) मुन्तख़बुत्तवारीख़ भाग १

मुहम्मद क़ासिम हिन्दू शाह अस्तराबादी फ़िरिश्ता

(ख) गुलशने इबराहीमी

मोतमद ख़ां

(ग) इक़बाल नामये जहाँगीरी भाग १

मुन्तखबुत्तवारीख

भाग १

लेखक—मुल्ला अब्दुल कादिर बिन मुलूक शाह बदायूनी

(प्रकाशन—कलकत्ता १८६८ ई०)

नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूं पादशाह गाजी

(३४४) ९३७ हि० (१५३० ई०) में सम्बल से शीघ्रातिशीघ्र पहुँच कर अमीर खलीफा की सहायता से, जो पादशाह का पूर्ण अधिकार-सम्पन्न वकील एव वजीर था, सिंहासनारूढ़ हुए।

शेर

"मुहम्मद हुमायूं शाह सौभाग्यशाली,
जो अपने गुणों के कारण पादशाहो मे सर्वोत्कृष्ट है।
जब वह पादशाही की मसनद[1] पर आरूढ हुआ,
तो उसके सिंहासनारोहण की तारीख 'खैरुल मुलूक[2]' हुई।"

क्योंकि सिंहासनारोहण के समय सोने से भरी हुई कश्तियाँ इनाम में दी गई अत कश्तिये जर[3] तारीख निकली।

राज्य की समस्याओ का समाधान करने के उपरान्त उन्होंने कालिंजर पर चढाई की और उसे विजय कर लिया। सुल्तान आलम बिन सुल्तान सिकन्दर का विद्रोह जो जौनपुर में सिर उठाये था, शान्त कर दिया और आगरा लौट आये। वहाँ एक भव्य जश्न का आयोजन कराया। उस जश्न मे १२,००० आदमियों को खिलअतो द्वारा सम्मानित किया गया।

शेर

'बादशाह को शत्रुओं पर प्रभुत्व प्राप्त रहता है,
जब उसका लश्कर सतुष्ट एव प्रसन्न रहता है।

१ मसनद : तकिया लगा कर बैठने का स्थान, वह फर्श जिसपर प्रतिष्ठित जन बैठते है, बड़ा तकिया, यहां राजगद्दी पर आरूढ होने से तात्पर्य है।

२ पादशाहों में सर्वोत्तम।

३ सोने की कश्ती (एक प्रकार का समकोण थाल)। कश्ती का अर्थ नौका भी होता है।

जो सैनिक को ख़ज़ाना प्रदान करने में सकोच करता है,
वह तलवार पर हाथ ले जाने में सकोच करता है।'

उस समय मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा इब्ने बदी उज़्ज़मान मीर्ज़ा ने इब्ने सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा, जो कि विद्रोह की योजना बना रहा था, बन्दी बना लिया गया और ब्याना के किले में भेज दिया गया। उसकी आँखो में सलाई फिरवा देने का आदेश दे दिया था किन्तु उसकी पुतली सुरक्षित रह गई। वह शीघ्र ही बन्दीगृह से भागकर सुल्तान बहादुर गुजराती के पास शरण हेतु चला गया। कहा जाता है कि जिस समय मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा सुल्तान बहादुर के पास पहुँचा, वह चित्तौड का अवरोध किए हुए था। अत्यधिक गरमी पड रही थी। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा के हृदय में पीडा होने लगी। हकीमो ने उसका उपचार गुलकन्द[1] बताया। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा ने सुल्तान बहादुर से (३४५) थोडा सा गुलकन्द माँगा। उसने शरबतदार[2] को बुलवाकर पूछा कि, "लश्कर के साथ कितना गुलकन्द है ?" उसने कहा, "बीस गाडियों से अधिक है।" सब का सब उसने मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा के शिविर में भिजवा दिया और क्षमा याचना कराई कि, "शिविर में होने के कारण इतना ही गुलकन्द था, आप क्षमा करें।" अन्त में ज्ञात हुआ कि उसके लिये गुलकन्द का रस निकाला जाता था, इस कारण उसके साथ इतनी गाडियाँ थी।

मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा अपने दो पुत्रों उलुग मीर्ज़ा एव शाह मीर्ज़ा के साथ कन्नौज पहुँचा और विद्रोह प्रारम्भ कर दिया।

गुजरात विजय

क्योकि स्वर्गीय पादशाह ने मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा के बुलवाने के लिए सुल्तान बहादुर को पत्र लिखे और उसने कठोर उत्तर दिए अत उन्होंने गुजरात विजय का सकल्प कर लिया। बहादुर ने चित्तौड विजय हेतु राणा सागा पर चढ़ाई कर दी थी और अवरोध किए हुए था। उसकी ओर से तातार ख़ा ने ब्याना के किले पर अधिकार जमा लिया और आगरा तक लूटमार करने लगा। उसने मीर्ज़ा हिन्दाल से घोर युद्ध किया और ३०० व्यक्तियो सहित आक्रमण करके अपने साथियों सहित मारा गया। जिस समय सुल्तान बहादुर द्वारा चित्तौड का अवरोध किए हुए था, मुहम्मद हुमायूं पादशाह ने आगरा से उसके ऊपर चढाई की। उसी वर्ष मीर्ज़ा कामरान लाहौर से शीघ्रातिशीघ्र क़न्धार पहुँचा और शाह तहमास्प के भाई साम मीर्ज़ा को, जो ख़्वाजा कलाँ बेग का अवरोध किए हुए था, पराजित कर दिया। इस मिस्रे से तारीख निकली

'मारा[3] कामरान पादशाह ने साम को'।

मौलाना बेकसी ने यह रचना की.

क़ितआ

(३४६) 'जिस समय मुकुट एव सोने के प्याले ने दिखलाया,
सभा एव रण क्षेत्र में सुराही की शक्ल एव प्याले का रूप।

१ गुलाब के फूल तथा खाँड के मिश्रण से बनी हुई एक औषधि।
२ वह अधिकारी जो बादशाहों के प्रयोग के शरबत का प्रबन्ध करता था।
३ पराजित कर दिया।

पूँछा मैंने बुद्धि से कि किस कारण सोना लुटाने वाला मुकुट,
लाल लाले के समान इस स्थान पर पड़ा है।
कहा आकाश ने, इस युद्ध की तारीख हेतु,
माम की सेना को पराजित करके सोने का मुकुट फेंका।'

मुहम्मद हुमायूँ पादशाह इस विचार से कि सुल्तान बहादुर द्वारा चित्तौड़ के अवरोध : समय उसपर आक्रमण करने से उनकी बदनामी होगी, सारंगपुर में ठहर गये। सुल्तान बहा-्र ने चित्तौड के क़िले को अपनी शक्ति से विजय कर लिया। तदुपरान्त वह मंदसौर के समीप जो क मालवा के अधीन है, दो मास तक पादशाह से युद्ध करता रहा। क्योंकि बहादुर के लश्कर में ग्रनाज न पहुँच सका अत: मनुष्य एवं पशु अकाल के कारण मरने लगे। बहादुर अपने प्रतिष्ठित ग्रमीरों में से पाँच व्यक्तियों को लेकर शिविर के पीछे से मंदसौर की ओर भाग गया। इस घटना की तिथि के सम्बन्ध में इस किताए की रचना की गई:

शेर

"हुमायूँ शाहे गाज़ी, वह जिसके हैं,
महल में सहस्रों दास जमशेद सरीखे।
विजय सहित जब वह गुजरात के समीप पहुँचा,
विजय हुआ तीमूर की सन्तान के गर्व का यह विषय।
जब बहादुर अपमानित तथा तिरस्कृत हुआ,
उसकी तारीख 'ज़िल्ले बहादुर[1]' हुई।"

मुहम्मद हुमायूँ पादशाह ने उसका पीछा किया। मुग़ुल सैनिक एक रात्रि में बहादुर के पास, जब वह सो रहा था, पहुँच गए। वे उसे बन्दी बना ही लेने वाले थे कि वह ५-६ अश्वारोहियों सहित गुजरात की ओर भाग गया। सुल्तान आलम लोदी बन्दी बना लिया गया। उसकी स्नायु काट दी गई। हुमायूँ पादशाह की सेना ने बड़ी तेज़ी से बहादुर का पीछा करते हुए अहमदाबाद को विध्वस कर डाला। बहादुर अहमदाबाद से खम्बायत[2] और वहाँ से बन्दर दीप[3] पहुँचा।

(३४७) उसी समय चाम्पानीर का क़िला भी पादशाह ने युद्ध द्वारा विजय कर लिया। अपार खज़ाना उनके अधिकार में आ गया। इस विजय की तिथि का हाल इस शेर से निकलता है:

पद्य

"शाह हुमायूँ के विजय प्राप्त करने की तारीख,
ढूँढ़ी बुद्धि ने 'सफर' के महीने की ९ थी[4]।"

१ 'बहादुर का तिरस्कार अथवा समर्पण'।
२ कैम्बे।
३ डियु।
४ نهم شهر صفر بود नुह शहरे सफर बूद—९४२ हि० (१५३५-३६ ई०)।

बहादुर सोरठ की विलायत के ज़मीदारों की सेना लेकर अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ। मीर्ज़ा अस्करी जो अहमदाबाद में था, पादशाह के पूर्व[1] की ओर प्रस्थान कर जाने के उपरान्त अमीर हिन्दू बेग क़ूचीन से मिलकर अपने नाम का खुत्बा पढ़वा देना चाहता था किन्तु यह सम्भव न हुआ। वह साधारण सा युद्ध करके चाम्पानीर पहुँचा। वहाँ के हाकिम तरदी बेग ने किले की प्रतिरक्षा प्रारम्भ कर दी। अस्करी मीर्ज़ा के विद्रोह सम्बन्धी पत्र दरबार में भेजे। जिस समय पादशाह मन्दू[2] से आगरा की ओर प्रस्थान कर रहे थे मीर्ज़ा अस्करी मार्ग में सेवा में पहुँचा। बहादुर ने चाम्पानीर को संधि द्वारा तरदी बेग से ले लिया।

इसी वर्ष जमाली कम्बोह देहल्वी[3] इस नश्वर संसार से विदा हो गये। "खुसरवे हिन्द बूदा[4]" के अक्षरों से उनकी मृत्यु की तारीख निकलती है। इस वर्ष शाह तहमास्प ने एराक से साम मीर्ज़ा के प्रतिकार हेतु कन्धार पर आक्रमण किया। ख्वाजा कलाँ बेग ने शहर को खाली छोड़कर तथा दीवानखाने को उत्तम फर्शों तथा सुन्दर बरतनों एवं दरबार की समस्त सामग्रियों द्वारा सजा कर बन्द करा दिया और बाहर निकल गया, शाह तहमास्प उस स्थान पर पहुँच कर ठहरा। उसने ख्वाजा कलाँ बेग की अत्यधिक प्रशंसा की और कहा कि, "कामरान मीर्ज़ा का यह सेवक बड़ा (३४८) ही उत्तम है।" शाह तहमास्प कन्धार को अपने एक अमीर बुदाग़ खाँ के सुपुर्द करके एराक लौट गया। इस बार भी मीर्ज़ा कामरान शीघ्रातिशीघ्र लाहौर से क़न्धार पहुँचा और उसे मुक्त करा लिया। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा ने, जिसे बहादुर ने अपनी पराजय के समय हिन्दुस्तान में विघ्न डालने के लिए भेजा था, मीर्ज़ा कामरान की अनुपस्थिति में लाहौर का अवरोध कर लिया। वह पादशाह के लौटने के समाचार सुनकर गुजरात पहुँचा।

जब आगरा में पादशाह के निवास को एक वर्ष व्यतीत हो गया[5] तो शेर खाँ अफ़ग़ान

१ एक हस्तलिपि में 'अहमदाबाद', यही उचित है।
२ रैंकिंग के अंग्रेज़ी अनुवाद में 'मन्दिर' मन्दू (مندو) 'बे वाव' (و) को वह 'रे' (ر) पढ़ गया। (पृ० ४५५)।
३ हामिद बिन फ़ज़लुल्लाह, जो दरवेश जमाली शेख़ या मुल्ला जमाली कम्बोह देहलवी के नाम से प्रसिद्ध थे, बड़े ही योग्य फ़ारसी कवि हुये हैं। वे पहिले जलाली तख़ल्लुस करते थे किन्तु बाद में अपने मुर्शिद शेख़ समाउद्दीन (मृत्यु ९०१ हि०/१४९६ ई०) के कहने पर जमाली तख़ल्लुस करने लगे। देहली से वे हज के लिये मक्का चले गये और वहाँ से लौटते समय हिरात पहुँचे तथा प्रसिद्ध फ़ारसी कवि नुरुद्दीन अब्दुर्रहमान जामी (मृत्यु १४९२ ई०) से भेंट की। सुल्तान सिकन्दर लोदी (१४८८-१५१७ ई०) से भी इनकी बड़ी मित्रता थी। उन्होंने बाबर तथा हुमायूं के सम्बन्ध में भी क़सीदों की रचना की। हुमायूं के गुजरात के अभियान के समय वे उसके साथ थे और १० ज़ीक़ाद ९४२ हि०/१ मई १५३६ ई० को मृत्यु को प्राप्त हुये। उनके ज्येष्ठ पुत्र शेख़ गदाई को अकबर के राज्य काल के प्रारम्भ में बड़ी उन्नति प्राप्त हुई। (शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी **अख़बारुल अख़ियार**—देहली १३३२ हि०—पृ० २२८-२२९)। उनकी रचनाओं में **सियरुल आरेफ़ीन** नामक ग्रंथ, जिसमें सूफ़ियों की जीवनियाँ दी हुई हैं, बड़ा प्रसिद्ध है। वह देहली से १३११ हि०/१८९३ ई० में प्रकाशित हो चुका है।
४ ९४२ (हि०)।
५ प्रकाशित पोथी में इस प्रकार है, "चूं मुद्दते यक साल अज़ इस्तेक़लाले पादशाह दर आगरा गुज़श्त।" यह वाक्य स्पष्ट नहीं। इसका तात्पर्य यह है कि "जब हुमायूं गुजरात से आगरा लौट आया और एक वर्ष व्यतीत हो गया।"

सूर ने पादशाह की अनुपस्थिति में अत्यधिक शक्ति प्राप्त कर ली और गौड, बिहार एवं जौनपुर के प्रदेश तथा चुनार के क़िले को अपने अधिकार में कर लिया।

शेर ख़ा से युद्ध

हुमायूं पादशाह ने शेर ख़ा को नष्ट करने के लिए १४ सफर ९४३ हि० (२ अगस्त १५३६ ई०) को चुनार के क़िले के समीप पडाव कर दिया। जलाल ख़ा वल्द शेर ख़ा को, जिसकी उपाधि बाद में इस्लाम शाह हुई, घेर लिया। अल्प समय में रूमी ख़ा, आतशबाज[1] के प्रयत्न से किले को विजय कर लिया। सुल्तान बहादुर ने रूमी ख़ा के नाम पर इस मुअम्मे[2] की रचना करके उसके पास भेजा था.

शेर

'उस कुत्ते का नाम ज़बान से निकालना बडे खेद का विषय है,
उसके प्राण में मेख़ रख और उसका नाम पढ।'[3]

जलाल ख़ा नौका द्वारा भाग गया और शेर ख़ा के पास, जो बगाले के हाकिम नसीब शाह[4] को घेरे हुए था, पहुँच गया। बगाले का हाकिम शेर ख़ा से युद्ध करते समय घायल होकर पादशाह की सेवा में पहुँचा और उनका मार्ग-दर्शक बना।

(हज़रत पादशाह ने) जौनपुर का राज्य, अमीरुल उमराई का मसब एवं सोने की कुर्सी[5] मीर हिन्दू बेग कूचीन को प्रदान कर दी तथा गढी के मार्ग को, जो एक बडा सकरा मार्ग है तथा बिहार एवं बगाला को पृथक् करता है और जिसे क़ुतुब ख़ा वल्द शेर ख़ा और शेर ख़ा के प्रसिद्ध (३४९) दास ख़्वास ख़ा ने दृढ कर लिया था, पार करते हुए बगाले पहुँच गए। शेर ख़ा भी मुक़ाबला न कर सका। छारखड[6] के मार्ग से रोहतास के किले के समीप पहुँचा और पादशाह के लश्कर का पीछा करने लगा। रोहतास के क़िले को, यह चकमा देकर कि वह वहाँ अपने परिवार को रखना चाहता है, उसने अधिकार में कर लिया। उसका उसने यह उपाय किया था कि दो हज़ार सशस्त्र अफ़गानों को डोलियों में बिठाकर क़िले के ऊपर पहुँचा दिया। रोहतास के राजा ने अफगानों के परिवार एवं धन सम्पत्ति के लोभ में किले के द्वार खोल दिए और डोली में बैठे हुए अफगान एवं सैनिक किले में प्रविष्ट हो गए। उन्होंने किले वालों की हत्या कर दी।

१ तोपख़ाने का अध्यक्ष।
२ शेर में पहेली।
३ 'हैफ़ बाशद नामे आँ सग बर ज़बाँ,
मेख़ दर जानश ने व नामश बे ख़्वाँ।'

حیف باشد نام آں سگ بر زبان
میخ در جانش نه و نامش بخوان

मेख़ का अर्थ खूंटा है। रूमी ख़ा (رومیخاں) शब्द के मध्य में रू (رو) व आँ (اں) के मध्य में शब्द मेख़ (میخ) आता है। रू एवं आँ से रवा (رواں) शब्द बनता है जिसका अर्थ प्राण अथवा जान भी है, अत. रवाँ (واں) शब्द के मध्य में मेख़ (میخ) रख देने से रूमी ख़ाँ बन जाता है।
४ 'सुल्तान महमूद' होना चाहिये।
५ राजसिंहासन।
६ झारखंड।

उन्हीं दिनो में पादशाह को बगाले की जलवायु बडी पसन्द आ गई। उन्होंने गौड नगर का नाम जन्नताबाद रखा और २–३ मास तक वहाँ ठहर कर वापस हुए। इसी बीच में शेर खा को अधिक उन्नति प्राप्त हो गइ। उसकी सेना की सख्या बहुत बढ गई। उसने पादशाह को प्रार्थना पत्र लिखा कि, "यह सब अफगान हज़रत पादशाह के दास एव सेवक हैं और जागीर की प्रार्थना कर रहे हैं। यदि पादशाह इनके लिए जागीरो की व्यवस्था कर दें तो बडा अच्छा हो अन्यथा भूख के कारण यह विद्रोह कर रहे हैं। इस समय तक मैं इन्हे रोकता रहा। अब यह मेरी बात नही सुनते। यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि 'भूखा छल्वाग पर कूद पडता है।' अब जो पादशाह का आदेश हो वही उचित है।" पादशाह इससे अवगत होकर यह समझ गए कि उसका उद्देश्य क्या है। बसरा की खराबी के उपरान्त[1] तथा सेना की अव्यवस्था के बावजूद, कारण कि घोडे तथा ऊँट मरने लगे थे और शेष इतने दुर्बल हो गए थे कि किसी कार्य योग्य न रहे थे, वे युद्ध हेतु रवाना हुए।

मीर्ज़ा हिन्दाल मुगेर तक पादशाह के साथ था। तदुपरान्त वह मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, (३५०) उलुग मीर्ज़ा एव शाह मीर्ज़ा, जो भागकर देहली के राज्य में विघ्न डालते फिरते थे, के षड्यत्र एव विद्रोह के दमन हेतु आगरा की ओर रवाना हुआ। मुहम्मद जमान मीर्ज़ा फ़िरगियो की धूर्त्तता के कारण सुल्तान बहादुर के समुद्र में डूब जाने के उपरान्त कोई सफलता न प्राप्त करके पादशाह की सेवा में पुन उपस्थित हुआ।

९४५ हि० (१५३८-३९) ई० मे मीर्ज़ा हिन्दाल ने शेख मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी के बडे भाई शख बहलूल की, जो दावते इस्मा पर अधिकार रखने वालो मे सर्वश्रेष्ठ था और जिसके प्रति पादशाह को अत्यधिक निष्ठा एव भक्ति थी, षड्यत्रकारियो के बहकाने से हत्या करा दी। इस घटना की तिथि "फक़द माता शहीदा[2]" के अक्षरो से निकाली गइ। मीर्ज़ा हिन्दाल ने इस वर्ष आगरा में अपने नाम का खुत्बा पढवा लिया। पादशाह ने पाँच हजार चुने हुए आदमी जहाँगीर बेग मुग़ल की कुमक हेतु नियुक्त किए और उस प्रदेश का राज्य उसे प्रदान कर दिया। आवश्यकता पडने पर उस अपने नाम का खुत्बा पढवा देने की भी अनुमति दे दी और आगरा की ओर रवाना हुए। गगा तट पर स्थित चौसा[3] नामक कस्बे में बडी अव्यवस्थित दशा मे पहुँचे। जौनपुर तथा चुनार के अमीर आकर सेवा मे सम्मिलित हो गए। शेर खा ने मार्ग रोक लिया। इस सेना की अव्यवस्थित दशा को देखकर उस नदी को, जो गगा नदी से मिलती थी और वर्षा के कारण जिसमें अत्यधिक जल आ गया था, बीच में करके तीन मास तक पादशाह के मुकाबले पर दृढ रहा।

कहा जाता है कि जिन दिनो युद्ध हो रहा था, एक दिन पादशाह ने मुल्ला मुहम्मद अज़ीज़[4] को, जिसकी शेर खा से पहिले से मित्रता थी, राजदूत बनाकर भेजा। शेर खा उस समय आस्तीन

१ "बाद अज़ खराबिये बसरा" एक फ़ारसी लोकोक्ति है, जिसका अर्थ यह है कि जब काम बिगड चुका हो तो उसके उपचार का प्रयत्न करना।

२ 'नि सन्देह उसकी शहीदों की भाँति मृत्यु हुई'।

३ कुछ हस्तलिपियों में 'जौसा'।

४ एक हस्तलिपि में 'मुहम्मद परग़री', एक में 'मुहम्मद पर अज़ीज़'।

चढाये हुए बेलचा हाथ में लिए गरम हवा में किला तथा खाई तैयार कर रहा था। जब मुल्ला (३५१) मुहम्मद निकट पहुँचा तो उसने अपने हाथ धोये और शामियाना लगवाया । नि सकोच भूमि पर बैठ गया और पादशाह का सदेश सुनकर कहा कि, "मेरी ओर से यही एक बात पादशाह से कह देना कि आप युद्ध करना चाहते हैं किन्तु आपकी सेना नही, मैं युद्ध नही करना चाहता किन्तु मेरी सेना युद्ध करना चाहती है। शेष पादशाह हाकिम हैं।" शेर खा ने शेख खलील को, जो शेख फरीद गजशकर की सतान में से और उसके पीर तथा मुर्शिद थे, पादशाह के पास भेजा और सधि स्वीकार करते हुए इस बात का आग्रह किया कि, "बगाले के अतिरिक्त समस्त विलायत पादशाही दासो के लिए मैं छोडता हूँ। पादशाह के नाम से खुत्बा तथा सिक्का चलवा दूँगा।" इस बात के लिए उसने कुरान शरीफ की शपथ ली। पादशाह उसकी ओर से निश्चिन्त हो गये और पुल बनवाने का आदेश दिया। शेर खा छल एव धूर्तता प्रदर्शित कर रहा था।

पद्य

'ससार की धूर्तता की कोठरी से, ऊँट को निकाल दो कारण कि छल की वजह से,
जिस कोठरी में सधि की बात हो रही है, उसमें ऊँट पर अस्त्र-शस्त्र हैं।
मैं भागता हूँ आकाश के ऊँटो और मिट्टी की कोठरी से,
कारण कि मस्त ऊँट उस कोठरी को घेरे हुए हैं।'

दूसरे दिन प्रात काल उसने पादशाही सेना पर अचानक आक्रमण कर दिया। पादशाह की सेना को पक्तियाँ सुव्यवस्थित करने का अवसर न मिल सका, थोडा सा युद्ध हुआ और पादशाह की सेना पराजित हो गई। अफगान पुल पर पहिले[1] पहुँच गए और उन्होंने उसे तोड डाला। तोपचियो एव धनुर्धारियो ने नौकाओं पर बैठकर सेना पर बाणो की वर्षा प्रारम्भ कर दी और उनकी हत्या करने लगे। मुहम्मद जमान मीर्जा सैलाब के तूफान मे मृत्यु को प्राप्त हो गया। पादशाह ने घोडा जल में डाल दिया। उनके डूबने का भय था अपितु कोई आशा न रही थी, कि एक सक्के (३५२) ने पहुँचकर सहायता की और उन्हे उस भयकर भवर से निकाला और वे आगरा की ओर रवाना हुए। शेर खा ने उस अवस्था मे यह शेर पढा

शेर

'(हे ईश्वर) तूने हसन के फरीद को बादशाही प्रदान की,
तूने हुमायूँ की सेना को मछली को दे दिया।'[2]

१ 'पेशतर', कुछ हस्तलिपियों में 'बेशतर'।
२ शेर इस प्रकार है —
'फरीद हसन रा तू शाही देही,
सिपाहे हुमायूँ ब माही देही।'
सेना को मछली को देना अर्थात् जल में डुबा देना।

शेर का दूसरा मिसरा ही उस्ताद की रचना है[1] :

शेर

'एक को तू उत्कर्ष प्रदान करता है और पादशाही देता है,
दूसरे को तू शाही से मछली को दे देता है।'

यह घटना ९४६ हि० (१५३९ ई०) में घटी। तारीख के लिए यह मिसरा निकला.

'सलामत बुवद पादशाह कसे[2]'।

शेर खा विजय उपरान्त लौटकर बगाले पहुँचा और कई बार विभिन्न प्रकार से युद्ध किया। जहाँगीर कुली बेग को उसकी सेना सहित तलवार के घाट उतार दिया। उस प्रदेश में अपने नाम का खुत्बा पढ़वाकर शेर शाह की उपाधि धारण कर ली। दूसरे वर्ष अत्यधिक सेना एव बहुत बडा लश्कर लेकर आगरा की विजय के उद्देश्य से प्रस्थान किया।

कामरान मीर्ज़ा चौसा की दुर्घटना के पूर्व शेर खा के प्रभुत्व एव मीर्ज़ा हिन्दाल के पादशाह के प्रति विद्रोह के समाचार पाकर कन्धार से लाहौर लौट आया। वहाँ से ९४६ हि० (१५३९ ई०) में आगरा पहुँचा। मीर्ज़ा हिन्दाल मीर्ज़ा कामरान के देहली पहुँचने के पूर्व पादशाह की अनुपस्थिति में देहली का अवरोध किए हुए था किन्तु कोई सफलता न प्राप्त कर सका। मीर फख्र अली एव मीर्ज़ा यादगार नासिर किले की प्रतिरक्षा करते रहे। मीर्ज़ा कामरान के पहुँचने पर मीर्ज़ा हिन्दाल ने उससे भेंट की। मीर फख्र अली ने भी अभिवादन किया किन्तु मीर्ज़ा (३५३) यादगार नासिर किले के बाहर न निकला। अन्त में मीर्ज़ा हिन्दाल, मीर्ज़ा कामरान से पृथक् होकर अलवर पहुँचा। पादशाह का हृदय इस समाचार के सुनने से मलीन हो चुका था यहाँ तक कि वे पराजित हो गए।

जब चौसा की विजय उपरान्त वे शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए कुछ सवारों सहित आगरा में अचानक मीर्ज़ा कामरान के सरापरदे में पहुँचे तो मीर्ज़ा को कोई सूचना न थी। दोनों भाइयों ने एक दूसरे से भेंट की और आँसू भर आये। तदुपरान्त हिन्दाल मीर्ज़ा, मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा एव उसके पुत्र, जो कि दीर्घकाल से विद्रोह किए हुए थे, उपस्थित हुए और उन्होंने अभिवादन किया। उनके अपराध क्षमा कर दिए गए। वे लोग परामर्श मे सम्मिलित हो गए। मीर्ज़ा कामरान का यह मत था कि, "क्योंकि पजाब की सेना ताजा दम है अत पादशाह मुझे आज्ञा दे ताकि शेर खा के विनाश का प्रयत्न करके मै उससे बदला ले लूँ। वे निश्चिन्त होकर राजधानी में आनन्दपूर्वक समय व्यतीत करें।" जब पादशाह ने यह बात स्वीकार न की तो मीर्ज़ा ने पजाब की ओर प्रस्थान करना निश्चय किया। उसे अपार आशायें थी, और वह इस विषय में अत्यधिक आग्रह कर रहा था। इसके बावजूद पादशाह ने उसकी समस्त प्रार्थनाओं को इसके अतिरिक्त कि वह लौट जाय, स्वीकार कर लिया। ख्वाजा कलाँ बेग, मीर्ज़ा कामरान के पजाब की ओर वापस होने

१ यह शेर फ़िरदौसी का है, शेर खाँ ने पहले मिसरे में परिवर्तन किया है :
'यके रा बर आरी व शाही देही,
दिगर रा ज शाही माही देही।'
प्रकाशित ग्रन्थ में "सिपाहे हुमायू ब माही देही" है।

२ 'कोई पादशाह सुरक्षित रहा'।

का प्रयत्न कर रहा था। इस बातचीत में ६ मास व्यतीत हो गए। कोई बात निश्चय न हो सकी। इसी बीच मे मीर्जा कामरान को ऐसे कठिन रोग लग गए जो एक दूसरे के विरुद्ध थे। जब इस बात का प्रमाण मिल गया कि उसके रोग का कारण विष है, जो कालचक्र के हाथों से उसके हलक में टपका दिया गया है तो वह षड्यन्त्रकारियों के बहकाने से पादशाह के प्रति शकित हो गया (३५४) और यह समझने लगा कि सम्भवत पादशाह ने उसे विष दिलवाया है। उसी प्रकार बीमारी की अवस्था में वह लाहौर की ओर रवाना हुआ। यह बात पूर्व निश्चय हो चुकी थी कि वह समस्त सेना पादशाह की सेवा में आगरा मे छोड देगा और शेष सेना अपने साथ ले जायेगा किन्तु इसके विरुद्ध दो हजार व्यक्तियों के अतिरिक्त जो कि सिकन्दर के अधीन थे उसने किसी को न छोडा। मीर्जा हैदर मुगुल दूगलात कश्मीरी भी आगरा में रह गया। उसे अत्यधिक आश्रय प्रदान हुआ। शेर खा का इस फूट के कारण साहस बढ गया। उस वर्ष के अन्त में वह गगा तट पर पहुँचा। एक सेना अपने पुत्र कुतुब खा के अधीन नियुक्त की और गगा पार कालपी तथा इटावा के विरुद्ध भेजी। कासिम हुसेन सुल्तान ऊजबेक ने यादगार नासिर मीर्जा एव इस्कन्दर सुल्तान से मिलकर उससे कालपी के क्षेत्र में युद्ध किया। शेर खा के पुत्र की उसकी अत्यधिक सेना सहित हत्या कर दी और सिरों को आगरा भेज दिया।

पादशाह बहुत बडी सेना लेकर जिसमे एक लाख अश्वारोही थे, शेर खा से युद्ध करने के लिए रवाना हुए। कन्नौज नदी पार करके एक मास तक वे शत्रु के सामने पडाव किए रहे। शेर खा की सेना में ५० हजार[1] से अधिक अश्वारोही न थे। ऐसे अवसर पर मुहम्मद सुल्तान मीर्जा एव उसके पुत्र पुन पादशाह के पास से भाग गए। मीर्जा की ओर से जो लोग सहायतार्थ नियुक्त हुए थे, वे भी लाहौर चल दिए। पादशाह की सेना के मुगुल छिन्न भिन्न हो गए। वर्षा ऋतु आ गई। क्योंकि पादशाह का शिविर नीची भूमि में था अत वे चाहते थे कि वहाँ से प्रस्थान करके किसी ऊँचे स्थान पर पडाव करें। इसी बीच में शेर खा सेनाओ को एकत्र करके युद्ध हेतु बढा। यह युद्ध १० मुहर्रम ९४७ हि० (१७ मई १५४० ई०) को हुआ। 'खराबिये मुल्के देहली' के अक्षरों से इस घटना की तारीख निकलती है। अधिकाश मुगुल सैनिक बिना युद्ध किए भाग खड़े हुए। थोडे से लोग जिन्होंने युद्ध किया, वीरतापूर्वक लडे किन्तु इस कारण कि स्थिति काबू के (३५५) बाहर हो गई थी, कोई लाभ न हुआ। पादशाह घोडे की लगाम मोड कर, ऊँचाई पर खड़े होना चाहते थे। यह बात भी लोगो के भागने का बहाना हो गई। बहुत बडी पराजय हुई, यहाँ तक कि पादशाह भी गगा नदी में घोडे पर से पृथक् हो गए। वे शम्सुद्दीन मुहम्मद गज़नवी की सहायता से, जो अन्त में हज़रत खलीफा पनाही के अत्का एव हिन्दुस्तान में आज़म खा की उपाधि द्वारा सुशोभित हुआ, नदी से निकलकर आगरा की ओर पहुँचे। क्योंकि शत्रु की सेना पीछा कर रही थी, अत वे वहाँ भी न ठहर सके और शीघ्रातिशीघ्र पजाब की ओर रवाना हुए। इस वर्ष १ रबी-उल-अव्वल (६ जुलाई १५४० ई०) को चगताई अमीर एव सुल्तान लाहौर में एकत्र हुए और परामर्श करने लगे। उनकी फूट अभी तक उसी प्रकार वर्तमान थी। मुहम्मद सुल्तान एव उसके पुत्र लाहौर से मुल्तान की ओर भाग गए। मीर्जा हिन्दाल एव मीर्जा यादगार नासिर ने भक्कर एव तत्ता की ओर

१ प्रकाशित ग्रन्थ में '५ हजार' किन्तु एक हस्तलिपि में '५०,०००', यही शुद्ध है।
२ २२ रजब ९४७ हि० (२२ नवम्बर १५४० ई०)।

प्रस्थान करना उचित समझा। मीर्जा कामरान ईश्वर से चाहता था कि यह सेना शीघ्र छिन्न भिन्न हो जाय ताकि वह काबुल चला जाय। अत्यधिक विचार विमर्श के उपरान्त पादशाह ने मीर्जा हैदर को एक बहुत बड़ी सेना, जिसने कश्मीर की सेवा स्वीकार कर ली थी, देकर उस ओर भेजा। यह निश्चय किया कि ख्वाजा कलाँ बेग मीर्जा हैदर के पीछे रवाना हो ताकि कश्मीर विजय उपरान्त बादशाह भी उस ओर पहुँच जायें। जब मीर्जा हैदर नवशहरा नामक प्रसिद्ध स्थान पर पहुँचा तो कुछ कश्मीरियों की सहायता से उस प्रदेश को विजय कर लिया। उस वर्ष के २२ रजब को वह विलायत उसके अधीन हो गई। ख्वाजा कलाँ बेग सियालकोट तक पहुँचा था कि पादशाह को समाचार प्राप्त हुए कि शेरखाँ सुल्तानपुर नदी को पार करके लाहौर से ३० कुरोह पर पड़ाव किए (३५६) हुए है। पादशाह ने उस वर्ष की १ रजब (१ नवम्बर १५४० ई०) को लाहौर नदी पार की। मीर्जा कामरान अत्यधिक शपथों के खंडन-उपरान्त किन्हीं कारणों से पादशाह के साथ साथ भीरा के समीप तक गया। ख्वाजा कलाँ बेग सियालकोट से भागकर पादशाह के लश्कर मे पहुँच गया। मीर्जा कामरान भीरा के समीप मीर्जा अस्करी के साथ पादशाह से पृथक् हो गया। ख्वाजा कलाँ बेग को साथ लेकर वह काबुल की ओर चल दिया। पादशाह सिंध की ओर रवाना हुए। मीर्जा हिन्दाल एव यादगार नासिर मीर्जा भी कुछ मंजिल तक साथ गए किन्तु बाद में पृथक् हो गए। तदुपरान्त अमीर अबुल बका उन्हे समझा बुझा कर लौटा लाया। सिंध नदी तट पर पादशाह के लश्कर मे ऐसा घोर अकाल पड़ गया कि एक सेर ज्वार एक अशर्फी में भी न मिलती थी। अधिकांश सेना इस कारण तथा अन्न जल के अभाव से नष्ट हो गई, यहाँ तक कि पादशाह कुछ लोगों को लेकर जैसलमीर एव मारवाड़ की ओर रवाना हुए। वहाँ बड़ी विचित्र घटनाएँ घटीं। अत्यधिक परिश्रम एवं कष्ट भोगने के उपरान्त, जैसा कि आकाश की प्रथा है, वे एराक पहुँचे। शाह तहमास्प से कुमक लेकर कन्धार एव काबुल पर अधिकार जमाया तथा अत्यधिक सेना एकत्र करके हिन्दुस्तान को पुन विजय कर लिया। इस घटना का उल्लेख अपने स्थान पर किया जायगा।[1]

हुमायूं का सिन्ध की ओर प्रस्थान

इन घटनाओं का संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है कि जब-जम सरीखे पादशाह के हाथ से हिन्द का राज्य उसी प्रकार निकल गया जिस प्रकार सुलेमान[2] के हाथ से अगूठी निकल गई थी तथा

१　पृ० ३५६ ४३६ तक सूर वंश का इतिहास दिया गया है अत उसका अनुवाद नहीं किया गया है।

२　एक प्रतापी पैग़म्बर। कहा जाता है कि उनका प्रभुत्व एक अंगूठी में निहित था, जो वे अपनी अगुलियों में पहिने रहते थे। एक बार वे स्नान करते समय अपनी अगूठी अपनी पत्नी यमीना को दे गये। असतरजी नामक जिन्नात हज़रत सुलेमान का रूप धरकर उनकी पत्नी के पास पहुँचा और उसने वह अगूठी उनसे मांग ली। अगूठी पहिनकर वह हज़रत सुलेमान की भाँति ही राज्य करने लगा और हज़रत सुलेमान का प्रभुत्व समाप्त हो गया। वे एक मल्लाह की सेवा करने लगे। मल्लाह उन्हें रोज़ाना दो मछलियां दिया करता था। एक मछली वे स्वय खा लेते और एक से दरिद्रों के भोजन की व्यवस्था करते थे। इसी बीच में हज़रत सुलेमान के वज़ीर आसफ़ को पता चल गया कि हज़रत सुलेमान के भेष में एक जिन्नात राज्य कर रहा है। वह राजसिंहासन के समक्ष ४० रब्बि (यहूदी तथा ईसाई एकांतवासी) लाया जिन्होंने तौरेत पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। असतरजी इसे सहन न कर सका और महल की छत पर से अगूठी फेंक दी और भाग खड़ा हुआ। अगूठी एक मछली निगल गई। वह मछली हज़रत सुलेमान के जाल में फंस गई। मल्लाह ने दैनिक मज़दूरी में वही मछली दे दी। हज़रत सुलेमान की पत्नी ने मछली तलने के लिए जब उसका पेट फाड़ा तो अगूठी निकल आयी। हज़रत सुलेमान ने अगूठी पहिन ली और अपना राज्य तथा प्रभुत्व प्राप्त कर लिया।

भाइयो के मतभेद एव पारस्परिक फूट सगठन तथा मेल द्वारा न जुड सके तो उनमे से प्रत्येक किसी न किसी दिशा की ओर निकल गया और वहाँ शरण ली। हज़रत पादशाह ने, जैसा कि थोडा सा पूर्व में उल्लेख हो चुका है, परामर्श एव विचार-विमर्श किया। उन्होने पजाब से निकल कर भक्कर विजय का सकल्प कर लिया। लुहरी[1] नामक कस्बे में जो उसके निकट है शिविर लगवाये। मीर्ज़ा हिन्दाल सिध पार करके पातर[2] कस्बे में, जो भक्कर से ५० कुरोह पर है, अनाज की अधिकता एव अल्प-मूल्यता के कारण चला गया। पादशाह ने तत्ता के हाकिम मीर्ज़ा शाह हुसेन अरगून को खिलअत तथा घोडे प्रदान करके सदेश भेजा कि "हम आवश्यकतावश इधर आये हैं और हमने गुजरात विजय का सकल्प कर लिया है। यह अभियान आपके परामर्श एव आपकी सहायता पर (४३७) निर्भर है।" मीर्ज़ा शाह हुसेन ५-६ मास तक टालता रहा और पादशाह को चिकनी चुपडी बातो द्वारा भक्कर की विलायत से तत्ता के समीप बुलवा लिया ताकि जैसा वह उचित समझे करे।

इस वर्ष ९४८ हि०[3] (१५४१-४२ ई०) में पादशाह ने हमीदा बानो बेगम से विवाह किया। पातर पहुँच कर वे पुन लुहरी लौट आये। मीर्ज़ा हिन्दाल, कन्धार के हाकिम कराचा बेग के निमत्रण पर उस ओर रवाना हो गया। यादगार नासिर मीर्ज़ा ने, जो शिविर से दस कुरोह पर पडाव किए हुए था, कन्धार की ओर प्रस्थान करने का सकल्प कर लिया। पादशाह ने मीर्ज़ा[4] अबुल बका को, जो कि बडे ही उच्च कोटि के आलिम एव मीर सैयिद शरीफ[5] के ग्रथ[6] की फारसी टीका के रचियता तथा अन्य ग्रन्थो के लेखक थे, उसे उपदेश देने एव रोकने के लिए भेजा। नदी पार करते समय भक्कर के किले से एक सेना ने निकलकर नाव वालो पर बाणो की वर्षा कर दी। स्वर्गीय मीर ने बाण से घायल होकर प्राण त्याग दिय। यह घटना ९४८ हि० में घटी। मरूरे काए-नात[7] के अक्षरो से इस घटना की तारीख निकलती है।

मीर्ज़ा यादगार नासिर उपदेश एव शिक्षा की स्वीकृति उपरान्त भक्कर में रह गया। पादशाह ने तत्ता की ओर प्रस्थान किया। (पादशाह के) लश्कर के बहुत से आदमी पृथक् होकर मीर्ज़ा से मिल गए। महसूल की अधिकता[8] के कारण निश्चिन्त होकर समय व्यतीत करने लगा। मीर्ज़ा को शक्ति प्राप्त हो गई। पादशाह ने नदी पार करके सियाहवान[9] के किले को घेर लिया। मीर्ज़ा शाह हुसेन वहाँ के आदमियो को कुमक एव खाद्य सामग्री भेजता रहा। वह नौका मे बैठकर

१ रुहरी।
२ पातर अथवा पात।
३ प्रकाशित ग्रथ में '९४७ हि०', एक हस्तलिपि में '९४८ हि०', यही उचित है।
४ अन्य स्थानों पर 'मीर'।
५ सैयिद (मीर) शरीफ अली बिन मुहम्मद जुर्जानी, "हाशियये कश्शाफ", "हाशियये तफ़सीर अनवारुत्तजील", "मिफ्ताहुल शरीफ़" एव कई अन्य अरबी ग्रथो के रचियता थे। उनकी फिक्ह एव दर्शन शास्त्र सम्बन्धी रचनायें बड़ी उच्च कोटि की मानी जाती हैं। उनका जन्म १३३९ ई० तथा मृत्यु १४१३ ई० में हुई।
६ लेखक ने ग्रथ का नाम नहीं लिखा है।
७ 'सृष्टि की प्रसन्नता'।
८ अधिक वेतन पाने से तात्पर्य है।
९ सेहवान, सिंध के कराची जिले में।

शाही शिविर के समीप पहुँचा और (पादशाह की सेवा में) खाद्य सामग्री पहुँचने का मार्ग रोक (४३८) लिया। सात मास तक अवरोध होता रहा विजय न हुई। अकाल एवं नमक के अभाव के कारण अत्यधिक कष्ट उठाना पड़ा।

शेर

'जो कोई दावत आकाश के हाथों पकायी जाती है,
या तो बिना नमक के होती है और या उसमें नमक ही नमक होता है।'

पादशाह की सेना वाले अत्यधिक परेशान हो गए। अनाज के अभाव के कारण पशुओ के मांस पर जीवन निर्वाह करने लगे। अन्त में उसकी भी आशा न रही।

शेर

'भूखे पेट वाला खाल पर दृष्टि लगाये रहता है,
कारण कि खाल, मांस का निकटतम पड़ोसी होता है।'

हज़रत पादशाह ने मीर्ज़ा यादगार नासिर को बुलवाने के लिए भक्कर आदमी पुन भेजे ताकि उससे मिलकर मीर्ज़ा शाह हुसेन को पराजित किया जा सके और किले की समस्या का एक रूप से समाधान हो सके। उसने सहायता भी भेजी जो काम न आ सकी और पादशाह के लश्कर की अव्यवस्थित दशा के विषय में सुनकर स्वयं प्रस्थान करना उचित न समझा तथा भक्कर में ठहर गया। मीर्ज़ा शाह हुसेन ने उसे उस प्रदेश की सल्तनत का लोभ दिखाया एवं उसके नाम का सिक्का तथा ख़ुत्बा चलवा देने का आश्वासन दिलाया और आज्ञाकारिता स्वीकार कर लेने तथा अपनी पुत्री का विवाह उससे कर देने का वचन देकर मार्ग भ्रष्ट कर दिया तथा पादशाह का विरोधी बना दिया। उसने समस्त पादशाही नौकाओं पर अधिकार जमा लिया। पादशाह ने अनेक कारणों से जिनमें से प्रत्येक अटल था तथा सेना की अव्यवस्था एवं व्याकुलता की वजह से क़िले का अवरोध त्याग कर वापसी ही को उचित समझते हुए भक्कर की ओर प्रस्थान किया। कुछ दिन तक वे नौकाओं की प्रतीक्षा करते रहे। दो ज़मींदारों की सहायता से उन नौकाओं को प्राप्त करके, जिन्हें मीर्ज़ा ने डुबा दिया था, वे भक्कर पहुँचे। मीर्ज़ा ने अपनी लज्जा को दूर करने के (४३९) उद्देश्य से सेवा में उपस्थित होने के पूर्व मीर्ज़ा शाह हुसेन पर आक्रमण कर दिया। तत्ता की सेना की बहुत बड़ी संख्या, जो कि नौका की ओर से असावधान होकर लौटी थी, मार डाली गई तथा बन्दी बना ली गई। इस प्रकार अपनी कृतघ्नता का बदला चुका कर उसने लज्जा प्रदर्शित करते हुए अभिवादन किया। शत्रुओं के सिर, जिनकी गणना सम्भव न थी, प्रस्तुत किये। उसके अपराध क्षमा कर दिये गये।

कुछ अन्य कारणों से, जो उपस्थित हो गए, उसने पुन विद्रोह करना प्रारम्भ कर दिया और मीर्ज़ा शाह हुसेन के चक्कर में आकर युद्ध का सकल्प कर लिया। मुनइम खां जो बाद में ख़ान-ख़ाना हुआ, भागने के विषय में सोचने लगा। दोनों अपनी भूलों से अवगत हो गए और उन्होंने उसके दोष को समझकर अपने नीच विचार त्याग दिये। पादशाह के आदमी नित्य प्रति मीर्ज़ा यादगार नासिर के पास भाग-भाग कर पहुँचने लगे।

मालदेव के राज्य की ओर प्रस्थान

इसी बीच में मारवाड़ के राजा मालदेव ने, जो अपनी शक्ति, संख्या एवं प्रभुत्व के

कारण हिन्दुस्तान के समस्त जमीदारों में अद्वितीय समझा जाता था, निरन्तर प्रार्थना पत्र भेजकर हजरत पादशाह को आमन्त्रित किया। पादशाह ने भक्कर तथा सत्ता के समीप अपने निवास को उचित न समझ कर जैसलमीर के मार्ग से मारवाड की ओर प्रस्थान किया। जैसलमीर के राजा ने उनके लश्कर का मार्ग रोक लिया और युद्ध किया। वह पराजित हुआ। उस रेगिस्तान में जल के अभाव के कारण पादशाह के लश्कर वालों को अत्यधिक कष्ट भोगने पडे, यहाँ तक कि कुओं पर सैनिकों में जल के लिए आपस में मार काट हो गई। अधिकाश लोग प्यास की अधिकता के कारण डोल के समान कुएँ में कूद कर अपनी प्यास बुझाने लगे। पादशाह ने उस समय इस मतले[१] को, वह जिस किसी की भी रचना हो, पढा '

शेर

'आकाश ने पीडितों के वस्त्र को इतना अधिक टुकडे-टुकडे कर दिया,
कि न तो हाथ को आस्तीन मिलती है और न सिर को गिरेबान।'

जैसलमीर के मार्ग से शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए वे मारवाड पहुँचे। अत्का खा (४४०) को मालदेव के पास भेजा। कुछ दिन तक वे जोधपुर के समीप ठहरे और उसके आगमन की प्रतीक्षा करते रहे। क्योंकि उन दिनों नागौर शेर शाह के अधीन हो गया था, मालदेव को उसने पादशाह की कुमक एव सहायता के विरुद्ध कठोर चेतावनी दी थी। मालदेव इस कारण उन्हे बुलाने पर लज्जित था और अत्का खा को किसी न किसी बहाने से रोके हुए था। उसने एक बहुत बडी सेना को विश्वासघात एव पादशाह को बन्दी बनाने के लिए स्वागत के बहाने से भेजा। अत्का खा को विश्वासघात का पता चल गया। वह उससे आज्ञा लिए बिना वापस चला गया और उस विषय में जो कुछ ज्ञात था उसकी सूचना दी। वे तत्काल अमरकोट की ओर रवाना हो गए। सयोग से उसी मजिल पर मालदेव के गुप्तचर पहुँच चुके थे। पादशाह ने उन दोनों की हत्या का आदेश दे दिया। निराश होकर उन्होंने एक के हाथ से चाकू तथा दूसरे के हाथ से कटार छीन कर बाण द्वारा घायल सूअरों की भाँति आक्रमण कर दिया। उनके समक्ष स्त्री-पुरुष, घोडे जो कुछ भी आये, उन्हे नष्ट कर डाला। इन्ही में पादशाह का एक घोडा था। पादशाह ने उस समय तरदी बेग से कुछ घोडे तथा ऊँट माँगे। उसने कृपणता प्रदर्शित की। पादशाह ऊँट पर सवार हो गए, यहाँ तक कि नदीम कोका ने अपनी माता की सवारी का घोडा पादशाह को दे दिया। वह (इससे पूर्व) स्वय अपनी माता के घोडे के साथ-साथ रेगिस्तान में, जो कि तदूर के समान गरम था, पैदल यात्रा करता रहा। उसकी माता ऊँट पर सवार हो गई। उस मार्ग की इस कठिनाई से यात्रा की गई। क्षण-क्षण पर 'मालदेव अब पहुँचा' 'अब पहुँचा' के समाचार प्राप्त होते रहते थे। बडी (४४१) कठिनाई एव कष्ट स यात्रा की। रात्रि उपरान्त वे एक सुरक्षित स्थान पर पहुच गए। सयोग से मालदेव के जो हिन्दू[२] रातों रात पीछा कर रहे थे, वे मार्ग भूल गए। प्रात काल वे एक सकरे मार्ग में लश्कर के पीछे के भाग की ओर, जिनमे कुल २२ व्यक्ति थे और जिनमे मुनइम खा, रोशन बेग कोका एव अन्य लोग सम्मिलित थे, पहुँच गए। युद्ध हुआ। प्रथम आक्रमण में हिन्दुओ

१ गजल का प्रथम शेर, जिसके दोनों मिसरे सानुप्रास होते है।
२ 'सेना' से तात्पर्य है।

का सरदार बाण द्वारा नरक को पहुँच गया। बहुत बडी सख्या में लोग मारे गए। वे मुकाबला न कर सके। मुसलमानो को बहुत बडी सख्या में ऊँट तथा धन सम्पत्ति प्राप्त हुई। इस विजय से उन्हे बडी प्रसन्नता हुई। उस मजिल से प्रस्थान करके तथा जल लेकर[1] वे तीन दिन उपरान्त एक ऐसे पडाव पर पहुँचे जहाँ पानी इतना गहरा था कि वहाँ उसको निकालने के लिए जब ढोल बजाया जाता था तब कही जाकर जल निकालने वाले बैल तक सूचना पहुँचती थी। जल के अभाव के कारण बहुत बडी सख्या में लोग नष्ट हो गए। वे उस रेगिस्तान में जहाँ बालू का समुन्दर लहरें मार रहा था जल के समान नष्ट एव अदृश्य हो गए। अधिकाश घोडे तथा ऊँट प्यास के कारण अत्यधिक जल पी गए और इस कारण नष्ट हो गए। क्योकि मृग-तृष्णा रूपी उस रेगिस्तान का लश्कर के मुसीबत के मारे लोगो के कष्ट के समान कोई अन्त न था अत विवश होकर वे उस मार्ग से पलटे और अमरकोट की ओर, जा तत्ता से १०० कुरोह पर है, प्रस्थान किया। अमरकोट के हाकिम ने, जिसका नाम राणा था, अपने पुत्रो सहित स्वागत किया और यथा-सम्भव उचित सेवाये सम्पन्न की। पादशाह के पास खजाने मे जो कुछ था, उसे अपने आदमियो को बाँट दिया। जिन लोगो को कुछ न प्राप्त हुआ, उन्हे तरदी बग एव अन्य लोगो से ऋण लेकर दे दिया। नकद धन, तलवार की पेटी तथा कटार राणा के पुत्रो को पुरस्कार स्वरूप प्रदान की। राणा ने अपने पिता की हत्या का बदला लेने के लिए, जिसे मीर्ज़ा शाह हुसेन ने क़त्ल करा दिया था, आसपास से एक बहुत बडी सेना एकत्र की और पवित्र रिकाब के साथ कर दी। खेमे तथा असबाब बेगम के भाई ख्वाजा मुअज्ज़म को सौंपकर पादशाह ने भक्कर की ओर प्रस्थान किया।

रविवार ५ रजब ९४९ हि० (१५ अक्तूबर १५४२ ई०) को इस युग के खलीफा (४४२) अकबर पादशाह का शुभ मुहूर्त्त में अमरकोट में जन्म हुआ। तरदी बेग खा ने उस पडाव पर पादशाह को यह सुखद समाचार पहुँचाया। उन्होंने उनका यह शुभ नाम रख कर शीघ्रातिशीघ्र भक्कर की ओर प्रस्थान किया। चौल[2] की मजिल पर भाग्यशाली शाहज़ादे को बुलवाकर उसके दर्शन द्वारा प्रसन्नता प्राप्त की। सेना वाले जिनके स्वभाव मे कालचक्र की धूर्तता के समान कृतघ्नता प्रविष्ट हो गई थी, एक-एक करके भागने लगे, यहाँ तक कि मुनइम खा भी भाग गया। इसी बीच में बैराम खा गुजरात से आकर सेवा में उपस्थित हुआ।

उस विलायत में ठहरना उचित न समझ कर उन्होंने कन्धार की ओर प्रस्थान करने का सकल्प कर लिया। मीर्ज़ा शाह हुसेन ने इस बात को बहुत बडी देन समझ कर आदेशानुसार ३० नौकाए एव ३०० ऊँट भेजे। पादशाह ने सिंध नदी पार की। उस समय मीर्ज़ा कामरान ने कन्धार को मीर्ज़ा हिन्दाल से लेकर मीर्ज़ा अस्करी को सौप दिया था, मीर्ज़ा हिन्दाल को गजनी प्रदान कर दिया था तथा अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया था। कुछ समय उपरान्त उसने इसमे भी परिवर्तन कर दिया और मीर्ज़ा हिन्दाल राज्य त्याग कर काबुल मे दरवेशो के समान जीवन व्यतीत करने लगा। मीर्ज़ा कामरान ने मीर्ज़ा शाह हुसेन के बहकाने से मीर्ज़ा अस्करी को लिखा कि, "पादशाह का मार्ग रोक कर जिस प्रकार सम्भव हो उन्हे बन्दी बना लो।" जिस समय उन्होंने शाल मस्ताक[3]

१ 'आब बरदाश्ता' किन्तु 'अज़ आब बरदाश्ता'—'जल से निराश होकर'—से तात्पर्य है।

२ चौल अथवा चौर, जैसलमीर के मार्ग पर अमरकोट से उत्तर पूर्व में ८ मील पर।

३ कुछ हस्तलिपियों में 'साल मस्तान' एव कुछ में 'शाल व मस्तान', शाल व मस्तग से तात्पर्य है।

मे पडाव किया, मीर्जा अस्करी कन्धार से शीघ्रातिशीघ्र आगे रवाना हुआ और चोली बहादुर[1] नामक एक ऊजबेक को समाचार लाने के लिए भेजा। वह शीघ्रातिशीघ्र आगे बढता हुआ बैरामखा के खेमे में आधी रात्रि में पहुँचा और उसे सचेत किया। बैराम खा तत्काल पादशाही सरापरदे के पीछे (४४३) से प्रविष्ट हुआ और उन्हे इस बात की सूचना दी। तत्काल कन्धार तथा काबुल एव भाइयो के झगडे की ओर से दृष्टि हटाकर वियोग के वाक्य कहकर एराक की ओर २२ व्यक्तियों सहित जिनमें बैराम खा तथा ख्वाजा मुअज्जम थे, रवाना हुए। उन्होंने ख्वाजा मुअज्जम एव बैराम खा को पादशाह बेगम तथा लोक परलोक के शाहज़ादे को बुलाने के लिए नियुक्त किया। तरदी बेग से कुछ घोडे मांगे। उसने पुन कृपणता एव अपमान का कलक अपने मत्थे पर लगाकर उपेक्षा की और साथ भी न गया। शाहज़ादे को इस कारण कि उनकी अवस्था एक वर्ष थी हवा की गरमी तथा जल के अभाव के कारण अतका खा की अतावकी में शिविर में छोड दिया। बेगम को पादशाह साथ ले गए। वे सीस्तान के मार्ग से रवाना हुए। मीर्जा अस्करी तत्काल उत्कृष्ट दीवानखाने में पहुँचा और सौजन्य की नकाब, निर्लज्जता प्रदर्शित करते हुए, हटाकर धन सम्पत्ति पर अधिकार जमाने लगा। तरदी बेग को बन्दी बनाने का आदेश दे दिया। भाग्यशाली शाहज़ादे को कन्धार ले गया तथा अपनी पत्नी सुल्तान बेगम को सौप दिया ताकि वह उनकी देख रेख एव उनके प्रति कृपा प्रदर्शित करने का अत्यधिक प्रयत्न करती रहे।

हुमायू का ईरान की ओर प्रस्थान

इस यात्रा में अत्यधिक घटनायें घटी। इनका सविस्तार उल्लेख मूल ग्रथ[2] में किया जा चुका है और इस स्थान पर उनकी पुनरावृत्ति आवश्यक न थी किन्तु उस यात्रा को शीघ्र समाप्त कर देना चाहता हूँ[3]। यह घटनाएँ ९५० हि० (१५४३ ई०) में घटी। सक्षेप में, सीस्तान पार करके उन्होने खुरासान नगर की सैर की और शाह तहमास्प के ज्येष्ठ पुत्र सुल्तान मुहम्मद मीर्जा से, जिसका अतालीक मुहम्मद खा तकलू उस प्रदेश का शासन कर रहा था, भेट की। यात्रा के समस्त शाही असबाब लेकर आदरपूर्वक मशहद पहुँचे। शाह के आदेशानुसार प्रत्येक मजिल पर उस (४४४) प्रदेश के हाकिम स्वागत हेतु पहुँचते थे। आतिथ्य इत्यादि का प्रबन्ध करके एक मजिल से दूसरी मजिल पर पहुँचाते थे। बैराम खा शाह की सेवा में पहुँचा और पादशाह के चरणो के पहुँचने के सम्बन्ध में आशीर्वाद विषयक पत्र पहुँचाये। सूरलीक यीलाक में दोनो पादशाहो ने ऐश्वर्य एव वैभव की प्रथाओ के साथ भेंट की। वार्तालाप के समय शाह ने पूँछा, "पराजय का क्या कारण था?" पादशाह ने बिना सोचे कह दिया कि, "भाइयो का विरोध।" शाह का भाई बहराम मीर्जा जो उपस्थित था इस बात से बडा रुष्ट हुआ। तदुपरान्त शाह के हृदय में वह पादशाह के प्रति शत्रुता के बीज बोने लगा तथा उनके अभियान को असफल बनाने का प्रयत्न करने लगा, अपितु पादशाह के ही विनाश के विषय में योजनाएँ बनाने लगा। उसने शाह तहमास्प को यह समझा दिया कि "यह उसी पिता का पुत्र है, जो कई हजार किज़िलबाशों को अपनी कुमक हेतु ले गया[4]।

---

१ एक हस्तलिपि में 'जूक़ी बहादुर'।

२ तबक़ाते अकबरी।

३ सक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

४ देखिये मुग़ल कालीन भारत—बाबर, पृ० ६०३-६०५।

उन्हे पददलित कर दिया और उनमें से एक भी जीवित वापस न आया।" यह सकेत बाबर पादशाह तथा शाह इस्माईल की उस घटना की ओर है जब बाबर पादशाह नज्मे अव्वल के अधीन १७ हज़ार किज़िलबाश अश्वारोहियों को ऊज़बेको के विरुद्ध ले गया। नखशब[1] के किले के, जो किश कहलाता है, अवरोध के समय यह शेर बाण पर लिखकर किले के भीतर फेंक दिया·

शेर

'मैंने शाह के नज्म का ऊज़बेकों को मार्ग से हटाने में प्रयोग किया,
यदि मैंने कोई पाप किया था तो मैंने मार्ग को साफ कर दिया।'

दूसरे दिन जब दोनों ओर की सेनाओं में युद्ध हुआ तो वह पृथक् हो गया। क़िज़िलबाशो पर जो मुसीबतें आनी थी, वह आईं। यह क़िस्सा बडा प्रसिद्ध है किन्तु शाह की बहिन सुल्तानबेगम ने जिसे महदी मौऊद[2] की भेंट हेतु सुरक्षित रखा गया था तथा राज्य का समस्त शासन प्रबन्ध जिसके परामर्श से होता था, शाह को इस घाटी से निकाला और गम्भीर दलीलो द्वारा उनके प्रति सौजन्य एव उदारता प्रदर्शित करने तथा उनकी सहायता करने के लिए तैयार किया। (शीओ के (४४५) विश्वासानुसार महदी मौऊद सामरा[3] नगर में जो सुर्रा मन रा के नाम से प्रसिद्ध है छिपे हैं और आवश्यकता पडने पर वहां से निकल कर न्याय का प्रचार करेंगे)। पादशाह ने एक रुबाई की रचना की जिसका अन्तिम शेर यह है

शेर

'समस्त शाह हुमा[4] की छाया की अभिलाषा किया करते हैं,
देख हुमा तेरी छाया में आ गया।'

सलमान[5] के किताए के इस शेर को किसी मौके से तज़मीन[6] तैयार की और उसे शाह के पास भेजा :

१ मावराउन्नहर में, जेहून तथा समरक़न्द के मध्य में।
२ शीओं के १२वें इमाम, जिनके विषय में शीओं का विश्वास है कि वे केवल अदृश्य हैं और क़यामत के समय प्रकट होकर सच्चे धर्म एव न्याय का प्रचार करेंगे।
३ सामरा इराक़ में है। इसकी स्थापना ८वें अब्बासी ख़लीफ़ा अल-मोतसिम बिल्लाह (८३३ ई० ८४२ ई०) ने की और इसका नाम सुर्रा मन रा (जो देखता है, प्रसन्न होता है) रक्खा। यह कुछ वर्षों तक अब्बासी ख़लीफ़ाओं की राजधानी रहा किन्तु राजधानी के पुन बग़दाद चले जाने के उपरान्त इसका महत्व समाप्त हो गया परन्तु शीओं के लिये यह स्थान बडा पूज्य है। यहाँ उनके दो इमामों के रौज़े और वह मस्जिद है जिसकी गुफा में से १२वें इमाम, हज़रत महदी-ए-मौऊद, प्रकट होंगे।
४ एक काल्पनिक पक्षी जिसके विषय में कहा जाता है कि यदि उसकी छाया किसी पर पड जाय तो वह बादशाह हो जाय।
५ जमालुद्दीन सलमान सावजी एक प्रसिद्ध फ़ारसी कवि हुये हैं। उनका निधन ६६६ हि० (१२७०-७१ ई०) में हुआ
६ किसी के शेर अथवा मिसरे को अपने शेरों में प्रयोग करना।

शेर

'ईश्वर से मुझे आशा है कि शाह मेरे साथ वही करेंगे,
जो सलमान के साथ अली ने अरजन के जंगल में किया।'[1]

शाह बड़ा प्रसन्न हुआ। कई जश्नों एवं सैर-शिकार उपरान्त पादशाह के लिए शाहाना ऐश्वर्य एवं वैभव के सामान तैयार कराये और शीआ धर्म स्वीकार करने तथा इस धर्म के बाद के अनुयायी जो कुछ सम्मानित सहावा[2] के विरुद्ध कहते हैं, कहने के लिए[3] आग्रह किया। पादशाह ने अत्यधिक वादविवाद उपरान्त कहा कि, "एक कागज पर लिखकर ले आओ।" वे लोग अपने समस्त धार्मिक विश्वासों को लिखकर लाये। पादशाह ने उन्हें अनुकरण के रूप में पढ़ा[4]। एराक वालों की प्रथानुसार १२ इमामों का उल्लेख अपने खुत्बे में नकल किया।

शाह ने अपने पुत्र शाह मुराद को, जो दूध पीता बच्चा था, दस हज़ार[5] अश्वारोहियों सहित बुदाग खां किज़िलबाश अफशार की अतालीकी में पादशाह की कुमक हेतु नियुक्त किया। यह निश्चय हुआ कि 'किज़िलबाश लोग एक मार्ग से और पादशाह दूसरे मार्ग से प्रस्थान करें। विजय उपरान्त कन्धार शाह मुराद को सौंप दिया जाय'।

वे शाह तहमास्प से विदा होकर जरीदा[6] अर्दबेल एवं तबरेज की सैर करते हुए पुनः मशहद पहुँचे और प्रकाश के स्रोत मज़ार[7] के दर्शन द्वारा सम्मानित हुए।

(४४६) एक रात्रि में वे अकेले उस पूज्य मज़ार की सैर कर रहे थे। एक ज़ायर[8] ने धीरे से दूसरे से कहा कि, "(क्या) हुमायूँ पादशाह यही हैं?" उसने कहा, "हाँ।" तदुपरान्त उसने पादशाह के निकट पहुँचकर उनके कान में कहा, "क्या आप फिर खुदाई का दावा करेंगे?" यह संकेत जिस घटना की ओर था, वह इस प्रकार है। पादशाह बंगाले में अधिकांश अपने मुकुट पर नकाब डाल देते थे। जिस समय वे नकाब उलटते थे तो लोग कहते थे कि, "तजल्ली[9] हो गई।" तलवार को नदी में धोकर कहते थे कि, "अब किसके विरुद्ध तलवार बाँधें?" जब वे आगरा पहुँचे तो उन्होंने अभिवादन के एक नए ढंग का आविष्कार किया और इस बात की इच्छा की कि लोग ज़मीन बोस[10] करें। अन्ततोगत्वा मीर अबुल कासिम एवं अमीरों तथा वज़ीरों ने ताज़ीम एवं तस्लीम[11] निश्चय की।

१ हज़रत अली ने सलमान को शेर के आक्रमण से बचाया था। (देखिये **मुग़ल कालीन भारत—हुमायूँ**, पृ० ६५१)।
२ हज़रत मुहम्मद के मित्र विशेष रूप से उनके बाद के प्रथम तीन ख़लीफाओं के सहायक।
३ तबर्रा पढ़ने से तात्पर्य है।
४ 'नक़्ले कुफ्र कुफ्र न बाशद' अर्थात् कुफ्र का अनुकरण कुफ्र नहीं होता।
५ एक हस्तलिपि में १२,०००।
६ बहुत थोड़े से सहायकों के साथ।
७ इमाम रिज़ा के मज़ार।
८ मज़ार का यात्री, जो दर्शन करने आया हो।
९ प्रकाश। इसी सिद्धांत पर अबुल फ़ज़्ल ने अकबर के राज्य के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया।
१० धरती चुम्बन। यह बहुत ही प्राचीन प्रथा है और देहली के सुल्तानों के राज्यकाल में भी प्रचलित थी।
११ अभिवादन के ढंग।

हुमायूं द्वारा क़न्धार विजय

क़िज़िलबाश अमीरो ने गरमसीर पहुँचकर उसे पूर्ण रूप से अपने अधिकार में कर लिया। उन लोगों ने कन्धार का अवरोध कर लिया था कि इसी बीच में पाँच दिन उपरान्त पादशाह पहुँच गए। मीर्जा अस्करी ने किले की प्रतिरक्षा की। तीन मास तक लगातार युद्ध होता रहा। दोनो ओर से अधिकाश लोग मारे गए।

उन्होने बैराम खा को दूत बनाकर मीर्जा सुलेमान बदख्शी एव मीर्जा यादगार नासिर के पास, जो भक्कर से परेशान होकर काबुल पहुँचा था, भेजा[1]। क़िज़िलबाशो को विश्वास था कि पादशाह के पहुँचते ही चगताई समूह सब के सब उनकी आज्ञाकारिता स्वीकार कर लेंगे किन्तु यह स्थिति न प्रकट हुई। अवरोध का समय बढ़ता गया। बहुत बडी सख्या में लोग मारे गए। मीर्जा कामरान के मीर्जा अस्करी की सहायतार्थ पहुँचने के समाचार प्राप्त होने लगे। वे लोग दुखी होकर अपने राज्य को लौट जाना चाहते थे। सयोग से उन्ही दिनो में मीर्जा कामरान के अमीरो में से मुहम्मद सुल्तान मीर्जा, उलग मीर्जा एव मीर्जा हुसेन खा तथा अन्य प्रतिष्ठित सरदारो ने विद्रोह कर दिया और पादशाह की सेवा में उपस्थित हो गए। मुईद बेग, जो कन्धार के किले में बन्द (४४७) था, किले के नीचे उतरा और उसने अभिवादन किया। उसको अत्यधिक प्रोत्साहन प्रदान किया गया। मीर्जा अस्करी ने व्याकुल होकर क्षमा याचना कर ली और पादशाह के सेवको में सम्मिलित हो गया। उसके अपराध क्षमा कर दिए गए और नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा सम्मानित किया गया।

मिसरा

'क्षमा में जो आनन्द है वह प्रतिकार में नही।'

उन्होने किज़िलबाश अमीरो को आदेश दे दिया कि तीन दिन तक वे चगताई कबीलो तथा उनके परिवारो एव नगर निवासियो के प्रति कोई रोक टोक न करें ताकि वे शान्तिपूर्वक बाहर निकल सकें। यद्यपि पादशाह के अधिकार में कोई राज्य न था किन्तु उन्होने अपने वचन अनुसार बुदाग खा एव मीर्जा मुराद को किले में प्रविष्ट हो जाने दिया और वह पूरा राज्य उनके अधिकार में छोड दिया।

शेर

'यदि कोई पुरुष अपने वचन का पालन करता है,
जो भी सोचा जाय उसके विषय में, उससे ऊँचा उठ जाता है, वह पुरुष।'

बुदाग खा तथा २-३ अन्य अमीरो के अतिरिक्त मीर्जा मुराद की सेवा में कोई और न रह गया। शेष अमीर जो कुमक हेतु आये थे, एराक चले गए। शीत ऋतु के आ जाने के कारण पादशाह ने अपनी सेना के विश्वासपात्रो के लिए नगर के भीतर बुदाग खा से एक सुरक्षित स्थान की प्रार्थना

१ प्रकाशित ग्रथ में इसी प्रकार है किन्तु दो हस्तलिपियों में इस प्रकार है —
"बैराम खां को राजदूत बना कर काबुल की ओर मीर्जा कामरान के पास जिसकी ओर से मीर्जा अस्करी युद्ध कर रहा था और मीर्जा सुलेमान बदख्शी एव मीर्जा यादगार नासिर के पास. ....भेजा।"

की। उस निष्ठुर ने अनुचित उत्तर दिए। इस कारण कुछ चगताई अमीर काबुल की ओर भागने लगे। इन्ही में मीर्ज़ा अस्करी भी था जिसे मार्ग से पकड़कर पादशाह की सेवा मे पहुँचाया गया और उसे बन्दी बना दिया गया।

उन दिनों जो घटनाए घटी, उन्ही में से कुछ कन्धार को किज़िल्बाशो के अधिकार से ले लेने का कारण बनी —

(१) चगताई अमीरो ने पादशाह से यह आग्रह किया कि ठडक के कारण आवश्यकतावश कन्धार पर अधिकार जमा लेना चाहिये। काबुल तथा बदख्शाँ की विजय उपरान्त इससे अधिक किज़िलबाशो को बदले में दे दिया जाय ताकि इस हानि की पूर्ति उत्तम रूप से हो सके।

(२) मीर्ज़ा मुराद का उसी दिन स्वाभाविक मृत्यु द्वारा इस ससार से विदा हो जाना।

(३) दुष्ट किज़िलबाशो का नगरवासियो के प्रति अत्याचार एव चगताइयो को किले के भीतर प्रविष्ट न होने देना। (४४८)

(४) एक दिन एक तबर्राई[१] अपनी दुष्ट प्रवृत्ति के कारण यादगार नासिर मीर्ज़ा के समक्ष, जो हिन्दाल मीर्ज़ा के साथ कामरान मीर्ज़ा के पास से भागकर आया था, रसूलल्लाह के सहायियो के विरुद्ध शब्द कहने लगा। मीर्ज़ा यादगार नासिर इसे सहन न कर सका। उसके हाथ में एक बाण था। उसने उसे इस प्रकार बाण मारा कि वह उसके सीने के पार हो गया। वह भूमि पर गिर पडा।

हाजी मुहम्मद खा कोकी दो सेवकों सहित सबसे आगे बोझ से लदी हुई ऊँटो की कितार के साथ कन्धार के किले में प्रविष्ट हो गया और किले के रक्षको[२] को तलवार के घाट उतार दिया। अन्य लोग उसके पीछे पहुँच गए। मीर्ज़ा उलुग बेग एव बैराम खा भी उन्ही में से थे। किज़िलबाश घबडा गए और उनके हाथ पाँव फूल गए।

पादशाह किले के भीतर प्रविष्ट हो गए। बुदाग खा को, जिसने चिन्ता एव व्याकुलता की अवस्था में उपस्थित होकर अभिवादन किया, एराक की ओर जाने की अनुमति दे दी। इसके बावजूद नगरनिवासियो ने इस कारण कि वे उनसे रुष्ट थे, प्रत्येक गली में किज़िलबाशा की हत्या करनी प्रारम्भ कर दी।

कन्धार के अभियान की ओर से निश्चिन्त होकर उन्होने उस प्रदेश का राज्य बैराम खा के सुपुर्द कर दिया और काबुल विजय का सकल्प कर लिया।

काबुल पर अधिकार

मीर्ज़ा कामरान भी युद्ध हेतु बाहर निकला। नित्य-प्रति उसके एक या दो प्रतिष्ठित अमीर भाग भाग कर हुमायूँ के लश्कर में पहुँच जाते थे। निसन्देह ससार के अधिकाश लोग

१ तबर्रा कहने वाला। तबर्रा का अर्थ, उपेक्षा, घृणा तथा बेज़ारी है किन्तु शीआ लोग प्रथम तीन ख़लीफ़ाओं एव उनके सहायकों से बेज़ारी के लिये जो धिक्कार सम्बन्धी शब्द कहते हैं, वह तबर्रा कहलाता है।

२ द्वारपालों से तात्पर्य है।

भेडो के गल्ले के समान है। उनमें से यदि एक किसी ओर चल खडा होता है तो दूसरे भी (४४९) उसके पीछ रवाना हो जाते है। मीर्ज़ा कामरान ने विवश होकर मशायख एव आलिमा द्वारा अपने अपराधो के प्रति क्षमा याचना कराई। पादशाह ने उसके अपराधा के लेख को इस शर्त पर कि वह सेवा मे उपस्थित हो जाय, अपने हृदय के पृष्ठ से क्षमा के जल द्वारा धो दिया। मीर्ज़ा ने, इस कारण कि अपहरणकर्त्ता भयभीत होता है, सेवा में न उपस्थित होना निश्चय किया और स्वय काबुल के अरक मे शरण ले ली। वहाँ से वह रातो रात गज़नी भाग गया। उसकी समस्त सेना पादशाही लश्कर में प्रविष्ट हो गई। पादशाह ने मीर्ज़ा हिन्दाल को उसका पीछा करने के लिए नियुक्त किया और काबुल नगर में पहुँचा। "नि सन्देह वह जिसने कुरान का तेरे लिए आदेश *दिया है वह तुझे तेरे वापसी के स्थान पर पहुँचा देगा" नामक आयत सत्य प्रमाणित हो गई।* हज़रत पादशाह ने अपने नेत्रो को सम्मानित शाहज़ादे के दर्शन द्वारा तृप्त किया। यह विजय १० रमज़ान ९५२ हि० (१५ नवम्बर १५४५ ई०) को प्राप्त हुई। "विना युद्ध उससे काबुल जीत लिया[1]" के अक्षरो से इस घटना की तारीख निकलती है- क्योकि इन घटनाओ का उल्लेख करना अन्य लोगोंके सुपुर्द था और इस मुन्तखब के सकलनकर्ता ने पद का अपहरण किया है और अब यद्यपि वह चाहता है कि बात की रस्सी को खीच ले किन्तु बात का तागा उसकी इच्छा के विरुद्ध बढता जा रहा है। विवरण के अनेक मार्ग होते हैं।

सक्षेप में, जब मीर्ज़ा कामरान गजनी पहुँचा और वहाँ न ठहर सका तो वह भक्कर चला गया। मीर्ज़ा शाह हुसेन ने, जिसने अपनी पुत्री का विवाह उससे कर दिया था, उसकी सहायता करना निश्चय किया। पादशाह ने मीर्ज़ा यादगार नासिर की, जो भागना चाहता था, हत्या करा दी और बदख़्शाँ विजय हेतु प्रस्थान किया। सुलेमान मीर्ज़ा ने युद्ध किया किन्तु पराजित हो गया। कामरान मीर्ज़ा ने उनकी अनुपस्थिति में पहुँच कर काबुल पर अधिकार जमा लिया और (४५०) सम्मानित बेगमों एव लोक तथा परलोक के शाहज़ादे को बन्दी बना लिया।

पादशाह ने बदख़्शाँ का राज्य मीर्ज़ा हिन्दाल से लेकर मीर्ज़ा सुलेमान को प्रदान कर दिया और उसके नाम से फरमान लिख दिया। वह राज्य उसे सौप कर वे शीघ्रातिशीघ्र काबुल की ओर रवाना हुए। मीर्ज़ा कामरान अपनी सेना की पराजय उपरान्त काबुल के किले में बन्द हो गया। जब वह बहुत परेशान हो गया तो उसने निष्ठुरता के कारण कई बार कहा कि, 'शाहज़ादे को कगूर पर जहाँ तोप तथा बन्दूक के गोले पहुँच रहे है, बिठाल दिया जाय।' माहम अनका ने अपने आपको आफत के बाणो की ढाल बना लिया।

शेर

'यदि ससार भर की तलवारें अपने स्थान से चले,
तो जब तक ईश्वर नही चाहता एक नस नही कट सकती।'

सरदारो तथा अमीरो ने इस सघर्ष के कारण षड्यन्त्र में वृद्धि कर दी। कभी वे इस ओर और कभी उस ओर चले जाते थे। दोनो ओर से लोग मारे जाते थे। मीर्ज़ा क़िले में छेद करवाकर

१ 'बे जग गिरिफ़्त मुल्के काबुल अज़ वे' بی جنگ گرفت ملک کابل از وی ।

एक अपरिचित वेश में बाहर निकला। हाजी मुहम्मद खा, जो एक सेना सहित उसका पीछा करने के लिए नियुक्त हुआ था, उसके पास पहुँच गया। मीर्जा ने उससे कहा कि, "क्या मैंने तेरे पिता बाबा कश्का की हत्या की है?" हाजी मुहम्मद खा, जो कि बडा पुराना सिपाही एव सेवक था, उपेक्षा करके लौट गया। शाहजादा कुशलतापूर्वक पादशाह की सेवा म पहुँच गया। अब्रा सम्पूर्ण की ओर वापस आ गया।

शेर

'ईश्वर करे तू १००० वर्ष रहे, और फिर १,००० वर्ष और
कि तेरे दीर्घायु होने में सहस्रों लाभ हैं।'

मीर्जा कामरान का अंधा बनाया जाना

मीर्जा कामरान ने बल्ख के हाकिम पीर मुहम्मद खा के पास शरण ली। उससे सहायता (४५१) लेकर बदख्शाँ के कुछ प्रदेश युद्ध किए बिना सुलैमान मीर्जा एव उसके पुत्र इबराहीम मीर्जा से छीन लिये। कराचा खा, जिसने उचित सेवाएँ सम्पन्न की थी, अन्य लोभी अमीरों के साथ पादशाह से ऐसी आशायें करने लगा जिसे वे पूरी न कर सकते थे। क्योंकि उन्हे अपने नीच विचारों में सफलता न मिली अत वे बदख्शाँ की ओर चल दिये। उन थोडे से वर्षों में काबुल दुलहिन के छपरखट की भूमि के समान अस्थिर एव कम्पित रहा। किसी व्यग्य करने वाले ने इस विषय में कहा —

शेर

'काबुल का किला जो ऊँचाई में सातवें आकाश से भी बढकर था,
उस चील[1] के समान था जो ६ मास नर तथा ६ मास मादा रहती है।'

कई बार ऐसा हुआ कि मीर्जा कामरान पादशाह की सेवा में पहुँचा और उनके प्रति अभिवादन किया। पादशाह ने अपनी स्वाभाविक उदारता के कारण उसके अपराधों को क्षमा कर दिया और उसकी ओर से अपने हृदय को साफ कर लिया। एक बार जब उसने मक्का चले जाने की अनुमति ले ली थी तो हजरत पादशाह ने उसे बदख्शाँ की विलायत प्रदान कर दी और स्वय बल्ख पहुँच कर पीर मुहम्मद खा तथा अब्दुल अजीज खा वल्द अब्दुल्लाह खा ऊजबेक से घोर युद्ध किया और उसे पराजित कर दिया। षड्यन्त्रकारी अमीरों के पारस्परिक षड्यन्त्र एव मीर्जा कामरान के भय से वे लौट कर काबुल पहुँचे। मीर्जा कामरान ने पुन विश्वासघात किया। दोनों ओर के अविश्वासी सरदारों ने कृतघ्नता की प्रथाओं का पालन करते हुए अत्यधिक युद्ध एव सघर्ष किया। अन्ततोगत्वा वह इस्लीम शाह के पास पहुँचा एव निराश होकर लौट आया और पादशाह के हाथों सुल्तान आदम गक्खर द्वारा परहाला में बन्दी बना लिया गया। उन षड्यन्त्रों के बावजूद उसकी हत्या न कराई गई किन्तु उसके नेत्रों का प्रकाश ले लिया गया और उसे मक्का जाने (४५२) की अनुमति दे दी गई। वह चार हज द्वारा सम्मानित हुआ और (इस प्रकार) अपनी कुकृतियों का बदला चुका दिया। उसकी वहीं मृत्यु हो गई।

१ इस पक्षी के विषय में किसी भी ग्रथ में कोई उल्लेख नहीं मिलता।

पद्य

'वचन के उद्यान में कदापि किसी घास ने वचन पूरा न किया,
कभी आकाश के निशाने से कोई बाण न चूका।
समय के दर्जी ने कभी भी किसी के लिये,
कोई ऐसा पीराहन[1] नहीं सिया जिसे क़बा[2] न बना दिया हो।[3]
युग ने कभी कोई ऐसा सिक्का नहीं दिया जिसे बदल न दिया हो,
समय ने कभी कोई ऐसा जुआ न खेला जिसमें विश्वासघात न किया हो।
आकाश ने सूर्य के नीचे कुशलतापूर्वक किसे बिठाया,
जिसे चमकते हुए उजाले के समान शीघ्र समाप्त न कर दिया हो।
ख़ाक़ानी[4]! संसार के नेत्रों में धूल डाल,
कि उसने तेरे नेत्रों में पीडा देखी और दवा न की।'

मौलाना क़ासिम काही ने इस तारीख़ की रचना की

क़ितआ

'कामरान ऐसा पादशाह था,
जिसके समान कोई भी पादशाही-योग्य न था।
गया वह काबुल से काबा और वहाँ,
प्राण ईश्वर को दे दिए और शरीर मिट्टी को।'

उसकी तारीख़ की 'काही' ने इस प्रकार रचना की,
'कामरान पादशाह काबे में मर गया।' ~

बैसी नामक कवि ने यह रचना की

क़ितआ

'कामरान शाह, प्रतिष्ठित पादशाह,
जिसने सल्तनत में सातवें आकाश तक सिर उठा लिया।
वह काबा का चार वर्ष मुजाविर[5] रहा,
संसार के बंधनों से अपना हृदय पूर्णतः मुक्त कर लिया।
(४५३) चौथे हज को कर लेने के उपरान्त,
हज के वस्त्र में उसने अपने स्वामी[6] को प्राण त्याग दिये।

१ कुर्ता, जिसका आगे का भाग सिया रहता है।
२ चोग़ा जिसका आगे का भाग खुला रहता है।
३ इस शेर का तात्पर्य यह है कि समय के दर्जी ने कभी कोई ऐसा वस्त्र न सिया जिसे फाड़ न डाला हो।
४ अफ़ज़लुद्दीन इबराहीम इब्न अली शीरवानी ख़ाक़ानी फ़ारसी का बड़ा प्रसिद्ध कवि हुआ है। जहाँ तक फ़ारसी क़सीदों की रचना का सम्बन्ध है उसे फ़ारसी कवियों में सर्व श्रेष्ठ समझा जाता है। उसकी रचना में तुहफ़तुल एराक़ैन नामक काव्य भी बड़ा प्रसिद्ध है। तबरेज़ में उसकी ५८२ हि० (११८६ ई०) में मृत्यु हो गई।
५ किसी पवित्र स्थान, रौज़े इत्यादि का सेवक।
६ ईश्वर।

एक रात में जब 'वैसी' सो गया,
उसने कृपा प्रदर्शित की और अपनी ओर बुलाया।
कहा उसने, यदि मेरी मृत्यु के विषय में पूछें,
तो कह दो दिवगत शाह मक्का में रह गया।'

मीर्ज़ा कामरान बड़ा ही वीर, साहसी, दानी एव हँसमुख पादशाह था। उसके धार्मिक विश्वास बडे पवित्र थे। वह सर्वदा आलिमों एव विद्वानों की गोष्ठी में रहा करता था। उसके शेर बडे प्रसिद्ध हैं। कुछ समय तक वह इतनी कठोरता से पवित्र जीवन व्यतीत करता रहा कि उसने अपने राज्य से अगूरों को नष्ट करने का आदेश दे दिया। तदुपरान्त वह इतनी अधिक मदिरा पीने लगा कि खुमार के कष्ट भी न सहता था[1]। अन्त में वह तोबा करके एव पवित्र होकर ससार से विदा हुआ। यदि अन्त अच्छा हो तो सभी अच्छा है। यह घटना ९६४ हि० (१५५६-५७ ई०) में घटी।

मीर्ज़ा अस्करी

मीर्ज़ा अस्करी काबुल के लिए अन्तिम युद्ध में कराचा खा की हत्या उपरान्त पादशाह के लश्कर वालों द्वारा बन्दी बना लिया गया। ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद दीवान ने उसे बदख्शाँ ले जाकर मीर्ज़ा सुलेमान को सौंप दिया। कुछ समय तक वह बन्दी रहा। तदुपरान्त मुक्त कर दिया गया। मीर्ज़ा सुलेमान ने उसे बल्ख की ओर भेज दिया ताकि वह वहाँ से मक्का मदीना की ओर चला जाय। जब वह उस घाटी में, जो शाम[2] तथा मक्का के मध्य में स्थित है, पहुँचा तो अपने उद्देश्य को प्राप्त न करके उस रेगिस्तान मे वास्तविक काबा को जहाँ सभी को जाना है, चला गया[3]। इस घटना की तारीख यह है

'अस्करी पादशाह दरिया दिल[4]।'

शेर

'क्यों तू अपनी अगुली को ससार के रक्त से रँगता है,
कारण कि यह मधु है, घातक विष से मिला हुआ।

मीर्ज़ा हिन्दाल

(४५४) मीर्ज़ा हिन्दाल का अन्त इस प्रकार हुआ —

जब मीर्ज़ा कामरान अन्तिम बार पराजित होकर अफ़ग़ानों के पास शरण हेतु चला गया और हाजी मुहम्मद खा कोकी की अत्यधिक अपराधों के कारण हत्या करा दी गई तो एक रात में मीर्ज़ा कामरान ने उसके शिविर पर छापा मारा। दुर्भाग्यवश मीर्ज़ा हिन्दाल के घातक बाण

१ अर्थात् नशा उतरने भी न पाता था कि वह पुन मदिरा पी लेता था।
२ सीरिया।
३ मृत्यु को प्राप्त हो गया।
४ 'उदार अस्करी पादशाह'।

लगा और उसने शहादत का शरबत चख लिया। यह घटना ९५८ हि० (१५५१ ई०) के अक्षरों से निकलती है।

क़ितआ

'जब मृत्यु ने संसार की सेनाओं से रात्रि में छापा मारा,
आकाश का उच्चतम स्थान रक्त से उषा के समान लाल हो गया,
हिन्दाल मीर्ज़ा, विश्व विजय करने वाला, संसार से विदा हो गया,
संसार को शाह हुमायूं के पास छोड़ गया।
यह आकाश के शयनागार के लिए मोमबत्ती के समान था,
उस उत्तम नख़्ल[1] के शरीर का पौधा।
बुद्धि ने उसकी मृत्यु की तारीख़ ढूंढ़ी, और मैंने कहा,
रात्रि के छापे के कारण एक दीप बुझ गया।'

मीर्ज़ा अमानी ने यह रचना की

क़ितआ

'शाह हिन्दाल सौन्दर्य की वाटिका का सरो,
जब इस कष्ट-दायक संसार से विदा हो गया।
रोती हुई कुमरी ने तारीख़ कही,
राज्य की वाटिका से एक सरो निकल गया।'

मौलाना हसन अली ख़राश ने यह लिखा

रुबाई

(४५५) 'हिन्दाल मुहम्मद शुभ उपाधि का बादशाह,
अचानक रात के मध्य में मृत्यु को प्राप्त हो गया।
शबख़ून[2] जो उसकी मृत्यु का कारण बना,
उसकी शहादत की तारीख़ शबख़ून से माँग।'

पादशाह ने मीर्ज़ा हिन्दाल का लश्कर एवं परिजन संसार को शरण प्रदान करने वाले शाहज़ादे को प्रदान कर दिये। ग़ज़नी तथा उसके अधीनस्थ अक्ताएँ उनके अधीन कर दीं। अफ़ग़ान लोग मीर्ज़ा कामरान की अधिक रक्षा न कर सके। मीर्ज़ा (कामरान) इस्लीम शाह[3] के पास पहुँचा। इस बीच में परोक्ष से यह घटना घटी —

इस्लीम शाह की मृत्यु तथा हिन्दुस्तान की अव्यवस्था एवं वहाँ के शासन प्रबन्ध के छिन्न भिन्न हो जाने के कारण पादशाह ने हिन्दुस्तान-विजय का संकल्प कर लिया। इसी बीच में षड्यन्त्रकारियों ने, जो ईर्ष्यालु एवं उपद्रवी होते हैं, बैराम ख़ाँ की निष्ठा की मूर्ति को पादशाह के अन्तःकरण के दर्पण में उलटा दर्शा कर उसे कृतघ्न प्रकट किया। इस कारण उन्होंने कन्धार

१ खजूर का वृक्ष।
२ रात्रि का छापा।
३ इस्लाम शाह।

की ओर आक्रमण किया। बैराम खा स्वय स्वागतार्थ उपस्थित हुआ और उचित सेवाएँ सम्पन्न की। स्वार्थियों का राज्य के प्रति षड्यत्र प्रकट हो गया।

हुमायू की मौलाना जैनुद्दीन महमूद कमानगर से भेंट

इस बार पादशाह को बैराम खा द्वारा नतीजतुलऔलिया[1], सलालतुल असफिया[2] खत्मे मशायखे नक्शबन्दिया[3] मौलाना जैनुद्दीन महमूद कमानगर[4] से भेंट करने का अवसर मिला। इस घटना का सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है मौलवी वहदा[5] निवासी थे। बहदा खुरासान के अधीनस्थ एक ग्राम है। वे अनेक पवित्र मशायख के साथ रह चुके थे, विशेष रूप से मौलवी जामी एव (४५६) मौलवी अब्दुल गफूर लारी के साथ जो अपना जीवन निर्वाह शिक्षा देकर तथा सूरत कशी[6] द्वारा करते थे।

बैराम खा उनका शिष्य हो गया और उनसे शिक्षा प्राप्त करने जाया करता था। कभी-कभी जब वह यूसुफ जुलैखा[7] इत्यादि में परिवर्तन[8] किया करता तो वे कहते, 'बैराम क्या करते हो? क्या अपने लिए ससार में कोई दूसरा यूसुफ जुलैखा तैयार करना चाहते हो[9]?" पादशाह ने हजरत मुहम्मद की आत्मा की शान्ति के लिए एक बहुत बडे भोज का आयोजन किया और आखुन्द[10] को आमत्रित किया। पादशाह ने स्वय आफताबा लिया और बैराम खा ने तश्त ताकि उनके हाथ पर जल डालें। इसी बीच में आखुन्द ने मीर सैयिद जमालुद्दीन महुद्दिस[11] के पौत्र हबीबुल्लाह की ओर सकेत करके कहा कि, 'जानते हो यह कौन है ' पादशाह विवश होकर आफताबा मीर के समक्ष ले गये। मीर ने बडी घबराहट में अपने हाथ पर आधा जल डलवा लिया। तदुपरान्त आखुन्द ने इच्छानुसार शान्तिपूर्वक अपने हाथ धोये।" इसी बीच में पादशाह ने पूँछा कि, "हाथ पर कितना जल डालना सुन्नत की दृष्टि[12] से उचित है?" उसने उत्तर दिया कि, "जितने से हाथ धुल जाय।" सभा के शेष लोगों के हाथ पर बैराम खा के उपरान्त महदी बिन कासिम खा के सम्बन्धी स्वर्गीय हुसेन खा ने जल डाला यहाँ तक कि भोजन समाप्त हो गया। पादशाह को उनकी गोष्ठी में बडा आनन्द आया और उन्होने इससे बडा लाभ उठाया। तदुपरान्त थोडे से सोने के सिक्के बैराम खा के हाथ भेजे कि यह उपहार स्वरूप है। क्योंकि उनकी

१ वलियों (सन्तों) के वशज।
२ सूफियों की सतान।
३ नक्शबन्दी मशायख, (सूफियों) की मुहर।
४ धनुष बनाने वाले।
५ एक हस्तलिपि में 'बहदाएन'।
६ इस शब्द का तात्पर्य स्पष्ट नहीं। सूरत कशी का अर्थ "चित्र बनाना" हो सकता है किन्तु यह अर्थ प्रसग में ठीक नहीं बैठता।
७ युसुफ जुलैखा नामक प्रसिद्ध फारसी काव्य।
८ 'गाहे गाहे कि दख्ल दर यूसुफ जुलैखा वगैर आं मी कर्द'।
९ यह वाक्य मूल में स्पष्ट नहीं।
१० गुरू, (मौलाना जैनुद्दीन महमूद कमानगर)।
११ हदीस के विद्वान्।
१२ हजरत मुहम्मद की प्रथा की दृष्टि से।

यह प्रथा न थी कि वह किसी का उपहार लें अत उन्होंने अत्यधिक सकोच किया और बडा असतोप प्रकट करते हुए उसे स्वीकार कर लिया। उसके मूल्य अनुसार धन तथा थोडा सा धन अपनी ओर से मिला कर कुछ धनुष पादशाह की सेवा में भेजे और कहलाया कि, "उपहार दोना ओर से होना चाहिये।"

कहा जाता है कि एक दिन बैराम खा उत्तम कश्मीरी शाल का एक वस्त्र बनवाकर (४५७) उनकी सेवा में ले गया। उन्होंने उसे हाथ में लेकर उसकी प्रशसा की और कहा, 'कितनी उत्तम वस्तु है।" बैराम खा ने कहा कि, "क्योंकि यह दरवेशों के योग्य है अत इसे मैं आपकी सेवा में भेंट करने लाया हूँ। उन्होंने अपनी दो अगुलियों से सकेत किया कि, 'मेरे पास ऐसे दो हैं। इसे किसी ऐसे को दे दो जो मझसे अधिक इसके योग्य हो।"

उनके बहुत से चमत्कार बताये जाते हैं। उनमें से कुछ मौलाना मुईन वाएज़ के पौत्र शेख मुईनुद्दीन ने, जो कुछ दिनो के लिए इस युग के खलीफा[1] के आदेशानुसार लाहौर मे काज़ी थे, एक पृथक् पुस्तक के रूप में लिखे हैं। उसने यह लिखा है कि, "बाण चलाने के अभ्यास के समय वे अपनी प्रथा के विरुद्ध रोज़ाना उस स्थान पर जाते और बाण चलाने की शिक्षा दिया करते थे। बैराम खा के जवानो को बाण चलाने की लिये प्रेरित किया करते थे कि सम्भवत किसी दिन उनके काम आ जाय। अन्ततोगत्वा माछीवारा के युद्ध मे अफ़गानो को जो प्रथम पराजय हुई वह बाण द्वारा हुई। सम्भवत वे इसी कारण आग्रह किया करते और उनका सकेत इसी ओर रहता था।

उनके चमत्कारो में से एक यह है कि, "जब बैराम खा कन्धार को अली कुली खा सीस्तानी के भाई बहादुर खा को सौंपकर काबुल पहुँचा और अपनी ओर से एक अत्याचारी तुर्कमान को नियुक्त कर गया तो लोग उसके अत्याचार की नाना प्रकार की शिकायते आखुन्द से करते थे। यहाँ तक कि वह रुग्ण हो गया और उसके अत्याचार से कुछ दिन के लिए लोग मुक्त हो गए। उसके समाचार नित्यप्रति आखुन्द की गोष्ठी में सुनाये जाते थे। यहाँ तक कि एक दिन एक ने कहा कि वह बिस्तर से उठ खडा हुआ। आखुन्द ने उसकी ओर देखकर कठोरतापूर्वक कहा कि, "सम्भवत वह कयामत की प्रात को उठेगा।" तीन-चार दिन उपरान्त वह पुन रुग्ण हो गया और उसके अत्याचार के अपमान से ससार को मुक्ति प्राप्त हो गई। उनका कथन है कि, 'तुर्क स्वप्न मे फ़िरिश्ता होता है और यदि वह मृत्यु की निद्रा सो जाय तो फ़िरिश्ते से भी बढ कर कुछ अन्य हो जाता है।

पद्य

(४५८) 'मैंने मध्याह्न में एक अत्याचारी को सोता हुआ पाया,
मैंने कहा यह षड्यन्त्र है। इसका सोता रहना अच्छा है।
जिसका सोता रहना, जागते रहने से अच्छा है,
ऐसे दुष्ट के लिए जीवित रहने से मर जाना अच्छा है।'

पादशाह कन्धार से लौटते समय यह चाहते थे कि उसे बैराम खा से लेकर मुनइम खा को दे दें। मुनइम खा ने निवेदन किया कि, "इस समय हिन्दुस्तान की विजय का मामला सामने है।

[1] अकबर।

हाकिमो के परिवर्तन के कारण सेना में विघ्न पड जायेगा। हिन्द-विजय उपरान्त जैसा उचित हो, किया जाय।" उन्होंने पुन कन्धार बैराम खा को और जमीनदावर बहादुर खा को प्रदान कर दिया।

हिन्दुस्तान-विजय हेतु प्रस्थान

काबुल पहुँचकर सेना की व्यवस्था एव अस्त्र शस्त्र की तैयारी करने लगे। जिल्हिज्जा ९६१ हि० (अक्तूबर-नवम्बर १५५४ ई०) में काबुल से सवार होकर हिन्दुस्तान की विजय हेतु रवाना हुए। इस किनए की रचना की गई जिससे दो प्रकार से तारीख निकलती है —

क़िता

"खुसरवे गाज़ी नसीरुद्दीन हुमायूँ शाह जो कि
पिछले बादशाहों से नि सन्देह बाजी ले गया।'
हिन्द विजय हेतु काबुल से चढाई की ओर हुआ,
प्रस्थान की तारीख का वर्ष 'नुह सद व शस्त व यक'[१]।"

परशावर की मजिल पर बैराम खा कन्धार से आकर सेवा में उपस्थित हुआ। निरतर यात्रा करते हुए उन्होंने सिंध नदी पार की। बैराम खा, खिज्र ख्वाजा खा तरदी बेग खा एव इस्कन्दर सुल्तान ऊज़बक सेना के अग्र भाग में नियुक्त हुए और आगे आगे यात्रा करने लगे।

हिन्दुस्तान विजय

(४५९) रोहतास के किले का हाकिम तातार खा कासी किला खाली करके भाग गया। आदम गक्कर इस बार उपस्थित न हुआ। जब वे लाहौर पहुँचे तो लाहौर के अफगान भी मुकाबला न कर सके और छिन भिन हो गए। अग्र भाग के अमीर जलधर एव सरहिन्द[२] की ओर रवाना हो गए। वह प्रदेश बिना किसी सघर्ष के अधिकार मे आ गया। शहबाज खा एव नसीर खा अफगान ने दीपालपुर के समीप शाह अबुल मआली एव अली कुली खा शैबानी से, जो बाद मे खान जमान बनाया गया, युद्ध किया किन्तु पराजित हो गय। मुगुलो का आतक इतना व्यापक था कि लाखो अफगान दस पगडी बाँधे हुए अश्वारोहियों को देखते ही, चाह व लाहौर निवासी ही क्या न हो, भाग खडे होत थे और पीछे न देखते थे। शाही सेना के सिंध नदी पार करने के पूर्व सिकन्दर अफगान सूर ने इब्राहीम सूर पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया था और इटावा से अदला पर आक्रमण करना चाहता था किन्तु अचानक समाचार प्राप्त हुए कि पादशाह न सिंध नदी पार कर ली। जहाँ-जहाँ अफगान थे, वे अपने परिवार की रक्षा की चिन्ता करने लगे। काई एक दूसरे का न पूछता था। प्रत्येक अपने-अपने कार्य मे व्यस्त था। उन्हे विश्वास था कि इस्लीम शाह ही केवल मुगुलो का मुकाबला कर सकता था, किसी अन्य में इतनी शक्ति नही, किन्तु इसके बावजूद सिकन्दर ने जलधर के क्षेत्र मे सर्वप्रथम तातार खा कासी, हबीब खा एव नसीब खा तुगूची को तीस हज़ार अश्वारोहिया सहित पादशाह की सेना से जो उस क्षेत्र में एकत्र हो गई थी, युद्ध हेतु नियुक्त किए और स्वय पीछ से रवाना हुआ।

१ 'नुह सद व शस्त व यक' के अक्षरों से ९६१ निकलते है और इसका अर्थ भी ९६१ है।
२ प्रकाशित पोथी में लाहौर, थानेश्वर, जलधर एव सरहिन्द है किंतु वे लोग लाहौर ही से रवाना हुवे थे अत शुद्ध रूप में अनुवाद प्रस्तुत किया गया है।

चगताई अमीरो ने सतलज नदी पार की। अफगानो ने पीछा किया। सूर्यास्त के समय दोनों सेनाओं की मुठभेड़ हुई और घोर युद्ध होने लगा। मुगुल लोग धनुष हाथ में लेकर जो वाण (४६०) भी चिल्ले से छोड़ते थे वह शत्रुओं में से प्रत्येक के कान में मृत्यु का सदेश पहुँचाता था। अफगान लोग जिनके अस्त्र-शस्त्र इतने उत्तम न थे, एक उजड़े हुए ग्राम में प्रविष्ट हो गए और वहाँ शरण ले ली। जैसे ही मगुल सेना दृष्टिगत हुई, उन्होंने छप्पर मे आग लगा दी। इसका परिणाम उल्टा ही निकला और यह दशा हो गई कि अफगान लोग रोशनी में थे और मुगुल अधेरे में। वे अफगानों को वाणो से बेधने लगे। उन्होंने चीत्कार करना प्रारम्भ कर दिया। प्रत्येक कोने से भागो-भागो का शोर उठने लगा। बडी ही सुगमता से विजय प्राप्त हो गई और मुगुल बहुत कम सख्या में नष्ट हुए और घोड, हाथी एव अनुमान से अधिक सामग्री पादशाही लश्कर के हाथ आ गई। पादशाह को यह समाचार लाहौर में प्राप्त हुए। समस्त पजाब, सरहिन्द एव हिसार फीरोजा विजय हो गये। वे शीघ्रातिशीघ्र बढते हुए देहली के समीप पहुचे। सिकन्दर सूर ने ८० हजार अश्वारोहियो, भारी भरकम हाथियो, तोपखाने एव अफगानो की बहुत बडी सख्या प्रत्येक दिशा से अपने पास एकत्र की और सरहिन्द पहुँचा। उसने अपने शिविर के चारो ओर शर शाह की प्रथानुसार खाई खुदवाकर गढबन्दी कर ली। पादशाही अमीरो न एकत्र होकर सरहिन्द नगर की प्रतिरक्षा कर ली और यथा-सम्भव पौरुष प्रदर्शित करने लगे। प्रार्थनापत्र लाहौर भेजकर वे पादशाह के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे। पादशाह शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए सरहिन्द पहुँचे। नित्यप्रति दोनो ओर के योद्धाओं में भीषण युद्ध होता था। कुछ समय इसी प्रकार व्यतीत हो गया। एक दिन शाहजादये आलमियान के पहरे की बारी थी। उन्होने पक्तियाँ सुव्यवस्थित करके युद्ध किया। एक ओर से शाहजादये आलम पनाह ने और दूसरी ओर से बैराम खा, सिकन्दर (४६१) खा, अब्दुल्लाह खा ऊजबेक, शाह अबुल मआली, अली कुली खा एव बहादुर खा ने वीरता-पूर्वक आक्रमण किए। अफगानो ने भी यथा-सम्भव वीरता प्रदर्शित की किन्तु भाग्य ने, जो उनसे फिर चुका था, उनका साथ न दिया। घोर युद्ध के उपरान्त सिकन्दर भाग खडा हुआ। विजयी सेनाओं ने पीछा किया और मार्ग में बहुत से अफगानो की हत्या करके उनकी लाशो के ढेर लगा दिये। अपार धन सम्पत्ति एव अगणित हाथी, घोडे अधिकार में करके लौट गये। सिरो का मीनार बनवाया गया। बैराम खा ने उस स्थान का नाम सिरे मज़िल रखा जो अब तक वर्त्तमान है। इस प्रकार की अन्य बहुत सी स्मृतियाँ वर्त्तमान हैं और रहेंगी।

मसनवी

'वह मार्ग जिसपर तू धूल के वह कण देखता है
तू देखता है, सुलेमान[१] की धूल, वहाँ वायु द्वारा लाई हुई।'

किसी अन्य ने कहा है

शेर

'धूल का प्रत्येक कण जिसे बवडर ले जाता है,
सम्भव है वह फरीदूं हो अथवा कैकुबाद।'

१ एक प्रतापी पैगम्बर।

इस विजय की तारीख "शमशीरे हुमायूँ[1]" के अक्षरों से निकलती है। इस प्रकार यह रचना की गई :

रुबाई

"बुद्धि के मुंशी ने शुभ मुहूर्त की इच्छा की,
संतुलित मस्तिष्क से रचना का सौन्दर्य मांगा।
उसने हिन्दुस्तान विजय का जो हाल लिखा,
तो तारीख 'शमशीरे हुमायूँ' से मांगी।"

सिकन्दर सिवालिक पर्वत की ओर भाग गया। सिकन्दर खां उज़बेक देहली की ओर रवाना हुआ। उत्कृष्ट लश्कर ने सामाना के मार्ग से हिन्दुस्तान की राजधानी की ओर प्रस्थान किया। अफ़ग़ानों का एक बहुत बड़ा समूह, जो देहली में था, बड़ी कठिनाई से अपने प्राण लेकर भाग सका। जिस प्रकार गौरय्यों के झुंड में पत्थर फेंक देने से वे उड़ जाती हैं उसी प्रकार प्रत्येक यह कहता था कि, "जो अपने सिर को लेकर भाग जाये, वह निःसन्देह बड़ा भाग्यशाली है।" (४६२) "वह दिन जब कि लोग अपने भाई, माता, पिता, पत्नी एवं पुत्र से भाग जायेंगे" नामक आयत का अर्थ स्पष्ट हो गया।

देहली पर अधिकार

शाह अबुल मआली सिकन्दर का पीछा करने के लिए नियुक्त हुआ। रमज़ान ९६२ हि० (जुलाई-अगस्त १५५५ ई०) में देहली हज़रत पादशाह के ऐश्वर्य एवं वैभव का केन्द्र बनी। हिन्दुस्तान के अधिकांश प्रदेशों को पुनः पादशाह के खुत्बे तथा सिक्के द्वारा शोभा प्राप्त हो गई। यह सफलता किसी पादशाह को भी इसके पूर्व न प्राप्त हुई थी कि पराजय उपरान्त वह अपना राज्य पुनः प्राप्त कर लेता। इसके विपरीत यहाँ ईश्वर की शक्ति का निरीक्षण किया गया।

इस साल पादशाह ने अपनी अधिकांश विलायतें प्राणों की बलि देने वाले दासों को बाँट दीं। मुस्तफ़ाबाद के परगने को, जिसका राजस्व ३०-४० तन्के है, हज़रत मुहम्मद की आत्मा की शान्ति हेतु दान-पुण्य के लिए सुरक्षित कर दिया। हिसार फ़ीरोज़ा शाहज़ादे को उसकी वीरता के पुरस्कार स्वरूप उसी प्रकार प्रदान किया जिस प्रकार बाबर पादशाह ने अपनी विजय के प्रारम्भ में मुहम्मद हुमायूँ पादशाह को इसे इनाम में दे दिया था। समस्त पंजाब शाह अबुल मआली को सौंप दिया तथा इस्कन्दर अफ़ग़ान के दमन हेतु नियुक्त किया। इस्कन्दर उसका मुकाबला न कर सका और उत्तरी पर्वत में शरण हेतु भाग गया। शाह अबुल मआली उच्च सम्मान प्राप्त करके लाहौर में बड़े वैभव से जीवन व्यतीत करने लगा। इस कारण उसके मस्तिष्क के घोंसले में अभिमान के कौवे ने घोंसला बना लिया[2], यहाँ तक कि जन्नत आशियानी के निधन उपरान्त उसने नीच विचारों एवं दुष्टताओं का प्रदर्शन किया। ईश्वर ने चाहा तो इसका उल्लेख शीघ्र ही किया जायेगा।

क्योंकि शाह अबुल मआली उन अमीरों के प्रति जो कुमक हेतु नियुक्त हुए थे, दुर्व्यवहार (४६३) करने लगा था और उनकी अक्ताओं अपितु शाही ख़ज़ानों एवं ख़ाल्से के परगनों में भी

१ हुमायूँ की तलवार।
२ अभिमानी हो गया।

चगताई अमीरो ने सतलज नदी पार की। अफ़गानों ने पीछा किया। सूर्यास्त के समय दोनो सेनाओं की मुठभेड हुई और घोर युद्ध होने लगा। मुगुल लोग धनुष हाथ में लेकर जो वाण (४६०) भी चिल्ले से छोडते थे वह शत्रुओं में से प्रत्येक के कान में मृत्यु का संदेश पहुँचाता था। अफगान लोग जिनके अस्त्र-शस्त्र इतने उत्तम न थे, एक उजडे हुए ग्राम में प्रविष्ट हो गए और वहाँ शरण ले ली। जैसे ही मगुल सेना दृष्टिगत हुई, उन्होंने छप्पर में आग लगा दी। इसका परिणाम उलटा ही निकला और यह दशा हो गई कि अफगान लोग रोशनी में थे और मुगुल अंधेरे में। वे अफगानो को बाणों से वेधने लगे। उन्होंने चीत्कार करना प्रारम्भ कर दिया। प्रत्येक कोने से भागो-भागो का शोर उठने लगा। बडी ही सुगमता से विजय प्राप्त हो गई और मुगुल बहुत कम संख्या में नष्ट हुए और घोडे, हाथी एवं अनुमान से अधिक सामग्री पादशाही लश्कर के हाथ आ गई। पादशाह को यह समाचार लाहौर में प्राप्त हुए। समस्त पंजाब, सरहिन्द एवं हिसार फ़ीरोज़ा विजय हो गये। वे शीघ्रातिशीघ्र बढ़ते हुए देहली के समीप पहुंचे। सिकन्दर सूर ने ८० हज़ार अश्वारोहियों, भारी भरकम हाथियों, तोपख़ाने एवं अफ़गानों की बहुत बडी संख्या प्रत्येक दिशा से अपने पास एकत्र की और सरहिन्द पहुँचा। उसने अपने शिविर के चारो ओर शेर शाह की प्रथानुसार खाई खुदवाकर गढ़बन्दी कर ली। पादशाही अमीरो ने एकत्र होकर सरहिन्द नगर की प्रतिरक्षा कर ली और यथा-सम्भव पौरुष प्रदर्शित करने लगे। प्रार्थनापत्र लाहौर भेजकर वे पादशाह के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे। पादशाह शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए सरहिन्द पहुँचे। नित्यप्रति दोनो ओर के योद्धाओ में भीषण युद्ध होता था। कुछ समय इसी प्रकार व्यतीत हो गया। एक दिन शाहज़ादये आलमियान के पहरे की बारी थी। उन्होंने पक्तियाँ सुव्यवस्थित करके युद्ध किया। एक ओर से शाहज़ादये आलम पनाह ने और दूसरी ओर से बैराम खां, सिकन्दर (४६१) खा, अब्दुल्लाह खा ऊज़बेक शाह अबुल मआली, अली कुली खा एवं बहादुर खा ने वीरता-पूर्वक आक्रमण किए। अफगानो ने भी यथा-सम्भव वीरता प्रदर्शित की किन्तु भाग्य ने, जो उनसे फिर चुका था, उनका साथ न दिया। घोर युद्ध के उपरान्त सिकन्दर भाग खडा हुआ। विजयी सेनाओं ने पीछा किया और मार्ग में बहुत से अफगानो की हत्या करके उनकी लाशो के ढेर लगा दिये। अपार धन सम्पत्ति एवं अगणित हाथी, घोडे अधिकार में करके लौट गये। सिरों का मीनार बनवाया गया। बैराम खा ने उस स्थान का नाम सिरे मंजिल रक्खा जो अब तक वर्तमान है। इस प्रकार की अन्य बहुत सी स्मृतियाँ वर्तमान हैं और रहेंगी।

मसनवी

'वह मार्ग जिसपर तू धूल के वह कण देखता है,
तू देखता है, सुलेमान[1] की धूल, वहाँ वायु द्वारा लाई हुई।'

किसी अन्य ने कहा है

शेर

'धूल का प्रत्येक कण जिसे बवडर ले जाता है,
सम्भव है वह फरीदूं हो अथवा कैकुबाद।'

१ एक प्रतापी पैग़म्बर।

इस विजय की तारीख "शमशीरे हुमायूँ[1]" के अक्षरों से निकलती है। इस प्रकार यह रचना की गई :

रुबाई

"बुद्धि के मुंशी ने शुभ मुहूर्त की इच्छा की,
संतुलित मस्तिष्क से रचना का सौन्दर्य माँगा।
उसने हिन्दुस्तान विजय का जो हाल लिखा,
तो तारीख 'शमशीरे हुमायूँ' से माँगी।"

सिकन्दर सिवालिक पर्वत की ओर भाग गया। सिकन्दर खा ऊजबेक देहली की ओर रवाना हुआ। उत्कृष्ट लश्कर ने सामाना के मार्ग से हिन्दुस्तान की राजधानी की ओर प्रस्थान किया। अफगानों का एक बहुत बडा समूह, जो देहली में था, बडी कठिनाई से अपने प्राण लेकर भाग सका। जिस प्रकार गौरय्यों के झुड मे पत्थर फेक देने से वे उड जाती हैं उसी प्रकार प्रत्येक यह कहता था कि, "जो अपने सिर को लेकर भाग जाये, वह नि सन्देह बडा भाग्यशाली है।" (४६२) "वह दिन जब कि लोग अपने भाई, माता, पिता, पत्नी एव पुत्र से भाग जायेंगे" नामक आयत का अर्थ स्पष्ट हो गया।

देहली पर अधिकार

शाह अबुल मआली सिकन्दर का पीछा करने के लिए नियुक्त हुआ। रमजान ९६२ हि० (जुलाई-अगस्त १५५५ ई०) में देहली हजरत पादशाह के ऐश्वर्य एव वैभव का केन्द्र बनी। हिन्दुस्तान के अधिकाश प्रदेशों को पुन पादशाह के खुत्बे तथा सिक्के द्वारा शोभा प्राप्त हो गई। यह सफलता किसी पादशाह को भी इसके पूर्व न प्राप्त हुई थी कि पराजय उपरान्त वह अपना राज्य पुन प्राप्त कर लेता। इसके विपरीत यहाँ ईश्वर की शक्ति का निरीक्षण किया गया।

इस साल पादशाह ने अपनी अधिकाश विलायतें प्राणों की बलि देने वाले दासों को बाँट दीं। मुस्तफाबाद के परगने को, जिसका राजस्व ३०-४० तन्के है, हजरत मुहम्मद की आत्मा की शान्ति हेतु दान-पुण्य के लिए सुरक्षित कर दिया। हिसार फीरोजा शाहज़ादे का उसकी वीरता के पुरस्कार स्वरूप उसी प्रकार प्रदान किया जिस प्रकार बाबर पादशाह ने अपनी विजय के प्रारम्भ में मुहम्मद हुमायूँ पादशाह को इसे इनाम मे दे दिया था। समस्त पजाब शाह अबुल मआली को सौंप दिया तथा इस्कन्दर अफग़ान के दमन हेतु नियुक्त किया। इस्कन्दर उसका मुकाबला न कर सका और उत्तरी पर्वत में शरण हेतु भाग गया। शाह अबुल मआली उच्च सम्मान प्राप्त करके लाहौर में बडे वैभव से जीवन व्यतीत करने लगा। इस कारण उसके मस्तिष्क के घोसले में अभिमान के कौवे ने घोसला बना लिया[2], यहाँ तक कि जन्नत आशियानी के निधन उपरान्त उसने नीच विचारों एव दुष्टताओं का प्रदर्शन किया। ईश्वर न चाहा तो इसका उल्लेख शीघ्र ही किया जायेगा।

क्योंकि शाह अबुल मआली उन अमीरों के प्रति जो कुमक हेतु नियुक्त हुए थे, दुर्व्यवहार (४६३) करने लगा था और उनकी अक्ताओं अपितु शाही खज़ानों एव खाल्से के परगनों में भी

१ हुमायूँ की तलवार।
२ अभिमानी हो गया।

हस्तक्षेप करने लगा था अत अमीर लोग हताश हो गए। सिकन्दर नित्यप्रति शक्ति प्राप्त करने लगा। बैराम खां को शाहजादे का अतालीक तथा इस्कन्दर से युद्ध हेतु नियुक्त किया गया। शाह अबुल मआली हिसार फीरोज़ा में नियुक्त हुआ।

अभी उसने प्रस्थान भी न किया था कि ख्वाजा खान गुग आगरा में, अली कुली खां मेरठ एव सम्भल मे, कम्बर दीवाना बदायूं में तथा हैदर मुहम्मद खा आख्ताबगी ब्याना मे नियुक्त हुए। हैदर मुहम्मद खा इबराहीम सूर के पिता गाजी खा को ब्याना के किले में कुछ समय तक घेरे रहा। क्योंकि अफगानो का सौभाग्य उनकी बुद्धि के समान पतनोन्मुख था, अत अवरोध के पूर्व तथा उसके उपरान्त अनुभवी परामर्शदाताओ ने उससे रणथम्बोर की ओर और वहाँ से गुजरात भाग जाने के लिए कहा किन्तु उसने कोई ध्यान न दिया। उसने यह बात स्वीकार न की तथा मछली के समान जाल में फँस गया।

शेर

'ईश्वर जिधर चाहता है, नौका ले जाता है,
चाहे मल्लाह अपने शरीर के वस्त्र ही क्यो न फाड डाले।'

ब्याना के किले के ज़मीदारो ने क्षमा याचना करके हैदर मुहम्मद खा के प्रति अभिवादन किया। प्रतिज्ञा तथा वचन को शपथ द्वारा दृढ बनाया। गाज़ी खा को उसके परिवार सहित किले के नीचे उतार कर उसके लिए सुरक्षित स्थान निश्चित कर दिया। दूसरे दिन गडी हुई धन सम्पत्ति एव खज़ाने की पूँछ ताँछ हुई। उसने[1] जवान से लेकर दूध पीते बालक तक की हत्या करा दी और सिरो को पादशाह के पास भिजवा दिया। पादशाह को यह बात पसन्द न आई अत उन्होने मीर शिहाबुद्दीन नीशापुरी बख्शी का जिसकी उपाधि शिहाबुद्दीन अहमद खा (४६४) थी, गाजी खा की धन-सम्पत्ति की जाँच हेतु ब्याना भेज दिया। हैदर मुहम्मद खा ने उत्तम रत्नो को छिपा लिया और अन्य वस्तुएँ दिखा दी।

कम्बर दीवाना ने सम्भल के समीप बहुत बडी सेना एकत्र कर ली और वह कहा करता था कि, "सम्बल, सम्बल की वजह[2] मे है। अली कुली खा का उदाहरण यही है कि ग्राम किसी का और वृक्ष किसी के।"

अली कुली खा के सम्बल पहुँचने के पूर्व वह बदायूं चला गया। वहाँ से वह कान्त व गोला[3] के क्षेत्र में पहुँचा और रुवन खा अफगान से युद्ध करके विजय प्राप्त कर ली। मल्लावां[4] कस्बे तक के स्थान अपने अधिकार में कर लिये। पुन अफगानो द्वारा पराजित हो गया और उस किले में बहुत से लोगों की हत्या करा दी तथा बदायूं पहुँचा और अत्याचार एव निष्ठुरता प्रारम्भ

१ हैदर मुहम्मद खाँ ने।
२ वेतन अथवा वृत्ति।
३ आधुनिक शाहजहांपुर।
४ रैंकिंग इस स्थान के विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं बता सका है। उसका विचार है कि यह पजाब का एक पहाडी किला मलाऊ है किन्तु मल्लावा उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले में है। हरदोई तथा शाहजहाँपुर दोनों पास-पास ही हैं।

कर दी। यद्यपि अली कुली खा ने उसे अपने पास बुलाने का बडा प्रयत्न किया किन्तु उसका सिर नीचे न झुका। वह कहा करता था कि, "मै पादशाह का तुझसे अधिक विश्वासपात्र हूँ। मेरा यह सिर तथा पादशाही मुकुट जुडवाँ बालक के समान है।" अली कुली खा ने बदायूँ पहुँच कर उसे घेर लिया। उस असयमी पागल ने उस समय भी नगर वालो पर अधिक से अधिक अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिए। किसी से किसी की पुत्री तथा किसी से किसी का धन जबरदस्ती छीन लेता था। नगर वालो पर विश्वास न होने के कारण वह रातो मे एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे का चक्कर लगाया करता तथा किले की रक्षा किया करता था। उस पागलपन के बावजूद उसमें इतनी अधिक सूझ बूझ थी कि आधी रात के समय वह एक खाली घर मे पहुँचा और जमीन पर कान रखकर लेट गया। वहाँ से कुछ कदम आगे बढकर कुछ ढूँढने लगा। तदुपरान्त पुन अपने पहिले स्थान पर पहुँच कर अचानक बेलदारो को बुलवाया और कहा कि, "मेरे कान मे ऐसी आवाज आ रही है मानो भूमि खोदी जा रही है।" जब उसे खोदा गया तो वहाँ एक सुरग मिली जिसे अली कुली (४६५) खा ने किले के बाहर से खोदा था जिन लोगो ने उस सुरग को देखा था वे कहते थे कि इस स्थान के अतिरिक्त किले के चारो ओर से जिस दिशा से भी सुरग प्रारम्भ की जाती वहाँ किले की नीव जल से मिली होती और लोहे के खूँटे तथा साल के खम्बे उसकी दृढता हेतु एक दूसरे से मिलाकर लगे होते थे।

सक्षेप में, यदि कम्बर को पता न चल जाता तो अली कुली खा के आदमी जबरदस्ती उस मार्ग से प्रविष्ट हो जाते। अली कुली खा उसकी इस सूझ बूझ पर आश्चर्यचकित रह गया। नगर वासियो ने सगठित होकर अली कुली खा को सदेश भेजा कि "अमुक रात्रि मे अमुक बुर्ज से मोर्चे के आदमियों को आक्रमण करना चाहिए ताकि हम लोग कमन्द डालकर उन्हे किले के ऊपर खीच लें।" ऐसा ही किया गया। अली कुली खा के सैनिको को शेख हबीब बदायूनी ने, जो उस स्थान के प्रतिष्ठित लोगो मे था, शेखजादो के बुर्ज से ऊपर पहुँचा दिया और उसमे आग लगा दी। शेखजादे लोग शेख सलीम चिश्ती[1] फतहपुरी के सम्बन्धी थे। जब सूर्योदय हुआ तो अभागा कम्बर दीवाना काला कम्बल ओढे हुए, जो कि उसके काले भाग्य का प्रतीक था, नगर की ओर निकला। उसे लोमडी के समान पकडकर लाया गया। यद्यपि अली कुली खा ने उससे नम्रतापूर्वक कहा कि वह अधीनता स्वीकार कर ले ताकि उसके प्राणो को हानि न पहुँचाई जाय किन्तु वह पागल जो कुत्ते का भेजा खा चुका था कठोरता प्रदर्शित करता ही गया, यहाँ तक कि नरक के कुत्तो से मिल गया। उसकी कब्र बदायूँ में बडी प्रसिद्ध है।

वह लोगो को अत्यधिक भोजन कराया करता था और कहा करता कि, "खाओ, धन ईश्वर का दिया हुआ है और प्राण भी ईश्वर के दिए हुए हैं। कम्बर दीवाना खुदा का बकावल[2] है।" जब अली कुली खा का पत्र कम्बर के सिर सहित स्वर्गीय पादशाह के दरबार मे पहुँचा तो वे बडे रुष्ट हुए।

१ शेखुल इस्लाम शेख सलीम चिश्ती, फतहपुर सीकरी के प्रसिद्ध सन्त थे। अकबर उनका बहुत बड़ा भक्त था। उनका जन्म देहली में ८८३ हि० (१४७८ ई०) में हुआ। उनकी मृत्यु २७ रमजान ९७९ हि० (१३ फरवरी १५७२ ई०) को हो गई।

२ भोजन का प्रबन्धक।

हुमायूं की मृत्यु

इसी बीच में ७ रबी-उल-अव्वल ९६३ हि० (२० जनवरी १५५६ ई०) को पादशाह अपने किताबख़ाने के कोठे पर से, जिसे उन्होंने देहली के दीन पनाह के किले में बनवाया था, उतर रहे थे। उतरते समय अज़ान देने वाले ने अज़ान देना प्रारम्भ कर दिया। वे अज़ान के प्रति सम्मान (४६६) प्रदर्शित करने के लिए बैठ गए। उठते समय डंडा लड़खड़ा गया और उनका पांव फिसल गया। कई ज़ीने से लुढ़कते हुए वे भूमि पर आ रहे। जब उन्हें चेत हुआ तो नज़र शेख़ जाली को शाहज़ादये आलमियान के पास पंजाब भेज दिया और जो दुर्घटना घटी थी उसकी वास्तविक सूचना कराई। इस मास की १५ तारीख[1] को पादशाह इस कृतघ्न संसार से विदा तथा परलोक-गामी हो गए। उनके निधन की यह तारीख़ निकाली गई

शेर

"क्योंकि ईश्वर की कृपा से वे रिज़वां[2] के उद्यान के निवासी बने,
'बहिश्त आमद मकामे पाके ऊ[3]' के अक्षरों से तारीख़ निकली।"

मौलाना कासिम काही ने कहा है —

कितआ

"हुमायूं पादशाह आध्यात्मिक लोक का पादशाह,
किसी को स्मरण नहीं उसके समान शहंशाह हुआ होगा।
अपने महल के कोठे से वह अचानक गिर पड़ा,
इस कारण उसका प्रिय जीवन नष्ट हो गया।
उसकी तारीख़ के लिए काही ने लिखा,
'हुमायूं पादशाह अज़ बाम उफ़्ताद'[4]।"

निम्नांकित शेर से भी तारीख़ निकलती है

'उसकी मृत्यु के वर्ष की ओर से असावधान न हो और देख,
हुमायूं कहाँ चला गया और उसका प्रताप[5]।'

इस तारीख़ की भी रचना हुई

'ऐ! आह! पादशाहे मन अज़ बाम उफ़्ताद[6]।'

पद्य

बादशाहत की राजधानी, जिसे तूने देखा, नष्ट हो गई,
उदारता की वह नील, जिसे तूने देखा, मृग-तृष्णा बन गई।

१ १५ रबी-उल-अव्वल ९६३ हि० (२८ जनवरी १५५६ ई०)।
२ जन्नत का दारोगा।
३ بهشت آمد مقام پاک او उसका पवित्र स्थान स्वर्ग हुआ।
४ همایون پادشاه از بام افتاد हुमायू पादशाह कोठे से गिर पड़ा।
५ همایون کجا رفت و اقبال او कहाँ गया हुमायूँ, कहा गया उसका प्रताप।
६ ای آه پادشاه من از بام افتاد हाय! मेरा पादशाह कोठे से गिर पड़ा।

आकाश ने मुहम्मद यहिया के सिर को नष्ट कर दिया,
(४६७) गरदनों के स्वामी सजर को विपत्तियों का सामना करना पड़ा।
चौथा आकाश मातम का घर बन गया।
जिबरील आकाश के प्रति सम्वेदना प्रकट करने पहुँचे।'

हुमायूँ का चरित्र

उनकी सम्मानित अवस्था ५१ वर्ष थी। उनके राज्य की अवधि २५ वर्ष तथा कुछ और थी। वे फिरिश्ता सरीख गुण वाले पादशाह थे। वे समस्त कुशलताओं एवं बाह्य तथा आध्यात्मिक गुणों से सुशोभित थे। ज्योतिष, नक्षत्र विद्या एवं समस्त रहस्यमय ज्ञानों में अद्वितीय थे। वे विद्वानों एवं गुणवान् के आश्रयदाता एवं पवित्र तथा सत-स्वभाव वालों की शरण थ। कविता एवं कवियों की ओर वे आकृष्ट रहते थे और स्वयं उत्तम शेरों की रचना करते रहते थे। क्षण भर के लिए बिना वज़ू किए न रहते। बिना तहारत[1] के खुदा एवं रसूल (ईश्वर की शान्ति तथा आशीर्वाद उनपर हो) का नाम कदापि न लेते थे।

कितआ

'शुद्ध (धार्मिक) विश्वास रख, ताकि
तेरे प्रति विश्वास में बाधा न पड़ने पाये।
(ईश्वर के) दास को निःसन्देह ईश्वर के कोप से,
शुद्ध (धार्मिक) विश्वास के अतिरिक्त कोई अन्य बात मुक्ति नहीं दिलाती।'

यदि आवश्यकतावश कोई ऐसा मिला हुआ नाम लेना पड़ जाता जिसमें ईश्वर के उत्कृष्ट नाम का कोई भाग सम्मिलित होता जैसे अब्दुल्लाह इत्यादि तो ऐसी अवस्था में वे केवल अब्दुल कहते। इसी प्रकार पत्र लिखने समय आवश्यकता पड़ने पर हुवा[2] शब्द के स्थान पर केवल दो अलिफ इस प्रकार लिखते थे (।।) कारण कि हुवा शब्द से ११ निकलता है।[3] सभी बातों में वे इतना अधिक शिष्टाचार प्रदर्शित करते मानो वह बात उनके स्वभाव में हो। वे रातें सर्वदा सभाओं में व्यतीत कर देते और कृपणता न प्रदर्शित करते। हिन्दुस्तान का समस्त हासिल[4] उनके व्यय हेतु पर्याप्त न था। वकील लोग दान के भय से सोने का नाम उनके समक्ष कदापि न लेते। पिता के (४६८) समान वे भी खज़ाना एकत्र करने का प्रयत्न न करते। अपशब्द एवं गाली उनकी पवित्र जिह्वा से कभी न निकलती। यदि किसी पर वे अत्यधिक रुष्ट होते तो केवल इतना कहते, 'हे मूर्ख।" इसके अतिरिक्त कोई अन्य बात न कहते। घर एवं मस्जिद में भूल कर भी कभी बायाँ पाँव आगे न रखते। यदि उनके दरबार में कोई बायाँ पाँव रख देता तो वे कह देते, "यह बायाँ पाँव है। उसे वापस करके फिर से आने का आदेश देते। अत्यधिक मर्यादा के कारण वे हँसने के लिए कभी होंठ न खोलते और किसी की ओर कठोर दृष्टि न डालते।

१ शुद्धता, पवित्रता।
२ वह ईश्वर।
३ हे (ه) =५, वाव (و) =६ =११।
४ हासिल : राजस्व, आय।

शेख हमीद की हुमायूं के प्रति आलोचना

कहा जाता है कि शेख हमीद मुफस्सिर[1] सम्बली, हिन्दुस्तान की पुनर्विजय के समय उनके स्वागत हेतु काबुल पहुँचा। इस कारण कि पादशाह उसके बहुत बडे भक्त थे, उसने एक दिन भावावेश में कहा, "पादशाह! आपकी समस्त सेना को मैं राफ़ज़ी हा राफ़ज़ी[2] पाता हूँ।" पादशाह ने पूछा, "किस प्रकार आप यह कहते हैं? यह क्या बात है?" उसने कहा, 'इस बार आपके सैनिकों में प्रत्येक स्थान पर यार अली, वफ़ा अली, हैदर अली नामक लोग ही मिलते हैं। मैंने (हज़रत मुहम्मद के) अन्य मित्रों के नाम पर किसी का नाम नहीं पाया।" पादशाह बड़े क्रोधित हुए और चित्र[3] बनाने का कलम क्रोध में भूमि पर पटक कर कहा कि, "मेरे दादा ही का नाम उमर शेख था। इसके अतिरिक्त मैं कुछ नहीं जानता।" उठकर वे अन्त:पुर में चले गए। वहां से वापस आकर बड़े सौजन्य एवं नम्रता से शेख को अपने शुद्ध धार्मिक विश्वासों की सूचना दी।

क़ितआ

'शुद्ध धार्मिक विश्वास रख, ताकि
तेरे प्रति विश्वास में बाधा न पड़ने पाये,
(ईश्वर के) दास को निःसन्देह ईश्वर के कोप से,
शुद्ध (धार्मिक) विश्वास के अतिरिक्त कोई अन्य बात मुक्ति नहीं दिलाती।'

मौलाना जुनूनी बदख़शी मुअम्माई

उस स्वर्गीय पादशाह के गुणों की चर्चा के लिए पृथक् ग्रंथ की आवश्यकता होगी। अत्यधिक अद्वितीय कवि उनके राज्यकाल में हुए हैं। उनमें से बदख्शां में मौलाना जुनूनी[4] (९६९) बदख्शी मुअम्माई हुआ है जिसने उस स्वर्गीय पादशाह के नाम पर सिनअत से परिपूर्ण ३८ शेरों के एक क़सीदे की उस समय जब वे मीर्ज़ा थे रचना की सलमान। कुछ सिनअतें[5] जो मीर सैयिद जुल्फिकार शिरवानी के क़सीदे में जिसकी रचना उसने ख्वाजा रशीद के नाम पर की तथा सावजी[6] के क़सीदे में जिसकी रचना उसने ख्वाजा गयास वज़ीर के नाम पर की, न पाई जाती थी, उन्हें उसने अपने अधिकार में कर लिया, उदाहरणार्थ मुअम्मा[7], इज़हारे मुजमर[8] एवं तारीख इत्यादि। निःसन्देह कविता के क्षेत्र में यह चमत्कार रूपी कारनामा है। यह मतला एवं शेर उसी की रचना है।

१ कुरान शरीफ़ की टीका करने वाला।
२ शीआ।
३ 'क़लमे तसवीर'। एक हस्तलिपि में 'क़लमे तहरीर' (लिखने का क़लम) है।
४ प्रकाशित ग्रन्थ में 'जुनूबी'।
५ अलंकार।
६ प्रसिद्ध फ़ारसी कवि। वह अमीर शेख़ हसन जलायर जो हसन बुज़ुर्ग कहलाता था एवं उसके पुत्र सुल्तान उवैस का, जो बग़दाद में राज्य करते थे, समकालीन था। वह अपने अन्तिम जीवन-काल में अन्धा हो गया और संसार त्याग कर ७७९ हि० (१३७७ ई०) में मृत्यु को प्राप्त हो गया।
७ किसी गूढ़ प्रश्न सम्बन्धी कविता।
८ गुप्त उद्देश्य की व्याख्या।

पद्य

'हे शहशाह तेरा मुख लाला एव जगली गुलाब, तेरे होठ प्राण हैं,
जब मैं देखता हूँ, तेरे होठ रगीन कली के समान हँसते रहते हैं।
मैं तेरे विकास को सब्जा[1] एव रैहान[2] नही कहता, तेरा गाल गुलाब है,
जब तू चलता है तो उस समय तेरे डील डौल से फितना उठता हुआ
दिखाई पडता है[3]।'

कसीदे के समस्त मिसरो से तौशीह[4] के नियम से यह मतला बनता है

मतला

'धर्म के शहशाह, युग के पादशाह,
अपने सौभाग्य से तू सफल हुआ[5]।

यदि पूर्व के दो शेरो के हश्व[6] को लाल रोशनाई[7] से लिखा जाय तो यह मतला हो जायगा जिसे तीन बहरो[8] में पढा जा सकता है।

मतला

'तेरा मुख लाला जगली गुलाब तेरा विकास सब्जा एव रैहान,
तेरो होठ रगीन कली, तेरा डील डौल युग का फितना[9]।'

यदि इसे उलट कर पढा जाय तो भी तीन बहरा मे एक मतला काफिये[10] एव रदीफ़[11] (४७०) को बदल कर इस प्रकार बन जाता है

१ हरियाली।
२ एक सुगधित घास।
३ 'शहशाहा रखे तू लाला व नसरीं लबे तू जां,
हमी बीनम लबे तू गु चये रंगीं शुदा खन्दा।
नमी गोयम खत्ते तू सब्जा व रैहा खदे तू गुल,
शवद जाहिर क़द्दे तू फितनये दौरा दमे जौलां'।
४ प्रत्येक शेर के प्रथम अक्षर को जोड़ने से जब शेर बन जाय।
५ 'शहशाहे दीं पादशाहे जमा
ज बख्ने हुमायूँ शुदा कामरां।'
६ छन्द में पद के आदि और गणों के अत के अतिरिक्त बीच में आने वाले गण।
७ उन्हें मोटे टाइप में छापा गया है।
८ शेर का वज़न, वृत्त।
९ 'रुखे तू लाला व नसरीं खत्ते तू सब्जा व रैहा,
लबे तू गुंचये रगीं, कद्दे तू फ़ितनये दौरां।'
१० अन्त्यानुप्रास, अनुप्रास, तुक।
११ पीछे चलने वाला, ग़ज़ल में क़ाफ़िये के बाद आने वाला शब्द या शब्द-समूह।

हे ! तेरी अभिलाषा में गिरेबान एव दामन टुकडे-टुकडे है,
बिना तेरे पाँव दामन में एव सिर गिरेबान मे मैं किस प्रकार छिपाऊँ।

उन्होंने हिन्दुस्तान-विजय एव उसकी विशेषता सम्बन्धी एक तारीख़ की रचना की और उसमें काव्य-रचना की कुशलता का अत्यधिक प्रदर्शन किया। उनकी मृत्यु चुनार के समीप ९४० हि० (१५३३-३४ ई०) में हुई और अपने बनवाये हुए मदरसे मे दफन हुए।

मौलाना नादिरी समरक़न्दी

मौलाना नादिरी समरकन्दी अपने युग का अद्वितीय, सर्वोत्कृष्ट विद्वान् एव सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति था। निज़ाम नामक एक रूपवान् (तरुण) से उसे अत्यधिक प्रेम हो गया। उसका उल्लेख उसने इस रहस्यमय मुअम्मे मे किया है

पद्य

'मैं टूटे हृदय का प्रसिद्ध निज़ाम का गुण-गान करता हूँ,
बिना उसके मिले हुए शक्तिहीन हृदय में कोई सुव्यवस्था नही।'

रुबाई

'मैं कष्ट मे हूँ, तेरे कारण रखता हूँ मैं सैकडो दुख हृदय में,
बिना तेरे होठ के लाल के, मेरा क्षण क्षण पर दुख से मुकाबला है।
इस अवस्था से दुखी हूँ मैं दीन एव दरिद्र,
मेरी अभिलाषा है कि शून्य की गली में विश्राम कर लूँ।'

गोशवारा

'मै अपने माशूक के केशो का गुण-गान् करता हूँ।'

उसके आलोचनात्मक मस्तिष्क की देन यह शेर है

ग़ज़ल

'मेरे माशूक के डील डौल को कैसी उत्तम चाल प्राप्त है,
मैं दास हो गया, उस डील डौल एव चाल ढाल का।
माशूक ने हमारी ओर न देखा कृपापूर्वक,
कृपा प्रदर्शित करता है, सम्भवत वह शत्रुओ के प्रति।
"नादिरी" मधुशाला की ओर प्रस्थान कर
और अपने सिर एव पगडी में मदिरा के लिए शपथ ले।'

ग़ज़ल

(४७३) 'तेरी गली के सिरे पर यद्यपि मैं आजीवन रहा,
मैं अपनी आयु की शपथ लेता हूँ कि मैं क्षण भर भी शान्त न रहा।
सिज्दे के उद्देश्य से मैंने जिस स्थान पर सिर रक्खा,
तू रहा मेरे उद्देश्य का काबा वहाँ।

एक समार तेरा महरम[1] रहा और मैं वचित,
सब लोग स्वीकृत और मैं रद्द वहाँ।
क्या पूँछता है हे नादिरी ! तेरी क्या दशा है उस गली में,
कभी अप्रसन्न और कभी प्रसन्न रहा मैं।'

स्वर्गीय पादशाह के नाम पर उसने इस कसीदे की रचना की

क़सीदा

'ईश्वर को धन्य है कि शान्त हृदय से,
घनिष्ठ मित्र बैठे थे, साथ साथ प्रसन्नतापूर्वक।
वाटिका लोगो के आनन्द मगल का गृह है, जहाँ,
दुखी बुलबुल भी गुलाब के समक्ष प्रसन्न है।
बाग का माशूक सम्भवत शरद ऋतु के कारण नग्न था,
अत उसने गुलाब की सैकडो पखडियों का चीवर सी लिया।
एकत्र हैं गुलाब-चमेली, जटामासी तथा तुलसी,
बहार का सुल्तान आया है, सैनिकों एव परिजनो सहित।
आकाश सरीखे ऐश्वर्य वाले पादशाह का गुण गान कर रहे हैं पक्षी,
वृक्षो की डालियों पर उसी प्रकार जिस प्रकार मिम्बरों पर खतीब[2]।
सर्वोत्कृष्ट खाक़ान, जम सरीखा शाह, हुमायूँ
ईश्वर की शक्ति से जिसके हाथ एव हृदय शक्तिशाली हैं।
उसकी ही बुद्धि से प्राप्त होती है बुद्धि प्रतिभाशालियों को,
उसकी सूझ बूझ से, बुद्धिमानो को सूझ बूझ प्राप्त है।
शरीअत के आदेशानुसार, निषिद्ध वस्तुयें हराम[3] हैं,
उसका प्रताप स्वीकृत वस्तुओं का आदेश होता है।
(४७४) विजय हेतु एकत्र हुई इस्लाम की सेना,
उसके अद्वितीय सैनिक एव लश्कर के वीर।
उसकी विजय-पताका के नीचे प्रताप के रण क्षेत्र में,
परमेश्वर की कृपा उसकी रक्षा एव सहायता करती रहे।
तेरे दान की हथेली से सभी वस्तुओ को स्थायित्व प्राप्त है,
तेरी तलवार के भरोसे पर एराज[4] एव जवाहिर[5] अवलम्बित हैं।
अनादि काल से ईश्वर के समक्ष,
था तेरा अस्तित्व मूल उद्देश्य इस घूमने वाले आकाश (की स्थापना से)।
जिबरील यदि पुन वही[6] लायें।

१ भेद जानने वाला, राजदार, मित्र।
२ खुत्बा (प्रवचन) पढ़ने वाले।
३ निषिद्ध।
४ एराज अथवा अर्ज से इस्लामी धर्म-शास्त्रानुसार वह वस्तुयें समझी जाती हैं जो स्थायी नहीं।
५ जवाहिर अथवा जौहर से इस्लामी धर्म-शास्त्रानुसार वह वस्तुयें समझी जाती हैं जो स्थायी हों।
६ ईश्वर की ओर से आया हुआ पैगम्बर के लिए आदेश।

स्पष्ट आयतें[1] तेरे ऐश्वर्य के विषय में आयेंगी।
तेरे लाल रूपी होंठो ने जिस रहस्य का उल्लेख किया,
हदीसे मुतवातिर[2] के समान ससार में प्रसिद्ध हो गया।
यह सुप्रसिद्ध है कि गणित के विज्ञान के ग्रथो की टीका है,
दायरो के आविष्कार के सम्बन्ध में तेरी यह उत्तम रचना।

तेरी अपार बुद्धि को कौन अस्वीकार कर सकता है,
जिद्दी आदमी के अतिरिक्त कोई स्पष्ट बात को इन्कार नहीं करता।
मैं तेरी निपुणताओ का उल्लेख नही कर सकता।
कारण कि तू सभी कलाओ में पूर्ण एव निपुण है।
तेरी दर्शन-शास्त्र सम्बन्धी बुद्धि एव तेरा प्रताप रखता है,
फिरिश्ता रूपी तथ्य, ससार की साधारण वस्तु के समान।
(४७५) तेरा दान पुण्य इस प्रकार का है कि दान-पुण्य के समय,
बिना पूँछे जान लेता है तू हृदय की इच्छायें।'

यह मुअम्मा भी उसी का रचना है —

शेर

वह मुख कुरान है और वह खत[3] निष्ठुरता एव अत्याचार का प्रमाण है,
उस हृदय को छीनने वाले के कपोल निष्ठा के तिल स शून्य है।'

मौलाना की मृत्यु ९६६ हि० (१५५८ ५९ ई०) में हुई। मीर अमानी काबुली ने उसकी तारीख लिखी

कितआ

'खेद है कि वह नादिरी जो कविता के रहस्य समझता था, चला गया,
वह नादिरी जो ससार में काव्य को भली भाँति समझता था।
तामिया[4] के नियमो से उसकी मृत्यु की तारीख मैंने ढूंढी,
बुद्धि ने कहा कवियो में से एक चला गया[5]।'

शेख अबुल वाहिद फारिग़ी

शेख अबुल वाहिद फारिगी भी एक अन्य कवि था। वह अत्यधिक दरवेश रूपी था और अपनी मीठी वाणी के लिए प्रसिद्ध था।

१ कुरान शरीफ़ का एक वाक्य।
२ वह हदीस जो एक ही रूप से कई सूत्रों से ज्ञात हो।
३ मुख के रोम।
४ अबजद के हिसाब से निकाली हुई तारीख में कोई संख्या बढ़ाना, जिससे वर्षों की सख्या पूरी हो जाय, परन्तु इस प्रकार बढ़ाई हुई सख्या ९ से अधिक नहीं हो सकती।
५ 'गुफ़्ता खिरद कि रफ्त यके अज़ सखुनवरां'। यदि सखुनवरां में से, जिसके अबजद के हिसाब से अक्षरों की सख्या का योग ९६७ होता है, १ निकाल दिया जाय तो ९६६ हो जाते हैं।

शेर

'इस कारण कि वह निष्ठुर कष्ट पहुँचाता रहता है,
उसकी थोडी सी अनुकम्पा भी अधिक दृष्टिगत होती है।'

अपने मनोविकार में उसने यह रचना की

पद्य

'ईश्वर प्रशसनीय है कि मैं निष्ठुर मस्त के इश्क से मुक्त हो गया,
जो गिरता रहता था, अपने नेत्र के समान मस्ती के कारण प्रत्येक गली में।
जो प्याले के समान, एक घूंट के लिए, प्रत्येक व्यक्ति के होंठ पर होंठ रखे,
सुराही के समान प्रत्येक प्याले की ओर एव प्रत्येक दिशा की ओर झुका हुआ।'

पद्य

(४७६) 'उस अवस्था मे जब मेरा हृदय तेरे मिलन के कारण आनन्द विभोर था,
न दृष्टिगत हुआ इतना भी कि उस आशीर्वाद का उल्लेख हो सकता।'
सक्षेप में, तेरे वियोग में व्यतीत हुई मेरी अवस्था,
मिलन की पूँजी को कौन जानता है कि कितनी थी।
कल रात में शत्रु तेरे पास थे और फारिगी,
दूर से शोक की अग्नि पर सिपन्द था।'

शेर

'हे घनिष्ठ मित्रो, मेल के बन्धन मत तोडो,
छिन्न भिन्न होने में कष्ट है, इसे मत तोडो।'

शेर

'जो तू अपने बाण को मेरे सीने से खीचता है तो नोक को छोड दे,
मुझे साहस प्रदान कर ताकि वीरो के समान तेरे मार्ग मे प्राण त्यागू मैं।'

उसकी मृत्यु ९४० हि० (१५३३-३४ ई०) में हुई। शेख जैन की खानकाह में आगरा में दफन हुआ। उन दोनों में इतना अधिक मेल एव घनिष्ठता थी कि वे एक ही वर्ष ससार से विदा हुए। कहा जाता है कि जब ये दोनों बुजुर्ग हिन्द की ओर रवाना हुए तो अत्यधिक दरिद्रता के कारण दोनों के बीच में एक पोस्तीन[१] के अतिरिक्त कुछ भी न था। शेख जैन ने शेख अबुल वाहिद से कहा कि, "मैं इसे काबुल के बाजार में इस शर्त पर ले जाता हूँ कि तुम पहुँच कर किसी प्रकार का परिहास मत करना।" उसने स्वीकार कर लिया। एक ग्राहक मूल्य को बहुत बढा कर ५ शाहरुखी[२] देने लगा। शेख जैन अधिक माँगता था। अन्त में शेख अबुल वाजिद बिना कोई सम्बन्ध प्रदर्शित किए हुए

१ लोमड़ी, समूर, सिनाब आदि रोयेंदार जन्तुओं की खाल से बनाया हुआ कोट जो शीत प्रधान देशों में पहना जाता है, इसके रोयें भीतर तथा खाल ऊपर रहती है।

२ एक शाहरुखी में १६ दाम होते हैं। २॥ शाहरुखी में लगभग १ रुपया होता है। इस प्रकार उसने उसका मूल्य दो रुपया लगाया।

उपस्थित हुआ और दल्लाली करने लगा। अत्यधिक वाद-विवाद उपरान्त कहा, "हे अन्यायी ५ शाहरुखी तो इस चटाई के पिस्सुओं तथा चीलरों का मूल्य हैं।" सौदा समाप्त हो गया। शेख (४७७) जैन ने रुष्ट होकर कहा, "इस मूर्खता-पूर्ण परिहास का यह क्या समय था? हम रोटी के लिए मुहताज हैं और तुम्हारी अदायें यह हैं।" शेख अबुल वाजिद हँसने लगा।

जाही यतमान

जाही यतमान[1] बुखारा निवासी तथा काबुल में बुखारी प्रसिद्ध था। स्वर्गीय पादशाह की सेवा में हिन्दुस्तान के प्रस्थान के समय उपस्थित हुआ और पादशाही कृपाओं द्वारा सम्मानित होकर विश्वास-पात्र बन गया। जिस समय शाह मुहम्मद खां शापुर[2] को सजावली[3] हेतु काबुल में नियुक्त कर दिया गया था तो उसने मुल्ला को उसी प्रकार अत्यधिक कष्ट पहुँचाये जिस प्रकार अन्य लोगों को। मुल्ला ने उसकी हजो[4] में एक रोचक तरकीब बन्द[5] की रचना की। क्योंकि शाह मुहम्मद शापुर की पुत्री पादशाह की सेवा में थी[6] अत उसने केवल उसी का छोड दिया किन्तु उसके कबीले के समस्त नर-नारियों के नाम पर बदनामी की कलम चला दी। पादशाह भी उस गधे[7] से इस कारण कि वह दुष्टता की पूँजी था, रुष्ट थे। उन्होंने उस हजो को दरबार में उसके सामने मुल्ला से सुन कर अत्यधिक प्रसन्नता प्रकट की और उसे अत्यधिक इनाम दिलवाया। क्योंकि वह हजो गाली की सीमा तक पहुँच गई थी अत इस स्थान पर केवल एक बन्द उद्धृत किया जाता है

क़सीदा

'मैं हुमायूँ शाह का कवि हूँ और उसकी चौखट की धूल,
(४७८) मेरी कविता का लाव लश्कर चांद को ताना देता है।
मैं कविता का बादशाह हूँ और मेरे उत्तम शेर लाव लश्कर हैं,
मैंने एक दुष्ट द्वारा बिना पाप तथा अपराध के अत्याचार सहन किए।
काग़ज का एक टुकडा यदि बकवास से काला हो जाय,
यदि उसकी हजो की रचना की मैं कल्पना करूँ।
उद्देश्य यह है कि गधा रूपी ये मूर्ख,
इस समूह के सम्मान एवं मर्यादा पर ध्यान रखे।
उस व्यक्ति के प्रति खेद है, जो कवियों का विरोध करता है,
जो हमारा विरोध करता है, वह आफत से संघर्ष करता है[8]।'

१ एक पोथी में 'तम्बान' तथा एक में 'यतमीनान'।
२ कुछ पोथियों में 'सालू'।
३ राजस्व की वसूली।
४ निन्दा।
५ एक प्रकार की कविता जिसमें कई बन्द होते हैं, प्रत्येक बन्द पृथक् रदीफ़-काफ़िये में होता है और प्रत्येक बन्द की समाप्ति पर एक नया शेर लाते हैं जो अलग रदीफ़ काफ़िये का होता है।
६ हुमायूँ की पत्नी थी।
७ 'ख़र' कुछ पोथियों में 'ख़ुसुर (ससुर)' शाह मुहम्मद।
८ हर कि बा मा बे सतेज़द ब बला बे सतेज़द,
هر که با ما بستیزد به بلا بستیزد

इस मिसरे में पादशाह ने परिवर्तन कर दिया कि तू यह क्यों नहीं कहता
'जो हमारा विरोध करता है, वह ईश्वर से संघर्ष करता है।'[1]

ये शेर भी उसी के हैं

शेर

'जब तक हम आशिक रहे, बदनाम रहे,
किन्तु फिर भी हम एक समान आशिक रहे।'

पद्य

"हे रूपवानो! तुम सब निष्ठुर एवं विश्वासघाती हो,
अपने बन्दियों के प्रति निष्ठुरता एवं अत्याचार करते हो तुम।
तुमने वचन दिया किन्तु पालन करने में झूठ बोले,
सच-सच कहो कि यह तुम्हारा क्या तरीक़ा है।
हम इस नगर में केवल तुम्हारे लिए बदनाम नहीं हैं,
(४७९) प्रत्येक स्थान पर हमारी बदनामी के साधन हो तुम।
कितनी बार पूछोगे कि तेरा संसार में क्या उद्देश्य है,
मैं सच कहता हूँ, 'तू है, तू है, तू है'।
'जाही' तुझसे अपने प्राण नहीं बचा सकता,
कारण कि तू ईश्वर की बलाओं में से बला है।"

पद्य

'पिछली रात को ईद का चन्द्रमा मिस्कल[2] के समान प्रकट हुआ,
रोज़े के वाष्प से हृदय का दर्पण मैला था।
या तो वह नव-चन्द्र था और या उनकी दुर्बलता के कारण,
प्यासे होंठ वाले रोज़ा रखने वालों की पसलियाँ दृष्टिगत थीं।
या लैला के ऊँट के लिए काठी तराशी गई,
या मजनूँ का झुका हुआ शरीर, दुःख के कारण पीला एवं कमज़ोर हो गया
आकाश अपने आप को तेरे सेवकों की माला में सम्मिलित करना चाहता है,
इसी कारण उसने अपना धनुष झुकाया है, उसपर चिल्ला चढाने का।
अपितु तेरे पैक[3] ने घंटी बाँधी है और अपने सिर पर सम्मान के पख लगाये हैं,
वह रूम से जा रहा है ताकि लाये समाचार जगबार से।'

१ हर कि बा मा बे सतेज़द ब खुदा बे सतेज़द।
هر کہ با ما ستیزد بخدا ستیزد
२ हथियारों को चमकाने का यंत्र।
३ पत्र-वाहक।

यह बात छिपी न रहनी चाहिये कि यह शेर "आकाश अपने हाथ को तेरे सेवकों की माला में सम्मिलित करना चाहता है" उसने निजाम अस्तराबादी के इस कसीदे से उद्धृत किया है

पद्य

'रात्रि में नक्षत्र आदमियों के समूह के समान दृष्टिगत हुए हैं,
और नव-चन्द्र से अपने मध्य में नई बातें प्रस्तुत की हैं।
(४८०) राज्य के सिंहासन पर जगवार का शाह आरूढ है,
उपहार हेतु नक्षत्र, धनुष लाये हैं।'

रुबाई

'तेरे मुख के चारों ओर खत मेरी हैरानी का कारण है,
तेरी जुल्फ[1] मेरी अव्यवस्था का कारण है।
वह कस्तूरी की सुगन्ध वाले काकुल[2] हमारी वीरानी का साधन हैं,
यह सब हमारी परेशानी का कारण है।'

शेर

'आ कारण कि तेरे कबक के लिए तैयार किया आकाश ने,
सूर्य से सोने का बद्द एवं शिशु चन्द्र से कजक।'[3]

बैराम खां ने इसी काफिये में बहर का परिवर्तन करके एक प्रसिद्ध कसीदे की रचना की जिसका प्रथम शेर इस प्रकार है

शेर

'तेरे बाण ने कबक की गाठ को कजक से छीन लिया।
उसने कृतिका नक्षत्र को, हिलाल से टूटने वाले तारों के समान काट डाला'।

इन दोनों मतलों का स्रोत प्रसिद्ध निसारी तूनी के कसीदे का मतला है। मुल्ला जाही की मृत्यु ९५६ हि० (१५४९ ई०) में विष के कारण, जिसे एक दास ने उसके प्याले में मिला दिया था, हुई।

हैदर तूनियाई

एक अन्य कवि हैदर तूनियाई है। वह बड़ा ही योग्य एवं संगीत में अद्वितीय था। उसे कविता करने एवं संगीत की अच्छी योग्यता थी। उसने अपना अधिकांश जीवनकाल हिन्दुस्तान में व्यतीत किया। मुहम्मद हुमायूँ पादशाह के राज्य काल के मश्कूल

१ केशपाश।
२ बालों की लट, केशपाश।
३ हुक; कांटा।

(४८१) मुनज्जेमीन[1] की हजो, जिसकी उसने पजगाह मे रचना की, अपने युग की आश्चर्य-जनक रचना है।

उसने हजरत इमाम शहीद, ईश्वर के चुने हुए, हजरत रसूल की सन्तान, बतूल[2] के पुत्र[3] के लिए जिस मतले की रचना की और जो आशूरे[4] के दिन मारको[5] में पढा जाता है, बडी ही अद्वितीय रचना है.

मरसिया[6]

'मुहर्रम का महीना आया, रोना अनिवार्य कर्त्तव्य हो गया,
हम रोते है खून हुसेन के प्यासे होठों[7] की याद मे।'

रुबाई

'तू वह है जिसे ईर्ष्या के कारण सूर्य एव चन्द्र कहते है,
चाँद सरीखा मुख रखने वालो को तेरा लाव लश्कर बताया जाता है।
तू इस योग्य है कि इस सौन्दर्य एव शोभा के कारण,
युग के शाह लोग तुझे पादशाह कहे।'

शेर

'हे हृदय ! उसके दु ख के समान तेरे ऊपर कोई कृपा करने वाला नही,
उसके दु ख के अतिरिक्त तेरे प्राण के आराम की कोई वस्तु नही।'

पद्य

'हर क्षण पर मेरा माशूक नया हाव भाव प्रदर्शित करता है,
उसके नखरे में अपने प्राणो पर सहन करता हूँ, क्या करूँ मै वह नाज व नखरो को पालता है।
मैं माशूक के मुह के होठ को कली किस प्रकार कहूँ,
कली बन्द है किन्तु कहने की बात कोई और है।'

इस हैदर तूनी का पुत्र बडा ही कायर एव नीरस था। वह ९८५ हि० (१५७७-७८ ई०) में पादशाह की सेवा मे उपस्थित हुआ। एक दिन वह अपनी जहाज की यात्रा एव उसके भय (४८२) का उल्लेख कर रहा था। उसके हाव-भाव से भय का प्रभाव प्रकट हो रहा था। फकीर[8]

१ ज्योतिषियों के बादशाह।
२ हजरत मुहम्मद की पुत्री हजरत फ़ातेमा।
३ इमाम हुसेन।
४ १० मुहर्रम।
५ इमाम हुसेन की स्मृति में सभायें।
६ वह शोक गीत जो किसी मृत व्यक्ति की याद में लिखा जाय।
७ इमाम हुसेन हजरत अली एव हजरत मुहम्मद की पुत्री हजरत फ़ातेमा के पुत्र जिन्हें यज़ीद ने १० मुहर्रम ६१ हि० (१० अक्तूबर ६८० ई०) को बेबीलोनियन एराक़ में करबला नामक स्थान पर उनके थोड़े से सहायकों सहित तीन दिन तक प्यासा रख कर शहीद करा दिया।
८ लेखक।

ने पूँछा, "सम्भवत: तू हज की यात्रा पर लज्जित है।" मैंने यह शेर जो उस स्थिति के अनकूल था पढ़ा। इसे कुदसी नामक कवि के समक्ष उसके प्रतिस्पर्धियों ने पढ़ा था:

शेर

'ब्याबान के मार्ग एव बबूल के काँटों के भय से,
काबा पहुँचने पर तू पश्चाताप प्रकट कर रहा होगा।'

उसने तत्काल उत्तर दिया, "नि सन्देह." पादशाह ने कहा, "काबा की यात्रा पर क्यों पश्चाताप करता होगा, जहाज़ पर बैठने पर लज्जित होगा।" उसी समय मतहीन खा, जो स्वाग भरने में अद्वितीय था, सम्मानित आदेशानुसार कुत्ते द्वारा काटे हुए आदमी का स्वाँग भर कर कुत्ते के समान भूँकने लगा और इब्ने हैदर के सामने पहुँचा। वह अपनी पगडी कहीं और जूते कहीं फेंक कर प्रत्येक दिशा में भागने लगा, यहाँ तक कि वह लुढक गया और सब लोग खूब खूब हँसे। जब उसे तथ्य का पता चला तो वड़ा लज्जित हुआ। पादशाह उसे साँत्वना देने लगे। अन्त में वह हिन्द मे न ठहर सका।

शाह ताहिर

एक अन्य शाह ताहिर ख्वान्दी दकिनी था। वह जाफर का अनुज था। एराक के प्राचीन काल के आलिमों ने ख्वान्दी लोगो की बडी निन्दा की है। इस विषय मे उन लोगों ने एक महजर[1] तैयार किया जिसपर उनके विरोधियों एव समर्थकों दोनों ने अपनी-अपनी मुहर लगाई। इब्ने असीर जज़री[2] की कामिलुत्तवारीख एव काज़ी यहया कज़वीनी की लुब्बुत्तवारीख इत्यादि में इसका उल्लेख है। वह अपने आप को शाह तहमास्प का सम्बन्धी बताता था। अन्ततोगत्वा उपर्युक्त सम्बन्ध के कारण, जिसके लिए वह बदनाम था, मीर जमालुद्दीन सद्र अस्तराबादी ने उसे अत्यधिक कष्ट पहुँचाये और वह स्वदेश त्याग कर दकिन, जहाँ सभी भाग कर आने वालों को शरण प्राप्त होता है, (४८३) पहुँचा। वहाँ के वाली शाह निज़ाम से उसकी खूब निभने लगी और उसे अत्यधिक सांसारिक उन्नति प्राप्त हुई। वह उच्च श्रेणी प्राप्त करके "जुमलतुल मुल्क[3]" के पद पर आरूढ हो गया। उस प्रदेश मे शीआ धर्म का अभ्युदय एव उसका प्रचार उसी के कारण हुआ। निज़ाम शाह बहरी जिसे एक घातक रोग लग गया था, शाह जाफर की झाड फूँक से स्वस्थ हो गया। यद्यपि वास्तव में वह धीरे-धीरे स्वस्थ हो गया था, किन्तु इसे शाह जाफर का चमत्कार बताया जाता था। उसके मार्ग भ्रष्ट कर देने के कारण उसने सुन्नी धर्म का, जिसका वह महदवियों[4] की प्रथानुसार पालन कर रहा था, परित्याग कर दिया और बडा पक्का शीआ हो गया। कौन से घोर एव तबर्रा प्रथा के कष्ट ऐसे न थे, जो इन दोनों दुष्टों ने उस भू-भाग के आलिमों एव मशायख

१ वह प्रमाण-पत्र जिस पर बहुत से व्यक्तियों के प्रमाण स्वरूप हस्ताक्षर हों।
२ शेख अबुल हसन अली इब्न अबिल करम मुहम्मद इब्ने मुहम्मद इब्न अब्दुल करीम इब्न अब्दुल वाहिद अशशैबानी जो इब्नुल असीर कहलाता था, अल कामिल फित्तारीख नामक इतिहास का रचयिता था। उसका जन्म ५५५ हि० (११६० ई०) तथा मृत्यु ६३० हि० (१२३२ ई०) में हुई।
३ राज्य के वित्त विभाग का मुख्य अधिकारी।
४ सैयिद मुहम्मद जौनपुरी के अनुयायी।

को पहुँचाये। उनकी दुष्टता मुसलमानो के निर्वासन का कारण बनी। उस समय से उस प्रदेश मे रिफ़्ज़[1] ने दृढ एव स्थायी स्थान प्राप्त कर लिया।

बहारियात[2] के कसीदो की रचना मे शाह ताहिर निज़ाम अस्तराबादी के समान है। फलकियात[3] एव उसके अन्य कसीदो में एक निम्नांकित्त है जिसमें उसने अनवरी[4] के अनुकरण में हुमायूँ पादशाह की प्रशसा की है

क़सीदा

'सूर्य की महमिल[5] जब हमल[6] के शयनागार में प्रविष्ट होती है,
लाला फानूस प्रज्वल्ति करता है और नर्गिस मशाल।
अब पर्वत की बहमन[7] एव देय[8] की सिर पीडा से मुक्ति प्राप्त हो गई,
उसके ललाट से बहार के बादल चन्दन धाते है।'

मन्कबत[9] विषयक इस कसीदे की भी उसने रचना की। इसका गुरेज[10] अपितु कसीदे के विषय में प्रवेश हज़रत अमीर[11] अलैहिस्सलाम के लिए उपयुक्त नही। [12]

(४८७) उसका यह मतला भी बडा प्रसिद्ध है

मतला

'ससार से जो दुख का गृह है, आनन्द-मगल दुखी हृदय से निकल गया,
हम दुख के आदी हो गए इतने, कि आनन्द मगल की अब स्मृति भी नही।

मतला

'हम इश्क के अपराध में बदनाम है और ज़ाहिद धूर्तता के कारण,
हम दोनो ही बदनाम है किन्तु हम कहाँ और वह कहाँ[13]।'

शेर

'बाहर मत निकल कारण कि युग मे तेरी प्रसिद्धि हो जायगी,
हम मारे जायेंगे और तू बदनाम होगा।'

१ शीआ धर्म।
२ ऐसे कसीदे जिनमें बहार के प्रसग में लम्बी लम्बी प्रस्तावनायें हों।
३ आकाश सम्बन्धी अर्थात् जिसमें ज्योतिष इत्यादि का उल्लेख हो।
४ प्रसिद्ध फ़ारसी कवि जिसकी मृत्यु ५९६ हि० (१२०० ई०) में हुई।
५ ऊँट पर बाँधने का कजावा जिसमें स्त्रियाँ बैठती है।
६ मेष राशि।
७ ईरानी ११वाँ महीना जो खिजाँ का महीना होता है। यह हिन्दुस्तानी फागुन होता है।
८ एक ईरानी महीना जो हिन्दी का माघ होता है, पतझड।
९ इमामों की प्रशसा।
१० कसीदे की प्रस्तावना को छोड़कर मूल विषय का उल्लेख।
११ हज़रत अली।
१२ इसका अनुवाद नहीं किया गया।
१३ अर्थात् हम उससे अधिक सम्मानित है।

उसका यह कसीदा भी बड़ा ही उत्तम है —

'प्रत्येक वह व्यक्ति जो सांसारिक लोभों में अपना जी लगाता है,
बुद्धिमानों के निकट वह बुद्धिमान् नहीं।'

उसकी मृत्यु ९५२ हि० (१५४५-४६ ई०) में दक्खिन में हो गई। ताबये अहले बैत[1] तारीख़ निकली।

ख्वाजा अय्यूब इब्ने ख्वाजा अबुल बरकात

एक अन्य ख्वाजा अय्यूब बिन ख्वाजा अबुल बरकात हैं जो अपने पूर्वजों के समय से मावराउन्नहर के प्रतिष्ठित लोगों में सम्मिलित है। उसके पिता एवं पुत्र परम्परागत एवं अपने परिश्रम से प्राप्त योग्यताओं के बावजूद बेक़ैदी[2] के लिए प्रसिद्ध हैं —एक एराक एव खुरासान में दूसरा काबुल एवं हिन्द में। इस मुन्तखब में उनका सविस्तार उल्लेख सम्भव नहीं कारण कि उनका उल्लेख अन्य स्थानों पर भी हुआ है और वे बड़े प्रसिद्ध हैं। ख्वाजा अबुल बरकात ने इस मतले की रचना अपने समकालीन विद्वानों के लिए की

शेर

'आशा की खेती सूख गई, निष्ठा का अकाल ताजा हो गया,
(४८८) या तो हमारे हृदय में आग और या हमारे नेत्रों के बादल में जल न रहा।'

कुछ लोगों ने उसको कटु-आलोचना करते हुए कहा कि, "अन्तिम मिसरे में 'या' का कोई अर्थ नहीं। उसके स्थान पर 'ता' कहना चाहिये।" ख्वाजा ने तत्काल क्षमा याचना करते हुए इस किताए की रचना की

क़िताअ

"जो कुछ तीक्ष्ण बुद्धि वालों के समक्ष आता है
जिसे वे भूल समझते हैं, उसपर निन्दा हेतु चिह्न नहीं खींचते।
वे ऊपर अथवा नीचे के बिन्दु निकालते हैं।
बुद्धिमान् लोग बिन्दु तक सीमित नहीं रहते।
वे 'या' पढ़ते हैं और अत्यधिक सोच विचार करते हैं,
वे 'या' नहीं पढ़ते, 'ता' की भूल नहीं करते।"

उसने सलमान सावजी की बहर में एक क़सीदे की रचना की जिसका मतला इस प्रकार है

क़सीदा

'मैं प्रेम के ज्वर में जल रहा हूँ और मेरा सिर वियोग की पीड़ा के कारण फटा जा रहा है,
मेरे प्राण मेरे होंठ को आ रहे हैं किन्तु मेरा माशूक़ मेरे पास नहीं आता।

१ تابع اهل بیت (अहले बैत का अनुयायी)।
२ उपेक्षा अथवा स्वतंत्र विचार।

क्योंकि मेरे हृदय की अग्नि मेरे शरीर में इस प्रकार जल रही है, जिस प्रकार फानूस में ज्वाला,
मेरा दामन टुकडे-टुकडे हो गया और मेरा गिरेबान मेरे सिर पर फटा है।'

निम्नाकित दो-तीन शेर उस कसीदे से है जिसकी रचना उसने नीशापुर के काजी की निन्दा में की

शेर

'पैगम्बर की शरा के विरुद्ध लिखा उसने दूसरा फिकह,
कि उसके समान ग्रथों में कुछ न लिखा था।
उसने शहद को हराम लिखा और मदिरा को हलाल कर दिया,
कारण कि वह अगूर का रस है और वह शहद की मक्खी का वमन।
एक स्त्री पति की शिकायत काजी के पास ले गई,
कि मेरी वासनाओ की उसके द्वारा तृप्ति नही होती।
(४८९) उसने उत्तर दिया यदि वह कमजोर हो गया है,
तो तेरे लिए उचित है कि तू उसके स्थान पर मजदूर रख ले।'

ख्वाजा अपनी कविताओं में कभी "अय्यूब" और कभी "फिराकी" तखल्लुस करता था। यह ग़ज़ल उसी की रचना है

पद्य

'हे गुलाब की डाली, तेरा डील डौल सरो के समान सीधा है,
तूने अपने होठो के चारो ओर जमुर्रद की लकीर खीची है।
तेरा कद सीधा है मद् जिल्लहू[१] के अलिफ के समान,
तेरे कटाक्ष अलिफ पर मद[२] के समान खिचे है।
दूसरो के अक्षरो पर तूने स्वीकृति का पाँसा डाला,
आशिकों के अक्षरो पर तूने रद्द के अक्षर लिखे है।
तू कष्ट उठा रहा है, मत बना हे चीन के चित्रकार,
चाहे तू सैकडो नेत्र एव जुल्फ के चित्र क्यो न बनाये, उसके नेत्र एव जुल्फो के समान नही हो सकते।
फिराकी उसके मिलन के सौभाग्य का लोभ मत कर,
तूने माशूक के अत्याचार एव निष्ठुरता को बहुत अधिक सहन किया।'

स्वर्गीय पादशाह का उसके अनुचित व्यवहारो के बावजूद उससे बडा स्नेह था। उसके साथ रहने को उन्हें इतनी अधिक इच्छा थी कि उन्होंने उसका विवाह बेगमो में से किसी

१ ईश्वर करे उसकी छाया बहुत दिनों तक रहे।
२ अलिफ के ऊपर बनाई जाने वाली लकीर जिससे वह लम्बा करके पढ़ा जाता है।

से इस आशय से कर दिया कि सम्भवतः उसके आचार-व्यवहार में सुधार हो जाय किन्तु ख्वाजा अपनी कुप्रवृत्ति के कारण उनके साथ निभा न सका।

शेर

'जब एक बार बुरी आदत स्वभाव में स्थान ग्रहण कर लेती है,
तो मृत्यु तक वह पीछा नहीं छोड़ती।'

(४९०) उसने इस विषय में बड़ा ही अनुचित व्यवहार किया और केवल उतने ही से संतुष्ट न होता था। उसने एक दिन पादशाह की गोष्ठी में शिष्टाचार के विरुद्ध एक ऐसा कार्य किया जिसका उल्लेख उचित नहीं। पादशाह ने अत्यधिक उदारता एवं स्वाभाविक अनुकम्पा के कारण उसे क्षमा कर दिया और केवल इतना ही कहा कि, "हे ख्वाजा! यह कैसा व्यवहार था?" ख्वाजा ने मक्का जाने की अनुमति ले ली और यात्रा एवं जहाज की आवश्यकताओं की उचित व्यवस्था करके उसे विदा कर दिया। जब वह नौका में बैठ गया तो मित्रों से पूँछा, "वहाँ जाने से क्या लाभ?" उन लोगों ने उत्तर दिया कि, "पिछले पापों से मुक्ति।" उसने कहा, "तो फिर समस्त पाप कर लेने के उपरान्त मुक्त हूँ ताकि उनमें से कुछ शेष न रहे।" इस प्रकार वह उस सौभाग्य से वंचित रह गया। सभी बातों की चिन्ता छोड़ कर भोग विलास में ग्रस्त रहने लगा।

सुल्तान बहादुर गुजराती ने उसकी संगत एवं उसकी बात चीत से आकृष्ट होकर उसके व्यय हेतु एक अशर्फी रोजाना का वज़ीफा निश्चित कर दिया। एक दिन वह[1] अहमदाबाद के बाजार में चक्कर लगा रहा था। उसने ख्वाजा को त्रिपुलिया की मस्जिद में देखा। ठहरकर उसके प्रति कृपा एवं विशेष प्रकार के व्यवहार की दृष्टि से पूँछा कि, "ख्वाजा किस प्रकार समय व्यतीत होता है?" उसने उत्तर दिया कि, "आपने जो धन मेरे व्यय हेतु निश्चित किया है उससे मेरे एक अंग की भी शान्ति से गुज़र नहीं हो सकती? आप क्या पूँछते हैं?" सुल्तान ने उसकी कठोरता के बावजूद उसका वज़ीफा दुगना कर दिया।

उन्हीं दिनों में शाह ताहिर दक्खिनी बड़े ऐश्वर्य एवं गौरव से दूत बन कर निज़ाम शाह दकिनी की ओर से गुजरात पहुँचा। इस कारण कि उसने ख्वाजा की बड़ी प्रशंसा सुन रक्खी थी उसके निवास-स्थान पर जहाँ न बोरिया था और न जल का कूज़ा, पहुँचा। दोनों में बात चीत हुई। प्रत्येक ने अपने शेर पढ़े और एक दूसरे के शेर सुने। दूसरे दिन उसने आतिथ्य, खिल्अत, घोड़े, (४९१) नक़द एवं अन्य वस्तुओं का प्रबन्ध करके उससे पधारने का आग्रह किया। वार्तालाप के प्रवाह में अचानक धर्म के विषय में वार्ता होने लगी। ख्वाजा ने शाह से पूँछा कि, "क्या कारण है कि तुम शीआ लोग रसूल अलैहिस्सलाम के मित्रों के विषय में अनुचित बातें कहते हो?" उसने उत्तर दिया कि, "हमारे मुजतहिदों[2] ने लानत[3] को धर्म का अंग बताया है।" ख्वाजा ने कहा, "उस धर्म पर लानत जिसमें लानत उसका अंग हो।" शाह (ताहिर) भौचक्का हो गया। वार्तचीत

१　सुल्तान बहादुर।
२　धार्मिक (इस्लाम) विषयों में विवेकपूर्ण निर्णय करने वाला।
३　धिक्कार, फटकार।

का अन्त हो गया। उसने उदारतापूर्वक जिस आतिथ्य की व्यवस्था की थी, वह वैसे ही पडा रह गया और नष्ट हो गया।

अन्त में वह वहाँ से भी लज्जित एव अपमानित होकर दकिन पहुँचा और निजाम शाह से भेंट की। उसने भी उचित रूप से स्वागत सत्कार किया। वहाँ भी वह अपने कटु-व्यवहार एव सतुलन-शून्यता के कारण न रह सका यहाँ तक कि अपने अस्तित्व के कष्ट को ससार से लेता गया।

क़ितआ

'हे हृदय, धैर्य धारण कर, कारण कि वह कठोर हृदय वाला मित्र,
अपने भाग्य के प्रति बडा ही कठोर रहता है।'

ईश्वर क्षमा करे, मैं कहाँ से कहाँ पहुँच गया।

मिसरा

'कहाँ था घोडा और किधर भगा दिया मैंने?'

मैं कौन और यह बातें क्या? किन्तु क्या किया जाय कि धृष्ट एव तेज कलम की लगाम इस ओर मुड गई तथा जो बातें आवश्यक न थी, वे प्रारम्भ हो गई अन्यथा मैं यह जानता हूँ कि किसी के दोष निकालना कोई अच्छी बात नही। अपने अवगुणों की ओर से उपेक्षा करके, दूसरो के दोषो पर दृष्टि डालना बडी अल्पदर्शिता है।

शेर

'दुष्ट अन्य लोगो के ही दोष देखता है,
कूज़े से वही निकलता है जो उसमें होता है।'

(४९२) हे ऐश्वर्य एव गौरव के स्वामी ईश्वर! हम सब को अनुचित एव दोषपूर्ण बातो से सुरक्षित रख। क्योंकि इस सकलन के समय मेरे पास विद्वान् कवियो के दीवान न थे अत सक्षिप्त रूप में इन थोडे से लोगों का उल्लेख कर दिया गया। यदि विश्वास-घाती, अस्थायी अवस्था ने कुछ दिनो का अवकाश दिया और समय ने अपनी प्रकृति के विरुद्ध सहायता की तथा भाग्य ने साथ दिया तो हिन्दुस्तान के प्राचीन एव नवीन कवियों, विशेष रूप से जिनके विषय में मैंने अपने समय मे सुना अथवा जिनसे मैंने भेंट की है, उनका हाल एव उनके शेरो को पृथक् लिखूँगा।

मेरा कार्य प्रयत्न करना है, और उसे पूरा करना ईश्वर पर है। लेखक की स्मृति स्वरूप इतना ही पर्याप्त है।

क़ितआ

'यदि हम जीवित रहे तो हम सी लेगे,
वह वस्त्र जो वियाग के कारण फट चुका है।
यदि हम मर गए तो हमारी क्षमा-प्रार्थना स्वीकार कर ले,
बहुत सी आकाक्षायें थी, जो मिट्टी मे मिल गई।'

गुलशने इबराहीमी

अथवा

तारीखे फ़िरिश्ता

मक़ाला २

(लेखक—मुहम्मद क़ासिम हिन्दू शाह अस्तराबादी फिरिश्ता)

(प्रकाशन—नवल किशोर प्रेस लखनऊ)

हिन्दुस्तान के विशाल राज्य पर नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायू बादशाह का प्रथम बार सिंहासनारोहण और उस सफल बादशाह के राज्य-काल की घटनायें और शेर शाह अफगान के प्रभुत्व के कारण उनका ईरान के शाह के पास प्रस्थान

वह बादशाह स्वभाव के लालित्य एव सहृदयता से सुशोभित था। उन्हे आनन्द मगल का फर्श बिछवाने से बडी रुचि थी[1]। उन्हे गणित एव ज्योतिप का अत्यधिक ज्ञान था। उन्होंने एक ऐसा गुलोब तैयार कराया था जिसमे पचभूत एव आकाशो का वर्गीकरण मूर्तिमान् किया था और उन्हें उचित रगो से रगाया था। प्रत्येक आकाश मे उसके उडुगण लगवाये थे। इसी प्रकार उन्होंने सात सभाओं का आयोजन कराया। प्रथम सभा में, जो चन्द्रमा से सम्बन्धित थी, राजदूत, यात्री एव सदेशवाहक रक्खे जाते थे, दूसरी सभा में जो बुध ग्रह से सम्बन्धित थी, वृद्ध एव उन्ही के जैसे रक्खे जाते थे, शेप का विभाजन इसी प्रकार समझ लेना चाहिये। इन सातो सभाओं में से प्रत्येक अपनी सभा के अनुरूप वस्त्र धारण करता था। हजरत जन्नत आशियानी सप्ताह का प्रत्येक दिन इन्ही सभाओं में से एक-एक में व्यतीत करते थे[2]। इस ग्रथ में उनका सम्मानित नाम प्राय जन्नत आशियानी लिखा जायगा।

१ आनन्द मंगल के आयोजन से बडी रुचि थी।

२ हुमायूं के आविष्कारों के लिए कानूने हुमायूनी देखिये। [रिजवी मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १, पृ० ३७१-४३५]।

भाइयों को राज्य प्रदान करना

संक्षेप में, जब सिक्के एवं खुत्बे का उनके मुबारक नाम एवं उनकी सम्मानित उपाधि द्वारा शोभा प्राप्त हो गई तो उनका भाई कामरान मीर्ज़ा पंजाब के राज्य पर अधिकार जमाने के लोभ में कुशल समाचार पूछने एवं बधाई देने के बहाने से हिन्द की ओर रवाना हुआ। जन्नत आशियानी ने अपने सौजन्य के कारण पूर्ण रूप से उपेक्षा करते हुए उसे मिलाये रखने का प्रयत्न किया। काबुल, कन्धार एवं बाग़ियान में, पंजाब, पेशावर एवं लमग़ान की वृद्धि करके उन क्षेत्रों के अक्ता एवं शासन प्रबन्ध का फ़रमान कामरान मीर्ज़ा के लिये भेज दिया। मीर्ज़ा हिन्दाल को मेवात की विलायत एवं मीर्ज़ा अस्करी को सम्भल की विलायत प्रदान की।

प्रारम्भिक आक्रमण

९३८ हि० (१५३१–३२ ई०) में उन्होंने कालिंजर के क़िले पर चढ़ाई करके उसे घेर लिया किन्तु उसी बीच में महमूद ख़ाँ वल्द सुल्तान सिकन्दर लोधी[1] ने बिबन अफ़ग़ान को मिलाकर जौनपुर पर अधिकार जमा लिया था और विद्रोह की अग्नि प्रज्वलित कर दी थी। विवश होकर कालिंजर के राय से पेशकश वसूल करके वे शीघ्रातिशीघ्र जौनपुर की ओर रवाना हुए और घोर युद्ध के उपरान्त अफ़ग़ानों को पराजित कर दिया। पूर्व की भाँति उस ओर का राज्य सुल्तान जुनैद बरलास को सौंप कर वे आगरा लौट आये और एक भव्य जश्न का आयोजन कराया। निज़ामुद्दीन अहमद बख़्शी के कथनानुसार १२०० व्यक्तियों को इनाम एवं ख़िल्अत द्वारा सम्मानित किया। उनमें से दो हज़ार व्यक्तियों को जड़ाऊ तुकमों के बालापोश प्रदान किये। जश्न एवं दावत से मुक्ति पाकर उन्होंने शेर ख़ाँ के पास आदमी भेज कर चुनार के क़िले (पर अधिकार जमाने) की माँग की। जब उसने यह बात स्वीकार न की तो वे उस ओर रवाना हुए।

मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा का विद्रोह

क्योंकि उसी समय सुल्तान बहादुर शाह गुजराती ने विद्रोह कर दिया अतः बादशाह चुनार के क़िले को शेर ख़ाँ को सौंप कर तथा एक प्रकार की सन्धि करके (वहाँ से) लौट आये। वे अभी आगरा पहुँच भी न थे कि कुतुब ख़ाँ वल्द शेर ख़ाँ, जो अपने पिता की ओर से हज़रत जहाँबानी की सौभाग्यशाली रिकाब के साथ था, चुनार की ओर भाग गया। सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के पौत्र मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा ने यह योजना बनाई कि चग़ताई अमीरों को मिलाकर, जन्नत आशियानी को बीच से हटा दे और स्वयं बादशाह बन जाय। जब हज़रत जहाँबानी को इस बात का पता चला तो उन्होंने एक बार उसके अपराध क्षमा कर दिये और क़ुरान शरीफ़ की शपथ लेकर कुछ न कहा। संक्षेप में, इस कारण कि उसे उपद्रव एवं विद्रोह (की प्रवृत्ति) अपने पिता से उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त हुई थी, वह अपने ऊपर नियंत्रण न रख सका और पुनः विरोध करने लगा। इस बार (हज़रत जन्नत आशियानी ने) उसे बन्दी बना कर यादगार बेग तग़ाई को इस आशय से सौंप दिया कि वह उसे ब्याना के क़िले में बन्दी बना दे। सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा के नाती मुहम्मद सुल्तान एवं नख़वत[2]

१ फ़िरिश्ता ने प्रायः 'लोधी' लिखा है।
२ वली ख़ूब मीर्ज़ा।

सुल्तान के विषय में, जो प्रतिष्ठित अमीरों एवं समकालीन मुग़ल सुल्तानों में से थे और मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा से मिले हुए थे, आदेश दिया कि दोनों की आँखों में सलाई फेर दी जाय। जिस व्यक्ति को यह कार्य सौंपा गया था, उसने नख़वत सुल्तान को अन्धा बना दिया और मुहम्मद सुल्तान की ओर से उपेक्षा की और उसकी आँखों की पुतलियों को हानि न पहुँचाई। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा यादगार बेग के सेवकों को मिला कर उस किले से गुजरात की ओर भाग गया। मुहम्मद सुल्तान भी जो अंधा बना हुआ घर में पड़ा रहता था, एक समूह को अपने साथ मिला कर अपने पुत्रों, उलुग मीर्ज़ा एवं शाह मीर्ज़ा के साथ कन्नौज की ओर भाग गया। वहाँ के थोड़े से भाग अपने अधिकार में करके ५–६ हज़ार मुग़लों, अफ़ग़ानों एवं राजपूतों को एकत्र कर लिया।

हुमायूँ का ग्वालियर की ओर प्रस्थान

जन्नत आशियानी ने सर्वप्रथम बहादुर शाह के पास आदमी भेज कर मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा को माँगा। उसके अभिमान से परिपूर्ण अनुचित शब्दों का प्रयोग करने के कारण (हज़रत जहाँबानी ने) उसे दंड देने का संकल्प करके (युद्ध की) तैयारी प्रारम्भ कर दी[1]। इसी बीच में बहादुर शाह ने चित्तौड़ के किले पर चढ़ाई कर दी। उस किले के हाकिम ने राणा विक्रमाजीत[2] के पास से सेना[3] मंगवा कर (हज़रत जहाँबानी से) सहायता माँगी। हज़रत जहाँबानी राजधानी देहली से बहादुर शाह को दंड देने एवं राणा की सहायता हेतु रवाना हुए। जब वे ग्वालियर पहुँच गए तो समय की आवश्यकता के कारण दो मास तक ठहरे रहे। अन्ततोगत्वा आगरा वापस चले गए। राणा ने सहायता की ओर से निराश होकर बहादुर शाह को जड़ाऊ ताज एवं अन्य पेशकश देकर किले

१ मकाला ४ गुजरात के सुल्तानों के इतिहास में फ़िरिश्ता ने इस घटना का उल्लेख इस प्रकार किया है "९४० हि० (१५३३ ३४ ई०) में मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा, जो ब्याना के किले में बन्दी था, जन्नत आशियानी नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ पादशाह के पास से भाग कर सुल्तान बहादुर की सेवा में फ़रियाद लेकर पहुँचा। मुहम्मद हुमायूँ पादशाह ने बहादुर शाह के पास आदमी भेजकर मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा की माँग की। सुल्तान बहादुर ने अभिमानवश उत्तर न दिया। हुमायूँ पादशाह ने उसे पुन पत्र लिखा कि 'यदि तू मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा को मेरे पास नहीं भेजता तो अपने राज्य से निर्वासित कर दे।' सुल्तान बहादुर शाह, जिसका भाग्य पलट चुका था, अपने आपको भूल गया और पत्र का उत्तर लिखने की चिन्ता न की और ऐसी बातें कहीं जो उसकी स्थिति के अनुकूल न थीं। यही बात उसके विनाश का कारण बन गई। संक्षेप में सुल्तान बहादुर, नसीरुद्दीन मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा का अत्यधिक आदर सम्मान करने लगा। जब वह चित्तौड़ पहुँचा तो राणा क़िले में बन्द हो गया। तीन मास तक अवरोध होता रहा। प्राय दोनों ओर से वीर योद्धा युद्ध के लिये तैयार होकर निकलते और रणक्षेत्र में पहुँच कर वीरता एवं पौरुष प्रदर्शित करते। अधिकांश समय गुजरात वालों को विजय तथा सफलता प्राप्त होती। अन्ततोगत्वा राणा ने दीनता प्रदर्शित करके पेशकश अदा करना स्वीकार कर लिया। ताज एवं जड़ाऊ पेटी जो उसने मालवा के हाकिम सुल्तान महमूद ख़लजी से प्राप्त की थी, अत्यधिक घोड़े हाथी एवं उत्तम उपहार सहित गुजरात के पादशाह को देकर लौटा दिया। इस विजय, मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा के आगमन एवं पादशाह बहलोल लोधी की सन्तान के उसके पास एकत्र हो जाने के कारण उसका अभिमान बहुत बढ़ गया और उसने हज़रत जन्नत आशियानी नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ पादशाह से युद्ध करने और देहली के राज्य पर अधिकार जमाने पर प्रेरित किया। (तारीख़े फ़िरिश्ता मक़ाला ४, पृ० २२२)।

२ विक्रमादित्य।

३ यह शब्द स्पष्ट नहीं। मूल में 'पनाह आवुर्द (शरण लेकर)' किन्तु सम्भवत 'सिपाह आवुर्द' से तात्पर्य है।

(२१४) का अवरोध के कष्ट से मुक्त करा लिया। बहादुरशाह का इस अभियान की विजय के कारण अभिमान अत्यधिक बढ गया और उसने मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा को अपार सम्मान प्रदान किया।

अलाउद्दीन की पराजय

इसी प्रकार वह अलाउद्दीन वल्द बादशाह बहलोल लोदी को, जो उसके पास था, शक्ति बढा कर देहली को विजय करने की योजना बनाने लगा। तातार खा वल्द अलाउद्दीन को सिपहसालार बना कर आस पास के ४० हज़ार अफगान अश्वारोहियों को हज़रत जहाँबानी की विलायत के विरुद्ध नियुक्त किया। उसने अल्प समय में ब्याना के किले को विजय कर लिया और आगरा के पास तक अफगान सवार धावे मारने लगे। बादशाह ने मीर्ज़ा हिन्दाल को मुग़ल अमीरों की एक सेना देकर तातार खा को पराजित करने का आदेश दिया। मुग़ल सेना के प्रस्थान के समाचार पाकर शत्रुओं की अधिकांश सेना भय के कारण छिन्न भिन्न हो गई। तातार खा के पास जब कोई अन्य उपाय न रह गया तो उसने विवश होकर १० हज़ार व्यक्तियों सहित मीर्ज़ा हिन्दाल से युद्ध करना निश्चय किया। वह पराजित हुआ और ३०० अफगान सरदारों सहित मार डाला गया। मीर्ज़ा हिन्दाल ने ब्याना के किले पर भी विजय प्राप्त कर ली और विजय एवं सफलता प्राप्त करके लौट गया[1]।

दीन पनाह का निर्माण

बहादुरशाह गुजरातीने ९४० हि० (१५३३ ३४ ई०) में चित्तौड को विजय करने का सकल्प करके उस ओर चढाई की। जन्नत आशियानी ने सावधानी की दृष्टि से देहली में यमुना तट पर एक बडे ही दृढ किले का निर्माण कराया और उसका नाम दीन पनाह रक्खा।

हुमायूं का गुजरात की ओर प्रस्थान

जब किला तैयार हो गया तो उन्होंने उसे विश्वस्त लोगों को सौंप कर मारगपुर की ओर,

---

१ **तारीखे फिरिश्ता** मक़ाला ४ में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है 'सुल्तान बहादुर ने शाह बहलोल लोदी की एक औलाद को जिसका नाम सुल्तान अलाउद्दीन था, अत्यधिक आदर सम्मान प्रदान किया। उसके पुत्र तातार ख़ाँ को अमीर नियुक्त कर दिया। देहली के राज्य को अधिकार में किये बिना उसे अपने दरबारियों में बाँट दिया। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु तातार ख़ां को जो वीरता एवं पौरुष में अपने समकालीनों से श्रेष्ठ था, आश्रय प्रदान करके आसीर के किले के हाकिम बुरहानुल मुल्क को ३० करोड़ मुज़फ़्फ़री, तातार ख़ां के परामर्श से सेना पर व्यय करने के लिये प्रदान कीं। इस प्रकार अल्प समय में लगभग ४० हज़ार अश्वारोही तातार ख़ां के पास एकत्र हो गये। उसने जन्नत आशियानी नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूं पादशाह के राज्य के चारों ओर धावे मारना प्रारम्भ कर दिया। ब्याना का किला, जो आगरा के समीप है, ९४१ हि० (१५३४ ३५ ई०) में अधिकार में कर लिया। जन्नत आशियानी नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूं पादशाह ने अपने भाई हिंदाल मीर्ज़ा को उससे युद्ध करने के लिये भेजा। जब वह ब्याना के समीप पहुँचा तो जो अफ़ग़ान लोग दीर्घ मार-मार कर तातार ख़ा के पास एकत्र हो गये थे छिन्न भिन्न हो गये। उसके पास २,००० अश्वारोहियों से अधिक न रहे। तातार ख़ा कृतघ्न सेना पर अत्यधिक धन व्यय कर देने की लज्जा एवं पश्चाताप में, बहादुर शाह की सेवा में न जा सका और विवश होकर युद्ध हेतु तैयार हो गया। जब दोनों सेनाओं का सामना हुआ तो उसने हिंदाल मीर्ज़ा के लश्कर के मध्य भाग पर आक्रमण किया। ३०० प्रसिद्ध अफ़ग़ानों सहित मारा गया और ब्याना का किला हिंदाल मीर्ज़ा के अधिकार में आ गया।'

जो गुजरात के बादशाह के अधीनस्थ था, प्रस्थान किया और इन दो शेरों की रचना करके उसके पास भेजा :

कितआ

'हे वह ! जो चित्तौड नगर का शत्रु है,
तू काफिरों को किस प्रकार वश में कर सकता है।
बादशाह तेरे सिर पर पहुँच गया,
तू बैठा चित्तौड ले रहा है।'

बहादुर शाह ने नरमी न दिखाई और उत्तर मे लिखा .

कितआ

'मैं हूँ, चित्तौड नगर का शत्रु,
काफिरों को जबरदस्ती वश में कर लूंगा।
जो कि चित्तौड की सहायता करता है,
तू देख किस प्रकार उसे अधिकार में करता हूँ।'

कहा जाता है कि बहादुर शाह ने अनुचित उत्तर भेजने के उपरान्त अपने विश्वासपात्रो परामर्श किया। अधिकाश लोगों ने कहा कि जनत आशियानी बहुत बडे बादशाह है। सर्वप्रथ उनसे युद्ध के कार्य से मुक्ति प्राप्त कर लेनी चाहिये, तब फिर किले को विजय करने का प्रयत करना चाहिये। कुछ[1] लोगों ने कहा कि "हुमायू बादशाह शरा का अत्यधिक ध्यान रखता है औ काफिरों की सहायता की बदनामी मे डर कर हमपर आक्रमण न करेगा अत यह अच्छा होगा ि काफिरों के किले की विजय का कार्य, जिसे हम दीर्घ काल से घेरे हैं, समाप्त कर लें और किले प विजय प्राप्त कर लेने के उपरान्त अन्य कार्य करे।" बहादुर शाह ने इसी बात का समर्थन करके ज लोग किले में घिरे हुए थे, उन्हे अत्यधिक कष्ट देना शुरू किया। जनत आशियानी को जब इस बा का पता चला तो वे इतने समय तक सारगपुर में ठहरे रहे जब तक बहादुर शाह ने किला विजय क लिया।

बहादुर शाह का हुमायूं से युद्ध हेतु प्रस्थान

क्योंकि उसके भाग्य का पतन प्रारम्भ हो गया था अत उसने किसी प्रकार कोई नम्रता प्रदर्शित की और देहली के बादशाह से युद्ध हेतु तैयार हो गया। ९४१ हि० (१५३४ ई०) निरन्तर यात्रा करता हुआ हजरत जहाँबानी के लश्कर की ओर रवाना हुआ और अपने आप क विनाश के समीप पहुँचा दिया। जनत आशियानी ने उसके प्रति ऐसा सौजन्य प्रदर्शित किया था ि उन्हे इस बात की कल्पना न थी कि वह इतनी धृष्टता करेगा। वे इस समाचार को सुनकर अत्य

१ तारीखे फिरिश्ता मकाला ४ में इस प्रकार है, "अधिकांश अमीरों ने यह परामर्श दिया कि अवरोध त्याग क उनसे युद्ध करने के लिये जाना चाहिये। हैदर खा (सद्र खा होना चाहिये), जो अमीरों में सर्वश्रेष्ठ था, ने निवे किया कि 'हम लोग काफिरों को घेरे हैं। यदि इस समय मुसलमानों का बादशाह हमसे युद्ध हेतु आयेगा यह बात काफिरों की सहायता समझी जायगी और क़यामत तक मुसलमानों में इसकी चर्चा होती रहेगी राज्य के लिये यही उचित है कि हम अवरोध न त्यागें और अधिक विश्वास यही है कि वे हमपर आक्रमण करेंगे।" (तारीखे फिरिश्ता, पृ० २२२ २२३)।

धिक क्रोधित हुए और उससे युद्ध हेतु बढे। मन्दसोर[1] के उपान्त में दोनो सेनाओं का आमना सामना हुआ। बहादुर शाह ने, जिसने बहुत बडा तोपखाना एकत्र कर लिया था, रूमी खा के जिसे उसके तोपखाने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था, सुझाव पर लश्कर के चारो ओर खाई खुदवा दी और अतशबाज़ी[2] की गाडियाँ लश्कर के चारो ओर लगवा दी। इतनी तैयारी के उपरात दो मास तक वह चगताई सेना के सामने डटा रहा और हर रोज युद्ध कराता था। उसका उद्देश्य यह था कि मुग़ुल सेना को तोपखाने के सामने लाकर नष्ट करा दे किन्तु चगताई उलूस[3] का शासक यह चाल समझ गया। उन्होने अपने अमीरो एव सैनिको का आदेश दे दिया था कि वे तोपखाने के समक्ष न जायें और ५–६ हज़ार धनुधर मुग़ुलो को, जिन्हे युद्ध का पर्याप्त अनुभव था, आदेश दे दिया कि वे छापा मारते रहे और गुजरात के लश्कर के आस पास के स्थानो का नष्ट कर दें ताकि अनाज एव खाद्य सामग्री उन लोगो तक न पहुँचने पाय। इस कारण गुजरात की सेना मे घोर अकाल पड गया। बहुत बडी सख्या में घोडे, ऊँट, हाथी एव मनुष्य भोजन के अभाव के कारण नष्ट हो गये[4]।

१ २४°५ उत्तर तथा ७५°१५' पूर्व सिवाना नदी के, जो सिगरा नदी की एक शाखा है, तट पर। यह उज्जैन के उत्तर पश्चिम में लगभग ८० मील पर है। (*Gwaliar State Gazetteer*, Vol I, 1908, Pp 265 266)।

२ तोप।

३ क़बीले।

४ **तारीखे फ़िरिश्ता** मकाला ४ में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है, 'उस ओर (चित्तौड़) के युद्ध की ओर से निश्चिन्त होकर, जन्नत आशियानी नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ पादशाह से युद्ध हेतु रवाना हुआ। मदसौर के क़िले के उपान्त में दोनों सेनाओं का मुकाबला हुआ। अभी ख़ेमे भी न लगे थे कि सैयिद अली खाँ ख़ुरासानी, जो सुल्तान बहादुर की सेना के अग्र भाग में था गुजरात के लश्कर से भाग कर जन्नत आशियानी की विजयी सेना से मिल गया। यह देख कर गुजरातियों के हृदय टूट गये अत सुल्तान बहादुर शाह ने अपने अनुभवी अमीरों एव सरदारों से युद्ध करने की विधि के विषय में परामर्श किया। हैदर खाँ (सद्र खाँ होना चाहिये) ने कहा, 'कल युद्ध कर देना चाहिये कारण कि हमारी सेना वालों के हृदय चित्तौड विजय के कारण बढे हुये हैं। अभी तक उनकी दृष्टि मुग़ुल सेना के ऐश्वर्य पर नहीं पड़ी है' रूमी खाँ ने, जिसे तोपखाने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था, निवेदन किया कि, 'सरकार में अत्यधिक तोपें एव बन्दूकें एकत्र हैं। पता नहीं कि रूम के क़ैसर के अतिरिक्त किसी के पास (इतना बड़ा तोपख़ाना) है या नहीं। यह उचित होगा कि लश्कर के चारों ओर खाई खोद कर रोज़ाना युद्ध होता रहे ताकि मुग़ुल योद्धा तोपों के सामने आकर नष्ट होते रहें।' बहादुर शाह को यह राय पसन्द आ गई। उसने लश्कर के चारों ओर खाई खुदवा दी। इन्हीं दिनों में कालपी का सुल्तान आलम, जिसे बहादुर शाह ने राय सेन, चन्देरी एव उस सूबे को जागीर में दे दिया था, बहुत बड़ी सेना सहित उससे आकर मिल गया। दो मास तक दोनों सेनायें एक दूसरे के आमने सामने पड़ाव किये रहीं। प्राय युद्ध प्रिय वीर एव योद्धा यश एव नाम की इच्छा में निकल निकल कर बहादुरी से युद्ध करते थे। मुग़ुल सैनिक अपने बादशाह के आदेशानुसार तोप व बन्दूक के सामने बहुत कम जाते थे। ३ ४ हज़ार धनुधर (बहादुर शाह के) शिविर के चारों ओर धावे मारते थे। अनाज एवं घी तेल के आगमन का मार्ग पूर्णत बन्द हो गया। जब कुछ समय इसी प्रकार व्यतीत हो गया तो गुजरात वालों की सेना में घोर अकाल पड़ गया। जो चारा निकट था वह समाप्त हो गया। मुग़ुल सेना के धनुर्धरों के प्रभुत्व के कारण किसी को शिविर से दूर जा कर अनाज एवं चारा लाने का साहस न होता था।" (तारीख़ फ़िरिश्ता मक़ाला ४, पृ० २२१)।

बहादुर शाह ने जब यह देखा कि और अधिक ठहरे रहने से फँस जायगा तो विवश होकर रात्रि के समय अपने पाँच विश्वासपात्रों को लेकर, जिनमें बुरहानपुर का हाकिम मुबारक शाह फारुकी, मालवा का शासक कादिर शाह एव सद्रे जहाँ खाँ सम्मिलित थे, सरापरदे के पीछे से बाहर निकला और शादियाबाद मन्दू की ओर भाग गया। जब उसकी सेना वालों को इस बात का पता चला तो वे लोग बडी ही बुरी दशा में इधर-उधर छिन्न भिन्न हो गये।

हुमायूँ द्वारा बहादुर शाह का पीछा

तदुपरान्त हजरत जहाँबानी ने सौभाग्य की रिकाब में पाँव रखकर मन्दू के किले तक उसका पीछा किया। जो कोई भी दिखाई पड जाता नष्ट कर दिया जाता था। जब बहादुर शाह गुजराती किले में बन्द हो गया और मुगुलों द्वारा किले के अवरोध में अधिक समय लग गया, तो जन्नत आशियानी ने मोर्चे बाँट दिये और अवरोध में प्रयत्नशील हो गये। कुछ समय उपरान्त एक रात में ३,०० मुगुल किले में प्रविष्ट हो गये। गुजरातियों के हृदय में मुगुलों का आतक आरूढ हो चुका था। वे उनकी सख्या का पता लगायें बिना भाग खडे हुए। बहादुर शाह गुजराती भी जाग उठा। जब उसने स्थिति को गम्भीर पाया तो वह भी भाग खडा हुआ और चाम्पानीर की ओर जो उन दिनों गुजरातियो की राजधानी हो गया था, ५–६ हजार अश्वारोहियों के साथ चल दिया। सद्रे जहाँ खा, जो बडा ही विद्वान् एव उसका अमीरुल उमरा था, उस समय जब कि उसका पीछा किया जा रहा था, बुरी तरह घायल हो गया था, अपने आप में भागने की शक्ति न पाकर, सुगर में जो मन्दू के किले का अरक है, प्रविष्ट हो गया। दूसरे दिन अमान माँग कर बाहर निकला और किला दरबार के सेवकों को समर्पित कर दिया। जन्नत आशियानी उसकी वीरता देख चुके थे अत उन्होंने उसे (२१५) अपना सेवक बना लिया और वह उनके विश्वासपात्रों में हो गया[1]।

सद्रे जहाँ की वीरता

जिस समय हुमायूँ बादशाह (बहादुर शाह का) बिना किसी चीज की चिन्ता किये हुए बुरी तरह पीछा कर रहे थे, सैलाब की भाँति बडे वेग से उन्हे एक दिन बहादुर शाह की सेना दिखाई पडी, उन्होने अपने वीरों के एक समूह के साथ उन पर आक्रमण किया। सद्रे जहाँ खा ने अपने आपको अपने स्वामी की ढाल बनाकर जन्नत आशियानी का मुकाबला किया और इतना घोर युद्ध किया कि बहादुर शाह को अवसर मिल गया और वह निकल गया। कहा जाता है कि उस समय जन्नत आशियानी स्वय युद्ध कर रहे थे और उन्होने सद्रे जहाँ का मुकाबला किया। तलवार द्वारा विवश करके उसे भगा दिया।

हुमायूँ द्वारा खम्बायत तक बहादुर शाह का पीछा

सक्षेप में, बादशाह मन्दू का गगन-चुम्बी किला दरबार के सेवकों को सौंप कर तीन दिन उपरान्त बहादुर शाह गुजराती के पीछे रवाना हुए। बहादुर शाह मुहमदाबाद चाम्पानीर के किले से जितना सोना एव जवाहरात ले जा सकता था, लेकर वहाँ से भी अहमदाबाद की ओर भाग गया।

१ तारीखे फिरिश्ता मकाला ४ में सुलतान आलम के विषय में भी यह उल्लेख है : "क्योंकि राय सेन के हाकिम सुल्तान आलम ने अनुचित व्यवहार किये थे अत जन्नत आशियानी नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ पादशाह के आदेशानुसार उसकी एडी की नस कटवा दी गई"। (तारीखे फिरिश्ता मकाला ४, पृ० २२३)।

हज़रत जहाँबानी ने चाम्पानीर के नगर को नष्ट भ्रष्ट कर डाला और दौल्त ख्वाजा बरलास को मुहमदाबाद के क़िले का अवरोध करने के लिये नियुक्त करके स्वयं अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया। बहादुर शाह गुजराती यह समाचार पाकर खम्बायत नगर की ओर पहुँचा। जब बादशाह[१] ने अपने सकल्प की लगाम उस ओर भी मोडी तो बहादुर शाह व्याकुल होकर डियु द्वीप की ओर भाग खडा हुआ। जन्नत आशियानी, जिस दिन उसने खम्बायत से पलायन किया था, उसी दिन खम्बायत में प्रविष्ट हुए और वहाँ दो दिन ठहरे रहे।

चम्पानीर की विजय

जब उन्हें ज्ञात हुआ कि गुजरातियों का उत्तम खज़ाना चाम्पानीर में है तो वे पुन उस ओर लौटे और चाम्पानीर का अवरोध कर लिया। किले के अधीक्षक इख़्तियार खा ने किले की प्रतिरक्षा का पूर्ण प्रवन्ध करके (आक्रमणकारियों) से बचाने का प्रयत्न किया। यद्यपि किले में कई वर्ष की खाद्य सामग्री थी किन्तु लोभ के कारण, जो मानव की विशेषता है, किले के एक ओर से जिसके नीचे घना जगल था, ज़मींदारों द्वारा घी-तेल, अनाज एव घास, रस्सियों से खिचवाया करता था। एक दिन बादशाह किले के चारो ओर चक्कर लगा रहे थे। अचानक उनकी दृष्टि कुछ लोगों पर पडी जो जगल से निकल रहे थे। वे लोग लश्कर को देख कर भय के कारण पुन जगल में प्रविष्ट हो गये। (हज़रत जहाँबानी ने) कुछ लोगों को उनका पीछा करने का आदेश दिया। वे लोग कुछ आदमियों को बन्दी बना लाये। जब उन्हें स्थिति का ज्ञान हुआ तो वे स्वय उस स्थान पर जहाँ से अनाज ऊपर खीचा जा रहा था, पहुँचे और सावधानी से उस स्थान का निरीक्षण करके शिविर मे लौट आये। अत्यधिक लोहे के खूँटे एकत्र कराये। एक उजाली रात में किले की हर दिशा में युद्ध छेड दिया और स्वय ३,०० व्यक्तियों सहित उसी निश्चित स्थान पर पहुँचे और लोहे के खूँटे दायीं एव बाईं ओर उस पर्वत में दृढतापूर्वक ठुकवा दिये। क्योंकि किले वाले उस दिशा की ओर से पूर्ण रूप से निश्चिन्त थे, अत उन्हे ज़रा भी सूचना न हुई। सर्वप्रथम ३९ व्यक्ति जिनमे अन्तिम बैरम खा था, ऊपर चढ गये। उस समय बादशाह भी सवार हुए। सूर्य के उदय होते होते सब के सब शेष ३०० व्यक्ति किले पर चढ गये। उस समय आदेशानुसार समस्त सेना ने किले पर कठोर आक्रमण किया। हज़रत जहाँबानी ने उस समय इतना अधिक परिश्रम किया जितना विरले ही किसी बादशाह ने किया होगा। वे किले पर से तकबीर[२] कहते हुए द्वार की ओर रवाना हुये और लश्कर वालो के लिये द्वार खोल दिया। इस प्रकार इतना दृढ किला विजय कर लिया और मुग़ की तख़्ती पर वीरता (की प्रशसा) लिखवा ली। उस दिन इख़्तियार खा एव उसके सम्बन्धियों के अतिरिक्त, जो मूलिया नामक किले के अरक में प्रविष्ट हो गये थे, शेष सभी मार डाले गये। इख़्तियार खा हताश होकर अमान माँग कर बाहर निकला। क्योंकि वह गुजरात वालों मे अपनी योग्यता के लिये प्रसिद्ध था, अत उसे शिक्षा दीक्षा के उपरान्त विशेष गोष्ठी के नदीमों[३] में सम्मिलित कर लिया गया। गुजरात के बादशाहों के खज़ाने, जो वर्षों से एकत्र हुए थे, (हज़रत जहाँबानी) के अधिकार में आ

१ हुमायूँ।
२ अल्लाहो अकबर का नारा।
३ सहचर, मुसाहिब।

गये। सोना ढालों में भर-भर कर बाँटा गया। रूम, फिरंग, खिता एवं हिन्द के वस्त्र तथा उत्तम वस्तुयें, जो उस सरकार में जमा थीं, नष्ट भ्रष्ट हो गईं।

एमादुल मुल्क का मालगुज़ारी वसूल करने अहमदाबाद की ओर प्रस्थान

जब बहादुर शाह डियू बन्दरगाह में पहुँचा तो उसने एमादुल मुल्क चरकस को, जो चिंगीज़ खाँ मक्तूल का पिता था, मालगुज़ारी एवं कर वसूल करने और लश्कर एकत्र करने के उद्देश्य से अहमदाबाद की ओर भेजा। उसने अहमदाबाद में ठहर कर अल्प समय में लगभग ५०,००० व्यक्ति एकत्र कर लिये और विलायत[1] की मालगुज़ारी एवं कर वसूल करने के कारण उसकी शक्ति में नित्य प्रति वृद्धि होने लगी। इस कारण हज़रत जहाँबानी, चाम्पानीर एवं उस क्षेत्र के किले का शासन प्रबन्ध तरदी बेग मुग़ुल को सौंप कर स्वयं अहमदाबाद की ओर रवाना हुए। महमूदाबाद क़स्बे के समीप, एमादुल मुल्क ने मीर्ज़ा असकरी से, जो चग़ताई लश्कर का मुक़द्दमा[2] था, युद्ध किया किन्तु बुरी तरह पराजित हुआ। बादशाह अहमदाबाद, जिसके विषय में निम्नांकित आयत कही जा सकती है, "नहीं पैदा किया गया उसके समान शहरों में", में प्रविष्ट हुये और वहाँ की हुकूमत मीर्ज़ा अस्करी को सौंप दी[3]। इसी प्रकार गुजरात के स्थान किसी न किसी अमीर को सौंप कर बुरहानपुर की विजय हेतु रवाना हुये। बुरहान निज़ाम शाह, एमाद शाह एवं दक्खिन के अन्य हाकिमों ने व्याकुल होकर इस आशय के प्रार्थना पत्र प्रेषित किये कि वे खान्देश की विलायत को विजय न करें, किन्तु अभी उन प्रार्थना-पत्रों का उन्होंने अध्ययन भी न किया था कि शेर खाँ अफ़ग़ान की दुष्टता के समाचार प्रसिद्ध होने लगे। जन्नत आशियानी बुरहानपुर के निकट पहुँचे और उस राज्य को तहस नहस करके मन्दू में प्रविष्ट हुए।

१ राज्य।

२ अग्र दल।

३ तारीख़े फ़िरिश्ता मक़ाला ४ में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार है—"९४३ हि० के प्रारम्भ (१५३६ ई० के मध्य) में यद्यपि जन्नत आशियानी महमदाबाद चम्पानीर में थे, गुजरात की प्रजा के प्रार्थना पत्र सुल्तान बहादुर को निरन्तर प्राप्त होने लगे कि, 'यदि आप अपने सेवकों में से किसी को मालगुज़ारी वसूल करने के लिये नियुक्त कर दें तो जो मालगुज़ारी अदा करनी है, उसे ख़ज़ाने में पहुँचा दिया जायगा।' सुल्तान बहादुर ने अपने दास एमादुल मुल्क को, जो अत्यधिक वीरता एवं सूझ-बूझ के लिये प्रसिद्ध था, अत्यधिक सेना सहित राज्य की मालगुज़ारी वसूल करने के लिये भेजा। एमादुल मुल्क सेना एकत्र करने लगा। कहा जाता है कि उसने ५०,००० व्यक्ति ले कर अहमदाबाद के समीप पड़ाव कर दिया। वहाँ से आस पास आमिल (कर वसूल करने वाले) भेज कर मालगुज़ारी वसूल करने लगा। जब जन्नत आशियानी नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ को यह समाचार प्राप्त हुये तो वे ख़ज़ानों की रक्षा अपने एक प्रतिष्ठित एवं विश्वस्त अमीर तरदी बेग को सौंप कर महमदाबाद चम्पानीर से अहमदाबाद की ओर रवाना हुये। अस्करी मीर्ज़ा को यादगार नासिर मीर्ज़ा एवं मीर्ज़ा हिन्दू बेग के साथ एक मंज़िल आगे भेज दिया। महमूदाबाद के उपान्त में, जो अहमदाबाद से १२ कुरोह पर है, अस्करी मीर्ज़ा से एमादुल मुल्क ने घोर युद्ध किया। एमादुल मुल्क पराजित होकर असंख्य गुजरातियों सहित मार डाला गया। तदुपरान्त जन्नत आशियानी ने अहमदाबाद के समीप पड़ाव किया और वहाँ का राज्य अस्करी मीर्ज़ा को, पटन (गुजरात) यादगार नासिर मीर्ज़ा को, भरौंच क़ासिम हुसेन मीर्ज़ा को, बरौदा हिन्दू बेग क़ूचीन को एवं महमदाबाद चम्पानीर तरदी बेग को सौंप कर बुरहानपुर पहुँचे। वहाँ आवश्यकतावश न ठहर कर शादियाबाद मन्दू की ओर रवाना हुये"। (तारीख़े फ़िरिश्ता मक़ाला ४, पृ० २२४)।

ख्वन्दमीर की मृत्यु

उसी समय हबीबुस्सियर[1] नामक ग्रंथ का लेखक, जो हज़रत जहाँबानी की रिकाब के साथ था, अतिसार के रोग के कारण इस नश्वर संसार से विदा हो गया और उसकी वसीअत के अनुसार उसकी लाश देहली ले जाकर शेख निज़ामुद्दीन औलिया एवं अमीर ख़ुसरो के रौज़े के समीप दफ़्न कर दी गई।

मीर्ज़ा अस्करी की महत्वाकांक्षायें

एमादुल मुल्क एवं गुजरात के अन्य अमीर पुनः एकत्र होकर अहमदाबाद एवं उस क्षेत्र (२१६) की ओर रवाना हुए। यादगार नासिर मीर्ज़ा पटन का हाकिम एवं कासिम हुसेन सुल्तान भरौंच का हाकिम, जो कराकुरम[2] सुल्तानों में थे, शत्रुओं के प्रभुत्व के कारण व्याकुल होकर मीर्ज़ा अस्करी के पास पहुँच गये। संयोगवश एक रात्रि में मदिरा पान की गोष्ठी में मीर्ज़ा अस्करी ने कहा कि "हम बादशाह ज़िलाल्लाह[3] हैं।" गज़न्फर ने, जो मीर्ज़ा अस्करी के कोका लोगों में एवं महदी कासिम खाँ का भाई था, धीरे से कहा "हैं, किन्तु मदिरा के नशे में हैं।" जो लोग पास बैठे थे, वे हँसने लगे। जब मीर्ज़ा को हँसने का कारण ज्ञात हुआ तो उसने गज़न्फर कोका को बन्दी बना दिया।

बहादुर शाह का अहमदाबाद की ओर प्रस्थान

वह कुछ दिन उपरान्त मुक्त होकर बहादुर शाह गुजराती के पास डीव नामक द्वीप में पहुँचा और उसे अहमदाबाद पहुँचने के लिये प्रेरित करने लगा। उसने बताया कि मुझे मुग़ुलों की योजना की सूचना है। वे सब भागने पर तुले हुए हैं और बहाना ढूँढ रहे हैं। आप मुझे बन्दी बना कर मुग़ुलों के विरुद्ध प्रस्थान करें। यदि वे युद्ध करें तो आप मेरी हत्या करा दें। बहादुर शाह गुजराती ने सूरत के ज़मींदारों की सहायता से उस देश में अत्यधिक सेना एकत्र की और अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ। उस समय अमीर हिन्दू बेग ने मीर्ज़ा अस्करी से कहा कि, "अपने नाम का ख़ुत्बा एवं सिक्का चलवा कर बादशाही की पताका बलन्द कर दो ताकि सैनिक लोग उम्मीद लगा कर अपने प्राण न्योछावर करें।" यह बात मीर्ज़ा अस्करी की इच्छानुसार थी, किन्तु उस सभा में उसने स्वीकार न किया और उसे अत्यधिक बुरा भला कहा। अमीरों को साथ लेकर अहमदाबाद के बाहर निकला और असावल के पीछे, सरकीज के सामने शिविर लगा दिये। संयोग से मीर्ज़ा का लश्कर जब बहादुर शाह के शिविर के समीप पहुँचा, तो मीर्ज़ा की सेना से तोप का एक गोला ऐसा चला कि बहादुर शाह की बारगाह गिर पड़ी। बहादुर शाह अत्यधिक क्रोधित हुआ और गज़न्फर खाँ को इस आशय से उपस्थित किया गया कि उसकी हत्या करा दी जाय। गज़न्फर कोका ने कहा, "जब तक सेना की पंक्तियाँ सुव्यवस्थित हों, उस समय तक मुझे जीवित रक्खा जाय कारण कि मुझे भली भाँति ज्ञात है कि आज रात में मीर्ज़ा भाग खड़ा होगा।"

१ हबीबुस्सियर का लेखक ख्वन्दमीर था। (मुग़ुल कालीन भारत—बाबर, पृ० ५३ से ५५, ५९९-६०६), उसने क़ानूने हुमायूनी की भी रचना की थी। (मुग़ुल कालीन भारत—हुमायूं, पृ० १ से १७, ३७१-४३५)।

२ मूल में 'कफ़ा व कुरूम'।

३ ईश्वर की छाया।

रात के समय मीर्ज़ा चाम्पानीर का किला एवं बादशाही खज़ाना जो वहाँ था, अपने अधिकार में करने और गुजरात तथा अन्य स्थानों पर भी अपने नाम का खुत्बा एवं सिक्का चलवाने के उद्देश्य से उस ओर रवाना हो गया। बहादुर शाह गुजराती दो-तीन दिन तक पीछा करके लौट आया[1]।

हुमायूँ का आगरा वापस होना

जब तरदी बेग का मीर्ज़ा अस्करी की इच्छा का पता चला तो उसने उसे रोकना एवं किले की प्रतिरक्षा करनी प्रारम्भ कर दी। मीर्ज़ा विजय की ओर से निराश होकर आगरा की ओर रवाना हुआ और सेना एवं परिजन एकत्र करने लगा। जन्नत आशियानी इस भय से कि कहीं वह आगरा पहुँच कर कोई बहुत बड़ा विद्रोह न कर दे, मन्दू की सुव्यवस्था का कार्य त्याग कर निरन्तर यात्रा करते हुए आगरा की ओर रवाना हुये। मीर्ज़ा ने जब देखा कि जन्नत आशियानी स्वयं पधारे हैं तो शैतान के बहकाने एवं कामनाओं द्वारा विवश होने पर, जिसका उपचार सम्भव नहीं, लज्जित होकर, यादगार नासिर मीर्ज़ा, कासिम हुसेन सुल्तान एवं अन्य अमीरों को लेकर जन्नत आशियानी की सेवा में पहुँचा और निवेदन किया कि, "क्योंकि मैं गुजरात का शासन-प्रबन्ध न कर सका अतः इस ओर चला आया।" हज़रत जहाँबानी ने जान बूझ कर उपेक्षा करते हुए कुछ न कहा। तरदी बेग ने भी बहादुर शाह गुजराती से संधि करके किला उसे सौंप दिया और (हज़रत जहाँबानी की सेवा में पहुँचा। मालवा एवं गुजरात सरीखी विलायतें, जो घोर परिश्रम के उपरान्त प्राप्त हुई थी (हज़रत जहाँबानी के) अधिकार से निकल गईं। बादशाही वैभव में विघ्न पड़ गया।

१ इस घटना का उल्लेख तारीखे फ़िरिश्ता मक़ाला ४ में इस प्रकार है :—"इसी बीच में खान जहाँ शीराज़ी ने, जो सुल्तान बहादुर शाह के अमीरों में से था, सेना एकत्र करके नौसारी क़स्बे पर अधिकार जमा लिया। रूमी खाँ सूरत के बन्दरगाह से पहुँच कर खान जहाँ से मिल गया। दोनों मिलकर भरौंच की ओर रवाना हुये। क़ासिम हुसेन मीर्ज़ा मुक़ाबला न कर सका और तरदी बेग खाँ के पास महमदाबाद चम्पानीर चला गया। पूरे गुजरात में उथल पुथल होने लगी। मुग़लों के थाने समाप्त हो गये। उस समय अस्करी मीर्ज़ा का एक अमीर ग़ज़नफ़र बेग भाग कर सुल्तान बहादुर शाह के पास पहुँचा और उसे, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, अहमदाबाद पर आक्रमण करने के लिये प्रेरित किया। जब तरदी बेग खाँ के अतिरिक्त समस्त अमीर अहमदाबाद में एकत्र हुये और सुल्तान बहादुर शाह गुजरात की ओर रवाना हुआ तो अस्करी मीर्ज़ा एवं अन्य अमीरों ने परामर्श करके यह निश्चय किया कि, 'सुल्तान बहादुर का मुक़ाबला करना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव है। जन्नत आशियानी नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ पादशाह शादियाबाद मन्दू में हैं। शेर खाँ अफ़ग़ान ने बंगाल की विलायत में विद्रोह की अग्नि भड़का रक्खी है अतः यह उचित होगा कि महमदाबाद चम्पानीर का ख़ज़ाना लेकर हम लोग आगरा चले जायें और उस क्षेत्र को अपने अधिकार में करके अस्करी मीर्ज़ा के नाम का खुत्बा पढ़वा दें। विज़ारत का पद हिन्दू बेग को प्रदान हो जाय। अन्य मीर्ज़ा लोग जो स्थान चाहें अपने अधिकार में कर लें। यह निश्चय करके गुजरात को, जो इतने परिश्रम से प्राप्त हुआ था, मुफ़्त में खो कर महमदाबाद चम्पानीर की ओर रवाना हुये। जब तरदी बेग खाँ को मीर्ज़ाओं एवं अमीरों की दुष्कल्पनाओं का पता चला तो वह क़िले की दृढ़ता पूर्वक प्रतिरक्षा का प्रयत्न करने लगा। विवश होकर मीर्ज़ा लोग आगरा की ओर रवाना हुये और मर्यादा-हीनता के जंगल की यात्रा करने लगे। सुल्तान बहादुर गुजरात को खाली पाकर तरदी बेग खाँ से युद्ध हेतु महमदाबाद चम्पानीर की ओर रवाना हुआ। तरदी बेग खाँ जितना खज़ाना ले जा सकता था, लेकर आगरा की ओर चल दिया'। (तारीखे फ़िरिश्ता मक़ाला ४, पृ० २२४)।

सुल्तान जुनैद बरलास की मृत्यु

उन दिनो हज़रत जहाँबानी अफीम का अत्यधिक सेवन करने लगे थे। अन्य बातो के अतिरिक्त वे राय एकान्त में रहते और दरबार करना भी कम कर दिया था। ऐसी दशा में जो शत्रु घात में थे, उन्होंने सिर उठाया। इसी बीच में जौनपुर का हाकिम सुल्तान जुनैद बरलास, जो प्रभावशाली अमीरो में से था और पूर्व के समस्त अफ़ग़ानों में से कुछ को तलवार और कुछ को युक्ति एव उपाय द्वारा वश में किये था, ९४३ हि० (१५३६-३७ ई०) में मृत्यु को प्राप्त हो गया।

शेर खाँ का विद्रोह

शेर खा ने, जो अफ़ग़ानो में सर्वश्रेष्ठ था, रोहतास के समीप अपनी शक्ति एव वैभव का प्रदर्शन प्रारम्भ कर दिया। उसकी उद्दडता सीमा से अधिक बढ गई। हज़रत जहाँबानी इसका उपचार अपने प्रस्थान पर अवलम्बित देख कर १८ सफर ९४४ हि० (२७ जुलाई १५३७ ई०) को जौनपुर की ओर रवाना हुये।

हुमायूं द्वारा चुनार के किले की विजय

इसी बीच मे शेर खा अफ़ग़ान के बगाल पहुँच जाने के कारण, हज़रत बादशाह चुनार के किले के नीचे पहुँचे और उसका अवरोध कर लिया। गाज़ी खा सूर ने, जो किले का प्रबन्धक था, प्रतिरक्षा की पताका बलन्द कर दी। अवरोध में ६ मास लग गये। अत्यधिक लोग नष्ट हो गये। हज़रत जहाँबानी ने मुहम्मद रूमी खा को, जो बहादुर शाह गुजराती से पृथक् होकर उनकी सेवा में आ गया था, सम्मानित करके चुनार के किले की विजय उसके सुपुर्द कर दी। रूमी खा किले के चारो ओर के स्थानो का निरीक्षण करके इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि तीन ओर जिधर खुश्की है, किला इतना दृढ है कि उसे किसी प्रकार कोई हानि नही पहुँचाई जा सकती अत उसने उस ओर जिधर गगा नदी थी एक बहुत बडी नौका तैयार कराई और उसके ऊपर सरकोब की तैयारी प्रारम्भ कर दी। जब वह नौका बोझ न उठा सकी तो उसने एक नौका इधर से और एक नौका उधर से प्रथम नौका में बँधवा दी और सरकोब को दूसरी बार बलन्द किया। इस प्रकार जब नौकायें बोझ न उठा पाती तो वह दो अन्य नौकाये सहायता हेतु लगा देता। इस प्रकार सरकोब तैयार हो गया। सरकोब के तैयार हो जाने के उपरान्त उसे दूर से चला कर किले से मिला दिया। इस युक्ति से क़िला बडी सुगमता एव सरलता से विजय हो गया। रूमी खा को अत्यधिक सम्मानित किया गया।

हुमायूं द्वारा गढ़ी की विजय

उसी समय बगाले का हाकिम सुल्तान महमूद, जलाल खा वल्द शेर खा अफ़ग़ान के युद्ध से घायल होकर बादशाह के लश्कर मे पहुँचा और उस ओर आक्रमण करने की प्रार्थना करके अत्यधिक विनय प्रदर्शित की। इस प्रकार जन्नत आशियानी ९४५ हि० के प्रारम्भ (१५३८ ई० के मध्य) में बगाल विजय का सकल्प करके उस ओर रवाना हुए। शेर खा अफ़ग़ान को इस विषय में सूचना मिल गई। उसने अपने पुत्र जलाल खा को प्रसिद्ध ख्वास खा के साथ, गढ़ी की प्रतिरक्षा हेतु, जो बगाल के मार्ग पर स्थित है, भेजा। यह गढ, बिहार एव बगाल की विलायत के मध्य में (२१७) एक बडा ही दृढ स्थान है कारण कि इसके एक ओर एक बडा ही ऊँचा पर्वत है एव ऐसा घना जगल है जिसमें किसी प्रकार प्रविष्ट होना और जिससे किसी प्रकार निकलना न तो सम्भव है और न इसकी कल्पना ही की जा सकती है। उसके दूसरी ओर गगा नदी है जिसे पार करना बडा कठिन है। जन्नत आशियानी ने यात्रा करते हुए जहाँगीर बेग मुग़ल को गढ़ी की विजय

हेतु तथा हिन्दाल मीर्जा को मुहम्मद सुल्तान मीर्जा एव उसके पुत्रों से युद्ध करने के उद्देश्य से भेजा। जिस दिन जहाँगीर बेग मुग़ुल गढी पहुँचा, जलाल खा एव ख्वास खा धावा मारते हुए उसके विरुद्ध पहुँच गए। जहाँगीर बेग घायल होकर बडी बुरी दशा में सम्मानित शिविर में पहुँचा। क्योंकि बादशाह शीघ्र ही गढी पहुँच गये, जलाल खा एव ख्वास खा उनका मुकाबला न कर सके और गौड चले गये।

हुमायूं द्वारा गौड की विजय

बादशाह ने निश्चिन्त होकर गढी पार की। शेर खा अफग़ान यह सुनकर अत्यधिक व्याकुल हुआ। गौड एव बगाला के सुल्तानो का खज़ाना, जो उसने अल्प समय में एकत्र कर लिया था, लेकर झारखड के पर्वतों की ओर चल दिया। जन्नत आशियानी बगाले की राजधानी गौड में पहुँचे और उसे विजय कर लिया। एक अनुचित तजनीस[1] के कारण उसका नाम जन्नताबाद रक्खा और वहाँ तीन मास तक ठहरे रहे किन्तु उस स्थान की जलवायु की खराबी एव यात्रा के कष्ट के कारण अत्यधिक घोडे एव ऊँट नष्ट हो गये। बहुत बडी सख्या में मनुष्य भी रुग्ण हो गये। बडी ही विचित्र दशा व्यापक हो गई।

मीर्जा हिन्दाल द्वारा विद्रोह

इसी बीच में मीर्जा हिन्दाल, मुहम्मद सुल्तान मीर्जा से युद्ध त्याग कर आगरे की ओर चल खडा हुआ और विद्रोह प्रारम्भ कर दिया। उसने सर्वप्रथम शेख बहलूल की, जो जन्नत आशियानी के पीर एव गुरु थे, इस बहाने से कि वह अफगानों से मिला है, हत्या करा दी। उस समय अपने नाम का खुत्बा पढवा कर देहली की ओर रवाना हुआ और उसे विजय करने के उद्देश्य से उसका अवरोध कर लिया।

हुमायूं की गौड से वापसी

बादशाह इन कारणो से व्याकुल एव दुखी होकर बगाले को जहाँगीर बेग मुग़ुल एव इबराहीम बेग को, जो प्रतिष्ठित मुग़ुल अमीर थे, सौंप कर स्वय शीघ्रातिशीघ्र आगरा की ओर रवाना हुए। मार्ग में मुहम्मद जमान मीर्जा, जो बहादुर शाह गुजराती के बहकाने से सिन्ध एव लाहौर चला गया था और जहाँ से पुन गुजरात वापस आया था, क्षमा याचना करके (हज़रत जहाँबानी की) सेवा में उपस्थित हुआ और क्षमा याचना की। उसे सम्मानित किया गया।

हुमायूं का चौसा पहुँचना

शेर खा अफगान (हज़रत जहाँबानी की) सेना की अव्यवस्था एव मीर्जा हिन्दाल के विद्रोह से अवगत होकर, सेना तैयार करके रोहतास से रवाना हुआ। जब सम्मानित शिविर चौसा पहुँचा तो उसने मार्ग रोक लिया। तीन मास तक सामने डटा रहा और जो कुछ कष्ट पहुँचा सकता था, पहुँचाता रहा।

मीर्जा कामरान एव हिन्दाल का देहली विजय का सफल प्रयत्न

कामरान मीर्जा को भी इस स्थिति का ज्ञान, जिससे कठोर स्थिति की कल्पना नही हो सकती,

१ एकलिंगता अर्थात् गौड अथवा गोर का, जो मुग़ुल बोलते थे, अर्थ कब्र है। इस अनुरूपता के कारण उन्होंने इसका नाम जन्नताबाद रखा।

प्राप्त हो गया। वह देहली की बादशाही प्राप्त करने की इच्छा करने लगा और १० हजार अश्वारोहियों को लेकर बादशाह की सहायता का बहाना बना कर लाहौर से निरन्तर प्रस्थान करने लगा किन्तु जब वह देहली पहुँचा तो हिन्दाल मीर्ज़ा उसे घेरे हुये था। वह उससे मिल गया और इस नगर को विजय करने के उद्देश्य से दोनों ने उसका अवरोध कर लिया। किन्तु फख्रुद्दीन अली कोतवाल ने किले से निकल कर कामरान मीर्ज़ा की सेवा में निवेदन किया कि, "मैं अपने स्वामी के प्रति नमक हरामी नहीं कर सकता। यह उचित होगा कि आप आगरा चले जायें। सर्वप्रथम उसे लें, क्योंकि वह राजधानी है, अधिकार में कर लें, तदुपरान्त देहली आपकी हो जायगी।" संक्षेप में मीर्ज़ा को यह बात पसन्द आ गई। वह कामरान सहित देहली से रवाना हो गया। मार्ग में दोनों भाइयों में मतभेद उत्पन्न हो गया। मीर्ज़ा हिन्दाल ५,००० अश्वारोहियों एवं ३०० हाथी लेकर अलवर की ओर चल दिया। कामरान मीर्ज़ा आगरा में ठहर गया। विद्रोह करते हुए बादशाही का तबल खुल्लम खुल्ला बजवाने लगा।

हुमायूं का भाइयों को समझाने का प्रयत्न

जन्नत आशियानी की चिन्ता में और भी वृद्धि हो गई। उन्होंने चौसा से भाइयों को कई बार लिखा कि "हिन्द में उपद्रव का स्रोत शेर खां अफ़ग़ान है। वह अपनी शक्ति को अत्यधिक बढ़ा कर एवं बड़ी तैयारी के साथ मुकाबले के लिये निकला है। अब स्थिति दूसरी हो गई है। इस समय भाई लोग मिल जुल कर शेर खां अफ़ग़ान को नष्ट करें ताकि हिन्दुस्तान का राज्य, जिसे फ़िरदौस मकानी ने अत्यधिक परिश्रम के उपरान्त अधिकार में किया है, हाथ से निकल न जाय और चग़ताई उलूस एक साथ नष्ट न हो। जब राज्य के शत्रु का विनाश हो जायगा तो यदि ईश्वर ने चाहा हिन्दुस्तान को इच्छानुसार बांट लिया जायगा और भाई लोग जो परामर्श देंगे, मैं उसके विरुद्ध कोई कार्य न करूँगा।" किन्तु अभागे मीर्ज़ाओं पर इस बात का कोई प्रभाव न हुआ। वे कहते थे कि यदि शेर खां अफ़ग़ान जन्नत आशियानी को पराजित कर दे और हम जीवित रहे, तो शेर खां अफ़ग़ान को हम सुगमतापूर्वक पराजित कर देंगे और दोनों भाई स्थायी रूप से राज्य का बटवारा करके हिन्द के प्रदेशों की बादशाही करेंगे।

हुमायूं की पराजय

इसी बीच में शेर खां अफ़ग़ान ने अपने मुर्शिद शेख खलील नामक दरवेश को धूर्तता एवं छल की दृष्टि से बादशाह की सेवा में भेजा और संधि की प्रार्थना की। समय की आवश्यकता पर दृष्टि रखते हुए उन्होंने संधि स्वीकार कर ली। यह निश्चय हुआ कि बंगाला एवं रोहतास शेर खां अफ़ग़ान के अधीन रहे और वह इससे अधिक की इच्छा न करे। उस क्षेत्र में बादशाह के नाम का सिक्का एवं खुत्बा चले। इस शर्त के अनुसार शेर खां अफ़ग़ान ने क़ुरान शरीफ़ की शपथ ले ली। मुग़ल सेना निश्चिन्त हो गई किन्तु दूसरे दिन (९४६ हि०/ १५३९ ई०) शेर खां अफ़ग़ान ने अफ़ग़ान सेनाओं को तैयार करके चग़ताई सेना पर, जब कि वह असावधान थी, आक्रमण कर दिया। उन लोगों को पंक्तियाँ सुव्यवस्थित करने का अवसर न दिया। युद्ध में विजय प्राप्त करके उसने घाटों को, जहाँ नौकायें थीं, रोक दिया। इस कारण जब धनी व निर्धन एवं अमीर व वज़ीर गंगा तट पर पहुँचे तो अफ़ग़ानों के पीछा करने के कारण विवश होकर नदी में कूद पड़े। (२१८) विश्वस्त सूत्रों के अनुसार, हिन्दुस्तानियों के अतिरिक्त, लगभग ७-८ हजार मुग़ल, जिनमें मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा भी था, नदी में डूब कर मर गए। क़यामत के दिन के चिह्न दृष्टिगत हो गए।

बादशाह स्वय नदी मे कूद पडे और निजाम नामक सक्का की सहायता से बडी कठिनाई एव परिश्रम से मुक्ति के तट पर पहुँच सके और उसे वचन दिया कि आगरा पहुँचने के उपरान्त तुझे आधे दिन की बादशाही प्रदान करूँगा। उन्होने अपने वचन का पालन किया। उसने अपने आधे दिन की बादशाहत मे अपनी कौम वालो को समृद्ध कर दिया। थोडी सी सेना, जो बाल बाल बच कर उस नदी से पार हुई थी, बादशाह से मिल गई और वे आगरा की ओर रवाना हुये।

मुगलो का पारस्परिक मतभेद

कामरान मीर्जा बादशाह के कुशलतापूर्वक निकट पहुँच जाने के कारण हिन्दाल मीर्जा के पास अल्वर चला गया। जब अफगानो के प्रभुत्व एव जोर के कारण वे वहाँ न ठहर सके, तो दोनो भाई लज्जित होकर बादशाह की सेवा में पहुँचे। जहाँगीर बेग मुगुल एव इबराहीम बेग भी बगाला से एव विद्रोही मुहम्मद सुल्तान मीर्जा अपने पुत्रो सहित कन्नौज से भागते हुए आगरा पहुँचे और अपने राज्यों को शत्रुओं के लिये (खाली) छोड दिया। वे विचार विनिमय करने लगे। नित्य-प्रति परामर्श गोष्ठी होती थी। क्योंकि कामरान मीर्जा का (हृदय) साफ एव सच्चाई पर न था अत वह शत्रुता का सूत्र हाथ से न छोडता था और परामर्श-गोष्ठी से कोई लाभ न होता था। कामरान मीर्जा शत्रुता एव विरोध के कारण, लाहौर वापस जाने के लिये आग्रह करने लगा। ख्वाजा कलाँ बेग जो चग़ताई लश्कर में सर्वश्रेष्ठ था, और जो फिरदौस मकानी के राज्यकाल मे अनुमति लेकर काबुल चला गया था, मीर्जा के साथ पुन हिन्द आ गया था वह लाहौर वापस चले जाने के विषय में अत्यधिक प्रयत्न करने लगा। जन्नत आशियानी इस बात की अनुमति न देते थे और कहते थे कि यदि सगठित होकर शेर खा अफगान को नष्ट न किया गया तो बाद मे उसका भुगतान सभी को भुगतना पडेगा किन्तु इस बात से कोई लाभ न हुआ। जब बातचीत मे ६ मास व्यतीत हो गये तो अचानक मीर्जा झूठी भूख .[१] एव खान पान के अनुकूल न होने के कारण रुग्ण हो गया और उसको इस बात का निराधार भ्रम हो गया कि उसका रोग विष के कारण है जो बादशाह के आदेशानुसार उसे दे दिया गया है। इस कारण वह जाने के विषय मे और भी अधिक प्रयत्न करने लगा। बादशाह विवश होकर इस शर्त पर राजी हो गये कि वह अपने अनुभवी आदमियो में से अधिकांश को कुमक हेतु आगरा में छोड जाय और स्वय अकेला लाहौर चला जाय। कामरान मीर्जा ने ख्वाजा कलाँ बेग को इस बहाने से कि वह अक्ता मे जाकर अभियान के व्यय की व्यवस्था करे, अपने प्रस्थान के पूर्व लाहौर भेज दिया। अपने विश्वस्त आदमियो में से बहुत बडी सख्या को इस बहाने से कि वे ख्वाजा कलाँ बेग के लश्कर वाले हैं, उसके साथ कर दिया। सिकन्दर सुल्तान से युद्ध हेतु १००० व्यक्ति आगरा मे छोड दिये और स्वय कुछ दिन उपरान्त उस ओर रवाना हो गया और ऐसी अवस्था मे लोगो को हतोत्साहित कर दिया। इस प्रकार जन्नत आशियानी के अधिकाश सैनिक, जो अफगानो के उत्पात के कारण भयभीत थे, मीर्जा के साथ चले गये। मीर्जा कामरान के सेवकों में से मीर्जा हैदर दूगलात, मीर्जा की सेवा त्याग कर बादशाह का सेवक एव उनका विश्वास-पात्र हो गया और उसे प्राय बहुत बडे-बडे कार्यों में अधिकार प्राप्त हो गया।

१ रोग का अनुवाद शब्दों के स्पष्ट न होने के कारण नहीं हो सका।

मुग़लों द्वारा कालपी विजय

शेर खा अफगान को भाइयो की पारस्परिक फूट एवं शत्रुता का पता चला। वह सेना तैयार करके पुन गगा तट पर पहुँचा और अपने पुत्र कुतुब खा को एक बहुत बडी सेना सहित गगा के उस पार भेज कर नदी के इस ओर के स्थान अपने अधिकार में कर लिये। पादशाह को यह समाचार प्राप्त हुए। उन्होंने कासिम हुसेन सुल्तान को यादगार नासिर मीर्ज़ा एव सिकन्दर सुल्तान सहित उस विद्रोह को शान्त करने के लिये भेजा। कालपी के समीप दोनों ओर की सेनायें पहुँच गई। घोर युद्ध हुआ। मुग़ल राज्य की पताकाओ पर विजय का समीर प्रवाहित हुआ। कुतुब खां बहुत से अफगानो सहित मार डाला गया। कासिम हुसेन सुल्तान ने कुतुब खा का सिर आगरा भेज दिया और शेर खा अफगान के विनाश हेतु प्रस्थान करने के लिये प्रार्थना-पत्र भेजा।

हुमायूं की पराजय

जन्नत आशियानी यात्रा की तैयारी करके एक लाख अश्वारोहियों सहित कन्नौज के समीप गगा नदी के पार हुये। लगभग एक मास तक शेर खा अफग़ान के लश्कर के समीप, जिसमे ५०,००० अश्वारोही थे, पडाव किये रहे। उस अवस्था में भी मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा एव उसके पुत्र जिनके ललाट पर सर्वदा विश्वास-घात लिखा रहता था, पुन अकारण पलायन कर गये और लश्कर की व्याकुलता का कारण बने। इस प्रकार कामरान मीर्ज़ा के आदमी सब के सब भाग खडे हुये। बादशाही सैनिको का पहली दुर्घटना का स्मरण था और वे भागने की प्रथा सीख चुके थे और समय बे समय भागा करते थे। वर्षा ऋतु भी आ चुकी थी। जिस स्थान पर शिविर लगे थे, वहाँ पर इस प्रकार जल भर गया कि खेमे बुल्बुले की भाँति जल पर दिखाई देने लगे। अनुभवी लोगों ने वहाँ से हट कर ऊँचे स्थान पर पडाव करने की सलाह दी। १० मुहर्रम ९४७ हि० (१७ मई १५४० ई०) को वे लोग रवाना हो गये। अभी वे अपने स्थान से हिले भी न थे, कि शेर खा धावे मारता हुआ अचानक पहुँच गया और घोर युद्ध के उपरान्त विजय प्राप्त कर ली। पहले की भाँति सब साधारण एव सम्मानित व्यक्ति सभी भाग खडे हुए और गगा तट तक, जो तीन कुरोह की दूरी पर था, बडे वेग से चले गये। शक्तिशाली शत्रु के पीछा करने के कारण विवश होकर नदी में कूद पडे। जिस किसी की मौत में देर थी, वह बादशाह के साथ नदी के पार हो गया।

हुमायूं की सिन्ध में परेशानी

बादशाह आगरा पहुँचे। क्योंकि शत्रु निकट पहुँच गये थे अत वे लाहौर की ओर भागे। उस वर्ष की प्रथम रबी-उल अव्वल[1] को समस्त चग़ताई मीर्ज़ा एव खान लोग लाहौर में एकत्र हुये। क्योंकि शेर खा ने पीछा करना न छोडा था अत उन लोगों ने सुल्तानपुर नदी पार की। हज़रत (२१९) जन्नत आशियानी प्रथम रजब[2] को लाहौर नदी पार करके ठट्टा एव भक्कर की ओर रवाना हुये। कामरान मीर्ज़ा, मीर्ज़ा अस्करी एव ख्वाजा कला बेग सहित नवशहरा के समीप पृथक् होकर काबुल की ओर चल दिया। जन्नत आशियानी ने सिन्ध नदी पार की और भक्कर की ओर रवाना हुये।

१ १ रबी-उल अव्वल ९४७ हि० (६ जुलाई १५४० ई०)।
२ २ रजब ९४७ हि० (१ नवम्बर १५४० ई०)।

और लुहरी कस्बे में ठहरे। घोडा एव खिलअत देकर ठट्टा के हाकिम मीर्जा शाह हुसेन अरगून के पास अपना राजदूत भेजा और सहायता की याचना की ताकि वे लोग मिलकर गुजरात पर आक्रमण करके उसे विजय कर लें। मीर्जा शाह हुसेन अरगून ५–६ मास तक टाल-मटोल करता रहा। हजरत जन्नत आशियानी के लश्कर वाले भी व्याकुल होकर इस कारण छिन्न भिन्न हो गये। मीर्जा हिन्दाल भी ऐसे अवसर पर पृथक् होकर कन्धार पहुँचा कारण कि कन्धार के हाकिम क़राचा खा ने उसे प्रार्थना पत्र लिख कर बुलवाया था। जब मीर्जा यादगार नासिर पृथक् होने का सकल्प करने लगा, जन्नत आशियानी ने उसे बडी कठिनाई से दिलासा देकर, यह निश्चय किया कि मीर्जा यादगार नासिर भक्कर चला जाय और वही रहे। हज़रत जहाँबानी सहवान की ओर रवाना हो। अत मीर्जा यादगार नासिर भक्कर चला गया और बिना युद्ध के उस पर अधिकार जमा लिया और शक्ति प्राप्त कर ली। हज़रत जन्नत आशियानी ने सेहवान के किले का अवरोध कर लिया। सात मास के अवरोध के उपरान्त मीर्जा शाह हुसेन अरगून ने भी नौका में पहुँच कर अनाज के यातायात का मार्ग रोक दिया। खाद्य सामग्री का इतना अभाव हो गया कि लोग पशुओं के मांस पर जीवन व्यतीत करने लगे। हज़रत जन्नत आशियानी ने मीर्जा यादगार नासिर के पास सदेश भेजा कि किले की विजय उसके आगमन पर निर्भर है। मीर्जा शाह हुसेन अरगून ने उसे इस बात का चकमा दिया कि वह उससे अपनी पुत्री का विवाह कर देगा और उसके नाम का खुत्बा पढवा देगा। इस धोखे में आकर उसने भी आज्ञाकारिता त्याग दी और पुन उनके पास न गया। शाह हुसेन अरगून निश्चिन्त होकर अग्रसर हुआ तथा कार्य को और भी कठिन बना दिया। हज़रत जहाँबानी विवश होकर भक्कर की ओर लौटे और मीर्जा से नदी पार करने के लिये नौका मांगी। मीर्जा ने ठट्टा वालो को सकेत कर दिया और वे नौकायें ले गये। प्रात काल बहाना बना दिया। हज़रत जन्नत आशियानी कई दिन तक बेकार बैठे रहे। अन्ततोगत्वा २–३ भमिया[1] मिल गये। वे लोग कुछ नौकायें, जिन्हें उन लोगो ने नदी में डुबा दिया था, निकाल लाये। हज़रत जन्नत आशियानी ने नदी पार की। मीर्जा अत्यधिक लज्जित होकर सेवा में उपस्थित हुआ। हज़रत जन्नत आशियानी ने जिनमें फ़िरिश्तो के गुण पाये जाते थे, कुछ भी न कहा किन्तु अभागा मीर्जा शाह हुसेन अरगून के सिखाने पर पुन अपने कार्य पर वापस चला गया। उसने बादशाह के अधिकांश सैनिको को बहका कर अपनी ओर मिला लिया। एक दिन वह अकारण युद्ध हेतु सवार हुआ। हज़रत जन्नत आशियानी भी विवश हो कर उससे युद्ध करने के लिये सवार हुये। अन्त में कुछ लोगो ने मीर्जा को डाँट फटकार कर वापस कर दिया।

मालदेव के राज्य की ओर प्रस्थान

जन्नत आशियानी ने जब देखा कि रोज़ाना लोग पृथक होकर उनके पास से भागे जा रहे हैं और मीर्जा कष्ट पहुँचाने पर तुला है तो उन्हे भय हुआ कि कही वह कुछ और खराबी न पैदा करे। विवश होकर वे जैसलमीर के मार्ग से राजा मालदेव के राज्य की ओर, जिससे बढ कर हिन्द के राजाओं में कोई अन्य न था और जिसने इसके पूर्व प्रार्थना पत्र एव खत भेज कर हिन्द की विजय हेतु सहायता देने का वचन दे कर आमन्त्रित किया था, रवाना हुये। जैसलमीर के राजा ने सौजन्य-पूर्ण व्यवहार न किया। एक समूह को उनका मार्ग रोकने के लिये भेजा। हज़रत जन्नत आशियानी ने

१ यह शब्द स्पष्ट नहीं।

उन लोगों को पराजित कर दिया और शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए मालदेव के राज्य की सीमा तक पहुँचे और वहाँ ठहर कर मालदेव के पास आदमी भेजे। जब उसे पता चला कि चग़ताई सेना बड़ी ही अव्यवस्थित है और दुर्दशा को प्राप्त हो चुकी है, तो वह उनके बुलवाने पर पश्चाताप करने लगा और यह प्रयत्न करने लगा कि उन्हें बन्दी बनाकर शेरख़ाँ अफ़ग़ान के पास अपनी निष्ठा एवं स्वामी-भक्ति के प्रमाण में भेज दे। उसके एक सेवक ने, जो इससे पूर्व हज़रत जहाँबानी का किताबदार था, उन्हें इस बात की सूचना कर दी। हज़रत जहाँबानी आधी रात में सवार होकर शीघ्रातिशीघ्र अमरकोट की ओर, जो ठट्टा से १०० कुरोह पर है, चल खड़े हुए। जिस समय मार्ग में हज़रत जहाँबानी का घोड़ा थक गया तो उन्होंने तरदी बेग से घोड़ा माँगा। उसने निष्ठुरता प्रदर्शित करते हुए, घोड़ा देने में आपत्ति प्रकट की। जब उन्हें इस बात के समाचार निरन्तर प्राप्त होने लगे कि मालदेव का लश्कर शीघ्रातिशीघ्र चला आ रहा है तो वे विवश होकर ऊँट पर सवार हुये। यद्यपि नदीम कोका स्वयं पैदल यात्रा कर रहा था और अपनी माता को घोड़े पर सवार करके ले जा रहा था, किन्तु उसने अपनी माता को उस ऊँट पर सवार करके उन्हें घोड़ा दे दिया।

मालदेव के राज्य की ओर से वापसी

वह भू-भाग पूरा का पूरा रेगिस्तान था अतः जल के अप्राप्य होने के कारण लोग विलाप करने लगे और ऐसी स्थिति प्रकट हो गई कि करबला[1] का स्मरण दिलाती थी। काफ़िरों के समीप पहुँच जाने के समाचार प्राप्त होने लगे। हज़रत जहाँबानी ने कुछ सरदारों को, जो उनके साथ थे, आदेश दिया कि वे पीछे-पीछे आते रहें और स्वयं थोड़ी सी संख्या के साथ, जिसमें २५ से अधिक व्यक्ति न थे, माल असबाब को आगे करके चल खड़े हुए। संयोग से जब रात हो गई तो सरदार लोग मार्ग भूल गये और एक ओर चल खड़े हुये। प्रातःकाल के समीप शत्रुओं की सेना की स्याही दिखाई पड़ी। हज़रत जन्नत आशियानी के आदेशानुसार शेख अली इत्यादि, जिनकी संख्या कुल मिला कर २० से अधिक न थी, कलमये शहादत[2] पढ़कर पलट पड़े और साहस से काम लेकर युद्ध करने लगे। संयोग से प्रथम बाण काफ़िरों के सरदार के सीने पर लगा और वह गिर पड़ा। शेष लोग भाग खड़े हुये। मुसलमानों ने पीछा करके अत्यधिक ऊँट अपने अधिकार में कर लिये। बादशाह ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करके एक कुवें पर पहुँचे जिसमें बड़ा थोड़ा जल था, और वहीं उतर पड़े। वहीं वह अमीर लोग भी आ गये जो मार्ग भूल गए थे। उनके पहुँचने से बड़ा सतोष हुआ। दूसरे दिन उन्होंने वहाँ से प्रस्थान किया। तीन मंज़िल तक लेश मात्र को भी जल न प्राप्त हुआ। लोगों की बड़ी ही शोचनीय दशा हो गई। तीसरे दिन वे एक ऐसे कुवें पर पहुँचे जो बड़ा गहरा था। जब कभी उसमें से डोल निकलता तो ढोल बजाया जाता जिसे सुनकर बैल ठहर जाते थे। लोग अत्यधिक व्याकुल होकर डोल पर १०-१०, ५-५ की संख्या में गिरने लगे। रस्सी टूटने पर डोल कुवें में गिर पड़ा। प्यासों की फ़रियाद आकाश पर पहुँच गई थी। कुछ लोग व्याकुल होकर कुवें में कूद पड़े और नष्ट (२२०) हो गये। दूसरे दिन प्रस्थान हुआ। वे लोग जल पर पहुँचे। घोड़े तथा ऊँट जिन्हें कई दिन

१ करबला में हज़रत मुहम्मद के नाती इमाम हुसैन के लिये उनके शत्रुओं ने जल का पहुँचना बन्द कर दिया था और वे तथा उनके सहायक प्यासे १० मुहर्रम ६१ हि० (१० अक्तूबर ६८० ई०) को शहीद कर दिये गये।

२ शहादत सम्बन्धी वाक्य अथवा मुसलमानों का धर्ममंत्र जिसमें ईश्वर के एक होने एवं हज़रत मुहम्मद के उसका पैग़म्बर होने से सम्बन्धित गवाही होती है।

से जल न मिला था, इतना अधिक जल पी गये कि मृत्यु को प्राप्त हो गये। सक्षेप में, अत्यधिक कठिनाई एव कष्ट भोग कर वे अमर कोट पहुँचे। वहाँ के राजा ने, जिसका नाम राणा था, बडा ही उत्तम व्यवहार किया और उसने सेवा एव सहायता करने में कोई कसर न उठा रखी। लश्कर वालो ने आराम किया।

अकबर का जन्म

उसी स्थान पर ५ रजब ९४९ हि० (१५ अक्तूबर १५४२ ई०) को शाहज़ादये आलम व आलमियान जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर का बडे ही शुभ मुहूर्त में हमीदा बानो बेगम के गर्भ से जन्म हुआ।

हुमायूं की परेशानी

जन्नत आशियानी ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने एव हर्ष व उल्लास का प्रदर्शन करने के उपरान्त अपने परिवार एव माल असबाब को वहीं छोड कर, राजा राणा के साथ भक्कर की विजय हेतु रवाना हुये। किन्तु अल्प समय में ही लोग छिन्न भिन्न हो गये और कोई सफलता न प्राप्त हो सकी। मुनइम खा भी भाग खडा हुआ। शाह अली, जो कि बडा ही वीर सरदार था, एक युद्ध में मीर्ज़ा शाह हुसेन अरगून के आदमियो के हाथो मारा गया। विवश होकर वे कन्धार की ओर रवाना हुये। उस समय बैरम खा गुजरात से उनकी सेवा में पहुँच गया।

अस्करी का हुमायूं के शिविर पर आक्रमण

क्योंकि उस समय कामरान मीर्ज़ा ने कन्धार का किला हिन्दाल मीर्ज़ा से छीन लिया था, और मीर्ज़ा अस्करी को अपनी ओर से वहाँ नियुक्त कर गया था, मीर्ज़ा शाह हुसेन अरगून ने मीर्ज़ा अस्करी को लिखा कि "बादशाह बडी परेशानी में हैं। इस समय अवसर है, उन्हे बन्दी बना लो। कष्ट के कारण बडी ही दुर्दशा को प्राप्त हो चुके हैं।" जब हज़रत जन्नत आशियानी साल व मस्तान[1] पहुँचे तो उसने उनपर चढाई कर दी। हज़रत जन्नत आशियानी को यह समाचार प्राप्त हुये। वे शीघ्रातिशीघ्र मरियम मकानी को सवार करके, शाहज़ादे को गरमी के कारण शिविर में छोड कर, स्वय २२ व्यक्तियों सहित जिनमें बैरम खा भी था, ख़ुरासान की ओर, यद्यपि मार्ग निश्चित न था, चल खडे हुये। जब अभागा मीर्ज़ा शिविर में पहुँचा और उसे पता चला कि हज़रत जन्नत आशियानी प्रस्थान कर गये तो वह पश्चाताप के कारण हाथ मलने लगा और उसने धन-सम्पत्ति पर अधिकार जमा लिया। शाहज़ादे को कन्धार ले गया। बादशाह को अपने सदाचारी[2] भाइयो के भय के कारण किसी स्थान पर ठहरना सम्भव न हो सका।

हुमायूं का ईरान की ओर प्रस्थान

जब वे सीस्तान की विलायत की सीमा पर पहुँचे तो अहमद सुल्तान शामलू ने, जो शाह तहमास्प हुसेनी की ओर से वहाँ का हाकिम था, उनका स्वागत किया और सीस्तान ले गया। कुछ दिन तक सेवा करने के उपरान्त जो कुछ उसके पास था, उसे उसने भेंट कर दिया और स्वय उनके दासो की माला में सम्मिलित हो गया। अपनी स्त्रियों का उसने कनीज़ो की भाँति मरियम

१ मूल में 'साल व हसनान'।
२ 'नीक तीनत' व्यग्य के रूप में प्रयोग हुआ है।

मकानों की सेवा हेतु भेज दिया। हज़रत जन्नत आशियानी ने अपनी आवश्यकतानुसार स्वीकार कर लिया और शेष उसे प्रदान कर दिया। वहाँ से वे हिरात की ओर रवाना हुये। शाह के ज्येष्ठ पुत्र ने, जो हिरात का हाकिम था, अपने अतालीक मुहम्मद खा तकलू सहित उनके निकट पहुँच जाने पर उनका स्वागत किया और आदर सम्मान प्रदर्शित करने में कोई कसर न उठा रक्खी। उसने इस प्रकार आतिथ्य किया कि उससे अधिक की कल्पना सम्भव नहीं। यात्रा के लिये जो कुछ भी आवश्यक था, इस प्रकार सुव्यवस्थित किया कि शाह से भेंट के समय तक उन्हें किसी चीज की भी आवश्यकता न हुई। उत्तम स्थानों की सैर के उपरान्त हज़रत जहाँबानी मशहदे मुकद्दस की ओर रवाना हुए। वहाँ से ज़ियारत के उपरान्त प्रस्थान किया। कज़वीन तक, एराक़ के सम्मानित एवं प्रतिष्ठित लोग आते और प्रत्येक मंजिल पर वहाँ के हाकिम शाह की ओर से आतिथ्य करते रहे। हज़रत जन्नत आशियानी कज़वीन से, बैरम खा को शाह की सेवा में भेज कर, वहाँ ठहर गये।

शेर शाह अफ़ग़ान बिन हसन सूर की बादशाही

(२२४) [1]अधिकांश लोदी अमीरों ने, जो पटना की विलायत में एकत्र थे, बादशाह महमूद को बुलवाने के लिये आदमी भेजे। वह आकर अमीरों के प्रयत्न से पुनः पटना की हुकूमत की मसनद पर आरूढ़ हो गया। वहाँ से एक भारी सेना लेकर बिहार की विलायत में प्रविष्ट हो गया। शेर खा ने जब यह देखा कि अफ़ग़ान लोगों के पास बादशाह महमूद की आज्ञाकारिता के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं तो वह विवश होकर उसकी सेवा में पहुँचा और आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। बादशाह महमूद के अमीरों ने भी बिहार की विलायत आपस में बाँट ली और शेर खा के लिये बड़ा थोड़ा सा भाग रहने दिया और उससे क्षमा याचना करते हुये कहा कि, "जब हम लोग जौनपुर की विलायत मुग़ुलों के अधिकार से छीन लेंगे तो फिर बिहार की समस्त विलायत तुझे दे देंगे।" शेर खा ने बादशाह महमूद से इस आशय का प्रतिज्ञापत्र ले लिया। कुछ समय उपरान्त सेना की सुव्यवस्था हेतु अपनी जागीर पर जाने की अनुमति ले कर सहसराम चला गया। जिस समय बादशाह महमूद मुग़ुलों से युद्ध करने एवं जौनपुर की विलायत पर अधिकार जमाने के लिये प्रस्थान कर रहा था, तो उसने शेर खा को बुलाने के लिये आदमी भेजे। उसने उत्तर में लिखा कि, "मैं सेना की व्यवस्था करके पहुँच रहा हूँ।" बादशाह महमूद के अमीरों ने कहा, "शेर खा बड़ा बहानेबाज एवं धूर्त है अतः यह उचित होगा कि हम लोग उसकी जागीर में जाकर उसे अपने साथ ले आयें।" बादशाह महमूद अपनी सेना सहित जौनपुर की ओर रवाना हुआ। जन्नत आशियानी के अमीर, जो जौनपुर में थे, मुकाबला न कर सके और भाग खड़े हुये। जौनपुर तथा उस क्षेत्र के स्थान अफ़ग़ानों के अधिकार में आ गये। उन लोगों ने (मुग़ुलों को) मानिकपुर की विलायत से भगा कर, वहाँ तक के स्थान अपने अधिकार में कर लिये। उस समय हज़रत जन्नत आशियानी कालिंजर में थे। जब अफ़ग़ानों के प्रभुत्व एवं आक्रमण का हाल उन्हें ज्ञात हुआ, तो उन लोगों ने अफ़ग़ानों के विनाश एवं उन्हें हटाने के लिये अपने संकल्प की लगाम मोड़ी। बादशाह महमूद, बिब्बन, बायज़ीद एवं अन्य अफ़ग़ान अमीरों ने आगे बढ़ कर मुकाबला किया। क्योंकि शेर खा

[1] केवल हुमायूं के इतिहास से सम्बन्धित घटनाओं का अनुवाद किया गया है।

अफ़गान, बिबन एवं बायज़ीद की सरदारी तथा श्रेष्ठता से रुष्ट था और स्वयं बढ़ जाना चाहता था और उस समय जो स्थिति थी उससे उसे यह बात दृष्टिगत हो रही थी कि मुग़ल लोग प्रभुत्व जमा लेंगे अतः उसने गुप्त रूप से मीर हिन्दू बेग को, जो मुग़लों का प्रतिष्ठित अमीर एवं सिपहसालार था, सन्देश भेजा कि, "क्योंकि मैं फ़िरदौस मकानी का आश्रित हूँ अतः मैं युद्ध के समय, अफ़गानों की पराजय का कारण बन जाऊँगा।" इस प्रकार युद्ध के दिन अपनी सेना सहित उपेक्षा करते हुए एक ओर हो गया। जन्नत आशियानी ने विजय प्राप्त कर ली और बादशाह महमूद बड़ी ही बुरी दशा में पटना पहुँचा। उसने एकान्तवास ग्रहण करके सैनिक जीवन त्याग दिया। यहाँ तक कि ९४९ हि० (१५४२-४३ ई०) में उड़ीसा चला गया और वहीं मृत्यु को प्राप्त हो गया।

हुमायूं द्वारा चुनार पर अधिकार जमाने का प्रयत्न

जन्नत आशियानी विजय प्राप्त करने के उपरान्त आगरा की ओर रवाना हुये और अमीर हिन्दू बेग को शेर खां के पास इस आशय से भेजा कि वह उसे चुनार का किला सौंप दे। शेर खां ने किला देने में आपत्ति प्रकट की। अमीर हिन्दू बेग लौट कर (जन्नत आशियानी) की सेवा में पहुँचा। जब जन्नत आशियानी को यह समाचार प्राप्त हुए तो वे चुनार के किले की ओर रवाना हुये। अमीरों के एक समूह को इस आशय से आगे भेज दिया कि वे किले का अवरोध करें। शेर खां ने प्रार्थना पत्र भेजा कि "मैं हज़रत फ़िरदौस मकानी बाबर बादशाह की कृपा एवं सहायता से हुकूमत का सम्मान प्राप्त कर सका हूँ। बादशाह तथा महमूद, बिबन एवं बायज़ीद में जो युद्ध हुआ, उसमें मेरे कारण उन्हें विजय प्राप्त हुई। यदि बादशाह चुनार मेरे पास रहने दें तो मैं अपने पुत्र कुतुब खां को एक सेना सहित सेवा में भेज कर आज्ञाकारिता प्रदर्शित करता रहूँगा।" क्योंकि इस अभियान के समय बहादुर शाह गुजराती के प्रभुत्व के समाचार उन्हें प्राप्त हो रहे थे अतः उस समय उन्होंने (२२५) सधि को ही उचित समझ कर उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। शेर खां ने कुतुब खां को ईसा खां हाजिब के साथ, जो उसके वज़ीर के समान था, जन्नत आशियानी की सेवा में भेज दिया। वे वापस होकर बहादुर शाह गुजराती से युद्ध करने में व्यस्त हो गये। संक्षेप में कुतुब खां ५०० अश्वारोहियों के साथ हज़रत जहाँबानी की रिकाब के साथ रहा किन्तु गुजरात से अपने पिता के पास भाग गया।

शेर शाह द्वारा बङ्गाल की विजय

इस बीच में शेर खां को अवसर मिल गया। उसने बिहार की विलायत को साफ कर लिया और बंगाले पर चढ़ाई की। बंगाले के अमीरों ने गढ़ी की प्रतिरक्षा का प्रयत्न किया। एक मास तक युद्ध करते रहे, अन्ततोगत्वा गढ़ी शेर खां के अधिकार में आ गई। वह बंगाले की विलायत में पहुँचा। बादशाह महमूद बंगाली युद्ध की शक्ति न देख कर गौड़ के किले में बन्द हो गया। शेर खां दीर्घकाल तक उसे घेरे रहा। क्योंकि बिहार के एक ज़मींदार ने विद्रोह कर दिया था अतः वह बिहार की ओर वापस चला गया। ख़वास खां एवं अपने अन्य अमीरों को बंगाला की विजय हेतु छोड़ गया। जब अवरोध में अधिक समय लग गया और नगर में अनाज अप्राप्य हो गया तो सुल्तान महमूद विवश होकर नौका द्वारा हाजीपुर भाग गया। शेर खां ने बिहार के विद्रोह की ओर से निश्चिन्त होकर सुल्तान महमूद का पीछा किया। उससे युद्ध करके घायल कर दिया और रण-क्षेत्र से भगा दिया। बंगाला शेर खां के अधिकार में आ गया। उसने उस राज्य की नववधू को आलिंगन किया।

हुमायूं द्वारा चुनार की विजय

जब जन्नत आशियानी गुजरात के अभियान से लौटकर आगरा पहुँचे तो शेर खा के विनाश को महत्वपूर्ण समझ कर विजयी पताकाओं को चुनार की ओर मोड़ा। जलाल खा, जो चुनार के क़िले में था, गाज़ी खा सूर एवं एक अन्य समूह को किले की प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त करके स्वयं झारखंड की पहाड़ियों की ओर चल खड़ा हुआ। जब चुनार के किले को घेरे हुये ६ मास व्यतीत हो गये, तो रूमी खा ने, जो बादशाही तोपखाने का प्रबन्धक था, नदी में सरकोब तैयार कराये। किला मुग़ल सैनिकों के अधिकार में आ गया। बादशाह महमूद, जो शेर खा के युद्ध से घायल होकर भागा था, उस समय बादशाह की सेवा द्वारा सम्मानित हुआ। जन्नत आशियानी दोस्त बेग को क़िले में नियुक्त करके, शेर खा के विरुद्ध रवाना हुये।

हुमायूं द्वारा गढ़ी पर अधिकार

उसने जलाल खा, ख़वास खा एवं अपनी अधिकांश सेना गढ़ी की रक्षा हेतु, जो बंगाला की सरहद पर है, भेज दी। जन्नत आशियानी ने जहाँगीर कुली बेग एवं अन्य अमीरों को आगे रवाना कर दिया। जलाल खा एवं ख़वास खा ने, जो गढ़ी में थे, उनसे युद्ध करके विजय प्राप्त कर ली। जन्नत आशियानी पुनः सेनायें भेज कर स्वयं शीघ्रातिशीघ्र पीछे से पहुँचे। गढ़ी विजय हो गई। जलाल खा पहले से ही चल दिया। जब जन्नत आशियानी ने गढ़ी पार कर ली तो शेर खा गौड़ नगर को खाली करके झारखंड की ओर चल खड़ा हुआ।

शेर शाह द्वारा रोहतास पर अधिकार

रोहतास के समीप होने के कारण, उसे विजय करने की योजना बनाने लगा ताकि अपने परिवार को वहाँ छोड़ कर उनकी ओर से निश्चिन्त हो जाय और राज्यों को विजय एवं जन्नत आशियानी से युद्ध कर सके। क्योंकि उस किले को शक्ति एवं बल से विजय करना किसी प्रकार बुद्धि में न आता था, अतः उसने छल एवं धूर्तता का सहारा लिया। उसने अपने आदमी उस गगन-चुम्बी किले के राजा के पास, जिसका नाम राजा हर किशन था, भेज कर यह कहलाया कि, "बिहार की विलायत को मैंने पूर्ण रूप से पराजित कर दिया है और मेरे पास अपार सेना एकत्र हो गई है। इस कारण मैं बंगाला की विलायत को विजय करना चाहता हूँ किन्तु मुग़लों के निकट होने के कारण मैं निश्चिन्त नहीं हूँ। इस समय तेरी मित्रता पर भरोसा करके अपने तथा अपने सैनिकों के परिवार को तेरे किले में भेज देना चाहता हूँ ताकि निश्चिन्त होकर बंगाले में प्रविष्ट हो जाऊँ।" राजा ने यह प्रार्थना स्वीकार न की। शेर खा ने दूसरी बार वाकपटु लोगों को राजा एवं उसके वकीलों के लिये उपहार देकर भेजा और यह कहलाया कि, "स्त्रियों एवं खज़ाने के अतिरिक्त कुछ और न भेजूंगा। यदि हमें बंगाला पर विजय प्राप्त हो जाती है और हम कुशलतापूर्वक वापस आते हैं तो तुम्हारी कृपा का बदला उचित रूप से चुका देंगे। यदि मामला पलट जाता है, तो मेरे परिवार वाले एवं धन-सम्पत्ति तुम्हारे पास रहेगी न कि मुग़लों के हाथ में जो हमारे प्राचीन शत्रु हैं। उस किले के राजा ने इस लोभ में कि ख़ज़ाना मुफ्त में हाथ आ जायगा, यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। शेर खा ने एक हज़ार डोलियाँ उसी प्रकार तैयार कराईं जिस प्रकार हिन्दुस्तान में स्त्रियाँ एक स्थान को डोली में बैठकर एवं बुर्का ओढ़ कर जाती हैं। उसने प्रत्येक डोली में स्त्रियों के स्थान पर दो-दो वीर पुरुष बिठला दिये। ५०० व्यक्तियों के सिर पर मज़दूरों की भाँति धन-सम्पत्ति के बोरों को रख कर डंडे के स्थान पर छड़ी देकर किले की ओर भेजा। उसने कुछ डोलियों में जो आगे

थी, बुढियाँ बैठाल दी थी। उनके साथ ख्वाजा सरा भी थे। राजा एव उसके सहायक पूर्ण रूप से असावधान हो गये और उन्होने ज़रा भी पूँछ-ताछ न की। वे धन-सम्पत्ति को अपनी हो समझ [कर ऊपर ले जाने में जल्दी करने लगे। जबकि डोलियाँ, जो राजा के सुपुर्द कर दी गई थी, पहुँच गई तो डोली में बैठे हुये अनुभवी वीर, जिन्हें राजा स्त्री समझे हुये था, तलवारें खीँचे हुये वीरता पूर्वक दौड पडे। मजदूरा ने ताँबे के पैसे, जो सोने के सिक्को के समान सिर पर रक्खे हुये थे, फेंक] दिय और छडियाँ ऊपर उठा कर द्वार की ओर लपके तथा राजा हर किशन एव उसके विश्वास-पात्रा से, जो पूर्णरूप से असावधान थ, युद्ध करने लगे। इसी बीच में शेर खा, जिसने अपनी सेना तैयार कर ली थी और आवाज़ पर कान लगाये हुये था, स्वय बादल के समान बडे वेग से द्वारो तक पहुँच गया। जब उसने द्वार खुला देखा तो वह अपने बहुत से आदमियो के साथ द्वार के भीतर प्रविष्ट हो गया। राजा हर किशन ने, जा अपने कुछ विश्वास-पात्रो को लिये युद्ध कर रहा था, जब यह समझा कि अब मामला हाथ से निकल चुका है तो किले के पीछ का द्वार खोल कर बडी कठिनाई से अधमरी अवस्था मे तेज़ी से बाहर निकल गया और रोहतास सरीखा किला, जिसके समान ससार मे कोई अन्य किला न था, खजानो एव गडी हुई धन-सम्पत्ति सहित, बडा सुगमता से शेर खा के अधिकार (२२६) मे आ गया। पिछले वर्षों मे खानदेस के हाकिम नसीर खा फारूकी ने भी इसी प्रकार छल एव धूर्तता प्रदर्शित करके असीर का किला, आसाहार से छीन लिया था। इसमे किसी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं कि रोहतास का किला इतना दृढ है कि ससार भर के यात्रियो ने इसके समान किसी किले की सूचना नही दी है। हिन्दुस्तान के अधिकांश भवन एव किले, सकलनकर्त्ता ने देखे हैं किन्तु रोहतास के समान किला उसने कहीं नही देखा। सक्षेप में, बिहार के किले के उपान्त में यह किला एक बडे ऊँचे पर्वत के नीचे स्थित है। इसकी लम्बाई-चौडाई ५ कुरोह से अधिक है। पर्वत के आँचल से किले के द्वार तक एक कुरोह का मार्ग और है। इस गगन-रूपी किले के अधिकाश भवनो में, स्वादिष्ट जल के चश्मे उपलब्ध हैं अपितु जिस स्थान पर भी कुआँ खोदा जाता है तो एक ज़िरा[1] अथवा दस[2] ज़िरा खोदने के उपरान्त मीठे जल का चश्मा निकल पडता है। जा कोई इस किले का देखता है, वह यह कहने पर विवश हो जाता है कि यह ईश्वर की विचित्र कारीगरियो मे से है। इसी कारण प्रतिष्ठित बादशाहो मे से किसी के साहस का पक्षी उस किले की विजय का उपाय करने की हवा में कभी न उडा था किन्तु वह शेर खा के अधिकार में आ गया। अफगान लोगो का साहस बढ गया। उन्हाने अपने परिवार उस किले मे पहुँचा दिये और किले की प्रतिरक्षा की पूर्ण रूप से व्यवस्था कर ली।

शेर

'युक्ति द्वारा कठिन कार्य बन जाते हैं,
कुछ समय में वृक्ष पर बहार आ जाती है।'

हुमायूं की चौसा में पराजय

जनत आशियानी तीन मास तक गौड मे, जिसे पिछले लोगो के ग्रथो में लखनौती लिखा गया है, ठहरे और आनन्द-मगल में समय व्यतीत करते रहे। उस समय यह समाचार प्राप्त हुये कि हिन्दाल मीर्जा ने आगरा एव मेवात मे विद्रोह एव विरोध की पताका बलन्द कर दी है और

१ लगभग एक हाथ।
२ सम्भवत दो ज़िरा से तात्पर्य है।

हुमायूं द्वारा चुनार की विजय

जब जन्नत आशियानी गुजरात के अभियान से लौटकर आगरा पहुँचे तो शेर खा के विनाश को महत्वपूर्ण समझ कर विजयी पताकाओं को चुनार की ओर मोडा। जलाल खा, जो चुनार के किले में था, गाज़ी खा सूर एव एक अन्य समूह को किले की प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त करके स्वय झारखड की पहाडियों की ओर चल खडा हुआ। जब चुनार के किले को घेरे हुये ६ मास व्यतीत हो गये, तो रूमी खा ने, जो बादशाही तोपखाने का प्रबन्धक था, नदी मे सरखोब तैयार कराये। किला मुगुल सैनिकों के अधिकार में आ गया। बादशाह महमूद, जो शेर खा के युद्ध से घायल होकर भागा था, उस समय बादशाह की सेवा द्वारा सम्मानित हुआ। जन्नत आशियानी दोस्त बेग को क़िले में नियुक्त करके, शेर खा के विरुद्ध रवाना हुये।

हुमायूं द्वारा गढ़ी पर अधिकार

उसने जलाल खा, ख्वास खा एव अपनी अधिकाँश सेना गढी की रक्षा हेतु, जो बगाला की सरहद पर है, भेज दी। जन्नत आशियानी ने जहाँगीर कुली बेग एव अन्य अमीरों को आगे रवाना कर दिया। जलाल खा एव ख्वास खा ने, जो गढी में थे, उनसे युद्ध करके विजय प्राप्त कर ली। जन्नत आशियानी पुन सेनाये भेज कर स्वय शीघ्रातिशीघ्र पीछे से पहुँचे। गढी विजय हो गई। जलाल खा पहले से ही चल दिया। जब जन्नत आशियानी ने गढी पार कर ली तो शेर खा गौड नगर को खाली करके झारखड की ओर चल खडा हुआ।

शेर शाह द्वारा रोहतास पर अधिकार

रोहतास के समीप होने के कारण, उसे विजय करने की योजना बनाने लगा ताकि अपने परिवार को वहाँ छोड कर उनकी ओर से निश्चिन्त हो जाय और राज्यों को विजय एव जन्नत आशियानी से युद्ध कर सके। क्योंकि उस किले को शक्ति एव बल से विजय करना किसी प्रकार बुद्धि में न आता था, अत उसने छल एव धूर्तता का सहारा लिया। उसने अपने आदमी उस गगन चुम्बी किले के राजा के पास, जिसका नाम राजा हर किसन था, भेज कर यह कहलाया कि, 'बिहार की विलायत को मैंने पूर्ण रूप से पराजित कर दिया है और मेरे पास अपार सेना एकत्र हो गई है। इस कारण मै बगाला की विलायत का विजय करना चाहता हूँ किन्तु मुगुलों के निकट होने के कारण मै निश्चिन्त नहीं हूँ। इस समय तेरी मित्रता पर भरोसा करके अपने तथा अपने सैनिकों के परिवार को तेरे किले में भेज देना चाहता हूँ ताकि निश्चिन्त होकर बगाले मे प्रविष्ट हो जाऊँ।" राजा ने यह प्रार्थना स्वीकार न की। शेर खा ने दूसरी बार वाक्पटु लोगों को राजा एव उसके वकीलों के लिये उपहार देकर भेजा और यह कहलाया कि, 'स्त्रियों एव खजाने के अतिरिक्त कुछ और न भेजूँगा। यदि हमे बगाला पर विजय प्राप्त हो जाती है और हम कुशलतापूर्वक वापस आते हैं तो तुम्हारी कृपा का बदला उचित रूप से चुका देगे। यदि मामला पलट जाता है, तो मेरे परिवार वाले एव धन-सम्पत्ति तुम्हारे पास रहेगी न कि मुगुलों के हाथ में जो हमारे प्राचीन शत्रु है। उस किले के राजा ने इस लोभ में कि खज़ाना मुफ्त में हाथ आ जायगा, यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। शेर खा ने एक हज़ार डोलियाँ उसी प्रकार तैयार कराईं जिस प्रकार हिन्दुस्तान में स्त्रियाँ एक स्थान को डोली में बैठकर एव बुर्का ओढ कर जाती है। उसने प्रत्येक डोली में स्त्रियों के स्थान पर दो-दो वीर पुरुष बिठला दिये। ५०० व्यक्तियों के सिर पर मज़दूरों की भाँति धन-सम्पत्ति के बोरों को रख कर डडे के स्थान पर छड़ी देकर किले की ओर भेजा। उसने कुछ डोलियों में जो आगे

थी, दुढियाँ बैठाल दी थी। उनके साथ ख्वाजा सरा भी थे। राजा एव उसके सहायक पूर्ण रूप से असावधान हो गये और उन्होंने जरा भी पूँछ-ताछ न की। वे धन-सम्पत्ति को अपनी ही समझ [कर ऊपर ले जाने में जल्दी करने लगे। जबकि डोलियाँ, जो राजा के सुपुर्द कर दी गई थी, पहुँच गई तो डोली में बैठे हुये अनुभवी वीर, जिन्हें राजा स्त्री समझे हुये था, तलवारें खींचे हुये वीरता पूर्वक दौड़ पड़े। मजदूरों ने ताँबे के पैसे, जो सोने के सिक्कों के समान सिर पर रक्खे हुये थे, फेंक] दिये और छड़ियाँ ऊपर उठा कर द्वार की ओर लपके तथा राजा हर किशन एव उसके विश्वास-पात्रों से, जो पूर्ण रूप से असावधान थे, युद्ध करने लगे। इसी बीच में शेर खा, जिसने अपनी सेना तैयार कर ली थी और आवाज पर कान लगाये हुये था, स्वय बादल के समान बड़े वेग से द्वारो तक पहुँच गया। जब उसने द्वार खुला देखा तो वह अपने बहुत से आदमियों के साथ द्वार के भीतर प्रविष्ट हो गया। राजा हर किशन ने, जो अपने कुछ विश्वास-पात्रों को लिये युद्ध कर रहा था, जब यह समझा कि अब मामला हाथ से निकल चुका है तो किले के पीछे का द्वार खोल कर बड़ी कठिनाई से अधमरी अवस्था में तेज़ी से बाहर निकल गया और रोहतास सरीखा किला, जिसके समान ससार मे कोई अन्य क़िला न था, खज़ानों एव गड़ी हुई धन-सम्पत्ति सहित, बड़ी सुगमता से शेर खा के अधिकार (२२६) में आ गया। पिछले वर्षों में खानदेस के हाकिम नसीर खा फारूकी ने भी इसी प्रकार छल एव धूर्तता प्रदर्शित करके असीर का किला, आसाहीर से छीन लिया था। इसमें किसी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं कि रोहतास का किला इतना दृढ है कि ससार भर के यात्रियो ने इसके समान किसी किले की सूचना नही दी है। हिन्दुस्तान के अधिकांश भवन एव किले, सकलनकर्त्ता ने देखे हैं किन्तु रोहतास के समान किला उसने कहीं नही देखा। सक्षेप मे, बिहार के किले के उपान्त में यह किला एक बड़े ऊँचे पर्वत के नीचे स्थित है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई ५ कुरोह से अधिक है। पर्वत के आँचल से किले के द्वार तक एक कुरोह का मार्ग और है। इस गगन-रूपी किले के अधिकाश भवनो में, स्वादिष्ट जल के चश्मे उपलब्ध हैं अपितु जिस स्थान पर भी कुआँ खोदा जाता है तो एक ज़िरा[1] अथवा दस[2] ज़िरा खोदन के उपरान्त मीठे जल का चश्मा निकल पड़ता है। जो कोई इस क़िले का देखता है, वह यह कहने पर विवश हो जाता है कि यह ईश्वर की विचित्र कारीगरियों में से है। इसी कारण प्रतिष्ठित बादशाहों में से किसी के साहस का पक्षी उस किले की विजय का उपाय करने की हवा में कभी न उड़ा था किन्तु वह शेर खा के अधिकार में आ गया। अफगान लोगों का साहस बढ़ गया। उन्होंने अपने परिवार उस किले में पहुँचा दिये और किले की प्रतिरक्षा की पूर्ण रूप से व्यवस्था कर ली।

शेर

'युक्ति द्वारा कठिन कार्य बन जाते हैं,
कुछ समय में वृक्ष पर बहार आ जाती है।'

हुमायूं की चौसा में पराजय

जन्नत आशियानी तीन मास तक गौड़ मे, जिसे पिछले लोगो के ग्रथों में लखनौती लिखा गया है, ठहरे और आनन्द-मगल में समय व्यतीत करते रहे। उस समय यह समाचार प्राप्त हुये कि हिन्दाल मीर्ज़ा ने आगरा एव मेवात में विद्रोह एव विरोध की पताका बलन्द कर दी है और

१ लगभग एक हाथ।
२ सम्भवत दो ज़िरा से तात्पर्य है।

अपने नाम का खुत्बा पढ़वा कर शेख बहलूल की हत्या करा दी है। हजरत जहाँबानी जहाँगीर कुली बेग को ५००० चुने हुए अश्वारोहियों सहित गौड़ में नियुक्त करके लौट पड़े। क्योंकि बादशाह का लश्कर वर्षा एवं कीचड़ इत्यादि की अधिकता के कारण अव्यवस्थित हो गया था और सैनिकों के अधिकांश घोड़े नष्ट हो गये थे अतः लोग बड़ी ही दुर्दशा को प्राप्त हो गये थे। शेर खाँ ने अवसर से लाभ उठाते हुए चीटियों एवं टिड्डियों से भी बड़ी सेना लेकर उसका मार्ग रोक लिया। चौसा के समीप दोनों सेनाओं का सामना हुआ। वह अपनी सेना के चारों ओर किले का निर्माण करके बैठ रहा। पत्र-व्यवहार के उपरान्त उसने शेख खलील नामक एक व्यक्ति को, जिसे वह अपना मुर्शिद[1] समझता था, जन्नत आशियानी की सेवा में भेज कर, संदेश प्रेषित किया कि, "बिहार की विलायत को गढ़ी तक राज्य के अधिकारियों की सेवा में छोड़कर[2] हजरत जहाँबानी के नाम से खुत्बा एवं सिक्का चलवा दूँगा।" जब संधि निश्चय हो गई तो बादशाही लश्कर वाले अन्य दिनों की ओर से संतुष्ट हो गये और चौसा नदी पर पुल बँधवा कर नदी पार करने की योजना बनाने लगे। शेर खाँ ने उन्हें असावधान पाकर रात्रि के समय आक्रमण कर दिया और प्रातःकाल के समीप (९४६ हि०) में सुसज्जित सेना एवं पर्वत रूपी हाथियों को लेकर युद्ध हेतु अग्रसर हुआ। बादशाही सेनाओं को अपनी पंक्तियों को सुव्यवस्थित करने का अवसर न मिला। वह पराजित हो गई। जन्नत आशियानी बड़ी ही अव्यवस्थित दशा में आगरा की ओर रवाना हुये।

शेर

'हर साल पत्थर से मोती नहीं निकलते,
कभी संसार का काम संधि से बनता है और कभी युद्ध से।'

शेर खाँ का शेर शाह की उपाधि धारण करना

शेर खाँ लौट कर बंगाला पहुँचा। जहाँगीर कुली बेग ने, उन सैनिकों को लेकर, जो वहाँ थे, कई बार उससे युद्ध किया। क्योंकि उनमें शक्ति न थी अतः वे शेर खाँ की तलवार का भोजन बन गये। शेर खाँ ने अपनी उपाधि शेर शाह रख कर अपने नाम का खुत्बा एवं सिक्का चलवा दिया। दूसरे वर्ष बड़े ऐश्वर्य एवं वैभव से आगरे की ओर रवाना हुआ।

हुमायूं की क़न्नौज की पराजय

ऐसे अवसर पर जब कि अपरिचित को भी परिचित बन जाना चाहिये, कामरान मीर्ज़ा जन्नत आशियानी की सेवा से पृथक् होकर लाहौर पहुँचा। चग़ताई अमीर इस कारण कि बादशाह तुर्कमान राफ़ज़ियों को आश्रय प्रदान करते एवं उनका आदर सम्मान करते थे, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, विश्वास-घात एवं विरोध करने लगे थे। इसके बावजूद जन्नत आशियानी आगरा से कन्नौज की ओर रवाना हुये और गंगा नदी पार की। उस अवसर पर मुग़ल लश्कर की संख्या १ लाख एवं अफ़ग़ानों की सेना में ५० हजार अश्वारोही थे। संक्षेप में, १० मुहर्रम ९४७ हि० (१७ मई १५४० ई०) को मुग़ल सेना ने प्रस्थान कर दिया। वे पड़ाव करना चाहते थे कि शेर शाह पंक्तियाँ सुव्यवस्थित करके युद्ध हेतु उद्यत हो गया। मुग़ल सेना युद्ध किये बिना पराजित हो गई। जन्नत

१ गुरु।
२ यह वाक्य स्पष्ट नहीं।

आशियानी ने नदी में घोड़ा डाल दिया और बडी कठिनाई से बाहर निकल कर लाहौर की ओर रवाना हुये।

हुमायूँ का सिन्ध की ओर प्रस्थान

जब शेर शाह ने लाहौर तक उनका पीछा किया तो वे सिंध की ओर चल दिये। शेर शाह ने खुशाब तक उनका पीछा किया। इस्माईल खा, गाजी खा, फतह खा बिलोच दौदाई ने, जो बिलोचो के समूह का सरदार था, पहुँच कर शेर शाह से भेंट की। शेर शाह ने नन्दना की पहाड़ियो एव बालनाथ के पर्वतीय क्षेत्र का निरीक्षण करके जिस स्थान पर किले की आवश्यकता थी, वहाँ, किले का निर्माण कराया और उसका नाम रोहतास रक्खा।..

नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ बादशाह की एराक से काबुल को वापसी, उस क्षेत्र की ईश्वर की कृपा से पूर्ण रूप से विजय, हिन्दुस्तान मे पुन. प्रवेश एव उसे अपने अधिकार मे करना

बहराम मीर्जा द्वारा हुमायूँ का विरोध

(२३६) जैसा कि उल्लेख हो चुका है जब बैरम खा तुर्कमान हजरत जन्नत आशियानी के आदेशानुसार कजवीन से पीलाक कैदार नबी अलैहिस्सलाम, जो अबहर एव सुल्तानिया के मध्य में है, पहुँचा तो वहाँ से उनके पत्र का उत्तर, जिसमे उनके आगमन पर उन्हे बधाई दी गई थी एव भेंट की इच्छा प्रकट की गई थी, लाया। जन्नत आशियानी उस ओर रवाना हुये। जमादी-उल-अव्वल ९५१ हि० (जुलाई-अगस्त १५४४ ई०) में ईरान के बादशाह शाह तहमास्प बिन शाह इस्माईल सफवी से भेंट की। ऐसे अतिथि के लिये जिस प्रकार का आतिथ्य आवश्यक था, शाह ने वैसी ही व्यवस्था कराई। एक दिन शाह ने वार्ता के मध्य में पूँछा कि "शक्तिहीन शत्रु की विजय का क्या कारण था?' जनत आशियानी ने कहा कि, 'भाइयो का विश्वासघात।" हजरत शाह ने कहा, "भाइयो के साथ इस प्रकार का व्यवहार न करना चाहिये जैसा कि आपने किया।" जब भोजन का दस्तरख्वान लगा तो शाह तहमास्प का भाई बहराम मीर्जा, जो यहाँ हाथ बाँधे बडे अदब से खड़ा था, तश्त[1] एव आफ्ताबा[2] लेकर हजरत शाह के हाथ पर पानी डालने लगा और समस्त सेवकों की भाँति सेवा करता रहा। उस समय हजरत शाह ने जन्नत आशियानी की ओर मुख करके कहा, "भाइयो को इस प्रकार रखना चाहिये।" बहराम मीर्जा इस बात से बडा खिन्न हुआ और जब तक हजरत जन्नत आशियानी एराक में रहे, उसने शत्रुता की लगाम अपने हाथ से न छोडी और बहुत से लोगो को अपनी ओर मिला लिया। जब कभी उसे अवसर मिलता, वह चिन्ताजनक बातें कहा करता था। उसने दलीलो द्वारा शाह के हृदय में यह बात आरूढ कर दी कि, 'यह उचित नही कि साहब किरान[3] की सतान हिन्दुस्तान में, जो कि ईरान का पडोसी (देश) है, राज्य करती रहे।" सक्षेप में, हजरत शाह जब तक

१ एक प्रकार का गहरा थाल।
२ एक प्रकार का लोटा जिसमें दस्ता होता है।
३ तीमूर।

यीरग़ाक़ क़ैदार नर्गी अलैहिस्सलाम में रहे जन्नत आशियानी की प्रसन्नता हेतु तीन बार घेरे के शिकार की व्यवस्था कराई और प्रत्येक बार हज़रत जन्नत आशियानी को शिकार खेलने का कष्ट दिया तदुपरान्त बैरम खाँ को अनुमति दी। उसके बाद बहराम मीर्ज़ा एवं साम मीर्ज़ा को आदेश दिया। तदुपरान्त अमीरों एवं सैनिकों को आदेश हुआ। उन लोगों ने क्रम एवं नियम से द्रुतगामी घोड़ों एवं सिंह रूपी कुत्तों द्वारा शिकार करना प्रारम्भ कर दिया। तलवारों, बाणों एवं भालों द्वारा जंगल को पशुओं से रिक्त कर दिया। शिकार की भूमि, शिकार के अत्यधिक रक्त द्वारा, बदख़्शाँ के लाल के समान हो गई और कठोर पत्थर अनार के दानों के समान याक़ूत की तरह हो गये।

शाह तह्मास्प का हुमायूँ से रुष्ट होना

जब वे क़ज़्वीन लौटे तो जैसा कि उल्लेख हो चुका है, बहराम मीर्ज़ा एवं (शाह के अन्य) विश्वासपात्रों ने अनुचित शब्दों द्वारा, हज़रत शाह को विरोधी बना दिया। जन्नत आशियानी भी मर्माहत हो गये किन्तु इस मिसरे के अनुसार

मिसरा

'जब बुद्धिमान पक्षी जाल में फँस जाय तो उसे सहनशीलता से काम लेना चाहिये।'

वे बैरम खाँ की प्रार्थना पर अत्यधिक नरमी एवं नम्रता प्रदर्शित करते थे। उस अवसर पर (२३५) शाह तह्मास्प की बहिन सुल्ताना बेगम, क़ाज़ी जहाँ क़ज़्वीनी, नाज़िर दीवान एवं हकीम नूरुद्दीन, जो शाह के विश्वासपात्र थे, मिल कर इस बात का प्रयत्न करने लगे कि वे हज़रत शाह के हृदय के पृष्ठ से क्रोध के अक्षर मिटा दें। इस कारण एक दिन एकान्त में सुल्ताना बेगम ने अवसर निकाल कर हज़रत शाह की सेवा में जन्नत आशियानी की यह रुबाई पढ़ी:

रुबाई

'हम हैं हृदय से अली की सन्तान के दास,
हैं सर्वदा प्रसन्न अली का स्मरण करके।
क्योंकि विलायत[1] के रहस्य अली द्वारा प्रकट हुये,
हम करते हैं हमेशा नाद अली[2] का सुमिरन।'

हज़रत शाह यह रुबाई सुनकर प्रसन्न हो गये। उन्होंने कहा कि, 'यदि हुमायूँ बादशाह इस बात की

---

१ किसी [illegible] वस्तु के पूरी तरह छिपे होने का भाव, [illegible]।

२ इस प्रकार का भाव भी दोहों में व्यक्त हुआ है। इसमें हज़रत अली में अल्लाह की भावना की जाती है और [illegible] का भेद अली के रूप में ही प्रकट होते हैं।

धुनो ऐ शेर मैं हज़रत अली को, जो [illegible] बन्दों के स्वामी हैं,
[illegible] दुःख क्यों में।
वे [illegible] बिना [illegible] हो गये हैं,
हज़रत मुहम्मद की नबूवत पर अली विलायत ([illegible]) में।

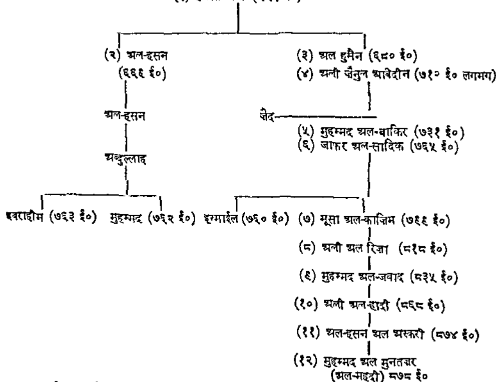
प्रतिज्ञा करें कि वे अपने अधीनस्थ राज्य के प्रदेशों के मिम्बरों[1] को मासूम इमामों[2] के नाम से शोभा देंगे तो मैं उनकी सहायता देकर उन्हें उनके पूर्वजों के राज्य में भेज दूँगा।" सुल्ताना बेगम ने जन्नत आशियानी को यह संदेश भेजा। हज़रत जन्नत आशियानी ने उत्तर में कहला भेजा कि "बाल्यावस्था से इस समय तक मेरे हृदय में हज़रत मुहम्मद के वंश का प्रेम आरूढ़ है। चग़ताई अमीरों के विरोध एवं मीर्ज़ा कामरान की दुष्टता का कारण यही प्रेम है।" हज़रत शाह ने बैरम ख़ाँ को एकान्त में बुलवा कर हर प्रकार की बातें कीं।

शाह तहमास्प का हुमायूं की सहायता करना

जब उपर्युक्त बातों से उनके क्रोध की धूल का अन्त हो गया तो उसी दरबार में यह निश्चय किया कि बुदाग़ ख़ाँ काचार, जो प्रतिष्ठित अमीरों में से था, उनके कनिष्ठ दूध पीते पुत्र शाहज़ादा मुराद का अतालीक हो और १० हज़ार अश्वारोहियों सहित जन्नत आशियानी के साथ उनके

१ मस्जिद का मंच।

२ शीआ लोग अपने इमामों को मासूम मानते हैं, अर्थात् उनसे कभी कोई अपराध नहीं हो सकता। उनके १२ इमामों का क्रम इस प्रकार है



नोट —कोष्ठ में मृत्यु तिथि दी गयी है।

भाइयों को दंड देकर काबुल, कन्धार एवं बदख्शाँ को विजय कर दे। हज़रत शाह ने उन्हीं दिनों में समस्त शाही असबाब सुव्यवस्थित करके जन्नत आशियानी को विदा कर दिया किन्तु हज़रत जन्नत आशियानी ने कहा कि, "मेरा जी चाहता है कि मैं तबरेज़ एवं अर्दबेल की भी सैर करलूं। उन स्थानों की सैर करके एवं शेख सफी तथा उनकी सम्मानित सतान की पवित्र आत्माओं से सहायता माँग कर अपने उद्देश्य की ओर प्रस्थान करूँ।" हज़रत शाह ने इस प्रस्ताव को स्वीकार करके उन महालों के हाकिमों को अनुलंघनीय फरमान भेज दिये कि वे लोग उनके प्रति आदर सम्मान प्रदर्शित करने में अपनी ओर से कोई कमी न करें। हज़रत जहाँबानी उन स्थानों की सैर एवं पूज्य मशायख (के मकबरों) की ज़ियारत के उपरान्त शाहज़ादा मुराद तथा किज़िलबाश अमीरों के साथ इमाम रिज़ा के मशहद[1] के मार्ग से कन्धार की ओर रवाना हुये। सर्वप्रथम गरमसीर के किले बादशाही दीवान के अधिकार में आ गये। वहाँ जन्नत आशियानी के नाम का खुत्बा पढ़वा दिया गया। अस्करी मीर्ज़ा को इस बात की सूचना प्राप्त हुई। शाहज़ादा मुहम्मद अकबर को, जो निष्ठुर चाचा द्वारा बन्दी था, मीर्ज़ा कामरान के पास काबुल भेज दिया और स्वयं किले की प्रतिरक्षा का प्रबन्ध करके, कन्धार के किले में बन्द हो गया। जन्नत आशियानी बुदाग खां क़ाचार के साथ वहाँ पहुँचे। ७ मुहर्रम ९५२ हि० (२१ मार्च १५४५ ई०) को क़िले को घेर लिया।

हुमायूं का क़न्धार विजय करना

जब अवरोध में ६ मास लग गये, तो जन्नत आशियानी ने बैरम खां तुर्कमान को राजदूत बनाकर, कामरान मीर्ज़ा के पास काबुल भेजा। मार्ग में हज़ारा कौम वालों ने रास्ता रोक लिया। घोर युद्ध हुआ। बैरम खां तुर्कमान विजय प्राप्त करके, कामरान मीर्ज़ा की सेवा में पहुँचा और आज्ञाकारिता एवं भवनों तथा किले को समर्पित करने के विषय में वार्ता की। जब उसकी बातों का कोई प्रभाव न हुआ तो उसने लौटकर कामरान मीर्ज़ा की हीन दशा के विषय में निवेदन किया। किज़िलबाश सेना अवरोध के अधिक दिन तक चल जाने एवं चग़ताई उलूस के सहायता न करने के कारण बड़ी दुखी हुई। उसी समय मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, उलुग़ मीर्ज़ा, कासिम हुसेन मीर्ज़ा, मीर्ज़ा मीरक, शेर अफ़गन बेग, मुनइम खां का भाई फ़ज़ील बेग, कामरान मीर्ज़ा के पास से भाग कर जन्नत आशियानी की सेवा में पहुँच गये। किले के प्रतिष्ठित लोगों का एक समूह भी वहाँ से निकल कर सेवा द्वारा सम्मानित हुआ। अस्करी मीर्ज़ा ने व्याकुल होकर अमान माँग ली और अमीरों के साथ अत्यधिक लज्जा प्रदर्शित करता हुआ पहुँचा और किला समर्पित कर दिया। क्योंकि शाह की सेवा में यह निश्चय हुआ था कि क़न्धार का किला शाहज़ादा मुराद के अधीन रहेगा अतः हज़रत जन्नत आशियानी ने, शाहज़ादे को किला प्रदान कर दिया। शाहज़ादा, बुदाग खां काचार, अबुल फतह सुल्तान अफ़शार, सूफ़ी वली सुल्तान शामलु शीत ऋतु होने के कारण, किले के भीतर प्रविष्ट हो गये। शेष किज़िलबाश अमीर वापस चले गये। चग़ताई उलूस किज़िल्बाशों को किला समर्पित करने पर बड़े रुष्ट हुये। क्योंकि उस शीत ऋतु में उनके पास कोई सुरक्षित स्थान न था, अतः अधिकांश लोग भाग कर काबुल चले गये। अस्करी मीर्ज़ा भी विद्रोह करने के उद्देश्य से भाग गया। कुछ लोग उसका पीछा करने के लिये रवाना हुये और उसे बन्दी बना लाये। हज़रत जन्नत आशियानी काबुल की ओर रवाना हुये।

१ मशहद, जहाँ इमाम रिज़ा का रौज़ा है।

हुमायूं का कन्धार के किले पर अधिकार जमाना

इसी बीच में शाहजादा मुराद अपनी स्वाभाविक मृत्यु से मर गया। हज़रत जनत आशियानी ने मार्ग से वापस होकर किला वापस लेने का सकल्प कर लिया। बुदाग खा काचार को सन्देश भेजा कि, "कन्धार का किला कुछ समय के लिये हमें अस्थायी रूप से सौंप दिया जाय। काबुल एव बदख्शाँ विजय करने के उपरान्त हम तुम्हे पुन वापस कर देंगे। बुदाग खा ने यह बात स्वीकार न की। हज़रत जनत आशियानी चुप हो गये। बैरम खा तुर्कमान, उलुग़ मीर्ज़ा, एव हाजी मुहम्मद खा से गुप्त रूप से कह दिया कि किले की विजय का उपाय करना चाहिये। एक दिन ऊँट की एक कितार, जिसपर चारा लदा हुआ था, नगर में लाई जा रही थी। हाजी मुहम्मद खा अवसर पाकर उस कितार की आड मे द्वार तक पहुँच गया। द्वारपालो ने रोका। उसने उन लोगों की तलवार द्वारा हत्या कर दी। उसी समय बैरम खा तुर्कमान, एव उलुग मीर्ज़ा भी अपनी सेना सहित पहुँच कर किले में प्रविष्ट हो गये। बुदाग खा काचार ने, जो पूर्ण रूप से असावधान था, युद्ध करने की शक्ति न देख कर एराक़ चले जाने की अनुमति माँगी। जन्नत आशियानी बैरम खा का कन्धार की हुकूमत सौंप कर काबुल विजय का सकल्प करके रवाना हुये।

हुमायूं द्वारा काबुल की विजय

इस अवसर पर बाबर बादशाह का भाई, मीर्ज़ा यादगार नासिर मीर्ज़ा शाह हुसेन अरगून की निष्ठुरता एव उसके दुर्व्यवहार के कारण भाग कर काबुल पहुँचा और मीर्ज़ा हिन्दाल के साथ उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। जब बादशाह ने काबुल के बाहर मीर्ज़ा कामरान के लश्कर के सामने पडाव कर दिया तो नित्य प्रति उसकी सेना का कोई न कोई समूह पहुँच कर स्वामी-भक्ति का प्रदर्शन किया करता था यहाँ तक कि कपलान बेग भी, जो मीर्ज़ा कामरान के प्रतिष्ठित अमीरो में से था, बादशाह की सेना में आ गया। कामरान मीर्ज़ा व्याकुल होकर सूर्यास्त के समय काबुल के किले (२३८) के अरक में प्रविष्ट हो गया। क्योंकि हज़रत जनत आशियानी उसी समय किले के समीप पहुँच गये अत कामरान मीर्ज़ा अपने ठहरने को विनाश का द्योतक समझ कर, गज़नी की ओर भाग गया। जनत आशियानी ने हिन्दाल मीर्ज़ा को उसका पीछा करने के लिये नियुक्त किया और स्वय उपर्युक्त वर्ष की १० रमज़ान[1] को किले में प्रविष्ट हो गये। शाहज़ादा जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर, जिसकी अवस्था चार वर्ष की थी, बेगमो के साथ बादशाह की सेवा में पहुँचे। युग यह गीत गाने लगा

शेर

'मिस्र का बादशाह[2] ईर्ष्यालु भाइयों की निष्ठुरता के कारण,
कुयें की गहराई से निकला और चन्द्रमा की ऊँचाई को पहुँचा।'

उस विजय की तारीख का मिसरा यह है

मिसरा

'बिना युद्ध किये काबुल का राज्य उससे ले लिया।'

१ १० रमज़ान ९५२ हि० (१५ नवम्बर १५४५ ई०)।
२ युसुफ़ पैग़म्बर जिन्हें उनके भाइयों ने ईर्ष्यावश कुयें में ढकेल दिया था और जो बाद में मिस्र के बादशाह हो गये।

मीर्ज़ा कामरान का सिन्ध पहुँचना

मीर्ज़ा कामरान की जब गजनी में कुछ न चली तो वह हजारा लोगों के मध्य में जमीनदावर पहुँच गया। जब उन लोगों ने भी उसे स्थान न दिया तो वह मीर्ज़ा शाह हुसेन अरगून के पास भक्कर चला गया। उसने अपनी पुत्री का विवाह मीर्ज़ा कामरान के साथ कर दिया और सहायता के लिये तैयार हो गया। मीर्ज़ा ज़ाहिर में तो आराम से किन्तु वास्तव में षड्यन्त्र एवं विद्रोह की योजनायें बनाने में समय व्यतीत करने लगा।

शेर

'ज़ाहिर में तो वह लोगों से बातचीत किया करता था,
किन्तु उसका हृदय दूसरे स्थान पर गिरवी था।'

हुमायूं का बदख्शाँ पर आक्रमण

जन्नत आशियानी ने शाहज़ादे को मुहम्मद अली तगाई की अतालीकी में काबुल में छोड़ कर स्वयं ९५३ हि० (१५४६-४७ ई०) में बदख्शाँ विजय का संकल्प किया। प्रस्थान के समय, यादगार नासिर मीर्ज़ा, जो कई बार विरोध कर चुका था, पुनः भागने की योजनायें बनाने लगा। जन्नत आशियानी को जब इसकी सूचना मिली तो उन्होंने उसकी हत्या करा दी। जब वे हिन्दूकुश के पीछे से होते हुए तीरगराँ में उतरे तो मीर्ज़ा सुलेमान बदख्शाँ की सेना सहित मुकाबले के लिये पहुँचा और पहले ही आक्रमण में भाग गया। तदुपरान्त जन्नत आशियानी तालीक़ान की ओर रवाना हुये। कुछ समय के लिये वहाँ रुग्ण हो गये। दो मास के उपरान्त वे स्वस्थ हो गये। जो उपद्रव एवं अशान्ति उठ खड़ी हुई थी, वह शान्त हो गई। उस समय जीजी बेगम[1] का भाई ख्वाजा मुअज़्ज़म, ख्वाजा रशीद को, जो उसके साथ एराक से आया था, कुछ कारणों से हत्या करके काबुल भाग गया। बादशाह के आदेशानुसार उसे वहाँ बन्दी बना लिया गया।

कामरान का काबुल पर दूसरी बार अधिकार

मीर्ज़ा कामरान को जब हज़रत जन्नत आशियानी के बदख्शाँ चले जाने के समाचार प्राप्त हुये तो वह गूरबन्द की ओर शीघ्रातिशीघ्र अग्रसर हुआ। *मार्ग में उसे व्यापारी मिले। उसने उनकी* अधिकांश धन-सम्पत्ति पर अधिकार जमा लिया और गजनी पहुँच कर, दुष्टों की सहायता से शहर के हाकिम ज़ाहिद बेग की हत्या कर दी और धावे *मारता हुआ काबुल की ओर रवाना हुआ।* प्रातःकाल के समीप जब क़िले का द्वार खोला गया तो वह नगर में प्रविष्ट हो गया और क़िले में पहुँच गया। मुहम्मद अली तगाई की, जो हम्माम में *था, बन्दी बना कर हत्या करा दी। फ़ज़ील बेग* एवं मेहतर वकील दर को अंधा बनवा दिया। शाहज़ादा एवं अन्तःपुर वालों को मुअक्किलों[2] को सौंप दिया। मीर ख़लीफ़ा के पुत्र हुसामुद्दीन की भी हत्या करा दी। कहा जाता है कि जिस दिन प्रातःकाल मीर्ज़ा क़िले में प्रविष्ट हुआ, काज़ी मुहम्मद असस, जो बाबर बादशाह का मसखरा था, उससे मिला। मीर्ज़ा ने उससे *पूँछा, "कैसे गया और कैसे आया?" हाजी ने उत्तर दिया* कि, "आप रात्रि के प्रारम्भ में गये और प्रातःकाल वापस आ गये" और यह शेर पढ़ा

१ हमीदा बानो बेगम।
२ बन्दीगृह के रक्षक।

शेर

'आशा की सुबह जो परोक्ष के परदे में एकान्तवास किये थी,
उससे कह दो कि बाहर आ जाय कारण कि अँधेरी रात का कार्य समाप्त हो गया।'

हुमायूं का मीर्ज़ा कामरान के सैनिकों से युद्ध

जब यह समाचार जन्नत आशियानी के शुभ कानों तक पहुँचे, तो उन्होंने सन्धि करके बदख्शाँ का राज्य सुलेमान मीर्ज़ा एवं कन्धार[1] का राज्य हिन्दाल मीर्ज़ा को प्रदान कर दिया और काबुल की ओर रवाना हुये। जुहाक एवं ग़ूरबन्द के समीप कामरान मीर्ज़ा के लश्कर का जहाँ वह मार्ग रोके हुये था, छिन्न भिन्न करके देहे अफ़ग़ानाँ में प्रविष्ट हो गये। वहाँ शेर अफ़गन बेग एवं मीर्ज़ा की समस्त सेना एकत्र होकर युद्ध की पताका बुलन्द किये थी। वहाँ भी वह पराजित हुई और शेर अफ़गन मारा गया। जन्नत आशियानी ने काबुल के समीप पड़ाव कर दिया। नित्य-प्रति युद्ध होता था। उन्ही दिनों में एक दिन मीर्ज़ा कामरान को समाचार प्राप्त हुये कि एक बहुत बड़ा कारवान अमुक स्थान पर पहुँच गया है और उसके पास अत्यधिक घोड़े हैं। मीर्ज़ा ने शेर अली को, जो उसका बड़ा ही वीर एवं उत्कृष्ट अमीर था, अपने अविश्वास्त अमीरों के साथ इस आशय से भेजा कि कारवान को नगर के भीतर ले आयें। बादशाह का यह समाचार प्राप्त हो गये। वे शीघ्रातिशीघ्र क़िले के समीप पहुँच गये और आने जाने का मार्ग पूर्ण रूप से बन्द कर दिया। शेर अली ने लौटने पर स्थिति को पलटा हुआ देख कर, युद्ध की पंक्ति जमा दी और बादशाह के आदमियों से युद्ध करके भाग खड़ा हुआ। उसी समय मीर्ज़ा सुलेमान बदख्शाँ से एवं मीर्ज़ा उलुग बेग एवं कासिम हुसेन सुल्तान, एवं बैरम खाँ तुर्कमान के सेवकों का एक बहुत बड़ा समूह हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में पहुँच गया। कराचा खाँ एवं बाबूस बेग[2] भी किले से भाग कर बादशाह से मिल गये। मीर्ज़ा ने व्याकुल होकर बाबूस बेग के तीन पुत्रों को, जो किले में थे, दारुण पीड़ा देकर मार डाला और किले की दीवार से नीचे फेंक दिया। कराचा खाँ को किले की दीवार पर दृढ़तापूर्वक बँधवा कर लटकवा दिया। कराचा खाँ ने क़िले के समीप चिल्ला कर कहा कि, "यदि मेरा पुत्र मारा गया तो मीर्ज़ा कामरान एवं अस्करी मीर्ज़ा मार डाले जायेंगे।" जब मीर्ज़ा प्रत्येक दिशा से निराश हो गया तो रात्रि में किले की दीवार में छेद करके बाहर भाग गया।

हुमायूं का काबुल पर पुनः अधिकार, मीर्ज़ा कामरान का बदख्शाँ विजय करना

बादशाह ने पुनः किले पर अधिकार जमा लिया। मीर्ज़ा काबुल पर्वत के आंचल में प्रविष्ट हो गया। हज़ारा लोगों के एक समूह से उसकी मुठभेड़ हो गई। उसके पास जो कुछ था, यहाँ तक कि जो वस्त्र वह पहिने हुये था, वह भी उन लोगों ने छीन लिये। अन्त में जब उन्हें ज्ञात हुआ कि वह मीर्ज़ा कामरान है तो उन्होंने उसकी सहायता करके उसे उसके आदमियों के पास, जो ग़ूरबन्द में थे, पहुँचा दिया। मीर्ज़ा वहाँ भी न ठहर सका और बल्ख चला गया। वहाँ के हाकिम पीर मुहम्मद खाँ ने उसकी सहायता हेतु प्रस्थान करके ग़ूर एवं बक़लान पर अधिकार जमा लिया और

१ 'कुन्दुज़' होना चाहिये। देखिये अकबर नामा भाग १, पृ० २६० "कुन्दुज़, अन्दराब, खूस्त, कमहर्द तथा ग़ूरी एवं उसके आस पास के स्थान मीर्ज़ा हिन्दाल की जागीर में प्रदान किये गये।" (रिज़वी : मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं, पृ० २११)।

२ मूल में 'मानूस बेग'।

उन्हे मीर्ज़ा को सौंप दिया। मीर्ज़ा सेना एकत्र करके बदख्शां की विजय हेतु रवाना हुआ। मीर्ज़ा सुलेमान एव उसका पुत्र मीर्ज़ा इबराहीम मीर्ज़ा कामरान का सामना न कर सके और कोलाब की ओर चले गये।

क़राचा खां इत्यादि का हुमायूं से पृथक् होना

उस समय कराचा खा, बाबूस बग एव अन्य अमीर ऐसी आशायें करने लगे जिनका पूरा होना सम्भव न था। उन्ही आशाओं में ख्वाजा गाज़ी वज़ीर की हत्या एव उसके स्थान पर ख्वाजा (२३९) कासिम की नियुक्ति थी। यह उन लोगों की बडी ही अनुचित मांगें थी। जब जन्नत आशियानी के हृदय को यह बात अच्छी न लगी तो उर्युक्त अमीर उनका साथ छोड कर मीर्ज़ा अस्करी के साथ बदख्शां की ओर चल दिये। जन्नत आशियानी न स्वय उनका पीछा किया। जब उन्हे वे लोग न मिले तो वे लौट आये और मीर्ज़ा इबराहीम बिन मीर्ज़ा सुलेमान एव मीर्ज़ा हिन्दाल के नाम उन्हे बुलाने के लिये फरमान भेजे। मीर्ज़ा इबराहीम दरबार की ओर रवाना हुआ। क़मर अली सक्काई की, जो भागे हुये अमीरा की ओर से मार्ग में स्थान ग्रहण किये हुये बादशाह के लश्कर के समाचार उन लोगो को भेजा करता था, हत्या कर दी और काबुल पहुँच कर पादशाह की सवा द्वारा सम्मानित हुआ। मीर्ज़ा हिन्दाल मार्ग मे शेर अली को बन्दी बना कर उनके समक्ष लाया।

मीर्ज़ा कामरान की पराजय

क्योकि कामरान मीर्ज़ा कराचा खा को किश्म में छोड कर स्वय तालीकान चला गया था अत जन्नत आशियानी ने हिन्दाल मीर्ज़ा एव हाजी मुहम्मद कोका को एक सेना सहित मुन्कला[1] की भांति किश्म की ओर रवाना कर दिया। कराचा खा ने मीर्ज़ा को वास्तविक स्थिति की सूचना दे दी। वह शीघ्रातिशीघ्र किश्म पहुँच गया। जिस समय हिन्दाल मीर्ज़ा ने तालोकान नदी पार कर ली थी और उसके आदमी छिन्न-भिन्न हो गये थे, वह पहुँच गया और उसने युद्ध करके उस पराजित कर दिया। मीर्ज़ा हिन्दाल के असबाब को लूट लिया। इसी बीच में जन्नत आशियानी नदी तट पर पहुँच गये। मीर्ज़ा कामरान मुकाबला न कर सका और तालीकान की ओर भाग गया। उसने जो कुछ लूटा था और उसके पास जो कुछ था, वह सब नष्ट हो गया। दूसरे दिन वह तालीकान के किले में बन्द हो गया। क्योंकि वह ऊज़बेकों द्वारा सहायता की ओर से निराश था, अत मीर्ज़ा सुलेमान को मध्यस्थ बनाकर मक्का जाने की अनुमति मांगी। हज़रत जन्नत आशियानी ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

मीर्ज़ा कामरान तया हुमायूं की सन्धि

कामरान मीर्ज़ा एव अस्करी मीर्ज़ा किले के बाहर निकले और मक्के मदीने की ज़ियारत के उद्देश्य से दस फरसख तक गये। उन्हें इस बात की कल्पना न थी कि हज़रत जन्नत आशियानी उनका पीछा करने के लिय सना न भेजेंगे। जब उन्होंने कोई सेना न भेजी तो वे लोग उनकी इस दया को देख कर बडे लज्जित हुय और उनकी सेवा करने के उद्देश्य से वापस लौटे। जन्नत आशियानी ने बहुत से मीर्ज़ाओं को उनके स्वागतार्थ भेजा। उसके प्रति अत्यधिक कृपा दृष्टि प्रदर्शित करते हुए कोलाब की अक्ता उसे प्रदान करके उन्हे उनकी जागीर को जाने की अनुमति दे दी। वे वापस होकर

१ सेना का अग्र-दल।

काबुल पहुँचे। फतहनामे[1] के हाशिये पर, जिसे उन्होंने बैरम खा तुर्कमान के पास क़न्धार भेजा, यह शेर, जिनकी रचना उन्होंने स्वय की थी, अपने हाथ से लिख दिये :

पद्य

"पुन परोक्ष से विजय प्रकट हुई,
जिससे मित्रों का हृदय खिल उठा।
ईश्वर को धन्य है कि हम पुन प्रसन्न हैं,
अपने मित्रों एव दोस्तों का मुख देख कर हँस रहे हैं।
शत्रुओ को हमने असफल देखा,
विजय के उद्यान के मेवे चुने।
आज का दिन नवरोज़ का दिन है,
मित्रों के हृदय को आज कोई चिन्ता नहीं।
मित्रों का हृदय सर्वदा प्रसन्न रहे,
मित्रों को एव प्रदेशों में कोई दु ख न रहे।
आनन्द मगल के समस्त साधन एकत्र हैं,
हृदय में मिलने की आकाक्षा है।
मित्र के सौन्दर्य के कब दर्शन करूँगा मै,
मिलन के उद्यान से फूल कब चुनूँगा मैं।
कान प्रसन्न हो तेरी वार्त्ता से,
नेत्रों को प्रकाश मिले तेरे दर्शन से।
आमने-सामने खुश-खुश,
बैठें हम प्रसन्न एव बिना किसी चिन्ता के।
तदुपरान्त हिन्दुस्तान के कार्य की चिन्ता करें
सिंध के राज्य की विजय का सकल्प करें।
प्रत्येक बन्द द्वार खुल जाय,[2]
जो हमारी इच्छा हो, उससे अधिक हो जाय।
हम युग एव ससार मे जो भी चाहे,
उसके विषय में जिबरील फिरिश्ता आमीन कहे।
हे ईश्वर! मुझे प्रदान कर,
दोनो लोकों की विजय।"

१ विजय पत्र।

२ तक़ी औहदी के फ़ारसी कवियों की जीवनियों के सकलन **अरफ़ातुल आरेफ़ीन** में निम्नांकित शेर भी है :
जब अपने कार्यों की व्यवस्था कर चुकें,
कश्मीर एवं पर्वतों की सैर करें।
(बाक़ीपुर पटना के पुस्तकालय की फ़ारसी हस्तलिपियों की सूची भाग ७, पृ० नं० ६८५ ६८६, डा० हादी हसन. *The Un que Diwan of Humayun Badshah*, p 15)।

यह रुबाई भी तत्काल रचना करके उस (पत्र) के हाशिये पर लिख दी :

रुबाई

'हे वह, जो दुखी हृदय का साथी है,
जिस प्रकार कविता करने वाले की साथी उसकी कविता की प्रवृत्ति होती है।
मैं तेरी स्मृति बिना एक क्षण भी कदापि नहीं रहता,
क्या तू भी मेरी याद में इसी प्रकार दुखी है?'

बैरम खां तुर्कमान ने भी उत्तर में इस रुबाई की रचना करके (पत्र) लिखा

रुबाई

'हे वह! जो ईश्वर की छाया है,
तेरी जितनी भी प्रशंसा की जाय तू उससे श्रेष्ठ है।
जब तू जानता है कि तेरे बिना कैसे बीतती है,
तो तू क्यों पूछता है कि वियोग में मेरी क्या दशा है।'

हुमायूं की बल्ख में असफलता

क्योंकि उन्हें ऊज़बेकों द्वारा अत्यधिक कष्ट प्राप्त हुये[1] थे, अतः वे प्रतिकार हेतु हिन्दाल मीर्ज़ा एवं सुलेमान मीर्ज़ा के साथ ९५६ हि० (१५४९ ई०) में बल्ख की ओर रवाना हुये। कामरान मीर्ज़ा एवं अस्करी मीर्ज़ा ने पुनः विद्रोह कर दिया और वे सेवा में उपस्थित न हुये। यद्यपि इस बात की शंका थी कि मीर्ज़ा काबुल पहुँच कर उपद्रव न खड़ा कर दे, पादशाह अपना संकल्प न त्याग कर बल्ख के समीप पहुंचे। शाह मुहम्मद सुल्तान ऊज़बेक ३,००० अश्वारोहियों सहित युद्ध हेतु अग्रसर हुआ, किन्तु ठहर न सका। दूसरे दिन पीर मुहम्मद खां, अब्दुल अज़ीज़ खां वल्द अब्दुल्लाह खां एवं हिसार[2] के सुल्तान जो कुमक हेतु आये थे, ३००० अश्वारोहियों[3] सहित पादशाह से युद्ध हेतु बढ़े। सुलेमान मीर्ज़ा व हिन्दाल मीर्ज़ा एवं हाजी मुहम्मद सुल्तान ने उनकी सेना के अग्र भाग को पराजित कर दिया। पीर मुहम्मद खां ऊज़बेक एवं उसके साथी यह देख कर लौट गये। सूर्यास्त के समय वे नगर में प्रविष्ट हुये। चग़ताई सेना जो मीर्ज़ा कामरान के न आने के कारण अपने परिवार की ओर से चिन्तित थी, उस रात्रि में जिसकी प्रातः को सैनिक व्यवस्था के अनुसार बल्ख पर निःसन्देह विजय प्राप्त हो जाती, एकत्र हुई और उसने निवेदन किया कि बल्ख नदी को पार करना उचित नहीं। यह उचित होगा कि गज़ दर्रे की ओर जा कर लश्कर के लिये कोई दृढ़ स्थान निश्चित कर लिया जाय और बल्ख वालों को सांत्वना देकर बिना युद्ध किये अधिकार में कर लिया जाय। जब उन्होंने अत्यधिक आग्रह

१ मूल में यह वाक्य इस प्रकार है, "चूं अज़ बैरम खां तुर्कमान व ऊज़बक अनवा तश्वीश रसीदा बूद", इसका अर्थ यह हुआ, "क्योंकि बैरम खां तुर्कमान से ऊज़बक को नाना प्रकार के कष्ट पहुँच थे।" बैरम खां से ऊज़बेकों का संघर्ष कभी नहीं हुआ अतः एक से दूसरे को कष्ट पहुँचने का कोई प्रश्न नहीं। सम्भवतः "अज़ बैरम खां तुर्कमान" (बैरम खां तुर्कमान से) छापे की भूल से जुड़ गया है, अतः अनुवाद इस वाक्य के अनुसार किया गया है, "चूं व ऊज़बक अनवा तश्वीश रसीदा बूद"।

२ मूल में حصار हसार अथवा खिज़ार या खुज़ार।

३ मूल में 'सी हज़ार (३०,०००)' किन्तु सम्भवतः 'सेह हज़ार अथवा तीन हज़ार'।

(२४०) किया तो जन्नत आशियानी ने विवश होकर प्रस्थान कर दिया। क्योंकि गज दर्रा काबुल की ओर है, और मित्र एवं शत्रु, जिन्हें परामर्श की सूचना न थी, यह समझे कि वे वापस हो रहे हैं, वे शीघ्रातिशीघ्र काबुल की ओर रवाना हो गये। ऊजबेक लोगों का दिल बढ़ गया। उन्होंने मिलकर पीछा किया। उन्होंने सुलेमान मीर्ज़ा एवं हसन कुली सुल्तान को जो मुग़ल सेना के पीछे के भाग की रक्षा हेतु नियुक्त थे, पराजित कर दिया और बादशाही सेना में पहुँच गये। हज़रत जन्नत आशियानी ने पलट कर स्वयं एक व्यक्ति को, जो सब के आगे था, भाले द्वारा घायल करके घोड़े से गिरा दिया। मीर्ज़ा हिन्दाल, तरदी बेग एवं तोलक खां कूचीन ने भी वीरता प्रदर्शित करने में कमी न की किन्तु चग़ताई सेना के छिन्न-भिन्न हो जाने के कारण उन्हें कोई सफलता न हुई।

हुमायूं की क़िबचाक़ में पराजय

पादशाह काबुल की ओर रवाना हुये और मीर्ज़ा कामरान को हटाने का प्रयत्न करने लगे। मीर्ज़ा का एक सर्वोत्तम सेवक अली बेग विरोध करने लगा। सुलेमान मीर्ज़ा एवं हिन्दाल मीर्ज़ा को भी किश्म एवं कन्धार से (हज़रत जन्नत आशियानी ने) उसके विरुद्ध नियुक्त किया। मीर्ज़ा पादशाही वैभव को त्याग कर ज़ुहाक, बामियान एवं हज़ारा से होता हुआ सिन्ध जाने के विषय में सोचने लगा। पादशाह ने उसके विरुद्ध एक सेना भेजी। कराचा खां एवं कासिम हुसेन खां इत्यादि ने, जो पुनः हज़रत (जन्नत आशियानी के पास) आ गये थे, मीर्ज़ा को गुप्त रूप से सदेश भेजा कि "चुनी हुई सेना, ज़ुहाक एवं बामियान जा चुकी है आप किबचाक दर्रे के मार्ग से इधर आ जायें। हम लोग आप ही के हैं।" वह उन लोगों के कहने से बामियान का मार्ग छोड़ कर क़िबचाक़ पहुँचा। पादशाह वहां पहुँचे। कराचा खां एवं उसके मित्र, युद्ध के समय मीर्ज़ा (कामरान) से मिल गये। पादशाह थोड़े से आदमियों के साथ दृढ़ रहे। घोर युद्ध हुआ। पीर मुहम्मद आख्ता, एवं अहमद वल्द मीर्ज़ा कुली मार डाले गये। हज़रत जन्नत आशियानी के, जो स्वयं युद्ध कर रहे थे, सिर पर तलवार का घाव लगा। उनका घोड़ा भी घायल हो गया। उन्होंने भाले द्वारा अपने पास से शत्रुओं को हटा दिया और ज़ुहाक एवं बामियान की ओर रवाना हुये।

कामरान का काबुल पर तीसरी बार अधिकार

मीर्ज़ा पुनः काबुल पर अधिकार जमा कर सफल हो गया। जन्नत आशियानी बदख्शां की ओर चले गये। एक कारवान से, जिसके पास घोड़े एवं माल असबाब बड़ी सख्या में थे, ऋण के रूप में घोड़े एवं असबाब लेकर लश्कर वालों को बांट दिये। शाह बुदाग़, तोलक खां कूचीन, मजनूं खां एवं कुछ अन्य लोगों को, जो सब मिला कर १० व्यक्ति होते थे, समाचार लाने के लिये काबुल की ओर भेजा। तोलक खां के अतिरिक्त कोई भी लौट कर न आया। हज़रत जन्नत आशियानी ने प्राचीन सेवकों की कृतघ्नता पर आश्चर्य प्रकट किया। जब सुलेमान मीर्ज़ा, इबराहीम मीर्ज़ा एवं हिन्दाल मीर्ज़ा अपनी सेनाओं सहित पहुँच गये तो वे चार दिन उपरान्त काबुल की ओर रवाना हुये।

मीर्ज़ा कामरान का पलायन

मीर्ज़ा ने आगे बढ़ कर पजहीर नदी के तट पर युद्ध किया और पराजित हुआ। अपने सिर एवं दाढ़ी के बाल कटवाकर कलन्दरों के वेश में हिन्दूकुश पर्वत के आँचल एवं लमग़ान की ओर भाग गया। भागते समय मीर्ज़ा अस्करी बन्दी बना लिया गया। कराचा खां मार डाला गया। जन्नत आशियानी विजय एवं सफलता प्राप्त करके काबुल पहुँचे।

कामरान का अफ़ग़ानों की सहायता से षड्यंत्र

एक वर्ष आनन्द-मगल में व्यतीत करते रहे। दूसरी बार जब विद्रोही सैनिक मीर्ज़ा (काम-

रान) के पास पहुँचे तो उसकी सेना की सख्या १५०० हो गई। हाजी मुहम्मद खा एव बाबा कश्का भी आज्ञा प्राप्त किये बिना गजनी चले गये। हजरत जन्नत आशियानी ने तैयारी करके मीर्जा पर चढाई की। वह महमन्द, खलील एव दाऊद जई अफगानो तथा लमगानात के मलकान के साथ नीलाब की ओर भाग गया। बादशाह काबुल पहुँचे। मीर्जा कामरान पुन अफगानों के पास पहुँच कर षड्यन्त्र रचने लगा। जन्नत आशियानी ने उसपर पुन चढ़ाई की और बैरम खा तुर्कमान को लिखा कि वह गजनी पहुँच कर, हाजी मुहम्मद खा का उपचार करे। हाजी मुहम्मद खा ने मीर्जा (कामरान) के पास सन्देश भेजा कि, "आप गजनी पहुँच जायँ, दास आज्ञाकारी है।" मीर्जा (कामरान), जो लमगान से पेशावर भाग गया था, बगश एव गिरदोज़ के मार्ग से गजनी की ओर रवाना हुआ किन्तु उसके पहुँचने के पूर्व बैरम खा तुर्कमान गजनी पहुँच गया और उसे दिलासा देकर काबुल लाया। मीर्जा कामरान विवश होकर पुन पेशावर चला गया। जन्नत आशियानी काबुल लौट आये। हाजी मुहम्मद खा शका के कारण पुन गजनी भाग गया। बैरम खा पुन गजनी पहुँचा और उसे दिलासा देकर काबुल लाया। उस समय उन्होने मीर्जा कामरान के एयानी भाई[1] मीर्जा अस्करी को, मीर्जा सुलेमान के पास इस आशय से भेज दिया कि वह उसे बल्ख के मार्ग से मक्का भेज दे। अस्करी मीर्जा उस घाटी में, जो शाम एव मदीने के मध्य में है, ९६१ हि० (१५५३-५४ ई०) को मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसके एक पुत्री थी जिसका विवाह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह ने यूसुफ खा मशहदी से कर दिया था।

हिन्दाल मीर्जा की हत्या

कामरान मीर्जा बादशाही प्राप्त करने का लोभ सिर से न निकाल कर अफगानो के पास सेना एकत्र कर रहा था अत जन्नत आशियानी ने सर्वप्रथम हाजी मुहम्मद खा की, जो षड्यन्त्र की जड था, हत्या करा दी और मीर्जा को दड देने की ओर आकृष्ट हुये। खैबर के समीप मीर्जा (कामरान ने अत्यधिक अफगानो सहित बादशाह के शिविर पर २१ जीकाद ९५८ हि० (२० नवम्बर १५५१ ई०) की रात्रि में छापा मारा। हिन्दाल मीर्जा शहीद हो गया। जब अभागे मीर्जा को भाई की हत्या के समाचार प्राप्त हुये, तो वह कुछ न कर सका और वह वापस हो कर अफगानो के पास चला गया। जन्नत आशियानी ने मीर्जा की पुत्री रुकय्या बेगम को हिन्दाल मीर्जा के लाव लश्कर के साथ शाहजादा जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर को प्रदान कर दिया। उसकी अक्ता में गजनी को भी प्रदान कर दिया और वे स्वय अफगानो के निवास-स्थानो की ओर अग्रसर हुये। इस बार उन्होंने महमन्द एव खलील उलूस की बहुत बडी सख्या की हत्या करा दी और उनकी बडी बुरी दशा कर दी।

मीर्जा कामरान का बन्दी बनाया जाना

अफगानो ने जब यह देखा कि उन्हें हानि एव खराबी के अतिरिक्त कुछ नही प्राप्त होता तो उन लोगों ने मीर्जा (कामरान की सहायता) की ओर से हाथ खीच लिया। वह विवश होकर हिन्द पहुँचा और सलीम शाह से (सहायता की) प्रार्थना की। सलीम शाह न उसके प्रति उचित व्यवहार न करके जब उसे बन्दी बनाने का सकल्प किया तो वह भाग खडा हुआ और नगरकोट के (२४१) राजा के पास शरण ली। क्योंकि सलीम शाह मीर्जा को राज्य का दावेदार समझता था

1 एक पिता एव एक माता का पुत्र। मीर्जा कामरान एव मीर्जा अस्करी दोनों बाबर एव गुलरुख बेगम के पुत्र थे। [हमीदा बानो बेगम: **हुमायूं नामा** (लन्दन १९०२ ई०) पृ० ६, रिज़वी: **मुग़ल कालीन भारत—बाबर**, पृ० ३६०]।

अत वह उसके पीछे ९६० हि० (१५५५ ई०) में पजाब के राजाओं के विरुद्ध रवाना हुआ। मीर्ज़ा भयभीत होकर नगरकोट से सुल्तान आदम क्खर[१] के पास पहुँचा। सयोग से उन्हीं दिनों में मीर्ज़ा हैदर दूगलात ने कश्मीर के जमींदारों को उद्दडता के कारण जनत आशियानी के पास उनकी शिकायत भेज कर उनसे पधारने का आग्रह किया था। जनत आशियानी नीलाव नदी पार करके हिन्द मे प्रविष्ट हो गये।

मीर्ज़ा कामरान का अन्धा बनाया जाना

सुल्तान आदम ने भय के कारण मीर्ज़ा की रक्षा करते हुए, जनत आशियानी का इस विषय में लिख भेजा अत उनके आदेशानुसार मुनइम खा सुल्तान आदम के पास पहुँचा और मीर्ज़ा को ले आया। तदुपरान्त चगताई उलूस ने, जो मीर्ज़ा (कामरान) के षड्यत्र एव युद्ध के कारण व्याकुल हो चुके थे, निवेदन किया कि, "हमारे एव हमारे परिवार का जीवन मीर्ज़ा कामरान की हत्या पर निर्भर है।" पादशाह अपने अत्यधिक सौजन्य एव अपनी कृपा के कारण उसकी हत्या कराने पर राजी न हुये किन्तु अमीरों की तसल्ली के लिये उसे अन्धा बना देने की आज्ञा दे दी। मुहम्मद मोमिन फरन्खुदी ने इस मिसरे से तारीख निकाली

मिसरा

'उसने आकाश की निष्ठुरता के कारण नेत्र बन्द कर लिये।'

जब जन्नत आशियानी मीर्ज़ा से भेट करने पहुँचे तो मीर्ज़ा ने कुछ बढ कर स्वागत किया और यह कितआ पढा

कितआ

'सुल्तान के ऐश्वर्य एव वैभव में कोई भी कमी न हुई,
जब उसने ग्रामीण की झोपडी की ओर कृपा की। -
ग्रामीण की टोपी सूर्य तक पहुँच गई,
जब उसके सिर पर तेरे सरीखे सुल्तान ने छाया डाली।'

जनत आशियानी न इतना अधिक विलाप किया कि बात न कर सके। वे उठ खडे हुए और अत्यधिक शोक प्रकट करते रहे।

मीर्ज़ा कामरान का मक्का को प्रस्थान एव मृत्यु

मीर्ज़ा हज की अनुमति लेकर सिन्ध के मार्ग से मक्का पहुँचा। अपनी पत्नी को, जो मीर्ज़ा शाह हुसेन अरगून की पुत्री थी, अपने साथ ले गया। तीन हज करने के उपरान्त ११ जिलहिज्जा ९६४ हि० (५ अक्तूबर १५५७ ई०) को वही मृत्यु का प्राप्त हो गया और मक्की मे दफन हुआ।

पद्य

'इस ससार में स्थायित्व का खजाना नही,
इस हड्डी मे वफादारी का गूदा नही।

१ घक्कर।

समस्त सभार चाहे पुराना हो चाहे नया,
नष्ट हो जायेंगे और मिट्टी में मिल जायेंगे।'

मीर्ज़ा कामरान का परिवार

मीर्ज़ा कामरान के तीन पुत्रियाँ थीं और एक पुत्र। पुत्र का नाम अबुल कासिम मीर्ज़ा था। जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह ने ९६४ हि० (१५५६-५७ ई०) में उसे ग्वालियर के किले में बन्दी बना दिया। जब वे खान ज़माँ पर आक्रमण करने जा रहे थे, उसकी हत्या का आदेश दे दिया। जब उसकी हत्या हो रही थी तो उसने यह शेर, जो उसी की रचना है, पढ़ा

शेर

'हे आकाश! मेरी हत्या करने में इतनी शीघ्रता से काम न ले,
मैं तेरे अत्याचार ही से मर जाऊँगा, तू घबड़ा मत।'

सक्षेप में, मीर्ज़ा कामरान की एक पुत्री का विवाह मीर्ज़ा इबराहीम हुसेन बिन सुल्तान मुहम्मद से हुआ था। उससे एक पुत्र का जन्म हुआ जिसका नाम मुज़फ्फर हुसेन रक्खा गया। एक अन्य का विवाह मीर्ज़ा अब्दुर्रहमान मुग़ुल और एक का विवाह शाह फ़ख्रुद्दीन मशहदी रिज़वी से हुआ।

हुमायूँ का कश्मीर पर आक्रमण करने का असफल प्रयत्न

जब पादशाह, कामरान मीर्ज़ा के उपद्रव की ओर से निश्चिन्त हो गये तो उन्हें कश्मीर जा कर उसे अपने अधिकार में करने की इच्छा हुई। क्योंकि सलीम शाह पंजाब पहुँच गया था। अतः चग़ताई अमीरों ने इसका समर्थन न किया और कहा, "हमारे कश्मीर में प्रविष्ट हो जाने पर यदि अफ़ग़ान लोग हमारे बाहर निकलने का मार्ग रोक देंगे तो बड़ी कठिनाई बढ़ जायगी"। पादशाह ने यह बात स्वीकार न की और कश्मीर की ओर प्रस्थान कर दिया। अमीरों ने उनका साथ न दिया और काबुल की ओर चल दिये। जन्नत आशियानी भी विवश होकर काबुल की ओर रवाना हुये। नीलाब पार करके बिकराम के किले का निर्माण कराया और सिकन्दर खाँ उज़बेक को सौंप कर काबुल तशरीफ़ ले गये। शाहज़ादा जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर को ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद वज़ीर के साथ ग़ज़नी भेज दिया। ९६१ हि० (१५५३-५४ ई०) में शाहज़ादा मुहम्मद हकीम का काबुल में जन्म हुआ। उसका हाल, जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह के इतिहास के साथ लिखा जायगा।

हुमायूँ का क़न्धार पहुँचना

इस वर्ष दुष्टों की चुगली के कारण जन्नत आशियानी बैरम खाँ तुर्कमान की ओर से रुष्ट हो गये। इस भय से कि कहीं वह क़िज़िलबाशों से एक ही धर्म के अनुयायी होने के कारण न मिल जाय, उन्होंने क़न्धार पर चढ़ाई कर दी और ग़ज़नी के मार्ग से उस ओर रवाना हुये। बैरम खाँ तुर्कमान, जो इस अपराध से मुक्त था और लेश मात्र को भी इस मामले से जिसका कोई सम्बन्ध न था, हज़रत जन्नत आशियानी के प्रस्थान के समाचार सुनकर अपने ५-६ विशेष व्यक्तियों सहित स्वागत करके सेवा में उपस्थित हुआ एवं उत्तम पेशकश प्रस्तुत की। जब हज़रत जन्नत आशियानी को यह ज्ञात हुआ कि जो कुछ शत्रुओं ने कहा है, वह केवल झूठा लाछन एवं आरोप है तो बैरम खाँ को सान्त्वना देकर दो मास तक क़न्धार में आनन्द मंगल मनाते रहे और स्वार्थियों को ताड़ना दी।

बैरम खा के प्रति नाना प्रकार की कृपा प्रदर्शित करते हुए उसे सम्मानित किया। बैरम खा ने निवेदन किया कि, "कन्धार की हुकूमत मुनइम खा अथवा किसी अन्य को सौंप कर मुझे अपनी रिकाब का सेवक बना लें।" उसकी प्रार्थना स्वीकार न की गई। किन्तु विदा होते समय उस सम्मानित खान की प्रार्थना पर वे अली कुली सीस्तानी के भाई बहादुर खा का जमीनदावर की अक्ता देकर उस ओर छोड गये और काबुल की ओर लौट गये।

हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने की हुमायूं की तैयारी

इसी बीच में देहली एव आगरा के कुछ आदमियो के प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुये कि सलीम शाह की मृत्यु हो गई है। अफ़गान मलिक एव खान एक दूसरे के शत्रु हैं और विरोध की तलवार मियान से निकाल कर अवसर तथा बिना अवसर के आपस में मारकाट किया करते हैं। इस समय अवसर है। आप अपने पूर्वजो के राज्य की ओर ध्यान देकर उसे अपने अधिकार में कर लें। क्योंकि पादशाह के पास हिन्दुस्तान पर चढाई करने का सामान न था, अत वे चिन्तित रहते थे। एक दिन वे सैर व शिकार हेतु सवार हुए और अपने विश्वासपात्रों से कहा कि, "हिन्दुस्तान की विजय हेतु मैं फाल[1] निकालता हूँ। तीन व्यक्ति जो एक दूसरे के बाद दृष्टिगत होंगे, उनसे उनके नाम पूँछ कर फाल निकालूंगा। सक्षेप में, प्रथम व्यक्ति जो मिला, उससे उसका नाम पूँछा। उसने अपना नाम दौलत[2] ख्वाजा (२४२) बताया। थोडी दूर जाने के बाद एक ग्रामीण मिला। प्रश्न करने पर उसने अपना नाम मुराद[3] ख्वाजा बताया। इस पर हज़रत जन्नत आशियानी ने कहा, 'क्या अच्छा होता जो तीसरे व्यक्ति का नाम सआदत[4] ख्वाजा होता।" सयोग से कुछ क़दम आगे जाने के बाद एक आदमी मिला जिसका वही नाम था।[5] जन्नत आशियानी प्रसन्न हो गये और उसे दैवी खुशखबरी समझे।

हुमायूं का हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान

यद्यपि उनके पास १५ हज़ार अश्वारोहियो से अधिक न थे, और अफ़गानो के लश्कर में १ लाख और दो लाख अश्वारोही बताये जाते थे, वे हिन्दुस्तान के लिये रवाना हो गये। शाहज़ादा मुहम्मद हकीम मीर्ज़ा को मुनइम खा की अतालीकी में काबुल में छोड कर, स्वय आकाँक्षा की रिकाब में पाँव रख कर सफर ९६२ हि० (दिसम्बर १५५४ ई०/जनवरी १५५५ ई०) में रवाना हुये। पेशावर में बैरम खा तुर्कमान ने आदेशानुसार वीरो एव अनुभवी योद्धाओ को, जो उसके पूर्वजो के समय से उसकी सेवा में थे, अपने साथ लेकर बड़े वैभव से सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया। जन्नत आशियानी ने नीलाब का पार किया। बैरम खा को सिपहसालार का पद

१ शकुन।
२ दौलत का अर्थ राज्य होता है।
३ अभिलाषा।
४ प्रताप।
५ क़ानूने हुमायूनी के अनुसार यह घटना हुमायूं के सिंहासनारोहण के पूर्व की है जबकि वे अपने पिता बाबर के जीवन काल में काबुल में थे (ख्वन्दमीर क़ानूने हुमायूनी कलकत्ता १९४० ई०, पृ० ३२ ३४, रिज़वी मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १, पृ० ३८७ ३८८)। हुमायूं ने सिंहासनारोहण के पश्चात् अपने राज्य के समस्त निवासियों को तीन समूहों में विभाजित किया (१) अहले दौलत (२) अहले सआदत (३) अहले मुराद।

प्रदान किया। खिज्र खां, तरदी बेग खा, सिकन्दर सुल्तान, अली कुली सीस्तानी एव अन्य सरदारो को साथ करके मुन्क़ला के रूप में आगे भेजा। तातार खा अफगान, जो रोहतास के किले का, जिसका निर्माण शेर शाह अफग़ान ने कराया था हाकिम था, अपने आप में मुकाबले की शक्ति न देख कर देहली की ओर भाग गया।

हुमायूं की सेना की सफलता

जन्नत आशियानी निरन्तर यात्रा करते हुए लाहौर पहुँचे। जो अफगान अमीर वहाँ रक्षा हेतु नियुक्त थे, वे बिना युद्ध किये ही भाग खड़े हुये। पादशाह बिना किसी संघर्ष के नगर में प्रविष्ट हो गये। बैरम खा तुर्कमान मुन्कला के अमीरों के साथ सिन्ध पहुँचा और उस क्षेत्र को बिना तलवार अथवा भाला चलाये अधिकार मे कर लिया। उस क्षेत्र की प्रजा एव जमीदारो ने आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। जब समाचार प्राप्त हुये कि अफगानों का एक समूह शहबाज़ खा एव नसीर खा के अधीन दीपालपुर में एकत्र हो गया है और युद्ध करना चाहता है तो जन्नत आशियानी ने शाह अबुल मआली को, जो तिरमिज के सैयिदों में से था और "पुत्र" की उपाधि द्वारा सुशोभित था, अली कुली खा सीस्तानी के साथ उनके विनाश हेतु नियुक्त किया। उस सेना ने अफगानों से युद्ध करके उन्हे पराजित कर दिया। उनकी धन-सम्पत्ति एव उनके परिवार को नष्ट भ्रष्ट करके वे लौट आये। सिकन्दर शाह ने तातार खा एव हैबत खा अफगान को ३० हज़ार अश्वारोहियों सहित चगताई लश्कर से युद्ध करने के लिये अत्यधिक सामान एव तैयारी के साथ नियुक्त किया। बैरम खा तुर्कमान शत्रुओं की अधिकता के बावजूद नि संकोच युद्ध हेतु तैयार हो कर सतलज नदी के पार हुआ और उनके विरुद्ध प्रस्थान कर दिया। सूर्यास्त के समीप मचवारा[1] नदी के समीप शत्रु के लश्कर के समक्ष पड़ाव कर दिया। शीत ऋतु के कारण अफग़ान लोग अपने खेमों के सामने अत्यधिक आग जलाये हुये जागने लगे। बैरम खा को जब इसका पता चला तो वह प्रसन्न हो गया। बिना किसी को सूचना दिये हुये अपने विशेष सेवको में से १००० अश्वारोहियों को लेकर शत्रु के लश्कर के समीप पहुँचा और अफग़ानो को, जो अग्नि के प्रकाश में दिखाई पड़ रहे थे, बाणों का लक्ष्य बना दिया। उन लोगो में कोलाहल मच गया। अफगानो ने, जो बुद्धि की कमी के लिये प्रसिद्ध हैं, प्रकाश बढाने के लिये, जितनी लकड़ी एव जितना चारा लश्कर में था, सब का सब एकबारगी जला दिया। मुग़ल लोग और भी प्रसन्न हो गये और उन्होने बाण चलाने में कोई कसर न उठा रक्खी। इसी बीच में अली कुली खा सीस्तानी एव कुछ अन्य सरदार अवगत होकर शीघ्रातिशीघ्र बैरम खा के पास पहुँच गये और प्रत्येक दिशा से बाण चलाने में व्यस्त हो गये। अफग़ान लोग व्याकुल होकर युद्ध के बहाने से सवार हुये और शिविर से निकल कर देहली के मार्ग की ओर चल खड़े हुये। छिन्न-भिन्न होकर प्रत्येक किसी न किसी दिशा को चल खड़ा हुआ। तातार खा एव हैबत खा अफग़ान क्षण भर ठहरे। जब उन लोगों ने अपने आदमियो को अत्यधिक अस्त-व्यस्त देखा तो वे भी घोड़े, हाथी एव असबाब छोड़ कर भाग खड़े हुए। मुग़ल लोग अफग़ानों के अस्त्र-शस्त्र एव असबाब लूट कर अत्यधिक समृद्ध तथा प्रसन्न हो गये। बैरम खा ने हाथी जन्नत आशियानी के पास लाहौर

१ यह नाम स्पष्ट रूप से मूल में नहीं छपा है और 'मचवारा' तथा 'बचवारा' दोनों ही पढ़ा जा सकता है।

भेज दिये और स्वय माचीवाड़ा[1] में पडाव किया। चग़ताई अमीरो को आगे रवाना कर दिया। उन लोगों ने देहली के उपान्त तक छापे मार मार कर बहुत से परगने अधिकार में कर लिये। हज़रत जन्नत आशियानी ने इस विजय से प्रसन्न होकर बैरम खा तुर्कमान को खाने खानां के खिताब एव 'यारे वफ़ादार'[2] व 'हमदम गमगुसार'[3] की उपाधि द्वारा सम्मानित किया। उसके सेवकों के नाम चाहे वे साधारण लोग थे और चाहे सम्मानित, चाहे तुर्क थे और चाहे ताजीक, सक्का, फर्राश, बावर्ची, ऊंट वाले सभी पादशाही दफ्तर मे लिख लिये गये और उन्हे उन्नति प्राप्त हुई। उनमें से थोडे से खान व सुल्तान होकर ससार के प्रतिष्ठित लोगों में सम्मिलित हो गये।

सिकन्दर की पराजय

तातार खा एव हैबत खा अफ़ग़ान की पराजय के उपरान्त सिकन्दर शाह ने अफ़ग़ान अमीरो से साथ देने के विषय मे शपथ ली और ८० हज़ार अश्वारोहियो, अत्यधिक तोपो एव प्रसिद्ध युद्ध के हाथियों को लेकर युद्ध हेतु निकला और युद्ध के उद्देश्य से पजाब की ओर रवाना हुआ। बैरम खा तुर्कमान ने नवशहरा[4] पहुँच कर उसे दृढ बना लिया। जब सिकन्दर शाह ने नवशहरा से कुछ दूर पर पडाव कर दिया, तो बैरम खा ने लाहौर प्रार्थना पत्र भेज कर हज़रत जन्नत आशियानी से पधारने का आग्रह किया। हज़रत जन्नत आशियानी उत्कृष्ट पताकाओं को लेकर नवशहरा पहुँचे और क़िले में प्रविष्ट हो गये। कुछ दिन तक दोनों ओर से युद्ध-प्रिय एव यश प्राप्त करने के इच्छुक रण-क्षेत्र में निकल कर पौरुष एव वीरता प्रदर्शित करते थे। अन्ततोगत्वा अन्तिम रजब[5] को शाहज़ादा जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर की क़रावली[6] की बारी थी, अफ़ग़ान लोग पक्तियाँ सुव्यवस्थित करके पादशाही युद्ध हेतु उद्यत हो गये। चग़ताई सेना भी युद्ध हेतु पूर्ण रूप से तैयार होकर शाहज़ादे की सेवा में उपस्थित हुई। (२४३) एक ओर से बैरम खा तुर्कमान एव उसके सहायकों एव परिजनो ने और दूसरी ओर से सिकन्दर खा, अब्दुल्लाह खा ऊज़बेक, शाह अबुल मआली, अली कुली खा सीस्तानी, बहादुर खा एव तरदी बेग खा ने चिगेज़ी प्रथानुसार आक्रमण किया और ऐसी वीरता एव पौरुष का प्रदर्शन किया जो मनुष्य के सामर्थ्य के बाहर है। ईश्वर की कृपा से अफ़ग़ान लोग पराजित हो गये। सक्षेप में, सिकन्दर शाह सिवालिक की पहाड़ियो की ओर भाग गया। हज़रत जन्नत आशियानी के आदेशानुसार, सिकन्दर खा ऊज़बेक एव अन्य खान लोगो ने देहली एव आगरा पहुँच कर उन्हें अपने अधिकार में कर लिया।

जन्नत आशियानी ने शाह अबुल मआली को पजाब का शासन-प्रबन्ध सौंप कर सिकन्दर शाह से युद्ध करने के लिये नियुक्त किया और स्वय रमज़ान मास[7] में देहली पहुँच कर[8] राज्यों को दान

१ इसे 'माचीवारा' 'माछीवारा' एव 'माछीवाडा' भी लिखा गया है। लुधियाना जिला (पजाब) की समराला तहसील में ३०°५५' उत्तर तथा ७६°१२' पूर्व में, समराला से ६ तथा लुधियाना से २७ मील पर।

२ निष्ठावान् मित्र।

३ दुःख दर्द का साथी मित्र।

४ मानलपुर (पजाब) में।

५ २० जून १५५५ ई०।

६ पद्दे।

७ रमज़ान।

८ शाबान ९६२ हि० (जून-जुलाई १५५५ ई०)।

करने वाले[1] की महान् अनुकम्पा से हिन्द के राज्य के, जो समस्त संसार के मुख का तिल है, बादशाह बन गये। बैरम खां तुर्कमान को अक़्ता एवं शाही कृपाओं द्वारा अत्यधिक सम्मानित किया। तरदी बेग खां देहली का हाकिम बन गया। सिकन्दर खां ऊज़बेक को आगरा की हुकूमत प्राप्त हुई। अली कुली खां सीस्तानी, मेरठ एवं सम्भल का हाकिम होकर उस ओर चल दिया। बैरम खां ने इस विजय हेतु इस रुबाई की रचना की

रुबाई

"बुद्धि के मुंशी ने सौभाग्य की प्रार्थना की,
मौज़ूँ तबा[2] से इन्शाये सुख़न[3] माँगा।
हिन्दुस्तान की विजय जो लिखी,
तो 'शमशीरे हुमायूँ[4]' से तारीख़ माँगी।"

क्योंकि शाह अबुल मआली उन अमीरों से जो कुमक हेतु नियुक्त थे, उत्तम व्यवहार न करता था अतः सिकन्दर शाह नित्य-प्रति शक्तिशाली होता जाता था। जन्नत आशियानी ने बैरम खां को शाहज़ादा जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर का अतालीक नियुक्त करके उनके साथ सिकन्दर शाह के विनाश हेतु रवाना किया। उन्हीं दिनों में कम्बर दीवाना नामक एक व्यक्ति ने सम्भल में विद्रोह करके दोआब में उत्पात मचाना प्रारम्भ कर दिया था, अतः अली कुली सीस्तानी ने उसपर आक्रमण करके उसका सिर ५ रबी-उल-अव्वल ९६३ हि० (१८ जनवरी १५५६ ई०) को दरबार में भेज दिया।

हुमायूं की मृत्यु

उस मास की ७ तारीख[5] को सूर्यास्त के समीप जन्नत आशियानी किताबख़ाने के कोठे पर पहुँचे

१ परमेश्वर।
२ कविता करने की प्रवृत्ति।
३ कविता करने की योग्यता।
४ شمشیر همایوں (हुमायूँ की तलवार)

ش	(शीन)	३००
م	(मीम)	४०
ش	(शीन)	३००
ی	(ये)	१०
ر	(रे)	२००
ه	(हे)	५
م	(मीम)	४०
ا	(अलिफ़)	१
ی	(ये)	१०
و	(वाव)	६
ں	(नून)	५०
		९६२

५ ७ रबी-उल अव्वल ९६३ हि० (२० जनवरी १५५६ ई०)।

और वहाँ कुछ क्षण बैठे रहे। उतरते समय अज़ान देने वाले ने अचानक सायंकाल की नमाज़ की अज़ान देना प्रारम्भ कर दिया। हज़रत जन्नत आशियानी नमाज़ की बाँग के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने एवं उसे दुहराने के उद्देश्य से दूसरे ज़ीने पर बैठ गये। उठते समय डंडे पर टेक लगा कर उठना चाहा। डंडा फिसल गया और पादशाह सीढ़ी से पृथक् होकर भूमि पर आ रहे। निकटवर्ती लोग व्याकुल होकर उन्हें दौलतख़ाने के भीतर ले गये। वे बेहोश हो गये थे। कुछ देर बाद होश में आकर बातचीत की। चिकित्सक चिकित्सा करने लगे किन्तु कोई लाभ न हुआ। उस मास की ११ तारीख[1] को सूर्यास्त के समय उनकी आत्मा का हुमा, पवित्रता के घासले की ओर उड़ गया[2]। यह मिसरा उस घटना की तारीख़ है

मिसरा

'हुमायूँ बादशाह कोठे से गिर पड़े।'[3]

नई देहली में यमुना तट पर दफ़न हुये। ९७३ हि० (१५६५-६६ ई०) में उनकी क़ब्र पर शाहाना गुम्बद का निर्माण कराया गया। हिन्दुस्तान एवं काबुल में मिलाकर उन्होंने २५ वर्ष बादशाही की। उनकी अवस्था ५१ वर्ष की थी। वे बड़े ही वीर, दानी एवं उदार थे। उन्हें गणित में अत्यधिक कुशलता प्राप्त थी। वे आलिमों एवं योग्य व्यक्तियों को अपनी गाष्ठी में रखते थे। उनके दरबार में सर्वदा विद्वत्तापूर्ण समस्याओं का उल्लेख हुआ करता था। वे सर्वदा वज़ू किए रहते थे और बिना वज़ू के ईश्वर का नाम न लेते थे। इस प्रकार एक दिन मीर अब्दुल हई सद्र को अब्दुल कहकर बुलवाया। जब वज़ू कर लिया तो मीर से कहा कि, "क्षमा करना, मैं वज़ू न किये था। हई ईश्वर का नाम है, अतः तुम्हारा पूरा नाम मैंने न लिया।" उनका डील डौल उत्तम एवं रंग गेहुँवाँ था। वे हनफ़ी धर्म का पालन करते थे किन्तु मीर्ज़ा कामरान एवं कुछ चग़ताई अमीर उन्हें शीआ समझते थे। इसका कारण यह था कि उनकी बाल्यावस्था से ही जब वे शाहज़ादे थे, एराक एवं ख़ुरासान वालों का एक समूह, जो अहले बैत[4] से प्रेम करते थे, उनके पास एकत्र हो गया था। उन्हें आश्रय प्रदान होता रहता था। बैरम ख़ाँ तुर्कमान, जो उनका मुसाहिब एवं मित्र था, इमामियाँ[5] मज़हब को मानता था। जब वे पादशाह हुये तो उन्होंने क़िज़िलबाशा एवं एराक वालों में से बहुत बड़ी संख्या को आश्रय देकर सम्मानित किया। कहा जाता है कि कामरान मीर्ज़ा उनसे धर्म के विषय में सर्वदा वाद-विवाद किया करता था। एक बार जब कि शेर शाह के भय से वे सब लाहौर में एकत्र थे, दोनों भाई सवार होकर कहीं जा रहे थे। एक कुत्ता पाँव उठा कर एक क़ब्र पर पेशाब करता हुआ दिखाई पड़ा। मीर्ज़ा ने कहा, 'ऐसा ज्ञात होता है कि यह क़ब्र वाला राफ़ज़ी[6] है।" पादशाह ने कहा, "हाँ! ज्ञात होता है कि यह कुत्ता

१ ११ रबी-उल-अव्वल ९६३ हि० (२४ जनवरी १५५६ ई०)।
२ मृत्यु को प्राप्त हो गये।
३ 'हुमायूँ बादशाह अज़ बाम उफ़्ताद همایوں بادشہ از بام افتاد'।
४ हज़रत मुहम्मद के घर वाले, हज़रत अली एवं हज़रत फ़ातिमा की संतान।
५ शीआ, १२ इमामों का अनुयायी।
६ शीआ।

ी सुन्नी है।" इस प्रकार दोनों भाई एक दूसरे के प्रति व्यंग्य किया करते थे किन्तु वास्तव में वे इस कार की बातें कामरान मीर्ज़ा को जलाने एवं बैरम ख़ा तुर्कमान तथा अन्य अधिकारियों के मनो-वनोद के लिये किया करते थे। वे नि सन्देह हनफी थे। उनके दीवान के शेर थोड़े-थोड़े दिखाई ड़े हैं। यह शेर उन्ही की रचना है .

ग़ज़ल

'मेरे व्याकुल हृदय से उसके अत्याचार का बाण पार हो गया,
मुझ जैसे प्रेमी में उसके शोक का आनन्द नहीं रहा।
यदि वह आशिकों की हत्या की इच्छा करे,
तो मुझे उसकी कृपा एवं उसकी सहृदयता पर आश्चर्य न होना चाहिये।
उसके सम्मान के काबे के समीप किसको पहुँचने का साहस हो सकता है,
कि जिबरील की भी उसके काया तक पहुँच नहीं।
यदि तू आशिकों को पूँछने के लिये कुछ कदम बढाये,
सहस्रों प्रिय प्राण तेरे प्रत्येक कदम पर न्योछावर हैं।'

ग़ज़ल

'प्रसन्नता का वह समय जब मैं तेरा ध्यान किये हर समय बैठा रहा,
बड़े प्रेम से तेरे सरो सरीखे डील डौल की खोज इधर-उधर करता रहा।
मुझमें दोष मत निकाल यदि मैंने तेरे केशों को बिखरा हुआ बताया,
तेरे केश की लट की व्याख्या करते करते मेरा हृदय भी बिखर गया।
(२४४) उसकी कली की प्रशंसा में एक अक्षर भी न कह सका,
होठों को उस विषय में बात करने से सर्वदा बाँधे रहा।
ईश्वर की शपथ है कि हुमायूँ मिलन के समय इतना अचेत था,
मित्र से वार्ता करते समय अपने आप का भूल गया था।'

ग़ज़ल

'तेरे इश्क का दाग मेरे ललाट पर है,
तेरे होठों का लाल, मेरी अँगूठी का नगीना है।
जब से मैं धूल के समान तेरे द्वार पर बैठा,
आकाश के कोठे की पीठ मेरे लिये भूमि बन गई है।
जहाँ कहीं भी कोई बादशाह या शाहजादा है,
इस समय वह मेरा तुच्छ दास है।
तेरे गुलाब सरीखे चेहरे के पृष्ठ पर कस्तूरी के समान लकीर,
मेरे लिये कुरान की कृपा सम्बन्धी आयतों[1] के समान है।'

[1] आयत कुरान शरीफ़ का वाक्य।

शेर

'मेरे पास कारून[1] के खज़ाने के समान बहते हुये आंसू हैं,
थैली में अफीम गुलगूना[2] के समान रखता हूँ।'

१ एक बहुत बड़ा धनवान् जो अत्यन्त कृपण था और अन्त में अपने धन सहित पृथ्वी में समा गया ।
२ मुंह पर मलने का सुगंधित गुलाबी पाउडर।

की इस लहर से आशा रखने वालों को तृप्त कर दिया और संसार वालों के दामन में आशा का खज़ाना डाल दिया। एक विद्वान् ने इस दान की तारीख "कश्तिये ज़र[१]" के अक्षरों से निकाली। जब से वे सिंहासनारूढ हुये, वे राज्यों को विजय करने, प्रजा के उद्धार, भाइयों को प्रोत्साहन देने एवं सेवकों को आश्रय प्रदान करने में व्यस्त रहने लगे और प्रत्येक के मवाजिब[२] एवं मन्सब में उसकी योग्यतानुसार वृद्धि कर दी। काबुल एवं कन्धार मीर्ज़ा कामरान को जागीर में प्रदान किये। मीर्ज़ा अस्करी को सम्भल की सरकार, मीर्ज़ा हिन्दाल को अलवर की सरकार एवं बदख्शां मीर्ज़ा सुलेमान (२२) को प्रदान किये। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा इब्ने बदी उज़्ज़मान मीर्ज़ा इब्ने सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा, जो हज़रत फ़िरदौस मकानी का दामाद था और जिसके ललाट से फसाद के चिह्न दृष्टिगत होते थे, सिंहासनारोहण के प्रारम्भ में सेवा हेतु कटि-बद्ध हो गया।

कालिंजर विजय

संक्षेप में ५-६ मास उपरान्त उन्होंने भाग्यशाली पताकाएँ कालिंजर की विजय हेतु बलन्द कीं। उस किले का अवरोध करके, अल्प समय में किले वालों की दुर्दशा कर दी। कालिंजर के हाकिम ने विवश होकर विनयपूर्वक १२ मन[३] सोना एवं अन्य माल असबाब पेशकश के रूप में भेजा और आज्ञाकारिता एवं अधीनता प्रदर्शित की। हज़रत जन्नत आशियानी ने कृपापूर्वक एवं अत्यधिक उदारता प्रदर्शित करते हुए उसे किला प्रदान कर दिया।

अफ़ग़ानों से युद्ध

वहाँ से वे चुनार[४] के किले की विजय हेतु रवाना हुये। यह क़िला सुल्तान इबराहीम के अधिकार में था और जमाल खां खासा खेल सारंग खानी उसकी प्रतिरक्षा करता था। सुल्तान इबराहीम की दुर्घटना के उपरान्त जमाल खां को आयु का प्याला भी उसके कृतघ्न पुत्र की अल्पदर्शिता के कारण भर गया। शेर खां के विद्रोह एवं षड्यन्त्र का वह प्रारम्भिक काल था। उसने जमाल खां की पत्नी लाडमुल्क को, जो रूप-रंग एवं गुणों में सर्वश्रेष्ठ थी, चिकनी चुपडी बातों द्वारा अपनी पत्नी बना लिया। इस उपाय से उसने किला अपने अधिकार में कर लिया। संक्षेप में, जब शेर खां को हज़रत जन्नत आशियानी के आक्रमण की सूचना मिली तो वह अपने पुत्र जलाल खां को अपने विश्वास-पात्र के एक समूह के साथ किले में छोड कर स्वयं वहाँ से चला गया और अनुभवी राजदूतों को हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में भेज कर प्रार्थना कराई कि, "यदि हज़रत इस क़िले का आक्रमण त्याग दें, तो मैं अपने एक पुत्र को आपकी सेवा में भेज दूँगा। वह सर्वदा आपकी सेवा में रहेगा।" हज़रत जन्नत आशियानी ने समय की आवश्यकता पर ध्यान देते हुए उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। उसने अब्दुर्रशीद नामक अपने पुत्र को उनकी सेवा में भेज दिया। यह पुत्र सर्वदा उनकी सेवा में रहता था। जिस समय सुल्तान बहादुर से युद्ध हेतु विजयी पताकाओं ने मालवा की ओर प्रस्थान किया और सुल्तान बहादुर से युद्ध छिडा तो वह अभागा भाग्यशाली लश्कर से भाग कर अपने पिता के पास चला गया।

१ सोने की कश्ती।

२ वेतन।

३ विलमन की ग्लासरी के अनुसार अकबर का मन ३४ पौंड तथा प्राइस के अनुसार २८ पौंड का था।

४ मूल में 'जनादा' तथा 'चनादा'।

९३९ हि० (१५३२-३३ ई०) में अफगानों के समूह मे से बिबन एव बायज़ीद ने विद्रोह एव उपद्रव प्रारम्भ कर दिया। हजरत जन्नत आशियानी ने उनसे युद्ध हेतु भाग्यशाली पताकाये बलन्द की। बायजीद रण-क्षेत्र मे मारा गया। बिबन उन लोगो के साथ, जो बच रहे, भाग खडा हुआ। जौनपुर एव उसके अधीनस्थ स्थान सुल्तान जुनैद बरलास को प्रदान करके वे राजधानी वापस चले गये।

सुल्तान बहादुर द्वारा सधि

९४० हि० (१५३३-३४ ई०) में बहादुर शाह गुजराती ने अनुभवी राजदूतो के हाथ तुहफे एव उपहार सम्मानित दरबार में भेज कर निष्ठा एव मेल जोल पैदा करने का सिलसिला शुरू किया। हजरत जन्नत आशियानी ने प्रेम एव मित्रता सम्बन्धी पत्र भेज कर उसके हृदय को सन्तुष्ट कर दिया।

दीन पनाह का बसाया जाना

उसी वर्ष देहली के समीप यमुना तट पर उन्होंने एक नगर की नीव रक्खी और उसका नाम दीन पनाह रक्खा। एक विद्वान् ने उसकी तारीख "शहरे बादशाहे दीन पनाह[१]" के अक्षरो से निकाली।

मीर्ज़ाओ का विद्रोह

उन्ही दिनो में मुहम्मद जमान मीर्ज़ा एव मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा अपने पुत्र उलुग मीर्ज़ा सहित विद्रोही हो गये और कृतघ्नता प्रकट करने लगे। हजरत जन्नत आशियानी ने उस ओर प्रस्थान किया और गगा नदी के तट पर भोजपुर[२] के उपान्त मे भाग्यशाली पताकायें बलन्द की। यादगार नासिर मीर्ज़ा को एक भारी सेना देकर नदी के पार उनसे युद्ध करने के लिये भेजा। ईश्वर की कृपा से विजयी सेना को विजय प्राप्त हो गई। मुहम्मद जमान मीर्ज़ा एव मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा दोनो बन्दी बना लिये गये। हजरत जन्नत आशियानी ने मुहम्मद जमान मीर्ज़ा को बन्दी बना कर ब्याना के किले में भेज दिया। उन दोनो व्यक्तियो के नेत्रों मे सलाइयाँ फिरवा दी गई। मुहम्मद जमान मीर्ज़ा जाली फरमान अपने रक्षको को दिखा कर किले से भाग गया और सुल्तान बहादुर के पास गुजरात पहुँचा।

अल्प समय में ईश्वर की कृपा से हिन्दुस्तान के अधिकाश राज्य, जिन्हे हज़रत फिरदौस मकानी समय के अभाव के कारण विजय न कर सके थे, हजरत जन्नत आशियानी के अधिकार में आ गये।

मीर्ज़ा कामरान का काबुल से पंजाब पहुँचना

जब हज़रत फिरदौस मकानी के निधन के समाचार मीर्ज़ा कामरान को प्राप्त हुये तो वह कन्धार मीर्ज़ा अस्करी को सौंप कर हिन्दुस्तान की ओर इस आशय से चल खडा हुआ कि सम्भवत

१ 'धर्म के रक्षक बादशाह का नगर'।

२ उत्तर प्रदेश के फ़र्रुखाबाद जिले का एक ग्राम जो २९°१७ उत्तर तथा ७६°४१' पूर्व में फ़तहगढ़ के दक्षिण में ६ मील पर स्थित है।

हाथ पाँव मार कर कोई काम बना ले। उन दिनों पंजाब का शासन-प्रबन्ध मीर यूनुस अली के अधीन था। मीर्ज़ा के हितैषियों ने परामर्श के उपरान्त निश्चय किया कि क़िले पर आक्रमण करके मीर यूनुस अली से किला छीनने में अत्यधिक कष्ट का सामना करना पड़ेगा। उसने धूर्तता का जाल बिछा कर एक रात्रि में क़राचा बेग को बहुत डाँटा फटकारा। वह दूसरी रात में अपने सैनिकों सहित मीर्ज़ा के शिविर से भाग कर लाहौर पहुँचा। मीर यूनुस अली ने सहृदयता प्रदर्शित करते हुए उसे अपने पास स्थान दे दिया और प्रायः अपने निवास-स्थान पर बुलाकर उसके साथ समय व्यतीत किया करता था। क़राचा बेग अवसर की प्रतीक्षा किया करता था, यहाँ तक कि एक रात्रि में जब मीर मदिरा के नशे में सो गया तो क़राचा बेग ने अवसर पाकर मीर्ज़ा को बन्दी बना लिया और लाहौर के क़िले के द्वार अपने आदमियों को सौंप कर शीघ्रातिशीघ्र मीर्ज़ा को बुलवाने के लिये आदमी भेजे। मीर्ज़ा, जो इस समाचार की प्रतीक्षा कर रहा था, इसे बहुत बड़ा सौभाग्य (२३) समझकर शीघ्रातिशीघ्र पहुँच गया और नगर पर अधिकार जमा लिया। मीर यूनुस अली को बन्दीगृह से निकाल कर क्षमा याचना की और कहा, "यदि आप यहाँ रहें तो लाहौर का शासन-प्रबन्ध उसी प्रकार आपके अधीन रहेगा।" मीर आज्ञा लेकर हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में चला गया। मीर्ज़ा ने अपने आदमी पंजाब के परगनों में नियुक्त कर दिये और सतलज नदी, जो लुदियाना नदी कहलाती है, के तट तक के स्थान अपने अधिकार में कर लिये। सम्मानित दरबार में प्रार्थना पत्र भेज कर, पंजाब का सूबा प्रदान किये जाने की प्रार्थना की। हज़रत जन्नत आशियानी ने अपनी व्यक्तिगत अनुकम्पा एवं हज़रत फ़िरदौस मकानी की शिक्षाओं पर ध्यान रखते हुए पंजाब का राज्य उसे प्रदान कर दिया। मीर्ज़ा इस सुखद समाचार से बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने कृतज्ञता प्रकट करते हुए उचित पेशकश उनकी सेवा में भेजी। वह सर्वदा पत्र व्यवहार करता रहा। हज़रत जन्नत आशियानी की प्रशंसा में ग़ज़लों की रचना करके अपने निष्ठावान् क़लम से लिखा करता था। उन्हीं ग़ज़लों में से एक बार उसने उनकी सेवा में यह ग़ज़ल लिखी थी

ग़ज़ल

'ईश्वर करे तेरा सौन्दर्य नित्य-प्रति बढ़ता रहे,
ईश्वर करे तेरा भाग्य महान् एवं शुभ रहे।
जो धूल तेरे मार्ग से उठे,
वह मुझ दुखी के नेत्रों का प्रकाश बन जाय।
जो धूल लैला के मार्ग से उठती है,
उसका स्थान मजनूं के नेत्रों में होता है।
जो कोई तेरे चारों ओर परकार की भाँति न फिरे,
वह इस क्षेत्र से बाहर चला जाय।
हे कामरान! जब तक संसार कायम है,
संसार की बादशाही हुमायूं के अधीन रहे।'

हज़रत जन्नत आशियानी ने जब इस ग़ज़ल का अध्ययन किया तो उसे हिसार फ़ीरोज़ा प्रदान करके उत्कृष्ट निशान[1] भेजा।

1 फ़रमान से तात्पर्य है।

९३९ हि० (१५३२-३३ ई०) में मीर्जा अस्करी काबुल से आ रहा था। मार्ग में हजारा लोगों से युद्ध करके पराजित हुआ। मीर्जा कामरान को यह बात अच्छी न लगी। उससे कन्धार लेकर उसने ख्वाजा कलाँ बेग को प्रदान कर दिया। जिन दिनों ख्वाजा कलाँ बेग कन्धार में था स्वर्गीय शाह तहमास्प के भाई साम मीर्जा ने अपने अतालीक एवं सिपहसालार अगरवार[1] खा के बहकाने से कन्धार पर आक्रमण कर दिया। ख्वाजा कलाँ बेग किले की दृढ़ता का प्रयत्न करके किले में बन्द हो गया। कामरान मीर्जा लाहौर से किज़िलबाशों से युद्ध करने के लिये रवाना हुआ। कन्धार के समीप वीरतापूर्वक युद्ध किया। अगरवार खा रण-क्षेत्र में भाग्य के पंजे में बन्दी होकर मार डाला गया। साम मीर्जा पराजित होकर बडी ही शोचनीय दशा में शाह के पास पहुँचा।

भाग्यशाली सेना का बंगाला विजय हेतु प्रस्थान एवं राजधानी को वापसी

जब उनका पवित्र हृदय ममालिके महरूसा[2] की तन्सीक एवं जब्त[3] से निश्चिन्त हो गया तो ९४१ हि० (१५३४-३५ ई०) में उन्होंने बंगाला विजय हेतु प्रस्थान किया। जब उन्होंने कालपी के क्षेत्र में कनार नामक कस्बे में पडाव किया तो उनके सम्मानित कानों तक यह बात पहुँची कि सुल्तान बहादुर चित्तौड के किले का अवरोध किये हुये हैं और उसने तातार खा के अधीन एक बहुत बडी सेना ममालिके महरूसा में भेज दी हैं और सर्वनाशकारी कल्पनायें उसके मस्तिष्क में चक्कर लगाया करती हैं। हज़रत जन्नत आशियानी ने अपने जागरूक प्रताप की प्रेरणा एवं निष्ठावान् सेवकों के परामर्श से दारुल खिलाफा की ओर वापसी का डंका बजवा दिया।

सुल्तान बहादुर द्वारा विद्रोह

संक्षेप में, सुल्तान बहादुर ऐश्वर्य के असबाब के बाहुल्य, सेना की अधिकता एवं वीरता के अभिमान के कारण केवल गुजरात की सल्तनत से सन्तुष्ट न रह सका और यह भूल गया कि चील कौवे हज़रत हुमायूँ पादशाह के राज्य की हुमा का मुकाबला नहीं कर सकते। वह सर्वदा देहली की राजधानी (के विजय) की आकांक्षा किया करता था। इस समय जब कि तातार खा उसकी सेवा में उपस्थित हुआ और झूठी बातों से उसकी दुष्कल्पनाओं को उत्तेजित कर दिया, उसने सोचा कि गुजरात का लश्कर विजयी सेना के वीरों का मुकाबला नहीं कर सकता। यह उचित होगा कि लालच देकर एवं धन-सम्पत्ति लुटा कर मुग़ुलों को मिला लूँ। इस मिथ्यापूर्ण कल्पना के अधीन उसने खज़ानों के मुह खोल दिये और छल कपट का जाल फैला दिया। लगभग १०,००० कृतघ्नों को अपना सेवक बना लिया। इसी बीच में मुहम्मद ज़मान मीर्जा, यादगार बेग तगाई के सेवकों से, जो उसके रक्षक थे, मिलकर बयाना के बन्दीगृह से भाग निकला और गुजरात चला गया। सुल्तान बहादुर ने मीर्जा के आगमन को एक उत्तम संयोग समझ कर, उसके साथ बडा ही सुन्दर व्यवहार किया और उसको प्रोत्साहन देने लगा।

१ इसे 'मदब्बार खा' भी पढ़ा जा सकता है।
२ अधीनस्थ राज्यों।
३ शासन प्रबन्ध।

हज़रत जन्नत आशियानी ने उसे पत्र लिखा कि "इससे पूर्व तुमने स्वय निष्ठा एव मित्रता का सिलसिला शुरू किया था और एकता के स्तम्भो को प्रतिज्ञा एव वचन द्वारा दृढ़ किया था, अत यह उचित होगा कि कुछ कृतघ्न, जो हमारी सेवा से भाग कर तुम्हारे पास चले गये हैं, या तो हमारे दरबार मे भेज दो और नही तो अपने राज्य से निर्वासित कर दो।" सुल्तान बहादुर ने उत्तर में लिखा कि, "यदि कोई सम्मानित व्यक्ति हमारी शरण में आ जाय और उसे आश्रय प्रदान कर दिया जाय तो यह बात प्रेम एव निष्ठा के प्रतिकूल न होगी। इस प्रकार सुल्तान सिकन्दर लोधी के समय में यद्यपि उनमें एव सुल्तान मुजफ्फर[1] में बडा मेल जोल था किन्तु सुल्तान सिकन्दर का भाई सुल्तान अलाउद्दीन एव उसकी कौम के कुछ अन्य लोग किन्ही कारणा से उससे रुष्ट होकर गुजरात चले आये और सुल्तान मुजफ्फर ने उन्हे आश्रय प्रदान किया तथा सहृदयता प्रदर्शित की परन्तु इसमे उनकी मित्रता को कोई हानि नही पहुँची।" हज़रत जन्नत आशियानी ने इसी आशय का चेतावनी युक्त पत्र पुन लिखा और उस भाग्यशाली पत्र मे यह दो शेर लिखे

पद्य

'हे! जो हृदय से इस बात की डीग मारता है कि प्रेमी है,
लाखो आशीर्वाद हो, यदि तेरी जबान तेरे दिल का साथ दे रही हो।'

शेर

'मित्रता का वृक्ष लगा ताकि हार्दिक इच्छाओ में फल आ जाय,
शत्रुता का पौधा उखाड डाल, कारण कि इससे अगणित कष्ट होते है।'

"सक्षेप में यह कि या तो उन तिरस्कृत लोगो को हमारी सेवा मे भेज दिया जाय अन्यथा (२४) उन्हे प्रोत्साहन एव आश्रय देना बन्द करके अपने राज्य में स्थान न दो। इतिहासो से ज्ञात हुआ होगा कि जब ईलदरिम बायजीद फिरगियो से युद्ध कर रहा था, तो हज़रत साहब किरानी स्वय उससे युद्ध करना न चाहते थे किन्तु जब करा यूसुफ तुर्कमान एव सुल्तान अहमद जलायर भाग कर रूम के कैसर के पास चले गये तो हज़रत साहब किरानी ने कई बार कृपा-युक्त पत्र लिख कर उन लोगों को आश्रय प्रदान करने से रोका। जब कैसर उनके कहने पर सौभाग्य की ओर प्रेरित न हुआ तो उनसे जो कुछ हो सकता था, उन्होने किया।" किन्तु सुल्तान बहादुर ने अपनी सर्वनाशकारी कल्पनाओ तथा अपने असयमी विचारो के कारण बडे कठोर एव अशिष्ट उत्तर लिखे। तातार खा के बहकाने एव षड्यत्र के कारण लश्कर की तैयारी करने लगा। गुजरात के ८ करोड[2] प्राचीन सिक्के, जो देहली के प्रचलित ४० करोड के बराबर होते हैं, तातार खा को देकर रणथम्बोर के किले में इस आशय से भेज दिये कि तातार खा के परामर्श से नये सैनिको के वेतन पर व्यय किये जायें।

उसने तातार खा के पिता सुल्तान लोदी को एक बहुत बडी सेना सहित कालिजर की ओर उस दिशा में अशाति उत्पन्न करने के उद्देश्य से भेज दिया। बुरहानुलमुल्क मुल्तानी एव गुजरातियो के एक समूह को नागौर की ओर इस आशय से नियुक्त किया कि उस मार्ग से पजाब की सीमा पर पहुँच कर उपद्रव मचायें। उसने इस असम्भव कल्पना से कि इससे विजयी सेना में घबडाहट फैल जायगी

१ सुल्तान बहादुर का पिता।
२ अकबर नामा भाग १ में '२० करोड़' (पृ० १२०) [रिजवी मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १, पृ० १७]।

अपनी सेना छिन्न-भिन्न कर दी। उसके कुछ दूरदर्शी निष्ठावानों ने समझाया कि अपनी सेना को छिन्न-भिन्न कर देना उचित नहीं और अपनी समस्त सेना को साथ लेकर एक स्थान पर जाना बुद्धि के अनुकूल है, किन्तु इससे कोई लाभ न हुआ। वह स्वय चित्तौड के किले पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से रवाना हुआ ताकि लश्कर को अधिक सहायता पहुँचा सके और इस प्रकार किला भी विजय कर ले।

सुल्तान अलाउद्दीन का सक्षिप्त हाल इस प्रकार है वह सुल्तान सिकन्दर लोदी का भाई और सुल्तान इबराहीम का चाचा था। उसका नाम आलम खा था। सुल्तान सिकन्दर की मृत्यु के उपरान्त उसने सुल्तान इबराहीम के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और सरहिन्द के क्षेत्र में अलाउद्दीन की उपाधि धारण करके सल्तनत का दावा करने लगा और युद्ध-प्रिय अफगानों की एक सेना लेकर आगरा की ओर रवाना हुआ। सुल्तान इबराहीम भी शिकार के उद्देश्य से बाहर निकला। होदल[1] के समीप दोनो सेनाओं का युद्ध हुआ। क्योकि सुल्तान अलाउद्दीन में पक्तियाँ सुव्यवस्थित करके युद्ध करने की शक्ति न थी अत उसने रात्रि में छापा मारा किन्तु सफलता न प्राप्त कर सका और वापस होकर काबुल चला गया। तातार खा गुजरात पहुँचा। सुल्तान बहादुर ने उसे आश्रय प्रदान किया। अलाउद्दीन हज़रत फिरदौस मकानी के साथ-साथ हिन्दुस्तान पहुँचा। इबराहीम के युद्ध में वह उनके साथ था। हिन्दुस्तान की विजय के उपरान्त हज़रत फिरदौस मकानी ने अलाउद्दीन की दुष्टता से अवगत होकर उसे बदख्शाँ भेज दिया। अफगान व्यापारियो की सहायता से किल्ये जफर से भाग कर अफगानिस्तान पहुँचा और वहाँ से बिलोचिस्तान और बिलोचिस्तान से गुजरात। सक्षेप में, जब सुल्तान बहादुर ने सेनायें रवाना की तो तातार खा ने खज़ाने के मुँह खोल दिये और सेना एकत्र करने लगा। अफगानों इत्यादि में से लगभग ४० हज़ार अश्वारोही सेवा में रख लिये और धृष्टता के पाँव ममालिके महरूसा की सरहद की ओर बढाये और ब्याना पर अधिकार जमा लिया। जब बादशाह के समीप यह समाचार शुभ काना तक पहुँचे तो उन्होंने वापसी की लगाम मोड कर शत्रुओं पर आक्रमण करना निश्चय कर लिया। जब वे दारुल खिलाफा आगरा पहुँचे तो मीर्ज़ा अस्करी, मीर्ज़ा हिन्दाल, यादगार नासिर मीर्ज़ा, कासिम हुसेन सुल्तान, मीर फकीर अली[2], ज़ाहिद बेग, एव दोस्त बेग को १५००० अश्वारोहियो सहित तातार खा से युद्ध हेतु नियुक्त किया। जैसे ही विजयी सेना शत्रुओं की सेना के समीप पहुँची, तो जो लोग नये-नये उसकी सेवा में प्रविष्ट हुये थे और जिन्होंने धन सम्पत्ति ले ली थी, वे पृथक् हो गये और कुशलता का मार्ग ग्रहण कर लिया। इस प्रकार अल्प समय में अधिकाश लोग भाग गये। शनै शनै शत्रुओं की सेना मे ३००० अश्वारोही रह गये। क्योकि तातार खा अत्यधिक आग्रह करके इस महान् कार्य की ओर आकृष्ट हुआ था, और अत्यधिक धन-सम्पत्ति व्यय करा दी थी, अत वापस होकर मुह दिखाने का उसमें साहस न रहा। विवश होकर प्राण से हाथ धोकर मदराएल[3] में युद्ध प्रारम्भ कर दिया। अपनी शक्ति भर प्रयत्न किया यहाँ तक कि उसके अधिकाश आदमी मार डाले गए और अन्त मे वह स्वय मारा गया। जो बच गए वे बडी कठिनाई से भाग सके। इस सेना की पराजय से अन्य दोनो सेनाये आप ही आप छिन्न-भिन्न हो गईं।

१ आईने अकबरी के अनुसार आगरा सूबे की सहार नामक सरकार में, देहली से दक्षिण में ८० मील पर।
२ अन्य स्थानों पर 'फकर अथवा फख अली'।
३ सम्भवत आईने अकबरी का 'मदनापुर', आगरा के दक्षिण में, ब्याना के समीप।

भाग्यशाली पताकाओं का गुजरात की विजय और सुल्तान बहादुर की पराजय हेतु बलन्द होना एवं उन प्रदेशों की समुद्र तक विजय

क्योंकि सुल्तान बहादुर ने वचन एवं प्रतिज्ञा भंग करके धृष्टता के पाँव संयम के बाहर निकालकर ममालिके महरूसा में सेनायें नियुक्त करके अशान्ति उत्पन्न करदी थी, अत: हज़रत जन्नत आशियानी ने जमादी-उल-अव्वल ९४१ हि० (नवम्बर १५३४ ई०) में प्रताप की लगाम गुजरात (२५) के प्रदेशों के विजय हेतु मोड़ी और विजयी सेना सहित मालवा के मार्ग से प्रस्थान किया। जब रायसेन के किले के समीप उनका पड़ाव हुआ तो किले वालों ने प्रार्थना पत्र भेजा कि "हम लोग बादशाह के दास हैं। जैसे ही सुल्तान का काम पूरा हो जायगा, किला आपका हो जायगा[1]।" वास्तव में उनका उद्देश्य इससे कहीं उच्च था, और किले का अवरोध करने से समय हाथ से निकल जाता अत: उन्होंने उन लोगों की प्रार्थना स्वीकार कर ली और मालवा की ओर रवाना हुये। उस समय सुल्तान बहादुर चित्तौड़ के किले का अवरोध किये था। इस समाचार से चिन्तित एवं व्याकुल होकर वह अपने हितैषियों के परामर्श से अवरोध को त्याग कर किले के पास से हट जाना चाहता था। सद्र ख़ाँ ने, जो उसके प्रतिष्ठित अमीरों में से था, और बुद्धि एवं योग्यता में अन्य लोगों से श्रेष्ठ था, निवेदन किया कि, "किला शीघ्र ही विजय हो जायगा। हम लोग इतना कष्ट उठा चुके हैं। यह उचित होगा कि किले को विजय करके यहाँ से प्रस्थान करें और बादशाह को पत्र लिख दें कि इस्लाम की प्रथानुसार यह उचित नहीं कि ऐसे समय में जब कि हम काफ़िरों से इस्लाम के लिये युद्ध कर रहे हैं, आप मुसलमान बादशाह होकर एवं ईश्वर का भय तथा हज़रत मुहम्मद की शरा के प्रचार करने का दावा करने के बावजूद, हमारे ऊपर आक्रमण करें। इसके बाद भी यदि बादशाह हमारे ऊपर आक्रमण करता है तो फिर इस्लाम के लिये जो युद्ध हम कर रहे हैं, उसे त्याग कर उससे युद्ध करने पर हम विवश होंगे।" सुल्तान को यह राय पसन्द आ गई। उसने इसी आशय का पत्र भेज दिया। हज़रत जन्नत आशियानी ने अत्यधिक साहस एवं शक्ति के बाहुल्य के बावजूद सुल्तान की प्रार्थना स्वीकार कर ली और उत्तर में लिख भेजा, "तुम निश्चिन्त होकर अपने कार्य में व्यस्त रहो और इस ओर से किसी प्रकार की चिन्ता एवं भय मत करो। जब तक तुम किला विजय न कर लोगे हम तुमसे युद्ध हेतु अग्रसर न होंगे।" वे स्वयं अपने सौभाग्य एवं प्रताप के साथ बड़े आराम से धीरे-धीरे उज्जैन तशरीफ़ ले गये।

जब ३ रमज़ान ९४१ हि० (८ मार्च १५३५ ई०) को सुल्तान बहादुर ने चित्तौड़ का किला विजय कर लिया और उस कार्य की ओर से निश्चिन्त हो गया तो विजयी सेना से युद्ध हेतु अग्रसर

१ यह वाक्य अस्पष्ट है। अकबर नामा भाग १ में इस प्रकार है: "किला पादशाह का है और हम पादशाह के दास हैं। जब उस समस्या का जो सुल्तान बहादुर के कारण उत्पन्न हुई है समाधान हो जायगा यह किला आपके किस काम आयेगा?" (अकबर नामा भाग १, पृ० १३०, रिज़वी: मुग़ल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १, पृ० १६)।

हुआ। हजरत जन्नत आशियानी भी ससार विजय करने वाली सेनाओं सहित अग्रसर हुये। मदसौर[1] परगने के समीप, जो मालवा की विलायत के अधीन है, एक झील के, जो लम्बाई-चौडाई में नदी के बराबर है, दोनों तट पर सेनाओं ने पडाव कर दिया। दोनो ओर से हिरावलो[2] ने सघर्ष एव प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। बचका बहादुर एव कुछ पादशाही हिरावलों ने सैयिद अली खा एव खुरासान खा से, जो सुल्तान बहादुर के हिरावलों में सर्वश्रेष्ठ थे, युद्ध किया। दोनो ओर वालो ने वीरता का प्रदर्शन किया। क्योकि विजयी सेना के साथ सौभाग्य भी था, अत शत्रु पराजित हो गये। ताज खा एव सद्र खा ने, जो सुल्तान बहादुर के अमीरो में सर्वश्रेष्ठ थे, यह बात उचित समझी कि, "हम लोगो ने अभी-अभी चित्तौड पर विजय प्राप्त की है। हमारे आदमियो के हौसले बढे हैं। अविलम्ब युद्ध कर देना चाहिये।" सुल्तान के मीर आतश[3] रूमी खा एव अन्य लोगों ने औचित्य इसमें देखा कि "इतने बडे तोपखाने एव आतशबाजी[4] के सामान के होते हुए स्वय तलवार चलाना सावधानी की दृष्टि से उचित नही। यह मुनासिब होगा कि लश्कर के चारो ओर अराबो[5] का किला तैयार कर लें। अराबो के चारो ओर खाई खुदवा दे। सर्वप्रथम दूर से हानि पहुँचाने वाले अस्त्र शस्त्र द्वारा पादशाही लश्कर को परेशान कर दें। तदुपरान्त बाण एव तलवार का युद्ध अपने हाथ में है।" अन्त में इसी के अनुसार निर्णय हो गया। कुछ दिन इसी प्रकार व्यतीत हो गये। युद्ध प्रिय योद्धा दोनों ओर से निकल कर युद्ध करते थे और प्राय शत्रु पराजित होते थे।

एक दिन बादशाह की ओर के वीर एव यक्का जवान[6] मदिरापान के समय अपनी अपनी योग्यतानुसार वीरता एव पौरुष के विषय में बातें कर रहे थे। इसी बीच में एक मस्त ने कहा "पिछले लोगो के विषय में वार्ता, बातो की दूकानदारी है। अपने साहस के अनुसार इस समय वीरता का प्रदर्शन करना चाहिये।" इसपर किसी को आपत्ति प्रकट करने का अवसर न रहा। लगभग २०० व्यक्ति, जो उस गोष्ठी में उपस्थित थे, अस्त्र शस्त्र धारण करके शत्रु के लश्कर की ओर अग्रसर हुये। सुल्तान बहादुर का एक अमीर लगभग ४००० सशस्त्र व्यक्तियो को लिये शिविर का पहरा दे रहा था। उन लोगों के पहुँचते ही युद्ध की ज्वाला भडक उठी। विजयी सेना के वीर अपने प्राणों से हाथ धोकर एक दूसरे से बढ जाने का प्रयत्न करते हुए युद्ध करने लगे। गुजरात वाले मुकाबला न कर सके और भाग खडे हुए और अराबों तक पहुच कर लगाम खीची। वीरता की मदिरा के नशे में मस्त यह समूह विजय एव सफलता प्राप्त करके लौट आया और अपने स्थान पर पहुच कर पूर्व की भाँति विजय के प्याले के नशे में आनन्द-मगल मनाने लगा। (२६) इस आक्रमण से गुजरात वाले इतने भयभीत हो गये कि वे अराबो के बाहर न निकलते थे। हजरत जन्नत आशियानी ने चारा ओर इस आशय से सेना नियुक्त कर दी कि वे अनाज के

१ २४°५' उत्तर तथा ७५°५' पूर्व, सिवाना नदी के, जो सिपरा नदी की एक शाखा है, तट पर उज्जैन के उत्तर-पश्चिम में लगभग ८० मील पर है।

२ सेना का अग्र दल।

३ तोपखाने का मुख्य अधिकारी।

४ गोला बारूद तथा अग्नि के अन्य यंत्र।

५ तोप की गाड़ियां।

६ अद्वितीय के अनुरूप।

यातायात का मार्ग रोक दे और सुल्तान के लश्कर में खाद्य सामग्री न पहुँचने पाये। अल्प समय मे घोर अकाल पड गया। रमज़ान की ईद के दिन (१ शव्वाल ९४१ हि०/५ अप्रैल १५३५ ई०) को मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा ५००-६०० व्यक्तियों को लेकर वीरतापूर्वक अरावो के किले के बाहर निकला। विजयी लश्कर से भी कुछ लोग साहस के मैदान मे पौरुष के कदम जमा कर युद्ध करने लगे। तीन बार गुजराती वाण चला-चला कर भाग खडे हुए। इस युक्ति से वे पादशाही लश्कर को तोपखाने के समीप खीच ले गये। तोपे चला दी। उस दिन कुछ सैनिको को हानि पहुँची। और उन्होंने निष्ठा के खुले हुए मार्ग में अपने प्राण न्योछावर कर दिये। हज़रत जन्नत आशियानी को नक्षत्रो के चक्कर का पूर्ण ज्ञान था। १७वे दिन मुहूर्त का पता लगाकर उन्होंने आदेश दिया कि सुल्तान वहादुर के शिविर में पहुँच कर सुल्तानी युद्ध किया जाय। उस दिन से निष्ठावानो के हृदय को शक्ति प्राप्त होने लगी। गुजरात वाले भयभीत एव आतंकित होने लगे। यहाँ तक कि दैवी सहायता से रविवार २१ शव्वाल (९४१ हि०/२५ अप्रैल १५३५ ई०) की रात्रि में सुल्तान बहादुर ने स्वय घबडा कर आदेश दिया कि समस्त तोपे एव देगों[1] में बारूद भरवाकर आग लगा दी जाय और उन्हे तोड डाला जाय। जब रात हो गई तो वह स्वय खान्देश के हाकिम मीरान मुहम्मद शाह फ़ारूकी एव ५-६ अन्य व्यक्तियो सहित सरापरदे[2] की दराज़ से निकला और धोखा देने के लिये आगरा की ओर रवाना हुआ और फिर मन्दू की ओर चल खडा हुआ। सद्र खा एव एमादुल मुल्क सामा खेल दोनो २०,००० अश्वारोहियो सहित सीधे मार्ग से मन्दू की ओर रवाना हुये। मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा अपमानित एव तिरस्कृत होकर कुछ लोगो के साथ इस आशय से लाहौर की ओर रवाना हुआ कि सम्भवत वहाँ उपद्रव एव विद्रोह की अग्नि भडका सकेंगे।

उस दिन गुजरातियो के लश्कर में बडा भयकर शोर गुल होने लगा, यहाँ तक कि राज्य के सहायकों को बहुत समय तक तथ्य का ज्ञान न हो सका। हज़रत जन्नत आशियानी समस्त विजयी सेना को लेकर अस्त्र-शस्त्र धारण कराये रात भर खडे-खडे सूर्योदय की प्रतीक्षा करते रहे। जब सूर्य उदय हुआ तो प्रताप की सुबह की प्रतीक्षा करने वालों को ज्ञात हुआ कि परमेश्वर की महान् अनुकम्पा से विजय एव सफलता का समीर प्रताप की पताका के फरहरे पर प्रवाहित हो गया है। सुल्तान बहादुर अत्यधिक निराश होकर भाग खडा हुआ और मन्दू की ओर चल दिया। विजय के मैदान के वीर सुल्तान के शिविर में प्रविष्ट होकर लूट मार करने लगे। अत्यधिक लूट की धन-सम्पत्ति एव हाथी घोडे राज्य के सहायकों के अधिकार मे आ गये। खुदावन्दा खा, जो सुल्तान मुज़फ्फ़र का वज़ीर था और गुरू भी, वन्दी बना लिया गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने उसे बादशाही कृपाओ द्वारा सम्मानित किया और उसे अपनी सेवा में रख लिया। यादगार नासिर मीर्ज़ा, कासिम हुसेन सुल्तान एव हिन्दू बेग को (शत्रुओ का) पीछा करने के लिये नियुक्त किया। सद्र खा एव एमादुल मुल्क सीधे मार्ग से शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए मन्दू के किले में पहुँच गये। सुल्तान बहादुर १४वें दिन अपरिचित मार्ग से एव

१ तोपों से तात्पर्य है।
२ शाही खेमा।

अत्यधिक कठिनाइयाँ झेलता हुआ मन्दू के किले तक पहुँचा और जोली महेसुर[1] नामक द्वार की ओर से किले में प्रविष्ट हो गया। हजरत जहाँबानी भी तेजी से यात्रा करते हुये विजयी सेना के साथ, जो पीछा करने के लिये नियुक्त हुई थी, पहुच गये और स्वय नालचा[2] में पडाव किया। रूमी खा सुल्तान बहादुर की सेना से भागकर, हजरत जन्नत आशियानी की सेवा द्वारा सम्मानित हुआ। उसे खिलअत एव इनाम द्वारा सुशोभित किया गया। प्रसिद्ध है कि जब सुल्तान बहादुर चित्तौड के किले का अवरोध कर रहा था, तो उसने रूमी खा को, जो किले पर विजय प्राप्त करने की कला एव तोप चलाने में वडा दक्ष था, इस बात का आश्वासन दिलाया था कि, 'यदि किला तेरे उत्तम प्रयत्न से विजय हो जाय तो तुझे इनाम में दे दिया जायगा।' इस आशा मे उसने जान तोड कर सेवा की। किला विजय करने की सामग्री, साबात, सुरग इत्यादि की बडे परिश्रम से व्यवस्था की। विजय के पश्चात् सुल्तान ने अपने वचन का पालन करना चाहा किन्तु राज्य के उच्च पदाधिकारियो ने इसे उचित न बताया। यद्यपि सुल्तान उसे नाना प्रकार स प्रोत्साहन देता एव क्षति की पूर्ति करता किन्तु वह अत्यधिक रुष्ट होने के कारण शत्रुता पर कटिबद्ध हो गया। उसने गुप्त रूप से हजरत जन्नत आशियानी के पास प्रार्थना-पत्र भेज कर उन्हे सुल्तान बहादुर से युद्ध करने के लिये प्रेरित किया। जब दोनो सेनाओं का सामना हुआ तो वह हजरत जन्नत आशियानी को सुल्तान के लश्कर की सूचना भेजा करता था। क्योकि सुल्तान को उसपर पूर्ण विश्वास था अत वह उसके परामर्श के अनुसार कार्य करता रहता था। वह उसे ऐसी बातें सिखाता जो विजयी लश्कर के हित में तथा गुजरात वालो के विनाश का कारण होती थीं।

(२७) सक्षेप में, हजरत जन्नत आशियानी ने आदेश दिया कि लश्कर किले के चारो ओर पडाव कर दे किन्तु मन्दू का किला वडा लम्बा चौडा और उसका घेरा इतने कोसो का है कि वह यथारूप घेरा न जा सका। इसी बीच सुल्तान ने सधि की बात प्रारम्भ करके सन्देश भेजा कि गुजरात एव चित्तौड, जो हाल में उसके अधिकार में आये हैं, उसके अधीन रहें और मन्दू, मालवा की विलायत सहित उनके सेवको के पास रहे। इस प्रकार हजरत बादशाह की ओर से मौलाना पीर अली और सुल्तान बहादुर की ओर से सद्र खा ने एक साथ बैठ कर यह निश्चय किया कि उपर्युक्त शर्त पर सधि हो जाय। हजरत बादशाह किले का अवरोध त्याग कर खिलाफत के सिंहासन पर आरूढ हो और सुल्तान बहादुर गुजरात चला जाय। अन्त में उसी रात्रि में किले के रक्षक परिश्रम करते-करते थक जाने के कारण असावधानी की निद्रा में सो गये और विजयी सेना के वीरो में से कुछ लोग, जिनकी सख्या लगभग २०० थी, काबू पाकर सीढियो एव रस्सियो द्वारा किले पर चढ गये और किले का द्वार, जो उस ओर था, खोल दिया। घोडो को भीतर ले जाकर सवार हो गये। इसी बीच मे बहुत से सैनिको को सूचना मिल गई। वे द्वार से किले में प्रविष्ट हो गए। उस मोर्चे का प्रबन्ध मल्लू खा के, जिसकी उपाधि कादिर शाह थी, अधीन था। उसे इस बात की सूचना मिल गई। वह घोडा भगाता हुआ सुल्तान की सेवा मे पहुँचा। सुल्तान सो रहा था।

१ अकबर नामा में 'चोली महेसुर' ; आईने अकबरी के अनुसार माडू का एक महाल। (रिजवी : मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १, पृ० २३)।

२ आईने अकबरी के अनुसार यह मांडू की सरकार का एक महाल है। मालवा के सुल्तानों ने इस स्थान को अत्यधिक रमणीक एवं हृदयग्राही बनाने का प्रयत्न किया था।

कादिर शाह की आवाज़ से जाग उठा। घबडा कर भाग खडा हुआ। मार्ग मे भूपत वल्द सिलहदी, जो उसके दरबारियो मे से था, २० अश्वारोहियो सहित उसके पास पहुँच गया। जब वह सरे मैदान के द्वार[1] पर पहुँचा तो विजयी सेना के सैनिको मे से लगभग २०० अश्वारोही सामने आये। सुल्तान ने स्वय सर्वप्रथम उनपर आक्रमण किया। कुछ लोगो ने उसका साथ दिया। सेना को फाड कर, कादिर शाह एव एक अन्य सेवक सहित वह निकल गया। सुगर के किले में, जो मन्दू के किले के मध्य मे है, पहुँच कर घोडो को रस्सियो से बाँध कर नीचे उतार दिया और स्वय बडी कठिनाई से उतर कर गुजरात की ओर चल दिया। कासिम हुसेन सुल्तान किले के समीप अपने आदमियो सहित घोडे पर सवार खडा था। सुल्तान के एक सेवक ने, जिसका नाम लूदी था, और जो हाल ही मे कासिम हुसेन का सेवक हुआ था, सुल्तान को पहचान कर खान से कहा कि सुल्तान जा रहा है। उसने युद्ध का साहस न किया। प्राचीन सेवक होने के कारण पूर्ण उपेक्षा की[2]। सुल्तान् अपने आधे प्राण ले कर चाम्पानीर के किले तक भागता चला गया और कही न रुका। मार्ग मे १५०० व्यक्ति सुल्तान से मिल गये। जब वह किले मे प्रविष्ट हुआ, खजाने एव उत्तम वस्तुओ मे से जो कुछ वह ले सका, उसे बन्दर द्वीप[3] भेज दिया।

सक्षेप में, जब विजयी सेना के वीर तेज़ी दिखा कर मन्दू के किले के ऊपर पहुँच गये तो उस दिन प्रात काल निश्चित समाचार न प्राप्त हो सके। दो घडी दिन उपरान्त भाग्यशाली सेना के किले में प्रविष्ट होने एव किले की विजय के समाचार प्राप्त हुये, हज़रत जन्नत आशियानी सफल होकर देहली द्वार से किले मे प्रविष्ट हुए। सद्र खा यद्यपि आहत हो चुका था किन्तु फिर भी अपने समस्त आदमियो सहित, घर के द्वार पर उद्दडता प्रदर्शित करते हुए युद्ध करता रहा। अन्ततोगत्वा लोग उसके घोडे की लगाम पकड कर सुगर की ओर ले गये। वहाँ पहुचकर उसने किला बन्द कर लिया। बहुत से लोग उसके साथ चले गये। सुल्तान आलम भी सद्र खा के साथ चला गया। ससार को विजय करने वाली सेना में तीन दिन और रात तक किले को लूटती रही। तदुपरान्त उन्होने आदेश दिया कि चौथे दिन लोग लूट मार न करें। उन्होने अनुभवी विश्वास-पात्रो को सद्र खा एव सुल्तान आलम के पास भेज कर मुक्ति दिलाने वाले परामर्शों द्वारा, उनके शकित हृदय को शान्ति प्रदान कराई और वे सेवा में लाये गये। क्योकि सुल्तान आलम कई बार फितना व फसाद कर चुका था इसलिये उसकी पें (एडी की नस) कटवाकर उसे मुक्त कर दिया गया। सद्र खा को उन्होने शाहाना कृपाओ द्वारा सम्मानित करके अत्यधिक आश्रय प्रदान किया।

तीन दिन उपरान्त वे किले से उतर कर १०,००० अनुभवी सशस्त्र अश्वारोहियो सहित शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुए गुजरात की ओर रवाना हुये। लश्कर के विषय मे आदेश हुआ कि वह पीछे पीछे आता रहे। जब भाग्यशाली सेना चाम्पानीर पहुँची तो उन्होने एमादुलमुल्क के हौज़ के समीप जिसकी परिधि तीन कुराह है और जो पिपला द्वार की ओर स्थित है, रुक कर सेनाओ को सुव्यवस्थित किया। सुल्तान बहादुर यह समाचार सुनकर किले को दृढ बनाने के

१ सम्भवत वह द्वार जो मैदान की तरफ था।

२ अबुल फ़ज़ल ने इस सिद्धान्त का बडे उत्साह से प्रचार किया है कि प्राचीन सेवक का निष्ठावान् होना आवश्यक नहीं। (रिज़वी ; मुग़ुल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १, पृ० २४)।

३ दिव्।

उपरान्त स्वयं दूसरे द्वार से, जो पुनः तलाव की ओर है, निकल कर कुशलतापूर्वक कम्वायत[1] (२८) की ओर चल खड़ा हुआ। उसके आदेशानुसार नगर[2] में आग लगा दी गई। उस समय हज़रत जहाँबानी ने पधार कर आदेश दिया कि आग कृपा के जल द्वारा बुझा दी जाय। मीर हिन्दू बेग को सेना के अधिकांश भाग के साथ चाम्पानीर के क्षेत्र में छोड़ कर लगभग १ हज़ार अश्वारोहियों सहित वे सुल्तान बहादुर के पीछे तेज़ी से रवाना हुये। सुल्तान कम्वायत पहुँचा। १०० युद्ध के जहाज़, जिन्हें उसने फिरंग[3] से युद्ध हेतु तैयार कराया था, जलवा डाले और दीप[4] की ओर चल दिया। उसे भय था कि कहीं विजयी सेना उन जहाज़ों पर सवार होकर उसका पीछा न करे। अन्त में हज़रत जन्नत आशियानी उसी दिन कम्वायत पहुँचे। समुद्र तट पर भाग्यशाली शिविर लगे। वहाँ से उन्होंने सुल्तान का पीछा करने के लिये एक सेना भेजी। जब सुल्तान शीघ्रातिशीघ्र दीप में प्रविष्ट हो गया तो विजयी योद्धा दीप के आस पास से अत्यधिक लूट की धन-सम्पत्ति लेकर कम्वायत की ओर लौट आये। उन भाग्यशाली दिनों में उस जम सरीखे बादशाह को ईश्वर की कृपा से असंख्य विजयें प्राप्त हुईं। उनके नित्य प्रति उन्नत प्रताप के कारण माल्वा एवं गुजरात की विलायतें राज्य के सहायकों द्वारा विजय हो गयीं।

संक्षेप में, जब हज़रत जन्नत आशियानी ने तेज़ी से यात्रा करते हुए कम्वायत के क्षेत्र में अपने ऐश्वर्य की पताकायें बुलन्द कीं तो मलिक अहमद लाद एवं रुक्न दाद[5] ने, जो सुल्तान बहादुर के अमीरों में से थे और कोलियों के साथ जीवन व्यतीत कर रहे थे, उस भूभाग के कोलियों एवं गवारों के समूह से मिलकर यह निश्चय किया कि क्योंकि उनकी रिकाब के साथ बहुत कम आदमी रह गये हैं, अतः अवसर पाकर रात्रि में छापा मारें किन्तु जिसके प्रताप की देख रेख ईश्वर की प्रतिरक्षा कर रही हो और जागरूक सौभाग्य जिसका पहरेदार हो उसे इन दुष्कल्पनाओं से क्या हानि पहुँच सकती है। संक्षेप में, एक बुढ़िया को इस बात का ज्ञान प्राप्त हो गया। उसने शाही सरापरदे के समीप अपने आप को पहुँचा दिया। दरबार के एक विश्वासपात्र से अत्यधिक आग्रह किया कि, "मैं कुछ निवेदन करना चाहती हूँ। उसे बिना किसी मध्यस्थ के शाही कानों तक पहुँचाऊँगी।" जब हज़रत जन्नत आशियानी से इस विषय में निवेदन किया गया तो उन्होंने उसे उपस्थित होने की अनुमति दे दी। वृद्धा ने रात के छापे की योजना के विषय में निवेदन किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने पूछा, "यह निष्ठा तेरे हृदय में कहाँ से आ गई।" उसने निवेदन किया कि, 'मेरा पुत्र प्रतापी रिकाब के एक सेवक के पास बन्दी है। मैं चाहती हूँ कि इस सेवा के बदले में उसे मुक्त करा लूँ। यदि यह बात झूठ निकले तो मेरी तथा मेरे पुत्र दोनों की हत्या करा दी जाय।" शाही आदेशानुसार उसके पुत्र को उपस्थित किया गया। दोनों को एक विश्वासपात्र के सुपुर्द कर दिया गया। सावधानी की दृष्टि से विजयी सेना को तैयार करके वे स्वयं बाहर निकले और एक कोने में खड़े हो गये। रात के अन्त में प्रातःकाल के समीप ५-६ हज़ार भीलों एवं कोलियों

१ खम्बायत अथवा कैम्बे।
२ चाम्पानीर में।
३ पुर्तगालियों।
४ दियु।
५ कुछ पोथियों में 'रुक्न दाऊद'।

ने सौभाग्य के सरापर्दे पर आक्रमण कर दिया। हज़रत जन्नत आशियानी एक ऊँचाई पर खडे थे। गँवारो ने शिविर को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। अधिकाश उत्तम ग्रथ जो सर्वदा स्वर्ग रूपी दरबार में रहते थे और जिन्हे नि सकोच आध्यात्मिक मुसाहिब कहा जा सकता है, उस रात्रि मे नष्ट हो गये। उन्ही में मौलाना सुल्तान अली के हाथ का लिखा हुआ सचित्र 'तीमूर नामा' था जिसके चित्र उस्ताद बहज़ाद ने बनाये थे[1]। अब यह हज़रत ख़ाक़ानी[2] के किताबख़ाने में मौजूद है। जब भाग्यशाली सुबह प्रताप के उदयाचल से उदय हुई तो विजयी सेना के वीरो ने उन दुष्टो पर आक्रमण करके प्रत्येक को पराजित एव छिन्न-भिन्न कर दिया। बादशाही कोप की अग्नि धधक उठी। कस्बायत को जला डालने एव नष्ट भ्रष्ट कर देने का आदेश दे दिया गया। उस वृद्धा को सतुष्ट करके उस तथा उसके पुत्र को मुक्त कर दिया।

दो दिन उपरान्त वे चाम्पानीर की ओर वापस हुये। चार मास तक उस किले का अवरोध किये रहे। इख़्तियार ख़ा, जो नरियाद नामक कस्बे के काज़ियो के वश से था और अपनी योग्यता के कारण (सुल्तान बहादुर) का विश्वास-पात्र हो गया था, ने किले की प्रतिरक्षा का अत्यधिक प्रयत्न किया। यद्यपि वह किले की प्रतिरक्षा बडी सावधानी से कर रहा था, किन्तु पर्वत के दर्रो में से जहाँ से वृक्षों एव कटीदार झाडियो की अधिकता के कारण बडी कठिनाई से पैदल यात्रा की जा सकती थी और अश्वारोहियों का तो कोई प्रश्न ही न था, कुछ लकडहारे एव मजदूर अपने लाभ के लिये मार्ग निकाल कर, अनाज एव घी-तेल किले के नीचे ले जाते थे और किले वाले रस्सियाँ नीचे लटका कर उन वस्तुओ को ऊपर खींच लेते थे। जब अवरोध को काफ़ी समय हो गया तो हज़रत जहाँबानी एक दिन सवार होकर किले के चारो ओर सैर करने लगे और किसी ऐसे स्थान की खोज कर रहे थे जहाँ से सैनिक (किले में) प्रविष्ट हो सकें। अचानक हालोल की ओर से जो उद्यान था कुछ लोग, जो अनाज एव घी-तेल बेच कर लौटे थे, दृष्टिगत हुये। उनके विषय में पूँछ-ताँछ करने का आदेश हुआ। उन्होंने बताया कि, "हम लकडहारे हैं।" क्योंकि उनके पास कुल्हाडी, कुदाल इत्यादि जो इस कार्य हेतु आवश्यक हैं न थी, हज़रत ताड गये कि वे लोग झूठ बोल रहे (२९) है। उन्होंने उनको चेतावनी देते हुए कहा कि, "जब तक सच न बोलोगे बादशाही दड से मुक्त नही हो सकते।" विवश होकर उन्होंने सच बात स्वीकार कर ली। उन्होने आदेश दिया, कि, "आगे आगे चल कर वह स्थान दिखाओ।" जब वे वहाँ पहुँचे तो वहाँ की ऊँचाई का भली भाँति निरीक्षण किया। पता चला कि वह स्थान ७० गज ऊँचा और बडा ही असमतल है। वहाँ से पहुचना बडा कठिन है। सम्मानित आदेशानुसार ७०-८० लोहे के खूँटे लाये गये। एक गज की दूरी पर दायें बायें दीवार में ठोक दिये गये। आदेश हुआ कि साहसी वीर हाथ फेंकते हुए चढ जायें। ३९ व्यक्ति चढ चुके थे कि हज़रत जन्नत आशियानी ने स्वय चढने का सकल्प किया। बैरम खा ने निवेदन किया कि, "आप इतना ठहर जायें कि जो जवान मार्ग में हैं, वे ऊपर पहुँच जायँ।" यह कहकर वह स्वय वीरता प्रदर्शित करता हुआ बढा। बैरम खा के पीछे हज़रत जन्नत आशियानी स्वय वीरता को उस बलन्दी पर चढ गये। आख़िरी गणना के अनुसार हज़रत

१ तीमूर नामा लेखक मौलाना हातिफ़ी जो अब्दुर्रहमान जामी का भागिनेय था। इस विषय में डा० ईश्वरी प्रसाद की भूल की समीक्षा के लिए देखिये, मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १, पृ० २१।

२ अकबर।

जन्नत आशियानी ४१वें थे। उस समय उन्होंने स्वय खडे होकर लगभग ३०० जवानों को इस मार्ग से ऊपर खीच लिया। उन्होंने आदेश दिया कि मोर्चे में सूचना करा दी जाय कि विजयी सेना प्रत्येक दिशा से किले पर आक्रमण करके युद्ध छेड दे। (किले के) भीतर वाले इस ओर से असावधान होकर विजयी सेना को पीछे हटाने के लिये अग्रसर हुये। अचानक ३०० जवानों ने उनके पीछे से पहुच कर उन लोगों पर वाणों की वर्षा प्रारम्भ कर दी। जब किले वालो को ज्ञात हुआ कि हजरत जहाँवानी स्वय प्रताप की वलन्दियों एव विजय के जीनो पर चढ गये हैं तो उन लोगा में से प्रत्येक हताश होकर तथा कार्य त्याग कर, किसी न किसी कोने मे चला गया। इख्तियार खा एक छोटी सी पहाडी पर, जो किले के मध्य में थी और जिसे मूलिया कहते थे, चला गया और किला वन्द कर लिया। दूसरे दिन अमान माँग कर सेवा में उपस्थित हुआ और उनकी शरण में दुर्घटनाओं के कष्ट से मुक्त हो गया। अनुभव एव शासन प्रबन्ध की योग्यता के साथ-साथ उसे सभी विद्याओं का, विशेष रूप से हिन्दिसा[1], गणित एव ज्योतिष का, वडा अच्छा ज्ञान था। कविता, मुअम्मा[2] एव अन्य गूढ विद्याओं से भी अवगत था। उसे दरवारियों एव मुसाहिवो में स्थान प्रदान कर दिया गया और विश्वासपात्रो में सम्मिलित हो गया। एक विद्वान् ने इस विजय की तारीख, 'अव्वल हफ्तये माहे सफर''[3] से निकाली।

जब गुजरात की विलायत महेन्द्री नदी तक राज्य के सहायकों के अधिकार में आ गई और उस ओर पादशाही अमीरों एव सुल्तान वहादुर के सेवको में से कोई न रहा तो उस क्षेत्र की प्रजा ने सुल्तान को प्रार्थना-पत्र लिखा कि विलायत का महसूल अदा करने का समय आ गया। यदि दरवार से कोई आमिल नियुक्त हो जाय तो हम लोग जो मालगुजारी अदा करनी है, उसे अदा कर दें। सुल्तान ने अपने जिस सेवक से भी इस विषय में कहा किसी ने साहसपूर्ण उत्तर न दिया। एमादुल मुल्क ने साहस के कदम बढा कर इस सेवा के लिये इस शर्त पर प्रार्थना की कि कार्य की आवश्यकतानुसार एव समय के औचित्य की दृष्टि से जहाँ भी और जितना भी वह विलायत से किसी को दे, उससे बाद में इस विषय में पूँछ-ताँछ न की जाय। उस समय वह २०० अश्वारोही लेकर अहमदावाद की ओर रवाना हुआ। मार्ग में जो व्यक्ति जिस चीज से भी सतुष्ट होता, वह उसे नि सकोच दे देता था। इस उपाय से उसके अहमदावाद पहुँचने तक उसके पास १० हजार अश्वारोही एकत्र हो गये। जिस किसी के पास भी दो घोडे होते उसका वेतन वह एक लाख तन्का गुजराती कर देता। अल्प समय में उसकी सेना मे ३० हजार अश्वारोही हो गये। जूनागढ का हाकिम मुजाहिद खा[4] भी १० हजार अश्वारोहियों सहित उससे मिल गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने यह समाचार पाकर तरदी वेग खा को चाम्पानीर के किले मे छोड दिया और स्वय अहमदावाद की ओर रवाना हुये। जब महेन्द्री नदी के तट पर उनका पडाव हुआ तो एमादुल मुल्क भी धृष्टता के कदम वढा कर अग्रसर हुआ। जब शाही सेना एक मजिल कूच करती तो वह भी करता। नरियाद

१ सख्या, गणित।
२ ऐसे शेर जिनमें कोई समस्या अथवा पहेली होती है।
३ सफर (९४२ हि०) का प्रथम सप्ताह (२०-२७ जुलाई १५३३ ई०)।
४ प्रकाशित पोथी में 'महामिद खां'।

कस्बे तथा महमदाबाद[१] के मध्य में मीर्ज़ा अस्करी से, जो हिरावल था और कई मंजिल आगे यात्रा कर रहा था, उसका मुकाबला हुआ। घोर युद्ध हुआ। जिस समय उसने मीर्ज़ा अस्करी को बड़ी कठिनाई में डाल दिया था, यादगार नासिर मीर्ज़ा, कासिम हुसैन खाँ, हिन्दू बेग एवं एक बहुत बड़ी संख्या में अन्य लोग पहुँच गये। इन लोगों के पहुँचने एवं संसार को विजय करने वाली बादशाही सेना के आगमन के समाचार से शत्रुओं के पाँव उखड़ गये अतः हरकते मज़बूही[२] करके भाग खड़े हुये। क्योंकि यादगार नासिर मीर्ज़ा सबके आगे था अतः युद्ध का बोझ उसपर पड़ा। आलम खाँ लोदी एवं शत्रुओं में से कुछ अन्य लोगों ने घोर प्रयत्न किये यहाँ तक कि एमादुल मुल्क अपमानित अवस्था में निकल भागा। विजयी सेना में से शुजाअत खाँ का पिता दरवेश मुहम्मद उस युद्ध में मारा गया। किन्तु शत्रुओं में से लगभग ४०० व्यक्ति मार डाले गये। हज़रत जन्नत आशियानी ने खुदावन्द खाँ से पूछा कि, "अब और युद्ध की शंका है अथवा नहीं।" उसने निवेदन किया, (३०) "यदि वह सफेद दाग वाला दास अर्थात् एमादुल मुल्क स्वयं इस युद्ध में था तो फिर अन्य युद्ध की शंका नहीं। यदि वह स्वयं न था तो युद्ध सम्भव है।" बाद में कुछ अपमानित लोगों से, जो लाशों में घायल पड़े थे, निश्चित रूप से ज्ञात हो गया कि, "यह सेना एमादुल मुल्क के अधीन थी।" दूसरे दिन उन्होंने प्रस्थान किया और भाग्यशाली पताकाओं का पड़ाव काँकरिया हौज़[३] के किनारे हुआ। मीर्ज़ा अस्करी ने निवेदन किया कि, 'यदि समस्त लश्कर वाले नगर में प्रविष्ट हो जायेंगे तो सर्व साधारण को बड़ा कष्ट होगा।" उन्होंने आदेश दिया कि, 'यसावल[४] लोग नगर के द्वारों पर खड़े हो जायें। मीर्ज़ा अस्करी एवं उसके आदमियों के अतिरिक्त कोई भी भीतर न प्रविष्ट हो।' वे स्वयं रवाना होकर सरकीज[५] के समीप जो बड़ा ही हृदय ग्राही स्थान है उतर पड़े। तीसरे दिन दरबार के विश्वासपात्रों को लेकर नगर में पधारे।

उस समय गुजरात के शासन प्रबन्ध की ओर ध्यान देकर, मीर्ज़ा अस्करी को अहमदाबाद में नियुक्त कर दिया। हिन्दू बेग को एक सेना सहित उसकी सहायता हेतु नियुक्त किया। पटन यादगार नासिर मीर्ज़ा को प्रदान किया। बरोज, नौसारी एवं सूरत का बन्दरगाह कासिम हुसैन को, कम्बायत एवं बरौदा दोस्त बेग ईशक आका को और महमूदाबाद मीर वाचक बहादुर को प्रदान किये। गुजरात की विलायत के शासन प्रबन्ध की ओर से निश्चिन्त होकर वे बन्दर दीप की ओर रवाना हुये।

मार्ग में राजधानी से निष्ठावानों के प्रार्थना पत्र प्राप्त हुये कि उत्कृष्ट पताकाओं के दूर के प्रदेशों में चले जाने के कारण इस क्षेत्र के विद्रोहियों ने विद्रोह हेतु सिर उठा दिया है और षड्यंत्र एवं उपद्रव प्रारम्भ कर दिया है। मालवा से भी समाचार प्राप्त हुये कि सिकन्दर खाँ एवं मल्लू खाँ ने

१ अकबर नामा में 'महमूदाबाद', अहमदाबाद के दक्षिण पूर्व में और नरियाद से ११ तथा अहमदाबाद से १० मील दूर। (रिज़वी मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १, पृ० ३५)।
२ ऐसा प्रयत्न जो जिबह होते समय बचने के लिये जानवर करते हैं।
३ यह अहमदाबाद के उत्तर में है। इसे "हौजे कुत्ब" भी कहते हैं और १४५१ ई० में यह तैयार हुआ था। यह ७२ एकड़ की परिधि में था। (*Bombay Gazetteer*, IV, p 17)।
४ निम्न वर्ग के अधिकारी जो चोबदार के समान समाचार लाने, प्रतिरक्षा एवं दरबार में अनुशासन रखने का कार्य करते थे, पहरेदार।
५ अहमदाबाद से लगभग ५ मील पर।

विद्रोह कर दिया है और सरकार हंडिया के जागीरदार मेहतर जम्बूर पर आक्रमण कर दिया है। वह अपनी धन-सम्पत्ति लेकर उज्जैन चला गया। जितने सैनिक इस विलायत में विभिन्न स्थानों पर नियुक्त थे, अपनी जागीरों एवं थानों को छोड कर उज्जैन में एकत्र हो गये। षड्यन्त्रकारियों ने एक बहुत बडे समूह को लेकर उज्जैन का अवरोध कर लिया। उज्जैन का हाकिम दरवेश अली कितावदार[1] बन्दूक द्वारा घायल होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया। अन्य लोगों ने जो किले में बन्द थे अमान माँग कर समर्पण कर दिया। उन्होंने निश्चय किया कि, "मीर्जा अस्करी को उन समस्त लोगों सहित जो कुमक हेतु नियुक्त हैं, गुजरात में छोड कर मालवा को राजधानी बनायें ताकि उस प्रदेश का विद्रोह शान्त हो जाय और गुजरात की विलायत भी, जो हाल में विजय हुई है, मुत्तासिल हो जाय और राजधानी के आस पास का विद्रोह भी पादशाही सेना के समाचार से दब जाय। इस उद्देश्य से वापस होकर उन्होंने कम्बायत मे पडाव किया। वहाँ से बरौदा, बरौज होते हुए सूरत पहुँचे वहाँ से असीर एवं बुरहानपुर की सैर हेतु रवाना हुये। बुरहानपुर में सात दिन ठहर कर भाग्यशाली पताकाये मन्दू के किले पर बलन्द कीं। विजयी सेना के पहुँचने के कारण ईर्ष्यालु समय ने अभागे लोगों के समूह पर फूट का पत्थर फेंका और अपने सकल्प के सिर पर पराजय की धूल डाल कर उनमें से प्रत्येक किसी न किसी कोने में घुस गया। इस कारण कि मालवा की विलायत ऐसा उद्यान है जहाँ सर्वदा बहार रहती है, उन्हें उस देश की जल-वायु पसन्द आ गई और भाग्यशाली रिकाब के अधिकाश सेवकों को उस क्षेत्र मे जागीरें प्रदान करके उन्होंने युग वालों के लिये सफलता एवं इच्छाओं की पूर्ति के द्वार खोल दिये।

मीर्ज़ा अस्करी का गुजरात त्यागना

मीर्ज़ा अस्करी ने तीन मास तक गुजरात मे सफलता एवं ऐश्वर्य के साथ व्यतीत किये किन्तु राज्यों के विजय करने की ओर बहुत कम ध्यान दिया। अमीर लोग, जिनके स्वभाव षड्यत्र एवं कृतघ्नता से परिपूर्ण थे, एकता को त्याग कर अपनी मनमानी करने लगे। शत्रुओं को इस बात की सूचना मिल गई। अमीरों की पारस्परिक शत्रुता को दैवी सयोग समझ कर सर्वप्रथम खान जहाँ शीराजी एवं रूमी खा ने, जिसका नाम सफर था, और जिसने सूरत के किले का निर्माण कराया था, मिलकर कासिम हुसेन खा ऊज़बेक के सम्बन्धी अब्दुल्लाह खा से नौसारी छीन लिया। अब्दुल्लाह खा उस क्षेत्र को छोड कर बरौज[2] पहुचा। इसी बीच में शत्रुओं ने सूरत के बन्दरगाह को विजय कर लिया। खान जहाँ खुश्की के मार्ग से और रूमी खा युद्ध के जहाजों पर समुद्र के मार्ग से बरौज पहुँचे। कासिम हुसेन खा मुकाबला न कर सका और चाम्पानीर के मार्ग से मीर्ज़ा अस्करी एवं हिन्दू बेग के पास अहमदाबाद कुमक लाने के उद्देश्य से चला गया। सैयिद इस्हाक ने, जिसे सुल्तान बहादुर ने खिताब खा की उपाधि प्रदान की थी, कम्बायत को अपने अधिकार में कर लिया। इसी बीच में यादगार नासिर मीर्ज़ा, मीर्ज़ा अस्करी के बुलवाने पर पटन से अहमदाबाद चला गया। दरिया खा एवं मुहाफिज खा ने जो रायसेन के मार्ग से निकलकर सुल्तान

१ पुस्तकालयाध्यक्ष।
२ भड़ौच।

बहादुर के पास दौड़ जा रहे थे, पटन को खाली पाकर अपने अधिकार में कर लिया। अमीरों की फूट एवं सूझ बूझ के अभाव के कारण, यह नौबत आ गई। इसी बीच में मीर्ज़ा अस्करी का एक सेवक ग़ज़न्फर ३०० अश्वारोहियों सहित उससे पृथक् होकर सुल्तान बहादुर के पास चला गया। (३१) उसके पृथक् होने का कारण यह है कि एक रात्रि में मीर्ज़ा अस्करी ने मदिरापान की गोष्ठी में नशे में किसी बात के प्रसंग में कह दिया कि 'हम बादशाहे ज़िल्लुल्लाह[1] हैं।" ग़ज़न्फर ने जो कि मीर्ज़ा का कुकुल्ताश एवं महदी कासिम खां का भाई था, धीरे से कहा, 'हैं तो, किन्तु आपे में नहीं हैं।" उसके समीप जो बैठे थे हंसने लगे। मीर्ज़ा को जब हंसने का कारण ज्ञात हुआ तो वह बड़ा रुष्ट हुआ और उसे बन्दी बना दिया। कुछ दिन उपरान्त उस बन्दीगृह से मुक्त होकर सुल्तान बहादुर के पास पहुंचा और उसे अहमदाबाद पर आक्रमण करने के लिये प्रेरित किया। सुल्तान के हितैषियों के भी प्रार्थना-पत्र निरन्तर प्राप्त होने लगे कि यह आने का समय है। सुल्तान का साहस बढ़ गया। वह अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ। जब उसने सरकीज के समीप पड़ाव किया तो मीर्ज़ा अस्करी, यादगार नासिर मीर्ज़ा, हिन्दू बेग, एवं कासिम हुसेन खां ने लगभग २०,००० अश्वारोहियों सहित असावल[2] के पीछे सुल्तान के समक्ष पहुंचकर पड़ाव कर दिया, किन्तु एकता के अभाव, अल्पदर्शिता, एवं सूझ बूझ की कमी के कारण बिना युद्ध किये वे चाम्पानीर की ओर चल खड़े हुये। सुल्तान बहादुर का साहस बढ़ गया और उनका पीछा करने के लिये अग्रसर हुआ। सैयिद मुबारक बुखारी, जो सुल्तान की सेना के अग्र भाग में था, पादशाही लश्कर के पास पहुँच गया। यादगार नासिर मीर्ज़ा ने, जो सेना के पिछले भाग में था, पलट कर वीरतापूर्वक युद्ध किया। सुल्तान की सेना के अग्र भाग के बहुत से आदमी मारे गये। मीर्ज़ा के हाथ में घाव लगा। शत्रु महमूदाबाद पहुंच गये। मीर्ज़ा वापस होकर शाही लश्कर से मिल गया। क्योंकि मीर्ज़ा अस्करी हताश हो चुका था, अतः वह निसंकोच महेन्द्री नदी के पार हो गया। सेना के बहुत से आदमी नष्ट हो गये। सुल्तान भी नदी-तट तक पहुँच कर ठहर गया। जब मीर्ज़ा चाम्पानीर पहुंचा तो तरदी बेग खां ने निकल कर अतिथि-सत्कार किया। दूसरे दिन मीर्ज़ाओं ने तरदी बेग खां को सन्देश भेजा कि "हम लोग बड़ी ही अव्यवस्थित दशा में आये हैं। लश्कर हमसे भी अधिक परेशान है। सहायता के रूप में कुछ धन भेज दो ताकि लश्कर को देकर एवं सामान सीधी करके शत्रु से युद्ध हेतु रवाना हों। इस स्थान से मन्दू तक दूत को पहुँचने में ६ दिन लगते हैं। हम वास्तविक स्थिति की दरबार में सूचना करा रहे हैं। वहाँ से जो भी आदेश हो।" तरदी बेग खां ने यह बात स्वीकार न की। मीर्ज़ाओं ने विचार-विनिमय के उपरान्त यह निश्चय किया कि तरदी बेग खां को बन्दी बना लेना तथा किले के समस्त खज़ाने पर अधिकार जमा लेना चाहिये और मीर्ज़ा अस्करी को बादशाह बना दिया जाय। यदि हम बहादुर पर विजय प्राप्त कर लेते हैं तो अच्छा है अन्यथा हज़रत जन्नत आशियानी को मालवा की जल-वायु पसन्द आ गई है। राजधानी का क्षेत्र रिक्त है। इन खज़ानों एवं सेना को लेकर उस ओर जाकर पहले से ही अपना काम बना लें। तरदी बेग खां किले से निकल कर मीर्ज़ाओं के पास जा रहा था कि मार्ग में उसे यह समाचार प्राप्त हुये। वह किले

१ बादशाह, ईश्वर की छाया।
२ सरकीज के समीप।

में वापस चला गया। मीर्जाओ को उसने सन्देश भेजा कि "तुम लोगो का यहाँ रहना उचित नही।" मीर्जाओ ने सन्देश भेजा कि "हम भी चले जाना चाहते हैं। तुम यहाँ आ जाओ। जो कुछ हमें कहना है कहकर एव परामर्श करके तुमसे विदा हो जायेंगे।" तरदी बेग खा को मीर्जाओ की मिथ्या-पूर्ण कल्पनाओ का ज्ञान था। उसने उत्तर की ओर ध्यान न दिया। तोप चला दी। मीर्जाओ ने वहाँ से सफल होकर प्रस्थान कर दिया। अपनी दुष्कल्पनाओ में मस्त दारुलखिलाफा की ओर रवाना हुये। जब तक विजयी सेना चाम्पानीर के क्षेत्र में रही, सुल्तान महेन्द्री नदी, जो चाम्पानीर से १५ कुरोह पर है, पार करने का साहस न कर सका। जब उसे मीर्जाओ के आगरा की ओर चले जाने के समाचार प्राप्त हुये तो वह नदी पार करके चाम्पानीर के विरुद्ध पहुँचा। तरदी बेग खा किले की दृढता एव किले की प्रतिरक्षा की सामग्री के उपलब्ध होने के बावजूद समस्त खज़ाना छोड कर मन्दू म हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में पहुँचा और मीर्जाओ के षड्यन्त्र की सूचना दी। हज़रत जन्नत आशियानी इस भय से कि मीर्जा लोग कही पहिले से दारुलखिलाफा मे पहुँच कर उपद्रव न खड़ा कर दें, चित्तौड के मार्ग से बडी तेज़ी स रवाना हुआ। इस यात्रा में बादशाही लश्कर को अत्यधिक कठिनाई उठानी पडी। अत्यधिक व्याकुलता एव घबडाहट में उन लोगो ने घाटी चाँदा पार की। सयोग से मीर्ज़ा लोगों को चित्तौड के समीप शाही लश्कर से भेंट हो गई। वे विवश होकर सेवा में उपस्थित हुये। हज़रत जन्नत आशियानी ने अपनी स्वाभाविक अनुकम्पा के कारण उनकी दुष्टता की ओर दृष्टि न डालकर बादशाही कृपाओ द्वारा सम्मानित किया।

समय की एक अन्य शत्रुता, जिसके कारण हज़रत जन्नत आशियानी दारुलखिलाफा की ओर रवाना हुये और ऐसे प्रदेश को छोड दिया, यह थी कि मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा एव उसके पुत्र उलुग मीर्ज़ा ने इस समय अपमान के कोने से निकलकर विद्रोह कर दिया था और बिलग्राम[1] परगने पर आक्रमण करके कन्नौज चले गये। जिन्होने इससे पूर्व भी विद्रोह कर दिया था किन्तु जिन लोगों को उन्हें अन्धा बनाने का आदेश हुआ था वे या तो सावधानी-पूर्वक कार्य न कर सके और या उन्होंने जान बूझकर उपेक्षा की थी। खुसरो कुकुल्ताश के पुत्रो ने, जो वहा थे, अमान माँग कर कन्नौज उन्हें समर्पित कर दिया। मीर्ज़ा हिन्दाल उन कृतघ्नो से युद्ध करने के लिये आगरा से निकला और बिलग्राम के क्षेत्र में गगा नदी पार करके उसने उनसे युद्ध किया और उन्हें पराजित कर दिया। विजयी सेना (३२) उनका पीछा करती हुयी अवध तक पहुँची। वहाँ उलुग बेग मीर्ज़ा एव उसके पुत्र पुन एकत्र होकर युद्ध हेतु निकले। इसी बीच मे भाग्यशाली सेना के दारुलखिलाफा वापस आने के समाचार प्राप्त हुये। शत्रु पुन युद्ध करके पराजित हुये। मीर्ज़ा हिन्दाल विजय एव सफलता प्राप्त करके वापस हुआ और उत्कृष्ट चौखट का चुम्बन करके सम्मानित हुआ।

जब सम्मानित लश्कर आगरा पहुँच गया तो बीजागढ का हाकिम भूपाल राय मन्दू के किले को खाली पाकर उसमें प्रविष्ट हो गया। कादिर शाह भी उसके पीछे मन्दू पहुँचा। मीरान मुहम्मद

१ हरदोई (उत्तर प्रदेश) जिले का कस्बा, जो अब उस जिले की तहसील भी है। यह अक्षांश २७°१८' उत्तर एवं देशान्तर ८०°२' पूर्व में गंगा तट पर स्थित है। यह हरदोई से १६ मील दक्षिण में है। (*District Gazetteers*, Hardoi, 1904, p 170)।

फारूकी भी बुरहानपुर से पहुँचा। सुल्तान बहादुर लगभग दो सप्ताह चाम्पानीर में रहा और पुनः दीप चला गया। जो आश्चर्यजनक घटनायें घटीं उनमें से एक यह है कि सुल्तान बहादुर जब पराजित होकर दीप पहुँचा था तो उसने बन्दरगाहों के अमीरुल उमरा[1] वज़रे फिरंग[2] के पास राजदूत भेज कर कुमक भेजने की प्रार्थना की थी। इस समय जब कि मीर्ज़ा अस्करी गुजरात को छोड़ कर चला गया और सुल्तान चाम्पानीर से दीप पहुँचा तो वज़रे युद्ध के जहाजों एवं सैनिकों सहित समुद्र के मार्ग से दीप नामक बन्दरगाह में पहुँचा और उसे समस्त स्थिति का ज्ञान प्राप्त हुआ। वह सोचने लगा कि, 'क्योंकि सुल्तान को अब हमारी सहायता की आवश्यकता नहीं अतः सम्भव है कि जब हम उससे भेंट करें तो वह विश्वासघात कर दे।' उसने अपने आपको रुग्ण बता कर सुल्तान के पास आदमी भेजे और कहलाया कि, "आप के बुलाने पर आया हूँ। जब मैं स्वस्थ हो जाऊँगा तो आपकी सेवा में आ जाऊँगा।" सुल्तान सावधानी के मार्ग को छोड़ कर ३ रमज़ान ९४३ हि० (१३ फरवरी १५३७ ई०) को दिन के अन्तिम पहर में कुछ लोगों के साथ जहाज़ पर सवार होकर वज़रे के कुशल समाचार पूँछने रवाना हुआ। पहुँचते ही उसे ज्ञात हो गया कि उसने बीमारी का केवल बहाना किया है। वह अपने आगमन पर पश्चाताप करते हुये तत्काल उठ खड़ा हुआ। फिरंगियों ने सोचा कि "अब ऐसा शिकार जाल में फँस गया है। अवसर है कि उससे कुछ बन्दरगाह वसूल कर लिये जायें।" वज़रे ने उसका मार्ग रोक कर निवेदन किया कि "आप क्षण भर ठहर जायें ताकि कुछ उपहार प्रस्तुत किये जा सकें।" सुल्तान ने उसकी बातों में न आकर कहा, 'पीछे से भेज देना" और घबड़ाहट में अपने जहाज़ की ओर रवाना हुआ। फिरंग के काज़ी[3] ने आगे बढ़ कर उसे रोक लेना चाहा। सुल्तान ने अपनी मर्यादा को ठेस लगते हुए देखकर तलवार खींच ली और उसके दो टुकड़े कर दिये। (तदुपरान्त) अपने जहाज़ में कूद गया। फिरंग के जहाज़ दूर-दूर खड़े थे। उन्होंने निकट आकर सुल्तान के जहाज़ को घेर लिया। युद्ध होने लगा। सुल्तान बहादुर एवं रूमी खां जल में कूद पड़े। रूमी खां को एक फिरंगी ने, जो उसका परिचित था, हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींच लिया। सुल्तान विनाश के समुद्र में डूब गया। सुल्तान के साथी भी विनाश के समुद्र में फंस गये। इस घटना की तारीख़ "फिरंगियाने बहादुर कुश[4]" के अक्षरों से निकाली गई। कुछ लोगों का मत है कि वह निकल कर मुक्ति के तट पर पहुंचा और बहुत समय तक गुजरात एवं दक्खिन में लोगों में उसके प्रकट होने की चर्चा होती रही। एक बार दक्खिन में एक व्यक्ति प्रकट हुआ। निज़ामुल्मुल्क ने स्वीकार किया कि वह सुल्तान बहादुर है। उसने उसके साथ चौगान[5] खेला। उसके चारों ओर भीड़ एकत्र हो गई। निज़ामुल्मुल्क ने इस भीड़ के भय से उसकी हत्या करा देनी चाही। वह उसी रात्रि में निज़ामुल मुल्क के सरापरदे से गायब हो गया। लोगों का विश्वास था कि निज़ामुल मुल्क ने उसकी

१ बन्दरगाह का मुख्य अधिकारी।
२ पुर्तगाली वाइसराय।
३ सम्भवतः मेनुएल डा सौसा (Menoel de Sousa), डियु का गवर्नर।
४ 'बहादुर के हत्यारे फ़िरंगी'।
५ पोलो।

हत्या करा दी। मीर अबू तुराब[1], जो शीराज निवासी एव गुजरात के प्रतिष्ठित लोगों मे से था, कहा करता था कि मुल्ला कुतुबुद्दीन शीराजी, जो सुल्तान का गुरू होता था और जो उन दिनो दक्खिन में था, शपथ लेकर कहता था कि वह नि सन्देह मुल्तान बहादुर था। उसने उससे कुछ ऐसे विषयो पर वार्ता की जिनका सम्बन्ध सुल्तान तथा उससे था और किसी को उनका ज्ञान न था किन्तु उसने ठीक-ठीक उत्तर दिये।

सक्षेप में, जब सुल्तान उस दिन जल में डूब गया और उससे सम्बन्धित लोग उसका शोक मनाने लगे तो मुहम्मद जमान मीर्जा ने धर्तता की दृष्टि से सुल्तान के शोक मे नीले वस्त्र धारण कर लिये और सुल्तान की माता से 'पुत्र' का सम्बन्ध जोड लिया। गुजरात के खजाना में से थोडा सा मीर्जा मुहम्मद जमान को प्राप्त हो गया और कुछ फिरगियो ने अपने अधिकार में कर लिया और कुछ नष्ट हो गया। मीर्जा कभी तो फिरगियो से सुल्तान के खून का दावा करता और कभी उन्हे अपार धन सम्पत्ति गुप्त रूप से इस आशय से भेजा करता था कि वे उसके नाम का खुत्बा पढवा दे। यहाँ तक कि कुछ दिन तक मस्जिदे सफा मे उस कृतघ्न के नाम का खुत्बा पढा गया। कुछ समय तक वह इसी प्रकार धूर्ततापूर्वक जीवन व्यतीत करता रहा। तदुपरान्त एमादुल मुल्क ने उसपर चढाई की और उसे पराजित कर दिया। उस समय विवश एव लज्जित होकर उसने हज़रत जहाँबानी की चौखट पर दीनता का मुख रक्खा। इसका सक्षिप्त उल्लेख उचित स्थान पर होगा।

हज़रत जन्नत आशियानी की विजयी सेनाओं का बगाल की ओर प्रस्थान, उस प्रदेश की विजय, राजधानी को वापसी तथा इस बीच मे जो घटनायें घटी

जब हज़रत जन्नत आशियानी दारुल खिलाफा में पहुँचे तो जिन लोगो ने आसपास विद्रोह एव उपद्रव मचा रक्खा था, उन्हें उनकी कुकृतियो का दड मिल गया और उन्होंने अपनी दुष्टता (३३) के कारण उचित रूप से चेतावनी प्राप्त कर ली। ममालिके महरूसा के निकट तथा दूर के स्थान पुन शान्ति एव अमन चैन द्वारा दृढ हो गये। उस समय ससार को शोभा देने वाले मत ने यह योजना बनाई कि वे पुन गुजरात पहुँच कर इस बार उस विस्तृत विलायत को अपने अनुभवी एव वीर निष्ठावानों के सुपुर्द करके, उस स्थान की व्यवस्था एव वहाँ के शासन प्रबन्ध की ओर से निश्चिन्त होकर, राजधानी में लौट आयें। इसी बीच में शेर खा अफगान के विद्रोह एव पूर्व के क्षेत्र में उत्पात के समाचार राज्य के फर्श पर खडे होने वालो को ज्ञात हुये। बगाला की विजय की छवि, जो गुजरात पर आक्रमण के पूर्व ससार का दर्शन कराने वाले हृदय के दर्पण में प्रतिबिम्बित हुई थी, पुन प्रकट होने लगी। बगाला पर आक्रमण की तैयारी करने का सम्मानित आदेश हुआ। इस समय शेर खा का सक्षिप्त हाल एव उसके विद्रोह का विवरण रचना का क्रम स्थापित रखने के लिये परमावश्यक है।

[1] मीर अबू तुराब वली बिन कुतुबुद्दीन शुकुल्लाह, 'तारीखे गुजरात' का लेखक। (अनूदित ग्रन्थों की समीक्षा देखिये)।

शेर शाह का नाम फरीद था। उसका पिता हुसन बिन इबराहीम शेरा खेल, सूर कौम के अफगानों में से था। इबराहीम सर्वदा घोड़ों का व्यापार किया करता था। नारनोल[1] के अधीनस्थ शमला नामक स्थान में वह निवास करता था। हसन ने थोड़ी बहुत योग्यता पैदा करके व्यापार से सैनिक जीवन प्रारम्भ कर दिया। बहुत समय तक वह राय साल दरबारी के, जिसे हज़रत खाकानी की सेवा में उत्कृष्ट पद प्राप्त है, दादा रायमल के सेवकों में सम्मिलित रहा। वहाँ से महसराम जाकर नसीर खां नोहानी के पास, जो सुल्तान सिकन्दर लोधी के अमीरों में से था, नौकर हो गया। अपनी कार्य कुशलता के कारण वह अपने समकालीनों से बहुत बढ़ गया। जब नसीर खां की मृत्यु हो गई तो वह उसके भाई दौलत खां का नौकर हो गया। वहाँ से वह बिबन के सेवकों में, जो सिकन्दर के अमीरों में से था, सम्मिलित हो गया। शनैः शनैः वह श्रेष्ठ लोगों में हो गया। उसका पुत्र फरीद उससे रुष्ट होकर पृथक् हो गया। वह बहुत समय तक ताज खां लोदी की सेवा में रहा। कुछ समय के लिये अवध में वह कासिम हुसेन खां ऊज़बेक का सेवक हो गया। तदुपरान्त सुल्तान जुनैद बरलास का सेवक हो गया। एक दिन सुल्तान जुनैद किसी कार्य से उसे एवं दो अन्य अफ़ग़ानों को जो उसके सेवक थे, हज़रत फिरदौस मकानी की सेवा में ले गया। हज़रत फिरदौस मकानी ने अपनी आन्तरिक बुद्धि से उसके हृदय की बात जान ली और सुल्तान जुनैद से कहा कि, "इस अफ़ग़ान अर्थात् फरीद के नेत्रों से ऐसा ज्ञात होता है कि यह उत्पात मचायेगा। उसे बन्दी बना लेना चाहिये। उन दो अन्य अफ़ग़ानों को आश्रय प्रदान करना चाहिये।" फरीद को भी हज़रत फिरदौस मकानी की दृष्टि से शंका हो गई। इससे पूर्व कि सुल्तान जुनैद बरलास उसे अपने आदमियों को सौंपे, वह अपने पिता के पास भाग गया। इसी बीच में उसके पिता की मृत्यु हो गई और उसे अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई। सहसराम के क्षेत्र में जोन्द[2] के जंगलों में जो रोहतास के परगने में है, डाका एवं लूट मार प्रारम्भ कर दी। शनैः शनैः उसके पास सेना एकत्र हो गई। वह हर रोज़ किसी न किसी परगने पर छापा मारता एवं डाके डालता था। जब सुल्तान बहादुर गुजराती को इस बात का पता चला तो उसने उसके पास काफी धन मार्ग व्यय के रूप में भेज कर उसे अपने पास बुलवाया। उसने वह धन सेना एवं उसकी तैयारी पर व्यय कर दिया और सुल्तान के पास कोई बहाना लिख कर टाल गया। अल्प समय में दुष्ट प्रवृत्ति के एवं लुटेरे बहुत बड़ी संख्या में उसके पास एकत्र हो गये। संयोग से बिहार के हाकिम की, जो नोहानी अमीर था, मृत्यु हो गई। कोई ऐसा न रहा जो उस प्रदेश को अपने अधिकार में एवं सुव्यवस्थित रख सकता। शेर खां अपने आदमियों सहित शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करता हुआ बिहार में प्रविष्ट हो गया। अत्यधिक धन-सम्पत्ति अपने अधिकार में करके वह पुनः अपने स्थान को लौट गया। इस बार उसने और भी शक्ति प्राप्त कर ली। उसने उलुग बेग मीर्जा पर भी, जिसकी जागीर सरयू नदी के समीप थी, आक्रमण करके विजय प्राप्त कर ली। वहाँ से उसने बनारस नगर पर आक्रमण किया। क्योंकि उसने अत्यधिक सेना एवं सामग्री एकत्र कर ली थी, अतः वह पुनः पटना पहुँचा और बिहार प्रदेश अपने अधिकार में कर लिया। बंगाला की सरहद पर स्थित सूरजगढ़ के लश्कर से युद्ध करके उसे विजय कर लिया और उस क्षेत्र पर भी अपना अधिकार जमा

१ आगरा में।
२ अकबर नामा भाग १ में 'जौन'। (रिज़वी मुग़ुल कालीन भारत—हुमायूं भाग १, पृ० ४६)।

लिया। एक वर्ष तक बगाला के हाकिम नसीब शाह से युद्ध करता रहा। दीर्घ काल तक गौड का अवरोध किये रहा।

एक विचित्र घटना इस प्रकार है कि शेर खा ने एक ज्योतिषी की प्रशसा सुनी जो राजा उडीसा के पास था। उसने किसी को भेज कर उसे बुलवाया ताकि उससे भविष्य का ज्ञान प्राप्त करे। राजा ने उसे अनुमति न दी किन्तु ज्योतिषी ने उसे लिख भेजा कि वह एक वर्ष तक बगाला पर अधिकार नही प्राप्त कर सकता। अमुक तारीख को अधिकार प्राप्त हो जायगा। उस दिन एक घडी के लिये गगा नदी पार करने के योग्य हो जायगी। सयोग से जैसा कि उस बुद्धिमान् ने लिखा था, वही हुआ।

(३४) जिन दिनो हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी मालवा एव गुजरात की विजय में व्यस्त थे, शेर शाह ने उत्तम अवसर पाकर, ससार को विजय करने वाले लश्कर की वापसी तक, ऐश्वर्य एव राज्यो की विजय करने की सामग्री एकत्र कर ली और बहुत बडी सख्या में लोगों को इकट्ठा कर लिया। यहाँ तक शेर खा का प्रारम्भिक सक्षिप्त हाल लिखा गया। उसका शेष हाल अपने स्थान पर लिखा जायगा।

सक्षेप में, जब उन्होंने बगाला पर आक्रमण की तैयारी का आदेश दिया तो मीर फक्र अली को, जो हज़रत फिरदौस मकानी के अमीरो में से था, देहली के शासन प्रबन्ध हेतु नियुक्त किया। दारुल खिलाफा आगरा की हुकूमत मीर मुहम्मद बख्शी को प्रदान हुई। हजरत जन्नत आशियानी के चाचा का पुत्र यादगार नासिर मीर्ज़ा कालपी को, जहाँ उसकी जागीर थी, विदा कर दिया गया। नूरुद्दीन मुहम्मद मीर्ज़ा, जिसका विवाह जन्नत आशियानी की बहिन गुलरग बेगम से हुआ था, और जिसकी पुत्री सलीम सुल्तान बेगम है, उनके आदेशानुसार कन्नौज की रक्षा हेतु नियुक्त हुआ। जो घडी ज्योतिषियो ने उस आकाश की नीव वाले बादशाह के प्रस्थान हेतु निश्चित की थी, उसमे बगाले की विलायत की विजय एव शेर खा के विद्रोह के दमन हेतु विजयी पताकाओ का प्रस्थान हुआ। वे अपने अन्त पुर एव परिजनो के साथ नौका पर सवार होकर नदी के मार्ग से रवाना हुये। मीर्ज़ा अस्करी एव मीर्ज़ा हिन्दाल का साथ चलने की अनुमति प्राप्त हुई। सम्मानित अमीरो में मीर्ज़ा इबराहीम बेग चाबुक, जहाँगीर कुली बेग, खुसरो बेग कुकुल्ताश, तरदी बेग खा, कूच बेग, तरदी बेग खा इनाका, बैराम खा, कासिम हुसेन खा उज़बेक, बूजक बेग, ज़ाहिद बेग, दोस्त बेग, बेग मीरक, हाजी मुहम्मद (पुत्र) बाबा कश्का, याकूब बेग, निहाल बेग, रोशन बेग, मुगुल बग एव बहुत बडी सख्या में अन्य (अमीरो) को उनकी सेवा में (प्रस्थान करने का) सम्मान प्राप्त हुआ। विजयी सेनायें तरी एव खुश्की के मार्ग से विभिन्न दलो एव समूहो में यात्रा करने लगी। हज़रत जन्नत आशियानी कभी नौका पर और कभी घोडे पर सवार होकर चुनार के किले तक, जहाँ, शेर खा था, पहुँचे। क्योंकि आगरा में हज़रत जन्नत आशियानी की बहिन मासूम सुल्तान बेगम ने, जो मीर्ज़ा मुहम्मद ज़मान की पत्नी थी, उसके अपराध क्षमा कराके, सांत्वना का फरमान गुजरात भिजवा दिया था, अत मीर्ज़ा इस अवसर पर अत्यधिक लज्जा एव पश्चाताप प्रकट करता हुआ पहुचा। हज़रत जन्नत आशियानी ने अपनी व्यक्तिगत कृपाओं के कारण, मीर्ज़ा के अपराधो की सूची पर क्षमा के अक्षर लिख दिये और प्रतिष्ठित अमीरों का एक समूह उसके स्वागत हेतु भेजा। जब थोडी दूरी रह गई तो उनके आदेशानुसार मीर्ज़ा अस्करी एव मीर्ज़ा हिन्दाल भी स्वागत हेतु अग्रसर हुये। मीर्ज़ा अस्करी ने

तस्लीम का हाथ सीने तक एव मीर्जा हिन्दाल ने तस्लीम का हाथ सिर तक ले जाकर सम्मान प्रदर्शित किया। वे आदर-पूर्वक उसे शाही शिविर में ले गये। उस दिन वह आदेशानुसार अपने ख़ेमे में ठहरा रहा। दूसरे दिन वह ज़मीन बोसी[1] का सम्मान प्राप्त करके शाही कृपाओ द्वारा सुशोभित हुआ। एक दरबार में दो बार विशेष खिलअत, पेटी, तलवार, एव घोडा प्रदान करके उसके सम्मान में वृद्धि की गई।

सक्षेप में, शेर खा विजयी पताकाओ के पहुँचने के पूर्व, चुनार का किला अपने पुत्र कुतुब खां को सौंप कर एव उसे दृढ करके बगाला की ओर चल दिया और उस प्रदेश को युद्ध करके अपने अधिकार में कर लिया। अपार धन सम्पत्ति एव अत्यधिक असबाब उसके अधिकार में आ गये। जब सम्मानित सेना चुनार के समीप पहुँची तो उन्होंने उस किले को विजय करने का सकल्प कर लिया। रूमी खा मीर आतश ने, जो मदसौर की विजय के उपरान्त सुल्तान बहादुर से पृथक् होकर दरबार के सेवको में सम्मिलित हो गया था और जो इस कला में अद्वितीय था, नौकाओ पर साबात तैयार करके एव खुश्की में सुरगें लगवा कर, उनमें आग लगा दी। जब किले में हलचल मच गई तो शेर शाह का पुत्र कतुब खा वहाँ से भाग खडा हुआ। सारे किले वाले अमान माँग कर बाहर निकले और किला विजय हो गया। यद्यपि हजरत जन्नत आशियानी ने रूमी खा के वचन स्वीकार करके, किले वालो को जिनकी सख्या १० हजार थी, क्षमा कर दिया था किन्तु मुईद बेग दूल्दी[2] ने, जो दरबार के विश्वासपात्रो मे था, कहा कि उन लोगो के हाथ काट लिये जायें और ऐसा जाहिर किया कि यह बादशाही आदेश है। हज़रत जन्नत आशियानी को यह बात पसन्द न आई। उन्होंने उसे अत्यधिक बुरा भला कहा। रूमी खा को शाही कृपाओ द्वारा सम्मानित किया गया और उसकी वीरता के पुरस्कार स्वरूप चुनार का किला उसे प्रदान करके उसके सम्मान में वृद्धि कर दी गई। अल्प समय में लोग उससे ईर्ष्या करने लगे और उसे विष देकर मार डाला। जब उनका सम्मानित हृदय किले के अभियान की ओर से निश्चिन्त हो गया तो उन्होने बगाला पर आक्रमण करने का सकल्प कर लिया। उस समय बगाला का हाकिम नसीब शाह[3] घायल होकर ससार को शरण प्रदान करने वाले दरबार में पहुँचा और शेर खा के विरुद्ध फरियाद की। न्यायकारी बादशाह ने उस उत्पीडित को शाही कृपाओं द्वारा प्रोत्साहन प्रदान किया और बगाले का राज्य दिला देने की आशा द्वारा उसे सात्वना दी। यह (३५) घटना बगाला पर आक्रमण करने एव उसे विजय करने के सकल्प के सम्बन्ध में और भी सहायक हुई। जब आकाश सरीखे ख़ेमे पटना नगर मे लगे, तो निष्ठावानो ने निवेदन किया कि "वर्षा ऋतु आ गई है। उस प्रदेश मे वर्षा की अधिकता एव सैलाब के उग्र होने के कारण, अश्वारोहियों का पार करना बडा कठिन है। यदि सावधानी की दृष्टि से कुछ दिन इसी ओर ठहर जायें तो यह बात राज्य के हित में होगी।" बगाल के वाली नसीब शाह ने अपने स्वार्थ की दृष्टि से निवेदन किया कि "अभी तक शेर खा उस प्रदेश में दृढतापूर्वक शासन नही स्थापित कर सका है। उस पर आक्रमण करना उचित है ताकि उसे सुगमतापूर्वक पराजित किया जा सके।" हज़रत जन्नत आशियानी

१ धरती-चुम्बन।

२ अकबर नामा में 'मुईद बेग दूल्दाई'। [रिज़वी : मुग़ुल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १, पृ० ४५]।

३ सम्भवत नसीरुद्दीन नुसरत शाह से तात्पर्य है (होडीवाला, पृ० ४५१)।

या तो उस उत्पीडित की सात्वना हेतु और या इस परामर्श के कारण जो देखने में उचित प्रतीत होता था, ससार को विजय करने वाली पताकाओ को बलन्द करके भागलपुर[1] की ओर रवाना हुये। वहाँ से मीर्जा हिन्दाल को ५-६ हजार अश्वारोहियों सहित गगा नदी के पार कराया ताकि वह नदी के उस ओर यात्रा करे। मुगेर[2] के समीप गुप्तचरो ने निवेदन किया कि शेर खा के पुत्र जलाल खा ने, जिसने अपने पिता की मृत्यु के उपरान्त सलीम खा की उपाधि धारण की, ख्वास खा, बरमजीद, सरमस्त खा, हैबत खा एव बहादुर खा को लेकर गढी कस्बे को, जो बगाले के द्वार के समान है, दृढ बना लिया है। वास्तव में शेर खा ने विजयी पताकाओ के प्रस्थान के समाचार पाकर यह उचित समझा कि जब उत्कृष्ट सेना बगाला की विलायत मे प्रविष्ट हो जाय तो वह झारखड के मार्ग से विहार की विलायत में पहुच कर विद्रोह एव उपद्रव की पताकाये बलन्द करदे ताकि बगाला का खजाना भी सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाय और राज्य के सहायको को चिन्ता एव परेशानी हो। उसने जलाल खा को इस आशय से गढी भेज दिया कि वह बादशाही आदमियों को कुछ दिन तक रोके रहे ताकि वह स्वय शान्तिपूर्वक निकल जाय। उसने जलाल खा को चेतावनी दे दी थी कि यदि बादशाही सेना गढी के समीप पहुँच जाय तो वह यथा सम्भव युद्ध न करे और उससे[3] किसी न किसी प्रकार मिल जाने का प्रयत्न करे। सक्षेप में, जब सम्मानित कानो तक यह समाचार पहुँचे तो इबराहीम बेग जाबूक, जहागीर कुली बेग, बैराम खा, निहाल बेग, रोशन बेग, गुग अली एव बबका बहादुर को ५-६ हजार व्यक्तियो द्वारा उसके विरुद्ध नियुक्त किया। जलाल खा अपने पिता के परामर्श के विरुद्ध युद्ध हेतु अग्रसर हुआ। क्योंकि बादशाही आदमियो ने सेनाओं की सुव्यवस्था एव युद्ध की तैयारी न की थी, अत व्याकुल होकर उन लोगो ने दृढता की लगाम हाथ से छोड दी किन्तु बैराम खा ने शत्रुओं की सेना पर कई बार आक्रमण करके वीरतापूर्वक युद्ध किया परन्तु असावधानी एव अभिमान वश सेना की सुव्यवस्था न करने के कारण उसकी व्यवस्था एव दृढता भी छिन्न भिन्न हो गई और विजयी सेना को बडी हानि हुई। अली खा महावनी, हैदर बख्शी तथा सेना के कुछ अन्य प्रतिष्ठित लोग शहीद हो गये। इस चिन्ताजनक समाचार को पाकर हजरत जन्नत आशियानी ने स्वय शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान किया। उस समय समुद्र को शोभा देने वाली नौका, जो विशेष रूप से शाही सवारी के लिये तैयार की गई थी, कहलगाम[4] में डूब गई। जैसे ही ससार को विजय करने वाली सेनायें अफगानो के समीप पहुची जलाल खा पलायन कर गया और अपने प्राण कुशलतापूर्वक बचा ले गया। हजरत जन्नत आशियानी ने मीर्जा हिन्दाल को तिरहुत एव पुरनिया का जो उसकी जागीर में दिये गये थे इस आशय से विदा कर दिया कि वहा जाकर अपने आदमियो की व्यवस्था करके उस मार्ग से बगाला में प्रविष्ट हो जाय। वे स्वय निरन्तर यात्रा करते हुये गौंदा की राजधानी की ओर रवाना हुये और ईश्वर की कृपा से ९४५ हि० (१५३८-३९ ई०) में बगाला[5] को विजय

१ २५°१५ उत्तर तथा ८७° पूर्व गगा नदी के दायें तट पर, बिहार का एक डिवीजन तथा जिला।

२ २५°२३' उत्तर तथा ८६°२८ पूर्व, गगा नदी के दक्षिणी तट पर बिहार में।

३ शेर शाह से।

४ कहलगाव अथवा कालगोंग, भागलपुर में २५°१६' उत्तर तथा ८७°१४ पूर्व, गगा के दक्षिणी तट पर।

५ इस स्थान पर केवल 'गौड़' से तात्पर्य है। 'गौड़,' पूर्वी बगाल तथा आसाम के माल्दा जिले में २४°५४' उत्तर तथा ८८°८' पूर्व में बगाल की मध्यकालीन राजधानी।

कर लिया। शेर खाँ समस्त अफगानो सहित बगाला का उत्तम खज़ाना लेकर झारखड के मार्ग से रोहतास की ओर चल दिया और युक्ति द्वारा उस किले को विजय कर लिया।

इस घटना का सक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है कि जब वह रोहतास के समीप पहुचा, जो बडा ही विशाल एव दृढ किला है, तो किले के हाकिम राजा चिन्तामन ब्राह्मण के पास आदमी भेज कर उसे अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न आरम्भ कर दिया। उससे निवेदन कराया कि, "आज हमें काम पड गया है। हमारे सामने एक महान् उद्देश्य है। यदि सहृदयतापूर्वक आप हमारे एव हमारे साथियो के परिवारो को अपने किले मे स्थान दे दें ताकि हम लोग निश्चिन्त होकर युद्ध कर सकें तो हम अवश्य ही आपके अत्यन्त आभारी होगे। सक्षेप मे, सरल स्वभाव के राजा को चापलूसी द्वारा उन्होंने चकमा दे दिया। जब उसने शेर खाँ का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया तो उसने ६०० डोलियाँ एकत्र कराईं। प्रत्येक डोले मे दो सशस्त्र जवान बैठाल दिये। डोलियों के दोनों ओर कनीज़ों को नियुक्त कर दिया। इस युक्ति से १२,०० सशस्त्र आदमी किले में प्रविष्ट करा दिये और किला अपने अधिकार मे कर लिया। अपने तथा अपने सैनिको के परिवार एव बगाला से जो धन-सम्पत्ति लाया था उसे वही छोड कर उस ओर से निश्चिन्त होकर, अत्यधिक सेना सहित राज्यों (३६) को विजय करने के लिये कटिबद्ध हो गया और बगाल के यातायात का मार्ग रोक दिया।

हज़रत जन्नत आशियानी को बगाला की जल वायु पसन्द आ गई। वे आनन्द मगल की मसनद पर आरूढ हो गये और अमीरों को उनकी इच्छानुसार जागीरें प्रदान करके उन्हे विदा कर दिया। परगनो की समृद्धि, धन-सम्पत्ति की अधिकता, एव सुख चैन की सामग्री के बाहुल्य ने उन लोगों को असावधान बना दिया और गफलत के साधन एकत्र हो गये। शत्रु को कोई महत्व न देकर, प्रत्येक किसी न किसी कोने में निश्चिन्त होकर बैठ रहा। इसी समय मीर्ज़ा हिन्दाल षड्यन्त्रकारियो एव उपद्रव तथा उत्पात मचाने वाला के बहकाने से दुष्कल्पनायें अपने मस्तिष्क में लाकर, बिना आदेश के अपनी जागीर से राजधानी आगरे की ओर चला गया। यद्यपि उन्होंने उसे समझाते हुए पत्र लिखे किन्तु उनसे कोई लाभ न हुआ। अपने सकल्प की लगाम न मोड कर वह दारुल खिलाफा चला गया और वहाँ विद्रोह के विचार व्यक्त कर दिये। शेर खाँ अवसर से लाभ उठा कर बनारस पहुचा और उसे अपने अधिकार में कर लिया। बनारस के हाकिम मीर फज़ली की हत्या कर दी। वहाँ से वह जौनपुर पहुचा। शाहम खाँ के पिता बाबा बेग जलायर ने जौनपुर के किले को दृढ बनाने का प्रयत्न किया। सयाग से इबराहीम बेग जाबूक का पुत्र यूसुफ बग अवध से जन्नत आशियानी की सेवा में उपस्थित होने के उद्देश्य सेजा रहा था। जौनपुर मे वह बाबा बेग से मिल गया। वह सर्वदा जौनपुर के आस पास करावली किया करता था। जलाल खाँ २-३ हज़ार व्यक्तियो सहित शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करता हुआ उसके पास पहुँच गया। वह भी युद्ध हेतु तैयार हो गया और शत्रुओं की सेना को अधिकता पर ध्यान दिये बिना वीरतापूर्वक युद्ध करके उसने मृत्यु का प्याला पी लिया। शत्रुओं ने दूसरे दिन जौनपुर पहुच कर उसे घेर लिया। बाबा बेग जलायर ने किले की प्रतिरक्षा में बडे पौरुष का प्रदर्शन किया, और मीर्ज़ाओं एव अमीरो को इस विषय में लिख भेजा, तथा दरबार में लगातार प्रार्थना-पत्र भेजे। मीर फखू अली देहली से आगरा पहुचा और उत्तम उपदेशों द्वारा मीर्ज़ा हिन्दाल का आगरा से जौनपुर की ओर प्रस्थान करने के लिये तैयार किया। मुहम्मद बख्शी को इस बात के लिए तैयार किया कि वह यथा सम्भव मीर्ज़ा के आदमियों की सहायता करे। वह स्वय इस आशय से कालपी की ओर रवाना हुआ कि यादगार नासिर मीर्ज़ा को मीर्ज़ा (हिन्दाल) के पास

पहुँचा दें और कड़ा के क्षेत्र में मीर्ज़ा लोग आपस में मिलकर शत्रुओं से युद्ध करने के लिये प्रस्थान करें। इसी बीच में खुसरो बेग कुकुल्ताश, हाजी मुहम्मद बाबा करका, ज़ाहिद बेग, मीर्ज़ा नज़र एवं अन्य बहुत से लोग बंगाला से भाग कर मीर्ज़ा नूरुद्दीन मुहम्मद के पास, जो कन्नौज में था, पहुँच गये। उसने इन लोगों के आगमन के विषय में मीर्ज़ा हिन्दाल को लिखा और उन्हें प्रोत्साहन प्रदान करने की प्रार्थना की। मीर्ज़ा हिन्दाल ने कृपा-युक्त पत्र मुहम्मद गाज़ी तुग़बाई के हाथ भेज दिये। उसने अमीरों के आगमन के विषय में यादगार नासिर मीर्ज़ा एवं मीर फख्र[1] अली को भी लिख भेजा। अमीर लोग मीर्ज़ा के आदमियों के पहुँचने के पूर्व कोल जलाली की ओर चल पड़े थे। मीर्ज़ा के दूत मार्ग में सूचना पाकर उनके पास पहुँचे। षड्यन्त्रकारी नमक-हरामों ने साफ-साफ कह दिया कि, "हमारा मुँह अब पुनः बादशाह की सेवा का नहीं रहा। यदि मीर्ज़ा हिन्दाल अपने नाम का खुत्बा पढ़वा दें तो उनकी सेवा में सम्मिलित हो जायें अन्यथा हम मीर्ज़ा कामरान की सेवा में जाते हैं।" मुहम्मद गाज़ी तुग़बाई ने पहुँचकर अमीरों का सन्देश गुप्त रूप से पहुँचाया और कहा, "अब इस समय दो में से एक कार्य परमावश्यक है। या तो आप अपने नाम का खुत्बा पढ़वा कर अमीरों को सम्मानित करें और या किसी बहाने से उन्हें बन्दी बनवा दें।" मीर्ज़ा हिन्दाल ने, जिसके हृदय में हमेशा ही यह असम्भव विचार रहता था, अवसर से लाभ उठा कर उन नमकहराम अभागों को इस मिथ्या-पूर्ण संकल्प से बुलवाया। जब बनारस एवं जौनपुर की पराजय तथा मीर्ज़ा हिन्दाल के विद्रोह के समाचार हज़रत जन्नत आशियानी को ज्ञात हुये तो उन्होंने शेख फूल को जो हिन्दुस्तान के मशायख[2] में सर्वश्रेष्ठ थे और जिनका वे अत्यधिक आदर सम्मान करते थे, मीर्ज़ा हिन्दाल को भाग्यशाली उपदेशों द्वारा दुष्कल्पनाओं से रोकने और अफ़ग़ानों के विनाश हेतु प्रेरित करने के उद्देश्य से उसके पास भेज दिया। जब शेख आगरा पहुँचा तो मीर्ज़ा उसका स्वागत करके उन्हें अपने स्थान पर ले गया। शेख ने तर्कपूर्ण एवं उसके हित से सम्बन्धित बातों से मीर्ज़ा को उस संकल्प से रोक कर जिस उद्देश्य से वह रवाना होने वाला था, उसकी ओर प्रेरित किया। दूसरे दिन मुहम्मद बख्शी को बुलवा कर उसने[3] आदेश दिया कि जो कुछ नकद धन एवं असबाब उपलब्ध हो उन्हें सुव्यवस्थित करके मीर्ज़ा की यात्रा की तैयारी करे। मुहम्मद बख्शी ने निवेदन किया, "यद्यपि नकद धन नहीं है किन्तु अन्य असबाब बड़ी सराय में है। ईश्वर ने चाहा तो इच्छानुसार व्यवस्था कर दी जायगी।" क्योंकि भाग्य इन उपायों के विरुद्ध था, अतः संयोग से उन्हीं तीन चार दिनों में मीर्ज़ा नूरुद्दीन मुहम्मद कन्नौज से बड़ी तेज़ी से यात्रा करता हुआ पहुँचा। जो अभागे अमीरों का उद्देश्य था और जिसे मीर्ज़ा स्वयं हृदय से चाहता था उसके अन्तःकरण के दर्पण में अंकित करा दिया। उसने[4] मुहम्मद तुग़बाई को पुनः अमीरों के पास भेज कर उन्हें सान्त्वना दिलाई। अमीरों ने अपने दुर्भाग्य के कारण सन्देश भेजा कि, "यदि आप इस संकल्प पर दृढ़ हैं तो शेख फूल की जिसे बादशाह ने भेजा है खुल्लम खुल्ला हत्या करा दें ताकि

१ उसे 'मीर फक्र अली' एवं 'मीर फख्र अली' दोनों लिखा गया है।
२ सूफ़ियों।
३ शेख फूल।
४ मीर्ज़ा हिन्दाल।

सभी खास व आम को आपके विचारों का स्पष्ट रूप से ज्ञान हो जाय। उस समय निश्चिन्त होकर हम लोग सेवा करेंगे।" मीर्ज़ा नूरुद्दीन मुहम्मद ने मीर्ज़ा हिन्दाल के आदेशानुसार शेख का उस (३७) रेगिस्तान में, जो बादशाही उद्यान के समीप है, शहादत के शरबत द्वारा तृप्त कर दिया। तदुपरान्त अभागे अमीर मीर्ज़ा की सेवा में उपस्थित हुये। एक अशुभ घड़ी में मीर्ज़ा हिन्दाल के नाम का खुत्बा पढ़वा दिया गया। मीर्ज़ा हिन्दाल की माता दिलदार आगा एवं अन्य बेगमों ने उसे बहुत कुछ समझाया किन्तु कोई लाभ न हुआ। इस घटना के उपरान्त जब मीर्ज़ा अपनी माता के पास पहुचा तो उसने देखा कि वे नीला वस्त्र धारण किये हैं। मीर्ज़ा ने पूछा, 'ऐसे खुशी के अवसर पर इस रंग का वस्त्र क्यों धारण किया?" उस बुद्धिमान् स्त्री ने दूरदर्शिता की दृष्टि से कहा, "तू अभी बालक एवं मूर्ख है। तूने कुछ अभागे नमकहरामों के कहने पर इतनी बड़ी भूल की है और अपने आप को विनाश के भंवर में डाल दिया है। शोक के वस्त्र तेरे कारण धारण किये हैं।" उस समय मुहम्मद बख्शी ने आकर कहा कि, 'शेख की तो आपने हत्या करा दी अब मेरे विषय में क्या संकोच है?" मीर्ज़ा ने उसे दिलासा देकर अपने साथ ले लिया। जब यादगार नासिर मीर्ज़ा एवं मीर फ़ख्र अली ने यह कष्ट दायक समाचार सुने तो वे कालपी के क्षेत्र से शीघ्रातिशीघ्र देहली पहुँचे और किले की दृढ़ता तथा नगर की प्रतिरक्षा का प्रयत्न करने लगे। मीर्ज़ा हिन्दाल ने यह समाचार सुने तो अमीरों से परामर्श करके देहली की ओर रवाना हुये। आस पास से अधिकांश जागीरदारों ने उपस्थित होकर मीर्ज़ा से भेंट की। वह निरन्तर यात्रा करता हुआ देहली पहुचा और उसने किले का अवरोध कर लिया। यादगार नासिर मीर्ज़ा एवं मीर फ़ख्र अली ने किले की प्रतिरक्षा का प्रबन्ध करके मीर्ज़ा कामरान को इस विषय में लिखा और इस उपद्रव एवं अशान्ति को दबाने की प्रार्थना की। मीर्ज़ा कामरान लाहौर से रवाना हुआ। जब वह सोनपत[1] नामक कस्बे में पहुचा तो मीर्ज़ा (हिन्दाल) कार्य को पूरा किये बिना आगरा की ओर चला गया। मीर फ़ख्र अली मीर्ज़ा की सेवा में उपस्थित हुआ। यादगार नासिर उसी प्रकार किले में रहा। मीर फ़ख्र अली ने मीर्ज़ा को गम्भीर परामर्श दे कर आगरा की ओर रवाना कर दिया। मीर्ज़ा हिन्दाल आगरा को छोड़ कर अल्वर चला गया। मीर्ज़ा कामरान आगरा में पहुच कर ऐश्वर्य एवं वैभव के सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। उसने दिलदार बेगम से प्रार्थना की कि, 'वे मीर्ज़ा हिन्दाल को दिलासा देकर अलवर से ले आयें ताकि संकोच समाप्त हो जाय।" वे मीर्ज़ा को अलवर से लाई और उसकी गरदन में कपड़ा डालकर मीर्ज़ा कामरान से भेंट कराई। मीर्ज़ा ने उसके प्रति कृपापूर्वक व्यवहार किया। दूसरे दिन अमीरों के अपराध क्षमा करके उन्हें अभिवादन करने की अनुमति दी। उस समय मीर्ज़ाओं ने मिलकर शेर शाह से युद्ध करने के उद्देश्य से यमुना नदी पार की किन्तु इस सेवा को सम्पन्न करने का सौभाग्य न प्राप्त हो सका।

संक्षेप में, जब बंगाला की विलायत में संसार को विजय करने वाले लश्कर का पड़ाव हो गया और वहाँ की जल वायु सम्मानित हृदय के अनुकूल हो गई तो अमीर एवं वज़ीर शासन प्रबन्ध की ओर बहुत कम ध्यान देते थे। उन दिनों हज़रत जन्नत आशियानी का स्वभाव इतना नाज़ुक हो गया था कि कोई भी कठोर बात न तो खुल्लम खुल्ला कह सकता था और न संकेत से अपितु

१ २९° उत्तर तथा ७७° पूर्व, अम्बाला-कान्का के रेल के मार्ग पर देहली के उत्तर में २८ मील पर।

अमीरों को कोरनिश एवं अभिवादन का अवसर बिरले ही प्राप्त होता था। शेर शाह के विद्रोह एवं हिन्दुस्तान की उथल पुथल के कारण मार्ग बन्द हो गये थे और भाग्यशाली लश्कर में ठीक-ठीक समाचार न पहुँचते थे। यदि संयोग से पहुँच भी जाते तो उन्हें ठीक से बताया न जाता था। जब अत्यधिक कठिनाई हो गई तो कुछ निष्ठावानों ने वास्तविक स्थिति का उल्लेख किया। हजरत जन्नत आशियानी ने राज्य के उच्च पदाधिकारियों के परामर्श से वर्षा ऋतु के जल की अधिकता एवं सैलाब की तेजी के बावजूद दारुलखिलाफा आगरा की ओर वापसी का दृढ संकल्प कर लिया। उन्होंने बंगाला का राज्य जाहिद बेग को देना चाहा किन्तु उसने स्वीकार न किया एवं ऐसे विचार प्रदर्शित करते हुए जिनका पूरा होना असम्भव था, दुर्भाग्यवश भाग खड़ा हुआ और मीर्जा हिन्दाल के पास पहुँचा। हजरत जन्नत आशियानी ने बंगाला की हुकूमत जहाँगीर कुली बेग को प्रदान करके पताका, नक्कारा एवं आफ्ताबगीर[1] प्रदान करते हुये आदेश दिया कि यदि संयोगवश आवश्यकता पड़ जाय तो सल्तनत के लिये जो चीजें आवश्यक हैं उनका प्रयोग कर ले। सम्मानित अमीरों के एक बहुत बड़े समूह को उसकी कुमक हेतु छोड़ कर दारुलखिलाफा की ओर लौटे।

शेरशाह उत्कृष्ट लश्कर की वापसी एवं मीर्जाओं के दारुलखिलाफा आगरा से प्रस्थान के समाचार पाकर, जौनपुर का अवरोध त्याग कर रोहतास की ओर रवाना हुआ और यह निश्चय किया कि यदि सम्मानित पताकायें उससे युद्ध हेतु रवाना हों, तो युद्ध न करके झारखंड के मार्ग से पुनः बंगाला चला जाय। यदि हजरत जन्नत आशियानी दारुल खिलाफा जा रहे हों तो मार्ग में जहाँ उसका वश चले, सम्मानित शिविर में पहुँच कर रात्रि में छापा मारे। जब सम्मानित लश्कर नरहन[2] पहुँचा तो शेर शाह शाही लश्कर की कमी एवं अव्यवस्था से अवगत होकर शेरक[3] हो गया और अत्यधिक तैयारी (३८) करके एवं सेना का लेकर वीरता के पाँव आगे बढ़ाये। बादशाही लश्कर के समीप पहुँच कर अवसर की प्रतीक्षा करने लगा कि जब कभी अवसर मिले एवं अपने में शक्ति पाये तो रात्रि में छापा मारे। इब्ने अली करावल बेगी ने मीर्जा मुहम्मद जमान द्वारा वास्तविक स्थिति का उल्लेख किया। यद्यपि सम्मानित लश्कर गंगा नदी पार कर चुका था किन्तु राज्य के शुभ चिन्तक लश्कर की अव्यवस्था एवं स्थानों की खराबी के कारण युद्ध न करना उचित न समझते थे। उन्होंने कई बार निवेदन किया कि उचित यही है कि राजधानी पहुँच कर कुछ दिन यात्रा के कष्टों से आराम करें। तदुपरान्त नई शक्तिशाली सेना लेकर राज्य के शत्रुओं के विनाश हेतु रवाना हों। हजरत जन्नत आशियानी ने क्रोध एवं कोप की अधिकता के कारण समय के औचित्य एवं सैनिक शक्ति की ओर ध्यान न दिया और शत्रु की सेना की अधिकता पर ध्यान न देकर उससे युद्ध हेतु अग्रसर हुये। जो कुछ अनादि काल से भाग्य में लिख दिया गया है वह अवश्य ही समय पर सम्पन्न होता है और उसे रोकने के लिये कोई प्रयत्न एवं कोई उपाय लाभदायक नहीं होता। उस पादशाह ने अपनी

१ छत्र।

२ कुछ हस्तलिपियों में 'तिरहुट', किन्तु दोनों में से कोई ठीक नहीं। दोनों बहुत दूर पूर्व में थे। प्राइस के अनुसार 'पुरहुट'। उसका विचार है कि यह पटना होगा। चार्मर्स की हस्तलिपि के एक पेन्सिल के नोट के अनुसार 'पुरनिया'। सम्भवतः यही ठीक है। (बेवरिज, पृ० ३४१ नोट न० २)।

३ छोटा शेर। इस शब्द का प्रयोग शेर शाह के नाम की अनुरूपता से किया गया है।

बुद्धिमत्ता एवं राज्य के सहायकों की सूझ-बूझ के बावजूद, जो बात उस अवसर के लिये उचित थी, उस ओर ध्यान न दिया और शत्रुओं की ओर अग्रसर हुये। ऐसे कठिन अवसर पर हज़रत जन्नत आशियानी के भाइयों में से जिसमें से प्रत्येक के पास इतनी अधिक सेना एवं शक्ति थी कि वह राज्य के शत्रुओं को नष्ट कर सकता था, किसी को भी आपस की फूट एवं अल्पदर्शिता के कारण साथ देने का सौभाग्य न प्राप्त हुआ। यद्यपि हज़रत जन्नत आशियानी ने भाग्यशाली पत्रों द्वारा उनका अत्यधिक पथ-प्रदर्शन किया किन्तु वे ऐसे बहाने बना देते जिनका कार्य से कोई सम्बन्ध न होता था। इस प्रकार उन्होंने यह सौभाग्य न प्राप्त किया। बिहिया नामक ग्राम में, जो भोजपुर के समीप है, शेर खां से उनका मुकाबला हुआ। कर्मनासा नामक नदी दोनों सेनाओं के मध्य में थी। हज़रत जन्नत आशियानी ने पुल बनवा कर नदी पार की। सेना की कमी एवं शत्रुओं की अधिकता के बावजूद, सर्वदा विजयी सेना के हरावल युद्ध में विजय प्राप्त करते थे और अफ़गान लोग मारे जाते थे। जब मुकाबला बहुत समय तक होता रहा तो शेर शाह ने धूर्तता का जाल बिछा कर अपने शिविर असबाब, सामान प्यादों, एवं बोझ ढोने वाले पशुओं को (शाही लश्कर) के सामने छोड़ दिया और वह स्वयं अश्वारोहियों को लेकर कुछ पीछे हट कर उतर पड़ा। पादशाही लश्कर को इस चाल का कोई पता न चला, यहां तक कि एक रात में (शाही सेना) को अपने वश में देख कर उसने आक्रमण कर दिया। प्रातःकाल जब पादशाही आदमी पूर्ण रूप से असावधान थे, वह शाही लश्कर के पीछे से प्रकट हो गया। उसने अपनी सेना को तीन भागों में विभाजित कर दिया था। एक अपने अधीन, दूसरी जलाल खां के और तीसरी ख़्वास खां के अधीन थी। पादशाही आदमियों को घोड़ों पर जीन बांधने एवं अस्त्र-शस्त्र धारण करने का अवसर न मिला। हज़रत जन्नत आशियानी भाग्य की लीला एवं वह स्थिति देख कर चकित रह गये। क्योंकि अब उपाय का कोई अवसर न रह गया था, अतः उनके विस्मय में वृद्धि होती गई। उसी बीच में बाबा बेग जलायर, तरदी बेग[1] एवं कूज बेग सेवा में उपस्थित हुये। हज़रत जन्नत आशियानी ने स्वयं कुशलतापूर्वक सवार होकर उनसे कहा, "शीघ्र जाकर हाजी बेगम को ले आओ।" जब वे सरापरदे के द्वार पर पहुँचे तो वहाँ अफ़गानों की भीड़ से युद्ध करने लगे। जब तक उनके प्राण रहे वे वीरतापूर्वक युद्ध करते रहे और शहीद हो गये। मीर पहलवान बल्ख़ी ने भी कुछ लोगों के साथ सरापरदे के समीप प्राण न्योछावर कर दिये। हज़रत जन्नत आशियानी के कुछ निष्ठावान् उनके घोड़े की लगाम पकड़ कर उन्हें बाहर निकाल लाये। उस समय शेर शाह के आदमियों ने उनका पीछा करने की अनुमति चाही किन्तु उसने यह धृष्टता स्वीकार न की। वह स्वयं सवार होकर सरापरदे के द्वार पर खड़ा हो गया। कुछ लोगों को उसके चारों ओर प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त कर दिया ताकि असंयमी लोग धृष्टता के पाँव न बढ़ाने पायें। भाग्य में जो कुछ लिखा था उसके तथा दुर्घटनाओं के कारण जब तक वे वहाँ रहीं, शेर शाह उनकी सेवा को अपना सौभाग्य समझ कर आदरपूर्वक व्यवहार करता रहा। दूसरी पराजय के उपरान्त जब हज़रत जन्नत आशियानी गरमसीर

१ अकबर नामा में भी यह स्पष्ट नहीं। उसमें इस प्रकार है, "बाबा जलायर, तरदी बेग एवं कूच बेग" किन्तु शुद्धि पत्र में केवल बाबा जलायर एवं कूच बेग। यही ठीक है। अकबर नामा की कुछ हस्त लिपियों में तरदी बेग एवं कूच बेग को एक ही व्यक्ति बताया गया है। [रिज़वी मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १, पृ० ७२]।

की विलायत में पहुँचे तो अत्यधिक रक्षा एवं परदे पर ध्यान देते हुये, अन्तःपुर की सेविकाओं के साथ पालकियों पर सवार करके नीलाब के पार भेज दिया।

संक्षेप में, जब हज़रत जन्नत आशियानी पुल पर पहुँचे तो उसे टूटा हुआ पाया। विवश होकर घोड़े पर सवार नदी में कूद पड़े। संयोग से घोड़े से पृथक् हो गये। निज़ाम नामक सक्का ने तैर कर उन्हें मुक्ति के तट पर पहुंचाया। उन्होंने उससे पूँछा, 'तेरा क्या नाम है?" उसने बताया कि निज़ाम। उस नाम से फाल निकाल कर कहा कि, "यदि इस बार ईश्वर की कृपा एवं भाग्य के (३९) प्रकाश से पुनः कुशलतापूर्वक सिंहासनारूढ़ हो गया तो इस सेवा के बदले में तुझे आधे दिन की बादशाही प्रदान करूँगा।" यह दुर्घटना ९ सफर ९४६ हि० (२६ जून १५३९ ई०) को चौसा के घाट पर दुर्भाग्यवश घटी।

हुमायूं का आगरा पहुँचना

मीर्ज़ा मुहम्मद ज़मान, मौलाना मुहम्मद फरग़ली, मौलाना क़ासिम अली सद्र, मौलाना जलाल तत्तवी एवं बहुत से अमीर तथा विद्वान् मृत्यु के समुद्र में डूब गये। हज़रत जन्नत आशियानी ने मीर्ज़ा अस्करी एवं थोड़े से अन्य लोगों के साथ बड़ी तेज़ी से यात्रा करते हुये दारुलखिलाफा आगरा में पड़ाव किया। मीर्ज़ा कामरान ने सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। कुछ दिन उपरान्त मीर्ज़ा हिन्दाल उसके तथा अपनी माता के मध्यस्थ बनने के कारण लज्जा प्रदर्शित करता हुआ चौखट का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। हज़रत जन्नत आशियानी ने अपनी स्वाभाविक कृपा एवं समय की आवश्यकतानुसार उसके अपराध क्षमा कर दिये और कोई पूँछ ताछ न की। अपनी अपार कृपाओं द्वारा उसके व्याकुल हृदय को संतुष्ट कर दिया।

क्योंकि दुर्भाग्यवश अचानक ऐसी घटना घट गई जिसकी किसी को कल्पना भी न थी और उन्हें असफलता का मुंह देखना पड़ा, हज़रत जन्नत आशियानी उसका उपचार करने एवं उस हानि की पूर्ति करने का प्रयत्न किया करते थे। उस समय वह सक्का उनके वचन की आशा में राजधानी में उपस्थित हुआ। सहृदयता एवं उपकार के सिंहासन पर बैठने वाले की दूरदर्शीय दृष्टि जब उस दरिद्र सक्का पर पड़ी तो उन्होंने स्वयं राजसिंहासन से उतर कर उसे उसके लिये खाली कर दिया और आधे दिन तक उसे राजसिंहासन पर आरूढ़ रक्खा। उसका सम्मान नीमरोज़[१] के बादशाह के समान कर दिया और उसे शासन करने का आदेश दिया। उस समय उसकी आशाओं के मुख का दरिद्रता की धूल से साफ करके नक़द एवं अन्य धन सम्पत्ति तथा मददे मआश उसके सामर्थ्य से अधिक उसे प्रदान की। संक्षेप में, जब हज़रत जन्नत आशियानी राजधानी में पहुँचे तो जो हानियाँ हुई थीं उनके उपचार में व्यस्त हो गये। शेर शाह उसी स्थान से लौट कर बंगाला की ओर अग्रसर हुआ। उसने बंगाले में जहाँगीर क़ुली खाँ से युद्ध करके उसे पराजित कर दिया। जहाँगीर क़ुली बेग ने अपनी शक्ति से अधिक प्रयत्न एवं संघर्ष किया तथा वीरता एवं पौरुष प्रदर्शित किया। क्योंकि

१ नीमरोज़ का अर्थ मध्याह्न अथवा दिन का आधा भाग होना है। नीमरोज़, सीस्तान के एक प्रान्त का भी नाम है। सूर्य को भी नीमरोज़ कहते हैं। क्योंकि वह आधे दिन के लिये बादशाह बनाया गया था, अतः लेखक ने मक़ूल फ़हज़ का अनुकरण करते हुये ऐसे शब्द का प्रयोग किया है जिसके कई अर्थ निकल सकते हैं।

कार्य इस सीमा को पहुँच चुका था कि उसका उपचार सम्भव न था, उसने जमींदारों के पास शरण ले ली। शेर शाह ने वचन बद्ध होकर तथा प्रतिज्ञा करके उसे बुलवाया और बहुत बड़ी संख्या के साथ उसकी हत्या करा दी। उस प्रदेश पर अधिकार जमा लिया। उसके छोटे पुत्र कुतुब खां ने बहुत बड़ी सेना सहित कालपी एवं इटावे में उपद्रव मचाना प्रारम्भ कर दिया। हज़रत जन्नत आशियानी ने यादगार नासिर मीर्ज़ा, कासिम हुसेन खां ऊज़बेक एवं सिकन्दर सुल्तान को, जो उस क्षेत्र में मीर्ज़ा कामरान की ओर से था, अफ़गानों से युद्ध हेतु नियुक्त किया। कुतुब खां ने उनके मुकाबले पर पहुँचकर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। विजयी सेना के वीरों ने घोर युद्ध करके ईश्वर की कृपा से विजय प्राप्त कर ली। कुतुब खां अफ़गानों की एक बहुत बड़ी संख्या के साथ रण-क्षेत्र में मारा गया।

हज़रत जन्नत आशियानी ने, जो इन दिनों आगरा में थे, मीर्ज़ा कामरान को यद्यपि बड़े ही उपदेश दिये और बड़े तर्कपूर्ण ढंग से एकता, मेल जोल एवं संगठित रहने की ओर प्रेरित किया किन्तु ऐसे अवसर पर जब कि हृदय से विरोध करते हुये भी, ज़ाहिरी मेल जोल राज्य के हित में परमावश्यक था, उसने साथ देना स्वीकार न किया। अपने ८००० उत्तम[1] अश्वारोहियों के साथ सहायता करने के सौभाग्य की ओर से उपेक्षा की। बीमारी का बहाना बना कर, लाहौर जाने का विचार प्रकट किया और अपने स्वामी, आश्रयदाता तथा बड़े भाई से, जो कि पिता के समान होता है, ऐसे अवसर पर पृथक् हो गया। अपने प्रस्थान के पूर्व ख्वाजा कलाँ बेग को एक बहुत बड़ी सेना के साथ लाहौर भेज दिया। क्योंकि उसने स्वयं एक अशुभ बात अपनी जबान से निकाली थी, उसे जीर्ण शीर्ण रोग लग गये। वह ख्वाजा कलाँ बेग के पीछे स्वयं लाहौर चल दिया। सबसे विचित्र बात तो यह है कि **तारीखे रशीदी** के लेखक मीर्ज़ा हैदर बिन मुहम्मद हुसेन गूरगान को, जो हज़रत फ़िरदौस मकानी की खाला का पुत्र और उस समय के उच्च अधिकारियों में से था, अपने साथ चलने के लिये प्रेरित किया। मीर्ज़ा हैदर ने भी मीर्ज़ा कामरान की रुग्णावस्था का बहाना प्रस्तुत करके हज़रत जन्नत आशियानी से प्रस्थान करने की अनुमति चाही। हज़रत जन्नत आशियानी ने साहस प्रदर्शित करते हुये कहा कि, "यदि तुम्हें रिश्तेदारी का ख्याल है तो वह दोनों ओर से समान है। यदि प्रेम एवं निष्ठा का विचार है तो तुम स्वयं यह भाव मेरे प्रति अधिक प्रदर्शित कर चुके हो। इसके अतिरिक्त ऐसे अवसर पर जब कि मर्यादा एवं इज्जत का प्रश्न है और हम शत्रु से युद्ध करने जा रहे हैं तथा पौरुष प्रदर्शित करने का समय है, तुम्हारे जैसे मित्रों एवं सम्बन्धियों का पृथक् होना उचित (४०) नहीं ज्ञात होता। यदि मीर्ज़ा कामरान ने लाहौर को सुरक्षित समझ रखा है तो यह उसकी बहुत बड़ी भूल है। यदि इस बार भी कोई दुर्घटना घट गई तो पूरे हिन्दुस्तान में शान्ति के लिये कोई कोना न मिलेगा और शेर शाह के उन्हें लाहौर में छोड़ने का कोई प्रश्न नहीं। यदि हमारी विजय हो जाती है तो फिर तुम लोग हमें किस प्रकार मुंह दिखा सकोगे और ऐसे जाने पर मर जाने का प्रायश्चित्त दोगे। जिस किसी ने मीर्ज़ा कामरान को यह राय दी है उसने या तो विश्वासघात किया है और या पागलपन में भूल की है।" संक्षेप में, मीर्ज़ा हैदर ने अपने जागरूक भाग्य के कारण हज़रत जन्नत आशियानी का साथ देना स्वीकार कर लिया और इस बात पर दृढ़ हो गया। मीर्ज़ा कामरान ने अपने ३,००० आदमियों को मीर्ज़ा अब्दुल्लाह मुग़ल के नेतृत्व में हज़रत जन्नत

१ अकबर नामा में २०,०००, सम्भवतः इकबाल नामा में बिस्त (२०) की जगह हश्त (८) छप गया है।

आशियानी की सेवा मे नियुक्त कर दिया। उसे स्वय साथ देने का सौभाग्य न प्राप्त हुआ और वह लाहौर चला गया।

शेर खां से जन्नत आशियानी का पुन. युद्ध और दुर्भाग्यवश जो घटनायें घटी

जितने समय तक जन्नत आशियानी राजधानी आगरा में रहे सर्वदा सेना एकत्र करने, हानियों की पूर्ति एव लश्कर की व्यवस्था में तल्लीन रहे, किन्तु भाई लोग सगठन एव निष्ठा के अभाव के कारण ऐसे अवसर पर अपनी सेना सहित सहायता के सौभाग्य से वचित रहे। हज़रत जन्नत आशियानी सेना की कमी एव शत्रुओं की अधिकता के बावजूद शेर शाह से युद्ध हेतु रवाना हुये। जब वे भोजपुर पहुँचे तो शेर खा एक बहुत बडी सेना सहित गगा नदी के उस ओर विजयी सेना के समक्ष पहुँच गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने अल्प समय में भोजपुर की अपार नदी पर पुल बनवा कर उसे पार करने का सकल्प किया। लगभग १४० यक्का जवान उत्साह-पूर्वक वे ज़ीन के घोडों पर सवार हो गये और नदी मे कूद पडे और समुद्र में चक्कर लगाने वाले घडियालो की भाँति नदी को पार करके शत्रुओं की सेना पर आक्रमण किया। राज्य के शत्रुओ की बहुत बडी सख्या का युद्ध की अग्नि में जलाकर जो लोग बच रहे उन्हे पराजित कर दिया। वे लोग पुल के मार्ग से वापस होने के लिये अग्रसर हुये किन्तु जब वे पुल के समीप पहुँचे तो अफगानो को एक सेना ने गर्दबाज़ नामक हाथी को, जो चौसा के युद्ध मे पकडा गया था, पुल की ओर पहुचा कर उसे पुल तोडने के लिये बढाया। इसी बीच में बादशाही लश्कर से एक तोप चलाई गई जिससे हाथी के पाँव टूट गये। शत्रु की सेना तत्काल पराजित हो गई। वे योद्धा पौरुष प्रदर्शित करके कुशलतापूर्वक लौट आये। राज्य के सहायक नदी के किनारे-किनारे कन्नौज की ओर के प्रस्थान को उचित देख कर, निरन्तर यात्रा करते हुये रवाना हुय। मार्ग मे जब शत्रुओ की नौकायें दृष्टिगत हुई तो उनके ऊपर तोप चला दी। अफ़ग़ानो की बडी नौका टूट गई। सक्षेप में, एक मास तक कन्नौज के समीप दोनो सेनाओ का मुकाबला हुआ। अन्त में मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा एव उसके पुत्र उलुग मीर्जा तथा शाह मीर्जा, जो इससे पूर्व विद्रोह कर चुके थे, और हज़रत जन्नत आशियानी ने अपनी स्वाभाविक कृपा के कारण जैसा कि सक्षिप्त रूप से उल्लेख हो चुका है जिन कृतघ्नो को क्षमा कर दिया था, इस समय अपने दुर्भाग्य के कारण पुन भाग खडे हुय और अत्यधिक मार्ग-भ्रष्टो के पथ प्रदर्शक बने। हज़रत जन्नत आशियानी ने औचित्य की दृष्टि से यह निर्णय किया कि नदी पार करके चाहे जो कुछ हो युद्ध करना चाहिये ताकि जो कुछ भाग्य का लिखा है, वह प्रकट हो। अत पुल तैयार करके उन्होंने नदी पार की। लश्कर के समक्ष खाई खुदवा कर तोपखाने की गाडियो को सामने लगवा दिया। मोर्चे बाँट दिये गय। शेर खा ने भी सामने खाई खुदवा कर पडाव कर दिया। रोज़ाना दोनो ओर से अनुभवी वीर निकल-निकल कर वीरतापूर्वक युद्ध करते थे। इसी बीच में सूर्य कर्क राशि में प्रविष्ट हो गया। वर्षा की अधिकता के कारण जिस भूमि पर आकाश रूपी शिविर थे वहाँ इतना कीचड हो गया कि चलना कठिन हो गया। विवश होकर राज्य के सहायको ने यही उचित समझा कि एक ऊँचे स्थान पर, जो कीचड आदि से सुरक्षित हो, पहुच जायें। उन्होंने निश्चय किया कि दूसरे दिन प्रात काल आशूरे के दिन (१० मुहर्रम ९४७ हि०/१७ मई १५४० ई०) सेनाओं को सुव्यवस्थित करके खड़े हो जायें। यदि शत्रु खाई से निकले तो युद्ध करें अन्यथा जो स्थान निश्चित हुआ है, वहाँ

पडाव करे। १० मुहर्रम ९४७ हि० (१७ मई १५४० ई०) को वे इस उद्देश्य से सवार हुये। मुहम्मद खान रूमी, उस्ताद अली कुली के पुत्र, उस्ताद अहमद रूमी, एव हुसेन खलफात ने, जो तोपखाने के (४१) प्रबधक थे, अरावो को निश्चित नियमानुसार जजीर से जकडवाकर सामने किया। मध्य भाग को हजरत जनत आशियानी के व्यक्तित्व द्वारा शोभा प्राप्त हुई। मीर्ज़ा हिन्दाल को (मध्य भाग के) आगे रक्खा गया। मीर्ज़ा अस्करी दायें बाज़ू मे तथा यादगार नासिर मीर्ज़ा बायें बाज़ू में नियुक्त किये गये। मीर्ज़ा हैदर ने अपने इतिहास मे लिखा है कि उस दिन हज़रत जनत आशियानी ने मुझे अपने बायी ओर स्थान प्रदान किया था। मेरे स्थान से मध्य भाग के बायें बाज़ू तक, २७ तूकदार अमीर[1] खडे थे। शेर खा भी अपनी सेना को पाँच दलो मे विभाजित करके निकला। दो दल, जो सब मे बडे थे, खाई के भीतर[2] खडे हुये और तीन दल शाही सेना की ओर अग्रसर हुये। जलाल खा, सरमस्त खा एव समस्त न्याज़ी लोग मीर्ज़ा हिन्दाल के समक्ष पहुँचे। मुबारिज़ खा, बहादुर खा, राय हुसेन जलवानी ने यादगार नासिर मीर्ज़ा एव कासिम हुसेन खा का मुकाबला किया ख्वास खा, बरमज़ीद गोर एव कुछ अन्य लोग मीर्ज़ा अस्करी के समक्ष पहुँचे। सर्वप्रथम मीर्ज़ा हिन्दाल एव जलाल खा में युद्ध प्रारम्भ हुआ। घोर युद्ध होने लगा। जलाल खा घोड से भूमि पर गिर पडा। बादशाही सेना के बायें बाज़ू ने अपने शत्रुओ को ढकेल कर उनके मध्य भाग तक पहुँचा दिया। शेर खा यह हाल देख कर स्वय बहुत बडी सेना लेकर तेजी से युद्ध की ओर अग्रसर हुआ। अफगानों के आक्रमण के आतक से अधिकाश अमीर युद्ध किये बिना भाग खडे हुये। हज़रत जनत आशियानी ने स्वय दो बार शत्रुओ की सेना पर आक्रमण करके घोर प्रयत्न किया। इस प्रकार उनके हाथ से दो भाले टूट गये। क्योकि मामला हाथ से निकल चुका था, अत कुछ निष्ठावान् उनके घोडे की लगाम पकड कर जबरदस्ती (रण क्षेत्र के) बाहर निकाल लाय। कुछ कृतघ्न एव उपकार न मानने वाले जिन्होने कायरता एव दु साहस के कारण युद्ध न किया और रण-क्षेत्र से भाग गये थे, गगा तट तक जो लगभग (एक) फरसख होगा, घोडा भगाते चले गये और लगाम न खीची क्योकि वे हताश हो चुके थे, अत नि सकोच नदी में कूद पडे और बहुत बडी सख्या में लाग निर्लज्जता के समुद्र में डूब गये। हज़रत जनत आशियानी हाथी पर सवार होकर नदी के पार हो गये और नदी-तट पर हाथी से उतर कर निकलने का मार्ग ढूँढ रहे थे। क्योकि किनारा ऊँचा था, निकलना सम्भव न था। एक सैनिक वहाँ पहुच गया और उसने उनका हाथ पकड कर उन्हे ऊपर खीच लिया। हज़रत जन्नत आशियानी ने उसका नाम एव जन्म स्थान पूँछा। उसने अपना नाम शम्सुद्दीन मुहम्मद एव जन्म-स्थान गजनी बताया, और कहा, "मैं मीर्ज़ा कामरान का सेवक हूँ।' हज़रत जन्नत आशियानी ने उसके प्रति कृपा करने का वचन देकर उसे सम्मानित किया। इसी बीच में मीर्ज़ा कामरान के एक प्रतिष्ठित अमीर मुकद्दम बेग ने, बादशाह को पहचान कर अपना घोडा प्रस्तुत कर दिया। हज़रत जनत आशियानी ने सवार होकर आगरा की ओर प्रस्थान किया। मार्ग मे मीर्ज़ा लोग

१ पताका वाले अर्थात् प्रतिष्ठित अमीर।

२ अकबर नामा भाग १ में 'देरूने खन्दक (खन्दक के बाहर)'। [रिज़वी . मुग़ल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १, पृ० ८१]।

उनके साथ हो गये। जब वे बधमका पुर[1] नामक स्थान पर पहुँचे तो उस कस्बे के निवासी धृष्टता प्रदर्शित करते हुये, बादशाही आदमियो में जिसे पा जाते उसकी हत्या का प्रयत्न करते थे। जब हज़रत जन्नत आशियानी के कानो तक यह बात पहुँची तो उन्होंने मीर्ज़ा अस्करी, यादगार नासिर मीर्ज़ा एव मीर्ज़ा हिन्दाल को आदेश दिया कि उन हरामखोरों पर आक्रमण करके उन्हे दड दें। मीर्ज़ा अस्करी प्रस्थान के समय खडा हो गया। यादगार नासिर मीर्ज़ा ने उसके घोडे को छडी से मारते हुये कठोरतापूर्वक कहा, "तुम लोगों की फूट के कारण कार्य इस दशा को पहुँच गया। तुम्हे अभी भी चेतावनी नही हुई।" यादगार नासिर मीर्ज़ा एव मीर्ज़ा हिन्दाल आज्ञा का पालन करते हुये उस समूह की ओर रवाना हुये। गँवारों की सख्या लगभग ३ हज़ार थी। घोर युद्ध हुआ। गँवारो की बहुत बडी सख्या मार डाली गई।" मीर्ज़ा लोग उन्हे दड देकर लौट आये। मीर्ज़ा अस्करी ने यादगार नासिर मीर्ज़ा की शिकायत की। जब उनसे वास्तविक स्थिति का उल्लेख हुआ तो उन्होंने उसके प्रति अत्यधिक क्रोध प्रदर्शित किया।

हज़रत जन्नत आशियानी शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुये आगरा पहुँचे। दूसरे दिन पूज्य मीर रफ़ी उद्दीन के, जो सफवी सैयिद एव बडे बुद्धिमान् तथा प्रतिभाशाली थे, निवास-स्थान पर पहुँचे और उनसे परामर्श किया। मीर ने निवेदन किया कि "उसके विचार के दर्पण में स्थिति का मुख उद्देश्य के विरुद्ध दृष्टिगत होता है[2]। कुछ दिन तक युग की शत्रुता एव चक्कर लगाने वाले आकाश के कुचक्र का मुकाबला करना चाहिये। अब समय नही रहा। विचार-विनिमय के उपरान्त उनके औचित्य को दर्शाने वाला मत इस बात पर दृढ हुआ कि लाहौर की ओर प्रस्थान किया जाय। यदि मीर्ज़ा कामरान इस स्थिति में भी असावधानी की निद्रा से जाग कर साथ देने का सौभाग्य प्राप्त करने के लिये कटिबद्ध हो जाय तो जो हानि हुई है उसका यथा रूप उपचार हो सकता है।" इस उद्देश्य से वे लाहौर की ओर रवाना हुये। मीर्ज़ा अस्करी सम्बल एव मीर्ज़ा हिन्दाल अलवर को, जहाँ उनकी जागीरें थी, रवाना हुए। जब सम्मानित लश्कर देहली पहुँचा तो सैयिद कासिम हुसेन सुल्तान एव बेग मीरक ने रकाब चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में बहुत (४२) बडी सेना एकत्र हो गई। उस मास की ८ तारीख[3] को वे देहली से रवाना हुए। २२ तारीख[4] को रोहतक कस्बे में मीर्ज़ा हिन्दाल एव मीर्ज़ा हैदर साथ हो गये। रोहतक के किले वालो ने नगर के द्वार को बादशाह के आदमियो के लिये बन्द कर लिया। हज़रत जन्नत आशियानी के आदेशानुसार अल्प समय में उन्हे दड दे दिया गया। १७ सफर (९४७ हि०/२३ जून १५४० ई०) को सरहिन्द में पडाव हुआ। मीर फख्र अली उस मास की २० तारीख (२६ जून १५४० ई०) को मृत्यु को प्राप्त हो गया।

१ यह नाम स्पष्ट नहीं। सम्भवतः भोगाँव, परगना तथा तहसील भोगाँव, जिला मैनपुरी (उत्तर प्रदेश) २७°१७' उत्तर तथा ७९°१४' पूर्व। (*District Gazetteers*, Mainpuri, Vol. X, p. 196)।

२ अर्थात् सफलता दृष्टिगत नहीं होती।

३ ८ मुहर्रम ९४७ हि० जो अशुद्ध है। अकबर नामा में '२० मुहर्रम' (२७ मई १५४० ई०); यही ठीक है।

४ २२ मुहर्रम ९४७ हि० (२९ मई १५४० ई०)।

हुमायूं का लाहौर पहुँचना

जब उत्कृष्ट सेना लाहौर के निकट दौलत खा की सराय के समीप पहुँची तो मीर्जा कामरान स्वागत् हेतु आकर सेवा मे उपस्थित हुआ। ख्वाजा दोस्त मुशी के उद्यान में, जो लाहौर के अत्यन्त हृदयग्राही स्थानो में था, हज़रत जन्नत आशियानी ने पडाव किया। मीर्जा हिन्दाल ने मीर्जा कामरान के दीवान ख्वाजा गाजी के उद्यान में स्थान ग्रहण किया। उनके पीछे, मीर्जा अस्करी सम्बल से आकर मीर वली बेग के घर में ठहरा। इसी समय भाग्यशाली शम्सुद्दीन मुहम्मद गजनवी, जिसने नदी तट पर हजरत जन्नत आशियानी का हाथ पकडा था, पहुँचा और चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त किया। उसके प्रति अत्यधिक कृपा प्रदर्शित की गई।

जब तक वे लाहौर में रहे, सर्वदा अमीर एव भाई लोग, उनकी सेवा मे उपस्थित होकर परामर्श एव जो कुछ उचित समझते उसके विषय में विचार-विनिमय करते थे। शिक्षा की सामग्री के उपलब्ध होने, आकाश की ओर से चेतावनियाँ प्राप्त करने एव फूट का दुष्परिणाम भोग लेने के बावजूद वे अपने अनुचित व्यवहार को न त्यागते और सचेत न होते थे तथा हृदय से एकता एव सगठन का प्रयत्न न करते थे। यद्यपि परामर्शगोष्ठियाँ आयोजित होती और सगठन एव मेल जोल के विषय में लोग प्रतिज्ञा करते तथा वचन बद्ध होते किन्तु हृदय के वाणी का साथ न देने के कारण कोई भी लाभ न होता था। प्राय ख्वाजा अब्दुल हक का भाई ख्वाजा खावन्द महमूद मी अबुल बका एव समस्त प्रतिष्ठित तथा सम्मानित लोग इन गोष्ठियो में उपस्थित होते थे और जो कुछ होता उसके साक्षी रहते थे। यहाँ तक कि एक दिन समस्त मीर्जाओं एव अमीरो ने उपस्थित होकर सगठन एव मेल के विषय मे प्रतिज्ञापत्र लिखा और राज्य के समस्त प्रतिष्ठित एव सम्मानित व्यक्तियो ने सौभाग्य के उस दस्तावेज़ पर अपनी गवाहियाँ लिखी। जब यह दस्तावेज़ तैयार हो गया तो परामर्श होने लगा। हज़रत जन्नत आशियानी ने हर विषय पर उत्तम उपदेश एव विचारपूर्ण वाक्य प्रस्तुत किये और कहा कि, "हाल ही में फूट के कारण सुल्तान हुसेन मीर्जा की सतान पर जो कुछ बीती वह अत्यधिक चेतावनी एव शिक्षा का विषय है कारण कि इतने दृढ राज्य एव सेना के बावजूद उन्होंने खुरासान सरीखा समृद्ध राज्य पारस्परिक फूट के कारण नष्ट करा दिया। बदीउज्जमान मीर्जा के अतिरिक्त, जो भाग कर रूम[1] चला गया, मीर्जा के समस्त पुत्रो को शाही बेग खा ने अपमानित करके एव बडी दुर्दशा को पहुँचा कर मार डाला। खेद है कि हिन्दुस्तान का विशाल राज्य, जिसे हज़रत फिरदौस मकानी ने सहस्रो कठिनाइयो एव परिश्रम के बाद विजय किया था, तुम लोगो की फूट के कारण अफगानो के अधिकार मे आ जाय। इसका लाछन कयामत तक हमारे सिर पर रहेगा। इस समय भली-भाँति विचार करके इस विषय में उचित कार्रवाई करनी चाहिये।' किन्तु वे लोग सचेत न हुये। मीर्जा कामरान ने कहा कि "मेरी समझ में यह आता है कि बादशाह एव समस्त मीर्जा लोग थोडे से आदमियो के साथ कुछ दिन पर्वतो की घाटियो एव दृढ कन्दराओ में समय व्यतीत करें। मै लोगो के परिवार वालो को लेकर काबुल चला जाऊँ। उन्हे एक सुरक्षित स्थान पर पहुँचा कर लौट आऊँ। उस समय जो कुछ उचित हो उसपर पूर्ण शक्ति से आचरण

१ रूमी।

किया जाय। मीर्जा हिन्दाल एव यादगार नासिर मीर्जा ने कहा, "अभी हमारे तथा अफगानों के युद्ध में देर है। यह उचित होगा कि हम बक्कर के क्षेत्र में पहुँच कर उस प्रदेश को अपने अधिकार में कर लें और अपनी स्थिति सुधार कर गुजरात की विजय हेतु प्रस्थान करें। जब यह दोनों प्रदेश विजय हो जायेंगे और साधन एकत्र हो जायेंगे तो हिन्दुस्तान पर भली-भाँति विजय प्राप्त हो जायगी।" मीर्जा हैदर ने कहा, "सरहिन्द पर्वत से सारग के पर्वत[1] तक के आँचलों को दृढ बनाकर आप लोग पडाव कर दें। मैं इस बात की प्रतिज्ञा करता हूँ कि थोडी सी सेना से दो मास में कश्मीर विजय कर लूँगा। जब कश्मीर विजय हो जाय तो परिवार वालों को वहाँ भेज दिया जाय कारण कि उससे अधिक सुरक्षित स्थान कोई और नहीं है। शेर खा को वहाँ पहुँचने मे चार मास लग जायेंगे। गरदूनों[2] एव जर्बजनों[3] मे, जिनपर उसकी शक्ति का आधार है, वह पर्वत मे प्रविष्ट नहीं हो सकता। अल्प समय में वह नष्ट भ्रष्ट हो जायगा।" क्योंकि उनकी वाणी उनके हृदय का साथ न दे रही थी, अत कोई निर्णय न हो सका और गोष्ठी विसर्जित हो गई। यद्यपि इस प्रकार की बातें होती थी, किन्तु कोई बात निश्चय न होती थी। मीर्जा कामरान, जिसकी पूरी इच्छा यह थी कि सभी लोग इधर-उधर छिन्न-भिन्न हो जायें और वह स्वय काबुल पहुँचकर एक कोने में शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करे, जबान से तो हाँ में हाँ मिलाता था किन्तु हृदय से कोई उचित बात न होने देता था, यहाँ तक (४३) कि उसने अपने सद्र, काज़ी अब्दुल्लाह को गुप्त रूप से शेर शाह के पास, जिससे उसने मेल जोल दृढ कर लिया था, इस आशय से भेजा कि वह उससे प्रतिज्ञा एव वचन ले ले। इस प्रकार वह शत्रु की सहायता से अपनी इच्छा की पूर्ति का प्रयत्न करने लगा। पत्र का साराश इस प्रकार है —"पजाब मेरे पास रहने दो और मुझे अपना समझो ताकि हम लोग मिलकर बादशाह को हिन्दुस्तान से निकाल दें।"

शेरशाह देहली पहुँच गया था। वह आगे बढने मे सकोच कर रहा था कारण कि वह सोचता था कि भाइयों के एकत्र हो जाने के कारण बहुत बडी सेना जमा हो गई है। कहीं ऐसा न हो कि उसके अग्रसर होने से बना बनाया काम बिगड जाय। इसी बीच में अब्दुल्लाह पहुँच गया। शेर शाह ने उसका बडा ही उत्तम स्वागत् किया। भाइयों की फूट के सुखद समाचार से उसका साहस बढ गया। उसने मीर्जा की इच्छानुसार उत्तर लिखा और अपनी ओर से एक धूर्त को (मीर्जा के दूत के) साथ करके मीर्जा के पास भेज दिया ताकि वह वास्तविक स्थिति एव सेना की सख्या इत्यादि का पता लगा कर लौट आये, और स्वय भी साहस मे वृद्धि हो जाने के कारण अग्रसर हुआ। मीर्जा कामरान ने शेर शाह के दूत से लाहौर के उद्यान में भेंट की। उसने उस दिन एक सभा आयोजित की और हज़रत जहाँबानी को भी आग्रह करके वहाँ लाया। दूसरी बार अल्पदर्शी एव कृतघ्न

१ सारग किसी स्थान का नाम नहीं अपितु नमक की पहाडियों के एक क़बीले का नाम है। सुल्तान सारग सुल्तान आदम का भाई था। उसकी मृत्यु शेर शाह के समय में हो गई होगी कारण कि कामरान को हुमायू के पास आदम ने भेजा था। मीर्जा हैदर का विचार था कि सुपुल सिन्ध से कश्मीर तक का नीचे का भाग अर्थात् सरहिन्द (दक्षिण-पूर्व) से रावलपिंडी (उत्तर-पश्चिम) अपने अधिकार में रखें।

२ तोप की गाडियाँ।

३ एक प्रकार की तोप।

मीर्ज़ा ने झूठे लोभ के कारण उसी अभागे[1] को शेर शाह के पास भेजा। उसने शेर शाह से सुल्तानपुर[2] नदी के तट पर भेंट की और उसे नदी पार करने का और भी साहस दिला दिया।

मुज़फ्फर तुर्कमान ने, जो करावली हेतु नियुक्त हुआ था, सुल्तानपुर के पास से आकर निवेदन किया कि, "शत्रु की सेना ने नदी पार कर ली। मेरे भतीजे जुनैद बेग की हत्या कर दी है।" क्योंकि हज़रत जन्नत आशियानी को मीर्ज़ा कामरान के विश्वासघात एवं समस्त भाइयों की फूट का हाल ज्ञात हो गया था अतः वे विवश होकर लाहौर नदी[3] पार करके निरन्तर यात्रा करते हुये चनाब नदी की ओर रवाना हुये। मीर्ज़ा लोग भी साथ हो लिये। क्योंकि हज़रत जन्नत आशियानी ने कश्मीर जाने का दृढ़ संकल्प कर लिया था अतः उन्होंने एक सेना मीर्ज़ा हैदर के साथ करके उसे अपने प्रस्थान के पूर्व कश्मीर की ओर भेज दिया। इसका कारण यह है कि मीर्ज़ा कामरान, साम मीर्ज़ा से युद्ध हेतु कन्धार जाते समय मीर्ज़ा हैदर को लाहौर का शासन प्रबन्ध करने के उद्देश्य से वहाँ नियुक्त कर गया था। ख्वाजा हाजी, अब्दाल माकरी, रेकी चक एवं कश्मीर के अमीरों का एक समूह वहाँ के हाकिम के प्रति विद्रोह करके, लाहौर के क्षेत्र में इस आशय से आ गये थे कि मीर्ज़ा हैदर से परिचय के कारण, मीर्ज़ा कामरान से सेना लेकर, कश्मीर विजय करें। मीर्ज़ा हैदर ने यद्यपि अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु उसकी यह इच्छा पूरी न हुई। जिस समय मीर्ज़ा कामरान, मीर्ज़ा हिन्दाल के विद्रोह के कारण, आगरा चला गया था, मीर्ज़ा हैदर ने अत्यधिक प्रयत्न करके, राजधानी से मीर्ज़ा कामरान के एक अधिकारी बाबा जूचक के अधीन एक सेना इस आशय से भेजी कि वह कश्मीर के अमीरों से, जिनका ऊपर उल्लेख हो चुका है, मिलकर कश्मीर को अधिकार मे कर ले। बाबा जूचक ने जाने में इतना विलम्ब किया कि चौसा-घाटी की पराजय के, जो कयामत तक स्थायी रहने वाले राज्य के लिये बहुत बड़ा धक्का थी, समाचार प्रसिद्ध हो गये। बाबा जूचक ने अपने विचार त्याग दिये। कश्मीर के अमीर नवशहर एवं राजौरी तथा पर्वत की घाटियों में समय व्यतीत करने लगे। वे लोग मीर्ज़ा हैदर बेग को सर्वदा कश्मीर विजय हेतु प्रेरित करते हुये पत्र लिखा करते थे। मीर्ज़ा इन पत्रों को हज़रत जन्नत आशियानी को दिखा दिया करता था। हज़रत जन्नत आशियानी के उदार हृदय मे कश्मीर की सैर की इच्छा बढ़ने लगी। इसी बीच में मीर्ज़ा हैदर को नवशहर की ओर शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करने का आदेश हुआ और यह निश्चय हुआ कि यदि कश्मीर के अमीर लोग उसकी सेवा में उपस्थित हों तो वह सिकन्दर तोपची को, जो उस भूभाग का जागीरदार है, अपनी सहायता हेतु लेकर आगे रवाना हो। जब वह कश्मीर के समीप से पर्वतों में पहुँचे, तो अमीर ख्वाजा कलाँ बेग कुमक हेतु पहुँच जाय। जब ख्वाजा कलाँ बेग के पहुँचने के समाचार उन्हें प्राप्त होंगे तो वे स्वयं रवाना हो जायेंगे। हज़रत जन्नत आशियानी चनाब नदी तट पर पड़ाव किये हुये थे कि मीर्ज़ा कामरान तथा मीर्ज़ा अस्करी, ख्वाजा अब्दुल हक एवं ख्वाजा खावन्द महमूद के साथ काबुल की ओर चल दिये। मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, उलुग मीर्ज़ा एवं शाह मीर्ज़ा, मुल्तान के क्षेत्र से, यह शोकमय समाचार पाकर सिंध नदी तट पर मीर्ज़ा कामरान के साथ

१ सद्र।
२ व्यास नदी।
३ रावी नदी।

हो लिये। मीर्ज़ा हिन्दाल, यादगार नासिर मीर्ज़ा, एवं कासिम हुसेन सुल्तान ने (जन्नत आशियानी से) निवेदन किया कि, "यहाँ ठहरना और मीर्ज़ा हैदर के समाचार की प्रतीक्षा करना सावधानी की दृष्टि से ठीक नहीं कारण कि शत्रु सेना सहित निकट पहुँच गया है। हमारे आदमियों की संख्या बड़ी कम और वे बड़े हतोत्साहित हैं। यह उचित होगा कि हम सिन्ध की ओर प्रस्थान करें।" संक्षेप में, अत्यधिक आग्रह के उपरान्त वे लोग हज़रत जन्नत आशियानी को सिन्ध की ओर ले गये। ख्वाजा कलाँ बेग सियालकोट से पृथक् होकर मीर्ज़ा के पीछे चल दिया। सिकन्दर तोपची भी मीर्ज़ा हैदर (४४) के साथ न गया और स्वयं सारंग के पर्वत की ओर चला गया।

हुमायूं का सिन्ध पहुँचना

रजब ९४७ हि० (नवम्बर १५४० ई०) में हज़रत जन्नत आशियानी मीर्ज़ाओं के प्रयत्न से सिन्ध की ओर रवाना हुये। कुछ मंज़िल के उपरान्त, हिन्दाल मीर्ज़ा एवं यादगार नासिर मीर्ज़ा ने बेग मीरक के बहकाने से विद्रोह कर दिया और वे लोग उनसे पृथक् हो गये। इसी बीच में काज़ी अब्दुल्लाह भी कुछ अफ़ग़ानों सहित पहुँच गया। मीर्ज़ा हिन्दाल के क़रावल उन लोगों को बन्दी बनाकर मीर्ज़ा के पास ले गये। समस्त अफ़ग़ानों की हत्या कर दी गई। दुष्ट अब्दुल्लाह, मीर बाबा दोस्त की सिफ़ारिश से दंड से मुक्त हो गया। मीर्ज़ा लोग २० दिन तक चिन्ता के रेगिस्तान में भटकते रहे। उनकी समझ में न आता था कि क्या करें और कहाँ जायँ। हज़रत जन्नत आशियानी, दश्त के मार्ग से बक्कर की ओर जाना चाहते थे। अनुमान एवं अन्दाज़ से यात्रा करते थे। शेर शाह ने अपने दास ख्वास को बहुत बड़ी सेना सहित हज़रत जन्नत आशियानी का पीछा करने के लिये नियुक्त कर दिया था। वह अत्यधिक सेना एवं पूरी तैयारी के बावजूद युद्ध की धृष्टता न करता था। हज़रत जन्नत आशियानी जिस मंज़िल से कूच कर जाते, वह वहाँ उतर पड़ता। इसी बीच में नक्क़ारे का शोर सुनाई दिया। पूँछ ताँछ के उपरान्त ज्ञात हुआ कि मीर्ज़ा लोग २-३ कुरोह पर चले आ रहे हैं। मीर अबुल बक़ा, जिसने मीर्ज़ा कामरान से पृथक् होकर इस यात्रा में सेवा का सम्मान प्राप्त कर लिया था, हज़रत जन्नत आशियानी के आदेशानुसार मीर्ज़ा लोगों के पास पहुँचा ताकि उन्हें उत्तम शिक्षायें देकर सौभाग्य के पथ पर लाये और उनकी सेवा में उपस्थित करे। मीर आदेशानुसार मीर्ज़ा लोगों को सौभाग्य का मार्ग दिखा कर अपने साथ लाया। उच्च में सैयिद मुहम्मद बाक़िर हुसैनी, जो हज़रत जन्नत आशियानी के सम्मानित दरबार का मुसाहिब था, मृत्यु को प्राप्त हो गया। हज़रत जन्नत आशियानी के सत्य को पहचानने वाले हृदय को इससे बड़ा धक्का पहुँचा। जब वे बख्शू लगाह के, जो प्रतिष्ठित ज़मींदारों में था, वतन के समीप पहुँचे तो बेग मुहम्मद बकावल[१] एवं शिज़िर बेग के हाथ उसके पास प्रोत्साहन युक्त फ़रमान एवं खिलअत भेजे तथा उसे खाने जहाँ की उपाधि, पताका एवं नक्क़ारा प्रदान करने का आश्वासन देकर, शाही शिविर में अनाज प्रेषित करने एवं सेवा करने का आदेश दिया। उसने दूतों का स्वागत करके आज्ञाकारिता प्रदर्शित की। यद्यपि चौखट के चुम्बन के सौभाग्य हेतु वह कटिबद्ध न हो सका किन्तु शाही आदेशानुसार उचित पेशकश दरबार में भेजे एवं व्यापारियों को अनाज तथा खाद्य सामग्री सम्मानित लश्कर में ले

१ वह अधिकारी जो बादशाह के भोजन का प्रबन्ध करता था।

जाकर बेचने के लिये प्रेरित कर दिया। उसने अत्यधिक नौकाओ की व्यवस्था कर दी जिनपर पादशाही आदमी, नदी पार करके बक्कर की ओर रवाना हुये।

२८ रमजान ९४७ हि० (२६ जनवरी १५४१ ई०) को उत्कृष्ट पताकायें बक्कर के क्षेत्र मे पहुंची वे लुहरी[1] नामक कस्बे में, जो बक्कर के किले के समक्ष है, उतर पडे। मीर्जा हिन्दाल ने ४-५ कुरोह आगे पडाव किया। यादगार नासिर मीर्जा ने भी नदी के उस ओर शिविर लगाये। सुल्तान महमूद बक्करी, जो मीर्जा शाह हुसेन अरगून के सेवको में था, बक्कर की विलायत को नष्ट-भ्रष्ट करके किले के भीतर प्रविष्ट हो गया। नौकाओ को किले के नीचे खीच लिया और किले की प्रतिरक्षा का प्रयत्न करने लगा। मीर्जा शाह हुसेन मीर्जा शाह बेग अरगून का पुत्र था। जब हजरत फिरदौस मकानी ने उससे कन्धार छीन लिया, तो वह ठट्टा एव बक्कर के क्षेत्र में पहुँच गया और उस राज्य को अपने अधिकार में कर लिया। हजरत जन्नत आशियानी ने लुहरी कस्बे से सुल्तान महमूद के पास प्रोत्साहन-युक्त फरमान भेज कर चौखट चूमने का सौभाग्य प्राप्त करने के लिये प्रेरित किया। उसने उत्तर में निवेदन किया कि, "मैं शाह हुसेन का सेवक हूँ। जब तक वह सेवा में न उपस्थित हो मेरा आगमन सेवा एव नमकहलाली के नियमानुसार उचित नही।" उसने इस प्रकार के बहाने बनाये। हजरत जन्नत आशियानी ने उसके बहानो को स्वीकार करते हुये अमीर ताहिर सद्र एव मीर समन्दर को, जो उनके विश्वास पात्र थे, मीर्जा शाह हुसेन के पास ठट्टा भेजा। मीर्जा ने राजदूतो का निष्ठा-पूर्वक स्वागत् किया। शेख पूरान की सतान शख मीरक को, जो उसके प्रतिष्ठित अधिकारियो में था, राजदूत बनाकर उचित पेशकश सहित जन्नत आशियानी के राजदूतो के साथ दरबार में भेज कर प्रार्थना कराई कि, "बक्कर की विलायत का महसूल बडा कम है। राज्य के लिये यह उचित होगा कि आप जाजकान[2] की विलायत में, जो समृद्धि, कृषि की अधिकता एव स्थान की विशालता से सुशोभित है, चले जाये और उस स्थान को अपने अधिकार में कर लें। मैं भी निकट हूँगा (४५) और बादशाही सेना भी कुछ दिन तक निश्चिन्त होकर समय व्यतीत करेगी। जब हजरत वहा होंगे तो मैं भी सेवा का सम्मान प्राप्त कर लूंगा। तदुपरान्त साधारण से प्रयत्न से गुजरात प्रदेश आपके राज्य के सहायको के अधिकार में आ जायगा। जब इतना हो जायगा तो हिन्दुस्तान के राज्यो पर भी इच्छानुसार विजय प्राप्त हो सकेगी।" हजरत जन्नत आशियानी इन बातो से समझ गये कि मीर्जा शाह हुसेन छल एव धूर्तता प्रदर्शित कर रहा है और उसकी बाते सत्यता के प्रकाश से शून्य है। उन्होंने मीर्जा हिन्दाल को पातर के क्षेत्र मे नियुक्त किया और वे स्वय ५—६ मास तक लुहरी में इस आशय से ठहरे रहे कि सम्भवत ठट्टा का हाकिम सौभाग्य की ओर प्रेरित हो जाय और काम आगे बढे। इस बीच मे वे स्वय पातर एव मीर्जा हिन्दाल के पडाव पर पहुँचे। वही ९४८ हि० (१५४१ ई०) में मरियम मकानी से विवाह किया और वह समय निकट आ गया जब

१ यहाँ रोहरी से तात्पर्य है। रोहरी सक्कर जिले का तालुका है और २७°४ तथा २७°५०' उत्तर एव ६८°३५' तथा ६६°४८' पूर्व में स्थित है। रोहरी क़स्बा २७°४१' उत्तर तथा ६८°५६ पूर्व में सिन्ध नदी के बीच अथवा पूर्वी तट पर स्थित है। (*The Imperial Gazetteer of India*, Vol XXI, Pp 309-310)

२ जाजकान अथवा चाचकान, या हाजगान, टट्टा के पूर्व, रन के पश्चिम में सिन्ध नदी की शाखा पर; (Burnes *Narrative of a Visit to Sindh* (मानचित्र)। अकबर के समय में यह मुलतान सूबे की सरकार थी। इसमें ११ महाल थे और इसका राजस्व १९,७८४, ५८६ दाम था।

कि सौभाग्य के आकाश से महत्वाकांक्षा के सूर्य का उदय हो और हिन्दुस्तान का विशाल क्षेत्र अस्तित्व के यश से सम्मानित हो।

संक्षेप में, जब उन्हें बक्कर में निवास करते-करते अधिक समय व्यतीत हो गया, तो शनैः शनैः अनाज मँहगा हो गया। जमींदारों ने खाद्य सामग्री पहुँचाना बन्द कर दिया। मीर्ज़ा हिन्दाल यादगार नासिर मीर्ज़ा के परामर्श एवं कराचा खा के, जो मीर्ज़ा कामरान की ओर से कन्धार का वाली था, प्रेरित करने पर कन्धार की ओर चला गया और यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास आदमी भेज कर अपने प्रस्थान एवं उसके बुलाने से सम्बन्धित सूचना भेजी। इस कारण हजरत जन्नत आशियानी स्वयं मीर अबुल बका के खेमे में तशरीफ़ ले गये और बुजुर्गाना विचार-विनिमय करने के उपरान्त बड़े सम्मान से मीर को यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास दूत बना कर भेजा ताकि भाग्यशाली उपदेशों द्वारा वह मीर्ज़ा को जाने से रोके। मीर्ज़ा नदी पार करके यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास पहुँचा और गम्भीर बातों द्वारा मीर्ज़ा को उस इरादे से रोका और यह निश्चय कराया कि वह इन मिथ्यापूर्ण विचारों को त्याग कर, निष्ठा एवं सेवा के मार्ग पर दृढ़ रहे और यह शर्त रक्खी कि यदि हिन्दुस्तान विजय हो गया तो तीन भागों में से एक भाग मीर्ज़ा के अधीन रहेगा और अगर वे काबुल तशरीफ़ ले गये तो गज़नी, चर्ख एवं लोहगढ़ नामक स्थान उसके अधीन रहेंगे। जिस समय मीर दूत के कर्तव्य पूरे करके सेवा में उपस्थित होने के उद्देश्य से वापस हो रहा था, बक्कर के किले के आदमियों ने अवगत होकर मीर की नौका के विरुद्ध कुछ लोगों को भेजा। उन लोगों ने मीर पर बाणों की वर्षा कर दी। मीर के कुछ घाव लगे। दूसरे दिन वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। हजरत जन्नत आशियानी का इस दुर्घटना पर बड़ा शोक हुआ। उन्होंने कहा कि, "पिछले और अगले कष्ट एक ओर तथा मीर के निधन का शोक एक ओर अपितु यह उनसे बढ़कर है।"

५-६ दिन उपरान्त यादगार नासिर मीर्ज़ा ने नदी पार करके सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस बीच में उन्होंने शेख मीरक को, जो ठट्टा के हाकिम के पास से आया था, विदा कर दिया और मीर्ज़ा शाह हुसेन को फरमान लिखा कि, "यदि सच्चाई से एवं निष्ठा-पूर्वक वह सेवा में उपस्थित होकर उचित सेवायें सम्पन्न करे तो जो कुछ उसने लिखा है, मैं स्वीकार कर लूँगा।" क्योंकि मीर्ज़ा शाह हुसेन टालना एवं समय गुज़ारना चाहता था, अतः उसकी वार्ता के ललाट से सत्य की झलक दिखाई न पड़ी। हजरत जन्नत आशियानी बक्कर की विलायत को, जिसमें समृद्धि एवं अनाज की अधिकता के कारण अत्यधिक महसूल प्राप्त होने वाला था, यादगार नासिर मीर्ज़ा को प्रदान करके स्वयं ठट्टा की ओर रवाना हुये। सहसवान के किले के समीप मुनइम खा का भाई फज़ील बेग, शाहम खा का बड़ा भाई तरस बेग एवं कुछ अन्य लोग, जो कुल मिलाकर २० व्यक्ति थे, नौका पर सवार होकर चढ़े जा रहे थे कि कुछ लोगों ने क़िले से निकल कर उन पर आक्रमण कर दिया। विजयी सेना के वीर नौका से निकले और उन्होंने शत्रु पर आक्रमण कर दिया। शत्रु भाग खड़े हुये और किले में प्रविष्ट हो गये। पादशाही आदमियों में से भी कुछ लोग किले के भीतर प्रविष्ट हो गये। उनकी पीठ पर सहायता हेतु लोग न थे, अतः वे लूट मार करके शाही शिविर में लौट आये। हजरत जन्नत आशियानी ने सहसवान के किले का अवरोध कर लिया। ठट्टा के हाकिम ने शिविर के चारों ओर आदमी नियुक्त करके अनाज एवं खाद्य सामग्री का पहुँचना रोक दिया। वे अनाज सम्मानित शिविर में न पहुँचने देते थे। जब अवरोध में बहुत समय लग गया तो अनाज की कमी एवं खाद्य सामग्री की मँहगाई के कारण लोगों के दृढ़ता के पाँव अपने स्थान से हिल गये।

(४६) अधिकांश लोग भाग खडे हुये यहाँ तक कि प्रतिष्ठित लोगो में मीर ताहिर सद्र, ख्वाजा गयासुद्दीन जामी एवं मौलाना अब्दुल बाकी, कृतघ्नता के मार्ग पर अग्रसर होकर मीर्जा शाह हुसेन के पास चले गये। मीर बरका, मीर्जा हसन, जफर अली वल्द शरफ अली बेग एवं ख्वाजा मुहिब्ब अली बदख्शी, यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास चले गये। सम्मानित कानो तक यह बात भी पहुची कि मुनइम खा, फजील बेग एवं कुछ अन्य लोग अपनी कुशलता के हेतु पृथक् हो जाना चाहते हैं। हज़रत जन्नत आशियानी ने सावधानी की दृष्टि से मुनइम खा को, जो उन लोगों का सरदार था, बन्दी बना दिया।

यादगार नासिर मीर्ज़ा का सक्षिप्त हाल इस प्रकार है। जब हज़रत जन्नत आशियानी उसे बक्कर एवं लुहरी में छोडे गये तो किले वाला ने मीर्ज़ा पर दो बार अचानक आक्रमण किये। मीर्ज़ा की ओर से अत्यधिक पौरुष का प्रदर्शन किया गया। मुहम्मद अली काबुली एवं शेर दिल दोनों वीरतापूर्वक युद्ध करते हुए शहीद हुये। तीसरी बार बक्कर के आदमियो ने नौकाओ से निकल कर रण-क्षेत्र में युद्ध की पक्तियाँ सुव्यवस्थित की। इस बार ठट्टा वालो में से लगभग ३०० व्यक्ति मार डाले गये। जब मीर्ज़ा शाह हुसेन ने देखा कि वह शक्ति द्वारा सफलता नही प्राप्त कर सकता तो उसने धूर्तता से काम लेना निश्चय किया। उसने अपने मुहरदार बाबर कुली को मीर्ज़ा के पास भेज कर सन्देश प्रेषित किया कि, 'मैं वृद्ध हो गया हूँ। मेरे कोई पुत्र नही जिसे मैं अपना उत्तराधिकारी बना सकूँ। मैं अपनी पुत्री का विवाह तुझसे कर देना चाहता हूँ और यह राज्य एवं इसका खजाना तुझे प्रदान कर दूँगा। अब मेरी अवस्था का अन्त है। मैं तेरे साथ मिलकर गुजरात पर आक्रमण करूँगा और हम मिलकर उस राज्य को भी अपने अधिकार में कर लेंगे।" (यादगार नासिर) मीर्ज़ा अपने सरल स्वभाव के कारण इन झूठी बातो से चकमे में आ गया और ऐसे अवसर पर अपने बडे भाई एवं आश्रयदाता के प्रति कृतघ्नता प्रकट की।

सक्षेप में, जब शाही शिविर में खाद्य सामग्री का अत्यधिक अभाव हो गया तो हज़रत जन्नत आशियानी ने यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास आदमी भेजे कि वह ठट्टा के हाकिम की सेना के, जो मार्ग रोके हुये है, विरुद्ध पहुँच जाय ताकि बादशाही आदमी इस कठिनाई से निकल सकें। यद्यपि मीर्ज़ा का हृदय दोरगी एवं विश्वासघात द्वारा मलिन था, किन्तु ऊपर से दिखाने के लिये अथवा इस विषय में मसलहत की दृष्टि से उस ओर पेशखाना[1] ले गया। किन्तु उसी विचार से टाल मटोल एवं देर करने लगा। हज़रत जन्नत आशियानी ने शेख अब्दुल गफूर नामक एक व्यक्ति को, जो तुर्किस्तान के मशायख की सन्तान स था, और हज़रत जन्नत आशियानी का मीर माल था, मीर्ज़ा के पास इस आशय से भेजा कि वह प्रयत्न करके मीर्ज़ा को शीघ्र ले आय। उस अभागे न जाकर उद्देश्य के विरुद्ध, मीर्ज़ा के मिथ्या-पूर्ण विचारो एवं उसकी आन्तरिक दुष्टता को और भी अधिक उत्तेजित कर दिया। उसने मीर्ज़ा से इतनी अनुचित बातें कही कि वाह्य रूप से जो व्यवहार वह कर रहा था, उसमें भी विघ्न पड गया। उसने पेशखाने को वापस मँगवा लिया और व्यर्थ के बहाने बना दिये। हज़रत जन्नत आशियानी ने अपने सत्य को पहचानने वाले हृदय द्वारा समझ लिया कि समय उसी प्रकार प्रतिकूल है। कोई काम नहीं बन पाता। किले के समीप ठहरना उचित न देख कर १७ ज़ीकाद

१ खेमे, डेरे जो सेना के मुख्य शिविर के आगे आगे भेजे जाते हैं।

(४ मार्च १५४२ ई०) को लुहरी एव बक्कर की ओर लौट गये। इस बीच मे यादगार नासिर मीर्ज़ा ने यह दुष्टता प्रदर्शित की कि उसने गन्दुम एव हाला नामक व्यक्तियों को, जो बडे निष्ठावान् जमीदार थे और जो नौकाओ का प्रबन्ध कराने इत्यादि के सम्बन्ध में उचित सेवायें सम्पन्न किया करते थे, बन्दी बना कर ठट्टा के हाकिम के पास भेज दिया। उसने उन लोगो की हत्या करा दी। यद्यपि (यादगार नासिर) मीर्ज़ा इतने अधिक अनुचित कार्य करता रहता था किन्तु हज़रत जन्नत आशियानी सर्वदा उसके प्रति इस आशय से उत्तम व्यवहार किया करते थे कि सम्भवत लज्जित होकर वह उसका उपचार कर सके। जब उत्कृष्ट सेना लुहरी के क्षेत्र मे पहुँची तो यादगार नासिर मीर्ज़ा शर्म का परदा उठा कर अपनी सेना सहित युद्ध हेतु निकला। हाशिम बेग, जो मीर्ज़ा के उत्तम विश्वासपात्रो में था, इस कुकर्म की सूचना पाकर मीर्ज़ा के पास पहुँच गया और मीर्ज़ा के घोडे की लगाम पकड कर उसे नाना प्रकार से डाँट फटकार करके और गम्भीर बातें कहकर लौटा लाया और लुहरी बन्दरगाह ले गया। उस समय कासिम हुसेन सुल्तान एव कुछ अन्य लोग निष्ठा के विरुद्ध कार्य करते हुये, यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास चले गये। क्योकि भाग्य में यही लिखा था कि कुछ समय तक उनके उद्देश्य की पूर्ति का मुख छिपा रहे, वे इस प्रदेश में कोई सफलता न प्राप्त कर सके। यद्यपि उनके भाई एव सम्बन्धी युग द्वारा मार खाते रहते थे, किन्तु वे सचेत न होते थे और विश्वासघात एव दुर्भावनाओ को न त्यागते थे। उनके कुछ दासो ने, जिनके पास सेवा एव सहायता करने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न था, निवेदन किया कि, "क्योंकि राय मालदेव के पास से सवदा निष्ठा एव सेवा प्रदर्शित करने से सम्बन्धित पत्र आया करते हैं, अत उचित यही है कि उसकी ओर प्रस्थान करके कुछ समय उसके राज्य के क्षेत्र में व्यतीत किया जाय। सम्भवत उसे उत्तम सेवा का सौभाग्य प्राप्त हो सके (४७) और भाग्यशाली रिकाब में रहकर उचित सेवायें सम्पन्न कर सके। शनै शनै निष्ठावानो की हार्दिक इच्छा की पूर्ति का कोई न कोई उपाय हो जायगा।" इस कारण उन्होंने अपने सकल्प की लगाम उस ओर मोडी और कृपा युक्त फरमान इबराहीम ईशक आगा के हाथ इस आशय से यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास भेजा कि सम्भवत वह अपनी दुष्टता त्याग कर साथ देने का सौभाग्य प्राप्त कर सके। उस पत्र में यह शेर लिखा

शेर

'हे चन्द्रमा सरीखे कपोलो वाले, अन्य लोगो का नेत्र एव दीप,
मैं जल रहा हू। तू दूसरो के घाव का कब तक मलहम बना रहेगा।'

उपर्युक्त उपदेश के बावजूद वह निष्ठुर कृतघ्नता प्रदर्शित करता रहा और मीर्ज़ा शाह हुसेन के चक्कर में आकर झूठे लोभ में फँस गया तथा लुहरी में ही ठहर गया और उनकी सेवा से वचित रह गया।

मालदेव के राज्य की ओर प्रस्थान एव वापसी

वे विवश होकर २१ मुहर्रम ९४९ हि० (१७ मई १५४२ ई०) को उच्च की ओर रवाना हो गये और वहाँ से राय मालदेव की विलायत की ओर सकल्प की लगाम मोडी। जब भाग्यशाली लश्कर बीकानेर के क्षेत्र में पहुँचा तो दूरदर्शी निष्ठावानो ने निवेदन किया कि, 'यद्यपि मालदेव निष्ठा एव सेवा का भाव प्रदर्शित किया करता है किन्तु सावधानी एव सतर्कता को न त्यागना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि वह विश्वासघात कर दे। इस कारण उन्होंने मीर समन्दर को

(४६) अधिकांश लोग भाग खड़े हुये यहाँ तक कि प्रतिष्ठित लोगो में मीर ताहिर सद्र, ख्वाजा ग़यासुद्दीन जामी एव मौलाना अब्दुल वाकी, कृतघ्नता के मार्ग पर अग्रसर होकर मीर्ज़ा शाह हुसेन के पास चले गये। मीर बरका, मीर्ज़ा हसन, ज़फर अली वल्द शरफ अली बेग एव ख्वाजा मुहिब्ब अली बदख्शी, यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास चले गये। सम्मानित कानो तक यह बात भी पहुची कि मुनइम खा, फज़ील बेग एव कुछ अन्य लोग अपनी कुशलता के हेतु पृथक् हो जाना चाहते है। हज़रत जन्नत आशियानी ने सावधानी की दृष्टि से मुनइम खा को, जो उन लोगों का सरदार था, बन्दी बना दिया।

यादगार नासिर मीर्ज़ा का सक्षिप्त हाल इस प्रकार है। जब हज़रत जन्नत आशियानी उसे बक्कर एव लुहरी में छोड़े गये तो किले वालो ने मीर्ज़ा पर दो बार अचानक आक्रमण किये। मीर्ज़ा की ओर से अत्यधिक पौरुष का प्रदर्शन किया गया। मुहम्मद अली काबूची एव शेर दिल दोनो वीरतापूर्वक युद्ध करते हुए शहीद हुये। तीसरी बार बक्कर के आदमियो ने नौकाओ से निकल कर रण-क्षेत्र में युद्ध की पक्तियाँ सुव्यवस्थित की। इस बार ठट्टा वालो मे से लगभग ३०० व्यक्ति मार डाले गये। जब मीर्ज़ा शाह हुसेन ने देखा कि वह शक्ति द्वारा सफलता नही प्राप्त कर सकता, तो उसने धूर्तता से काम लेना निश्चय किया। उसने अपने मुहरदार बाबर कुली को मीर्ज़ा के पास भेज कर सन्देश प्रेषित किया कि, 'मै वृद्ध हो गया हूँ। मेरे कोई पुत्र नही जिसे मैं अपना उत्तराधिकारी बना सकूँ। मैं अपनी पुत्री का विवाह तुझसे कर देना चाहता हूँ और यह राज्य एव इसका ख़ज़ाना तुझे प्रदान कर दूँगा। अब मेरी अवस्था का अन्त है। मैं तेरे साथ मिलकर गुजरात पर आक्रमण करूँगा और हम मिलकर उस राज्य को भी अपने अधिकार मे कर लेंगे।" (यादगार नासिर) मीर्ज़ा अपने सरल स्वभाव के कारण इन झूठी बातो से चकमे में आ गया और ऐसे अवसर पर अपने बड़े भाई एव आश्रयदाता के प्रति कृतघ्नता प्रकट की।

सक्षेप में, जब शाही शिविर में खाद्य सामग्री का अत्यधिक अभाव हो गया तो हज़रत जन्नत आशियानी ने यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास आदमी भेजे कि वह ठट्टा के हाकिम की सेना के, जो मार्ग रोके हुये है, विरुद्ध पहुँच जाय ताकि बादशाही आदमी इस कठिनाई से निकल सकें। यद्यपि मीर्ज़ा का हृदय दोरगी एव विश्वासघात द्वारा मलिन था, किन्तु ऊपर से दिखाने के लिये अथवा इस विषय में मसलहत की दृष्टि से उस ओर पेशख़ाना[1] ले गया। किन्तु उसी विचार से टाल मटोल एव देर करने लगा। हज़रत जन्नत आशियानी ने शेख अब्दुल गफूर नामक एक व्यक्ति को, जो तुर्किस्तान के मशायख की सन्तान से था, और हज़रत जन्नत आशियानी का मीर माल था, मीर्ज़ा के पास इस आशय से भेजा कि वह प्रयत्न करके मीर्ज़ा को शीघ्र ले आये। उस अभागे ने जाकर उद्देश्य के विरुद्ध, मीर्ज़ा के मिथ्या-पूर्ण विचारो एव उसकी आन्तरिक दुष्टता को और भी अधिक उत्तेजित कर दिया। उसने मीर्ज़ा से इतनी अनुचित बातें कही कि बाह्य रूप से जो व्यवहार वह कर रहा था, उसमें भी विघ्न पड गया। उसने पेशख़ाने को वापस मँगवा लिया और व्यर्थ के बहाने बना दिये। हज़रत जन्नत आशियानी ने अपने सत्य को पहचानने वाले हृदय द्वारा समझ लिया कि समय उसी प्रकार प्रतिकूल है। कोई काम नही बन पाता। किले के समीप ठहरना उचित न देख कर १७ ज़ीक़ाद

१ ख़ेमे, डेरे जो सेना के मुख्य शिविर के आगे आगे भेजे जाते हैं।

(४ मार्च १५४२ ई०) को लुहरी एव बक्कर की ओर लौट गये। इस बीच मे यादगार नासिर मीर्ज़ा ने यह दुप्टता प्रदर्शित की कि उसने गन्दुम एव हाला नामक व्यक्तियों को, जो बडे निष्ठावान् ज़मीदार थे और जो नौकाओ का प्रबन्ध कराने इत्यादि के सम्बन्ध मे उचित सेवायें सम्पन्न किया करते थे, बन्दी बना कर ठट्टा के हाकिम के पास भेज दिया। उसने उन लोगो की हत्या करा दी। यद्यपि (यादगार नासिर) मीर्ज़ा इतने अधिक अनुचित कार्य करता रहता था किन्तु हज़रत जन्नत आशियानी सर्वदा उसके प्रति इस आशय से उत्तम व्यवहार किया करते थे कि सम्भवत लज्जित होकर वह उसका उपचार कर सके। जब उत्कृष्ट सेना लुहरी के क्षेत्र मे पहुँची तो यादगार नासिर मीर्ज़ा शर्म का परदा उठा कर अपनी सेना सहित युद्ध हेतु निकला। हाशिम बेग, जो मीर्ज़ा के उत्तम विश्वासपात्रों में था, इस कुकर्म की सूचना पाकर मीर्ज़ा के पास पहुँच गया और मीर्ज़ा के घोडे की लगाम पकड कर उसे नाना प्रकार से डाँट फटकार करके और गम्भीर बातें कहकर लौटा लाया और लुहरी बन्दरगाह ले गया। उस समय कासिम हुसेन सुल्तान एव कुछ अन्य लोग निष्ठा के विरुद्ध कार्य करते हुये, यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास चले गये। क्योकि भाग्य में यही लिखा था कि कुछ समय तक उनके उद्देश्य की पूर्ति का मुख छिपा रहे, वे इस प्रदेश में कोई सफलता न प्राप्त कर सके। यद्यपि उनके भाई एव सम्बन्धी युग द्वारा मार खाते रहते थे, किन्तु वे सचेत न होते थे और विश्वासघात एव दुर्भावनाओं को न त्यागते थे। उनके कुछ दासो ने, जिनके पास सेवा एव सहायता करने के अतिरिक्त कोई अन्य कार्य न था, निवेदन किया कि, "क्योंकि राय मालदेव के पास से सर्वदा निष्ठा एव सेवा प्रदर्शित करने से सम्बन्धित पत्र आया करते हैं, अत उचित यही है कि उसकी ओर प्रस्थान करके कुछ समय उसके राज्य के क्षेत्र में व्यतीत किया जाय। सम्भवत उसे उत्तम सेवा का सौभाग्य प्राप्त हो सके (४७) और भाग्यशाली रिकाब में रहकर उचित सेवायें सम्पन्न कर सके। शनै शनै निष्ठावानो की हार्दिक इच्छा की पूर्ति का कोई न कोई उपाय हो जायगा।" इस कारण उन्होंने अपने सकल्प की लगाम उस ओर मोडी और कृपा युक्त फरमान इबराहीम ईशक आगा के हाथ इस आशय से यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास भेजा कि सम्भवत वह अपनी दुप्टता त्याग कर साथ देने का सौभाग्य प्राप्त कर सके। उस पत्र में यह शेर लिखा

शेर

'हे चन्द्रमा सरीखे कपोलों वाले, अन्य लोगो का नेत्र एव दीप,
मैं जल रहा हू। तू दूसरो के घाव का कब तक मलहम बना रहेगा।'

उपर्युक्त उपदेश के बावजूद वह निष्ठुर कृतघ्नता प्रदर्शित करता रहा और मीर्ज़ा शाह हुसेन के चक्र मे में आकर झूठे लोभ में फँस गया तथा लुहरी में ही ठहर गया और उनकी सेवा से वचित रह गया।

मालदेव के राज्य की ओर प्रस्थान एव वापसी

वे विवश होकर २१ मुहर्रम ९४९ हि० (१७ मई १५४२ ई०) को उच्च की ओर रवाना हो गये और वहाँ से राय मालदेव की विलायत की ओर सकल्प की लगाम मोडी। जब भाग्यशाली लश्कर बीकानेर के क्षेत्र में पहुँचा तो दूरदर्शी निष्ठावानों ने निवेदन किया कि, "यद्यपि मालदेव निष्ठा एव सेवा का भाव प्रदर्शित किया करता है किन्तु सावधानी एव सतर्कता को न त्यागना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि वह विश्वासघात कर दे।" इस कारण उन्होने मीर समन्दर को

मालदेव के पास इस आशय से भेजा कि वह उसके हृदय की बात का पता लगा कर लौट आये। उसने वापस आकर निवेदन किया कि "यद्यपि वह निष्ठा एवं स्वामीभक्ति का दावा करता है किन्तु उसकी बातों में कोई तथ्य नहीं।" इसी बीच में मालदेव का एक विश्वासपात्र सवाई नागौरी व्यापारी के रूप में सम्मानित शिविर में पहुँचा और बहुमूल्य हीरे को जो सुल्तान इब्राहीम पर विजय के उपरान्त उन्होंने प्राप्त किया था, क्रय करने का प्रयत्न किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने कहा कि "इस व्यापारी को समझा दो कि इस प्रकार के बहुमूल्य जवाहर कहीं क्रय द्वारा प्राप्त होते हैं। या तो वे तलवार द्वारा मिल सकते हैं और या उच्च साहस वाले बादशाहों की कृपा द्वारा प्राप्त हो सकते हैं।" उस धूर्त के व्यवहार से वे और भी सतर्क हो गये और समन्दर की सूझ-बूझ की प्रशंसा की। उन्होंने सावधानी की दृष्टि से रायमल सूनी को मालदेव के पास भेजा ताकि वह अपनी बुद्धि से जो कुछ समझे वह निवेदन करे। यदि लिखना उचित न हो तो संकेत द्वारा सूचना कर दे। मालदेव की निष्ठा का सूचक संकेत यह निश्चित हुआ कि उसका दूत अपनी पाँचों अंगुलियों को एक साथ पकड़ ले और शत्रुता एवं षड्यन्त्र को इंगित करने के लिये वह केवल अपनी कनिष्ठिका को पकड़े। उत्कृष्ट सेना फलौदी नामक कस्बे से, जो मालदेव के निवास-स्थान जोधपुर से ३० कुरोह पर है, दो तीन मंज़िल आगे बढ़ कर कूले जोगी पर पड़ाव डाले थी, कि रायमल सूनी के दूत ने वहाँ पहुँच कर अपनी कनिष्ठिका पकड़ी। इस संकेत से निश्चय रूप से ज्ञात हो गया कि उस अभागे का क्या उद्देश्य है। उसने एक सेना को उनके स्वागत हेतु नियुक्त कर दिया है और उसके मस्तिष्क में बड़े ही कुत्सित विचार हैं। विवश होकर उन्होंने अपने संकल्प की लगाम फलौदी की ओर मोड़ी।

संक्षेप में, उन असफलताओं के दिनों में निष्ठावान् लोग जो विचार करते उसका परिणाम उलटा ही होता था। जब राय मालदेव की दुर्भावनाओं एवं उसके षड्यन्त्र का उन्हें विश्वास हो गया तो तरदी बेग खाँ, मुनइम खाँ एवं कुछ अन्य सेवकों को आदेश दिया कि आगे जाकर उन दुष्टों को रोकें और यदि अपने में शक्ति पायें तो उनपर आक्रमण भी करें। हज़रत जन्नत आशियानी अपने कुछ सच्चे प्राण-उत्सर्ग करने वालों एवं अन्तःपुर की बेगमों सहित चल पड़े। विजयी सैनिकों में शेख़ अली बेग जलायर, तरसून बेग वल्द बाबा जलायर, फ़ज़ील बेग एवं कुछ अन्य लोग थे जो कुल मिलाकर २० होते थे। कुछ दास, शागिर्द पेशा एवं अहले सआदत[1] के समूह में से मुल्ला ताजुद्दीन एवं मौलाना चाँद ज्योतिषी विजयी रिकाब के साथ थे। जब उत्कृष्ट सेना फलौदी से प्रस्थान करके सातलमेर पहुँची, तो मालदेव के आदमियों की एक सेना प्रकट हुई। जो अमीर इन नीच लोगों को रोकने के लिये नियुक्त हुये थे, वे मार्ग भूल कर अन्य दिशा को निकल गये। हज़रत जन्नत आशियानी ने अपने (४८) दृढ़ता के पाँव जमा कर तथा ईश्वर की सहायता पर भरोसा करके, स्त्रियों की सेविकाओं के घोड़े लेकर, उनके घोड़े युद्ध करने वालों को दे दिये। उन्होंने सेना के तीन दस्ते बनाये। शेख़ अली बेग ने तीन-चार अन्य व्यक्तियों द्वारा अपने भाइयों के आगे बढ़ कर शत्रु की सेना पर, जो एक सकरे मार्ग में प्रविष्ट हो गयी थी, आक्रमण किया। उनपर आक्रमण करते ही उन्हें पराजित कर

१ विद्वान् लोग अहले सआदत में सम्मिलित होते थे। [ख्वान्दमीर : क़ानूने हुमायूनी (कलकत्ता १९४० ई०) पृ० ३५; रिज़वी : मुग़ल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १, पृ० ३८८]।

दिया। शत्रुओं में से कुछ लोग मारे गये। ईश्वर की कृपा से विजय प्राप्त हो गई। हजरत जन्नत आशियानी ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करके जैसलमीर के क्षेत्र की ओर रवाना हुये। इस पडाव पर जो अमीर मार्ग भूल गये थे, उन्होंने भी सेवा का सम्मान प्राप्त किया। जैसलमीर का राय, जिसका नाम लौन करण था, अपने दुर्भाग्य के कारण युद्ध एव शत्रुता हेतु तैयार हो गया। उसने जलाशय पर इस आशय से पहरा बैठा दिया कि जब उत्कृष्ट लश्कर के पशु रेगिस्तान के कष्ट सहते हुये प्यासे वहाँ पहुँचें तो जल के अभाव के कारण नष्ट हो जाय। प्राण न्योछावर करने वाले वीरों ने पौरुष प्रदर्शित करते हुए उन अभागों को तलवार द्वारा जलाशय से भगा दिया। वहाँ से वे अमरकोट के किले की ओर रवाना हुये।

हुमायूं का अमरकोट पहुँचना

जमादी-उल-अव्वल मास (९४९ हि०/अगस्त-सितम्बर १५४२ ई०) में खाद्य सामग्री के अभाव एव जल के अप्राप्य होने से कष्ट भोगते हुये उस दृढ किले में पहुँचे जो ऐश्वर्य के सूर्य का आकाश एव प्रताप के नक्षत्र के उदय होने का स्थान था। किले के हाकिम ने, जिसका नाम राणा प्रशाद था, उत्कृष्ट सेना की धूल को अपने सम्मान के सिर का आभूषण समझ कर, उत्तम सेवायें सम्पन्न की। क्योंकि हजरत जन्नत आशियानी आगे प्रस्थान करना चाहते थे एव खाकाने अकबर तथा न्यायी साहिब क़िरान[1] के जन्म का समय निकट आ गया था, और भाग्यशाली हौदज के ले जाने में कठिनाई थी अत उन्होंने स्वय प्रस्थान करके मरियम मकानी को कुछ प्राचीन निष्ठावानों के साथ उस भाग्यशाली किले मे ईश्वर के सुपुर्द कर दिया। रविवार ५ रजब ९४९ हि० (१५ अक्तूबर १५४२ ई०) को अकबर का जन्म हुआ। हजरत जन्नत आशियानी दूसरी बार मालदेव के राज्य की ओर इस आशय से आकृष्ट हुये कि सम्भवत वह इस बार पिछले अपराधों की क्षति की पूर्ति कर दे। उस पिशाच सरीखे व्यक्ति ने इस बार भी निष्ठा-पूर्वक व्यवहार न किया। विवश होकर हजरत जन्नत आशियानी अपने हितैषियों की प्रार्थना पर सिन्ध प्रदेश की ओर अग्रसर हुये।

हुमायू का सिन्ध की ओर प्रस्थान

जब उत्कृष्ट लश्कर उस क्षेत्र में पहुँचा तो ज्ञात हुआ कि अरगूनों ने जून नामक कस्बे में सेना एकत्र कर रखी है और युद्ध करना चाहते है। हजरत जन्नत आशियानी ने शेख अली बेग जलायर को कुछ प्राण न्योछावर करने वाले वीरो के साथ आगे भेजा और स्वय उनके पीछे रवाना हुये। शेख अली बेग ने थोडे से आदमियो की सहायता से वीरतापूर्वक युद्ध किया और उन कृतघ्नों की सेना को छिन्न भिन्न कर दिया। जून नामक कस्बे में सम्मानित हौदज[2] अमरकोट के किले से पहुँच गया और हजरत जन्नत आशियानी के नेत्रों को ईश्वर द्वारा पोषित उस नूर के दर्शन से प्रकाश प्राप्त हो गया। क्योंकि यह कस्बा सिन्ध नदी के तट पर स्थित है और ताजगी, सौन्दर्य, वृक्षों, नहरो, मेवों एव फलों के कारण अन्य कस्बों से श्रेष्ठ है अत वे कुछ दिन तक वहाँ ठहरे रहे किन्तु जितने समय तक वे वहाँ ठहरे रहे, सर्वदा अरगूनो से युद्ध होता रहा। निष्ठावानों की कमी एव शत्रुओ की अधिकता

१ शुभद नक्षत्रों का स्वामी। तीमूर की उपाधि साहब किरान थी।
२ उम्मीद वालों की सवारी।

मालदेव के पास इस आशय से भेजा कि वह उसके हृदय की बात का पता लगा कर लौट आये। उसने वापस आकर निवेदन किया कि "यद्यपि वह निष्ठा एवं स्वामीभक्ति का दावा करता है किन्तु उसकी बातों में कोई तथ्य नहीं।" इसी बीच में मालदेव का एक विश्वासपात्र सकाई नागौरी व्यापारी के रूप में सम्मानित शिविर में पहुँचा और बहुमूल्य हीरे को जो सुल्तान इब्राहीम पर विजय के उपरान्त उन्होंने प्राप्त किया था, क्रय करने का प्रयत्न किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने कहा कि "इस व्यापारी को समझा दो कि इस प्रकार के बहुमूल्य जवाहर कहीं क्रय द्वारा प्राप्त होते हैं। या तो वे तलवार द्वारा मिल सकते हैं और या उच्च साहस वाले बादशाहों की कृपा द्वारा प्राप्त हो सकते हैं।" उस धूर्त के व्यवहार से वे और भी सतर्क हो गये और समन्दर की सूझ-बूझ की प्रशंसा की। उन्होंने सावधानी की दृष्टि से रायमल सूनी को मालदेव के पास भेजा ताकि वह अपनी बुद्धि से जो कुछ समझे, वह निवेदन करे। यदि लिखना उचित न हो तो संकेत द्वारा सूचना कर दे। मालदेव की निष्ठा का सूचक संकेत यह निश्चित हुआ कि उसका दूत अपनी पाँचों अंगुलियों को एक साथ पकड़ ले और शत्रुता एवं षड्यन्त्र को इंगित करने के लिये वह केवल अपनी कनिष्टिका को पकड़े। उत्कृष्ट सेना फलौदी नामक कस्बे से, जो मालदेव के निवास-स्थान जोधपुर से ३० कुरोह पर है, दो तीन मंजिल आगे बढ़ कर कूले जोगी पर पड़ाव डाले थी, कि रायमल सूनी के दूत ने वहाँ पहुँच कर अपनी कनिष्टिका पकड़ी। इस संकेत से निश्चय रूप से ज्ञात हो गया कि उस अभागे का क्या उद्देश्य है। उसने एक सेना को उनके स्वागत हेतु नियुक्त कर दिया है और उसके मस्तिष्क में बड़े ही कुत्सित विचार हैं। विवश होकर उन्होंने अपने संकल्प की लगाम फलौदी की ओर मोड़ी।

संक्षेप में, उन असफलताओं के दिनों में निष्ठावान् लोग जो विचार करते उसका परिणाम उलटा ही होता था। जब राय मालदेव की दुर्भावनाओं एवं उसके षड्यन्त्र का उन्हें विश्वास हो गया तो तरदी बेग खाँ, मुनइम खाँ एवं कुछ अन्य सेवकों को आदेश दिया कि आगे जाकर उन दुष्टों को रोकें और यदि अपने में शक्ति पायें तो उनपर आक्रमण भी करें। हज़रत जन्नत आशियानी अपने कुछ सच्चे प्राण-उत्सर्ग करने वालों एवं अन्तःपुर की बेगमों सहित चल पड़े। विजयी सैनिकों में शेख अली बेग जलायर, तरसून बेग वल्द बाबा जलायर, फ़ज़ील बेग एवं कुछ अन्य लोग थे जो कुल मिलाकर २० होते थे। कुछ दास, शागिर्द पेशा एवं अहले सआदत[1] के समूह में से मुल्ला ताजुद्दीन एवं मौलाना चाँद ज्योतिषी विजयी रिकाब के साथ थे। जब उत्कृष्ट सेना फलौदी से प्रस्थान करके सातलमीर पहुँची, तो मालदेव के आदमियों की एक सेना प्रकट हुई। जो अमीर इन नीच लोगों को रोकने के लिये नियुक्त हुये थे, वे मार्ग भूल कर अन्य दिशा को निकल गये। हज़रत जन्नत आशियानी ने अपने (४८) दृढ़ता के पाँव जमा कर तथा ईश्वर की सहायता पर भरोसा करके, स्त्रियों की सेविकाओं के घोड़े लेकर, उनके घोड़े युद्ध करने वालों को दे दिये। उन्होंने सेना के तीन दस्ते बनाये। शेख अली बेग ने तीन-चार अन्य व्यक्तियों द्वारा अपने भाइयों के आगे बढ़ कर शत्रु की सेना पर, जो एक सकरे मार्ग में प्रविष्ट हो गयी थी, आक्रमण किया। उनपर आक्रमण करते ही उन्हें पराजित कर

१ विद्वान् लोग अहले सआदत में सम्मिलित होते थे। [ख्वान्दमीर: क़ानूने हुमायूनी (कलकत्ता १९४० ई०) पृ० ३५; रिज़वी: मुग़ल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १, पृ० ३८८]।

दिया। शत्रुओं में से कुछ लोग मारे गये। ईश्वर की कृपा से विजय प्राप्त हो गई। हजरत जन्नत आशियानी ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करके जैसलमीर के क्षेत्र की ओर रवाना हुये। इस पड़ाव पर जो अमीर मार्ग भूल गये थे, उन्होंने भी सेवा का सम्मान प्राप्त किया। जैसलमीर का राय, जिसका नाम लोन करण था, अपने दुर्भाग्य के कारण युद्ध एवं शत्रुता हेतु तैयार हो गया। उसने जलाशय पर इस आशय से पहरा बैठा दिया कि जब उत्कृष्ट लश्कर के पशु रेगिस्तान के कष्ट सहते हुये प्यासे वहाँ पहुँचें तो जल के अभाव के कारण नष्ट हो जाय। प्राण न्योछावर करने वाले वीरों ने पौरुष प्रदर्शित करते हुए उन अभागों को तलवार द्वारा जलाशय से भगा दिया। वहाँ से वे अमरकोट के किले की ओर रवाना हुये।

हुमायूं का अमरकोट पहुँचना

जमादी-उल-अव्वल मास (९४९ हि०/अगस्त सितम्बर १५४२ ई०) में खाद्य सामग्री के अभाव एवं जल के अप्राप्य होने के कष्ट भोगते हुये उस दृढ़ किले में पहुँचे जो ऐश्वर्य के सूर्य का आकाश एवं प्रताप के नक्षत्र के उदय होने का स्थान था। किले के हाकिम ने, जिसका नाम राणा प्रशाद था, उत्कृष्ट सेना की धूल को अपने सम्मान के सिर का आभूषण समझ कर, उत्तम सेवायें सम्पन्न की। क्योंकि हज़रत जन्नत आशियानी आगे प्रस्थान करना चाहते थे एवं खाकाने अकबर तथा न्यायी साहिब किरान[1] के जन्म का समय निकट आ गया था, और भाग्यशाली हौदज के ले जाने में कठिनाई थी अतः उन्होंने स्वयं प्रस्थान करके मरियम मकानी को कुछ प्राचीन निष्ठावानों के साथ उस भाग्यशाली किले में ईश्वर के सुपुर्द कर दिया। रविवार ५ रजब ९४९ हि० (१५ अक्तूबर १५४२ ई०) को अकबर का जन्म हुआ। हजरत जन्नत आशियानी दूसरी बार मालदेव के राज्य की ओर इस आशय से आकृष्ट हुये कि सम्भवतः वह इस बार पिछले अपराधों की क्षति की पूर्ति कर दे। उस पिशाच सरीखे व्यक्ति ने इस बार भी निष्ठा-पूर्वक व्यवहार न किया। विवश होकर हज़रत जन्नत आशियानी अपने हितैषियों की प्रार्थना पर सिन्ध प्रदेश की ओर अग्रसर हुये।

हुमायूं का सिन्ध की ओर प्रस्थान

जब उत्कृष्ट लश्कर उस क्षेत्र में पहुँचा तो ज्ञात हुआ कि अरगूना ने जून नामक कस्बे में सेना एकत्र कर रक्खी है और युद्ध करना चाहते हैं। हज़रत जन्नत आशियानी ने शेख अली बेग जलायर को कुछ प्राण न्योछावर करने वाले वीरों के साथ आगे भेजा और स्वयं उनके पीछे रवाना हुये। शेख अली बेग ने थोड़े से आदमियों की सहायता से वीरतापूर्वक युद्ध किया और उन कृतघ्नों की सेना को छिन्न भिन्न कर दिया। जून नामक कस्बे में सम्मानित हौदज[2] अमरकोट के किले से पहुँच गया और हज़रत जन्नत आशियानी के नेत्रों को ईश्वर द्वारा पोषित उस नूर के दर्शन से प्रकाश प्राप्त हो गया। क्योंकि यह कस्बा सिन्ध नदी के तट पर स्थित है और ताजगी, सौन्दर्य, वृक्षों, नहरों, मेवा एवं फलों के कारण अन्य कस्बों से श्रेष्ठ है अतः वे कुछ दिन तक वहाँ ठहरे रहे किन्तु जितने समय तक वे वहाँ ठहरे रहे, सर्वदा अरगूनों से युद्ध होता रहा। निष्ठावानों की कमी एवं शत्रुओं की अधिकता

१ सुखद समयों का स्वामी। तैमूर की उपाधि साहब किरान थी।
२ हमीदा बानो की सवारी।

के बावजूद, प्राय वे लोग पराजित होते थे। शेख अली बेग जलायर एव शेख ताजुद्दीन लारी उन दिनों शहीद हो गये।

बैराम खां का आगमन

हज़रत जन्नत आशियानी ने इन घटनाओं के कारण अत्यधिक दुखी होकर भाग्यशाली पताकायें कन्धार के प्रस्थान हेतु बलन्द कीं। इसी बीच मे बैराम खा ने गुजरात से पहुँच कर सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस कारण हज़रत जन्नत आशियानी के सम्मानित हृदय का दुख कुछ कम हो गया। वह स्वर्ग रूपी दरबार का मुसाहिब हो गया। यह बडी विचित्र बात है कि जब वह सम्मानित शिविर के समीप पहुँचा, तो हज़रत जन्नत आशियानी के निष्ठावान् (लोग) युद्ध में सलग्न थे। बैराम खा सेवा में उपस्थित हुये बिना रण-क्षेत्र मे पहुँचा और शत्रुओं से युद्ध करने लगा। विजयी सेना आश्चर्य में पड गई कि वह कौन है और कहाँ से आ गया। जब यह पता चला कि वह (४९) बैराम खा है तो निष्ठावानो ने हर्ष-नाद लगाया। हज़रत जन्नत आशियानी प्रसन्न हो गये।

बैराम खा का सक्षिप्त हाल इस प्रकार है कि कन्नौज की शोचनीय दुर्घटना मे अपने प्राणों की बाज़ी लगा कर वह सम्भल पहुँचा और लखनोर[1] नामक कस्बे में मित्र सेन से, जो उस क्षेत्र के प्रतिष्ठित ज़मीदारो में था, सहायता की प्रार्थना की और बहुत समय तक उसकी सहायता के सहारे जीवन व्यतीत करता रहा। शेर खा को जब इस बात का पता चला तो उसने उसे बुलवाने के लिये आदमी भेजे। राजा ने विवश होकर खान को शेर खा के पास भेज दिया। सर्वप्रथम जब बैराम खा उसके दरबार में पहुँचा तो उसने उठ कर उससे भेंट की। उसके हृदय को अपनी मुट्ठी में लेने के लिये धोखे का जाल बिछाकर हृदयग्राही बाते की। वार्तालाप के समय किसी प्रसग मे कहा कि, "जिस किसी में निष्ठा है, वह भूल न करेगा।" जब शेर खा बुरहानपुर के समीप पहुँचा तो बैराम खा अवसर पाकर ग्वालियर के हाकिम अबुल कासिम के साथ भाग कर गुजरात की ओर चल खडा हुआ। मार्ग में शेर खा के राजदूत ने, जो गुजरात से आ रहा था, बैराम खा के पलायन के समाचार पाकर अबुल कासिम को, जिसका शरीर अधिक पुष्ट था, बैराम खा समझकर बन्दी बना लिया। बैराम खा ने साहस एव सहृदयता के कारण आग्रहपूर्वक कहा कि, 'बैराम खा मैं हूँ।" अबुल कासिम ने भी उदारता प्रदर्शित करते हुये कहा कि, 'यह मेरा सेवक है। वह इस बहाने से अपने आपको मेरे ऊपर से न्योछावर करना चाहता है।" सक्षेप मे, बैराम खा मुक्त होकर सुल्तान महमूद के पास गुजरात पहुँचा। अबुल कासिम को जब वह शेर खा के समक्ष उपस्थित किया गया तो हत्या करा दी गई। शेर खा अपने दरबार में बार-बार कहा करता था कि, "प्रथम दरबार में ही जब बैराम खा ने कहा कि जिसमें निष्ठा है वह भूल न करेगा तभी मैं समझ गया था कि वह मेरा साथ न देगा"। सुल्तान महमूद गुजराती ने भी बैराम खा को अपने पास रखने का बडा प्रयत्न किया, किन्तु उसने स्वीकार न किया और हिजाज

१ मूल में 'लखनऊ' किन्तु 'लखनोर' शुद्ध है। आइने अकबरी के अनुसार सम्भल सरकार में, जहाँ का क्षेत्रफल २४६४४० बीघा, राजस्व २,४११,२०८ दाम, सुयूरगाल ३२,९८३ दाम थी। यहाँ १००० अश्वारोही तथा ५००० पदाती रहते थे।

की ओर प्रस्थान करने की अनुमति लेकर सूरत के बन्दरगाह में पहुँचा। वहा से हरिद्वार[1] की विलायत मे पहुँचा। उस मार्ग से अपने आश्रयदाता की सेवा में पहुँचा।

हजरत जन्नत आशियानी का कन्धार के मार्ग से एराक को प्रस्थान

जब जन्नत आशियानी का पवित्र हृदय नाना प्रकार की दुर्घटनाओं एव रोज़-रोज़ की असफलताओं से अत्यधिक दुखी हो गया और युग के कष्टो के कारण वे बडे व्याकुल हो गये और उनकी इच्छानुसार इस क्षेत्र में सफलता न प्राप्त हुई तो उन्होने यह निश्चय किया कि वे कन्धार चले जायँ और वहाँ हज़रत शहशाह को ईश्वर की रक्षा में सौंप कर एकान्तवास एव त्याग के पथ पर अग्रसर हों तथा मक्के-मदीने की जियारत हेतु चले जायँ। जब तत्ता के हाकिम को हज़रत जन्नत आशियानी के सकल्प का पता चला तो इस बात को एक उत्तम सयोग समझकर उसने उनके पास क्षमा याचना एव लज्जा प्रकट करते हुये पत्र लिखा और उचित पेशकश सहित उनकी सेवा में भेजा। ७ रबी-उल आखिर (९५० हि०/१० जुलाई १५४३ ई०) को जून कस्बे से प्रस्थान करके सीवी के मार्ग से वे कन्धार की ओर रवाना हुये। मीर्ज़ा अस्करी हज़रत जन्नत आशियानी के प्रस्थान के समाचार पाकर मीर्ज़ा कामरान के कहने एव अपनी दुर्भावनाओं के कारण किले को दृढ बनाकर कुत्सित विचार से जब उत्कृष्ट लश्कर की ओर रवाना हुआ ताकि अपनी निष्ठुरता के सहारे उन्हे बन्दी बना ले। उत्कृष्ट सेना शाल के क्षेत्र में, जो कन्धार से तीन फरसख पर है, पहुँची तो वहाँ जलालुद्दीन बेग ने, जो मीर्ज़ा कामरान के प्रतिष्ठित अधिकारियों में स था और जिसकी उस क्षेत्र मे जागीर थी, कुछ लोगों को जबाँगीरी[2] के लिये नियुक्त किया था। उन्होने पादशाही आदमियों में से दो व्यक्तियों को, जो चश्मे पर पहिले पहुच गये थे, बन्दी बना लिया। उन दो आदमियों में से एक ने अवसर पाकर अपने आप को उनके चगुल से छुडा लिया। उसने जन्नत आशियानी की सेवा मे पहुच कर उन दुष्टो से जो कुछ सुना था और जो कुछ वह समझ सका था उसके विषय में निवेदन कर दिया। हजरत जन्नत आशियानी ने समय के औचित्य पर दृष्टि रखते हुये कन्धार की ओर प्रस्थान करने के विचार त्याग दिये और मस्तग की ओर सकल्प की लगाम मोडी। पायदा मुहम्मद बँमी के द्वारा अपने हाथ से इस आशय का पत्र लिख कर मीर्ज़ा अस्करी के पास भेजा "निष्ठुर एव निष्ठाहीन भाई को ज्ञात हो। " समय की आवश्यकतानुसार उसमें उपदेश एव शिक्षायें लिखीं किन्तु पाषाण हृदय वाला कृतघ्न मीर्ज़ा सभी को अनसुनी करके अधिक से अधिक निष्ठुरता एव अत्याचार पर तुल गया। कासिम हुसेन सुल्तान, महदी कासिम खा एव मीर्ज़ा अस्करी के सेवकों में से कुछ

१ **अकबर नामा** की कुछ पांडुलिपियों एव शुद्धि पत्र में 'मारवाड' है। सम्भवत बैराम खाँ हुमायूँ के मालदेव के पास पहुँचने के समाचार पाकर मारवाड (जोधपुर) गया होगा किंतु बेवरिज ने इस विषय पर सविस्तार प्रकाश डालते हुये लिखा है कि सम्भवत बैराम खाँ हिन्दू योगियों के साथ हरिद्वार चला गया हो। क्यों कि **मआसिरे रहीमी** में दो स्थानों पर हरिद्वार ही लिखा है अत बेवरिज का विचार है कि हरिद्वार ही शुद्ध होगा [(बेवरिज, पृ० ३८२), रिज़वी **मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १**, पृ० ११३]।

२ शत्रुओं का पता लगाना।

अन्य लोगों ने उसे उसके कुत्सित विचारों से बहुत रोका किन्तु कोई लाभ न हुआ। कुछ अभागे षड्यन्त्रकारियों के बहकाने से उस दिन की प्रात को, जो मीर्ज़ा के पतन की साथ थी, अत्याचार के (५०) मार्ग पर अग्रसर होकर मस्तग की ओर रवाना हुआ। एक दो कुरोह की यात्रा के उपरान्त उसने अपने सेवकों से पूँछा, "यह मार्ग किसने देखा है?" जी बहादुर ऊज़बेक ने कहा, 'मैं यह मार्ग भली भाँति जानता हूँ और कई बार आ जा चुका हूँ।" मीर्ज़ा अस्करी ने उसे आदेश दिया कि "आगे-आगे चल कर मार्ग दिखा।" उसने कहा कि, "मेरा घोडा बडा खराब है।" मीर्ज़ा ने तरसून बरलास को आदेश दिया कि अपना घोडा उसे दे दे। तरसून ने कुछ टाला किन्तु अन्त में विवश होकर घोडा दे दिया। जी बहादुर पहिले हिन्दुस्तान में पादशाह का दास रह चुका था। अपने सौभाग्य के पथ-प्रदर्शन से कुछ दूर तक जाकर, घोड़े को भगाता हुआ बैराम खा के खेमे में पहुँचा। वास्तविक स्थिति का स्पष्ट रूप से विवरण दिया। बैराम खा उसे लेकर हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में पहुँचा और उन कृतघ्नों के मिथ्या-पूर्ण सकल्प का उल्लेख किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने तरदी बेग खा एव कुछ अन्य लोगों के पास आदमी भेजकर कुछ घोड़े मँगवाये। उन दुष्ट कृपणों ने सहायता के सौभाग्य की ओर से उपेक्षा करते हुए, बहाना बना दिया और ऐसे अवसर पर अपने स्वामी एव आश्रयदाता को घोडा न दिया। जन्नत आशियानी स्वय सवार होकर उन्हे दड देना चाहते थे किन्तु बैराम खा ने निवेदन किया, 'अब समय नहीं। विलम्ब करना उचित नहीं। कृतघ्नों की दुष्टता को ईश्वर को सौप कर, मार्ग में बात करनी चाहिये।' हज़रत जन्नत आशियानी अपने थोड़े से निष्ठावान्, स्वामीभक्तों के साथ सवार होकर दश्त के मार्ग से चल खड़े हुये और एराक की ओर रवाना हुये। ख्वाजा मुअज्जम, नदीम कुकुल्ताश, मीर ग़ज़नवी एव अम्बर नाज़िर को आदेश हुआ कि "हज़रत ख़ाकानी ईश्वर की प्रतिरक्षा के झूले में है। उनके प्रताप के दामन पर किसी ख़तरे की धूल नहीं बैठ सकती। जिस प्रकार सम्भव हो मरियम मकानी का सम्मानित हौदज उत्कृष्ट लश्कर में पहुँचा दो। इन भाग्यशाली लोगों ने शीघ्रातिशीघ्र पहुँच कर बडी योग्यता से सेवायें सम्पन्न की। जब रात हो गई तो बैराम खा ने निवेदन किया कि, "मीर्ज़ा अस्करी के धन सम्पत्ति के लोभ एव तुच्छ ससार के प्रति प्रेम का हाल ज्ञात है। मीर्ज़ा इस समय दो तीन नवीसिन्दा को लिये हुये, पूर्ण रूप से असावधान खेमे में बैठा हुआ धन सम्पत्ति की व्यवस्था करा रहा होगा। इस समय उचित होगा कि ईश्वर पर भरोसा करके उसके ऊपर अचानक टूट पड़ें और उसके खेमे मे पहुँच कर उसका काम तमाम कर दें। मीर्ज़ा के बीच से हट जाने के बाद, सेवक लोग इस दरबार के नमक के पले होने के कारण, सेवा करने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न पायेंगे।" हज़रत जन्नत आशियानी ने बैराम खा के परामर्श की प्रशसा की और उससे कहा कि, "मैंने इस ससार में सैनिक जीवन का खूब आनन्द उठा लिया। इस समय दूसरा ही सकल्प कर लिया है। इन छोटी छोटी बातों में उलझने से हाथ से अवसर निकल जायगा। मैंने जो सकल्प कर लिया है, उसे न त्यागूँगा। ईश्वर की कृपा के सहारे सतोष की सामग्री लेकर, जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर को परमेश्वर की प्रतिरक्षा के सुपुर्द करता हूँ और कृतघ्नों को उनके कुकर्मों के हवाले करता हूँ।"

मीर्ज़ा अस्करी ने मस्तग के समीप पहुँच कर मीर अबुल कासिम सद्र को इस आशय से आगे रवाना कर दिया कि यदि हज़रत जन्नत आशियानी आगे जाना चाहते हों तो बातों में लगा कर उन्हें रोक ले। जिस समय वे प्रस्थान करने लगे, मीर पहुँच गया। उसने मीर्ज़ा की ओर से कुछ सन्देश

पहुँचा कर उन्हें रोकना चाहा। हजरत जन्नत आशियानी ईश्वर की दी हुई बुद्धि की प्रेरणा से उसकी व्यर्थ की बातों में न आये और आगे रवाना हो गये। मीर्जा अस्करी पीछे से पहुँच गया। मीर अबुल हसन ने जो बहादुर के जन्नत आशियानी को सूचना दे देने एवं उनके प्रस्थान का सविस्तार उल्लेख किया। (मीर्जा अस्करी ने) शाह कन्दर, अबुल मीर एवं बहुत बड़ी संख्या में अन्य लोगों को शिविर की प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त कर दिया। तरदी बेग खाँ एवं समस्त तुच्छ लोग मीर्जा की सेवा में उपस्थित हुये। मीर्जा ने उन सबको अपने विश्वास-पात्रों को सौंप दिया। जब मीर गजनवी मीर्जा की सेवा में उपस्थित हुआ तो मीर्जा ने कहा, "हम बादशाह से भेंट करने आये थे। वे किस कारण रेगिस्तान के मार्ग से चल दिये?" तदुपरान्त उसने पूछा, "मीर्जा[1] कहाँ है?" मीर गजनवी ने उत्तर दिया कि, "खेमे में।" मीर्जा ने अपने रिकाबखाने[2] से मेवा का एक ऊँट हजरत खाक़ानी के लिये भिजवा दिया और कहा, "मैं भी अभी उन्हें देखने आता हूँ।" रात में एक-दो नवीसिन्दों[3] को लेकर खेमे में बैठकर शाही असबाब देखने एवं उनकी सूची तैयार कराने लगा। बैराम खाँ ने अपनी सूझ-बूझ से जो कुछ समझ लिया था, वही निकला। दूसरे दिन प्रातःकाल मीर्जा अपने खेमे से सवार होकर हजरत जन्नत आशियानी के दौलतखाने के द्वार पर पहुँचा। छोटे बड़े सभी लोगों को अचानक बन्दी बनवा लिया। तरदी बेग खाँ को शाह कन्दर के सुपुर्द करके कन्धार भेज दिया। बहुत से लोगों को दारुण वेदना देकर मरवा डाला। तरदी बेग खाँ से अत्यधिक धन (५१) वसूल किया। सभी तुच्छ नमकहरामों ने अपनी कृतियों का फल भोग लिया। जिस समय मीर्जा अस्करी दौलतखाने के द्वार पर पहुँचा, मीर गजनवी एवं माहम अनका, हजरत खाक़ानी को कंधा पर बिठाकर मीर्जा के पास लाये। मीर्जा ने हजरत खाक़ानी की ओर देख कर उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करने का बड़ा प्रयत्न किया किन्तु वे अल्पावस्था के बावजूद जरा भी प्रसन्न न हुये। मीर्जा ने खिन्न होकर कहा, "जानता हूँ किसका पुत्र है। मुझसे किस प्रकार प्रसन्न होगा।" थोड़ी देर बाद हजरत खाक़ानी ने मीर्जा की अंगूठी की ओर, जो उसकी ग्रीवा में पड़ी थी और जिसका डोरा लाल रंग का था, हाथ लपकाया और उसे अपनी ओर खींचा। मीर्जा ने उसे अपनी गरदन से उतार कर उन्हें दे दिया।

अस्करी का अकबर को कन्धार ले जाना

संक्षेप में, हजरत शहंशाह को वे अपने साथ कन्धार ले गये। मार्ग में मीर्जा अस्करी के एक विश्वासपात्र कोकी बहादुर ने महमिल के समीप पहुँच कर मीर गजनवी से कहा कि "यदि तुम मीर्जा को मुझे दे दो तो मैं उन्हें बादशाह के पास पहुँचा दूँ।" मीर गजनवी ने उत्तर दिया कि, "हजरत जन्नत आशियानी के आदेश के बिना मैं यह धृष्टता नहीं कर सकता। कोकी बहादुर ने कहा, "मैंने हजरत जन्नत आशियानी की सेवा का दृढ़ संकल्प कर लिया है। मैं चाहता हूँ कि इस यात्रा में किसी सेवा का सौभाग्य प्राप्त कर लूँ। मुझे मीर्जा की कोई निशानी दे दो ताकि जाकर

१ अकबर।
२ भंडार गृह, मोदी खाना।
३ मुंशियों।

उनकी सेवा में प्रस्तुत कर सकूं और उनकी कुशलता के सुखद समाचार पहुँचा दूं।" मीर शम्सुद्दीन मुहम्मद गज़नवी ने हज़रत खाकानी की टोपी, जो कि प्रताप के सिर की कुंजी थी, बहादुर को दे दी। वह इस सौभाग्य द्वारा सुशोभित होकर हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा मे चला गया।

मीर्ज़ा अस्करी १८ रमज़ान ९५० हि० (१५ दिसम्बर १५४३ ई०) का कन्धार पहुचा और अरक के ऊपर मीर्ज़ा के लिये स्थान निश्चित कर दिया। माहम अनका, जीजी अनका एव मीर गज़नवी सर्वदा सेवा में रह कर, कयामत तक स्थायी रहने वाला सौभाग्य प्राप्त करते थे। मीर्ज़ा अस्करी ने शाहज़ादे को, जो ईश्वर की प्रतिरक्षा की छाया मे पल रहा था, अपनी पत्नी सुल्तान बेगम को सौंप दिया। उस सदाचारिणी ने इस सौभाग्य को प्राप्त करके कृपापूर्वक उनकी सेवा प्रारम्भ कर दी।

जब उनकी अवस्था एक वर्ष तथा तीन मास की हो गई तो माहम अनका ने मीर्ज़ा से निवेदन किया कि "तुर्कों की प्रथा है कि जब पुत्र अपने पाँव से चलने लगता है तो पिता अथवा बडा बाप या जो कोई उनके समान होता है वह अपनी पगडी सिर से उतार कर, पुत्र के चलने के समय उसे मारता है और पुत्र भूमि पर गिर पडता है। हज़रत जन्नत आशियानी स्वय यहाँ नहीं हैं, आप उनके स्थान पर हैं। यदि यह प्रथा पूरी हो जाय तो आपकी कृपा से दूर न होगा।' हज़रत खाकानी कहा करते थे कि, "यह बात मुझे पूर्ण रूप से याद है कि मीर्ज़ा अस्करी ने अपनी पगडी उतार कर मेरे ऊपर फेंकी और मैं भूमि पर गिर पडा।" वे कहा करते थे कि, 'मुझे याद है कि उन्ही दिनों में मेरा सिर मुडवाने लोग बाबा हसन अब्दाल ले गये। वह यात्रा पूर्ण रूप से मेरी दृष्टि के समक्ष है।" निःसन्देह ईश्वर के ज्ञान के उस प्रतीक से इस प्रकार की घटनाओ का घटना कुछ दूर नही।

शेर शाह

जब बात यहाँ तक पहुँच गई तो शेर शाह का शेष हाल, मीर्ज़ा हैदर का कश्मीर को प्रस्थान, मीर्ज़ा कामरान के काबुल मे प्रवेश एव मीर्ज़ा हिन्दाल का, जो कन्धार को रवाना हुआ और यादगार नासिर मीर्ज़ा का जो बक्कर में रह गया था सब हाल भी लिख दिया जाय। यह बात गुप्त न रहनी चाहिये कि जब शेर शाह ने सुल्तानपुर नदी पार कर ली तो वह धीरे-धीरे यात्रा करने लगा। सेना की अधिकता एव सल्तनत के असबाब के बाहुल्य के बावजूद उसे इस बात का बडा भय था कि कहीं बादशाही लश्कर के वीर किसी ओर से पहुच कर, बदला न ले लें। उसने एक सेना अपने आगे रवाना कर दी और बडी सावधानी से कार्य करता था। जब मीर्ज़ा कामरान एव समस्त भाइयों के विरोध का हाल सभी लोगों को ज्ञात हो गया तो वह लाहौर पहुँचा। वहाँ से खुश आब पहुँचा तथा भीरा एव उस क्षेत्र में कुछ दिन तक रहा। उसने सुल्तान सारंग एव सुल्तान आदम को, जो उस क्षेत्र के प्रतिष्ठित ज़मीदार थ, बुलाने के लिये आदमी भेजे। क्योंकि वे हज़रत फिरदौस मकानी के

१ वे सब्ज़वार (ईरान) के सैयदों में से थे। उनका मज़ार अरगन्दाब के समीप है। शुक्रवार के दिन कन्धार के अधिकाश नर-नारी, सर्व साधारण एव सम्मानित व्यक्ति वहा दर्शनार्थ जाते हैं और नगर में बहुत कम लोग रह जाते हैं तथा वहाँ बहुत भीड एकत्र हो जाती है। (सैयिद मुहम्मद मासूम बक्करी : तारीखे सिन्ध, पृ० १३३-१३४)।

आश्रित थे, अत उन्होंने बहाने बना दिये और उसके पास न गये। शेर शाह वहाँ से गक्खरों से सम्बन्धित हातिया[1] नामक महाल में पहुँचा। एक बहुत बडी सेना उनके विरुद्ध भेजी। गक्खरों ने पौरुष प्रदर्शित करते हुए अफ़ग़ानों को पराजित कर दिया। बहुत से अफगान बन्दी बना लिये गये और बेच डाले गये। शेर शाह उनपर स्वय आक्रमण करना चाहता था किन्तु उसके हितैषियों ने उसे सलाह दी कि "ये लोग बडे कठिन पर्वतो एव दुर्गम भूमि मे निवास करते हैं अत युक्ति द्वारा शनै शनै उनका काम तमाम करना चाहिये। यह उचित होगा कि इस क्षेत्र में एक भारी सेना छोड (५२) दी जाय जो बादशाही आदमियों के प्रवेश का भी पता लगाती रहे और इस प्रदेश पर भी छापे मारती रहे। इन लोगों के लिये एक दृढ क़िले का निर्माण करा दिया जाय ताकि कुछ समय व्यतीत होने पर गक्खर लोग अपने मक्रे स्थान से व्याकुल होकर आज्ञाकारिता स्वीकार कर लें। वह स्वय लौट कर हिन्दुस्तान के विशाल क्षेत्र की सुव्यवस्था का प्रयत्न करे।" इस बात को उचित समझ कर उसने रोहतास के किले का निर्माण कराया। एक बहुत बडी सेना को वहाँ छोड कर निरन्तर यात्रा करता हुआ आगरा की ओर लौट गया। वहाँ से ग्वालियर के किले पर आक्रमण किया। मीर अबुल कासिम के पास किले को प्रतिरक्षा की सामग्री न थी, अत विवश होकर उसने आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। शेर शाह ने हिन्दुस्तान के प्रदेशों की सुव्यवस्था का सकल्प करके बगाले के अतिरिक्त अपने समस्त राज्य को ४७ अक्ताओं में विभाजित किया और सैनिकों के घोडों को दागने की प्रथा चलाई। सुल्तान अलाउद्दीन की योजनाओं के विषय में, जो तारीखे फीरोज शाही में लिखी हैं, सुनकर जिन्हे कार्य रूप में परिणित कर सकता था, उन्हें किया। वहाँ से वह रायसेन एव चन्देरी के राजा पूरण मल के विरुद्ध पहुँचा। उससे प्रतिज्ञा करके तथा उसे वचन देकर किले के बाहर निकला तथा फ़क़ीहों के प्रयत्न एव उनके फतवो की सहायता से प्रतिज्ञा भग करके, उसकी हत्या करा दी और वहाँ से आगरा लौट आया। समस्त मार्गों एव सडको पर एक एक कुरोह की दूरी पर सराओं का निर्माण कराया और वहाँ डाक-चौकी के घोडे रखे ताकि आवश्यकता पडने पर सरहद के समाचार एव दूर के प्रदेशों की घटनाओं की सूचना रोज़नामचे के रूप में उसको सेवा में प्रस्तुत होती रहे। इस प्रकार हज़रत ख़ाकानी के राज्यकाल में उन्ही नियमो का पालन हो रहा है। उसने प्रत्येक सराय में शहना नियुक्त किये जो आने जाने वालो के हाल से अवगत रहते और यात्रियों की रक्षा किया करते थे। उसने राज्यो के विजय करने एव सेना को सुव्यवस्थित करने का अत्यधिक प्रयत्न किया। शेर शाह सर्वदा अपने विश्वास पात्रो के समक्ष खेद प्रकट किया करता था कि उसे अपनी अवस्था के अन्त में राज्य प्राप्त हुआ अन्यथा ससार का विशाल क्षेत्र बुद्धिमान् लोगो के लिये कोई महत्व नही रखता। सक्षेप मे, आगरा मे अत्यधिक रुग्ण रहने के पश्चात् जब स्वस्थ हुआ तो अजमेर एव नागौर के हाकिम मालदेव पर आक्रमण किया। उस क्षेत्र को विजय करके चितौड एव रणथम्बोर के किले के विरुद्ध पहुँचा। किलो के रक्षको ने कुजियाँ भिजवा दी। शेर

१ अकबर नामा में 'हथियापुर', सम्भवत 'हतियार लग'। यह रोहतास एव रावलपिंडी के मध्य में कामी नामक एक नदी के समीप है। (बेवरिज, पृ० ३१८, रिज़वी मुग़ुल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १, पृ० १२४।

शाह वहां एक सेना नियुक्त करके धन्दीरा[1] की विलायत में प्रविष्ट हो गया। वहां के मार्ग से कालिंजर[2] के क़िले पर चढ़ाई की और उसे घेर लिया। साबात तैयार कराये और सुरंग खुदवायी। १० महर्रम ९५२ हि० (२४ मार्च १५४५ ई०) को उस आग से, जो सुरंगों में लगवाई थी, जल कर मर गया। जब उसे अपने जीवन की आशा न रही तो उसने अपने अमीरों से कहा कि, 'क़िले की विजय का अधिक से अधिक प्रयत्न करो ताकि जब तक मेरा थोडा सा जीवन शेष हूँ, क़िला विजय हो जाय। इसके बाद यह सम्भव न हो सकेगा।" उसके प्राण अभी शरीर के क़िले से निकले भी न थे कि कालिन्जर का क़िला विजय हो गया। उसकी मृत्यु की तारीख़, "शेर शाह आग से मर गया[3]" हुई। उसने ५ वर्ष, २ मास तथा १३ दिन तक हिन्दुस्तान पर राज्य किया।

इस्लाम शाह

उसकी मृत्यु के ८ दिन उपरान्त उसका पुत्र जलाल ख़ां अपने पिता का उत्तराधिकारी हो गया। उसने अपनी उपाधि इस्लाम खां रक्खी। वह भी अपने पिता के समान था। जो राज्य उसके पिता ने अपने अधिकार में कर लिये थे, उन्हें उसने सुव्यवस्थित किया। वह ८ वर्ष तथा कुछ और समय तक हिन्दुस्तान में राज्य करता रहा।

मीर्ज़ा हैदर

मीर्ज़ा हैदर हज़रत जहाँबानी की सहायता से कश्मीर की ओर रवाना हुआ और नवशहर पहुँचा। कश्मीर के अमीरों ने जिनके नाम अपने स्थान पर लिखे जा चुके हैं उपस्थित होकर उससे निष्ठापूर्वक भेंट की। कश्मीर को प्राप्त करने एवं उस देश को विजय करने की तिथि उसे भली भाँति समझा दी। मीर्ज़ा ने ईश्वर पर भरोसा करके कश्मीर के पर्वतीय प्रदेश में साहस के क़दम रक्खे। इसी बीच में बादशाही आदमियों को उन दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ा जिनका उल्लेख हो चुका है। ख़्वाजा कलाँ बेग उस विचार को[4] त्याग कर मीर्ज़ा कामरान के पास चला गया। मुज़फ्फर तोपची, सारंग के पर्वत में चला गया। उस सेना के, जिसे हज़रत जन्नत आशियानी ने उसकी सेवा हेतु नियुक्त किया था, तथा उसके कुछ प्राचीन सेवकों के, अतिरिक्त मीर्ज़ा हैदर के साथ कोई भी न रह गया किन्तु कश्मीर में अत्यधिक उथल-पुथल होने के कारण वह २२ रजब ९४७ हि० (२२ नवम्बर १५४० ई०) को पूँछ के मार्ग से कश्मीर में प्रविष्ट हो गया और बिना युद्ध के उसे विजय कर लिया। इसका कारण यह है कि उन दिनों कश्मीर में स्थायी रूप से कोई हाकिम न था। अमीरों ने जबरदस्ती उस प्रदेश पर अपना अधिकार जमा लिया था। नाज़ुक शाह नामक एक व्यक्ति को, जिसने कश्मीर के हाकिमों से अपना सम्बन्ध जोड़ रक्खा था, उन लोगों ने सिंहासनारूढ़ कर दिया था। वह नाम मात्र को बादशाह बनने से ही प्रसन्न था। वे लोग उसके नाम पर शासन करते थे। वे आपस

१ अम्बेर (आमेर) में, जयपुर का प्राचीन नाम।
२ कालिंजर, तहसील गिरवन, ज़िला बाँदा (उत्तर प्रदेश)। यह प्रसिद्ध प्राचीन पहाड़ी क़िला तथा क़स्बा गिरवन तहसील के दक्षिणी पूर्वी कोने पर बाँदा से ३५ मील पर स्थित है।
३ 'शेर शाह अज़ आतश मुर्द'।
४ कश्मीर विजय के विचार।

(५३) में एक दूसरे से अत्यधिक शत्रुता रखते थे और प्रतिभा एव बुद्धि से शून्य थे। जब मीर्ज़ा हैंदर ने कश्मीर को पूरी हुकूमत को दृढ बना दिया तो काची चक, जिसने उसे राज्य पर अधिकार जमाने के लिये प्रेरित किया था और जो कश्मीर की विजय के उपरान्त अपने स्वार्थ की सिद्धि चाहता था, अपने उद्देश्य को पूरा न होते देख कर, कश्मीर से निकल कर शेर शाह के पास चला गया। उसने मुहम्मद शाह की बहिन का विवाह शेर शाह से कर दिया और इस प्रकार उससे घनिष्ठता बढा कर कश्मीर विजय करने के लिये प्रेरित करने लगा। अलाउल खा एव हुसेन खा सरवानी तथा २,००० सैनिकों[1] को साथ लेकर कश्मीर पहुँचा। इसी बीच में अब्दाल माकरी, जो उसका सहायक था, जलोदर के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गया। मीर्ज़ा हैंदर ने अपने परिवार को इन्द्र-कोल में, जो वडा ही दृढ स्थान था, तोड कर किला बन्द कर लिया। कश्मीर वाले सब उससे पृथक् हो गये और मीर्ज़ा के पास थोडे से आदमी रह गये। वह तीन मास तक पर्वतो की कन्दराओ में निवास करता रहा। सोमवार २० रबी-उस्सानी ९४८ हि० (१३ अगस्त १५४१ ई०) को उसने युद्ध किया और ईश्वर की कृपा से विजय प्राप्त कर ली। यद्यपि अफगानो एव कश्मीरियों की सख्या ५,००० थी, वे पराजित हो गये। उन लोगों की वहुत वडी सख्या मार डाली गई। वहुत से लोग वन्दी बना लिये गये। कश्मीर स्थायी रूप से मीर्ज़ा हैंदर के अधिकार में आ गया। मुल्ला जलालुद्दीन मुहम्मद यूसुफ ने "फतहे मुकर्रर[2]" के अक्षरो से इस घटना की तारीख निकाली। यद्यपि दुवारा विजय मीर्ज़ा को इसी बार प्राप्त हुई किन्तु उसने अपने इतिहास में इस बात का उल्लेख किया है कि एक बार काशगर के हाकिम सईद खा के आदेशानुसार उसने लार[3] दर्रे से कश्मीर में प्रविष्ट होकर ४ शाबान ९३९ हि० (१ मार्च १५३३ ई०) को इसे विजय कर लिया। उसी वर्ष की अन्तिम शव्वाल (२४ मई १५३३ ई०) को कश्मीर के अमीरो एव मुहम्मद शाह से, जो नाम-मात्र को बादशाह था, एक प्रकार से सधि करके और अपने पुत्र सिकन्दर सुल्तान[4] के लिये मुहम्मद शाह की पुत्री को लेकर, जिस मार्ग से आया था, उसी मार्ग से लौट गया।

इस बार दैवी सहायता से उसने कश्मीर पर विजय प्राप्त कर ली तो १० वर्ष तक उस प्रदेश की सुव्यवस्था का अत्यधिक प्रयत्न करता रहा। उस हृदयग्राही भूभाग को, जो उजड चुका था, नगरो के वस्त्र पहनाये। प्रत्येक स्थान से कलाकारो एव शिल्पकारों को बुलवा कर उस प्रदेश की रौनक एव उसकी समृद्धि में वृद्धि का प्रयत्न किया। विशेष रूप से सगीत की वडी उन्नति हुई और नाना प्रकार के वादन-यन्त्रो का आविष्कार हुआ। सक्षेप में, उसका वाह्य रूप वास्तविक सुन्दरता से सुशोभित हुआ किन्तु मीर्ज़ा के निर्जीव एव निरुत्साह धार्मिक पक्ष पात के कारण जिसका

१ अकबर नामा के अनुवाद में '२०,०००' छप गया है जो अशुद्ध है। २,००० होना चाहिये। (रिज़वी : मुग़ुल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १, पृ० १२९)।

२ दुवारा विजय।

३ मूल में 'लाहौर' किन्तु अकबर नामा एव तारीखे रशीदी में 'लार'; [रिज़वी : मुग़ुल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १, पृ० १२६]।

४ सिकन्दर सुल्तान अथवा इस्कन्दर सुल्तान, सईद खाँ का पुत्र था मीर्ज़ा हैदर का नहीं, यद्यपि सईद खाँ के आग्रह पर वह उसे अपना ही पुत्र समझता था। आईने अकबरी में अबुल फ़ज़ल ने उसे सईद खा का ही पुत्र लिखा है। [रिज़वी : मुग़ुल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १, पृ० १३०]।

मूल उद्देश्य अपने कट्टरपन का ढोंग रचना एवं आत्म प्रदर्शन होता है, कश्मीर वाले तक़लीद[1] के लोक में फँस गये और आज तक उस नगर वालों में से धार्मिक पक्षपात की दुर्गन्ध आती है कारण कि सगत का बडा अधिक प्रभाव होता है। यह बडी विचित्र बात है कि कश्मीर वाले दो भागों में विभाजित हो गये हैं। व्यापारी एवं कारीगर सुन्नी तथा समस्त सैनिक शीआ हैं। ग्रामीणों में कुछ सुन्नी तथा कुछ शीआ हैं। मीर्ज़ा से जो सब से बडी भूल हुई और जो उसके लिये शुभ नहीं रही, यह थी कि ऐसी विजय के बावजूद वह कश्मीर के अमीरों की प्रथानुसार नाज़ुक शाह के नाम का खुत्बा एवं सिक्का चलवाता रहा तथा हज़रत शाह जन्नत आशियानी के नमक का हक़ अदा न किया और अपनी नीचता भी प्रदर्शित की। वह समय की आवश्यकतानुसार उन लोगों के हृदय को अपने हाथ में लिये रहा। जब काबुल विजय हो गया तो उसने हज़रत जन्नत आशियानी के नाम से खुत्बे को शोभा दे दी[2]। ९५८ हि० (१५५१ ई०[3]) में कश्मीरियों ने रात्रि में छापा मारा और उसकी हत्या कर दी। इसका संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है कि मीर्ज़ा न्याय की प्रथाओं की उपेक्षा करते हुए अपनी वासनाओं के अनुसार जीवन व्यतीत करने लगा। सावधानी एवं सहनशीलता को, जो सौभाग्य के दो पंख हैं, त्याग दिया। कश्मीरियों के छल एवं धूर्तता को, जो उसकी योग्यता एवं कार्यकुशलता के कारण दब गई थी, पुनः उन्नति प्राप्त हो गई। मित्रता के वस्त्र में उन्होंने शत्रुता प्रारम्भ कर दी। सर्वप्रथम जो उपाय उन लोगों ने किया वह इस प्रकार था कि मीर्ज़ा की सेना को बहाने बना कर उससे पृथक् करा दिया और अनुभवी लोगों को छिन्न-भिन्न करा दिया। कुछ लोगों को तिब्बत, कुछ को पकली और कुछ को राजौरी की ओर भिजवा दिया। ईदी रैना एवं अब्दाल माकरी के पुत्र हुसेन माकरी ने ख्वाजा हाजी वक्काल को, जिसे मीर्ज़ा के सभी कार्यों में पूर्ण अधिकार था, मार्ग भ्रष्ट करके अपनी ओर मिला लिया। एक सेना एकत्र करके वे मीर्ज़ा के विरुद्ध रवाना हुये। गाज़ी खां एवं मलिक दौलत चक भी आकर उन लोगों से मिल गये। खानपुर के समीप, जो हीरापुर एवं सिरी नगर के मध्य में स्थित है, मीर्ज़ा पर रात्रि में छापा मारा। मीर्ज़ा हैदर, ख्वाजा (५४) हाजी के घर के समीप करा बहादुर को बन्दीगृह से मुक्ति दिलाने पहुँचा था कि अचानक कमाल दूनी नामक कश्मीरी ने उसे घायल कर दिया। कुछ लोगों का मत है कि मीर्ज़ा के किसी सेवक ने बिना पहिचाने उसे बाण मारा जिससे वह मृत्यु को प्राप्त हो गया।

मीर्ज़ा कामरान

मीर्ज़ा कामरान जब अपने सौभाग्य का साथ न देकर काबुल की ओर चल खड़ा हुआ तो खुशआब के उपान्त में अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया। सिन्ध नदी तट पर, मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा

---

१ अपने विवेक का प्रयोग किये बिना कट्टर आलिमों के दर्शाये मार्ग पर अग्रसर होना।

२ मि० राजर्स ने कश्मीर के सिक्कों का उल्लेख करते हुये हुमायूँ के नाम के एक कश्मीर के सिक्के का उल्लेख किया है जिस पर ९५० हि० (१५४३ ४४ ई०) तारीख़ पडी है। इसके अतिरिक्त ९५२ हि० अथवा ९५३ हि० (१५४५ ई० या १५४६ ई०) के भी सिक्के मिले हैं। हुमायूँ ने काबुल को दो बार विजय किया: (१) रमज़ान ९५२ हि० (नवम्बर १५४५ ई०), (२) रजब ९५५ हि० (अगस्त १५४८ ई०), [बेवरिज, पृ० ५०४, रिज़वी: मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १, पृ० १३०]।

३ सम्भवतः अक्तूबर १५५१ ई०।

एव उलुग मीर्ज़ा मुल्तान से आकर उससे मिल गये। वे बहुत समय तक वहाँ ठहरे रहे। जब अनाज का अत्यधिक अकाल हो गया तो पुल बँधवा कर नदी पार की और काबुल पहुँच कर आनन्द मगल में व्यस्त हो गया। गजनी एव उस क्षेत्र के स्थान मीर्ज़ा अस्करी को प्रदान कर दिये। ख्वाजा खावन्द महमूद को दूत बना कर मीर्ज़ा सुलेमान के पास भेजा और अपनी आज्ञाकारिता स्वीकार करने का आदेश दिया और कहलाया कि वह उसके नाम का खुत्बा एव सिक्का चलवा दे। मीर्ज़ा सुलेमान ने यह बात स्वीकार न की। मीर्ज़ा कामरान ने बदख्शाँ पर चढ़ाई की। नारी[1] के समीप दोनो सेनाओ में युद्ध हुआ। क्योंकि मीर्ज़ा सुलेमान मे मुकाबले की शक्ति न थी, उसने आदमी भेज कर सधि कर ली और उसके नाम का खुत्बा तथा सिक्का चलवा दिया। मीर्ज़ा कामरान ने बदख्शाँ के कुछ महाल मीर्ज़ा सुलेमान से लेकर अपने आदमियों को जागीर में दे दिये और सफलता प्राप्त करके लौट आया। इसी बीच में उसे समाचार प्राप्त हुये कि मीर्ज़ा हिन्दाल ने कन्धार पहुँचकर उसपर अधिकार जमा लिया है। मीर्ज़ा कामरान सेना एकत्र करके कन्धार की ओर रवाना हुआ। वह ६ मास तक किले का अवरोध किये रहा। जब खाद्य सामग्री कम हो गई तो किसी ओर से कुछ कुमक की आशा न होने के कारण मीर्ज़ा हिन्दाल अमान माँग कर बाहर निकला और मीर्ज़ा कामरान से भेंट की। मीर्ज़ा कामरान ने कन्धार अस्करी मीर्ज़ा को दे दिया और हिन्दाल मीर्ज़ा को अपने साथ लेकर काबुल लौट गया। कुछ दिन तक मीर्ज़ा हिन्दाल को कष्ट देता रहा। बाद में भाई के सम्बन्ध पर ध्यान देते हुये तथा मित्रता के वेश में शत्रुता करते हुए जूयें शाही को, जो आजकल खाकाने गती सितान[2] के प्रतापी नाम पर जलालाबाद कहलाती है, मीर्ज़ा हिन्दाल को प्रदान कर दिया। इस बीच में मीर्ज़ा सुलेमान ने वचन भग करके बदख्शाँ के उन भागो को जिन्हे मीर्ज़ा कामरान ने अपने आदमियों को जागीर में दे दिया था, अपने अधिकार में कर लिया। मीर्ज़ा कामरान ने उस ओर पुन चढ़ाई की। अन्दराब के क्षेत्र में युद्ध हुआ। मीर्ज़ा सुलेमान पुन पराजित होकर किलये ज़फर में बन्द हो गया। मीर्ज़ा कामरान ने किलये ज़फर का अवरोध कर लिया। मीर्ज़ा सुलेमान के अधिकाश आदमी निकल कर मीर्ज़ा कामरान से मिल गये। जब खाद्य सामग्री के अभाव के कारण अत्यधिक कष्ट होने लगा और अधिकाश लोग कृतघ्नता प्रकट करने लगे तो वह भी विवश होकर मीर्ज़ा की सेवा में उपस्थित हुआ। मीर्ज़ा कामरान, कासिम बरलास, मीर्ज़ा अब्दुल्लाह एव अपने निष्ठावानो के एक समूह को कासिम बरलास के अधीन बदख्शाँ में छोड कर लौट गया। ख्वाजा हुसेन मरवी ने इस घटना की तारीख "जुमा हफदहुम माहे जमादी-उस्सानी[3]" के अक्षरो से निकाली। मीर्ज़ा कामरान, मीर्ज़ा सुलेमान तथा उसके पुत्र मीर्ज़ा इबराहीम को बन्दी बनाये रहा। जब वह काबुल पहुँचा तो एक मास तक नगर को आईना बन्दी कराके जश्न कराता रहा। वह अपना समय पूर्ण असावधानी एव निश्चिन्त होकर व्यतीत करता रहा यहाँ तक कि हज़रत जन्नत आशियानी के सौभाग्य का नक्षत्र बलन्द हुआ और उन्होंने स्वय पधार कर उसकी कुकृतियों का दड उसके दुर्भाग्य की गोद में डाल दिया।

१ यह 'मारी' तथा 'नारी' दोनों प्रकार से लिखा गया है। सम्भवत: यह परयान एव चित्राल के मध्य में है। (बेवरिज, पृ० ४०८, रिजवी : मुग़ुल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १, पृ० १३३)।

२ अकबर।

३ शुक्रवार १७ जमादी-उस्सानी (९४८ हि०। ८ अक्तूबर १५४१ ई०)। बेवरिज के अनुवाद में '१५४६ ई०' जो अशुद्ध है।

मीर्जा हिन्दाल एव यादगार नासिर मीर्जा

मीर्जा हिन्दाल हजरत जन्नत आशियानी की सेवा से पृथक् हो गया और ऐसे अवसर पर इतना नीच एव निर्लज्जता का कार्य करके इतने बडे उपद्रव एव अशाति का कारण बना और बडे शोचनीय कार्य करने लगा। जिस समय कराजा खा, मीर्जा कामरान की ओर से कन्धार का हाकिम था, वह कन्धार की ओर रवाना हुआ। कराजा खा मीर्जा के आगमन के समाचार पाकर किले के बाहर निकला और आदरपूर्वक उसकी सेवा में उपस्थित हो गया। उसने वह राज्य मीर्जा को सौप दिया। इसका सक्षिप्त उल्लेख किया जा चुका है।

यादगार नासिर मीर्जा तत्ता के हाकिम के बहकाने पर लुहरी में ठहर गया और लगभग दो मास तक वहाँ निवास करता रहा। बाद मे उसको समझ मे आ गया कि तत्ता के हाकिम की बातें सत्य के प्रकाश से शून्य है और वह मसलहत के कारण छल एव धूर्तता प्रदर्शित कर रहा है। (५५) विवश होकर वह उन व्यर्थ के विचारो को त्याग कर कन्धार की ओर रवाना हो गया। यद्यपि हाशिम बेग ने, जो सच्चे निष्ठावानो मे था उसे समझाया कि इस समय हजरत जन्नत आशियानी की सेवा से पृथक् होना एव मीर्जा कामरान के पास चला जाना उचित नही किन्तु उसने उसके समझाने पर ध्यान न दिया। दुर्भाग्यवश कन्धार की ओर चला गया। जिस समय मीर्जा कामरान कन्धार का अवरोध किये था, वह वहाँ पहुँच गया और मीर्जा के साथ काबुल चला गया। मीर्जा कामरान ने तत्ता के हाकिम के पास सन्देश भजा कि वह हजरत बिल्कीस मकानी शहर बानो बेगम[१] एव उनके पुत्र मीर्जा सजर को, जो यादगार नासिर मीर्जा से पृथक् होकर बक्कर में रह गये थे, उस ओर भेज दे। तत्ता के हाकिम ने उन्हे बहुत से लोगो के साथ, जो हजरत बादशाह की सेवा से पृथक् होकर उस क्षेत्र मे रह गये थे, उचित रूप से रवाना कर दिया। उसने जान-बूझ कर अथवा भूल से उन्हे ऐसे बियाबान के मार्ग से भेजा जहाँ अन्न-जल कुछ भी प्राप्त न होता था। उस मार्ग मे बहुत से लोग नष्ट हो गये। जब वे साल नामक स्थान पर पहुचे तो उन्हे ज्वर आने लगा। बिल्कीस मकानी की मृत्यु हो गई। २–३ हजार आदमियो मे से, जो उस काफिले मे थे, बहुत थोडे से बच कर कन्धार पहुँच सके।

(हुमायू की) एराक यात्रा की घटनायें

जब हजरत जन्नत आशियानी ने दैवी इच्छा से सतोष की घाटी में कदम रक्खा और चोल[२] के मार्ग से रवाना हुये तो निष्ठावान् सेवकों में से जो लोग, जिन्हे उनके साथ यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त था, चोली नामक उपाधि द्वारा सुशोभित हुये। मलिक हाती बिलोच ने, जो इस बियावान के डाकुओं का सरदार था, सेवा का सौभाग्य प्राप्त करके हजरत जन्नत आशियानी को अपने निवास-

१ बिल्क़ीस के घराने की। सौबा की महारानी का नाम बिल्क़ीस था। शहर-बानो बाबर की सौतेली छोटी बहिन तथा यादगार के पिता नासिर की सगी बहिन थी। उसका जन्म १४९१ ई० के लगभग हुआ था। उसका विवाह निज़ामुद्दीन अली ख़लीफ़ा के भाई जुनैद (बरलास) से हुआ था। उससे उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम सन्जर मीर्जा था। वह १५३७-३८ के लगभग विधवा हो गई थी।

२ रेगिस्तान।

स्थान पर उतारा और सेवा एव आतिथ्य प्रदर्शित करने का प्रयत्न किय। । उसने उस खतरनाक घाटी से उनका पथ-प्रदर्शन करके उन्हे गरमसीर की विलायत में पहुँचा दिया। मीर अब्दुल हई, जो उस विलायत मे सर्वश्रेष्ठ था, यद्यपि जर्म दाराना शकाओ एव सकोच के कारण सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य न प्राप्त कर सका किन्तु उसने सेवा तथा अतिथि सत्कार करने में कोई कसर न उठा रक्खी। उन दिनो ख्वाजा जलालुद्दीन, मीर्जा अस्करी की ओर से मालगुजारी वसूल करने के लिये उस क्षेत्र में आया हुआ था, हजरत जन्नत आशियानी ने बाबा दोस्त बख्शी को उसे प्रोत्साहन प्रदान करने एव सेवा में सम्मिलित हो जाने के लिये प्रेरित करने के उद्देश्य से भेजा। वह इसे अपना बहुत बडा सौभाग्य समझ कर उनकी सेवा में उपस्थित हुआ। जो कुछ धन-सम्पत्ति उसके पास थी, उसे उत्कृष्ट सवारी पर न्योछावर कर दिया। हजरत जन्नत आशियानी ने उसके प्रति अत्यधिक कृपा दृष्टि-प्रदर्शित करते हुए उसे सरकारे खासा की मीर सामानी[1] का मसब प्रदान कर दिया। उस भूभाग में कुछ दिन ठहर कर उन्होंने एक पत्र शाह तहमास्प के नाम लिख कर १ शव्वाल ९५० हि० (२८ दिसम्बर १५४३ ई०) को चोली बहादुर के हाथ भेजा। उसमें लिखा कि, "भाग्य के विधाताओं के आदेशानुसार जिन्होने प्रत्येक कार्य में इतनी मसलहतें एव इतने रहस्य छिपा रक्खे हैं, ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई हैं कि शीघ्र आपकी सम्मानित भेंट इच्छाओ के मुख से परदा उठा देगी।" इसके साथ-साथ जो दुर्घटनायें घटी थी, उनका सक्षिप्त उल्लेख किया और यह शेर उस सम्बन्ध में लिखा

शेर

'हमारे सिर पर जो कुछ बीतनी थी, वह बीत गई,
क्या समुद्र, क्या पर्वत और क्या बियाबान[2]।'

उन्होंने यह निश्चय किया कि प्रेम युक्त पत्र भेजने के उपरान्त कुछ दिन वहाँ ठहरें। यदि हजरत शाह निष्ठा एव सहृदयता की प्रथाओ के अनुसार व्यवहार करें तो वे उस ओर प्रस्थान करें अन्यथा एकान्तवास ग्रहण करते हुये जाहिरी सल्तनत से सम्बन्ध विच्छेद कर लें और सबसे अलग हो जाने के मार्ग पर अग्रसर हो। मीर अब्दुल हई गरमसीरी ने प्रार्थना पत्र भेजा कि, "ऐसा सुना जाता है कि मीर्जा अस्करी ने एक बहुत बडी सेना एकत्र कर ली है। कही वह इस क्षेत्र मे पहुँच न जाय। फिर इसका उपचार कठिन हो जायगा। यदि हजरत जन्नत आशियानी, सीस्तान प्रदेश में, जो ईरान के हाकिम के अधीन है, चले जायें तो उचित है।" हजरत जन्नत आशियानी ने भी उस क्षेत्र मे ठहरना सावधानी की दृष्टि से उचित न समझ कर सीस्तान की ओर प्रस्थान

१ बादशाह की व्यक्तिगत सम्पत्ति का अधीक्षक।
२ के गुजश्त अज सरे मा उनचे गुजश्त,
चे ब दरिया, चे ब कुहसार व चे दश्त।

بگذشت از سرما انچه گذشت
چه بدریا چه بکهسار و چه دشت

किया। हेलमन्द[1] नदी पार करके, एक झील के तट पर जहाँ यह नदी गिरती है, पड़ाव किया। सीस्तान[2] के हाकिम अहमद सुल्तान शामलू ने भाग्यशाली सवारी की धूल को अपने सम्मान की आँखों का (५६) सुरमा समझ कर सेवकों के समान व्यवहार किया। आतिथ्य एवं पेशकश प्रस्तुत करने में अपने सामर्थ्य से अधिक प्रयत्न किया। वे कुछ दिन तक उस रमणीक स्थान पर मुर्गाबियों के शिकार से जी बहलाते रहे। वहाँ से सीस्तान तशरीफ ले गये। अहमद सुल्तान ने अपनी माता एवं स्त्रियों को मरियम मकानी की सेवा में भेज दिया और अपनी समस्त धन सम्पत्ति पेशकश के रूप में प्रस्तुत कर दी। हज़रत जन्नत आशियानी ने उसे संतुष्ट करने के लिये उसमें से थोड़ी सी ले ली और शेष उसे वापस कर दी। इस मंज़िल पर अहमद सुल्तान का भाई हुसैन कुली मीर्ज़ा मशहद से अपने भाई एवं माता से भेंट करने आया था। उसका विचार था कि उनसे आज्ञा लेकर हिजाज़ की यात्रा को चला जाय। वह हज़रत जन्नत आशियानी के फ़र्श का चुम्बन करके सम्मानित हुआ। हज़रत जन्नत आशियानी ने किसी प्रसंग में मज़हब एवं मिल्लत के विषय में प्रश्न किये[3]। उसने निवेदन किया कि, "मैं दीर्घ काल से शीआ एवं सुन्नी धर्म के विश्वासों का गहन दृष्टि से अध्ययन कर रहा हूँ। दोनों धर्म वालों के ग्रंथ मैंने पढ़े हैं। शीआ लोगों का विश्वास है कि असहाब[4] पर लानत एवं उनकी निन्दा द्वारा पुण्य प्राप्त होता है। सुन्नियों का विश्वास है कि सहाबा की निन्दा कुफ़्र है। सोच-विचार उपरांत मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि पुण्य के लोभ में काफ़िर न हो जाना चाहिये।" हज़रत जन्नत आशियानी इस बात से बड़े प्रसन्न हुए और उसके प्रति अत्यधिक कृपा प्रदर्शित की और उससे अपनी सेवा में सम्मिलित हो जाने के लिये कहा। क्योंकि उसने काबे की ज़ियारत का संकल्प कर लिया था अतः वह उस सौभाग्य को न प्राप्त कर सका।

उस स्थान पर हाजी मुहम्मद (पुनः) बाबा कश्क़ा एवं हसन कोका मीर्ज़ा अस्करी से पृथक् होकर उत्कृष्ट लश्कर में पहुँच गये। उस समय यह उचित समझा गया कि वे ज़मीनदावर

१ हेलमन्द अफ़ग़ानिस्तान की मुख्य नदी। इसे हिरमन्द, हीरमन्द तथा हिलमन्द भी बोला जाता है। यह पग़मान की पर्वतीय श्रेणी के दक्षिण की ओर की घाटी से निकलती है। पग़मान की पर्वतीय श्रेणियाँ, काबुल के पश्चिम में हिन्दूकुश तथा कोहे बाबा से मिली हैं। पूर्वी हज़ारिस्तान के लम्बे चौड़े मैदान में जिसके विषय में अधिक ज्ञान नहीं प्राप्त हो सका है, बहती हुई यह दक्षिण पश्चिम की ओर मुड़ जाती है और गिरिश्क के समीप दक्षिणी अफ़ग़ानिस्तान के मैदान में पहुँचती है। गिरिश्क के नीचे बुस्त के अवशेषों के समीप, अरग़न्दाब तारनाक तथा अरग़सान नदियाँ, जो पहले से ही मिल चुकी होती हैं इसमें मिलती हैं। सीस्तान पहुँचकर यह उत्तर की ओर मुड़ जाती है और हमून अथवा सीस्तान की झील में गिरती है।

२ सीस्तान नामक क़स्बा, कारण कि हुमायूँ इस प्रांत में पहिले ही प्रविष्ट हो चुका था। रैवर्टी ने तबक़ाते नासिरी के अनुवाद में सीस्तान नगर का नाम ज़रंज लिखा है। (Raverty *Tabaqat i Nasiri*, P 1122)। बायज़ीद ने 'क़स्बये सीस्तान' ही लिखा है। सीस्तान अथवा सिजिस्तान को नीमरोज़ भी कहा जाता था। नीमरोज़ का फ़िरदौसी के शाहनामे में कई स्थानों पर उल्लेख हुआ है। यह ईरान तथा अफ़ग़ानिस्तान की सरहद पर है। शाह इस्माईल सफ़वी ने ९१४ हि० (१५०८-९ ई०) में इसे विजय कर लिया और यह ११३४ हि० (१७२२ ई०) तक ईरानियों के अधीन रहा।

३ सुन्नी व शीआ धर्मवालों के पारस्परिक मतभेद।

४ हज़रत मुहम्मद के प्रथम तीन ख़लीफ़ा।

की ओर प्रस्थान करें ताकि वहाँ का हाकिम अमीर बेग और बुस्त[1] के किले का हाकिम चिलमा बेग सेवा में सम्मिलित हो जायें। मीर्ज़ा अस्करी के भी अधिकाश सेवक उससे पृथक् होकर शीघ्र उनकी सेवा में आ जायेंगे। उस दशा में कन्धार तथा वह प्रदेश बिना किसी कष्ट तथा कठिनाई के राज्य के सहायकों के अधिकार मे आ जायगा। जब अहमद सुल्तान ने यह सुना कि राज्य के सहायक ऐसी बात सोच रहे हैं जिनसे वे एराक की यात्रा का विचार त्याग दें तो वह उनकी सेवा मे उपस्थित हुआ और उसने सच्ची निष्ठा से निवेदन किया कि, "कुछ लोग स्वर्ग रूपी दरबार में इस प्रकार की बातें करते हैं और चाहते हैं कि आप एराक की ओर प्रस्थान न करें। उनका उद्देश्य या तो विश्वासघात एव अपने स्वार्थ की सिद्धि के अतिरिक्त कुछ अन्य नही और या तो वे अपनी मूर्खता एव अल्पदर्शिता के कारण समय गँवा कर मूल उद्देश्य को खो देना चाहते हैं। यह दास निष्ठा एव शुभचिन्ता की अधिकता के कारण यह निवेदन करने की धृष्टता करता है कि आप एराक की राजधानी की ओर प्रस्थान एव शाह से भेंट करने का सकल्प कर लें और किसी अन्य बात की चिन्ता न करें।" क्योंकि उसका निवेदन स्वार्थ से शून्य और गम्भीर था अत. वे उसके परामर्श की प्रशसा करके एराक की ओर रवाना हो गये। इस कारण कुछ दिन तक हाजी मुहम्मद को निकट आने की अनुमति न दी गई। अहमद सुल्तान सौभाग्य की रिकाब के साथ तबस कीलकी[2] के मार्ग से उन्हे ले जाना चाहता था किन्तु इस कारण कि उन्हें हेरी[3] की सैर की इच्छा थी, अत वे ऊक[4] के क़िले के मार्ग से रवाना हुये। जब उनका प्रेम से परिपूर्ण पत्र शाह को प्राप्त हुआ तो वह सुखद समाचार को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ। उनके शुभ आगमन को बहुत बड़ी दैवी देन समझ कर अत्यधिक प्रसन्नता के कारण क़ज़वीन में, जो उनकी राजधानी थी, तीन दिन तक ख़ुशी के नक़्क़ारे बजवाये और उनके पत्र के उत्तर में पत्र लिख कर शीघ्रातिशीघ्र पधारने का आग्रह किया। अपने विश्वास-पात्रों के हाथ तुहफ़े एव उपहार भेजे। इस शेर को पत्र का शीर्षक बनाया:

शेर

'सौभाग्य के गौरव की हुमा हमारे जाल मे आ जाय,
यदि तेरा हमारे स्थान की ओर आगमन हो जाय।'[5]

१ बुस्त : हेलमन्द नदी पर, जहां नदी तथा कन्धार की सीमायें मिलती हैं। १०वीं शती ई० में यह सिविस्तान का दूसरे नम्बर पर बड़ा नगर था। यहां के लोग समृद्ध तथा हिन्दुस्तान से व्यापार करते थे। १३वीं शती ई० में याक़ूब नामक भूगोल वेत्ता के अनुसार नगर उजड़ चुका था और १४वीं शती ई० के अन्त में तीमूर के आक्रमण के कारण यह काफ़ी नष्ट हो गया।

२ यह ख़ुरासान का एक नगर है और सीस्तान से क़ज़वीन (तत्कालीन ईरान की राजधानी) के मार्ग में हिरात से बड़ी दूर पश्चिम में है।

३ हिरात।

४ रैवर्टी ने तबक़ाते नासिरी के अनुवाद में 'ऊक' को फ़रह एवं ज़रंज (सीस्तान) के मध्य में बताया है।

५ 'हुमाये औजे सआदत बदामे मा उफ़्तद,
अगर तुरा गुज़रे बर मक़ामे मा उफ़्तद।'

همای اوج سعادت بدام ما افتد
اگر ترا گذری بر مقام ما افتد

उसने उनके आगमन के प्रति अत्यधिक हर्ष एवं उल्लास का प्रदर्शन करते हुये बड़े आदर-सम्मान का प्रदर्शन किया। विलायता एवं नगरों के हाकिमों के नाम फरमान लिखे कि जिस नगर में भाग्यशाली लश्कर का पड़ाव हो,उस प्रदेश के हाकिम, प्रतिष्ठित लोग एवं सर्व साधारण उनके स्वागतार्थ जायें और सेवा-भाव तथा पेशकश प्रस्तुत करें और इसे अपना बहुत बड़ा सौभाग्य समझें। जो फरमान मुहम्मद खां को लिखा गया था, वह इस आशय से मूल रूप में उद्धृत किया जाता है कि वह भाग्यशालियों एवं बुद्धिमानों के लिये विधान बन जाय। इस फरमान से शाह की हक शिनासी, कदरदानी, सौजन्य, एवं सहृदयता पूर्ण रूप से स्पष्ट है।

हेरी के हाकिम मुहम्मद खां के नाम
शाह तहमास्प का पत्र

(५७) शुभ फरमान इस आशय से भेजा जाता है कि अयालत पनाह, शौक्त दस्तगाह, शम्सुल अयालत वल इकबाल[1], मुहम्मद खा शरफुद्दीन ऊग़ली तकलू सम्मानित प्रिय पुत्र[2] का गुरु राजधानी हिरात का हाकिम एवं मीर दीवान[3] नाना प्रकार की शाही अनुकम्पाओं एवं कृपा द्वारा सम्मानित होकर समझ ले कि उसका प्रार्थना-पत्र, जिसे उसने इमारत पनाह करा सुल्तान शामलू के भाई कमालुद्दीन शाह कुली बेग के हाथ ऐश्वर्य को शरण प्रदान करने वाले दरबार में भेजा था, १२ जिलहिज्जा (७ मार्च १५४४ ई०) को प्राप्त हुआ। उस सम्मानित लेख में जो कुछ लिखा था वह आद्योपान्त ज्ञात हुआ।

जो कुछ सफल नव्वाब[4], आकाश को रिकाब बनाने वाले, सूर्य के कुब्बे, सल्तनत एवं सफलता के समुद्र के मोती, शासन-प्रबन्ध एवं राज्य-व्यवस्था की वाटिका को सजाने वाले वृक्ष, सल्तनत एवं ऐश्वर्य के राजप्रासाद को प्रकाश देने वाले नूर, सौभाग्य एवं प्रताप की नहर के सरो, वैभव एवं ऐश्वर्य के उद्यान के पवित्र वृक्ष, खिलाफत एवं न्याय के वृक्ष के फल, जल एवं स्थल के पादशाह, सफलता के आकाश के चमकते हुए सूर्य, खिलाफत एवं जहांबानी के गौरव की चौदहवीं रात के चांद, न्यायकारी सुल्तानों के नेता एवं पथ-प्रदर्शक, सम्मानित खाकानों में सर्वोत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ, बादशाही के राजसिंहासन के उच्च वंश के शासक, न्यायकारिता के देश के उच्च वंश के पादशाह, सिकन्दर सरीखे खाकान, उत्कृष्ट जमशेद सरीखे सम्मान वाले सिंहासनारूढ़ सुलेमान[5], पथ-प्रदर्शन एवं विश्वास के

१ गौरव एवं प्रताप का सूर्य।

२ सुल्तान मुहम्मद मीर्ज़ा शाह तहमास्प का ज्येष्ठ पुत्र, जो मुहम्मद खुदाबन्दा भी कहलाता था। वह १५७८ ई० में सिंहासनारूढ़ हुआ किन्तु अपनी अयोग्यता के कारण शीघ्र वहीं गायब हो गया।

३ सम्भवतः तुर्की शब्द बेगलर बेगी का अनुवाद।

४ नव्वाब कामयाब। शीओं के इमामत के सिद्धांत के अनुसार इमाम केवल हज़रत अली की सन्तान के १२ वें इमाम हो सकते हैं जो शीओं के विश्वास के अनुसार जीवित हैं किन्तु अदृश्य हैं अतः जो कोई बादशाह होगा वह उनका नायब होगा। इस प्रकार ईरान के शाह अपने लिये भी नव्वाब ही की उपाधि का प्रयोग करते थे। अकबर के राज्यकाल के महज़र के विषय में बकलर तथा डा० माखन लाल राय चौधरी आदि विद्वानों ने इस शब्द से बड़े विचित्र निष्कर्ष निकाले हैं।

५ एक प्रतापी पैग़म्बर जिनका राज्य हवा पर भी बताया जाता है, (Solomon)।

स्वामी सुल्तान, मुकुट एव राजसिंहासन के अधिकारी शासक, प्रताप एव सौभाग्य के ससार के साहब किरान, समकालीन सुल्तानो के नेत्र के प्रकाश, प्रतिष्ठित खाकानो के शीर्ष के मुकुट, ईश्वर द्वारा सहायता प्राप्त, नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ पादशाह (ईश्वर जिन्हे अतिम दिन तक उनकी इच्छानुसार गौरव प्रदान करे) के विषय में लिखा था, ज्ञात हुआ। यह नही कहा जा सकता कि कितनी प्रसन्नता एव कितना सतोष हुआ।

पद्य

'सुखद समाचार, हे ऊषा के सदेश वाहक! तू मित्र के आगमन के समाचार लाता है,
तेरे समाचार सच हो, हे हर स्थान पर मित्र के विषय मे जानकारी रखने वाले।
सभवत वह दिन आ जाय जब मिलन की सभा मे अचानक,
बैठूंगा मै, अपने हृदय की इच्छा को पाकर, मित्र के साथ।'

उस फिरिश्तो सरीखे पादशाह का आगमन तथा बिना किसी कष्ट के अग्रसर होना अपने लिये एक महान् देन समझें। इस सुखद समाचार के प्राप्त होने के पुरस्कार में सब्ज़वार[1] की विलायत उस राज्य के आश्रित को तुश्कान वर्ष की मेष राशि के प्रारम्भ से प्रदान कर दी। वह अपने दारोगा एव वज़ीर को उस स्थान पर नियुक्त कर दे ताकि वहाँ से जो राजस्व वसूल हो एव दीवानी के वुजूहात प्रचलित वर्ष के प्रारम्भ से अपने अधिकार में करके विजयी सेना के वेतन एव अपनी आवश्यकता पर व्यय कर सके। जिन नियमो का इस फरमान में उल्लेख हुआ है उनपर प्रत्येक फसल एव दिन में आचरण किया जाय और आज्ञाकारिता से सम्बन्धित जो आदेश हैं, उनका लेशमात्र भी उल्लघन न हो।

वह अपने ५०० अनुभवी बुद्धिमानो को नियुक्त करे, जिनमें से प्रत्येक के पास एक-एक कोतल घोडा, एक सवारी का खच्चर एव आवश्यक साज़ व समान हो। वे उस भाग्यशाली के स्वागतार्थ रवाना हो और अपने साथ १०० द्रुतगामी घोडे, जो सम्मानित दरबार से सुनहरी ज़ीनो सहित भेजे गए हैं, ले जायें। वह राज्य का रक्षक भी अपने तवेला से ६ द्रुतगामी सधे हुए उत्तम रग के एव मज़बूत घोडे, जो राज्य एव सफलता के रणक्षेत्र के शहसवार की सवारी के योग्य हो, चुनकर नक़्शी आस्मानी ज़ीनों सहित, ज़रबफ्त एव ज़रदोज़ी[2] की झूलें, जो कि उस जम सरीखे सम्मान वाले पादशाह की सवारी के घोडे के योग्य हो, डलवाकर, प्रत्येक घोडे को अपने दो सेवको को देकर भेज दे। विशेष सर्वोत्तम खजर, जो सफल नव्वाब स्वर्गीय एव सम्मानित शाह बाबा[3] (ईश्वर उनके प्रमाण को स्पष्ट करे) से प्राप्त हुआ है और जिसपर उत्तम जवाहरात जड हुए हैं, सोने की तलवार एव जडाऊ पेटी सहित उस सिकन्दर सरीखे पादशाह की विजय एव सफलता के

१ खुरासान का एक नगर, नीशापुर के पश्चिम में, मशहद एव बैरिपयन के मध्य में। हिरात के समीप सब्ज़वार इससे भिन्न है। इसे बेहक़ भी कहा जाता था।
२ सोने की बुनाई एव सोने के काम के।
३ शाह इस्माईल सफ़वी।

शकुन के लिये भेजा गया है। ४०० मखमल एव फिरग[1] तथा यज्द[2] के अतलस के थान इस आशय से भेजे जा रहे है कि इनमें से हजरत जहाँबानी के १२० विशेष जामे[3] तैयार हो और शेष विजयी रिकाब के सेवकों को प्रदान कर दिये जायें। सोने के तारो के काम के मखमली कालीनो के दोहर, बकरी के बालो के गलाफ अतलस के अस्तर सहित, तीन जोड़ बडे कालीन १२ हाथ (चौकोर) उत्तम रेशम के चार गोशकानी[4], १२ खेमे लाल, हरे तथा सफ़ेद भेजे गए है। ईश्वर करे वे भली-भाँति पहुँच जायें।

स्वादिष्ट एव उत्तम पेय, नित्य-प्रति तैयार कराये जाये और सफ़ेद रोटियो सहित, जो घी तथा दूध में सानी गई हों और जिनमें राजियाना[5] तथा पोस्ता पडा हो, बनवाकर हजरत (जन्नत आशियानी) के लिए भेजो जायें। उत्कृष्ट दरबार के विश्वासपात्रो एव अन्य सेवको के लिए वह वस्तुयें अलग भेजी जायें। जब यह निश्चय हो जाय कि कल अमुक स्थान पर पडाव होगा तो आज (५८) ही से वहाँ साफ़, उत्तम, सफेद एव कढे हुए, अतलस तथा मखमल के सायवान[6], रिकाबखाना[7], मतबख[8], एव उनके समस्त कारखानो[9] को सुव्यवस्थित कर दिया जाय। प्रत्येक कारखाने की आवश्यक वस्तुयें तैयार रहे। जब वे स्वय पडाव करे तो गुलाब का शरबत एव स्वादिष्ट नीबू का रस तैयार रखें और बरफ मे लगाकर, ठडा करके प्रस्तुत करें। शरबत के उपरान्त मशहद के मुश्की सेब के मुरब्बे, तरबूज एव अगूर इत्यादि सफेद रोटियो सहित, जसा कि उल्लेख हो चुका है, पेश करें। इस बात का प्रयत्न किया जाय कि समस्त पेय की राज्य का वह रक्षक परीक्षा कर ले[10]। गुलाब तथा अम्बर उनमें मिलाया जाय। रोजाना ५०० विभिन्न प्रकार के भोजनों के थाल पेय के साथ प्रस्तुत किये जाये। अयालत पनाह कज़ाक सुल्तान[11], इमारत मआब जाफर सुल्तान[12] अपने पुत्रो एव अपनी कौम वालो मे से १००० आदमियों को (उन) ५०० आदमियों को रवाना करने के तीन दिन बाद स्वागतार्थ भेजें। उन तीनो दिनों में उपर्युक्त अमीरो एव सेना वालो का निरीक्षण किया जाय। अपने सेवकों को तीपूचाक[13] एव अरबी घोडे प्रदान करने के विषय में सावधानी से कार्य करें कारण कि सैनिको

१ योरप से तात्पर्य है।
२ यज़्द :—फ़ारस का एक नगर जो रेशम के कपड़ों के लिए बडा प्रसिद्ध था।
३ एक प्रकार का लम्बा कोट।
४ गोशकान, काशान तथा इस्फ़हान के मध्य में एक क़स्बा है जो क़ालीनों के लिये प्रसिद्ध है। गोशकानी रेशम के क़ालीन से तात्पर्य है।
५ सोये के प्रकार का शाक का बीज।
६ एक प्रकार का शामियाना।
७ मोदी ख़ाना।
८ रसोई।
९ शाही आवश्यकताओं की तैयारी से सम्बन्धित विभिन्न विभाग।
१० इसका कारण यह था कि उसमें कोई विष इत्यादि न मिला दिया जाये। बकावल अथवा चाशनीगीर के पद पर इसी कारण बादशाहों के विश्वास-पात्र ही नियुक्त होते थे।
११ क़ज़ाक़ सुल्तान, मुहम्मद ख़ाँ का पुत्र था।
१२ जाफ़र सुल्तान अथवा जाफ़र ख़ाँ, क़ज़ाक़ सुल्तान का पुत्र एवं मुहम्मद ख़ाँ तकलू का पौत्र था। वह अकबर के राज्यकाल में हिन्दुस्तान पहुँचा।
१३ द्रुतगामी एवं बहुमूल्य घोड़ों की एक क़िस्म।

के लिए उनके घोडो से बढकर शोभा को कोई अन्य वस्तु नही है। उन हजार आदमियो के सरोपा[1] भी उत्तम एव रगीन रहे। ऐसी व्यवस्था की जाय कि जब ये अमीर हजरत (जन्नत आशियानी) की सेवा में उपस्थित हों तो अभिवादन एव आदर सम्मान की भूमि का शिष्टाचार के ओष्ठो से चुम्बन करें और एक-एक व्यक्ति अभिवादन करे। इस बात की व्यवस्था की जाय कि सवारी इत्यादि के समय अमीरो के सेवकों तथा हज़रत (जन्नत आशियानी) के सेवको में किसी प्रकार का वाद-विवाद न होने पाये और उनके सेवको में किसी प्रकार कोई रुष्ट न होने पाये। सवारी एव लश्कर के प्रस्थान के समय अमीर लोग दूर से अपनी सेना में सेवा करें किन्तु पहरे के समय पूर्व उल्लिखित अमीरों में से प्रत्येक उन स्थानो के समीप जहाँ वे नियुक्त हों, प्रयत्न करते रहे और सेवा का डडा हाथ मे लेकर इस प्रकार सेवा करे जिस प्रकार कोई अपने बादशाह की सेवा करता है और जो अधिक से अधिक सावधानी आवश्यक हो उसका प्रदर्शन करें। वे जिस विलायत में पहुँचें यही फरमान वहाँ के वाली को दिखाकर यह निश्चय कर दिया जाय कि वह अमीर सेवा करे।

आतिथ्य का इस प्रकार प्रबन्ध किया जाय कि समस्त भोजनो, एव पेय की कुल सख्या १,५०० थाल से कम न हो। उस सल्तनत-पनाह की सेवा मशहदे मुक़द्दस[2] तक उस अयालत-पनाह[3] के सुपुर्द रहेगी। जब उपर्युक्त अमीर, सेवा में पहुचे तो रोज़ाना नाना प्रकार के भोजनो के १२०० थाल जो शाही-भोजन के योग्य हों, उस सम्मानित बादशाह के उत्कृष्ट दरबार में प्रस्तुत किये जाये। प्रत्येक अमीर अपने आतिथ्य के दिन ९ घोडे उपहार स्वरूप भेंट करे जिसमे ३ विशेष रूप से हजरत बादशाह के लिये हो, एक अमीरे मुअज्जम[4] मुहम्मद बैराम खा बहादुर को और ५ अन्य प्रतिष्ठित अमीरो को, जो उनके योग्य हो, प्रदान किए जायें। सभी ९ घोडे हज़रत बादशाह के समक्ष प्रस्तुत किये जायें और बता दिया जाय कि कौन कौन घोडे सफल नव्वाब के लिए हैं और जो घोडे पूर्व से अमीरो के लिए पृथक् कर लिये गए हो, उनके विषय मे यह बता दिया जाय कि कौन-कौन से घोडे किस-किस अमीर के हैं। यद्यपि यह बात कहनी उचित नही किन्तु यह अच्छा ही होगा, बुरा न होगा। जिस प्रकार भी सम्भव हो विजयी रिकाब के साथ जो सेवक हों, उन्हे प्रसन्न रखा जाय और उन्हे जितनी भी तसल्ली तथा जितना भी प्रोत्साहन दिया जा सकता हो दिया जाय। दुष्ट काल के कुचक्र के कारण मलिन उस समूह के हृदय को ऐसे अवसरो के लिये उचित एव उत्तम सांत्वना एव प्रोत्साहन द्वारा प्रसन्न करें। इस नियम का हर समय जब तक वे हमारे पास पहुँच न जायें, ध्यान रहे। तदुपरान्त जो कुछ उचित होगा उसका हमारी ओर से प्रबन्ध किया जायगा। भोजनोपरान्त मिठाइयाँ एव पालूदा[5], जो मिश्री एव उत्तम प्रकार से साफ की हुई शकर से तैयार किया गया हो, नाना प्रकार के स्वादिष्ट मुरब्बे, विशेष रिश्तये खिताई[6] जो गुलाब, मुश्क एव

१ सिर से पाँव तक के वस्त्र, खिलअत।
२ पवित्र मशहद, इमाम अली मूसी अर्रिज़ा के, जो ८वें इमाम थे, रौज़े के कारण, पवित्र लिखा गया है।
३ मुहम्मद खां तकलू।
४ प्रतिष्ठित अमीर।
५ फ़ालूदा।
६ एक प्रकार की सिवैयां।

अशहबो[1] अम्बर से सुगधित की गई हो, दरबार मे ले जायें। विलायत[2] का हाकिम आतिथ्य एव उपर्युक्त सेवाओं के उपरान्त अपनी विलायत से निश्चिन्त होकर राजधानी हिरात तक हज़रत बादशाह की सेवा मे साथ-साथ रहे और सेवा करने में लेशमात्र भी कसर न उठा रखे। जब वे उपर्युक्त विलायत[3] के १२ फरसख पर पहुँच जायें तो वह अयालत-पनाह[4] अपने किसी अनुभवी अधिकारी को, प्रिय सम्मानित-पुत्र[5] की सेवा में नियुक्त कर दे जो नगर एव उस पुत्र की सावधानी से सेवा करता रहे और शेष विजयी सेना नगर, विलायत एव सीमान्तों के सैनिको को, जिनमें हज़ारा[6], निकदिरी[7] इत्यादि हों (५९) और जिनकी सख्या ठीक-ठीक ३०,००० हो, लेकर उनके साथ स्वागतार्थ जाय। खेमे, सायवान एव आवश्यक असबाब, ऊँटों एव खच्चरो की कितारें अपने साथ ले जाये ताकि सुसज्जित सेना हज़रत (जन्नत आशियानी) के समक्ष प्रस्तुत हो सके। जब वह हज़रत की सेवा में पहुँचे तो कोई बात करने के पूर्व हमारी ओर से बहुत शुभ कामनाये पहुचाये और जिस दिन सेवा में उपस्थित हो सेना एव शिविर के नियमानुसार पडाव करे। वह अयालत-पनाह सेवा के लिये उद्यत रहकर, आतिथ्य की अनुमति लेकर ३ दिन तक वहाँ ठहरा रहे।

प्रथम दिन उनकी समस्त सेना वालो को सम्मानित खिलअतें, जो अतलस, यज़्द के किमखाब, मशहद एव खाफ के रेशम की बनी हो, प्रदान की जाये। सब लोगों को मखमल के बालापोश[8] प्रदान किये जायें। लश्कर वालों एव सेवकों में से प्रत्येक को दो तबरेज़ी तूमान[9] दैनिक व्यय हेतु प्रदान किये जायें। नाना प्रकार के भोजनो की, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, व्यवस्था की जाय। ऐसी बादशाहाना मजलिसों का आयोजन किया जाय जिससे ज़बानें उनकी प्रशसा किया करे और गुणगान के वाक्य लोक तथा परलोक वालो के कानो तक पहुंच जायें। उनकी सेवाओ की सविस्तार सूची हमारे उत्कृष्ट दरबार मे प्रेषित की जाय। २५०० तबरेज़ी तूमान, जो सम्मानित सरकार की तहवील[10] से सम्बन्धित हैं और जो राजधानी मे आते हैं, लेकर आवश्यक बातो पर व्यय किए जायें। दासता एव सेवा के लिये जो बात अधिक से अधिक आवश्यक हो उसे पूरे उत्साह से सम्पन्न किया जाय। उपर्युक्त मज़िल से नगर की यात्रा मे चार दिन लगाये जायें। प्रत्येक दिन आतिथ्य हेतु

१ धूसर रंग का। यह अम्बर सर्वोत्तम समझा जाता है।

२ प्रदेश, राज्य।

३ हिरात।

४ मुहम्मद खां तकलू।

५ सुल्तान मुहम्मद मीर्ज़ा।

६ हज़ारा के सम्बन्ध में देखिये **बाबर नामा**, पृ० १६, १८, २३, २५, २८, २६, ५० ५२, ६०, ६६, ६६।

७ सम्भवत. **बाबर नामा** का "निकदीरी" (पृ० १०, १३, १८, ५८०-५८१)।

८ लबादा।

९ एक सोने का सिक्का जो वोलैस्टन के अनुसार ८ शिलिंग का होता था किन्तु बेवरिज के अनुसार उसका मूल्य और अधिक होता होगा। शाह अब्बास सफ़वी के समय के तूमान का मूल्य ३ पौंड के बराबर होता था। ब्लाखमैन के अनुसार जहाँगीर ने तूमान को ३३ रुपये के बराबर बताया है किन्तु सैनिकों को चाँदी के सिक्के दिये गये होंगे। (बेवरिज, पृ० ४२५; रिज़वी : **मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं** भाग १, पृ० १४८)।

१० राजस्व से तात्पर्य है।

प्रथम दिन के समान भोजन का प्रवन्ध किया जाय। आतिथ्य हेतु उस अयालत पनाह की उत्कृष्ट सतान सेवकों के समान सेवा हेतु कटिवद्ध रहे और पूर्ण रूप से शिष्टाचार प्रदर्शित करते हुए सेवा की जाय। इस बात के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये कि इतना महान् पादशाह जो दैवी उपहारों में से एक है, हमारा अतिथि हुआ है, सेवा एव परिचर्या के विषय में अधिक से अधिक प्रवन्ध करते रहे और इसमें कोई कसर न उठा रक्खे कारण कि जितना अधिक परिश्रम इस विषय में होगा और जितनी दौड-धूप इस सम्बन्ध में की जायेगी उतना ही अधिक मैं प्रसन्न हूँगा।

नगर में पहुचने के एक दिन पूर्व ईदगाह के उद्यान मे स्यावान[1] के सामने ऐसे खेमे लगवाये जायें जिनके भीतर लाल अतलस, बीच में बारीक मलमल और ऊपर इस्फहानी मलमल, जिनके विषय में कहा जाता है कि वे आजकल तैयार हो रही हैं, लगी हो। इस बात के प्रति पूर्ण रूप से सावधान रहा जाय कि जिस स्थान पर भी हज़रत (जन्नत आशियानी) प्रसन्न हो सकें और फूलों से लदी हुई जिस भूमि पर अथवा जल वायु, सौन्दर्य एव कोमलता के कारण जो स्थान भी उन्हें पसन्द आये वहीं उनकी इच्छा का ध्यान रखते हुए, उनकी सेवा हेतु शिष्टाचार के हाथ सेवकों के समान सीने पर बाँधकर अग्रसर हो और निवेदन किया जाय कि, "यह शिविर, लश्कर एव असबाब भाग्यशाली नव्वाब की भेंट है।" वह स्वय मार्ग में तथा प्रस्थान के समय क्षण-क्षण पर उनके उत्कृष्ट हृदय को सांत्वना से परिपूर्ण अपनी बात-चीत से प्रसन्न करता रहे।

उपर्युक्त मजिल से एक दिन पूर्व जब नगर में प्रवेश हो, वह स्वय अनुमति लेकर, पुत्र की सेवा में रवाना हो जाय और प्रात काल उस सम्मानित प्रिय पुत्र को स्वागतार्थ महल के बाहर ले जाये। जो खिलअत हमने उस पुत्र को पारसाल नवरोज[2] के समय प्रेषित की थी, वह उसे पहनाई जाय और तक्लू अवीमाक[3] के किसी सफ़ेद दाढी वाले को, जो उस अयालत-पनाह का विश्वास-पात्र एव उसकी दृष्टि में योग्य हो, उपर्युक्त राजधानी में छोडकर पुत्र को सवार करे। नगर की ओर प्रस्थान के समय अयालत-पनाह, कज़ाक सुल्तान को नव्वाब[4] की सेवा में रक्खे। खेमे, ऊँट तथा घोडे प्रस्तुत किए जायें ताकि जब दूसरे दिन भाग्यशाली नव्वाब सवार हो, तो शिविर भी रवाना हो जाय। अयालत-पनाह उनका मार्ग-दर्शक बने। जब उपर्युक्त पुत्र नगर के बाहर निकले तो इस बात की चेतावनी दे दी जाय कि समस्त सेना वाले निश्चित नियमानुसार सवार होकर स्वागतार्थ बढें। जब वे उस उत्कृष्ट पादशाह के समीप पहुच जायें और उनके मध्य में एक बाण के पहुचने की दूरी रह जाय तो वह अयालत-पनाह अग्रसर होकर निवेदन करे कि पादशाह घोडे से न उतरें। यदि वे स्वीकार कर लें तो वह तत्काल वापस चला जाय और प्रिय पुत्र को घोडे से उतार कर शीघ्रातिशीघ्र रवाना हो और उस सुलेमान सरीखे दरबार वाले पादशाह के जघा एव रिकाब का चुम्बन कराये

१ वृक्षों से आच्छादित मार्ग।
२ ईरानियों का प्रसिद्ध त्योहार जो २१ मार्च के लगभग होता है। इस त्योहार के समय बड़ा आनन्द मगल मनाया जाता है और कई दिन तक जश्न होते रहते हैं। ईरानियों के पंचांग का नया वर्ष भी इसी दिन से प्रारम्भ होता है।
३ कबीला।
४ हुमायूँ।

तथा सेवा एव सम्मान प्रदर्शित करने के जो नियम हैं उनका प्रदर्शन कराये। यदि भाग्यशाली नव्वाब स्वीकार न करें और पैदल हो जायें तो सर्वप्रथम वह उपर्युक्त पुत्र को पैदल कराये और अभिवादन कराये। सबसे पहले हज़रत (पादशाह) को सवार कराय और पादशाह के हाथों का चुम्बन कराने के उपरान्त पुत्र को सवार कराये और नियमानुसार सवार होकर अपने शिविर एव मज़िल तथा निश्चित स्थान की ओर रवाना हो। वह अग़ालत पनाह एव स्वय पुत्र के निकट रहते हुए पादशाह की (६०) सेवा करे। यदि पादशाह किसी बात अथवा किसी घटना के विषय में सम्मानित पुत्र से कोई प्रश्न करें और वह पुत्र सकोचवश उचित उत्तर न दे सके तो वह अयालत-पनाह उचित उत्तर दे।

उपर्युक्त मज़िल पर वह पुत्र पादशाह का इस प्रकार आतिथ्य करे —नाश्ते[1] के समय नाना प्रकार के भोजनों के ३०० थाल अल्पाहार के रूप में स्वर्ग रूपी दरबार में प्रस्तुत किए जायें। दोना नमाज़ों के मध्य में नाना प्रकार के भोजना के १२०० थाल लगरी थाला में, जो मुहम्मद ख़ानी के नाम से प्रसिद्ध हैं, लगाकर प्रस्तुत किए जायें। इनके अतिरिक्त चीनी, सोने एव चाँदी के थाल जिनपर सोने एव चाँदी के ढक्कन हो, लाये जायें। तदुपरान्त स्वादिष्ट मुरब्बे (जो सम्भव हों) हलवे एव पालूदे प्रस्तुत किए जायें। इसके पश्चात उस भाग्यशाली पुत्र की अश्वशाला से सात उत्तम घोडे पृथक् किए जायें और उन्हे मख़मल एव अतलस की झूल पहनाई जायें। उनपर बारीक मलमल के रेशम से बुने हुए तग लगाये जायें, सफेद तग लाल मख़मल की झूल पर, तथा काला तग हरे मखमल की झूल पर लगाया जाय। यह भी आवश्यक है कि हाफ़िज साबिर काक मौलाना कासिम कानूनी[2], उस्ताद शाह मुहम्मद सुरनाई[3], हाफ़िज़ दोस्त मुहम्मद हाली[4], उस्ताद यूसुफ मौदूदी एव अन्य प्रसिद्ध सगीतज्ञ तथा वादक जो नगर में हों, सर्वदा उपस्थित रहे और जब पादशाह चाहे तो अविलम्ब सगीत एव वादन द्वारा उन्हे प्रसन्न करें। दूर अथवा निकट का जो भी व्यक्ति उस दरबार के योग्य हो, वह उपस्थित रहे ताकि जिस समय उसे बुलाया जाय वह पहुच जाय और उनके समय को यथा-सम्भव प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत कराये।

इसके अतिरिक्त शुकार, बाज, जरह चरग, बाशह शाहीन, बहरी[5] तथा जो कुछ उस पुत्र एव उस अयालत पनाह और उसकी सम्मानित सतान के पास हो, उपहार स्वरूप भेंट करे। उनके समस्त सेवकों का नाना प्रकार की विभिन्न रगों की रेशमी खिलअतें—नाना प्रकार की मखमल की, तुकमा कला बतून, तिला बाफ़[6]—उनकी श्रेणी अनुसार प्रदान की जायें। जब वे अपनी मज़िल पर पहुँचें तो उनके सेवक सम्मानित पुत्र के समक्ष प्रस्तुत किए जायें और वह उस उदारता का, जो उसे अपने पूर्वजों द्वारा प्राप्त हुई है, प्रदर्शन करते हुए उनमें से प्रत्येक को अलग अलग खिलअत एव घोडे उसकी श्रेणी के अनुसार प्रदान करे। तीन तूमान से अधिक इनाम में न दिए जायें। रेशम के थानो

१ प्रात काल ६ बजे।
२ कानून बजाने वाले। क़ानून, वीणा के प्रकार का बाजा होता है।
३ शहनाई के समान एक बाजा।
४ अकबर नामा में 'मुहम्मद ख़फ़ी' (रिजवी मुग़ुल कालीन भारत—हुमायूं, भाग १, पृ० १४०)।
५ पक्षियों का शिकार करने वाले विभिन्न प्रकार के पक्षी।
६ रेशमी एव सोने के तार की कढ़ाई तथा बुनाई के विभिन्न प्रकार के कपडे।

के १२ तकूज़[1], जिनमें मखमल, अतलस, फिरंग तथा यज़्द का किमखाब, बाफना शामी[2] जो अत्योत्तम हों सम्मिलित हों। ३०० सोने के तूमान ३० थैलियों में रखकर उपर्युक्त कपड़े सहित तैयार रक्खे जायें। सेना के प्रत्येक व्यक्ति को तीन तबरेज़ी तूमान, जो ६०० शाही[3] के बराबर होते हैं, प्रदान किये जायें। तीन दिन तक ख़्याबान एवं कारीज गाह[4] की सैर होती रहे। इन तीन दिनों में नगर के चार बाग़[5] के द्वार से, जो शाही मंज़िल है, ख़्याबान तक, जो ईदगाह के उद्यान में है, नाना प्रकार के कारीगर उचित नियम से चहार ताकबन्दी[6] करें। प्रत्येक कारीगर को एक-एक अमीर के साथ कर दिया जाय ताकि एक दूसरे से प्रतियोगिता के कारण प्रत्येक कला-कौशल का उत्तम रूप से प्रदर्शन हो।

सबसे उचित तो यह है कि जब पादशाह इस भू-भाग को अपने सम्मानित व्यक्तित्व द्वारा सुशोभित करें और सर्वप्रथम उस नगर में आयें जो संसार वालों के नेत्रों का प्रकाश है तो पहले पहल उनकी कीमिया[7] सरीखी दृष्टि के समक्ष उत्तम स्वभाव एवं मीठी वाणी के उन लोगों को जो नगर में हों प्रस्तुत किया जाय ताकि उन्हें प्रसन्नता प्राप्त हो। तीसरे दिन तक जब इस चहार ताक, नगर के ख़्याबान एवं चहार बाग़ को सजाने से मुक्ति प्राप्त हो जाय, तो उद्घोषक द्वारा नगर, मुहल्लों और आसपास के स्थानों के लोगों को, जो नगर के निकट हैं, घोषणा करा दी जाय कि समस्त स्त्री-पुरुष चौथे दिन प्रातःकाल ख़्याबान में उपस्थित हों। प्रत्येक दुकान तथा बाजार में कालीन एवं फर्श सजा दिये जायें और वहाँ स्त्रियाँ एवं बेकायें[8] बैठ जायें। नगर की प्रथानुसार स्त्रियाँ आने-जाने वालों के प्रति मधुर वाणी से मधुर व्यवहार करें। प्रत्येक मुहल्ले तथा गली से ऐसे संगीतज्ञ निकलते रहें, जो संसार में अद्वितीय हों। समस्त लोगों को आदेश दे दिया जाय कि वे स्वागत करें। तदुपरान्त पादशाह से आदरपूर्वक कहा जाय कि वे अपने प्रताप का पाँव सौभाग्य की रिकाब में रखकर सवार हों। पुत्र, हज़रत (जहाँबानी) के साथ-साथ इस प्रकार यात्रा करे कि हज़रत जहाँबानी (६१) के घोड़े का सिर एवं गरदन आगे आगे रहे। वह अयालत-पनाह स्वयं उनके पीछे-पीछे, निकट चलता रहे ताकि (हज़रत जहाँबानी) भवनों, महलों, एवं उद्यानों इत्यादि के विषय में जो प्रश्न करें उसका वह उचित उत्तर दे सके। जब वे नगर में प्रविष्ट हो जायें तो चहार बाग़ की सैर करें। वे उस वाटिका में, जो हमारे निवास के समय उस पवित्र कस्बे में इस आशय से बनवाई गई थी कि हम वहाँ निवास करें, तथा पढ़ें-लिखें और जो अब बाग़े शाही के नाम से प्रसिद्ध है, उतारे जायें।

१ तकूज़ में ९ की संख्या में चीज़ें होती हैं। ९ की शुभ संख्या के कारण बादशाह को ९-९ की संख्या में चीज़ें भेंट की जाती थीं।
२ शाम (सीरिया) के कपड़े।
३ शाही आधी पेनी के लगभग होता है। ये तूमान ६०० शाही के बराबर होंगे।(बिवरिज, पृ० ४२८)।
४ भीतरी जल धाराओं का स्थान।
५ शाही बाग़।
६ सम्भवतः चार खम्भों द्वारा सजावट का काम।
७ कीमिया रसायन, सोना चाँदी बनाने की कला।
८ सम्मानित महिलायें।

चहार बाग़ के हम्माम[1] एवं अन्य हम्मामों को साफ और स्वच्छ कराया जाय। उन्हें गुलाब एवं कस्तूरी द्वारा सुगन्धित किया जाय ताकि जब उनकी इच्छा हो, वे अपने शरीर को आराम दे सकें।

प्रथम दिन पुत्र अत्यधिक भोजन द्वारा आतिथ्य करे। जब वे आराम से सो जायें[2] तो वह अयालतपनाह स्वयं इस प्रकार अतिथि सत्कार करे जैसा कि उल्लेख किया जायगा। जब वे नगर में प्रविष्ट हो जायें तो वह उसी दिन समाचार प्रेषित करे और उसे सम्मानित दरबार में भेज दे। ऐसी व्यवस्था की जाय कि राजधानी हिरात का कलान्तर[3] किसी अनुभवी लेखक को इस आशय से नियुक्त कर दे कि उस दिन से लेकर जब से कि ५०० आदमी स्वागत् करेंगे उस दिन तक का जब वे नगर में प्रविष्ट हो जायें सविस्तार रोज़नामचा[4] उस अयालत पनाह की मुहर सहित भेजा जाय और सभी घटनायें एवं अच्छी बुरी बातें जो दरबार में घटें लिखकर, विश्वास पात्रों द्वारा सम्मानित दरबार में भेज दे ताकि उन सब बातों की हमें सूचना रहे।

वह अयालत पनाह इस प्रकार अतिथि सत्कार करे —भोजन, मिठाइयां, शरबत एवं मेवों के ३,००० थाल तैयार किए जायें। आवश्यक फराश[5] की इस प्रकार व्यवस्था की जाय —सर्वप्रथम ५० खेमे, २० शामियाने, असबाब रखने के बड़े खेमे जो कहा जाता है कि विशेष रूप से उसके लिये[6] तैयार किए गए हैं, १२ जोड़ कालीन १२ हाथ × १२ हाथ, सात जोड़ कालीन ५ हाथ के, ९ कितार ऊँटनियाँ, २५० चीनी के छोटे बड़े थाल, अन्य थाल एवं देग, सफेद कलई किए ढक्कनों सहित, २ तकूज़ ख़च्चरों की क़ितार अयालत-पनाह स्वयं अपनी ओर से अतिथि सत्कार के रूप में भेंट करे।

अमीरों को आदेश दे दिया जाय कि वे इस प्रकार आतिथ्य करें —भोजन, हलवे, पालूदे १५०० थाल, ३ घोड़े, एक कितार ऊँट, एक कितार ख़च्चर जिन्हें उस अयालत-पनाह ने स्वयं देख कर पसन्द कर लिया हो, भेंट करें। गूरियान, फूशज, तथा करशू के हाकिम अपनी-अपनी विलायत में आतिथ्य का प्रबन्ध करें। बाखर्ज़ का हाकिम, जाम में अतिथि सत्कार करें। खाफ़, तरशीज, ज़ावहर एवं मुहव्वलात के हाकिम, सराय फरहाद के महाल में, जो मशहद से ५ फरसंग पर है, आतिथ्य का प्रबन्ध करें।

१ स्नान, विशेष रूप से गरम जल से स्नान का कमरा। बाबर ने हिन्दुस्तान में भी अनेक हम्मामों का निर्माण कराया। **बाबर नामा** में इनका बड़े विस्तार से उल्लेख हुआ है।

२ उपर्युक्त पत्र में निम्नांकित वाक्य छूट गया है। दोनों वाक्य अयालत पनाह से प्रारम्भ होते हैं अतः प्रथम वाक्य का छूट जाना आश्चर्यजनक नहीं। बायज़ीद द्वारा उद्धृत पत्र में छूटा हुआ वाक्य इस प्रकार है जब वे आराम से सो जायं तो वह अयालत पनाह प्रतिष्ठित अमीरों को अपने पास बुलाकर यह आदेश दे कि उनमें से प्रत्येक एक दिन उस पादशाह की, जो ईश्वर की अनुकम्पा है, किसी न किसी बाग़ में मेहमानी का प्रबन्ध करेगा। दो अन्य दिन उपर्युक्त पुत्र आतिथ्य करे। तदुपरान्त वह अयालत पनाह स्वयं इस प्रकार । (बायज़ीद **तारीखे हुमायूं व अकबर**, पृ० २८)।

३ मुख्य प्रबन्धक।

४ दैनिंदिनी, डायरी।

५ फ़र्नीचर।

६ शाह तहमास्प के लिये।

हुमायूँ का शाह तहमास्प को भेंट हेतु प्रस्थान

जब उत्कृष्ट लश्कर फराह के समीप पहुँचा तो शाह का राजदूत भी हजरत जन्नत आशियानी के दूत के साथ उस क्षेत्र में पहुँच गया और उनके *आगमन* पर *स्वर्गीय शाह की प्रसन्नता का* उल्लेख किया। हजरत जन्नत आशियानी ने प्रस्थान करने का सकल्प कर लिया। भाग्यशाली रिकाब के सेवकों के हृदय चिन्ता एव घवडाहट से मुक्त होकर शान्त हो गये। वे दृढ सकल्प करके हिरात की ओर रवाना हुये। इस मार्ग में खुरासान के अधिकाश प्रतिष्ठित एव सम्मानित लोग उनके स्वागत् हेतु उपस्थित होते और दरबार के विश्वासपात्रों की भाँति सेवा करते थे। अधिकाश कस्बो के अर्थात्, जाम, तुरबत, सरख्स एव असफरायन वाले हिरात में एकत्र होकर सम्मानित लश्कर के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।

जब मुहम्मद खा को भाग्यशाली लश्कर के जियारतगाह[1] के समीप पहुचने के समाचार प्राप्त हुये तो वह अपने प्रतिष्ठित अमीरो उदाहरणार्थ वैस सुल्तान एव यादगार सुल्तान, प्रतिष्ठित विद्वानों उदाहरणार्थ मीर मुरतजा सद्र, मीर हुसेन करबलाई और समस्त विशेष एव साधारण व्यक्तियों को लेकर स्वागत् हेतु रवाना हुआ और पुले मालान[2] पर, जो हिरात की प्रसिद्ध सैर गाह है, रिकाब के चुम्बन द्वारा सम्मानित हुआ। मुहम्मद खा ने शाह की ओर से शुभ कामनायें प्रकट करके आदर सम्मान प्रदर्शित किया। यह आदेश हो गया था कि पुले मालान से बागे जहाँ आरा[3] तक मार्गों की सफाई करके छिडकाव कराया जाय और शहर के बुजुर्ग एव सम्मानित लोग दोनो ओर खडे हो जाय। जब बादशाही पताकायें मजिल[4] पर पहुँची तो सुल्तान मुहम्मद मीर्जा स्वागत् हेतु उपस्थित हुआ और आदर सम्मान प्रदर्शित किया। प्रतिष्ठित लोग शाहजादा सुल्तान मुहम्मद मीर्जा एव अन्य अमीरो के साथ सेवा में उपस्थित हुये। जियारतगाह से पुले-मालान (६२) तक और वहाँ से बागे जहाँ आरा तक, जो तीन-चार फरसख की दूरी पर है, शहर एव कस्बे वाले जगल तथा पर्वत में भरे पडे थे और (लश्कर के) दर्शन कर रहे थे। १ जीकाद ९५० हि० (२६ जनवरी १५४४ ई०) को उन लोगो ने बागे जहाँ आरा में पडाव किया। मुहम्मद खा ने पादशाहाना जश्न की व्यवस्था करके उत्तम पेशकश प्रस्तुत किये। प्रथम सभा में हाफिज साबिर काक ने, जो बडा ही अनुपम एव अद्वितीय गायक था, सेहगाह मकाम[5] में अमीर शाही की गजल गायी। समय के अनुकूल होने के कारण उसका बडा प्रभाव हुआ। उसका मत्ला[6] इस प्रकार है

१ सूफ़ियों एव आलिमों के प्रसिद्ध नगर हिरात के समीप बहुत से रौजे हैं अत निश्चयपूर्वक यह कहना कठिन है कि किस जियारतगाह का उल्लेख है।

२ मालान के पुल, मालान नदी पूर्व से आती हुई हिरात से गुजरती है। यह नगर से लगभग ४ मील दूर है।

३ हिरात का प्रसिद्ध बाग। बाबर ने बदी उज्जमान मीर्जा से इसी बाग में भेंट की थी। (बाबर नामा, पृ० ६१)।

४ सम्भवत दरकरा मजिल।

५ सेहगाह स्वर।

६ पहला शेर।

शेर

'वह निवास-स्थान बधाई का पात्र है जहाँ ऐसा चद्रमा आया हो,
वह ससार शुभ है जहाँ ऐसा बादशाह हो।'

जब वह इस शेर पर पहुँचा,

शेर

'सासारिक कष्ट एव आराम पर न तो दुखी हो और न प्रसन्न,
कारण कि ससार की अवस्था कभी इस प्रकार होती है और कभी उस प्रकार।'

हज़रत जन्नत आशियानी रोने लगे और बडे प्रभावित हुये। बादशाहाना इनाम उसकी आशा के दामन में डाल दिया।

क्योंकि हेरी[1] एव उसकी सैरगाहे उन्हे बडी पसन्द आ गई थीं और नवरोज का जश्न निकट आ गया था, अत वे कुछ दिन वहाँ ठहरे रहे। जब कभी उनकी सैर अथवा बाहर जाने की इच्छा होती, मुहम्मद खाँ उपस्थित होकर, सेवा की शर्तों को पूरा किया करता और धन-सम्पत्ति न्योछावर किया करता था। कभी वे कारीजगाह के निरीक्षण हेतु जाते और कभी बागे मुराद, बागे जहाँ नुमा, बागे जागान, एव बागे सफेद के प्रत्येक बाग में गोष्ठियाँ आयोजित होती थीं। उन्हीं दिनो में उन्होंने बडे बडे सूफियो (के मज़ारो) विशेष रूप से पीर हिरात[2] ख्वाजा अब्दुल्लाह अनसारी के मकबरे के दर्शन किये। जिस किसी स्थान के भी दरवेश अथवा एकान्तवासी की वे प्रशसा सुन पाते उसकी परोपकारी लगन से लाभान्वित होते थे। इसी प्रकार विद्वान्, कवि, योग्य एव प्रतिष्ठित लोग सर्वदा उनके स्वर्ग रूपी दरबार में उपस्थित होते रहते थे। उन्हे अत्यधिक इनाम एव अदरार[3] प्रदान होते थे। नवरोज़ के उपरान्त जाम के मार्ग से वे मशहद की ओर रवाना हुये। उस दिन सीस्तान का हाकिम अहमद सुल्तान, जो सर्वदा बडे उत्तम ढग से एव निष्ठापूर्वक सेवा किया करता था, बादशाही कृपाओ द्वारा सम्मानित होकर विदा हो गया। इस वर्ष की ५ ज़िलहिज्जा[4] (२९ फरवरी १५४४ ई०) को वे जाम पहुचे और हज़रत जिन्दा पील अहमद जाम के पवित्र मकबरे की ज़ियारत की। जब वे मशहद के समीप पहुचे तो शाह कुली सुल्तान इस्तजलू, जो उस राज्य का हाकिम

१ हिरात।

२ शेख अबू इस्माईल, ख्वाजा अब्दुल्लाह अनसारी का जन्म शाबान ३९६ हि० (मई १००६ ई०) में हुआ। वे हिरात एव खुरासान के अनसारी सिलसिले के सस्थापक थे। उनकी मृत्यु ९ रबी-उल अव्वल ४८१ हि० (२ जुलाई १०८८ ई०) को हुई। **मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १** में 'नक्शबन्दी सिलसिले के प्रसिद्ध शेख' छप गया है जो अशुद्ध है (पृ० १५६)। नक्शबन्दी सिलसिले के प्रसिद्ध सूफी उबैदुल्लाह एहरार थे। उनकी मृत्यु रबी-उस्सानी ८९६ हि० (फरवरी १४९१ ई०) में हुई। वे समरकन्द में दफ़न हुये थे।

३ इनाम से तात्पर्य है।

४ यह तिथि ठीक नहीं। हुमायू नवरोज़ के उत्सव के बाद हिरात से रवाना हुआ। नवरोज़ २१ मार्च के लगभग पड़ता है अत २९ फरवरी को प्रस्थान करने की कोई सम्भावना नहीं। इस प्रकार इस तिथि को ५ मुहर्रम (२९ मार्च १५४४ ई०) होना चाहिये कारण कि हुमायू १५ मुहर्रम ९५१ हि० (८ अप्रैल १५४४ ई०) को मशहद पहुँचा।

था, मैयिदों एव सम्मानित तथा प्रतिष्ठित लोगों के साथ, स्वागत् करके सम्मानित हुआ। १५ मुहर्रम ९५१ हि० (८ अप्रैल १५४४ ई०) को मशहदे मुकद्दस[1] पहुँचे और इमाम रिज़ा के रौजे की ज़ियारत का सम्मान प्राप्त किया। कुछ दिन तक उस पवित्र रौज़े के समीप ठहर कर वे नौशापुर[2] की ओर रवाना हुये। मीर शम्सुद्दीन अली सुल्तान उस स्थान का हाकिम[3] सर्व साधारण एव सम्मानित लोगों के साथ स्वागत् हेतु उपस्थित हुआ और नाना प्रकार की सेवायें सम्पन्न कीं। उन्हें दावत मे पधारने का निमन्त्रण देकर इस सौभाग्य द्वारा सम्मानित हुआ। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि दावत के दिन समस्त भोजनों के साथ एक हज़ार माहीचा[4] के प्याले उपस्थित किये गये थे। हज़रत जन्नत आशियानी ने आश्चर्यचकित होकर पूँछा कि, "एक दिन मे इतने सब भोजन का प्रबन्ध किस प्रकार हो गया ?" उसने निवेदन किया कि, 'इस नगर में दास के सम्बन्धियों एव निकटवर्तियों के एक हज़ार से अधिक घर हैं। इनमें से प्रत्येक एक-एक प्याला भोजन तैयार करके लाया है। सक्षेप में, उन्होने फीरोज़े की खान की सैर की। वहाँ से सब्ज़वार और सब्ज़वार से दामगान पहुँचे। वहाँ की आश्चर्यजनक वस्तुओं में एक चश्मा है जिसमें पिछले समय से एक जादू का प्रदर्शन होता है। उसमें जब कभी कोई गन्दी चीज़ डाल दी जाती है तो तूफान उठने लगता है। हवा एव धूल की तेज़ी से अंधेरा छा जाता है। उन्होंने इस चश्मे के भी दर्शन किए। दामगान से वे बिस्ताम तशरीफ ले गये। यद्यपि शेख बायजीद बिस्तामी का रौज़ा मार्ग में न था, किन्तु उन्होंने वहाँ जाकर उसकी ज़ियारत की। वहाँ से सिमनान तशरीफ ले गये। सूफियावाद में जहाँ शेख अलाउद्दौला सिमनानी[5] का मकबरा है, पहुँच कर आध्यात्मिक लाभ उठाया। वे सांसारिक एव आध्यात्मिक बादशाह[6] चाहे कहीं यात्रा कर रहे हो और या ठहरे हो, आध्यात्मिक ज्ञान वालों से सम्पर्क स्थापित करके अपने ईश्वर का ज्ञान रखने वाले हृदय को लाभ पहुचाते थे। प्रत्येक मंज़िल एव नगर में उस स्थान के प्रतिष्ठित लोग एव हाकिम उनकी सेवा का सम्मान प्राप्त करके आतिथ्य एव नम्रता प्रदर्शित करते थे। शाह के पास से सर्वदा भेंट की इच्छा प्रकट करते हुए तथा प्रोत्साहन (६३) युक्त फरमान प्राप्त होते रहते थे। वे किसी न किसी बहाने से उत्तम एव सुन्दर वस्तुयें भेजा करते थे।

हुमायूं एवं शाह तहमास्प की भेंट

जब बादशाह के सम्मानित शिविर दारुल मुल्क रै[7] पहुँचे, हज़रत शाह ग्रीष्म ऋतु व्यतीत करने

१ पवित्र मशहद।

२ नौशापुर: खुरासान के चार प्रसिद्ध नगरों (नौशापुर, मर्व, हिरात तथा बल्ख) में से एक है। यह ३६°१२′ उत्तर तथा ३८°४०′ पूर्व में स्थित है।

३ गवर्नर।

४ एक प्रकार की सिवैयां।

५ अबुल मकारिम रुक्नुद्दीन शेख अलाउद्दौला सिमनानी का निधन २२ रजब ७३६ हि० (६ मार्च १३३६ ई०) को हुआ। वे शेख मुही उद्दीन इब्ने अरबी के वहदते वुजूद सिद्धात के बडे विरोधी एवं वहदते शुहूद के संस्थापक थे।

६ हुमायूँ से तात्पर्य है।

७ आधुनिक तेहरान के समीप ५ मील पर। यहां से पश्चिमी तथा पूर्वी ईरान से रेगिस्तानों एवं पहाडियों के बावजूद सम्पर्क रहता है।

कज़वीन से सुल्तानिया[1] एवं सूरलीक की ओर चल दिये। हज़रत जन्नत आशियानी ने शाह की राजधानी कज़वीन में पड़ाव किया। उस स्थान के सर्व साधारण एवं सम्मानित लोग स्वागत् हेतु रवाना हुये और सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त करके सम्मानित हुये। हज़रत जन्नत आशियानी ने ख्वाजा अब्दुल ग़नी, जो उस शहर का कलांतर[2] था, के घरों में पड़ाव किया। शाह प्रारम्भ में उन्हीं घरों में रहा करते थे। उन्होंने बैराम खां को शाह के पास भेजा। शाह अपनी मंज़िल के समीप पहुँच गये थे कि बैराम खां उनकी सेवा द्वारा सम्मानित हुआ। उसे उसी मंज़िल से वापस चले जाने की अनुमति प्राप्त हो गई। हज़रत जन्नत आशियानी कज़वीन से सुल्तानिया तशरीफ़ ले गये। हज़रत शाह अबहर[3] एवं सुल्तानिया के मध्य में तशरीफ़ रखते थे। जब सम्मानित लश्कर उस क्षेत्र में पहुंचा, तो सवप्रथम प्रतिष्ठित अमीर विभिन्न दलों में स्वागत् के सौभाग्य द्वारा सम्मानित हुये। तदुपरान्त बहराम मीर्ज़ा एवं साम मीर्ज़ा, जो शाह के सम्मानित भाई थे, तशरीफ़ लाये। जमादी-उल-अव्वल ९५१ हि० (जुलाई-अगस्त १५४४ ई०) में शाह ने स्वयं स्वागत् करके प्रेम, निष्ठा एवं आदर सम्मान की शर्तों को पूरा किया। नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा उन्हें सांत्वना दी। एक ऐसे भवन में जो बड़ा ही भव्य था और जिसमें जादू सरीखा प्रभाव रखने वाले चित्रकारों एवं अद्वितीय नक्काशों ने काम बनाये थे, संगठन की सभा आयोजित करके पादशाहाना मजलिस का प्रबन्ध कराया। मीर्ज़ा कासिम गोनाबादी ने अपने मसनवी[4] के ग्रन्थ में जिसे उसने शाह के नाम पर सर्मपित किया और जिसका नाम शहंशाह नामा रक्खा, इन दो बादशाहों की भेंट के विषय में यह (कविता) लिखी है

मसनवी

'दो साहब किरान एक जश्न की सभा में,
एक दूसरे का संसर्ग हुआ, सूर्य तथा चन्द्रमा के समान।
प्रताप के नेत्रों के लिये दो दृष्टि का प्रकाश हुआ,
दो शुभ ईदें हुईं मास एवं वर्ष के लिये।
दो नक्षत्र आकाश की शोभा प्रदान कर रहे थे,
एक ही स्थान पर साथ थे, फ़र्कदैन[5] के समान।
संसार के दो नेत्र, साथ-साथ,
दो शिष्टाचार प्रदर्शित करती हुई भृकुटियों के समान।
दो शुभ नक्षत्रों का एक ही राशि में स्थान,
दो प्रतिष्ठित मोतियों की एक ही डिबिया में जगह।'

१ क़ज़वीन के अधीनस्थ एक फ़ौजी छावनी।
२ सर्वोच्च अधिकारी से तात्पर्य है।
३ क़ज़वीन तथा ज़ंजान के मध्य में, जो अब लगभग नष्ट हो चुका है। यह क़ज़वीन के पश्चिम में स्थित है।
४ काव्य का ऐसा रूप जिसके प्रत्येक शेर के दोनों मिसरे एक ही रदीफ़ एवं काफ़िये में होते हैं। इसमें अधिकांश किसी कहानी अथवा घटना का उल्लेख होता है।
५ ध्रुव के समीप के दो सितारे।

शाह ने कहा, 'हज़रत गेती सितानी फिरदौस मकानी को हिन्दुस्तान की विजय आपकी ससार विजय करने वाली तलवार की शक्ति द्वारा प्राप्त हुई। इस समय दुर्भाग्यवश आप को जो हानि उठानी पडी, वह कृतघ्न भाइया एव उपकार न मानने वाले अमीरो के सहायता न करने के कारण प्राप्त हुई। ससार में भाइया की सहायता का बडा महत्व प्राप्त है।

मिसरा

'नि सन्देह सगठन द्वारा ससार पर विजय प्राप्त हो सकती है।'

विशेष रूप से जहाँगीरी एव मुल्क कुशाई[1] मे (सगठन को बडा महत्व प्राप्त है)। अब आप मुझे अपना सहायक भाई समझ कर अपना मददगार समझें। मैं पूर्ण परिश्रम करके सहायता एव सहयोग की जो शर्तें हैं उन्हे आपकी इच्छानुसार पूरी करूँगा, पिछले हको पर ध्यान रखते हुये जितनी कुमक की भी आवश्यकता होगी, उसकी व्यवस्था करूगा। यदि मुझे स्वय भी चलना पडा तो कुमक के रूप मे साथ चलूँगा।" इस प्रकार की बातें करके उन्होंने हज़रत जन्नत आशियानी को अत्यधिक सात्वना दी। कई दिन तक शाहाना जश्न होता रहा। हज़रत शाह रोज़ाना समस्त प्रबन्ध स्वय कराने के उपरान्त सभायें करते थे और ऐश्वर्य एव वैभव के प्रदर्शन का अत्यधिक प्रयत्न करते थे। एराकी घोडे एव बरदा[2] के खच्चर सुनहरी तथा जडाऊ ज़ीनो सहित बडी सख्या में रत्न-जटित तलवारें और कटार, उत्तम वस्त्र, केश[3] तथा लोमडी की पोस्तीने, सोने चाँदी के बरतन एवं सामान, उत्कृष्ट खरगाह[4] उत्तम फर्श एव सल्तनत की समस्त सामग्री जो उनकी सरकार के लिये उपर्युक्त थी, उनकी सेवा में प्रस्तुत की। सम्मानित रिकाब के समस्त सेवको को उनकी श्रेणी के अनुसार नकद धन एव सामान प्रदान किये। हज़रत जन्नत आशियानी ने वह हीरा, जो हिन्दुस्तान की विजय के पश्चात् उन्हे प्राप्त हुआ था, २५० बदख्शाँ क लालो सहित उपहार स्वरूप भेंट किया। यद्यपि हज़रत शाह की ओर से किसी भी आतिथ्य एव उत्तम प्रबन्ध में लेशमात्र को भी (६४) कमी न हुई और जैसा कि आवश्यक था, उसी प्रकार उ हान व्यवहार किया किन्तु जिस तारीख से उत्कृष्ट लश्कर उस देश में प्रविष्ट हुआ उस तारीख से लेकर उनकी वापसी तक शाह की सरकार एव उनसे सम्बन्धित लोगा द्वारा जो कुछ व्यय हुआ था, उसका बदला हज़रत जन्नत आशियानी के उस उपहार से पूरा हो गया अपितु उन्हाने कई गुना अधिक बदला चुका दिया।

सक्षेप में, वे वहाँ से सुल्तानिया की ओर रवानाँ हुये और सर्वदा आनन्द मगल में एव सफलतापूर्वक समय व्यतीत करते थ। पादशाहाना जश्न होते रहते थे। यद्यपि कुछ दिन तक कुछ षड्यत्रकारियो के बहकाने से शाह एव हज़रत जन्नत-आशियानी के हृदय मलिन हो गय थे किन्तु यह स्थिति बहुत समय तक न रही। वाह्य एव आन्तरिक रूप से सम्मानित उन दोना व्यक्तियो की बुद्धि की पालिश से वह मैल दूर हो गया। हज़रत शाह ने हज़रत जन्नत आशियानी का दिल

१ ससार की विजय तथा देशों के जीतने।
२ सम्भवत ईरान के किसी नगर का नाम।
३ एक प्रकार का मलमल।
४ बड़े खेमे।

बहलाने के लिये कमरगह[1] शिकार का आयोजन कराया। दस दिन की यात्रा के मार्ग से वन पशु हका कर उस चश्मे पर, जो सावूक बीलाक के नाम से प्रसिद्ध है, एकत्र किये गये। सर्वप्रथम हज़रत शाह एवं हज़रत जन्नत आशियानी साथ-साथ शिकारगाह में प्रविष्ट हुये और दोनों खूब शिकार खेलते रहे। तदुपरान्त बहराम मीर्ज़ा एवं साम मीर्ज़ा को, फिर बैराम ख़ा, हाजी मुहम्मद कोकी, शाह कुली सुल्तान मुहरदार, रोशन कोका, हसन कोका को जो हज़रत जन्नत आशियानी के अमीर थे और शाही अमीरों में से अब्दुल्लाह ख़ा इस्तजलू जो सम्मानित शाह इस्माईल का जामाता था, अबुल कासिम खुलफा, सवु-दुक सुल्तान कूरची बाशी अफशार, बद्र ख़ा इस्तजलू तथा कुछ अन्य लोग (शाह के) आदेशानुसार कमरगह में प्रविष्ट हो गये। कुछ देर बाद सभी लोगों को शिकार खेलने की अनुमति प्राप्त हो गई। शिकार में बहराम मीर्ज़ा ने, जिससे खुलफा से शत्रुता थी, भीड़ में उसकी ओर बाण चला दिया। वह उसी बाण द्वारा मृत्यु को प्राप्त हो गया। मीर्ज़ा की प्रसन्नता की दृष्टि से शाह से किसी ने यह बात न कही। तदुपरान्त आदेश हुआ कि विजयी सेना हौज़े सुलैमान के समीप पुन कमरगह का आयोजन करे। जब जानवर एकत्र हो गये तो वहाँ भी उन्होंने इच्छानुसार शिकार खेला। उसी मंज़िल पर चौगान एवं कब्क[2] का भी खेल हुआ। चगताई अमीरों ने कब्क पर खूब निशाने लगाये। उस दिन बाण चलाने के पुरस्कार स्वरूप बैराम ख़ा को ख़ान की उपाधि एवं हाजी मुहम्मद कोकी को सुल्तान की उपाधि द्वारा सम्मानित किया गया। अन्तिम दरबार में १२,००० अश्वारोहियों की सूची, जिन्हें शाह ने अपने प्रिय पुत्र मीर्ज़ा मुराद के अधीन हज़रत जन्नत आशियानी की कुमक हेतु नियुक्त किया था, कारख़ानों के असबाब के साथ हज़रत जहाँबानी की सेवा में प्रस्तुत की गई। शाह के जो अमीर कुमक हेतु नियुक्त हुये थे, उनकी सूची इस प्रकार है:

(१) मीर्ज़ा मुराद भाग्यशाली पुत्र
(२) शाह बुदाग ख़ा काचार मीर्ज़ा का लला[3]
(३) मीर्ज़ा शाह कुली सुल्तान अफशार, किरमान का हाकिम
(४) अहमद सुल्तान शामलू वल्द मुहम्मद ख़लीफा
(५) रजाब सुल्तान अफशार, फरह का हाकिम
(६) यार अली सुल्तान तकलू
(७) सुल्तान अली अफशार
(८) सुल्तान कुली कूरची बाशी, मुहम्मद ख़ा का सम्बन्धी
(९) याकूब मीर्ज़ा, सुल्तान मुहम्मद ख़ुदाबन्दा का तगाई[4]
(१०) सुल्तान हुसेन कुली शामलू, सीस्तान का हाकिम अहमद सुल्तान का भाई

१ घेरे का शिकार।
२ बाण चलाने की प्रतियोगिता के समय एक कद्दू लटका दिया जाता था और धनुर्धारी उस पर बाण से निशाना लगाते थे।
३ गुरू, अतालीक़।
४ मामा।

(११) अदहम मीर्ज़ा वल्द देव सुल्तान
(१२) तहमत्तन मीर्ज़ा वल्द देव सुल्तान
(१३) हैदर सुल्तान शैवानी
(१४) अली कुली } हैदर सुल्तान के पुत्र
(१५) बहादुर }
(१६) मकसूद मीर्ज़ा आस्ता बेगी वल्द जैनुद्दीन सुल्तान शामलू
(१७) मुहम्मदी मीर्ज़ा, जहान शाह मीर्ज़ा का नबीरा (पौत्र) शाह वरदी बेग के नाम से प्रसिद्ध
(१८) अजल इस्तजलू
(१९) अली सुल्तान जुलाक, मुहम्मद खा का भागिनेय
(२०) अबुल फतह सुल्तान अफशार
(२१) हसन सुल्तान शामलू
(२२) यादगार सुल्तान मोसलू
(२३) अहमद सुल्तान अलाग ऊगली इस्तजलू
(२४) साफ़ी वली सुल्तान सूफियान रूमलू का खलीफा
(२५) अली बेग जुल्फेकार कुश
(२६) मुहम्मद बेग कित्ताबदार काचार।

३०० खासे[1] के क़ूरची भी उचित सामान सहित नियुक्त हुये। तीसरी बार आक[2] ज़ियारत में, जो कि सूरलोक के गरमी में समय व्यतीत करने की अंतिम मंजिल है, क़मरगह का शिकार हुआ। मियाना नामक स्थान पर, जो अपनी जल-वायु के लिये बड़ा प्रसिद्ध है, जम सरीखे शाह हज़रत पादशाह के शिविर तक उन्हे पहुँचाने की प्रथा का पालन करने के उद्देश्य से आये और उन्हें विदा कर दिया।

हुमायूं का क़न्धार की ओर प्रस्थान

हज़रत जन्नत आशियानी पवित्र स्थानों की सैर एवं ज़ियारत हेतु तबरेज़ एवं अर्दबेल की ओर रवाना हुये। मरियम मकानी का सम्मानित हौदज समस्त सेवकों सहित क़न्धार की ओर भेज दिया। हाजी मुहम्मद खा को मरियम मकानी की सेवा हेतु नियुक्त किया और उनके साथ के आदमियों का सरदार बनाया। कुमक हेतु जो १२,००० अश्वारोही नियुक्त हुये थे, उन्हें सामान एवं यात्रा की तैयारी हेतु विदा कर दिया। उन्हें यह आदेश हुआ कि जब भाग्यशाली पताकायें हेलमन्द नदी पर पहुँचें तो शाहज़ादा मुराद मीर्ज़ा निश्चिन्त होकर सेना सहित आकर साथ हो जायं। हज़रत जन्नत आशियानी सर्वप्रथम तबरेज़ की ओर रवाना हुये। जब वे तबरेज़ के समीप पहुँचे, तो उस स्थान के हाकिम एवं प्रतिष्ठित लोग उस बाँध तक, जिसको मीर्ज़ा मीरान शाह[3] ने निर्माण कराया था, स्वागत हेतु पहुँचे और फ़र्श चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। शहर के हाकिम ने शाही आदेशानुसार

१ जिनका सम्बन्ध शाह से था।
२ कुछ पोथियों एवं प्रकाशित ग्रन्थ में 'बरान ज़ियारत'।
३ मीरान शाह तीमूर का एक पुत्र था।

शहर की आईना बन्दी[1] करके सेवा एवं आतिथ्य की व्यवस्था की। भेडियों की दौड एवं पैदल चौगान बाज़ी, जो तबरेज़ की विशेषता है और जिन्हें उस समय लोगों के विद्रोह एवं संयम (६५) के विरुद्ध कार्य करने के भय से रोक दिया गया था, उनकी खुशी के लिये आयोजित हुईं। हज़रत जन्नत आशियानी ने तबरेज़ की सरकारों एवं उस नगर के भव्य भवनों का, जो भूतकाल के सुल्तानों के अवशेष हैं, निरीक्षण किया। मुल्ला कुतुबुद्दीन जलजू बग़दादी उस उत्कृष्ट नगर में सेवा में उपस्थित होकर सम्मानित हुआ और मशहदे मुकद्दस तक उत्कृष्ट रिकाब के साथ रहा। ख्वाजा अब्दुस्समद शीरीं कलम ने भी उसी नगर में सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। ख्वाजा के चित्र एवं उसकी कला उन्हें बड़ी पसन्द आई किन्तु कुछ कारणवश वह उस समय उनके साथ जाने का सौभाग्य न प्राप्त कर सका। एक बडा विचित्र संयोग यह है —क्योंकि हज़रत जन्नत आशियानी के पवित्र हृदय को उस्तुरलाब[2], कुर्रह[3] एवं वेधशाला के समस्त यन्त्रों से अत्यधिक रुचि थी, अत. उन्होंने बेग मुहम्मद आख्ता बेगी को आदेश दिया कि वह इस नगर में (इन यन्त्रों का) पता लगाये। उस सरल स्वभाव के व्यक्ति ने कुछ कुर्रे[4] तथा घोड़ियाँ लाकर प्रस्तुत की। हज़रत जन्नत आशियानी खूब हँसे और फाल के उद्देश्य से उन्हे क्रय कर लिया। तबरेज़ की सैर के उपरान्त वे अर्दबेल की ओर रवाना हुये।

जब उत्कृष्ट सवारी सम्मासी[5] कस्बे में पहुँची तो समस्त शेखज़ादे, जो सम्मानित शाह के सम्बन्धी थे, उस समय के समस्त प्रतिष्ठित एवं सम्मानित व्यक्तियों सहित आकर सेवा में उपस्थित हुये। एक सप्ताह तक वे अर्दबेल में ठहरे रहे। वहाँ से वे खलखाल, खलखाल से तारम और तारम से खर्ज-बेल पहुँचे। क्योंकि वहाँ की जलवायु एवं फल उन्हे बडे पसन्द थे, वे वहाँ तीन दिन तक ठहरे रहे। सब्ज़वार से शाही लश्कर में पहुच गये। इस मंज़िल पर हज़रत मरियम मकानी के एक पुत्री पैदा हुई। मीर शम्सुद्दीन अली सुल्तान ने पुन. उचित सेवायें सम्पन्न की और उत्तम रूप से आतिथ्य किया। जब विजयी लश्कर मशहदे मुकद्दस पहुँचा तो शाह के लश्कर के एकत्र होने की प्रतीक्षा में वे कुछ दिन तक वहाँ ठहरे रहे। इस स्थान से उन्होंने अब्दुल फत्ताह कुरकीराक को सावरी[6] की वसूली के लिये, जो हिरात से निश्चित की गई थी, भेजा। लौटते समय उसकी मृत्यु हो गई। इस स्थान से उन्होंने मौलाना नूरुद्दीन मुहम्मद तरखान को शेख अबुल कासिम जुर्जानी एवं मौलाना इलियास अर्दबेली को, जो अतरंग एवं बहिरंग में पूर्ण योग्यता से सुशोभित थे, बुलाने के लिए भेजा। उन लोगों ने काबुल में पहुँच कर सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। जितने समय तक वे मशहदे मुकद्दस में ठहरे रहे, वे सर्वदा विद्वानों एवं कवियों के साथ शाहाना गोष्ठी करते रहे। एक दिन मौलाना हैरती ने अपनी यह ग़ज़ल संशोधन हेतु हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में प्रस्तुत की :

१ सजावट इत्यादि।
२ एक यन्त्र जिससे ग्रहों आदि की नाप होती है।
३ ग्रहों आदि की जानकारी का गोला।
४ गधे अथवा घोडे के बच्चे, बछेडे।
५ कुछ पोथियों में 'शम्मासी,' अर्दबेल के समीप एक ग्राम।
६ आर्थिक सहायता।

रुबाई[1]

'कभी मेरा दिल तो कभी मेरा जिगर माशूकों के प्रेम के कारण जलता है,
प्रेम हर क्षण एक नये दाग द्वारा जलता है।
पतिंगे के समान मेरा सम्बन्ध मोमबत्ती से है,
यदि मैं आगे बढ़ूँ तो मेरे बाल व पर जल जाँय।'[2]

हज़रत जन्नत आशियानी ने कविता के समझने की योग्यता एव अपनी सूझ बूझ के अनुसार सशोधन कर दिया।

'आगे बढ़ूँ अगर तो मेरे बाल व पर जल जाय।'[3]

मौलाना ने न्याय की दृष्टि से निष्ठापूर्वक सिज्दा किया। सम्मानित शिविर का पडाव मशहद से सीस्तान में हुआ। इस क्षेत्र में शाहज़ादा एव शाही अमीर हज़रत जन्नत आशियानी के पास पहुँच गये। वहाँ से उन्होंने गर्मसीर में पडाव किया। मीर अब्दुल हई गरमसीरी एकी नामक किले से अपनी ग्रीवा में निपग लटकाये उपस्थित हुआ और चौखट का चुम्बन किया। अपनी पिछली भूलो एव इससे पूर्व साथ प्रस्थान करने के सौभाग्य से वचित रह जाने के विषय में क्षमा याचना की। क्योंकि अपराधो को क्षमा सम्मानित बादशाहो की प्रथा है, अत उन्होंने उसकी याचना को स्वीकार करते हुए, बादशाही कृपाओं द्वारा सम्मानित किया। जब बात इस स्थान तक पहुँच गई है तो उन लोगो के नाम जो इस यात्रा में उनके साथ थे, लिखे जाते हैं।

हुमायूँ के सहायक

(१) निष्ठावाना एव स्वामी भक्तो का सरदार, जो सौभाग्य के समान हज़रत जन्नत आशियानी की रिकाब के साथ रहता था, बैराम खा था।

(२) ख्वाजा मुअज़्ज़म जो हज़रत मरियम मकानी का एक ही माता का भिन्न पिता से उत्पन्न भाई था, प्रारम्भ से ही मस्तिष्क की उग्रता एव स्वभाव की उष्णता से शून्य न था किन्तु शनै शनै उसमें वृद्धि होती गई। उसका अन्त अपने स्थान पर लिखा जायगा।

(३) आक़िल सुल्तान ऊज़बक, आदिल सुल्तान का पुत्र जो माता की ओर से सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा का पौत्र था। यद्यपि प्रारम्भ में वह सेवको में सम्मिलित था, किन्तु बाद में शोकग्रस्त लोगो में सम्मिलित हो गया।

(४) हाजी मुहम्मद काकी, कोकी का भाई जो हज़रत फ़िरदौस मकानी के प्रतिष्ठित अमीरो में से था। वह पौरुष में अद्वितीय था। सम्मानित शाह कहा करते थे कि बादशाहो के (६६) ऐसे ही सेवक होने चाहिये। क़ब्क़ पर निशाना मारने के दिन उसने क़ब्क़ चलाने पर शाह से

१ मुग़ल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १ में रुबाई के स्थान पर मिसरा छप गया है।
२ कि अगर पेश रवम बालो परम मी सोज़द।

کہ اگر پیش روم بال و پرم می سوزد

३ मी रवम पेश अगर बालो परम मी सोज़द।

می روم پیش اگر بال و پرم می سوزد

पुरस्कार प्राप्त किया। कहा जाता है कि एक दिन शाह जन्नत आशियानी के साथ शिकारगाह में थे। सयोग से वे उतर कर बैठने के विषय में सोचने लगे। शाह के फर्राशों ने कालीन को ८ पहल करके शाह के लिये बिछा दिया। क्योंकि वहाँ हज़रत जन्नत आशियानी के बैठने के लिये दूसरा फर्श न था, हाजी मुहम्मद कोका ने अपना निपग तोड़कर उनके लिये फर्श बना दिया। शाह को उसकी यह तत्परता बड़ी पसन्द आई।

रोशन कोका, हजरत जहाँबानी जन्नत आशियानी का कुकुल्ताश था।

हसन बेग, मीर्ज़ा कामरान के कुकुल्ताश महरम कोका का भाई।

हिरात का ख्वाजा मक्सूद। उसे सर्वदा हज़रत मरियम मकानी के हौदज की सेवा करने का सम्मान प्राप्त रहता था। वह बड़े पवित्र स्वभाव का एव पवित्र जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति था। उसके पुत्रा सैफ खा एव जैन खा को हज़रत खाकानी के कुकुल्तारा होन का सम्मान प्राप्त था। सैफ खा[1] ने गुजरात विजय के वर्ष रिकाब के अधीन शहादत का शरबत चक्खा। जैन खा[2] हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में बहुत समय तक रहा और अमीरुल उमरा की श्रेणी को प्राप्त हुआ।

ख्वाजा ग़ाज़ी तबरेज़ी जिसे इशराफ़े दीवानी[3] का पद प्राप्त था।

ख्वाजा अमीनुद्दीन महमूद हरवी[4] बड़ा उत्तम नवीसिन्दा था। वह खत शिकस्त[5] बड़े ही अच्छे ढग से लिखता था। हज़रत खाकानी के राज्य में उसे ख्वाजा जहाँ की उपाधि प्रदान हुई और वह वकालत के उच्च पद पर सुशोभित हुआ।

बाबा दोस्त बख्शी भी लेखका तथा सियाक[6] के ज्ञानियो में था।

दरवेश मक्सूद बगाली हिरात की ज़ियारतगाह से सम्बन्धित था और दरवेशो सरीखे स्वभाव का व्यक्ति था। हज़रत जन्नत आशियानी उसके प्रति विशेष रूप से कृपा-दृष्टि रखते थे।

हसन अली ईशक आका।

अली दोस्त बारबेगी उपर्युक्त हसन का पुत्र था।

इबराहीम ईशक आका।

शेख यूसुफ चोली।

शख बहलूल, वह बड़ा ही योग्य सेवक था।

मौलाना नूरुद्दीन जिसे हिन्दसे[7], ज्योतिष एव उस्तुरलाब का उत्तम ज्ञान था। वह हज़रत जन्नत आशियानी के दरबारियो में से था। हज़रत खाकानी के राज्यकाल में वह तरखान की उपाधि द्वारा सम्मानित किया गया था।

१ देखिए H Blochman *Ain i-Akbari* (१८३९ ई०), पृ० ३७५।
२ देखिए H Blochman *Ain-i Akbari* (१८३९ ई०), पृ० ३६७ ३६९।
३ इशराफ़े दीवानी का पद अथवा मुशरिफ़ राज्य की आय की देख रेख रखने वाला अधिकारी।
४ हिरात का।
५ लिपि की एक शैली।
६ हिसाब किताब, एकाउटेंसी।
७ गणित।

मुहम्मद कासिम मौजी, जो बदख्शाँ में जालाबानी की सेवा किया करता था। हज़रत खाकानी के राज्यकाल में वह मीर बहर[1] हो गया।

हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी[2]।

सैयिद मुहम्मद पकना बड़ा वीर एवं हाथ का बड़ा कुशल[3] था।

सैयिद मुहम्मद काली जिसे मीर अदल का पद प्राप्त था और जो दरबार मे बैठने वालो में से था।

हाफिज़ सुल्तान मुहम्मद रखना, मार्मिक शेर पढता था। वह तजर्रुद[4] के वस्त्र में सेवा में उपस्थित हुआ। उसने सहरिन्द में एक बड़े हृदयग्राही उद्यान का निर्माण कराया जो प्रशंसा के योग्य है।

मीर्ज़ा बेग बिलोच तथा मीर हुसेन दोनों दरबार के सेवकों में से थे।

ख्वाजा अम्बर नाज़िर जो ऐसा विश्वासपात्र था कि उसे एकान्त में भी उपस्थित रहने की अनुमति थी। हज़रत शहंशाह ने उसे एतबार खां की उपाधि प्रदान कर दी थी। वह हज़रत मरियम मकानी के सम्मानित हौदज के परदा-दारों में से था।

आरिफ तूशकची[5], हज़रत जन्नत आशियानी से उसे बहार खां की उपाधि प्राप्त हुई और उत्कृष्ट सेवा द्वारा सम्मानित हुआ।

निष्ठावान् दासों एवं हितैषी सेवकों में निम्नांकित थे —

(१) मेहतर खां खज़ानादार[6]
(२) मेहतर फाखिर[7] तूशकची
(३) मुल्ला बिलाल किताबदार[8]
(४) मेहतर तीमूर शरबतची[9]
(५) मेहतर जौहर आफताबची[10]
(६) मेहतर वकीला खज़ान्ची

१ नाविक, वह अधिकारी जो नौकाओं, पुल इत्यादि तथा नदी पार कराने का प्रबन्ध करता था।
२ वह अधिकारी जो शाही घोड़ों इत्यादि को आख्ता अथवा बधिया किया करता था।
३ सम्भवतः निशाना लगाने में।
४ वैराग्य।
५ वस्त्रों के एवं बिछौनों के भण्डार का मुख्य अधिकारी। 'आईने अकबरी' में देखिये 'आईने करकीराक़ खाना व तूशक खाना'।
६ कोषाध्यक्ष।
७ कुछ पोथियों एवं प्रकाशित ग्रंथ में 'हाजिर'।
८ पुस्तकालयाध्यक्ष।
९ वह अधिकारी जो बादशाह के प्रयोग के शरबत एवं पेय का प्रबन्ध करता था।
१० आफ़्ताबा (वह लोटा जिसमें टोंटी हो) रखने वाला। उसका कर्तव्य बादशाह के मुँह-हाथ धुलाना होता था। जौहर, तज़्किरतुल वाक़ेआत का लेखक था।

पुरस्कार प्राप्त किया। कहा जाता है कि एक दिन शाह जन्नत आशियानी के साथ शिकारगाह में थे। संयोग से वे उतर कर बैठने के विषय में सोचने लगे। शाह के फर्राशों ने कालीन को ८ पहल करके शाह के लिये बिछा दिया। क्योंकि वहाँ हज़रत जन्नत आशियानी के बैठने के लिये दूसरा फर्श न था, हाजी मुहम्मद कोकी ने अपना निफ्ग तोड़कर उनके लिये फर्श बना दिया। शाह को उसकी यह तत्परता बड़ी पसन्द आई।

रोशन कोका, हज़रत जहाँबानी जन्नत आशियानी का कुकुल्ताश था।

हसन बेग, मीर्ज़ा कामरान के कुकुल्ताश महरम कोका का भाई।

हिरात का ख्वाजा मकसूद। उसे सर्वदा हज़रत मरियम मकानी के हौदज की सेवा करने का सम्मान प्राप्त रहता था। वह बड़े पवित्र स्वभाव का एवं पवित्र जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति था। उसके पुत्रों सैफ खाँ एवं जैन खाँ को हज़रत खाकानी के कुकुल्ताश-होने का सम्मान प्राप्त था। सैफ खाँ[1] ने गुजरात विजय के वर्ष रिकाब के अधीन शहादत का शरबत चक्खा। जैन खाँ[2] हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में बहुत समय तक रहा और अमीरुल उमरा की श्रेणी को प्राप्त हुआ।

ख्वाजा ग़ाज़ी तबरेज़ी जिसे इशराफे दीवानी[3] का पद प्राप्त था।

ख्वाजा अमीनुद्दीन महमूद हरवी[4] बड़ा उत्तम नवीसिन्दा था। वह खत शिकस्त[5] बड़े ही अच्छे ढंग से लिखता था। हज़रत खाकानी के राज्य में उसे ख्वाजा जहाँ की उपाधि प्रदान हुई और वह वकालत के उच्च पद पर सुशोभित हुआ।

बाबा दोस्त बख्शी भी लेखकों तथा सियाक[6] के ज्ञानियों में था।

दरवेश मक्सूद बंगाली हिरात की ज़ियारतगाह से सम्बन्धित था और दरवेशों सरीखे स्वभाव का व्यक्ति था। हज़रत जन्नत आशियानी उसके प्रति विशेष रूप से कृपा-दृष्टि रखते थे।

हसन अली ईशक आका।

अली दोस्त बारबेगी उपर्युक्त हसन का पुत्र था।

इबराहीम ईशक आका।

शेख यूसुफ चोली।

शेख बहलूल, वह बड़ा ही योग्य सेवक था।

मौलाना नूरुद्दीन जिसे हिन्दसे[7], ज्योतिष एवं उस्तुरलाब का उत्तम ज्ञान था। वह हज़रत जन्नत आशियानी के दरबारियों में से था। हज़रत खाकानी के राज्यकाल में वह तरखान की उपाधि द्वारा सम्मानित किया गया था।

१ देखिए H Blochman *Ain-i-Akbari* (१९३९ ई०), पृ० ३७५।
२ देखिए H Blochman *Ain-i-Akbari* (१९३९ ई०), पृ० ३६७ ३६९।
३ इशराफे दीवानी का पद अथवा मुशरिफ. राज्य की आय को देख रेख रखने वाला अधिकारी।
४ हिरात का।
५ लिपि की एक शैली।
६ हिसाब किताब, एकाउंटेंसी।
७ गणित।

मुहम्मद कासिम मौजी, जो बदख्शाँ में जालाबानी की सेवा किया करता था। हजरत खाकानी के राज्यकाल में वह मीर वहर[1] हो गया।

हैदर मुहम्मद आख्ता वेगी[2]।

सैयिद मुहम्मद पक्का बडा वीर एव हाथ का बडा कुशल[3] था।

सैयिद मुहम्मद काली जिसे मीर अदल का पद प्राप्त था और जो दरबार में बैठने वालो में से था।

हाफिज़ सुल्तान मुहम्मद रखना, मार्मिक शेर पढता था। वह तजर्रुद[4] के वस्त्र में सेवा में उपस्थित हुआ। उसने सहरिन्द में एक बडे हृदयग्राही उद्यान का निर्माण कराया जो प्रशसा के योग्य है।

मीर्ज़ा बेग विलोच तथा मीर हुसेन दोनो दरबार के सेवकों में से थे।

ख्वाजा अम्बर नाज़िर जो ऐसा विश्वासपात्र था कि उसे एकान्त मे भी उपस्थित रहने की अनुमति थी। हजरत शहशाह ने उसे एतवार खा की उपाधि प्रदान कर दी थी। वह हज़रत मरियम मकानी के सम्मानित हौदज के परदा-दारो में से था।

आरिफ़ तूशकची[5], हज़रत जन्नत आशियानी से उसे वहार खा की उपाधि प्राप्त हुई और उत्कृष्ट सेवा द्वारा सम्मानित हुआ।

निष्ठावान् दासो एव हितैषी सेवको मे निम्नाकित थे —

(१) मेहतर खा खज़ानादार[6]
(२) मेहतर फाखिर[7] तूशक्ची
(३) मुल्ला विलाल किताबदार[8]
(४) मेहतर तीमूर शरबतची[9]
(५) मेहतर जौहर आफ्ताबची[10]
(६) मेहतर वकीला खज़ाची

१ नाविक, वह अधिकारी जो नौकाओं, पुल इत्यादि तथा नदी पार कराने का प्रबन्ध करता था।
२ वह अधिकारी जो शाही घोड़ों इत्यादि को आख्ता अथवा बधिया किया करता था।
३ सम्भवत. निशाना लगाने में।
४ वैराग्य।
५ वस्त्रों के एवं बिछौनों के भडार का मुख्य अधिकारी। 'आईने अकबरी' में देखिये . आईने फर्राशखाना व तूशक खाना'।
६ कोषाध्यक्ष।
७ कुछ पोथियों एवं प्रकाशित ग्रन्थ में 'हाजिर'।
८ पुस्तकालयाध्यक्ष।
९ वह अधिकारी जो बादशाह के प्रयोग के शरबत एव पेय का प्रबन्ध करता था।
१० आफ्ताबा (वह लोटा जिसमें टुन्ना हो) रखने वाला। उसका कर्तव्य बादशाह के मुँह-हाथ धुलाना होता था। जौहर, तज़किरतुल वाक़ेआत का लेखक था।

(७) मेहतर वासिल
(८) मेहतर सुम्बुल मीर आतश
(९) सुल्तान मुहम्मद करावल बेगी[1]
(१०) अब्दुल वह्हाब साक़िये तबाक[2]
(११) जवाई बहादुर
(१२) तूलक यातिश नवीस[3]

इन भाग्यशालियों ने ऐसी यात्रा में उचित सेवायें सम्पन्न की और क़यामत तक स्थायी रहने वाला सौभाग्य प्राप्त किया।

भाग्यशाली लश्कर की एराक से वापसी एवं अन्य घटनायें

जब हज़रत जन्नत आशियानी के विश्व विजय करने वाले लश्कर की वापसी के समाचार प्रसिद्ध हो गये तो मीर्ज़ा कामरान एवं समस्त कुत्सित विचार रखने वाले अत्यधिक घबड़ाये। सर्व प्रथम मीर्ज़ा कामरान ने खिज्र ख़ां हज़ारा के भाई एवं कुरबान क़रावल बेगी को काबुल से मीर्ज़ा अस्करी के पास इस आशय से भेजा कि वे शाहज़ादे को काबुल ले आयें। मीर्ज़ा अस्करी ने इस विषय में अपने हितैषियों से परामर्श किया। जिन लोगों में औचित्य को सोचने वाली बुद्धि थी उन्होंने यह राय दी कि उत्कृष्ट लश्कर निकट आ गया है। अब यह उचित होगा कि (शाहज़ादे को) आदर-सम्मान सहित हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में भेजकर पिछले अपराधों की क्षमा याचना का साधन बनाया जाय और सेवा एवं क्षमा याचना की जाय। कुछ षड्यन्त्रकारियों ने कहा, "अब आप में हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में उपस्थित होने का मुँह नहीं रहा। यह उचित होगा कि (६७) मीर्ज़ा कामरान के हृदय को मुट्ठी में रखा जाय और उन्हें मीर्ज़ा कामरान के पास काबुल भेज दिया जाय।" क्योंकि यह अनुचित राय मीर्ज़ा के हृदय के अनुकूल थी अतः उसने अत्यधिक जाड़े एवं हिमपात तथा वर्षा में उन्हें काबुल भेज दिया। उनकी बहिन बख्शी बानो बेगम, शम्सुद्दीन मुहम्मद गज़नवी जिसे अत्का ख़ां की उपाधि प्राप्त थी, अदहम ख़ां की माता माहम अनका, मीर्ज़ा अज़ीज़ कूकुल्ताश की माता जीजी अनका एवं कुछ अन्य सेवकों को उनके साथ कर दिया। जब वे काबुल पहुँचे तो मीर्ज़ा कामरान ने प्रताप के उद्यान के उस पौधे को हज़रत फ़िरदौस मकानी की बहिन ख़ानज़ादा बेगम के घर उतरवाया और उनके सुपुर्द कर दिया।

दूसरे दिन उसने बाग़े शहर आरा में एक भव्य दरबार कराया। हज़रत शहंशाह से वहाँ भेंट की। यह एक बड़ा विचित्र संयोग है कि उस दरबार में एक नक़्शी नक्क़ारा उसके पुत्र मीर्ज़ा इबराहीम के लिये शब बरात के कारण प्रथानुसार तैयार करके लाया गया था। हज़रत शह-

१ शिकार का प्रबन्ध करने वाले अधिकारी। वे लोग भी जो मुख्य सेना के आगे आगे शत्रुओं का पता लगाने एवं अन्य प्रबन्ध हेतु चलते थे क़रावल कहलाते थे।
२ भोजन का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी।
३ मुन्शी, जो रात के पहरे की सूची रखते थे।

शाह ने अल्पावस्था के कारण एवं इस वजह से कि उनके उत्कृष्ट नाम से राज्य का नक्कारा एवं विश्व-विजय का डंका बजने वाला था, उसे प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की। कृतघ्न मीर्ज़ा ने यह सोचकर कि मीर्ज़ा इबराहीम हज़रत शहंशाह से अवस्था में बड़ा और देखने में अधिक बलवान है कहा कि, "तुम मल्ल-युद्ध करके नक्कारा ले सकते हो। जो कोई जीत जाय वही नक्कारा प्राप्त कर ले"। उसका विचार था कि इस प्रकार शाहज़ादा अपमानित होगा और उसे हानि पहुँचेगी किन्तु इस कारण कि दैवी सहायता उसके साथ थी, उसने मीर्ज़ा इबराहीम की अवस्था की अधिकता पर ध्यान दिये बिना निर्भीक होकर आगे कदम बढ़ाया और साधारण सा प्रयत्न करके मीर्ज़ा को इस प्रकार उठा कर भूमि पर पटक दिया कि दरबार वाले प्रशंसात्मक नारे लगाने लगे। मीर्ज़ा कामरान, जिसने अपने तथा जन्नत आशियानी से युद्ध के फाल के रूप में यह मल्ल युद्ध कराया था, यह हाल देख कर बड़ा दुखी हुआ और हज़रत जन्नत आशियानी के हितैषी प्रसन्न होकर इस घटना को अपने लिये शुभ फाल समझने लगे। मीर्ज़ा ने बिना किसी कृपा एवं सहृदयता के राज्य का नक्कारा अपने बाहुओं की शक्ति द्वारा प्राप्त कर लिया।

विजयी सेना का गरमसीर पहुँचना एवं बुस्त के किले की विजय

समाचारों की खोज करने वालों से यह बात छिपी न रहनी चाहिये कि जब उत्कृष्ट पताकायें गरमसीर में पहुँची तो उन्होंने अली सुल्तान तकलू को अनुभवी वीरों की एक सेना के साथ बुस्त के किले की विजय हेतु नियुक्त किया। तीमूर जलायर का पिता शाहम जलायर एवं मीर खल्ज ने, जो उस क्षेत्र में मीर्ज़ा कामरान की ओर से नियुक्त थे, किले को दृढ़ बना लिया। बादशाही सेना ने किले का अवरोध कर लिया। दुर्भाग्यवश किले के ऊपर से एक बन्दूक (की गोली) अली सुल्तान के लगी और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसके सैनिकों ने उसके १२ वर्षीय बालक को उसके स्थान पर सरदार बना दिया और किला विजय करने का अधिक से अधिक प्रयत्न करने लगे। उन्होंने अली सुल्तान की मृत्यु एवं उसके स्थान पर उसके पुत्र की नियुक्ति का पत्र शाह को लिख भेजा। कुछ समय के उपरान्त शाह की ओर इस प्रार्थना की स्वीकृति का सूचक से निशान[1] प्राप्त हो गया। शनैः शनैः किले वालों ने व्याकुल होकर अमान माँग ली और विलाप करते हुए किले के द्वार खोल दिये। बादशाही कृपाओं के कारण उन्हें अमान दे दी गई और उन लोगों ने किला समर्पित कर दिया। शाहम अली जलायर एवं मीर खल्ज निपग लटकाये हुये उपस्थित हुये और धरती-चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने उनके अपराध क्षमा कर दिये और उन्हें दरबार के सेवकों में सम्मिलित कर लिया।

उसी मंज़िल पर यह समाचार प्राप्त हुये कि मीर्ज़ा अस्करी अपने खज़ानों और असबाब को लेकर काबुल की ओर भाग जाना चाहता है। किज़िलबाशों एवं दरबार के सेवकों के एक समूह ने आग्रह करके एक प्रकार की अनुमति सी ले ली कि मीर्ज़ा (अस्करी) के पास पहुँच कर उसे बन्दी बना लें। यद्यपि हज़रत जन्नत आशियानी को सच्चे गुप्तचरों द्वारा इस बात का विश्वास हो गया था कि यह समाचार असत्य है और मीर्ज़ा अस्करी किले की प्रतिरक्षा पर दृढ़ है किन्तु उन लोगों

१ फ़रमान।

ने इसे स्वीकार न किया। आज्ञा लेकर वे शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करते हुये कन्धार के समीप पहुँच गये। इस बीच में पता चल गया कि मीर्ज़ा के प्रस्थान के समाचार असत्य थे। क़िले से एक सेना ने निकलकर उनसे युद्ध किया और ऊपर से जर्रजन एवं तोपें चलाईं। क्योंकि वे लोग बिना किसी तैयारी के गये थे अतः क़िज़िल्बाशों की बहुत बड़ी संख्या विनाश के भँवर में फँस गई। कुछ लोग घायल हुये। ख़्वाजा मुअज़्ज़म, हैदर सुल्तान, हाजी मुहम्मद (पुत्र) बाबा कश्का, अली कुली वल्द हैदर (६८) सुल्तान, शाह कुली नारजी तथा चग़ताई एवं क़िज़िल्बाश वीरों के एक दल ने पौरुष प्रदर्शित करते हुए शत्रु को पराजित करके क़िले में पहुँचा दिया। जमील बेग ने, जो मीर्ज़ा अस्करी के विश्वास-पात्रों में से था, उसके पास आदमी भेजे कि मीर्ज़ा स्वयं कुमक हेतु पहुँच जाय। यदि हम इन लोगों को पराजित कर लेंगे तो हमारा काम सरल हो जायगा। मीर्ज़ा ने उसकी बात पर कान न धरे और सन्देश भेजा कि "वे लोग हमारी सेना की संख्या एवं दशा के बारे में भली भाँति जानते हैं। इन लोगों की सेना में इतने ही आदमी नहीं हैं अपितु उनकी कुमक हेतु लोग कहीं छिपे होंगे। हम धोखे में न आयेंगे। उसने क़िले को दृढ़ बना कर युद्ध मीर्ज़ा कामरान के आगमन पर स्थगित कर दिया। क्योंकि दैवी कृपा विजयी सेना की सहायक थी, मीर्ज़ा का बाहर निकलना सम्भव न हो सका। ऐसी महान् विजय, जो असंख्य विजयों की प्रस्तावना हो सकती थी, प्राप्त हो गई। उन्हीं दिनों बाबाये सरहिन्दी, जो मीर्ज़ा कामरान से सम्बन्धित था, मार डाला गया।

विजयी सेना का कन्धार पहुँचना, अवरोध एवं विजय

जब बुस्त के क़िले पर विजय प्राप्त हो गई तो हज़रत जन्नत आशियानी ने इस विजय को महान् विजयों का, जो उनको संसार की विजय प्राप्त करने वाली आकांक्षा के सामने थी, उत्तम शकुन समझ कर, ईश्वर के प्रति अत्यधिक कृतज्ञता प्रकट की। इस घटना के ५ दिन उपरान्त वे शनिवार ७ मुहर्रम ९५२ हि० (२१ मार्च १५४५ ई०) को एक शुभ मुहूर्त में सवार होकर विश्व विजय करने वाली सेनाओं के साथ कन्धार के क़िले की ओर रवाना हुये और क़ाज़ी शम्सुद्दीन अली के उद्यान में माशूर नामक द्वार के समक्ष पड़ाव किया। मोर्चे बाँट दिये गये। प्रबन्धक विभिन्न स्थानों पर नियुक्त हो गये। युद्ध प्रिय जवान दोनों ओर से निकल कर युद्ध करते थे। एक दिन हैदर सुल्तान एवं उसके दोनों पुत्र अली कुली ख़ाँ व बहादुर ख़ाँ एवं ख़्वाजा मुअज़्ज़म शत्रुओं को ख़्वाजा ख़िज़्र[1] के सामने से उन मज़ारों तक, जो प्राचीन नगर एवं कूचा बन्द[2] के निकट हैं, भगाते चले गये और बड़ी वीरता से तलवार चलाई। एक बड़ी विचित्र बात यह है कि बाबा दोस्त यसावल कुछ लोगों को लिये हुये, मज़ारों में खड़ा बाण चला रहा था। हैदर सुल्तान ने भाले द्वारा उसकी हत्या करा देनी चाही। इधर उसने हाथ उठाया और उधर उसके बाण लगा। जाम का इस्माईल सुल्तान, जिसे मीर्ज़ा कामरान ने कुमक हेतु भेजा था, अख़चा बुर्ज पर मीर्ज़ा अस्करी के समक्ष खड़ा

१ सम्भवतः ख़्वाजा ख़िज़्र के मक़बरे से तात्पर्य है।
२ प्रतिरक्षा हेतु मार्ग में बाड़ तथा रोक लगा देना।

युद्ध का निरीक्षण कर रहा था। इतनी दूरी के बावजूद जब कि किसी का चेहरा पहचानना सरल न था, उसने मीर्ज़ा अस्करी से कहा कि "जिस आदमी के हाथ से भाला गिरा है वह हैदर सुल्तान होगा कारण कि इससे पूर्व जब हम उबैदुल्लाह् खा[1] के साथ तूस नगर गये थे, मैंने तथा हैदर सुल्तान ने एक साथ युद्ध किया था। मेरी यह दो अगुलियाँ वहीं कट गई थीं। उसके आक्रमण के ढग से मेरा अनुमान है कि यह वही होगा।" कुछ देर बाद जब वह भाला लाया गया तो उस पर उसका नाम खुदा था। जिन्होंने यह बात सुनी, वे इस्माईल सुल्तान के अनुमान पर आश्चर्य करने लगे। इस युद्ध में अधिकाश लोग घायल हुये। ख्वाजा मुअज्ज़म सबसे अधिक घायल हुआ। थोडी देर बाद कुशलतापूर्वक लौट आया।

इसी बीच में समाचार प्राप्त हुये कि मीर्ज़ा कामरान का कोका रफी, जमीन दावर[2] की ओर, उस पर्वत के पीछे, जो अरगन्दाब के तट पर स्थित है, हजारा लोगों के एक समूह के साथ[3] एक घाट पर बैठा है। बैराम खा, मुहम्मदी मीर्ज़ा आख्ता बेगी वल्द सुल्तान शामलू को एक बहुत बडी सेना सहित उनके विरुद्ध नियुक्त किया गया। थोडा बहुत युद्ध हुआ। हज़रत जन्नत आशियानी के नित्य-प्रति उन्नत प्रताप से रफी कोका बन्दी बना लिया गया। अत्यधिक लूट की धन-सम्पत्ति, नकद, जिस एव पशु राज्य के सहायकों को प्राप्त हो गये। विजयी सेना में खाद्य सामग्री की जो थोडी बहुत कमी हो गई थी, उसका अन्त हो गया।

मीर्ज़ा कामरान से सन्धि का प्रयत्न

क्योंकि मीर्ज़ा अस्करी मीर्ज़ा कामरान की सहायता के भरोसे पर, अपने पतन के मार्ग पर अग्रसर, युद्ध एव सघर्ष में तल्लीन था, अत उनके औचित्य पर दृष्टि रखने वाले हृदय में यह आया कि वे शाह् को *शिक्षा-युक्त मशूर*[4] एव अपना *छपा युक्त-फरमान मीर्ज़ा कामरान* के पास भेजें, सम्भव है कि वह असावधानी की निद्रा से जाग कर सौभाग्य के मार्ग पर अग्रसर हो और उत्तम सेवाओं द्वारा अपनी पिछली भूलों की हानि की पूर्ति कर सके और अकारण इतने आदमियों के विनाश का कारण न बने। इस उद्देश्य से उन्होंने बैराम खा को दूत बना कर काबुल की ओर भेज दिया। जब वह रोगनी दर्रे एव आबे इस्तादा[5] के पास, जो कन्धार एव गज़नी के मध्य में है, पहुँचा तो हज़ारा लोगों के एक समूह ने उसका मार्ग रोक लिया। दिन के अन्तिम पहर में युद्ध हुआ। प्रतापी राजा के सहायकों ने अभागे हज़ारा लोगों को दड देकर सहस्रों की हत्या कर दी और आगे रवाना हुये। जब बैराम खा काबुल के समीप पहुँचा (६९) तो बानूम एव कुछ अन्य लोग उसका स्वागत् करके उसे ले गये। मीर्ज़ा कामरान ने चहार

१ शैबानी खां (शाही बेग) का भतीजा। मीर्ज़ा हैदर ने उसकी अत्यधिक प्रशंसा की है। (मुग़ुल कालीन भारत—बाबर, पृ० ६२८ २१)। सम्भवत उज़बेकों एव ईरानियों के २१ सितम्बर १५२८ ई० के युद्ध की ओर सकेत है। (बाबर नामा, पृ० २८६-२८७)।

२ वह लम्बी चौड़ी घाटी जिसके नीचे हेलमन्द नदी, हिन्दूकुश से होती हुई बुस्त को जाती है।

३ अकबर नामा में 'जमये अज़ हजारा व निकदिरी (हजारा तथा निकदिरी क़बीलों की एक सेना के साथ)' किन्तु इकबाल नामा में 'बा जमये अज़ हजारा व गुज़रे' (मुग़ुल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १, पृ० १७८)।

४ पत्र, फरमान।

५ बंधा हुआ जल, ग़ज़नी के दक्षिण में खारी जल की झील। बाबर ९१० हि० (१५०४-५ ई०) में इस ओर से गुज़रा था। (बाबर नामा, पृ० २६)।

बाग़ मे दरबार लगवाया। बैराम ख़ा को वहाँ बुलवाया। उसने सोचा कि मीर्ज़ा बैठा हुआ है इन उत्कृष्ट फरमानो को उसे देना आदर-सम्मान की दृष्टि से उचित नहीं। यह बात असम्भव है कि वह खडा होकर उसके प्रति आदर सम्मान प्रदर्शित करे। इस कारण एक कुरान शरीफ हाथ में लेकर उसने उपहार स्वरूप प्रस्तुत किया। मीर्ज़ा कुरान शरीफ के सम्मान हेतु सीधा खडा हो गया। उस समय उसने दोनो उत्कृष्ट फरमान प्रस्तुत किये। जो उपाय उसने सोचा था, वह सौभाग्य से सफल हुआ। तदुपरान्त उसने उपहार एव तुहफे प्रस्तुत किये और बैठ कर सत्य एव निष्ठा से परिपूर्ण बातें की जो मीर्ज़ा के हित मे थी। कहा जाता है कि स्वर्गीय शाह तहमास्प सफवी ने मीर्ज़ा कामरान को यह शेर लिखा था

शेर

'कहा जाता है कि कामरान ख़ारजी है,
ख़ारजी कामरान (सफल) न होगा।'

दरबार के अन्त में उसने हज़रत ख़ाकानी की सेवा में उपस्थित होने तथा मीर्ज़ा हिन्दाल, मीर्ज़ा सुलेमान, यादगार नासिर मीर्ज़ा तथा उलुग बेग मीर्ज़ा से भेंट करने की अनुमति चाही। मीर्ज़ा ने अनुमति देते हुए बाबूस बेग को आदेश दिया कि वह भेंट के समय उपस्थित रहे। बैराम ख़ा सर्वप्रथम हज़रत ख़ाकानी की सेवा में रवाना हुआ और बाग़े मक्तब में सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। तदुपरान्त उसने मीर्ज़ा हिन्दाल, मीर्ज़ा सुलेमान एव समस्त मीर्ज़ाओं से भेंट की और सन्देश एव अमानत पहुँचा कर बादशाही कृपाओं तथा अनुकम्पाओं का आश्वासन दिलाया। मीर्ज़ा कामरान ने लगभग डेढ मास तक बैराम ख़ा को इधर-उधर की बातों में रोके रखा। डेढ मास उपरान्त ख़ानज़ादा बेगम को उसके साथ करके उसे विदा कर दिया। दिखाने को तो उनके भेजने का यह उद्देश्य था कि मीर्ज़ा अस्करी उसके कहने में नही है। अत उसे बेगम समझा बुझा कर उससे कन्धार लेकर हज़रत पादशाह के सेवकों का सौंप दें किन्तु वास्तव में उसका उद्देश्य यह था कि यदि राज्य के सहायक किला विजय कर लें और मीर्ज़ा अस्करी बन्दी बना लिया जाय तो बेगम उसको मुक्ति दिलाने एव उसकी सिफारिश करने मे सहायक हो सकें।

हुमायूँ द्वारा क़न्धार की विजय

यद्यपि कन्धार का किला मिट्टी का बना है किन्तु वह इतना दृढ है कि उसका तोडना असम्भव है। उसकी दीवारों की चौडाई ६० ज़रा[2] है। मीर्ज़ा अस्करी ने उसको दृढ बनाने का अत्यधिक

१ ख़ारजी प्रारम्भ में हज़रत अली के सहायक थे किन्तु रक्क़ा के दक्षिण में स्थित सिफ़्फ़ीन नामक स्थान पर हज़रत अली एव मुआविया के युद्ध में (२६ जुलाई ६५७ ई०) जब हज़रत अली ने इस शर्त पर युद्ध रोक दिया कि दोनों ओर के मनोनीत पंच जो निर्णय कर दें, वह मान्य होगा, वे हज़रत अली से पृथक् हो गये। उनका नारा था ला हुक्मा इल्ला लिल्लाह (ईश्वर के अतिरिक्त कोई पंच नहीं हो सकता)। ख़ारजियों से और हज़रत अली से ६५६ ई० में नहरवान नामक नहर पर युद्ध भी हुआ। २४ जनवरी ६६१ ई० को अब्दुर्रहमान इब्ने मुलजिम नामक एक ख़ारजी ने हज़रत अली की हत्या कर दी। शीआ और सुन्नी दोनों ही ख़ारजियों को बड़ी बुरी दृष्टि से देखते हैं।

२ लम्बाई की एक नाप १८ से २२ इंच तक।

प्रयत्न करके उसको तोप, बन्दूक एव युद्ध के समस्त यत्रो द्वारा मजबूत कर दिया था। उसे अपनी बहुत बडी सेना एव मीर्जा कामरान की कुमक पर बडा अभिमान था। जब अवरोध में अधिक समय लग गया तो किज़िलबाश लोग बडी चिन्ता में पड गये और लौट जाने के विषय में सोचने लगे। हज़रत जनत आशियानी ने उनके व्यवहार के रोज़नामचे में यह बात पढ ली और किला विजय करने का अधिक से अधिक प्रयत्न करने लगे। जिस मोर्चे पर भाग्यशाली शिविर लगे थे वहाँ से एक रात में प्रस्थान करके क़न्धार के प्राचीन नगर की ओर उस द्वार के निकट जिसे चहारदरा[1] कहते हैं, एक मोर्चा दृढतापूर्वक स्थापित किया। प्रात काल तुर्कमानो को भी इस बात का पता चल गया। वे दिल लगा कर किला विजय करने का प्रयत्न करने लगे और उन्होने अपने मार्चे आगे बढाये। घेरे को और भी सँकरा कर दिया। मीर्जा अस्करी ने अत्यधिक व्याकुल होकर ख्वाजा दोस्त ख़ावन्द के भाई मीर ताहिर द्वारा उनकी सेवा में प्रार्थना-पत्र भिजवाये और विनय तथा खेद प्रकट करते हुए कहलाया कि 'हज़रत बेगम तशरीफ ला रही हैं उनके आने तक मुझे मुहलत दी जाय ताकि उनके मध्यस्थ बन जाने पर निश्चिन्त होकर सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त कर सकूँ'। हज़रत जनत आशियानी ने अत्यधिक उदारता एव सौजन्य प्रदर्शित करते हुए उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। कुछ दिन तक किला विजय करने में कोई कठोरता न प्रदर्शित की। जब हज़रत बेगम एव बैराम खा पहुँच गये तो मीर्जा ने जो बातें हुई थी उनसे अपने आप को अनभिज्ञ बता कर किले को अधिक से अधिक दृढ़ बनाने का प्रयत्न किया। यद्यपि बेगम ने तर्कपूर्ण बातो द्वारा उसका पथ प्रदर्शन करना चाहा किन्तु मीर्जा ने अपने अनुचित विचार न त्यागे। उसी प्रकार कठोरता एव विद्रोह प्रदर्शित करता रहा। उसने बेगम को किले में रोक लिया और उन्हे वापस न जाने दिया। हज़रत जनत आशियानी दैवी कृपा से किले की विजय का अपने सामर्थ्य से अधिक प्रयत्न करने लगे। सयोग से इसी समय उलुग़ मीर्जा इब्ने सुल्तान मुहम्मद मीर्जा, जो सुल्तान हुसेन मीर्जा के नातियो मे से था, शेर अफगन वल्द कूच बेग, मुनइम खा का भाई फ़ज़ील बेग, मीर बरका, मीर्जा हसन खा तथा बहुत से अन्य लोगो ने अपने जागरूक सौभाग्य के पथ प्रदर्शन से काबुल से पहुँच कर धरती-चुम्बन किया। उनके आगमन का कारण यह था कि मीर्जा कामरान उलुग मीर्जा को बन्दीगृह (७०) में रखता था। सावधानी की दृष्टि से प्रत्येक सप्ताह वह उसे अपने अमीरो मे से एक के सुपुर्द कर देता था। जब शेर अफगन की बारी आई तो वह मीर्जा से रुष्ट था। उसे उसका बडा भय रहता था। इन लोगो से मिलकर तथा मीर्जा को साथ लेकर वह वहाँ से चला आया। हज़रत जनत आशियानी ने सबको अत्यधिक कृपाओ द्वारा सम्मानित किया और ज़मीन दावर मीर्जा को प्रदान कर दिया। यद्यपि कासिम हुसेन सुल्तान भी इस समूह के साथ चला आया था किन्तु एक रात मार्ग भूल कर वह हज़ारा लोगो के हाथो मे फँस गया। कुछ दिन उपरान्त अपने आप को लुटवाकर एव नगे पाँव, जिसमें छाले पडे थे, पहुँचा। हज़रत जनत आशियानी ने कहा, "सम्भवत तेरी निष्ठा में अब भी कमी होगी जो मार्ग भूल कर इतने कष्ट में पडा।" तदुपरान्त ददा बेग हज़ारा अपने सेवको तथा परिजनो सहित उपस्थित हुआ। काबुल के प्रतिष्ठित लोगो के प्रार्थना-पत्र भी प्राप्त होने लगे। इस समूह के आगमन तथा काबुल वालो के प्रार्थनापत्रो के प्राप्त होने के कारण उत्कृष्ट सेना वाले बडे प्रसन्न हो गये। किले वालो में बडी हलचल मच गई। किले वाले

१ मुग़ल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १ के अनुवाद में 'चहारदरा' के स्थान पर 'चहारदा' छप गया है जो अशुद्ध है (पृ० १८३)।

नित्य-प्रति मीर्ज़ा अस्करी का हाल लिख कर किले के बाहर फेंकने लगे और (सूचना देने लगे) कि "किले वाले अत्यधिक व्याकुल हो चुके हैं। किले पर शीघ्र विजय प्राप्त हो जायगी। आप प्रयत्न करने में कोई कमी न करें।" अन्ततोगत्वा यह नौबत आ गई कि किले वाले स्वयं दीवार से फांद फांद कर धरती चुम्बन का सम्मान प्राप्त करने लगे। (मीर्ज़ा अस्करी के) लश्कर के प्रतिष्ठित लोगों में से ख़िज्र ख़्वाजा[1] खां ने उस मोर्चे के समीप, जो भाग्यशाली शिविर के समीप था, किले पर से फांद कर दीनता प्रकट करते हुए चौखट के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया। इसी प्रकार मुईद बेग, इस्माईल बेग, कराचा खां का भतीजा अबुल हसन बेग एवं नूर बेग का पुत्र मुनव्वर बेग रस्सी से लटक कर नीचे उतर आये। जब उन लोगों के पास, जो किले में बन्द थे कोई राह न रह गई तो मीर्ज़ा अस्करी सावधानी की निद्रा से जागा और उसने व्याकुल होकर तथा घबड़ा कर निवेदन कराया कि, "मैं कन्धार राज्य के सहायकों के सुपुर्द करता हूँ। मुझे काबुल चले जाने का मार्ग दे दिया जाय।" हज़रत जन्नत आशियानी ने उसकी बात स्वीकार न की। विवश होकर उसने बेगम को अपने अपराधों की क्षमा की सिफ़ारिश करने के लिये भेजा। उनकी सिफ़ारिश से उसके अपराध क्षमा कर दिये गये। बृहस्पतिवार २५ जमादी-उल-आख़िर ९५२ हि० (३ सितम्बर १५४५ ई०) को मीर्ज़ा अस्करी किले से निकल कर हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में उपस्थित हुआ। हज़रत जन्नत आशियानी दीवान ख़ाने में आसीन हुये। चग़ताई एवं क़िज़िलबाश अमीर अपनी अपनी श्रेणी तथा अपने पद के अनुसार पंक्तियों में खड़े हुये। बैराम खां पादशाही आदेशानुसार मीर्ज़ा अस्करी को ग्रीवा में तलवार लटका कर, उसे इस अवस्था में लाया। हज़रत जन्नत आशियानी ने अपनी व्यक्तिगत कृपा एवं स्वाभाविक अनुकम्पा के कारण आदेश दिया कि मीर्ज़ा की ग्रीवा से तलवार निकाल ली जाय। उसे बैठने का आदेश दिया गया। तदुपरान्त मुहम्मद खां जलायर मुक़ीम खां, शाह सीस्तानी[2] एवं तूलक खां कूरची को ३० व्यक्तियों सहित कोरनिश हेतु उपस्थित किया गया। उनकी गरदनों में भी तलवारें पड़ी थीं। इनमें से मुक़ीम खां तथा शाह सीस्तानी के विषय में आदेश हुआ कि उनके पांव में ज़ंजीरें डलवा दी जायें और गरदन में तरते लटकवा दिये जायें। वह दरबार रात्रि के प्रारम्भ से प्रातःकाल तक चलता रहा। बातचीत के बीच में मीर्ज़ा अस्करी का वह मूल पत्र जो उसने हज़रत जन्नत आशियानी के बोल के मार्ग से प्रस्थान के समय बिलोच कबीलों को लिखा था, प्रस्तुत किया गया। सम्मानित आदेशानुसार वह मीर्ज़ा को दे दिया गया। मीर्ज़ा को अपना जीवन कड़ुआ लगने लगा। अन्त में समय की आवश्यकतानुसार आदेश हुआ कि मीर्ज़ा को निगरानी में रक्खा जाय और उसे कोरनिश के लिये उपस्थित किया जाया करे।

दूसरे दिन भाग्यशाली पताकायें उड़ाते हुए अरक के भीतर तशरीफ़ ले गये। तीन दिन तक वे वहाँ रहे। चौथे दिन नगर मुहम्मद मुराद मीर्ज़ा को प्रदान करके उन्होंने स्वयं हज़रत फ़िरदौस मकानी के चहार बाग में, जो अरग़न्दाब के तट पर स्थित है, पड़ाव किया। राज्य के सहायकों ने मीर्ज़ा अस्करी के धन सम्पत्ति को, जो एकत्र की गई थी, सूची उनकी सेवा में प्रस्तुत की। हज़रत जन्नत आशियानी ने उसे कोई महत्व न देते हुए लश्कर के वीरों को बाँट दिया।

१ वह गुल बदन बेगम का पति था।
२ अकबर नामा के अनुसार '*शाह क़ुली सीस्तानी*', (मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १, पृ० १८६)।

जब कन्धार की विजय एवं भाग्यशाली लश्कर ने काबुल की फतह हेतु प्रस्थान के समाचार मीर्जा कामरान को प्राप्त हुये तो मीर्जा शका एवं भय के कारण हजरत खाक नी को खानजादा बेगम के घर से अपने घर में ले आया और अपनी मुख्य पत्नी खानम को सौंप दिया। शम्सुद्दीन मुहम्मद गजनवी को, जो अतका खा के नाम से प्रसिद्ध था, बन्दी बना दिया। उसने मीर्जा सुलेमान के विषय में अपने अमीरो मे परामर्श किया। मीर्जा के आखुन्द मुल्ला अब्दुल खालिक एव बाबूस बेग ने जो उसका (७१) वकील था, यह सलाह दी कि मीर्जा को आश्रय प्रदान करके बदख्शाँ भेज दिया जाय ताकि कठिनाई के समय वह सहायता कर सके। मीर्जा (सुलेमान) के सौभाग्य से इसके कुछ दिन पूर्व मीर नजर अली, मीर हजारा पेशगानी, शेर अली बिलोच एव कुछ अन्य लोगो ने मिलकर किलये जफर पर अधिकार जमा लिया था। कासिम बरलास तथा कुछ अन्य लोगो को बन्दी बना कर उन्होने मीर्जा कामरान को सन्देश भेज दिया कि, 'यदि आप मीर्जा सुलेमान को भेज दे तो बदख्शाँ उन्हे सौप दिया जायगा अन्यथा जिन लोगो को हमने बन्दी बनाया है उनकी हत्या करके हम बदख्शाँ उजबेको को दे देंगे।" इस कारण उसने मीर्जा सुलेमान, मीर्जा इबराहीम तथा हरम बेगम का बदख्शाँ जाने की अनुमति दे दी। जब मीर्जा सुलेमान पाये मीनार नामक स्थान पर पहुँच गया तो मीर्जा कामरान ने उन्हे विदा करने पर पश्चाताप करते हुये उन्हे बुलाने के लिये आदमी भेजे (और कहलाया) कि "कुछ मौखिक बाते रह गई है, आप सुनकर चले जायें।' मीर्जा सुलेमान ताड गया कि इस बुलावे में कुशलता की सुगन्धि नही। उसने क्षमा पत्र लिख कर भेज दिया कि, 'हम शुभ मुहूर्त में निकले है अब लौटना शुभ न होगा। आशा है कि औचित्य को समझने वाले आपके हृदय में जो कुछ आया हो लिख भेजे ताकि उसका पालन किया जा सके।" वहाँ से वह शीघ्रातिशीघ्र बदख्शाँ की ओर रवाना हो गया और वहाँ पहुँच कर उसने अपने वचन एव प्रतिज्ञा भग कर दी।

इसी बीच में यादगार नासिर मीर्जा बदख्शाँ की ओर भाग गया। क्योंकि मीर्जा (कामरान) का पतन निकट आ चुका था, अत प्रत्येक दिशा से असफलता के साधन एकत्र होते गये। मीर्जाओ में हिन्दाल मीर्जा के अतिरिक्त कोई भी उसके पास न रह गया। विवश होकर उसे प्रोत्साहन प्रदान करते हुये उसने उसे यादगार नासिर मीर्जा का पीछा करने के लिये नियुक्त किया और यह प्रतिज्ञा की कि, आजकल जो कुछ उसके अधिकार में है तथा बाद में जो कुछ उसके अधिकार में आ जायगा, उन सबका तिहाई भाग उसे प्रदान कर दिया जायगा। मीर्जा हिन्दाल, जो उसके दुर्व्यवहार से व्याकुल हो चुका था, इस अवसर को बहुत बडी देन समझ कर पाये मीनार से अपने सौभाग्य के पथ प्रदर्शन द्वारा हजरत जहाँ आशियानी की सेवा में उपस्थित हो गया। मीर्जा कामरान में इस दुर्घटना के कारण सोचने समझने की शक्ति न रही। वह अपने भले के लिये जो कार्य करता वही उसके उद्देश्य के विरुद्ध हो जाता। उसके आदमियों में किसी को इस बात का साहस न था कि ठीक-ठीक कोई बात कह सकता। इस कारण वह भूल पर भूल करता गया।

विजयी सेना का काबुल की फतह हेतु प्रस्थान और उस प्रदेश की विजय

जब कन्धार की विलायत की विजय असख्य विजयो की प्रस्तावना बन गई तो उन्होने काबुल को विजय करने का सकल्प कर लिया। उस समय यात्रा की अवधि के बढ जाने के कारण

१ गुरू।

किज़िलबाशो में से कुछ बिना आज्ञा के और कुछ आज्ञा लेकर पृथक् हो गये। बुदाग खा एव वे लोग, जो सुल्तान मुराद मीर्ज़ा की सेवा में थे, सूझ-बूझ के अभाव के कारण प्रजा एव परिजनो पर अत्याचार का हाथ बढाने लगे। नगर के सर्व साधारण तथा सम्मानित लोग सर्वदा उत्कृष्ट दरबार में फरियाद किया करते थे। हज़रत जन्नत आशियानी शाह की प्रसन्नता की दृष्टि से तथा समय की आवश्यकता के कारण उपेक्षा करते थे और न्याय को प्रथानुसार कार्य न करते थे और उसके उपचार को उसका समय आने पर अवलम्बित समझते थे। जब उन्होंने काबुल पर आक्रमण करने का सकल्प कर लिया तो कुछ बेगमो के ठहरने के लिये एव भारी असबाब रखने के लिये उन्होंने बुदाग खा से कुछ घर मांगे। उन्होने कहा कि, "हमने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार आपको कन्धार दे दिया किन्तु हमारा काम बिना किसी ऐसे स्थान के नही चल सकता जहाँ हम अपने आदमियो को छोड कर बिना किसी चिन्ता के काबुल की विजय हेतु प्रस्थान कर सकें।" बुदाग खा ने नासमझी के कारण उनके आदेश का पालन न किया। जो प्रतिष्ठित अमीर हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा मे थे उन्होने निवेदन किया कि, "हमें एक महान् कार्य करना है। जब तक कन्धार हमारे अधिकार में न आ जाय तब तक अपने परिवार को वहाँ छोड कर आप की सेवा में साथ चल सकने के अतिरिक्त, कोई अन्य उपाय नही।" किन्तु हज़रत जन्नत आशियानी हज़रत शाह के सौजन्य के कारण उस समूह के हृदय को मलिन न करना चाहते थे। इसी बीच में शाह के पुत्र की मृत्यु हो गई। उनके विश्वासपात्रों ने निवेदन किया कि "शीत ऋतु निकट आ गई है। परिवार वालो को एव भारी सामान इस पर्वतीय प्रदेश में अपने साथ ले जाना कठिन ही नही अपितु असम्भव है। शाह के पुत्र की भी मृत्यु हो चुकी है। कन्धार को तुर्कमानो के अधिकार में छोड देना राज्य के हित की दृष्टि से उचित नही विशेष रूप से ऐसी अवस्था में जब कि (७२) वे लोग इतने स्वेच्छाचारी एव अन्यायी है कारण कि शाह ने यह आदेश दिया था कि वे लोग सेवा हेतु सर्वदा कटिबद्ध रह कर उत्कृष्ट रिकाब के साथ-साथ रहेगे। वे अपने स्वामी के आदेशों का उल्लघन करते हुये इस देश में दृढ हो गये है और अत्याचार के हाथो को बढा रखा है। राज्य की नींव को नष्ट-भ्रष्ट करने में वे जरा भी कमी नही करते। राज्य के हित एव समय के औचित्य को देखते हुये यह आवश्यक है कि इस देश के निवासियो को तुर्कमानों के अत्याचार से मुक्ति दिला दी जाय और परिवार एव भारी असबाब को कन्धार में छोड कर बिना किसी चिन्ता के काबुल की विजय हेतु प्रस्थान किया जाय। इस विषय का एक क्षमा-पत्र हज़रत शाह को लिख दिया जाय। क्योंकि सम्मानित शाह बुद्धि एव न्याय की खान है, वे इससे रुष्ट न होंगे अपितु इसे उचित समझेंगे। बुदाग खा को सन्देश भेज दिया जाय कि वह कन्धार अपनी इच्छा से अथवा इच्छा के विरुद्ध छोड दे। यदि वह वहाँ ठहरा रहा तो जबरदस्ती घेर कर उससे कन्धार खाली करा लिया जायगा।" हज़रत जन्नत आशियानी ने कहा, 'यह सब ठीक है, किन्तु अवरोध एव दुष्टता से शून्य बात नही। यद्यपि वे सयम के मार्ग से विचलित हो गये है किन्तु हम शाह के दरबार के दासो के प्रति यह निष्ठुरता नही कर सकते। इस अवस्था मे बुदाग खा के आदमी मारे जायेंगे और ऐसी बात ससार वालों की दृष्टि में उचित नही। यह उचित होगा कि युक्ति से कार्य लेकर बिना युद्ध के किले पर अधिकार जमा लिया जाय।" इस उद्देश्य से उन्होंने बुदाग खा के पास आदमी भेजे और कहलाया, "हम काबुल की विजय हेतु प्रस्थान कर रहे है। उचित यही है कि मीर्ज़ा अस्करी को आपके पास किले में छोड कर प्रस्थान की पताका बलन्द करें।" बुदाग खा ने यह बात स्वीकार कर ली। यह निश्चय हुआ कि विजयी सेना के वीर किले के समीप पहुँच कर घात लगाये बैठे रहे और उन्हे असावधान पाकर भीतर प्रविष्ट हो जाय और किला अधिकार में कर ले। बैराम खा एक

दी। लहू के परगने हाजी मुहम्मद के वजहे उलूफा[1] में प्रदान हुये। ज़मीन दावर इस्माईल बेग को, किलात शेर अफ़गन को, एवं शाल हैदर सुल्तान को प्रदान किये गये। इस प्रकार समस्त अमीरों एवं बादशाही दासों को उनकी सेवा को देखते हुए उनकी इच्छानुसार जागीर प्रदान की गई। जब उनका हृदय उस प्रदेश के शासन के प्रबन्ध से निश्चिन्त हो गया तो एक शुभ मुहूर्त में, प्रताप के पाँव राज्य की रिकाब में रख कर काबुल की ओर रवाना हुये। संयोग एवं भाग्य से एक बहुत बड़े काफले ने हिन्दुस्तान से कन्धार पहुंच कर अपनी इच्छानुसार व्यापार किया था और एराक घोड़े तुर्कमानों से खरीदे थे। उस समय प्रतिष्ठित व्यापारियों सहित काफिला बाशी[2] उनकी सेवा में उपस्थित हुआ और उसने निवेदन किया कि, "यदि हमारे घोड़े सरकार के लिये लेकर अमीरों को बाँट दिये जायं और उनका मूल्य हिन्दुस्तान की विजय के उपरान्त प्रदान हो तो हमें कोई आपत्ति नहीं। इस सेवा को हम अपने अन्त तक स्थायी रखने वाले सौभाग्य की पूँजी समझेंगे।" हज़रत जन्नत आशियानी ने इसे दैवी सहायता समझ कर आदेश दिया कि, "व्यापारियों की इच्छानुसार मूल्य निश्चित करके घोड़े क्रय कर लिये जायं और तमस्सुक[3] लिख कर उन्हें दे दिये जायं।" वे स्वयं उस पर्वत के पुश्ते पर, जो बाबा हसन अब्दाल के समीप है, पहुँचे और उलुग मीर्ज़ा, बैराम खां, शेर अफ़गन एवं हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी को आदेश दिया कि सर्वप्रथम ख़ासे के अस्तबल[4] के लिये घोड़े चुने जायें तदुपरान्त अमीरों तथा दरबार के दासों को उनकी श्रेणी के अनुसार बाँट दिये जायें। क्योंकि दवा बेग हज़ारा अपने प्राण एवं धन द्वारा सेवा करके अपने समकालीनों में सम्मानित होना चाहता था अत: वह शोरी नामक किले की ओर जहाँ उसकी सेना थी, रवाना हो गया। जब शाही लश्कर वहाँ पहुंचा तो वहाँ वालों ने अपनी शक्ति के अनुसार घोड़े एवं भेड़ें प्रस्तुत किये। क्योंकि उस भूभाग में बड़ा हृदयग्राही घास का मैदान है, अत: वे कुछ दिन तक वहाँ ठहरे रहे। यहाँ ख़ानज़ादा बेगम रुग्ण होकर मृत्यु को प्राप्त हो गईं। शोक की प्रथाओं को सम्पन्न कराने एवं दान पुण्य के उपरान्त इस मंज़िल से कूच करके वे अपने सौभाग्य के पथ-प्रदर्शन से राजधानी काबुल की ओर रवाना हुये। मीर्ज़ा हिन्दाल ने कन्धार के समीप पहुंच कर धरती-चुम्बन का सौभाग्य प्राप्त किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने उसे अपार कृपाओं द्वारा सम्मानित किया। मीर्ज़ा के पहुंचने के कारण वे बड़े प्रसन्न हुये। मीर्ज़ा का आगमन बहुत से भाग्यशालियों के लिये पथ-प्रदर्शक बना। प्रतिष्ठित लोगों के दल के दल उनकी सेवा में पहुँचने लगे। किन्तु वायु के प्रतिकूल होने तथा फसलों के मिलने के कारण शाही शिविर में वबा फैल गई। बहुत बड़ी संख्या में लोग मर गये। उन्हीं में हैदर सुल्तान भी था। क्योंकि वायु की प्रतिकूलता बहुत बढ़ गई और वास्तव में उत्तम सेना भी साथ न थी, अत: मीर्ज़ा हिन्दाल ने निवेदन किया कि, "यह बात राज्य के हित में होगी कि इस शीत ऋतु में कन्धार लौट जायं और बहार के प्रारम्भ में उचित तैयारी करके काबुल की विजय हेतु प्रस्थान करें।" हज़रत जन्नत आशियानी ने इस बात का उत्तर देने की ओर ध्यान न दिया किन्तु जब दरबार विसर्जित हो गया तो उन्होंने मीर सैयिद बरका द्वारा सन्देश भेजा "यद्यपि हमें तुम्हारे आगमन तथा यादगार नासिर मीर्ज़ा के (मीर्ज़ा कामरान से) पृथक् होने की सूचना न थी, किन्तु ईश्वर की कृपा

१ व्यय हेतु।
२ क़ाफ़िले का सरदार।
३ दस्तावेज़।
४ बादशाह के व्यक्तिगत प्रयोग के घोड़ों की अस्तबल।

पर भरोसा करके हम काबुल की विजय हेतु चल खड़े हुये थे। इस समय जब तुम लोग आ गये हो और हमारी सेना में नित्य-प्रति वृद्धि हो रही है तो फिर विलम्ब करना कैसा? यदि उसने यह बात अपने आदमियों के कष्ट एव परेशानी के कारण सोची है तो हम जमीनदावर एव उस क्षेत्र के स्थान उसे प्रदान करते हैं। इस शीत ऋतु में जाकर वहाँ आराम से रहो। जब हमारे प्रयत्न के आशीर्वाद से काबुल विजय हो जाय तो सेवा में आ जाय।" मीर्जा इस सन्देश से बड़ा लज्जित हुआ और उसने क्षमा याचना की। वे सत्सकल्प एव ईश्वर पर भरोसा करके अग्रसर हुये। मार्ग में बाबूस बेग का भाई जमील बेग[1], जिसे मीर्जा कामरान ने अपने जामाता आक सुल्तान का अतालीक बना कर गज़नी में नियुक्त कर दिया था, चौखट का चुम्बन करके सम्मानित हुआ और बाबूस के अपराधो की क्षमा चाही। उसको प्रार्थना स्वीकार कर ली गई। जब शाही लश्कर शेख अली की (७४) मंज़िल पर, जा यमगान[2] एव अरग़न्दी के समीप है पहुँचा तो मीर्जा कामरान विजयी पताकाओं के प्रस्थान के समाचार पाकर बड़ा व्याकुल हुआ और उसने कासिम बरलास की एक सेना सहित आगे रवाना कर दिया। कासिम मुख़्लिस तुरबती को, जो उसका मीर आतश[3] था, आदेश दिया कि तोपखाने को उस जलके के समीप जो बाबूस बेग के घर के निकट था, लगा दे। अपने आदमियों के परिवारो को, जो काबुल के किले के बाहर थे, प्रयत्न करके भीतर ले गया। किले को दृढ बनाकर असावधानी एव अभिमान की अवस्था में अपने आदमियों सहित निकल कर, बाबूस बेग की मंज़िल के समीप पड़ाव किया और सेनाओं की व्यवस्था एव पंक्तियों का प्रबन्ध प्रारम्भ करा दिया। क़ासिम बरलास को एक सेना सहित हिरावल[4] का सरदार नियुक्त किया। विजयी सेना में से ख्वाजा मुअज़्ज़म, हाजी मुहम्मद खा एव शेर अफ़ग़न आगे बढ चुके थ। तकिया खिमार नामक स्थान पर दोनो सेनाओं की मुठभेड़ हुई। बादशाही अमीरो ने सेवा का सौभाग्य प्राप्त करके उचित रूप से युद्ध किया। दैवी कृपा से कासिम बरलास मुकाबला न कर सका और भाग खड़ा हुआ। जब बादशाही सेना निकट पहुँची तो मीर्जा हिन्दाल को उसकी प्रार्थना पर हिरावल का मंसब प्रदान किया गया। भाग्यशाली लश्कर ख्वाजा पुश्ते के दर्रे को पार करके अरगन्दी के समीप पहुँच गया था कि बाबूस एव जमील अपनी सेना सहित तथा शाह बीरदी खा, जिसके अधीन गिरदीज़, बगश एव नगज़ थे, उपस्थित हुये और उन्होंने ज़मीन बोस करने का सम्मान प्राप्त किया। उनके पीछे ख्वाजा कलाँ बग का पुत्र मुसाहिब बेग बहुत से आदमियों के साथ पहुँच गया और अपार कृपाओं द्वारा सम्मानित हुआ। उस समय बाबूस ने निवेदन किया कि, "ठहरने का समय नहीं। आप स्वय प्रस्थान करें कारण सभी लोग चले आ रहे हैं।" हज़रत जन्नत आशियानी ने अपने प्रतापी घोड़े को बढ़ाया। हैदर सुल्तान के पुत्र अली कुली मुफरची एव बहादुर को, जो अपने पिता की मृत्यु का शोक मना रहे थे, शोक के वस्त्र से निकाल कर खिलअत प्रदान की और शाही कृपाओं द्वारा सम्मानित किया। कुछ समय उपरान्त कराचा खा ने धरती-चुम्बन का सौभाग्य प्राप्त किया। जब मीर्जा कामरान ने अपनी स्थिति के पृष्ठ पर पतन का रूप देख लिया तो उसने ख्वाजा खावन्द

१ गुल बदन बेगम के पति खिज़्र ख्वाजा का छोटा भाई। उसका विवाह मीर्जा कामरान की एक पुत्री हबीबा से हुआ था।
२ यमयान अथवा यमयान के विषय में देखिये बाबर नामा, पृ० २३।
३ तोपखाने का मुख्य अधिकारी।
४ सेना का अग्र भाग।

महमूद तथा ख्वाजा अब्दुल खालिक को अपने अपराधो की क्षमा-याचना हेतु उनकी सम्मानित सेवा मे भेज कर कुछ प्रार्थनायें कराई। दोनो सेनाओ के मध्य में आधे कुरोह् की दूरी रह गई थी कि ख्वाजाओ ने सेवा मे उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने मीर्ज़ा की प्रार्थनाओ को (स्वीकृति की यह शर्त) रक्खी कि वह सेवा में उपस्थित हो। उन्होने उसके प्रति अन्य कृपायें करने का भी आश्वासन दिलाया और ख्वाजाओ को वापस जाने की अनुमति दे दी। वे उदारता एव सौजन्य के कारण उत्तर आने तक ठहरे रहे। मीर्ज़ा ने ख्वाजाओ को इस आशय से भेजा था कि उसे कुछ समय मिल जाय। वह रात्रि की स्याही की प्रतीक्षा कर रहा था, ताकि रात के अधेरे के परदे में अपने आप को कुशलता के कोने में पहुचा दे। जब मीर्ज़ा के पतन की साय, जो राज्य के सहायको के प्रताप को प्राप्त थी, आ गई और अँधेरा छा गया तो वह शीघ्रातिशीघ्र काबुल के अरक मे पहुँच गया। मीर्ज़ा इबराहीम तथा अपने अन्त पुर को साथ लेकर बीनी हिसार के मार्ग से गज़नी की ओर चल दिया। जब उसके पलायन के समाचार हज़रत जन्नत आशियानी के सम्मानित कानो तक पहुचे, तो उन्होने बाबूस को अपने कुछ विश्वासपात्रो के साथ इस आशय से काबुल भेज दिया कि वह प्रजा को सैनिको के अत्याचार एव असयमी लोगो के जुल्म से बचाये। मीर्ज़ा हिन्दाल को एक सेना सहित मीर्ज़ा कामरान का पीछा करने के लिये भेजा गया। वे स्वय सौभाग्य तथा प्रताप के साथ सवार होकर काबुल की ओर रवाना हुये। १३वी आज़र मास जलाली अर्थात् बुधवार १२ रमज़ान ९५२ हि० (१७ नवम्बर १५४५ ई०) को रात्रि में दैवी कृपा से काबुल पर विजय, जिसे विजयो की प्रस्तावना कहा जा सकता है, प्राप्त हो गई। मौलाना नवेदी ने इस विजय की तारीख "काबुल रा गिरिफ्त[1]" के अक्षरो से निकाली। एक अन्य ने इस मिसरे से तारीख निकाली :

'बे जग गिरिफ्त मुल्के काबुल अज वै[2]'

यद्यपि राज्य के सहायको को इतनी बडी विजय प्राप्त हो गई थी किन्तु हज़रत खाकानी के, जिनकी अवस्था २ वर्ष, २ मास तथा २० दिन थी[3], दर्शन की उनके हृदय में इतनी अधिक अभिलाषा थी कि काबुल की विजय और मीर्ज़ा कामरान की पराजय की प्रसन्नता का कोई महत्व न रह गया था। हज़रत खाकानी को पिता के चरणो का चुम्बन करने के लिये लाया गया और हज़रत जन्नत आशियानी के प्रतीक्षा के नेत्रो को प्रकाश प्राप्त हो गया। दूसरे दिन सौभाग्य एव प्रताप के सिंहासन पर आरूढ होकर ससार को न्याय की घोषणा द्वारा प्रसन्न किया। इस बीच में समाचार प्राप्त हुये (७५) कि ख्वाजा मुअज्जम, मुकद्दस बेग के साथ मीर्ज़ा कामरान के पास भाग जाना चाहता है। हज़रत जन्नत आशियानी इस बात से बडे रुष्ट हुए और उन्होने मुकद्दस बेग को कश्मीर की ओर निर्वासित कर दिया। ख्वाजा मुअज्जम को कृपा एव विश्वास की दृष्टि के नीचे गिरा दिया।

हज़रत खाकानी के खत्ने का जश्न

इस समय जब कि राजसिंहासन एव इक़बाल के तख्त को हज़रत जन्नत आशियानी के पवित्र अस्तित्व द्वारा अनन्त तक स्थायी रहने वाली शोभा प्राप्त हो गई और उन्होने ससार वालो को

१ 'काबुल पर अधिकार जमा लिया।'
२ 'बिना युद्ध के विजय किया काबुल देश उससे।'
३ अकबर का जन्म ५ रजब ९४९ हि० को हुआ था। इस प्रकार उसकी अवस्था ३ वर्ष, २ मास ८ दिन होनी चाहिये।

न्याय के निमन्त्रण द्वारा सतुष्ट कर दिया तो हजरत खाकानी के खत्ने के जश्न ने ससार वालो के मुख पर आनन्द मगल के द्वार खोल दिये। सम्मानित आदेश हुआ कि ब्यूताते खासा के अधिकारी एव सम्मानित बेगम उरता बाग को, जो बडा ही हृदयग्राही स्थान एव आकर्षक भूभाग है, आईना बन्दी करें। अमीर एव नगर के प्रतिष्ठित लोग चार बाग की शोभा में वृद्धि करें। कलाकार एव शिल्पकार दुकानो को सजाने एव बाजार की चहल पहल बढाने के विषय मे लेशमात्र की भी कमी न करें। अल्प समय मे ऐसी आईना बन्दी हो गई जिससे बुद्धिमान् लोग आश्चर्य-चकित हो गये। हजरत जन्नत आशियानी रोजाना किसी न किसी वाटिका में पहुँच कर आनन्द मगल की गोष्ठी को शोभा देकर अमीरो एव दरबार के विश्वासपात्रो के साथ शाहाना सभा कराते थे और सर्व साधारण को उनके पद एव श्रेणी के अनुसार अपनी उदारता द्वारा सम्मानित करते थे। इन उत्कृष्ट सभाओ के आयोजन के पूर्व उन्होंने कराचा खा एव मुसाहिब बेग को हजरत मरियम मकानी का सम्मानित हौदज लाने के लिये कन्धार भेज दिया था। वे आ गईं। हजरत जन्नत आशियानी ने उस दिन एक भव्य जश्न का आयोजन कराया और समस्त बेगमो को दरबार म उपस्थित किया गया। हजरत मरियम मकानी को समस्त बेगमो के बीच में बिना कोई विशेष स्थान प्रदान किये हुये बैठने का आदेश दिया। हजरत खाकानी को (कधा) पर बैठाल कर उस उत्कृष्ट सभा में उपस्थित किया गया। प्रताप के उस पौधे की वृद्धि की परीक्षा लेने के लिये यह आदेश हुआ कि वे इन समस्त बेगमो के मध्य में अपनी माता को पहचान लें। हजरत शहशाह दैवी प्रतिभा के कारण बिना किसी भूल चूक के हजरत मरियम मकानी की ओर अग्रसर हुये और सतीत्व की महफिल में मुख्य स्थान की उस स्वामिनी की गोद मे जा कर बैठ गये। इस विचित्र घटना को देख कर समस्त उपस्थित-गण हर्ष प्रदर्शित करने लगे। सबको ज्ञात हो गया कि इस बुद्धिमान् ने अपनी माता को शारीरिक इद्रियो से नही पहचाना है अपितु आध्यात्मिक सूझ-बूझ एव दैवी शिक्षा द्वारा ईश्वर के निश्चित किये हुये भाग्य से आवरण हटा दिया है। नि सन्देह जो सम्बन्ध आदि काल से स्थापित हो चुका है उसे दूरी का आवरण नही रोक सकता। आध्यात्मिक निकटता में सासारिक दूरी विघ्न नही डाल सकती। सक्षेप में, उस सासारिक एव आध्यात्मिक लोक के चुने हुए व्यक्ति के खत्ने का जश्न उत्तम रूप से सजा दिया गया। सर्व साधारण पादशाही कृपाओं द्वारा लाभान्वित हुये।

आनन्द मगल के उन्ही दिनो में यादगार मीर्जा ने सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। उसका सक्षिप्त हाल इस प्रकार है जब वह मीर्जा कामरान से पृथक् होकर बदख्शां पहुँचा तो वहाँ कोई सफलता न प्राप्त करके हजरत जन्नत आशियानी की सेवा में रवाना हो गया। जिस समय वे काबुल की विजय हेतु प्रस्थान कर चुके थे, वह अत्यधिक कष्ट भोगता हुआ कन्धार पहुँचा। बैराम खा ने उसके प्रति उदारता प्रदर्शित करते हुए आतिथ्य के उपरान्त शाही आदेशानुसार उसे उचित सामान सहित दरबार में भेज दिया। हजरत जन्नत आशियानी ने मीर्जा के हृदय को अपनी मुट्ठी में लेने के उद्देश्य से उसे पादशाहाना कृपाओं द्वारा सम्मानित किया। आईना बन्दी के दिनों में एक दिन वे ख्वाजा रेग रवा में, जो काबुल की प्रसिद्ध सैरगाह है, तशरीफ ले गये और पादशाहाना सभा आयोजित कराई। उन्होने आदेश दिया कि अमीर लोग एक दूसरे से मल्लयुद्ध करें। उन्होने स्वय इमाम कुली कूरची से और मीर्जा हिन्दाल ने यादगार नासिर मीर्जा से मल्ल-युद्ध किया। वहाँ से वे अरगवान[1] की सैर करने ख्वाजा सय्यारान पहुँचे। वहाँ भी आनन्द मगल में व्यस्त रह कर नगर में लौट आये।

१ लाल फूल लाने वाला एक वृक्ष।

इसी बीच में शाह तहमास्प के राजदूतों ने उन्हें विजय की बधाई पहुँचाई और शाह की ओर से उत्तम उपहार एवं तुहफ़े प्रस्तुत किये। उनका सरदार वलद बेग था।

इसी बीच में मीर्ज़ा सुलेमान की ओर से शाह क़ासिम तग़ाई प्रार्थना-पत्र एवं पेशकश सहित (७६) दूत बन कर आया और ज़मीन-बोस का सौभाग्य प्राप्त किया। मीर्ज़ा ने अपने प्रार्थना पत्र में अपने न आने के विषय में जो बहाना लिखा था, वह स्वीकार न हुआ। सम्मानित आदेश हुआ कि, "वह संगठन एवं निष्ठा को सेवा में उपस्थित हो जाने पर अवलम्बित समझे।" आईन बन्दी के अन्तिम दिनों में मीर सैयिद अली, जो अफ़ग़ानिस्तान एवं बिलोचिस्तान के प्रतिष्ठित ज़मीदारों में था और सिन्ध के अधीनस्थ दूकी नामक स्थान के समीप निवास करता था, निष्ठापूर्वक पहुँचा और चौखट चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। उसे पादशाही कृपाओं द्वारा सम्मानित किया गया। उसे दूकी प्रदान कर दिया गया। लगभग उसी समय लवंग बिलोच ने, जो अपने क़बीले के प्रतिष्ठित लोगों में था, अपने भाइयों एवं क़ौम वालों के साथ उपस्थित होकर चौखट का चुम्बन किया और शाल एवं मशतंग की विलायत उसे प्रदान कर दी गई।

इन दिनों में जो घटनायें घटीं उनमें एक यह है कि यादगार नासिर मीर्ज़ा अपने दुर्भाग्य एवं अपनी दुष्टता के कारण अगले पिछले सभी उपकार भूल के आले में रख कर कुछ अभागे अल्पदर्शियों के, जिनमें सर्वश्रेष्ठ मीर्ज़ा अस्करी का कोका मुज़फ्फर था, बहकाने से कुत्सित विचार अपने मस्तिष्क में लाकर विद्रोह की योजनायें बनाने लगा। जब उन्हें निरन्तर यह समाचार सच्चे संदेशवाहकों द्वारा प्रामाणिक रूप से ज्ञात हो गये, विशेष रूप से जब अब्दुल जब्बार शेख़ ने, जो प्रतिष्ठित वक्ता जवानों में था और जो अपने दुर्भाग्य के कारण इन परामर्श-गोष्ठियों में सम्मिलित और उन लोगों का विश्वास-पात्र था, वास्तविक स्थिति का उल्लेख किया तो वे बड़े रुष्ट हुये। मुज़फ्फर कोका की बन्दी बना कर हत्या करा दी गई। यादगार नासिर मीर्ज़ा को बुलवाकर उन्होंने क़राचा ख़ाँ द्वारा उसे क्रोध से परिपूर्ण सन्देश भेजा जिसका सारांश इस प्रकार है —'मेरा यह विचार था कि इस बार जब मैंने पुनः तेरे पिछले अपराध क्षमा कर दिये और अपार कृपाओं द्वारा सुशोभित किया तो तू पिछली बातों से शिक्षा ग्रहण करके उनका उपचार करेगा। अपराधों तथा कृतघ्नता की कोई सीमा होती है।" मीर्ज़ा लज्जावश सिर झुकाये कभी चुप रहता और कभी कोई अपराध अस्वीकार करता। हज़रत जन्नत आशियानी ने मुख़ातिबाते हिसाबी[1] एवं बादशाहं डाँट फटकार के उपरान्त इबराहीम ईशक आका एवं कुछ लोगों को आदेश दिया कि उसे बन्दी बनाकर काबुल के अरक के ऊपर, जहाँ मीर्ज़ा अस्करी बन्दी था, क़ैद कर दिया जाय।

उन दिनों में जो घटनायें घटीं, उन्हीं में चग़ताई सुल्तान की मृत्यु है। वह नवयुवक मुग़ुल शाहज़ादा था और सुन्दरता एवं सच्चरित्रता में अद्वितीय तथा हज़रत जन्नत आशियानी का बड़ा कृपा-पात्र था। उसकी मृत्यु से उन्हें अत्यधिक शोक हुआ। मीर अमानी ने उसकी तारीख़ की रचना तामिया[2] के रूप में इस प्रकार की है:

१ इस शब्द का साधारणतः प्रयोग नहीं होता। इसका तात्पर्य अभियोगों की उस निश्चित संख्या से है जो उसके विरुद्ध लगाये गये।

२ "अबजद के हिसाब से निकाली हुई तारीख़ में कोई संख्या बढ़ाना, जिससे वर्षों की संख्या पूरी हो जाय, परन्तु इस प्रकार बढ़ाई हुई संख्या ६ से अधिक नहीं हो सकती।

कितआ

'सुल्तान चग़ती था सौन्दर्य की वाटिका का गुलाब,
अचानक उसे मृत्यु स्वर्ग की ओर ले गई।
गुलाब की ऋतु में उसने इस उद्यान से यात्रा का संकल्प किया,
हृदय उसके शोक में कली के समान रक्त में डूब गया।
मैंने दुखी बुलबुल से उसकी तारीख़ पूँछी,
रोकर उसने कहा गुलाब वाटिका से निकल गया।'

भाग्यशाली सेना का बदख़शाँ की विजय हेतु प्रस्थान, मीर्ज़ा सुलेमान की पराजय तथा ईश्वर की कृपा से उस देश की विजय

जब यह प्रामाणिक रूप से ज्ञात हो गया कि मीर्ज़ा सुलेमान ने आज्ञाकारिता के फंदे से अपना
निकाल लिया है और अपने आप को सरदारी एवं नेतृत्व (की कल्पनाओं) से कष्ट पहुँचा रहा है
ज़रत जन्नत आशियानी ने ९५३ हि० के प्रारम्भ (मार्च १५४६ ई०) में अपने संकल्प की
बदख़्शाँ की ओर मोड़ी। उसने विद्रोह से सम्बन्धित जो बातें प्रदर्शित की उनमें एक यह थी
बुल की विजय के उपरान्त खूस्त एवं अन्दराब, जो मीर्ज़ा के अधीन थे, दरबार के एक सेवक को
कर दिये गये थे किन्तु मीर्ज़ा ने इस समय उन्हें अपने अधिकार में कर लिया। क्योंकि हिसाब
सिद्धान्त के अनुसार पूरा बदख़्शाँ मीर्ज़ा के हिस्से में न आना था अतः हज़रत जन्नत आशियानी
ज एवं उस क्षेत्र के स्थान भी उससे लेकर अपने किसी सेवक को जागीर के रूप में दे देना
ते थे। वे चाहते थे कि उसके पास (राज्य का) केवल उतना ही (भाग) रहे जितना हज़रत
सितानी ने मीर्ज़ा के पिता को प्रदान किया था। (उनका विचार था कि) जब उनके अधीनस्थ
में वृद्धि हो जाय तो उसे वे उसको पुनः प्रदान कर दें किन्तु मीर्ज़ा को संतुष्ट रखने की दृष्टि
न्होंने कुन्दुज़ को उसके पास रहने दिया था। मीर्ज़ा ने व्यावहारिक ज्ञान के अभाव के कारण
स्वामी के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और खुल्लम खुल्ला बग़ावत करके अपने नाम का ख़ुत्बा
) पढ़वा दिया। हज़रत जन्नत आशियानी ने मीर्ज़ा के विद्रोह की अग्नि को बुझाने के लिए
त खावानी को काबुल में ईश्वर की प्रतिरक्षा के सुपुर्द करके मीर्ज़ा अस्करी को अपने साथ
लिया किन्तु उन्हें यादगार नासिर मीर्ज़ा के विषय में चिन्ता थी। जब वे ग़ारावाग़ के
ग में पहुँचे तो उन्होंने यह उचित समझा कि उसके षड्यन्त्रकारी अस्तित्व को जीवन के शिकंजे से
न दिला दें और संसार से उसकी दुष्टता का अन्त कर दें। उन्होंने मुहम्मद अली तग़ाई को,
के सुपुर्द काबुल की प्रतिरक्षा थी, आदेश दिया कि वह उसका अन्त कर दे। उसने पूर्ण सरलता
केवल ज़ाहिरी स्थिति पर ध्यान रखते हुए निवेदन किया कि, "मैंने कभी किसी गौरय्ये की भी
नहीं की है। मीर्ज़ा की कैसे हत्या करा सकता हूँ?" हज़रत जन्नत आशियानी ने उसकी सरलता
कारण उससे कुछ न कहा और मुहम्मद क़ासिम मौजी को यह सेवा प्रदान कर दी। वह रात्रि में
र्ज़ा के बन्दीगृह में पहुँचा और कमान के चिल्ले से उसका गला घोंट दिया।

जब भाग्यशाली पताकायें अन्दराब के क्षेत्र में पहुँची तो मीर्ज़ा सुलेमान ने अपने दुर्भाग्य के कारण युद्ध के उद्देश्य से धृष्टता के पाँव आगे बढाये, और तीरगरां नामक स्थान पर, जो अन्दराब के अधीनस्थ है, पडाव किया। जब हज़रत जन्नत आशियानी को यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने अपने प्रस्थान के पूर्व, मीर्ज़ा हिन्दाल, कराचा खां, हाजी मुहम्मद खां एवं अन्य रणक्षेत्र के वीरो के एक समूह को रवाना किया। पादशाही सेना एव मीर्ज़ा में घोर युद्ध हुआ। मीर्ज़ा सुलेमान एक खाई को अपनी शरण बनाये हुए दृढ रहा। मीर्ज़ा बेग बरलास धनुर्धारियो के एक समूह को लिये हुए उस ओर[१] से वीरता एवं बाण चलाने की कुशलता का प्रदर्शन करता रहा। मीर्ज़ा हिन्दाल, कराचा खां एवं हाजी मुहम्मद ने उत्साहपूर्वक युद्ध किया। ख्वाजा मुअज्ज़म एव बहादुर खां के बाण लगा। वे पैदल हो गये। बलद बेग, कासिम बेग, जाफर बेग, कराचीन, अहमद बेग एव दूगान बेग, जो शाह के विशेष कूरची थे, और शाह के राजदूत के साथ जिन्हें इस युद्ध में सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त था, घोडो के गिर जाने के कारण भूमि पर आ रहे। दोनों ओर से बराबर का युद्ध हो रहा था कि हज़रत जन्नत आशियानी की भाग्यशाली रिकाब के कुछ फिदाइयों ने, उदाहरणार्थ शेख बहलूल, सुल्तान मुहम्मद बवाक, लुत्फी सरहिन्दी, सुल्तान हुसेन खां, मुहम्मद खां तुर्कमान, मीर्ज़ा कुली जलायर, हैदर मुहम्मद खां के भाई मीर्ज़ा कुली एव शाह कुली नारजी, ईश्वर पर भरोसा करके मीर्ज़ा बेग पर पुन आक्रमण किया। वीरतापूर्वक खाई पार करके तलवारें चलानी प्रारम्भ कर दी। शत्रु मुकाबला न कर सके और भाग खडे हुये और पराजय को बहुत बडी देन समझकर अत्यधिक व्याकुल होकर छिन्न भिन्न हो गये। प्रत्येक दिशा से विजय के मैदान के वीरों ने सिंहों की भाँति आक्रमण करके शत्रुओ को छिन्न-भिन्न कर दिया। हज़रत जन्नत आशियानी अभी स्वय सवार न हुये थे कि विजय एव सफलता का डंका बज गया। मीर्ज़ा सुलेमान के पाँव उखड गये। वह नागी[२] एवं इश्किमिश[३] के मार्ग से खूस्त के दर्रे की ओर रवाना हुआ। तूलक तालीकानी, मीर्ज़ा बेग बरलास एव उवैस सुल्तान ने, जो मुग़ुल सुल्तानों[४] के वंश से थे, मीर्ज़ा सुलेमान से पृथक् होकर, चौखट चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। हज़रत जन्नत आशियानी स्वय चल खड हुए और मीर्ज़ा हिन्दाल एव वीरो के एक समूह को भगाने वालो का पीछा करने के लिये नियुक्त किया। विजयी सैनिकों को बहुत बडी संख्या में बदख्शी घोडे प्राप्त हो गये। वे सासान[५] दर्रे के मार्ग से खूस्त घाटी मे पहुँचे। मीर्ज़ा सुलेमान कुछ लोगो के साथ कोलाब की ओर भाग गया। बदख्शां के अधिकांश प्रतिष्ठित अधिकारियों के दल के दल ने उनकी दासता स्वीकार कर ली। हज़रत जन्नत आशियानी ने प्रत्येक को उसकी स्थिति के अनुसार बादशाही कृपाओं द्वारा सम्मानित किया। मेवो के कारण वे ५-६ दिन तक खूस्त में ठहरे रहे और मुर्गाबी, चकोर एव मछली के शिकार से जी बहलाते रहे। तदुपरान्त वे बरस्क के मार्ग से

१ मीर्ज़ा सुलेमान की ओर से।

२ 'नारीन' अधिक उचित है। यह इश्किमिश के उत्तर में, सुर्खाब की एक सहायक नदी पर है।

३ इश्किमिश, कुन्दुज से दक्षिण पूर्व की ओर लगभग १५ मील पर है। यह तालीकान से ३० मील दक्षिण में है।

४ शाहज़ादों।

५ सासान अथवा शाशान, तीर गरान एव अन्दराब के उत्तर में।

कलावकान[1] और वहाँ से किश्म[2] पहुँचे। मीर्ज़ा सुलेमान ने उस क्षेत्र मे ठहरना उचित न देख कर कुछ (७८) लोगों के साथ आमू नदी पार की और कुछ समय इधर उधर मारा-मारा फिरता रहा।

किश्म की घटनाएँ

ख़ुसरो नामक ईरान के शाह तहमास्प का एक सेवक भाग कर हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में आ गया था। उसने खुल्लम खुल्ला शाह के विषय मे अनुचित शब्द कहे। दूगान बेग, हुसेन बेग, एव जाफर बेग, शाह के कूर्ची जो सम्मानित रिकाब के साथ थे, इन शब्दो को सुनकर किश्म के बाज़ार मे ख़ुसरो के पास पहुँचे और उन्होंने उसकी हत्या कर दी। हज़रत जन्नत आशियानी को यह स्वेच्छाचारी एव उद्दडता अच्छी न लगी। उन्होंने उन लोगो को बन्दी बनवा दिया। कुछ दिन उपरान्त हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार की सिफारिश पर उन लोगो को क्षमा कर दिया। जब बदख़्शाँ की समस्याओं का राज्य के सहायको की इच्छानुसार समाधान हो गया तो उन्होंने कुन्दुज एव उस क्षेत्र के स्थान मीर्ज़ा हिन्दाल को प्रदान कर दिये। बदख़्शाँ की विलायत के अधिकाश भाग राज्य के रिकाब के सेवको में बाँट दिये। मुनइम खा को ख़ुस्त एव बाबूस को तालीकान के अमवाल[3] की तहसील हेतु नियुक्त किया। उन्होंने यह निश्चय किया कि बदख़्शाँ की अन्य समस्याओं के समाधान एव उस राज्य की सुव्यवस्था हेतु किलये ज़फर मे शीत ऋतु व्यतीत करे। इस उद्देश्य से वे उस ओर रवाना हुये। जब वे किश्म एव किलये ज़फर के मध्य में स्थित शाखदान नामक स्थान पर पहुँचे तो रुग्ण हो गये। इस कारण वे दो मास तक वहाँ ठहरे रहे। इस रोग के प्रारम्भ में चार दिन तक अचेत रहे। इस कारण सर्व-साधारण में बुरी-बुरी अफवाहे फैल गईं। लोग अपनी अपनी जागीरो के महाल छोड़कर वापस आ गये। मीर्ज़ा हिन्दाल कुत्सित कल्पनाओ सहित कुछ अमीरो को लेकर अपनी जागीर से कोकजा नदी के तट पर पहुँचा। मीर्ज़ा सुलेमान के शुभचिन्तक चारों ओर से विद्रोह करने लगे। कराचा खा अपने कुछ सहायको को लेकर उत्कृष्ट दरगाह के समीप पहुचा, और वहाँ खरगाह लगा कर डट गया। मीर्ज़ा अस्करी को, जिसके ललाट पर फसाद के अक्षर पढ़े जा रहे थे, बन्दी बना दिया और उसकी अपने खरगाह मे निगरानी करने लगा। स्वय वह उनकी चौखट का फर्श बन कर सेवा एव परिचर्या करने लगा। उनकी सम्मानित सेवा में ख़्वाजा ख़ावन्द महमूद एव ख़्वाजा मुईन के अतिरिक्त कोई अन्य न जाने पाता था। पाँचवें दिन जबसे उन्होंने स्वस्थ होना प्रारम्भ किया, उन्हे होश आने लगा। मीर बरका कोरनिश हेतु पहुँचा। उथल-पुथल एव क़राचा खा की दृढ़ता का थोडा सा उल्लेख किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने कराचा खा को बुलवा कर उसे सम्मानित किया और उसकी उत्तम सेवाओं के प्रति प्रसन्नता प्रकट की। तत्काल भाग्यशाली शाहजादे के नाम कृपायुक्त फरमान लिख कर फज़ील बेग के हाथ इस आशय से काबुल भेजा कि कही बुरे समाचारो में प्रताप की वाटिका का वह पौधा चिन्ता मे न पड जाय और राज्य के हितैषियो में कोई बहुत बडी उथल-पुथल न होने लगे। सयोग से जिस रात में हज़रत जन्नत आशियानी की रुग्णावस्था के शोकमय समाचार काबुल पहुँचे, प्रातःकाल फज़ील बेग ने उनके स्वस्थ होने के सुखद समाचार पहुचा दिये। चिन्तित हृदय शान्त हो गये।

१ कलावकान, कलावगान, कलाऊकान अथवा कलागान, किश्म के पश्चिम में।
२ आक्सस नदी की ऊपरी द्रोणी (basin) में।
३ मालगुज़ारी।

राज्य के शुभ-चिन्तक सुव्यवस्थित एवं दृढ़ हो गये। राज्य के उपद्रव की अग्नि शान्त हो गई। मीर्ज़ा हिन्दाल अपने स्थान को तथा प्रत्येक अपनी अपनी जागीर को लौट गया।

इस वर्ष की घटनाओं में ख्वाजा सुल्तान मुहम्मद रशीदी की हत्या है जिसे विज़ारत का पद प्राप्त था। इस घटना का संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है कि ख्वाजा मुअज्ज़म कुछ पागल दुष्टों के साथ मज़हब एवं मिल्लत[1] के पक्षपात के कारण, जो कि बड़ी ही ख़राब बात है, २१ रमज़ान[2] की रात्रि में ख्वाजा (सुल्तान मुहम्मद रशीदी) के घर पहुँचा और रोज़ा खोलने के समय धृष्ट तलवार के जल से शहीद कर दिया। बादशाही कोप के भय से, जो दैवी कोप का नमूना है, भाग खड़ा हुआ। जब यह समाचार सम्मानित कानों तक पहुँचे तो उन्होंने कुछ लोगों को उन दुष्टों को बन्दी बनाने के लिये भेजा। भाग्य रूपी अनुल्लंघनीय फ़रमान काबुल के अधिकारियों के नाम, जहाँ वे अभागे भाग गये थे, भेजा गया। मुहम्मद अली तग़ाई, फ़ज़ील बेग एवं कुछ अन्य लोगों ने, जो हज़रत जहाँबानी की सेवा में थे, सम्मानित फ़रमान से अवगत होकर, ख्वाजा मुअज्ज़म एवं उसके साथियों को बन्दी बना लिया। जब शाखदान नामक स्थान पर वे स्वस्थ होने लगे तो वे पालकी में बैठ कर क़िलये ज़फ़र की ओर रवाना हुये। मौलाना बायज़ीद ने, जो बड़ा ही कुशल चिकित्सक था, इस रुग्णावस्था (७९) में उचित सेवायें एवं उपाय किये। क़िलये ज़फ़र में पहुँच कर अल्प समय में वे स्वस्थ हो गये। उनके आदेशानुसार ख़ानये कान[3] का निर्माण हुआ। वे प्रायः उस हृदयग्राही भवन में बैठकर पादशाहाना दरबार किया करते थे। वहाँ से शेर अफ़गन वल्द कूच बेग को कहमर्द[4], जुहाक[5] एवं बामियान[6] प्रदान करके विदा कर दिया। उन्होंने कहा कि जब उत्कृष्ट शिविर काबुल पहुँचेगा, तो ग़ूरबन्द[7] भी उसकी जागीर में दे दिया जायगा।

मीर्ज़ा कामरान का संक्षिप्त उल्लेख एवं उसका काबुल के क़िले में अचानक पहुँच जाना

इस समय जब कि हज़रत जन्नत आशियानी इतनी बुरी तरह रुग्ण हो गये और बहुत समय तक बदख्शाँ की विलायत में उस राज्य की सुव्यवस्था एवं उसके शासन प्रबन्ध में व्यस्त रहे तो मीर्ज़ा कामरान को अवसर मिल गया। वह दुष्टों के एक समूह को एकत्र करके अपनी उद्दंडता के कारण अचानक काबुल पहुँच गया और हिसार पर अधिकार जमा लिया। शेर अफ़गन नमकहरामी

१ सुन्नी शीआ के मतभेद के कारण।
२ २१ रमज़ान ९५३ हि० (१५ नवम्बर १५४६ ई०)।
३ सम्भवतः काठ अथवा घास फूस का घर।
४ कहमर्द अथवा कमहर्द, बामियान के उत्तर में तथा काबुल के उत्तर पश्चिम में एक घाटी में स्थित है जो दन्दान शिकन दर्रे के समीप है।
५ काबुल तथा ख़ुरासान के मार्ग पर।
६ बामियान ग़ूर का पूर्वी भाग जो इस्लाम के पूर्व बौद्धों का बहुत बड़ा केन्द्र था।
७ ग़ूरबन्द अथवा ग़ूर दर्रा, हिन्दुकुश की ऊँची पहाड़ियों के दक्षिण में स्थित है और बल्ख़ से काबुल के मार्ग का मुख्य दर्रा है।

करके मीर्जा से मिल गया। इस चिन्ताजनक समाचार को सुनकर वे बड़े ही रुष्ट हुये और उपद्रव की इस अग्नि को शान्त करना निश्चय करके काबुल की ओर रवाना हुये।

मीर्जा कामरान का संक्षिप्त हाल

जब सम्मानित लश्कर कन्धार विजय करके काबुल के समीप पहुँच गया तो उस देश के सभी सैनिक एव सर्वसाधारण भाग्यशाली चरणो के पदार्पण के समाचार पाकर प्रसन्न हो गये और मीर्जा से पृथक् हो गये। उनके दल के दल एव समूह सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त करने लगे। मीर्जा व्याकुल एव चिन्तित होकर असफलता की घाटी में पहुँच गया। हजरत जन्नत आशियानी ने मीर्जा हिन्दाल, मुसाहिब बेग एव कुछ अन्य लोगो को मीर्जा कामरान का पीछा करने के लिये, जैसा कि काबुल की विजय के प्रसग में लिखा जा चुका है, नियुक्त किया। जब उन्हे मीर्जा का कोई पता न चला तो शाही आदेशानुसार पीछा करने वाले काबुल वापस लौट आये। मीर्जा कामरान शीघ्रातिशीघ्र गजनी पहुँचा। वहाँ के निवासियो का भाग्य ने पथ-प्रदर्शन किया और उन्होंने दृढतापूर्वक किला बन्द कर लिया। मीर्जा ने यद्यपि बड़ा अधिक प्रयत्न किया किन्तु उसे सफलता न प्राप्त हुई। सहस्रो असफलताओं का सामना करता हुआ, वह किले को छोड कर खिज्र खा हजारा के घर पहुँचा। खिज्र खा ने आतिथ्य करके मीर्जा को तीरी के मार्ग से जमीन दावर पहुँचा दिया। हुसामुद्दीन अली खलीफा[1] ने अत्यधिक वीरता प्रदर्शित करते हुये क़िले की प्रतिरक्षा की। जब यह समाचार सम्मानित कानो तक पहुँचे तो उन्होंने गजनी मीर्जा हिन्दाल को प्रदान कर दी और जमीन दावर एव उसके अधीनस्थ स्थान मीर्जा उलुग बेग की जागीर में दे दिये। अलम, नक्कारा तुमन, तुग[2] द्वारा उसे सम्मानित करके जमीन दावर की ओर विदा कर दिया। बैराम खा के नाम इस आशय का फरमान भेजा गया कि क्योंकि यादगार नासिर मीर्जा राज-भक्ति की दृष्टि से वहाँ पहुँचा है, अत उसे मीर्जा उलुग बेग के साथ मीर्जा कामरान के विद्रोह को शान्त करने के लिये भेज दिया जाय। यादगार नासिर मीर्जा को भी एक फरमान भेजा गया कि वह मीर्जा उलुग बेग के साथ मिलकर मीर्जा कामरान के विद्रोह का दमन करे और इस प्रकार वह अपनी पिछली त्रुटियो की हानि की पूर्ति करे। मीर्जा लोग मिलकर कन्धार से जमीन दावर की ओर रवाना हुये। विजयी सेनाओ के पहुँचने के समाचार पाकर हजारा लोग पर्वत एव जगल में छिन्न भिन्न हो गये। मीर्जा तत्ता की ओर रवाना हुआ और उसने शाह हुसेन अरगून से सहायता माँगी। मीर्जा उलुग अपनी जागीर को चला गया। यादगार नासिर मीर्जा सेवा का भाग्यशाली एहराम[3] बाँध कर, राजधानी काबुल में जमीन बोस करके सम्मानित हुआ। मीर्जा कामरान ने तत्ता के हाकिम की पुत्री से, जिससे उसकी मँगनी पहले हो चुकी थी, विवाह कर लिया। कुछ दिन तक वह वहाँ निवास करता रहा और समय की प्रतीक्षा में रहा। जब हजरत जन्नत आशियानी के अत्यधिक रुग्ण होने के समाचार एव अन्य बुरी-बुरी अफवाहे फैल गईं तो मीर्जा ने तत्ता के हाकिम से कुमक की प्रार्थना करके

१ हुसामुद्दीन अली वल्द मीर खलीफा।

२ पताका, नक्कारा एवं बादशाहों के अन्य चिह्न जिनका प्रयोग केवल बादशाह अथवा वही अधिकारी कर सकता था, जिसे इनके प्रयोग की अनुमति हो।

३ हाजियों का वस्त्र, दो चादरें जो बिना सिली हुई एक बाँधी और एक ओढ़ी जाती है। हुमायू को पूज्य मानकर इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

काबुल की ओर प्रस्थान करने का सकल्प कर लिया। तत्ता के हाकिम ने भी इस बात को बहुत बडी देन समझ कर मीर्ज़ा के साथ एक सेना कर दी। उसे कुछ लोगो ने सलाह दी कि वह सर्वप्रथम कन्धार पर अधिकार जमा ले, तदुपरान्त काबुल की ओर प्रस्थान करे। क्योकि कन्धार बैराम ख़ा की सुव्यवस्था के कारण दृढ हो गया था अत वहां सुगमतापूर्वक (८०) सफलता न प्राप्त हो सकती थी। इस कारण वह काबुल की ओर रवाना हुआ। क़िलात के समीप उसे अफ़ग़ान व्यापारियो का एक समूह मिला जो घोडे लिये जा रहे थे। उसने उन लोगो के पास पहुँचकर उनसे घोडे छीन लिये और अपने आदमियो में बांट दिये। वहां से वह गज़नी रवाना हुआ। अचानक गज़नी पहुच गया। मीर्ज़ा हिन्दाल की ओर से ज़ाहिद बेग किले में असावधानी एव मस्ती की अवस्था मे समय व्यतीत कर रहा था। जिस रात्रि में मीर्ज़ा गज़नी पहुँचा ज़ाहिद बेग बुरी तरह नशे में असावधान था। अब्दुर्रहमान कस्साव एव कुछ लोगो ने मीर्ज़ा को कमन्द द्वारा ऊपर खीच लिया। मीर्ज़ा को किला प्राप्त हो गया। ज़ाहिद बेग को उसी मस्ती में मीर्ज़ा के समक्ष प्रस्तुत किया गया। मीर्ज़ा ने उसी मस्ती की अवस्था मे उसकी हत्या करा दी। तदुपरान्त वह अपने जामाता दौलत सुल्तान को ववकर वालो के एक समूह के साथ, जिनका सरदार तत्ता के हाकिम का एक प्रतिष्ठित सरदार मलिक मुहम्मद था, ग़ज़नी में छोड कर शीघ्रातिशीघ्र काबुल की ओर रवाना हो गया। अचानक एक दिन प्रात काल वह काबुल पहुँच गया। सर्वप्रथम वह ताकिया दोज़ान नामक द्वार पर पहुँचा। मुहम्मद अली के विषय में, जो काबुल का हाकिम था, सूचना मिली कि वह हम्माम में है। क्योकि वह बदमस्ती के नशे में असावधानी के खुमार में ग्रस्त था अत मीर्ज़ा ने अली कुली ऊग़ली नामक अपने एक कूरची को हम्माम में भेजा। वह मुहम्मद अली को नगा हम्माम में ले आया। तलवार के जल से उसे स्नान करा दिया गया। मीर्ज़ा किले के भीतर प्रविष्ट होने के लिये चल खडा हुआ। पहलवान उश्तर ने, जिसके अधीन दरवाज़ये आहिनी की देख रेख थी, निश्चित योजना के अनुसार द्वार को खोल दिया। मीर्ज़ा ने नगर के भीतर प्रविष्ट होकर उसपर अधिकार जमा लिया। जिस दिन प्रात काल यह घटना घटी, हाजी मुहम्मद असस ने मीर्ज़ा से आकर भेंट की। मीर्ज़ा ने पूँछा, "कैसे गया और कैसे आया ?" उसने उत्तर दिया कि "सायकाल गये और प्रात काल आये।" मीर्ज़ा ने अरक के ऊपर स्थान ग्रहण किया। शम्सुद्दीन अत्का, हज़रत ख़ (?) नी को बडे आदर सम्मान से मीर्ज़ा के समक्ष लाया। मीर्ज़ा ने उस दैवी नूर के पोषित को आदर-सम्मान की गोद में लेकर नाना प्रकार की कृपाओ एव प्रेम का प्रदर्शन किया। तदुपरान्त अल्पदर्शिता एव कुत्सित विचारों से अपने आदमियो को सौप दिया। जब मीर्ज़ा कामरान ने काबुल अपने अधिकार में कर लिया तो उसने नाना प्रकार के अत्याचार प्रारम्भ कर दिये। लोगो की धन-सम्पत्ति का अपहरण करने तथा लोगो का अकारण रक्त बहाने में अत्याचार के हाथ बढा दिये। मेहतर वासिल एव मेहतर वकील के, जो पादशाह के विशेष दास थे, नेत्रो में सलाई फिरवा दी। हुमामुद्दीन अली वल्द मीर ख़लीफ़ा के, जिसकी जागीर उलुग मीर्ज़ा को प्रदान करदी गई थी और जो हज़रत जन्नत आशियानी के आदेशानुसार अपनी जागीर से काबुल आ गया था और उनकी सेवा में जा रहा था, ज़मीनदावर की दृढ़तापूर्वक प्रतिरक्षा करने के प्रतिकार मे गुप्त अग कटवा दिये और बडी बुरी तरह से उसे मरवा डाला। चोलो बहादुर की, जो हज़रत जन्नत आशियानी का हितैषी एव उत्तम सेवक था, हत्या करा दी। ख़्वाजा मुअज़्ज़म, बहादुर ख़ा, अत्का ख़ा, नदीम कोका एव हज़रत जन्नत आशियानी के विश्वास-पात्रो के एक अन्य समूह को बन्दी बनवा दिया। वह सर्वदा धोखेबाज़ी के पत्र लिख-लिख कर लोगो को मार्ग भ्रष्ट किया करता था। इस प्रकार उसने शेर अफ़ग़न को धूर्तता-पूर्वक अपने पास बुला लिया। हसन

बेग कोका एव सुल्तान मुहम्मद बख्शी को छल द्वारा (हजरत जन्नत आशियानी) से पृथक् करा दिया। कमीने स्वभाव के तुच्छ लोगो एव साहसहीनो ने साधारण से लाभ की कल्पना में, अपने भाग्य के प्याले में निर्लज्जता की धूल डाल कर असत्य के मार्ग पर अग्रसर होना प्रारम्भ कर दिया। काबुल पर (मीर्ज़ा कामरान की) विजय का कारण भी लोगों की फूट एव असावधानी थी, कारण कि उस समय काबुल का राज्य मुहम्मद अली तगाई के अधीन था। वह अत्यधिक असावधानी एव मस्ती में समय व्यतीत करता था और सतर्कता एव सावधानी से लेश-मात्र को भी काम न लेता था। सक्षेप में, मीर्ज़ा कामरान ने सैनिकों को एकत्र करना, सेना की सुव्यवस्था एव विद्रोह तथा उपद्रव की सामग्री का सकलन प्रारम्भ कर दिया।

एक दिन मीर्ज़ा अरक के ऊपर बैठा था। बलद बेग, अबुल कासिम एव शाही कूरचियो का एक समूह, जो हजरत (जन्नत आशियानी) से विदा होकर एराक की ओर जा रहा था, मीर्ज़ा से भेंट करने पहुँचा। उस समय हजरत खाकानी भी मीर्ज़ा के पास विराजमान थे। मीर्ज़ा के विश्वास-पात्रो एव निष्ठावानो की बहुत बडी सख्या अत्याचार एव वसूली पर गई थी। बहुत कम सख्या में लोग उसके पास उपस्थित थे। अबुल कासिम का एक उत्तम सेवा सूझी। उसने बलद बेग से धीरे से कहा कि नमक खाने का उत्तरदायित्व तो यह है कि हम ३० जवान एक दिल होकर मीर्ज़ा की हत्या कर दें और प्रताप की वाटिका के इस पौधे को सिंहासनारूढ कर दें। बल्द बेग ने, जो युद्ध का आदमी तथा इस कार्य के योग्य न था, इस विचार की उपेक्षा करते हुये कहा कि, "हम लोग यात्री है। हमें इस व्यर्थ के कार्य से क्या मतलब ?" क्योंकि प्रत्येक कार्य अपने निश्चित समय पर (८१) सम्पन्न होता है, अत उसका समय के पूर्व होना असम्भव है।

ससार को विजय करने वाली पताकाओ का मीर्ज़ा कामरान के विद्रोह के दमन हेतु बदख्शां से बलन्द होना और काबुल का अवरोध

जब मीर्ज़ा कामरान के विद्रोह एव काबुल की विजय के समाचार (हजरत जन्नत आशियानी के) भाग्यशाली कानो तक पहुँचे तो शीत ऋतु की अधिकता एव हिमपात तथा वर्षा के बाहुल्य के बावजूद उन्होंने आबदरा[1] के मार्ग से रवाना होकर फितना व फसाद की अग्नि बुझाना निश्चय कर लिया। सर्वप्रथम मीर्ज़ा सुलेमान को कृपा-युक्त फरमान भेज कर उसके अपराध क्षमा कर दिये और उस आवारगी के रेगिस्तान में भटकने वाले को पुन घर-बार एव जागीर प्रदान की। मीर्ज़ा के पिता को हजरत फिरदौस मकानी ने जो महाल प्रदान किये थे, वही उसे प्रदान कर दिये गये। अन्दराव, खूस्त, कहमर्द, गूरी एव उसके आसपास के स्थान मीर्ज़ा हिन्दाल को जागीर में प्रदान किये। ईश्वर की कृपा से, शुभ मुहूर्त में काबुल की ओर रवाना हुये। वर्षा एव हिमपात की अधिकता के कारण कुछ दिन तालीकान में ठहरे रहे। वर्षा एव हिमपात के कम हो जाने के उपरान्त तालीकान से कुन्दुज की ओर रवाना हुये। मीर्ज़ा हिन्दाल ने अतिथि-सत्कार का प्रबन्ध किया। मीर्ज़ा की खुशी के लिये

१ हिन्दूकुश का एक दर्रा जो बदख्शां से काबुल जाता है।

उन्होंने कुन्दुज के उपान्त में बागे ख़ुसरो शाह में पड़ाव किया। ईदे क़ुरबान[1] के उपरान्त कुन्दुज से प्रस्थान करके उन्होंने शिब्र दर्रे के मार्ग से ख़्वाजा सय्यारान[2] में पड़ाव किया। शेर अली ने, जो अपने आपको मीर्ज़ा का विश्वास-पात्र समझता था, आबदरा नामक दर्रे को अत्यधिक दृढ बना लिया था, किन्तु ज़ाहिरी ज़ोर दैवी सहायता के सामने क्या कर सकता है ?" अन्ततोगत्वा मीर्ज़ा हिन्दाल एव क़राचा ख़ा के सामने से भाग खड़ा हुआ। जब उत्कृष्ट सेना ने दर्रा अधिकार में कर लिया तो उसने पीछे से पहुँच कर उन भारी सामानो एव खेमो को, जो पीछे रह गये थे, लूट लिया।

जब भाग्यशाली शिविर चारीकारान नामक स्थान पर पहुँचे तो उस स्थान से बहुत बड़ी सख्या में लोग अगले तथा पिछले उपकारो को भूल के आले पर रख कर अपने दुर्भाग्य के कारण हज़रत जन्नत आशियानी से पृथक् हो गये और मीर्ज़ा कामरान के पास चले गये। उसने उन्हें उन्नति जो वास्तव में अवनति के अनुरूप थी, प्रदान की। भागने वालो में इस्कन्दर सुल्तान, मीर्ज़ा सजर बरलास वल्द सुल्तान जुनैद बरलास, हज़रत फ़िरदौस मकानी का भागिनेय था। हज़रत जन्नत आशियानी ने ज़मज़मा के क्षेत्र में पड़ाव करके कुछ मूर्ख एव तुच्छ लोगो के चिन्तित हृदय को वचन एव प्रतिज्ञा द्वारा सांत्वना प्रदान की। लोगो के चिन्तित हृदयो को मुट्ठी मे लेने के उपरान्त उन्होने परामर्श गोष्ठी आयोजित की। जिन लोगो को बात करने की अनुमति थी उन्होंने निवेदन किया कि मीर्ज़ा कामरान गढबन्दी किये हुए है अत यह उचित होगा कि काबुल के आगे बढकर बूरी एव ख़्वाजा पुश्ता[3] के क्षेत्र मे पड़ाव किया जाय ताकि विजयी सेनाओं को खाद्य सामग्री प्राप्त होती रहे। इस परामर्श के अनुसार वे ज़मज़मा से रवाना हुए। कुछ दूर गये थे कि उनके दैवी प्रेरणा प्राप्त हृदय को ज्ञात हुआ कि "ख़्वाजा पुश्ता की ओर प्रस्थान करना उचित नही कारण कि अधिकाश लोगो के परिवार नगर में है। वे अपने ऊपर नियत्रण न रखकर पृथक् हो जायेगे। कुछ लोग यह समझेंगे कि सम्मानित लश्कर कन्धार की ओर प्रस्थान कर रहा है। राज्य के हित में यह उचित होगा कि साहस से काम लेकर शहरबन्द[4] को अधिकार में कर लिया जाय कारण कि इस प्रकार हमारे आदमी हमसे पृथक् भी न हो सकेंगे और वर्षा से भी थोडी बहुत मुक्ति प्राप्त हो जायेगी। यदि मीर्ज़ा युद्ध हेतु अग्रसर हो तो यह बड़ा अच्छा होगा, जो कुछ भाग्य में लिखा है वह प्रकट हो जायेगा।" इस कारण उन्होने हाजी मुहम्मद ख़ा को बुलवाकर अपने हृदय की बात उससे कही। उसने उनकी उत्तम राय की अत्यधिक सराहना की और तदनुसार निर्णय हो गया। हाजी मुहम्मद ख़ा एव कुछ अन्य लोग मीनार दर्रे के मार्ग से रवाना हुये और वे स्वय दर्रे के नीचे से शहरबन्द की ओर चल खड़े हुए। मीर्ज़ा हिन्दाल देहे अफ़गान के उपान्त में बाबा शशपर के रौज़े के समीप पहुच गया था कि शेर अफ़गन, मीर्ज़ा कामरान के बहुत से अनुभवी आदमियो को लिये हुए युद्ध हेतु पहुंच गया। दोनों ओर से भीषण युद्ध हुआ। पादशाह की सेना के अधिकाश आदमियो के पाँव दृढ न रह सके। मीर्ज़ा हिन्दाल रणक्षेत्र में वीरतापूर्वक खड़ा हुआ पौरुष एव साहस प्रदर्शित करता रहा। जब हज़रत जन्नत आशियानी को यह

१　ईदे क़ुरबान अथवा बक़रईद, १० ज़िलहिज्जा को होती है। इस प्रकार ईदे क़ुरबान १० ज़िलहिज्जा ६५३ हि० (१ फ़रवरी १५४७ ई०) को हुई।
२　'ख़्वाजा सेह यारान'।
३　प्रकाशित ग्रन्थ में 'ख़्वाजा बस्ता'।
४　वह घेरा अथवा रोक जो नगर की प्रतिरक्षा हेतु तैयार होता है।

समाचार प्राप्त हुए तो उन्होंने क़राचा ख़ा, मीर बरका एव कुछ अन्य लोगो, उदाहरणार्थ शाह कुली नारजी, इत्यादि को आदेश दिया कि वे कुमक हेतु पहुँच कर शत्रुओं को दड दे। ये लोग रणक्षेत्र की ओर रवाना हुए। मीर बरका ने सबसे आगे बढकर आक्रमण किया। इसी बीच में हाजी (८२) मुहम्मद ख़ा तथा अन्य लोग, जो उस मार्ग से भेजे गये थे, समय पर पहुँच गये। शत्रुओ के समूह पराजित हो गये। शेर अफगन को बन्दी बनाकर हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में उपस्थित किया गया। वे अपनी उदारता के कारण चाहते थे कि उसे कुछ दिन बन्दी रखकर निष्ठावानो की माला में सम्मिलित कर लें किन्तु कराचा ख़ा के निवेदन तथा कुछ निष्ठावानो के आग्रह पर जो उसके षड्यत्र के कारण अत्यधिक व्याकुल हो चुके थे, तत्काल हत्या करा दी गई।

हज़रत जन्नत आशियानी ख्वाबान के मार्ग से काबुल की ओर रवाना हुए। पादशाही सेना के वीर भी भागने वालो का पीछा करते हुए दरवाजए आहिनी तक पहुँच गये। मीर्ज़ा खिज्र ख़ा एव अरगूनो का एक दल हज़ारा जाति के मार्ग की ओर चल खडा हुआ। राज्य के सहायको ने शहर बन्द पर अधिकार जमा लिया। उन्होंने उस दिन कराचा ख़ा के बाग में पडाव किया। दुष्ट षड्यत्रकारियो की एक बहुत बडी सख्या की, जो रणक्षेत्र में राज्य के सहायकों द्वारा बन्दी बना लिये गये थे, हत्या करा दी गई। शेर अली किले में पहुँच गया, किले के चिन्तित लोगों का सतोष प्राप्त हो गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने बागे दीवानख़ाना एव उरता बाग की सैर करके उकाबैन पर्वत पर, जो कि काबुल के किले के समक्ष है, पडाव किया। तोपें एव जर्बज़न चलाई जाने लगी। नित्यप्रति मीर्ज़ा कामरान के आदमी निकलकर वीरतापूर्वक युद्ध करते थे। महदी ख़ा, उसका जामाता[1] चिलमा बेग, बाबा सईद किबचाक, इस्माईल कूज[2], मुल्ला मुन्तलाई ओजी एव कुछ अन्य लोग अपने दुर्भाग्य के कारण मीर्ज़ा कामरान के पास भाग गये। हज़रत जन्नत आशियानी ने कराचा ख़ा, हाजी मुहम्मद ख़ा एव कुछ अन्य लोगो को आदेश दिया कि वे यारक द्वार के समक्ष सम्मानित शिविर के लिये स्थान ढूँढें ताकि किले के अवरोध की ओर अधिक ध्यान देकर मोर्चे बाँटे जा सकें और किले वालो को व्याकुल किया जा सके। जो लोग भेजे गये थे वे स्थान की खोज में थे कि ३०-४० व्यक्ति यारक द्वार से निकलकर युद्ध हेतु खडे हो गये। जब हाजी मुहम्मद ख़ा ने उन पर आक्रमण किया तो वे मुकाबला न कर सके और उन्होंने किले में शरण ले ली। इसी बीच में शेर अली ने किले से निकलकर हाजी मुहम्मद ख़ा से वीरतापूर्वक युद्ध किया। उसके दाएँ हाथ में शेर अली द्वारा गहरा घाव लगा। इसी बीच में पादशाही आदमियो ने प्रयत्न करके शेर अली को किले के भीतर भगा दिया। हाजी मुहम्मद ख़ा को उठा कर उसके स्थान पर ले गये। बहुत समय तक वह रुग्ण रहा और यह प्रसिद्ध हो गया कि वह मृत्यु को प्राप्त हो गया है। हजरत जन्नत आशियानी ने उसके पास आदमी भेजकर आदेश दिया कि वह सवार होकर मोर्चे में अपनी सूरत दिखाये। वह आदेशानुसार सवार हुआ और शत्रुओ की प्रसन्नता का बाज़ार ठडा पड गया। एक दिन सुल्तान जुनैद के पुत्र मीर्ज़ा सन्जर ने, जो अपने ललाट पर कृतघ्नता की कालिमा लगाकर भाग गया था, किले से निकलकर आक्रमण किया। उसका घोडा उसके वश में न रहा और उसे उठाकर बनफ्शे के उद्यान तक ले गया। रणक्षेत्र के वीरो ने उसे बन्दी बनाकर उनकी सम्मानित सेवा में प्रस्तुत किया।

१ इसका अर्थ जामाता एव सम्बधी दोनों हो सकता है।

२ इसे 'कूच' तथा 'कूर' और 'कोर' कई रूप से लिखा गया है।

हज़रत जन्नत आशियानी ने उसको हत्या न कराई और उसे बन्दीगृह में डलवा दिया। मुहम्मद कासिम एवं मुहम्मद हुसेन, जो पहलवान मीर दोस्त मीर बर[1] के भागिनेय थे और जिनमें से प्रत्येक इस समय अपनी योग्यतानुसार आश्रय प्राप्त करके इस[2] राज्य के प्रतिष्ठित अमीरों में सम्मिलित हैं, अपने जागरूक सौभाग्य की सहायता से उस बुर्ज से, जो कि दरवाज़ए आहिनी एवं कासिम बरलास के बुर्ज के मध्य में है, कूदकर उत्साह में धरती चुम्बन द्वारा सम्मानित हुए और अपार कृपाओं के पात्र बने।

अवरोध के समय एक बहुत बड़ा काफ़िला विलायत[3] से चारीकारान पहुँचा। उस काफ़िले में अत्यधिक घोड़े थे। मीर्ज़ा कामरान ने शेर अली को एक बहुत बड़ी सख्या सहित इस आशय से नियुक्त किया कि वह घोड़ों पर अधिकार जमा ले। मीर्ज़ा के एक प्रतिष्ठित विश्वासपात्र तरदी मुहम्मद जगजग ने उसे बहुत रोका और स्पष्ट रूप से कहा "यदि हज़रत बादशाह को इस बात का पता चल गया तो वे अपने आदमियों को भेजकर हमारा मार्ग रुकवा लेंगे और आप तक न पहुँचने देंगे। इससे खराबी तथा विनाश के अतिरिक्त कुछ और न प्राप्त होगा।" मीर्ज़ा, जिसने लोगों की धन सम्पत्ति पर लाभ की दृष्टि लगा रखी थी, ने इस बात की ओर ध्यान न दिया और एक सेना को शेर अली के अधीन नियुक्त किया। हज़रत जन्नत आशियानी को यह समाचार तत्काल प्राप्त हो गये। उन्होंने हाजी मुहम्मद खा को आदेश दिया कि वह उन दुष्टों को अत्याचार एवं लूट मार से रोके। हाजी मुहम्मद खा ने निवेदन किया कि, "वे लोग रातों रात रवाना हो चुके हैं और उन्होंने अपना काम पूरा कर लिया होगा। यदि हम पीछा करते हुए उन तक पहुच जाते हैं तो वे हमारे हाथ से निकल जायेंगे। इस समय यही उचित है कि मोर्चे को दृढ़ बनाकर हम मार्ग रोक (८३) लें और उन्हें किले में प्रविष्ट न होने दें।" अन्त में यही निश्चित हुआ। शेर अली, तरदी मुहम्मद जगजग एवं उन सब लोगों ने, जो व्यापारियों तक पहुँच गये थे, उनकी धन सम्पत्ति को ज़बरदस्ती छीन लिया। व्यापारियों की अत्यधिक धन सम्पत्ति नष्ट-भ्रष्ट हो गई। जब उन्होंने लौटकर किले में प्रविष्ट होना चाहा तो मार्गों एवं मोर्चों के दृढ़ होने के कारण वे आगे न बढ़ सके। तरदी मुहम्मद ने शेर अली से कहा कि, 'देखो, जो कुछ मैंने कहा था, वही हुआ।" उन्होंने किले में प्रविष्ट होने का अत्यधिक प्रयत्न किया किन्तु यह सम्भव न हो सका। विवश होकर वे एक ओर हो गये और समय की प्रतीक्षा करने लगे। एक दिन बाकी सालेह, जो कि बड़ा ही वीर यक्का जवान था, आग्रह करके कामरान मीर्ज़ा को दरवाज़ए आहिनी के निकट लाया और डींग मारते हुए बोला कि, "मैं एक ही आक्रमण में शेर अली को इसी द्वार से भीतर ले आता हूँ।" द्वार खोल कर मीर्ज़ा के वीरों के एक दस्ते ने बढ़कर वीरता एवं पौरुष प्रदर्शित किया। मुहम्मद कासिम खा मौजी, कासिम मुखलिस एवं जमील बेग ने, जो उस मोर्चे में उपस्थित थे, बढ़कर वीरता एवं पौरुष प्रदर्शित किया सुम्बुल खा ने ६०-७० पादशाही दासों सहित बन्दूक चलाने में अपनी कुशलता का प्रदर्शन किया। जमील बेग शहीद कर दिया गया। बाकी सालेह के, जो कि इस उपद्रव की जड़ था,

१ ब्लाखमैन के अनुसार 'शाही बर्नों के अधीक्षक'।
२ अकबर से तात्पर्य है।
३ अन्य देश से, बायज़ीद के अनुसार 'बल्ख से'।

जीवन के खलिहान में बन्दूक की गोली लगी। जलालुद्दीन बेग के, जो मीर्ज़ा के प्रतिष्ठित लोगों में था, गहरा घाव लगा। मीर्ज़ा के आदमियों की बहुत बड़ी संख्या घायल हो गई। वे पुन किले में प्रविष्ट हो गये और उन्होंने द्वार को दृढ़ बना लिया। शेर अली भीतर प्रविष्ट होने की ओर से निराश हो गया और गज़नी चला गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने खिज्र ख्वाजा खा, मुसाहिब बेग, इस्माईल बेग दूल्दी एव बहुत बड़ी संख्या में अन्य लोगों को इस आशय से नियुक्त किया कि वे शीघ्रातिशीघ्र बढ़ते हुए उन अभागों को बन्दी बना लें। जो लोग भेजे गए थे वे सजावन दर्रे में शेर अली के पास पहुँच गये। घोर युद्ध हुआ, विजयी सेना के वीरों को विजय प्राप्त हो गई। अत्यधिक धन सम्पत्ति लूट में प्राप्त हुई। बहुत बड़ी संख्या में लोग बन्दी बना लिये गये। शेर अली कुछ लोगों के साथ हज़ाराजात की ओर चल दिया और उसने खिज्र खा के घर में शरण ली। पादशाही आदमी विजय तथा सफलता प्राप्त करके लौट आये और कुशलतापूर्वक हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में पहुँच गये। उन्होंने आदेश दिया कि जो व्यापारी लूट लिये गये हैं वे अपने घोड़े तथा असबाब पहिचान कर ले जायें। अधिकांश लोगों को उनकी धन सम्पत्ति प्राप्त हो गई और उस सत्य को पहिचानने वाले पादशाह के न्याय एव उसके उपकार में वृद्धि हो गई। जो विद्रोही बन्दी बना लिये गये थे, वे मोर्चों के समीप उपस्थित किये गये। उन्हें खुल्लम खुल्ला दारुण कष्ट देकर मरवा डाला गया।

मीर्ज़ा कामरान जब सभी ओर से निराश हो गया और किसी दिशा से भी सफलता होते न देखी तो उसने अपने कुत्सित विचार निरपराध बालकों की हत्या तथा स्त्रियों के सतीत्व को नष्ट करने की ओर आकृष्ट किये। बाबूस की पत्नी को बाज़ार वालों को सौंप दिया। उसके तीन पुत्रों की, जिसमें से एक की अवस्था ७ वर्ष की, दूसरे की ५ वर्ष की और तीसरे की ३ वर्ष की थी, दारुण वेदना देकर हत्या करा दी और उनकी लाश को कराचा बेग तथा मुसाहिब बेग के मोर्चे के समीप फेंक दिया। कराचा बेग के पुत्र सरदार बेग तथा मुसाहिब बेग के पुत्र खुदा दोस्त को किले के कंगूरों से बाँधकर लटकवा दिया और उसे संदेश भेजा कि वह आकर या तो उससे भेंट कर जाय या उसे बाहर जाने का मार्ग दे दे और या पादशाह को अवरोध से हटा ले अन्यथा उनके पुत्रों की भी बाबूस के पुत्रों के समान हत्या करा दी जायेगी। कराचा खा ने, जो उस समय पूर्ण अधिकार-सम्पन्न वकील था, चिल्लाकर कहा कि, "हज़रत सलामत रहे, हमारे प्राण तथा धन सम्पत्ति एव पुत्र अन्त में कभी न कभी नष्ट होंगे ही, इससे अच्छा होगा कि वे अपने स्वामी एव आश्रयदाता के काम आ जायें। हमारे पुत्रों का क्या मूल्य है हमारे प्राण भी उनके ऊपर न्योछावर हैं। तुम इन कुत्सित विचारों को त्याग दो और लज्जा एव क्षमा माँगते हुए उनकी सेवा में उपस्थित हो कारण कि इसके अतिरिक्त कोई उपाय नहीं और मुक्ति का कोई दूसरा साधन नहीं। उस समय जो कुछ तुम्हारे हित में होगा और हमसे जो कुछ सम्भव होगा हम प्रयत्न करेंगे। हमें हमारे पुत्रों की हत्या का क्या भय दिखाते हो, यदि हमारे पुत्रों की हत्या हो गई तो उनका बदला सुगमतापूर्वक प्राप्त हो जायेगा।" हज़रत जन्नत आशियानी ने कराचा खा एव मुसाहिब बेग को बुलाकर उनके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करके उन्हें प्रसन्न कर दिया। मीर्ज़ा ने अत्यधिक अत्याचार एव निर्लज्जता प्रदर्शित करते हुए लोगों की स्त्रियों के सम्मान एव सतीत्व को नष्ट करना प्रारम्भ कर दिया। मुहम्मद क़ासिम मौजी की पत्नी के स्तन बधवाकर उसे लटकवा दिया। यह निष्ठुरता उसके पतन एव दुर्भाग्य का और अधिक कारण बन गई।

(८४) इस समय जो घटनायें घटी उनमें से एक घटना ऐसी थी जिससे ईश्वर के रहस्य एव हज़रत ख़ाकानी के चमत्कारो का पता चलता है। वह इस प्रकार है मीर्ज़ा कामरान ने अपनी दुष्टता एव अल्पदर्शिता के कारण सल्तनत के उद्यान के पौधे अर्थात् हज़रत ख़ाकानी को तोप के समक्ष लाकर विठाल दिया। क्योंकि ईश्वर उन लोगो की, जिन्हे वह सम्मानित करता है, स्वय रक्षा करता है अत अत्याचारियो के कुत्सित विचारो एव उनकी दुष्कल्पनाओ से उसके अस्तित्व के दामन पर ख़तरे की धूल नही पहुँचती अपितु इन कुत्सित विचारो से बुद्धिमानो की निष्ठा एव उनके विश्वास मे वृद्धि होती है और यह घटनायें हृदय के अधो एव झूठो के पतन का कारण बन जाती है। जब हज़रत ख़ाकानी को तोप के सामने रखा गया तो तत्काल वाल को बाँध डालने वाले तोपचियो के हाथ कॉपने लगे। तुफग के फतीले[1] ठडे पड गये। उनके अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी रजक[2] काम न करते थे। सुम्बुल ख़ा मीर आतश[3] इस कारण विस्मय में पड गया। उसने तोप का निरीक्षण करने के लिये दृष्टि उठाई तो हज़रत ख़ाकानी को पहिचान लिया। उसके शरीर से प्राण निकलने लगे। उसने तत्काल काम से हाथ रोक लिया। इस युक्ति से उस दुष्ट को कुछ समय के लिये कष्ट से मुक्ति प्राप्त हो गई। जब हज़रत जन्नत आशियानी को इस बात का पता चला तो उन्होंने इसके लिये ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के सिज्दे किये। यह घटना किले वालो के पतन का कारण बन गई।

इसी बीच में मीर्ज़ा उलुग बेग ज़मीनदावर से तथा कासिम हुसेन ख़ा सीस्तानी किलात से, ख़्वाजा गाज़ी जो शाह के लश्कर में रह गया था, शाह कुली सुल्तान, जो बैराम ख़ा का सम्बन्धी था, कन्धार से एव कुछ अन्य लोग वदख़्शाँ से हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में पहुँच गये। उन्होने आदेश दिया कि इन लोगो को यारक द्वार के समीप मोर्चे प्रदान किये जायें। मीर्ज़ा कामरान को किसी ओर से सफलता प्राप्त न हुई। जब उसकी अधिकाश योजनाएँ असफल हो गईं तो उसने चापलूसी एव चाटुकारी से काम लेना प्रारम्भ कर दिया। कराचा ख़ा द्वारा निवेदन कराया कि, जो कुछ मैंने किया, मैं उसपर लज्जित हूँ। मैंने अब यह निश्चय कर लिया है कि आपकी सेवा में उपस्थित होकर अपनी पिछली भूलो एव अपराधो की हानियो की पूर्ति करूँ और उचित सेवाओं द्वारा आपके हृदय को अपने प्रति उदार बना लूँ। मेरी प्रार्थना यह है कि मेरे प्राण एव मेरी सम्पत्ति को कोई हानि न पहुचाई जाय और मुझे अपनी कृपा की छाया में स्थान दे दें।" हज़रत जन्नत आशियानी ने अपनी श्रेष्ठता एव अपने उच्च साहस के कारण उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली किन्तु क्योंकि मीर्ज़ा हिन्दाल, कराचा ख़ा, मुसाहिब बेग एव वादशाही लश्कर के अधिकांश प्रतिष्ठित लोग पूर्ण रूप से निष्ठावान् एव स्वामीभक्त न थे और यह चाहते थे कि फसाद की अग्नि शान्त न हो, अत वे मीर्ज़ा के आगमन से सहमत न हुए और शकाओ से परिपूर्ण सदेशो द्वारा मीर्ज़ा को भयभीत कर दिया। उन्होंने उसे कहला भेजा कि, "तू किस आशा से किले में पडा है और किस भरोसे से सेवा में उपस्थित हो रहा है? नित्यप्रति किले पर अधिकार जमाने के साधनों में वृद्धि हो

१ बत्ती जिससे बन्दूक दागी जाती थी।
२ वह सूराख़ जहाँ से बन्दूक एव तोप चलाते समय बारूद में आग लगाई जाती थी।
३ तोपख़ाने का अधिकारी।

रही है। शीघ्रातिशीघ्र हुसन अली आका के मोर्चे की ओर से भाग जा।" मीर्जा इस समूह के सकेत पर बृहस्पतिवार ७ रबी-उल-अव्वल ९५४ हि० (२७ अप्रैल १५४७ ई०) की रात्रि मे उसी स्थान से जिसका उन लोगों ने पता दिया था, बदख्शाँ की ओर भाग खडा हुआ। उसे इस बात की आशा थी कि सम्भवत मीर्जा सुलेमान द्वारा और यदि यह सम्भव न हुआ तो ऊजबेकों की सहायता से सफलता प्राप्त कर ले। हजरत जन्नत आशियानी ने हाजी मुहम्मद खा एव सेना के एक दस्ते को मीर्जा का पीछा करने के लिये नियुक्त किया और स्वय राजधानी काबुल में, जो कि पिशाचों का निवास स्थान बन गई थी, अपने सम्मानित चरणों के प्रकाश से प्रेम का इशरत खाना[1] बना दिया तथा सम्मानित शाहजादे के दर्शन करके प्रसनता प्रकट की। इस महान् देन के लिये ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। हाजी मुहम्मद खा एव वे लोग जो कि मीर्जा का पीछा करने के लिये नियुक्त हुये थे, यद्यपि उसके पास तक पहुँच गये किन्तु प्राचीन सैनिकों की प्रथानुसार उन्होंने पूर्ण रूप से उपेक्षा की और मीर्जा कुशलतापूर्वक निकल गया परन्तु आक सुल्तान एव उसके अधिकाश आदमी राज्य के सहायको द्वारा बन्दी बना लिये गये। न्यायपूर्वक प्रत्येक को उसके कुकर्म के अनुसार दड दिया गया। सुल्तान कुली अत्का, अब्दुल्लाह् मीर्जा के एक सम्बन्धी तरसून मीर्जा, हाफिज मकसूद, मौलाना बाकी यरगू, मौलाना कदम अखाव की हत्या करा दी गई।

मीर्जा कामरान सजिद दर्रे के मार्ग से बदख्शाँ की ओर रवाना हुआ। मीर्जा बेग एव शेर अली, जो उसके विश्वासपात्र थे, कुछ अन्य लोगों सहित जुहाक के समीप मीर्जा से मिल गये। जब वह गूरी पहुँचे तो उसने मीर्जा बेग बरलास को, जो कि गूरी का हाकिम था, सदेश भेजा कि वह आकर उससे मिले। उसने उत्तर मे कहला भेजा कि, "मैं नमकहरामी, जो कि दुष्टो की प्रथा है, नही कर सकता।" मीर्जा गूरी के आगे बढ जाना चाहता था किन्तु मीर्जा के एक कुलचची[2] ने उसे गाली देकर उसकी ओर सकेत करते हुए कहा कि, 'इस प्रकार के आदमी का साथ देने से क्या लाभ? यदि इसमे हजरत फिरदौस मकानी के समान लेशमात्र को भी मर्यादा की रक्षा का ध्यान एव (८५) आत्म सम्मान होता तो यह गूरी के हाकिम को इस अपमान के उपरान्त कभी न छोडता।" मीर्जा ने उसके ताने से रुष्ट होकर कहा कि, "व्यर्थ की बाते क्यो कर रहा है, तू स्थिति को नहीं समझता, मैं तुम लोगों की शोचनीय दशा के कारण इस प्रकार व्यवहार कर रहा हूँ। यदि मैं देखता कि तुममें युद्ध की शक्ति है तो मैं उसे इस प्रकार कभी न छोडता।" उस पागल ने पुन कठोर शब्द कहे। मीर्जा ने पलटकर गूरी के हाकिम से युद्ध किया। गूरी वाले पराजित हो गये। मीर्जा ने गूरी पर अधिकार जमा लिया। उसे थोडा बहुत सामान भी प्राप्त हो गया। वह शेर अली को वहाँ छोडकर स्वय बदख्शाँ की ओर रवाना हुआ और मीर्जा सुलेमान तथा मीर्जा इबराहीम के पास इस आशय से सदेश भेजा कि वे लोग उसकी सहायता करें। उन्होंने अपनी बुद्धि एव बादशाह की निष्ठा के कारण उसकी ओर ध्यान न दिया और मीर्जा की सहायता न की। मीर्जा कामरान अपने कुत्सित विचारों सहित बल्ख की ओर इस आशय से रवाना हुआ कि सम्भवत पीर मुहम्मद खा की सहायता से बदख्शाँ पर अधिकार जमा ले। हजरत जन्नत आशियानी ने कराचा खा को इस आशय से बदख्शाँ में नियुक्त किया कि वह वहाँ जाकर मीर्जा सुलेमान, मीर्जा हिन्दाल एव राज्य के समस्त सहायको

१ आनन्द मंगल का घर।

२ सेवक।

सहित मीर्जा कामरान को बन्दी बना ले अथवा उसे वहाँ से भी भगा दे। कराचा खा बदख्शाँ पहुँचा और मीर्जाओं को साथ लेकर गूरी के किले की ओर रवाना हुआ। वहाँ शेर अली तथा मीर्जा कामरान के उन आदमियो से, जो किला बन्द किये हुए थे, वीरतापूर्वक युद्ध किया। दोनो ओर से बहुत बडी सख्या में वीर मारे गये। उन्हीमें से ख्वाजा नूर एव मुल्ला मीर किताबदार थे जो कि बडे वीर एव मीर्जा हिन्दाल के विश्वासपात्र थे। अन्त मे जो लोग किले मे बन्द थे, वे मुकाबला न कर सके और भाग खडे हुए। किला राज्य के सहायको के अधिकार में आ गया।

इसी बीच में मीर्जा कामरान एव पीर मुहम्मद खा के बल्ख से आगमन के समाचार प्राप्त हुए। मीर्जाओ ने युद्ध न किया और पर्वत की कन्दराओ मे चले गये। हज़रत जन्नत आशियानी ने बदख्शाँ की उथल पुथल के समाचार सुनकर अपने सकल्प की लगाम उस ओर मोडी। गूरबन्द में कराचा खा उनकी सेवा म उपस्थित हुआ। क्योंकि लौटते समय कराचा खा का असबाब ईमाकात[1] द्वारा लूट लिया गया था अत उसे काबुल की ओर बिदा कर दिया गया ताकि वह शीघ्र तैयारी करके सम्मानित शिविर में पहुँच जाय। भाग्यशाली पताकाओं ने गूरबन्द से प्रस्थान करके गुलबहार नामक स्थान पर पडाव किया ताकि कराचा खा के आगमन तक कुछ दिन सैर व शिकार मे समय व्यतीत किया जा सके और जब कराचा खा आ जाये तो आगे प्रस्थान किया जाय। यद्यपि समय निकल चुका था किन्तु फिर भी हजरत जन्नत आशियानी ने अपने पिछले सकल्प के अनुसार पताकायें बदख्शाँ की ओर बलन्द की। क्योंकि ईश्वर की इच्छा न थी अत हिन्दूकोह के दर्रे की तरफ ने मार्ग रोक लिया और उस दर्रे मे ऐसी विचित्र प्रकार की उथल पुथल प्रकट हो गई कि उसे पार करना उनके लिये कठिन दृष्टिगत हुआ, अत समय के औचित्य पर दृष्टि रखते हुए वे काबुल की ओर इस आशय से लौट गये कि बहार के मौसम मे बदख्शाँ की ओर प्रस्थान करें।

हज़रत खाकानी का मकतब मे बैठना एव अन्य घटनायें

क्योंकि हजरत शहशाह की क़यामत तक चिरस्थायी रहने वाली आयु ४ वर्ष ४ मास तथा ४ दिन की हो गई थी अत सासारिक लोगो की प्रथा एव रीति रिवाज के अनुसार उस ईश्वर के रहस्या के ज्ञाता एव असख्य विजयो के कोष का मकतब में लाया गया। मौलाना इमामुद्दीन इब्राहीम को हजरत शहशाह के गुरु होने का सम्मान प्रदान हुआ। क्योकि ईश्वर न भाग्य में यह लिख दिया था कि ईश्वर के दरबार का वह सम्मानित व्यक्ति जाहरी शिक्षा प्राप्त किय बिना अपार दैवी कृपाओ का पात्र बने अत हजरत जन्नत आशियानी के अत्यधिक प्रयत्न पर भी, कि वे ज़ाहिरी विद्याओ का ज्ञान प्राप्त कर लें, कोई सफलता प्राप्त न हुई। कुछ दिन तक मुल्ला इसामुद्दीन इबराहीम उनके गुरु रहे। तदुपरान्त यह समझा गया कि वे उचित प्रयत्न नही करते अत मौलाना बायजीद को इस सेवा हेतु नियुक्त किया गया। इस प्रकार कई शिक्षक बदले गये किन्तु हज़रत खाकानी ने विद्या अध्ययन की ओर कोई ध्यान न दिया। वाह्य रूप से रहस्य यह था कि ससार वालो को यह ज्ञात हो जाय कि ईश्वर का ज्ञान रखने वाले इस बादशाह की बुद्धि दैवी वरदान है न कि शिक्षा-दीक्षा द्वारा प्राप्त हुई है।

१ मुग़ुल क़बीलों।

संक्षेप, में हज़रत जन्नत आशियानी जब तक काबुल में रहे वे सर्वदा बदख़्शाँ पर आक्रमण करने की तैयारी एवं मीर्ज़ा कामरान के विद्रोह को शान्त करने के साधन एकत्र करने में व्यस्त रहे। मीर्ज़ा कामरान, मीर्ज़ा सुलेमान एवं मीर्ज़ा हिन्दाल द्वारा सहायता की ओर से निराश होकर इस आशय से बल्ख़ की ओर रवाना हुआ कि मलिक पीर मुहम्मद ख़ा[1] की सहायता से बदख़्शाँ पर अधिकार जमा ले। ऐबक नामक स्थान से उसने पीर मुहम्मद ख़ा को इस विषय में सूचना दी। पीर मुहम्मद ख़ा ने मीर्ज़ा के आगमन को अपने लिये बहुत बडी देन समझकर अपने विश्वासपात्रों (८६) को उसके स्वागत् हेतु भेजा और मीर्ज़ा को बडे आदर सम्मान से अपने घर ले गया तथा आतिथ्य-सत्कार किया। तदुपरान्त वह स्वयं उसके साथ बदख़्शाँ पहुँचा। मीर्ज़ा लोग मुकाबला न कर सके और उन्होंने पर्वत की कन्दराओं में शरण ले ली। बदख़्शाँ का अधिकाश भाग मीर्ज़ा कामरान के अधिकार में आ गया। पीर मुहम्मद ख़ा मीर्ज़ा कामरान की कुमक हेतु एक सेना छोड़कर स्वयं लौट गया। मीर्ज़ा किश्म तथा तालीकान के क्षेत्र में पहुँचा और रफीक कोका एवं ख़ालिक बीरदी को चगताई तथा ऊज़बेकों के एक समूह के साथ रुस्ताक की ओर भेजा। मीर्ज़ा सुलेमान एवं मीर्ज़ा इबराहीम कोलाब में अच्छी ख़ासी सेना एकत्र करके रुस्ताक पहुँचे तथा रफीक कोका एवं अन्य लोगों से वीरतापूर्वक युद्ध किया। दुर्भाग्यवश वे पराजित हो गये और पुन पर्वतीय क्षेत्र में पहुँच गये।

इस समय जो घटनायें घटी उनमें एक इस प्रकार है। क्योंकि कराचा ख़ा ने उत्तम सेवायें की थी अत वह अपार कृपाओं का पात्र बन गया था और उसके सम्मान में अत्यधिक वृद्धि कर दी गई थी और उसे उच्च श्रेणी प्राप्त हो गई थी। सेवक एवं स्वामी के व्यवहार में जिस शिष्टाचार की आवश्यकता है उससे बढ चढकर वह कल्पनायें करने लगा और बहुत सी असम्भव बातें सोचने लगा। उसने संयम के मार्ग से पाँव बाहर निकाल लिये। जो बातें उसने की उनमें एक यह थी कि ख्वाजा गाजी दीवान से, जो अपनी बुद्धिमता एवं सूझ बूझ के कारण उनका विश्वासपात्र हो गया था, शत्रुता करके उसने हज़रत जन्नत आशियानी से निवेदन किया कि उसे बन्दी बनाकर उसके पास भेज दिया जाय ताकि वह उसकी हत्या करा दे और उसका मंसब ख्वाजा कासिम तूली को प्रदान कर दिया जाय। हज़रत जन्नत आशियानी के सत्य को पहिचानने वाले हृदय ने उसके इन कुत्सित विचारों की ओर कोई ध्यान न दिया। कराचा ख़ा अपने दुर्भाग्य के कारण बहुत बड़ी संख्या में लोगों को मार्ग भ्रष्ट करके बदख़्शाँ की ओर चल खड़ा हुआ। बाबूस बेग, मुसाहिब बेग, इस्माईल बेग दूल्दी, अली कुली अन्दरानी, हैदर दोस्त मुग़ुल, शेख़िम ख्वाजा ख़िज्री, तुरखान करावल लगभग तीन हजार अनुभवी अश्वारोहियों सहित, जिन्हें उसने धोखे में डाल दिया था, कोतलमीनार के मार्ग से दुष्टता के मार्ग पर अग्रसर हो गये। जब हज़रत जन्नत आशियानी को यह समाचार प्राप्त हुए तो उन्होंने स्वयं इन दुष्टों का पीछा करना तथा उन्हें दंड देना निश्चय किया। शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा में स्वयं ठहर गये और सम्मानित दरबार के सेवकों में से कुछ लोगों को उनका पीछा करने के लिये नियुक्त किया। निष्ठावान दासों में से जो लोग उपस्थित होते थे, वे बारी-बारी भेज दिये जाते थे। इस प्रकार तरदी बेग ख़ा, मुनइम ख़ा, मुहम्मद कुली बरलास, अब्दुल्लाह सुल्तान एवं अन्य निष्ठावान्

१ वह जानी बेग का पुत्र एवं अब्दुल्लाह का चाचा था। उसकी मृत्यु ९७४ हि० (१५६६ ई०) में हुई।

उन लोगों का पीछा करने के लिये रवाना हुए। मध्याह्न के समय जब कि शुभ मुहूर्त आ गया वे स्वयं सवार हुए। जो यक्का जवान आगे रवाना हो चुके थे वे करावाग के समीप उन दुष्टों की सेना के पिछले भाग के निकट पहुँच गये और उन्होंने वीरतापूर्वक युद्ध किया। दिन के अंतिम पहर में मोरी नदी के समीप उनकी कराचा खा से मुठभेड़ हो गई। इसी बीच में उन स्याह हृदय वालों के बीच में रात आ गई। उन्होंने गूरबन्द के पुल को पार करके उसे नष्ट कर दिया। जो लोग पीछा करने के लिये नियुक्त हुए थे, उन्होंने करावाग में हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया। उन्होंने यह निश्चय किया कि सम्मानित लश्कर काबुल की ओर लौट जाय। वहाँ से उचित रूप से सामान एवं व्यवस्था करके वे बदख्शाँ की ओर रवाना हों। कराचा खा ने तिमुर अली शिगाली को, जो उसका वकील था, पंजहीर[1] में इस आशय से छोड़ दिया कि वह उस क्षेत्र में रहकर काबुल के समाचार भेजता रहे। वह स्वयं हिन्दूकोह के दर्रे को पार करके किश्म में मीर्ज़ा कामरान के पास पहुँच गया।

दूसरे दिन हज़रत जन्नत आशियानी काबुल की ओर लौट गये। जो कृतघ्न उनके उपकार की उपेक्षा करके भाग गये थे, उनमें से कुछ को उन्होंने उचित उपाधियाँ प्रदान कीं। इस प्रकार कराचा को करावस्न[2], इस्माईल को खिर्स[3], मुसाहिब को मुनाफ़िक़[4], एवं बाबूस को दय्यूस[5] की उपाधि प्रदान की।

मीर्ज़ा हिन्दाल एवं मीर्ज़ा सुलेमान को आदेश भेजा गया कि वे तैयारी करके सम्मानित लश्कर के पहुँचने की प्रतीक्षा करते रहें। हाजी मुहम्मद को आदेश दिया गया कि वह स्वयं शीघ्र गजनी से राजधानी पहुँच जाय। उन दिनों जब कि उनका संसार को विजय करने वाला साहस बदख्शाँ पर आक्रमण एवं मीर्ज़ा कामरान के विद्रोह को शान्त करने के विषय में संलग्न रहता था, वे प्रायः अपने राज्य के प्रतिष्ठित अधिकारियों एवं सहायकों से परामर्श किया करते थे। कुछ लोग जो पौरुष एवं बुद्धि से शून्य थे, उन्हें कन्धार की ओर प्रस्थान करने के लिये प्रेरित किया करते थे। जिन लोगों के हृदय दृढ़ और जिनमें युद्ध का साहस था, वे संसार को शोभा देने वाले मत के अनुसार बदख्शाँ पर आक्रमण की राय दिया करते थे। एक दिन उन्होंने सुल्तान मुहम्मद से पूछा कि, "तू क्या कहता है ?" उसने निवेदन किया कि, "मीर्ज़ा कामरान इन नमक-हरामों के पहुँच जाने के कारण (८७) अभिमानी हो गया है। अधिक शंका इस बात की है कि कहीं वह अग्रसर होकर इधर आक्रमण न करे। यदि पादशाही सेना उसके पूर्व हिन्दूकोह के दर्रे को पार कर ले तो राज्य के सहायकों को विजय प्राप्त हो जायेगी अन्यथा ईश्वर न करे दूसरा ही नक्शा प्रस्तुत हो जायेगा।" हज़रत जन्नत आशियानी ने उसकी राय की अत्यधिक सराहना की और कहा कि, "यदि वह अभिमानी है तो हम भी ईश्वर के प्रति विनीत हैं" और उन्होंने यह शेर पढ़ा

१ अन्य ग्रन्थों में 'पंजशीर'।
२ अभागा।
३ रीछ।
४ विश्वासघाती, षड्यंत्रकारी।
५ वह पुरुष जो अपनी पत्नी की दुश्चरित्रता को देख कर उपेक्षा करता है।

शेर

'किसी को अपनी शक्ति पर अभिमान न करना चाहिये,
कारण कि अभिमान सिर से टोपी गिरा देता है।'

उन्होंने कहा कि, "विलम्ब का कोई कारण नहीं। यदि ईश्वर ने चाहा तो हम शीघ्र दर्रे को पार कर लेंगे।"

हज़रत जन्नत आशियानी की विजयी सेनाओ का बदख़्शाँ की ओर प्रस्थान, मीर्ज़ा कामरान को पराजित करना तथा विजय एवं सफलता प्राप्त करके काबुल को वापस होना

जब उनके ससार को विजय करने वाले साहस ने बदख़्शाँ की विजय एव मीर्ज़ा कामरान के विद्रोह को शान्त करना निश्चय कर लिया तो सोमवार ५ जमादी-उल-अव्वल ९५५ हि० (१२ जून १५४८ ई०) को शुभ मुहूर्त मे ईश्वर की सहायता के भरोसे पर उन्होंने अपने साहस के पाँव तवक्कुल की रिकाब में रखे और उस ओर प्रस्थान किया। ऊलग चालाक में सम्मानित शिविर लगे। तीन दिन उपरान्त वहाँ से प्रस्थान करके कराबाग मे पडाव किया। १२ दिन तक राज्य की कुछ समस्याओ का समाधान करने के लिये वहाँ ठहरे रहे। यद्यपि हाजी मुहम्मद खाँ की कृतघ्नता के समाचार प्रसिद्ध हो गये थे किन्तु वह निष्ठापूर्वक सेवा में उपस्थित होकर सम्मानित हुआ। कासिम हुसेन खाँ भी बगश के क्षेत्र मे उनकी सेवा में पहुँचा। उसी मज़िल पर मीर्ज़ा इबराहीम भी अपने सौभाग्य के पथ-प्रदर्शन से बदख़्शाँ से शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करता हुआ पहुँचा और फर्श चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। विशेष कृपाओ का प्रकाश उसपर डाला गया।

इस बीच मे जो विचित्र घटनाये घटी उनमें से एक यह है कि जब सम्मानित लश्कर बदख़्शाँ की विलायत के समीप पहुँचा तो एक दिन हज़रत जन्नत आशियानी आफ़्तावा ख़ाने[१] में पधारे। वहाँ एक सफेद मुर्ग सर्वदा रहा करता था। उनके परोपकारी हृदय में यह आया कि "यदि यह सफेद मुर्ग उडकर हुमा के समान हमारे कधे पर बैठ जाय और बाँग देने लगे तो यह बाँग विजय एव सौभाग्य का द्योतक होगी।" जैसे ही उन्होंने यह बात सोची वह शुभ पक्षी उडकर हुमा के समान उनके सम्मानित कधो पर बैठ गया। उन्होंने अत्यधिक प्रसन्न होकर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के सिज्दे किये।

अन्य घटनाओं में, जो विजय की प्रस्तावना कही जा सकती है, एक यह है कि जब मीर्ज़ा इबराहीम पजहीर के समीप पहुँचा तो तिमुर सिगाली ने मीर्ज़ा का मार्ग रोक लिया। मलिक अली पजहीरी ने अपनी कौम तथा कबीले के साथ मीर्ज़ा की सहायता की और तिमुर सिगाली से वीरता-पूर्वक युद्ध किया तथा रक्त पीने वाली तलवार द्वारा उसका अन्त कर दिया। मीर्ज़ा ने सावधानी की

१ आफ़्तावे का गृह अथवा आफ़्तावे (एक प्रकार के लोटे जिनमें टोंटे होते हैं) रखने का कमरा। वह स्थान जहाँ हाथ मुँह धुलाने वाले बैठे एवं अपना सामान रखते हों।

दृष्टि से मलिक अली पजहीरी को अपने साथ ले लिया ताकि वह उसे सेवा में प्रस्तुत करके सम्मानित करे। उस सरल स्वभाव के निष्ठावान् ने जमींदाराना अल्पदर्शिता के कारण मीर्ज़ा के साथ चलने की ओर से उपेक्षा की और यह सौभाग्य न प्राप्त किया। वाद-विवाद के उपरान्त वह युद्ध हेतु अग्रसर हुआ। यद्यपि मीर्ज़ा के साथ बहुत थोड़े से आदमी थे किन्तु उसने घोर युद्ध किया और जरीदा[1] चौखट चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। दूसरे दिन मलिक अली पजहीरी ने अपने भाई को भेजकर लज्जा प्रदर्शित करते हुए क्षमा याचना की। तिमूर शिगाली का सिर सम्मानित दरबार में प्रेषित किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने उसे खिलअत एवं इनाम द्वारा सम्मानित किया और उसे लौट जाने की अनुमति दे दी। मलिक पजहीरी के नाम सान्त्वना सम्बन्धी फरमान तथा उसके लिये उत्तम खिलअत भेजी और फरमान में लिखा कि, "मीर्ज़ा तुझे न पहिचान सका। तेरी वंशागत निष्ठा मेरे हृदय पर अंकित है। जब भाग्यशाली पताकायें उस क्षेत्र में पहुँचेंगी तो तुझे पादशाही कृपाओं द्वारा सम्मानित किया जावेगा।" मीर्ज़ा इबराहीम को विशेष कृपाओं द्वारा प्रतिष्ठित किया गया और उसे फरज़न्द की उपाधि प्रदान की गई। अत्यधिक पादशाही अनुकम्पाओं द्वारा सुशोभित करके उसे आदेश दिया गया कि वह मीर्ज़ा सुलेमान के पास पहुँच जाय और सेना एकत्र करने एवं अन्य असबाब की व्यवस्था का प्रयत्न करे। वह इस बात की प्रतीक्षा करता रहे कि शीघ्र बदख्शाँ के क्षेत्र में विजयी शिविर लगेंगे। जब शाही लश्कर तालीकान के क्षेत्र में पहुँच जाय तो वह सम्मानित चौखट के चुम्बन का सौभाग्य प्राप्त करे। हज़रत खावानी तथा मरियम मकानी को उन्होंने गुलबहार नामक स्थान से राजधानी काबुल की ओर भेज दिया। मुहम्मद कासिम मौजी को काबुल का दारोगा नियुक्त किया। जब (पजहीर के) समीप बाज़ारक नामक स्थान के समीप शाही शिविर लगे तो हाजी मुहम्मद (पुत्र) बाबा कश्का, कासिम हुसेन सुल्तान, तरदी बेग, मुहम्मद कुली बरलास, (८८) अली कुली सुल्तान, मीर लतीफ एवं हैदर मुहम्मद चोली को मुनकला के रूप में नियुक्त किया।

जैसे ही अमीरों ने हिन्दूकोह के दर्रे को पार किया, महदी सुल्तान एवं तरदी मुहम्मद जगजग तथा वे लोग जो अन्दराब के किले में थे, भाग खड़े हुए। हज़रत जन्नत आशियानी के आदेशानुसार तरदी बेग एवं मुहम्मद कुली बरलास खूस्त की ओर इस आशय से रवाना हुए कि इन अभागों के, जो भाग खड़े हुए हैं, परिवारों को बन्दी बना लें। मीर्ज़ा कामरान अभिमान के नशे में मस्त किलये ज़फर में था। भागे हुए अमीरों ने यद्यपि मीर्ज़ा से मार्गों की प्रतिरक्षा एवं उन्हें रोकने का अत्यधिक आग्रह किया किन्तु उन्हें कोई सफलता न प्राप्त हुई। मुल्ला खिरद ज़रगर ने, जो उन दिनों मीर्ज़ा का विश्वासपात्र था और सर्वदा विद्रोह एवं षड्यंत्र का प्रयत्न किया करता था, इस विषय में अत्यधिक चेष्टा की किन्तु कोई लाभ न हुआ। अन्ततोगत्वा कराचा खाँ एवं कुछ नमकहरामों ने दूरदर्शिता के कारण मुसाहिब बेग को इस आशय से भेजा कि वह उनके परिवार वालों को खूस्त से तालीकान ले आये ताकि कहीं ऐसा न हो कि कोई सेना काबुल से पहुँच जाय और वे बन्दी बना लिये जायें। इसी बीच में तरदी बेग एवं मुहम्मद कुली बरलास खूस्त के समीप पहुँच गये। मुसाहिब बेग कुछ समय पूर्व अपने परिवार तालीकान को पहुँचा चुका था। सम्भवतः जो लोग भेजे गये थे उन्होंने ही शिथिलता एवं उपेक्षा की हो।

१ कुछ थोड़े से लोगों को लेकर शीघ्रातिशीघ्र।

जब शाही पताकायें अन्दराब के समीप पहुँची तो मीर्ज़ा हिन्दाल कुन्दुज़ से पहुँच कर सेवा में उपस्थित हुआ। शेर अली को बन्दी अवस्था में पेश किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने मीर्ज़ा को अत्यधिक कृपाओं द्वारा सम्मानित किया। उन कृपाओं में से एक यह थी कि वह घोड़े पर बैठे-बैठे ही अभिवादन करे। इस घटना का संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है —विजयी सेनाओं के बदख्शाँ में प्रविष्ट होने के पूर्व जब मीर्ज़ा कामरान को वहाँ सफलता प्राप्त हो गई थी तो शेर अली उनका अत्यधिक विश्वासपात्र हो गया और अभिमान के नशे मे वह मीर्ज़ा से धृष्टतापूर्वक व्यवहार करने लगा। कुन्दुज़ पर अधिकार जमाने तथा मीर्ज़ा हिन्दाल को वहाँ से निकलवाने का अत्यधिक प्रयत्न करने लगा। यहाँ तक कि मीर्ज़ा ने उसे कुन्दुज़ के विरुद्ध नियुक्त कर दिया। मीर्ज़ा हिन्दाल ने पादशाही प्रताप की सहायता से उसे बन्दी बना लिया। यह घटना इस प्रकार घटी कि एक रात्रि में कुन्दुज़ की सेना में से प्यादों की बहुत बड़ी संख्या ने निकलकर उसके घर को घेर लिया। वह भागकर एक नहर में कूद पड़ा। उसका एक हाथ टूट गया और वह अपनी धूर्तता के जाल में स्वयं फँस गया। जब मीर्ज़ा हिन्दाल उसे हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में लाया तो उन्होंने उसकी कुकृतियों के ऊपर ध्यान न देकर उसे क्षमा कर दिया और विशेष खिलअत द्वारा सम्मानित किया। उसे ग़ूरी प्रदान कर दिया। क्योंकि उसमें पौरुष एवं वीरता के गुण पाये जाते थे अतः उन्होंने इतने बड़े अपराधों के बावजूद, जिनमें से प्रत्येक मृत्यु दंड का पात्र था, उसके प्रति कृपा दृष्टि प्रदर्शित की। जब मीर्ज़ा हिन्दाल पादशाही अनुकम्पाओं का पात्र होकर सम्मानित हुआ तो उसे आदेश दिया गया कि हाजी मुहम्मद खाँ एवं कुछ अन्य लोगों को मीर्ज़ा इब्राहीम के अधीन मुनक्ला के रूप में नियुक्त किया जाय। अमीर लोग मीर्ज़ा की राय एवं उसके आदेश के विरुद्ध कोई कार्य न करें तथा उसकी आज्ञाकारिता में किसी प्रकार की कोई कमी न होने पाये। जमादी-उल-आखिर ९५५ हि० के मध्य (लगभग २२ जुलाई १५४८ ई०) से अन्दराब के अधीनस्थ काज़ियान के ऊलंग में शाही शिविर लगे। अन्दराब के क़ाज़ी तूकबाई[1] वाले सालकाची एवं बिलोच (कबीले वाले) तथा बदख्शाँ के सैनिकों एवं ईमाक के एक समूह और मुसाहिब बेग के सेवकों ने चौखट चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया और उनके प्रति पादशाही कृपादृष्टि प्रदर्शित की गई। वहाँ से वे निरन्तर यात्रा करते हुए तालीक़ान पहुँचे। पादशाही दरबार के अधिकांश निकाले हुए लोग तथा मीर्ज़ा कामरान के प्राचीन सेवकों का एक समूह, मीर्ज़ा अब्दुल्लाह सहित वहाँ क़िला बन्दी किए हुए था। मीर्ज़ा हिन्दाल एवं सेना के प्रतिष्ठित आदमियों को आदेश हुआ कि वे बंगी[2] नामक नदी को पार करके भली भाँति युद्ध करें। उसी समय मीर्ज़ा कामरान किलए ज़फ़र एवं किश्म से तेज़ी से यात्रा करता पहुँच गया और इस अभागे समूह से मिल गया। शनिवार १५ जमादी-उल आखिर[3] को उस ऊँचाई पर जिसे चशेपान[4] कहते हैं, दोनों सेनाओं[5] की मुठभेड़ हुई। घोर युद्ध

१ एक अफ़गान कबीला।

२ यह ख़ैराबाद नदी की एक शाखा है। ख़ैराबाद नदी आबसम की शाखा है। यह तालीक़ान के दक्षिण में बहती है।

३ २२ जुलाई १५४८ ई०। ऊपर लिखा है कि शिविर जमादी-उल आख़िर ९५५ हि० के मध्य में काज़ियान के ऊलग में पहुँचे अतः इस स्थान पर शनिवार १५ जमादी-उल-आख़िर अशुद्ध ज्ञात होता है। यदि तारीख़ ठीक है तो ऊपर अवायल जमादी-उल-आख़िर या जमादी-उल आख़िर का प्रारम्भ होना चाहिये।

४ अकबर नामा में 'ख़लसान'। इस नाम का शुद्ध रूप नहीं ज्ञात हो सका। (मुग़ल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १, पृ० २३७)।

५ हुमायूँ की सेना का अग्र भाग।

हुआ। अभी शाही लश्कर ने नदी पार भी न की थी और अग्र भाग तथा मध्य भाग के बीच में थोडा सा फासला था कि दुर्भाग्यवश पादशाही सेना का अग्र भाग भाग खडा हुआ और नदी के पार हो गया। शत्रुओं की सेना ने लूटमार आरम्भ कर दी। मीर्ज़ा कामरान कुछ लोगों को लिये हुए उसी ऊँचाई पर खडा यह लीला देख रहा था। इसी बीच में पादशाही लश्कर नदी के किनारे पहुँच गया। हज़रत जन्नत आशियानी शत्रुओं के सामने से नदी पार करना चाहते थे किन्तु कुछ सच्चे समाचार वाहको ने निवेदन किया कि आगे जमजमा[1] है, पर आधे कोस की दूरी पर एक चक्की है और वहाँ की भूमि पथरीली है। वहाँ से नदी सुगमतापूर्वक पार की जा सकती है अत वे उस ओर रवाना हुए। जब वे चक्की के समीप पहुँचे तो ख्वाजा खिज्रियों के सरदार (८९) शेखिम खिज्री को बन्दी बनाकर लाया गया। जो समूह हज़रत जन्नत आशियानी के घोडे की लगाम के साथ-साथ चलता था उसे आदेश हुआ कि इस नमकहराम भगेडू का पीटा जाय। उन्होंने उसके इतने मुक्के तथा लाते मारी कि दर्शकगणों को विश्वास हो गया कि उसकी मृत्यु हो गई। तदुपरान्त इस्माईल बेग दूल्दी को बन्दी बनाकर उनके समक्ष प्रस्तुत किया गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने मुनइम खा की सिफारिश स उसे क्षमा कर दिया। वे उस ऊँचाई की ओर, जहाँ मीर्ज़ा कामरान था, रवाना हुए। रोशन कोका के भाई फतहुल्लाह बेग को हिरावल बनाकर कुछ फिदाइयों[2] के साथ आगे भेजा। उन लोगों ने वीरतापूवक युद्ध किया। फतहुल्लाह बग घोडे से पृथक् हो गया। इसी बीच में पादशाही सेना जो ससार की विजय की प्रस्तावना एव देशों पर अधिकार जमाने का अग्र दल है, प्रकट हो गई। मीर्ज़ा मुकाबला न कर सका और तालीकान की ओर भाग गया तथा क़िले को दृढ बनाने का प्रयत्न करने लगा। पादशाही लश्कर लूटमार में व्यस्त हो गया। कुल्कचियो[3] मे धनसम्पत्ति के वितरण के विषय में आपस में झगडा होने लगा। हज़रत जन्नत आशियानी ने हुक्म का आदेश दे दिया अर्थात् जिसको जो कुछ मिल जाय वह उसका है। उसे लेने का कोई दूसरा प्रयत्न न करे। इस विजय में पादशाही दासो मे से किसी को बाल बराबर भी कोई हानि न पहुची केवल अली कुली खा घायल हुआ। इस्हाक बग मुल्तान, तरदो बग वल्द बेग मीरक, बाबा चूचक एव शत्रुओ की सेना में से बहुत से लोग, जो विजयी सेना का पीछा करने के लिये अग्रसर हुए थे, बन्दी बना लिये गये। मीर्ज़ा हिन्दाल एव हाजी मुहम्मद उन्हे बन्दी बनाकर हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में लाये। हज़रत जन्नत आशियानी ने न्याय की प्रथाओ का पालन करते हुए प्रत्येक की स्थिति के अनुसार कृपा एव कोप प्रदर्शित किया और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के सिज्द किये तथा तालीकान के किले के अवरोध का सकल्प करके मोर्चे बाँट दिये। एक दिन मुनइम खा, मुहम्मद कुली बरलास एव हसन कुली मुल्तान मुहरदार के मोर्चे से, जो किले वालो पर बन्दूक चला रहे थे, बन्दूक की गोली मुबारिज खा के लगी और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने

१ जमजमा इस शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं। स्टेइनगस के फारसी अंग्रेजी शब्दकोश में इसका अर्थ "a well dug in a brackish place" लिखा है। बहारे अजम नामक फारसी के शब्दकोश में इसका अर्थ "चाहे कि दर शोरिस्तान बाशद" अर्थात् वह कुआँ जो दलदल में हो।

२ प्राण न्योछावर करने वाले। हसन बिन सब्बाह के समूह वाले भी फिदाई कहलाते थे और हसन बिन सब्बाह (मृत्यु ११२४ ई०) के प्रति अध विश्वास के कारण अपने प्राण बड़े-बड़े खतरों में डाल देना साधारण सी बात समझते थे।

३ सेवकों।

पूर्ण अनुकम्पा एव सहृदयता के कारण अत्यधिक शोक प्रकट करते हुए कहा कि, "काश उसके स्थान पर उसका भाई मुसाहिब बेग मार डाला जाता।" इस बीच में उन्होंने अपनी व्यक्तिगत अनुकम्पा एव कृपा के कारण मीर्ज़ा कामरान को एक पत्र लिखा जिसमें नाना प्रकार की अपनी श्रेष्ठता के अनुकूल उपदेश देने के उपरान्त यह लिखा कि, 'हे दुष्ट भाई एव हे युद्ध प्रिय बधु ! इस कार्य को, जो युद्ध का कारण एव असख्य आदमियो की हत्या एव कष्ट का साधन हैं, त्याग दे। शहर एव लश्कर वालो पर दया कर।" उन्होंने नसीब रम्माल के हाथ यह भाग्यशाली पत्र भेजा। क्योंकि मीर्ज़ा असावधानी के नशे में मस्त एव अपनी वीरता तथा सेना की सख्या पर अभिमानी था अत उसने इन भाग्यशाली उपदेशो को स्वीकार न किया और मूर्खतावश एव सघर्ष को बढाने की दृष्टि से यह शेर उत्तर में लिखा

शेर

'राज्य की नव-बधु को वही दृढतापूर्वक आलिंगन करता है,
जो चमकती हुई तलवार के अधरा का चुम्बन करता है।'[1]

नसीब रम्माल ने मीर्ज़ा के दुर्भाग्य का हाल सम्मानित कानो तक पहुँचा दिया। उन्होंने आदेश दिया कि मोर्चों को दृढ बना दिया जाय। इसी बीच मे मीर्ज़ा सुलेमान एव मीर्ज़ा इबराहीम ने बहुत बडी सेना सहित चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त किया और पादशाही कृपाओं द्वारा सम्मानित हुए। चाकर खा वल्द बैस किबचाक भी कोलाब वालो सहित पहुँचकर भाग्यशाली सेना का परिशिष्ट बन गया। एक मास के अवरोध में नित्यप्रति विजय के द्वार राज्य के सहायको पर खुलते गये और किले वाले परेशान हो गये। यहाँ तक कि वे अपनी सभी युक्तियो एव चालो की ओर से निराश हो गये और पोर मुहम्मद खा द्वारा कुमक की, जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे थे, उन्हें कोई उम्मीद न रही। विवश होकर उन्होने आज्ञाकारिता स्वीकार करना निश्चय कर लिया और विनय एव नम्रता को अपनी मुक्ति का साधन बनाया तथा नाना प्रकार से विनती की। एक दिन उसने[2] बाण मे एक पत्र बाँधकर सम्मानित शिविर में फेंका। उस पत्र मे यह लिखा था कि, "मैंने आपकी कृपाओ एव उदारता के प्रति अपने उत्तरदायित्व को न पहिचाना। मेरे भाग्य मे जो कुछ लिखा था वह मैंने देख लिया। अब जो कुछ हुआ उसपर मैं लज्जित हूँ। मेरी इच्छा है कि मुझे काबे चले जाने की अनुमति दे दी जाय ताकि विद्रोह के पाप एव कृतघ्नता के कलक से मुक्त होकर सेवा में पहुँचने के योग्य हो सकूँ तथा अपने पिछले अपराधो के हानि की पूर्ति कर सकूँ। मुझे आपके सौजन्य एव आपकी अनुकम्पा से आशा है कि मेरे अनुरोध को आप मीर अरब मक्की को मध्यस्थ बनाकर स्वीकार करने की कृपा करेंगे। मीर समस्त सय्याहो[3] में अपनी सच्चाई एव निष्ठा के लिये प्रसिद्ध था। कहा जाता है कि उसे कीमिया बनाने का भी ज्ञान था। हज़रत जन्नत आशियानी उसके प्रति अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित किया करते थे। इस अभियान में वह विजयी रिकाब के समीप

१ अरूसे मुल्क कसे दर कनार गीरद चुस्त, कि बोसा बर लबे शमशीरे आबदार दिहद।

عروس ملک کسی در کنار گیرد چست
که بوسه بر لب شمشیر آبدار دهد

२ मीर्ज़ा कामरान।

३ सय्याह का अर्थ पर्यटक होता है किंतु 'सन्त' से तात्पर्य है।

निष्ठुरता बहुत बुरी लगी और वे बडे रुष्ट हुए। मीर्ज़ा इबराहीम लज्जा एव सकोच के कारण विना अनुमति लिये हुए किश्म चला गया। हाजी मुहम्मद के प्रति क्रोध प्रदर्शित किया गया कि मीर्ज़ा के सेवकों का यह अपमान उसकी जानकारी मे क्यों हुआ। क्षमा माँगते हुए फरमान एव खिलअत तथा घोडा जलालुद्दीन मुहम्मद मीर ब्यूतात के हाथ भेजा। उसी रात्रि में उन्होंने दीवानख़ाने में बादशाहाना दरबार किया और आम लोगों को उपस्थित होने की अनुमति दी गई। सर्व प्रथम कराचा ख़ा को उपस्थित किया गया। उसकी गरदन मे तलवार बंधी हुई थी। जब वह मशाल के समीप पहुचा तो क्रोध की अग्नि कृपा के जल से बुझ गई। उन्होंने आदेश दिया कि, "उसकी गरदन से तलवार पृथक् कर दी जाय और उसके अपराध क्षमा कर दिये गये।" उन्होंने तुर्की भाषा मे कहा, 'सैनिक जीवन में इस प्रकार की भूलें होती ही रहती है।" उसे तरदी बेग ख़ा के बाये हाथ की ओर खडे होने का आदेश हुआ। तदुपरान्त मुसाहिब बेग का प्रस्तुत किया गया। निषग एव तलवार उसकी गरदन में बँधी हुई थी। उन्होने तलवार पृथक् करने का आदेश दिया। उसी समय सरदार बेग वल्द कराचा खा लाया गया। उन्होंने कहा कि, "अपराध बडो ने किया है, छोटों ने क्या अपराध किया है?" इसी प्रकार बारी-बारी सभी अमीर प्रस्तुत किये गय और उन्हे क्षमा-पत्र सुना दिया गया। अन्त में कुरबान करावल, जो प्राचीन सेवक था, लज्जावश सिर झुकाये हुए उपस्थित हुआ और कोरनिश की। हजरत जन्नत आशियानी ने तुर्की भाषा में कहा कि, "तेरे ऊपर कौनसी विपत्ति पड गई थी। तू किस कारण चला गया?" उसने भी तुर्की मे उत्तर दिया कि, "जिन लोगों के मुख (९१) को ईश्वर के हाथों ने काला कर दिया हो उनके विषय मे कोई क्या कह सकता है।" हुसेन कुली सुल्तान मुहुरदार ने, जिसे हर समय बात करने की अनुमति थी, यह शेर दरबार मे पढ़ा

शेर

'जिस दीपक को ईश्वर जलाता है,
जो (उसकी ओर) फूंकता है अपनी दाढी जलाता है।'

समस्त अमीर लोग विशेष रूप से कराचा ख़ा, जिसकी दाढी बडी लम्बी थी, अत्यधिक लज्जित हुआ। दूसरे दिन उन्होने वहाँ से प्रस्थान किया और तालीकान नदी के तट पर, जो कि एक हृदयग्राही घास का मैदान था, पडाव किया।

बुधवार १७ रजब (२२ अगस्त १५४८ ई०) को मीर्ज़ा कामरान दैवी प्रेरणा से लौटकर फर्श चूमने के सौभाग्य द्वारा सम्मानित हुआ। इस घटना का सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है जब मीर्ज़ा कामरान बादाम दर्रे के समीप पहुँचा तो यात्रा के समय मीर्ज़ा अब्दुल्लाह से पादशाह की अनुकम्पाओं के विषय में नाना प्रकार की बातें करता जाता था। उसने अपने अपराधों एव पादशाह की कृपाओं की सविस्तार चर्चा की। मीर्ज़ा अब्दुल्लाह ने उससे पूछा कि, "यदि उनके स्थान पर तुम होते तो क्या करते?" उसने उत्तर दिया कि, "मुझे क्षमा करना नही आता।" मीर्ज़ा अब्दुल्लाह ने कहा कि, "अब भी बदला पूरा करने का अवसर है और पिछले अपराधो का निराकरण हो सकता है। यदि तुम तदनुसार कार्य करो तो फिर किसी प्रकार का हृदय में पश्चाताप न रहेगा।" मीर्ज़ा ने पूछा कि, "क्या बात है?" उसने उत्तर दिया कि "आज हम ऐसे स्थान पर पहुँच गये है जहाँ पादशाह के हाथ हम तक नही पहुँच सकते। यह उचित होगा कि हम थोडे से लोगो को लेकर पहले से कोई सूचना दिये बिना पादशाह की सेवा में पहुँच जायें और दीनता का सिर शिष्टाचार

की भूमि पर रखकर अपने अपराधों की क्षमा-याचना करें तथा उचित सेवाओं द्वारा अपने पिछले अपराधों के हानि की पूर्ति करे।" मीर्ज़ा कामरान ने यह बात स्वीकार कर ली और थोड़े से लोगों को लेकर चल खड़ा हुआ। जब वह सम्मानित शिविर के समीप पहुँचा तो उसने बाबूस को उनकी सेवा में भेजा और अपने आगमन के विषय में निवेदन कराया। मीर्ज़ा जिस प्रकार उपस्थित हुआ था उससे वे बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने आदेश दिया कि सर्वप्रथम मुनइम खां, तरदी बेग खां, मीर मुहम्मद मुंशी, हसन कुली सुल्तान मुहरदार, धारतू बेग, तवाची बेग एवं ताश्ची बेग स्वागत् हेतु जायें। तदुपरान्त कासिम हुसेन सुल्तान सीस्तानी ख्वाजा खिज्र सुल्तान, अली कुली खां, बहादुर खां एवं तीसरी बार मीर्ज़ा हिन्दाल, मीर्ज़ा अस्करी एवं मीर्ज़ा सुलेमान को आदेश हुआ कि वे आगे जाकर उसका स्वागत् करें। उसी दिन अस्करी के पाँव की जंजीरें काटी गई थीं। मीर्ज़ा एवं अमीर लोग उनके आदेशानुसार गये और आदर सम्मान प्रदर्शित किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने जहाँबानी की मसनद पर आरूढ़ होकर आम दरबार किया। मीर्ज़ा कामरान सेवा में उपस्थित हुआ और फर्श चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने कृपापूर्वक कहा कि 'तोरे[१] के अनुसार भेंट हो चुकी, अब आओ भ्रातृ भाव से भेंट करें। वे मीर्ज़ा को आलिंगन करके फूट फूट कर रोये।" दरबार के सभी उपस्थित लोगों का हृदय भावातिरेक से भर गया। उन्होंने उसे अपनी बाईं ओर बैठने का आदेश दिया और तुर्की में कहा कि और निकट बैठो। मीर्ज़ा सुलेमान का आदेश हुआ कि वह दाईं ओर बैठे। इसी प्रकार समस्त मीर्ज़ा एवं अमीर लोग अपनी श्रेणी तथा पद के अनुसार दाईं और बाईं ओर बैठे। राज्य के कुछ विश्वासपात्र उदाहरणार्थ हसन कुली मुहरदार, मीर मुहम्मद मुंशी, हैदर मुहम्मद, मकसूद बेग आख्ता का एक दूसरे के समक्ष बैठने का आदेश हुआ। भव्य समारोह आयोजित हुआ। गायकों में से कासिम चंगी[२], कोचक गिचकी[३], मुखलिस कुबूज़ी[४], हाफिज़ सुल्तान मुहम्मद रखना, ख्वाजा कमालुद्दीन हुसन, हाफिज़ मुहरी, कूर के समीप आसीन होकर गाने बजाने तथा होश हवास छीनने लगे। यकका (जवाना) में से काकर अली, शाहम बेग जलायर, तूलक कूचीन एवं अन्य लोगों को कूर[५] के पीछे बैठने का सम्मानित आदेश हुआ। मेवे एवं नाना प्रकार के भोजन उचित रूप से प्रस्तुत किये गये। इस दरबार में हसन कुली सुल्तान मुहरदार ने मीर्ज़ा कामरान से पूँछा कि, "मैंने सुना है कि पीर मुहम्मद खां ने जब आपके समक्ष कहा कि जिसके हृदय में अली मुर्तज़ा की ओर से एक नारंगी के बराबर कपट न हुआ उसे मुसलमान न कहना चाहिये तो आपने उस अवसर पर उत्तर दिया था कि ईश्वर का दास तो वह है जो कद्दू के बराबर कपट रक्खे।" मीर्ज़ा अत्यधिक रुष्ट हुआ और उसने कहा कि, 'क्या लोगों ने मुझे खारजी समझ लिया है?" इसी प्रकार विभिन्न विषयों पर बात होती रही। दिन के अंतिम पहर तक दरबार चलता रहा। दरबार के विसर्जन के समय मीर्ज़ा अस्करी को मीर्ज़ा कामरान के सुपुर्द करके उसे विदा

१ शाही नियमानुसार।
२ चंग बनाने वाला।
३ गिचक बनाने वाला।
४ कुबूज़ बनाने वाला।
५ कूर का अर्थ पताका होता है किंतु इस स्थान पर घेरा अथवा बीच का गोल स्थान उचित है।

कर दिया गया। क्योंकि मीर्ज़ा शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करता आया था अत पादशाही सरकार से उसके लिये खेमे एव ख़रगाह दौलतख़ाने के समीप लगाये गये।

दूसरे दिन मीर्ज़ाओं और अमीरों से बल्ख़ पर आक्रमण करने के विषय मे परामर्श हुआ। प्रत्येक ने अपनी बुद्धि एव सूझ बूझ के अनुसार मत प्रकट किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने कहा कि, "जब विजयी लश्कर नारी के समीप पहुँच जायेगा तो जो कुछ उचित होगा किया जायेगा।" नारी बदख़्शाँ के अधीनस्थ एक स्थान है जहाँ से एक मार्ग बल्ख़ को और दूसरा काबुल को जाता (९२) है। चौथे दिन वे इस आनन्द मगल की मजिल से रवाना हुए। एक रात्रि के उपरान्त बन्दकुशा चश्मे पर, जो कि इश्किमिश के समीप है, पडाव हुआ। इससे पूर्व जब हज़रत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी उस हृदयग्राही मजिल पर पहुँचे थे और ख़ान मीर्ज़ा एव जहाँगीर मीर्ज़ा ने उपस्थित होकर आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली थी तो उन्होंने अपने आगमन एव भाइयो की आज्ञाकारिता का हाल एक शिला पर अकित करवा दिया था[1]। जब हज़रत जन्नत आशियानी इस मजिल पर पहुँचे तो उसी प्रथानुसार अपने आगमन की तिथि एव मीर्ज़ा कामरान के सेवा में उपस्थित होने तथा भाइयो के सगठित होने का हाल लिखवा दिया। दोनो सम्मानित बादशाहो की ये तारीखें उस शिला पर स्मृति के रूप मे वर्तमान हैं।

जब वे नारी पहुँचे तो कुछ दिन तक बदख़्शाँ की विलायत के शासन प्रबन्ध हेतु उस स्थान पर ठहरे रहे। ख़ुतलान से, जो कौलाब के नाम से प्रसिद्ध है, लेकर मूक एव करातिगीन की सरहद तक के स्थान मीर्ज़ा कामरान को प्रदान कर दिये। बाक़र ख़ा को मीर्ज़ा कामरान की सरकार का मदारइलैं[2] नियुक्त करके मीर्ज़ा के साथ कर दिया। मीर्ज़ा अस्करी को क़रातिगीन जागीर में प्रदान किया गया और उसे विदा कर दिया गया। यद्यपि मीर्ज़ा कामरान इस जागीर से सतुष्ट न था किन्तु समय पर दृष्टि रखते हुए उसने अधिक आपत्ति प्रकट न की। किलए ज़फ़र, तालीक़ान एव कुछ अन्य परगने मीर्ज़ा सुलेमान एव मीर्ज़ा इब्राहीम को प्रदान किये गये। कुन्दुज, गूरी, कहमर्द, बग़लान, इश्किमिश एव नारी मीर्ज़ा हिन्दाल को दिये। शेर अली को मीर्ज़ा के साथ कर दिया गया। बल्ख़ का आक्रमण दूसरे वर्ष के लिये स्थगित कर दिया गया। मीर्ज़ा को नाना प्रकार की अनुकम्पाओं द्वारा सम्मानित करके वे स्वय राजधानी काबुल की ओर रवाना हो गये। अतिम गोष्ठी में वचन एव प्रतिज्ञा की बात, जो कि राज्य व्यवस्था के लिये परमावश्यक है, प्रारम्भ हुई। उस समय उन्होंने शरबत का एक प्याला मँगवाया। उसमें से थोडा सा स्वय पीकर मीर्ज़ा कामरान को दे दिया और आदेश दिया कि मीर्ज़ाओ में से प्रत्येक अपनी श्रेणी के अनुसार पादशाही उलूश[3] का सेवन

१ सम्भवत बाबर के औरातीपा के शिलालेख की ओर सकेत है। इसे बाबर ने ९०७ हि० (१५०१ २ ई०) में खुदवाया। (बाबर नामा, पृ० ५५०)। किन्तु हुमायूँ के मार्ग पर यह स्थान न था। इश्किमिश आक्सस के दक्षिण तथा कुन्दुज के दक्षिण पूर्व में है। यदि बाबर ने वहाँ कोई शिलालेख खुदवाया तो उसका उल्लेख बाबर नामा में नहीं है। गुलबदन बेगम के अनुसार वे किश्म में एकत्र हुये किन्तु किश्म तालीक़ान के पूर्व में है और उस समय हुमायूँ के मार्ग से दूर था। (बेवरिज, पृ० ५३८)।

२ मुख्य प्रबधक।

३ बादशाह के सामने का बचा हुआ भोजन।

को भूमि पर रखकर अपने अपराधों की क्षमा-याचना करें तथा उचित सेवाओं द्वारा अपने पिछले अपराधों के हानि की पूर्ति करें।" मीर्ज़ा कामरान ने यह बात स्वीकार कर ली और थोड़े से लोगों को लेकर चल खड़ा हुआ। जब वह सम्मानित शिविर के समीप पहुँचा तो उसने बाबूस को उनकी सेवा में भेजा और अपने आगमन के विषय में निवेदन कराया। मीर्ज़ा जिस प्रकार उपस्थित हुआ था उससे वे बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने आदेश दिया कि सर्वप्रथम मुनइम खाँ, तरदी बेग खाँ, मीर मुहम्मद मुशी, हसन कुली सुल्तान मुहरदार, बाल्लू बेग, तवाची बेग एवं तारची बेग स्वागत् हेतु जायें। तदुपरान्त कासिम हुसेन सुल्तान सीस्तानी, ख्वाजा खिज्र सुल्तान, अली कुली खाँ, बहादुर खाँ एवं तीसरी बार मीर्ज़ा हिन्दाल, मीर्ज़ा अस्करी एवं मीर्ज़ा सुलेमान को आदेश हुआ कि वे आगे जाकर उसका स्वागत् करें। उसी दिन अस्करी के पाँव की जंजीरें काटी गई थीं। मीर्ज़ा एवं अमीर लोग उनके आदेशानुसार गये और आदर सम्मान प्रदर्शित किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने जहाँबानी की मसनद पर आरूढ़ होकर आम दरबार किया। मीर्ज़ा कामरान सेवा में उपस्थित हुआ और फर्श चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने कृपापूर्वक कहा कि, "तोरे[1] के अनुसार भेंट हो चुकी, अब आओ भ्रातृ भाव से भेंट करें। वे मीर्ज़ा को आलिंगन करके फूट फूट कर रोये।" दरबार के सभी उपस्थित लोगों का हृदय भावातिरेक से भर गया। उन्होंने उसे अपनी बाईं ओर बैठने का आदेश दिया और तुर्की में कहा कि और निकट बैठो। मीर्ज़ा सुलेमान को आदेश हुआ कि वह दाईं ओर बैठे। इसी प्रकार समस्त मीर्ज़ा एवं अमीर लोग अपनी श्रेणी तथा पद के अनुसार दाईं और बाईं ओर बैठे। राज्य के कुछ विश्वासपात्र उदाहरणार्थ हसन कुली मुहरदार, मीर मुहम्मद मुशी, हैदर मुहम्मद, मकसूद बेग आख्ता को एक दूसरे के समक्ष बैठने का आदेश हुआ। भव्य समारोह आयोजित हुआ। गायकों में से कासिम चंगी[2], कोचक गिचकी[3], मुख़लिस कुबूजी[4], हाफिज़ सुल्तान मुहम्मद रखना, ख्वाजा कमालुद्दीन हुसेन, हाफिज़ मुहरी, कूर के समीप आसीन होकर गाने बजाने तथा होश हवास छीनने लगे। यवकों (जवानों) में से काफर अली, शाहम बेग जलायर, तूलक कूचीन एवं अन्य लोगों को कूर[5] के पीछे बैठने का सम्मानित आदेश हुआ। मेवे एवं नाना प्रकार के भोजन उचित रूप से प्रस्तुत किये गये। इस दरबार में हसन कुली सुल्तान मुहरदार ने मीर्ज़ा कामरान से पूँछा कि, "मैंने सुना है कि पीर मुहम्मद खाँ ने जब आपके समक्ष कहा कि जिसके हृदय में अली मुरतज़ा की ओर से एक नारंगी के बराबर कपट न हुआ उसे मुसलमान न कहना चाहिये तो आपने उस अवसर पर उत्तर दिया था कि ईश्वर का दास तो वह है जो कद्दू के बराबर कपट रक्खे।" मीर्ज़ा अत्यधिक रुष्ट हुआ और उसने कहा कि, "क्या लोगों ने मुझे खारजी समझ लिया है?" इसी प्रकार विभिन्न विषयों पर बात होती रही। दिन के अंतिम पहर तक दरबार चलता रहा। दरबार के विसर्जन के समय मीर्ज़ा अस्करी को मीर्ज़ा कामरान के सुपुर्द करके उसे विदा

१ शाही नियमानुसार।
२ चंग बजाने वाला।
३ गिचक बजाने वाला।
४ कुबूज बजाने वाला।
५ कूर का अर्थ पताका होना है किन्तु इस स्थान पर घेरा अथवा बीच का गोल स्थान उचित है।

कर दिया गया। क्योंकि मीर्ज़ा शीघ्रातिशीघ्र यात्रा करता आया था अत. पादशाही सरकार से उसके लिये खेमे एव खरगाह् दौलतखाने के समीप लगाये गये।

दूसरे दिन मीर्ज़ाओं और अमीरों से बल्ख पर आक्रमण करने के विषय में परामर्श हुआ। प्रत्येक ने अपनी बुद्धि एव सूझ बूझ के अनुसार मत प्रकट किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने कहा कि, "जब विजयी लश्कर नारी के समीप पहुँच जायेगा तो जो कुछ उचित होगा किया जायेगा।" नारी बदख्शाँ के अधीनस्थ एक स्थान है जहाँ से एक मार्ग बल्ख को और दूसरा काबुल को जाता (९२) है। चौथे दिन वे इस आनन्द मगल की मज़िल से रवाना हुए। एक रात्रि के उपरान्त बन्दकुशा चश्मे पर, जो कि इश्किमिश के समीप है, पडाव हुआ। इससे पूर्व जब हज़रत गेती सितानी फ़िरदौस मकानी उस हृदयग्राही मज़िल पर पहुँचे थे और खान मीर्ज़ा एव जहाँगीर मीर्ज़ा ने उपस्थित होकर आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली थी तो उन्होंने अपने आगमन एव भाइयों की आज्ञाकारिता का हाल एक शिला पर अकित करवा दिया था[1]। जब हज़रत जन्नत आशियानी इस मज़िल पर पहुँचे तो उसी प्रथानुसार अपने आगमन की तिथि एव मीर्ज़ा कामरान के सेवा में उपस्थित होने तथा भाइयों के सगठित होने का हाल लिखवा दिया। दोनों सम्मानित बादशाहों की ये तारीखें उस शिला पर स्मृति के रूप में वर्तमान हैं।

जब वे नारी पहुँचे तो कुछ दिन तक बदख्शाँ की विलायत के शासन प्रबन्ध हेतु उस स्थान पर ठहरे रहे। ख़ुतलान से, जो कोलाब के नाम से प्रसिद्ध है, लेकर मूक एव करातिगीन की सरहद तक के स्थान मीर्ज़ा कामरान को प्रदान कर दिये। चाकर ख़ा को मीर्ज़ा कामरान की सरकार का मदारइलैह[2] नियुक्त करके मीर्ज़ा के साथ कर दिया। मीर्ज़ा अस्करी को करातिगीन जागीर में प्रदान किया गया और उसे विदा कर दिया गया। यद्यपि मीर्ज़ा कामरान इस जागीर से सतुष्ट न था किन्तु समय पर दृष्टि रखते हुए उसने अधिक आपत्ति प्रकट न की। क़िलए ज़फ़र, तालीक़ान एव कुछ अन्य परगने मीर्ज़ा सुलेमान एव मीर्ज़ा इब्राहीम को प्रदान किये गये। कुन्दुज़, ग़ूरी, कहमर्द, ख़ब्लान, इश्किमिश एव नारी मीर्ज़ा हिन्दाल को दिये। शेर अली को मीर्ज़ा के साथ कर दिया गया। बल्ख का आक्रमण दूसरे वर्ष के लिये स्थगित कर दिया गया। मीर्ज़ा को नाना प्रकार की अनुकम्पाओं द्वारा सम्मानित करके वे स्वय राजधानी काबुल की ओर रवाना हो गये। अतिम गोष्ठी में वचन एव प्रतिज्ञा की बात, जो कि राज्य व्यवस्था के लिये परमावश्यक है, प्रारम्भ हुई। उस समय उन्होंने शरबत का एक प्याला मँगवाया। उसमें से थोडा सा स्वय पीकर मीर्ज़ा कामरान को दे दिया और आदेश दिया कि मीर्ज़ाओं में से प्रत्येक अपनी श्रेणी के अनुसार पादशाही उलूश[3] का सेवन

१ सम्भवतः बाबर के औरातीपा के शिलालेख की ओर सकेत है। इसे बाबर ने ९०७ हि० (१५०१-२ ई०) में खुदवाया। (बाबर नामा, पृ० ५५०)। किन्तु हुमायूँ के मार्ग पर यह स्थान न था। इश्किमिश ख़ानाबाद के दक्षिण तथा कुन्दुज़ के दक्षिण-पूर्व में है। यदि बाबर ने वहाँ कोई शिलालेख खुदवाया तो उसका उल्लेख बाबर नामा में नहीं है। गुलबदन बेगम के अनुसार वे किश्म में एकत्र हुये किन्तु किश्म तालीक़ान के पूर्व में है और उस समय हुमायूँ के मार्ग से दूर था। (बेवरिज, पृ० ५३८)।

२ मुख्य प्रबधक।

३ बादशाह के सामने का बचा हुआ भोजन।

को भूमि पर रखकर अपने अपराधों की क्षमा याचना करें तथा उचित [illegible] हुए प्रदान किये अपराधों के हानि की पूर्ति करे।" मीर्ज़ा कामरान ने यह बात स्वी[illegible] के भाग से परियान के को लेकर चल खड़ा हुआ। जब वह सम्मानित शिविर के समी[illegible] किरान व कतूर[1] के काफिरों को सेवा में भेजा और अपने आगमन के विषय में निवेदन [illegible] हो जाने के कारण वह गिरने लगा था उससे वे बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने आदे[illegible] दिया कि उसकी टूट फूट की मरम्मत कराई मीर मुहम्मद मुंशी, हसन कुली सुल्तान मुह[illegible] अमीरों को थोड़ा थोड़ा भाग इस आशय से बाँट जायें। तदुपरान्त कासिम हुसैन सुल्तान [illegible] अधिक से अधिक प्रयत्न करते रहे। इस प्रकार एक सप्ताह तीसरी बार मीर्ज़ा हिन्दाल, मी[illegible] भली भाँति ठीक हो गये। उन्होंने बेग मीरक को उसका स्वागत करें। उसी दि[illegible] उश्तुरगराम के दर्रे से होते हुए शीत ऋतु के प्रारम्भ में उनके आदेशानुसार गये [illegible] शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा में शहर के समीप ठहरे रहे। भाग्यशाली की मसनद पर आ[illegible] स्वागत का सौभाग्य प्राप्त करने के लिये वहाँ पहुँचे। अल्का खा चूमने का मौ[illegible] सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। हज़रत जन्नत भेंट हो च[illegible] नेत्रों की ठंडक को, जिसके ललाट से लोक तथा परलोक के सौभाग्य प्रकट दरबा[illegible] न समाते थे और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के सिज्दे किया करते थे। ओ[illegible] शुभ मुहूर्त में वे नगर में प्रविष्ट हुए। राज्य के चारों ओर से बधाई के पत्र प्राप्त हुए। विशेष रूप से समुन्दर नामक व्यक्ति मीर्ज़ा हैदर की ओर से पेशकश एवं कश्मीर की उत्तम वस्तुएँ दरबार में लाया। मीर्ज़ा ने अपने प्रार्थनापत्र में वहाँ की जलवायु, बहार, सौन्दर्य, रमणीयता, फूलों की उत्तमता एवं मेवों का उल्लेख बड़े सुन्दर शब्दों में करके उस हृदयग्राही भूभाग की सैर के विषय में आग्रह किया था और हिन्दुस्तान की विजय के विषय में गम्भीर बातें तथा उचित परामर्श लिखे थे। हज़रत जन्नत आशियानी ने भी उसके प्रति अत्यधिक अनुकम्पा प्रदर्शित करते हुए उसके नाम एक कृपा युक्त पत्र लिखा जिसमें अपनी विजय तथा सफलता के सुखद समाचारों का उल्लेख करते हुए हिन्दुस्तान की विजय का हृदय से जो दृढ़ संकल्प उन्होंने कर लिया था, उसका उल्लेख किया।

क्योंकि कराचा खाँ एवं मुसाहिब (बेग) सर्वदा कृतघ्नता प्रकट करते रहते थे और पादशाही अनुकम्पाओं एवं उदारताओं के मूल्य को न समझते थे एवं नाना प्रकार के दंड के पात्र हो चुके थे अतः उनके औचित्य को समझने वाले हृदय में यह बात आई कि उन लोगों को हिजाज़ की यात्रा एवं काबे की ज़ियारत का आदेश दे दिया जाय। इस प्रकार वे परदेश के कष्टों को सहकर अपनी आत्मा का सुधार कर सकेंगे और अपने आपको पापों से मुक्त करके सेवा में उपस्थित होंगे। वे आदेशानुसार विदा हो गये किन्तु अत्यधिक शोक के कारण कुछ समय तक हज़ारानात[3] में ठहरे (९३) रहे, यहाँ तक कि हज़रत जन्नत आशियानी की उदारता का समुद्र पुनः लहरें मारने लगा और उन्होंने उन कृतघ्नों की करुणा एवं विलाप के प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए उन्हें दरबार में बुला लिया।

खूस्त हिन्दूकुश की उत्तरी ढाल पर, कुन्दुज के दक्षिण तथा दक्षिण पूर्व के मध्य में जिले के समान है।
वह स्थान जहाँ से पत्थर आदि फेंके जाते होंगे।
हज़ारा कबीलों के पास।

इन्हीं दिनों प्रेम तथा निष्ठा की प्रथा को दृढ बनाने के लिये उन्होंने ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को दूत बनाकर उपहारों सहित एराक की ओर भेज दिया। इस वर्ष जो घटनायें घटी उनमें मीर्जा उलुग बेग वल्द मीर्जा मुहम्मद सुल्तान का शहीद होना है। इस घटना का संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है —मीर्जा हजरत जन्नत आशियानी की सेवा में उपस्थित होने के उद्देश्य से बदख्शाँ की ओर जा रहा था। ख्वाजा मुअज्जम भी चौखट चूमने के विचार से तथा अपने अपराधों का निराकरण करने के उद्देश्य से मीर्जा के साथ हो लिया। जब वे गजनी के निकट पहुँचे तो ख्वाजा मुअज्जम आग्रह करके मीर्जा को हजारा लोगों के विरुद्ध इस आशय से ले गया कि सम्भवतः लूट मार में कुछ प्राप्त हो जाय। सूझ बूझ के अभाव, युवावस्था के अभिमान एवं पागलपन में वे किसी सावधानी एवं सतर्कता की ओर ध्यान न देकर बिना किसी व्यवस्था एवं तैयारी के युद्ध हेतु अग्रसर हो गये। हजारा लोगों ने एकत्र होकर उन्हें बुरी तरह परेशान कर दिया और जैसा कि भाग्य में लिखा था मीर्जा शहीद हो गया।

हजरत जन्नत आशियानी ने तरर्दी मुहम्मद खाँ के सम्मान में वृद्धि करके जमीनदावर तथा उस क्षेत्र के स्थान उसे जागीर में प्रदान कर दिये और उसे उस क्षेत्र की व्यवस्था एवं प्रबन्ध हेतु विदा कर दिया। इसी वर्ष काशगर के हाकिम अब्दुर्रशीद खाँ बिन सुल्तान सईद खाँ के राजदूतों ने उपहारों सहित सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया और शीघ्र ही अपार कृपाओं द्वारा सम्मानित होकर लौट गये। इसी बीच में उजबेकिया सुल्तानों में से अब्बास सुल्तान ने चौखट चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया और उसे आश्रय प्रदान हुआ तथा उसके सम्मान में वृद्धि कर दी गई। उन्होंने अपनी छोटी बहिन गुलचेहरा[1] बेगम से उसका विवाह कर दिया। इसी वर्ष मीर्जा उलुग बेग का भाई मीर्जा शाह भी शहीद हो गया। वह अपनी जागीर उस्तुरगराम से चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त करने आ रहा था। जब वह कोतलमीनार पहुँच गया तो हाजी मुहम्मद खाँ का भाई शाह मुहम्मद इस कारण कि हिन्दुस्तान में मीर्जा सुल्तान मुहम्मद ने उसके चाचा कोकी की हत्या कर दी थी, घात लगाकर बैठ गया और उस दर्रे से उसपर एक बाण का वार किया। वह उसी बाण से घायल हो कर मर गया।

भाग्यशाली लश्कर का बल्ख की विजय हेतु प्रस्थान तथा सफलता प्राप्त किये हुये वापसी

यद्यपि उन्होंने हिन्दुस्तान पर आक्रमण करना निश्चय कर लिया था और इस विजय को वे अपने राज्य एवं सल्तनत के मुख्य उद्देश्यों में समझते थे किन्तु बल्ख पर आक्रमण करने के लिये जिसका पहले से उन्होंने संकल्प कर लिया था, हिन्दुस्तान की विजय को कुछ दिन के लिये स्थगित कर दिया। ९५६ हि० के प्रारम्भ (फरवरी १५४९ ई०) में, जब कि मौसम संतुलित हो गया था, उन्होंने वालू बग को मीर्जा कामरान के पास भेजकर आदेश प्रेपित किया कि, "हम जैसा कि पहले निश्चय हो चुका है, बल्ख की विजय हेतु प्रस्थान कर रहे हैं। तू संगठन एवं मेल पर ध्यान रखते

[1] वह गुलबदन बेगम की बड़ी बहिन थी और बाबर तथा दिलदार बेगम की पुत्री थी। सम्भवतः यह उसका दूसरा विवाह था।

करे। मीर्ज़ा कामरान, मीर्ज़ा सुलेमान एवं मीर्ज़ा हिन्दाल को नक्कारा तथा तुमन तुग प्रदान किये गये। अन्य मीर्ज़ाओं को अलम तथा नक्कारा। सम्मानित लश्कर खूस्त के मार्ग से परियान के किले की ओर रवाना हुआ। इस किले का निर्माण हज़रत साहिब किरान ने कतूर[1] के काफिरों को दंड देने के उपरान्त कराया था। क्योंकि अधिक समय व्यतीत हो जाने के कारण वह गिरने लगा था अत उन्होंने पहलवान दोस्त मीर बर को आदेश दिया कि उसकी टूट फूट की मरम्मत कराई जाय। उसके पूरा कराने की ओर पूर्ण ध्यान देकर अमीरों को थोडा-थोडा भाग इस आशय से बाँट दिया कि वे एक दूसरे की प्रतियोगिता में अधिक से अधिक प्रयत्न करते रहें। इस प्रकार एक सप्ताह के बीच में किले के द्वार बगैरे एवं सग अन्दाज[2] भली-भाँति ठीक हो गये। उन्होंने बेग मीरक को उसके शासन प्रबन्ध हेतु नियुक्त किया और उश्तुरगराम के दर्रे से होते हुए शीत ऋतु के प्रारम्भ में राजधानी काबुल में पहुँच गये। शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा में शहर के समीप ठहरे रहे। भाग्यशाली शाहज़ादा अर्थात् खाकाने अकबर स्वागत् का सौभाग्य प्राप्त करने के लिये वहाँ पहुँचे। अत्का खाँ एवं राज्य के समस्त सेवकों ने सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया। हज़रत जन्नत आशियानी खिलाफ़त के नेत्रों की ठंडक को, जिसके ललाट से लोक तथा परलोक के सौभाग्य प्रकट होते रहते थे, देख देख कर फूले न समाते थे और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के सिज्दे किया करते थे। शुभ मुहूर्त में वे नगर में प्रविष्ट हुए। राज्य के चारों ओर से बधाई के पत्र प्राप्त हुए। विशेष रूप से समुंदर नामक व्यक्ति मीर्ज़ा हैदर की ओर से पेशकश एवं कश्मीर की उत्तम वस्तुएँ दरबार में लाया। मीर्ज़ा ने अपने प्रार्थनापत्र में वहाँ की जलवायु, बहार, सौन्दर्य, रमणीयता, फूलों की उत्तमता एवं मेवों का उल्लेख बड़े सुन्दर शब्दों में करके उस हृदयग्राही भूभाग की सैर के विषय में आग्रह किया था और हिन्दुस्तान की विजय के विषय में गम्भीर बातें तथा उचित परामर्श लिखे थे। हज़रत जन्नत आशियानी ने भी उसके प्रति अत्यधिक अनुकम्पा प्रदर्शित करते हुए उसके नाम एक कृपा-युक्त पत्र लिखा जिसमें अपनी विजय तथा सफलता के सुखद समाचारों का उल्लेख करते हुए हिन्दुस्तान की विजय का हृदय से जो दृढ़ संकल्प उन्होंने कर लिया था, उसका उल्लेख किया।

क्योंकि कराचा खाँ एवं मुसाहिब (बेग) सर्वदा कृतघ्नता प्रकट करते रहते थे और पादशाही अनुकम्पाओं एवं उदारताओं के मूल्य को न समझते थे एवं नाना प्रकार के दंड के पात्र हो चुके थे अत उनके औचित्य का समझने वाले हृदय में यह बात आई कि उन लोगों को हिजाज़ की यात्रा एवं काबे की ज़ियारत का आदेश दे दिया जाय। इस प्रकार वे परदेश के कष्टों को सहकर अपनी आत्मा का सुधार कर सकेंगे और अपने आपको पापों से मुक्त करके सेवा में उपस्थित होंगे। वे आदेशानुसार विदा हो गये किन्तु अत्यधिक शोक के कारण कुछ समय तक हज़ाराजात[3] में ठहरे (९३) रहे, यहाँ तक कि हज़रत जन्नत आशियानी की उदारता का समुद्र पुन लहरें मारने लगा और उन्होंने उन कृतघ्नों की करुणा एवं विलाप के प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए उन्हें दरबार में बुला लिया।

१ खूस्त हिन्दूकुश की उत्तरी ढाल पर, कुन्दुज़ के दक्षिण तथा दक्षिण पूर्व के मध्य में ज़िले के समान है।
२ वह स्थान जहाँ से पत्थर आदि फेंके जाते होंगे।
३ हज़ारा क़बीलों के पास।

इन्ही दिनो प्रेम तथा निष्ठा की प्रथा को दृढ बनाने के लिये उन्होने ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को दूत बनाकर उपहारो सहित एराक की ओर भेज दिया। इस वर्ष जो घटनायें घटी उनमे मीर्जा उलुग बेग वल्द मीर्जा मुहम्मद सुल्तान का शहीद होना है। इस घटना का संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है —मीर्जा हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा मे उपस्थित होने के उद्देश्य से बदख्शाँ की ओर जा रहा था। ख्वाजा मुअज्जम भी चौखट चूमने के विचार से तथा अपने अपराधो का निराकरण करने के उद्देश्य से मीर्जा के साथ हो लिया। जब वे ग़ज़नी के निकट पहुँचे तो ख्वाजा मुअज्जम आग्रह करके मीर्जा को हज़ारा लोगो के विरुद्ध इस आशय से ले गया कि सम्भवतः लूट मार में कुछ प्राप्त हो जाय। सूझ-बूझ के अभाव, युवावस्था के अभिमान एव पागलपन में वे किसी सावधानी एव सतर्कता की ओर ध्यान न देकर बिना किसी व्यवस्था एव तैयारी के युद्ध हेतु अग्रसर हो गये। हज़ारा लोगो ने एकत्र होकर उन्हे बुरी तरह परेशान कर दिया और जैसा कि भाग्य में लिखा था मीर्जा शहीद हो गया।

हज़रत जन्नत आशियानी ने तरदी मुहम्मद ख़ा के सम्मान में वृद्धि करके ज़मीनदावर तथा उस क्षेत्र के स्थान उसे जागीर मे प्रदान कर दिये और उसे उस क्षेत्र की व्यवस्था एव प्रबन्ध हेतु विदा कर दिया। इसी वर्ष काशगर के हाकिम अब्दुर्रशीद ख़ा बिन सुल्तान सईद ख़ा के राजदूतों ने उपहारो सहित सेवा मे उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त किया और शीघ्र ही अपार कृपाओं द्वारा सम्मानित होकर लौट गये। इसी बीच में उज़बेकिया सुल्तानो मे से अब्बास सुल्तान ने चौखट चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया और उसे आश्रय प्रदान हुआ तथा उसके सम्मान में वृद्धि कर दी गई। उन्होने अपनी छोटी बहिन गुल्चेहरा[1] बेगम से उसका विवाह कर दिया। इसी वर्ष मीर्जा उलुग बेग का भाई मीर्जा शाह भी शहीद हो गया। वह अपनी जागीर उश्तुरगराम से चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त करने आ रहा था। जब वह कोतलमीनार पहुँच गया तो हाजी मुहम्मद ख़ा का भाई शाह मुहम्मद इस कारण कि हिन्दुस्तान में मीर्जा सुल्तान मुहम्मद ने उसके चाचा कोकी की हत्या कर दी थी, घात लगाकर बैठ गया और उस दर्रे से उसपर एक बाण का वार किया। वह उसी बाण से घायल हो कर मर गया।

भाग्यशाली लश्कर का बल्ख की विजय हेतु प्रस्थान तथा सफलता प्राप्त किये हुये वापसी

यद्यपि उन्होने हिन्दुस्तान पर आक्रमण करना निश्चय कर लिया था और इस विजय को वे अपने राज्य एव सल्तनत के मुख्य उद्देश्यो में समझते थे किन्तु बल्ख पर आक्रमण करने के लिये जिसका पहले से उन्होने सकल्प कर लिया था, हिन्दुस्तान की विजय को कुछ दिन के लिये स्थगित कर दिया। ९५६ हि० के प्रारम्भ (फ़रवरी १५४९ ई०) में, जब कि मौसम सतुलित हो गया था, उन्होने वाल्तू बेग का मीर्जा कामरान के पास भेजकर संदेश प्रेषित किया कि, "हम जैसा कि पहले निश्चय हो चुका है, बल्ख की विजय हेतु प्रस्थान कर रहे हैं। तू सगठन एव मेल पर ध्यान रखते

१ यह गुलबदन बेगम की बड़ी बहिन थी और बाबर तथा दिलदार बेगम की पुत्री थी। सम्भवत. यह उसका दूसरा विवाह था।

हुए इस बात को अपने लिये बहुत बड़ा सौभाग्य समझ कर साथ चलने के लिये उद्यत हो जा और अपने पिछले अपराधों के हानि की पूर्ति कर। जब भाग्यशाली पताकाएँ बदख्शाँ के समीप पहुँच जायें तो तू अपनी सेना सहित सम्मानित लश्कर में पहुँच जा।" इसी प्रकार मीर्ज़ा हिन्दाल, मीर्ज़ा अस्करी, मीर्ज़ा सुलेमान तथा मीर्ज़ा इबराहीम को इस विषय में फरमान लिखे। स्वयं विजयी पताकाओं को बलन्द करके एक मास तक यूरत चालाक में राज्य-व्यवस्था एवं गज़नी से हाजी मुहम्मद खाँ के आगमन की प्रतीक्षा में ठहरे रहे। इस मंज़िल से ख्वाजा दोस्त खावन्द को कौलाब भेज दिया ताकि वह मीर्ज़ा कामरान को सम्मानित शिविर में पहुँचा दे। ख्वाजा कासिम ब्यूतात को पूर्व में विज़ारत का पद प्राप्त था एवं ख्वाजा मीर्ज़ा बेग दीवान था। उसकी[1] अयोग्यता के कारण, ख्वाजा गाज़ी एवं ख्वाजा रूहुल्लाह की शिकायत की गई। हुसेन कुली सुल्तान, मुनइम खाँ, मुहम्मद कुली खाँ बरलास, फरीदूं खाँ एवं मौलाना अब्दुल बाकी सद्र इस मामले की जाँच हेतु नियुक्त किये गये। जब छानबीन के उपरान्त ख्वाजा गाज़ी एवं ख्वाजा रूहुल्लाह तथा कुछ नवीसिन्दों[2] के एक समूह के अपहरण का प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त हो गया तो उन्होंने हुसेन कुली सुल्तान को उसकी धन सम्पत्ति को अधिकार में कर लेने का आदेश दिया। ख्वाजा सुल्तान अली, जिसे अफज़ल खाँ की उपाधि प्राप्त थी ब्यूतात की मुशरिफी से दीवानी के सम्मानित पद पर नियुक्त किया गया। इसी मंज़िल पर मीर्ज़ा इबराहीम ने शीघ्रातिशीघ्र पहुँचकर सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया। आवश्यक मामलों की व्यवस्था के उपरान्त वे प्रस्थान करके इस्तालीफ में ठहरे। इस मंज़िल से अब्बास सुल्तान ऊज़बेक अपनी नीचता का प्रदर्शन करता हुआ भाग गया। जब मीर्ज़ाओं के प्रस्थान एवं मीर्ज़ा कामरान की तैयारी के समाचार उन्हें प्राप्त हुए तो वे पंजहीर के मार्ग से रवाना होकर अन्दराब में पहुँचे। जिस मंज़िल पर हज़रत साहब किरानी ने नींव रक्खी थी,[3] वहाँ तीन दिन ठहरे और बादशाहाना जश्न आयोजित कराया। वहाँ से भारी रवाना हुए। नारी दर्रे को पार करके (९४) वे नौलाब के मैदान की, जहाँ की बहार बदख्शाँ में बड़ी प्रसिद्ध है, सैर हेतु रवाना हुए। उस क्षेत्र में मीर्ज़ा हिन्दाल, एवं मीर्ज़ा सुलेमान ने फर्रा घूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। मीर्ज़ा सुलेमान की प्रार्थना पर मीर्ज़ा इबराहीम को बदख्शाँ की ओर भेज दिया गया ताकि वह उस राज्य की रक्षा करे तथा सेना एकत्र करके शीघ्र भेजता रहे। बक़लान के पास से मीर्ज़ा सुलेमान, मीर्ज़ा हिन्दाल एवं हाजी मुहम्मद खाँ को आदेश दिया कि वे शीघ्र बढ़ कर ऐबक को, जो कि बल्ख़ के समीप है और समृद्धि, मेवे की अधिकता एवं जलवायु की उत्तमता से सुशोभित है, ऊज़बेकों के अधिकार से मुक्त करा दें। मार्ग में सैयिद मुहम्मद पकना, जो बादशाही यसावलों में से था, एक चीते को तीर द्वारा शिकार करके उसे सेवा में लाया। हुसेन कुली मुहरदार ने निवेदन किया कि, "तुर्क लोग किसी स्थान की चढ़ाई के समय चीते के शिकार को शुभ नहीं समझते।" उसने निवेदन किया कि "जब मुझे बैराम ऊगलान बन्दी बनाकर बल्ख़ के हाकिम कीस्तन क़रा के समक्ष ले गया तो वह उस समय चक्चतू एवं मैमना में हेरों पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा था। एक व्यक्ति चीते का शिकार करके लाया। इसी कारण आक्रमण स्थगित कर दिया गया। हज़रत जन्नत

१ ख्वाजा मीर्ज़ा।
२ मुंशियों।
३ सम्भवतः क़िले की नींव रक्खी थी।

आशियानी ने उनकी बात पर कोई ध्यान न दिया और अपने संकल्प पर दृढ़ रहे तथा अपने साहस के दामन को चिन्ता की धूल से मैला न किया। दूसरे दिन उनकी सेना का अग्र भाग ऐबक पहुँच गया। बल्ख के हाकिम पीर मुहम्मद खाँ ने अपने अतालीक ख्वाजा बाक को कुछ अनुभवी आदमियों, उदाहरणार्थ ईल मीर्ज़ा, हुसेन सईद बई, मुहम्मद कुली मीर्ज़ा एवं जूजक मीर्ज़ा के साथ ऐबक की प्रतिरक्षा हेतु भेजा। इसी बीच में विजयी पताकाएं भी पहुँच गईं। ऊज़बेक अमीरों के पास किले में प्रविष्ट होने तथा उसे दृढ़ बनाने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय न रह गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने किले की विजय का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया एवं मोर्चे बाँट दिये। दो तीन दिन में जो लोग किले में बन्द थे, उन्होंने अमान माँग ली और चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त किया। सम्मानित राज्य के अधिकारियों को ऐबक प्राप्त हो गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने एक भव्य दरबार करके ऊज़बेक अमीरों को सेवा में उपस्थित कराया। मावराउन्नहर की विजय के विषय में अतालीक़ से परामर्श किया। उसने निवेदन किया कि, 'इस प्रकार की बातों को हमसे पूँछने से क्या लाभ ?" हज़रत जन्नत आशियानी ने कहा कि 'तेरे ललाट से सच्चाई एवं निष्ठा के चिह्न दृष्टिगत हैं अतः तुझसे यह बात पूँछी जाती है। तू निःसंकोच एवं निर्भीक होकर जो कुछ कहना चाहता हो, कह।" अतालीक ने निवेदन किया कि, "पीर मुहम्मद खाँ के अनुभवी आदमियों को आपने बन्दी बना लिया। आप निःसंकोच इन सब की हत्या करा दें, तदुपरान्त विजय तथा सफलता की रिकाब में पाँव रखकर अग्रसर हों। मावराउन्नहर बिना युद्ध के आपके अधिकार एवं प्रभुत्व के अधीन आ जायेगा।" यद्यपि उसका परामर्श अत्यधिक सिपाहियाना[1] एवं उचित था किन्तु हज़रत जन्नत आशियानी ने अपनी अत्यधिक उदारता एवं अपने सौजन्य के कारण प्रतिज्ञा भंग करना उचित न समझा और इस समूह को जिसे अमान देकर अपनी सेवा में उपस्थित किया था, वचन एवं प्रतिज्ञा की उपेक्षा करके मरवा डालना न्याययुक्त न समझा। अतालीक ने निवेदन किया कि, "यदि हज़रत इस परामर्श को स्वीकार नहीं करते तो मुझ बन्दी बनाकर इस शर्त पर संधि कर लें कि खुल्म[2] से इस ओर के स्थान दरबार के सेवकों को प्राप्त हो जायें। जब कभी हिन्दुस्तान पर आक्रमण हो तो पीर मुहम्मद खाँ कुमक के रूप में आपके साथ एक सेना नियुक्त करे जो कि विजय तक आपके साथ रहे।" क्योंकि दैवी इच्छा एवं विधाता की मर्ज़ी इन दोनों प्रस्तावों के विरुद्ध थी अतः उनके ठहर जाने के कारण अब्दुल अज़ीज़[3] एवं अन्य ऊज़बेक ख़ान पीर मुहम्मद खाँ की सहायता हेतु पहुँच गये और कामरान अपनी स्वाभाविक शत्रुता के कारण सेवा में न पहुँचा। हज़रत जन्नत आशियानी ने विवश होकर पीर मुहम्मद खाँ के अमीरों को दरबार के एक विश्वासपात्र ख्वाजा कासिम मुख़लिस के साथ काबुल भेज दिया। अतालीक को अपने साथ लेकर खुल्म के मार्ग से बल्ख की ओर रवाना हुए। २-३ दिन उपरान्त खुल्म को पार करके उन्होंने बाबा शाहू नामक स्थान

१ व्यवहार की दृष्टि से उचित।

२ बल्ख से खुल्म तथा ताकियान होता हुआ मार्ग बदख्शाँ की सरहद पर जाता था। एक अन्य सड़क जो उस की शाखा थी, दक्षिण पूर्व में काबुल के उत्तर में स्थित अन्दराब एवं पंजशीर की खानों को जाती थी। खुल्म नदी भी उत्तर में जाकर लुप्त हो जाती है। तीमूर खुल्म से हिन्दुस्तान की सरहद पर पहुँचा था।

३ उबैदुल्लाह खाँ ऊज़बेक का पुत्र। उसने १५४० ई० से बुखारा में राज्य करना प्रारम्भ कर दिया।

इस्कन्दर ख़ा, सुल्तान हुसेन ख़ा, बाल्तू सुल्तान, मुसाहिब बेग, शाह बुदाग, शाहम बेग जलायर, शाह कुली नारजी, मुहम्मद कासिम मौजी, लुत्फुल्लाह सरहिन्दी, अब्दुल वह्हाब रूमी, बाकी मुहम्मद परवानचा, ख़ालदीन।

तीन दिन उपरान्त वे चहारचश्मे के दर्रे की घाटी पर पहुँचे। यहाँ से हजरत ख़ाकानी एव बेगमों के नाम फरमान लिखकर बेग मुहम्मद आख़्ता बेगी के हाथ काबुल भेजा। काशगर के हाकिम रशीद ख़ा को, जो सर्वदा निष्ठावान् रहा करता था, पत्र लिखा कि, "दुष्ट भाई मुहम्मद कामरान ने अपनी दुष्टता के कारण मित्रता पर शत्रुता के पाप को प्राथमिकता देकर प्रेम एव निष्ठा के सम्बन्ध को पूर्णत त्याग दिया है। इस कारण बहुत से सहायकों ने साहस से काम न लिया अत यह अभियान राज्य के मित्रों की इच्छानुसार सम्पन्न न हो सका अपितु शोक एव दु ख का कारण बना।"

वहाँ से प्रस्थान करके एक रात्रि के उपरान्त उन्होंने गूरबन्द मे पडाव किया। दूसरे दिन ख़्वाजा सय्यारान पहुँचे। वहाँ से क़राबाग और कराबाग से काबुल की ओर रवाना हुए। सौभाग्य की वाटिका के उस पौधे ने उस मजिल पर पहुँचकर सेवा म उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया। मीर्ज़ा सुलेमान को मार्ग से बदख़्शा की ओर विदा कर दिया गया। मीर्ज़ा हिन्दाल कुन्दुज की ओर रवाना हुआ। मुनइम ख़ा भी मीर्ज़ा के साथ कुन्दुज की ओर रवाना हुआ। अमीर लोग एक दूसरे के पीछे काबुल पहुँचे। शाह बुदाग, जिसने इस युद्ध मे वीरता एव पौरुष का प्रदर्शन किया था, शत्रुओं द्वारा बन्दी बना लिया गया। मीर शरीफ बख़्शी, ख़्वाजा नासिरुद्दीन अली मुस्तौफी, मीर महमूद काशी, मीर जान बग दारोग़ये एमारत एव ख़्वाजा मुहम्मद अमीन कव को भी इसी स्थिति का सामना करना पडा। उत्कृष्ट रिकाब के अन्य सेवक ईश्वर की सहायता एव प्रतिरक्षा में काबुल पहुँचे। अतालीक एव उज़बेको के एक समूह को, जो कि ऐबक में बन्दी बना लिया गया था, मुक्त करने का आदेश दे दिया गया। जब वे अपने वतन पहुँचे तो उन्होंने पादशाही कृपा एव अनुकम्पा का उल्लेख किया। पीर मुहम्मद ख़ा ने भी पादशाही सेवको के साथ सौजन्यपूर्ण व्यवहार करके काबुल भेज दिया।

इस अभियान के पूर्व ख़्वाजा जलालुद्दीन महमूद को दूत बनाकर उन्होंने स्वर्गीय शाह तहमास्प के पास भेजा था। ख़्वाजा कुछ घटनाओं के कारण कन्धार में ठहर गया था। उस समय यह आदेश हुआ कि वह उस उद्देश्य को त्याग कर दरबार मे उपस्थित हो जाय। ख़्वाजा अब्दुस्समद एव मीर सैयिद अली ने, जो कि चित्रकला में अद्वितीय थे, ख़्वाजा अब्दुस्समद के साथ चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त किया और नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा सम्मानित हुए।

मीर्ज़ा कामरान का हाल इस प्रकार है जब हजरत जन्नत आशियानी ने उसके घोर अपराधों को क्षमा कर दिया और कोलाब उसे तयूल में प्रदान कर दिया तथा चाकर बग कालाबी वल्द सुल्तान वैस बेग को उसके साथ कर दिया तो अल्प समय मे मीर्ज़ा ने चाकर बग मे निष्ठुरतापूर्वक व्यवहार करके उसे अपने अधीनस्थ राज्य से निर्वासित कर दिया। हजरत जन्नत आशियानी की महान् कृपाओं एव अनुकम्पाओं का भूल के आले पर रख कर सर्वनाशकारी कल्पनाओं को अपने हृदय में स्थान देने लगा तथा समय की प्रतीक्षा करने लगा। जब तक हजरत जन्नत आशियानी काबुल में रहे वह सर्वदा अपने आगमन के सम्बन्ध में झूठ वायदे किया करता था। जब भाग्यशाली लश्कर बल्ख़ की विजय हेतु रवाना हुआ तो मीर्ज़ा ने समय से लाभ उठाकर काबुल पर अधिकार जमाने का विचार अपने सत्य से अपरिचित हृदय में दृढ़ कर लिया। कुछ षड्यन्त्रकारियों के बहकाने से, जो कि

मीर्ज़ा के साथ सर्वदा रहते थे, विद्रोह एवं बगावत करना निश्चय कर लिया। इस अनिष्ट समाचार के कारण उन्हे बल्ख को, जिसपर उन्होंने अधिकार जमा लिया था, छोडकर वापस लौटना पड़ा। जब हज़रत जन्नत आशियानी ने शीघ्रातिशीघ्र अपने न्याय के हुमा की छाया राजधानी काबुल में डाली तो मीर्ज़ा कामरान मीर्ज़ा अस्करी को कोलाब में छोडकर मीर्ज़ा सुलेमान के विरुद्ध रवाना हुआ। मीर्ज़ा सुलेमान, जो कि यात्रा के कष्टों मे अपने आपको अभी सँभाल भी न पाया था, बिना युद्ध किये हुए तालीकान से क़िलये ज़फर की ओर भाग गया। मीर्ज़ा कामरान तालीकान को बाबूस बेग को सौंपकर स्वयं क़िलये ज़फर की ओर रवाना हुआ। मीर्ज़ा सुलेमान एवं मीर्ज़ा इबराहीम मुकाबला न कर सके। वे इस्हाक़ सुल्तान को किलए ज़फर में छोडकर बदख़्शाँ के दर्रे की ओर भाग गये और समय की प्रतीक्षा करने लगे। मीर्ज़ा कामरान, मीर्ज़ा सुलेमान की ओर से निश्चिन्त होकर कुन्दुज़ की ओर रवाना हुआ। उसने सर्वप्रथम मीर्ज़ा हिन्दाल को मित्रता के बहाने से अपनी ओर आकृष्ट करके अपने जाल मे फँसाने का प्रयत्न किया। जब मीर्ज़ा हिन्दाल चक्मे में न आया और अपने स्थान पर दृढ रहा तो मीर्ज़ा कामरान ने पूर्ण तैयारी सहित कुन्दुज़ का अवरोध कर लिया। (९७) मीर्ज़ा हिन्दाल ने युद्ध एवं किले की प्रतिरक्षा में कोई कसर उठा न रखी। जब मीर्ज़ा कामरान कोई सफलता न प्राप्त कर सका तो उसने ऊज़बेकों से सम्पर्क स्थापित करके कुमक की याचना की। ऊज़बेक लोग कुमक हेतु पहुँच गये और अवरोध में उसके सहायक बन गये। मीर्ज़ा हिन्दाल ने शत्रुओं में फूट डालने के लिये एक बडी ही उत्तम चाल चली। उसने मीर्ज़ा कामरान की ओर से अपने नाम का एक पत्र लिखवाया जिसमे सगठन सम्बन्धी वचन की पुष्टि तथा ऊज़बेकों को धोखा देने का उल्लेख किया। अनुभवी लोगो की भाँति उस जाली पत्र को एक दूत को इस आशय से दे दिया कि वह जान बूझकर ऊज़बेकों के हाथ में फँस जाय। जब उन लोगों ने उसकी तलाशी ली तो उन्हे वह पत्र मिला। उसमें जो कुछ लिखा था उसपर विश्वास हो गया और वे समझ गये कि मीर्ज़ा लोग स्वयं तो मिले हुए हैं परन्तु हमारे विरुद्ध विश्वासघात कर रहे हैं तथा हमें मुसीबत में फँसा देंगे। ऊज़बेक लोग रुष्ट होकर किला छोडकर चल दिये और प्रत्येक अपने-अपने स्थान को रवाना हो गया। किले का काम पूरा न हो सका। इसी बीच में समाचार प्राप्त हुए कि चाकर बेग कोलाब का अवरोध किये हुए हैं। मीर्ज़ा अस्करी पराजित होकर किले में प्रविष्ट हो गया है। मीर्ज़ा सुलेमान ने इस्हाक़ सुल्तान को मिलाकर किलये ज़फर पर अधिकार जमा लिया। किले को अधिकार में करने के उपरान्त उसने इस्हाक़ सुल्तान को बन्दी बना लिया। मीर्ज़ा कामरान इन चिन्ताजनक समाचारो से घबरा उठा और उसने किले का अवरोध त्याग दिया। यासीन दौलत तथा बाबूस का एक सेना सहित मीर्ज़ा सुलेमान के विरुद्ध भेजा और स्वयं कोलाब की ओर रवाना हुआ। चाकर बेग एक किनारे हो गया। मीर्ज़ा अस्करी ने किले से निकलकर मीर्ज़ा कामरान से भेंट की। मीर्ज़ा लोग मिलकर मीर्ज़ा सुलेमान से युद्ध हेतु रवाना हुए। मीर्ज़ा सुलेमान एवं मीर्ज़ा हिन्दाल रुस्ताक़ के समीप पडाव किये हुए थे कि ऊज़बकों की एक बहुत बडी सेना, जो सईद बेग के नेतृत्व में लूट मार के लिये निकली थी, मीर्ज़ा कामरान के शिविर की ओर पहुँच गई और उसे बुरी तरह लूट लिया। मीर्ज़ा कामरान, मीर्ज़ा अस्करी एवं मीर्ज़ा अब्दुल्लाह मुग़ल कुछ लोगो के साथ तालीकान पहुँचे। सईद को जब वास्तविक स्थिति का पता चला तो उसने समस्त असबाब आदर-पूर्वक अपने विश्वासपात्रो के हाथ मीर्ज़ा के पास भेज दिया और जो सामान लूट लिया गया था और जिसका प्राप्त होना असम्भव था, उसके लिये क्षमा याचना कर ली और स्वयं उसकी सहायता

करना निश्चय कर लिया।

मीर्ज़ा सुलेमान तथा मीर्ज़ा हिन्दाल को जब इस स्थिति का पता चला तो वे मीर्ज़ा कामरान एवं मीर्ज़ा अस्करी से युद्ध करने के लिये रवाना हुए। मीर्ज़ा कामरान तालीकान में भी ठहर न सका अपितु वह बदख़्शाँ में रहना भी अपने लिये उचित न देखकर ख़ूस्त की ओर इस आशय से रवाना हो गया कि जुहाक एवं बामियान के मार्ग से हज़ारा लोगों के पास पहुँच जाय। वहाँ से काबुल के विषय में निश्चित समाचार ज्ञात करके काबुल पहुँचे अथवा किसी अन्य दिशा की ओर प्रस्थान करने के विषय में निश्चय करे। हज़रत जन्नत आशियानी के षड्यन्त्रकारी अमीर सर्वदा मीर्ज़ा कामरान को काबुल पर आक्रमण करने के लिये प्रेरित किया करते थे। मीर्ज़ा ने छल एवं धूर्तता की दृष्टि से सम्मानित दरबार में राजदूत भेजकर निवेदन कराया कि "मेरे आगमन का यह उद्देश्य है कि मैं अपने पिछले अपराधों की क्षमा याचना करूँ और सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त करूँ। आशा है कि आप मुझे अपने पिछले अपराधों के अपमान से मुक्ति दिलाकर मेरे धूल भरे चेहरे को क्षमा के जल से धो देंगे।" उस प्रार्थनापत्र में यह शेर लिखा

शेर

'मैं वापस आया हूँ ताकि उन चरणों की धूल का सिज्दा करूँ,
यदि कोई एबादत[1] क़ज़ा हो गई हो[2] तो अदा करूँ।'

हज़रत जन्नत आशियानी ने अपने स्वभाव की शुद्धता के कारण ताँबे को, जिसपर सोने का मुलम्मा था, खरे सोने के समान सच्चा समझकर स्वीकार कर लिया और उसे नाना प्रकार की कृपाओं द्वारा सम्मानित किया।

हज़रत जन्नत आशियानी का मीर्ज़ा कामरान से युद्ध एवं दुर्भाग्यवश जो घटनायें घटीं

जब मीर्ज़ा काबुल के समीप पहुँच गया तो हज़रत जन्नत आशियानी के निष्ठावान् परामर्शदाताओं ने निवेदन किया कि "किसी के प्रति सद्भावनाओं की कोई सीमा होनी चाहिये। कृतघ्न मीर्ज़ा कामरान की धूर्तता, छल, विश्वासघात एवं षड्यन्त्र की कई बार परीक्षा हो चुकी। राज्य के हित में अब यह उचित होगा कि सावधानी एवं सतर्कता को न त्यागकर यह आदेश दिया जाय कि भाग्यशाली सरापरदा बाहर लगाया जाय और विजयी पताकायें विश्वासघातियों एवं विद्रोहियों के विनाश हेतु बलन्द की जायें। यदि इस विचार को सामने रखकर जो बात वास्तव में आवश्यक है वह की जायेगी तो हम लोग राज्य के शत्रुओं के विश्वासघात से सुरक्षित रहेंगे। यदि वास्तव में मीर्ज़ा कामरान अपनी कुकृतियों पर लज्जा प्रदर्शित करते हुए एकता के मार्ग पर अग्रसर हो और सच्चाई एवं निष्ठा से सेवा में उपस्थित हो तो वह पादशाही कृपाओं का पात्र बने। यदि इस बार भी उसके विचार कुत्सित हों और वह विद्रोह एवं षड्यन्त्र पर तुला हो तो ऐसी अवस्था में हम सतर्कता

१ मुसलमानों के धर्म विधान के अनुसार यदि कोई अनिवार्य एबादत समय पर न हो सके तो उसे बाद में भी किया जा सकता है। ऐसी छूट जाने वाली एबादतें क़ज़ा एबादतें कहलाती हैं।

२ छूट गई हो, न की जा सकी हो।

एवं सन्मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।" क्योंकि यह परामर्श उचित था अत गूरबन्द की ओर, जो मीर्जा काम-(९८) रान के मार्ग पर था, विजयी पताकायें बलन्द हुई। हजरत जन्नत आशियानी को काबुल में ईश्वर की हिफ़ाजत में छोड दिया। मुहम्मद कासिम खा बरलास को उनकी सेवा हेतु नियुक्त किया। कराचा खा, मुसाहिब बेग एव कृतघ्न दुष्टों का एक समूह, जो सर्वदा विद्रोह एव फसाद किया करते थे तथा षड्यन्त्र पर तुले रहते थे, मीर्जा कामरान के आगमन से प्रसन्न हो गये और वे उसे काबुल पर आक्रमण करने के लिये प्रेरित करने लगे और उसे लिखा कि, "जब आप निकट आ जायेंगे तो हम लोग एक बहुत बडी सेना सहित आपकी सहायता हेतु उपस्थित होंगे और बादशाह के उन दासों को, जो उनके प्रति निष्ठावान् हैं, मिथ्यापूर्ण विचारों से पृथक् कर देंगे। इस बार सुगमतापूर्वक काबुल आपके अधिकार में आ जायेगा।" सक्षेप में जैसा भाग्य में लिखा था उसके अनुसार हजरत जन्नत आशियानी काबुल से रवाना हुए और उन्होंने करावाग़ में पडाव किया। वहाँ से चारीकारान और वहाँ से बारान नदी पर पडाव हुआ। उस पडाव पर एक नहर थी। हजरत जन्नत आशियानी सवार होकर पानी में कूद पडे। जो सेवक उनके साथ थे, उन्होंने यह देखकर नदी के ऊपर तथा नीचे जहाँ कहीं भी पार करने का स्थान पाया, वहाँ से नदी पार की। उन्हे उन लोगों का यह स्वार्थ पसन्द न आया। उन लोगों को फटकारने के उद्देश्य से उन्होंने शाह इस्माईल सफवी के फिदाइयों की निष्ठा का उल्लेख किया, जिन्होंने आकाश रूपी पर्वत से उसका रूमाल भूमि से उठाने के लिये अपने प्राण न्योछावर कर दिये थे। ईश्वर को धन्य है कि हजरत जन्नत आशियानी को अपने दासों के प्रति इतनी अधिक सद्भावना थी और वे कृतघ्न अपने स्वार्थ पर इतना अधिक ध्यान रखते थे। सक्षेप में, कराचा करावदस्त, मुसाहिब मुनाफ़िक़ एवं एक अन्य समूह ने, जो कि शरारत एव फ़साद की अग्नि भडकाये रहते थे, निवेदन किया कि, "पर्वत का मामला बीच में है। मार्गों की दृढता एव कठिनाई ज्ञात है। मीर्जा बहुत थोडे आदमियों के साथ आया है। प्राण न्योछावर करने वाले निष्ठावानों को विभिन्न मार्गों पर नियुक्त कर दिया जाय ताकि मीर्जा को वे निकलने न दें।" उन लोगों की योजना यह थी कि इस प्रकार वे पादशाह की सेना को छिन्न भिन्न कर दें ताकि मीर्जा कामरान पूरी शक्ति से युद्ध कर सके। हजरत जन्नत आशियानी ने उन लोगों के प्रति सद्भावना के कारण, जो उन्हे उन नमकहरामों के प्रति थी, इस परामर्श को उचित समझ कर हाजी मुहम्मद खा कोकी, मीर बरका, मीर्जा हुसन खा, बहादुर खा, ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद, चप्पी बेग, मुहम्मद खा बेग तुर्कमान, शेख बहलूल, हैदर कासिम कोहबर, एव शाह कुली नारजी को जुहाक एव बामियान की ओर भेज दिया। मुनइम खा, एव बहुत से अन्य लोगों का शाल उलग के मार्ग से नियुक्त किया। कराचा खा, मुसाहिब बेग, कासिम हुसैन सुल्तान एव कुछ अन्य लोग उनकी सम्मानित सेवा में रह गये। ये षड्यन्त्रप्रिय लोग पादशाह के विषय में दैनिक समाचार लिख कर मीर्जा कामरान को भेजा करते थे और हजरत जन्नत आशियानी से निवेदन किया करते थे कि, "इस बार मीर्जा निष्ठा एव स्वामीभक्ति के अतिरिक्त कोई अन्य विचार नहीं रखता।" मीर्जा कामरान अपने पतन के जगल मे मारा-मारा फिर रहा था। उसकी समझ में न आता था कि वह कहाँ जाय और क्या करे। इन अभागे लोगों की प्रेरणा से उसके साहस में वृद्धि हो गई। वह जुहाक एव बामियान के मार्ग से किपचाक दर्रे की ओर बढा। उसने यामीन दौलत, मुकद्दस कोका एव बाबा सईद को हिरावल नियुक्त किया और स्वय सेना के मध्य भाग को लेकर अग्रसर हुआ। उसी समय उस क्षेत्र की प्रजा में से एक ने सेवा में उपस्थित

होकर मीर्ज़ा कामरान के पहुँचने एव उसके कुत्सित विचारों के विषय में निवेदन किया। कराचा ने, जो कि षड्यन्त्रकारियों का सरदार था, निवेदन किया कि, "इस प्रकार के आदमियों की बात पर ध्यान देने तथा अफ़वाहों को सत्य समझने से राज्य के हितैषियों के हृदय चिन्ता में पड जाते हैं और उनकी शकाओं में वृद्धि हो जाती है। हमारे युद्ध तथा आक्रमण करने की तैयारी के समाचार पाकर मीर्ज़ा सेवा में उपस्थित होने की ओर से उपेक्षा करेगा। इन्ही बातो के बीच में मीर्ज़ा के आगमन तथा उसके विश्वासघात के समाचार निरन्तर प्राप्त होने लगे तथा उसकी हार्दिक शत्रुता का ज्ञान प्राप्त हो गया। उनका सम्मानित आदेश हुआ कि जो लोग साथ है वे सवार हो जायें। उन्होंने स्वय अपने साहस के पाँव ईश्वर के आश्रय की रिकाब में रखे और अल्प समय में युद्ध एव सघर्ष की तैयारी हो गई। पीर मुहम्मद आख्ता, जो कि दरबार के फ़िदाइयों में से था, मुहम्मद ख़ाँ जलायर एव प्राण न्योछावर करने वाले पक्का लोगों का एक अन्य समूह आगे रवाना हुआ। पीर मुहम्मद आख्ता ने राज्य के शत्रुओं की बहुत बडी सख्या का सहार करके निष्ठा के मार्ग में प्राण त्याग दिये। मीर्ज़ा कुली ने भी सिंहों की भाँति युद्ध करके उन अभागों को छिन्न भिन्न कर दिया। मार-काट में वह घायल होकर घोड़े से पृथक् हो गया। उसका पुत्र दोस्त मुहम्मद उसे शत्रुओं के चगुल में न देख सका और उसकी सहायता हेतु तेज़ी से दौडा। अभी उसके पिता की कुछ साँसें शेष ही थी कि उसने अपने पिता के शत्रु का अन्त कर दिया। उसने इतना अधिक प्रयत्न एव (९९) *सघर्ष किया कि स्वय गिर गया। हज़रत जन्नत आशियानी एक ऊँचाई पर खडे हुए ईश्वर* के कारखाने की लीला देख रहे थे, यहाँ तक कि उन्होंने देखा कि नमकहराम लोगों के दल के दल शत्रुओं की ओर भगे जा रहे है। पादशाही कोप की अग्नि भडक उठी। उन्होंने स्वय शत्रु पर आक्रमण कर दिया और सेना को फाडते हुए बीच में प्रविष्ट हो गये। इसी बीच में उनके घोड के बाण लगा। बाबा बेग कोलाबी ने जान बूझ कर अथवा बिना जाने हुए हज़रत जन्नत आशियानी के पीछे स पहुँचकर उनपर तलवार का वार किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने क्रोध एव कोप की दृष्टि उसके ऊपर डाली। उनकी उस दृष्टि से उसका हाथ बहक गया। तत्काल मेहतर सकाई ने, जो फरहत ख़ाँ के नाम से प्रसिद्ध है, उस अभागे को भगा दिया। मीर्ज़ा नजात एक अबलक घोडे पर सवार था। उसने उतर कर अपना घोडा उन्हे प्रस्तुत कर दिया। हज़रत जन्नत आशियानी उस भाग्यशाली घोडे पर सवार हुए। अपनी सवारी का घोडा मीर्ज़ा नजात को प्रदान कर दिया। *उसी समय अब्दुल वह्हाब, जो विश्वासपात्र यसावल था, पहुँच गया और उसने अमीरों के प्रस्थान* और मीर्ज़ा कामरान से मिल जाने के विषय में निवेदन किया और उनके घोडे की लगाम पकड कर कहा कि, "यह आक्रमण का कौन सा समय है। शत्रुओं की कुकृतियों का बदला ईश्वर के सुपुर्द करें और अन्य उपाय की ओर ध्यान दे।"

सक्षेप में, हज़रत जन्नत आशियानी ज़ुहाक एव बामियान की ओर, जिधर उन्होंने अपने निष्ठावान् आदमियों की एक बहुत बडी सख्या भेजी थी, रवाना हुए। अब्दुल वह्हाब, फरहत ख़ाँ, मुहम्मद अमीन, सन्दल ख़ाँ एव कुछ अन्य लोगों ने विजयी रिकाब के साथ प्रस्थान करने का सौभाग्य प्राप्त किया। मुहम्मद अमीन, अब्दुल वह्हाब एव फरहत ख़ाँ को आदेश हुआ कि वे सेना के पीछे पीछे आयें। अत्यधिक सघर्ष के कारण एव घाव के लग जाने की कमज़ोरी की वजह से उन्होंने अपना जीबा[1] उतारकर सन्दल ख़ाँ को दे दिया। उसने घबडाहट में जीबा वही फेंक दिया। दूसरे

१ युद्ध में अन्य कपड़ों के ऊपर पहनने वाला लम्बा कोट जिसपर तलवार के वार का कोई प्रभाव नहीं होता।

दिन अमीरों की बहुत बड़ी संख्या उनकी सेवा में उपस्थित हुई। उन्होंने शाह बुदाग़ खाँ, तूलक कूरची एवं मजनूँ क़ाक़शाल को, जो कुल मिलाकर दस व्यक्ति थे, शत्रुओं का समाचार लाने के लिये काबुल भेज दिया। तूलक कूरची के अतिरिक्त कोई भी वापस न हुआ। वह उस दिन पादशाही कृपा का पात्र हुआ और उसे क़ूरबेगी[1] का पद प्रदान किया गया। जब यह घटना घट गई तो उन्होंने अपने विश्वासपात्रों से एक समूह को बुलाकर विचार विनिमय किया। हाजी मुहम्मद खाँ ने, जिसकी जागीर ग़ज़नी में थी और जो अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक विश्वासघात कर रहा था, निवेदन किया कि कन्धार चला जाना उचित होगा। उसकी बात स्वीकार न हुई। कुछ निष्ठावान् एवं सच्ची राय देने वालों ने, जिन्होंने अपने हृदय छिन्न भिन्न न किये थे, बदख़्शाँ की ओर प्रस्थान करने की राय दी ताकि मीर्ज़ा सुलेमान, मीर्ज़ा इब्राहीम तथा मीर्ज़ा हिन्दाल को लेकर पुनः सेना की व्यवस्था की जा सके और मीर्ज़ा कामरान से बदला लिया जा सके। उन्होंने इस व्यवस्था के उपरान्त काबुल जाने की सलाह दी। कुछ वीरों एवं प्राण न्योछावर करने वाले योद्धाओं ने अपनी वीरता एवं अपने पौरुष के कारण निवेदन किया कि "आज मीर्ज़ा कामरान अभिमान एवं असावधानी के नशे में मस्त है। हम सब लोग मिलकर एक दिल तथा संगठित होकर विजयी रिकाब के साथ काबुल की ओर रवाना हों। आशा है राज्य के सहायकों की इच्छानुसार सफलता प्राप्त हो जाय और बदख़्शाँ जाने की आवश्यकता न पड़े तथा मीर्ज़ा कामरान एवं समस्त विश्वासघातियों का अन्त किया जा सके।" क्योंकि अमीरों के विश्वासघात एवं उनकी धोखेबाजी हाल ही में प्रकट हो चुकी थी अतः उन्होंने इस राय पर विश्वास न किया और सावधानी एवं सतर्कता की दृष्टि से साल ऊलंग[2] के मार्ग से बदख़्शाँ की ओर प्रस्थान किया। हाजी मुहम्मद खाँ ने अपने भाई शाह मुहम्मद को ऐसे कठिन समय पर अनुमति लेकर ग़ज़नी भेज दिया। हज़रत जन्नत आशियानी ने स्वयं अपने हाथ से अपनी कुशलता के समाचार ख़्वाक़ानी को लिखकर उसे दे दिये और कहा कि जिस प्रकार सम्भव हो उसे उनकी सेवा में पहुँचा दे और निष्ठावानों के हृदय को सम्मानित लश्कर के निकट पहुँचने के समाचार पहुँचा कर संतुष्ट करे और उन्हें यह सूचना दे कि शीघ्र ही दुष्टों की युक्तियों का दंड उनके भाग्य की गोद में डाल दिया जायेगा। उन्होंने उसे आदेश दिया कि वह शीघ्रातिशीघ्र ग़ज़नी चला जाय और उनके लौटने के समय तक ग़ज़नी की सुरक्षा का पूर्ण रूप से प्रयत्न करता रहे। यद्यपि सच्चे निष्ठावान् विश्वासपात्रों ने निवेदन किया कि ऐसे अवसर पर विश्वासघातियों को सेवा से पृथक् करना सावधानी की दृष्टि से उचित नहीं और हाजी मुहम्मद अपने भाई को केवल इसी उद्देश्य से भेज रहा है कि वह मीर्ज़ा कामरान के पास चला जाय और वह स्वयं घर का भेदी बनकर विश्वासघात एवं शत्रुता से जो कुछ कर सकता हो करे, हज़रत जन्नत आशियानी ने इस बात की ओर कोई ध्यान न दिया और शाह मुहम्मद को विदा कर दिया। दूसरे दिन उन्होंने कहमर्द की ओर प्रस्थान किया। अधिकांश तुच्छ लोग उनकी सेवा से पृथक् हो कर काबुल की ओर चल (१००) दिये किन्तु निष्ठावानों का एक समूह, जो अपनी मर्यादा की रक्षा को सभी बातों से सर्वोपरि समझता था, उनके पास ठहर गया और सेवा हेतु निष्ठापूर्वक कटिबद्ध हो गया तथा उनसे पृथक् न हुआ। तीन दिन उपरान्त तोल्कची एवं साल्काची ईमाक के, जो उस मार्ग में निवास

१ शस्त्रागार की देख रेख करने वाला।

२ अकबर नामा में 'यकका ऊलंग' (अकबर नामा भाग १, पृ० २१२, मुग़ल कालीन भारत—हुमायूँ भाग १ पृ० २६७)।

करते थे, सरदार लोग सेवा में उपस्थित हुए। अपने सामर्थ्य के अनुसार उन्होंने घोड़े तथा भेड़े भेंट की। ऐसे कठिन अवसर पर हज़रत जन्नत आशियानी को उनकी सेवा बड़ी पसन्द आई। रात्रि में उन्होंने उन लोगों की बस्तियों के समीप पड़ाव किया। दूसरे दिन प्रातःकाल वहाँ से प्रस्थान किया। मार्ग में उन्हें समाचार प्राप्त हुए कि एराक की ओर से मीर सैयिद अली सब्ज़वारी के अधीन एक बहुत बड़ा कारवान आया है। व्यापारियों के पास घोड़े एवं असबाब बहुत बड़ी संख्या में हैं और वे हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करने वाले हैं। दिन के अंतिम पहर में कारवान के प्रतिष्ठित लोगों ने भाग्यशाली रिकाब के चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया। व्यापारियों ने दरबार के सेवकों की सहायता को अपना बहुत बड़ा सौभाग्य समझकर समस्त घोड़े एवं असबाब भेंट कर दिये। हज़रत जन्नत आशियानी ने परोक्ष से जो सहायता प्राप्त हुई थी, उसे दैवी मदद समझ कर जितने घोड़े तथा असबाब ख़ासे की सरकार के लिये आवश्यक थे वे सब उनकी इच्छानुसार मूल्य निश्चित करके तय कर लिये। तदुपरान्त उन्होंने मौजोंओं का हिस्सा लगाकर घोड़े तथा असबाब पृथक् कर दिये। शेष सम्मानित रिकाब के साथ वालों एवं दरबार के सेवकों को बाँट दिये। जो कुछ बच रहा उन्हीं लोगों को दे दिया कि वे अपनी इच्छानुसार जहाँ चाहें ले जाकर बेच दें। दूसरे दिन उनके शिविर कहमर्द में पहुँचे। वहाँ मीर ख़ुर्द का पुत्र ताहिर मुहम्मद था। वह उनके आगमन को बहुत बड़ा सौभाग्य समझ कर उनकी सेवा में उपस्थित हुआ किन्तु अपनी कृपणता के कारण अथवा सामान न होने की वजह से उसने आतिथ्य सत्कार की आवश्यकताओं की पूर्ति में कमी की और अपनी सेवा के ललाट से पश्चाताप का पसीना न साफ कर सका। वहाँ से एक रात्रि उपरान्त वे बगी[१] नामक नदी के तट पर उतरे। नदी के उस पार से एक व्यक्ति ने चिल्लाकर पूँछा कि, "हे कारवाँ वालो तुम लोगों को बादशाह के भी कोई समाचार ज्ञात हैं?" जब उनके सम्मानित कानों तक यह आवाज पहुँची तो उन्होंने आदेश दिया कि, "हमारे समाचार कोई न बताये।" उन्होंने उससे पूँछा कि, "तू कौन है और तुझे किसने भेजा है और तुम लोगों में बादशाह के विषय में क्या समाचार प्रसिद्ध है?" उसने निवेदन किया कि "मुझे साल ऊलग के नजरी ने बादशाह के ठीक-ठीक समाचार लाने के लिये भेजा है। हम लोगों में यह प्रसिद्ध है कि बादशाह घायल होकर रणक्षेत्र से निकल गये और किसी को उनका पता नहीं। मीर्ज़ा कामरान के आदमियों को बादशाह का विशेष जीवा, जिसे वे उस दिन पहिने हुए थे, प्राप्त हो गया। वे उसे मीर्ज़ा के पास ले गये। मीर्ज़ा इस घटना से बड़ा प्रसन्न हुआ।" हज़रत जन्नत आशियानी ने उसे बुला कर पूछा कि, "तू पहिचानता है कि मैं कौन हूँ?" उसने निवेदन किया कि, "दैवी प्रकाश छिपा नहीं रहता।" उन्होंने कहा कि "जाकर नजरी को सुखद समाचार पहुँचा दे और कह दे कि वह तैयार रहे। हमारी वापसी के समय वह उपस्थित होकर उचित सेवायें सम्पन्न करे।" दूसरे दिन उन्होंने घाट से नदी पार की और औलिया खिनजान[२] नामक स्थान पर पड़ाव किया। इस पड़ाव पर मीर्ज़ा हिन्दाल ने सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त किया और पेशकश तथा उपहार प्रस्तुत किये। वहाँ से वे अन्दराब तशरीफ ले गये। मीर्ज़ा सुलेमान तथा मीर्ज़ा इबराहीम ने इस पड़ाव पर ज़मीन बोस करने का सम्मान प्राप्त किया।

१　कुछ पोथियों में 'बगी'।
२　मूल्य में यह नाम स्पष्ट नहीं।



गजनी तथा उस क्षेत्र के स्थान कराचा खा को दे दिये। गूरबन्द एव उसके अधीनस्थ स्थान यासी दौलत के सुपुर्द कर दिये। इसी प्रकार अपने समस्त आदमियों को जागीर एव उलूफा बाँट दिये जिन लोगो के विषय में उसे यह शका थी कि वे हज़रत जन्नत आशियानी के प्रति निष्ठावान् हैं, उन बन्दी बना लिया और नाना प्रकार से कष्ट देने लगा। ख्वाजा सुल्तान अली दीवान को बन्दी बना लिया एव अत्याचार के हाथ बढा दिये। अत्यधिक अत्याचार द्वारा जो कुछ नकद एव सामान उन लोगों के पास था, उनसे छीन लिया। अपने कार्यों की देख भाल कराचा खा एव ख्वाजा कासिम व्यूतात के सुपुर्द कर दी। तीन मास तक वह इस प्रकार समय व्यतीत करता रहा। उसने प्रत्येक व्यक्ति से जिस प्रकार भी सम्भव हो सका, धन वसूल किया और अत्याचार एव जुल्म द्वारा धन एव सामान एकत्र कर लिया। यहाँ तक कि सम्मानित लश्कर के पहुँचने के समाचार ने दुष्टो के हृदय की सुख शान्ति का अन्त कर दिया। मीर्ज़ा सेना एकत्र करने एव लश्कर की व्यवस्था में व्यस्त हो गया। वेतन वाले एव ज़मीदार तथा सैनिक इत्यादि[१] बहुत बड़ी सख्या में एकत्र कर लिये और यथा-सम्भव तैयारी करके रवाना हुआ। बाबा चूचक एव मुल्ला शफाई को काबुल मे छोड दिया हज़रत शहशाह को, जिनके ललाट से सौभाग्य एव जहाँगीरी का प्रकाश प्रकट था, अपने साथ ले लिया।

विजयी लश्कर की बदख्शा से वापसी, मीर्ज़ा कामरान से सफलतापूर्वक युद्ध एवं काबुल पहुँचना

जब सम्मानित लश्कर अन्दराब के क्षेत्र में पहुँचा तो मीर्ज़ा लोग अपने उत्कृष्ट सौभाग्य के पथ-प्रदर्शन के कारण उनकी सेवा में उपस्थित हुए और उन्होंने सेना एकत्र करना एव तैयारी प्रारम्भ कर दी। अल्प समय में एक उत्तम सेना उनकी उत्कृष्ट पताका के नीचे एकत्र हो गई। वे हिन्दूकोह के दर्रे से रवाना हो गये। क्योंकि विश्वासघातियों एव षड्यन्त्रकारियों का समूह उनके साथ था अत उन्होंने लोगों के सतोष एव सावधानी तथा सतर्कता की दृष्टि से इस बात को उचित समझा कि लोग निष्ठा एव सगठन के विषय में शपथ ले। इसी बीच में मूर्ख हाजी मुहम्मद कोका ने, जिसमें न तो किसी के आदर सम्मान को समझने की बुद्धि थी और न जिसके पास निष्ठावान् हृदय था, निवेदन किया कि, "जैसा आप कह रहे हैं सब लोग शपथ ले किन्तु मेरी यह प्रार्थना है कि आप भी इस बात की शपथ ले कि आपके निष्ठावान्, राज्य के हित में जो भी बात कहें, उन्हे आप स्वीकार करके उनपर आचरण करेंगे।" मीर्ज़ा हिन्दाल, जो निष्ठा की पूँजी से सुशोभित था एव तौरे के नियमो से अवगत था, ने निवेदन किया कि "दासों का स्वामी से इस प्रकार की बातचीत करने का यह कौन सा तरीका है। सेवक स्वामी से इस प्रकार कभी कोई बात नही करते। तुम बडी धृष्टता कर रहे हो।" हज़रत जन्नत आशियानी ने अत्यधिक (१०२) उदारता एव सौजन्य के कारण समय की आवश्यकताओं पर दृष्टि रखते हुए कहा कि, "ऐसा ही किया जाय। जिस बात से हाजी मुहम्मद सतुष्ट हो हम वही करेंगे। जब कोई दास निष्ठापूर्वक

१ 'सिपाहिये मवाजिब ख्वार व जमीनदार वगैरा कस बिस्यार फराहिम आवर्द'।

कोई बात कहेगा तो हम उसे स्वीकार करेंगे।" शपथ के उपरान्त उन्होंने उस पडाव से प्रस्थान किया और उस्तुरगराम के समीप ठहरे। मीर्ज़ा कामरान एक सेना तैयार करके हजरत जन्नत आशियानी का मुकाबला करने के लिये अग्रसर हुआ। हज़रत जन्नत आशियानी ने अपनी स्वाभाविक कृपा एवं बादशाहाना अनुकम्पा के कारण मीर बरका के एक सम्बन्धी मीर्ज़ा शाह हुसेन को, जो तिरमिज़ के प्रतिष्ठित सैयिदों में था, मीर्ज़ा कामरान के पास भेजकर उत्तम उपदेशों एवं शिक्षाओं द्वारा उसका पथ-प्रदर्शन कराया। उनके संदेश का सारांश इस प्रकार है "सर्वदा विरोध करते रहना एवं संगठन के सन्मार्ग का त्याग देना बुद्धि के अनुकूल नहीं। बडे खेद का विषय है कि काबुल के लिये इस प्रकार संघर्ष होता रहे। प्राचीन तथा नवीन कृपाओं पर ध्यान रखते हुए वह संधि के मार्ग पर अग्रसर हो और शत्रुता न प्रदर्शित करे। हम लोग हिन्दुस्तान की विजय हेतु संगठित होकर प्रस्थान करें।" मीर ने राजदूत के कर्तव्यों को भली-भांति सम्पन्न किया। मीर्ज़ा ने यह शर्त रक्खी कि "जिस प्रकार कन्धार हज़रत जन्नत आशियानी के अधीन है काबुल मेरे अधीन रहे। जब यह निश्चय हो जायगा तो मैं उनके साथ हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के लिये प्रस्थान करूँगा।" क्योंकि हज़रत जन्नत आशियानी सर्वसाधारण की समृद्धि एवं संसार की सुख शान्ति हृदय से चाहते थे अतः उन्होंने उत्तर में कहला भेजा कि, "यदि तू हृदय से निष्ठा प्रदर्शित करने के लिये तैयार और अपनी कृतघ्नता पर लज्जित है तथा इस संकल्प पर दृढ़ है तो अपनी प्रिय पुत्री का विवाह ख़िलाफ़त के अनमोल मोती अर्थात् हज़रत ख़ाकानी से कर दे ताकि काबुल उन्हें सुपुर्द कर दिया जाय और हम और तुम संगठित एवं एक दिल होकर हिन्दुस्तान की विजय हेतु प्रस्थान करें। इस प्रकार काबुल हमारे तथा तुम्हारे दोनों ही के अधीन रहेगा और हिन्दुस्तान का विशाल भूभाग भी अधिकार में आ जायेगा।" मौलाना अब्दुल बाकी सद्र को इस सेवा हेतु विदा कर दिया ताकि वह मीर्ज़ा के पास जाकर संदेश पहुँचाये। कराचा करावल्त ने, जिसे मीर्ज़ा के समस्त कार्यों में पूर्ण अधिकार प्राप्त था और जिसके सभी कार्य उसकी मूर्खतापूर्ण रायों पर सम्पन्न होते थे, यह बात स्वीकार न की और कहा कि, "हमारा सिर तथा काबुल"। संयोग से जिस दिन युद्ध हुआ शुक्र यल्दुज़ मीर्ज़ा के सामने था।[1] बुद्धिमान् ज्योतिषियों का विश्वास है कि ऐसे दिन युद्ध करना बड़ा ही अशुभ होता है। इस कारण मीर्ज़ा दूसरे दिन के लिये युद्ध को टालना चाहता था। राज्य के सहायकों की इच्छा थी कि युद्ध किया जाय किन्तु हाजी मुहम्मद खां ने निवेदन किया कि उस दिन युद्ध न हो। हज़रत जन्नत आशियानी उसे सांत्वना दिया करते थे। इसी बीच में ख्वाजा अब्दुस्समद एवं कुछ अन्य लोग, जो किपचाक के युद्ध में मीर्ज़ा कामरान द्वारा बन्दी बना लिये गये थे, अवसर पाकर हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में पहुँच गये और उन्होंने शत्रुओं की सेना की अव्यवस्था एवं उसके असमंजस के विषय में निवेदन किया। मध्याह्नोपरान्त उन्होंने अपने साहस के पांव तवक्कुल की रिकाब में रखे और पंक्तियों की सुव्यवस्था में व्यस्त हो गये। मध्य भाग को अपने सम्मानित व्यक्तित्व द्वारा शोभा दी। दायें भाग में मीर्ज़ा सुलेमान को और बायें भाग में मीर्ज़ा हिन्दाल को नियुक्त किया। सेना का अग्र भाग मीर्ज़ा इब्राहीम की वीरता एवं पौरुष द्वारा सुशोभित हुआ। पीछे के भाग में हाजी मुहम्मद एवं अन्य युद्धप्रिय वीर नियुक्त हुए। उस ओर से मध्य भाग में मीर्ज़ा कामरान, दायें भाग में मीर्ज़ा अस्करी, बायें भाग में आक सुल्तान तथा अग्र भाग में कराचा खां थे। दोनों तरफ की सेनायें दो अग्नि के समुद्रों के समान आपस में भिड़ गईं। मेहतर सियाह[2] एवं

१ नक्षत्र।

२ अकबर नामा में 'सदबाका', [मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १, पृ० २७४]।

बादशाही दासो का एक समूह जो आवश्यकतावश (मीर्ज़ा के) साथ हो गये थे, इस समय घोडा भगाते हुए सेवा में उपस्थित हुए। मूरी[१] नदी के समीप दोनों सेनाओं की मुठभेड हुई। सर्वप्रथम मीर्ज़ा इबराहीम ने वीरतापूर्वक पौरुष प्रदर्शित किया। दोनों ओर के वीरो एव योद्धाओं ने भिड कर पौरुष दिखाया। उसी समय क़राचा करावल्स का कटा हुआ सिर मसार का चक्कर लगाने वाले घोडे के समक्ष प्रस्तुत किया गया। ईश्वर के दास उसकी दुष्टता की ओर से सन्तुष्ट हो गये। उन्होंने आदेश दिया कि, "इस नमकहराम का सिर काबुल के आहिनी दरवाजे पर लटका दिया जाय।" ईश्वर को धन्य है कि उसने अपने मुख से जो बुरी भविष्यवाणी की थी कि 'उसका सिर है या काबुल' वह तत्काल पूरी हो गई। मीर्ज़ा कामरान मुक़ाबला न कर सका और भाग खडा हुआ। वह बाद पज[२] दर्रे के मार्ग से अफ़ग़ानिस्तान की ओर भाग खडा हुआ। विजयी सेना ने लूट मार प्रारम्भ कर दी। (१०३) अत्यधिक धन सम्पत्ति नष्ट कर दी। शत्रुओ की बहुत बडी सेना बन्दी बना ली गई और अपनी कुकृतियो के पजे में फँस गई। कुछ लोगो ने निष्ठा का मुख फ़िरिश्तो के निवास स्थान वाली चौखट पर रखा और हज़रत जन्नत आशियानी को अनुकम्पा को अपने अपराधो का सिफ़ारिशी बनाया। उन्हे राज्य के सहायको में सम्मिलित कर लिया गया। मीर्ज़ा अस्करी रणक्षेत्र के वीरो द्वारा बन्दी बना लिया गया। ख्वाजा क़ासिम ब्यूतात, जो कि षड्यन्त्रकारियो का सरदार था, नरक में पहुँच गया। इतनी बडी विजय, जिसे महान् विजयो की प्रस्तावना कहा जा सकता है, सौभाग्य से प्राप्त हो गई। किन्तु उनका पूज्य हृदय पादशाही के मुकुट के उस मोती, प्रताप की राशि के उस नक्षत्र अर्थात् हज़रत ख़ाक़ानी की ओर से उस समय तक चिन्तित रहा जब तक कि प्रताप की वाटिका के उस पौधे को उनके समक्ष न प्रस्तुत कर दिया गया। तदुपरान्त उन्होने अत्यधिक प्रसन्न होकर ईश्वर के प्रति प्रताप की वाटिका के उस पौधे की कुशलता पर कृतज्ञता के सिज्दे किये और उन्हे अपनी सम्मानित गोद में लिया तथा दान पुण्य द्वारा फ़क़ीरो एव दरिद्रो को दरिद्रता से मुक्त कर दिया। इस तारीख मे उन्होने इस बात का सकल्प कर लिया कि अब वे किसी भी अभियान एव आक्रमण के समय हज़रत ख़ाक़ानी को अपने आप से पृथक् न करेंगे। प्राणो की बलि देने वाले दासो के, जिन्होने इस अभियान में परिश्रम किया था, सम्मान में वृद्धि कर दी और उन्हे पादशाही कृपाओ द्वारा सम्मानित किया। एक बडी विचित्र बात यह है कि रण क्षेत्र में दो ऊँट सदूक से लदे हुए उन्हे दृष्टिगत हुए जिन्हे कोई हँकाने वाला न था। उन्होंने ऊँटो की नकेल को अपने शुभ हाथो से पकड कर कहा कि, "इनमें जो कुछ होगा वह मैं लूँगा।" जब ऊँटो को बिठला कर सदूक उतारे गए और उन्हे खोला गया तो उनमे समस्त बादशाही ग्रथ, जिन्हे क़िबचाक के युद्ध मे मीर्ज़ा ने अपने अधिकार में कर लिया था, प्राप्त हो गए। इससे उनका सम्मानित हृदय और प्रसन्न हो गया। उस दिन उन्होने चारीकारान उद्यान मे पडाव किया एव आनन्द मगल की सभा आयोजित की। दूसरे दिन शुभ मुहूर्त में वहाँ से प्रस्थान करके काबुल मे प्रविष्ट हुए। बेदार बेग[३], हैदर दोस्त मुग़ुल ग़ाज़ी एव मस्त अली कूरची, जिन्होने कई बार नमकहरामी

१ मूल में यह नाम स्पष्ट नहीं।
२ मूल में यह नाम भी स्पष्ट नहीं।
३ अकबर नामा में 'दीनदार बेग'। मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १ में 'दीदार बेग' छप गया है जो अशुद्ध है [पृ० २७६]।

प्रदर्शित की थी, की हत्या करा दी गई। मीर्ज़ा सुलेमान के प्रति बादशाही कृपा प्रदर्शित करके उसे बदख्शाँ की ओर विदा कर दिया गया। उन्होंने मीर्ज़ा इबराहीम के प्रति और अधिक कृपा एव अनुकम्पा प्रदर्शित करने के लिये उसे कुछ देने के लिये रोक लिया और अपनी पुत्री बख्शी बानो बेगम से उसकी मँगनी करके विदा कर दिया और यह निश्चय हुआ कि विवाह का प्रबन्ध होने के उपरान्त शुभ मुहूर्त में विवाह सम्पन्न होगा। उनका ससार को विजय करने वाला साहस राज्य-व्यवस्था एव शासन प्रबन्ध में व्यस्त हो गया। दरबार के समस्त दासो एव विश्वासपात्रो के मसब में वृद्धि करके उनको विश्वासपात्र बना लिया गया। लोहूगुर के तूमान के अधीनस्थ चरख नामक स्थान हज़रत खाकानी के व्यय हेतु निश्चित किया गया। वकालते दरेखाना[1] का पद हाजी मुहम्मद खा को प्रदान हुआ किन्तु वह अपने नीच स्वभाव एव वीरता के अभिमान के कारण सर्वदा कुत्सित बाते सोचा करता था तथा असम्भव कल्पनाओ में ग्रस्त रहता था। हज़रत जन्नत आशियानी अपने उत्कृष्ट स्वभाव एव उदारता के कारण, जो कि सम्मानित सुल्तानो को विशेष रूप से प्राप्त है, उसकी दुष्टताओं एव उसकी अनुचित कल्पनाओ की ओर से पूरी तरह से उपेक्षा करके नाना प्रकार की कृपाओ एव अनुकम्पाओ द्वारा उसके परेशान हृदय को अपनी मुट्ठी में लिये रहते थे। मीर्ज़ा कामरान पराजित होकर बडी बुरी दशा में आठ व्यक्तियो सहित उश्तुरगराम से भाग खडा हुआ। ८ व्यक्तियो के नाम यह है। खिज्र ख्वाजा खा का भाई आक सुल्तान, बाबा सईद किबचाक, तिमुर ताश अतगा, कुतलुक कदम, अली मुहम्मद, जोगी खान, अब्दाल, एव मकसूद कूरची। देहसब्ज की ओर से बडी ही अव्यवस्थित दशा में अफगानो के पास पहुँचा। मीर्ज़ा हिन्दाल हाजी मुहम्मद खा, ख्वाजा खिज्र खा एव अन्य लोग, जो उसका पीछा करने के लिये रवाना हुए थे, उसे बन्दी बनाने का उचित प्रयत्न किये बिना लौट आये। अफगान लोगों ने मीर्ज़ा का मार्ग रोक कर उन्हे लूट लिया। मीर्ज़ा इस भय से कि कही कोई उसे पहिचान न ले अपनी दाढी, मूँछ, सिर एव भौए इत्यादि मुडवाकर कलन्दर के वेश में मदावर के मलिक मुहम्मद के पास, जो कि लमगाना का एक प्रतिष्ठित आदमी था, भाग गया। उसने (मीर्ज़ा की) पिछली अनुकम्पाओं पर ध्यान देते हुए उसके प्रति सेवा एव आतिथ्य किया। बहुत से षड्यन्त्रकारी सैनिक मीर्ज़ा के पास एकत्र हो गये। यह समाचार सम्मानित शिविर में पहुँचे। विश्वासघातियो एव फसादियो ने पुन हाथ पैर मारने प्रारम्भ कर दिये। ऐसे अवसर पर हाजी मुहम्मद खा अनुमति लिये बिना गज़नी चला (१०४) गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने उसकी इस दुष्टता की ओर कोई ध्यान न दिया और मीर्ज़ा के विद्रोह को शान्त करने के लिये अपने निष्ठावानो के समूह को, जिसमे बहादुर खा, मुहम्मद कुली बरलास, क़ोदूक सुल्तान इत्यादि थे, भेजा। जब विजयी सेना निकट पहुँची तो मीर्ज़ा अलीगार एव अलीशग दर्रों की ओर भाग गया। अमीर लोग उसके पीछे लपके। मीर्ज़ा इस क्षेत्र का छोडकर खलील एव महमन्द अफगानो के पास शरण हेतु चला गया। थोडे से अभागे लोग, जो उसके चारो ओर एकत्र हो गये थे, छिन्न भिन्न हो गये। सम्मानित लश्कर विजय एव सफलता प्राप्त करके गरवे शहीद नामक स्थान से लौट गया। अभागा मीर्ज़ा पतन के जगल में मारा-मारा फिरने लगा। जब हज़रत जन्नत आशियानी के पूज्य हृदय को मीर्ज़ा के विद्रोह एव षड्यन्त्र से थोडी बहुत शान्ति मिली तो उन्होंने ख्वाजा जलालुद्दीन मुहम्मद एव बीबी फ़ातेमा को इस आशय से बदख्शाँ भेजा कि

१ बादशाह सम्बन्धी व्यक्तिगत सेवाओं के विषय में मुख्य अधिकार।

बादशाही दासो का एक समूह जो आवश्यकतावश (मीर्ज़ा के) साथ हो गये थे, इस समय घोडा भगाते हुए सेवा में उपस्थित हुए। मूरो[1] नदी के समीप दोनों सेनाओं की मुठभेड हुई। सर्वप्रथम मीर्ज़ा इबराहीम ने वीरतापूर्वक पौरुष प्रदर्शित किया। दोनों ओर के वीरो एव योद्धाओं ने भिड कर पौरुष दिखाया। उसी समय क राचा करावस्त का कटा हुआ सिर मसार का चक्कर लगाने वाले घोडे के समक्ष प्रस्तुत किया गया। ईश्वर के दास उसकी दुष्टता की ओर से सतुष्ट हो गये। उन्होने आदेश दिया कि, "इस नमकहराम का सिर काबुल के आहिनी दरवाज़े पर लटका दिया जाय।" ईश्वर को धन्य है कि उसने अपने मुख मे जो बुरी भविष्यवाणी की थी कि 'उसका सिर है या काबुल' वह तत्काल पूरी हो गई। मीर्ज़ा कामरान मुकाबला न कर सका और भाग खडा हुआ। वह बाद पज[2] दर्रे के मार्ग से अफगानिस्तान की आर भाग खडा हुआ। विजयी सेना ने लूट मार प्रारम्भ कर दी। (१०३) अत्यधिक धन सम्पत्ति नष्ट कर दी। शत्रुओं की बहुत बडी सेना वन्दी बना ली गई और अपनी कुकृतियों के पजे में फँस गई। कुछ लागो ने निष्ठा का मुख फिरिश्तों के निवास स्थान वाली चौखट पर रखा और हज़रत जन्नत आशियानी की अनुकम्पा को अपने अपराधों का सिफारिशी बनाया। उन्हे राज्य के सहायकों में सम्मिलित कर लिया गया। मीर्ज़ा अस्करी रणक्षेत्र के वीरो द्वारा वन्दी बना लिया गया। ख्वाजा कासिम व्यूतात, जो कि षड्यन्त्रकारियों का सरदार था, नरक में पहुँच गया। इतनी बडी विजय, जिसे महान् विजयों की प्रस्तावना कहा जा सकता है सौभाग्य से प्राप्त हो गई। किन्तु उनका पूज्य हृदय पादशाही के मुकुट के उस मोती, प्रताप की राशि के उस नक्षत्र अर्थात् हजरत खाकानी की ओर से उस समय तक चिन्तित रहा जब तक कि प्रताप की वाटिका के उस पौधे को उनके समक्ष न प्रस्तुत कर दिया गया। तदुपरान्त उन्होने अत्यधिक प्रसन्न होकर ईश्वर के प्रति प्रताप की वाटिका के उस पौधे की कुशलता पर कृतज्ञता के सिज्दे किये और उन्हे अपनी सम्मानित गोद मे लिया तथा दान पुण्य द्वारा फकीरों एव दरिद्रो को दरिद्रता से मुक्त कर दिया। इस तारीख से उन्होने इस बात का सकल्प कर लिया कि अब वे किसी भी अभियान एव आक्रमण के समय हजरत खाकानी को अपने आप से पृथक् न करेंगे। प्राणों की बलि देने वाले दासों के, जिन्होंने इस अभियान मे परिश्रम किया था, सम्मान मे वृद्धि कर दी और उन्हे पादशाही कृपाओं द्वारा सम्मानित किया। एक बडी विचित्र बात यह है कि रण क्षेत्र म दो ऊँट सदूक से लदे हुए उन्हे दृष्टिगत हुए जिन्हे कोई हँकाने वाला न था। उन्होने ऊँटों की नकेल को अपने शुभ हाथों से पकड कर कहा कि, "इनमे जो कुछ होगा वह मैं लूँगा।" जब ऊँटों को बिठला कर सदूक उतारे गए और उन्हे खोला गया तो उनमें समस्त बादशाही ग्रथ, जिन्हे किपचाक के युद्ध में मीर्ज़ा ने अपने अधिकार में कर लिया था, प्राप्त हो गये। इससे उनका सम्मानित हृदय और प्रसन्न हो गया। उस दिन उन्होने चारीकारान उद्यान में पडाव किया एव आनन्द मगल की सभा आयोजित की। दूसरे दिन शुभ मुहूर्त म वहाँ से प्रस्थान करके काबुल में प्रविष्ट हुए। बदार बेग[3], हैदर दोस्त मुगुल गाँजी एव मस्त अली कूरची, जिन्होंने कई बार नमकहरामी

१ मूल में यह नाम स्पष्ट नहीं।
२ मूल में यह नाम भी स्पष्ट नहीं।
३ **अकबर नामा** में 'दीनदार बेग'। **मुगुल कालीन भारत—हुमायूं**, **भाग १** में 'दीदार बेग' छप गया है जो अशुद्ध है [पृ० २७६]।

प्रदर्शित की थी, की हत्या करा दी गई। मीर्ज़ा सुलेमान के प्रति बादशाही कृपा प्रदर्शित करके उसे बदख्शाँ की ओर विदा कर दिया गया। उन्होंने मीर्ज़ा इबराहीम के प्रति और अधिक कृपा एव अनुकम्पा प्रदर्शित करने के लिये उसे कुछ देने के लिये रोक लिया और अपनी पुत्री बख्शी बानो बेगम से उसकी मँगनी करके विदा कर दिया और यह निश्चय हुआ कि विवाह का प्रबन्ध होने के उपरान्त शुभ मुहूर्त में विवाह सम्पन्न होगा। उनका ससार को विजय करने वाला साहस राज्य-व्यवस्था एव शासन प्रबन्ध मे व्यस्त हो गया। दरबार के समस्त दासो एव विश्वासपात्रो के मसब में वृद्धि करके उनको विश्वासपात्र बना लिया गया। लीहूगुर के तूमान के अधीनस्थ चरख नामक स्थान हज़रत ख़ाक़ानी के व्यय हेतु निश्चित किया गया। वकालते दरेख़ाना[1] का पद हाजी मुहम्मद ख़ा को प्रदान हुआ किन्तु वह अपने नीच स्वभाव एव वीरता के अभिमान के कारण सर्वदा कुत्सित बातें सोचा करता था तथा असम्भव कल्पनाओं में ग्रस्त रहता था। हज़रत जन्नत आशियानी अपने उत्कृष्ट स्वभाव एव उदारता के कारण, जो कि सम्मानित सुल्तानों को विशेष रूप से प्राप्त है, उसकी दुष्टताओं एव उसकी अनुचित कल्पनाओं की ओर से पूरी तरह से उपेक्षा करके नाना प्रकार की कृपाओ एव अनुकम्पाओं द्वारा उसके परेशान हृदय को अपनी मुट्ठी में लिये रहते थे। मीर्ज़ा कामरान पराजित होकर बडी बुरी दशा मे आठ व्यक्तियों सहित उश्तुरगराम से भाग खडा हुआ। ८ व्यक्तियों के नाम यह है। खिज़्र ख्वाजा ख़ा का भाई आक सुल्तान, बाबा सईद किबचाक, तिमुरताश अतगा, कुतलुक कदम, अली मुहम्मद, जोगी खान, अब्दाल, एव मकसूद कूरची। देहसब्ज़ की ओर से बडी ही अव्यवस्थित दशा मे अफगानो के पास पहुँचा। मीर्ज़ा हिन्दाल, हाजी मुहम्मद ख़ा, ख्वाजा खिज़्र ख़ा एव अन्य लोग, जो उसका पीछा करने के लिये रवाना हुए थे, उसे बन्दी बनाने का उचित प्रयत्न किये बिना लौट आये। अफगान लोगो ने मीर्ज़ा का मार्ग रोक कर उन्हे लूट लिया। मीर्ज़ा इस भय से कि कही कोई उसे पहिचान न ले अपनी दाढी, मूँछ, सिर एव भौए इत्यादि मुडवाकर कलन्दर के वेश मे मदरावर के मलिक मुहम्मद के पास, जो कि लमगानों का एक प्रतिष्ठित आदमी था, भाग गया। उसने (मीर्ज़ा की) पिछली अनुकम्पाओं पर ध्यान देते हुए उसके प्रति सेवा एव आतिथ्य किया। बहुत से षड्यत्रकारी सैनिक मीर्ज़ा के पास एकत्र हो गये। यह समाचार सम्मानित शिविर में पहुँचे। विश्वासघातियों एव फसादियो ने पुन हाथ पैर मारने प्रारम्भ कर दिये। ऐसे अवसर पर हाजी मुहम्मद ख़ा अनुमति लिये बिना गज़नी चला (१०४) गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने उसकी इस दुष्टता की ओर कोई ध्यान न दिया और मीर्ज़ा के विद्रोह को शान्त करने के लिये अपने निष्ठावानों के समूह को, जिसमे बहादुर ख़ा, मुहम्मद कुली बरलास, कोटूक सुल्तान इत्यादि थे, भेजा। जब विजयी सेना निकट पहुँची तो मीर्ज़ा अलीगार एव अलीशग दर्रों की ओर भाग गया। अमीर लोग उसके पीछे लपके। मीर्ज़ा इस क्षेत्र को छोडकर खलील एव महमन्द अफगानो के पास शरण हेतु चला गया। थोडे से अभागे लोग, जो उसके चारों ओर एकत्र हो गये थे, छिन्न भिन्न हो गये। सम्मानित लश्कर विजय एव सफलता प्राप्त करके गबके शहीद नामक स्थान से लौट गया। अभागा मीर्ज़ा पतन के जगल में मारा-मारा फिरने लगा। जब हज़रत जन्नत आशियानी के पूज्य हृदय को मीर्ज़ा के विद्रोह एव षड्यत्र से थोडी बहुत शान्ति मिली तो उन्होंने ख्वाजा जलालुद्दीन मुहम्मद एव बीबी फातेमा को इस आशय से बदख्शाँ भेजा कि

१ बादशाह सम्बंधी व्यक्तिगत सेवाओं के विषय में मुख्य अधिकार।

वे मीर्ज़ा सुलेमान की पुत्री खानम से उसकी मँगनी करायें। मीर्ज़ा अस्करी को उसे सौंप दिया। उन्होंने आदेश दिया कि बल्ख के मार्ग से उसे काबे की ओर रवाना कर दिया जाय। मीर्ज़ा सुलेमान ने उन लोगों के, जो भेजे गये थे, चरणों को भाग्यशाली समझकर आदेशानुसार मीर्ज़ा अस्करी को बल्ख की ओर रवाना कर दिया। मीर्ज़ा उस मार्ग से हिजाज की यात्रा हेतु चल खड़ा हुआ। ९६५ हि० (१५५७-५८ ई०) में श्याम तथा मक्के के मध्य में मृत्यु को प्राप्त हो गया। मीर्ज़ा सुलेमान ने मगनी को बेगमों एवं राज्य के उच्चाधिकारियों के आगमन तथा अपनी पुत्री के बड़े हो जाने तक स्थगित कर दिया और आगुन्तकों के हाथ अपनी निष्ठा एवं दासता का उल्लेख करते हुए प्रार्थनापत्र भेज दिया।

सम्मानित पताकाओं का मीर्ज़ा कामरान के विद्रोह के दमन हेतु बलन्द होना

क्योंकि स्वभाव को पाँचवी प्रकृति कहा जाता है और जिसकी प्रवृत्ति में दुष्टता एवं शरारत हो उसे युग जितना भी कष्ट एवं दुख द्वारा चेतावनी दे, यह सम्भव नही कि वह अपनी कुकृतियों एवं दुष्टताओं से बाज आकर कुशलता के मार्ग पर अग्रसर हो। इस सिद्धान्त का पूर्ण रूपेण प्रमाण मीर्ज़ा कामरान के शोचनीय अन्त से मिलता है कारण कि इतनी ठोकरें खाने तथा चेतावनी की सामग्री के उपलब्ध होने के बावजूद वह सचेत न हुआ और उसने पुनः खलील एवं महमन्द अफगानों तथा षड्यन्त्रकारी दुष्टों को एकत्र करके लूट मार प्रारम्भ कर दी। हज़रत जन्नत आशियानी ने प्रजा के सुख एवं राज्य के हित को देखते हुए उन कृतघ्नों के विद्रोह के दमन हेतु अपने संकल्प की पताकाएँ बलन्द कीं। उन्होंने ख्वाजा इख्तियार एवं मीर अब्दुल हई को, जो उनके सम्मानित दरबार के विश्वासपात्र थे, हाजी मुहम्मद के पास गज़नी भेजा और कृपायुक्त फरमान उसको सान्त्वना हेतु प्रेषित किये ताकि वह उन लोगों को सान्त्वना देकर आकाश रूपी दरबार में ले आये। उस समय सम्मानित एवं उत्कृष्ट कानों तक यह बात पहुँची कि मीर्ज़ा कामरान जलालाबाद के समीप पहुच गया है और उसने किले को, जो उस चहारबाग के निकट है, घेर लिया है। हज़रत जन्नत आशियानी ने हाजी मुहम्मद खाँ के पहुचने की प्रतीक्षा न की और शीघ्रातिशीघ्र उस ओर रवाना हो गये। मीर्ज़ा कामरान उत्कृष्ट लश्कर के आतंक से भयभीत होकर पर्वत के दर्रों में चला गया और बगश एवं गिरदीज़ के मार्ग से हाजी मुहम्मद खाँ की ओर इस आशय से रवाना हो गया कि सम्भवतः उसे अपने साथ लेकर कोई सफलता प्राप्त कर सके।

हाजी मुहम्मद खाँ का हाल इस प्रकार है जब ख्वाजा इख्तियार एवं मीर अब्दुल हई उसके निकट पहुँचे तो वह कुछ दिन तक उन्हे झूठी बातें बना बनाकर रोके रहा और एक द्रुतगामी दूत मीर्ज़ा कामरान के पास भेजकर कहलाया कि, 'वह कब तक पर्वतों एवं जंगलों में मारा-मारा फिरता रहेगा। वह शीघ्र इस क्षेत्र में पहुँच जाय ताकि मिलकर कोई कार्य किया जा सके।' संयोग से बैराम खाँ कन्धार से हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा मे आ रहा था, जब वह गज़नी पहुँचा तो हाजी मुहम्मद खाँ उसके स्वागत् हेतु उपस्थित हुआ। उसने चापलूसी एवं निष्ठा का अत्यधिक प्रदर्शन किया और दावत के बहाने से किले के भीतर ले जाकर उसे बन्दी बना लेना चाहा। मीर हब्श ने, जो कि हाजी मुहम्मद खाँ के साथ था एवं खान के प्रति निष्ठावान् था, उसे संकेत द्वारा हाजी मुहम्मद के छल एवं धूर्तता से अवगत करा दिया। बैराम खाँ को जब वास्तविक स्थिति का ज्ञान

हुआ तो उसने किले के भीतर प्रस्थान करने के विचार त्याग दिये और नगर के बाहर एक चश्मे पर पड़ाव किया। हाजी मुहम्मद को नाना प्रकार की युक्तियों से संतुष्ट करके अपने साथ काबुल ले गया और अपने आगमन तथा हाजी मुहम्मद को दरबार में लाने के विषय में प्रार्थना-पत्र भेजा। जब हज़रत जन्नत आशियानी ने यह सुना कि मीर्ज़ा कामरान काबुल की ओर रवाना हो गया है तो वे शीघ्रातिशीघ्र उस ओर रवाना हुये। जब मीर्ज़ा काबुल के समीप पहुँचा तो उसे ज्ञात हुआ कि वहाँ ख़ानेख़ाना पहुँच गया है और हाजी मुहम्मद को भी अपने साथ ले गया है और वह असफल होकर लौट गया और लमगान की ओर चल दिया। एक दिन हाजी मुहम्मद ने आहिनी द्वार से (१०५) काबुल में प्रविष्ट होना चाहा। ख़्वाजा जलालुद्दीन महमूद ने, जिसे राजधानी का शासन प्रबन्ध सौंप दिया गया था, उसे रोका और कठोर वचन संदेश में कहलाये। हाजी मुहम्मद अपनी अनेक कुकृतियों एवं दुष्टताओं से शंकित होकर शिकार के बहाने से कराबाग की ओर चल खड़ा हुआ और कोतल मीनार को पार करके बाबा कूकचार चला गया और बहज़ादी एवं कलन्दरी पर्वत के दामन से होता हुआ शीघ्रातिशीघ्र गज़नी पहुँच गया।

जब सम्मानित पताकाओं का सियाहसंग में पड़ाव हुआ तो बैराम ख़ाँ ने फ़र्श चूमने का सम्मान प्राप्त किया। उन्होंने यह निश्चय किया कि नगर में प्रविष्ट हुए बिना मीर्ज़ा का पुनः पीछा करना चाहिये और लोगों को एक बार रोज़-रोज़ के कष्टों एवं परेशानियों से मुक्त कर देना चाहिये, किन्तु निष्ठावानों ने निवेदन किया कि "हम लोग हाजी मुहम्मद की ओर से संतुष्ट नहीं हैं। सर्वप्रथम उसका अंत करके मीर्ज़ा का पीछा किया जाय।" इस कारण वे नगर में प्रविष्ट हुए और बैराम ख़ाँ को हाजी मुहम्मद के विरुद्ध नियुक्त कर दिया और उसे यह आदेश दिया कि जब तक मीर्ज़ा कामरान से युद्ध का निर्णय न हो जाय उस समय तक उसके कार्यों के ऊपर से आवरण न हटाया जाय। बैराम ख़ाँ ने, जो बड़ा ही बुद्धिमान् एवं निष्ठावान् था, उत्तम युक्तियों द्वारा उसे अपने वश में कर लिया और प्रतिज्ञा एवं शपथ द्वारा उसे संतुष्ट करके अपने साथ ले आया तथा उसके अपराधों को क्षमा कराके फ़र्श के चुम्बन द्वारा सम्मानित कराया। कुछ दिन उपरान्त उन्होंने लमगानात की ओर, जिधर मीर्ज़ा कामरान भाग गया था, प्रस्थान किया। जब भाग्यशाली पताकायें जलालाबाद पहुँचीं तो उन्होंने बैराम ख़ाँ को बहुत बड़ी सेना सहित मीर्ज़ा के विरुद्ध नियुक्त किया। मीर्ज़ा मुकाबिला न कर सका और उन दर्रों से निकल कर नीलाब की ओर चला गया। बैराम ख़ाँ लौट गया और फ़र्श का चुम्बन करके सम्मानित हुआ।

यद्यपि उन्होंने हाजी मुहम्मद को इतने अधिक अपराध करने के बावजूद अपनी उदारता एवं अपने उच्च साहस के कारण क्षमा कर दिया था और उसके अपराधों की ओर लेशमात्र का भी कोई ध्यान न दिया था किन्तु फिर भी वह सर्वदा बड़ी ही असम्भव कल्पनायें एवं दुष्टता प्रदर्शित किया करता था और हज़रत जन्नत आशियानी के सम्मानित हृदय को कष्ट पहुँचाया करता था। जब सहृदयता सीमा से अधिक बढ़ गयी और उस दुष्ट ने उनकी कृपाओं के मूल्य को कुछ न समझा, तो उन्होंने उसे तथा उसके भाई शाह मुहम्मद को बन्दी बना लिया। उन्होंने आदेश दिया कि उसने अपने सेवा काल में जो सेवायें की हों उनकी एक सूची तैयार की जाय और एक दूसरी सूची उन अपराधों की तैयार की जाय जो उसने किये हैं ताकि न्याय की तराज़ू में दोनों को तौला जा सके और संसार वालों को सत्य का ज्ञान हो सके। उसकी सेवाएं तो बड़ी साधारण थीं किन्तु उसके अपराधों की जो सूची तैयार हुई उसमें १०२ इतने बड़े-बड़े अपराध निकले जिनमें

से प्रत्येक इस योग्य था कि उसे बन्दी बनाकर उसकी हत्या करा दी जाय और उसे अपमानित किया जाय। उन्होंने छान बीन के उपरान्त आदेश दिया कि संसार को उन दोनों के दुष्ट अस्तित्व से मुक्त कर दिया जाय। उन्होंने गजनी बहादुर खा को प्रदान कर दी और उसकी जागीर का शेष भाग दरबार के अन्य सेवकों को दे दिया। राजधानी काबुल मीर्जा कामरान एवं समस्त कृतघ्न विश्वासघातियों के उपद्रव एवं विद्रोह से मुक्त हो गई। बैराम खा को कन्धार के शासन प्रबन्ध हेतु विदा कर दिया गया। ख्वाजा गाजी को उपहार सहित बैराम खा के साथ स्वर्गीय शाह तहमास्प के पास दूत बनाकर भेज दिया गया। इन्ही दिनों में शाह अबुल मआली ने ख्वाजा अब्दुस्समी द्वारा सेवा का सौभाग्य प्राप्त किया और उसे स्वर्ग रूपी दरबार के मुसाहिबों में सम्मिलित कर लिया गया। वह तिरमिज के सैयिदों के वंश से था और अपने रूप, रंग एवं सचरित्रता के कारण सर्वश्रेष्ठ हो गया किन्तु वह धृष्टता एवं हृदय की दुष्टता से शून्य न था। यद्यपि प्रारम्भ में हजरत जन्नत आशियानी ने उसके प्रति अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की और उसे फरजन्द की उत्कृष्ट उपाधि द्वारा सुशोभित किया किन्तु अन्त में उसकी दुष्टताओं के कारण उसकी कुकृतियों पर से परदा हट गया और उसने विद्रोह एवं कृतघ्नता प्रदर्शित कर दी। उसका शोचनीय अन्त दूसरे स्थान पर लिखा जायेगा।

संसार को विजय करने वाले लश्कर का पुनः मीर्जा कामरान के उपद्रव को शांत करने के लिये प्रस्थान तथा दुर्भाग्यवश मीर्जा हिन्दाल का शहीद होना

मीर्जा कामरान कुछ समय तक अपमान एवं अपयश की कोठरी में समय व्यतीत करता रहा और असफलतापूर्ण एवं कष्ट का जीवन व्यतीत करता रहा। क्योंकि उसका हृदय उपद्रव (१०६) एवं फसाद से परिपूर्ण था अतः उसने उस बीच में पुनः दुष्टों एवं षड्यन्त्रकारियों के एक समूह को एकत्र कर लिया और नीलाब के क्षेत्र से लौटकर जूये शाही के क्षेत्र में विद्रोह एवं उपद्रव की पताकायें बलन्द कर दी। जब यह समाचार उनके सम्मानित कानों तक पहुँचे तो उन्होंने मीर्जा हिन्दाल को गजनी से बुलवाकर मीर्जा कामरान के उपद्रव की अग्नि को शान्त करने के लिये नियुक्त किया। मीर्जा कामरान सम्मानित पताकाओं के प्रस्थान के समाचार पाकर मुकाबला न कर सका और पुनः सहस्रों निराशाओं एवं असफलताओं के बाद पुनः अपमान एवं असफलता के कोने में प्रविष्ट हो गया। संसार को विजय करने वाले लश्कर ने भी विजय एवं सफलता सहित सुरखाब की ओर पड़ाव किया। हैदर मुहम्मद आख्ता को हिरावल का पद प्राप्त हुआ। वह सम्मानित लश्कर के आगे रवाना होकर सियाहआब के तट पर, जो सुरखाब एवं गडमक के मध्य में है, उतर पड़ा। इस मंजिल पर मीर्जा कामरान ने, जो अपनी शक्तिहीनता के कारण मारा-मारा फिरता था तथा विजयी सेना से युद्ध की शक्ति न रखता था, रात्रि में छापा मारा। हैदर मुहम्मद आख्ता ने वीरतापूर्वक युद्ध किया और उसके गहरे घाव, जिन्हें वाह्य एवं आन्तरिक सम्मान का प्रमाण पत्र कहा जा सकता है, लगे। यद्यपि उसकी अत्यधिक धन सम्पत्ति नष्ट हो गई किन्तु मीर्जा कोई सफलता न प्राप्त कर सका और लौट गया। कुछ दिन उपरान्त जगियार नामक स्थान पर, जो नेकनहार तूमान के अधीन है, सम्मानित शिविर लगे। सावधानी की दृष्टि से उन्होंने मोर्चे बाँट

दिये। खाई एव दीवार वस्ती[1] तैयार करायी। दिन के अतिम पहर मे अफग़ान लोग यह समाचार लाये कि मीर्जा कामरान अफगानो के एक बहुत बडे समूह के साथ आज रात्रि मे आक्रमण करने की योजना बना रहा है। हज़रत जन्नत आशियानी ने अपनी व्यवस्था करके विभिन्न स्थानो पर लोगो को नियुक्त कर दिया। रविवार २१ ज़ीकाद ९५८ हि० (२० नवम्बर १५५१ ई०) को चौथाई पहर रात्रि व्यतीत हो गई थी कि मीर्जा ने विजयी लश्कर पर आक्रमण किया। हज़रत जन्नत आशियानी खिलाफत के नेत्रो की ठडक को लेकर उस बलन्दी पर, जो कि दौलतखाने के पीछे थी, सवार होकर खडे हो गये। प्रत्येक अमीर ने अपने-अपने मोर्चे मे स्थान ग्रहण कर लिया और वीरता एव पौरुष प्रदर्शित करने लगा। अब्दुल वह्हाब यसावल मोर्चो मे चक्कर लगा कर प्रबन्ध कर रहा था। अचानक उसके एक बाण लगा और वह शहीद हो गया। जब चन्द्रमा निकल आया और उसने रात्रि को भाग्यशाली दिन के समान प्रकाशमान कर दिया तो शत्रुओ की सेना पराजय को ही बहुत बडी देन समझकर छिन्न भिन्न हो गई और प्रत्येक किसी न किसी कोने मे घुस गया। राज्य के सहायको ने विजय एव सफलता की पताकाए बलन्द कर दी। उसी समय मीर्जा हिन्दाल के शहीद होने के शोकमय समाचार प्राप्त हुए। उनके कृपालु एव गुणो को समझने वाले हृदय को अत्यधिक शोक हुआ।

इस घटना का सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है —मीर्जा हिन्दाल रात्रि के छापे के समाचार पाकर मोर्चे का प्रबन्ध करके लेट गया था। इसी बीच मे अफगानो के कारण कोलाहल होने लगा। प्रत्येक मोर्चे में अफगान प्यादो की इतनी अधिक सख्या एकत्र हो गई थी कि उसका उल्लेख सम्भव नही। बहुत बडी सख्या मे लोग मीर्जा के मोर्चे मे प्रविष्ट हो गये। मीर्जा घबडाकर जाग उठा और उन अभागो को हटाने के लिये बढा। क्योकि रात अधेरी थी और प्रत्येक अपनी चिन्ता मे था, एक अफगान मीर्जा के समक्ष पहुँच गया। नूरम कोका एव मीर्जा के अन्य सेवको को उसका साथ देने का साहस न हुआ। उन्होने अपमान एव नामर्दी को अगीकार किया। मीर्जा स्वय उससे युद्ध करने के लिये बढा और अपनी वीरता एव पौरुष से उसका अन्त कर दिया। इसी बीच में उस अफगान का एक भाई फरीद[2] उसके पास पहुँच गया और उसने मीर्जा को शहीद कर दिया। मीर्जा के शकहा लेकर वह मीर्जा कामरान के पास पहुँचा। उसे इस बात का ध्यान न था कि वह मीर्जा हिन्दाल का शस्त्र आवेज[3] है। जब मीर्जा कामरान की दृष्टि उस शस्त्र पर पडी तो उसने समझ लिया कि वास्तव मे क्या दुर्घटना घटी। वह अपने आप पर नियत्रण न रख सका और उसने अपनी पगडी भूमि पर फेक दी। उसे विश्वास हो गया कि मीर्जा हिन्दाल शहीद हो गया। सक्षेप में, उस रात्रि में मीर्जा हिन्दाल ने अपने आपको अकारण नष्ट करा दिया। उसकी लाश पडी हुई थी कि उसके सेवक ख्वाजा इबराहीम बदख्शी ने देखा कि एक शख्स पडा हुआ है जो काले कल्माक़ पहिने हुए है। घबराहट एव परेशानी में वह वहाँ न ठहरा और वहाँ से चल दिया। उसने

१ रोक, आड़।

२ अकबर नामा में 'जरिन्दा' (अकबर नामा भाग १, पृ० ३१२, रिज़वी : मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं, पृ० २८६)।

३ मूल में इसी प्रकार है। अकबर नामा में 'शस्त आवेज़' (वह डिब्बा जिसमें शस्त रक्खे जाते थे। शस्त एक प्रकार का अंगुलीत्राण होता है जो धनुर्धारी निशाना लगाते समय पहिन लेते है। शस्त आवेज़ ही शुद्ध है।

पुन सोचा कि मीर्ज़ा हिन्दाल काला जौशन पहिने हुए था। कहीं ऐसा न हो कि वही मारा गया हो। वह लौटा और भली-भाँति निरीक्षण करके मीर्ज़ा को पहिचान गया। धैर्य से एव सहनशीलता प्रदर्शित करते हुए, जो कि बुद्धिमानों की प्रथा है, मीर्ज़ा को उठाकर उसके ख़रगाह में ले गया और (१०७) द्वारपालों से कहा कि, 'मीर्ज़ा अत्यधिक युद्ध करने के कारण घायल हो गये हैं। किसी को भीतर प्रविष्ट होने की कदापि आज्ञा न दी जाय ताकि वे क्षण भर आराम कर लें"। वह स्वय हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में पहुँचा और मीर्ज़ा की ओर से विजय की बधाई पहुँचाई। जब युद्ध के शान्त होने एव अफ़गानों के छिन्न भिन्न होने का हाल प्रामाणिक रूप से ज्ञात हो गया तो उन्हे मीर्ज़ा की मृत्यु का अत्यधिक शोक हुआ। मीर्ज़ा की लाश को जूये शाही में अमानत के रूप में सौंप दिया। कुछ समय उपरान्त काबुल ले जाकर हज़रत फ़िरदौस मकानी के मज़ार में दफ़न कर दिया। मुल्ला ख़िरद जरगर ने, जो मीर्ज़ा का मुसाहिब एव दरबारी था, उनके शोक में एक क़सीदे की रचना की। उसका मतला इस प्रकार है

शेर

'एक रात्रि में खूने जिगर ने मेरे नेत्र की पुतलियों पर छापा मारा,
नेत्रों की सेना ने रक्त के आने जाने के कारण, बाहर ख़ेमा लगाया।'

उसने इस तारीख़ की भी रचना की

शेर

"हिन्दाल मुहम्मद यशस्वी उपाधि का बादशाह,
अचानक शहीद हुआ रात्रि के सन्नाटे में।
शबख़ून[1] जो उसकी शहादत का कारण हुआ,
उसकी शहादत की तारीख़ 'शबख़ून'[2] से निकाल।"

मीर अमानी ने इस गूढार्थक तारीख़ की रचना की

मिसरा

'एक सरो राज्य के उद्यान से निकल गया।'

हज़रत जन्नत आशियानी ने दूसरे दिन बेहसूद में पड़ाव किया ताकि मीर्ज़ा की ओर से पूर्ण रूप से निश्चिन्त होकर राजधानी काबुल की ओर लौटें।

हज़रत जन्नत आशियानी का शाहज़ादे को ग़ज़नी प्रदान करना एवं अन्य घटनायें

जिस समय मीर्ज़ा हिन्दाल की मृत्यु हुई हज़रत ख़ाक़ानी की अवस्था १० वर्ष की हो चुकी थी। उन्होंने मीर्ज़ा के समस्त सेवकों को हज़रत ख़ाक़ानी को प्रदान करके सम्मानित किया। मीर्ज़ा हिन्दाल की जागीर के महाल ग़ज़नी इत्यादि हज़रत ख़ाक़ानी को प्रदान कर दिये। यह एक

१ रात्रि के समय का अचानक आक्रमण।
२ ६५८ हि० (१५५१ ई०)।

बडी विचित्र बात है कि एक दिन इस घटना के पूर्व जब कि हजरत खाकानी अपने पिता के साथ-साथ भीड में सवार होकर जा रहे थे उनके पूज्य सिर से पगडी गिर गई। मीर्जा हिन्दाल को जब इस बात का पता चला तो उसने अपनी पगडी उतार कर हजरत खाकानी के सिर पर रख दी। भाग्य के कारखाने के रहस्य के ज्ञाताओं ने इस घटना से शकुन निकाला। २-३ दिन में उसका फल प्रकट हो गया। मीर्जा हिन्दाल के जिन उत्तम सेवकों को हजरत खाकानी की सेवा द्वारा सम्मानित किया गया, उनकी सूची इस प्रकार है

मुहिब अली खा, नासिर कुली, ख्वाजा इबराहीम, मौलाना अब्दुल्लाह, आदीना तूकबाई, समानची, फरगानची, जान मुहम्मद तूकबाई, ताजुद्दीन महमूद यारबेगी, तिमुर ताश, मौलाना सानी जो बाद मे सानी खा की उपाधि द्वारा सुशोभित हुआ, मौलाना बाबा दोस्त सद्र जिसका मीर्जा बडा आदर सम्मान करता था, मीर जमाल जो मीर्जा का विश्वासपात्र था, खलीद बिन वलीद दास्त महारी। बाबा दोस्त भी यद्यपि मीर्जा के सेवकों में से था, किन्तु इस कारण कि उसने कई बार दुष्टता प्रदर्शित की थी एव षड्यत्र रचा था उसे खिलाफत के नेत्रो के प्रकाश की सेवा हेतु उचित न समझ कर उसे उन्होने अपन पास रख लिया।

सक्षेप में, जब भाग्यशाली शिविर बेहसूद नामक स्थान पर लगे तो उन्होने वहाँ पर एक दृढ किले का निर्माण कराया। वे कुछ दिन निर्माण हेतु ठहरे रहे और हजरत खाकानी को शासन प्रबन्ध एव व्यवस्था हेतु राजधानी काबुल को विदा कर दिया। लगभग ५-६ मास तक उस भूभाग को सम्मानित लश्कर का शिविर बनने का सौभाग्य प्राप्त रहा। वे सर्वदा मीर्जा कामरान के विषय म पता लगाया करते थे। मीर्जा साधन के अभाव एव परेशानी के कारण हर रोज किसी एक कबीले का मेहमान होता था और कभी किसी जमीदार के पास शरण लेता था।

जिस समय हजरत खाकानी काबुल में मगलमय जीवन व्यतीत कर रहे थे तो वे सर्वदा सैर शिकार, चौगान बाजी एव बाण चलाने में व्यस्त रहते थे और जाहिरी विद्याओं के ज्ञान की ओर बहुत कम ध्यान देते थे। अत कुछ निष्ठावानो ने हजरत जन्नत आशियानी के पास उनकी शिकायत लिख भेजी। हजरत जन्नत आशियानी ने खिलाफत के नेत्रों के प्रकाश को उपदेश देते हुए पत्र लिखा और उसमें शेख निजामी[1] के इस शेर को लिखा

शेर

'असावधान होकर मत बैठ जा, यह खेल का समय नही,
यह कला (सीखने) एव कार्य करने का समय है।'

उनका विचार यह हुआ कि हजरत खाकानी के (शिक्षा की ओर) ध्यान न देने का कारण यह है कि शिक्षक भली भाँति शिक्षा प्रदान नहीं करते अत उन्होंने मुल्लाजादा इसामुद्दीन को इस पद से पृथक् कर दिया और मुल्ला बायजीद को उनकी शिक्षा हेतु नियुक्त किया। बाद में उन्होंने मुल्ला अब्दुल कादिर, मुल्लाजादा इसामुद्दीन एव मुल्ला बायजीद के विषय में इस आशय से कुरा[2]

१ निजामी अथवा निजामी खम्से या ५ काव्यों के प्रसिद्ध रचयिता थे। उनकी मृत्यु ११६४ ई० अथवा १२०३ ई० में हुई।
२ पाँसा।

डाला कि किसे यह सौभाग्य प्राप्त होता है। सयोग से मौलाना अब्दुल कादिर के नाम कुरा निकला। (१०८) मुल्ला बायजीद के पदच्युत होने तथा मौलाना अब्दुल कादिर की नियुक्ति के विषय में फरमान निकाल दिया गया। क्योंकि ईश्वर ने भाग्य में यह लिखा था कि दैवी कारखानों के रहस्यों का वह ज्ञाता शिक्षा की प्राप्ति के बिना दैवी प्रेरणा से समस्त ज्ञान विज्ञान एव कलाओं की जानकारी प्राप्त कर ले अत *अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी कोई परिणाम न हुआ।*

सम्मानित लश्कर का बेहसूद से अफग़ान कबीलों के विरुद्ध, जहाँ मीर्ज़ा कामरान छिपता फिरता था, प्रस्थान एव हिन्दुस्तान की विजय का संकल्प

जब उनके सम्मानित कानों तक यह समाचार पहुँचे कि मीर्ज़ा कामरान अफगान कबीलों के मध्य में सहस्रों असफलतायें एव परेशानियाँ सहन करता हुआ समय व्यतीत कर रहा है और शीत ऋतु का भी अन्त हो गया तथा जाडे की कठोरता समाप्त होने लगी तो उन्होंने अफगान कबीलों *की ओर प्रस्थान करना तथा उन्हें नष्ट भ्रष्ट करना* निश्चय कर लिया ताकि *मीर्ज़ा कामरान का* अन्त सवदा के लिये किया जा सके। इस उद्देश्य से उन्होंने उस ओर प्रस्थान किया। क्योंकि अफगान कबीले विभिन्न स्थानों पर पडाव किये हुए थे अत यह न ज्ञात होता था कि मीर्ज़ा किस कबीले मे है। हज़रत जन्नत आशियानी के प्रस्थान के समय माहम अली तथा बाबा खिज़ारी, जो मीर्ज़ा कामरान की ओर से मलिक मुहम्मद मन्दरावी के पास जा रहे थे, विजयी सेना के वीरों द्वारा बन्दी बना लिये गये। उन्होंने उनसे मीर्ज़ा के विषय में पूँछ ताँछ की और यह बताने को कहा कि मीर्ज़ा किस कबीले में है। माहम अली ने पूँछने वालों को बहकाने के लिये जिस कबीले में मीर्ज़ा न था, उसका पता बता दिया। दूसरे ने कहा कि, "भय एव आतक के कारण इसकी समझ में नहीं आ रहा है कि वह क्या कह रहा है। मीर्ज़ा अमुक कबीले मे है। मैं चलकर मार्ग दिखाऊँगा।" प्रात काल विजयी सेना उस कबीले के समीप जहाँ मीर्ज़ा था, पहुँच गई और लूट मार प्रारम्भ कर दी। अभागे अफगानों की बहुत बडी सख्या नष्ट हो गई। जिस खेमे मे मीर्ज़ा सो रहा था कुछ वीरों ने दो व्यक्तियों को वहाँ पाया। अंधेरे के कारण एक बन्दी बना लिया गया और दूसरा, जो सम्भवत मीर्ज़ा रहा होगा, बडी ही शोचनीय दशा में भाग गया। प्रात काल के उपरान्त पता चला कि जो व्यक्ति बन्दी बनाया गया वह बग मलूक था जिससे मीर्ज़ा की बडी घनिष्ठता थी। सक्षेप मे, अधिकाश अफगान सरदार उदाहरणार्थ शेख यूसुफ करनी, *मलिक सगी एव कुछ अन्य लोग एक बहुत बडी सेना सहित अपनी दुष्टता एव नीचता के* कारण युद्ध हेतु अग्रसर हुए। विजयी सेना के वीरों ने अपने साहस की बाहों से उन्हें मार कर भगा दिया। राज्य के सहायकों का अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त हो गई। भाग्यशाली पताकाओं के पहुँचने के पूर्व इतनी महान् विजय प्राप्त हो गई। मीर्ज़ा तदुपरान्त उस क्षेत्र में निवास करना उचित न देखकर बडी ही परेशानी एव व्याकुलता की अवस्था में हिन्दुस्तान की ओर रवाना हो गया। *जब हज़रत जन्नत आशियानी का सम्मानित हृदय* अफगानों को दड देने एव मीर्ज़ा कामरान के षड-यन्त्र की ओर से पूर्ण रूप से सतुष्ट हो गया तो उन्होंने वापसी की पताकायें काबुल की ओर बलन्द की और बडी ही शुभ मुहूर्त एव उत्तम घडी मे राजधानी काबुल पहुँचे।

ख़ाकान गेती सितान का गजनी की ओर हजरत जन्नत आशियानी के आदेशानुसार प्रस्थान

इन दिनों जब कि राज्य के सहायकों का हृदय चिन्ता एवं व्याकुलता से मुक्त हो गया और उनकी सेना में वृद्धि हो गई तथा राज्य के अधीनस्थ भाग शान्ति का गृह बन गये तो ससार को शोभा देने वाले मत ने यह निश्चय किया कि हजरत ख़ाकानी को गजनी तथा उस भूभाग की ओर, जो कि उनके सेवकों की जागीर में निश्चित हुए हैं, विदा कर दिया जाय ताकि वे कुछ समय तक निश्चिन्त होकर सैर व शिकार से जी बहलायें और जहाँगीरी तथा मुल्कदारी की प्रथाओं का अभ्यास करें। इस उत्तम उद्देश्य से ९५९ हिलाली के प्रारम्भ (जनवरी १५५२ ई०) में हजरत ख़ाकानी को गजनी भेज दिया गया। अतका खाँ एवं ख़्वाजा जलालुद्दीन महमूद को मीर्ज़ा हिन्दाल के समस्त सेवकों सहित इस अभियान में सम्मानित रिकाब की सेवा के साथ किया गया। ख़्वाजा जलालुद्दीन महमूद को सभी शासन प्रबन्ध सौंपे गये। हजरत ख़ाकानी ६ मास तक उस विलायत में सफलतापूर्वक समय व्यतीत करते रहे। दरवेशों एवं एकान्तवासियों की सेवा की इच्छा में वे व्यस्त रहा करते थे तथा ईश्वर का ज्ञान रखने वालों से दैवी ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न किया करते थे। उन दिनों बाबा बिलास नामक एक ज्ञानी मजजूब[1] गजनी में निवास करता था। हजरत ख़ाकानी कई बार शुहूद[2] के समुन्द्र में डूबे हुए उस व्यक्ति के दर्शन हेतु जाते और उसके हृदय को सतुष्ट करने की इच्छा का प्रयत्न करते रहते। दैवी ज्ञानों एवं रहस्यों के उस ज्ञाता ने उन्हें दीर्घायु होने एवं जहाँगीरी सम्बन्धी उच्च स्थान प्राप्त करने के सुखद समाचार पहुचाये। इन दिनों में जब कि वे गजनी में थे, हजरत जन्नत आशियानी काबुल में आनन्द-(१०९) मग्न में समय व्यतीत करते रहते थे। एक दिन वे जमा[3] के क्षेत्र में, जो काबुल के हृदय-ग्राही स्थानों में से एक है, शिकार हेतु गये। दुर्भाग्यवश घोड़े से गिर पड़े और उनको अत्यधिक चोट आई। तत्काल उन्होंने हजरत ख़ाकानी को बुलाने के लिये फरमान भेज दिया। उनके आगमन से वे पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गये। वे उनसे ६ मास तक पृथक् रहे।

हजरत जन्नत आशियानी का बगश के विद्रोहियों को दड देने के लिये प्रस्थान तथा सौभाग्य से मीर्ज़ा कामरान का बन्दी बनाया जाना और काबुल की ओर वापसी

९५९ हि० (१५५२ ई०) की शीत ऋतु में वे बगश की ओर रवाना हुए कारण कि वह काबुल वालों के लिये शीत ऋतु व्यतीत करने का स्थान भी है और इसके अतिरिक्त उनका विचार यह था कि वे वहाँ पहुँच कर विद्रोहियों एवं षड्यन्त्रकारियों को दड दे सकेंगे। सल्तनत की आँखों के नेत्रों की ठडक को प्रताप के समान अपने साथ लेकर बगश तथा गिरदीज़ की ओर

१ वह सूफ़ी सन्त जो देखने में पागलों के समान जीवन व्यतीत करता है किन्तु वास्तव में ईश्वर में लीन रहता है।
२ ईश्वर से साक्षात।
३ सम्भवत जमज़मा, काबुल के पूर्व में।

रवाना हुए। अफगान कबीलों को उचित रूप से दंड दे दिया गया। इस लूट मार में राज्य के सहायकों को अत्यधिक धन सम्पत्ति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम अब्दुर्रहमानी कबीले पर आक्रमण किया गया और अन्त में बरमज़दी कबीले का दमन किया गया। फतह शाह अफगान जो मूर्खता एवं अज्ञानता के कारण अपने आपको बुद्धिमान् समझकर अन्य लोगों को पथभ्रष्ट किया करता था, शाही लश्कर के आतंक से अपने सहायकों एवं कबीले सहित भाग खड़ा हुआ। मार्ग में मुनइम खां से, जो एक बहुत बड़ी सेना सहित हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में जलालाबाद से आ रहा था, उसकी मुठभेड़ हो गई। अपनी समस्त धन-सम्पत्ति को लुटवा कर वह घायल अवस्था में बड़ी ही शोचनीय दशा में भाग गया।

इन्हीं सौभाग्यशाली दिनों में सुल्तान आदम गक्खर का, जो कि गक्खर कबीले का सरदार था, पत्र धरती को शरण देने वाले दरबार में पहुंचा। पत्र का सारांश इस प्रकार था "कि मीर्ज़ा कामरान बड़ी ही अव्यवस्थित एवं शोचनीय दशा में इस क्षेत्र में पहुँच गया है। दास इस सम्मानित उच्च वंश का हितैषी एवं शुभचिन्तक है। वह उचित नहीं समझता कि मीर्ज़ा इतनी शोचनीय दशा में मारा-मारा फिरता रहे। यदि सम्मानित लश्कर इस क्षेत्र में आ जाय तो उससे फर्श का चुम्बन करवा कर उसे इस योग्य बना सके कि उसके पिछले अपराध क्षमा किये जा सकें और वह सम्मानित चौखट का सेवक बन सके। दास स्वयं भी सेवा की प्रथाओं को पूरा करके दासता प्रदर्शित करे।" यह बात छिपी न रहनी चाहिये कि गक्खरों के बहुत से कबीले हैं। वे बहत[1] नदी एवं सिंध के बीच में निवास करते हैं। कश्मीर के सुल्तान ज़ैनुल आब्दीन[2] के समय में काबुल के हाकिम के अधीनस्थ मलिक किद नामक ग़ज़नी के अमीर ने उस स्थान को कश्मीरियों से ज़बरदस्ती छीन लिया। उसके उपरान्त उसका पुत्र मलिक कलाँ उसका उत्तराधिकारी बना। उसके बाद उसके पुत्र बीर ने अपने समूह की सरदारी का पद प्राप्त किया। तदुपरान्त तातार हाकिम हुआ। उसका शेर शाह एवं सलीम शाह से घोर संघर्ष रहा। जिस समय हज़रत फिरदौस मकानी हिन्दुस्तान की विजय हेतु रवाना हुए वह उनकी सेवा में उपस्थित हुआ और उसने उचित सेवायें सम्पन्न की, विशेष रूप से राणा सांगा के युद्ध में उसने अपने प्राण त्यागने का प्रदर्शन किया। वह अपने आपको इस सम्मानित वंश के सहायकों में समझता था। उसके दो पुत्र थे सुल्तान सारंग और सुल्तान आदम। सर्वप्रथम सारंग अपने कबीले का सरदार बना। सारंग के उपरान्त आदम सरदार हुआ। सारंग के पुत्र कमाल खां एवं सईद खां विश्वासघात करते हुए आज्ञाकारिता प्रदर्शित करते रहते थे। संक्षेप में, जब सुल्तान आदम गक्खर का राजदूत पहुँचा तो लगभग उसी समय मीर्ज़ा कामरान के भी एक सेवक जागी खां ने धरती चुम्बन का सम्मान प्राप्त किया। मीर्ज़ा का प्रार्थना-पत्र जिसमें विनय तथा लज्जा प्रदर्शित की गई थी, प्रस्तुत किया। तदनुसार निश्चय हुआ कि वे गक्खरों की विलायत तक प्रस्थान करके मीर्ज़ा कामरान को बन्दी बनायें।

मीर्ज़ा कामरान का संक्षिप्त हाल इस प्रकार है जब वह अत्यधिक कठिनाई एवं अपमान सहन करता हुआ साहस के जंगल के सिंहों द्वारा मुक्त हो गया तो अपने आधे प्राण लेकर भाग

१ झेलम।

२ कश्मीर के सुल्तान सिकन्दर का पुत्र जो १४२३ ई० में सिंहासनारूढ़ हुआ। वह बड़ा ही उदार शासक था। (तबक़ाते अकबरी भाग ३,पृ० ४३५-४४६, रिज़वी . उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २,पृ० ५१६-५२२)।

सका। वह उस क्षेत्र मे अधिक न ठहर सका। सहस्रों असफलतायें सहन करता हुआ हिन्दुस्तान की ओर इस आशय से रवाना हुआ कि शर खा के पुन सलीम खा से सहायता लेकर अपने पतन की सामग्री एकत्र करे। खेद है कि यह कितनी बडी असावधानी एव मूर्खता का विषय है कि अपने वश के शत्रु के पास शरण ली जाय ताकि अपने प्राण के मित्र एव सच्चे आश्रयदाता को हानि पहुँचाई जा सके। सक्षेप में, कुछ अभागे षड्यन्त्रकारियो के बहकाने से वह हिन्दुस्तान की ओर (११०) रवाना हुआ। धँवर के पास से शाह बुदाग खा को सलीम शाह के पास भेज दिया। वह पजाब के अधीनस्थ कस्बे वन[3] में सलीम शाह के पास पहुँचा। सलीम शाह ने उससे चिकनी चुपडी बातें की और उसके हाथ थोडा सा खर्च भेज दिया और यह निश्चय किया कि "तुम इसी क्षेत्र में रहो, मैं तुम्हारे पीछे कुमक भेजता हूँ और खजाना निश्चित करता हूँ।" अभी बुदाग खा मीर्जा के पास पहुचा भी न था कि उसने अली मुहम्मद अस्प को भी सलीम शाह के पास भेजा। सक्षिप्त रूप मे, जब मीर्जा सलीम शाह के शिविर से चार कुरोह पर पहुँच गया तो सलीम शाह ने अपन पुत्र आवाज खा, मौलाना अब्दुल्लाह सुल्तानपुरी एव अमीरा के एक समूह को उसके स्वागत् हतु भेजा और मुगुल वश के शत्रुओं की प्रथानुसार भेंट की। मीर्जा की इस दरिद्रता में जो लोग उसके सहायक थे, उनके नाम इस प्रकार हैं बाबा चूचक, मुल्ला शफाई, बावा सईद किवचाक, शाहबुदाग खा, आलम शाह, रहमान कुली, मालेह दीवाना, हाजी यूसुफ, अली मुहम्मद अस्प, तिमुर ताश, गालिब खा, अब्दाल कोका।

मीर्जा सर्वदा इन लोगो के दुर्व्यवहार से दुखी रहा करता था, विशेष रूप से शाह बुदाग खा से जिसने इस यात्रा के लिये उस औरों से अधिक प्रेरित किया था। वह उसकी सर्वदा शिकायत किया करता और उसे फटकारता रहता था। सक्षेप मे, सलीम शाह वादे कर करके तथा चिकनी चुपडी बातें बना कर उसे टालता रहा, यहाँ तक कि वह उस प्रदेश की समस्याओ की ओर से सतुष्ट होकर देहली की ओर रवाना हुआ। मीर्जा को अपने साथ लेकर वह उसे अपनी निगरानी में रखने लगा। उसका उद्देश्य यह था कि उसे हिन्दुस्तान ले जाकर किसी दृढ किले मे बन्दी बना दे। उसने अपने अन्त पुर से एक कनीज मीर्जा को दे दी और उस कनीज को यह आदेश दिया कि वह मीर्जा के विषय मे गुप्तचर का कार्य करे और उसके हृदय की बात से अवगत कराती रहे। जब वह कनीज मीर्जा के निवास स्थान पर पहुँची तो उससे मीर्जा की खूब निभने लगी। सलीम खा ने जो कुछ निश्चय किया था उसके विषय में उसने मीर्जा को सूचना दे दी और बता दिया कि "सलीम के हृदय में क्या है और उसके विषय में उसने क्या सोच रखा है, मुझे उसने इस कार्य हेतु तेरे पास भेजा है और तुझे वह चिकनी चुपडी बातों से धोखे मे रख रहा है।" मीर्जा को उसके व्यवहार से शका हो गई थी। उसे विश्वास हो गया कि वास्तव में क्या बात है। वह अपने भागने तथा मुक्ति के विषय में सोचने लगा। उसने जोगी खा को राजा बक्खू के पास, जो माछीवारा से १२ कुरोह पर था, भेजकर अपनी मुक्ति हेतु उससे सहायता चाही। राजा ने दूत से सौजन्यपूर्ण व्यवहार किया और मीर्जा को शरण देन का आश्वासन दिला कर एक सुरक्षित स्थान बता दिया।

१ अर्सकिन के अनुसार 'बीब'। सम्भवत यह बन प्रदेश का 'बैन' है और थीबर्न के मानचित्र पर दर्शाया गया है। यह एडवर्डसाबाद के दक्षिण में है। रेवर्टी ने सियालकोट के उत्तर पूर्व में २६ मील पर और जम्मू के दक्षिण पश्चिम में ८ मील पर बन नामक एक स्थान की चर्चा की है। उसे चनाब नदी के पूर्वी तट पर स्थित बताया है। (बेवरिज, पृ० ६००)।

जिस दिन सलीम शाह ने माछीवारा नदी पार कर ली, मीर्जा ने अपने सोने के वस्त्र यूसुफ आफ़्ताबची को पहिना कर बाबा सईद को आदेश दिया कि वह बहुत देर तक किताब[1] पढ़ता रहे ताकि लोग यह समझें कि मीर्जा सो रहा है। वह स्वय बुरका पहिनकर सरापरदे से बाहर निकला और उसके छिपने के लिये जो स्थान निश्चित किया गया था, वहाँ पहुँच गया। मीर्जा के सेवकों में से भी जो जिधर भाग सका, वह उधर चला गया। जब सलीम शाह को इस घटना का पता चला तो उसने बहुत बड़ी सख्या में लोगों को मीर्जा का पता लगाने के लिये नियुक्त किया। जब राजा को ज्ञात हुआ कि सलीम शाह ने सेना नियुक्त कर दी है तो उसने मीर्जा को कपूर[2] के राजा के पास, जो कि वहाँ के स्थानों में बड़ा दृढ था, भेज दिया। उसने भी भय के कारण उसे सामान देकर जम्मू की ओर भेज दिया। जम्मू के राजा ने दूरदर्शिता के कारण, जो जमीदारों की प्रथा है, मीर्जा को अपनी विलायत में न आने दिया। वह परेशान होकर मानकोट की विलायत की ओर रवाना हुआ। वह वहाँ बन्दी बना ही लिया जाने वाला था कि अत्यधिक कठिनाइयों के उपरान्त भेस बदल कर स्त्रियों के वेश में एक अफ़गान के साथ, जो घोड़ों का व्यापारी था, काबुल की ओर चल खड़ा हुआ। उसने कुत्सित विचारों एव मिथ्यापूर्ण योजनाओं के अधीन सुल्तान आदम गक्कर से इस आशय से भेंट की कि सम्भवत उसकी सहायता से कोई सफलता प्राप्त कर सके। सुल्तान आदम गक्कर ने, उस निष्ठा की दृष्टि से जो पूर्वजों के समय से इस वश के प्रति चली आ रही थी, मीर्जा को नाना प्रकार के बहानों से अपने पास रोक लिया और सम्मानित दरबार में प्रार्थना पत्र भेजकर उन्हें वास्तविक स्थिति की सूचना दी। मीर्जा ने भी उसके ललाट से निराशा के अक्षर पढ़कर अपने आदमी के हाथ, जैसा कि उल्लेख हो चुका है, प्रार्थनापत्र उनकी सेवा में भेजा। जितने दिन तक वह वहाँ रहा उसने यद्यपि इस बात का अत्यधिक प्रयत्न किया कि किसी न किसी प्रकार गक्करों को मिला कर कोई काम बना ले किन्तु इसमें उसे कोई सफलता न हुई। उसे उनके प ने से निकलने की भी कोई सम्भावना दृष्टिगत न हुई। सक्षेप में, जब सुल्तान आदम के राजदूत ने वास्तविक स्थिति का उल्लेख किया तो उन्होंने उस ओर प्रस्थान करने का सकल्प कर लिया। हज़रत मकानी को अपने भाग्यशाली लश्कर के साथ ले लिया। ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद को काबुल के शासन प्रबन्ध एव प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त करके उस ओर भेज दिया। जब विजयी पताकायें सिन्ध[3] के समीप पहुँची तो उन्होंने काजी हामिद को, जो कि लश्कर का (१११) काजी था, राजदूत बनाकर सुल्तान आदम के पास भेजा ताकि वह उससे फर्श का चुम्बन कराये जिससे उसके सम्मान में वृद्धि हो सके और मीर्जा को सान्त्वना देकर अपने साथ ले आये। जब भाग्यशाली पताकाओं ने सिंध नदी पार कर ली और सुल्तान आदम के आगमन के कोई चिह्न दृष्टिगत न हुए तो हज़रत जन्नत आशियानी ने मुनइम खाँ को उसके पास भेजा। ताकि वह तथ्यपूर्ण बातों द्वारा उसकी तसल्ली करके सेवा में उपस्थित करे। मुनइम खाँ ने सुल्तान आदम को हृदयग्राही बातें कहकर उसे आगमन हेतु दृढ़ कर लिया। मीर्जा को भी सान्त्वना देकर अपने साथ लाया। परहाला के समीप उन लोगों ने जमीनबोस का सम्मान प्राप्त किया। हज़रत जन्नत

१ सम्भवत. दुआओं की पुस्तक।
२ अकबर नामा में 'कहलूर'।
३ [illegible]

आशियानी ने एक भव्य दरबार करके उनसे उचित रूप से भेंट की। मीर्ज़ा कामरान के प्रति, इतने अधिक अपराधों के बावजद, जिनमें से प्रत्येक कठोर दंड का पात्र था, नाना प्रकार की कृपादृष्टि प्रदर्शित की किन्तु समस्त निष्ठावानों एव अमीरों ने सर्व सम्मति से निवेदन किया कि "दुर्व्यवहार एव कृतघ्नता की कोई सीमा होनी चाहिये। यदि हजरत जन्नत आशियानी अपनी स्वाभाविक कृपा एव अनुकम्पा के कारण उसके अपराधों को क्षमा कर रहे हैं तो हम लोगों में इससे अधिक कष्ट उठाने की शक्ति नहीं। मीर्ज़ा की शत्रुता की तलवार के घावों से हमारे हृदय में नासूर पड़ गये हैं अपितु एक ससार को उसकी शरारत एव उसके फसाद के कारण अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड रहा है। यदि इस बार भी हजरत उसके अपराधों को क्षमा कर देंगे तो ये दास सेवा त्याग कर दरवेशों का वस्त्र धारण कर लेंगे ताकि उसके भय से सुरक्षित रह सकें और इसी समय तलवारें खोलकर रख देंगे।" सभी ने मिलकर एव सर्वसम्मति से यह बात कही। क्योंकि बहुत समय से मीर्ज़ा के षड्यत्र एव विद्रोह के कारण लोगों की धन सम्पत्ति नष्ट भ्रष्ट हो रही थी एव मर्यादा का विनाश हो रहा था तथा प्रत्येक युद्ध में न जाने कितने आदमी मारे जा रहे थे फिर भी हज़रत जन्नत आशियानी इस बात को पसन्द न करते थे। यहाँ तक कि अमीरों ने धर्म के प्रतिष्ठित व्यक्तियों एव राज्य के सर्वोत्कृष्ट सहायकों के हस्ताक्षर से एक पत्र तैयार करवाया और उसे उनकी सेवा में प्रस्तुत किया। हजरत जन्नत आशियानी ने उसे मीर्ज़ा के पास भेज दिया। मीर्ज़ा ने जब अपनी कुकृतियों का पत्र देखा तो उसने कहला भेजा कि "जिन अमीरों ने आज इस पत्र पर अपनी मुहर लगाई है और आपको मेरी हत्या करा देने के लिये प्रेरित कर रहे हैं, उन्हीं ने मुझे इस दिन को पहुँचाया है।" हज़रत जन्नत आशियानी सभी के आग्रह एव अमीरों की प्रार्थना के बावजूद उसकी हत्या कराने पर राज़ी न हुए। समय की आवश्यकताओं पर दृष्टि रखते हुए तथा सब लोगों को सतुष्ट करने के विचार से उन्होंने आदेश दिया कि उसको अधा बना दिया जाय ताकि वह अपनी कुकृतियों का बदला अपनी आँखों से देख ले। इस सेवा हेतु अली दोस्त बारबेगी, सैयिद मुहम्मद पकना एव गुलाम अली शशअगुश्त को नियुक्त किया। जब वे मीर्ज़ा के खेमे में प्रविष्ट हुए तो उसने सोचा कि वे उसकी हत्या हेतु आ रहे हैं। वह तत्काल अपनी जगह से उछल कर मुक्का तानकर उनकी ओर बढ़ा। अली दोस्त ने कहा, "मीर्ज़ा धैर्य धारण करो। हत्या का आदेश नहीं है। व्याकुलता किस कारण है। फसाद का अन्त कराने के लिये उन्होंने आदेश दिया है कि तुम्हें अधा बना दिया जाय।" मीर्ज़ा ने इस आदेश को अपनी आँखों पर स्वीकार किया और आत्मसमर्पण कर दिया। यहाँ तक कि उसकी आँखों में सलाई फेर दी गई। हज़रत जन्नत आशियानी ने कृपालु हृदय को इस घटना पर अत्यधिक शोक हुआ और उन्होंने अत्यधिक विलाप किया। यह घटना ९६० हि० के अन्त (नवम्बर दिसम्बर १५५३ ई०) में घटी। ख्वाजा मुहम्मद फरन्खुदी ने इस घटना की तिथि 'नीश्तर' के अक्षरों से निकाली।

मीर्ज़ा ने उसी दिन मुनइम खा को सदेश भेजा कि बेग मुलूक को मेरी सेवा हेतु बादशाह से माँग लिया जाय। जब मीर्ज़ा की प्रार्थना मुनइम खा ने प्रस्तुत की तो उन्होंने बेग मुलूक को मीर्ज़ा की सेवा हेतु नियुक्त कर दिया। मीर्ज़ा ने उस प्रेम एव निष्ठा के कारण जो उसके प्रति उसे थी, उसके हाथों को पकड कर अपनी अधी आँखों पर रखा और यह शेर पढ़ा।

शेर

'यद्यपि मेरे नेत्रों पर परदा डाल दिया गया है,
देख रहा हूँ उस नेत्र से तुझे जिससे प्राय तेरा मुँह देखता रहा हूँ।'

हज़रत जहाँबानी ने इस घटना के उपरान्त उस समूह को दड देने के लिये, जिन्होंने विद्रोह कर दिया था एव सुगर[१] का निर्माण करा लिया था, भाग्यशाली पताकाये बलन्द की। उन अभागों ने अपने प्राणो से हाथ धोकर विजयी वीरो से युद्ध किया और उनमे से बहुत बडी सख्या को तलवार के घाट उतार दिया गया। भाग्यशाली सेना में से ख्वाजा कासिम मशहदी एव कुछ अन्य लोग शहीद हुए। जब वे इस ओर से निश्चिन्त हो लिये तो उन्होंने कश्मीर पर आक्रमण करने का, जिसके विषय में वे वर्षों से सोच रहे थे सकल्प कर लिया किन्तु अमीर लोग समय की आवश्यकता पर दृष्टि रखते हुए इस अभियान से सहमत न थे। उन्होंने कश्मीर की तुलना कुएँ तथा (११२) बन्दीगृह से करके उसकी इस प्रकार निन्दा की कि उनका हृदय इस ओर से घृणा करने लगे। उन्होंने यह भी कहा कि, "सलीम शाह विजयी लश्कर के प्रस्थान के समाचार पाकर अत्यधिक सेना सहित पजाब की ओर रवाना हो चुका है। राज्य के सहायको ने अफगानो से युद्ध करने की यथारूप तैयारी नही की है। यदि सम्मानित लश्कर कश्मीर के पर्वतों में प्रविष्ट हो जायगा और अफगान लोग दर्रों को आकर रोक लेंगे तो फिर क्या होगा? राज्य के हित में यह उचित है कि इस बार वह सकल्प त्याग दिया जाय और राजधानी काबुल की ओर लौट चलें। क्योंकि अब षड्यन्त्रकारियो की ओर से सतुष्ट हो चुके हैं अत उचित रूप से तैयारी करके एव नई सेना भरती करके हिन्दुस्तान को विजय हेतु प्रस्थान किया जाय और नित्यप्रति उन्नत प्रताप से अफगानो को छिन्न भिन्न कर दिया जाय।" हज़रत जन्नत आशियानी ने मीर्ज़ा हैदर के प्रेरित करने के कारण इस ओर कोई ध्यान न दिया और विजयी पताकाओ को कश्मीर की ओर बलन्द किया। हज़रत ख़ाकानी को काबुल की हुकूमत हेतु नियुक्त कर दिया किन्तु उसी समय अमीरो के अधिकाश सेवक एव सिपाही अपने स्वामियों से आज्ञा लिये बिना पृथक् हो गये और हज़रत ख़ाकानी के लश्कर के साथ काबुल की ओर चल खडे हुए। हज़रत जन्नत आशियानी के साथ सरदारो के अतिरिक्त बहुत थोडे से लोग रह गये। इस कारण वे अत्यधिक रुष्ट हुये। उन्होंने आदेश दिया कि कुछ विश्वासपात्र प्रयत्न करके लोगों को मार-मार कर वापस करें। यदि हत्या करा देने की भी आवश्यकता हो तो सकोच न करें तथा आदेश की प्रतीक्षा न करें। उन्होंने कश्मीर की ओर प्रस्थान करने के विषय में कुरान मजीद से फाल निकाली। हज़रत यूसुफ का किस्सा निकला। जिन लोगों को बात करने की अनुमति थी उन्होंने अपनी योग्यतानुसार उसका फल बताया। ख्वाजा हुसेन मरवी ने निवेदन किया कि कश्मीर के विषय में कहते हैं कि वह कुआँ तथा बन्दीगृह है। इसी कारण हज़रत यूसुफ का किस्सा निकला है। विवश होकर उन्होंने कश्मीर की ओर प्रस्थान करने के विचार त्याग दिये और काबुल की ओर रवाना हुए। जब सिंध नदी के तट पर विजयी लश्कर लगे तो मीर्ज़ा कामरान ने हिजाज़ की यात्रा और काबे की ज़ियारत हेतु प्रस्थान करने की अनुमति चाही। इस कारण कि वे मीर्ज़ा को सतुष्ट करना चाहते थे, उन्होंने निसकोच आज्ञा दे दी। जिस रात्रि में वे विदा होने लगे वे स्वय मीर्ज़ा को पहुँचाने के लिये तशरीफ ले गये। मीर्ज़ा की अंधेरी कोठरी को अपने आगमन से प्रकाश प्रदान किया। आदर सम्मान प्रदर्शित करने के उपरान्त मीर्ज़ा ने यह शेर पढ़ा

१ गाड़ियों इत्यादि से तैयार किया हुआ एक प्रकार का क़िला।

शेर

'दरवेश की कुलाह् की चोटी ने आकाश को छू लिया,
कारण कि तेरे सरीखे बादशाह् ने उसके सिर पर छाया डाली है।'

तदुपरान्त उसी समय यह शेर पढ़ा

शेर

'मेरे प्राणों पर तेरे द्वारा जो कुछ गुजरती है, उसके प्रति आभार प्रदर्शन करना चाहिये,
चाहे वह अत्याचार का वाण हो, और चाहे जुल्म का खजर।'

यद्यपि दूसरे शेर में कृतज्ञता प्रकट की गई है किन्तु शेर समझने वाले समझ गये कि यह शिकायत से परिपूर्ण है। हजरत जन्नत आशियानी ने अत्यधिक कृपा प्रदर्शित करते हुए रो रोकर कहा कि, "ईश्वर को सब हाल ज्ञात है। यह कार्य मैंने अपनी इच्छा से नहीं किया, फिर भी जो कुछ मैंने किया है उसके प्रति मैं अत्यधिक लज्जित हूँ। काश, जो कुछ मेरे हाथों तुम्हारे ऊपर बीती वह तुम्हारे द्वारा मेरे ऊपर बीत जाती।" मीर्जा ने हजरत जन्नत आशियानी के प्रति शुभ-कामनायें की और हाजी यूसुफ से पूछा कि "यहाँ कौन-कौन है?" उसने बताया कि तरदी बेग खा, मुनइम खा, बाबूस ख्वाजा, हुसेन मरवी, अब्दुल हई, मीर अब्दुल्लाह, खजर बग एव आरिफ बेग।

मीर्जा ने कहा कि, "लोगो तुम साक्षी रहना। यदि मैं अपने आपको निरपराध जानता तो भी ऐसे अवसर पर उनको क्षमा कर देता किन्तु मुझे विश्वास है कि मैं इस योग्य था कि मेरी हत्या करा दी जाती परन्तु हजरत जन्नत आशियानी ने मेरी हत्या न कराई और मुझे हज जाने की अनुमति दे रहे है। मैं हजरत जन्नत आशियानी की कृपा एव अनुकम्पा के प्रति अत्यधिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। मैंने जो भी दुष्टता एव विश्वासघात किया उसका मुझे पूर्ण रूप से बदला नहीं मिला।"

मिसरा

'मैंने अपने स्वभाव के अनुसार किया और उन्होंने अपने।'

तदुपरान्त उसने अपने पुत्रों की सिफारिश की। हजरत जन्नत आशियानी ने उदारता प्रदर्शित करते हुए उसे स्वीकार कर लिया। मीर्जा को पादशाही कृपाओं द्वारा सम्मानित करके विदा कर दिया। क्योंकि यह निश्चय हो चुका था कि मीर्जा उनके सामने न तो रोएगा और न व्याकुलता प्रदर्शित करेगा अत वह अपने ऊपर नियत्रण रखे रहा। जैसे ही वे दौलतखाने की ओर जाने लगे वह फूट फूटकर रोने लगा। दूसरे दिन हजरत जन्नत आशियानी ने आदेश दिया कि मीर्जा के सेवकों में से जो कोई भी उसके साथ जाना चाहता है, उसे कोई रोक टोक नहीं। कोई भी तैयार न हुआ। यद्यपि लोग मित्र एव सहायक होने की डींग मारते थे किन्तु उन्होंने मित्रता त्याग दी। चिलमा कोका ने, जिसे उसके सत्य एवं उसकी उत्तम सेवाओं के कारण हजरत खाकानी ने आलम खा[१] की उपाधि प्रदान कर रखी है अपने प्राण अपने स्वामी की सेवा हेतु

१ अकबर नामा में 'खाने आलम'।

समर्पित कर दिये। इसका उल्लेख उचित स्थान पर किया जायेगा। उस समय वह हज़रत जहाँबानी (११३) का सुफ़रची[1] था। उन्होंने उससे पूछा कि, "चिलमा कोका, तू जायेगा या सेवा में रहेगा ?" यद्यपि उसने हज़रत जन्नत आशियानी की उत्तम सेवायें की थी और उनका विश्वासपात्र था किन्तु उसने स्वामीभक्ति को ज़ाहरी आनन्द पर प्राथमिकता देकर निवेदन किया कि "मैं अपने लिये यह उचित समझता हूँ कि इन अन्धकारमय तथा कठिनाइयों के दिनों में जब कि मीर्ज़ा अधा बनाया जा चुका है, उसकी सेवा करूँ।' हज़रत जन्नत आशियानी ने आदमी को पहिचानने की कसौटी एव सत्य की तराज़ू होने के कारण उसके उत्तम विचारों की सराहना करते हुए उसे बिदा कर दिया। जो कुछ धन सम्पत्ति मीर्ज़ा की यात्रा के व्यय हेतु निश्चित की गई थी, वह उसे प्रदान कर दी। बेग मुलूक यद्यपि मीर्ज़ा कामरान का बडा स्नेहपात्र था किन्तु कुछ मज़िल आगे जाकर लौट आया और हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में उपस्थित हुआ। हज़रत जन्नत आशियानी को यह बात बहुत बुरी लगी। यद्यपि वह बडा रूपवान् था किन्तु उन्होंने उसे अपनी दृष्टि से गिरा दिया। मीर्ज़ा सिंध नदी से तत्ता की ओर रवाना हुआ और वहाँ से हज को चल दिया। उसने तीन हज किये और १५ ज़िलहिज्जा ९४६ हि० (९ अक्तूबर १५५७ ई०) को मृत्यु को प्राप्त हो गया[2]।

सक्षेप में, जब बिक्राम नामक स्थान पर, जो कि पेशावर के नाम से प्रसिद्ध है, ससार विजय करने वाले पादशाह के खेमे लगे तो पहलवान दोस्त मीर बर को आदेश हुआ कि वह वहाँ के किले का, जिसे अफ़गानों ने नष्ट भ्रष्ट कर दिया है, निर्माण कराये। उन्होंने मोर्चे बाँट दिये और अल्प समय में वह उचित रूप से तैयार हो गया। उन्होंने सिकन्दर खा को अपने निष्ठावानों की एक सेना सहित किले की प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त करके प्रस्थान की पताकायें काबुल की ओर बलन्द कीं। उनके प्रस्थान के उपरान्त अफ़गानों ने (उस किले पर) आक्रमण कर दिया। सिकन्दर खा ने वीरता एव किले की प्रतिरक्षा का प्रदर्शन किया और अफ़गानों का छिन्न भिन्न कर दिया।

जब विजयी लश्कर काबुल पहुँच गया तो बुधवार १५ जमादी-उल-अव्वल ९६१ हि० (१८ अप्रैल १५५४ ई०) को माह चूचक बेगम से एक पुत्र का जन्म हुआ। हज़रत जन्नत आशियानी ने उसका नाम मुहम्मद हकीम रखा। उसके जन्म की तारीख़ 'अबुल फज़ायल' के अक्षरों से निकाली गई। लगभग उसी समय जूजूक मीर्ज़ा की पुत्री से एक पुत्र का जन्म हुआ। उसका नाम सुल्तान इबराहीम रखा गया। वह शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो गया।

शेर

'वह अनुकम्पा के आकाश की एक विद्युत था,
जन्म एव मृत्यु साथ साथ मिले हुए।'

भाग्यशाली पताकाओं का कधार की ओर बलन्द होना तथा राजधानी को वापसी

क्योंकि कुछ षड्यन्त्रकारियों ने बैराम खा के विषय में असत्य एव निराधार बातें हज़रत

१ दस्तर ख़्वान (भोजन का प्रबधक)।

२ अकबर नामा में ११ ज़िलहिज्जा। सम्भवत. याज़दह (११) पाँज़दह (१५) छप गया है।

जन्नत आशियानी तक पहुँचाई अत वे इस वर्ष शीत ऋतु के प्रारम्भ में कन्धार की ओर रवाना हुए। काबुल का शासन प्रबन्ध अली कुली अन्दराबी को प्रदान हुआ। खिलाफत के नेत्रों की ठडक को वे गज़नी तक, जो उनके सेवकों की जागीर था, ले गये और वहाँ से राजधानी को विदा कर दिया और स्वय कन्धार की ओर रवाना हुए। बैराम खा जो कि योग्यता की खिलअत से निष्ठा-पूर्वक सुशोभित था, उनके आगमन को अपना बहुत बडा सौभाग्य समझकर कन्धार से दस फरसख आगे सिर के बल उनका स्वागत् करने पहुँचा। हज़रत जन्नत आशियानी को इस बात का विश्वास हो गया कि जो कुछ उसके विषय में कहा गया, सब झूठ था। वे शुभ मुहूर्त में कन्धार में प्रविष्ट हुए तथा सफलता के द्वार समार वालो के लिये खोल दिये। उनकी सम्मानित रिकाब के साथ जो लोग थे उनमें से कुछ प्रतिष्ठित लोग इस प्रकार हैं —अबुल मआली, मुनइम खा, खिज्र ख्वाजा खा, मुहिब अली खा, मीर खलीफ़ा, इस्माईल दूल्दी, हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी, ख्वाजा हुसेन मरवी, मौलाना अब्दुल बाकी सद्र इत्यादि। बैराम खा ने सेवा एव दास्ता प्रदर्शित करने में किसी प्रकार की कोई कसर न उठा रखी। वे उस शीत ऋतु में कन्धार में आनन्द मगल के साथ समय व्यतीत करते रहे। इस बीच में खासे की सरकार के लिये जो कुछ आवश्यक था, सभी का बैराम खा ने प्रबन्ध किया। सभी पादशाही अमीरों एव दासो को अपने सेवकों के घरो में ठहराया और घर के स्वामियों को उनके आतिथ्य का आदेश दिया। हज़रत जन्नत आशियानी (११४) सर्वदा आनन्द मगल के साथ समय व्यतीत करते एव पादशाहाना जश्न कराते रहे। वे एकान्तवासी दरवेशों की सेवा में उपस्थित हुआ करते थे। विशेष रूप से वे मौलाना ज़ैनुद्दीन महमूद कमानगर की सेवा से लाभान्वित हुआ करते थे। उसने अपनी वासनाओं को पूर्ण रूप से अपने वश में कर रखा था। दोनों ओर से पवित्र बातें कही जाती थीं। वे अपने उद्देश्य की पूर्ति एव अपने सौभाग्य की उन्नति के लिये उससे दैवी बशारत प्राप्त किया करते थे। ख्वाजा गाज़ी, जो कि स्वर्गीय शाह तहमास्प के पास दूत बनकर भेजा गया था, सम्मानित लश्कर के पहुँचने के पूर्व कन्धार आ गया था। उसने धरती चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। उसे उसकी उत्तम सेवाओ के कारण इशराफ़े दीवानी का मसब प्रदान किया गया। उस समय सुल्तान मुअज़्ज़म खा ने ज़मीनदावर से आकर सेवा का सौभाग्य प्राप्त किया। हिरात के हाकिम मुहम्मद खा ने अपने विश्वास-पात्र मेहतर करा द्वारा उत्तम पेशकश एव निष्ठायुक्त प्रार्थनापत्र दरबार में भेजे और अपार कृपाओं का पात्र बना। जी बहलाने के लिये उन्होंने शोर अन्दाम के समीप कमरशाह शिकार का आयोजन कराया और इच्छानुसार शिकार किया।

कन्धार में जो अनुचित घटनायें घटीं उनमें शेर अली बेग की हत्या है जो शाह अबुल मआली की धृष्टतापूर्ण तलवार द्वारा मारा गया। इसका सक्षेप उल्लेख इस प्रकार है बेकरा बेग मीर शिकार का पिता शेर अली बेग शाह से अनुमति लिये बिना उनकी सेवा से चला आया और हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा का सौभाग्य प्राप्त किया। शाह अबुल मआली ने, जो विश्वास-पात्र होने के कारण अभिमान के नशे में मस्त था, खारजिया द्वारा युद्ध से प्रभावित होकर धर्मान्धता के कारण कई बार स्वर्ग रूपी दरबार में कहा कि, "मैं इस राफ़ज़ी की हत्या कर दूँगा।" हज़रत जन्नत आशियानी उस स्नेह के कारण, जो कि उसके प्रति उन्हे था, उसकी बात को मज़ाक समझकर टालते रहते थे। यहाँ तक कि एक रात्रि में उसने घात लगाकर उस अभागे की हत्या कर दी। हज़रत जन्नत आशियानी को इसका बडा दुख हुआ किन्तु अबुल मआली के प्रति उनका जो स्नेह था उसके कारण उन्होंने उसे यथा-रूप दड न दिया।

जब बैराम खा की निष्ठा एव उत्तम सेवाओं का उन्हे विश्वास हो गया तो उन्होंने कन्धार को पूर्व की भांति उसकी जागीर में रहने दिया और जमीनदावर को मुअज्जम सुल्तान से लेकर अली कुली खा के भाई बहादुर खा को दे दिया। क्योकि उन्होने हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का सकल्प कर लिया था अत उन्होने बैराम खा को आदेश दिया कि इस युद्ध की व्यवस्था करके वह शीघ्र सेवा में पहुँच जाय। वली बेग एव हाजी मुहम्मद सीस्तानी को, जिनके विरुद्ध कुछ बातें कही गई थीं, अपनी भाग्यशाली रिकाब के साथ लेकर काबुल की ओर रवाना हो गये। हज़रत *ख़ाक़ानी ने ग़ज़नी पहुच कर उनका स्वागत् किया और सेवा में उपस्थित होने का सम्मान प्राप्त* किया। मुहम्मद कुली खा बरलास, अत्का खा एव एक अन्य समूह ने उनकी सेवा में धरती चुम्बन का सौभाग्य प्राप्त किया। ९६१ हि० के अन्त (नवम्बर १५५४ ई०) में काबुल ने उनके सम्मानित चरणो के कारण आकाश सरीखी रौनक प्राप्त कर ली। उस समय उन्होंने मुनइम खा को हज़रत ख़ाक़ानी का अतालीक नियुक्त करके सम्मानित किया। मुनइम खा ने इस उत्कृष्ट देन के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और उचित पेशकश प्रस्तुत की। इस शुभ वर्ष में शाह तहमास्प की ओर से ख़लील सुल्तान का पुत्र उलुग बेग राजदूत बनकर आया एव उत्तम उपहार प्रस्तुत किये। इससे उनकी *प्रसन्नता में अत्यधिक वृद्धि हो गई। क्योकि उन्होंने हिन्दुस्तान पर आक्रमण करना निश्चय* कर लिया था अत वे सर्वदा इस अभियान की तैयारी तथा सेना एकत्र करने का प्रयत्न करते थे। ईद की दूसरी तारीख़ (३१ अगस्त १५५४ ई०) को बैराम खा ने उत्तम सेना सहित सेवा में उपस्थित होकर चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त किया। हज़रत जन्नत आशियानी ने उसकी प्रसन्नता एव उसके प्रति अत्यधिक कृपादृष्टि होने के कारण ईद का पुन जश्न कराया और कब्क पर निशाना चलाने एव चौगान खेलने का आदेश हुआ। प्रताप के रणक्षेत्र के उस शहसवार तथा ऐश्वर्य एव वैभव की वाटिका के उस पौधे अर्थात् हज़रत ख़ाक़ानी को आदेश दिया गया। उन्होंने घोड़े पर सवार होकर पहले ही बाण से कब्क को इस प्रकार छेद दिया कि लोग हर्षनाद लगाने लगे एव कुशल धनुर्धारी आश्चर्य में पड गये। बैराम खा ने उनके कब्क पर निशाना लगाने की प्रशसा में एक क़सीदे की रचना की। उसका प्रथम शेर इस प्रकार है

शेर

'तेरे बाण ने कब्क की गांठ को कजक[1] से छीन लिया,
उसने कृत्तिका नक्षत्र को, हिलाल[2] से टूटने वाले तारों के समान काट
डाला।'[3]

उन आनन्द मगल के दिनों में जब कि वे सर्वदा हिन्दुस्तान की विजय के विषय में सोचा करते थे और इस अभियान की तैयारी किया करते थे उस देश की अव्यवस्था, सलीम शाह की मृत्यु एव हिन्दुस्तान की उथल-पुथल के समाचार कुछ निष्ठावानों के प्रार्थनापत्रों द्वारा उनके सम्मानित

१ मद्दू जैसी कोई वस्तु जो कब्क पर निशाना लगाने के खेल में उस खम्भे पर लगाई जाती है जिस पर सोने या चाँदी का गेंद अथवा कद्दू लटकाया जाता है।
२ कजक का झुकाव जो शिशु चन्द्र के समान होता है।
३ इस मिसरे का अर्थ स्पष्ट नहीं।

(११५) कानों तक पहुँचे। मौलाना अब्दुल्लाह सुल्तानपुरी ने, जिसे हजरत जन्नत आशियानी ने अपनी कृपा एवं उदारता के कारण मख्दूमुल मुल्क की उपाधि द्वारा सम्मानित किया था, लाहौर से हाजी पराचा व्यापारी द्वारा एक जोड़ा मोजा एवं कमची हजरत जन्नत आशियानी की सेवा में भेजी और हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के लिये संकेत किया। हजरत जहाँबानी ने कहा कि, "हम इस मोज़े से हिन्दुस्तान की विजय का फाल निकालते हैं। कारण कि यह प्रसिद्ध है कि तुर्किस्तान सिर, खुरासान सीना एवं हिन्दुस्तान पाँव है। यह फाल उस फाल के समान है जिसे हजरत साहिब क़िरानी ने निकाला था।" यह घटना इस प्रकार है कि जिस वर्ष वे मावराउन्नहर की विजय हेतु खुरासान की ओर रवाना हुए तो सगीअता नामक दरवेश, जिसने अत्यधिक रियाज़तें की थी एवं अपने हृदय की सफाई एवं चमत्कारों के लिये प्रसिद्ध था, से भेंट करने के लिये गये। वह उनके पास एक भेड़ का सीना भोजन हेतु लाया। हज़रत साहिब किरान ने अपने दरबारियों से कहा कि, "हम इस सीने से खुरासान की विजय का फाल निकालते हैं कारण कि खुरासान संसार का सीना है।" हजरत जन्नत आशियानी ने कहा कि, "यदि ईश्वर ने चाहा तो यह फाल हजरत साहिब किरान की फाल के समान होगी।"

सलीम शाह वल्द शेर शाह का संक्षिप्त हाल तथा हजरत जन्नत आशियानी के हिन्दुस्तान पहुँचने तक जो घटनाएँ घटी

जब शेर खाँ ने हिन्दुस्तान पर अधिकार जमा लिया और ५ वर्ष, २ मास तथा १३ दिन तक स्वतंत्र रूप से शासन कर चुका तो उसके जीवन के असबाब मृत्यु की अग्नि द्वारा नष्ट हो गये। उसका छोटा पुत्र सलीम शाह अपने पिता की मृत्यु के ८ दिन उपरान्त उसका उत्तराधिकारी बना। उसने ८ वर्ष, २ मास तथा ८ दिन तक राज्य किया। इस बीच में उसे कभी भी युद्ध एवं संघर्ष से शान्ति न मिली। कुछ समय तक वह अपने भाई आदिल खाँ तथा शेर शाह के दास ख्वास खाँ से युद्ध करता रहा और उन्हें पराजित कर दिया। कुछ समय वह नियाज़ी अफगानों से युद्ध करता रहा जो पंजाब के हाकिम थे और जिनका सरदार हैबत खाँ था। उसने उन्हें भी पराजित कर दिया। उन लोगों ने कश्मीर की पर्वतीय कंदराओं में शरण ले ली और वहाँ नष्ट भ्रष्ट हो गया। बहुत समय तक वह गक्करों के कबीलों से युद्ध करता रहा। क्योंकि यह लोग इस सम्मानित वंश के प्रति निष्ठावान् होने का दावा करते थे अतः वह उनके विरुद्ध कोई सफलता न प्राप्त कर सका। उसने रोहतास के किले को, जिसका निर्माण शेर शाह ने प्रारम्भ कराया था, पूरा कराया और सिवालीक पर्वत के मध्य में अपने लिये एक सुरक्षित स्थान निकाल कर मानकोट के किले का निर्माण कराया। क्योंकि वह अफगान एवं सैनिकों से सर्वदा दुर्व्यवहार किया करता था अतः उनसे हमेशा भयभीत रहता था। वह अधिकांश ग्वालियर के किले में समय व्यतीत करता रहता था। यद्यपि वह प्रजा से उत्तम व्यवहार करता था किन्तु सैनिक उसके पूर्णतः विरोधी हो गये थे और वे विवशता के कारण कुछ न कर सकते थे तथा समय की प्रतीक्षा किया करते थे। संयोग से उसके एक विश्वासपात्र ने, जिसका नाम इकबाल खाँ था, जिससे वह उसकी सुन्दरता के कारण अत्यधिक स्नेह किया करता था और जिसे उसने अपना अमीर नियुक्त कर दिया था, एक दुष्ट को इस बात के लिये तैयार किया कि उसे जब कभी भी अवसर मिले वह उसकी हत्या कर दे। जिस समय सलीम शाह मानकोट के किले का निरीक्षण करने जा रहा

था और घोड़े पर पलथी मारे बैठा हुआ था, वह प्रार्थियों के समान एक ओर से पहुँचा और उसने उसपर तलवार का वार किया। जैसे ही उसके तलवार लगी सलीम ने घोड़े से कूदकर उसे अपने अधिकार में कर लिया। तदुपरान्त उसकी हत्या का आदेश दे दिया। यद्यपि उसके विश्वास-पात्रों ने अत्यधिक आग्रह किया कि इस बात की छानबीन की जाय कि किस अभागे की प्रेरणा से उसने यह अत्याचार किया है किन्तु सलीम शाह ने समय के औचित्य पर दृष्टि रखते हुए यह बात स्वीकार न की और उसके विषय में पूँछताँछ कराने के पूर्व ही उसकी हत्या करा दी। क्योंकि उसे इस बात का विश्वास था कि उसने यह धृष्टता इकबाल खाँ के कहने पर की है अतः उसने इकबाल खाँ को अपनी निगाहों से गिरा दिया। उसकी सेना एवं परिजनों को अपने अधिकार में कर लिया तथा उसे बन्दी बना लिया। २२ जीकाद ९६० हि० (३० अक्तूबर १५५३ ई०) को उसकी मृत्यु उसके तुच्छ अंगों में जहरबाद के कारण हो गई।

उसकी वसीयत के अनुसार उसका पुत्र फ़ीरोज़ खाँ, जिसकी अवस्था बड़ी कम थी, अपने पिता के स्थान पर बैठा। कुछ दिन उपरान्त फ़ीरोज़ खाँ के मामा मुबारिज़ खाँ ने उस निरपराध की हत्या कर दी और राज्य पर अधिकार जमा लिया तथा अपनी उपाधि मुहम्मद आदिल रखी। वह शेर शाह के छोटे भाई निज़ाम खाँ का पुत्र था। यह बड़ी विचित्र बात है कि इस निज़ाम के एक पुत्र तथा तीन पुत्रियाँ थीं। पुत्रों ने राज्य प्राप्त किया और तीनों पुत्रियों के पतियों ने भी उच्च पद प्राप्त किया। उसके जामाताओं में से एक सलीम शाह, दूसरा सिकन्दर सूर तथा तीसरा (११६) इबराहीम सूर था। इन दोनों का हाल संक्षिप्त रूप से लिखा जायेगा। हीमू बदगोई[1] एवं फ़ितना जूई के कारण दरिद्रता के गर्त से प्रतिष्ठा की बलन्दी पर पहुँचा और मुबारिज़ खाँ का वकील हो गया। क्योंकि मुबारिज़ खाँ सर्वदा मदिरापान एवं भोग-विलास में व्यस्त रहता था अतः प्रजा की ओर कोई ध्यान न देता था। हीमू को इतना अधिकार प्राप्त हो गया कि मुबारिज़ खाँ केवल नाममात्र को स्वामी एवं सरदार रह गया। संसार में एक विचित्र प्रकार की उथल पुथल मच गई। अब थोड़ा सा हीमू का शोचनीय हाल लिखा जाता है।

वह कमीना बड़ा ही कुरूप एवं हसब नसब[2] से शून्य था। मेवात के अधीनस्थ रेवाड़ी क़स्बे में दूसर बक्कालों के समूह से, जो कि बक्कालों की सबसे निम्न जाति है, सम्बन्धित था। वह गलियों के पीछे बड़ी ही बुरी दशा में नमक शोरा बेचा करता था। यहाँ तक कि वह अपनी युक्ति द्वारा सलीम शाह की सरकार के बक्कालों में सम्मिलित हो गया। लोगों की चुगली खाने, उनकी बुराई निकालने एवं सूझ-बूझ के कारण वह सर्वदा लोगों के विषय में नाना प्रकार की बातें किया करता था। उसकी सरकार के आमिलों को वह पकड़वाया करता तथा कष्ट में डाला करता था। वह लोगों के सम्मान को नष्ट कराया करता था। सलीम शाह ने भी उसकी बातें सुननी प्रारम्भ कर दी थीं। लोगों का गुप्त हाल बता और दुष्टों को दंड दिला कर, चिकनी चुपड़ी बातों एवं चुग़लख़ोरी से उसने सम्मान प्राप्त कर लिया। जब सलीम शाह की मृत्यु हो गई और मुबारिज़ खाँ, जो कि सलीम शाह के चाचा का पुत्र था, सिंहासनारूढ़ हुआ तो वह उसके

१ दूसरों की निन्दा करना; चुग़लख़ोरी।
२ कुलीनता।

अधीन पूर्ण अधिकार सम्पन्न वकील हो गया। लोगो की नियुक्ति, उनको पदच्युत करना तथा लेन देन सब कुछ उसी के द्वारा होता था। उसने शेर शाह एव सलीम शाह के खजानो एव फीलखानो पर अधिकार जमा लिया और निसकोच लोगो को दान पुण्य में लुटाने लगा। अल्प समय मे उसने धन लुटाकर लोगो के हृदय अपनी मुट्ठी मे कर लिये। उसे इतनी अधिक सफलता प्राप्त हो गई कि अफगान लोग बडी प्रसनता से उसकी सेवा करने लगे। कुछ दिन उपरान्त उसने राय की उपाधि धारण करके अभिमानवश टेढी टापी लगाना प्रारम्भ कर दिया। इतने ही को पर्याप्त न समझकर अपने आपको राजा विक्रमाजीत[1] कहलाने लगा। इस बीच में उसने बडे बडे युद्ध किये और शत्रुओं का विनाश कर दिया तथा वीरता के कारनामे प्रदर्शित किये। शनै शनै उसे इतनी अधिक उन्नति प्राप्त हो गई कि उसने सेना सुव्यवस्थित करके हज़रत खाकानी गेती सितानी से धृष्टता-पूर्वक युद्ध किया। जब उनके पूज्य व्यक्तित्व के प्रकाश ने हिन्दुस्तान के विशाल क्षेत्र के अंधकार का अन्त किया तो सर्वप्रथम जो विजय राज्य के सहायको को प्राप्त हुई वह हीमू पर विजय थी। इस युद्ध में उसके घातक घाव लगे, और वह नरक को सिधार गया। इसका उल्लेख अपने स्थान पर किया जायेगा।

सक्षेप में, जब सलीम शाह की मृत्यु हो गई तो मुबारिज खा ने राज्य का दावा किया। अहमद खा ने, जो सलीम शाह का बहनोई तथा पजाब के प्रतिष्ठित अमीरो में था, अपनी उपाधि सिकन्दर खा रख ली और सल्तनत का दावा करने लगा। मुहम्मद खा ने भी, जो शेर शाह का निकटतम सम्बन्धी था तथा बगाले का हाकिम था, राज्य प्राप्त करना चाहा। इबराहीम खा सूर भी रिश्तेदारी एव सेना की अधिकता के कारण हिन्दुस्तान पर अधिकार जमाने का प्रयत्न करने लगा। शुजाअत खा, जो कि सर्वसाधारण मे शजावल खा[2] के नाम से प्रसिद्ध था, माल्वा में स्वतन्त्र रूप से राज्य का दावा करने लगा। वे लोग आपस में युद्ध करने लगे तथा हिन्दुस्तान में अव्यवस्था उत्पन्न हो गई। इस्कन्दर ने पजाब की सेना एकत्र करके राजधानी आगरा की ओर प्रस्थान किया। देहली पहुँच कर उसने अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया। मुबारिज खा तथा इबराहीम खा भी इसी उद्देश्य से निकले। अन्त में हीमू के परामर्श एव उसकी युक्ति के अनुसार मुबारिज खा पूर्व की ओर रवाना हुआ कारण कि शेर शाह का अधिकाश खजाना चुनार में था। आगरा के बाहर फरह नामक स्थान पर इबराहीम तथा इस्कन्दर में युद्ध हुआ। इबराहीम पराजित हो गया और एक कोने मे चला गया। इबराहीम का पिता गाजी खा ब्याना के किले की ओर रवाना हुआ और उसे बन्द कर लिया। सिकन्दर को उन्नति प्राप्त हो गई। सिंध नदी से लेकर गगा नदी तक के स्थान उसके अधिकार में आ गये और कोई भी उसका प्रतिस्पर्धी न रहा। उसने अत्यधिक सेना एकत्र कर ली और मुबारिज खा से युद्ध करने का सकल्प कर लिया। उसकी आकाक्षा थी कि समस्त हिन्दुस्तान को पूर्ण रूप से अपने अधिकार में कर ले। उस समय हज़रत जन्नत आशियानी की समार विजय करने वाली पताकाओ के प्रस्थान के समाचार हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध हो गये। उसने तातार खा, हबीब खा एव बहुत बडी सख्या में अन्य लोगो को पजाब की प्रतिरक्षा

१ विक्रमादित्य।
२ अकबर नामा में 'सज़ावल खां'।

हेतु नियुक्त कर दिया। बगाले का हाकिम मुहम्मद ख़ाँ, मुबारिज़ ख़ाँ एवं अन्य शत्रुओं से युद्ध हेतु (११७) रवाना हुआ। मुबारिज़ ख़ाँ तथा होमू ने चपरघटा[1] के क्षेत्र में भीषण युद्ध किया। मयाग से मुहम्मद ख़ाँ उस युद्ध में मारा गया। होमू ने शेर शाह तथा सलीम शाह के समस्त ख़ज़ानों पर अधिकार जमा लिया। यद्यपि वह भली भाँति घोड़े पर सवार होना न जानता था अतः सर्वदा हाथी पर बैठकर युद्ध किया करता था। अत्यधिक वीरता एवं साहस के कारण तथा अपार धन-सम्पत्ति व्यय करने की वजह से उसे युद्ध में विजय प्राप्त होती रहती थी। बड़ी बड़ी समस्याओं का, जिनको सुल्तानों की ससार वाले कल्पना नहीं कर सकते थे, उसके साहस की कुंजी से समाधान हो जाता था। जौनपुर एवं बिहार की व्यवस्था एवं शासन प्रबन्ध के उपरान्त वह बगाले की ओर रवाना हुआ। ख़िज़्र ख़ाँ वल्द मुहम्मद ख़ाँ ने बगाले में अपने पिता का स्थान ग्रहण कर लिया और सुल्तान जलालुद्दीन की उपाधि धारण कर ली। इसी बीच में हिन्दुस्तान की विजय हेतु भाग्यशाली पताकाओं के प्रस्थान के समाचार प्रसिद्ध हो गये और होमू बगाल की ओर प्रस्थान करना उचित न देखकर लौट गया।

हज़रत जन्नत आशियानी के विजयी लश्कर का हिन्दुस्तान की विजय हेतु प्रस्थान

जब हिन्दुस्तान की उथल पुथल के समाचार उनके सम्मानित कानों तक पहुँचे तो उन्होंने उस ओर प्रस्थान करने का, जिसके विषय में वे हमेशा सोचा करते थे, सकल्प कर लिया। पूज्य महिलाओं को काबुल में ईश्वर की प्रतिरक्षा में छोड़ दिया और शाह वली ववावल बेगी का मीर्ज़ा मुहम्मद हकीम का अतका नियुक्त कर दिया और वहाँ का सम्पूर्ण शासन प्रबन्ध मुनइम ख़ाँ को प्रदान कर दिया। जिलहिज्जा ९६१ हि० के मध्य में (लगभग १२ नवम्बर १५५४ ई०) शुभ मुहूर्त एवं एक ऐसी घड़ी में, जिसपर राशियाँ को गर्व हो सकता है, हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान किया। सल्तनत के नेत्रों की ठंडक अर्थात् हज़रत ख़ाक़ानी को, जिनकी अवस्था १२ वर्ष तथा ८ मास की हो गई थी, इन सासारिक एवं आध्यात्मिक विजयों की सेना के अग्र भाग का नेता बनाया। जिस दिन अपने भाग्यशाली घोड़े को आगे बढ़ाया उसी दिन लिसानुल ग़ैब[2] के दीवान से यह फाल निकाला, इस ग़ज़ल से विजय एवं सफलता की बशारत निकली

शेर

'शुभ पक्षी एवं उसकी छाया से राज्य की आकांक्षा कर,
कारण कि चील कौओं से साहस का सहारा नहीं माँगा जा सकता।'

हज़रत जन्नत आशियानी ईश्वर की सहायता पर भरोसा करके थोड़ी सी सेना लेकर परोक्ष के लश्करों की सहायता पर भरोसा करके चल खड़े हुए। गणना में तीन हज़ार सैनिक निकले। बैराम ख़ाँ कुछ पादशाही कार्यों की दृढ़ता एवं अपने सामान की व्यवस्था हेतु कुछ दिन तक काबुल

१ मूल में 'जबर कना अथवा जबर कन्ना'।
२ हाफ़िज़ शीराज़ी।

में ठहर गया। हजरत जनत आशियानी ने जाले[1] पर सवार होकर नदी पार की। ९६२ हि० में मुहर्रम की आखिरी तारीख[2] को विकराम में भाग्यशाली शिविर लगे। सिकन्दर खा, जो अफगानों से युद्ध करता रहता था और जिसने उत्तम सेवाये सम्पन्न की थी, अपार कृपाओं का पात्र बना। उसे खान की उपाधि द्वारा सम्मानित किया गया। जब विजयी पताकाएँ सिंध नदी के तट पर, जो कि नीलाव के नाम से प्रसिद्ध है, पहुँची तो सेना एव असवाव को पार करने के लिये तीन दिन ठहरना पडा। बैराम खा ने उपस्थित होकर चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त किया। इस मजिल पर भाग्यशाली राजदूतों ने पहुँचकर विजय एव सफलता के सुखद समाचार पहुँचाये। तातार खा कासी एक बहुत बडी सेना सहित रोहतास के किले की प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त था। किले की प्रतिरक्षा की सामग्री एव दृढता के बावजूद भाग्यशाली पताकाओं के बलन्द होने के समाचार पाकर वह मुकाबला न कर सका और भाग खडा हुआ। हजरत जनत आशियानी ने सुल्तान आदम गक्खर के पास उसकी पिछली सेवाओं के कारण कृपायुक्त फरमान भेजकर जमीनबोस करने का आदेश दिया किन्तु इस कारण कि उसका भाग्य वलन्द न था उसने जमींदारों के समान बहाने बना दिये और यह लिख दिया कि "मैंने सिकन्दर को वचन दे रखा है और वह मेरे पुत्र को, जिसका नाम लश्करी है, अपने साथ ले जा चुका है। यदि मैं सेवा में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त करूँगा तो इससे एक ओर वचन भग होगा और दूसरी ओर मेरा पुत्र विनाश के भँवर मे फँस जायगा।" राज्य के कुछ सहायकों ने निवेदन किया कि इस समय यही उचित है कि उसे बीच से हटाकर आगे पाँव बढाये जायें। हजरत जनत आशियानी ने उसकी पिछली सेवाओं के कारण लोगो की इस बात की ओर कोई ध्यान न दिया। जब सम्मानित लश्कर सिंध नदी को पार कर चुका तो उस क्षेत्र के अफगान, जो रोहतास के क्षेत्र में एकत्र हो गये थे, छिन्न भिन्न हो गये। प्रत्येक किसी न किसी कोने में चला गया। जब बात इस सीमा तक पहुँच गई है तो किसी अन्य बात की चर्चा के पूर्व कुछ प्रतिष्ठित आदमियो के नाम, जिन्हे इस विजय में उनके साथ जाने का सम्मान प्राप्त था, लिखे जाते हैं।

बैराम खा, शाह अबुल मआली, खिज्र ख्वाजा खा, तरदी बेग खा, इस्कन्दर खा, खिज्र खा (११८) हजारा, अब्दुल्लाह खा ऊजबेक, मीर्जा अब्दुल्लाह, मुसाहिब बेग, अली कुली सीस्तानी, मुहम्मद कुली बरलास, ख्वाजा मुअज्जम, अली कुली अन्दरावी, हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी, बाबूस बेग, इस्माईल बेग दूल्दी, मीर्जा हसन खा, मीर्जा नजात खा, मुहम्मद खा जलायर, सुल्तान हुसन खा, फून्दूक सुल्तान, मुहम्मद कुली दीवाना, शाह कुली नारजी, तूलक खा, काबर अली खा, बाकी बेग कूश बेगी[3], लाल खा बदख्शी, बेग मुहम्मद आख्ता बेगी, ख्वाजा बादशाह मरीज, कीजक ख्वाजा, ख्वाजा अब्दुल बारी, ख्वाजा अब्दुल्लाह, मीर मुईन, मीर गनी शाह, शाह फखरुद्दीन, मीर हसन दागी[4], ख्वाजा हुसन मरवी, मीर अब्दुल हई, मीर अब्दुल्लाह कानूनी, खजर बेग, आरिफ बेग, ख्वाजा अब्दुस्समद शीरी कलम, मीर सैयिद अली मुसव्विर, मुल्ला अब्दुल कादिर, मौलाना इलियास अर्दबेली, अबुल

१ लट्ठों की हल्की नौका।
२ २५ दिसम्बर १५५४ ई०।
३ अकबर नामा में 'बाकी बेग यार्गारा बेगी'।
४ अकबर नामा में 'मीर मुहसिन दाई'।

कासिम जुर्जानी, मौलाना अब्दुल बाकी, अफजल खा मीर बख्शी, ख्वाजा अब्दुल मजीद दीवान, अशरफ खा मीर मुशी, कासिम मुखलिस, ख्वाजा अताउल्लाह दीवान ब्यूतात, ख्वाजा अबुल कासिम, शिहाबुद्दीन अहमद खा, मुईन खा फरन्खुदी, ख्वाजा मुईनुद्दीन महमूद, एव मलिक मुख्तार।

जब सम्मानित लश्कर का पडाव कलानूर क़स्बे के क्षेत्र में हुआ तो शिहाबुद्दीन अहमद खा तथा अशरफ खा, फरहत खा खासाखेल को ससार को विजय करने वाले लश्कर के प्रस्थान के पूर्व लाहौर भेज दिया ताकि वे मिम्बरो एव सिक्को को उनके सम्मानित नाम एव उपाधि द्वारा उत्कर्ष प्रदान करें और उस नगर के निवासियो का लोगो की लूट मार से बचायें। बैराम खा, तरदी बेग खा, सिकन्दर खा, जाफर खा हजारा, इस्माईल खा दूल्दी एव एक बहुत बडी सेना को नसीब खा पजभय्या के विरुद्ध, जिसने हरहाना करब में दृढतापूर्वक स्थान प्राप्त कर लिया था, नियुक्त किया। उन्होंने भाग्यशाली पताकायें लाहौर की ओर बलन्द की। उस स्थान के प्रतिष्ठित लोग स्वागत् हेतु अग्रसर हुए और लश्कर के आगमन को एक बहुत बडी देन समझते हुए उसके लिये शुभकामनायें की। सर्वसाधारण एव सम्मानित व्यक्ति अपनी श्रेणी के अनुसार पादशाही अनुकम्पाओ के पात्र बने। इस वर्ष को २ रबी उस्सानी को[१] लाहौर के उत्कृष्ट नगर को उनके भाग्यशाली चरणों के पहुँचने के कारण आकाश सरीखा सम्मान प्राप्त हो गया। सर्वसाधारण समय की दुर्घटनाओ से सदा के लिये मुक्ति पा गये। इस मास के अत[२] में समाचार प्राप्त हुए कि शहबाज खा नामक अफगान ने बहुत बडी सेना एकत्र कर ली है और उसने दीबालपुर में उत्पात मचा रक्खा है। हजरत जनत आशियानी ने शाह अबुल मआली, अली कुली सीस्तानी, अली कुली अन्दराबी, मुहम्मद खा जलायर एव अनुभवी यक्का लोगो के एक समूह को उस ओर भेजा। भाग्यशाली लश्कर शत्रुओ के विरुद्ध पहुँच गया। युद्ध की ज्वाला भडक उठी। प्राणो की बलि देने वाले वीरो ने वीरता एव पौरुष प्रदर्शित किया। शाह अबुल मआली बुरी तरह फँस चुका था कि अली कुली खा ने पक्तियो का सहार करने वाले यक्का जवानो की सहायता से अनन्त तक स्थाई रहने वाले प्रताप पर भरोसा करके वीरता एव पौरुष प्रदर्शित किया। शत्रु पराजित हो गये। अभागे अफगानो के रक्त से रणक्षेत्र लाल हो गया। राज्य के सहायक विजय एव सफलता प्राप्त करके लौट आये और उन्होंने चौखट चूमने का सौभाग्य प्राप्त किया। बैराम खा, नसीब खा के विरुद्ध पहुँचा। नसीब खा ने थोडे से प्रयत्न के बाद पलायन के अपमान को स्वीकार किया। अत्यधिक लूट की धन-सम्पत्ति राज्य के सहायकों को प्राप्त हुई। अफगानो के परिवार दुर्भाग्य के पजे मे बन्दी बना लिये गये। हजरत जहाँबानी ने यह मनौती की थी कि जब तक हिन्दुस्तान पर विजय न प्राप्त हो जायेगी, किसी को बन्दी न बनायेंगे। बैराम खा स्वय सवार हुआ और लोगो का एकत्र करके अपने विश्वासपात्रो के साथ नसीब खा के पास भज दिया। विजय की लूट मे जो अन्य धन सम्पत्ति प्राप्त हुई थी उसे तथा उत्तम हाथियो एव उत्तम वस्तुओ को विजय के प्रार्थना-पत्र के साथ ससार को शरण प्रदान करने वाले दरबार में भेज दिया और स्वय देशो को विजय करने वाली सेना को लेकर अग्रसर हुआ। जब वह जालन्धर पहुँचा तो अफगानो ने पलायन को ही बडा महत्वपूर्ण समझा। विजयी लश्कर के सरदारो में जो पारस्परिक मतभेद हो गया था उसके कारण अपने प्राण एव बहुमूल्य धन सम्पत्ति लेकर भाग खडे हुए। इस घटना का सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

१ २४ फरवरी १५५५ ई०।
२ रबी उस्सानी ९६२ हि० का अन्त अथवा लगभग २३ मार्च १५५५ ई०।

तरदी बेग अफगान यह चाहता था कि वह आगे बढकर उन अफगानो पर आक्रमण करे जो भाग चुके है। बैराम खा प्रस्थान को उचित न समझता था। तरदी बेग खा ने आज्ञा प्राप्त करने के लिये वाल्तू खा को बैराम खा के पास भेजा कि जिस प्रकार सम्भव हो वह उससे आज्ञा प्राप्त करे। वाल्तू खा ने पहुँच कर बात-चीत प्रारम्भ कर दी। ख्वाजा मुअज्जम ने कठोरता-पूर्वक व्यवहार किया और उसे कुछ गालियाँ दी। वाल्तू खा ने भी कठोर उत्तर दिये। ख्वाजा (११९) मुअज्जम ने उसके ऊपर तलवार का वार किया। वाल्तू के तलवार लगी। इसी कहा-सुनी में अफगानो को अवसर मिल गया और वे कुशलतापूर्वक कोने मे पहुँच गये। जब ससार को शरण प्रदान करने वाले पादशाह को वास्तविक स्थिति का पता चला तो उन्होंने अमीरो के नाम अत्यधिक भाग्यशाली उपदेश लिखे और अफज़ल खा द्वारा मौखिक सदेश भेजे। उसने पहुँच कर हज़रत जनत आशियानी की मोती बरसाने वाली ज़बान से जो बाते सुनी थी, उन्हे बताकर शान्ति एव सफाई करा दी। बैराम खा स्वय जालन्धर मे ठहर गया और उस क्षेत्र के परगनो को अमीरो को बाँट दिया।

सिकन्दर खा माचीवारा पहुँचा और वहाँ अपने आपको शक्तिशाली पाकर आगे बढ गया तथा सरहिन्द को अपने अधिकार मे कर लिया। उसको अत्यधिक धन-सम्पत्ति प्राप्त हो गई। इसी बीच में तातार खा, हबीब खा, नसीब खा एव मुबारक खा एक बहुत बडी सेना सहित देहली से आ गये। सिकन्दर खा सरहिन्द में ठहरना उचित न देखकर जालन्धर की ओर रवाना हो गया। बैराम खा ने यह बात राज्य के हित में न देखकर उसके प्रति कठोरता प्रदर्शित की और कहा कि, "तुझे चाहिए था कि सरहिन्द को दृढ़ बनाकर हम लोगो को बुलाने के लिये आदमी भेजता।" सक्षेप में, अत्यधिक बातचीत के उपरान्त प्रतिष्ठित अमीरो को पादशाही सेना के साथ करके आगे भेज दिया। जब वे माचीवारा के समीप पहुँचे तो तरदी बेग खा एव अधिकाश लोगो ने सतलज नदी को पार करना उचित न समझा। उन्होंने निश्चय किया कि वर्षा ऋतु आ गई है अत यह उचित होगा कि घाटा को दृढ बनाकर वही ठहर जाया जाय। वर्षा के कम एव हवा के सन्तुलित हो जाने के उपरान्त नदी पार की जाय। बैराम खा एव साहस के रणक्षेत्र के कुछ वीरो ने नदी पार करने के विषय में तर्कपूर्ण बाते कही और गम्भीरता पूर्वक समझाया। अन्ततोगत्वा मुल्ला पीर मुहम्मद, मुहम्मद कासिम खा नीशापुरी, वली बेग, हैदर कुली बेग शामलू के प्रयत्न से नदी पार की गई। विजयी लश्कर चार दलो में विभाजित हुआ। मध्य भाग को बैराम खा के नेतृत्व मे शोभा प्राप्त हुई। दाएँ भाग को खिज्र खा हज़ारा और बायें भाग को तरदी बेग खा की वीरता द्वारा शोभा प्राप्त हुई। सिकन्दर खा वीरो के एक समूह के साथ सेना के अग्र भाग में होकर युद्ध हेतु बढा। इस कारण कि ससार के पादशाह का उद्देश्य न्याय के नियमो एव दैवी इच्छाओं की पूर्ति पर आधारित था अत दरबार के उच्च पदाधिकारियों के कार्य नित्य-प्रति अधिक से अधिक विजय एव सफलता प्राप्त करते गये।

अफग़ान विजयी सेना की कमी एव उनके नदी पार करने के समाचार पाकर असख्य सेना सहित युद्ध हेतु अग्रसर हुए और सम्मानित लश्कर के पास पहुँच गये। सायकाल के समीप दोनो सेनाओ की मुठभेड हुई और भीषण युद्ध हुआ। ससार को विजय करने वाली सेनाओ ने सावधानी एव सतर्कता की दृष्टि में रखकर बहरो[1] के निकट अपने खडे होने का स्थान निश्चित

१ यह शब्द स्पष्ट नहीं। अकबर नामा में 'बजरा'।

किया और सभी लोगों ने सगठित होकर युद्ध करने में किसी प्रकार की कोई कसर न उठा रखी। यहा तक कि रात आ गई। सयोग से यही बात विजय की प्रस्तावना बन गई कारण कि शत्रु की सेना की ओर एक ग्राम में आग लग गई। इस प्रकार सयोग से सहसा दीपक भाग्य के मार्ग में प्रज्वलित हो गये। भाग्यशाली योद्धा शत्रु की सेना के चारों ओर पहुच गये और हृदय को बीध डालने वाले बाणों द्वारा अभागे अफगानों का विनाश कर भूमि पर लिटा दिया। उनकी कुछ समझ में नहीं आता था कि ये बाण किधर से आ रहे हैं और कौन चला रहा है। वे अधेरे में टटोलते रहे। तीन पहर रात्रि व्यतीत हो चुकी थी कि शत्रुओं की सेना मुकाबले की शक्ति न देखकर भाग खड़ी हुई। बहुत बडी विजय जिसे असख्य विजयों की प्रस्तावना कहा जा सकता है प्राप्त हो गई। राज्य के सहायकों को अत्यधिक घोड़े एव असबाब प्राप्त हो गये। लूट मार की उत्तम धन सम्पत्ति विजय के सुखद समाचारों के साथ धरती को शरण देने वाले दरबार में भेज कर दूसरे दिन वे लोग अग्रसर हुए और सरहिन्द में पडाव किया। अली कुली सीस्तानी को जो पीछे से आकर मिल गया था बहुत बडी सेना सहित आगे भेज दिया।

जब सिकन्दर खा ने इन लोगों की पराजय के समाचार सुने तो वह ८९ हजार सशस्त्र अश्वारोहियों एव पर्वत रूपी हाथियों को लेकर विजयी लश्कर की ओर रवाना हुआ। बैराम खा ने सरहिन्द में पाव जमाकर किले की प्रतिरक्षा का प्रयत्न किया और बुर्जों एव द्वारों को दृढ़ बनाकर ससार को शरण प्रदान करने वाले दरबार में पत्र भेज दिया और (१२०) भाग्यशाली पताकाओं के प्रस्थान करने की प्रार्थना की। उन दिनों हजरत जहाबानी उदरशूल के कारण रुग्ण थे। बैराम खा का प्रार्थना पत्र प्राप्त होते ही उन्होंने हजरत शहशाह को जिनके ललाट में सौभाग्य एव प्रताप के चिह्न दृष्टिगत थे बहुत से अमीरों के साथ मुकद्दमा के रूप में रवाना कर दिया। अभी खिलाफत के नेत्रों की ठडक को सम्मानित लश्कर नगर के पार भी न हुआ था कि वे पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गये और उन्होंने स्वय विजय एव सफलता की पताकाए बलन्द कीं। फरहत खा को लाहौर का शिकदार बाबूस बेग को फौजदार मीर शाह को अमीन एव महतर जौहर को खजानादार नियुक्त करके नगर में छोड दिया। उस वर्ष की ७ रजब (२८ मई १५५५ ई०) को सरहिन्द के कस्बे के क्षेत्र में उन्होंने पडाव किया। रणक्षेत्र की शोभा देने वाले अमीरों एव ससार को विजय करने वाले वीरों ने सेवा का सौभाग्य प्राप्त किया। विजय एव सफलता की पताका बलन्द हो गई। सम्मानित शिविर एक ऐसे उद्यान में लगा जो कि विजय के उपरान्त स्वर्ग को ईर्ष्या का विषय बन गया ससार को विजय करने वाले लश्कर के पहुचने के कारण शत्रु हताश हो गये। विजयी सेना चार दलों में विभाजित हुई। एक उन्होंने अपने अधीन रखी। दूसरी हजरत खाकाना के तीसरा शाह अबुल मआली के और चौथा बैराम खा के। सर्वदा दोनों ओर से रणक्षेत्र के वीर निकल निकलकर पौरुष प्रदर्शित करते थे और हजरत जनत आशियानी के वीरों के भाग्यशाली ललाट से हमेशा विजय के चिह्न दृष्टिगत होते रहते थे। शत्रु नित्यप्रति भयभीत एव आतकित होते जाते थे। ४० दिन तक सेनाए एक दूसरे के समक्ष पडाव करके युद्ध करती रहीं। २ शाबान (२२ जून १५५५ ई०) को जिस दिन हजरत खाकान गश्त सित ने के सवको के युद्ध की बारी थी ख्वाजा मुअज्जम, अतका खा एव बहुत बडी सख्या में अन्य लोग रणक्षेत्र में पहुचे और युद्ध प्रारम्भ कर दिया। उस ओर से सिकन्दर का भाई काला पहाड युद्ध हेतु निकला और उसने भीषण युद्ध किया। यद्यपि उस दिन यह निश्चय न था कि सुल्तानी युद्ध होगा किन्तु इस कारण कि राज्य के सहायकों को इतनी महान् विजय प्राप्त होने का समय आ गया था, शनै शनै युद्ध की अग्नि भड़क उठी। विजयी सेनायें चारों ओर से

चारो ओर देखने के उपरान्त उसने खुदावन्द खा लाड़जी से पूँछा कि "यह युद्ध क्या अतिम युद्ध था या इसके उपरान्त और भी युद्ध होना है।" खुदावन्द खा ने उत्तर दिया "यदि युद्ध में काला और सफेद हुआ अर्थात् एमादुल मुल्क तो यह अतिम युद्ध है अन्यथा दूसरे युद्ध की भी (२५१) आशका[१] है, कारण कि एमादुल मुल्क किसी अन्य अवसर पर युद्ध के उपाय करेगा।" हुमायूँ ने जब उपर्युक्त उत्तर सुना तो एमादुल मुल्क को युद्ध हेतु ललकारा किन्तु रणक्षेत्र मे उस बालक के अतिरिक्त, जो बालिग हो चुका था, कोई न आया। यह युद्ध नरियाद एव महमूदाबाद के मध्य में हुआ।

फिर हुमायूँ ने मीर्ज़ा अस्करी से कहा कि, "तुम अहमदाबाद की ओर बढो। तदुपरान्त मैं भी आऊँगा।" फिर हुमायूँ ने अपने समस्त अमीरो के साथ सरखीज के समीप पडाव डाला। वहाँ तरदी बेग के अतिरिक्त, जिसे हुमायूँ ने चाम्पानीर का अमीर नियुक्त कर दिया था, सभी लोग उपस्थित थे।

इसी बीच में उसने दीव की ओर प्रस्थान करने का सकल्प कर लिया किन्तु उसे हिन्दुस्तान के विषय में समाचार प्राप्त हुए कि शेर शाह सूर ने बगाले के आसपास, मुहम्मद ज़मान ने लाहौर में और मल्लू खा ने मन्दू के आसपास विद्रोह कर दिया है, यह समाचार सुनकर हुमायूँ अपने स्थान पर परामर्श हेतु कुछ दिन तक ठहरा रहा। उसको दीव के सम्बन्ध में निरन्तर समाचार भी मिलते रहते थे, अत वह बहादुर के विषय में सोच विचार में व्यस्त रहा।

अब बहादुर ने गुआ[२] के हाकिम बेज़री को लिखा कि वह नौकाए लेकर उसके पास आये। जब हुमायूँ चाम्पानीर में ठहरा हुआ था तो बेज़री उस समय पर्याप्त मात्रा में सामान लेकर दीव की ओर रवाना हुआ और तर्क नामक प्रसिद्ध बन्दरगाह में लगर डाला। क्योंकि बहादुर ने हुमायूँ से युद्ध का सकल्प कर लिया था अत उसने किले वालो से भी युद्ध किया। अब बहादुर ने दीव के क़िले को बन्द किया और उसको तोपख़ाने इत्यादि से दृढ बनाया। समुद्र के एक भाग पर नौकायें डाल दी ताकि समुद्र तट सुरक्षित हो जाय और यदि कोई बुरा अवसर आ जाय तो वह वहाँ से भाग भी सके, कारण कि उसे दीव के सम्बन्ध मे रूमी खा की ओर से खतरा था। जिस समय बेज़री पहुँचा तो बहादुर बडा प्रसन्न हुआ।

(२५६) मैंने महमूद अल्लारी से, जिसकी उपाधि नुसरत खा थी और जो बहादुर की सेवा में हाजिब था, सुना है कि, "जब यह बात प्रसिद्ध हो गई कि हुमायूँ ने दीव की ओर प्रस्थान करने का सकल्प कर लिया है तो बहादुर ने मुझे रूमी खा के पास भेजा।" अत मैंने बहादुर का सदेश रूमी खा तक पहुँचाया और उससे कहा कि 'कितने आश्चर्य की बात है कि बहादुर आवश्यकता से अधिक तुम पर विश्वास करता था और उसे तुम्हारे ऊपर कितना भरोसा था किन्तु तुमने दुष्टता प्रदर्शित की एव अपहरण किया।' मैंने बहादुर के क्रोध के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा। यहाँ तक कि रूमी खा अत्यधिक लज्जित हुआ। इसके उपरान्त मैंने उससे कहा कि, "यदि वास्तव में तुम्ही

१ अर्थात् एमादुल मुल्क ने युद्ध किया तो यह अन्तिम युद्ध होगा अन्यथा दूसरे युद्ध की भी आशका है।
२ गोआ।

हुमायूँ के दीव में आने का कारण हो तो अब कोई ऐसा उपाय करो जिसके कारण हुमायूँ दीव आने के विचार त्याग दे। सम्भवत तुम्हारे झुकने से युग बहादुर को उन्नति प्रदान करे और बहादुर तुम पर विश्वास करे। वह तुम से अधिक शक्तिशाली है। तुम्हारा सम्मान उसके बिना बलन्द नही हो सकता। तुमने ऐसा कार्य किया है कि आज उसे तुम्हारे पास पत्र भेजने की आवश्यकता (२५७) हुई। यदि तुम हुमायूँ के इस सकल्प का कारण नही हो तो उसको उसकी राय पर छोड दो।"

रावी कहता है कि जब रूमी खा ने यह बातें सुनी तो उसकी आँखो से आँसू बहने लगे और वह क्षमा माँगने लगा। उसने यह शब्द कहे "नि सन्देह मैंने यह कार्य शैतान के कारण किया। वास्तव में शैतान खुल्लम खुल्ला मार्ग भ्रष्ट करने वाला शत्रु है।" रावी का कथन है कि फिर रूमी खा ने उसे विदा किया और यह वचन दिया कि वह किसी न किसी प्रकार हुमायूँ को रोक देगा। इस प्रकार इतिहासकार कहता है कि हुमायूँ जिस स्थान पर ठहरा हुआ था उसको वहाँ की जलवायु के सम्बन्ध मे शिकायत थी जिसके कारण उसका स्वास्थ्य ठीक नही रहता था। अब रूमी खा को अपने वचनानुसार बात बनाने का अच्छा अवसर मिल गया। उसने हुमायूँ से कहा कि, "समुद्र यहाँ से निकट है जिसके कारण यहाँ विषैले वृक्ष हो गये है तथा जलवायु दूषित हो गई है। जब तक आप यहाँ रहेगे, स्वस्थ होना कठिन है। अत जब तक आप स्वस्थ न हो जाय उस समय तक के लिये आप यहाँ से प्रस्थान कर दें।" हुमायूँ ने यह परामर्श सुनते ही उसे स्वीकार कर लिया। इसी बीच में हिन्दुस्तान से उन दुर्घटनाओं के, जो वहाँ घट रही थी, समाचार प्राप्त हुए अत हुमायूँ ने यह सुनते ही अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया।

उसने मीर्जा अस्करी, मीर्जा हिन्दाल एव मीर्जा हिन्दू बेग को अहमदाबाद में, नहर वाला पटन में यादगार नासिर मीर्जा को, भरौज, सूरत एव नौसारी में कासिम हुसेन खा को और चाम्पानीर मे तरदी बेग को नियुक्त कर दिया। वह रूमी खा को अपने साथ लेकर सूरत तथा बुरहानपुर होता हुआ मन्दू पहुँचा। वहाँ की जलवायु उसके अनुकूल सिद्ध हुई अत वह वही ठहर गया।

जब हुमायूँ मन्दू पहुँचा तो मुल्ला कादिर शाह चन्देरी और मन्दू के अमीर भी आसपास से निकले। लाहौर मे मुहम्मद जमान खा, बहादुर के पास वापस आ गया कारण कि वहाँ कामरान मीर्जा पहुँच चुका था। किन्तु शेर खा सूरी ने चुनार पर अधिकार जमा लिया और वहाँ किले को दृढ बना लिया और अपने पुत्र कुतुब खा को वहा छोडकर स्वय बगाले पहुँचा और उसे विजय कर लिया।

हुमायूँ को गुजरात से निकल कर मन्दू पहुँचने में कई मास लग गये। ९४२ हि० (१५३५-३६ ई०) में नूरुद्दीन खाने जहाँ शीराजी और सफर सलमानी, जिसकी उपाधि खुदावन्द खा थी, इन दोना ने नौसारी और उसके आसपास के स्थानों को अपने अधिकार में कर लिया। नौसारी में अब्दुल्लाह खा, कासिम हुसेन के सम्बन्धी ने पराजित होकर भरौंच की ओर प्रस्थान किया। तदुपरान्त सूरत भी खाने जहाँ तथा सफर सलमानी के अधिकार में आ गया। तत्पश्चात् मार्ग से खाने जहाँ शीराजी और जल मार्ग से खुदावन्द खा भरौंच गये। कासिम हुसेन खा बडा व्याकुल हुआ और अब्दुल्लाह खा तथा कासिम हुसेन भरौंच से चाम्पानीर की ओर भाग निकले। तदुपरान्त भरौंच भी खाने जहाँ तथा खुदावन्द खा के अधिकार में आ गया। फिर सियामन खाँ कम्बाया का अधिकारी हो गया। बहादुर के समस्त अधिकारी अपने-अपने राज्य में

फैल गये। मुगुलों के अधिकारी अहमदाबाद की ओर भाग गये। जो लोग अहमदाबाद में पहुँचे उनमें से एक यादगार नासिर मीर्जा भी था। उसने नहरवाला पटन में एक अमीर को अपना उत्तराधिकारी बनाया जिसका नाम गजन्फर था। तदुपरान्त तीन सौ अश्वारोहियों को पटन से लेकर दीव गया। उसने बहादुर की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली और बहुत से मुगुलों को मिलाकर बहादुर को अपना सहायक बना लिया। तदुपरान्त इन सब को अहमदाबाद जाने के लिये उभारा।

दयार खां तथा मुहाफ्जि खां रायसेन प्रदेश में थे। इन दोनों ने वहाँ से निकलकर दीव की ओर प्रस्थान करने का संकल्प किया। जब यह दोनों पटन के समीप पहुँचे तो इनको समाचार प्राप्त हुए कि पटन खाली है, अतः इन दोनों ने अपनी लगाम को पटन की ओर मोड़ दिया और पटन पर दोनों ने प्रभुत्व प्राप्त करके अपने अधिकार में ले लिया। तदुपरान्त इन दोनों ने सुल्तान को पत्र लिखा कि अहमदाबाद तथा चाम्पानीर के अतिरिक्त समस्त प्रदेश अधिकार में आ गये हैं। उन्होंने यह भी लिखा कि अधिक संख्या में सेना एकत्र करके अहमदाबाद की ओर प्रस्थान करना चाहिए। इस प्रकार उस समय समस्त सेना को, जो छिन्न भिन्न हो गई थी, एक स्थान पर एकत्र किया गया और विभिन्न स्थानों के निवासियों को अपनी पताका के नीचे करके वे अहमदाबाद की ओर रवाना हुए। मार्ग में वह लोग भी आकर मिल गये जिन्हें पत्र लिखा जा चुका था अतः जब यह लोग सरखीज पहुँचे तो वहाँ के कुतुब के मकबरे के दर्शन किये और बहुत कुछ दान पुण्य किया।

मीर्जा अस्करी तथा उसके सहायकों ने असावल नामक स्थान पर ठहर कर युद्ध करना चाहा किन्तु बाद में वहाँ से चाम्पानीर की ओर सवार होकर रवाना हो गये। अब बहादुर ने इन लोगों का पीछा किया और मझौरी की ओर से सहूवर को पार किया। बहादुर की सेना के अग्र भाग में प्रतिष्ठित अमीर सैयिद मुबारक बुखारी भी था। इस प्रकार आसपास की सेनाएँ महमूदाबाद आकर* एकत्र हो गयीं और घोर युद्ध हुआ। यह युद्ध उस स्थान पर हुआ जहाँ बुर्ज बावरी बनाया गया। इस समय बहादुर को विजय प्राप्त हुई तथा उसने अपने घोड़े से उतर कर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। तदुपरान्त उसने उनका पीछा किया और समस्त सेना भी उसके साथ रवाना हुई। यहाँ तक कि ये लोग महेन्द्री नदी तक पहुँच गये। उस समय नदी में बाढ़ आई हुई थी अतः बहुत से लोग नदी में डूब गये।

इस ओर चाम्पानीर में समस्त मुगुल सरदार एकत्र हुए। तरदी बेग किले से उतर कर नीचे आया और उन लोगों से भेंट की। उसके बाद उन सब ने तरदी बेग से कहा कि "जो कुछ हमारे पास था वह सब समाप्त हो गया और सेना छिन्न भिन्न हो गई। हमें कुछ खजाना दो ताकि हम उस ओर से फिर सेना एकत्र करें तथा बहादुर से युद्ध करें।" यह सुनकर तरदी बेग किले के भीतर चला गया। वहाँ किले में उसको किसी ने सूचना दी कि "इन लोगों ने तुमको बन्दी बनाने का संकल्प कर लिया है। इसके अतिरिक्त उनका यह भी विचार है कि किले में जो कुछ तुम्हारे पास है उसे तुमसे ले लें। वे लोग हुमायूँ के विरुद्ध युद्ध करने के लिये आगरा जाने का संकल्प कर चुके हैं।" यह सुनकर तरदी बेग कुछ देर के लिये ठहर गया। फिर उन लोगों को उसने सूचना दी कि "खजाना खतम हो चुका है अतः तुमको कहाँ से दिया जाय।" जब तरदी बेग ने यह कहा तो उन लोगों ने परामर्श हेतु उसको किले से नीचे बुलवाया किन्तु उसने स्वीकार न किया। अब इन लोगों को बहादुर के विषय में समाचार प्राप्त हुए कि उसने महेन्द्री नदी को पार कर लिया है। यह सुनकर यह लोग घोड़ों पर सवार होकर आगरे की ओर चल खड़े हुए।

उनके जाने के बाद तरदी बेग किले से नीचे उतरा और मन्दू की ओर चल दिया । उसने हुमायूँ को इन बातों की, जिनका उसके विरुद्ध लोगों ने सकल्प कर लिया था, सूचना दी और बहादुर के लिये उसकी राज्य सम्बन्धी अत्यधिक प्रशसा की।

तदुपरान्त बहादुर ने अपने अमीरों एव मलिकों से उस विषय में क्षमा-याचना की जो उसने रूमी खा के परामर्श से किया था और उन लोगों के परामर्श को स्वीकार न किया था अपितु उसका विरोध किया था। तदुपरान्त बहादुर ने अपने वज़ीरों को प्रोत्साहन देते हुए उन्हे वचन दिया कि उन लोगों को उनके परिश्रम के फलस्वरूप बड़े उत्तम प्रदेश प्रदान किये जायेंगे। बहादुर फिरगियों के अतिरिक्त सभी बातों से सतुष्ट हो गया।

उसने अराबे से मुगुला के मुकाबले में २१ शव्वाल ९४१ हि० की रात्रि में पलायन किया था और मुगुला ने गुजरात से ३ जिलहिज्जा ९४२ हि० को प्रस्थान किया। इन घटनाओं में १३ मास तथा १३ दिन व्यतीत हुए।

तारीखे सिंध

अथवा

तारीखे मासूमी

लेखक—सैयिद मुहम्मद मासूम बक्करी

(प्रकाशन बम्बई १९३८ ई०)

हज़रत जन्नत आशियानी मुहम्मद हुमायूं पादशाह की सेना का गुजरात की ओर प्रस्थान और मीर्ज़ा शाह हसन का उनके आदेशानुसार उस विलायत की ओर रवाना होना

(१६२) ९४२ हि० (१५३५-३६ ई०) में हजरत हुमायूं पादशाह देहली से एक बहुत बडी सेना लेकर चित्तौड विजय हेतु रवाना हुए और वहाँ के समीप सम्मानित शिविर लगवा दिये। सुल्तान बहादुर गुजराती ने एक प्रार्थनापत्र चित्तौड के राजा के सम्बन्ध में लिखते हुए उसे मुक्त करने की प्रार्थना की और उस पत्र के अन्त में कुछ कठोर वाक्य लिखे। हजरत पादशाह उस पत्र के कारण बडे रुष्ट हुये और उन्होंने सुल्तान महमूद बहादुर से युद्ध करने के लिये अपने ससार का चक्कर लगाने वाले घोडे की लगाम गुजरात की ओर मोडी और निरन्तर यात्रा करते हुए गुजरात के क्षेत्र में पहुँच गये। विजयी सेनाए जिस विलायत में पहुँचती थी उसे विध्वस एव नष्ट भ्रष्ट कर देती थी और शत्रुओं मे जिस किसी का देखती थी उसकी हत्या कर देती थी। सुल्तान बहादुर अन्त मे बन्दर[1] की ओर चला गया। सक्षेप में, प्रस्थान के समय उन्होंने मीर्ज़ा शाह हुसेन[2] के नाम एक आदेश भेजा था जिसमें लिखा था कि "सगठन के नियमो को देखते हुए तुम उस ओर से गुजरात पर (१६३) आक्रमण करो। पटन में पहुँचने के उपरान्त ठहर जाओ और प्रार्थना पत्र भेजो। जो कुछ आदेश हो, उसका पालन करो।"

मीर्ज़ा शाह हुसेन ने बहुत बडी सेना लेकर नसरपुर से प्रस्थान किया। रादनपुर के मार्ग से पटन पहुचा। खिज्र खा ने, जो सुल्तान बहादुर की ओर से पटन के किले मे था, किले को दृढ बना लिया। पटन के आसपास के मवेशियों को दूर के स्थानो पर भेज दिया। सुल्तान महमूद खा[3]

१ दियु।

२ इसी ग्रन्थ में उसे शाह हसन तथा हुसेन दोनों तरह से लिखा गया है।

३ भक्कर का हाकिम।

पाँच सौ अश्वारोहियों को लेकर आगे बढ़ा और उसने कुछ ग्रामों को नष्ट कर डाला तथा पटन से सात कोस पर पड़ाव किया। जान अली पेशकश को मीर्ज़ा शाह हसन की सेवा में भेज दिया। जुनैद एवं जूना जारीजा को सुल्तान महमूद खाँ ने पटन के किले के भीतर खिज्र खाँ के पास इस आशय से भेजा कि, "क्योंकि मीर्ज़ा शाह हसन एक भारी सेना लेकर आ गया है अतः तेरे लिये यह उचित होगा कि तू उनकी सेवा में उपस्थित होकर किला समर्पित कर दे और अपने परिवार सहित सुरक्षित जहाँ जी चाहे चला जा।" उसने उत्तर भेजा कि, "सुल्तान बहादुर कुशलतापूर्वक करनाल में है। मुझे कौन सी आवश्यकता है कि मैं किले को सिंध के मुग़लों को प्रदान कर दूँ।" अन्त में जुनैद एवं जूना ने खिज्र खाँ की माता के पास पहुँचकर सुल्तान महमूद खाँ का सन्देश भेजा और कहा कि, "यह उचित नहीं ज्ञात होता कि हम लोग बिना उपहार एवं पेशकश के सुल्तान महमूद खाँ के पास जायँ।" खिज्र खाँ की माता ने पूछा, "तो फिर क्या उचित है?" उन्होंने उत्तर दिया कि, "मीर्ज़ा शाह हसन के आतिथ्य हेतु एक लाख फ़ीरोज़शाही तथा तीस हज़ार अन्य सुल्तान (महमूद खाँ) के लिये भेज दी जाय ताकि हम लश्कर को आगे बढ़ायें।" संक्षेप में एक लाख तीस हज़ार फ़ीरोज़शाही अपने विश्वासपात्रों के हाथ भेज दी। दूसरे दिन प्रातःकाल मीर्ज़ा शाह हसन ने पहुँचकर तालपतन[१] में पड़ाव किया। सुल्तान महमूद खाँ ने मीर्ज़ा शाह हसन की सेवा में उपस्थित होकर आगे जाने की अनुमति चाही। मीर्ज़ा शाह हसन ने कहा कि, "सर्वप्रथम किसी को हज़रत (१६४) पादशाह की सेवा में भेजकर हम अपने आगमन की सूचना दे दें। जहाँ हज़रत पादशाह का आदेश हो वहाँ जायें।" अब्दुल कुद्दूस को प्रार्थनापत्र सहित पादशाह की सेवा में भेजा। इसी बीच में खिज्र खाँ के आदमियों ने पेशकश प्रस्तुत किया। मीर्ज़ा शाह हसन १५ दिन तक पटन में ठहरा रहा। सुल्तान महमूद ने महमूदाबाद तक पहुँच कर गुजरातियों की धन-सम्पत्ति को लूट लिया और अपार धन सम्पत्ति एवं वस्त्र अधिकार में कर लिये।

इसी बीच में मीर फर्रुख़ ने मीर्ज़ा शाह हसन से निवेदन किया कि, "जैसे ही पादशाह का यह आदेश आ जायगा कि तू हमारे पास उपस्थित हो और शाही लश्कर में ठहर तो वहाँ जाने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न रह जायगा। जब अरगून तथा तरख़ान, चग़ताई अमीरों के साज व सामान का अवलोकन करेंगे और हज़रत पादशाह गुजरात के ख़ज़ाने से अपने विजयी सैनिकों में धन का वितरण करेंगे तो आपके पास कौन सैनिक रह जायेगा। अधिकांश लोग पृथक् हो जायेंगे। उचित यही होगा कि हम लोग सिंध की ओर वापस चले जायें।" मीर्ज़ा शाह हसन तथा अधिकांश अमीर इस बात से सहमत हो गए और उन्होंने यह निश्चय करके मीर्ज़ा क़ासिम बेग लार के हाथ हज़रत पादशाह की सेवा में प्रार्थनापत्र भेजा कि, "मैं अपनी पूरी सेना लेकर आया हूँ। इस समय भक्कर तथा थत्ता के अमीरों के पास से प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुए हैं कि कलमतो, जनूई नामक समूहों एवं ज़मींदारों ने संगठित होकर उस प्रदेश को नष्ट भ्रष्ट करना प्रारम्भ कर दिया है अतः विवश होकर हम लोग वापस हो रहे हैं।" मीर्ज़ा शाह हसन पादशाह के अहमदाबाद पहुँचने के २० दिन पूर्व लौट गया और ९४५ हि० के प्रारम्भ में (१५३८-३९ ई०) में रादनपुर के मार्ग से थत्ता चला गया। लौटते समय उसने जारीजा तथा सूदा नामक समूहों को बड़े विचित्र ढंग से नष्ट भ्रष्ट किया।

१ एक हस्तलिपि में 'ताल पतन'।

उत्कृष्ट सम्मान वाले हजरत पादशाह जन्नत आशियानी मुहम्मद हुमायूं पादशाह का सिन्ध पहुँचना एवं मीर्जा शाह हसन का विरोध

(१६५) ९४७ हि० (१५४० ई०) में हिन्दुस्तान के पूर्व में शेर खा अफगान ने, जिसका नाम फरीद था और जो हसन अफगान का पुत्र था, विद्रोह करके जमशेद सरीखे हुमायूं पादशाह से युद्ध किया। दोनों ओर की सेनाओ में दो तीन वार चौसा के घाट पर युद्ध हुआ और अन्त में पादशाह पराजित हो गये और पादशाही लश्कर चौसा के पास से भागता हुआ जौनपुर पहुँचा और वहाँ से आगरा।

सक्षेप मे, मीर्जा शाह हसन ने ९४६ हि० (१५३९ ई०) में मीर अलीका अरगून को गुजरात एव बगाल की बधाई देने के लिए पादशाह हुमायूं की सेवा मे इससे पूर्व भेजा था। उसने मीर खुश मुहम्मद अरगून को भी कन्धार विजय एव अगजवार खा की हत्या की बधाई देने के लिये मीर्जा कामरान के पास भेजा। यह दोना बड़े ही कुशल सैनिक एव बुद्धिमान् थे। जब मीर अलीका पादशाह के दरबार में उपस्थित हुआ तो उसने पादशाह के ऐश्वर्य एव असावधानी से यह समझ लिया कि शीघ्र ही शत्रुओं की सेना विद्रोह कर देगी। मीर अलीका पादशाह की आज्ञा विना शाही लश्कर से निकलकर शीघ्रातिशीघ्र मीर्जा शाह हसन के पास पहुच गया। मीर्जा उसके आगमन पर बड़ा चिन्तित हुआ। जब मीर अलीका मीर्जा शाह हसन की भेंट द्वारा सम्मानित हुआ और मीर्जा ने उससे सब हाल पूछा तो उसने कहा कि, 'मैंने पादशाह के प्रभुत्व को अत्यधिक बढ़ा हुआ पाया। राज्य के उच्च पदाधिकारी एव प्रतिष्ठित लोग बड़े असावधान थे। मैंने अपने सैनिक जीवन के अनुभव से समझ लिया है कि शीघ्र ही उनपर कोई विद्रोही प्रभुत्व प्राप्त कर लेगा और (१६६) उनके राज्य में विघ्न पड़ जायेगा। मैं इस आशय से आया हूँ कि आपको सचेत कर दूँ।"
मीर्जा शाह हसन ने अपने अमीरों को बुलवाकर उनकी गोष्ठी में परामर्श किया। इसी बीच में पादशाह की पराजय के समाचार प्राप्त हुए। सभी ने मीर अलीका की बुद्धिमत्ता की प्रशसा की और निश्चय किया कि उच्च से भक्खर तक नदी के दोनों ओर के स्थान नष्ट करके कृषि को बरबाद कर दिया जाय। जब पादशाही लश्कर की पराजय के समाचार निरन्तर प्राप्त हुए तो उस धारबाग में, जो कि ववरलू नामक स्थान के समीप था, नाना प्रकार के भवनो एव किले की प्रतिरक्षा की सामग्री की व्यवस्था की गई। भक्खर से सिविस्तान तक, भक्खर के कस्बे, ग्राम तथा परगने नष्ट कर दिये गये। उन लोगो ने यह समझ लिया कि 'हजरत पादशाह सिंध की ओर प्रस्थान करेंगे, कारण कि मीर्जा कामरान तथा मीर्जा अस्करी ने पारस्परिक सगठन त्याग दिया है, अत हजरत पादशाह विवश होकर इसी ओर आयेंगे।'

जब १ रबी-उल-अव्वल ९४७ हि० (६ जुलाई १५४० ई०) को हजरत पादशाह लाहौर पहुँचे तो समस्त भाई एव प्रतिष्ठित अमीर एकत्र हुये किन्तु सतर्क हो जाने के इतने साधनों तथा चेतावनियों के बावजूद यह लोग सचेत न हुए और निष्ठा हेतु कटिबद्ध न हो सके, यहाँ तक कि एक दिन ख्वाजा खावन्द महमूद, मीर अबुल बका तथा ख्वाजा अब्दुल हक एव राज्य के प्रतिष्ठित लोग एकत्र हुए और उन्होंने सगठन एव मेल के सम्बन्ध में एक प्रतिज्ञापत्र लिखा। समस्त प्रतिष्ठित लोग एव अधिकारीगण साक्षी बने फिर अपनी मोहर लगा दी। जब यह

प्रतिज्ञा पत्र प्रामाणिक रूप से तैयार हो गया तो परामर्श गोष्ठी आयोजित की गई। क्योंकि उनकी जबान हृदय का साथ न दे रही थी अतः बात पूरी न हो सकी और गोष्ठी विसर्जित हो गई।

जमादी उल आखिर ९४७ हि० के अन्त (अक्तूबर १५४० ई०) को मुहम्मद हुमायूँ पादशाह, मुहम्मद कामरान मीर्ज़ा, मुहम्मद हिन्दाल मीर्ज़ा, मुहम्मद अस्करी मीर्ज़ा, यादगार नासिर मीर्ज़ा मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा[1], नूरुद्दीन मुहम्मद मीर्ज़ा, प्रतिष्ठित अमीरों एवं समस्त सैनिकों ने लाहौर नदी (१६७) पार की। शेर खाँ लाहौर के समीप पहुँच गया। अफ़ग़ान लोग मुग़ुलों को जहाँ भी पाते थे, उनके प्रति अत्याचार करके उनके परिवार एवं धन सम्पत्ति पर अधिकार जमा लेते थे। इस कारण समस्त मुग़ुल हुमायूँ की सेना में एकत्र होकर काबुल की ओर चल खड़े हुए। जब वे चनाब नदी पर पहुँचे तो मुहम्मद कामरान मीर्ज़ा एवं मुहम्मद अस्करी मीर्ज़ा, ख्वाजा खावन्द महमूद एवं ख्वाजा अब्दुल हक के साथ बिना आज्ञा काबुल की ओर चल दिये। पादशाह ने विवश होकर भीरा की ओर प्रस्थान किया। मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, उलुग मीर्ज़ा एवं शाह मीर्ज़ा पृथक् होकर मीर्ज़ा कामरान से मिल गये। मुहम्मद हुमायूँ पादशाह ने भाइयों का यह विरोध देखकर १ रजब ९४७ हि० (१ नवम्बर १५४० ई०) को सिंध की ओर प्रस्थान किया और शाबान ९४७ हि० (दिसम्बर १५४० ई०) के अन्त में सम्मानित शिविर उच्च पहुँच गया।

क्योंकि बख्शू लगाह निकट था अतः कृपायुक्त फ़रमान एवं सम्मानित ख़िलअत बेग मुहम्मद बकावल एवं किचिक बेग के हाथ उसके पास भेजे। उसे ख़ानें जहाँ की उपाधि और पताका एवं नक्कारा प्रदान किया गया। उसने नौका तथा अनाज भेजा किन्तु स्वयं उपस्थित न हुआ। रमज़ान (जनवरी १५४१ ई०) के प्रारम्भ में उत्कृष्ट पताकाओं ने सिंध की ओर प्रस्थान किया। २८ रमज़ान[2] को लुहरी[3] नामक कस्बे में सम्मानित शिविर लगे। पादशाह ने स्वयं बबरलू नामक चारबाग में, जो सौन्दर्य एवं रमणीयता में अद्वितीय था, पड़ाव किया। सुल्तान महमूद खाँ ने भक्खर को नष्ट भ्रष्ट करके किले की प्रतिरक्षा प्रारम्भ कर दी। नौकाओं को नदी के इस ओर से लेकर किले के नीचे लंगर डाल दिया।

जब भाग्यशाली सेना का लुहरी नामक कस्बे में पड़ाव हुआ तो सुल्तान महमूद को आदेश दिया गया कि वह उपस्थित होकर चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त करे एवं किले को दरबार के सेवकों को सौंप दे। उसने निवेदन किया कि, "मैं मीर्ज़ा शाह हुसन का सेवक हूँ। जिस समय तक मीर्ज़ा शाह हुसन सेवा में उपस्थित न होगा, मेरा आना नमकहरामी की दृष्टि से उचित नहीं। मीर्ज़ा (१६८) शाह हुसन की आज्ञा बिना किले को सौंपना भी उचित नहीं।" पादशाह ने उसे विवश समझा। क्योंकि अनाज बहुत कम प्राप्त हो रहा था अतः मेहतर अशरफ को, जो मीर बाज़ार[4] था, सुल्तान महमूद के पास भेजा। खान ने पादशाह के आदमियों के पास पाँच सौ गधों के बोझ

१ चौसा की पराजयोपरान्त उसकी मृत्यु हो गई थी।
२ २८ रमज़ान ९४७ हि० (२६ जनवरी १५४१ ई०)।
३ एक हस्तलिपि में 'लोहरी'। 'लुहरी' होना चाहिये।
४ बाज़ार का अध्यक्ष।

तारीखे गुजरात

लेखक—मीर अबू तुराब वली

(प्रकाशन—कलकत्ता, १९०९)

(१) मित्रता बड़ा प्रशंसनीय गुण है और प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह उत्तम है। विशेष रूप से उत्कृष्ट सुल्तानों के लिये जिनकी मित्रता लोगों की समृद्धि एवं प्रदेशों की सुख शान्ति का कारण होती है। यह सम्बन्ध हज़रत जन्नत आशियानी हुमायूँ पादशाह एवं सुल्तान बहादुर में दृढ़ हो गया था। बहादुर शाह को हुमायूँ पादशाह की मित्रता के कारण अत्यधिक शान्ति प्राप्त हुई थी और वह राज्यों की विजय एवं इस्लाम की उन्नति हेतु जेहाद में व्यस्त हो गया था। उसने आसपास के अधिकांश प्रदेश अपने अधिकार में कर लिये। उसके दान पुण्य एवं राज्यों की विजय करने के समाचार संसार में प्रसिद्ध हो गये। विभिन्न राज्यों के सुल्तान एवं शाहज़ादे उसकी सेवा में कटिबद्ध रहते थे। आक्रमण तथा यात्रा के समय लाल पादशाही ख़ेमों तथा विभिन्न राज्यों एवं इक्लीमों उदाहरणार्थ गीलान, लार, अजम, फारस, एराक, कश्मीर, ख़िता, ख़ुतन एवं ज़ेरबाद के समीप के शाहज़ादों के डेरे एवं सरापरदे लगाये जाते थे। पादशाही ख़ेमे के चारों ओर तथा आसपास लाल रंग की १४ मंज़िलें लगाई जाती थीं। पादशाही शिविर को अन्य ख़ेमों से पृथक् करने के लिये (२) यह आदेश दे दिया गया था कि शाही ख़ेमे मख़मल के एवं सरापरदे ज़रबफ़्त के रहें। सोने के तारों के काम के मोटे रेशम के प्रयोग के कारण वह अन्य ख़ेमों से भिन्न हो जाते थे। गरमी तथा लोगों की भीड़ को दूर करने के लिये वे बड़े लाभदायक सिद्ध होते। शाही सरापरदा के कारण लगभग आधे कोस तक की भूमि विशेष ख़ेमा[1] से घिरी रहती थी। उसने रेशमी डोरियों तथा चाँदी-सोने के खूँटों के प्रयोग का भी आदेश दे दिया था जिनकी सजधज को देखकर आकाश को भी ईर्ष्या होने लगती थी।

इन दोनों पादशाहों की मित्रता में विघ्न पड़ गया। इनके पारस्परिक मतभेद एवं विरोध का कारण मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा था जो हुमायूँ पादशाह की सेवा से विद्रोह करके सुल्तान बहादुर की सेवा में चला गया था। हज़रत जन्नत आशियानी का हृदय इस घटना के कारण बड़ा मलिन हुआ और उन्होंने मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा को गुजरात प्रदेश से निकाल देने के लिये उपदेश-पत्र लिखकर सल्हुल मुल्क मौलाना क़ासिम अली एवं ग़यासुद्दीन कूरची के हाथ सुल्तान बहादुर के पास भेजे। मतभेद का यही कारण था जिससे बहादुरशाही राज्य एवं सात पीढ़ियों की बादशाही का विनाश हो गया।

१ 'बादरहाय ख़ासा'।

शेर

'बात बढते-बढते युद्ध तक की नौबत आ जाती है,
जिससे प्राचीन घर-बार नष्ट हो जाते हैं।'

सुल्तान बहादुर का सिंहासनारोहण

नि सन्देह क्योकि ईश्वर की इच्छा एव दैवी आकाक्षा यह थी कि सृष्टि के एक पवित्र मोती अपितु आकाश के प्रकाश अर्थात् साहिब किरान के वश में सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति एव देशो को विजय करने वाले सुल्तानो के चुने हुए व्यक्ति का इस युग मे आविष्कार करे और दैवी कारीगरी के कलम से उन्नति एव पतन के इस ससार के सिंहासनासीन का चित्र युग के पृष्ठ पर बनाये और ससार को वास्तविक खलीफा एव स्वामी जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह की पताका की छाया से शोभा प्रदान करे, अत उसने यह नई व्यवस्था एव नया परिवर्तन प्रकट किया और हुमायूँ के प्रभुत्व के कारण गुजरातियो के सौभाग्य का पतन करा दिया।

इसका सविस्तार उल्लेख इस प्रकार है कि जिस समय फिरदौस मकानी बाबर पादशाह ने सुल्तान सिकन्दर के पुत्र सुल्तान इबराहीम से युद्ध करके हिन्दुस्तान विजय कर लिया तो ६ मास (३) पूर्व ही उसी वर्ष में सुल्तान बहादुर के पिता सुल्तान मुजफ्फर का निधन हो गया। अपने पिता की वसीअत के अनुसार बहादुर का बडा भाई सिकन्दर शाह की उपाधि धारण करके सिंहासनारूढ हुआ। उसके अन्य भाई अन्य राज्यो में छिन्न-भिन्न हो गये। इन्ही में महमूद शाह शहीद का पिता लतीफ खा एव चाँद खा मिलकर मन्दू तथा मालवा के स्वामी सुल्तान महमूद खलजी के पास पहुँचे। सुल्तान बहादुर हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुआ। जिस दिन बाबर पादशाह सुल्तान इबराहीम से युद्ध कर रहे थे, बहादुर उस रणक्षेत्र में उपस्थित था। सुल्तान इबराहीम से उसने भेंट न की और रणक्षेत्र के एक कोने से युद्ध की लीला एव मुगलो द्वारा मारकाट देखता रहा। बाबर पादशाह की विजयी सेनाओं के प्रभुत्व के उपरान्त बहादुर अपने तीन सौ सैनिको के साथ लश्कर के एक कोने से युद्ध करके पृथक् हो गया और देहली पहुँचा। इसी बीच में एमादुलमुल्क द्वारा सुल्तान सिकन्दर की हत्या एव उसके छोटे भाई नसीर खा के सिंहासनारोहण के, जिसने महमूद शाह की उपाधि धारण कर ली थी, समाचार सुल्तान बहादुर को प्राप्त हुए। इस समाचार से प्रसन्न होकर वह बडी तीव्र गति से यात्रा करता हुआ गुजरात की ओर रवाना हुआ। जब यह प्रामाणिक रूप से ज्ञात हो गया कि वह सरहद पर पहुँच गया है तो राज्य के उच्च पदाधिकारियो ने, जो एमादुलमुल्क से मिले थे, (बहादुर शाह) के पास आज्ञाकारिता सम्बन्धी प्रार्थनापत्र भेजे और स्वागत् करके उसे नगर में लाये तथा सिंहासनारूढ किया। एमादुलमुल्क को, जिसकी मृत्यु का समय आ गया था, बन्दी बनाकर उपस्थित किया। दरबार के मैदान में, जो कि बाजार के मध्य में था, उसके सिर से पाँव तक के नख तक की खाल खिंचवा ली गई।

सक्षेप में, सुल्तान बहलोल की सतान, जो कि मुगलो के प्रभुत्व के कारण दुखी एव रुष्ट थी, सुल्तान बहादुर के राज्य के प्रारम्भ में ही उसकी सेवा में पहुच गई। वे लोग प्रतिकार तथा अपनी हानि की पूर्ति हेतु समय-समय पर हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने के लिये उसे प्रेरित किया करते थे। उसके सम्मानित पिता सुल्तान मुजफ्फर की सहृदयता का उदाहरण देकर वे अपने राज्य की मुक्ति का प्रयत्न किया करते थे। वास्तव में सुल्तान मुजफ्फर शाह ने सुल्तान महमूद शाह खलजी के

प्रति जो उदारता प्रदर्शित की उसे सुल्तानो के इतिहास में सोने के जल मे लिखा जा सकता है और बडे-बडे बादशाहो के दरबार में वह कहानी बडे गर्व से पढी जा सकती है।

सुल्तान मुजफ्फर का सौजन्य

(४) यह इस प्रकार है कि जब पूरबिया अमीरो ने सुल्तान महमूद के ऊपर पूर्ण रूप से प्रभुत्व प्राप्त कर लिया तो वे उसे पक्षी के समान पिंजरे मे रखने लगे। वह उन लोगो के कारण अपने जीवन से निराश हो चुका था। अपने पर्वत रूपी किले के कगूरे से कमन्द लटका कर उतरा और घोडे पर सवार होकर बडी तीव्र गति से यात्रा करता हुआ अल्प समय में फरियादियो के समान सल्तनत के पाये तक पहुचा[१]। प्रथम दरबार हो मे उसे ऐसे आदर सम्मान द्वारा उत्कृष्ट किया गया जो पादशाहो के प्रति किया जाता है। जब उसने दरबार में शरण लेने के कारण के विषय मे निवेदन किया तो उसे सहायता का आश्वासन देकर सम्मानित किया गया। अल्प समय मे (सुल्तान मुजफ्फर) इस अभियान की तैयारी करके एक बहुत बडी सेना सहित मान्दू के किले को विजय हेतु रवाना हुआ। मान्दू के किले के समीप विजयी सेनाओ के शिविर लग गये और युद्ध प्रारम्भ हो गया। युद्ध की अग्नि भडक उठी। ईश्वर ने इस राज्य की सहायता की और पादशाह को विजय प्राप्त हुई। काफिर तलवार द्वारा नष्ट-भ्रष्ट कर दिये गये। किले के समस्त महाल एव समस्त मालवा प्रदेश दुष्ट काफिरो से मुक्त करा लिया गया। तीन दिन तक किले के ऊपर भव्य जश्न होते रहे। यद्यपि सुल्तान महमूद खलजी ने अत्यधिक उपहार, स्मृति चिह्न के रूप मे प्रस्तुत किये और उन्हें स्वीकार करने का आग्रह किया किन्तु वह पादशाह इतना अधिक उदार एव साहसी था कि उसने इन नश्वर साधारण वस्तुओ की ओर कोई ध्यान न दिया। खज़ाना, सोना तथा जवाहर, जडाऊ अस्त्र शस्त्र, द्रुतगामी घोडे तथा पर्वत रूपी हाथी उसकी दृष्टि मे तिनके से अधिक मूल्य न रखते थे। वह सब का सब उसने उसे प्रदान कर दिया। उसने अपने लिये कयामत तक रहने वाला यश प्राप्त कर लिया। अपने १२ हजार अश्वारोहियों को पांच अमीरो के अधीन, जिन्हे गुजरात में जागीर प्रदान की, एक वर्ष तक उसकी सहायतार्थ वही पर नियुक्त रक्खा और स्वय बडे ऐश्वर्य एव गर्व से अपनी राजधानी को लौट आया। इस उपकार की तारीख इस प्रकार है

'मुल्क मन्दू विजय किया और वापस कर दिया[२]'।

(५) मुल्ला शहीदी ने सुल्तानो को शरण देने वाले इस पादशाह की प्रशसा मे एक कसीदे की रचना की जिसका प्रथम शेर इस प्रकार है

'ह बादशाह! ससार के दुखी लोगो का दुख तेरे हृदय में है,
यदि लेता है तू तो दूसरो को दे देता है, तेरा ऐसा हृदय है[३]'।

१ सुल्तान मुजफ्फर के पास पहुँचा।
२ गिरिफ्ती मुल्के मन्द व बाज दादी।
گرفتی ملک مند و باز دادی
३ इस विषय में उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २ में आधार भूत सामग्री का अनुवाद देखिये।

लोदियो का सुल्तान बहादुर के पास एकत्र होना

सक्षेप में, सुल्तान बहलोल की सतान में से सुल्तान अलाउद्दीन, जो कुछ समय तक बाबर पादशाह की सेवा में रह चुका था, एव सुल्तान अलाउद्दीन के पुत्र तातार खा का छोटा भाई फतह खा, सुल्तान मुजफ्फर शाह द्वारा खलजियों के प्रति उदारता का उदाहरण देकर (सुल्तान बहादुर से हुमायूँ पर आक्रमण के) विषय मे अत्यधिक आग्रह करने लगे। सुल्तान बहादुर ने कहा कि, "मैंने मुगुलो का युद्ध देखा है। यह सेना उन लोगो का मुकाबला नही कर सकती। तुम्हे धैर्य धारण करना चाहिये कारण कि मैं उचित रूप से इसका उपाय करूँगा।" तातार खा ने, जो लोदियो में बहुत बडा शूर वीर था, निवेदन किया कि "आपने जिन मुगुलो को देखा है उनमें अब वह शक्ति नही रही। अब वे भोगविलास तथा ऐश व आराम के आदी हो गये हैं। उनमें विजयी सेना से मुकाबले तथा युवक पादशाह से, जो कभी भी पराजित नहीं हुआ है, युद्ध करने का सामर्थ्य नही।" वे लोग सर्वदा ऐसी ही बातें किया करते थे जिनसे मनुष्य के धैर्य की लगाम हाथ से छूट जाय।"

मुहम्मद जमान मीर्जा का सुल्तान बहादुर के पास पहुँचना

इसी बीच में मुहम्मद जमान मीर्जा हुमायूँ पादशाह से रुष्ट होकर सुल्तान बहादुर के पास पहुँचा। उसका आगमन सुल्तान की योजना के अनुकूल निकला। उसने इसे उचित समझकर बडे आदर सम्मान से उसे प्रोत्साहन प्रदान किया और उसे नाना प्रकार से प्रसन्न करके उसे युद्ध का पेशवा[१] बनाने की योजना बनाई। वह उसे अत्यधिक इनाम, खिलअतें, अरबी घोड, जागीरें एव नक़द धन देकर सतुष्ट किया करता था और चाहता था कि इस प्रकार मुगुलो की सेना को अपनी ओर आकृष्ट कर ले। सम्भवत जन्नत आशियानी के सत्य को समझने वाले हृदय को इस बात का आभास मिल गया। वे समझ गये कि मुहम्मद जमान मीर्जा का गुजरात में निवास राज्य व्यवस्था के हित के विरुद्ध है अत उन्होने सुल्तान बहादुर को पत्र लिखा कि वह उसे अपने राज्य से निकाल दे। पत्र की प्रतिलिपि निम्नाकित है।[२]

(८) नूर मुहम्मद खलील ने जो उपहार सुल्तान बहादुर की ओर से हजरत जन्नत आशियानी को पहुँचाये थे उनमें सयोग से एक कुरान शरीफ भी था। जन्नत आशियानी उसकी लिपि की सुन्दरता एव सजावट का अवलोकन करके उसकी प्रशसा करने लगे। यहाँ तक कि प्रतिज्ञा एव वचनबद्ध होने के विषय मे बातें होने लगी और उसकी पुष्टि के लिये कुरान शरीफ की शपथ के विषय में वाक्य उनकी जबान से निकले। जब नूर मुहम्मद खलील ने यह बात सुल्तान बहादुर से कही तो दरबार वालो को शका एव सुल्तान के अभिमान में वृद्धि हो गई। उसने मुल्ला मुहम्मद लारी को, जो कि मुशी था, प्रत्येक बात का उत्तर लिखने का आदेश दिया। क्योकि वह उत्तर सयम के क्षेत्र के बाहर था अत उसने जो कुछ लिखा था उसे खुल्लम खुल्ला पढ़ा। उस समूह ने जो सर्वदा षड्यत्र रचने की इच्छा किया करता था उसकी बडी प्रशसा की।

१ सेना।

२ पत्र के अनुवाद के लिये तारीखे एलचीये निजाम शाह का अनुवाद देखिये।

यद्यपि सुल्तान बहादुर हृदय से उन धृष्टतापूर्ण वाक्यों के पक्ष में न था किन्तु अभिमानवश एवं दरबार वालों के समक्ष अपनी मर्यादा की रक्षा की दृष्टि से उसने उसमें परिवर्तन का आदेश न दिया और उसके आदेशानुसार उस पत्र का उत्तर, जो कि खोखलेपन का द्योतक था, भेज दिया गया।[1] इसका परिणाम जो होना था वह हुआ। .. ..

तातार खाँ की पराजय

(१२) अन्ततोगत्वा लोदिया के बहकाने से विचार विमर्श होने लगा। तातार खां तथा उसके पिता सुल्तान अलाउद्दीन लोदी ने अत्यधिक आग्रह किया[2]। सुल्तान बहादुर ने भी उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और सेना एकत्र करने की अनुमति देदी। उसका विचार था कि, "क्योंकि वे हिन्दुस्तान के राज्य के उत्तराधिकारी हैं और अत्यधिक आग्रह कर रहे हैं अत सम्भव है कि इन लोगो के द्वारा कोई कार्य बन जाय।" प्राचीन सिक्कों के हिसाब से बीस करोड तन्के, जो तीस करोड तथा पचास लाख मुरादी के बराबर होते हैं, रणथम्बोर के हाकिम बुरहानुल मुल्क के पास इस आशय से भेजे कि तातार खा जिस प्रकार चाहे सेना की तैयारी में व्यय करे। तातार खा ने हस्तमुक्त होकर दान पुण्य करना प्रारम्भ कर दिया। यहाँ तक कि उसने चालीस हज़ार अश्वारोही एकत्र कर लिये। सुल्तान बहादुर ने जो प्रतिज्ञा की थी उसके कारण उसने अपनी सेना में से किसी को उसके साथ न किया किन्तु स्वय एक बहुत बडी सेना लेकर चित्तौड के किले के विरुद्ध दूसरी बार पहुँच गया और उसका अवरोध कर लिया। तातार खा ने ब्याना के किले को विजय कर लिया और सुल्तान को प्रार्थनापत्र लिखा कि "बादशाही प्रताप से ब्याना विजय हो गया। अब मैं आगरे की ओर प्रस्थान कर रहा हूँ।" इस समय जन्नत मकानी स्वय आगरे मे थे। उन्होंने मीर्ज़ा हिन्दाल को तातार ख़ा के विरुद्ध नियुक्त किया। अपने पेशख़ाने का खेमा बाहर लगवाया। तातार खा सीकरी[3] पहुँचा ही था कि हिन्दाल मीर्ज़ा १५ हज़ार अश्वारोहियो सहित मुकाबले के लिये पहुच गया। जिस दिन प्रात काल युद्ध होने वाला था उसके पूर्व उस रात्रि में अफ़ग़ान लोग, जो कि धन के बल से एकत्र किये गये थे, सब क सब छिन्न भिन्न हो गये। क्योंकि तातार खा का पतन प्रारम्भ हो गया था अत उसने अपने समस्त परिवार वालो का रणक्षेत्र के बाहर भेज दिया। उसकी शेष सेना भी इसी प्रकार बाहर भाग गई। जब दिन निकला तो दो हज़ार अश्वारोही, जो उसके साथ रह गये थे, भागने के विषय मे विचार विमर्श करने लगे। उसने उत्तर (१३) दिया कि, "मैंने सुल्तान के बीस करोड तन्के अपने दावे के अनुसार व्यय कर दिये हैं अब मैं सुल्तान को किस प्रकार मुह दिखाऊँ?" उसने तीन सौ अश्वारोहियो सहित मीर्ज़ा हिन्दाल पर आक्रमण किया और मारा गया।

जन्नत आशियानी दूसरे या तीसरे दिन रणक्षेत्र में पहुँचे और निरन्तर यात्रा करते हुए बहादुर की ओर रवाना हुए। जब यह समाचार सुल्तान को प्राप्त हुए तो उसकी सेना में बडी खलबली मच गई। उसने अपने उच्च पदाधिकारियो से परामर्श किया। कुछ लोगों का यह मत था

१ पत्र के अनुवाद के लिये तारीखे एलचीये निज़ाम शाह का अनुवाद देखिये।
२ मुग़लों पर आक्रमण करने का।
३ मूल में 'सीकली'।

कि किले का युद्ध स्थगित करके मुगुलो से युद्ध किया जाय। सुल्तान के प्रतिष्ठित अमीरो मे से सद्र खा ने निवेदन किया कि, "जब तक हम काफिरो से युद्ध में मलग्न हैं उस समय तक यदि वे हम पर आक्रमण करेंगे तो इस प्रकार वे काफिरो की सहायता करेंगे। क्यामत तक इसके लिये लोग उनकी निन्दा करते रहेंगे।"

सुल्तान बहादुर से युद्ध

जब जन्नत आशियानी को इस बात का पता चला तो वे सारगपुर में ठहर गये यहाँ तक कि ३ रमज़ान ९४२ हि० (२५ फरवरी १५३६ ई०) को चित्तौड विजय हो गया। सुल्तान की सेना को नाना प्रकार के आभूषण, जवाहर एव उत्तम वस्तुएँ तथा सोना प्राप्त हुआ। तीन दिन उपरान्त जब वे लूटमार से निश्चिन्त हो गये तो उन्होने विजय के कारण ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये बहुत बडे भोज का प्रबन्ध किया। नबियों, वलियों एव शहीदो के नाम पर अत्यधिक भोजन बाँटा गया। समस्त अमीरों एव मुल्तानों को धन, घोडा, एव हाथी प्रदान किये गये। दूसरे दिन वे मुगुल सेना के विरुद्ध रवाना हुए। जन्नत मकानी ने भी युद्ध हेतु प्रस्थान किया। दोनों सेनाओं का मदसौर में आमना सामना हुआ। अभी खमे भी न लगाये गये थे कि सैयिद अली खा एव ख़ुरासान खा चग़ता, जो तीन हजार अश्वारोहियो सहित हिरावल[1] के रूप में भेजे गये थे, पराजित हो गये। सुल्तान इस समाचार से बडा दुखी हुआ कारण कि यह अच्छा शकुन न था। अन्ततोगत्वा दोनो ओर वाले खेमे लगवाकर उतर पडे। सुल्तान बहादुर ने अमीरों तथा वज़ीरों से परामर्श किया कि, "किस प्रकार युद्ध करना चाहिये?" सद्र ख़ा ने, जो उसका सिपहसालार था, निवेदन किया कि, "विजयी सेना इस समय ताज़ा-ताज़ा विजय करके आ रही है। अत्यधिक लूट की धन-सम्पत्ति के कारण उसका साहस बढा हुआ है। मुगुलों से युद्ध की ओर से उनके हृदय में कोई भय नही है। यह उचित होगा कि कल युद्ध का डका पिटवा कर दोनो सेनाए युद्ध करें। (१४) ईश्वर जिसे भी विजय प्रदान करे।" रूमी ख़ा ने निवेदन किया कि, "हमारे पास तोप तथा बन्दूक बहुत बडी सख्या मे हैं। उनसे काम न लें और अपनी सेना को कटवा दे। ईश्वर को धन्य है कि बादशाही सरकार मे ऐसा तोपख़ाना एकत्र हो गया है जो कि खुन्दवारे रूम[2] के तोपख़ाने के समान है। यह बड़े खेद का विषय है कि उससे कोई काम न लिया जाय। उचित यह होगा कि अराबे तैयार कराये जायें, खाईं खुदवाई जायें और नित्यप्रति युद्ध की व्यवस्था करके मुगुलो को तोपख़ाने के समक्ष लाया जाय और तोपें चलाई जाय। इस प्रकार हम लोग युद्ध करें ताकि शत्रु नष्ट हो जायें।" सयोग से सुल्तान को यह राय पसन्द आ गई। उसने अराबो की व्यवस्था तथा खाई खुदवाने का आदेश दे दिया। इस प्रकार दो मास तक दोनों ओर की सेनाओं मे युद्ध होता रहा। वे एक तालाब से, जो कि समुद्र के समान था, जल प्राप्त करते और नित्यप्रति युद्ध करते रहते थे किन्तु मुगुल लोग तोपख़ाने के समक्ष बहुत कम आते थे। आसपास लूटमार करके तथा बजारो को मार्ग से लौटाकर अनाज अपने लश्कर मे ले जाते थे। सुल्तान की सेना मे बहुत कम अनाज पहुँच पाता था। इस प्रकार अराबे (के घेरे)[3] में अकाल पड गया। शनै शनै यह दशा हो गई कि तीन वर्ष

१ सेना का अग्र भाग।
२ रूम (एशियाई टर्की अथवा अनतोलिया) के बादशाह।
३ सुल्तान बहादुर की सेना से तात्पर्य है।

(पुराने) छप्पर का भी फूस न प्राप्त होता था जो कि पशुओं को थोडी देर के लिये सहारा हो सकता। बहुत बडी सख्या में घोडे, हाथी तथा ऊँट नष्ट हो गये और सेना हताश हो गई। सुल्तान समझ गया कि इस शक्ति हीनता के कारण युद्ध करना असम्भव है अत उसने भाग जाना निश्चय कर लिया किन्तु उसने इस बात का उल्लेख किसी से न किया। जिस रात्रि में वह भागने वाला था उससे पूर्व अस्र के समय उसने खुदावन्द खा को, जो उसके पिता का वजीर एव गुरू तथा उसका वकील था और जिसकी अवस्था ८० वर्ष की हो चुकी थी और जिसके पास चार हज़ार उत्तम अश्वारोही, बहुत बडी सख्या में उत्तम हब्शी तथा तुर्की दास थे, एकान्त में बुलवाया और मल्लू खा क़ादिर शाह को, जो मन्दू का हाकिम था, उसके पास भेज कर कहलवाया कि "सेना इस दुर्दशा को प्राप्त हो चुकी है कि अब उसमें कोई साहस नही रहा, क्या उपाय किया जाय?" उसने उत्तर दिया कि युद्ध करना चाहिये। पुन सुल्तान के आदेशानुसार यही बात खुदावन्द खा से कही गई। (१५) उसने कठोरतापूर्वक उत्तर दिया कि, "जानते हो, क्या कह रहे हो? गुजरात का पादशाह आधे हिन्दुस्तान का स्वामी कहा जा सकता है। उसके विषय में किस प्रकार कहा जाय कि वह भाग जाय। मैं यह बात अपनी जबान पर न लाऊँगा और इसे कभी भी न सोचूँगा।" कादिर शाह सुल्तान के पास पहुँचा और उसने कहा, "पादशाहे आलम, इस वृद्ध की बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी है, जो बात पादशाह के हृदय में आये, वह उचित है। उसपर आचरण किया जाय।" तदुपरान्त सुल्तान ने सद्र खा सिपहसालार को, जो कि उसके अमीरो में सर्वोत्कृष्ट था, लेखक के पिता तथा चाचा के पास भेजा और यह कहलाया कि, "हम आज रात्रि में शत्रुओं पर छापा मारेंगे। यह नही कहा जा सकता कि क्या हो। सम्भव है कि हम अपने पडाव पर न पहुँच सकें और सम्भव है कि शत्रुओं का पीछा करना पडे अथवा किसी ओर भाग जाना हो। अत यह उचित होगा कि तुम लोग मन्दसौर के क़िले में चले जाओ। यदि हम लोग शिविर में न पहुँच सके तो हुमायूँ पादशाह भी तुम लोगो का भक्त है, वह तुम लोगों का आदर सम्मान करेगा और तुम लोग हानि से सुरक्षित रहोगे। यदि तुम शिविर में रहोगे तो इस बात का विश्वास है कि तुम्हे कोई न कोई हानि पहुँच जाय, कारण कि सेना में हलचल के समय तुम्हे कोई पहिचान न सकेगा और हानि पहुँचा देगा।" क्योकि उन्हें इस बात का आभास हो गया कि वे भाग जाना चाहते हैं अत उसने उत्तर दिया कि, 'हम लोग भी एक ओर निकल जाना चाहते हैं। जो कुछ भाग्य में लिखा है, वह होगा।"

सुल्तान बहादुर का पलायन

जब सद्र खा लौटा तो मग़रिब[१] तथा इशा[२] के मध्य का समय था। सुल्तान पाँच व्यक्तियो सहित, जिनमें मुहम्मद शाह बुरहानपुरी, क़ादिर शाह मन्दवाली, अलिफ खा दुतानी एव दो अन्य क़ूरची थे, सरापरदे के बाहर निकला और आगरे की ओर चल खडा हुआ। अमीरों में से प्रत्येक अपनी सेना सहित किसी न किसी ओर चल खडा हुआ। ऐसी कयामत प्रकट हो गई जिसका उल्लेख सम्भव नही। "वह दिन ऐसा होगा जिस दिन भाई, माँ बाप, स्वामी, पुत्र एक दूसरे से पृथक् हो जायेंगे" इसी दिन के लिये कहना चाहिये।

१ सायंकाल की नमाज़।
२ रात्रि की नमाज़।

सद्र खाँ अपनी सेना सहित नक्कारा बजाता हुआ सीधे मार्ग से मन्दू की ओर रवाना हुआ। मार्ग में भी जिस मुग़ुल सेना से उसका सामना होता उनमें से प्रत्येक, गुज़रवान[1] से लेकर चौकी-दार तक, उन्हे मार्ग दे देता। जन्नत आशियानी दो तीन हज़ार मुग़ुलों सहित इस भ्रम में कि वह (१६) सुल्तान बहादुर है, उसके पीछे रवाना हुए। शेष मुग़ुल सेना लूटमार में व्यस्त हो गई। ख़ुदावन्द ख़ाँ, जिसके अधीन चार हज़ार अश्वारोही थे किन्तु जो अपनी वृद्धावस्था के कारण घोड़े पर सवार न हो सकता था, पालकी मे यात्रा कर रहा था। मुग़ुलों की सेना से युद्ध हुआ। उसे जन्नत आशियानी के समक्ष लाया गया। जन्नत आशियानी ने उसकी विद्वता तथा वृद्धावस्था के कारण उसके प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित करते हुए उसको पादशाहाना उदारता द्वारा सम्मानित किया। क्योंकि वह बहुत बडा हदीसवेत्ता था अतः उन्होंने उससे हदीस की शिक्षा ग्रहण की और वह शेर ख़ाँ के युद्ध के पूर्व तक उनकी सेवा मे रहा। तदुपरान्त वह शेर ख़ाँ द्वारा बन्दी बना लिया गया। शेर ख़ाँ ने भी उसके प्रति अत्यधिक आदर सम्मान प्रदर्शित किया और उसे व्यय देकर गुजरात भेज दिया। सुल्तान महमूद के राज्यकाल में भी वह वृद्धावस्था के बावजूद वकील बनने की आकांक्षा रखता था किन्तु मृत्यु ने उसे अवसर न दिया और उसका निधन हो गया।'

सुल्तान बहादुर का मन्दू के किले में पहुँचना और वहाँ से भी पलायन

संक्षेप में, जब सुल्तान मन्दू के किले के ऊपर पहुँचा तो लगभग १५ हज़ार अश्वारोही उसके साथ किले में प्रविष्ट हो गये। जन्नत आशियानी ने मन्दू के किले का अवरोध कर लिया। सैयिद अमीर का नव्वाब बैराम ख़ाँ से, "जिसे बाद में ख़ानेख़ाना की उपाधि प्रदान हुई, भाईचारा था। उसे दूत बनाकर भेजा गया और यह सदेश प्रेषित किया गया कि, "हममे तुममें भाईचारा है। कभी-कभी सगे भाइयों में भी आपस मे झगडा तथा मतभेद हो जाता है। क्यों कि वर्षा ऋतु आ गई है अतः हमें खेमे में रहने के कष्ट से मुक्ति दिलाई जाय और भाई चारे के कारण मन्दू को हमारे लिये छोड दिया जाय ताकि हम वर्षा ऋतु वहाँ सुगमतापूर्वक व्यतीत कर सकें। तुम अपने पूर्वजों के राज्य गुजरात मे शान्ति एवं सुख से रहो।' यह निश्चय हुआ कि मौलाना मुहम्मद फरग़ली नीली सबील में, जो नालचा तथा मन्दू के नीचे है, पहुँच जाय। सद्र ख़ाँ क़िले के ऊपर से उपर्युक्त स्थान पर पहुँचे। जो फ़कीर के पिता तथा चाचा के समक्ष निश्चय हो वह दोनों आर वाले स्वीकार कर लें। ऐसा ही किया गया। मौलाना मुहम्मद ने बहुत बढ़ बढकर बातें कीं। सद्र ख़ाँ ने इसे स्वीकार न किया और सधि न हो सकी। तदुपरान्त जन्नत मकानी ने मौलाना मुहम्मद को शाह कमालुद्दीन (१७) फ़तहुल्लाह तथा शाह क़ुतुबुद्दीन शुक्रुल्लाह के पास, जो कि फकीर[2] के क्रमशः चाचा तथा पिता थे, इस आशय से भेजा कि, "तुम दोनों धर्मनिष्ठ एवं विद्वान् लोग हो। तुम लोग साक्षी रहना कि मैंने यथासम्भव इस्लाम के सम्मान का ध्यान रक्खा और मैं युद्ध के लिये तैयार न था। वह युद्ध के लिये उद्यत है और युद्ध करना चाहता है। (हमारी) समस्त सेना ने किले का अवरोध कर लिया है और यह निश्चय हुआ कि कल बादशाही युद्ध होगा। प्रत्येक दिशा से मन्दू पर आक्रमण किया जायगा।" फकीर के चाचा तथा पिता ने मौलाना मुहम्मद से कहा कि,

१ जो लोग मार्ग की रक्षा हेतु नियुक्त होते हैं।
२ लेखक।

"तुम हमारी ओर से जाकर निवेदन करो कि उन्होंने जो कुछ स्वयं कहा है कि गुजरात के अतिरिक्त मन्दू की विलायत, जो मुसलमानों से विजय की गई है, उनके अधिकार में रहे, हमें स्वीकार है, किन्तु हमारा आग्रह यह है कि चित्तौड़ की विलायत के विषय में संधि कर लें[1]।" मौलाना मुहम्मद इस प्रार्थना को पहुँचा कर उत्तर लाया कि "हज़रत जहाँबानी ने यह शर्त स्वीकार कर ली है। तुम लोग आ आकर स्वयं अपनी प्रार्थना का उत्तर सुन लो।" फ़क़ीर के पिता तथा चाचा रवाना हुए। जब उनकी दृष्टि उनपर दूर से पड़ी तो वे उनका स्वागत् करके उनके हाथ में हाथ देकर उन्हें अपनी बारगाह में लाये और कहा कि, "यद्यपि दुर्भाग्यवश आप हमसे दूर रहे हैं किन्तु आपका हमसे घनिष्ठ सम्बन्ध है। आप कल क़िले के ऊपर जायें। आपने जो प्रार्थना की है वह हमें स्वीकार है। स्वाती नामक द्वार से उसे गुजरात की ओर भेज दें। हम देहली द्वार से ऊपर आ जायेंगे। मौलाना आपके साथ रहेंगे।" उन लोगों ने हज़रत जन्नत आशियानी के समक्ष इस आशय का पत्र सुल्तान को लिखा। सुल्तान ने यह बात स्वीकार कर ली। इसकी सूचना उन्हें दी गई और यह आदेश हुआ कि कल युद्ध न हो किन्तु यह आदेश केवल शिविर ही में प्रसारित हुआ और अन्य चौकियों में न पहुँचा।

दूसरे दिन मौलाना मुहम्मद, जैसा कि निश्चय हो चुका था, उनके[2] निवास स्थान पर इस आशय से पहुँचे कि मिलकर ऊपर जायें और सुल्तान को नीचे लायें। नाश्ते के समय यह समाचार प्राप्त हुए कि मार्ग से सात सौ मुग़ल क़िले के ऊपर पहुँच गये हैं। जन्नत मकानी ने कहा कि, "क्योंकि ईश्वर ने आप लोगों की कृपा से हमें मन्दू प्रदान कर दिया है अतः अब आप लोगों को जाने की आवश्यकता नहीं" और वे तत्काल स्वयं सवार हुए किन्तु सुल्तान बहादुर सो रहा था। रात्रि समाप्त होने में दो घड़ी रह गयी थीं कि क़ादिर शाह को समाचार प्राप्त हुए कि मुग़ल क़िले (१८) पर पहुँच गये। क़ादिरशाह अपनी चौकी तथा मोर्चे से भागता हुआ सुल्तान को सूचना देने के लिये पहुँचा। पर्दादारों ने अनुमति न दी। सुल्तान सोते में क़ादिर शाह की आवाज़ सुनकर जाग उठा और उसे भीतर बुलवाया। क़ादिर शाह ने इस विषय में निवेदन किया। सुल्तान ने जल मँगवाकर वज़ू किया और बाहर निकला। घोड़े पर सवार हुआ। क़ादिर शाह तथा दो तीन महलदार[3] पैदल साथ-साथ रवाना हुए। इसी बीच में सल्हदी का पुत्र भूपतराय भी पहुँच गया। आदेश हुआ कि वह भी सवार हो। उसने क़ादिर शाह से कहा कि, "जिस ओर से जन्नत मकानी ऊपर आ रहे हैं हम उधर जाकर युद्ध करें।" क़ादिर शाह ने इसे उचित न समझा और उसने उसे टालने के लिये कहा कि, "बाज़ार के सेह दरवाज़े की ओर कोलाहल हो रहा है। अधिकांश लोग उस ओर हैं।" जब वे सेह द्वार की ओर, जहाँ खलजी सुल्तान के मक़बरे हैं और जो बहिश्त के नाम से प्रसिद्ध हैं, बढ़े तो दो तीन सौ मुग़ल अश्वारोही मैदान में प्रकट हुए। सुल्तान ने भूपतराय की ओर मुख करके कहा कि आक्रमण करो और उन्होंने एक कूरची के हाथ से नीमचा[4] लेकर सेना पर आक्रमण किया। एक व्यक्ति जो अबलक़[5] पर सवार था सामने बढ़ा किन्तु सुल्तान

१ इसका तात्पर्य यह है कि गुजरात की विलायत उन्हीं के पास रहने दी जाय।
२ शाह कमालुद्दीन फ़तहुल्लाह तथा शाह कुतुबुद्दीन सुनुल्लाह के।
३ महल के रक्षक।
४ छोटी तलवार।
५ चितकबरा घोड़ा।

ने उसपर तलवार का वार करके उसे घोडे से गिरा दिया और पक्तियो को चीरता हुआ बाहर निकल गया। वह पुन वापस होना चाहता था कि कादिर शाह ने पादशाह के घोडे की लगाम पकड ली और कहा कि, "जन्नत आशियानी आगे खडे हुए हैं। इस स्थान पर अपने आपको नष्ट कराने से क्या लाभ," और उसे सुगर के किले की ओर, जो कि मन्दू के किले के ऊपर है, ले गया। (सुल्तान) सुगर[1] के मार्ग से नीचे उतर कर ५–६ अश्वारोहियों सहित गुजरात की ओर रवाना हो गया। मार्ग में कासिम हुसेन खा मिला। बूरी नामक औरगी[2] ने, जो कि वर्षों तक सुल्तान बहादुर की सेवा करता रहा था और किसी अपराध के कारण भागकर कासिम हुसेन खा के पास चला गया था, सुल्तान को पहिचान लिया और कहा कि, "यह सुल्तान बहादुर जा रहा है।" कासिम हुसेन खा ने उपेक्षा करते हुए उसे गाली दी और कहा कि "सुल्तान का ३-४ आदमियों के साथ होना क्या मानी रखता है?" वह उपेक्षा करके किले से बाहर निकलने लगा। सद्र खा ने देहली (१९) द्वार की ओर खडे होकर युद्ध किया और घायल हुआ। कुछ लोग उसे उठाकर सुगर का ओर ले गये। सुल्तान आलम अफगान भी, जो सुल्तान बहादुर के पास दस हजार अश्वारोहियों सहित आया था, सुगर पहुँचा। जब जन्नत आशियानी को यह समाचार प्राप्त हुए कि यह दस बडे-बडे सरदार सुगर के किले मे हैं तो उसने उनके पास समाचार भेजा कि "मैं इस बात का आश्वासन दिलाता हूँ कि तुम्हारी हत्या न कराऊँगा। तुम सेवा मे उपस्थित हो जाओ।" वे सेवा में उपस्थित हुए। क्योंकि सद्र खा घायल था अत उसकी प्रार्थना पर उसे पालकी प्रदान की गई। सुल्तान आलम को हाथी पर बिठाने का आदेश हुआ। कुछ दिन उपरान्त हजरत जन्नत आशियानी के आदेशानुसार सुल्तान आलम की एडी की नस काट ली गई। सद्र खा उनके साथ रहने लगा, तीन दिन उपरान्त वे मन्दू के किले से नीचे उतरे और गुजरात की ओर रवाना हुए।

हुमायूं द्वारा सुल्तान बहादुर का पीछा

वे एक मजिल से दूसरी मजिल की ओर यात्रा कर रहे थे कि समाचार प्राप्त हुए कि सुल्तान अपने उत्तम खजाने एव जवाहिर को चाम्पानीर से लदवा कर बन्दरदीव भेज रहा है। वे तेजी मे यात्रा करते हुए बकरीद के दिन महमदाबाद के, जो कि चाम्पानीर कहलाता है, द्वार के समीप एमादुलमुल्क के तालाब पर, जो नदी के समान तथा इतना बडा है कि एक ओर से दूसरी ओर दृष्टि नही जा सकती, पहुँचे और इस आशय से ठहर गये कि वहाँ सेना एकत्र हो जाय।" सुल्तान बहादुर ने, जो कि नगर मे था, जब सुना कि बादशाह एमादुलमुल्क के तालाब पर ठहरे हुए हैं तो वह दूसरे द्वार मे, जो कि शुक्र तालाब के हौज की ओर है, दो सौ अश्वारोहियो सहित खम्बायत की ओर भाग गया और अपना अधिकाश खजाना एव जवाहिर साथ ले गया किन्तु जो कुछ रह गया था वह भी इतना अधिक था कि उसकी गणना एव उसका हिसाब असम्भव है। ऐसा विचार किया जाता है कि कई सोने तथा चाँदी के भरे हुए कुएँ उसी प्रकार सुरक्षित रहे। शहर एव बाजारो के समस्त घरो मे आग लगा दी गई। हजरत पादशाह ने स्वय नगर में प्रविष्ट होकर आदेश दिया कि आग बुझा दी जाय और तत्काल वे सुल्तान के पीछे रवाना हुए। एक पहर दिन चढे

१ सोन गढ।
२ इस शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं। सम्भवत: 'गायक' से तात्पर्य है।

सुल्तान खम्बायत पहुँच गया और घोडो को बदल कर बन्दरदीव की ओर रवाना हुआ। हज़रत (२०) पादशाह सायकाल के समय खम्बायत पहुँचे। सैयिद शरीफ गीलानी ने, जो दस साल से खम्बायत की करोडी के पद पर आरूढ और वहाँ का हाकिम था, एव उसके पुत्र सैयिद कासिम ने जिसे पाँच सौ का मसब प्राप्त था, जिस समय सुल्तान बहादुर खम्बायत पहुचा अपने मुह छिपा लिये और एक प्याला भोजन भी उसे न दिया किन्तु उन्होंने हज़रत पादशाह के प्रति वडा उत्तम व्यवहार और शाही भोज का प्रबन्ध किया। अरबी घोडे, उपहार स्वरूप भेंट किये। सैयिद शरीफ का सेवक अयाज उस सभा में सेवा करता था। उसने विश्वासघात करने के विचार से अपने स्वामी से कहा कि, "यदि आज्ञा हो तो दरबार वालों की जिनकी सख्या बहुत थोडी है, हत्या कर दें और सुल्तान बहादुर के प्रति जो अपराध हुआ है उसका समाधान कर ले।" सैयिद शरीफ ने अपने सैयिद होने की मर्यादा की दृष्टि में दास को गाली दी और अत्यधिक कठोर शब्द कहकर अपने पास से निकाल दिया और नाना प्रकार की उचित सेवायें सम्पन्न करता रहा। उसे शाही कृपाओं एव उदारता का आश्वासन दिलाया जाता रहा।

कोलियो द्वारा हुमायूं के शिविर पर आक्रमण

सक्षेप में, जब दूसरी रात प्रारम्भ होने वाली थी तो एक वृद्धा दरबार में उपस्थित हुई और फरियादियों के समान उसने आग्रह किया कि, "मै एक प्रार्थना करना चाहती हूँ जिसे गुप्त रूप से निवेदन करूँगी।" सर्वप्रथम यसावलो ने उसे भगा दिया किन्तु दरबार के सेवको में से एक उसके विषय में पूँछताछ करने के लिये उपस्थित हुआ। उसने कहा कि, "मेरी प्रार्थना ऐसी है जो मैं उनके सामने ही करना चाहती हूँ।" उसे दरबार मे लाया गया तो उसने निवेदन किया कि, "मैं यह प्रामाणिक रूप से कहती हूँ कि आज रात्रि में आस पास के गँवार लोग छापा मारेंगे। मैं चाहती थी कि आपको इसकी सूचना दे दूँ।" हज़रत पादशाह ने कहा कि, "तेरे हृदय में यह कृपा कैसे आई?" उसने निवेदन किया कि, "मेरा पुत्र इन लोगों द्वारा बन्दी है। मेरी इच्छा है कि इस निष्ठा द्वारा मैं उसे मुक्त करा लूँ और यह आभार उसको सिफारिश करा सके।" हज़रत पादशाह ने सावधानी की दृष्टि से आदेश दिया कि समस्त सेना चौकन्नी रहे। रात्रि के अतिम पहर में जब १-२ घडी रह गई तो अचानक कोली तथा गँवार सेना ने जिनमें ५-६ हजार प्यादे सम्मिलित थे आक्रमण कर दिया। हज़रत पादशाह अपने विश्वासपात्रों सहित एक टीले पर पहुँच गये। समस्त खेमे नष्ट हो गये। सुबह हो जाने पर भी वे लूटमार में व्यस्त थे। वे मुगुलों (२१) की हत्या करके भाग खडे हुए। हज़रत पादशाह को इस बात का विश्वास हो गया कि खम्बायत के आदमियों के बहकाने से इन्होंने हमपर आक्रमण किया है अन्यथा यह लोग निरपराध हैं। सुल्तान बहादुर के राज्य के उच्च पदाधिकारियों में मलिक अहमद नामक एक व्यक्ति खम्बायत से भागकर कोलीवारा पहुंच गया था। उसने गुप्त रूप से यह पता लगा लिया कि हज़रत पादशाह बहुत थोडे लोगों के साथ खम्बायत में हैं। उसने गँवारो तथा कोलियों को इस बात के लिये नियुक्त कर दिया कि वे रात्रि में छापा मारें। खेमे को इस बुरी तरह लूटा गया कि उत्तम पुस्तकें, जो हज़रत पादशाह के साथ दिन रात रहती थी, उस लूट में कोलियों द्वारा नष्ट हो गई। जन्नत आशियानी ने सुल्तान बहादुर की पत्नी के पिता जाम फीरोज एव सर्वोत्कृष्ट अमीर सद्र खा को, जो घायल था आश्रय प्रदान करने की दृष्टि से अपने साथ रख लिया था। कुछ लोग उनकी निगरानी हेतु नियुक्त थे जो कि उनकी देख रेख किया करते थे। जिस रात्रि में गँवारों ने

आक्रमण किया तो उसे[1] (उसके रक्षक) बाहर ले जाने लगे। उसने स्वीकार न किया और कहा कि, "मैंने हज़रत पादशाह से प्रतिज्ञा की है कि उनकी सेवा से पृथक् न होऊँगा। ख़ैर।" वह बहुत बड़ा विद्वान्, पवित्र धर्मनिष्ठ एव दयालु था। इस कोलाहल में उसके रक्षको ने उसकी तथा जाम फ़ीरोज की हत्या कर दी। जब हज़रत पादशाह ने इस विषय में पता लगवाया और उन्हे उनके परिणाम की सूचना मिली तो उन्हे बड़ा दुख हुआ और उन्होंने हत्यारो की भी हत्या का आदेश दे दिया।

हुमायूँ द्वारा चाम्पानीर की विजय

उनकी इच्छा थी कि वे सुल्तान बहादुर का पीछा करें किन्तु इसे त्यागकर वे चाम्पानीर की ओर रवाना हुए। जब वे किले के समीप पहुँचे तो उसका अवरोध कर लिया और प्रत्येक दिशा से जिधर से सम्भव था, युद्ध होने लगा। सुल्तान बहादुर अपने वज़ीर इख्तियार खा, जो कि अत्यधिक बुद्धिमान् प्रतिभाशाली, कविता से रुचि रखने वाला एव मुअम्मे की रचना मे दक्ष था, को किले का शासन सौंप गया था। वह पवित्रता, धर्मनिष्ठता एव ईश्वर के भय से शून्य न था। वह सर्वदा फ़िक़ह, हदीस तथा फ़त्वों के ग्रथ अपने पास रख कर फ़त्वों के विषय में छानबीन एव शोध किया करता था और यह जानने का प्रयत्न करता रहता था कि क्या शरा के अनुसार हमारे लिये इस्लाम के पादशाह से, जिसने उसके क़स्बे तथा किले को घेर लिया है, युद्ध करना उचित है अथवा नही। क्योंकि इस युद्ध करने अथवा न करने के विषय में कोई स्पष्ट आदेश न था अत वह असमजस में था (२२) परन्तु पूरबिया सरदार, जिसके अधीन बहुत बड़ी सेना थी, निरन्तर युद्ध किया करता था। किले के ऊपर बहुत बड़ी सख्या में तोपे थी जिनमें से कुछ में एक मन का और कुछ में दो मन और कुछ में तीन मन का गोला आता था, वे नित्यप्रति चलाई जाती थी। जन्नत आशियानी बागो की हवेलियो तथा पादशाही महलो में जहाँ तोप के गोले न पहुँच सकते थे, आनन्द मगल में समय व्यतीत करते रहते थे। सैनिक लोग भी नगर की हवेलियो में निवास करते थे और तोप की मार के कारण सिर न निकाल सकते थे। सयोग से मृत्यु की तोप द्वारा पूरबिया का जीवन गृह नष्ट हो गया। तोप चलाना रोक दिया गया किन्तु जिस समय मुग़ल सेना किले के समीप पहुँच जाती थी तो तोप चलाने की अनुमति दे दी जाती थी। इख्तियार खा यह समझता था कि, "क्योंकि चाम्पानीर *के किले की विजय असम्भव है अत मुसलमानों से युद्ध तथा उनकी हत्या की ओर से उपेक्षा* की जाय तो सावधानी की दृष्टि से यह बड़ा उत्तम है"। किन्तु उसे भाग्य तथा किस्मत के लिखे के विषय में कोई सूचना न थी कि इतना दृढ़ किला जो कि आकाश की बराबरी कर रहा है इतनी सुगमता से विजय हो जायेगा, विशेष रूप से जब कि किले में इतनी अधिक खाद्य सामग्री थी कि यदि १० वर्ष तक भी अवरोध होता रहता तो अनाज, घी, तेल तथा ईंधन की कोई आवश्यकता न होती। क्योंकि क़िले वाले उस राशन से, जो कि सरकार से उनके लिये निश्चित थी, सतुष्ट न थे अत पर्वत के एक ओर से, जो इतना अधिक ऊँचा एव सीधा था कि किसी चींटी का भी ऊपर पहुँचना असम्भव था और जिसके नीचे ऐसा जगल था जहाँ के खारिस्तान[2] में किसी का प्रवेश

१ मद खाँ को।
२ वह स्थान जो काँटों से भरा हो।

सम्भव न था और लोगो को उधर दृष्टि डालने मात्र से घृणा होती थी और कोई पहुच तो क्या सकता था, लकडहारे तथा घास बेचने वाले (अनाज) घी, तेल छिपाकर खारिस्तान में से ले जाते थे और क़िले वाले रस्सियाँ लटका कर अनाज तथा घी-तेल ऊपर खीच लेते थे तथा उसका मूल्य नीचे भेज देते थे।[१] भाग्य में यही लिखा था कि उनका यह कार्य विजय तथा क़िले पर अधिकार जमाने का साधन बने। एक दिन जब कि बडी अच्छी हवा चल रही थी और लोगो को बडा (२३) आनन्द आ रहा था, हज़रत पादशाह सैर तथा तफ़रीह के लिये सवार हुए। पर्वत के घेरे की ओर दूर से सैर कर रहे थे। अचानक कुछ लोग जगल के नीचे से निकले। आदेश हुआ कि इन सब को बन्दी बनाकर लाया जाय। उनसे पूँछ ताँछ की गई कि, "तुम क्या करते हो और किस कारण इस जगल के नीचे गये थे?" उन्होने उत्तर दिया कि, "हम लकडहारे हैं और लकडी चुनने गये थे।" खाली थैलो को देखकर पूछा गया कि "यह खाली थैले कैसे हैं?" उनके पास खाली कुप्पे भी दिखाई पडे। जब उन्हे कुछ ताडना दी गई तो उन्होने सच-सच बता दिया कि "हम लोग अपनी जीविका के उद्देश्य से यह कार्य करते थे और अनाज तथा घी-तेल इस प्रकार किले वालो के हाथ बेचते थे तथा लाभ कमाते थे।" उन्हे आगे करके उस स्थान का निरीक्षण किया गया। हज़रत पादशाह ने सोचा कि इस दीवार से ऊपर चढना असम्भव है किन्तु एक उपाय हो सकता है। यदि ईश्वर सहायता करे तो कुछ काम बन जाय। उन्होने स्वय लौटकर ७०-८० लोहे के बडे बडे खूँटे बनाने का आदेश दिया और हुक्म दिया कि कल चारो ओर से युद्ध प्रारम्भ कर दिया जाय। वे स्वय रात्रि के अतिम पहर में तीन सौ पक्का जवानो सहित उस ओर रवाना हुए। खूँटो को बायें तथा दाहिने पत्थर की दीवार में गाड-गाड कर ऊपर चढने लगे। इस प्रकार फौलाद की सीढी तैयार कर ली। यह पर्वत का कोना ऐसा न था कि किसी को उस ओर से किसी प्रकार की शका होती। जब ३८ व्यक्ति ऊपर चढ गये तो ३९वाँ व्यक्ति बैराम खा था जो कि ऊपर पहुँचा। ४०वें हज़रत जहाँबानी स्वय थे। ऊपर की ओर बडा खुला स्थान तथा एक बहुत बडा तालाब था। किले वाले यहीं निवास करते थे और यहीं उनके खज़ाने, सोना चाँदी, अनाज का भडार, घी, तेल के कुए एव अन्य आवश्यक वस्तुए रहती थीं। इससे ऊँचाई की ओर एक कुरोह पर एक पर्वतीय किला है जिसे हिन्दी में मूलिया कहते हैं। वहाँ भी एक दूध के समान सफ़ेद तालाब था। इस कारण वह दूधिया कहलाता था। मूलिया की ओर के किले एव दीवार को इस (२४) प्रकार बनाया गया था कि किला पर्वत से मिल गया था। जिस स्थान पर यह ४० लोग पहुँचे थे वह उस मार्ग के सामने था जहाँ से लोग मूलिया के ऊपर पहुँच सकते थे। उसके बीच मे एक खाई थी जबली जबल[२]। प्रात काल तक समस्त तीन सौ व्यक्ति ऊपर चढ आये और हज़रत पादशाह के आदेशानुसार विजयी सेना युद्ध करने लगी। उन लोगो ने अचानक "अल्लाह अल्लाह" का नारा लगाते हुए द्वारपालो एव उन लोगो को, जो मोर्चों में थे, बाणो की वर्षा द्वारा दुर्दशा को पहुँचा दिया और क़िले की ओर बढकर ताला तोड डाला तथा द्वार खोल दिया। दैवी विजय तथा सफलता ने दौडकर उनका स्वागत किया[३]। जो लोग क़िले के द्वार के समीप थे,

१ रस्सियों द्वारा।

२ सम्भवत यह खाई का नाम है।

३ मूल में 'दौ अरप इक्बेकबाल नमूद'।

उनके लिये आशाओ के द्वार खोल दिये और वे लोग घोडे पर सवार भीतर प्रविष्ट हो गये। हाहाकार मच गया। इख्तियार ख़ा अपने विश्वासपात्र सहित विवश होकर मूलिया के किले की ओर रवाना हुआ। जन्नत आशियानी तथा वे लोग, जो उनके साथ थे, यह देखते थे कि किले वाले ऊपर जा रहे हैं किन्तु खाईं के बीच में होने के कारण वे उन तक न पहुँच सकते थे। वे बाणो की वर्षा करने लगे। शुक्रवार की प्रातःकाल को किले वालो के लिये यह महान् कयामत आई। उन्होने अत्यधिक हत्याकाड किया और नगर को नष्ट भ्रष्ट कर डाला। प्राय स्त्रियाँ एव कुछ पुरुष पर्वत से नीचे कूदकर नष्ट हो गये। जन्नत आशियानी ने अत्यधिक कृपा प्रदर्शित करते हुए अपनी सेना को मार काट करने से रोक दिया और जो लोग बचे वे हज़रत ज़िल्लल्लाह की अनुकम्पा के कारण ही बच सके। तदुपरान्त उन्होने अपने विश्वासपात्रो सहित इख्तियार खा के पास कुरान शरीफ भेजकर यह आश्वासन दिलाया कि वह नि सकोच किले के नीचे उतर आये और हमारी सेवा मे उपस्थित हो। उसे पादशाही कृपाओ द्वारा सम्मानित किया जायेगा। वह उस आश्वासन पर विश्वास करके बिना किसी वादविवाद के हज़रत जहाँबानी की सेवा में उपस्थित हुआ और नाना प्रकार की विशेष कृपाओ द्वारा सम्मानित हुआ। यहाँ तक कि उसके प्रति कृपा प्रदर्शित करते हुए उन्होने उससे कहा "कि यदि तू हमारी सेवा में रहना चाहे तो तुझे अत्यधिक सम्मान प्रदान किया जायेगा और यदि तू चाहे तो तुझे अनुमति दे दी जाय, तू बहादुर के पास चला जा।" (२५) उसने अपनी निष्ठा को व्यक्त करने के लिये तत्काल हज़रत के नाम पर यह मुअम्मा पढा

मुअम्मा

'प्रियतम के सौन्दर्य के प्रकाश के सामने धूर्त को सफलता नही होती,
हमारे चन्द्रमा को, निष्ठावानो का हृदय स्पष्ट रूप से ज्ञात है।'

जन्नत आशियानी ने अपने शुभ हाथो से उसे विशेष सरोपा प्रदान किया। क्योंकि उसमें अत्यधिक योग्यता थी अत वह प्राय स्वर्ग रूपी दरबार में ही उपस्थित रहता था। उन्होंने उसे अपने विशेष दरबारियों में सम्मिलित कर लिया। क्योंकि ३-४ मास अपितु इससे अधिक किले का अवरोध होता रहा था अत विजयी सेना विलायत[1] के अमल[2] की ओर ध्यान न दे सकी। विजय के उपरान्त उसे इतना अधिक सोना तथा खज़ाना प्राप्त हुआ जो किसी विलायत की दस वर्ष की आय से भी न प्राप्त होता। इस किले से धन-सम्पत्ति के उपरान्त उन्होने विलायत के अमल एव प्रजा से माले वाजबी[3] की प्राप्ति को कोई महत्व नही दिया और किले पर अधिकार जमाना ही सर्वोपरि समझा। उन्होंने अपनी आकांक्षा के अनुसार सेना को ढालों में भर भरकर बाँटा और अमीरों तथा राज्य के उच्च पदाधिकारियो को गिन कर नही अपितु ढेर लगा-लगा कर हिस्सा दिया। इतनी अधिक उत्तम वस्तु, वस्त्र, भोजन सामग्री, तथा पेय एव सुगन्धित वस्तुएँ अधिकार में आईं कि उनकी प्रशसा सम्भव नही अपितु उनकी कल्पना भी नही की जा सकती। उस धन-सम्पत्ति को गुजरात के सुल्तानों की सात पीढियो ने अत्यधिक सुख शान्ति के कारण

१ राज्य।
२ राजस्व।
३ जो राजस्व उन्हें अदा करना था।

एकत्र किया था। जिस प्रकार कजूस द्वारा सचित धन सम्पत्ति को उसके उत्तराधिकारी उड़ा डालते हैं, सुल्तान बहादुर ने लाखों अपितु करोड़ो कलावन्दो,[1] मसखरों एव लवन्दा[2] को बाँट दिया। (२६) बहुत समय तक पाजी लोग, जिलौदार, कमीने एव बाजारी, अम्बर के सन्दूक, सुगधित कस्तूरी के बोझ, सुगधित मदिरा के मटके, चन्दन इत्यादि लूटते रहे और इन वस्तुओं का अत न होता था।

सुल्तान बहादुर द्वारा राजस्व की वसूली के लिये एमादुल मुल्क की नियुक्ति

क्योंकि वह वर्ष खजानो की विपत्ति का वर्ष था अत कृषि तथा अन्य आय के साधन दैवी एव अन्य विपत्तियों से सुरक्षित रहे। गुजरात वालो तथा वहा की प्रजा ने राजस्व के विषय मे प्रार्थनापत्र लिखकर बन्दरदीव भेजा कि "मुगुल लोग किले पर अधिकार जमाने तथा उसकी धन-सम्पत्ति की प्राप्ति में व्यस्त हैं। यदि सल्तनत पनाही[3] कोई आमिल या तहसील वसूली करने वाला नियुक्त कर दें तो जो राजस्व वाजिब है वह एकत्र कर लें। सुल्तान बहादुर ने अपने प्रत्येक अमीर की ओर सकेत की दृष्टि से देखा किन्तु किसी ने भी यह सेवा स्वीकार न की। यदि किसी के हृदय में यह सेवा आती भी तो उसे सेना एकत्र करने के लिये पर्याप्त नकद धन की आवश्यकता थी ताकि वह विलायत में पाँव रख सकता। सुल्तान का एक दास एमादुलमुल्क नामक था। वह बड़ा ही साहसी एव वीर था। उसने धरती का चुम्बन करके यह सेवा स्वीकार कर ली। सुल्तान ने उसे आदेश दिया कि "लश्कर की व्यवस्था एव सेना एकत्र करने के लिये जो तू चाहे माँग ले।" उसने निवेदन किया कि, "मैं माल तथा खज़ाना कुछ नही चाहता, मैं अपने स्वामी का कृपादृष्टि चाहता हूँ। मुझे खासे का सरोपा एव सफेद कागज पर मुहरें उज़क लगाकर प्रदान कर दी जाय ताकि हर विलायत के परगने मे मैं जिसे चाहूँ जागीर प्रदान कर सकूँ और वह स्वीकृत रहे। सुल्तान ने उसको शाबाशी देकर सम्मानित किया और उसे तत्काल खिलअत प्रदान की। बहुत से फरमानो पर मुहरें उज़क लगाकर तूक एव नक्कारा[4] प्रदान किया और उसे जाने की अनुमति दे दी। जिस समय वह इस सेवा हेतु रवाना हुआ उसके साथ ७० व्यक्ति थे। यह बात (२७) सर्वसाधारण में प्रसिद्ध हो गई कि उसे मुगुलो के विरुद्ध आक्रमण करने के लिये भेजा जा रहा है। इस बात को और अधिक प्रसिद्ध करने के लिये उसने नक्कारा बजवाना एव आम तौर पर जागीर प्रदान करना प्रारम्भ कर दिया और इस प्रकार अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ। अहमदाबाद के समीप पहुँच कर उसने अपनी सेना का अर्ज एव सान[5] किया। उसमें ५० हज़ार अश्वारोही से अधिक निकले। बतवा मे, जो कि अहमदाबाद के समीप है, चाम्पानीर के मार्ग में शिविर लगा दिये और राजस्व की तहसील वसूल प्रारम्भ कर दी। चाम्पानीर के क़िले की विजय के

१ गायक।
२ दुराचारी, व्यभिचारी, वैश्या।
३ सुल्तान बहादुर से तात्पर्य है।
४ पताका तथा नक्कारा जो राजकीय अधिकारों के द्योतक थे।
५ निरीक्षण एव गणना।

५–६ दिन उपरान्त जब यह समाचार पवित्र कानों[1] तक पहुँचे तो उन्होंने मौलाना मुहम्मद लारी को जो आख़ुन्द[2] था, ख़ज़ाना सौंप दिया और किला तरदी बेग को, जो बाद में खानेजहाँ हो गया, प्रदान किया। जितनी धन-सम्पत्ति, वे अपने साथ ले जा सकते थे वह ले ली और समस्त अमीरों, सैनिकों तथा प्रतिष्ठित लोगों को बाँट दी। इसमें से लगभग एक लाख ५० हज़ार महमूदी, जो ७५ हज़ार रुपये के बराबर होती हैं, फ़क़ीर[3] के पिता तथा चाचा को प्रदान की। उन्हें चाम्पानीर में छोड़ दिया ताकि वे अपने घरों में आराम से रहें। किले की विजय के एक सप्ताह उपरान्त वे अहमदाबाद की ओर रवाना हुए। सेना का अग्र भाग जब महेन्द्री नदी तट पर पहुँचा तो एमादुलमुल्क की सेना के अग्र भाग का सरदार शेख़ हमीद खानपुर नामक स्थान में उसी नदी तट पर, जो कि बड़े लम्बे चौड़े सकरे मार्ग का रूप धारण कर लेती है, पादशाह की सेना के अग्र भाग से एक पहर दिन से अस्र के समय तक युद्ध करता रहा। उसने सकरे मार्ग का मुँह रोक लिया था। यहाँ तक कि वह मारा गया। दूसरे दिन जन्नत आशियानी ने नदी पार की।

एमादुलमुल्क की हत्या

जब यह समाचार एमादुलमुल्क को प्राप्त हुए तो वह भी बतवा से, जो कि अहमदाबाद से तीन कुरोह पर है, प्रस्थान करके आगे बढ़ा। जैसे-जैसे हुमायूँ पादशाह की सेना एक मंजिल आगे बढ़ती वह भी एक मंजिल आगे बढ़ता था। यहाँ तक कि महमूदाबाद के उस पार हो गया। अस्करी मीर्ज़ा कुछ अमीरों के साथ, जिनमें दस हजार अश्वारोही थे और जो हिरावल के रूप में थे, आ रहा था। वह नरियाद कस्बे से, जो महमूदाबाद से सात कुरोह पर है, आगे बढ़ा। एमादुलमुल्क ५० हज़ार अश्वारोहियों सहित महमूदाबाद से अग्रसर हुआ। आधे मार्ग में दोनों सेनाओं का आपस में मुकाबला तथा घोर युद्ध हुआ। अस्करी मीर्ज़ा युद्ध न कर सका और नवधारा के थूहड़ के वृक्षों (२८) के पीछे चला गया। उसके साथ ५-६ अश्वारोही थे। उन्होंने तूक तथा अलम को भूमि पर रख दिया। एमादुलमुल्क की सेना लूट मार में व्यस्त हो गई कि अचानक नक्कारे की आवाज कान में पहुँची। तूक तथा अलम फिर से दृष्टिगत हुये। एमादुलमुल्क की सेना में कोलाहल होने लगा कि हुमायूँ की विजयी पताकाएँ पहुँच गईं। वास्तव में जन्नत आशियानी ५-६ कुरोह पीछे थे और यह सेना यादगार नासिर मीर्ज़ा की थी जिसके साथ कासिम हुसेन खाँ तथा हिन्दू बेग थे। अस्करी मीर्ज़ा के आदमी, जो छिन्न-भिन्न हो गये, पुनः अस्करी मीर्ज़ा के पास पहुँच गये। मीर्ज़ा थूहड़ के वृक्षों के बाहर निकला। सब ने मिलकर बड़े ज़ोर का युद्ध किया। एमादुलमुल्क पराजित हो गया और घोर युद्ध हुआ। जब जन्नत आशियानी स्वयं पीछे से पहुँचे तो उन्होंने अत्यधिक लाशें देखीं। उन्होंने खुदावन्द खाँ एलचा से, जो सुल्तान मुज़फ़्फ़र का आख़ुन्द एवं गुजरात के चार सुल्तानों का वकील तथा वज़ीर रह चुका था तथा मन्दसौर में बन्दी बना लिया गया था, पूछा कि "बहुत बड़ा युद्ध हो चुका है और अत्यधिक लाशें गिर चुकी हैं, क्या बाद में भी युद्ध होगा अथवा नहीं।" खुदावन्द खाँ ने निवेदन किया कि, "यदि वह सफ़ेद दाग वाला दास स्वयं रण-

१ हुमायूँ को प्राप्त हुये।
२ गुरू।
३ लेखक।

क्षेत्र में था तो यह अंतिम युद्ध है अन्यथा वह ऐसा व्यक्ति नहीं है जो बिना युद्ध किये चला जाय। जनत आशियानी ने आदेश दिया कि, "लाशों के बीच में ढूंढा जाय, सम्भवत कोई व्यक्ति जीवित मिल जाय जिससे इस बात की जाँच की जा सके।" एक व्यक्ति जीवित मिला। उससे पूछा गया कि, "क्या एमादुलमुल्क स्वय युद्ध में समय था?" उसने कहा कि, "हाँ।" खुदावन्द खा ने निवेदन किया कि, "यह अंतिम युद्ध था। अब किसी में शाही सेना से युद्ध करने का सामर्थ्य नहीं।"

हुमायूं का माडू की ओर प्रस्थान

क्योंकि अहमदाबाद अस्करी मीर्जा को प्रदान हो चुका था अत उसने निवेदन किया कि, "यदि हजरत जहाँबानी सीधे अहमदाबाद मे प्रविष्ट हो जायेंगे तो नगर नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा।" इस कारण उन्होंने अस्करी मीर्जा को अहमदाबाद जाने की अनुमति दे दी और स्वय अहमदाबाद के बाहर बतवा होते हुए सरखेज में पडाव किया। तीसरे दिन दरबार के विश्वासपात्रों सहित (२९) उन्होंने अहमदाबाद की सैर की। यादगार नासिर मीर्जा को पटन नामक कस्बा प्रदान कर दिया, कासिम हुसेन खा का भरौंच और हिन्दू बेग को ५-६ हजार अश्वारोहियों सहित कुमक हेतु नियुक्त कर दिया कि जहाँ कही कोई विद्रोह हो वह सहायता हेतु पहुँच जाये और शत्रुओं को नष्ट करने का प्रयत्न करे। वे स्वय सूरत, जूनागढ तथा बन्दरदीव की ओर रवाना हुए। मार्ग के मध्य से लौटकर चाम्पानीर तथा अहमदाबाद को अपने बायी ओर करते हुए बुरहानपुर को पार किया। वहाँ से मन्दू पहुँचे।

मुगलो की गुजरात में पराजय

जब इस प्रकार ३-४ मास व्यतीत हो गये तो सुल्तान के अमीरों में से खाने जहाँ शीराजी ने नौसारी में एक दृढ स्थान बनाकर सेना एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया। वहाँ से निकल कर उसने कासिम हुसेन खा के सम्बन्धी अब्दुल्लाह खा ऊजबेक से युद्ध किया और उसे नौसारी से निकाल दिया। सैयिद इस्हाक न पहुँच कर खम्बायत पर अधिकार जमा लिया और वे दोनों ओर सेनाए एकत्र करने लगे। रूमी खा, जिसके अधिकार में सूरत नामक बन्दरगाह था, खाने जहाँ से मिल गया और समुद्र के मार्ग से युद्ध हेतु भरौच के विरुद्ध जहाज भेजे। खाने जहाँ खुश्की के मार्ग से चला। कासिम हुसेन खा मुकाबला न कर सका और भरौंच से भागकर चाम्पानीर पहुँच गया। उन लोगों ने भरौंच पर अधिकार जमा लिया और सैयिद लाद जियू ने, जो बरौदा के आसपास था, उस नगर को जो दौलताबाद कहलाता है, अपने अधिकार में कर लिया। दरियाँ खा तथा मुहाफिजुल मुल्क रायसेन के किले में थे। वहाँ से वे पटन की ओर रवाना हुए। अस्करी मीर्जा ने यादगार मीर्जा के पास आदमी भेजे कि क्योंकि गुजराती लोग पटन के समीप पहुँच गये है अत यह उचित होगा कि तुम अहमदाबाद की ओर रवाना हो ताकि हम लोग मिलकर युद्ध करें। यादगार नासिर मीर्जा ने उत्तर लिखा कि, "मै तुमसे सहायता नही चाहता। मुझमें इतनी शक्ति है कि मै इनसे युद्ध कर सकूँ। यदि मै अहमदाबाद आता हूँ तो पटन हाथ से निकल जायगा। मुझसे अहमदाबाद आने का आग्रह न करो।" मीर्जा अस्करी ने उसके बुलाने पर जोर दिया और आग्रह किया कि, "यदि तू न आयेगा तो पादशाह का विरोधी समझा जायेगा।" वह विवश होकर पटन को छोडकर अहमदाबाद पहुँचा। जब भरौंच, खम्बायत, पटन तथा बरौदा गुजरातियों के हाथ (३०) में आ गये तो उन्होंने सभी स्थानों से सुल्तान बहादुर के पास बन्दर दीव में पत्र भेजे कि,

"हम लोगों ने पादशाह के प्रताप से इतने थानों को मुग़लों से छीन लिया है। समस्त मुग़ल अहमदाबाद में एकत्र हो गये हैं। यदि विजयी पताकाएँ प्रस्थान करें तो हम थोड़े से परिश्रम से अहमदाबाद से भी उन्हें निकाल देंगे।" सुल्तान बहादुर, जोकि इस अवसर की खोज में था, इसको बहुत बड़ी देन समझकर तत्काल अहमदाबाद की ओर रवाना हो गया। चारों ओर से सेनायें एकत्र होने लगी। वह सरखेज पहुँचा। उसकी सेना में नित्य-प्रति वृद्धि होने लगी। अस्करी मीर्ज़ा, यादगार नासिर मीर्ज़ा, कासिम हुसेन खाँ एवं हिन्दूबेग ने, अहमदाबाद के किले से निकलकर असावल की ओर, जो कि सरखेज के समक्ष है, सुल्तान बहादुर के मुकाबले में पड़ाव कर दिया। ३-४ दिन उपरान्त वे अकारण तथा बिना युद्ध किये हुए चाम्पानीर की ओर चल खड़े हुए। सुल्तान ने पीछा किया। सैयिद मुबारक तथा उलुग खाँ को हिरावल नियुक्त किया। मीर्ज़ाओं की सेनाओं के पीछे के भाग में नासिर मीर्ज़ा था। उसने पलटकर महमूदाबाद में युद्ध किया। यादगार (नासिर) मीर्ज़ा घायल हो गया। वह पुन लौटकर मीर्ज़ाओं के पास पहुँचा। क्योंकि वर्षा ऋतु आ गई थी अत सुल्तान ने महमूदाबाद के महलों में पड़ाव किया। मीर्ज़ा लोग बड़ी तेज़ी से यात्रा कर रहे थे। नाले तथा नदियों में बाढ़ आ गई थी। कोलियों तथा करासियों ने प्रत्येक दिशा से लूटमार प्रारम्भ कर दी थी। घोड़े तथा खेमें वर्षा की अधिकता के कारण नष्ट हो गये और कुछ जल में डूब गये। सक्षेप में, वे अत्यधिक कठिनाई झेलते एवं बड़ी अव्यवस्थित दशा में एमादुलमुल्क के ताल के पास, जो चाम्पानीर के किले के नीचे है, पहुँचे। उनके पास बहुत कम सख्या में खेमें थे। यादगार नासिर मीर्ज़ा ने फकीर के खेमे[1] में पड़ाव किया। तरदी बेग खाँ किले के नीचे उतरा और वह प्रत्येक मीर्ज़ा की सेवा में उपस्थित हुआ और प्रत्येक को घोड़े भेजे तथा आतिथ्य किया। दूसरे दिन मीर्ज़ा लोग एकत्र हुए और उन्होंने हिन्दू बेग से परामर्श किया कि हम जनत आशियानी को क्या मुह दिखायेंगे। मन्दू ६–७ दिन की यात्रा की दूरी पर है अत यह उचित होगा कि किले के ऊपर (३१) जो खज़ाना है उसे तरदी बेग से ले लें और तैयारी करके पुन सुल्तान से युद्ध करें।" मीर्ज़ाओं में से प्रत्येक ने अपने वकील तरदी बेग खाँ के पास भेजे और कहलाया कि, "क्योंकि सेना की दशा बड़ी खराब हो गई है अत यह आवश्यक है कि हम लश्कर को आश्रय प्रदान करें और पुन सुल्तान बहादुर पर आक्रमण करें। किले के ऊपर अत्यधिक ख़ज़ाना है। थोड़ा सा हमें भेज दो ताकि तैयारी करके वापस हो।" तरदी बेग ने स्वीकार न किया और उत्तर भेजा कि, "मैं बिना आदेश के नहीं दे सकता।" इसी बीच में सुल्तान बहादुर महमूदाबाद से आगे बढ़कर महेन्द्री नदी के तट पर, जो चाम्पानीर से १५ कुरोह पर है, पहुँच गया। दूसरे दिन तरदी बेग खाँ किले से नीचे उतर कर मीर्ज़ाओं की सेवा में जा रहा था कि उसका एक विश्वासपात्र, जो कि मीर्ज़ाओं के पास से आ रहा था, मार्ग में मिल गया। उसने उसके कान में कहा कि, "मीर्ज़ाओं ने तुझे बन्दी बनाने की योजना बना ली है।" तरदी बेग खाँ के हृदय में आया कि बिना पता लगाये हुए वापस होना तथा किले के ऊपर पहुँच जाना उचित नहीं। वह फकीर[1] के घर में उतर पड़ा और लोगों को इस आशय से भेजा कि वे पता लगाकर आयें। अन्त में जब उसे विश्वास हो गया कि यह सत्य है तो वह लौटकर क़िले के ऊपर पहुँचा और उसने सदेश भेजा कि, "आप लोग यहाँ से मन्दू चले जायें।"

१ लेखक।

क्योंकि मीर्जाओं की दशा बडी शोचनीय हो गई थी अत उन्होंने मिलकर निश्चय किया कि अस्करी मीर्जा बादशाह बने और हिन्दू बेग उसका वकील। अन्य मीर्जाओं के नाम पर बहुत बडी-बडी विलायतें रक्खी गईं। उन्होंने प्रतिज्ञा की तथा वचनबद्ध हुए किन्तु तरदी बेग इस बात का आग्रह करता रहा कि वे शीघ्र मन्दू चले जायें और इसी उद्देश्य से उसने मीर्जाओं की सेना पर तोप चलाई। वे लोग ५-६ दिन उपरान्त इस आशय से रवाना हो गये कि घाट करजी से होते हुए आगरे चले जायें और उसे अधिकार में कर लें। सुल्तान बहादुर को ज्ञात हुआ कि मीर्जा लोग चल दिये तो वह भी महेन्द्री नदी से आगे बढा। जब तरदी बेग ने सुना कि सुल्तान किले की ओर आ रहा है तो वह जितना खजाना ले जा सकता था उसे लदवाकर किले से नीचे उतरा और पाल के मार्ग से जिधर से ६ दिन में मन्दू पहुँचा जा सकता है, जन्नत आशियानी की सेवा में रवाना हो गया। सुल्तान बहादुर चाम्पानीर पहुँचा। मौलाना महमूद लारी तथा (३२) अन्य मुगलों को, जो रह गये थे, उनकी श्रेणी के अनुसार आश्रय प्रदान किया तथा सरोपा, घोडे एव खर्च देकर उन्हे वहाँ से चले जाने की अनुमति दे दी। जितना खजाना शेष रह गया था उसे अपने अधिकार मे कर लिया। कुछ लोगो का यह विश्वास है कि कुछ स्थानो का खजाना अब भी उसी प्रकार सुरक्षित है।

हुमायूँ का आगरा पहुँचना

तरदी बेग खा ने जन्नत आशियानी को मीर्जाओं की योजना तथा जो कुछ उन्होने निश्चय किया था, उसकी सूचना दी। वे तत्काल मन्दू से रवाना होकर हिन्दुस्तान पहुँचे ताकि मीर्जाओं के पहुँचने एव उनके विद्रोह करने के पूर्व वे आगरे पहुँच जाय और वहाँ उपद्रव की अग्नि को न भडकने दें। सयोग से करजी नामक घाट पर मीर्जाओं की जन्नत आशियानी से भेंट हो गई। वे उनकी सेवा में उपस्थित हुए और कोई भी सफलता न प्राप्त करके आगरे की ओर उनके साथ-साथ रवाना हुए। ... [1]

मुहम्मद जमान द्वारा गुजरात पर अधिकार जमाने का प्रयत्न

(३६) मुहम्मद जमान मीर्जा को सुल्तान बहादुर ने मुगुलो के प्रभुत्व के समय इस आशय से हिन्दुस्तान भेज दिया था कि वह समस्त राज्य में विघ्न डाले। वह लाहौर तक पहुँचकर बहुत बडे उपद्रव का कारण बना। जब जन्नत आशियानी आगरे लौट गये तो वह पुन अहमदाबाद पहुँचा किन्तु इसी बीच में उसे सुल्तान बहादुर की हत्या के समाचार प्राप्त हुए। वह मार्ग से शीघ्रातिशीघ्र इस आशय से बन्दरदीव पहुँचा कि फिरगियो से सुल्तान बहादुर के खून का बदला ले। वह इस भेस में सुल्तान बहादुर की माता के समक्ष उपस्थित हुआ। वह काले वस्त्र धारण किये हुए था और उसकी सेना के उच्च पदाधिकारी भी काले वस्त्र पहिने हुए थे। सुल्तान बहादुर की माता ने तीन सौ सरोपा मुहम्मद जमान मीर्जा हेतु भेजे और उसे उस नीले वस्त्र से निकाल कर विदा कर दिया। वह दीव की ओर रवाना हुआ। खजाना उसके पीछे-पीछे था। जब खजाना पहुँच गया तो उसने सब पर अधिकार कर लिया। उसका उद्देश्य यही था कि खजाना अधिकार में

1 सुल्तान बहादुर की मृत्यु के विवरण का अनुवाद नहीं किया गया।

कर ले। यह प्रसिद्ध है कि सात सौ सोने से भरे हुए सन्दूक थे। उसने हब्शी तथा तुर्क दासों को, जो खज़ाने की रक्षा हेतु नियुक्त थे, सबही को प्रोत्साहन दिया। मुगुल लोग उदाहरणार्थ गज़न्फ़र बेग तथा अन्य लोग सब के सब मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा की सेवा में उपस्थित हुए। उसके पास १०-१२ हज़ार उत्तम अश्वारोही एकत्र हो गये। ख़ज़ाने की धन-सम्पत्ति सब को बांट दी गई। क्योंकि वह विलासप्रिय व्यक्ति था अतः बन्दरदीव के आसपास भोगविलास में व्यस्त हो गया। नाना प्रकार के भोजन तथा पेय एकत्र किये जाते और वह उनसे लाभान्वित होता। उसके हृदय में आया कि गुजरात की सल्तनत पर अधिकार जमा ले। यदि वह उस अवसर से लाभ उठाकर शीघ्रातिशीघ्र अहमदाबाद चला जाता और राजधानी पर अधिकार जमा लेता तो गुजरात के राज्य पर भी अधिकार जमा लेता किन्तु भंग, अफ़ीम, मदिरा में ग्रस्त रहने के कारण उसने फ़िरंगियों को हज़ारों, लाखों तथा करोड़ों इस आशय से घूस में दे दिये कि वे शुक्रवार के दिन उसके नाम का ख़ुत्बा पढ़वाने की अनुमति दें। इतने अधिक ख़ज़ाने तथा सेना के बावजूद वह कोई भी सफलता न प्राप्त कर सका। यदि वह ऐसी सेना को लेकर शीघ्रातिशीघ्र अहमदाबाद चला जाता तो गुजरात वाले (३७) तैयार न हो सकते थे और सल्तनत उसे प्राप्त हो जाती किन्तु यह भाग्य की बात है जिसे भी प्राप्त हो जाय।

जब (गुजरात के) अमीरों को, जो अहमदाबाद में थे, यह समाचार प्राप्त हुए कि उसने बन्दरदीव में अपने नाम का ख़ुत्बा पढ़वा दिया है और ख़ज़ाने तथा सेना पर अधिकार जमा लिया है तो उन्होंने निश्चय किया कि जब वह अहमदाबाद की ओर रवाना हो तो वे नगर को ख़ाली कर दें और प्रत्येक किसी न किसी दिशा को चला जाय एवं विश्वस्त लोग मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा से भेंट करें। इसी बीच में एमादुलमुल्क, जिसने प्रारम्भ में अस्करी मीर्ज़ा से युद्ध किया था, दरबार में उपस्थित हुआ और इख़्तियार ख़ाँ तथा अफ़ज़ल बेग से, जो कि सुल्तान के प्रतिष्ठित वकील थे, कहा कि, "आप लोग राज्य का हित किस बात में समझते हैं?" जब उसने उन लोगों के साहस में कमी देखी तो कहा कि, "आप लोग वकील हैं, मैं दास हूँ। जिस प्रकार मैं सुल्तान का दास था उसी प्रकार आप लोगों का दास बनने के लिए कटिबद्ध हूँ। इस दरिद्र मुगुल के समक्ष सिर झुकाना एवं उसे सल्तनत प्रदान करना मर्यादा के विरुद्ध है। गुजरात के सुल्तानों के दासों में से मैं जीवित हूँ। आप लोग मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा के समक्ष, जो कि हमारे पादशाह का सेवक था, अपने सिर भूमि पर रक्खें, यह बड़ी लज्जा की बात है।" इन लोगों ने उत्तर दिया कि, "मलिक तू जानता है कि गुजरातियों की क्या दशा हो गई है? उनमें कोई साहस नहीं रहा है। वे निरन्तर कष्टों का सामना करते रहे हैं। हमारा सुल्तान शहीद हो गया है। ख़ज़ाने मुहम्मद ज़मान के हाथ में पहुँच चुके हैं। अब क्या हो सकता है? इतने गुजराती कहाँ से प्राप्त हो सकते हैं जो १०-१२ हज़ार मुगुलों का, जो कि मुफ़्त के ख़ज़ाने से समृद्ध हो गये हैं, मुक़ाबला कर सकें?" उसने उत्तर दिया "कि आप लोग साहस से काम लें। अहमदाबाद नगर में रहें। मुझे नियुक्त करके पूर्ण अधिकार प्रदान कर दें और राज्य के उत्तराधिकारी की ओर से वकालत का ख़िलअत एवं सरोपा मुझे प्रदान कर दें। मैं पादशाही कूच को अभिवादन करके प्रस्थान करूँगा। यदि मैं मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा को दंड न दे सकूँगा तो मैं अपने आप को गुजरात के बादशाहों का नमकहराम समझूँगा। मुझे विश्वास है कि यदि मैं उससे युद्ध कर सका तो उसे बन्दी बना लाऊँगा। यदि वह गुजरात के बाहर चला गया तो बिना युद्ध किये ही हमारा उद्देश्य पूरा हो जायेगा।" इन वकीलों ने उसके

साहस एव पौरुष को देखकर उसकी यह शर्त स्वीकार कर ली कि वह सेना को जो (३८) जागीर प्रदान करेगा वह मान्य होगी। उस समय उसके पास ९ अश्वारोही थे। वह नगर से निकलकर नदी के उस पार उस्मानपुर में ठहरा। जागीर प्रदान करने तथा लश्कर एकत्र करने की घोषणा करके सेना एकत्र करने में व्यस्त हो गया। जो कोई तीन घोडे ले आता और चेहरे लिखवाता तो उसे एक लाख तन्के जागीर मे दे दिये जाते। यहाँ तक कि एक मास में लगभग ४० हज़ार अश्वारोही तैयार हो गये।

मुहम्मद जमान मीर्ज़ा का पलायन

जब एमादुलमुल्क ने अपनी सेना की सख्या ४० हजार से अधिक कर ली तो मुहम्मद जमान के विरुद्ध रवाना हुआ। उसका विचार था कि वह भी उसका मुकाबला करेगा। वह अपने स्थान से न हिला। एमादुलमुल्क का साहस और भी बढ़ गया। वह शीघ्रातिशीघ्र उनके विरुद्ध पहुँचा। *मुहम्मद जमान ने खाईं खोद कर अराबा तैयार कर लिया। हुसामुद्दीन मीरक वल्द मीर खलीफा ने, जो कि मुहम्मद जमान मीर्ज़ा का वकील तथा सिपहसालार था, निकल कर थोडा बहुत युद्ध किया* किन्तु फिर पुन अरावे में प्रविष्ट हो गया। गुजरात की सेना ने अवरोध कर लिया। तीसरे दिन (३९) वे पक्तियाँ सुव्यवस्थित करके अरावों तथा खाईं के विरुद्ध रवाना हुए। मुहम्मद जमान खज़ाना लेकर पीछे से बाहर निकल गया। मीर हुसामुद्दीन मीरक गुजरात की सेना के साथ युद्ध में व्यस्त था और मुहम्मद जमान कुशलतापूर्वक निकल कर सिंध की ओर रवाना हो गया। एमादुलमुल्क ने विजय प्राप्त कर ली। मीरक, मुहम्मद जमान के पास पहुँच गया।

मुहम्मद जमान कुछ समय तक सिंध में रहा। अन्ततोगत्वा वह जन्नत आशियानी की सेवा में पहुँचा और निष्ठावान् सेवकों में सम्मिलित हो गया। वह शेर शाह से युद्ध के समय मारा गया। कुछ लोगों का मत है कि वह नदी में डूब गया किन्तु कुछ लोगों का मत है कि उसकी युद्ध में हत्या हो गई।



मिरआते सिकन्दरी

लेखक—सिकन्दर इब्ने मुहम्मद उर्फ़ मन्झू इब्ने अकबर

(प्रकाशन—बम्बई १३०८ हि०/१८९०-९१ ई०)

सुल्तान बहादुर गुजराती तथा हुमायूँ का युद्ध

(२३६) जब सुल्तान (बहादुर) मान्दू[१] पहुँचा तो उसने चित्तौड विजय का पुन. संकल्प कर लिया। उन्ही दिनों में ख़ुरासान के बादशाह सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा बाईकरा का नाती मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा, जो हज़रत फ़िरदौस मकानी बाबर पादशाह का जामाता तथा जन्नत आशियानी हुमायूँ पादशाह की सगी बहिन मासूमा बेगम[२] का पति था, जायज हक वाला पादशाहज़ादा[३] होने के कारण कभी-कभी राज्य का दावा करके विद्रोह किया करता था। इस कारण हज़रत जन्नत आशियानी ने उसे बन्दी बनाकर राजधानी आगरा के किले में बन्द करा दिया था। प्रथम बार पूर्व की ओर बिबन बायज़ीद[४] अफ़गान से युद्ध करने के लिए प्रस्थान करते समय, मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा वहाँ से भागकर सुल्तान बहादुर की सेवा में पहुँचा। इस कारण सुल्तान बहादुर एवं हज़रत जन्नत आशियानी के मेल की भूमि में शत्रुता के बीज बो दिये गये। दोनों ओर से इस आशय के, कि मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा की रक्षा न की जाय, पत्र आते जाते रहते थे। जो शेर हज़रत जन्नत आशियानी ने प्रथम पत्र में लिखा था, वह इस प्रकार है.—

शेर

'मित्रता का वृक्ष लगा ताकि मनोकामना की सिद्धि के फल निकलें,
शत्रुता का पौधा उखाड़ डाल, कारण कि इससे अत्यधिक कष्ट पहुँचते हैं।'

---

१ मांडू; इसे 'मन्दू' भी' लिखा जाता था।

२ मासूमा सुल्तान बेगम मीरान शाही।

३ 'पादशाहज़ादा व इस्तेहकाक'।

४ प्रकाशित ग्रन्थ में 'व बेहने तदारुके पटन बायज़ीद अफ़ग़ान व मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा।' फ़रीदी के अंग्रेज़ी अनुवाद में, "When the emperor Humayun made his first expedition to the East to subdue Patna, Bayazid Afghan and Muhammad Zaman Mirza came fleeing and sought shelter with Sultan Bahadur" । (पृ० १८१)। बिबन को फ़रीदी ने पटना पढ़ लिया अतः अनुवाद में भूल हो गई। बायज़ीद अफ़ग़ान के साथ 'व' भी न होना चाहिये था।

दूसरे पत्र मे निम्नांकित शेर लिखा गया.

शेर

'शोक के कारण कली के समान मेरा हृदय रक्त है,
एक होने के बावजूद दो होने की,यह कैसी भावना है।'

दूसरे पत्र को मूलरूप से उद्धृत किया जाता है।[1]....

(२४१) कहा जाता है कि सुल्तान पढ़ा लिखा न था। मुल्ला महमूद मुंशी पत्र का जो उत्तर लिख लाया था उसे उसने उसके लाभ तथा हानि पर दृष्टि डाले बिना भेजने का आदेश दे दिया। उसके आदेश का पालन किया गया। कहा जाता है कि सर्वप्रथम यह मुल्ला हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में था। उसने कोई ऐसा कार्य कर दिया जिससे हज़रत बडे क्रोधित हुए और उसका (२४२) उसके ऊपर कुप्रभाव पडा। इस कारण वह उनकी सेवा त्याग कर सुल्तान बहादुर की सेवा में पहुँचा। उस दुष्ट अभागे ने इस कारण ऐसा विचित्र पत्र लिखा और शत्रुता की अग्नि भडकाने का साधन बना। सुल्तान के कृत्यो के मुख को अपमान प्राप्त हुआ। उसका कारण इस दुष्ट के क़लम की खरोंच थी और सुल्तान को जिन कठिनाइयों का सामना करना पडा, उसका कारण उसके अपहरण की लेखनी थी।

सुल्तान बहादुर द्वारा राजपूतों को वापस करने का प्रयत्न

विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि जब मुल्ला महमूद पत्र लिख चुका और सुल्तान की सेवा में लाया तो वह नशे में था। उस दुष्ट विश्वासघाती ने उस पत्र को उसी अवस्था में पढ़ा। सुल्तान वज़ीरों से परामर्श न कर सका और उसके लाभ तथा हानि पर कोई ध्यान न दे सका तथा उसे भेजने का आदेश दे दिया। प्रातःकाल जब वज़ीरों को उस पत्र के विषय में तथा जो कुछ भी उसमें लिखा था, उसकी सूचना मिली तो वे चिन्ता मे पड गये। जो कठोर वाक्य उसमें लिखे थे उनका अर्थ सुल्तान को समझाया। सुल्तान बडा प्रभावित हुआ। सुल्तान ने मलिक अमीन नस को, जो उसका सहचर एव वज़ीर था, आदेश दिया कि वह शीघ्रातिशीघ्र ऐसे अश्वारोही को लाये जो राजदूत को वापस ला सके। मलिक ने अबूजी नानक[2] को, जो सुल्तान अहमद द्वितीय के समय में वजीहुल मुल्क की उपाधि द्वारा सुशोभित था और गुजरात का वज़ीर नियुक्त हो गया था, प्रस्तुत किया। सुल्तान ने कहा, "तू हमारी कौम से है।[3] तू शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान कर और दूतों के बरवर[4]

१ हुमायूं का पत्र तथा सुल्तान बहादुर के उत्तर का अनुवाद 'तारीखे एलचिये निज़ाम शाह' में कियाजा चुका है।

२ मिरआते सिकन्दरी के अनुसार, "गुजरात के सुल्तानों के वंश वालों में सर्वप्रथम जो मुसलमान हुआ वह सहारन था। उसकी उपाधि वजीहुल-मुल्क थी वह नानक क़ौम से था। [मिरआते सिकन्दरी पृ० ५, रिज़वी उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २, (अलीगढ़ १९५९), पृ० २५०]। फ़रीदी के अनुवाद में नानक के स्थान पर तांक (पृ० १)।

३ नानक अथवा थांक क़बीले का।

४ फ़रीदी के अनुसार 'नावर' (पृ० १८५)।

दर्रे तक पहुँचने के पूर्व पहुँच जा और उन्हें वापस ले आ।" अब्जी हवा के घोडे[1] पर सवार होकर शीघ्रातिशीघ्र रवाना हुआ और उपर्युक्त दर्रे तक पहुँच गया। उसने वहाँ के रक्षको से उन लोगो के विषय में पूछा। उन्होंने उत्तर दिया, "अभी तक यहाँ से कोई नही गया है।" वह प्रसन्न हो गया। तीन रात तथा दिन तक वह वहाँ बैठा रहा तथा प्रतीक्षा करता रहा। राजदूत उपस्थित न हुए। वह समझ गया कि वे अन्य मार्ग से चले गये। वह वहाँ से सुल्तान की सेवा में पहुँचा और इस बात की सूचना दी। सब लोगो ने कहा कि, "अब क्या हो सकता है। भाग्य में यही लिखा था।"

हुमायूँ का सुल्तान बहादुर पर आक्रमण

सुल्तान ने तदुपरान्त मान्दू से चितौड विजय का सकल्प किया। इस कार्य की व्यवस्था (२४३) रूमी खा को सौंप दी और उसे यह आश्वासन देकर प्रोत्साहित किया कि चित्तौड विजय उपरान्त उस किले का प्रबन्ध उसके अधिकार में दे दिया जायेगा। रूमी खा ने विजय की इतनी आश्चर्यजनक रूप से व्यवस्था की कि ससार के नेत्रो ने ऐसी कोई व्यवस्था न देखी होगी।

कहा जाता है कि जब सुल्तान बहादुर का पत्र हजरत जन्नत आशियानी की सेवा में प्रस्तुत किया गया तो वे अत्यधिक क्रोधित हुए और आगरा से चित्तौड की ओर चढ़ाई कर दी। जब ग्वालियर के क्षेत्र में उनके राज्य की पताकाएँ बलन्द हुई तो उनके समुद्र रूपी हृदय में आया कि "सुल्तान बहादुर चित्तौड के किले को घेरे हुए है। यदि इस समय उससे युद्ध होता है तो इसका अर्थ काफिरों की सहायता करना होगा। यह कार्य सम्मानित शरा की दृष्टि से इस समय प्रशसनीय नही, अत जब तक इस विषय में कोई निर्णय न हो जाय, प्रतीक्षा करनी चाहिए।" इस कारण विजयी पताकाएँ ग्वालियर में ठहरी तथा यह प्रतीक्षा करती रही कि परोक्ष से क्या दृष्टिगत होता है और उस लोक से क्या आवाज आती है।

सक्षेप में, हजरत जन्नत आशियानी की विजयी पताकाओ के समाचार सुनकर सुल्तान बहादुर ने तातार खाँ लोदी को ३०,००० सशस्त्र अश्वारोहियो सहित इस आशय से नियुक्त किया कि, "ब्याना के मार्ग से देहली की ओर, जो हिन्दुस्तान की इक्लीम की राजधानी है, प्रस्थान करे और उस प्रदेश को अपने अधिकार में कर ले। हुमायूँ पादशाह विवश होकर इस ओर प्रस्थान करने का सकल्प त्याग कर उस दिशा में रवाना हो जायेंगे अन्यथा उस ओर से तातार खा राज्य पर अधिकार प्राप्त कर लेगा और उसके पास बहुत बडी सेना एकत्र हो जायेगी। यदि हुमायूँ पादशाह इस ओर प्रस्थान करें और वह उस ओर से प्रवेश करेगा तो यह बात हमारी सेना के प्रोत्साहन एव हुमायूँ पादशाह की चिन्ता का कारण बन जायेगी।" इसके अतिरिक्त उसने तातार खा को आदेश दिया कि "यदि हुमायूँ पादशाह मुक़ाबला करने का इरादा करें अथवा लश्कर भेजें तो तू अपनी सेना की गढ़बन्दी कर ले और हमारे आगमन की प्रतीक्षा करता रहे। हम शीघ्रातिशीघ्र पहुँच जायेंगे। जब तक हम न पहुँचे, उस समय तक युद्ध न करे।"

कहा जाता है कि जब तातार खा ब्याना के क्षेत्र में पहुँचा तो मीर्ज़ा हिन्दाल पाँच हज़ार वीरो तथा खूँखार अश्वारोहियो को लेकर, जिन्हे हजरत जन्नत आशियानी ने युद्ध हेतु उसे प्रदान किया

१ अत्यधिक द्रुतगामी घोड़े पर सवार।

था, पहुँचा और मुकाबला किया। तातार खा ने सुल्तान के मना करने तथा आग्रह के बावजूद प्रतीक्षा किये बिना युद्ध किया और पराजित हो गया। उसकी सेना छिन्न-भिन्न हो गई किन्तु उसने स्वय रणक्षेत्र के बाहर पाँव न निकाले और जब तक उसके जान में जान रही पौरुष प्रदर्शित करता रहा। अन्ततोगत्वा धूल एव रक्त में मिल गया और अपने सर को मृत्यु के तकिये पर रख दिया।

कुछ लोगों का कथन है कि उसने यह कार्य इस कारण किया कि वह समझता था कि, (२४४) "मैं देहली का पादशाहज़ादा हूँ। इस युद्ध में विजय उपरान्त देहली पर अधिकार जमा लूँगा और अफगानों की बहुत बड़ी सेना मेरे पास एकत्र हो जायेगी। जिस समय हुमायूँ पादशाह तथा सुल्तान बहादुर में युद्ध होगा तो कोई न कोई पराजित होगा और दूसरे की शक्ति में विघ्न पड़ जायेगा। उस समय यह सम्भव होगा कि मैं सफलता प्राप्त कर लूँ और देहली की सल्तनत की बागडोर अपने हाथ में ले लूँ।" इस कारण उसने सुल्तान बहादुर के आदेश का पालन न किया और अविलम्ब युद्ध किया तथा अपने कुत्सित विचारों के कारण पतन की ओर अग्रसर हुआ। इस बात के सच अथवा झूठ होने का उत्तरदायित्व उल्लेख करने वाले पर है।

जब चित्तौड़ के किले के काफिर, जो किले की प्रतिरक्षा कर रहे थे, परेशान हो गये और सुल्तान की विजय दृष्टिगत होने लगी तो उसने अभिमान प्रदर्शित करना प्रारम्भ कर दिया और कहने लगा कि, "इस युग में कोई ऐसा नहीं है जो मुझसे युद्ध कर सके।" हजरत मआरिफ पनाह हकायक दस्तगाह काशिफ असरारे वुजूद[1] काज़ी महमूद बिन काज़ी जालधर पुरी उस सभा में उपस्थित थे। उन्होंने तत्काल यह शेर पढ़ा

शेर

'जब चरागाह में सिंह नहीं रह जाते,
तो लगड़ी लोमड़ी वहाँ शिकार खेलने लगती है।'

सुल्तान यह बात सुनकर बड़ा रुष्ट हुआ और उसने कहा कि "तुम मेरे राज्य में न रहो। काज़ी ने कहा कि, "राज्य अल्लाह का है। इस राज्य में न मैं रहूँगा और न तू।" वहाँ से वे हज के लिये चल दिये और बीरपुर[2] पहुँचे। उसी वर्ष अर्थात् ९४१ हि० (१५३४-३५ ई०) में इस नश्वर ससार से बिदा हो गये। वे अपने पिता के मुरीद थे और उन्होंने अपने चाचा काज़ी एमाद की सहायता से निपुणता प्राप्त की। काज़ी एमाद, हज़रत शाह आलम पनाह बिन कुतबुल आलम सैयिद बुरहानुद्दीन बुखारी[3] के मुरीद थे। क़ाज़ी महमूद की हजरत शेख जियु इब्ने हज़रत सैयिद महमूद इब्ने हज़रत कुतबुल आलम से भी बड़ी मित्रता एव घनिष्ठता थी।

हुमायूँ की सुल्तान बहादुर पर विजय

सक्षेप में, तातार खा की पराजय से सुल्तान बड़ा दुखी हुआ और उसके अभिमान की

१ ज्ञानी एवं ईश्वर के रहस्यों के ज्ञाता प्रसिद्ध सूफ़ी।
२ बावनी नदी पर स्थित एक ग्राम जो लूनावाडा (रेवकनाथ एजेन्सी) से पश्चिम में ८ अथवा ९ मील पर है।
३ देखिये मिरआते सिकन्दरी, पृ० ४१, रिज़वी : उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २, पृ० २७६।

गर्मी, कष्ट एव आतक की ठडक में परिवर्तित हो गई। इसी बीच में किले[1] पर भी विजय प्राप्त हो गई। सुल्तान की यह इच्छा थी कि उसने रूमी खा को जो वचन दिया है उसे पूरा करे और किला उसे सौंप दे। वज़ीरों ने निवेदन किया कि, "यदि चित्तौड सरीखा क़िला रूमी खा के समान किसी व्यक्ति को प्रदान कर दिया जायेगा तो उससे फिर आज्ञाकारिता की आशा नही की जा सकती।" सुल्तान ने भी अपनी राय बदल दी और अपनी प्रतिज्ञा का पालन न किया। इस कारण (२४५) रूमी खा हृदय से रुष्ट हो गया और उसने गुप्त रूप से हज़रत जन्नत आशियानी हुमायूँ पादशाह के पास प्रार्थनापत्र भेजा कि, "यदि हजरत पादशाह इस ओर प्रस्थान करें तो सुल्तान बहादुर सुगमतापूर्वक पराजित हो जायेगा कारण कि सुल्तान के कार्य दरबार के इस दास के परामर्श के ऊपर अवलम्बित हैं। यह दास ऐसे उपाय करेगा कि विजयी सेनाओं को सफलता प्राप्त हो जाय।" हजरत जन्नत आशियानी ग्वालियर के किले से चित्तौड की ओर रवाना हुए। सुल्तान ने रूमी खा से पूछा कि, "हुमायूँ पादशाह से किस प्रकार युद्ध करना चाहिये?" उसने उत्तर दिया कि, "रूम के पादशाह के समान अरावों तथा तोपों से हम लोग अपनी सेना के चारों ओर गढबन्दी कर लें। यदि बडी से बडी सेना हमसे युद्ध करने के लिये आयेगी तो हम उनके ऊपर गोले चलायेंगे। यदि वे लोहे के पर्वत भी होंगे तो तत्काल जल भुन कर राख हो जायेंगे।" सुल्तान ने रूमी खा के परामर्शानुसार कार्य किया। यद्यपि अमीरों ने निवेदन किया कि "इस प्रकार के युद्ध से हमारा कोई लाभ न होगा," सुल्तान ने उनकी बात न सुनी। जब वे अरावों के किले में प्रविष्ट हो गये तो सुल्तान की सेना के साहस में कमी हो गई। जन्नत आशियानी की सेना के ऐश्वर्य की उन्नति होने लगी। रूमी खा ने पादशाह को लिखा कि, "मैं सुल्तान बहादुर को गाडियों के किले में ले आया हूँ। आप अपने इकबाल की ज्योति से सेना को आदेश दें कि वे सुल्तान बहादुर के शिविर को घेर ले और किसी को बाहर न निकलने दें और न किसी को बाहर से भीतर प्रविष्ट होने दें।" हज़रत जहाँबानी ने आदेश दिया कि, "ऐसा ही किया जाय।" कज़्ज़ाकों[2] ने परकार के समान सुल्तान के शिविर को घेर लिया, मार्ग रोक दिये, अनाज में कमी होने लगी, धीरे-धीरे पूर्णत अप्राप्य हो गया। बैल, घोडे तथा ऊँट, जिबह किये जाने लगे। कुछ दिन इसी प्रकार व्यतीत हुए। सुल्तान बहादुर की सेना व्याकुल हो उठी। यदि चार घोडों की भी हत्या की जाती तो उनकी दुर्बलता के कारण इतना भी मास न मिलता कि दो व्यक्ति उसे खा सकते। तेल, घी तथा अन्य वस्तुओं का अभाव हो गया। घोडे एक दूसरे के बाल एव दुम चबा चबा कर मरने लगे। सुल्तान अत्यधिक चिन्ता में पड गया। इसी बीच मे बजारा के सरदार ने आकर निवेदन किया कि, "हम लोग एक लाख बैलो पर अनाज लदवाकर लाये हैं। कज़्ज़ाकों के भय से प्रविष्ट नही हो सकते। यदि हमारे साथ कोई सेना कर दी जाय तो हम अनाज को शिविर में पहुँचा देंगे। तदुपरान्त और अनाज भी लायेंगे।" सुल्तान ने रातो रात पाँच हज़ार अश्वारोही भेजे। उसी रात में रूमी खा ने यह समाचार हज़रत जन्नत आशियानी के पास लिखकर भेज दिये और यह सदेश भेजा कि, "यदि यह अनाज सुल्तान बहादुर के शिविर में पहुँच जायेगा तो (२४६) कार्य में अधिक विलम्ब हो जायेगा।" हज़रत जन्नत आशियानी ने एक बहुत बडी सेना नियुक्त की। इन लोगों ने सुल्तान की सेना से, जो साथ भेजी गयी थी, युद्ध किया। वे लोग

१ चित्तौड के किले पर।
२ मुग़ल सेना के छापा मारने वालों ने।

पराजित हो गये। हज़रत जन्नत आशियानी की सेना वाले समस्त अनाज उठा ले गये। यह समाचार पाकर सुल्तान की सेना ने अपने प्राणों से हाथ धो लिये तथा निराश हो गये। सुल्तान का रूमी खां पर इतना अधिक विश्वास था कि वह उसके परामर्श के बिना जल तक भी न पीता था। इस समय उसका षड्यंत्र प्रकट हो गया। रूमी खां को भी इस स्थिति का पता चल गया। वह भागकर हज़रत जन्नत आशियानी से मिल गया। इस घटना से सुल्तान की सेना कांप उठी, मानो क़यामत आ गई।

कहा जाता है कि हज़रत जन्नत आशियानी के लश्कर के कुछ अश्वारोही एक दिन एक छोटे से हौदेदार हाथी के ऊपर बैठकर सुल्तान के शिविर के समक्ष पहुँचे। सुल्तान की सेना के एक दस्ते ने निकलकर आक्रमण किया। वे लोग बिना युद्ध किये भाग गये। वह छोटा सा हाथी उन लोगों को प्राप्त हो गया। जब वह सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत किया गया तो छोटे से हाथी के हौदज से दो सन्दूक निकले। वज़ीरों, अमीरों तथा बुद्धिमानों ने निवेदन किया कि, "इन लोगों के बिना युद्ध किये भाग जाने तथा हाथी को छोड़ जाने में कोई न कोई रहस्य है। सन्दूकों को खोलना उचित नहीं।" सुल्तान ने यह बात न सुनी और आदेश दिया कि उन्हें खोला जाय। भीतर से थोड़ा सा नमक और नील में रंगे हुए कपड़े निकले। जब सुल्तान की दृष्टि उनपर पड़ी तो सुल्तान तथा सेना के हृदय में इतना भय बैठ गया कि जब रात्रि हुई तो खज़ाने में जो लाल तथा जवाहिरात थे उन्हें जला देने का आदेश दे दिया गया। एक भारी भरकम हाथी के विषय में, जो सुल्तान के गौरव की सामग्रियों में उसे बड़ा प्रिय था, आदेश दिया कि उसकी सूंड काट दी जाय। सुल्तान तथा दरबारी लोगों की आँखों में आँसू भर आये। दो तोपों के विषय में जिनमें से एक का नाम लैला तथा दूसरी का नाम मजनूं था, आदेश दिया कि इन्हें बारूद भरकर तोड़ डाला जाय। घोड़ा मँगवाकर वह सवार हुआ और सेना को सूचना दिये बिना अपने कुछ विश्वासपात्रों को लेकर *मान्डू की ओर भाग गया। यह घटना रमज़ान ९४१ हि० (२५ मार्च १५३५ ई०) को* घटी।

दूसरे दिन प्रातःकाल उसकी सेना में क़यामत आ गई और लोगों को पता चल गया कि सुल्तान भाग गया। भयभीत सैनिकों के पास न तो भागने का मार्ग रह गया था और न ठहरने का। इसी बीच में हुमायूं पादशाह की सेना दृष्टिगत हुई तथा बुद्धिमान् लोगों के कान में यह आयत पहुँच गई "तू जिसको चाहता है राज्य दे देता है और जिससे चाहता है राज्य ले लेता है।" (२४७) सुल्तान ने *अपने पत्र में, जो ऊपर उद्धृत किया गया, जो शेर लिखा था उसका अभिप्राय* स्पष्ट हो गया।

मिसरा

'परिणाम से ही पता चलेगा कि ईश्वर की इच्छा क्या है।'

सुल्तान का समस्त शिविर नष्ट हो गया। उसकी सेना वालों में से कुछ की हत्या कर दी गई और कुछ को बन्दी बना लिया गया। कुछ नंगे सिर तथा नंगे पाँव भाग गये। जब हज़रत जन्नत आशियानी ने सुल्तान बहादुर का खेमा देखा जो असाधारण प्रकार के सोने के काम के मोटे मख़मल का था तो उन्होंने कहा कि, "यह निःसन्देह ऐसे ही बादशाह की सम्पत्ति है जिसकी समुद्रीय शक्ति बड़ी अधिक है।" कहा जाता है कि सुल्तान सिकन्दर बिन बहलोल कहा करता था

कि, "देहली की पादशाही गेहूँ तथा जौ पर अवलम्बित है और गुजरात की पादशाही मूँगे एव मोती पर, कारण कि गुजरात के पादशाह के अधीन ८४ बन्दरगाह हैं।"

इस इतिहास के सकलनकर्ता तुच्छ सिकन्दर ने अपने पिता से (यह कहानी) सुनी है: वे कहा करते थे कि, 'मै इस आक्रमण में हजरत जन्नत आशियानी के साथ था, मुझे कितावदारी का पद प्राप्त था। पादशाह एक घडी भी विना पुस्तक के अध्ययन के न रहते थे और मुझे एक क्षण को भी उनकी सेवा से दूर होने का समय न मिलता था। जिस दिन हजरत जन्नत आशियानी विजय प्राप्त करके सिंहासनारूढ हुए और दरबारे आम किया तो अमीरो तथा सैनिको मे से प्रत्येक हाथ बाँध अपने स्थान पर खडा था। एक बात करने वाला तोता सुल्तान बहादुर की धन-सम्पत्ति में था। वह लाया गया। उसका पिंजडा सम्मानित राजसिंहासन के समक्ष रख दिया गया। वह जिस प्रकार की बातें करता था उससे सभी लोग आश्चर्य से अगुली दाँतो के नीचे दबा लेते थे।' वे कहते थे कि, "वह ऐसा तोता था कि यदि **तूती नामे**[१] का तोता उस समय होता तो वह उससे आईने के पीछे पाठ पढता[२]। उसमें इतनी बुद्धि तथा ऐसा विवेक था और वह इस सफाई से बात-चीत करता था कि जो कोई भी भाषा बोलता था वह उसकी नकल कर लेता था और इतनी सफाई तथा तेजी से बोलता था कि मानो उसी की आवाज हो।"

कहा जाता है कि इसी बीच में रूमी खा आ गया। पादशाह ने अपने मुह से कहा कि 'आइये रूमी खा।' रूमी खा का नाम सुनते ही तूती ने बोलना प्रारम्भ कर दिया कि, 'फट रूमी खा हराम रवार, फट रूमी खा हराम रवार' अर्थात् रूमी खा हराम रवार पर लानत हो। सम्भवत उसने यह शब्द दस बार कहे होगे। रूमी खा ने लज्जावश अपना सिर झुका लिया। (२४८) हजरत जन्नत आशियानी ने जब इस वाक्य का अर्थ अनुवादको से पूछा और रूमी खा को लज्जित देखा तो कहा, "रूमी खा! यदि यह शब्द कोई मनुष्य कहता तो मै आदेश दे देता कि उसकी जबान तालू से खीच ली जाय, किन्तु क्या किया जा सकता है, यह जानवर है इसके बुद्धि नही।" दरबार वालो ने अनुमान लगाया कि जिस समय रूमी खा सुल्तान के पास से भाग कर गया और लोग उसे यह शब्द कह कर लानत मलामत करते होंगे तो तूती भी उसी वाक्य को दुहराता रहा होगा। जिस समय रूमी खा का नाम उसके कान में पहुचा, वही बात उसे याद आ गई और उसने कह दी। सम्भव है कि ईश्वर ने अन्य लोगो की शिक्षा हेतु यह वाक्य उस पक्षी की जिह्वा से निकलवाये हो और इसका रहस्य यह हो कि उस दरबार में जहाँ रूमी खा के विरुद्ध कोई बात न कही जा सकती हो, यह वाक्य कह दिये जायें।"

सक्षेप में, हजरत जन्नत आशियानी ने वहाँ से प्रस्थान करके मान्दू का अवरोध कर लिया। सुल्तान (बहादुर) ने किला बन्द कर लिया। उपद्रव की अग्नि पुन बलन्द हो गई। युद्ध होने लगा।

१ **तूती नामा** —जियाउद्दीन नख़शबी की प्रसिद्ध रचना जिसमें तोते के द्वारा बहुत सी शिक्षा-प्रद कहानियाँ लिखी गई है।

२ उस समय तोते को बोलना सिखाने की यह प्रथा थी कि कोई आईने के पीछे बैठ जाता था और बोलना प्रारम्भ कर देता था। तोते को आईने के सामने बैठा दिया जाता था। जब आईने के पीछे वाला आदमी बोलता था तो तोता यह समझता था कि आईने का तोता बोल रहा है और वह भी बोलने का प्रयत्न करता था।

इसी बीच में रूमी ख़ाँ ने सलहदी के पुत्र भूपत राय को सूचना दी कि, "सुल्तान ने तुम्हारे वंश के प्रति जो अत्याचार किये हैं वह तुम्हें ज्ञात हैं, अतः ऐसे अत्याचारी के प्रति अपने बहुमूल्य प्राण नष्ट करना बुद्धि के अनुकूल नहीं अपितु यह प्रतिकार का समय है और उससे बदला लेना चाहिये। इसका उपाय यह है कि युद्ध के समय जो द्वार तुम्हारे अधीन हैं, उसे खोल दो। सम्मानित पादशाह ने यह निश्चय किया है कि तुम्हारे पिता का स्थान तुम्हें प्रदान कर दिया जायेगा अपितु उससे भी बढ़कर तुम्हारे प्रति कृपादृष्टि प्रदर्शित की जायेगी। भूपत राय ने रूमी ख़ाँ के मार्ग भ्रष्ट करने पर द्वार खोल दिया और स्वयं हट गया। सेना ऊपर पहुँच गई। जब सुल्तान को इस बात का पता चला तो उसने कहा, "बुद्धिमानों ने जो कुछ कहा है उसमें भूल नहीं की कि साँप को मारना और उसके बच्चे का पालन पोषण करना बुद्धिमानों का कार्य नहीं। उसका यही परिणाम होता है।" सुल्तान (बहादुर) मलिक राजी को अपने स्थान पर नियुक्त करके सुल्तान आलम लोदी को सुनखेरा[1] का किला, जो कि मान्दू के किले का अरक है, सौंपकर दूसरे द्वार से निकला और गुजरात की ओर रवाना हो गया। हज़रत जन्नत आशियानी के कुछ सैनिकों ने उसका पीछा किया और सुल्तान तक पहुँच गये। सुल्तान ने पलट कर युद्ध किया और स्वयं इस प्रकार तलवार चलाई कि शत्रुओं को घोड़े से गिरा दिया और बाहर निकल गया। किले पर विजय प्राप्त हो गई। सद्र ख़ाँ जीवित बन्दी बना लिया गया। उसे तलवार के घाट उतार दिया गया।

(२४९) तदुपरान्त अरक पर आक्रमण किया गया। अरक वाले परेशान हो गये। सुल्तान आलम लोदी ने हुमायूँ की सेवा में उपस्थित होकर अभिवादन किया। पादशाह ने आदेश दिया कि उसकी तथा उसके ३०० विश्वास-पात्रों की हत्या करा दी जाय। कहा जाता है कि मंगलवार को जम मरोखे हुमायूँ पादशाह ने लाल वस्त्र धारण किये थे और दरबारे आम कर रहा था। उन्होंने उनकी हत्या का आदेश दे दिया। एक घड़ी में मान्दू के नगर के प्रत्येक बाज़ार तथा गली में रक्त की नदी बह निकली। इसी बीच में सुल्तान का एक विश्वासपात्र मझू कलावन्त एक मुग़ुल द्वारा बन्दी बना लिया गया। उसने मझू की हत्या के लिये तलवार की मूठ पर हाथ बढ़ाया। मझू ने कहा कि, "मेरी हत्या से क्या लाभ होगा, मुझे जीवित रहने दो। मैं तुझे अपने वज़न के बराबर सोना प्रदान करूँगा। मैं सुल्तान बहादुर का मुसाहिब हूँ। मेरे पास धन की कमी नहीं।" उसने सिर से पगड़ी उतार कर मझू के दोनों हाथ बाँध दिये और एक कोने में बैठ गया। संयोग से इसी बीच में एक राजा जो हज़रत जन्नत आशियानी की सेना के साथ था और इससे पूर्व मझू से परिचित था, उधर पहुँच गया। वह तत्काल घोड़े से उतर पड़ा। मझू का हाथ पकड़ कर चल खड़ा हुआ। मुग़ुल ने कहा कि, "मैं तलवार निकाल चुका हूँ, क़त्ले आम का आदेश है। इसे जीवित न छोड़ूँगा।" राजा के साथ सेना थी और वह अकेला था। राजा ज़बरदस्ती मझू को पकड़कर पादशाह की सेवा में ले गया। उन्होंने देखा कि, "पादशाह इतना अधिक क्रोधित है कि जिस ओर दृष्टि डालता है, अग्नि बरसती रहती है। हत्या के अतिरिक्त उसकी ज़बान से कोई अन्य शब्द नहीं निकलता।" मुग़ुल ने चिल्लाकर कहा कि, "मेरा यह बन्दी बहादुर के विश्वासपात्रों में से है। यह हिन्दू मुझसे ज़बरदस्ती छीन कर लाया है।" पादशाह के कूरची ख़ुशहाल बेग ने, जिसे

1 फ़रीदी के अनुसार 'सोनगढ़'।

सुल्तान बहादुर के पास भेजा गया था और जो सुल्तान बहादुर द्वारा मञ्जू का आदर सम्मान देख चुका था, कहा, "हे पादशाह ! यह मञ्जू कलावन्त गायकों का पादशाह है।' पादशाह ने उसके ऊपर क्रोध की दृष्टि डाली। उसने पुन वही शब्द कहे और निवेदन किया कि, "पादशाह सलामत ! इस समय उसके समान कोई गायक हिन्दुस्तान में न होगा।" पादशाह के क्रोध की ज्वाला बुझ गई। उसने उसी समय आदेश दिया कि, "कुछ गा।" मञ्जू फारसी सगीत में भी अद्वितीय था। उसने गाना प्रारम्भ कर दिया। उसका गाना सुनकर पादशाह की दशा में परिवर्तन हो गया। उसकी कृपा का समुद्र लहरें मारने लगा। उसने लाल वस्त्र उतारकर हरे वस्त्र धारण कर लिये। विशेष सरोपा मञ्जू को प्रदान किया और आदेश दिया कि, "मञ्जू जो मांगना चाहे, माँग ले। तुझे (२५०) प्रदान कर दूंगा।" मञ्जु ने निवेदन किया कि, "मेरे सम्बन्धियो में बहुत से लोग बन्दी बना लिये गये हैं, मैं उनकी मुक्ति चाहता हूँ।" पादशाह ने अपना विशेष निपग मञ्जू की कमर मे बधवा दिया और उसे अपने खासे का घोडा प्रदान किया तथा अपने कुछ विश्वासपात्र उसके साथ कर दिये और आदेश दे दिया कि, "जिसे मञ्जू मुक्त करे उससे कोई कुछ न कहे।" मञ्जू सवार हुआ। वह अपने मित्रो में से जिस किसी को बन्दी देखता था, अपना सम्बन्धी कहकर मुक्त करा देता था। कुछ लोगो ने इस घटना का उल्लेख हज़रत जन्नत आशियानी से किया कि, 'मञ्जू न सम्बन्धियों को सम्बन्धी समझता है और न अपरिचित को अपरिचित, अपितु परिचित अपरिचित सभी को सम्बन्धी कहकर मुक्त करा रहा है।" पादशाह ने कहा कि, "कोई बात नही। यदि आज वह मुझसे मेरा राज्य भी माँगता तो मैं उसे मना न करता और हृदय से उसकी बात स्वीकार कर लेता।" सक्षेप में, वह हज़रत का विश्वासपात्र हो गया।

कहा जाता है कि जब तक वह पादशाह का सेवक रहा उसे जो कुछ इनाम मिलता वह उस मुगुल को दे देता और कहता कि, "तूने मेरी हत्या न की, जो कुछ तूने मेरे साथ किया, मैं उसका बदला किसी प्रकार नही चुका सकता।" मुझको यह कहानी अपने पिता से ज्ञात हुई है। वे उस दरबार मे उपस्थित थे और पादशाह के विश्वासपात्र थे। अन्ततोगत्वा मञ्जू भागकर सुल्तान बहादुर की सेवा में पहुच गया। हज़रत जन्नत आशियानी ने कहा कि, ' उसके दुर्भाग्य ने उससे ऐसा कराया अन्यथा मैं उसके प्रति इतनी अधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित करता कि वह सुल्तान बहादुर को कदापि याद न करता।" कहा जाता है कि, "जब मञ्जू सुल्तान बहादुर की सेवा में पहुँचा तो सुल्तान ने कहा कि, "आज मेरा जो कुछ खोया था, वह सब मुझे मिल गया, अर्थात् मञ्जू को देखकर मैंने अपने दुख एव क्रोध को अपने हृदय से निकाल दिया। अब मुझे कोई इच्छा नही जो मैं ईश्वर से माँगू और वह मुझे प्रदान करे।"

हुमायू द्वारा चाम्पानीर की विजय

सक्षेप में, सुल्तान बहादुर मान्दू से चाम्पानीर, जो कि गुजरात प्रदेश का किला है, पहुँचा। इख्तियार खा वज़ीर एव राजा नरसिंह देव को, जिसकी उपाधि खाने जहाँ थी, चाम्पानीर के क़िले को सौंपकर स्वय खम्बायत के मार्ग से सूरत रवाना हुआ एव दीव बन्दर मे पडाव किया। हुमायूँ पादशाह भी मान्दू से गुजरात की ओर रवाना हुआ और चाम्पानीर के किले का अवरोध कर लिया। बहादुर शाही नामक तोप को, जो कि बहुत बडी थी, किले वाले ऊपर न चढ़ा सके। हज़ारों कठिनाइयाँ झेलकर वे उसे पहाडी के मध्य पहुँचा सके थे, कि हुमायूँ पादशाह की पताकाओ

का चन्द्र उदय हो गया। किले वालो ने उस तोप में तीन छेद कर दिये और उसे वही छोड दिया। जब रूमी खा ने उसे देखा तो कहा कि, "मैं इसे ठीक कर सकता हूँ।" उसने उन छेदो का (२५१) सात धातुओ से भर दिया। यद्यपि पूर्व की अपेक्षा उसमें बारूद कम आती थी और उसकी मार में भी कमी हो गई थी किन्तु जो कुछ भी थी उस समय भी वह ईश्वर का कोप थी। कहा जाता है कि जब रूमी खा ने उसे चलाया तो पहली मार में किले के द्वार को गिरा दिया और दूसरी मार में एक भव्य वृक्ष को, जो द्वार के समीप था, जड से उखाड डाला। किले वाले यह देखकर काँप उठे। किले में एक फिरगी था जिसका नाम सक्ता[1] था। सुल्तान बहादुर ने उसे मुसलमान कर लिया था और उसकी उपाधि फिरग खा रखी थी। उसने इख्तियार खा से कहा कि, "यदि मैं उस तोप के मुह पर गोला मार कर उसे तोड डालूँ तो कैसा हो?" इख्तियार खा ने कहा कि, "यदि तू ऐसा कर सके तो मैं तुझे माला माल कर दूंगा।" उसने पहले ही निशाने में तोप के मुह पर ऐसा गोला मारा कि वह टुकडे-टुकडे हो गई। किले वाले प्रसन्न हो गये। इख्तियार खा ने उसे कुछ कम दिया किन्तु राजा नरसिंह देव ने उसे सात मन सोना पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया।

कहा जाता है कि राजा नरसिंह देव घायल था, इस कारण सुल्तान बहादुर उसे किले में छोडकर चला गया था। जब तोप की आवाजें किले के ऊपर और नीचे से निरन्तर आने लगी तो राजा के घाव फटने लगे और राजा मृत्यु को प्राप्त हो गया। जब यह समाचार सुल्तान बहादुर को प्राप्त हुए तो सुल्तान बहादुर ने कहा कि, "खेद है कि चाम्पानीर का किला हाथ से निकल गया।" अफजल खा वजीर ने निवेदन किया कि, 'क्या कोई समाचार प्राप्त हुआ है?" उसने कहा, "नहीं, राजा नरसिंह देव की मृत्यु हो गई। इस मुल्ला अर्थात् इख्तियार खा में इतनी शक्ति कहाँ कि वह किले की प्रतिरक्षा कर सके।"

ईश्वर के विश्वासपात्र हज़रत सैयिद जलाल, जिनकी उपाधि मुनव्वरुलमुल्क बुखारी थी, कहा करते थे कि, "चाम्पानीर का किला ऐसा था कि यदि कोई बुढिया भी किले के ऊपर से पत्थर फेंकती तो एक बहुत बडी सेना को मिट्टी में मिला सकती थी। हुमायूँ पादशाह के सौभाग्य को धन्य है कि इस प्रकार का किला इस सुगमता से विजय हो गया।"

विजय का कारण यह था कि एक रात्रि में २०० कोलियो को किले वालो ने ऊपर से नीचे इस आशय से भेजा कि वे अनाज ले आयें, यद्यपि किले मे इतनी अधिक खाद्य सामग्री थी कि यदि दस वर्ष तक भी अवरोध चलता रहता तो वह किले वालो के लिये पर्याप्त थी।

शेर

'जब मनुष्य के भाग्य पर अधकार छा जाता है,
तो वह ऐसे कार्य करता है, जिससे उसे कोई लाभ नहीं होता।'

सक्षेप में, जब कोली लोग नीचे उतरे और मोर्चे मे पहुँचे तो सब बन्दी बना लिये गये। जब (२५२) वे पादशाह की सेवा में प्रस्तुत किये गये तो उनकी हत्या का आदेश दे दिया गया।

१ फ़रीदी का विचार है कि उसका नाम 'मेस्कुइता' (Mesquita) था।

७०-८० व्यक्ति मार डाले गये होंगे कि बचे हुए लोगो में से एक ने कहा कि, "यदि हमारी हत्या न कराई जाय तो मैं आप लोगों को एक ऐसे मार्ग से किले पर पहुँचा दूंगा जिसकी किले वालो में से भी किसी को कोई सूचना नही।" पादशाह को इस बात की सूचना दी गई। पादशाह ने उन्हे बुलवाकर उस स्थान के विषय में प्रश्न किये। कुछ वीर योद्धाओ को उनके साथ कर दिया। कोली एक मार्ग से रातो रात उन्हे किले के ऊपर ले गये। उस मार्ग मे हुमायूँ पादशाह की सेना का कोई व्यक्ति अपितु किले वालों में से भी कोई परिचित न था। जिस समय वे वहाँ पहुँचे, उन्होने 'अल्लाह अल्लाह' का नारा लगाते हुए आक्रमण कर दिया। किले वाले बडे व्याकुल हो गये। वे समझे कि आकाश से कोई विपत्ति आई है। कुछ क़िले वाले ऊपर से नीचे कूद पडे। कुछ मार डाले गये और कुछ भाग गये और इख्तियार खा के साथ किले के अरक के ऊपर, जिसे मूलिया कहते थे, चले गये। किला विजय हो गया।" (७ सफर ९४२ हि०/७ अगस्त १५३५ ई०) को पादशाह की सेना ऊपर पहुँची। अन्ततोगत्वा इख्तियार खा विवश हो गया और उसने क्षमा याचना कर ली। विजय के दूसरे दिन वह हुमायूँ पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ। क्योंकि खान बडे ही उत्तम स्वभाव का मुल्ला, ज्योतिषी एव कवि था और उसे प्रत्येक कला में निपुणता प्राप्त थी अत हज़रत जन्नत आशियानी उससे मिलकर बड़े प्रसन्न हुए और उसे नाना प्रकार की कृपाओ द्वारा इतना अधिक सम्मानित किया कि उसकी कल्पना नही की जा सकती।

कहा जाता है कि एक दिन शेख जमाल कम्बोह कवि, जिसे खुसरो द्वितीय कहा जाता था और जिसका यह शेर प्रसिद्ध है.

शेर

'तेरी गली की धूल से हमारे शरीर का पीराहन बन गया है,
और वह भी आँसुओ से दामन तक सैकडो स्थान पर टुकडे-टुकडे है'[१]

इस युद्ध में भाग्यशाली सेना के साथ था। उसने इख्तियार खा से कहा कि "हमने सुना है कि तुम्हे मुअम्मे की कला में बडी कुशलता प्राप्त है। मेरे नाम को कुरान शरीफ से निकालो।" शेख ने तत्काल कहा, "जमआ मा ला कलाम[२]।" शेख ने कहा, "मेरा नाम जमाल है।" खान ने तत्काल आयत पढी और हिसाब करके बता दिया कि, "आयत के अक्षरों की सख्या का योग जमाल के बराबर है।" शेख ने अत्यधिक प्रशसा की।

कहा जाता है कि एक दिन हज़रत जन्नत आशियानी ने सवारी के समय इख्तियार खा को याद किया। इस सम्मान हेतु जिस प्रकार पादशाहो के प्रति अभिवादन करना चाहिए उस प्रकार (२५३) इख्तियार खा ने अभिवादन न किया। उनकी रिकाब के अधीनस्थ उपस्थितगण ने उसकी निन्दा करनी चाही। पादशाह ने आँख के इशारे से मना कर दिया और स्वय यह कहा कि, "इख्तियार खा! मेरे हृदय में एक बात आई है। यदि तुम्हे बुरी न लगे तो मैं कहूँ।" उसने निवेदन

१ 'मारा ज गर्दे कूयत पीराहनेस्त बर तन,
मॉ हम ज आबे दीदा सद चाक ता बा दामन।'

२ 'उसने धन एकत्र किया'।

किया कि, "आप जो कुछ कहेंगे वह बडी कृपा होगी।" उन्होंने कहा, "हम पादशाहों की प्रथा यह है कि यदि पादशाह किसी के विषय में इतना आदर सम्मान प्रदर्शित करता है तो उसे चाहिये कि घोड़े से उतर कर अभिवादन करे और फिर अपने स्थान पर वापस जाये। यदि तुम्हारे जैसे आदमियों के प्रति वह कृपा प्रदर्शित करे तो यह उचित होगा कि वह अपने सिर को पादशाह की रिकाब पर मले और इसको अहोभाग्य समझे। तुम्हें कुरान की यह आयत याद रखनी चाहिये, 'जब पादशाह किसी नगर में प्रविष्ट होते हैं, तो वे उसमें अत्यधिक परिवर्तन कर देते हैं।"

इख्तियार खां घोडे से उतर पडा। घुटने के बल झुका और पादशाह के रिकाब का चुम्बन करके निवेदन किया कि, "दास का पालन पोषण गुजरात में हुआ है अत उसे अजम के पादशाहों की प्रथाओं का ज्ञान नहीं है। पादशाह अपनी कृपा द्वारा मुझे क्षमा करें।"

कहा जाता है कि एक दिन एक मुल्ला ने हज़रत जन्नत आशियानी के दरबार में इख्तियार खां से वाद विवाद करना प्रारम्भ किया। वाद विवाद में जो बात इख्तियार खां कह रहा था वह सत्य थी किन्तु मुल्ला स्वीकार न करता था। हज़रत जन्नत आशियानी ने कहा कि "खान जो कुछ कहता है वह ठीक है, तुम लोग हठ हुज्जती मत करो।" खान ने तत्काल हुमायूँ के नाम पर इस मुअम्मे की रचना की

शेर

कोई धूर्त मेरे प्रियतम के सौन्दर्य के नूर का मुकाबला नहीं कर सकता,
मेरे चन्द्र का प्रकाश, उन्हीं लोगों के हृदय को प्रज्वलित करता है, जो ईमान-
दारी पसन्द करते हैं।'

पादशाह ने उसकी प्रशंसा की तथा दरबार के उपस्थितगण ने भी सराहना की।

चाम्पानीर के किले की विजय उपरान्त हुमायूँ पादशाह खम्बायत की ओर पहुँचे और उस भू-भाग की सैर करके अहमदाबाद। पादशाही लश्कर गयासपुर के समीप था, जो कि अहमदाबाद के (२५४) दक्षिण की ओर दो कुरोह पर है। अहमदाबाद से तीन कुरोह पर स्थित वटवा नामक स्थान पर हज़रत कुतुबुल अक़ताब सैयिद बुरहानुद्दीन इब्ने सैयिद महमूद इब्ने सैयिद जलाल मख्दूम जहानियाँ बुखारी के पवित्र मजार और लोह लक्कड तथा पत्थर का निरीक्षण किया और कहा कि, "इस प्रकार का चमत्कार मैंने कहीं नहीं देखा।" इसके विषय में प्रसिद्ध है कि एक रात्रि हज़रत कुतुबुल अक़ताब तहज्जुद[1] के समय इस्तिन्जा[2] के लिये टहल रहे थे। अचानक उनके शुभ चरण लकडी या पत्थर से टकरा गये और पीडा होने लगी। अनायास उनकी शुभ जिह्वा से निकला, "लोह है, लक्कड या पत्थर या क्या है"[3] अर्थात् "लोहा है, या लकडी या पत्थर, यह क्या वस्तु है?" ईश्वर ने एक रात में तीनों विशेषतायें एक ही वस्तु में पैदा कर दीं। प्रातःकाल उसके दर्शनार्थ लोगों की भीड लग गई। हज़रत ने कहा कि, 'उसे किसी गहरे स्थान पर छिपा दिया जाय" और

१ आधी रात के बाद की नमाज़।
२ मूत्र के पश्चात ढेले से शिश्न सुखाना।
३ لوهی یا لکر یا پتهر یا کیا هے

उसे प्रकट करने का निषेध कर दिया और कहा कि, "जो कोई उसे प्रकट करेगा उसके वश का अन्त हो जायेगा।" अन्ततोगत्वा उनकी मृत्यु के कुछ वर्ष उपरान्त उनके मुरीदों में से एक व्यापारी ने उसे उस स्थान से बाहर निकाला और कहा कि, "मैंने अपने वश का अन्त अपने पीर के चमत्कार के दर्शन हेतु स्वीकार किया है' ताकि दूसरा चमत्कार भी प्रकट हो जाय।" तदुपरान्त उस एक लकडी के तख्ते पर रख दिया गया। सर्वसाधारण एव विशेष व्यक्ति उसके दर्शन करते थे। जब अकबर शाह के ऐश्वर्य की पताकाओ के चन्द्र ने अहमदाबाद के क्षेत्र में अपनी छाया डाली तो वह जम सरीखा पादशाह उसमें से आधा पृथक् करके राजधानी आगरा ले गया और आधा उसी अवस्था में आशीर्वाद हेतु शेष है। कुछ विद्वानो एव कवियों ने इस विषय में कविताओ की भी रचना की है

पद्य

'एक रात्रि मे उनके सम्मानित चरण एक लकडी से टकरा गये,
जो पत्थर से भी सैकडों गुना कठोर थी।
जिस जिह्वा पर ईश्वर के नाम के अतिरिक्त कोई नाम न आता था,
उससे निकला, यह पत्थर है, लोहा है अथवा लकडी।
ईश्वर के आदेश से वह पत्थर, लोहा तथा लकडी हो गई,
जिन नेत्रो ने इसका निरीक्षण किया हो उनसे इसके विषय में पूछ।'

सक्षेप में, जब शेर खा अफगान के, जो बाद में बहुत बडा पादशाह तथा शेर शाह की उपाधि द्वारा सुशोभित हुआ, आक्रमण के समाचार सम्मानित पादशाह को ज्ञात हुए और यह पता चला कि उसने बिहार तथा जौनपुर पर आक्रमण कर दिया है तो उन्होंने अपने सौतेले भाई मीर्जा हिन्दाल को अहमदाबाद में, कासिम बेग को सरकार भरौच में, यादगार नासिर मीर्जा को सरकार पटन में एव बाबा बेग जलायर को, जो शाहम खा जलायर का पिता था, चाम्पानीर के किले में छोडकर आसीर तथा बुरहानपुर मार्ग से राजधानी आगरा की ओर प्रस्थान किया। इसी बीच में बहादुर के अमीरो में रणथम्बोर के किले का हाकिम मलिक अमीन नस, अजमेर के किले का हाकिम मलिक (२५५) बुरहानुल मुल्क बनयानी तथा चित्तौड का हाकिम मलिक शमशीरुल मुल्क सगठित होकर लगभग बीस हजार अश्वारोहियों सहित पटन के समीप पहुँच गये और सुल्तान बहादुर को प्रार्थना पत्र भेजा कि, "यदि आदेश हो तो यादगार नासिर मीर्जा से युद्ध करें।" सुल्तान ने रोका और इस बात पर जोर दिया कि, "मै स्वय पहुँच रहा हूँ। तुम उस समय तक युद्ध स्थगित रक्खो।" जब सुल्तान (बहादुर) उस क्षेत्र मे पहुँचा तो यादगार नासिर मीर्जा टाल कर अहमदाबाद की ओर चल दिया। सुल्तान (बहादुर) पटन पहुँचा और उसने वहाँ से अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया। शत्रुओं[1] ने अहमदाबाद से निकलकर गयासपुर के समीप, जिसका ऊपर उल्लेख हो चुका है, अपने शिविर लगाये। सुल्तान ने नदी के उस पार ग़यासपुर के समक्ष पडाव किया। वह रात भर युद्ध की तैयारी करता रहा। उसे विश्वास था कि, "कल युद्ध होगा।" शत्रुओं की सेना ने रात्रि में अपने शिविर में अत्यधिक दीपक जलाये। वे उन्हे उसी दशा में छोड कर रातो रात एक

१ यादगार नासिर मीर्जा की सेना।

मार्ग से महमूदाबाद की ओर चल दिये। प्रातःकाल के समीप सुल्तान बहादुर को यह समाचार प्राप्त हुए। सुल्तान ने उसका पीछा किया। उसी दिन गज[1] नामक स्थान पर, जो महमूदाबाद से तीन कुरोह पर स्थित है, पड़ाव किया। उसे उस स्थान पर समाचार प्राप्त हुए कि "शत्रु की सेना जो कि भरौंच की सरकार में थी, इस स्थान से आकर महमूदाबाद में मिल गई और उन्होंने कल युद्ध करना निश्चय कर लिया है।" प्रातःकाल दोनों ओर की सेनाओं ने रणक्षेत्र में पहुँचकर स्थान ग्रहण कर लिये। दोनों ओर के वीरों ने युद्ध प्रारम्भ कर दिया। मुग़ल सेनाओं ने आँधी के समान सुल्तान की सेनाओं को छिन्न-भिन्न कर दिया किन्तु सुल्तान के कुछ वीर उदाहरणार्थ सैयिद मुबारक बुखारी, एमादुल मुल्क एवं मलिक जियू पर्वत के समान वीरतापूर्वक रण-क्षेत्र में पाँव जमाये रहे और वे किसी भी आँधी से न हिल सके। यद्यपि उनके सिरों पर बाणों एवं तलवार की बिजली की वर्षा की गई किन्तु वे सिकन्दर की दीवार के समान अपने स्थान पर से न हिले। संक्षेप में, जब मुग़ल सेना लूट मार में व्यस्त हो गई तो सुल्तान की सेना, जो छिन्न-भिन्न हो गई थी, पुनः एकत्र हो गई और उन्होंने उन लोगों पर आक्रमण कर दिया तथा वीरता प्रदर्शित की। ईश्वर की कृपा से विजय का पवन सुल्तानी सेनाओं की पताकाओं पर अचानक चलने लगा एवं शत्रु की सेना का तख्ता पलट गया।

कहा जाता है कि उन दिनों महेन्द्री[2] नदी में अचानक बाढ़ आ गई। शत्रुओं[3] की बहुत बड़ी संख्या डूबकर नष्ट हो गई। सुल्तान ने उन लोगों का पीछा किया, यहाँ तक कि गुजरात के सीमान्त के बाहर निकाल दिया। तदुपरान्त वह स्वयं चाम्पानीर पहुँच कर ठहर गया। असीर के मुहम्मद (२५६) शाह को, जो उसका भागिनेय था, एक बहुत बड़ी सेना सहित शत्रु का पीछा करने के लिये भेजा। शत्रु मालवा में भी न ठहर सके। मुहम्मद शाह मन्दू से होता हुआ उज्जैन पहुँचा और कालियादा नदी के तट पर मान्दू के सुल्तान नासिरुद्दीन द्वारा निर्मित भवनों में ठहरा।

सुल्तान बहादुर विजय तथा सफलता प्राप्त करके अहमदाबाद लौटा और वहाँ बहुत समय तक ठहरा रहा।

मीर्ज़ा अस्करी तथा उपर्युक्त अमीर गुजरात में ९ मास तथा कुछ दिन ठहरे रहे।

इस कारण कि फ़िरंगियों[4] ने दीव नामक बन्दरगाह में अपना अधिकार जमा लिया था और अपने लिये किले का निर्माण कर लिया था अतः सुल्तान को इसका बड़ा दुःख था और वह रात दिन उन मलऊनों[5] को नष्ट करने के प्रयत्न के विषय में सोचा करता था।

१ फ़रीदी के अनुसार 'कनौज'।
२ फ़रीदी के अनुसार 'माही'।
३ मुग़ल सेना।
४ पुर्तगाली।
५ धिक्कृत।

ज़फ़रुल वालेह व मुज़फ़्फ़र व आलेह भाग १

लेखक—अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर अल मक्की अल आसफी, उलुगख़ानी अल-हाजुद्दबीर

(प्रकाशन—लन्दन १९१० ई०)

हुमायूँ के पास से दूत का आगमन

(२२७) ९४० हि० (१५३३–३४ ई०) में सुल्तान (बहादुर) ने पत्र एवं उपहार देकर एक हाजिब को देहली के स्वामी नसीरुद्दीन हुमायूँ पादशाह के पास भेजा। उसने इस अवसर को उत्तम समझा। हाजिब की बड़ी आव भगत की। जब तक हाजिब रहा वह उसके प्रति आदर–सम्मान का व्यवहार करता रहा। तदुपरान्त पत्र का उत्तर एवं उपहार देकर विदा (२२८) कर दिया। उसके साथ उसने अपना भी एक हाजिब, जो बुद्धिमान् एवं प्रतिभाशाली था, इस आशय से भेजा कि इसे जिस सन्देश का आदेश दिया गया है, उसे वह उसको पहुँचाये और दोनों के पारस्परिक पत्र-व्यवहार एवं प्रेम में वृद्धि तथा मतभेद के निराकरण का साधन बने। जब (हुमायूँ) का हाजिब सुल्तान के पास पहुँचा तो सुल्तान ने उसका स्वागत् किया और सर्व प्रथम उससे उस दरबार में भेंट की जिसमें समस्त मलिक एवं अमीर उपस्थित् थे। तदुपरान्त विशेष दरबार में सुल्तान ने उससे भेंट की। हाजिब ने उन समस्त बातों की उससे चर्चा की जिन्हें कहने के लिये वह आया था।

जो कुछ उस हाजिब ने सुल्तान से कहा, उसमें से पहली बात यह थी कि "पारस्परिक मेल जोल एवं हित इसी बात पर निर्भर है कि आप लोग एक दूसरे के हितैषी रहें। इसके अतिरिक्त आपके यहाँ कुछ लोग ऐसे हैं जो किसी समय में राज्य के स्वामी थे किन्तु अब वे उन डालियों के समान हैं जिनकी जड़ें तो सूख गईं परन्तु जिनकी शाखायें षड्यत्र एवं अशान्ति के लिये हरी हो जाती हैं और जिनमें सद्व्यवहार के फल नहीं लगते। इन्हीं में से एक तातार खां बिन अलाउद्दीन है। प्रत्येक देन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते रहना चाहिये जिसके कारण वह स्थायी रहती है। सल्तनत भी एक देन है। इस देन के प्रति आभार प्रदर्शित करने का यह नियम है कि सल्तनत को ऐसी परिस्थितियों से बचाना चाहिये, ऐसे आदमियों से शासन को सुरक्षित रखना चाहिये। यह वह व्यक्ति है जिससे मैं परिचित हूँ और जानने वाले को परिचय नहीं दिया जाता।"

फिर हाजिब ने सुल्तान से कहा कि, 'सुल्तान को इस बात का भी प्रबन्ध करना चाहिये कि अपने पास किसी ऐसे व्यक्ति को शरण न दें जिसके कारण हमारे पारस्परिक मेल जोल में कोई विघ्न पड़े अपितु अपने राज्य में किसी ऐसे व्यक्ति को रहने भी न दें। इसी प्रकार की आशा उसे भी हमारी ओर से रखनी चाहिये। जब दोनों पक्ष एक दूसरे का ध्यान रक्खेंगे तो यह दोनों के लिये शान्ति का विषय होगी। समार कुछ क्षण का है अत उसमें एक दूसरे का विरोध न करना चाहिये।" सुल्तान बहादुर ने उस पत्र का उत्तर दिया। हाजिब ने बहादुर के प्रति आभार प्रदर्शित किया और

उसके लिये शुभ-कामनाये की। सुल्तान ने उसे अपना विश्वास-पात्र बना लिया और उसकी इच्छानुसार हर चीज का प्रबन्ध किया। बहादुर ने उस हाजिब को नकद धन वस्त्र एव आवश्यकता की अन्य वस्तुयें प्रदान की। सुल्तान ने अपने दान-पुण्य एव इनाम इकराम द्वारा उस हाजिब को ऐसा सतुष्ट कर लिया कि ऐसा (प्रतीत होने लगा कि) वह उसके राज्य से न जाय और अपने स्वामी के पास न वापस हो। तदुपरान्त सुल्तान ने उसे यात्रा की अनुमति दे दी और उपहार में जवाहरात एव कुछ दस्तकारी के ऐसे नमूने, जडाऊ आभूषण इत्यादि जिनके मूल्य का अनुमान नही लगाया जा सकता, उस हाजिब के साथ पादशाह के लिये भेजे। बहादुर ने पत्र के उत्तर में लिखा कि, जो "बातें आपके हाजिब ने आपकी ओर से बताई वे मुझे शिरोधार्य है।" इसी पत्र के कारण देहली के स्वामी ने मन्दू के उन भागो को, जो उसके अधिकार मे थे, सुल्तान के सुपुर्द कर दिया। यह घटना इसी वर्ष में घटी।

चित्तौड़ विजय

(२३०) ९४१ हि० (१५३४-३५ ई०) में सुल्तान मन्दू[1] से चित्तौड पहुँचा और किले मे पडाव किया। रूमी खा ने अपना प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया और हर दिशा से सेनायें आने लगी।

हुमायू का सुल्तान बहादुर से रुष्ट होना

हुमायूँ पादशाह बगाले से वापस हुआ। जब वह कालपी के समीप पहुँचा तो कालपी का स्वामी सुल्तान आलम १२,००० अश्वारोहियों एव ३०० हाथियो को लेकर वहाँ से निकल खडा हुआ और चित्तौड पहुँचा। वह सुल्तान के पास ठहर गया। सुल्तान (बहादुर) एव हुमायूँ मे नाम मात्र की सधि थी। इस कारण सुल्तान (आलम) के प्रति उसने बडा सौजन्य-पूर्ण व्यवहार किया। रायसेन की विलायत को देकर उसने उसके कालपी के राज्य मे वृद्धि कर दी।

जब हुमायूँ कालपी पहुँचा तो उसे चित्तौड के अवरोध एव मुहम्मद जमान के ऐश्वर्य के समाचार प्राप्त हुए। उसने बहादुर को पत्र लिखा कि "तुमने निष्ठा की शर्तों की ओर, जो हमारे तथा तुम्हारे मध्य में हो चुकी थी, कोई ध्यान नही दिया अपितु तोड डाला।" प्रतिज्ञा भग करने के कुपरिणाम के विषय में उसे चेतावनी भी दी और यह भी लिखा कि "प्रतिज्ञा का पालन धर्म निष्ठता का प्रमाण है।" बहादुर ने सौजन्य एव नम्रतापूर्ण उत्तर दिया और इस शेर को पत्र का शीर्षक बनाया

शेर

'तुम्हारी प्रतिज्ञाएँ नष्ट न होगी,
इस विषय में कोई उपेक्षा न की जायगी।'

मुहम्मद जमान के विषय में लिखा कि "यदि वह आपके पुत्र के समान न होता तो मैं उसके प्रति कदापि सौजन्य न प्रदर्शित करता और शीघ्र ही मैं आपकी इच्छानुसार कार्य करूँगा।" हुमायूँ जब आगरा पहुँचा तो उसे बहादुर का उत्तर प्राप्त हुआ। उसने उसे पुन पत्र लिखा और उसमें

१ मांडू।

एक विद्वान् का उल्लेख किया कि, "विद्वान् से किसी ने पूँछा कि आजिज़[1] किसे कहते हैं? विद्वान् ने उत्तर दिया कि 'जिसका कोई मित्र न हो।' उसी के पास एक अन्य विद्वान् बैठा था। उसने उत्तर दिया, 'नहीं आजिज़ वह है जिसका मित्र तो हो किन्तु उसने उसे खो दिया हो और नष्ट कर दिया हो।' और यह भी कहा जाता है कि १००० मित्र कम है और शत्रु एक भी हो वह अधिक है।"

शेर

(२३१) 'मित्रता का पौधा लगा ताकि मनोकामना की सिद्धि के फल लग सकें,
शत्रुता के पौधे को उखाड़ डाल, कारण कि इससे असंख्य कष्ट प्राप्त होते हैं।'

बहादुर ने पत्र का उत्तर लिखा जिसे हाफ़िज़ दमिश्की ने अपने "आदाब" नामक ग्रंथ में उद्धृत किया है। उसमें युद्ध के ५ कारण बताये —

(१) जब नया राज्य तथा शासन प्रारम्भ हो तब युद्ध होता है।
(२) प्राप्त राज्य की प्रतिरक्षा हेतु युद्ध होता है।
(३) जब अत्याचारी राज्य पर न्याय की तलवार से आक्रमण किया जाय तो उस समय युद्ध होता है।
(४) या एक राज्य दूसरे राज्य का अपहरण करना चाहे।
(५) युद्ध के पाँचवें कारण में कोई कल्याण नहीं होता। इसके अनेक कारण हैं जिनमें से भूमि पर अशान्ति फैलाना, किसी राज्य का अपहरण, लूट मार, लोगों को उनकी इच्छा के विरुद्ध आज्ञाकारिता पर विवश करना इत्यादि। इनमें से कोई भी मेरा उद्देश्य नहीं अपितु धन व्यय करने अथवा लोगों को एकत्र करने का उद्देश्य केवल जिहाद एवं हज़रत मुहम्मद की शरीअत की पताका को बलन्द करना है।

शेर

'हमारी लोक तथा परलोक में किसी से शत्रुता तथा हमारा किसी से वैमनस्य नहीं,
जो कोई हमसे शत्रुता करता हो, उसपर ईश्वर की अनुकम्पा हो।'

यह पत्र बहादुर ने हुमायूँ के उस पत्र के उत्तर में लिखा जिसमें हुमायूँ ने उसके प्रति प्रतिज्ञा भंग करने के कारण क्रोध प्रदर्शित किया था। इस पत्र को वह व्यक्ति लाया था जिसे हुमायूँ ने (सुल्तान) बहादुर के हाजिब नूर मुहम्मद ख़लील के साथ रवाना किया था। प्रतिज्ञा भंग करने के कारण हुमायूँ बड़ा क्रोधित हुआ जैसा कि आगे उल्लेख किया जायगा।

कहा जाता है कि वह पत्र बहादुर की ओर से मुल्ला महमूद मुन्शी ने लिख कर ऐसे अवसर पर प्रस्तुत किया जब कि किसी योग्य व्यक्ति का उसके पास होना असम्भव था। हुमायूँ ने अपने पत्र में जिस प्रतिज्ञा-भंग पर क्रोध प्रदर्शित किया था वह शिष्टाचार के विरुद्ध नहीं। उसने लिखा था :—

१ विवश।

शेर

'मित्रता का पौधा लगा ताकि मनोकामना पूरी हो,
शत्रुता के पौधे को उखाड डाल कारण कि इससे अत्यधिक कष्ट पहुँचते हैं।'

उसने उसके उस सौजन्य का उत्तर इस कठोरता से दिया

शेर

'यदि तू मधुशाला वालो का अतिथि है तो मस्तो के साथ आदर-पूर्वक व्यवहार कर,
कारण कि उद्दडता खुमार की मस्ती को दूर कर देती है।'

मुशी ने उच्च पदाधिकारियो को पत्र दिखाये बिना दूत को दे दिया, यद्यपि उसे इस बात का आदेश था कि बिना दिखाये कोई पत्र न भेजा जाये। सक्षेप में, जब उन्हे इस बात का पता (२३२) चला तो उन्होने पत्र के विषय में सुल्तान से पूछा किन्तु सुल्तान ने मना कर दिया कि उसने तो यह नही लिखवाया। सुल्तान ने दूत का बुलवाने का प्रयत्न किया। अबू जियू ताक को, जिसकी उपाधि वजीहुल मुल्क थी, दूत के पीछे भेजा, किन्तु वह उसे न मिला और वह वापस लौट आया। हुमायूँ पत्र पाते ही बडा क्रोधित हुआ।

सुल्तान बहादुर की पराजय

रूमी खा ने हुमायूँ को पत्र लिखा कि "बहादुर को छोड कर मैं आप के पास आता हूँ कारण कि बहादुर अपनी प्रतिज्ञा एव अपने वचन से विमुख हो गया है।"

जब बहादुर को रूमी खा के जाने का विश्वास हो गया तो उसने उसको इनाम देने मे जल्दी की किन्तु जब रूमी खा का इस बात का पता चला तो वह हानि के भय से भाग गया।

एक दिन अराबे के निकट उसने एक अश्वारोही को देखा जिसके आगे एक हाथी था जिसपर हौदज भी था। जब अश्वारोही उसके पीछे रवाना हुये तो वह उसे छोड कर भाग गया। हाथी को सुल्तान के पास उपस्थित किया गया। हौदज में जो बक्स रक्खा था उसे सुल्तान ने अपने समक्ष खोलने का आदेश दिया। जब बक्स खोला गया तो उसने देखा कि उसमे कुछ कोएला, नमक एव नील से रगे हुए वस्त्र रक्खे हुये हैं। सुल्तान इन वस्तुओ को देखकर आतकित एव बैचेन हो गया और शाम होते-होते मन्दू की ओर चला गया। उस दिन उसने जवाहरात को जला देन का आदेश दे दिया और अपन खासे के हाथियो की सूँडे कटवा दी। उन हाथियो में से जो उसे अत्यधिक प्रिय थे, एक शिरजा था और दूसरा पात दगार। जब उसका शोक बहुत बढ गया तो उसकी आँखों से आँसू निकलने लगे।

उसने लैला मजनूँ नामक तोप तथा अपनी अन्य तोपो को स्वय तुडवा डाला। तदुपरान्त वह अपने एक विशेष समूह को लेकर रात्रि में निकल खडा हुआ। उस समूह के अतिरिक्त उसकी सूचना किसी को न थी। तदुपरान्त वह मन्दू के किले में बन्द हो गया।

हुमायूँ द्वारा बहादुर का पीछा

हुमायूँ ने उस किले का अवरोध कर लिया। उस किले के एक फाटक की देख रेख भूपत राय[1] वल्द सलहदी पुर्बिया के, जो रायसेन का हाकिम था, अधीन थी। हुमायूँ ने उस फाटक पर रूमी

१ प्रकाशित ग्रन्थ में 'भबुत राय'।

खाँ को भेजा। रूमी खाँ ने भूपत को आश्वासन दिलाया कि, "यदि तुम किले का फाटक खोल दोगे तो जो राज्य तुम्हारे पिता के पास था, उससे कहीं अधिक तुम्हें प्राप्त होगा।" रूमी खाँ ने भूपत को यह कह कर उभारा कि, "वह पुत्र हो कैसा जो अपने पिता का बदला न ले अतः तुम फाटक खोल दो और बहादुर से अपने पिता का बदला भी ले लो।" भूपत राय रूमी खाँ के चक्कर में आ गया और किले का फाटक खोल दिया। मुगुल किले के भीतर प्रविष्ट हो गये। बहादुर ने भूपत के विषय में एक मसल कही कि, "सर्प, सर्प के अतिरिक्त किसी को जन्म नहीं देता।" फिर बहादुर ने सद्र खाँ बिन मलिक राजी को अपने स्थान पर नियुक्त किया और सुल्तान आलम लोदी को बुलवाया और आदेश दिया कि वह किला सुगर[1] की, जो पर्वत की चोटी के किनारे पर था, देख रेख रक्खे। बहादुर स्वयं किले से निकल कर गुजरात की ओर चला गया। मार्ग में उसको एक मुगुल अमीर ने देखा तो अपने घोड़े की लगाम उस ओर मोड़ दी। दोनों अर्थात् बहादुर एवं मुगुल अमीर में युद्ध प्रारम्भ हो गया यहाँ तक कि मुगुल अमीर पराजित हुआ। उसकी हत्या करके बहादुर अपने मार्ग की ओर चल दिया और दीब पहुँच गया।

सद्र खाँ बराबर अपने स्थान पर युद्ध करता रहा, यहाँ तक कि बन्दी बना लिया गया। तदुपरान्त उसकी हत्या का आदेश दे दिया गया। अब केवल सुल्तान आलम बच गया जो सुगर की प्रतिरक्षा करता रहा किन्तु खाद्य सामग्री समाप्त हो गई। वह हुमायूँ की ओर पहुँचा। हुमायूँ ने उसकी हत्या का आदेश दे दिया। इसके साथ ३०० आदमी थे। उनकी भी हत्या करा दी।

हुमायूँ द्वारा माडू विजय

(२३३) बहादुर के रात्रि के समय भाग जाने के बाद हुमायूँ ने उसके खेमे में रात्रि व्यतीत की। उसके खेमे उसी प्रकार लगे थे। उनका साज़ व सामान, फ़र्श, बरतन इत्यादि ऐसे थे जिनके समान आँखों ने न देखे होंगे कारण कि वे समस्त फ़र्श अतलस एवं मख़मल के थे। वहाँ बड़े ही उत्तम प्रकार के वस्त्र थे जिनपर सोने के तारों का काम था। सोने एवं चाँदी के बरतन, रेशम की डोरियाँ इत्यादि बहादुर के खेमे में क्यों न होतीं कारण कि वह जल तथा स्थल सभी का स्वामी था। रावी[2] कहता है कि "ऐसा क्यों न हो कारण कि सुल्तान सिकन्दर बिन बहलोल कहता है कि देहली *सल्तनत केवल गेहूँ एवं ज्वार पर निर्भर रहती है और गुजरात की सल्तनत मूँगे एवं मोतियों पर* निर्भर है। वहाँ ८४ बन्दरगाह हैं।" यह विवरण मिरआत[3] में है किन्तु शेख अबुल फज़ल ने इन बातों का खंडन किया है। इसका उल्लेख उन्होंने 'अकबर नामा' में किया है। इतिहास के विषय में उसे ही ज्ञान हो सकता है जो इतिहास से परिचित हो।

मंझू गायक

मिरआत में लिखा है कि मन्दू विजय के उपरान्त हुमायूँ ने तीन दिन तक दरबारे आम किया और वह सिर से पाँव तक लाल वस्त्र धारण किये था। मुगुलों की यह प्रथा है कि जब वे कोई राज्य

१ मिरआते सिकन्दरी के अनुसार 'मरक'।
२ किसी से कोई बात सुनकर ज्यों की त्यों दूसरे से कहने वाला।
३ मिरआते सिकन्दरी।

विजय करते थे तो दरबारे आम मे लाल वस्त्र धारण करते आते थे। यह लाल रग देश वालो के लिये कत्ले आम का द्योतक होता था। जब वे लाल वस्त्र शरीर से उतार देते थे तो यह हत्याकाड एव लूट-मार के निषेध का चिह्न होता था।

मुग़ल जब लूटमार में व्यस्त थे तो एक अद्वितीय सगीतज्ञ, जो बहादुर का विश्वासपात्र था और जा मझू के नाम से प्रसिद्ध था, बन्दी बना लिया गया। एक मुग़ुली ने अपनी तलवार खीच कर मझू की हत्या करना चाही। उसने मुग़ुली से कहा कि, "मेरी हत्या उचित है अथवा यह कि तुम सोने और चाँदी में तौल दिये जाओ ताकि तुम्हारी तीन पीढियाँ आनन्द से जीवन व्यतीत कर सकें?" मुग़ुली ने जब मझू से यह शब्द सुने तो अपनी तलवार मियान में रख ली और अपनी पगडी से उसके बाजू जकड कर बाँध लिये। इसी बीच में हुमायूँ के एक काफिर रईस[1] ने मझू को देख लिया। उसने मझू के बाजू खोल दिये और अपने घोडे पर बैठा कर हुमायूँ की ओर ले चला। उस समय वह अपने दरबार में क्रोध मे भरा बैठा था। मुग़ुली जिसने बाजू बाँधे थे बराबर चिल्लाता रहा किन्तु मझू को उस रईस से पृथक् न कर सका। जब दोनो हुमायूँ के पास पहुँचे तो मुग़ुली ने हुमायूँ से अपने बन्दी के विषय मे उस रईस की शिकायत की। रईस ने हुमायूँ से कहा कि "यह मझू बहादुर के दरबार का विशेष आदमी है।" हुमायूँ यह सुनकर मौन रहा तथा निरन्तर क्रोध प्रदर्शित करता रहा और किसी ओर कृपादृष्टि प्रदर्शित न करता था और तलवार का बडी कठोरता मे प्रयोग होने लगता था।

हुमायूँ के दरबार में एक हाजिब[2] था जो किसी समय बहादुर के पास था। वह हाजिब मुग़ल था। उसका नाम खुशहाल[3] था। उसने बहादुर के दरबार में मझू को देखा था। उस हाजिब ने हुमायूँ से कहा कि "मैंने स्वय मझू को बहादुर के दरबार में देखा है। इसको उस दरबार (२३४) में बडा आदर-सम्मान प्राप्त था। यह सगीत में अद्वितीय है। इसके समान कोई व्यक्ति बाद में भी न होगा।" जब हुमायूँ उसकी ओर आकृष्ट हुआ तो खुशहाल उसके सामने आया और कहा कि, "यह अपनी कला का बादशाह है।" अब हुमायूँ ने मझू की ओर कृपापूर्वक देखा और कहा कि, "अच्छा, जिस विषय में तुम्हारी प्रशसा की जाती है, कुछ मुझे सुनाओ।" मझू ने ऊँचे स्वर में गाना प्रारम्भ किया। उसका सगीत समाप्त भी न हुआ था कि हुमायूँ रोने लगा। उसने लाल वस्त्र उतारकर हरे वस्त्र धारण कर लिये जो सतोष एव प्रसन्नता का चिह्न है। तदुपरान्त हुमायूँ ने मझू को एक विशेष खिलअत प्रदान की और उससे कहा, "माँगो, क्या माँगते हो।" उसने कहा, "मेरी प्रार्थना है कि मेरे परिवार वाले एव सहायक मुक्त कर दिये जाये।" हुमायूँ ने कहा, "वे सब मुक्त कर दिये जायेंगे" और उसको अपने खासे का एक घोडा दिया और कहा, इसपर सवार हो कर जा। तू जो आदेश देगा उसका पालन किया जायगा।" रावी का कथन है कि मझू के कारण बहुत बडी सख्या मे बहादुर के उच्च पदाधिकारी मुक्त हो गये। वह कुछ दिन तक निरन्तर हुमायूँ के पास आता जाता रहा और हुमायूँ का विश्वासपात्र हो गया। एक दिन अवसर

१ राजा।
२ मिरआते सिकन्दरी में 'राजा'।
३ मिरआते सिकन्दरी में 'खुशहाल बेग'।

पाकर वह सुल्तान बहादुर के पास भाग गया। जब मझू सुल्तान से मिला तो बहादुर ने उसे मझला कहकर सम्बोधित किया। मझला, मझू का तसग़ीर[१] है। उसने कहा, "तू क्या आया माना अपने साथ वह समस्त चीजें लाया जिन्हे मैं खो चुका था। तेरे आने के बाद मेरी समस्त इच्छायें पूरी हो गई जिनकी मुझे आशा थी।" मझू जब तक हुमायूँ की सेवा में रहा वह उसका बहुत बडा विश्वासपात्र रहा। जो कुछ नक्द एव अन्य धन (हुमायूँ ने मझू) को दिया वह सब उसने उस मुगुली को दे दिया जिसने उसके प्राण बचाये थे। मझू कहता था कि, 'मुगुली ने मेरे प्रति इतनी अधिक अनुकम्पा प्रदर्शित की है जिसका बदला चुकाना बडा कठिन है। इसी प्रकार मैंने उसके विषय में अपने पिता मझू अकबर से जो हुमायूँ का किताबदार था बहुत सी बातें सुनी हैं।"[२]

हुमायूँ द्वारा चाम्पानीर पर आक्रमण

रूमी खा की दुष्टताओं में एक यह थी कि जब हुमायूँ चाम्पानीर के दामन में उतरा तो वहाँ बहादुर की एक तोप थी। उस कला में कुशलता रखने वालों ने यह निश्चय किया कि उसको वहाँ से पर्वतीय किले में पहुँचा दें। किन्तु वे लोग उसे वहाँ तक न ले जा सके। केवल उसे किले की आधी दूर तक ले जा सके। विवश होकर उन लोगों ने उसमें तीन छेद कर दिये और उसको वहीं आधी दूर पर छोड दिया। हुमायूँ ने किसी उपाय से उसे ठीक करा लिया। किन्तु उसकी लम्बाई कम हो गई। छोटी होने के बावजूद उसकी मार बडी लम्बी थी। इस प्रकार प्रथम बार में जो पत्थर उस तोप से फेंका गया उसने किले के द्वार को तोड दिया। उस तोप की दूसरी मार ने एक लम्बे चौडे बरगद के वृक्ष को, जो द्वार के निकट था, गिरा दिया अपितु वृक्ष को जड से उखाड फेंका और किला हिल गया। जो लोग उसमें थे वे भयभीत एव व्याकुल हो गये।

किले में एक फिरगी सैनिक रहता था जिसका नाम 'सक्ता' था। वह सुल्तान बहादुर के प्रभाव से मुसलमान हो गया था। उसकी उपाधि फिरगी खा थी। उसने इख्तियार खा वजीर से कहा कि, 'यदि मैं इस तोप को तोड डालूँ तो मुझे आप क्या पुरस्कार देंगे?" इख्तियार खा वजीर ने कहा, "जो तुम अपनी जबान से माँगोगे?" फिरगी खा ने उसके मुह पर ऐसा ठीक निशाना लगाया जिसने तोप को तोड डाला। किले के सैनिकों ने तक्बीर का नारा लगाया। इख्तियार खा ने उसकी बडी प्रशसा की किन्तु इख्तियार खा ने फिरगी खा को उसकी इच्छानुसार इनाम न दिया।

(२३५) किले की प्रतिरक्षा एव वहाँ की व्यवस्था में राजा नरसिंह देव भी उसका सहायक था। उसने इख्तियार खा की कमी को पूरा कर दिया और सात मन सोना फिरगी खा को प्रदान किया। राजा नरसिंह देव किसी युद्ध में बहादुर के साथ था। उसमें वह कुछ आहत हो गया था। इसी कारण बहादुर ने उसे चाम्पानीर में छोड दिया था। अभी राजा के घाव भरे न थे। चाम्पानीर में दोनों ओर से निरन्तर तोपों के चलने के कारण उसके घाव फट गये और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। जब बहादुर को उसकी मृत्यु का ज्ञान हुआ तो उसे इसका बडा

१ छोटा करना, किसी शब्द के अर्थ में छोटाई पैदा करना, जैसे 'बाल' से 'बालक' बनाना।
२ मिरआते सिकन्दरी के लेखक का पिता मझू अकबर था।

शोक हुआ और उसने कहा कि, "अब किला हाथ से निकल गया।" उस समय अफ़ज़ल खां अब्दुस्समद बनवानो उपस्थित था। बहादुर ने उससे पूँछा, "कोई समाचार प्राप्त हुये?" उसने कहा "नही, किन्तु राजा की, जो क़िले का वीर था, मृत्यु हो गई।"

इख्तियार खा विद्वान् था किन्तु युद्ध में कुशल न था। कहा जाता है कि यह कोली होने के कारण था। रावी का कथन है कि मुनव्वरुल मुल्क सैयिदी जलाल बुखारी ने जब यह सुना कि चाम्पानीर विजय हो गया तो उन्होने कहा कि, "यह किला उन किलो मे से था जिसका विजय करना बडा कठिन था। यदि इस किले में एक वृद्धा भी बैठकर शत्रुओं पर पत्थर फेंकती रहती तो वह किला विजय करने से ज़माने भर के लोगों को रोक देती।" इस समय हुमायूं का भाग्य उन्नति पर था अत उसने उसे सुगमतापूर्वक विजय कर लिया।

रूमी खा तथा तोता

सिकन्दर को उसके पिता ने बताया कि मन्दू विजयोपरान्त हुमायूं राजसिंहासन पर आरूढ हुआ। समस्त मलिक, अमीर, वज़ीर एव राज्य के उच्च पदाधिकारी अपनी श्रेणी अनुसार उसके राजसिंहासन के चारो ओर खडे थे। इसी बीच में एक तोता लाया गया जो विभिन्न भाषायें बोलता था। मौलाना नख्शबी ने अपने तूतीनामे में एक तोते का उल्लेख किया है। एक व्यापारी के पास एक तोता था और व्यापारी, व्यापार हेतु चला गया। यात्रा में उसे अधिक समय व्यतीत हो गया। उसकी पत्नी अपने प्रियतम से भेंट करने के लिये, जिसे उसने वचन दे रक्खा था, व्याकुल थी। वह तोते के पास आई और अपने प्रियतम से भेंट करने की अनुमति माँगी। मौलाना नख्शबी का यह तोता यदि होता तो वह भी बहादुर शाह के तोते का शिष्य हो जाता। रावी का कथन है कि जिसके पास तोते का पिंजडा था वह उसे हुमायूं के राजसिंहासन के समीप हाथ में लेकर खडा हो गया। इसी बीच मे रूमी खा आ गया। दरबार में जहाँ समस्त अमीर उपस्थित थे, पहुँच कर अभिवादन किया। हुमायूं ने उसका नाम लेकर उसका स्वागत किया। जैसे ही तोते ने रूमी खा का नाम सुना, तत्काल बोल उठा, "फट रूमी खा हराम ख्वार", "फट रूमी खा हराम ख्वार"। उस तोते ने बार-बार यह शब्द अपनी ज़बान से उसी प्रकार कहे जिस प्रकार कोई व्यक्ति ऐसे आदमी को, जिसने बहुत बडा अपराध किया हो, क्रोध में डाँटता फटकारता हो। रूमी खा ने उस भरे दरबार में, जो पहिले पहल लगा था, तोते को जब यह कहते सुना तो उसने लज्जावश दरबार से निकल जाना चाहा। हुमायूं ने उसे सांत्वना एव प्रोत्साहन देने के लिये कहा, "यदि तोते के अतिरिक्त कोई दूसरा व्यक्ति तुम्हारे विषय में यह शब्द कहता तो मै उसकी ज़बान गुद्दी से खिचवा लेता किन्तु क्या किया जाय। यह पक्षी है।" रावी का कथन है कि, "सम्भवत इसका कारण (२३६) यह है कि बहादुर जब अराबा[1] से निकला तो जो लोग रूमी खा के विरुद्ध थे वे यही वाक्य कहते थे। तोते ने यह वाक्य सुन कर याद कर लिये अत जब हुमायूं के दरबार मे तोते ने रूमी खा का नाम सुना तो उसे तत्काल वह वाक्य याद आ गये और क्रोध में वही वाक्य जो वे लोग कहा करते थे दुहराने लगा। इसमें भी कोई आश्चर्य नही हो सकता कि तोते ने यह वाक्य दैवी प्रेरणा से कहे हों ताकि अपहरणकर्ता एव दुष्ट को कष्ट पहुँचे और दरबार के अन्य लोग

१ गाडियों का घेरा।

शिक्षा ग्रहण करे।" (प्रस्तुत) ग्रथ के रचयिता का कथन है कि, "युग में ऐसी ही आश्चर्यजनक घटनायें घटा करती है।"

विजयोपरान्त हुमायूँ कम्बाया[1] गया। फिर वहाँ से अहमदाबाद पहुँचा। उसके बाद गयासपुर आया और नगर से दो फरसख पर ठहर गया। मैं कहता हूँ, "**अकबर नामा** में यह है कि चाम्पानीर से हुमायूँ अहमदाबाद पहुँचा।" यही मैंने अपने इस इतिहास में लिखा है।

फिर हुमायूँ वहाँ से वतवा गया। वहाँ के स्वामी कुतुब आलम के (मकबरे) की जियारत की और लोह, लक्कर, पत्थर के प्रसिद्ध चमत्कार के दर्शन किये और यह चमत्कार देख कर कुतुब आलम की उच्च श्रेणी के विषय मे सतुष्ट हो गया। अकबर जब गुजरात पहुँचा तो उसने उस चमत्कार के दर्शन किये। उसने लोह, लक्कर, पत्थर को दो भागो में विभाजित किया। आधा भाग अपने साथ लेता गया और शेष आधा भाग उसी स्थान पर रहने दिया।

जब हुमायूँ को शेर शाह के विद्रोह के समाचार ज्ञात हुए तो वह बडी चिन्ता में पड गया। उसने मीर्जा हिन्दाल को अहमदाबाद में, कासिम बेग को बरौज[2] में, हिन्दू बेग को नहरवाला पटन में और शेख अली बुरहान को अक्करा में नियुक्त किया।

अकबर नामा मे जो उल्लेख हुआ है मैं उसके विरुद्ध लिख रहा हूँ। जब बादशाह वहाँ से वापस हुआ तो मलिक नस्सन रणथम्भोर का हाकिम, मलिक बुरहान अल-मलिक बनवानी चित्तौड का हाकिम, शमशीरुल मुल्क अजमेर का हाकिम, आपस मे मिल गये और २०,००० अश्वारोही लेकर नहरवाला पटन की ओर चले। इन लोगो ने बहादुर को पत्र लिखा कि वह उन्हे नहरवाला पटन के हाकिम से युद्ध करने की अनुमति दे दे। बहादुर ने इन सबको उत्तर भेजा कि, "ठहरो तथा मेरे पहुँचने की प्रतीक्षा करो।" फिर बहादुर जैसे ही वहाँ पहुचा हिन्दू बेग युद्ध किये बिना अहमदाबाद के लिये रवाना हो गया। बहादुर अपना आमिल वहाँ छोडकर स्वय अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ अत हिन्दू बेग और वह व्यक्ति, जो उसके साथ था, गयासपुर मे पहुँचे। सुल्तान नदी के उस ओर ठहर गया। जब रात्रि का अधकार व्यापक हो गया तो मुगुल लोग अपनी अग्नि को उसी दशा में छोड कर महमूदाबाद चले गये। बहादुर ने उनका पीछा किया और कनेज के मैदान मे उतर पडा। जब बरौज के हाकिम को सुल्तान के विषय में समाचार प्राप्त हुये कि वह उन लोगो के पास पहुँच गया है तो सूर्योदय होते ही दोनों ओर की सेनाओं ने अपनी पक्तियाँ सुव्यवस्थित कर ली। फिर सैयिद मुबारक अल बुखारी एव एमादुल मुल्क मलिक जियू को विजय हुई। इन्ही दोनो के साथ बहादुर की सेना वापस हुई और बडी खुली हुई विजय प्राप्त हुई। बहुत से मुगुल महेन्द्री नदी मे डूब गये। जो जीवित रहे उनका बहादुर ने पीछा किया यहाँ तक कि उन लोगों को अपने राज्य से बाहर निकाल दिया।

जो चीजें **अकबर नामा** में हैं कुछ ऐसी है कि उसका खडन किया जाता है और कुछ (२३७) चीजें ऐसी हैं कि उनमे उसका समर्थन होता है।

१ कैम्बे।
२ भडौच।

चित्तौड विजय पूर्व हुमायूं द्वारा तैयारियां

राज्य के समस्त उच्च पदाधिकारियों ने उसे परामर्श दिया कि, "आप जब तक चित्तौड विजय न कर ले, उस समय तक हुमायूं के विषय में कोई चिन्ता न करें। इस प्रकार सुल्तान ने एक पत्र द्वारा तातार खा को कालिंजर व अलअवस (?) और उसके आस पास की ओर जाने का आदेश दे दिया। आदेश पाते ही तातार खा चला गया। शेर शाह के विद्रोह के प्रारम्भ मे सुल्तान एव तातार खा से पत्र-व्यवहार हुआ करता था और दोनो एक दूसरे से परिचित थे। तातार खा जब देहली मे था तो उसपर भरोसा करके बहुत कुछ धन, व्यापारियों द्वारा सुल्तान ने उसके पास भेजा था ताकि यह धन सेना एकत्र करने मे काम आ सके।

पत्र में उसने चित्तौड अभियान एव उसके तथा हुमायूं के मध्य मे जो खेदजनक बाते हुई थी, उनकी सूचना दी। इसके अतिरिक्त यह लिखा कि सेना एकत्र करने के बाद वह उससे मिले और जब तक चित्तौड विजय न हो जाय उस समय तक हुमायूं को किसी प्रकार न छेडे ताकि वह अपनी राजधानी से न निकल पाये।

तदुपरान्त सुल्तान अल-मलिक की ओर आकृष्ट हुआ जो बनी अब्बास से सम्बन्धित एव बडा वीर था अर्थात् बुरहान अल-मलिक अल बनवानी को सुल्तान ने खजाना एव सेना देकर उसके हाथों को शक्ति प्रदान की। उसे नागौर की ओर जाने का आदेश दिया ताकि वह नागौर को अपना केन्द्र बनाये और वहाँ से अपने हितैषी अमीरो को पजाब तक धावे मारने के लिये भेजे।

मलिक एमादुल मुल्क को उसने अजमेर के लिये नियुक्त किया ताकि वह उससे निकट रहे और विजय का प्रयत्न करे। उसने विश्वस्त बरीद की व्यवस्था कराई। यहाँ तक कि उसे रोजाना आगरा के समाचार प्राप्त होते रहते थे।

इसी बीच में बरीद का पत्र पहुंचा कि ब्याना विजय हो गया और तातार खा ब्याना मे है। **अकबर नामा** नामक इतिहास मे लिखा है कि विजय के दिन तातार खा के साथ ४०,००० सैनिक थे। जब हुमायूं को इसकी सूचना मिली तो उसने अपने भाइयों को ब्याना की ओर प्रस्थान करने का आदेश दिया। मीर्जा अस्करी, मीर्जा हिन्दाल एव यादगार नासिर मीर्जा आगरा में थे और ब्याना आगरा से समीप था। जब (शाही) सेना के आगमन के समाचार प्राप्त हुए तो तातार खा की सेना छिन्न भिन्न हो गई यहाँ तक कि उसके पास केवल ३,००० आदमी बाकी रह गये, यद्यपि तातार खा ने अल्प समय में उन लोगों पर खज़ाना व्यय कर दिया था और वह धन भी जो रणथम्बोर के लिये था और जिसकी कुल सख्या देहली के ४० करोड तन्के थी।

अब उसको बहादुर से लज्जा आई कि वह इस खज़ाने को किसी अन्य वस्तु पर व्यय करे, यद्यपि यह धन ऐसे ही अवसर के लिये था, अत उपर्युक्त घटना उसे इस बात पर उभारती थी कि वह अपनी कौम के भरोसे के योग्य वीरों को युद्ध करने के लिये तैयार करे। इस प्रकार वह अपने शेष समूह की ओर आकृष्ट हुआ और उनसे कहा, 'मेरी कौम के विश्वस्त लोगों ने आज ही के लिये भरोसा दिलाया था और अब मुझे ऐसी दशा मे छोड दिया कि मैं आशा करता हूँ कि अपनी ही कौम के हाथों नष्ट हो जाऊँ। ऐसे ही दिन के विषय मे किसी विद्वान् से पूँछा गया कि मौत (२३८) से भी अधिक कठोर कोई वस्तु है तो उसने उत्तर दिया कि 'ऐसी परिस्थिति, जिसके कारण मनुष्य मृत्यु की आकांक्षा करने लगे।' मैं ऐसी ही परिस्थिति में हूँ कि मृत्यु की आकांक्षा

करता हूँ। मैं उनसे एव तुममे से जो लोग उन कायरो के साथ हो गये हैं, वही कथन प्रस्तुत करता हूँ जो इब्नुज़्ज़ुबैर[1] ने अपने उन साथियों के लिये, जिन्होंने उसका साथ छोड दिया था, कहा था कि, 'तुमने मेरे खजूर एव मुर्ग को खा लिया किन्तु मेरे आदेशों का उल्लघन किया अर्थात् युद्ध से मुह मोड लिया।' अत मुग़लो के मुकाबले के लिये दृढ़तापूर्वक निकलता हूँ। तुम लोगों मे मेरा साथ वही देगा जो मेरी ही भाँति दृढ हो। फिर जो दृढ रहेगा वह युद्ध करेगा, यहाँ तक कि मार डाला जाय।"

हुमायूँ ने सुल्तान (बहादुर) से युद्ध हेतु उन लोगों का पीछा सारगपुर तक किया जिसकी सूचना सुल्तान को निरन्तर प्राप्त होती रहती थी। उस समय सुल्तान ने अपने सहायकों को बुला कर पूँछा कि, "तुम लोगों ने हुमायूँ के विषय में सुना, अब तुम लोगों का उसके विषय में क्या विचार है?" लोगों ने विभिन्न मत प्रकट किये किन्तु जब उसने अमीर कबीर सर्व-गुण सम्पन्न सद्र खा से पूँछा तो उसने उत्तर दिया, "वाह्य बातों पर दृष्टि डालते हुए मुझे ईश्वर से आशा है कि इससे पूर्व कि हुमायूँ हम तक पहुँचे, ईश्वर विजय को हमारे लिये सरल बना देगा। इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि हुमायूँ बडा ही उत्कृष्ट एव गुणवान् है; इसमें भी कोई सन्देह नहीं है कि सर्वदा हम ईश्वर के शत्रुओं के मुकाबले पर कटिबद्ध रह हैं और इस बात से शरण माँगते हैं कि हम मुसलमानों से युद्ध करने लगें किन्तु यदि हुमायूँ हमसे युद्ध के लिये हमारे विरुद्ध आ जायगा तो उस समय हमारी शिकायत स्वीकृति-योग्य होगी। हम उससे मुकाबला करेंगे और ईश्वर हमें सहायता और विजय प्रदान करेगा।" सद्र खाँ के उपर्युक्त परामर्श को सुल्तान ने पसन्द किया और निर्भीक हो कर अपनी स्थिति पर दृढ रहा और उसे किसी प्रकार की चिन्ता नहीं हुई, यद्यपि उसके सामने दो चीजें थीं अर्थात् एक तो चित्तौड को शत्रु से युद्ध करके विजय करना, दूसरे यह कि हुमायूँ उसकी ओर आ रहा है, उससे भी युद्ध करना है। . ..

उस किले मे एक वर्ष की खाद्य-सामग्री एकत्र कर दी। तदुपरान्त तोपें भी उस किले में लगा दी गईं तथा आवश्यक सामग्री एव सेवक नियुक्त करने के पश्चात् किला मलिक नस्सन को सौंप दिया गया।

रूमी खाँ ने जब देखा कि किला मलिक नस्सन को सौंप दिया गया तो वह बडा प्रभावित हुआ। वह वाह्य रूप से तो सुल्तान के साथ था किन्तु हृदय मे हुमायूँ का सहायक बन गया और इस बात को धूर्ततापूर्वक अपने हृदय में छिपाये रक्खा।

जब सुल्तान चित्तौड की ओर से निश्चिन्त हो गया तो उस समय हुमायूँ उज्जैन में था। सुल्तान वहाँ से उज्जैन की ओर रवाना हुआ। उधर से हुमायूँ ने उज्जैन से प्रस्थान किया।

-

१ अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, इमाम हुसैन के करबला में ६८० ई० में शहीद कर दिये जाने के उपरान्त मक्का में ख़लीफ़ा घोषित कर दिये गये। शाम (सीरिया) के मुसलमानों ने भी यज़ीद तथा मुआविया द्वितीय की मृत्यु उपरान्त उन्हें ख़लीफ़ा स्वीकार कर लिया और वे १२८ दिन तक ख़लीफ़ा रहे। तदुपरान्त हकम का पुत्र मरवान दमिश्क में ख़लीफ़ा घोषित कर दिया गया। अब्दुल्लाह मक्का ही में रहे। ७२ हि० (६९१ ई०) में ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक के सेनापति हज्जाज ने अब्दुल्लाह को घेर लिया। अब्दुल्लाह अपने थोडे से सहायकों के साथ युद्ध करते हुये ७३ हि० (६९२ ई०) में मारे गये।

दोनों ओर की सेनाएं दसौर में आकर एकत्र हुईं। इसका मूल रूप मदसौर है। एक विस्तृत झील के किनारे पर पड़ाव किया। झील के एक किनारे पर सुल्तान और दूसरे किनारे पर हुमायूँ था। दोनों उसी झील के जल का प्रयोग करते थे। तदुपरान्त सुल्तान ने अपने सहायकों से युद्ध के विषय में परामर्श किया। ताज खा एव सद्र खा ने कहा कि "विजय के कारण हमारी सेना के हौसले बढ़े हुए हैं। उसने जो महान् कार्य किये हैं उनसे वह बड़ी प्रसन्न है। इस समय यदि हुमायूँ पर आक्रमण करने के लिये कहा जायेगा तो नि सन्देह वे आक्रमण हेतु तैयार हो जायेंगे और बड़े ऐश्वर्य एव शक्ति से आक्रमण करेंगे। ऐसी दशा में ईश्वर हमें विजय प्रदान करेगा।" ताज खा और सद्र खा के परामर्श के अनुसार सुल्तान ने दसौर पहुँचने के दूसरे ही दिन से सेना की पंक्तियों को युद्ध के लिये तैयार करना प्रारम्भ कर दिया।

जब रूमी खा को सुल्तान के इस सकल्प का ज्ञान हुआ तो उसने सोचा कि, "सुल्तान जब किसी कार्य का सकल्प कर लेता है तो वह उसे कर डालता है। ऐसी दशा में चित्तौड़ के विश्वासघात का प्रतिकार, जिसे वह लेना चाहता था, कठिन हो जायेगा।" उसे भय हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि वह बदला न ले सके। इस प्रकार उसने सुल्तान से कहा कि, "यदि आपने हुमायूँ से युद्ध का सकल्प कर लिया है तो यह आतशखाना[1] ऐसे दिन न काम आयेगा तो फिर कब काम आयेगा, अत मेरा यह अनुरोध है कि आप यह तोपखाना अराबे[2] में ले जाय और सेना को अराबे में केन्द्रित कर दें। अराबों से तोपखाने और सेना को घेर दें। उसके चारो ओर खाई खोद दे। इस प्रकार हम शत्रु के रात्रि के छापे से सुरक्षित रहेंगे और हमें शत्रु की किसी प्रकार की चिन्ता न होगी। जब हम इस प्रकार अराबे में सुरक्षित हो जाय तो यहाँ से थोड़े-थोड़े आदमी निकल कर शत्रुओं से युद्ध करें और फिर अराबे में वापस आकर शरण ले ले। इस प्रकार शत्रु अधिक समय तक हमारी ओर से सावधान नहीं रहेगा। इसके अतिरिक्त हमें खाद्य सामग्री भी बराबर पहुँचती रहेगी कारण कि हम लोग अपनी ही भूमि पर होंगे। इसके विपरीत शत्रुओं को स्वय पराजय उठाना पड़ेगी। रूम (२४०) के सुल्तान अपने शत्रुओं से युद्ध के समय इसी प्रथा का प्रयोग करते थे। इस प्रकार वे शत्रुओं को पराजित कर देते थे और अपने राज्य का क्षेत्र बढा लेते थे।" जब सुल्तान ने रूमी खा से यह बात सुनी तो उसने सद्र खा से पूछा कि "तुम्हारी रूमी खा के मत के विषय में क्या राय है?" सद्र खा ने सुल्तान को उत्तर दिया कि, "कथन तो मधु के समान है किन्तु इसका प्रभाव कड़वा है। अग्नि को अग्नि वालों के लिये छोड़िये। इस समय कोई किला घोड़ों की आवाज से अधिक उचित नहो, न तलवार से अधिक कोई वस्तु लाभदायक है, एक लगाम को दूसरी लगाम से मिला दे।"[3] सद्र खा ने बात तो बड़ी ठीक बताई किन्तु सुल्तान ने उसका पालन नहीं किया।

क्योंकि सुल्तान रूमी खा की बात पर विश्वास करता था और उससे प्रभावित था अत उसने उसी के परामर्श का पालन किया। अराबे में अपनी सेना का केन्द्र बना लिया। उसके परामर्श के अनुसार अब दोनों ओर से तालया[4] निकलने लगे। बहादुर की ओर से जो दस्ते निकलते थे वे मीर्जा -

१ तोपखाना।
२ गाड़ी के घेरे।
३ अर्थात् सामने सामने युद्ध हो।
४ सेना के वह दस्ते जो शिविर की प्रतिरक्षा करते हैं।

मुकीम के, जिसकी उपाधि खुरासान खाँ थी, अधीन होते थे। तदुपरान्त रूमी खाँ ने एक जाली पत्र बडी सावधानी से लिखकर एक दूत को दिया और कहा कि यह पत्र लेकर बडी सावधानी से जाओ। जब वह पत्र लेकर चला तो रूमी खाँ ने स्वय ही उसे बन्दी बनवा दिया। बन्दी होने के उपरान्त वह बहादुर के समक्ष प्रस्तुत किया गया। उसके पास से एक पत्र निकला जो उस समूह के नाम था जिसमें उनके प्रश्नो के उत्तर थे। अत बहादुर ने सोचा कि यह उन्ही लोगों में से है। इसी प्रकार एक पत्र उसने हुमायूँ को लिखा जिसमें उसने आने वाली खाद्य सामग्री की सूचना दी और यह सकेत किया कि उस खाद्य सामग्री पर वह किसी न किसी प्रकार अधिकार जमा ले। इसके अतिरिक्त जो काफ़िले आते हैं उनका मार्ग रोक दे ताकि खाद्य सामग्री न आ सके।

अब यह स्थिति हो गई कि सुल्तान के यहाँ अरावे में सैनिकों की खाद्य सामग्री का अन्त हो गया। चित्तौड के किले में जहाँ से खाद्य सामग्री आती थी वहाँ भी वह समाप्त हो गई। रूमी खाँ ने जो कुछ धूर्तता की थी उससे उसके हृदय मे युद्ध का कोई विचार न था अपितु वह चाहता था कि खाद्य सामग्री शत्रुओं के हाथ में चली जाय और अरावे पर हुमायूँ का अधिकार हो जाय। कुछ दिनों तक सुल्तान की सेना के केन्द्र में घोर अकाल रहा। बहुत से पशु भूख के कारण नष्ट हो गये। सेना वाले अत्यधिक कमजोर हो गये। मुहम्मद जमान मीर्ज़ा ५०० अश्वारोहियों को लेकर युद्ध हेतु निकला और शत्रुओं से मुकाबला किया किन्तु फिर वापस चला गया। वापसी के दिन ईदुल फित्र थी। यह अकाल की दशा २० शव्वाल तक रही।[1] अब सुल्तान ने अपने कुछ विश्वासपात्रों से कहा कि अब मैं शीघ्र ही कुछ विश्वासपात्रों के साथ भाग जाऊँगा। रविवार २१ शव्वाल को वह तोपों के निकट पहुँचा और इन सबको तोड डालने का आदेश दे दिया। तोपों के तोडने के समय पूरा मैदान हिल गया। इस कारण हुमायूँ उस ओर आकृष्ट हुआ और एक घोडे पर सवार होकर बहुत बडी सेना सहित अपने खेमे से कुछ फरसख पर घोडे की पीठ पर सशस्त्र रह कर पूरी रात व्यतीत की, किन्तु बहादुर घोडे पर सवार हुआ और छिपकर मन्दू की ओर भाग गया। मुहम्मद शाह तथा कुछ अन्य लोग जिनकी सख्या दस से कम थी, उसके साथ ही लिये। उसके पीछे पीछे सद्र खाँ एव एमादुल मुल्क भी २०,००० अश्वारोही लेकर निकले। फिर रूमी खाँ भी निकल भागा। कुछ लोगो का मत है कि रूमी खाँ सुल्तान के साथ था। जब यह लोग अरावे से चले गये तो हुमायूँ की सेना ने अरावे में पहुँच कर सुल्तान की सेना के उन लोगों को, जो बच गये थे, बन्दी बना लिया।

"अकबरनामा" में लिखा है कि सुल्तान बहादुर जब अपने खेमे से मान्दू की ओर प्रस्थान (२४१) के विचार से निकला तो उस समय बडा ही कोलाहल मचा और घोडों की आवाज़ से मैदान गूँज उठा। हुमायूँ ने जब यह आवाजें सुनी तो सशस्त्र होकर अपने घोडे पर सवार हुआ और तीस हजार अश्वारोही लेकर अपने खेमे से कुछ फरसख़ दूर आकर ठहर गया और घोडे ही की पीठ पर रात्रि व्यतीत की और कुछ न समझ सका कि क्या होने वाला है। इसी अवस्था में घोडे पर ही रात्रि व्यतीत हो गई और दिन का एक चौथाई भाग भी।

जब यह प्रामाणिक रूप से ज्ञात हो गया कि सुल्तान बहादुर चला गया तो उस समय हुमायूँ के भाई यादगार नासिर मीर्ज़ा, हिन्दू बेग तथा कासिम सुल्तान ने बहुत बडी सेना लेकर

१ २० शव्वाल ९४१ हि० (२४ अप्रैल १५३५ ई०)।

बहादुर का पीछा किया। उधर हुमायूं के आदेशानुसार सेना ने अराबे (मे लोगो) को खूब लूटा। जो लोग वहाँ बच गये थे उनको बन्दी बना लिया गया किन्तु किसी की हत्या न कराई। इन्ही बन्दियों में खुदावन्द खा लायगी भी था। जब यह बन्दी बनाकर हुमायूं के दरबार में प्रस्तुत किया गया तो हुमायूं ने उसके प्रति अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की और उसे अपना विश्वास-पात्र बना लिया। वह खुदावन्द खा की बातो से बडा प्रभावित हुआ, यहाँ तक कि उसका विश्वासपात्र बन गया।

सद्र खा एव एमादुल मुल्क प्रसिद्ध मार्ग से चले और सुल्तान के पहुँचने के पूर्व ही मन्दू के किले मे पहुँच गये। किले में प्रविष्ट होने के उपरान्त किले के समस्त द्वार बन्द करवा दिये।

१४ तारीख[1] को सुल्तान बहादुर भी वहाँ पहुच गया और किले के भीतर प्रविष्ट हो गया। मुहम्मद शाह, जो बहादुर के साथ था, भी किले के भीतर प्रविष्ट हो गया। जब यह दोनो किले के भीतर जा चुके तो द्वार ही से रूमी खा इन दोनों से पृथक् हो गया।

सुल्तान बहादुर जब अराबे से निकला तो मुग़ुलों को धोखा देने के लिये सर्वप्रथम आगरे की ओर रवाना हुआ। तदुपरान्त वह अपना मार्ग बदल कर मन्दू की ओर पहुँचा। अत वह सद्र खा एव एमादुल मुल्क के पहुँचने के बाद वहाँ पहुँच सका। उस समय मन्दू का किला मल्लू खा मन्दू के निवासी, जिसकी उपाधि कादिर शाह थी, के अधीन था।

अब हुमायूं भी मन्दू की ओर रवाना हुआ और नरवल नामक स्थान में ठहर गया। इसी स्थान पर रूमी खा भी हुमायूं से आकर मिल गया। हुमायूं न उसको अपना बहुत बडा विश्वासपत्र बना लिया। तदुपरान्त उसने रूमी खा से बहादुर के विषय में पूछा। रूमी खा ने उत्तर दिया कि, "वह किले में है और अमुक व्यक्ति उसके साथ किले मे है।" तदुपरान्त हुमायूं ने रूमी खा से किले के विषय में पूछा तो उसने उत्तर दिया कि वह किला बडा ही दृढ है और उसमें बडे ही शूर वीर एव योद्धा उपस्थित है।

यह सब ज्ञात करने के उपरान्त हुमायूं ने अपनी ओर से सधि की बातचीत प्रारम्भ कर दी। किले वाले भी सधि के लिये राजी हो गये। सधि की शर्तें तय करने के लिये सीलसील नामक स्थान पर हुमायूं की ओर से उसका वकील मुहम्मद बिन अली और बहादुर की ओर से सद्र खा का वकील पहुँचा। इन दोनों वकीलो ने मिलकर यह निश्चय किया कि, "गुजरात एव चित्तौड बहादुर के पास रहे *और इनके अतिरिक्त जो कुछ भी है उसे हुमायूं के अधिकार में होना चाहिये।" सधि की इन शर्तों* के निश्चय हो जाने के उपरान्त दोनो वकील पृथक् हो गये किन्तु यह सधि ऐसी ही थी जैसी कि आमिरिया की सधि जिसकी नींव फ़साद पर रख दी गई थी अर्थात् हुमायूं एव बहादुर में सधि तो हो गई किन्तु जिन चीज़ो पर सधि हुई वही फसाद का कारण बन गईं, उदाहरणार्थ चित्तौड इत्यादि। ऐसे अवसरों की सधि को फसाद पर आधारित सधि कहते हैं किन्तु हुमायूं को राज्य के कुछ हिस्से इस कारण दिये गये कि वह किले तक आ चुका था। बहादुर को चित्तौड एव गुजरात इस कारण मिला कि इसको हानि की कुछ पूर्ति होनी चाहिये थी। यह सधि आमिरिया की सधि के समान थी। इस प्रकार इसका भी परिणाम वही हुआ।

१ १४ ज़ीक़ाद ९४१ हि० (१७ मई १५३५ ई०)।

जिस रात्रि को यह सधि निश्चय हुई और घोषणा कर दी गई उसी रात्रि के अतिम भाग में यह घटना घटी कि किले के द्वार के पहरेदार भी सधि के समाचार सुनकर सतुष्ट एव थक जाने के कारण सो गये और किले के द्वार की ओर से असावधान हो गये। सयोग से उसी ओर मुगुलो का एक दस्ता गुज़रा। जब उन लोगों ने द्वारपाल को असावधान सोते हुए देखा तो वे लोग किले की ऊँचाई तक पहुँच कर किले के भीतर प्रविष्ट हो गये और किले का द्वार खोल दिया। द्वार को खोलते ही समस्त अश्वारोही एव पदाती क़िले के भीतर प्रविष्ट हो गये और अपनी प्रथानुसार अल-जलाल्हु,[१] अल्लाह-अल्लाह अल्लाह् के नारे लगाने लगे। समस्त किला गूंज उठा, और लोग (२४२) कम्पित हो गये। किले के हाकिम मल्लू ख़ा ने जब यह दशा देखी तो वह घोडे पर बैठकर तत्काल सुल्तान के पास पहुँचा। वह सो रहा था किन्तु उसकी आवाज़ से जाग उठा और अपने घोडे पर उसी निद्रा एव जाग्रति की अवस्था में सवार होकर अपने स्थान से निकल पडा। कुछ अन्य लोग भी उसके साथ हो लिये। उनमें से मल्लू ख़ा भी था। मार्ग मे भूपत राय सलाहदी भी उनके साथ हो गया। जब बहादुर बाबुल मैदान तक पहुँचा तो उसने मुगुलो की सेना को अपनी ओर बढ़ते हुए देखा। सुल्तान के साथ १२ आदमियों से अधिक न थे किन्तु सशस्त्र थे। जब वे बाबुल मैदान से निकले तो मुगुल सैनिको ने उनपर तत्काल आक्रमण कर दिया। उन लोगो ने भी आक्रमण का उत्तर आक्रमण से दिया और सेना की पक्तियो को चीरकर वहाँ से निकल भागे। सुकर नामक किले में पहुँचकर उसमें प्रविष्ट हो गये। घोडे को क़िले के बाहर उनकी लगामें ढीली करके छोड दिया, यहा तक कि वे किले के आँचल में चले गये। तदुपरान्त वे लोग सुकर नामक किले से उतरे और गुजरात की ओर रवाना हो गये। किले के एक ओर कासिम हुसेन ख़ा अपनी सेना लिये तैयार था। जब उसके समीप से सुल्तान बहादुर गुज़रा तो एक व्यक्ति ने, जिसका नाम लोरी था और जो किसी समय बहादुर का सेवक रह चुका था और उस समय कासिम हुसेन ख़ा की सेना मे था, सुल्तान को पहिचान लिया और कासिम हुसेन ख़ा से कह दिया कि, "बहादुर जा रहा है।" कासिम ख़ा ने सुनकर उपेक्षा की मानो उसने उसकी बात सुनी ही न हो और बहादुर शान्तिपूर्वक निकल कर चाम्पानीर पहुँच गया। मार्ग में १५ सौ आदमियो की एक सेना सुल्तान से आकर मिल गई।

उस समय चाम्पानीर के किले में इख्तियार ख़ा सिद्दीकी था। जब उसने बहादुर के आने के समाचार सुने तो वह किले के नीचे आ ही रहा था कि इतने मे सुल्तान किले पर पहुँच गया। उसने समस्त भडारो का निरीक्षण किया। उत्तम एव बहुमूल्य वस्तुएँ चाम्पानीर से दीव की ओर ले गया। स्त्रियो के विषय में बहादुर ने आदेश दिया कि वे पर्वत के दामन में चली जायें। जो कुछ ख़ज़ाना है वह भी पहाड के दामन मे भेज दिया जाय। इस प्रकार उसके आदेशानुसार बहु-मूल्य वस्तुएँ, स्त्रियाँ और ख़ज़ाना इत्यादि वहाँ से पर्वत के दामन मे भेज दिया गया। अब जो चीज़ें किले में शेष रह गई थी उनके विषय में नही समझा जा सकता कि वे क्या थी।

हुमायूँ को रात्रि उपरान्त दो घडी दिन चढ जाने पर यह समाचार प्राप्त हुए कि मुगुल क़िले मे प्रविष्ट हो गये और बहादुर उस किले को छोडकर चला गया, अत वह घोडे पर सवार होकर

१ 'उसका ऐश्वर्य बड़ा है'।

बहादुर का पीछा किया। उधर हुमायूं के आदेशानुसार सेना ने अराबे (में लोगों) को खूब लूटा। जो लोग वहाँ बच गये थे उनको बन्दी बना लिया गया किन्तु किसी की हत्या न कराई। इन्ही बन्दियों में खुदावन्द खा लायगी भी था। जब यह बन्दी बनाकर हुमायूं के दरबार में प्रस्तुत किया गया तो हुमायूं ने उसके प्रति अत्यधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की और उसे अपना विश्वास-पात्र बना लिया। वह खुदावन्द खा की बातों से बड़ा प्रभावित हुआ, यहाँ तक कि उसका विश्वासपात्र बन गया।

सद्र खा एव एमादुल मुल्क प्रसिद्ध मार्ग से चले और सुल्तान के पहुँचने के पूर्व ही मन्दू के किले में पहुँच गये। किले में प्रविष्ट होने के उपरान्त किले के समस्त द्वार बन्द करवा दिये।

१४ तारीख[१] को सुल्तान बहादुर भी वहाँ पहुच गया और किले के भीतर प्रविष्ट हो गया। मुहम्मद शाह, जो बहादुर के साथ था, भी किले के भीतर प्रविष्ट हो गया। जब यह दोना किले के भीतर जा चुके तो द्वार ही से रूमी खा इन दोनों से पृथक् हो गया।

सुल्तान बहादुर जब अराबे से निकला तो मुगुलों को धोखा देने के लिये सर्वप्रथम आगरे की ओर रवाना हुआ। तदुपरान्त वह अपना मार्ग बदल कर मन्दू की ओर पहुँचा। अत वह सद्र खा एव एमादुल मुल्क के पहुँचने के बाद वहाँ पहुँच सका। उस समय मन्दू का किला मल्लू खा मन्दू के निवासी, जिसकी उपाधि कादिर शाह थी, के अधीन था।

अब हुमायूं भी मन्दू की ओर रवाना हुआ और नरवल नामक स्थान में ठहर गया। इसी स्थान पर रूमी खा भी हुमायूं से आकर मिल गया। हुमायूं ने उसको अपना बहुत बडा विश्वासपत्र बना लिया। तदुपरान्त उसने रूमी खा से बहादुर के विषय में पूछा। रूमी खा ने उत्तर दिया कि, 'वह किले में है और अमुक व्यक्ति उसके साथ किले मे है।" तदुपरान्त हुमायूं ने रूमी खा से क़िले के विषय में पूछा तो उसने उत्तर दिया कि वह किला बड़ा ही दृढ़ है और उसमें बडे ही शूर वीर एव योद्धा उपस्थित हैं।

यह सब ज्ञात करने के उपरान्त हुमायूं ने अपनी ओर से सधि की बातचीत प्रारम्भ कर दी। किले वाले भी सधि के लिये राजी हो गये। सधि की शर्तें तय करने के लिये सीलसील नामक स्थान पर हुमायूं की ओर से उसका वकील मुहम्मद बिन अली और बहादुर की ओर से सद्र खा का वकील पहुँचा। इन दोना वकीलो ने मिलकर यह निश्चय किया कि, "गुजरात एव चित्तौड बहादुर के पास रहे और इनके अतिरिक्त जो कुछ भी है उसे हुमायूं के अधिकार में होना चाहिये।" सधि की इन शर्तों के निश्चय हो जाने के उपरान्त दोना वकील पृथक् हो गये किन्तु यह सधि ऐसी ही थी जैसी कि आमिरिया की सधि जिसकी नींव फ़साद पर रख दी गई थी अर्थात् हुमायूं एव बहादुर में सधि तो हो गई किन्तु जिन चीज़ो पर सधि हुई वही फ़साद का कारण बन गईं, उदाहरणार्थ चित्तौड़ इत्यादि। ऐसे अवसरो की सधि को फसाद पर आधारित सधि कहते हैं किन्तु हुमायूं को राज्य के कुछ हिस्से इस कारण दिये गये कि वह क़िले तक आ चुका था। बहादुर को चित्तौड एव गुजरात इस कारण मिला कि इसकी हानि की कुछ पूर्ति होनी चाहिये थी। यह सधि आमिरिया की सधि के समान थी। इस प्रकार इसका भी परिणाम वही हुआ।

१ १४ सफ़र ९४२ हि० (१७ मई १५३५ ई०)।

क़िले के भीतर देहली द्वार से प्रविष्ट हुआ। द्वार पर सद्र ख़ा अपनी सेना के साथ खड़ा हुआ था तथा मुग़ुलों से युद्ध हो रहा था। इतने में हुमायूँ प्रविष्ट हुआ। फिर भी वह दृढ़ रहा और दाहिनी ओर तथा उत्तर की ओर आता जाता रहा। घायल होने के बावजूद उसने कोई चिन्ता न की, यहाँ तक कि प्रत्येक दिशा में घेर लिया गया। वह अपनी तलवार द्वारा उनसे युद्ध करता रहा। फिर उसके सहायकों न पहुँचकर उसकी लगाम या हाथ से पकड़ लिया और अपने साथ लेकर सूकर के किले की ओर चले गये। बहादुर की सेना के लोग भी अधिक संख्या में उसके साथ चले गये और सूकर के किले में पहुँचकर उसे बन्द कर लिया।

उन लोगों के जाने के उपरान्त मुग़ुलों ने घरों को तीन दिन तक ख़ूब लूटा और नष्ट भ्रष्ट किया। तदुपरान्त शान्ति की घोषणा कर दी गई। फिर सद्र ख़ा एवं सुल्तान आलम को क्षमा प्रदान करने का आश्वासन दिलाया ताकि दोनों उसके सहायक हो जायें। जब उन दोनों को क्षमा कर दिये जाने के समाचार प्राप्त हुए तो दोनों एक विश्वास के योग्य व्यक्ति के साथ निकले और हुमायूँ के पास पहुँचे। उसने दोनों के प्रति सौजन्यपूर्ण व्यवहार किया और सद्र ख़ा से कहा कि, "सुल्तान आलम ने क्षमा कर दिये जाने के बावजूद कई बार भूलें की हैं किन्तु जो कुछ उसने किया, (२४३) मैं उसे क्षमा करता हूँ। अब केवल मैं इतना ही आदेश देता हूँ कि उसकी स्नायु काट दी जाय।" इस प्रकार आदेश होते ही सुल्तान आलम की स्नायू काट दी गई। तदुपरान्त वह उससे सौजन्यपूर्ण व्यवहार करता रहा।

सद्र ख़ा के प्रति उसने इतनी अधिक कृपादृष्टि प्रदर्शित की कि उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। तदुपरान्त वह किले से नीचे उतरा और चाम्पानीर की ओर रवाना हुआ। जब एमादुल मुल्क सार के हौज के समीप पहुँचा तो सेना की पंक्तियों को सुव्यवस्थित करके रवाना हुआ। यहाँ तक कि महमदाबाद पहुँच कर वहाँ पड़ाव किया।

जब बहादुर ने सुना कि हुमायूँ निकट पहुँच चुका है तो उसने इख़्तियार ख़ा को कुछ परामर्श दिये और किले से नीचे आया। महमदाबाद नगर में आग लगा दी और जरीदा[१] कम्बाया की ओर चल दिया। अपने अन्तःपुर, बहुमूल्य वस्तुएँ एवं ख़ज़ाना अब्दुल अज़ीज़ आसफ़ ख़ा के सुपुर्द कर दिया और उसको आदेश दिया कि यह सब लेकर दीव पहुँच जाय।

इस प्रकार सुल्तान बहादुर के प्रस्थान के उपरान्त ही आसफ़ ख़ा भी निकल पड़ा। आसफ़ ख़ा ने अपने अन्तःपुर एवं सम्बन्धियों को अपने वकील सिराजुद्दीन उमर बिन कमरुद्दीन नहरवाली के सुपुर्द कर दिया। इस प्रकार वह भी आसफ़ ख़ा के प्रस्थान करने के दूसरे दिन अपने सम्बन्धियों के साथ चल पड़ा। मार्ग में सरखीज एवं दूल्का के मध्य में हलीम ख़ा, उसका भाई उससे मिल गया। बहादुर कम्बाया पहुँच गया। कम्बाया के तट पर उनकी १०० नौकाएँ थीं जिनमें युद्ध की आवश्यक सामग्री भी थी जो हर समय फ़िरंगियों से युद्ध के काम में आती थी।

बहादुर ने इन सब नौकाओं को जला डालने का आदेश दिया और दीव की ओर रवाना हो गया। जब वह दीव के समीप पहुँचा तो ख़्वाजा सफ़र सलमानी उसके पास आया। वह उस समय

१ छोटी सी सेना।

रूमी ख़ा का वकील था। ख्वाजा ने बहादुर के रिकाव का चुम्बन किया और रूमी ख़ा से पृथक् होने का आश्वासन दिलाया और दीव तक उसके साथ रहा। तदुपरान्त उसने तोपख़ाना एवं प्रतिरक्षा की जो सामग्री दीव में थी उसकी सूचना दी। उसे अपने साथ लेकर उन स्थानों को दिखलाया जहाँ से शत्रुओं से रक्षा हो सकती थी। उन स्थानों को भी दिखलाया जिनके द्वारा शत्रुओं के मुक़ाबले में अधिक शक्ति प्राप्त होने की सम्भावना थी।

हुमायूँ जब महमदाबाद पहुँचा तो उसने देखा कि नगर का एक भाग जल रहा है। उसने उसके बुझाने का आदेश दे दिया। जब आग बुझाई जा चुकी तो उसने वहाँ हिन्दू बेग तथा अपने (२४४) अधिकांश अमीरों एवं सेना को छोड़ दिया और अपने साथ एक विशेष सेना लेकर बहादुर का पीछा करने के उद्देश्य से कम्बाया की ओर प्रस्थान कर दिया।

बहादुर दीव की ओर रवाना हो चुका था। सैनिकों ने उसका पीछा किया किन्तु जब वे लोग बहादुर को न पा सके तो वापिस लौट आये।

जब हुमायूँ कम्बाया की नदी के एक ओर पहुँचा और वहाँ ठहरने के उपरान्त कम्बाया वालों को क्षमा प्रदान की तो कम्बाया में बहादुर के उच्चाधिकारियों में से उसके कुछ हितैषी भी उपस्थित थे अर्थात् मलिक अहमद लाद एव रुकन दाद। जब इन दोनों को हुमायूँ की सूचना मिली तो इन दोनों आदमियों ने हुमायूँ के ख़ेमे पर रात्रि में छापा मारने का संकल्प किया।

कम्बाया से ७ फ़रसख की दूरी पर एक नदी थी जिसका प्रसिद्ध नाम महेन्द्री है। उसका जल समुद्र में गिरता था- उसके तट पर पानी के कारण तालाब, खडहर, जगल एवं कठिन घाटियाँ हो गई थी जिनमें से होकर यात्रा बडी कठिन थी। प्राचीन काल से इन घाटियों में मनुष्यों से मिलती जुलती एक कौम रहती है जिनको कोली एवं भील[1] कहा जाता है। वे उस क्षेत्र में बडी अधिक संख्या में आबाद थे। वे लोग वस्त्र न धारण करते थे और नगे सिर पैर रहते थे किन्तु बडे परिश्रमी, सशस्त्र एव अपने बादशाह के आज्ञाकारी थे।

जब मलिक अहमद ने इन लोगों से किसी एक रात्रि में छापा मारने के लिये निश्चय किया तो यह लोग तैयार हो गये। किसी प्रकार एक वृद्धा को इस विषय में सूचना प्राप्त हो गई। उस स्त्री का मामूर[2] नामक एक पुत्र मुग़लों के पास में था। सक्षेप में, यह स्त्री हुमायूँ के ख़ेमे के पास गई और कहा कि "मैं एक समाचार लाई हूँ जिसका उल्लेख हुमायूँ के अतिरिक्त किसी अन्य से न करूँगी। कोई व्यक्ति मुझको हुमायूँ तक पहुँचा सकता है?" अतः जब हुमायूँ ने स्त्री को उपस्थित होने का आदेश दिया तो उसने रात्रि के छापे की योजना का हुमायूँ से उल्लेख किया। हुमायूँ ने उस स्त्री से पूछा कि, "तुम कहाँ से आई हो?" उसने कहा कि "मैं कम्बाया की रहने वाली हूँ।" अब हुमायूँ ने वृद्धा से कहा कि, "जिसने तुम्हारी भूमि को रौंदकर उसका अपहरण कर लिया है और वहाँ के उच्च स्थानों को विध्वस कर दिया हो तथा सम्मानित लोगों को अपमानित कर दिया हो तो मैं कैसे समझूँ कि तू वहाँ की निवासी होते हुए भी मेरे हित में यह समाचार मुझे पहुचायेगी?"

१ कोल एवं भील।
२ इसे 'मन्सूर' भी पढ़ा जा सकता है।

वृद्धा ने उत्तर दिया कि, "नहीं, ऐसा ही है। प्रत्येक वस्तु नश्वर है। मेरे पुत्र को इस समाचार के कारण बन्दी बना लिया जाय, यदि यह समाचार सच निकले तो मेरा पुत्र मुक्त कर दिया जाय और उसको बन्दीगृह से छुड़ा कर दे दिया जाय, मेरे लिये यही इनाम होगा।" हुमायूं ने स्वीकार कर लिया। जब आधी रात्रि व्यतीत हो गई तो हुमायूं अपने सहायकों सहित एक स्थान पर जाकर छिप गया। वहां से उसने देखा कि कुछ लोग आये और उसके ख़ेमे में घुस गये किन्तु वहां किसी को न पाया। जो धन-सम्पत्ति एवं असबाब उन्हें मिला, उन्हें खूब लूटा, यहां तक कि पुस्तकों को भी नहीं छोड़ा। इस प्रकार एक पुस्तक, जिसका नाम तीमूर नामा था और जिसकी रचना मौलाना हातिफी ने की थी और जिसे उस्ताद सुल्तान अली ने नकल किया था और उस्ताद बेहज़ाद ने चित्र बनाये थे, को उन लोगों ने ले लिया। जब हुमायूं की सेना उन लुटेरों की ओर अग्रसर हुई तो यह लोग भाग गये। जब हुमायूं अपने ख़ेमे में वापस हुआ तो उसने अपने उत्तम ग्रंथों के लूट लिये जाने पर बड़ा खेद प्रकट किया। तदुपरान्त वह वृद्धा जिसने यह सूचना दी थी, हुमायूं के पास आई। हुमायूं ने उसके पुत्र की मुक्ति का आदेश दे दिया और अपनी सेना वालों से कहा कि, "वे कम्बायत को लूट लें।" इस प्रकार सेना वाले तीन दिन तक कम्बायत को लूटते रहे।

फिर हुमायूं चाम्पानीर की ओर रवाना हुआ और चार मास तक उसका अवरोध किये रहा। (२४५) अकबरनामे के लेखक ने लिखा है कि किले की दीवार में नीचे से ऊपर तक लोहे के खूंटे गाड़कर उससे सीढ़ी का काम लिया गया और इस उपाय से किले को विजय कर लिया गया। इस बात की कल्पना तो नहीं हो सकती, किन्तु जहां तक सम्भावना का सम्बन्ध है इसे असम्भव भी नहीं कहा जा सकता। यदि हम प्रताप के महत्व को स्वीकार कर ले तो यह एक ऐसा कार्य है जिसकी कल्पना नहीं हो सकती और वह बड़े से बड़े वीर को पिघला एवं शक्तिहीन बना देगा। प्रताप ही के कारण सौभाग्यशाली जो चाहता है, वह कर डालता है।

फिर हुमायूं ने किले वालों को क्षमा प्रदान की। इख्तियार ख़ां हुमायूं से मिला। जिस समय हुमायूं उसे देखता अथवा उसकी बातें सुनता तो वह उसकी प्रशंसा किया करता था, वह उससे स्नेह करने लगा और उसे अपना विश्वासपात्र बना लिया। हुमायूं ने इख्तियार ख़ां को अपने समस्त दरबारियों पर प्राथमिकता दे दी और सल्तनत के महत्वपूर्ण कार्यों में उससे परामर्श करने लगा। जो कुछ वह कहता वह उसी के अनुसार आचरण करता। वह अधिकांश इख्तियार ख़ां से विभिन्न ज्ञान-विज्ञान के विषय में वाद-विवाद किया करता, चाहे वे अक़ली[1] ज्ञान हों अथवा नक़ली[2]। उसने गणित, ज्योतिष, साहित्य गद्य तथा पद्य हर विषय में उसकी परीक्षा ली और उसे बहुत बड़ा विद्वान पाया। इसके कारण हुमायूं की दृष्टि में वह बड़ा प्रतिष्ठित हो गया और वह हृदय से उसका सम्मान करने लगा।

(२४६) मन्दू पर २२ शव्वाल ९४१ हि० (२४ अप्रैल १५३५ ई०) में विजय प्राप्त हुई। मन्दू[3] का नाम हिन्दुस्तान में मन्दूर[4] प्रसिद्ध है अथवा केवल र[5] अधिक है। . . .

१ तर्क-वितर्क पर आधारित, दर्शन शास्त्र इत्यादि।
२ कथन पर आधारित, कुरान, हदीस इत्यादि।
३ مندو
४ ماندور
५ ر

(२४९) ९४१ हि० में बहादुर अरावे से निकलकर मन्दू पहुँचा। उस समय मीर्जा मुहम्मद जमान ने उससे इस बात की आज्ञा ले ली कि वह देहली के आसपास अशान्ति फैलाये ताकि हुमायूँ उसके कारण गुजरात छोड़कर देहली की ओर रवाना हो जाय। इस प्रकार बहादुर ने उसे तथा उसके साथ जो सेना थी उसको देहली के आसपास अशान्ति फैलाने की अनुमति दे दी। इसी प्रकार मल्लू खाँ एवं मन्दू वालों से भी उनके मित्रों ने अशान्ति फैलाने की अनुमति चाही। यह लोग कम्बाया तथा बहादुर के साथ रह चुके थे। इस प्रकार बहादुर ने उन लोगों को भी मन्दू के आस पास अशान्ति फैलाने की अनुमति दे दी।

मुहम्मद जमान की पताका के नीचे जब बहुत से लोग एकत्र हो गये तो उसने सिंध एवं सिंध के आस पास की ओर प्रस्थान किया। शाह हुसैन बिन्द शाह बेग अरगून को, जो हुमायूँ की ओर से उसकी शरण में था पत्र लिखा। शाह हुसैन ने उत्तर दिया कि, सिंध बड़ा ही कठिन एवं छोटा स्थान है। उसमें कोई सामर्थ्य नहीं। लाहौर निःसन्देह बड़ा ही विस्तृत स्थान है। उसमें धन सम्पत्ति भी है और आदमी भी। इसके अतिरिक्त जंगल भी खाली है अतः उसकी ओर प्रस्थान करना अधिक कुशलता एवं दृढ़ता का कारण होगा।" इस परामर्श के अनुसार मुहम्मद जमान लाहौर की ओर रवाना हो गया और लाहौर के आसपास धावे मारकर पर्याप्त संख्या में धन-सम्पत्ति एवं जन-समूह एकत्र कर लिये।

क्योंकि तहमास्प किज़िलबाश के पुत्र साम मीर्जा ने कन्धार पहुँचकर उपद्रव मचा रखा था अतः मीर्जा कामरान कन्धार की ओर गया हुआ था। जब उसने लाहौर की दुर्घटना के समाचार सुने तो अपने एक विश्वासपात्र को कन्धार में छोड़कर लाहौर की ओर वापस हुआ। जब मीर्जा कामरान लाहौर के समीप पहुँचा और मुहम्मद जमान को ज्ञात हुआ तो वह लाहौर छोड़कर गुजरात की ओर चल पड़ा और बहादुर के पास आ गया। तदुपरान्त जब हुमायूँ को ज्ञात हुआ तो उसने भी मन्दू की ओर प्रस्थान किया। उपर्युक्त घटना भी मन्दू की ओर उसकी वापसी का कारण बनी।

इसके अतिरिक्त जब हुमायूँ चाम्पानीर में ठहरा हुआ था तो महन्द्री नदी तक का राज्य उसके अधिकार में था। नदी के उस पार का क्षेत्र न उसके अधिकार में था और न बहादुर के। वहाँ की प्रजा ने बहादुर के पास मुकद्दम भेजे और यह सूचना दी कि "राजस्व वसूल करने का समय आ गया है। यदि आपके राज्य का कोई आमिल वहाँ आ जाय तो उसे राजस्व भी प्रदान कर दिया जाय और हमें उस क्षेत्र का भी ज्ञान हो जाय अन्यथा समय निकल जाने पर राजस्व नष्ट हो जायेगा।"

अब बहादुर अपने आस पास के लोगों की ओर आकृष्ट हुआ और आशा करने लगा कि उनमें से कोई व्यक्ति राजस्व वसूल करने के लिये तैयार हो जाय किन्तु किसी ने भी उसे कोई उत्तर न दिया।

एमादुल मुल्क मलिक जियु अस्सुल्तानी ने निवेदन किया कि, "मैं इस सेवा को स्वीकार करूँगा किन्तु इसकी शर्त यह है कि मुझे आवश्यकतानुसार धन व्यय करने का अधिकार प्रदान किया जाय। लोगों को एकत्र करने में जो धन व्यय हो, उसका हिसाब मुझसे न माँगा जाय। जो कुछ (२५०) धन इस व्यय उपरान्त बचेगा वह सल्तनत के खजाने में निःसन्देह भेज दिया जायेगा।"

यह सुनकर सुल्तान ने उस शर्त को स्वीकार कर लिया और अपने हस्ताक्षर एवं मुहर का एक फरमान एमादुल मुल्क को दे दिया।

यह फरमान लेकर एमादुल मुल्क दीव से १०० अश्वारोहियों सहित अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ। मार्ग में जो सेना वाले मिले, उन्हें अपने साथ ले लिया। सेना के जिस सरदार ने उसमे भेंट की उसमे राजस्व वसूल करने के लिये उपर्युक्त शर्तो के साथ एक फरमान दिया ताकि वह राजस्व वसूल करे। संक्षेप में, राजस्व वसूल करके एवं आदमियों को एकत्र करके जब वह अहमदाबाद पहुँचा तो उसके साथ १०,००० अश्वारोही एकत्र हो गये। प्रत्येक अश्वारोही के पास दो घोड़े, और हर घोड़े पर एक लाख गुजराती तन्के रखे हुए थे। शर्त अनुसार उसने सेना एकत्र की और खूब धन व्यय किया।

जूनाकर[1] का हाकिम मुजाहिद खाँ दस हजार अश्वारोहियों सहित अहमदाबाद में एमादुल मुल्क से मिल गया। इसी प्रकार धनदंका का हाकिम आलम खाँ लोदी एमादुल मुल्क से अहमदाबाद में आकर मिला। बड़े कम समय में तीस हजार अश्वारोही एकत्र हो गये। उन लोगों को राजस्व की वसूली के नियमों के विरुद्ध अधिक संख्या में धन दिया गया जिसके फलस्वरूप उनके उत्साह एवं वीरता में और भी वृद्धि हो गई और वे युद्ध के लिये उद्यत हो गये।

१ सफर ९४२ हि० (१ अगस्त १५३५ ई०) को जब हुमायूँ चाम्पानीर से निश्चिन्त हुआ तो उसे इस घटना की सूचना मिली। इतिहास का ज्ञान रखने वाले कुछ लोगों का मत है कि ९४२ हि० की सफर का प्रथम सप्ताह था। जब वह चाम्पानीर की ओर से निश्चिन्त हुआ और उसको इस घटना के समाचार प्राप्त हुए तो वह अहमदाबाद की ओर रवाना हुआ और महेन्द्री नदी तट पर पहुँच कर ठहरा। जब एमादुल मुल्क ने यह सुना कि हुमायूँ ने महेन्द्री नदी पर पड़ाव डाल दिया है तो वह उससे युद्ध करने के लिये अहमदाबाद से निकला। हुमायूँ जब अपने स्थान से एक मंजिल बढ़ता था तो एक मंजिल एमादुलमुल्क भी उसकी ओर आगे बढ़ता था, यहाँ तक कि दोनों सेनाओं में युद्ध प्रारम्भ हो गया। हुमायूँ की सेना का सरदार मीर्ज़ा अस्करी था। यहाँ तक कि घोर युद्ध उपरान्त मीर्ज़ा अस्करी की सेना के अग्र भाग को पराजय हुई। उसी समय यादगार नासिर मीर्ज़ा, कासिम हुसेन खाँ एवं हिन्दू बेग इत्यादि कुमक लेकर पहुँच गये। उन लोगों ने एमादुल मुल्क की सेना पर भीषण आक्रमण किया।

समस्त सेना युद्ध के नशे में चूर अस्करी मीर्ज़ा की ओर अग्रसर हुई। बावजूद इसके कि वह युद्ध से थक चुका था फिर भी अपने साथियों के भरोसे पर युद्ध के केन्द्र पर ठहरा रहा। युद्ध हो ही रहा था कि हुमायूँ भी पहुँच गया। अब और भी घोर युद्ध होने लगा। यहाँ तक कि एमादुल मुल्क में युद्ध का सामर्थ्य न रहा और उसने अपने सहायकों सहित रणक्षेत्र से अपनी लगाम मोड़ दी और साथियों सहित एक ओर हो गया। इसी प्रकार आलम खाँ एवं मुजाहिद खाँ भी रणक्षेत्र से हट गये। किन्तु हुमायूँ रणक्षेत्र में दृढ़ रहा और चारों ओर उसने निगाह दौड़ाई तो ज्ञात हुआ कि ऐसे लोगों की संख्या, जिनकी हत्या हुई, एक अथवा दो हजार से अधिक होगी।

१ जूनागढ़।

चारो ओर देखने के उपरान्त उसने खुदावन्द खा लाडजी से पूँछा कि "यह युद्ध क्या अतिम युद्ध था या इसके उपरान्त और भी युद्ध होना है।" खुदावन्द खा ने उत्तर दिया "यदि युद्ध में काला और सफेद हुआ अर्थात् एमादुल मुल्क तो यह अतिम युद्ध है अन्यथा दूसरे युद्ध की भी (२५१) आशका[1] है, कारण कि एमादुल मुल्क किसी अन्य अवसर पर युद्ध के उपाय करेगा।" हुमायूँ ने जब उपर्युक्त उत्तर सुना तो एमादुल मुल्क को युद्ध हेतु ललकारा किन्तु रणक्षेत्र मे उस बालक के अतिरिक्त, जो बालिग हो चुका था, कोई न आया। यह युद्ध नरियाद एव महमूदाबाद के मध्य में हुआ।

फिर हुमायूँ ने मीर्जा अस्करी से कहा कि, "तुम अहमदाबाद की ओर बढो। तदुपरान्त मैं भी आऊँगा।" फिर हुमायूँ ने अपने समस्त अमीरो के साथ सरखेज के समीप पडाव डाला। वहाँ तरदी बेग के अतिरिक्त, जिसे हुमायूँ ने चाम्पानीर का अमीर नियुक्त कर दिया था, सभी लोग उपस्थित थे।

इसी बीच में उसने दीव की ओर प्रस्थान करने का सकल्प कर लिया किन्तु उसे हिन्दुस्तान के विषय में समाचार प्राप्त हुए कि शेर शाह सूर ने बगाले के आसपास, मुहम्मद जमान ने लाहौर में और मल्लू खा ने मन्दू के आसपास विद्रोह कर दिया है, यह समाचार सुनकर हुमायूँ अपने स्थान पर परामर्श हेतु कुछ दिन तक ठहरा रहा। उसको दीव के सम्बन्ध मे निरन्तर समाचार भी मिलते रहते थे, अत वह बहादुर के विषय में सोच विचार में व्यस्त रहा।

अब बहादुर ने कुआ[2] के हाकिम बेजरी को लिखा कि वह नौकाए लेकर उसके पास आये। जब हुमायूँ चाम्पानीर में ठहरा हुआ था तो बेजरी उस समय पर्याप्त मात्रा मे सामान लेकर दीव की ओर रवाना हुआ और तर्क नामक प्रसिद्ध बन्दरगाह में लगर डाला। क्योंकि बहादुर ने हुमायूँ से युद्ध का सकल्प कर लिया था अत उसने किले वालो से भी युद्ध किया। अब बहादुर ने दीव के किले को बन्द किया और उसको तोपखाने इत्यादि से दृढ बनाया। समुद्र के एक भाग पर नौकायें डाल दीं ताकि समुद्र तट सुरक्षित हो जाय और यदि कोई बुरा अवसर आ जाय तो वह वहाँ से भाग भी सके, कारण कि उसे दीव के सम्बन्ध में रूमी खा की ओर से खतरा था। जिस समय बेजरी पहुँचा तो बहादुर बडा प्रसन्न हुआ।

(२५६) मैंने महमूद अल्लारी स, जिसकी उपाधि नुसरत खा थी और जो बहादुर की सेवा में हाजिब था, सुना है कि, "जब यह बात प्रसिद्ध हो गई कि हुमायूँ ने दीव की ओर प्रस्थान करने का सकल्प कर लिया है तो बहादुर ने मुझे रूमी खा के पास भेजा।" अत मैंने बहादुर का सदेश रूमी खा तक पहुँचाया और उससे कहा कि 'कितने आश्चर्य की बात है कि बहादुर आवश्यकता से अधिक तुम पर विश्वास करता था और उसे तुम्हारे ऊपर कितना भरोसा था किन्तु तुमने दुष्टता प्रदर्शित की एव अपहरण किया।' मैंने बहादुर के कोध के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा। यहाँ तक कि रूमी खा अत्यधिक लज्जित हुआ। इसके उपरान्त मैंने उससे कहा कि, "यदि वास्तव मे तुम्ही

१ अर्थात् एमादुल मुल्क ने युद्ध किया तो यह अन्तिम युद्ध होगा अन्यथा दूसरे युद्ध की भी आशका है।
२ गोआ।

हुमायूँ के दीव में आने का कारण हो तो अब कोई ऐसा उपाय करो जिसके कारण हुमायूँ दीव आने के विचार त्याग दे। सम्भवत तुम्हारे झुकने से मुग बहादुर को उन्नति प्रदान करे और बहादुर तुम पर विश्वास करे। वह तुम से अधिक शक्तिशाली है। तुम्हारा सम्मान उसके बिना बलन्द नहीं हो सकता। तुमने ऐसा कार्य किया है कि आज उसे तुम्हारे पास पत्र भेजने की आवश्यकता (२५७) हुई। यदि तुम हुमायूँ के इस सकल्प का कारण नही हो तो उसको उसकी राय पर छोड दो।"

रावी कहता है कि जब रूमी खा ने यह बातें सुनी तो उसकी आँखों से आँसू बहने लगे और वह क्षमा माँगने लगा। उसने यह शब्द कहे "नि सन्देह मैंने यह कार्य शैतान के कारण किया। वास्तव में शैतान खुल्लम खुल्ला मार्ग भ्रष्ट करने वाला शत्रु है।" रावी का कथन है कि फिर रूमी खा ने उसे बिदा किया और यह वचन दिया कि वह किसी न किसी प्रकार हुमायूँ को रोक देगा। इस प्रकार इतिहासकार कहता है कि हुमायूँ जिस स्थान पर ठहरा हुआ था उसको वहाँ की जलवायु के सम्बन्ध में शिकायत थी जिसके कारण उसका स्वास्थ्य ठीक नही रहता था। अब रूमी खा का अपने वचनानुसार बात बनाने का अच्छा अवसर मिल गया। उसने हुमायूँ से कहा कि, "समुद्र यहाँ से निकट है जिसके कारण यहाँ विषैले वृक्ष हो गये हैं तथा जलवायु दूषित हो गई है। जब तक आप यहाँ रहेंगे, स्वस्थ होना कठिन है। अत जब तक आप स्वस्थ न हो जाय उस समय तक के लिये आप यहाँ से प्रस्थान कर दे।" हुमायूँ ने यह परामर्श सुनते ही उसे स्वीकार कर लिया। इसी बीच मे हिन्दुस्तान से उन दुघटनाओ के, जो वहाँ घट रही थी, समाचार प्राप्त हुए अत हुमायूँ ने यह सुनते ही अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया।

उसने मीर्जा अस्करी, मीर्जा हिन्दाल एव मीर्जा हिन्दू बेग को अहमदाबाद मे, नहर वाला पटन मे यादगार नासिर मार्जा को, भरौज, सूरत एव नौसारी में कासिम हुसेन खा को और चाम्पानीर में तर्दी बेग को नियुक्त कर दिया। वह रूमी खा को अपने साथ लेकर सूरत तथा बुरहानपुर होता हुआ मन्दू पहुँचा। वहाँ की जलवायु उसके अनुकूल सिद्ध हुई अत वह वही ठहर गया।

जब हुमायूँ मन्दू पहुँचा तो मुल्ला कादिर शाह चन्देरी और मन्दू के अमीर भी आसपास से निकले। लाहौर से मुहम्मद जमान खा, बहादुर के पास वापस आ गया कारण कि वहाँ कामरान मीर्जा पहुँच चुका था। किन्तु शेर खा सूरी ने चुनार पर अधिकार जमा लिया और वहाँ किले को दृढ बना लिया और अपने पुत्र कुतुब खा को वहाँ छोडकर स्वय बगाले पहुँचा और उसे विजय कर लिया।

हुमायूँ को गुजरात से निकल कर मन्दू पहुँचने में कई मास लग गये। ९४२ हि० (१५३५-३६ ई०) में नूरुद्दीन खाने जहाँ शीराजी और सफर सलमानी, जिसकी उपाधि खुदावन्द खा थी, इन दोनों ने नौसारी और उसके आसपास के स्थानों को अपने अधिकार में कर लिया। नौसारी में अब्दुल्लाह खा, कासिम हुसेन के सम्बन्धी ने पराजित होकर भरौंच की ओर प्रस्थान किया। तदुपरान्त सूरत भी खाने जहाँ तथा सफर सलमानी के अधिकार में आ गया। तत्पश्चात् मार्ग से खाने जहाँ शीराजी और जल मार्ग से खुदावन्द खा भरौंच गये। कासिम हुसेन खा बडा व्याकुल हुआ और अब्दुल्लाह खा तथा कासिम हुसेन भरौंच से चाम्पानीर की ओर भाग निकले। तदुपरान्त भरौंच भी खाने जहाँ तथा खुदावन्द खा के अधिकार में आ गया। फिर सियासत खा कम्बाया का अधिकारी हो गया। बहादुर के समस्त अधिकारी अपने-अपने राज्य में

फैल गये। मुगुलो के अधिकारी अहमदाबाद की ओर भाग गये। जो लोग अहमदाबाद मे पहुँचे उनमें से एक यादगार नासिर मीर्ज़ा भी था। उसने नहरवाला पटन में एक अमीर को अपना उत्तराधिकारी बनाया जिसका नाम गज़न्फ़र था। तदुपरान्त तीन सौ अश्वारोहियों को पटन से लेकर दीव गया। उसने बहादुर की आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली और बहुत से मुगुलो को मिलाकर बहादुर को अपना सहायक बना लिया। तदुपरान्त इन सब को अहमदाबाद जाने के लिये उभारा।

दयार ख़ा तथा मुहाफ़िज़ ख़ा रायसेन प्रदेश में थे। इन दोनों ने वहाँ से निकलकर दीव की ओर प्रस्थान करने का सकल्प किया। जब यह दोनो पटन के समीप पहुँचे तो इनको समाचार प्राप्त हुए कि पटन ख़ाली है, अत इन दोनों ने अपनी लगाम को पटन की ओर मोड दिया और पटन पर दोनों ने प्रभुत्व प्राप्त करके अपने अधिकार में ले लिया। तदुपरान्त इन दोनों ने सुल्तान को पत्र लिखा कि अहमदाबाद तथा चाम्पानीर के अतिरिक्त समस्त प्रदेश अधिकार में आ गये हैं। उन्होंने यह भी लिखा कि अधिक सख्या में सेना एकत्र करके अहमदाबाद की ओर प्रस्थान करना चाहिए। इस प्रकार उस समय समस्त सेना को, जो छिन भिन हो गई थी, एक स्थान पर एकत्र किया गया और विभिन्न स्थानो के निवासियों को अपनी पताका के नीचे करके वे अहमदाबाद की ओर रवाना हुए। मार्ग में वह लोग भी आकर मिल गये जिन्हे पत्र लिखा जा चुका था अत जब यह लोग सरखेज पहुँचे तो वहाँ के कुतुब के मकबरे के दर्शन किये और बहुत कुछ दान-पुण्य किया।

मीर्ज़ा अस्करी तथा उसके सहायकों ने असावल नामक स्थान पर ठहर कर युद्ध करना चाहा किन्तु बाद में वहाँ से चाम्पानीर की ओर सवार होकर रवाना हो गये। अब बहादुर ने इन लोगों का पीछा किया और मशौरी की ओर से सहवर को पार किया। बहादुर की सेना के अग्र भाग में प्रतिष्ठित अमीर सैयिद मुबारक बुख़ारी भी था। इस प्रकार आसपास की सेनाएँ महमूदाबाद आकर एकत्र हो गयीं और घोर युद्ध हुआ। यह युद्ध उस स्थान पर हुआ जहाँ बुर्ज बावरी बनाया गया। इस समय बहादुर को विजय प्राप्त हुई तथा उसने अपने घोडे से उतर कर ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। तदुपरान्त उसने उनका पीछा किया और समस्त सेना भी उसके साथ रवाना हुई। यहाँ तक कि ये लोग महेन्द्री नदी तक पहुँच गये। उस समय नदी में बाढ आई हुई थी अत बहुत से लोग नदी में डूब गये।

इस ओर चाम्पानीर मे समस्त मुगुल सरदार एकत्र हुए। तरदी बेग क़िले से उतर कर नीचे आया और उन लोगों से भेंट की। उसके बाद उन सब ने तरदी बेग से कहा कि "जो कुछ हमारे पास था वह सब समाप्त हो गया और सेना छिन्न भिन्न हो गई। हमें कुछ ख़ज़ाना दो ताकि हम उस ओर से फिर सेना एकत्र करें तथा बहादुर से युद्ध करें।" यह सुनकर तरदी बेग क़िले के भीतर चला गया। वहाँ किले में उसको किसी ने सूचना दी कि "इन लोगों ने तुमको बन्दी बनाने का सकल्प कर लिया है। इसके अतिरिक्त उनका यह भी विचार है कि किले में जो कुछ तुम्हारे पास है उसे तुमसे ले ले। वे लोग हुमायूँ के विरुद्ध युद्ध करने के लिये आगरा जाने का सकल्प कर चुके हैं।" यह सुनकर तरदी बेग कुछ देर के लिये ठहर गया। फिर उन लोगों को उसने सूचना दी कि "ख़ज़ाना ख़त्म हो चुका है अत तुमको कहाँ से दिया जाय।" जब तरदी बेग ने यह कहा तो उन लोगों ने परामर्श हेतु उसको किले से नीचे बुलवाया किन्तु उसने स्वीकार न किया। अब इन लोगों को बहादुर के विषय में समाचार प्राप्त हुए कि उसने महेन्द्री नदी को पार कर लिया है। यह सुनकर यह लोग घोडों पर सवार होकर आगरे की ओर चल खडे हुए।

उनके जाने के बाद तरदी बेग किले से नीचे उतरा और मन्दू की ओर चल दिया। उसने हुमायूँ को इन बातों को, जिनका उसके विरुद्ध लोगों ने सकल्प कर लिया था, सूचना दी और बहादुर के लिये उसकी राज्य सम्बन्धी अत्यधिक प्रशसा की।

तदुपरान्त बहादुर ने अपने अमीरों एव मलिकों से उस विषय में क्षमा-याचना की जो उसने रूमी खा के परामर्श से किया था और उन लोगों के परामर्श को स्वीकार न किया था अपितु उसका विरोध किया था। तदुपरान्त बहादुर ने अपने वजीरों को प्रोत्साहन देते हुए उन्हे वचन दिया कि उन लोगों को उनके परिश्रम के फलस्वरूप बडे उत्तम प्रदेश प्रदान किये जायेंगे। बहादुर फिरगियों के अतिरिक्त सभी बातों से सतुष्ट हो गया।

उसने अराबे से मुग़ुलों के मुकाबले में २१ शव्वाल ९४१ हि० की रात्रि में पलायन किया था और मुग़ुलों ने गुजरात से ३ जिलहिज्जा ९४२ हि० को प्रस्थान किया। इन घटनाओं में १३ मास तथा १३ दिन व्यतीत हुए।

तारीखे सिंध

अथवा

तारीखे मासूमी

लेखक—सैयिद मुहम्मद मासूम बक्करी

(प्रकाशन बम्बई १९३८ ई०)

हजरत जन्नत आशियानी मुहम्मद हुमायूं पादशाह की सेना का गुजरात की ओर प्रस्थान और मीर्ज़ा शाह हसन का उनके आदेशानुसार उस विलायत की ओर रवाना होना

(१६२) ९४२ हि० (१५३५-३६ ई०) मे हजरत हुमायूं पादशाह देहली से एक बहुत बडी सेना लेकर चित्तौड विजय हेतु रवाना हुए और वहां के समीप सम्मानित शिविर लगवा दिये। सुल्तान बहादुर गुजराती ने एक प्रार्थनापत्र चित्तौड के राजा के सम्बन्ध मे लिखते हुए उसे मुक्त करने की प्रार्थना की और उस पत्र के अन्त में कुछ कठोर वाक्य लिखे। हजरत पादशाह उस पत्र के कारण बडे रुष्ट हुये और उन्होंने सुल्तान महमूद बहादुर से युद्ध करने के लिये अपने ससार का चक्कर लगाने वाले घोडे की लगाम गुजरात की ओर मोडी और निरन्तर यात्रा करते हुए गुजरात के क्षेत्र में पहुँच गये। विजयी सेनाए जिस विलायत में पहुँचती थी उसे विध्वस एव नष्ट भ्रष्ट कर देती थी और शत्रुओं मे जिस किसी को देखती थी उसकी हत्या कर देती थी। सुल्तान बहादुर अन्त में बन्दर[1] की ओर चला गया। सक्षेप में, प्रस्थान के समय उन्होंने मीर्जा शाह हुसेन[2] के नाम एक आदेश भेजा था जिसमे लिखा था कि "सगठन के नियमो को देखते हुए तुम उस ओर से गुजरात पर (१६३) आक्रमण करो। पटन मे पहुँचने के उपरान्त ठहर जाओ और प्रार्थना पत्र भेजो। जो कुछ आदेश हो, उसका पालन करो।"

मीर्ज़ा शाह हुसेन ने बहुत बडी सेना लेकर नसरपुर से प्रस्थान किया। रादनपुर के मार्ग से पटन पहुचा। ख़िज्र खा ने, जो सुल्तान बहादुर की ओर से पटन के किले में था, किले को दृढ बना लिया। पटन के आसपास के मवेशियो को दूर के स्थानो पर भेज दिया। सुल्तान महमूद खा[3]

१ द्वियु।

२ इसी ग्रन्थ में उसे शाह हसन तथा हुसेन दोनों तरह से लिखा गया है।

३ भक्कर का हाकिम।

पाँच सौ अश्वारोहियों को लेकर आगे बढा और उसने कुछ ग्रामों को नष्ट कर डाला तथा पटन से सात कोस पर पडाव किया। जान अली पेशकश को मीर्जा शाह हसन की सेवा में भेज दिया। जुनैद एव जूना जारीजा को सुल्तान महमूद खा ने पटन के किले के भीतर खिज्र खा के पास इस आशय से भेजा कि, "क्योंकि मीर्जा शाह हसन एक भारी सेना लेकर आ गया है अत तेरे लिये यह उचित होगा कि तू उनकी सेवा में उपस्थित होकर किला समर्पित कर दे और अपने परिवार सहित सुरक्षित जहाँ जी चाहे चला जा।" उसने उत्तर भेजा कि, "सुल्तान बहादुर कुशलतापूर्वक करनाल मे है। मुझे कौन सी आवश्यकता है कि मैं किले को सिंध के मुग़ुलों को प्रदान कर दूँ।" अन्त में जुनैद एव जूना ने खिज्र खा की माता के पास पहुचकर सुल्तान महमूद खा का सदेश भेजा और कहा कि, 'यह उचित नही ज्ञात होता कि हम लोग बिना उपहार एव पेशकश के सुल्तान महमूद खा के पास जायं।' खिज्र खा की माता ने पूँछा, 'तो फिर क्या उचित है?" उन्होने उत्तर दिया कि, "मीर्जा शाह हसन के आतिथ्य हेतु एक लाख फीरोजशाही तथा तीस हजार अन्य सुल्तान (महमूद खा) के लिये भेज दी जाय ताकि हम लश्कर को आगे बढायें।" सक्षेप मे एक लाख तीस हजार फीरोजशाही अपने विश्वासपात्रों के हाथ भेज दी। दूसरे दिन प्रात काल मीर्जा शाह हसन ने पहुँचकर तालपतन[1] मे पडाव किया। सुल्तान महमूद खा ने मीर्जा शाह हसन की सेवा में उपस्थित होकर आगे जाने की अनुमति चाही। मीर्जा शाह हसन ने कहा कि, 'सर्वप्रथम किसी को हज़रत (१६४) पादशाह की सेवा मे भेजकर हम अपने आगमन की सूचना दे दे। जहाँ हज़रत पादशाह का आदेश हो वहाँ जायें।" अब्दुल कुद्दूस को प्रार्थनापत्र सहित पादशाह की सेवा मे भेजा। इसी बीच में खिज्र खा के आदमियों ने पेशकश प्रस्तुत किया। मीर्जा शाह हसन १५ दिन तक पटन मे ठहरा रहा। सुल्तान महमूद ने महमूदाबाद तक पहुच कर गुजरातियो की धन-सम्पत्ति को लूट लिया और अपार धन सम्पत्ति एव वस्त्र अधिकार मे कर लिये।

इसी बीच मे मीर फर्रुख ने मीर्जा शाह हसन से निवेदन किया कि, "जैसे ही पादशाह का यह आदेश आ जायगा कि तू हमारे पास उपस्थित हो और शाही लश्कर मे ठहर तो वहाँ जाने के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय न रह जायगा। जब अरगून तथा तरखान चगताई अमीरों के साज व सामान का अवलोकन करेंगे और हज़रत पादशाह गुजरात के खजाने से अपने विजयी सैनिकों में धन का वितरण करेंगे तो आपके पास कौन सैनिक रह जायेगा। अधिकाश लोग पृथक् हो जायेंगे। उचित यही होगा कि हम लोग सिंध की ओर वापस चले जायें।" मीर्जा शाह हसन तथा अधिकाँश अमीर इस बात से सहमत हो गए और उन्होंने यह निश्चय करके मीर्जा कासिम बेग लार के हाथ हज़रत पादशाह की सेवा मे प्रार्थनापत्र भेजा कि, "मैं अपनी पूरी सेना लेकर आया हूँ। इस समय भक्कर तथा थत्ता के अमीरों के पास से प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुए है कि कलमतो, जनूई नामक समूहों एव जमीदारो ने सगठित होकर उस प्रदेश का नष्ट भ्रष्ट करना प्रारम्भ कर दिया है अत विवश होकर हम लोग वापस हो रहे हैं।" मीर्जा शाह हसन पादशाह के अहमदाबाद पहुँचने के २० दिन पूर्व लौट गया और ९४५ हि० के प्रारम्भ मे (१५३८-३९ ई०) में रादनपुर के मार्ग से थत्ता चला गया। लौटते समय उसने जारीजा तथा सूदा नामक समूहों को बड़े विचित्र रूप से नष्ट भ्रष्ट किया।

१ एक हस्तलिपि में 'ताल पत्न'।

उत्कृष्ट सम्मान वाले हज़रत पादशाह जन्नत आशियानी मुहम्मद हुमायूँ पादशाह का सिन्ध पहुँचना एवं मीर्ज़ा शाह हसन का विरोध

(१६५) ९४७ हि० (१५४० ई०) में हिन्दुस्तान के पूर्व में शेर खां अफगान ने, जिसका नाम फरीद था और जो हसन अफगान का पुत्र था, विद्रोह करके जमशेद सरीखे हुमायूँ पादशाह से युद्ध किया। दोनों ओर की सेनाओं में दो तीन बार चौसा के घाट पर युद्ध हुआ और अन्त में पादशाह पराजित हो गये और पादशाही लश्कर चौसा के पास से भागता हुआ जौनपुर पहुँचा और वहाँ से आगरा।

सक्षेप में, मीर्ज़ा शाह हसन ने ९४६ हि० (१५३९ ई०) में मीर अलीका अरगून को गुजरात एव बगाल की बधाई देने के लिए पादशाह हुमायूँ की सेवा में इससे पूर्व भेजा था। उसने मीर खुश मुहम्मद अरगून को भी कन्धार विजय एव अगज़ीवार खा की हत्या की बधाई देने के लिये मीर्ज़ा कामरान के पास भेजा। यह दोनों बडे ही कुशल सैनिक एव बुद्धिमान् थे। जब मीर अलीका पादशाह के दरबार में उपस्थित हुआ तो उसने पादशाह के ऐश्वर्य एव असावधानी से यह समझ लिया कि शीघ्र ही शत्रुओं की सेना विद्रोह कर देगी। मीर अलीका पादशाह की आज्ञा बिना शाही लश्कर से निकलकर शीघ्रातिशीघ्र मीर्ज़ा शाह हसन के पास पहुच गया। मीर्ज़ा उसके आगमन पर बडा चिन्तित हुआ। जब मीर अलीका मीर्ज़ा शाह हसन की भेंट द्वारा सम्मानित हुआ और मीर्ज़ा ने उससे सब हाल पूछा तो उसने कहा कि, 'मैंने पादशाह के प्रभुत्व को अत्यधिक बढा हुआ पाया। राज्य के उच्च पदाधिकारी एव प्रतिष्ठित लोग बडे असावधान थे। मैंने अपने सैनिक जीवन के अनुभव से समझ लिया है कि शीघ्र ही उनपर कोई विद्रोही प्रभुत्व प्राप्त कर लेगा और (१६६) उनके राज्य में विघ्न पड जायेगा। मैं इस आशय से आया हूँ कि आपको सचेत कर दूँ।" मीर्ज़ा शाह हसन ने अपने अमीरों को बुलवाकर उनकी गोष्ठी में परामर्श किया। इसी बीच में पादशाह की पराजय के समाचार प्राप्त हुए। सभी ने मीर अलीका की बुद्धिमत्ता की प्रशसा की और निश्चय किया कि उच्च से भक्खर तक नदी के दोनों ओर के स्थान नष्ट करके कृषि को बरबाद कर दिया जाय। जब पादशाही लश्कर की पराजय के समाचार निरन्तर प्राप्त हुए तो उस चारबाग में, जो कि बक्करलू नामक स्थान के समीप था, नाना प्रकार के भवनों एव किले की प्रतिरक्षा की सामग्री की व्यवस्था की गई। भक्खर से सिविस्तान तक, भक्खर के कस्बे, ग्राम तथा परगने नष्ट कर दिये गये। उन लोगों ने यह समझ लिया कि 'हज़रत पादशाह सिंध की ओर प्रस्थान करेंगे, कारण कि मीर्ज़ा कामरान तथा मीर्ज़ा अस्करी ने पारस्परिक सगठन त्याग दिया है, अत हज़रत पादशाह विवश होकर इसी ओर आयेंगे।'

जब १ रबी-उल-अव्वल ९४७ हि० (६ जुलाई १५४० ई०) को हज़रत पादशाह लाहौर पहुँचे तो समस्त भाई एव प्रतिष्ठित अमीर एकत्र हुये किन्तु सतर्क हो जाने के इतने साधनों तथा चेतावनियों के बावजूद यह लोग सचेत न हुए और निष्ठा हेतु कटिबद्ध न हो सके, यहाँ तक कि एक दिन ख्वाजा खावन्द महमूद, मीर अबुल बका तथा ख्वाजा अब्दुल हक एव राज्य के प्रतिष्ठित लोग एकत्र हुए और उन्होंने सगठन एव मेल के सम्बन्ध में एक प्रतिज्ञापत्र लिखा। समस्त प्रतिष्ठित लोग एव अधिकारीगण साक्षी बने फिर अपनी मोहर लगा दी। जब यह

प्रतिज्ञा पत्र प्रामाणिक रूप में तैयार हो गया तो परामर्श गोष्ठी आयोजित की गई। क्योंकि उनकी जबान हृदय का साथ न दे रही थी अत बात पूरी न हो सकी और गोष्ठी विसर्जित हो गई।

जमादी-उल-आखिर ९४७ हि० के अन्त (अक्तूबर १५४० ई०) को मुहम्मद हुमायूँ पादशाह, मुहम्मद कामरान मीर्ज़ा, मुहम्मद हिन्दाल मीर्ज़ा, मुहम्मद अस्करी मीर्ज़ा, यादगार नासिर मीर्ज़ा, मुहम्मद ज़मान मीर्ज़ा[1], नूरुद्दीन मुहम्मद मीर्ज़ा, प्रतिष्ठित अमीरों एव समस्त सैनिकों ने लाहौर नदी (१६७) पार की। शेर खा लाहौर के समीप पहुँच गया। अफ़ग़ान लोग मुग़लों को जहाँ भी पाते थे, उनके प्रति अत्याचार करके उनके परिवार एव धन सम्पत्ति पर अधिकार जमा लेते थे। इस कारण समस्त मुग़ल हुमायूँ की सेना में एकत्र होकर काबुल की ओर चल खड़े हुए। जब वे चनाब नदी पर पहुँचे तो मुहम्मद कामरान मीर्ज़ा एव मुहम्मद अस्करी मीर्ज़ा, ख्वाजा खावन्द महमूद एव ख्वाजा अब्दुल हक के साथ बिना आज्ञा काबुल की ओर चल दिये। पादशाह ने विवश होकर भीरा की ओर प्रस्थान किया। मुहम्मद सुल्तान मीर्ज़ा, उलुग मीर्ज़ा एव शाह मीर्ज़ा पृथक् होकर मीर्ज़ा कामरान से मिल गये। मुहम्मद हुमायूँ पादशाह ने भाइयों का यह विरोध देखकर १ रजब ९४७ हि० (१ नवम्बर १५४० ई०) को सिंध की ओर प्रस्थान किया और शाबान ९४७ हि० (दिसम्बर १५४० ई०) के अन्त में सम्मानित शिविर उच्च पहुँच गया।

क्योंकि बख्शू लगाह निकट था अत कृपायुक्त फरमान एव सम्मानित खिलअत बेग मुहम्मद बकावल एव किचिक बेग के हाथ उसके पास भेजे। उसे खाने जहाँ की उपाधि और पताका एव नक्कारा प्रदान किया गया। उसने नौका तथा अनाज भेजा किन्तु स्वय उपस्थित न हुआ। रमज़ान (जनवरी १५४१ ई०) के प्रारम्भ में उत्कृष्ट पताकाओं ने सिंध की ओर प्रस्थान किया। २८ रमज़ान[2] को लुहरी[3] नामक कस्बे में सम्मानित शिविर लगे। पादशाह ने स्वय बबरलू नामक चारबाग में, जो सौन्दर्य एव रमणीयता में अद्वितीय था, पडाव किया। सुल्तान महमूद खा ने भक्खर को नष्ट भ्रष्ट करके किले की प्रतिरक्षा प्रारम्भ कर दी। नौकाओं को नदी के इस ओर से लेकर किले के नीचे लगर डाल दिया।

जब भाग्यशाली सेना का लुहरी नामक कस्बे में पडाव हुआ तो सुल्तान महमूद को आदेश दिया गया कि वह उपस्थित होकर चौखट चूमने का सम्मान प्राप्त करे एव किले को दरबार के सेवकों को सौंप दे। उसने निवेदन किया कि, "मैं मीर्ज़ा शाह हुसन का सेवक हूँ। जिस समय तक मीर्ज़ा शाह हुसन सेवा में उपस्थित न होगा, मेरा आना नमकख्वारी की दृष्टि से उचित नहीं। मीर्ज़ा (१६८) शाह हुसन की आज्ञा बिना किले को सौंपना भी उचित नहीं।" पादशाह ने उसे विवश समझा। क्योंकि अनाज बहुत कम प्राप्त हो रहा था अत मेहतर अशरफ को, जो मीर बाज़ार[4] था, सुल्तान महमूद के पास भेजा। खान ने पादशाह के आदमियों के पास पाँच सौ गधों के बोझ

१ चौसा की पराजयोपरान्त उसकी मृत्यु हो गई थी।
२ २८ रमज़ान ९४७ हि० (२६ जनवरी १५४१ ई०)।
३ एक हस्तलिपि में 'लोहरी'। 'लुहरी' होना चाहिये।
४ बाज़ार का अध्यक्ष।

के बराबर अनाज एवं भोजन सामग्री भेजी। उसकी इस सेवा की प्रशंसा हुई। इन्ही दिनों में अमीर ताहिर सद्र एवं समन्दर बेग को, जो पादशाह के विश्वासपात्र थे, उन्होंने मीर्जा शाह हसन के पास भेजा और उसमें तथा हजरत फिरदौस मकानी बाबर पादशाह में जो प्रतिज्ञाएँ हुई थीं तथा जो निष्ठा थी वह लिख दी। मीर्जा शाह हसन ने पादशाही दूतों के प्रति आदर सम्मान प्रदर्शित किया। मीर्जा शाह हसन ने निश्चय किया कि "जब हजरत पादशाह पधारेंगे तो हालाकन्दी से बतूरा तक नदी के उस ओर के स्थान पादशाही ब्यूतात के व्यय हेतु दे दिये जायेंगे। प्रतिज्ञा एवं वचन बद्ध होकर अपनी सेना एवं अपने परिजनों सहित गुजरात विजय हेतु प्रस्थान करूँगा। विजयोपरान्त वहाँ से लौट आऊँगा।" इसी निश्चय अनुसार सैयिद शेख मीरक पूरानी एवं मीर्जा कासिम तगाई को उचित पेशकश सहित हजरत पादशाह की सेवा में भेजा। ये लोग भक्खर कस्बे के समीप हजरत का अभिवादन करके सम्मानित हुए और मीर्जा शाह हसन की निष्ठा एवं प्रार्थना के विषय में हुमायूँ पादशाह से निवेदन किया तथा प्रार्थनापत्र प्रस्तुत किया। प्रार्थनापत्र में लिखा था कि, 'भक्खर की विलायत का महसूल कम है। चाचकान की विलायत समृद्धि, आबादी, कृषि की अधिकता एवं अनाज के बाहुल्य के लिये प्रसिद्ध है। राज्य के हित में यह उचित होगा कि आप अपने संकल्प की लगाम उस ओर मोड़ें और उसे अपने अधिकार में कर लें ताकि पादशाही सेना को भी निश्चिन्तता प्राप्त हो जाय और मैं भी शीघ्र सेवा में उपस्थित हो सकूँ। यह मेरा सौभाग्य (१६९) एवं प्रताप है कि आप इस क्षेत्र में पधारे हैं। शनैः शनैः हृदय से शंकाओं को दूर करके अभिवादन का सम्मान प्राप्त करूँगा।"

पादशाह ने सर्वप्रथम स्वीकार करके मीर्जा शाह हसन की इच्छानुसार फरमान लिखने का आदेश दे दिया। अन्ततोगत्वा पादशाही अमीरों एवं वजीरों ने एकान्त में मीर्जा शाह हसन की इच्छा के विरुद्ध निवेदन किया कि, "यह क्या बात है कि वह कस्बों एवं ग्रामों का नाम लेता है। यदि वह हृदय से निष्ठावान् है तो अपने किले को पेशकश के रूप में भेंट कर ताकि हम लोग अस्त्र शस्त्र एवं अन्य सामग्री की व्यवस्था करके गुजरात की ओर प्रस्थान करने का संकल्प कर सकें। हमारा शत्रु शेर खां अफगान लाहौर में बैठा हुआ है। मीर्जा शाह हसन की यह प्रार्थना औचित्य से दूर दृष्टिगत होती है।" हजरत पादशाह भक्खर के अवरोध हेतु रवाना हो गये।

जब यह समाचार मीर्जा शाह हसन को प्राप्त हुए तो उसने कहा कि, "मैं भक्खर के किले की ओर से निश्चिन्त हूँ कारण कि हजरत पादशाह किले के समीप न रहेंगे। विश्वास है कि वे इस प्रकार का हृदयग्राही एवं आकर्षक उद्यान न छोड़ेंगे। अन्य लोग अवरोध हेतु नियुक्त होंगे वे कुछ न कर सकेंगे।" मीर फर्रुख, सुल्तान महमूद खां, जानी तरखान, दौलत खां पायदा, मुहम्मद कुरैश, मीर जिलमा अरगून एवं समस्त विश्वासपात्रों को भक्खर के किले की प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त करके सुल्तान महमूद खां को उस क्षेत्र का पूरा प्रबन्ध सौंप दिया और स्वयं सिविस्तान की ओर रवाना हो गये। सिविस्तान सरीखे किले को भी नष्ट भ्रष्ट कर दिया।

इन्हीं दिनों में भाग्यशाली सेना मातीला के क्षेत्र से रवाना हुई। बृहस्पतिवार २८ रमजान (१७०) ९४७ हि० (२६ जनवरी १५४१ ई०) को लुहरी पर्वत के आँचल में पड़ाव हुआ। दारोगा एवं साफियानो समूह के कुछ लोग सेवाओं द्वारा सम्मानित हुए। शुक्रवार के दिन हजरत पादशाह मीर्जाई के मदरसे में प्रविष्ट हुए। दूसरे दिन बबरलू नामक उद्यान हुमायूँ के सौभाग्य के प्रकाश से स्वर्ग

के लिये ईर्ष्या का विषय हो गया। पादशाह को वह भवन एव उद्यान बडा पसन्द आया। अन्त पुर की महिलाओ को उद्यान के भीतर स्थान देकर मस्जिद के समीप पादशाही दौलतखाना लगवाया। अमीर तथा प्रतिष्ठित अधिकारी बाग के समीप उतर पडे। मीर्ज़ा यादगार नासिर लुहरी के मदरसे में ठहरा और समस्त सेना ने लुहरो में स्थान ग्रहण किया। लुहरी से बबरलू उद्यान तक, जो एक फरसख दूर है, पादशाही लश्कर वाले पडाव किये हुए थे। विश्वस्त लोगो से यह सुना गया कि लगभग दो लाख आदमी पादशाही शिविर में थे। शुक्रवार के दिन हज़रत पादशाह मस्जिद में पधारे और शुक्रवार की नमाज उस मस्जिद में पढी। उस सफल पादशाह की उपाधि के आशीर्वाद से खुत्बे को शोभा प्राप्त हुई। उस दिन एक कवि ने यह कितआ उस दरबार में पादशाह के समक्ष प्रस्तुत किया और इस प्रकार अत्यधिक इनाम द्वारा सम्मानित हुआ

कितआ

'हुमायूँ के नाम का सिक्का हृदय पर अपनी छाप डाले,
सूर्य अपनी अनुकम्पा से सिक्के के मुह को सोने से भरता है।
जिस मिम्बर को उसकी उपाधि के खुत्बे द्वारा सम्मान प्राप्त हुआ,
बृहस्पति मिम्बर के सिर पर मोती न्योछावर करता है।'

क्योकि उस वर्ष पादशाही सेना के पहुँचने एव अन्य दुर्घटनाओ के कारण भक्खर के अनाज को अत्यधिक हानि पहुँची थी, अत उस वर्ष के शीत ऋतु में भक्खर के समीप एव उपान्त में घोर अकाल पड गया। अत्यधिक लोग रोटी तथा वस्त्र के अभाव के कारण नष्ट हो गये। पादशाह को जब इस बात की सूचना मिली तो उन्होंने अत्यधिक धन खज़ाने से सैनिको को प्रदान किया किन्तु अनाज का भाव बडा अधिक हो गया था यहाँ तक कि एक रोटी एक मिस्काल में बिकती थी। जब (१७१) सम्मानित शिविर में अत्यधिक दरिद्रता एव कठिनाई होने लगी तो हज़रत पादशाह ने हिन्दाल मीर्ज़ा को पातर की ओर नियुक्त किया और स्वय उसी उद्यान में इस आशय से समय व्यतीत करते रहे कि सम्भवत मीर्ज़ा शाह हुसन मेवा का सौभाग्य प्राप्त करके सौजन्य एव सेवा के अधिनियमो को पूरा करे एव आज्ञाकारिता तथा सेवा के मार्ग पर अग्रसर हो। मीर्ज़ा शाह हुसन को अरगून लागो तथा अमीरो ने अपनी दशा पर न रहने दिया और उसे सन्मार्ग से विचलित कर दिया। धूर्तता एव छल प्रदर्शित करते हुए अपना हित विरोध एव धूर्तता में समझकर शत्रुता प्रारम्भ कर दी।

पादशाह भक्खर के समीप दरबेला की ओर रवाना हुए। कुछ दिन ठहरकर पातर मे पडाव हुआ। उन्ही दिनो बिल्कीस मकानी हमीदा बानो बेगम से, जो शेख अली अकबर जामी की पुत्री थी, निकाह किया। शेख अली अकबर जामी मीर्ज़ा हिन्दाल का उच्च पदाधिकारी था। अल्प समय के उपरान्त जब शिविर में दुर्गन्ध उत्पन्न हो गई तो उस भूभाग मे प्रस्थान करके पुन भक्खर की ओर प्रस्थान किया, किन्तु अनाज के अभाव के कारण सेना तबाह हो चुकी थी। मीर्ज़ा हिन्दाल क़राचा खा के समझाने से, जो कि इससे पूर्व मीर्ज़ा लोगो की ओर से कन्धार का वाली रह चुका था, कन्धार की ओर चला गया और यादगार नासिर मीर्ज़ा को लिखा कि, "हमारे पास शीघ्र पहुँच जाओ। मार्ग में तुम्हारी प्रतीक्षा की जायेगी।"

मगलवार १८ जमादी-उल-अव्वल ९४८ हि० (९ सितम्बर १५४१ ई०) को पादशाह मीर अबुल बका के निवास स्थान पर गये और वहाँ सम्मानपूर्वक गोष्ठी आयोजित की। उन्होंने मीर को बड़े आदर सम्मान से यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास दूत बनाकर भेजा कि उसे उपदेश देकर विद्रोह के मार्ग से सन्मार्ग पर लाये। मीर ने यादगार नासिर मीर्ज़ा से भेंट की और मीर्ज़ा को पुन पादशाह की आज्ञाकारिता के फन्दे में ले आया। बुधवार १९[1] को वह निश्चय करके मीर बृहस्पतिवार को वापस आ रहा था कि इसी बीच मे भक्खर के किले के लोगों ने मीर के प्रस्थान (१७२) के विषय में अवगत होकर एक सेना को नौका के विरुद्ध भेजा। उन लोगों ने बाणो की वर्षा प्रारम्भ कर दी। मीर के कुछ घातक घाव लगे। दूसरे दिन वह इस नश्वर ससार से विदा हो गया। पादशाह को मीर की मृत्यु का अत्यधिक शोक हुआ। दूसरे बुधवार को मीर्ज़ा यादगार नासिर ने नदी पार करके अभिवादन किया। इसी बीच में हज़रत पादशाह ने मीर्ज़ा शाह हसन के दूतों, शेख मीरक पूरानी एव मीर्ज़ा कासिम, को विदा करके सम्मानित फरमान भेजे और अपने हाथ से यह लिख दिया कि, "शाह हसन बेग को सलाम के उपरान्त यह ज्ञात हो कि उसने जो कुछ भी प्रार्थना की थी उसे इस शर्त पर स्वीकार किया गया कि वह निष्ठापूर्वक आकर सेवा करे, वस्सलाम।"

मीर्ज़ा शाह हसन बहुत समय तक आने के विषय में बात करता रहा। क्योंकि अरगून अमीर इस विषय में सहमत न थे अत वह असमजस मे पड़कर प्रस्थान में विलम्ब करता रहा। यहाँ तक कि १ जमादी उल-अव्वल ९४८ हि० (२३ अगस्त १५४१ ई०) को पादशाह ने सिविस्तान की ओर प्रस्थान कर दिया। भक्खर की विलायत यादगार नासिर मीर्ज़ा को प्रदान कर दी। जब पनावाए सिविस्तान के समीप पहुँचीं तो मुनइम खा का भाई फज़ील बेग, शाहम खा का भाई तरसून बेग एव कुछ अन्य लोग, जिनकी सख्या बीस थी, नौका पर बैठे हुए जा रहे थे कि किले से एक सेना ने निकलकर इनपर आक्रमण कर दिया। यह लोग सगठित होकर नौका से निकले और क़िले वालो पर आक्रमण किया। क़िले वाले भाग खड़े हुए और ये किले मे प्रविष्ट हो गये।

१७ रजब ९४८ हि० (६ नवम्बर १५४१ ई०) को मुहम्मद हुमायूँ पादशाह ने सिविस्तान के समीप पड़ाव कर दिया। पादशाह के पहुँचने के पूर्व किले के रक्षक मीर सुल्तान कुली बेग, मीर शाह महमूद अरगून, मीर मुहम्मद सारबान, अली मुहम्मद कुकुल्ताश एव मीर सफर अरगून ने किले के आस पास के भवनो एव उद्यानों को नष्ट कर दिया था। पादशाह ने किले वालो के जीवन को कठिन बना दिया।

(१७३) जब किले वाले परेशान हो गये तो मीर्ज़ा शाह हसन थत्ता से सन पहुँचा और वहाँ उसने खाई खुदवा लीं। अत्यधिक नौकाए एकत्र करके वही ठहर गया। मीर अलीका अरगून को सिविस्तान में नियुक्त कर दिया। मीर अलीका एक सेना सहित रात्रि में सम्मानित शिविर मे पहुँचा और बाज़ार से सीधा किले की ओर रवाना हुआ। जब वह किले में पहुँचा तो लश्कर वालों को ज्ञात हुआ कि वे मीर्ज़ा शाह हसन के आदमी हैं। इससे पूर्व उन्हे इसकी कोई सूचना न थी। हज़रत जन्नत आशियानी ने आदेश दिया कि सुरग लगाई जायं। सुरग के उपरान्त बुर्ज का थोड़ा सा भाग उड़ गया किन्तु किले वालों ने तत्काल दूसरी दीवार तैयार कर ली। हज़रत जन्नत आशियानी

[1] १९ जमादी-उल अव्वल ९४८ हि० (१० सितम्बर १५४१ ई०)।

को ज्ञात हो गया कि अरगून लोग बड़े ही दृढ़ हैं और किले की विजय के यत्र उपलब्ध नहीं है तथा सिविस्तान के अवरोध में सात मास व्यतीत हो गये हैं और वायु अनुकूल नहीं तथा सैलाब प्रारम्भ हो गया है और मीर्ज़ा शाह हसन ने आसपास से अनाज का आना जाना रोक दिया है। अवरोध में अधिक समय लग जाने एवं जल की अधिकता तथा अनाज के कम पहुंचने के कारण अधिकांश सैनिक भाग गये। उच्च पदाधिकारियों में मीर ताहिर सद्र, ख्वाजा ग़यासुद्दीन जामी तथा मौलाना अब्दुल बाक़ी मीर्ज़ा शाह हसन के पास पहुँचे। मीर्ज़ा ने उस समूह को बडे आदर सम्मान से थत्ता भेज दिया। मीर बरका, मीर्ज़ा हसन तथा कासिम हुसैन सुल्तान, मीर्ज़ा यादगार भक्कर के पास पहुँचे। इस बीच में पादशाह को ज्ञात हुआ कि वे लोग मीर्ज़ा को बहकाकर कन्धार की ओर ले जा रहे हैं।

जब मीर्ज़ा यादगार नासिर भक्कर के समीप था तो भक्कर के किले के आदमियों ने उसपर दो बार अचानक आक्रमण कर दिया। मुहम्मद कुली बाबुची, शेर दिल बाग तथा एक अन्य सेना को घायल करके उसकी हत्या कर दी। यह युद्ध कोका तरखान, महमूद खा के भाई अमीर बेग, दोस्त मुहम्मद, हिन्दू अली काबुली एवं जौहरा के अधीन हुआ। तीसरी बार भी किले वाले (१७४) वीरतापूर्वक निकले। लुहरी के समीप रेगिस्तान में युद्ध किया। इस बार मीर्ज़ा ने स्वयं सवार होकर भली-भाँति आक्रमण किया। किले वाले भाग खड़े हुए। कुछ लोग नदी में कूद पड़े। कुछ लोगों ने नौका पर बैठकर नौका खोल दी। इन्हीं दिनों में मीर्ज़ा शाह हुसन ने मीर कुली मुहरदार को यादगार नासिर मीर्ज़ा के पास भेजा और पारस्परिक निष्ठा के सदेश प्रेषित करते हुए यह प्रकट किया कि, "मैं वृद्ध हो गया हूँ। मेरे कोई पुत्र नहीं है। मैं अपनी पुत्री का तुझसे विवाह कर देना चाहता हूँ। मेरे जीवन के थोडे से दिन शेष हैं। यह राज्य मेरे अधीन है। मेरे उपरान्त तेरा हो जायेगा। मैं तुझे अत्यधिक ख़ज़ाना दूंगा। हम लोग मिलकर गुजरात विजय कर लेंगे।" सक्षेप में, यादगार नासिर मीर्ज़ा शाह हुसन के आश्वासन पर चकमे में आ गया और मुहम्मद हुमायूं पादशाह का विरोध प्रारम्भ कर दिया। पादशाह ने सेना वालों की दीन अवस्था को देखकर निरन्तर मीर्ज़ा यादगार नासिर के पास आदमी भेजे और उसे आने के लिये प्रेरित किया। मीर्ज़ा बहाने बनाता तथा टाल मटोल करता रहा।

जब मीर्ज़ा यादगार नासिर के विरोध के समाचार पादशाह को प्राप्त हुए तो वे इस समाचार को सुनते ही सिविस्तान के समीप से उठकर भक्खर की ओर चले गये। इसी बीच में कम्बर बेग अरगून भागकर सिविस्तान के किले में प्रविष्ट हो गया। कुछ अन्य लोग कृतघ्नता प्रदर्शित करते हुए शाही लश्कर से पृथक् हो गये। पादशाह ने लुहरी में पडाव किया। मीर्ज़ा यादगार नासिर विवश होकर वहाँ पहुँचा और पादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ। उनके पास थोडा सा जो अनाज था, वह पादशाही सेवकों को सौंप दिया, किन्तु अनाज के अभाव के कारण लोगों को अत्यधिक कष्ट उठाने पड़े यहाँ तक कि पादशाह ने कुछ समय उपरान्त उल्से ख़ासा[१] सुल्तान महमूद के पास भेजा। सुल्तान महमूद ख़ा ने नरदी बेग बकावल एवं समस्त सेवकों को ख़िलअतें प्रदान कीं और प्रत्येक को धन सम्पत्ति एवं अनाज देकर विदा कर दिया।

१ विशेष मुग़ल क़बीले।

पादशाही आदमियों के चले जाने के उपरान्त अमीरों ने दीवानखाने में एकत्र होकर अनाज की मांग के विषय में विचार-विमर्श किया। प्रत्येक ने अपना-अपना मत प्रस्तुत किया। सुल्तान महमूद खा ने व्यूतात के व्यय हेतु तीन सौ गधे के बोझ के बराबर अनाज भेज दिया किन्तु सेना एव (१७५) शिविर वाले अकाल के कारण सिन्ध प्रदेश मे छिन्न भिन्न हो गये। प्रत्येक किसी न किसी दिशा की ओर चल दिया। अधिकाश लोग नष्ट हो गये। कई बार दोनो ओर से युद्ध हुआ। हर बार पादशाही आदमियों की विजय हुई। क्योंकि किले की विजय की सामग्री उपलब्ध न थी अत किले (की विजय) के कार्य मे विलम्ब होता गया।

क्योंकि दैवी रहस्यों एव ईश्वर के गम्भीर औचित्य को समझने के कारण प्रत्यक्ष निराशा में कोई न कोई सफलता के साधन छिप रहते हैं अत पादशाह को सिंध प्रदेश में इच्छानुसार सफलता न मिली और लोगों की निष्ठुरता की परीक्षा हो गई। पादशाह ने सेना वालो की कृतघ्नता, भाइयो की कायरता, एव समय की मूर्खता तथा साथ न देने का हाल देख लिया। उनकी इच्छा हुई कि एकान्तवास का वस्त्र धारण करके ईश्वर के प्रेम के पाँव उसके मार्ग के पथिको के साथ रक्खे तथा अपनी आकाक्षा के काबे की जजीर को पकडकर हिजाज़ की पवित्र भूमि में निवास करने लगें और एकान्तवास ग्रहण करें। दरबार के सेवकों एव विश्वासपात्रो ने निवेदन किया कि, "यह बडी ही उत्तम एव उचित बात हृदय में आई है किन्तु पादशाह को लोगों की बेसामानी तथा परेशानी का पता है। विजयी रिकाब के साथ एक बहुत बडी सेना है। यदि पादशाह इस मार्ग मे अग्रसर होंगे तो ये लोग दुर्घटनाओं के कारण पददलित होंगे। इस दरिद्र अवस्था में वे हिजाज़ की पवित्र भूमि में नही पहुँच सकते। अत यह उचित है कि कुछ दिन प्रतीक्षा की जाय।"

हज़रत पादशाह ने लोगों की दरिद्रता के कारण वहाँ से प्रस्थान करना निश्चय कर लिया। इसी बीच में जोधपुर के राजा मालदेव के प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुए जिसमें लिखा था कि "मैंने सेवा का छल्ला अपने कान में पहिन लिया है[1] और पादशाह के सौभाग्यशाली चरणो की प्रतीक्षा कर रहा हू। यदि भाग्यशाली सेना के शिविर इस क्षेत्र का सम्मानित करें तो यह दास बीस हज़ार राजपूतों सहित हज़रत पादशाह की सेवा मे, जिस ओर भी वे प्रस्थान करेंगे, हृदय से सेवा करेगा।"

(१७६) हज़रत पादशाह उनके प्रार्थना-पत्र के प्राप्त होने के उपरान्त ३१ मुहर्रम ९४९ हि० (७ मई १५४२ ई०) का उच्च की ओर रवाना हुए। निरन्तर यात्रा करते हुए उच्च कस्बे में पडाव किया। ८ रबी-उल-अव्वल ९४९ हि० (२२ जून १५४२ ई०) को मालदेव की ओर प्रस्थान किया। १४ रबी-उल-अव्वल (२८ जून १५४२ ई०) का दिलावर के किले में पडाव हुआ। २० रबी-उल-आखिर (१ अगस्त १५४२ ई०) को बीकानेर के भूभाग मे पादशाह के भाग्यशाली शिविर लगे। कुछ लोग बीकानेर पहुँचे और वहाँ से लौटकर उन्होने लश्कर मे पादशाह से निवेदन किया कि बीकानीर वालो से शिष्टाचार सम्बन्धी कोई बात नही सुनी गई। मुहम्मद हुमायूँ पादशाह ने समन्दर बेग नामक एक बुद्धिमान् को मालदेव के पास भेजा। उसने भी शीघ्रातिशीघ्र पहुँच कर निवेदन किया कि, "यद्यपि वह निष्ठा सम्बन्धी बहुत बाते बनाता है किन्तु ऐसा प्रतीत

१ सेवा करनी स्वीकार कर ली है।

होता है कि उसमें कोई तथ्य नहीं।' जब उत्कृष्ट सेना फलौदी नामक स्थान पर, जो मालदेव के निवास स्थान जोधपुर से तीस कुरोह पर है, पहुँची तो २-३ मंज़िलें पार करके एक झील के तट पर पड़ाव हुआ। पादशाह ने गुप्तचर भेज दिये थे। उन लोगों ने लौटकर मालदेव के विश्वासघात के समाचार सुनाये और बताया कि मालदेव ने शेर शाह के धूर्ततापूर्ण आश्वासन एवं उसके प्रभुत्व को देखकर एक सेना को इस आशय से नियुक्त कर दिया है कि शाही लश्कर का मार्ग रोक कर आक्रमण करे। पादशाह इस समाचार पर बड़े खिन्न हुए और अपने दरबार के सेवकों से परामर्श किया। अमीरों ने यह मत प्रकट किया कि जोधपुर में लौट जाना चाहिये। पादशाह लौट कर फलौदी और वहाँ से सातलमीर पहुँचे। अमीरों को मालदेव के आदमियों के विरुद्ध नियुक्त किया। एक अन्य सेना दूसरी दिशा से प्रकट हुई। पादशाह ने स्वयं थोड़े से अश्वारोहियों को लेकर बड़ी वीरता से युद्ध किया और उन लोगों को छिन्न-भिन्न कर दिया तथा शीघ्रातिशीघ्र जैसलमीर की ओर रवाना हुए।

(१७७) १ जमादी उल-अव्वल ९४९ हि० (१३ अगस्त १५४२ ई०) को जैसलमीर में भाग्यशाली शिविर लगे। इस मंज़िल पर जो लोग पीछे रह गये थे वे भी शिविर में पहुँच गये, किन्तु बहुत बड़ी संख्या में लोग नष्ट हो गये। जैसलमीर के सोनकरण ने दुष्टता प्रदर्शित करते हुए झील से पानी लेने के लिये रोका और अपने आदमियों को झील की रक्षा हेतु नियुक्त कर दिया ताकि जब पादशाह की सेना रेगिस्तान में कष्ट भोगती हुई मृगतृष्णा के जंगल से इस शोचनीय मंज़िल पर पहुँचे तो जल के अभाव के कारण उसे कष्ट हो। अमीरों तथा सैनिकों के एक समूह ने युद्ध करके सोनकरण के आदमियों को पराजित कर दिया और झील के किनारे लश्कर उतर पड़ा। वे प्यास के कष्ट से मुक्त हो गये। वहाँ से उन्होंने अमरकोट की ओर प्रस्थान किया और १० जमादी उल-अव्वल ९४९ हि० (२२ अगस्त १५४२ ई०) को खाद्य सामग्री एवं जल के कष्ट भोगते हुए वे अमरकोट पहुँचे।

राणा वीरसाल ने अपने आदमियों सहित स्वागत किया और पादशाह के रिकाब चूमने का सम्मान प्राप्त करके किले का भीतरी भाग खाली करा दिया। कुछ दिन तक पादशाह अमरकोट के किले के बाहर रहे। अन्ततोगत्वा बिल्क़ीस मकानी हमीदा बानो बेगम को अमरकोट के किले के भीतर भेज दिया। यहाँ तक कि भाग्य का नक्षत्र ऐश्वर्य के क्षितिज से उदय हुआ। ५ रजब ९४९ हि० (१५ अक्तूबर १५४२ ई०) को ईश्वर की छाया शहंशाह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह (ईश्वर उनका राज्य चिरस्थायी रखे) पैदा हुए। मुहम्मद हुमायूं पादशाह भाग्यशाली पुत्र के जन्म से बड़े प्रसन्न हुए।

मीर्ज़ा यादगार नासिर मीर्ज़ा शाह हुसेन के आश्वासन पर विश्वास करके मुहर्रम ९४९ हि० के प्रारम्भ (अप्रैल १५४२ ई० के मध्य) में पादशाह की सम्मानित सेना से पृथक् होकर सक्कर की ओर, जो कि कन्धार की तरफ है, पहुँचा। क्योंकि उस आश्वासन में कोई तथ्य न था अतः उससे कोई लाभ न हुआ। मीर्ज़ा यादगार नासिर ने कुछ तोपें तथा ज़र्बज़न, जो उसके साथ थीं, मीर्ज़ा शाह हुसेन के अमीरों के पास भक्कर के किले के भीतर भेज दीं। हाला तथा उमर शाह को भी, जो उसके निष्ठावान् मुक़द्दम थे, किले में भेज दिया।

(१७८) मीर्जा शाह हसन हुमायूँ पादशाह के उच्च की ओर प्रस्थान के समाचार प्राप्त करके शीघ्रातिशीघ्र भक्कर पहुँचा। अमीर लोग स्वागतार्थ बढे। मीर्जा शाह हसन ने २४ मुहर्रम ९४९ हि० (१० मई १५४२ ई०) को भक्कर के किले में पडाव किया और सुल्तान महमूद खा को फटकारा कि, "तूने मेरे अनाज के भडार को क्यों नष्ट किया?" मुल्ला दरवेश महमूद अम्बारदार[१] को सुल्तान महमूद खा के घर के समीप सूली पर चढवा दिया। हाला तथा उमर शाह नामक मुकद्दमो को सक्कर द्वार के मध्य में खाल खिचवा ली। पादशाह हुमायूँ के प्रस्थान उपरान्त जो लोग लुहरी में रह गये थे वे इधर उधर भाग गये। मीर्जा शाह हसन ने रबी-उल-आखिर के प्रारम्भ में (जुलाई १५४२ ई० के मध्य में) सिविस्तान की ओर प्रस्थान किया। एक सप्ताह तक उसने सिविस्तान मे पडाव किया। किले की टूट-फूट की मरम्मत की। कुछ दिन सन के समीप व्यतीत किये। हुमायूँ पादशाह के लौटने के समाचार सुनकर शीघ्रातिशीघ्र थत्ता की ओर चल दिया।

क्योंकि अमरकोट मे इतने साधन न थे कि शाही लश्कर वहाँ ठहर सकता अत पादशाह के अमीरो ने विवश होकर सिंध की ओर प्रस्थान करना निश्चय किया। अल्प समय में वे जन नामक कस्बे में पहुँच गये। क्योंकि वह हरा भरा प्रदेश सिंध नदी तट पर स्थित है तथा उद्यानो की अधिकता, नहरो एव उत्तम मेवो तथा फलो के लिये सिंध प्रदेश मे अद्वितीय समझा जाता है तथा कुछ अन्य कारणो से उन्होने जून कस्बे में उद्यान के मध्य मे निवास करना प्रारम्भ कर दिया। मीर्जा शाह हसन ने नदी के उस ओर अपनी सेना सहित पहुँचकर पडाव कर दिया।

कुछ दिन उपरान्त पादशाह से निवेदन किया गया कि बतूरा में एक छोटा सा किला है जो अनाज एव जीवन निर्वाह की समस्त सामग्रियो मे परिपूर्ण है। साधारण से प्रयत्न से वह अधिकार मे आ सकता है। पादशाह ने शेख अली बेग जलायर एव हसन तीमूर सुल्तान को नियुक्त किया। मीर्जा शाह हसन का जब इस बात की सूचना मिली तो उसने मीर्जा ईसा तरखान को उन्हें रोकने के लिये नियुक्त किया। मीर्जा ईसा ने इस बात को स्वीकार करने में सकोच प्रकट किया। क्योंकि मीर्जा ईसा पर मीर्जा शाह हसन के आदमी यह आरोप लगाते थे कि वह पादशाह के प्रति निष्ठावान् है, अत मीर्जा शाह हसन ने भी मीर्जा ईसा तरखान को भेजने का कोई आग्रह (१७९) न किया। सुल्तान महमूद खा को, जो दीर्घकाल से पृथक् कर दिया गया था और जिसे कोई प्रोत्साहन न दिया जाता था, बुलवाया। उसे प्रोत्साहन देकर इस सेवा हेतु नियुक्त किया तथा मुल्ला बहलोल एव जो लोग उस किले मे थे, उनकी कुमक हेतु भेजा। जून कस्बे के आसपास पादशाही लश्कर तथा अरगूनो की सेना में सर्वदा युद्ध होता रहता था। मीर्जा शाह हसन ने जून कस्बे के समीप जल तथा स्थल की सेना सुव्यवस्थित करके मुकाबला किया। एक दिन हसन तीमूर सुल्तान, शेख अली बेग, तरदी बेग खा एव एक अन्य सेना ने अनाज से भरे हुए किले पर आक्रमण हेतु प्रस्थान किया। अचानक सुल्तान महमूद खा भक्करी तथा एक बहुत बडी सेना ने, जो उस किले के समीप पहुँच गई थी, अवगत् होकर लन्द, नन्दरा एव साकर वालो को मिला लिया और प्रात काल उनपर आक्रमण कर दिया। तरदी बेग खा ने युद्ध मे शिथिलता प्रदर्शित की। शेख अली बेग अपने पुत्रो सहित उस युद्ध में दृढ़ रहा और रणक्षेत्र में मारा गया। शेख अली भी ताजुद्दीन

१ अनाज के भडार के अध्यक्ष।

लारी सहित घायल होकर नश्वर संसार को पहुँच गया। वीरों का एक अन्य समूह भी उस युद्ध में मृत्यु को प्राप्त हो गया। शाह हसन की ओर से भी कुछ लोग मारे गये। इस घटना के कारण पादशाह को बडा शोक हुआ। कुछ और घटनायें भी घटीं अतः उनका हृदय सिंध की ओर से फीका पड गया और कन्धार की ओर प्रस्थान करने का उन्होंने सकल्प कर लिया।

इसी बीच मे ७ मुहर्रम ९५० हि० (१२ अप्रैल १५४३ ई०) को बैराम खाँ गुजरात से अकेला पादशाह की सेवा में पहुँचा और पादशाह के घायल हृदय पर मलहम रक्खा। सधि की वार्ता प्रारम्भ कर दी। मीर्जा शाह हसन ने इस बात को बहुत बडी देन समझकर स्वीकार कर लिया। १०० हज़ार मिस्काल नकद एव यात्रा का समस्त असबाब एकत्र किया तथा तीन सौ घोडे एव तीन सौ ऊँट पादशाह की सेवा में भेजे और जून के समीप पुल बनवाया। सधि एव पुल बनवाने की तारीख़ 'सिराते मुस्तकीम''[1] के अक्षरों मे निकलती है जो ९५० होती है। पादशाह के लश्कर (१८०) के २-३ वर्ष तक सिंध में रहने के कारण अरगून लोग परेशान हो गये थे। इस सधि के सुखद समाचार से प्रसन्न होकर उन्होंने अपनी टोपी आकाश की ओर उछाली और इसको ईश्वर की बहुत बडी देन समझकर नाना प्रकार से क्षमा याचना की और यात्रा की आवश्यकताओं की व्यवस्था करके भेज दिया। पादशाह ने ७ रबी-उल आख़िर ९५० हि० (१० जुलाई १५४३ ई०) को जून कस्बे से पुल पार किया। सेना ने दो दिन मे उस स्थान को पार करके ९ रबी-उल-आख़िर को कन्धार की ओर प्रस्थान किया।

बख़्शू लगाह का भक्कर पहुँचना

जब बख़्शू लगाह ने मुलतान के समीप जनपुर नामक स्थान में किला बनाकर, मुल्तान को नष्ट करके लोगों को उस किले मे ले जाकर बहुत बडी भीड एकत्र कर ली तो वह कुत्सित विचारों को अपने हृदय मे स्थान देने लगा। लगाह, बिलौच, नाहर तथा जहाँ-जहाँ षड्यन्त्रकारी थे उसके क्षेत्र में एकत्र होने लगे। भक्कर विजय का सकल्प करके वह सर्वदा अपने आदमियों तथा गुप्तचरों को समाचार लाने के लिये भेजा करता था। यहाँ तक कि उसे निरन्तर यह समाचार पहुँचाये गये कि भक्कर का किला खाली है और मीर्जा शाह हुसन थत्ता मे है। उसकी सेना एव समस्त अमीर वही एकत्र हैं। उसने यह समाचार सुनते ही सेना को चुनकर नौकाये एकत्र की और आक्रमण कर दिया। अपने पूर्व ५० नौकाएं नियुक्त की कि तुम लोग शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान करके आधी रात में किले के समीप पहुँच जाओ। वह स्वय किले के बुर्ज एव चहारदीवारी की ओर बढा। १०० कुठारधारियों को किले का द्वार तोडकर प्रविष्ट होने का मार्ग विजय करने के लिये नियुक्त किया। १५ जमादी उस्सानी (१५ सितम्बर १५४३ ई०) गुरुवार को आधी रात में कोलाहल मचाते हुए (१८१) बख़्शू के आदमी किले के समीप पहुँचे और सक्कर की ओर के द्वार के समीप आग जलाकर शोर करना प्रारम्भ कर दिया। शहर वाले कोलाहल से जाग उठे। बुर्ज एव दीवार पर पहुँचकर पत्थर एव बाण चलाने लगे। क्योंकि वहाँ सैनिक कम सख्या में थे, सुल्तान महमूद खाँ की माता तत्काल किले के द्वार पर पहुँच गई। बहुत अधिक सख्या में पतली-पतली लकडियाँ, एव बोरों को तेल मे भिगो कर

---

१ सीधा रास्ता।

तथा जलातर ऊपर से बख्शू के आदमियों पर फेंकने लगे। जब उनके बीच में आग पहुँचने लगी तो बख्शू व्याकुल होकर नौका के पास पहुँचा। तदुपरान्त मीर जानी तरख़ान, हमज़ा बेग, काज़ी ईसा बन्द काज़ी क़ाज़न ने घोर प्रयत्न किये। जो लोग पहिले पहुँचे थे उनमें से कुछ अग्नि से जल गये और कुछ नदी में डूब गये। बहुत कम संख्या में लोग बाहर निकल सके। प्रात काल नाश्ते के समय बख्शू लंगाह नक्कारा बजवाता हुआ प्रकट हुआ और सोचने लगा कि मेरे आदमियों ने पहुँचकर किले को विजय कर लिया होगा। जब वह किले के समीप पहुँचा तो किले वाले तोप तथा बन्दूक चलाने लगे। वह समझ गया कि उसके आदमियों को सफलता नहीं हुई। स्वयं लुहरी की ओर चल दिया। तीन दिन तक लुहरी में रहकर भक्कर के समीप के स्थान नष्ट कर डाले और वहाँ से लौट गया। जब मीर्ज़ा शाह हुसन को ये समाचार प्राप्त हुए तो उसने मीर शाह महमूद अरग़ून को भक्कर की प्रतिरक्षा हेतु नियुक्त किया और उसे काज़ी क़ाज़न के साथ भेजा। यह घटना शुक्रवार १४ जमादी-उस्सानी ९५० हि० (१४ सितम्बर १५४३ ई०) की रात्रि में घटी।

मीर्ज़ा कामरान का आगमन

जब ९५१ हि० के प्रारम्भ[1] में हज़रत जन्नत आशियानी भाइयों के विरोध के कारण एराक की ओर रवाना हुए तो मीर्ज़ा कामरान ने शेख़ अब्दुल वह्हाब पूरानी, मीर अल्लाह दोस्त तथा बाबा चोचक को दूत बनाकर मीर्ज़ा शाह हुसन के पास भेजा और उसकी पुत्री से विवाह करने की प्रार्थना की। मीर्ज़ा शाह हुसन ने मीर्ज़ा कामरान की प्रार्थना स्वीकार करके शेख़ का विदा कर दिया। जिस समय जन्नत आशियानी एराक से कंधार पहुँचे और मीर्ज़ा अस्करी कन्धार के क़िले में बन्द हो (१८२) कर क़िले की प्रतिरक्षा न कर सका तो हज़रत जन्नत आशियानी ने काबुल की ओर प्रस्थान किया। मीर्ज़ा कामरान युद्ध हेतु निकला। अमीर लोग (उसकी) पंक्तियों से निकलकर हज़रत जन्नत आशियानी की सेवा में पहुँच गये। मीर्ज़ा कामरान मुकाबला न कर सका, रणक्षेत्र से भाग खड़ा हुआ। हज़ारा (लोगों के) मार्ग से सिंध पहुँचा। जब मीर्ज़ा शाह हुसन को सूचना मिली तो उसने पातर नामक स्थान में मीर्ज़ा के लिये स्थान निश्चित किया। दरवेश महमूद दौलत ख़ान को मीर्ज़ा कामरान की सेवा में भेजा। मीर्ज़ा अपने आदमियों सहित पातर में पहुँचा और विवाह के विषय में कहलाया। मीर्ज़ा शाह हुसन ने मीर फर्रुख़ अरग़ून को इस कार्य की व्यवस्था हेतु पातर भेजा। मीर्ज़ा शाह हुसन की पुत्री चोचक बेगम का विवाह मीर्ज़ा कामरान से कर दिया गया। मीर्ज़ा विवाह के उपरान्त तीन मास तक ठहरा रहा। तदुपरान्त काबुल की ओर लौट गया। मीर्ज़ा शाह हुसन ने १००० सशस्त्र सवार मीर्ज़ा की सेवा में नियुक्त किये। मीर्ज़ा की कमियों की पूर्ति करके विदा कर दिया।

मीर्ज़ा कामरान ग़ज़नी पहुँचा। ग़ज़नी के किले को अधिकार में कर लिया और काबुल विजय हेतु रवाना हुआ। अचानक काबुल के किले में प्रविष्ट हो गया। उन दिनों पादशाह हुमायूँ बदख़्शाँ में ठहरे हुए थे। ६ मास उपरान्त मीर्ज़ा शाह हुसन के अश्वारोही लौट गये। पादशाह बदख़्शाँ से बहुत बड़ी सेना सहित काबुल पहुँचे और काबुल का अवरोध कर लिया। मीर्ज़ा कामरान अवरोध के कारण व्याकुल होकर हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुआ। इस्लाम शाह अफ़ग़ान से भेंट करके कुमक की प्रार्थना की। इस्लाम शाह, मीर्ज़ा को बन्दी बनाने का प्रयत्न करने लगा। मीर्ज़ा कामरान भागकर घक्कर लोगों के पास पहुँचा। घक्कर वाले मीर्ज़ा कामरान को कुछ समय तक बन्दी बनाये रहे। अन्ततोगत्वा पादशाह को सूचना मिली कि मीर्ज़ा कामरान षड्यन्त्र रच रहा है। मीर्ज़ा को बहाने से अपने अधिकार में करके उसकी आँखों में सलाई फिरवा दी।

१ ९५१ हि०, २५ मार्च १५४४ ई० से प्रारम्भ हुआ।

दूसरी बार मीर्ज़ा कामरान ९५७ हि० (१५५०-५१ ई०) में भक्कर पहुँचा। मीर्ज़ा शाह हुसन ने मीर्ज़ा कामरान को कुछ समय तक शादकेला की पहाड़ियों में, जो कि भक्कर के पश्चिम (१८३) में नदी के मध्य में स्थित है, स्थान दिया, तदुपरान्त बतीरा नामक परगना मीर्ज़ा की रसोई के व्यय हेतु तथा बागे फ़नह को उनके निवास हेतु निश्चय कर दिया।

मीर्ज़ा कामरान ने वहाँ रहकर हज के लिये प्रस्थान करना निश्चय किया। चोचक बेगम ने भी आग्रह किया कि "मुझे भी विदा किया जाय कि मैं मीर्ज़ा के साथ जाऊँ।" मीर्ज़ा शाह हुसन ने पुत्री को विदा करना स्वीकार न किया और इस विषय में अत्यधिक आग्रह किया। अन्ततोगत्वा चोचक बेगम पिता की आज्ञा बिना पहुँच कर नौका में बैठ गई और मीर्ज़ा कामरान के साथ अकेली जाने लगी। सुल्तान महमूद मुहरदार एवं शाह हुसन के विश्वासपात्र के एक समूह ने पहुँचकर उसे वापस किया। मीर्ज़ा शाह हुसन स्वयं पुत्री की नौका के पास पहुँचा और उसने अत्यधिक आग्रह किया किन्तु उससे कोई लाभ न हुआ। चोचक बेगम ने पिता से निवेदन किया कि, 'जिस समय पादशाह अपे न थे, आपने मुझे उनके सुपुर्द कर दिया था। इस समय लोग क्या कहेंगे कि मीर्ज़ा की पुत्री ने पति की आज्ञाकारिता की ओर से उपेक्षा की। वे मुझे बदनाम करेंगे।" मीर्ज़ा शाह हुसन को यह बात अच्छी लगी। विवश होकर उसने उत्तम असबाब एवं सामान सहित विदा कर दिया। मीर्ज़ा कामरान एवं बेगम मक्के-मदीने पहुचकर २-३ वर्ष तक मक्के में ठहरे रहे। मीर्ज़ा कामरान की हज के दिन अरफात[1] उपरान्त सूर्यास्त के पूर्व मृत्यु हो गई। चोचक बेगम का मीर्ज़ा कामरान की मृत्यु के सात मास उपरान्त निधन हो गया। यह घटना ९६४ हि० (१५५६-५७ ई०) में घटी।

१ मक्के से १०० कोस पर वह मैदान, जहाँ हाजी लोग हज के दिन एकत्र होते और दोपहर तथा शाम की नमाज़ पढ़ते हैं।

परिशिष्ट

(अ) शेख़ रिज़्क़ुल्लाह मुश्ताक़ी

वाक़ेआते मुश्ताक़ी

(ब) ग़ौसी शत्तारी

गुलज़ारे अबरार

(स) मंझन

मधुमालती

परिशिष्ट अ

वाक़ेआते मुश्ताक़ी

लेखक—शेख रिज़कुल्लाह मुश्ताकी

(ब्रिटिश म्यूज़ियम मैनुस्क्रप्ट, रियू, भाग २, ८०३ ब)

नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ पादशाहे ग़ाज़ी

(८८) जब हज़रत बाबर पादशाह हाकिमों के हाकिम[१] के हुक्म से, चिरस्थायी लोक को सिधार गये तो आलमे हक़ीकी व मजाज़ी[२] के बादशाह नसीरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ पादशाहे ग़ाज़ी की खिलाफत का सूर्य उदय हुआ। [३] उनका व्यवहार ऐसा था कि उनके समान बहुत कम बादशाह हुये होगे। वे बडे विद्वान्, ज्ञानी तथा दानी थे। उनमें अत्यधिक सौजन्य एव वीरता पाई जाती थी। वे अपनी पूरी बादशाही के काल में रियाज़त एव एबादत में व्यस्त रहे। वे बातचीत में इतने मीठे थे कि कभी किसी व्यक्ति को "तू" नही कहते थे, प्रत्येक व्यक्ति को शुमा"[४] कहते थे। वे किसी की हत्या का अपनी ज़बान से आदेश न देते थे और सर्वदा रोज़ा रखा करते थे तथा रात भर जागते रहते थे। इफ्तार[५] के उपरान्त हलका भोजन करते थे। प्राय मास का सेवन न करते थे। वे फकीरो, आलिमो एव विद्वानो के मित्र थे। इस समूह को नाना प्रकार से प्रोत्साहित करते रहते थे।

एक दिन वे जफराबाद[६] मे बन्दिगी मियाँ काज़ी खा के दर्शन हेतु पहुँचे। शाम की नमाज़ का समय था। उन्होने अपनी बगल में एक किताब दाब ली और अपने साथ एक दो कूरची ले लिये। जब वे बन्दिगी मियाँ के पास पहुँचे तो उनसे हाथ मिलाया। मियाँ ने पूँछा, "तुम कौन हो?" उन्होंने उत्तर दिया "विद्यार्थी"। अपना ऐश्वर्य एव अपनी पादशाही जाहिर न की और उनके सम्मान की दृष्टि से सासारिक धन सम्पत्ति में से कुछ भी पास न ले गये। मियाँ की यह आदत थी कि वे अनिवार्य नमाज़ पढ कर घर के भीतर चले जाते थे। जब अपनी आदत के अनुसार वे उठे तो हज़रत पादशाह भी विदा हो गये। प्रातःकाल एक कागज़ पर एक लाख तन्के उनकी

१ ईश्वर के।
२ वास्तविक एव अवास्तविक लोक।
३ शेरों का अनुवाद नहीं किया गया।
४ तुम अथवा आप।
५ दिन भर के रोज़े के बाद का अल्प आहार।
६ जौनपुर (उत्तर प्रदेश) के समीप।

मआश[1] हेतु लिखे और अपने रात्रि के व्यवहार की क्षमा चाही। उन्होंने कहा, "मुझे आवश्यकता नहीं। जब आवश्यकता होगी तो ले लूँगा।"

पादशाह का एक इमाम था जो दो वर्ष तक इमामत कर चुका था। दो वर्ष उपरान्त किसी ने उनसे कहा कि, "मैंने इसे एक दिन राफ़ज़ियों की सुह्बत में देखा था।" उन्होंने उसे निकाल दिया और दो वर्ष की नमाज़ पुन पढ़ी ।

वे ऐमा[2] के विषय में इतनी अधिक कृपा-दृष्टि प्रदर्शित करते थे कि एक दिन अमीर हिन्दू बेग ने हज़रत पादशाह से कहा कि, "१८ करोड भूखे तुर्कों को खिलाया जाता है, उन्हें इतना (८९) कहाँ से दिया जायगा?"[3] हज़रत पादशाह ने कहा कि "इस बार तुझे क्षमा करता हूँ। यदि फिर ऐमा के विषय में तूने कुछ कहा तो तेरा खून तेरी गरदन पर होगा। मैंने मनौती की है कि यह राज्य उन सब को दे डालूँ और अपने अधिकार मे कोई अन्य राज्य करूँ।"

एक दिन शेख़ बहलूल के घर में दावत थी। हज़रत पादशाह एवं अन्य प्रतिष्ठित लोग उपस्थित थे। शेख़ बहलूल दायी ओर बैठे थे और शेख़ मुहम्मद बाईं ओर, बन्दिगी शेख़ अलाउद्दीन बुख़ारी सामने थे। इसी बीच में शेख़ ख़लील आ गये। पादशाह ने उनके आने पर कहा कि वे सबसे ऊपर बैठें और छज्जे की ओर सकेत किया। वहाँ एक बालाख़ाना था। उन्हे उस बालाख़ाने पर स्थान दिया गया। देखा कि उनके आदर सम्मान प्रदर्शित करने का यह हाल था।[4]

जब वे गुजरात की चढाई के बाद राजधानी आगरा पहुँचे तो अमीर हिन्दू बेग को जौनपुर की ओर नियुक्त कर दिया। उधर शेर खां चुनार की ओर था। उसने अमीर हिन्दू बेग के पास पेशकश भेजी और लिखा कि "मै बादशाह के दासों में से एक हूँ। क्योंकि आप इस ओर आ गये हैं अत मैं सन्तुष्ट हो गया कारण कि आप हज़रत पादशाह के हितैषी तथा मुसलमानों के शुभचिन्तक हैं। मुझे आशा है कि आप मेरे विषय मे भी कृपा करेंगे।" उसने उसके पास कई मन सोना भेजा और यह प्रार्थना की कि "मैं पादशाह के राज्य में से कुछ नहीं चाहता। मैंने बगाल के जितने राज्य पर अधिकार जमा लिया है, वह मेर पास रहने दिया जाय। चुनार का किला मेरे परिवार एवं मेरी धन सम्पत्ति के लिये इजार[5] पर दे दिया जाय। मैं उसका राजस्व पादशाही खजाने में पहुँचाता रहूँगा। जहाँ उनके इतने सब दास हैं, उनमें एक दास मैं हूँगा। मुझे जहाँ कहीं भी नियुक्त किया जायगा और जो सेवा भी सौंपी जायगी उसे मै हृदय से स्वीकार करूँगा। मेरा एक पुत्र ४००० अश्वारोहियों सहित दरबार मे उपस्थित रहेगा। मैं दरबार में न जाऊँगा। इसके अतिरिक्त जो आदेश होगा उसे हृदय से स्वीकार करूँगा।" अमीर हिन्दू बेग ने उत्तर भेजा कि, "यदि तू दरबार की नौकरी करना चाहता है तो तू स्वय राजसिंहासन के समक्ष चला आ। मैं भी पूरी सिफ़ारिश करूँगा तथा प्रोत्साहन प्रदान करूँगा। वहाँ से अपनी समस्याओं का समाधान करके

१ वृत्ति।
२ दरिद्रों एवं धार्मिक लोगों के लिए भूमि अथवा वृत्ति के रूप में धन।
३ वाक्य मूल में स्पष्ट नहीं।
४ मूल में स्पष्ट नहीं।
५ मालगुज़ारी का ठेका।

चला आ। किन्तु यह बात जो तू कहता है 'कि मैं यहाँ रहूँ और वहाँ से विलायत लिखी हुई चली आय', तो नौकरी इस प्रकार नही होती। जब तू वहाँ से खिलअत एव .[1] लेकर लौटे तो अपने एक पुत्र को वहाँ छोडता आ। तूने जो यह लिखा है कि 'मैं बादशाही विलायत में से कुछ नही माँगता और बगाले की विलायत में से जो मैंने प्राप्त कर लिया है, वह मेरे पास रहने दिया जाय', तो यह (९०) बकवास है कारण कि जब पादशाह स्वय हिन्दुस्तान पहुँच गये तो समस्त हिन्द उनका हो गया, क्या देहली, क्या बगाला, क्या गुजरात और क्या दकिन। अपनी विलायतो में से यदि वे किसी को कुछ प्रदान कर दें और या अपने सेवको में से किसी को किसी विलायत में नियुक्त कर दें तो यह उनका काम है। हम इसे नही कर सकते। वहाँ से जो तेरे भाग्य में होगा मिल जायगा। मैं स्वय रिआयत करने में कमी न करूँगा।" जब उसने यह उत्तर लिखा तो शेर खा ने कहला भेजा कि, "मैं भली भाँति समझ गया था कि जब वजीर इस क्षेत्र मे आ गया तो निसन्देह किसी न किसी दिन पादशाह भी पधारेंगे। मैंने आपका नमक खाया है। नमकहरामी न करूँगा। मुझमें इतनी शक्ति है कि जब हज़रत पादशाह यहाँ पधारेंगे तो हम चुनार एव बिहार छोड कर उनसे दूर चले जायेंगे और बगाला की ओर मैं प्रस्थान कर दूँगा। जब वे मुझे वहाँ भी न छोडेंगे तो मैं उस स्थान को भी छोड कर किसी अन्य स्थान को चला जाऊँगा। जब हज़रत पादशाह गौड़ पहुँचेंगे तो वे अत्यधिक विलासप्रिय एव उपेक्षा के आदी होने के कारण वहाँ निश्चिन्त होकर बैठ रहेंगे। उन्हें कुछ भी स्मरण न रहेगा। मैं कुछ समय तक किसी कोने मे छिपा रहूँगा। उस समय मैं राज्य में ऐसा करूँगा जिसके कारण एक को दूसरे की सूचना न रहेगी। जो कुछ होगा देखा जायगा। सेवक के नाते जो मेरा कर्त्तव्य था, मैंने उसका पालन कर दिया। आप स्वीकार नही करते, अच्छा है। मेरे वचन तथा अपने कर्म आप स्वय देख लेगे।" अन्ततोगत्वा अमीर हिन्दू बेग ने हज़रत पादशाह को वाजिबुल अर्ज लिखा कि "यहाँ शेर खा ऐसी बातें कहता है जिनका उल्लेख उचित नही किन्तु आप इस बात से समझ लें कि जिस समय हम गुजरात की ओर आक्रमण कर रहे थे उसके पास ६ हजार अश्वारोही थे। इस समय वह ७० हज़ार अश्वारोहियों को १२ करोड वेतन देता है और नित्य-प्रति सेना बढाता जा रहा है। यदि आपने उसपर आज आक्रमण न किया तो दूसरे वर्ष उसकी सेना और भी बढ जायगी। सम्भवत वे आगे भी बढ आयें।"

अमीर हिन्दू बेग का प्रार्थना-पत्र पहुँचते ही हज़रत पादशाह ने प्रस्थान कर दिया। जो विलायत शेर खा के अधिकार में थी, उसे छोडकर वह बगाला चला गया। जब पादशाह आगे बढे तो वह उसे भी छोड़ कर चला गया। जो कुछ ले जा सकता था उसके ले जाने में कमी न की और जो कुछ न ले जा सकता था, वही रह गया। पादशाह स्वय वहाँ पहुँचे। उन्हे वहाँ ऐसा स्थान मिला जिसे बहिश्ते मजाजी[2] कहा जा सकता है। वहाँ हूरे[3], महल, उद्यान तथा हौज़ सभी कुछ थे। (९१) प्रत्येक घर मे सोने के एव जडाऊ भोजन बनाने के बरतन, प्रत्येक प्रकार के गुलाब एव सुगंधियाँ, ऊद[4], सन्दल[5], काफूर, मुश्क, प्याले और थाल इत्यादि थे। घरों के प्रागण एव छतों पर चीनी

१ मूल में स्पष्ट नहीं।
२ ऐसा स्थान जो स्वर्ग के समान हो।
३ सुन्दरियों से तात्पर्य है।
४ एक सुगन्धित लकडी, अगरू।
५ चन्दन।

की ईंटें तथा चन्दन के खम्बे लगे थे। हर प्रकार के वस्त्र एवं खज़ाने जिनकी गणना सम्भव नहीं सभी धरा में थे। दो पादशाही महल प्रत्येक प्रकार के सामान से भरे थे।[1] हज़रत पादशाह वहाँ पहुँच कर (भोग विलास में) इतने व्यस्त हो गये कि दो मास व्यतीत हो गये किन्तु किसी को अभिवादन करना भी सम्भव न हो सका। शेर खां ने जो कुछ कहा था वही दशा हुई।

इधर आगरे के किले में मीर्जा मुहम्मद हिन्दाल ने शेख बहलूल की हत्या करा दी और उसपर यह आरोप लगाया कि वह शेर खा से मिला हुआ है। उलुग मीर्जा वहाँ से भाग गया। जब हज़रत पादशाह को बहलूल की हत्या के समाचार प्राप्त हुए तो वे वहाँ से निकले। इसके आगे का किस्सा सब को ज्ञात है। यह हाल प्रथम बार का है।

जब दूसरी बार पादशाह हिन्दुस्तान पहुँचे तो उन्हाने अफगानो को सरहिन्द में पराजित किया और राजधानी देहली पहुँचे। वे यही कहा करते थे कि, 'मेरा उद्देश्य केवल राजधानी देहली तक आना था कारण कि वह मेरे बाप-दादा की राजधानी है। इसके आगे मेरी कोई इच्छा नही।'' वे देहली में ही रह गये। अमीरों में से जिस किसी को भी राज्या पर अधिकार जमाने की इच्छा होती अनुमति लेकर जहाँ चाहता था चला जाता था।

जब हज़रत पादशाह शहीद हो गये तो हज़रत बादशाहे आलम पनाह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर गाज़ी खलीफा हुये। वे स्वयं उपस्थित न थे। ऊपर[2] के राज्या की ओर थे। जब उन्हे हुमायूं पादशाह के शहीद होने के समाचार प्राप्त हुये तो वे वहाँ से राजधानी देहली पहुँचे एवं पादशाही सिंहासन पर आरूढ हुये।

(९५) (शेर खा) ने कुछ समय उपरान्त बगाले की विलायत पर अधिकार जमा लिया एवं बगाले की राजधानी की ओर प्रस्थान किया और तिरहुत के मार्ग से रवाना हुआ। जगल के ऐसे मार्ग से, जिधर से किसी ने भी यात्रा न की थी, अचानक गौड पहुँच गया। यह बडा मशहूर किस्सा है। उसने वहाँ भी विजय प्राप्त कर ली तथा उसपर अधिकार जमा लिया। तदुपरान्त हज़रत पादशाह मुहम्मद हुमायूं गाज़ी ने बगाले की विलायत पर आक्रमण किया। शेर खा सामने से भाग खडा हुआ और चुनार के किले को छोड दिया। उन दिनों उसे हज़रते आला कहा जाता था। हज़रत पादशाह जब चुनार के किले के आगे बढे, तो वह भी पर्वत के आँचल में छिप-छिप कर बढने लगा। जब वे गढी नामक स्थान के समीप पहुँचे तो शेर खा एक लम्बा धावा मार कर गढी के दर्रे में प्रविष्ट हो गया और किलाबन्दी कर ली। अपनी सेना को दर्रे के मूँह पर लगा दिया। शेर खा स्वयं गौड चला गया और वहाँ से प्रस्थान करने की तैयारी करने लगा। हज़रत पादशाह को समाचार प्राप्त हुए कि शेर खा गौड चला गया है और अपने पुत्र जलाल खा को गढी में छोड गया है। इस ओर से भी अमीर जहाँगीर कुली २०,००० अश्वारोहियों सहित एलची नियुक्त हुआ। इन लोगों में घोर युद्ध हुआ। यह सेना (पराजित होकर) वापस लौट आई। जलाल खा अपनी सेना सहित गढी में रह गया। (शेर खा) जहाँ तक धन सम्पत्ति एवं वस्त्र ले जा सका, लेकर गौड के बाहर चला गया। जलाल खा भी तीसरे दिन इस स्थान से चला गया। पादशाह को

१ मूल में स्पष्ट नहीं।
२ पर्वतीय प्रदेश से तात्पर्य है।

यह समाचार प्राप्त हुए कि जो सेना सामने थी वह चली गई। उन्होंने करावल भेजे। वे समाचार (९६) लाये कि शेर खा गौड के बाहर चला गया है। हजरत पादशाह वहाँ से प्रस्थान करके गौड पहुँचे। शेर खा वही उपाय करने लगा जो उसने अमीर हिन्दू बेग से कहे थे। हजरत पादशाह वहाँ पहुँचकर भोग विलास में ग्रस्त हो गये। इस प्रकार दो मास तक किसी को कोरनिश की भी अनुमति न दी। इसी बीच में शेर खा कज्जाकी तथा राहजनी करता रहा। उलुग मीर्जा पादशाह के लश्कर से पृथक् हो गया था। उसे उसने परेशान कर दिया। मीर्जा हिन्दाल वहाँ से आगरा जा रहा था। भूर कन्डा से अवध की ओर भागा और एक रात तथा दिन उपरान्त अवध पहुँचा। यह बात भी बडी प्रसिद्ध है। अन्त में जब हजरत पादशाह ने गौड में शेख बहलूल की हत्या के समाचार पाये तो वे चल खडे हुए। आगे का हाल (भी सबको) ज्ञात है। जब इस युद्ध में शेर खां की विजय हो गई और उसने शाहे आलम की उपाधि धारण कर ली तो छत्र लगवाने लगा और अपने नाम का खुत्बा पढवा दिया।



परिशिष्ट ब

गुलज़ारे अबरार

लेखक : गौसी शत्तारी

(लिन्डेसियाना मैनुस्क्रप्ट)

शेख अबुल मुईद मुहम्मद (उपाधि गव्वास)[1]

(१८६ ब) वे खतीरुद्दीन के पुत्र तथा शेख फरीदुद्दीन अत्तार[2] नीशापुरी के वशज थे। उनकी वशावली इस प्रकार है: खतीरुद्दीन अब्दुल लतीफ के पुत्र, अब्दुल लतीफ मुईनुद्दीन कत्ताल के पुत्र, मुईनुद्दीन कत्ताल खतीरुद्दीन के पुत्र, खतीरुद्दीन बायजीद के पुत्र और वे शेख अत्तार के भाग्यशाली पुत्र थे। बाल्यावस्था ही से उनके मन में ईश्वर की लगन रहती थी और उन्होंने प्रारम्भ मे कुछ तपस्याएँ भी की किन्तु उससे सतुष्ट न होकर वे शेख जहूर हाजी हमीद हुजर (१८७ ब) की सेवा में पहुँचे और १३ वर्ष तथा कुछ मास तक चुनार के पर्वतीय प्रदेश में एकान्त में चिल्ले में बैठे रहे। ९२९ हि० (१५२२-२३ ई०) में उन्होने जवाहिरे खम्सा नामक ग्रथ की रचना की। उस समय उनकी अवस्था २२ वर्ष की थी।

कहा जाता है कि ९४७ हि० (१५४० ई०) में जब सूर अफगानो के प्रभुत्व के कारण, जिनका सरदार शेर खा सूर था, जन्नत आशियानी नसीरुद्दीन हुमायू शाह तोमूरी देहली के सूबे से प्रस्थान कर गये तो गौसुल औलिया भी गुजरात की ओर चले गये। उनके अधीन बहुत से लोगो ने इन्सानी कमाल और फ्ना फिल्लाह एव बक़ा बिल्लाह[3] की श्रेणी प्राप्त की। उन्होने वहाँ एक भव्य भवन तथा खानकाह का निर्माण कराया। वह स्थान आजकल (१८८अ) दौलतखाने के नाम से प्रसिद्ध है। जब वे गुजरात पहुँचे तो जन्नत आशियानी के पास से यह पत्र प्राप्त हुआ। इसमें उन्होने यह लिखा था कि "आपको तथा अन्य दरवेशो की शुभ कामनाओ के फलस्वरूप जो कठिनाइयाँ थी उन्हें सुगमतापूर्वक झेल लिया गया और दुष्ट समय के अत्याचार के कारण जो कुछ भी पेश आयेगा वह सहन कर लिया जायेगा। केवल आपसे पृथक् होने का कष्ट ऐसा महान्

१ साधारणत वे गौस कहलाते थे।

२ मुहम्मद इबराहीम फ़रीदुद्दीन अत्तार का जन्म नीशापुर के एक ग्राम में शाबान ५१३ हि० (नवम्बर ११११९ ई०) में हुआ। मगोलों द्वारा १० जमादी उस्सानी ६२७ हि० (२६ अप्रैल १२३० ई०) को उसकी हत्या हो गई। उन्होंने अनेक काव्यों की रचनाएं कीं जो भक्ति भावनाओं से परिपूर्ण है।

३ ईश्वर में लीन एव ईश्वर में ही जीवित।

है जिससे सतोष नही प्राप्त होता, हर क्षण यही विचार रहता है कि उस दैत्य रूपी मनुष्य ने फिरिश्ता सरीखे आपके व्यक्तित्व के साथ कैसा व्यवहार किया। इसी बीच में आपके गुजरात की ओर प्रस्थान कर जाने का हाल ज्ञात हुआ। हृदय को उस कष्ट से थोडी बहुत शान्ति मिली। ईश्वर से आशा है कि वह अपनी महान् अनुकम्पा के कारण कष्टो से मुक्ति दिलाकर वियोग के दुख को समाप्त करे। ईश्वर के प्रति जितनी भी कृतज्ञता प्रकट की जाय वह कम हैं। परेशानियो एव कष्टो के बावजद हृदय में ईश्वर के ध्यान के प्रति कोई कमी नही हुई है। आशा है आप (१८८ ब) सर्वदा शुभकामनाएँ किया करेगे।" शेख ने पत्र के पहुंचने का उल्लेख करते हुए लिखा कि, "ईश्वर अपना जलाल[1] तथा जमाल[2] दोनो ही प्रकट करता रहता है। जमाल का युग समाप्त हो गया, अब कुछ समय जलाल की बारी है। ईश्वर की कृपा से फिर जमाल का समय आयेगा। ईश्वर की यही प्रथा रही है। आशा है कि शीघ्र ही आपकी आशायें पूरी होंगी।"

वे लगभग ६ वर्ष तक गुजरात में निवास करते तथा लोगो का पथ-प्रदर्शन करते रहे। जब ९६३ हि० (१५५५-५६ ई०) में हुमायूँ की विजयी पताकाएँ हिन्दुस्तान मे पुन बलन्द हुई और उनके सुपुत्र अबुल फतह अकबर शाह सिंहासनारूढ हुए तो गौसुल औलिया ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए गुजरात से ग्वालियर और वहाँ से देहली पहुँचे। शहशाह ने हर प्रकार से उनका आदर सम्मान तथा स्वागत किया। ७ वर्ष और जीवित रहकर वह ९७० हि० (१५६२-६३ ई०) में मृत्यु को प्राप्त हो गये।[3]

शाह मझन

(२३८ ब) शाह मझन अब्दुल्लाह काज़ी खैरुद्दीन शरीफ के पुत्र थे। काज़ी ताजुद्दीन नहवी[4] उनके दादा थे। उनके नाना काज़ी समाउद्दीन देहलवी थे जो कि बडे उच्च पद पर आरूढ थे तथा कुतलुग खा की उपाधि से सुशोभित थे। शाह मझन ताजुल उरफा[5] सैयिद ताजुद्दीन बुखारी के शिष्य थे जिन्होंने बहुत स्थानो की यात्रा एव पर्यटन किया था तथा प्रत्येक स्थान के सूफियो से भेंट की थी। हिन्दुस्तान पहुँच कर वे गौसुल औलिया के शिष्य होकर शत्तारिया (२३९ अ) सिलसिले मे सम्मिलित हो गये। उन्होने अपने मुरीद शाह मझन की सिफारिश गौसुल औलिया से कर दी और उन्हे उनकी सेवा में पहुँचा दिया। मझन ने अपने गुरू की प्रसिद्ध कृति "जवाहिरे खम्सा" का अध्ययन उन्ही की देख रेख में किया और उसी पर अपने जीवन को आधारित किया। गौसुल औलिया चुनार की तपस्या के समय जो खिर्का[6] पहिने थे वही उन्होंने मझन को प्रदान किया। **गुलज़ार अबरार** के लेखक गौसी शत्तारी ने १०१४ हि० (१६०५-६ ई०) में मझन के पुत्र शेख उस्मान के पास उस खिर्के के दर्शन किये।

१ तेज।

२ सौन्दर्य, प्रेम।

३ मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी ने **मुन्तखबुत्तवारीख** भाग ३ में (पृ० ४-६) में मुहम्मद गौस का हाल लिखा है।

४ नहव (व्याकरण की वह शाखा जिसमे वाक्यों में शब्दों का परस्पर सम्बन्ध और उनकी स्थिति जानी जाती है) के पंडित।

५ सन्तों के मुकुट।

६ सन्तों के शरीर का उतरा हुआ फटा पुराना वस्त्र।

शाह मझन शेख अहमदी के, जो अपने समय के बहुत बड़े विद्वान् थे, सहपाठी थे तथा समस्त प्रचलित ज्ञानो पर अधिकारपूर्ण प्रवचन किया करते थे। शरा के पालन का भी उन्हे अत्यधिक ध्यान था और उसी के अनुसार वे अपना जीवन व्यतीत करते थे। उनका अधिक समय पठन-पाठन एव ईश्वर के अध्ययन में व्यतीत होता था। जिस वर्ष शेर खा सूर ने रायसेन के किले को विजय करके उसका नाम इस्लामाबाद रखा तो वे अपनी जन्मभूमि लखनौती से उस किले में पहुँचे और कुछ समय तक वहाँ पर शेखुल इस्लाम रहे और वही अपनी एक खानकाह स्थापित की। जब रायसेन पर पुन दुष्ट काफिरो का अधिकार हो गया तो वे वहाँ से सारगपुर मालवा चले (२३९ ब) गये और वहीं निवास करने लगे। वहाँ कोई ऐसा विद्वान् न था जो लोगो को शिक्षा दे सकता। उनके ग्रथ भी दुर्घटना के कारण नष्ट हो गये थे अत उन्होने प्रत्येक प्रसिद्ध ग्रथ की अपनी स्मृति के अनुसार टिप्पणियाँ तैयार की और अपने शिष्यों को उनसे लाभान्वित कराया करते थे। उनके आ जाने के कारण सारगपुर को शीराज़ के समान प्रसिद्धि प्राप्त हो गई और बहुत से विद्वान् वहाँ पहुँचकर निवास करने लगे। वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाने पर उन्होंने अपने पुत्रो एव समस्त साथियो से पृथक् होकर सारगपुर से दो मजिल की दूरी पर स्थित आस्ता नामक कस्बे में एकान्तवास ग्रहण कर लिया। कुछ वर्ष के उपरान्त रबी उल अव्वल १००१ हि० (जनवरी १५९३ ई०) में वे पुन सारगपुर पहुँचे और सभी छोटे-बडो से विदा होकर एकान्त मे जीवन व्यतीत करने लगे। उस समय उनकी अवस्था ८० वर्ष की हो गई होगी। उसी मास में उन्होंने जो लोग उपस्थित थे उनके साथ ज़िक्रे जहर[1] किया और ससार स विदा हो गय।

उनके दादा काज़ी ताजुद्दीन नहवी, शेख महमूद जिन्दापोश कर्मी इश्की के वश से थे। उनकी खानकाह इस्लाम के नगर बल्ख मे थी। जिस समय काजी फख्रुद्दीन बहरुल मव्वाज के लेखक और काज़ी फख्रुद्दीन हिन्दुस्तान में विद्या-प्रसार कर रहे थे, काज़ी ताजुद्दीन नहवी, बल्ख से हिन्दुस्तान पहुँचे और लखनौती नगर मे निवास करने लगे और बहुत से लोगो को विद्वान् बना दिया।

९८६ हि० (१५७८ ई०) में जब अकबर मालवा पहुँचा तो मालवा प्रान्त के सभी सत लश्कर में एकत्र हुए। (गौसी शत्तारी) भी उसी समय शाह मझन की सेवा में पहुँचा और उनकी योग्यता से लाभान्वित हुआ।

१ ईश्वर के नाम का चिल्ला चिल्ला कर जप, कभी कभी ज़िक्रे-जहर सगीत के साथ कीर्तन की भाँति होता है।

परिशिष्ट स

मधुमालती

मझन

(डा० माता प्रसाद गुप्त द्वारा सम्पादित, इलाहाबाद १९६१)

(१४)

सेख बडे जग बिधि पियारा । ग्यान गरुअ औ रूप अपारा ।
सवरि नाउ परसै जो आवै । ग्यान लाभ होइ पाप गवावै ।
जाकह मया जीउ सेउ करही । सहज बोलाइ ताज सिर धरही ।
जावह दिस्टि करहिं प्रतिपारहिं । कया कल्क धोई जग डारहिं ।
बूझि गुरु सिख दिस्टि प्रतिपाला । सो आपन जम धोइ निवाला ।

गुरु दरसन दुख धोवन धनि धनि दिस्टि जो भाउ ।
जो गुर सिक्ख दिस्टि प्रतिपालै सो चारिहु जुग राउ ॥

(१५)

सेख मुहम्मद पीरु अपारा । सात समुंद नाउ कडहारा ।
सवरि पाँउ जो आवै कोई । परयम मुख देखत सुख होई ।
फुनि दुहु जग पूजै मन आसा । परमत चरन पाप गा नासा ।
ग्यान छाडि मुख और न बाता । दस औ चारि मत सिधि दाता ।
बिसमी हरख न घट मँहि लाहै । सतत रहहिं लीन लौ माहै ।

दाता औ गुन गाहक गौस मुहम्मद पीर ।
दुहु कुल निरमल सापुरुस गरुअ गरिस्ट गभीर ॥

(१६)

सूर उदै उदइल ससारा । उदै अस्त लहि भा उजिआरा ।
जाके नैन सूर उजिआरे । परम गिआन चेताए तारे ।
जाकर जग गादुर औतारा । ता कह सूर उदै अधियारा ।
जौ रे साहस कलि ओटवै कोई । साहस सँउ निरचै सिधि होई ।
सेख मुहम्मद सिद्ध अपारा । साहस वाझ सिद्धि देनिहारा ।

जस पारस के परसत भीन हेम होइ जाइ ।
तिमि मैं सेख मुहम्मद देखे बिनु साहस सिधि पाइ ॥

(१७)

परम तत लौ लीन जो जानै । सो मन के आखर पहिचानै ।
मन के आखर बिखम अपारा । गुरु होइ तो ग्वावै पारा ।
चहै मन के आखर लखि आवै । सहज सो आपु अपान गँवावै ।
गुरु पीर चाहहु परसादा । चीन्हहु मन दूनें छाडि बिबादा ।
प्रगट कला सभ काहूँ देखा । पै बिरला जन गुपुत सरेखा ।
ये दोऊ बिधि निरमये मिरिस्ट राउ जग धीर ।
इन्ह दूनौ सिध ऊपर गौस मुहम्मद पीर ॥

(१८)

ग्यान समुंद अथाह गभीरा । जेइ सेवा सो लागेउ तीरा ।
काहू किए सिर सौ बुडकावा । कोई अग धोइ कै आवा ।
काहू जाइ हाथ मुंह धोवा । काहू पानि पिया कै गोवा ।
कोई जाइ देखि फिरि आवा । जिअब सुफल सभ काहू पावा ।
नातर समुंद के नीर बिहूना । पै बिरला सिर पुब्ब क पूना ।
जाकह जैसिअ निमचै ताकह तैसिअ सिद्धि ।
उदधि अपार पीर कलिजुग महि ग्यान धरम के निधि ॥

(१९)

जौ कोइ मन इच्छा कै आवै । देखत मुख परतिग्या पावै ।
ता वह ब्रह्मग्यान चित आवै । औ लौ लीन तत दिसरावै ।
सोवत जो दिन आपु गवावै । जैसें हाट माट धरि आवै ।
करम बात पै आनि न जाई । जेहि जसि लौ तेहि तसि अधिकाई ।
जेहि सिर पुब्ब करम कै रेखा । तेइ जग सख मुहम्मद देखा ।
जो दिठिआरे बिधि सिरे तिन्ह घट बाजा तूर ।
जे गादुर कै रिनमए तिन्ह अधिआरा पूर ॥

(२०)

एहि कलि जेते पडित भए । मूंड मुडाइ सिद्धि लै गए ।
अरु अनेग मरुख जग आए । ते सभ ब्रह्म पद ग्यान चेताए ।
ग्यान घ्यान छुटि और न काजा । भेस बिभेस दुहू जग राजा ।
जो कोइ चारि देवस सघ रहा । ते छाडा दुहु जग संघ गहा ।
जा तन मया दिस्टि कै हेरा । ते आपुहि दुहु जग सो फेरा ।
हिया अजोर नहि पटतर पावै कोटि सूर परगास ।
तीनिउ लोक तजे जो बैठा गुरुवा गरब गरास ॥

(२१)

बारह बरिख तहाँ गै दुरे। जहाँ सूर ससि दिस्टि न परे।
बिकट बिखम औ भयावन ठाऊ। कलिजुग धुंध दरी ओहि नाऊ।
चहु दिसि परबत बिखम अगमा। तहाँ न के हू मानुस गमा।
तहा जाइ के जपेउ बिधाता। कँ अहार बन जामुनि पाता।
मन मतग मारि बस किया। ग्यान महारस अम्रित पिया।

साहस उदित अपान साधि कँ लीन्ह सिद्धि अवराधि।
बारह बरिख रहे बन परबत लाए जो ब्रह्म समाधि॥

(२२)

अब सुनु खिजिर खान सिरदानी। रन अमिट बुधिवत गियानी।
गुन विद्या सहास, सिधि पूरा। पडित पढा चढें रन सूरा।
दाहिनी भुजा साहि कँ भारी। जेहि दिसि खडा साइ दिसि गाढी।
जा कहु मयाँ बचन मुख बोलै। जिम धुव अचल न कबहू डोलै।
महा दानि जस समुद हिलोरा। असत न मुख सो निकसँ थोरा।

रन सरूप औ सूरा खट रस बिद्या जान।
दानि खरग सत साहस दस औ चारि निधान॥

(२३)

कटक माह एकै खडराहा। बादसाहि सइ आपु सराहा।
खरग दरब अरु रुहिर पिआसा। हिलन साग जस मूंस उदासा।
सुनतहि खिजिर खान प्रन दानौं। अरि उरि जनु बिजुली बज ठानौं।
चढे अनी सब सूर सराही। बाईं भुजा रूप सब जाही।
महाबीर जब ऊपर नौना। बारह बानि सुबासिक सोना।

दान खरग कलि नहि मिल गुन गाहक ससार।
सुनत सत्रु जिअ डरपै जेत कर गहै करवार॥

(२४)

अरे अरे बचन कहा तोर बासा। औ वह हुते तोर परगासा।
औ वह हुत उतपति भइ तोरी। जहा नाहि सचरित बुधि मोरी।
अचरिजु एक मोरे चित अहई। कोइ न अरथ ताहि कर कहई।
बचन केर उतपति मुह सेऊ। मानुस बोल अम्बर दहु केऊ।
रहै न बचन केर पति जहाँ। कै सें बचन अम्बर होइ तहाँ।

देखहु मनहि बिचारि कै बचन अच्न हिय माँह।
बचन ऐस है ताकर जो बर्तत सभ माँह॥

(२५)

वचन जौ नहि निरमवत त्रिधाता । केन सुनत कोई रस दाता ।
प्रथमहि आदि सिस्टि के पारा । हरिमुख वचन कीन्ह औतारा ।
एवं वचन आदि उकारा । भल मद होइ व्यापा सबसारा ।
त्रिधनैं जगत वचन बड कीन्हा । वचन हूतें पसु मानुस चीन्हा ।
वचन मैं बात जान सभ कोई । वचन हूतें परगट भा सोई ।
काहूँ सरुप न देखा औ काहु न जानेउ ठाइ ।
वचन हूतें भा परगट त्रिभुवन नाथ गोसाइ ॥

(२६)

वचन अमोल जगत नग आवा । वचन हूतें गुर ग्यान लखावा ।
चारि बेद विधनैं निरमएऊ । वचन जगत मह परगट भएऊ ।
वचन सरग सेतें भुइ आवा । औ त्रिधनैं जग वचन पठावा ।
जौ विछु वचन कैं सरभरि पावत । वचन ठाउ सोहू भुइ आवत ।
परथम मानुस होइ औनरिया । बहुरि अम्बर जुग चारि न मरिआ ।
वचन अमोल पदारथ बरन न सकेउ उरेगि ।
वचन ऐस विधना कर जावे रूप न रेख ॥

(२७)

प्रथमहिं आदि पेम परविस्टी । तो पाछें भइ सकल सिरिस्टी ।
उतपति सिस्टि प्रेम सो आई । सिस्टि रूप भर पेम सबाई ।
जगत जनमि जीवन फल ताही । पेम पीर उपजी जिअ जाही ।
जेहि जिअ पेम न आइ समाना । सहज भेद तेइ किछू न जाना ।
जेहि जग दइअ विरह दुख दिआ । त्रिभुवन केर राउ सो किआ ।
जनि कोइ बिरह दुखरा जिअ मानैं ओहि जग आवा सुक्ख ।
धनि जीवन जग ताकर जाहि विरह दुख दुक्ख ॥

(२८)

पेम अमोलिक नग मयसारा । जेहि जिअ पेम सो धनि औतारा ।
पेम लागि ससार उपावा । पेम गहा विधि परगट आवा ।
पेम जोति सभ सिस्टि अजोरा । दोसर न पाव पेम कर जोरा ।
बिरला कोइ जाके सिर भागू । सो पावै यह पेम सोहागू ।
सबद ऊच चारिहु जुग बाजा । पेम पथ सिर देइ सो राजा ।
पेम हाट चहु दिसि है पसरी गै बनिजौ जे लोइ ।
लाहा औ फल गाहक जनि डहकावैं कोइ ॥

(२९)

सिस्टि मूल बिरहा जग आवा। पै बिनु पुब्ब पुन्नि को पावा।
पेम पदारथ जगत अमोला। निहचै जिअ जानहु यह बोला।
देखा सुना जहाँ लगि होई। पेम बिवर्जित किछु नहि सोई।
पेम दिया जाकें घट बारा। तेहि सभ आदि अंत उचिआरा।
बिरह जीउ जेहि के घट होई। सदा अमर रहै मरै न साई।

कौनौं पाठ पढै नहि पाइअ बिरह वृद्धि औ सिद्धि।
जा कह देइ दयाल दया करि सो पावै यह निद्धि॥

(३०)

जेहि जिअ परै पेम कै रेखा। जह देखै तह देख अदेखा।
उपजि आव हिअ जौ पुनि ग्याना। जह देखै तह आपु अगाना।
पुनि जौ ग्यान बिरिख फर देई। सरबस दै दोसर नहि लेई।
कतहु सिस्टि मह रहै न ददू। जह देखहि तह आदि अनदू।
तुइ दीपक तेहि सिस्टि के ग्रेहा। कबहु जीउ जनि जानसि देहा।

दुख सुख सभ सयसार कर जेत भावै तेत होउ।
सो सभ परमैं आइ तोहि दोसर और न कोउ॥

(३१)

तैं जलनिधि सब निधि का भरा। काहे मरसि गरब बस परा।
तोर बदन तिरभुवन अजोरा। सकल सिस्टि मुख दरपन तोरा।
तोरिय जोति सकल परगासा। मिर्तु लोक पाताल अगासा।
सकल मिस्टि मह परगट तुही। सरबस तुइ दोसर कोइ नही।
जो कोई खोव सोइ (पै) जोवा। सो का जोइ जेहि नहि किछु खावा।

कौन सो ठाऊ जहाँ तैं नाही तीनि भुवन उजिआर।
निरखि देखु तैं सरबस पूरे सव ठाँ तोर बेवहार॥

(३२)

अब सुनु करम बान किछु आई। निरगुन रूप बैसु लौ लाई।
तन सो उरध लेहि गहि स्वासाँ। अगिनि हीय कै डोल बतासाँ।
झरके पवन अगिनि उदगरई। तौ कलक काया कर जरई।
तौ लहि सरब गात धुनि होई। जौ लहि बस्ट गहे रहु सोई।
औ नेही धुनि मो कर वासा। ताही जोति भीतर कबिलासा।

कोटि माँह बिरला जन कोई भोगइ वह कबिलास।
सुन्न मंदिल मह वास जस जहाँ निकट बेलास॥

(३३)

परिहरि सुद्धि बुद्धि औ ग्यानाँ । क्या बेवरजित लावहि ध्यानाँ ।
तौ समाधि लौ लागै जहाँ । आपु अपान पाव तू तहाँ ।
निरगुन जहाँ निरजन सूनाँ । तहाँ आपु सो आपु बिहूनाँ ।
ग्यान पार जहवाँ अग्यानाँ । तहाँ आपु सेउ आपु अयानाँ ।
सहज समाधि लाउ तैं तहाँ । आपु सेउ आपु पाउ सुधि जहाँ ।

सहज अलोलै लाइ लै निगम गोफ रह सूति ।
जहाँ न तै औ कोऊ औ एकौ करतूति ॥

(३४)

गढ़ अनूप बसि नगरि चनाँढी । कलिजुग मह लका सो गाढी ।
पुरुब दिसा जरगी फिरि आई । उतर पछिम गग गढ खाई ।
देखे बनै जाइ नहि कही । गढ भीतर गगा चलि बही ।
साहि सहस जो लागहि आई । जाहि हारि सिर ठेंगा खाई ।
ऊपर छाजा अनबन भाति । हेठ बही सुरसरि सरसाती ।

नगरि अनूप सोहावनि औ गढ़ बिखम अगम ।
बरबस हाथ न आवै बिनु जस पुब्ब करम ॥

मुख्य सहायक ग्रन्थों की सूची

फारसी

अफीफ, शम्स सिराज — तारीखे फीरोज शाही (कलकत्ता १८९० ई०)

अबुल फजल — अकबर नामा (कलकत्ता १८७३-८७ ई०)
आईने अकबरी (नवल किशोर प्रेस १८९२ ई०)

अब्दुल बाकी निहावन्दी — मआसिरे रहीमी (कलकत्ता १९१०–३१ ई०)

अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी — अख़बारुल अख़ियार (देहली १३३२ हि०)
तारीखे हक्की (अलीगढ हस्तलिपि)

अब्दुल्लाह — तारीखे दाऊदी (अलीगढ १९५४ ई०)

अब्बास खा सरवानी — तोहफये अकबरशाही अथवा तारीखे शेरशाही (अलीगढ, इलाहाबाद, डा० परमात्मा शरण एव बाडलिएन की हस्तलिपियाँ)

अमीन अहमद राजी — हफ्त इकलीम (अलीगढ हस्तलिपि)

अमीर खुर्द, सैयिद मुहम्मद मुबारक अलवी — सियरुल औलिया (देहली १८८५ ई०)

अमीर खुसरो — यस्तुल हयात (अलीगढ)
खजायनुल फुतूह (अलीगढ १९२७ ई०)
केरानुस्सादैन (अलीगढ १९१८ ई०)
दिवल रानी तथा खिज्र खा (अलीगढ १९१७ ई०)
मिफताहुल फुतूह (अलीगढ १९२७ ई०)
नुह सिपेहर (इस्लामिक रिसर्च एसोसिएशन १९५० ई०)
तुग़लुक नामा (हैदराबाद १९३३ ई०)

अमीर महमूद बिन ख्वन्द मीर — तारीखे अमीर महमूद (ब्रिटिश म्युजियम हस्तलिपि)

अलाउद्दौला कजवीनी — नफायसुल मआसिर (अलीगढ हस्तलिपि, एव रामपुर रिजा पुस्तकालय हस्तलिपि)

अली कुली खा वालेह दागिस्तानी — रियाजुश्शुअरा (अलीगढ हस्तलिपि)

अहमद बिन बहबल — मादने अख़बारे अहमदी (इडिया आफिस लन्दन हस्तलिपि)

अहमद, मुल्ला, इत्यादि — तारीखे अलफी (अलीगढ हस्तलिपि)

अहमद यादगार — तारीखे शाही (कलकत्ता १९३९ ई०)

आजाद, मीर गुलाम अली — सर्वे आजाद (लाहौर १९१३ ई०)
ख़जानये आमेरा (कानपुर १८७१ ई०)

फ़ कन्धारी, मुहम्मद	तारीख़े अकबरी (रामपुर रिज़ा पुस्तकालय हस्तलिपि)
ाहीम बिन जरीर	तारीख़े इबराहीमी (अलीगढ़ हस्तलिपि)
न्दर मुंशी	तारीख़े आलम आराये अब्बासी (तेहरान १३१३-१४ हि०/१८९६-९७ ई०)
मी	फ़ुतूहुस्सलातीन (मद्रास १९४८ ई०)
र	अफ़सानये शाहान (ब्रिटिश म्युज़ियम, लन्दन हस्तलिपि)
़ी अहमद बिन मुहम्मद अल ग़फ़्फ़ारी	नुस्ख़े जहाँ आरा (ब्रिटिश म्युज़ियम, हस्तलिपि)
गार हुसेनी, ख़्वाजा	मआसिरे जहाँगीरी (अलीगढ़ हस्तलिपि)
सिम गूनाबादी, मीर्ज़ा	शाहनामये क़ासिमी (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
ल राम	तज़किरतुल उमरा (हबीबगंज, अलीगढ़ हस्तलिपि)
न ख़ानाँ, अब्दुर्रहीम	बाबर नामा, मासूम व तुज़ुके बाबरी व फ़ुतूहाते बाबरी (बम्बई १३०८ हि०/१८९० ई०), अलीगढ़ हस्तलिपि)
़ी ख़ाँ	मुन्तख़बुल्लुबाब (कलकत्ता १८६०-७४, १९०९-१९२५ ई०)
द मीर, गयासुद्दीन इब्ने हुमामुद्दीन मुहम्मद	हबीबुस्सियर (तेहरान १२७१ हि/१८८५ ई०)
	हुमायूँ नामा अथवा क़ानूने हुमायूनी (कलकत्ता १९४० ई०)
र शाह बिन कुबाद हुसेनी	तारीख़े एलचीये निज़ाम शाह (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
ाफ़ी, शेख़ ज़ैनुद्दीन, वफ़ाई	तुज़ुके बाबरी (रामपुर रिज़ा पुस्तकालय हस्तलिपि)
़्बदन बेगम	हुमायूँ नामा (लन्दन १९०२ ई०)
़ाम हुसेन सलीम	रियाज़ुस्सलातीन (कलकत्ता १८९० ई०)
ाँगीर	तुज़ुके जहाँगीरी (ग़ाज़ीपुर तथा अलीगढ़ १८६३-६४ ई०)
हर, मेहतर, आफ़ताबची	तज़किरतुल वाक़ेआत (अलीगढ़ तथा ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
़ी औहदी	अरफ़ातुल आरफ़ीन (ख़ुदाबख़्श बाँकीपुर पटना पुस्तकालय हस्तलिपि)
	तज़किरये शाह तहमास्प (कलकत्ता)
हिर नसाबादी	तज़किरये ताहिर नसाबादी (तेहरान १३१६-१७ हि०)
ाहिर मुहम्मद हसन	रौज़तुत्ताहिरीन (रामपुर हस्तलिपि)
ीमूर, सुल्तान (?)	मलफ़ूज़ाते तीमूरी (अलीगढ़ हस्तलिपि)
ौलत शाह समरक़न्दी	तज़किरतुश्शुअरा (बम्बई १८८७ ई०)
नज़ामुद्दीन अहमद	तबक़ाते अकबरी (कलकत्ता १९२७ ई०)

नूरुल हक़ देहलवी	जुब्दतुत्तवारीख़ (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
पायदा हसन गजनवी तथा मुहम्मद कुली मुग़ुल हिसारी	तुज़ुके बाबरी (ब्रिटिश म्युज़ियम, रियु, भाग २, ७९९ ब)
फ़िरिश्ता, मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह	तारीख़े फ़िरिश्ता (नवल किशोर प्रेस)
फ़ीरोज़ शाह तुग़लुक़	फ़ुतूहाते फ़ीरोज़शाही (अलीगढ़)
फ़ैज़ी सरहिन्दी	हुमायूँशाही (कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी तथा इंडिया आफ़िस लन्दन की हस्तलिपियाँ)
	जवाहर शाही (इंडिया आफ़िस हस्तलिपि, ईथे २११, आई–ओ ३९४६)
बदायूनी, अब्दुल क़ादिर	मुन्तख़बुत्तवारीख़ (कलकत्ता १८६८ ई०)
बरनी, ज़ियाउद्दीन	तारीख़े फ़ीरोज़शाही (कलकत्ता १७६०-६३ ई०)
	तारीख़े फ़ीरोज़शाही (रामपुर हस्तलिपि)
	फ़तावाये जहाँदारी (इंडिया आफ़िस लन्दन, हस्तलिपि)
	सहीफ़ये नाते मुहम्मदी (रामपुर हस्तलिपि)
बायज़ीद ब्यात	तारीख़े हुमायूँ व अकबर (कलकत्ता १९४१ ई०)
माहरू	इन्शाये माहरू (अलीगढ़)
मीर्ज़ा बेग बिन हसन हुसेनी जूनाबादी	रौज़तुस्सफ़विया (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
मुतहर कड़ा	दीवान (प्रोफ़ेसर मसऊद हसन रिज़वी अदीब, लखनऊ की हस्तलिपि)
मुश्ताक़ी, शेख रिज़्क़ुल्लाह	वाक़ेआते मुश्ताक़ी (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
मुहम्मद बख़्तावर ख़ाँ	मिरआते आलम (अलीगढ़ हस्तलिपि)
मुहम्मद बिहामद ख़ानी	तारीख़े मुहम्मदी (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
मुहम्मद मासूम	तारीख़े सिन्ध (पूना १९३७ ई०)
मुहम्मद सादिक़	सुबहे सादिक़ (अलीगढ़ हस्तलिपि)
मुहसिन फ़ानी	दबिस्ताने मज़ाहिब (बम्बई)
मोतमद ख़ाँ	इक़बाल नामये जहाँगीरी (लखनऊ १८७० ई०)
यज़्दी, शरफ़ुद्दीन अली	ज़फ़र नामा भाग ३ (कलकत्ता १८८५-८८ ई०)
यहया बिन अब्दुल्लतीफ़	लुब्बुत्तवारीख़ (अलीगढ़ हस्तलिपि)
यहया बिन अहमद सिहरिन्दी	तारीख़े मुबारकशाही (कलकत्ता १९३१ ई०)
रफ़ीउद्दीन शीराज़ी	तज़किरतुल मुलूक (सालार जंग हैदराबाद हस्तलिपि)
राय चतुरमन	चहार गुलशन (अलीगढ़ हस्तलिपि)
शरफ़ ख़ाँ	शरफ़नामा (सेंट पीटर्सबर्ग १८६०-६२ ई०)
शाह नवाज़ ख़ाँ	मआसिरुल उमरा (कलकत्ता १८८८-९१ ई०)
शेर ख़ाँ लोदी	मिरआतुल ख़याल (कलकत्ता १८९१ ई०)
सरखुश	कलेमातुश्शुअरा (रामपुर रिज़ा पुस्तकालय एवं अलीगढ़ हस्तलिपि)

आरिफ़ कन्धारी, मुहम्मद	तारीखे अकबरी (रामपुर रिज़ा पुस्तकालय हस्तलिपि)
इबराहीम बिन जरीर	तारीखे इबराहीमी (अलीगढ़ हस्तलिपि)
इस्कन्दर मुंशी	तारीखे आलम आराये अब्बासी (तेहरान १३१३-१४ हि०/१८९६-९७ ई०)
एसामी	फ़ुतूहुस्सलातीन (मद्रास १९४८ ई०)
कबीर	अफ़सानये शाहान (ब्रिटिश म्युज़ियम, लन्दन हस्तलिपि)
क़ाज़ी अहमद बिन मुहम्मद अल ग़फ़्फ़ारी	नुस्खे जहां आरा (ब्रिटिश म्युज़ियम, हस्तलिपि)
कामगार हुसैनी, ख़्वाजा	मआसिरे जहाँगीरी (अलीगढ़ हस्तलिपि)
क़ासिम गूनाबादी, मीर्ज़ा	शाहनामये क़ासिमी (ब्रिटिश म्युजियम हस्तलिपि)
केवल राम	तज़किरतुल उमरा (हबीबगंज, अलीगढ़ हस्तलिपि)
ख़ाने ख़ानाँ, अब्दुर्रहीम	बाबर नामा, मासूम व तुज़ुके बाबरी व फ़ुतूहाते बाबरी (बम्बई १३०८ हि०/१८९० ई०), अलीगढ़ हस्तलिपि)
ख़ाफ़ी खा	मुन्तख़बुल्लुबाब (कलकत्ता १८६०-७४, १९०९-१९२५ ई०)
ख़्वान्द मीर, गयासुद्दीन इब्ने हुमामुद्दीन मुहम्मद	हबीबुस्सियर (तेहरान १२७१ हि/१८८५ ई०)
	हुमायूं नामा अथवा क़ानूने हुमायूनी (कलकत्ता १९४० ई०)
ख़्वर शाह बिन कुबाद हुसैनी	तारीखे एलचीये निज़ाम शाह (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)
ख़्वाफ़ी, शेख़ ज़ैनुद्दीन, वफ़ाई	तुज़ुके बाबरी (रामपुर रिज़ा पुस्तकालय हस्तलिपि)
गुलबदन बेगम	हुमायूं नामा (लन्दन १९०२ ई०)
गुलाम हुसैन सलीम	रियाज़ुस्सलातीन (कलकत्ता १८९० ई०)
जहाँगीर	तुज़ुके जहाँगीरी (गाज़ीपुर तथा अलीगढ़ १८६३-६४ ई०)
जौहर, मेहतर, आफ़्ताबची	तज़किरतुल वाक़ेआत (अलीगढ़ तथा ब्रिटिश म्युजियम हस्तलिपि)
तक़ी औहदी	अरफ़ातुल आरफ़ीन (ख़ुदाबख़्श बाँकीपुर पटना पुस्तकालय हस्तलिपि)
	तज़किरये शाह तहमास्प (कलकत्ता)
ताहिर नसराबादी	तज़किरये ताहिर नसराबादी (तेहरान १३१६-१७ हि०)
ताहिर मुहम्मद हसन	रौज़तुत्ताहिरीन (रामपुर हस्तलिपि)
तीमूर, सुल्तान (?)	मलफ़ूज़ाते तीमूरी (अलीगढ़ हस्तलिपि)
दौलत शाह समरक़न्दी	तज़किरतुश्शुअरा (बम्बई १८८७ ई०)
निज़ामुद्दीन अहमद	तबक़ाते अकबरी (कलकत्ता १९२७ ई०)

ENGLISH

Ahmad, M B — *The Administration of Justice in Medieval India* (Aligarh 1941)

Arberry, A J — *Classical Persian Literature* (London 1958)

Ashraf, K M — *Life and Conditions of the People of Hindustan* (Delhi 1959)

Banerji, S K — *Humayun Badshah* Vol I (Oxford University Press 1938), Vol II (Lucknow 1941)

Bayley, E C — *History of Gujrat* (London 1886)

Bellew — *Journal of a Political Mission to Afghanistan* (London 1857)

Beni Prasad — *History of Jahangir* (Allahabad 1930)

Beveridge, A S — *Humayun Nama* (London 1902)

The Babur Nama in English (London 1921)

Notes on the Manuscripts of the Turki Text of the Babar's Memoirs (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1900, pp 439 480)

Further Notes on the Manuscripts of the Turki Text of Babar s Memoirs (Journal of the Royal Asiatic Society London 1902, pp 635-659)

The Haydarabad Codex of the Babar Nama or Waqiat i Babari (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1905, pp 741 762)

The Haydarabad Codex of the Babar Nama or Waqiat i Babari (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1906, pp 79 93)

Further Notes on the Babar Nama Manuscripts (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1907, pp 131 144)

The Babar Nama—The Material now available for a Definitive Text of this Book (Journal of the Royal Asiatic Society London 1908, pp 73 98)

Beveridge, H — *The Akbarnama of Abul Fazl* (Calcutta 1897 1921)

Note on the Tarikh i-Salatin i Afaghinah (Journal of the Asiatic Society of Bengal 1916, pp 297 298)

साम मीर्ज़ा	तोहफ़ये सामी (तेहरान १९३६ ई०)
सिकन्दर इब्ने मुहम्मद उर्फ़ मञ्झू	मिरआते सिकन्दरी (बम्बई १३०८ हि०/१८९०-९१ ई०)
सुजान राय भंडारी	ख़ुलासतुत्तवारीख़ (देहली १९१८ ई०)
हमीद कलन्दर	ख़ैरुल मजालिस (अलीगढ़)
हसन, अमीर, सिजज़ी	फ़वाएदुल फ़ुआद (देहली १२७२ हि०)
हसन बेग रूमलू	एहसनुत्तवारीख़ (बड़ौदा १९३१ ई०)
हाजी अब्दुल हमीद मुहर्रिर	दस्तूरुल अलबाब फ़ी इल्मिल हिसाब (हस्तलिपि रामपुर)
हैदर मीर्ज़ा	तारीखे रशीदी (अलीगढ़ हस्तलिपि)
	अफ़ज़लुत्तवारीख़ (ब्रिटिश म्युज़ियम हस्तलिपि)

अरबी

इब्ने बत्तूता	यात्रा का विवरण (पेरिस १९४९ ई०)
कलक़शन्दी	सुबहुल आशा फ़ी सिनाअतिल इन्शा (क़ाहिरा १९१५ ई०)
शिहाबुद्दीन अल उमरी	मसालिकुल अबसार फ़ी ममालिकुल अमसार
हाजी-उद्-दबीर	ज़फ़रुल वालेह (लन्दन १९१० ई०)

तुर्की

बाबर, ज़हीरुद्दीन मुहम्मद	बाबर नामा (लेईडेन तथा लन्दन १९०५ ई०, गिब मेमोरियल सीरीज़, १)

उर्दू

सर सैयिद अहमद ख़ां	आसारुस्सनादीद (कानपुर १९०४ ई०)

हिन्दी

रिज़वी, सैयिद अतहर अब्बास	आदि तुर्क कालीन भारत (अलीगढ़ १९५६ ई०)
	ख़लजी कालीन भारत (अलीगढ़ १९५४ ई०)
	तुग़लुक़ कालीन भारत भाग १ (अलीगढ़ १९५६ ई०)
	तुग़लुक़ कालीन भारत भाग २ (अलीगढ़ १९५७ ई०)
	उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग १ (अलीगढ़ १९५८ ई०)
	उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २ (अलीगढ़ १९५९ ई०)
	मुग़ल कालीन भारत—बाबर (अलीगढ़ १९६० ई०)
	मुग़ल कालीन भारत—हुमायूं भाग १ (अलीगढ़ १९६१ ई०)

ENGLISH

Ahmad, M B. — *The Administration of Justice in Medieval India* (Aligarh 1941)

Arberry, A J. — *Classical Persian Literature* (London 1958)

Ashraf, K. M — *Life and Conditions of the People of Hindustan* (Delhi 1959)

Banerji, S. K. — *Humayun Badshah* Vol. 1 (Oxford University Press 1938), Vol II (Lucknow 1941)

Bayley, E C — *History of Gujrat* (London 1886)

Bellew — *Journal of a Political Mission to Afghanistan* (London 1857)

Beni Prasad — *History of Jahangir* (Allahabad 1930)

Beveridge, A S — *Humayun Nama* (London 1902)

The Babur Nama in English (London 1921)

Notes on the Manuscripts of the Turki Text of the Babar's Memoirs (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1900, pp 439-480)

Further Notes on the Manuscripts of the Turki Text of Babar's Memoirs (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1902, pp 635-659)

The Haydarabad Codex of the Babar Nama or Waqiat-i-Babari (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1905, pp 741-762)

The Haydarabad Codex of the Babar Nama or Waqiat-i-Babari (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1906, pp 79-93)

Further Notes on the Babar Nama Manuscripts (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1907, pp. 131-144)

The Babar Nama—The Material now available for a Definitive Text of this Book (Journal of the Royal Asiatic Society, London 1908, pp 73-98)

Beveridge, H — *The Akbarnama of Abul Fazl* (Calcutta 1897-1921)

Note on the Tarikh-i-Salatin-i-Afaghinah (Journal of the Asiatic Society of Bengal 1916, pp 297-298)

The Memoirs of Bayazid Biyat (Journal of the Asiatic Society of Bengal 1898, pp 296 316)

Blochmann, H — *Contributions to the Geography and History of Bengal* (Muhammadan Period) [Journal Asiatic Society Bengal, XIII, Part I, pp 209 310 (1873)]

Badaoni and His Works (Journal Asiatic Society Bengal 1869, Part I, pp 105-144)

Blochmann H, and Jarret, H S — *The Ain-i Akbari by Abul Fazl Allami* (Calcutta 1868 1894)

Browne, E G — *Literary History of Persia*, 4 Volumes

Burgess, J — *The Ahmadabad Architecture* Part I (London 1900)

The Muhammadan Archtectue of Bharoach Cambay, Dholka, Champanir and Mahamadabad in Gujrat (London 1896)

Burnes, Sir Alexander — *Cabool* (London 1842)

Chardin Sir John — *The Travels of Sir John Chardin into Persia and East Indies* 2 Parts (London 1686)

Travels in Persia with an introduction by Sir Percy Sykes (London 1927)

Codrington, O — *Coins of the Bahmani Dynasty, Numismatic Chronicle*, 3rd Series, Vol XVIII

Crooke, W — *The Tribes and Castes of N W Provinces and Oudh* (Calcutta 1896)

The North Western Provinces of India, their History, Ethnology and Administration (London 1897)

Natives of Northern India (London 1907)

Rural and Agricultural Glossary of the N W Provinces of Oudh (1888)

Curzon, George N — *Persia and the Persian Questions*, 2 Vols (London 1892)

Dames, Mansel Longworth — *The Book of Duarte Barbosa*, Vols I and II (Hakl Society, 1918, 1921)

Ebtehaj G H — *Guide Book on Persia* (Tehran 1933)

Ellias, N, and Ross, E D — *The Tarikh i Rashidi* (London 1895)

Elliot, H — *History of India as told by its historians*, Edited by John Dowson 8 Vols (London 1867 77)

Bibliographical Index

Erskine, William — *Memoirs of Zehir ud Din Muhammad Baber, Emperor of Hindustan* (London 1826)

Erskine, W — *History of India*, (Baber and Humayun) (London 1854)

Ethe, H — *Catalogue of the Persian Manuscripts in the Library of India Office*

Faridi — *English Translation of Mirat i Sikandari*

Fergusson, J — *History of Indian and Eastern Architecture*, 2 Vols (London 1910)

Forbes, A K — *Ras Mala, or Hindoo Annals of the Province of Goozerat in Western India* 2 Vols (London 1856)

An Historical and Descriptive account of Persia, from the earliest ages to the present time (Edinburgh 1834)

Narrative of a Journey into Khorasan (London 1825)

Ghani Muhammad Abdul — *A History of Persian Language and Literature at the Mughal Court*, 3 Parts (Allahabad)

Gibb, H A R — *Ibn Battuta* (London 1929)

Goldsmaid, F J — *Eastern Persia*, 2 Vols (London 1876)

Hadi Hasan — *The Unique Diwan of Humayun Badshah*

Haig, M R — *The Indus Delta Country* (London 1894)

Haig, Sir Wolseley — *The Cambridge History of India*, Vol IV, (Cambridge 1928)

Muntakhab ut-Tawarikh (Calcutta 1925)

The Historic Landmarks of the Deccan (Allahabad 1919)

Haig, T W — *The Chronology and the Genealogy of the Muhammadan Kings of Kashmir* [Journal Royal Asiatic Society Bengal, pp 451-468 and a table, (1918)]

Some Notes on the Bahmani Dynasty, Part I, Extra No, pp 1-15

Herklots, G A — *Islam in India* (London 1921)

Hodivala, S H — *Studies in Indo-Muslim History*, Vols I, II (Bombay)

Hughes, T P. — *Dictionary of Islam* (London 1935) *Supplement*, Volumes 2 (Bombay 1936)

Ibn Hasan — *The Central Structure of the Mogul Empire* (Bombay 1936)

Ibbetson, Sir D — *A Glossary of the Tribes and Castes of the Punjab and North West Frontier Province* (Lahore 1919)

Irvine, W — *The Army of the Indian Moghuls* (London 1903)

Ishwari Prasad — *The Life and Times of Humayun* (Calcutta 1956)

Khosla R P — *The Mughal Kingship and Nobility* (Allahabad 1934)

King, Major J S — *History of the Bahmani Dynasty* (Indian Antiquary 1899)

King Sir Lucas — *Memoirs of Zahir ed Din Muhammad Babur* Translated by J Leyden (Annotated and revised)

Kinneir, J M — *A Geographical Memoir of the Persian Empire* (London 1813)

Leyden, L, and Erskine, W — *Life of Babur, Emperor of Hindustan* (London 1844)

MacGregor, Sir Charles M — *Narrative of a Journey through the province of Khorasan and of the N W Frontiers of Afghanistan in* 1872, 2 Vols (London 1879)

Minorsky V — *Hudud al Alam* (London 1937)

Mirza, M W — *The Life and Works of Amir Khusrau* (Calcutta 1935)

Moreland, W H — *The Agrarian System of Moslem India* (Cambridge 1929)

India at the death of Akbar (London 1920)

Morier, J — *A Journey through Persia, Armenia and Asia Minor, to Constantinople in the years* 1808 *and* 1809 (London 1812)

Nassau Lees, W — *Materials for the History of India for the six hundred years of Mohammadan rule* (Journal Royal Asiatic Society 1868 pp 414-477)

Pandey, A B — *The First Afghan Empire in India* (Calcutta 1956)

Qureshi, I H — *The Administration of the Sultanate of Delhi* (Lahore 1944)

Notes on Afghanistan (London 1888)

Raverty, H G — *The Mihran of Sind and its tributaries a Geographical and Historical Study* [Journal Asiatic Society Bengal, LXI, Pt I, pp 155 508, 9 plates (1892 93)]

Ray, Sukumar — *Humayun in Persia* (Calcutta 1948)

Rieu, C — *Catalogue of the Persian Manuscripts in the British Museum London*

Rodgers, C J — *The square silver coins of the Sultans of Kashmir* [Journal Asiatic Society Bengal, LIV, Pt I, pp 92 139 3 pts (1885)]

Rodgers, A , and Beveridge, H — *Memoirs of Jahangir* (London 1904 1914)

Rushbrook Williams, L F — *An Empire Builder of the Sixteenth Century* (Longmans Green & Co 1918)

A new Persian Authority on Babur (Journal of the Asiatic Society Bengal, 1916 pp 297 298)

Saran, P — *Islamic Polity* (Allahabad)

Studies in Medieval Indian History (Delhi 1959)

The Provincial Government of the Mughals (Allahabad 1914)

Sarda, H B — *Maharana Sanga* (Ajmer 1918)

Sarkar, J N — *The India of Aurangzib* (topography, statistics and roads) compared with the India of Akbar with extracts from the *Khulasat ut-Tawarikh* and the *Chahar Gulshan* (Calcutta 1901)

Saxena, B P — *Memoirs of Baizid* (Allahabad University Studies, Vol VI, Pt I, 1930, pp 71-148)

Scott, J — *History of Deccan* (London 1794)

Sewell, R — *A Forgotten Empire* (Vijayanagar), (London 1900)

Sewell, Robert and Diksit, S B — *Indian Calendar* (London 1896)

Spranger, A — *A Catalogue of the Arabic, Persian and Hindustani Manuscripts*, Vol I (Calcutta 1854)

Smith, V A — *Akbar-The Great Mogul* (Oxford 1917)

Stein, Sir Aurel — *Kalhana's Rajatarangini*, Vols I, II (Westminster 1900)

Stewart, C — *The History of Bengal* (London 1913)

Stewart, Major C — *The Tezkereh-al-Vakiat* (London 1832)

Storey, C A — *Persian Literature—A Bio bibliographical Survey*

Strange, G Le — *The Lands of the Eastern Caliphate* (Cambridge 1903)

Sykes, Sir Percy — *A History of Persia*, 2 Vols (London 1930)

Tara Chand — *Influence of Islam on Indian Culture* (Allahabad 1936)

Thomas, E — *The Chronicles of the Pathan Kings of Delhi* London 1871)

Thornton, E — *A Gazetteer of the Territories under the Government of the East India Company* (London 1857)

Tod, Col J — *Annals and Antiquities of Rajasthan* (Oxford 1950)

Tripathi, R P — *Rise and Fall of the Mughal Empire* (Allahabad 1960)

Some Aspects of Muslim Administration (Allahabad 1956)

Wood, Captain John — *A Journey to the Source of the River Oxus* (London 1872)

Wright, H N — *The Coinage and Metrology of the Sultans of Delhi* (Delhi 1936)

पारिभाषिक शब्दों की नामानुक्रमणिका

(अ)

अकबा ८४

अकली (ज्ञान) ४०६, ४६२

अक्ता १७, ७७, ८५, ८६, ८६, १२८, १३२, १३६, १६४, १६६, १६४, २२४, २२८, २३१, २३४, २८६

अख्ताजियो ६२

अतलस १२, ३००, ३०२, ३०४, ३०५, ४४६

अताबक ६७, ८६

अताबकी १५५

अतालीक ८१, ११८, १२०, १२६, १३६, १५५, १५७, १७०, २१२, २२२, २३१, २३४, २४३, ३१२, ३२६, ३६१, ३६४, ३६२, ४०४

अतालीकी २२२

अत्का ६६, १०६, ३६६

अदरार ३०८

अवलक ३६८, ४१७,

अमल ४२२

अमवाल ३३५

अमान २००

अमीन ४००

अमीर ४, ५, ६, १०, १२, १३, १४, १५, १६, १७, २३, २६, २७, २८, २६, ३०, '३१, ३२, ३६, ३८, ४४, ४५, ४८, ५२, ५५, ५६, ५६, ६२, ६३, ६७, ६६, ७४, ७५, ७८, ७६, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८६, ६८, १०१, १०३, १०५, १०६, १०६, ११२, ११५, ११८, १२१, १२६, १२७, १२८, १३०, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १४३, १४६, १४७, १५८, १६१, १६७, १६८, १७०, १६५, १६७, १६८, २०३, २०४, २०५, २०६, २१२, २१३, २१६, २१६, २२३, २२४, २३०, २३२, २३३, २३५, २४०, २५३, २५५, २५६, २६०, २६१, २६४, २६५, २६६, २६७, २७२, २७४, २७६, २८३, २६०, ३००, ३०१, ३०५, ३०६, ३०७, ३११, ३१२, ३१५, ३२५, ३२८, ३२६, ३३१, ३३५, ३४२, ३५०, ३५१, ३५५, ३५७, ३५८, ३६१, ३६४, ३६६, ३७१, ३७५, ३७६, ३८४, ३८५, ३८७, ३८८, ३६३, ३६५, ३६६, ४००, ४०२, ४११, ४१४, ४१५, ४१६, ४२३, ४२४, ४२५, ४२८, ४३५, ४३६, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४५४, ४५५, ४६१, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४७२, ४७३, ४७५, ४७८, ४७६, ४८०, ५८१

अमीर शाही ३०७

अमीर शिकार ३५

अमीरुल अख्बार १०

अमीरुल उमरा २५८, ३१६

अमीरुल उमराई १४५, १६६

अयालत ३, ४, २३, ३०

अरक ८७, ७५, ६८, १००, १२२, १६०, ३२७, ३३०, ३३८, ३३६, ४३८, ४४१, ४४६

अरफ़ात ४८२
अराबा २६, २७, २४७, २४८, २७२, ४१४, ४२६, ४३५, ४४८, ४५२, ४५६, ४५७, ४५८, ४६३, ४६८
अर्ज़ १७८
अलम ३३७, ४२४
असहवी अम्बर ३०२
असहाब २६६
अस्तबल ३२८
अहदी २४७
अहले सआदत २८२

(आ)

आईन बन्दी ४१
आईना बन्दी २६३, ३१४, ३३१, ३३२
आख़ुन्द १६५, १६६, ४२४
आफ़्ताबचियो ११४
आतशख़ाना ४५६
आतशबाज १४५
आतशबाज़ी १६२, २४७
आफ़्ताबगीर २६७
आफ़ताबा ३४६
आफ़्ताबाख़ाना ३४६
आमिल २०१, ३६४, ४२३, ४५३
आयतें १८०, ४४१
आसूर १८५
आस्ताने ३६२

(इ)

इक़लीम ४०६, ४३३
इनाम ४, १०, १३, ६३, १६६, १८६, २३६, २४६, ३०४, ३०८, ४१२, ४३६, ४४६, ४४८, ४५१, ४७४
इमाम ६, १२६, १८५
इमामियों २३५
इशरत ख़ाना ३४५
इशराफ़े दीवानी ३१६, ३६१
इस्तिन्जा ४४२

(ई)

ईमारात ३४६, ३६३

(उ)

उलूफ़ा ३७२
उलूश ३५७
उलूस ७३, ७४, ७५, ७८, ७६, ८२, १२०, १२१, १२२, १२६, १३३, १३४, १३५, १६८, २०६, २२०, २२८
उलूमे ख़ासा ४७६
उस्तुरलाब ३१४, ३१६

(ए)

एतकाफ़ १७६
एलचा ४२४
एहराम ३४, ३३७

(क)

कज़ा व क़दर ११
कजाकों ४३५
क़तार १५६ (देखिये 'क़ितार' भी)
क़बा १६२, १६३
कश्क १८४, ३१२, ३१५, ३६२
कमन्द २८
कमरगह ३१२, ३१३, ३६१, ४०५
क़यामत १३, २६, २७, ४४, ६३, ६४, ६६,

६७, ११६, १५६, १६६, २०६, २७४, २७६, २८८, ३१८, ३४६, ३६३, ४११, ४१४, ४१५, ४२२, ४३६
करावल ४५, २६८, २७७, ३६२
करावली २७, ७५, ८८, १३६, २३३, २६४, २७६
करोडी ४१६
कलन्दर २२७, ३७५
कलान्तर ३०६, ३१०
कलावन्दो ४२३
कल्मये शहादत २१०
कशितयेजर ६३
कसीदा १४४, १६२, १७५, १७६, १७६, १८२, १८४, १८७, १८८, १८६, ३८०, ३६२, ४११
काजी १६६, १८६, २५८, ३८६
काफिया १७५, १८४, ३१०
कारखानो ३६८, ३७२, ३८१, ३८२
कितआ ६, १३, ३०, १४२, १६२, १६४, १६७, १७२, १७३, १७६, १७७, १८८, १६१, १६७, २२६, २३६, ४७४
किताबखाना ८६, १३७, १७२, ३२४, २५२
किताबदार ६२, ११४, २१०, २५५, २७६, ३६२, ३६३, ३६७, ३६८, ३७२, ३७३, ४३७, ४५०
कितार ४२, २२१, ३०२, ३०६
किब्ला ३४
किम्खाव १२
किरवर सितानी ११
किला बन्दी ३५१
कीमिया १८, ३०५, ३५४
कुतुब १३, ४६७
कुतुब आलम ४५३
कुतुबखाने ४०६
कुबूज ३५६
कुब्बे २६८
कुरा ३८२
कुरोह ४८, ५७, ५६, ७५, १०१, १६२, १०६, ११०, १११, १२२, १५१, १५३, २०१, २०८, २१५, २५७, २७७, २७८, २८२, २८६, २८६, ३३०, ३८५, ४०२, ४२४, ४२६, ४४२, ४४४, ४७८
कुर्रह ३१४
कुलकची ३४५, ३५२
कूचाबन्द ३२०, ३६३
कूर ३४१, ३५६, ४२८
कूरची ३१३, ३३५, ३३८, ३३६, ४१५, ४१७, ४३८
कूरबेगी ३६८
केश ३११
कोतवाली २६
कोताह सलाह ६८
कोरनिश २६७, ३५५, ४०४

(ख)

खजानादार ४००
खत शिकस्त ३१६
खतीब १७६
खम्से ३८१
खरगाह ३११, ३३५, ३५७, ३८०, ४१७
खलीफा १६६, २६६, ३१३, ४१०, ४५५
खाकानी १०
खानकाह १८१
खारजी ३२२
खारबन्द १०१
खालसे ८६, १६६
खासा खेल २४०, २४८
खासे ११४, ३१३, ३२८, ३६३, ३६१, ४२०
खिलअत १२, १३, ४८, ६४, ११०, १४२

१५१, १६०, १६४, २०६, २४६, २६२, २७७, ३०४, ३५०, ३५१, ३५५, ४१२, ४२३, ४२८, ४५०, ४७२, ४७६
ख़िलाफत ११, २४६, ३५८, ३७३, ३७६, ३८१, ३६१, ४००, ४०२
ख़ुत्बा २, ४, ६, २१, ३३, ५३, ६०, ६१, १०२, १०६, १०७, ११२ ११४, १३६ १४६, १४७, १४८, १५२, १५४, १५७, १६६, १७६ २०२ २०३, २०५, २०६, २०६, २१६ २२०, २५६, २६५ २६६ २६२, २६३ ३३३, ३५४, ३६५, ४२८, ४७४
ख़ुल्फा ३१२
ख़्वाजा सरा २१५

(ग)

गजल ३६६
गर्दबाज २७१
गर्दूनो २७५
गल्ले ७६, १२७
गिचक ३५६
गिलीम ३२७
गुमाश्ते १००
गोलावान ३००
गोलवानी ३००

(च)

चग ३५६
चाश्नीगीर ३००
चीनी ख़ाना १०३
चोबदार २५४
चौगान २५८

(ज)

जबागीरी २८५
जमजमा ३४०, ३५२, ३८३
जमाअ ४८१
जमाल तथा जलाल ५
जमीन बोस १५७, ३३७, ३८६, ३६७
जमीनबोसी २६२
जरतश्ती ८६
जरदोजी २६६
जरबफ्त २६६, ४०६
जरा ३२२
जरीदा ५६, १५७, ३५०, ४६०
जर्बजन ५६, २७५, ३२०, ३४१, ४७८
जवाहिर १७६
जहाँगीरी ३१०, ३८३
जहाँबहानी (जहाँबानी) ११
जागीर ६०, ७०, ६३, १४६, २१२, २२३, २२४, २४०, २५५, २६१, २६४, २७३, २८५, २६३, ३२८, ३३३, ३३५, ३३६, ३३७, ३३६, ३५६, ३६६, ३७२, ३७८, ३८०, ३८३, ३६१, ३६२, ४०२, ४०४, ४११, ४१२, ४२३, ४२६
जागीरदारी २६६, २७६
जागीरे तन्खा ४०२
जामे ३००
जायर १५७
जालावानी ३१७
जाने ३६७
जियारत १२०
जिरा २१५
जिहाद २४, ४०६, ४४७
जीबा ३६८, ३७१, ३८०

(त)

तकबीर ४७, १००, २००
तकलीद २६२
तर्ज ३०५, ३०६
तजनीम २०५
तज़मीन १५६
तजरुद ३१७

तजल्ली १५७
तन्खा १६६, २५३, ४६४
तन्सीक एव ज़ब्त २४३
तफसीर ४०६
तबर्रा १५७, १८६
तबल ३७, २०६
तमस्सुक ३२८
तयूल ३६४
तरकीब बन्द १८२
तर्वाचियो १४, २३
तवाफ ५, ६, ३४
तश्त २१७
तसगीर ४५१
तहज्जुद ४४२
तहवील ३०२
तहसील ४८, १०० –)
तहारत १७३
ताकिया दोज़ान ३३८
ताजीक २३३
ताजीम व तस्लीम १५७
तामिया १८२, ३३२
तालया ४५६
तिलाबाफ ३०४
तीपूचाक ३००
तुक्मा ४२, ६४
तुफग ४५, ७८, ८८, ६७, ६८, ३४४
तुमन ३३७, ३७५
तुमन तुग ३५८
तुहफ २६, २६७, ३३२
तूक ४२४
तूरदार ७७२
तूग ३३७
तूमान ८४, ८६, ३०२, ३०४, ३०५, ३७८
तूशकखाना ३१७
तापखाना ४५, ६७, १०४, १६८, १६८, २१४
२४७, २४८, २७०, २७२, ३२६, ३४४, ४१४, ४५६, ४६१, ४६५
तोपची ५२, १०४, १४७
तोबा १६३
तोरे ३५६ ३७२
तोलकची ३६६
तोशीह १७५

(द)

दफ्तर २३३
दय्यूस ३४८
दस्तरख्वान ६२, २१७
दाम २७८, २८४
दारुल खिलाफा ३, ४, १७, २३, २३६, २४३
२४५, २५७, २६१, २६४, २६७, २६६
दारुल मुल्क ४, ११, २३, ३१
दारोगय एमारत ३६४
दारोगा ४, ११, २६६ ३५०
दावते इस्मा १०६ १४६
दीन परवरी ११
दीवान ६८, १२०, १६३, २२०, २७४, ३६०
३६६, ४०६
दीवानखाना ६६, ११७, १४४, १५५, ३४१,
३५५, ४७७
दीवाने ब्यूतात ६१
दीवानी २६६, ३६०
दीवार बस्ती ३७६
दुरूद १८, २०
दुर्रे यतीम ११
देय १८७
दो अस्पा १२४
दौलतखाना ६६, ११७, २३५, २८७, ३५७,
३७६, ३८६, ४०५, ४७४

(न)

नक्ली ४०६, ४६२

नक्कारा ३७, १०१, २६७, २७७, २९७, ३१८, ३१९, ३३७, ३५८, ४०३, ४१६, ४२३, ४२४, ४८१
नदीम ४७, १००, २००
नवरोज़ २२५ ३०३, ३०८, ४०६
नवीसिन्दा २८६, ३१६, ३६०
नाजिर ६८
निशान ३१९
नीमचा ४१७
नीमरोज़ २६६, २९६

(प)

परदादार ४१७
पहरेदार २५१, २५४, ४५७
पीराहन १६२
पेशकश १३, १६, २६, ३०, ३३, ३५, ६७, १९४, १९५, २८५, २९६, २९८, ३०७, ३३२, ३५८, ३७०, ३९१, ३९२, ४७०, ४७३
पेशखाना २८०, ४१३
पोस्तीनें ४२

(फ)

फतवा २८९, ४२०
फतीले ३४४
फरमान २३, ३३, ३९, ६६, ८०, १२०, १२४, १२७, १३१, १६०, १९४, २२४, २४१, २४२, २६१, २७७, २७८, २७९, २८१, २९८, २९९, ३०१, ३०६, ३१६, ३२१, ३२२, ३३५, ३३६, ३३७, ३३९, ३५०, ३६०, ३६४, ३७६, ३८२, ३८३, ३९७, ४०३, ४०५, ४२३, ४६४, ४७२, ४७३, ४७५,
फरसग ३०६
फरसख २७, ८१, ११७, २२४, २७२, २८५, ३९१, ४५७, ४६१, ४७४
फर्राश २३३
फलकियात १८७
फसाहत ६
फारूकी २५८
फाल २३१, २६६, ३१९, ३९३, ३९६
फिक़्ह १५१, १८९, ४०६, ४२०
फिदाइयो ३५२
फीरोजशाही ४७०
फीलखाना ३९५
फौजदार ४००

(ब)

बकावल १७१, ३००
बक्काल ३९४
बख्शी ४, १७०
बरीद ४५४
बाज व खराज ४
बाफ्ता शामी ३०५
बारगाह १०२
बालापोश ४२, ९४, १९४, ३०२
बावरची २३३
बेकाये ३०५
बेकैदी १८८
बेगलर बेगी २९८
बेलदारो १७१
ब्यूतात ६६, १११, ३६०, ४७३, ४७७
ब्यूताते खासा ३२१

(म)

मज़ूर ३२१

मसव ६३, १४५, २६५, ३४०, ३४७, ३७५, ४०१
मजज़ूब ३८३
मतबख ३००
मतला १५३, १७४, १७५, १७६, १८४, १८७, ३०७, ३८०
मददे मआश २६६
मदार इलह ३५७
ममालिके महरुसा २४३, २४५, २४६, २५६
मरसिया १८५
मलइनो ४४४
मलिक ४२८, ४६२, ४६८
मवाजिब २४०
मशायख ६, ३४, ७५, १२२, १६०, १६५, १८६, २२०, २६५, २८०
मसनद १३८, १४१, २१२, ३५६
मसनवी ३१०
महज़र १८६, २६८
महमिल १८७
महमूदी ४२४
महरम ६८, १२०, १७६
महलदार ४१७
महाल ६५, ७२, २४६, २७८, २२६, २६३, ३०६, ३३५, ३८०, ४०४, ४११
माल ४८
माले वाजिबी ४८, १००
मिम्बर १७६, २१६, ३६८, ४७४
मिल्क ६३
मिल्लत ११, ३३६
मिसरा २५, ६२, १०६, १४८, १५६, १५८, १७५, १६१, २१८, २२१, २२६, २३५, ३१०, ३१५, ३३०, ३८०, ३८६, ३६२, ४०५, ३३६
मिस्काल ३५, १८३, ४७४, ४८०
मीर अदल ३१७
मीर आतश २४७, २६२, ३२६, ३४४
मीर दीवान २६८
मीर बहर ३१७
मीर बाज़ार ४७२
मीर माल ६०, ११२, २८०
मीर शिकार ३६१
मीर समन्दर २७८, २८१
मीर सामानी २६५
मुंशियों ११, ८८, १३६, १६६, २८७, ३१८, ३६०, ४४८
मुअम्मा १४५, १७४, १७७, १७८, १८०, २२३, ४२०, ४२२, ४४१, ४४२
मुकद्दम ४७८
मुकद्दमा २०१, ४६३
मुक़ाबिल कोब ५१, १०४
मुखातेबाते हिसाबी ३३२
मुजफ्फरी १६६
मुजाविर १६२
मुनज्जमीन १७५
मुनाफिक ३४८
मुन्वला २२४, ३५०, ३५१
मुरादी ४१३
मुर्शिद १०७
मुतक ४२५
मुल्क कुशाई ३११
मुल्कदारी ३८३
मुशरिफो २४
मुशरिफ ३१६
मुशरिफी ३६०
मुसाहिब २३५, २५२, २७७, २८४, ३४८, ३८०
मुहरदार २८०
मुहसिल ६६, ११७

मैंमना ३६०

(य)

यक्का २४७, २७१, ३४२, ३४८, ३६८, ३६८
यगावल ६२, २५४, ३६०, ३६८, ४१६
योलाक ११६

(र)

रजक ३४४
रईस १७, २७, ४५०
रदीफ १७५, ३१०
राजियाना ३००
राफ़ज़ी १७४, २१६, २३५, ३६१
रात्री ४४६, ४५२, ४६६
रिकाब ५, ८७, ८६, ६०, १०५, १२६, १३३, १३४, १३८, १६४, २०२, २१३, २३१, २५१, २५५, २७३, २८१, २६८, ३००, ३०३, ३०५, ३०७, ३१०, ३१४, ३१५, ३१६, ३२८, ३३४, ३३५, ३४६, ३५३, ३६४, ३६८, ३६६, ३७०, ३७३, ३८३, ३६१, ३६२, ४४१, ४४२, ४६१, ४७७, ४७८
रिकाबख़ाना २८७, ३००
रिजवी १७२
रिफ़ज १८७
रुबाई १५६, १६६, १७६, १७८, १८४, २१८, २२६, २३४, ३४५, ४०६
रोज़नामचा ३०६, ३२३

(ल)

लश्कर १६, १७, २३, २४, २५, २६, २७, ३२, ३६, ३७, ४६, ४७, ५१, ५४, ५७, ५८, ५६, ६०-६२, ६५, ६६, ७३, ७५, ७६, ८०, ८१, ८२, ८४, ८५, ८६, ८८, ६४, ६८, १०१, १०७, ११२, ११३, ११५, ११६, १२२, १२३, १२४, १२७, १३४, १४२, १४३, १४८, १५०, १५१, १५३, १६३, १६४, १६८, १६६, १७६, १८२, १८५, १६६, २००, २०१, २०२, २०४, २०७, २०६, २१०, २११, २१६, २२१, २२३, २२४, २२६, २२८, २३१, २३२, २४०, २४३, २४४, २४५, २४७, २४८, २४६, २५०, २५४, २५६, २५७, २६१, २६६, २६७, २६८, २७१, २८१, २८३, २८६, २८८, २६८, ३०१, ३०२, ३०३, ३०७, ३१०, ३११, ३१८, ३२४, ३२५, ३२८, ३२६, ३३७, ३४०, ३४४, ३४६, ३५२, ३५३, ३५७, ३५८, ३५६, ३६०, ३६४, ३६६, ३७१, ३७२, ३७५, ३७७, ३७८ ३७६, ३८१, ३८४, ३८६, ३८८, ३६०, ३६६, ३६८, ३६६, ४००, ४०२, ४१४, ४२३, ४२६, ४२६, ४३३, ४३६, ४४२, ४७०, ४७१, ४७५, ४७७, ४७८, ४७६, ४८०
लानत १६०

(व)

वकालत ३१६, ४२८
वकालते दरेख़ाना ३७५
वकील ४६, ७१, ६३, १४१, १७३, ३२५, ३४३, ३४८, ३६५, ४१५, ४१६, ४२४, ४२६, ४२७, ४२८, ४२६, ४५८, ४६०, ४६१
वकीले मुतलक़ २६
वजहे उलूफा ३२८
वज़ीफ़ा १६०

वज़ीर १२, २६, ३६, १०१, १२३, १४१, १५०, १५३, २४८, २६६, २९९, ४१४, ४१५, ४२०, ४२४, ४३२, ४३५, ४५१, ४५२
वज़ू १३८, १७३, २३५, ४१७
वज़ूहाल २९९
वसीअत २०२
वह्दते वुजूद ६, ३०६
वह्दते शुहूद ६, ३०६
वही १७९
वाक़िआ नवीसी १०३
वाली ५, १७

(श)

शरबादार १४२
शरा १८६, २४६, ४२०, ४३३
शरीअत ६, १०, ११, १७६, ४४७
शस्त आवेज़ ३७६
शहरबन्द १३५, ३४०
शहादत २६६
शहीद ३३६
शाहदारी १८१, १८२
शिक़दार ४००, ४०४
शिकार गाह ३१२, ३१६
शीरी कलाम २५
शुकार ३०४
शोराकानी ३००

(स)

सग अन्दाज़ ३४८
सक्का २०७, २३३
सखुन साज़ १०३
सजावली १८२
सद्र १७७, २७५
सरकार १५, ६८, ७२, ९८, ११०, ११६, १९८, २०१, २४०, २४५, २८८, ३२८, ३५३, ३६१, ३६४, ४०२, ४०४, ४४३, ४४४
सरकारे खासा २६५
सरखेल ५२ १०४, २०४, २१४
सरापर्दे ४५ ६६, ९८, १०७, १४८, १५४, १९९, २४८, २५२, २५८, ३६६, ३८६, ४०६, ४१५
सरोपा ३०१, ४२२, ४२३, ४२७, ४२८, ४३६
सहाबा १५७, २९६
सहाबी १५६
सावात २६२, २६०
सायबान ३००
सिक्का ४ ६, ६१, १४५
सिनअर्ते १७४
सिपहसालार २१३, २३१, ४१४, ४१५, ४२६
सिपाहियाना ३६१
सियाक ३१६
सुफरची ३६०
सुपूरगाल २८४
सूरत कशी १६५
सेहगाह मकाम ३०७

(ह)

हजो १८२, १८५
हमल १८७
हम्माम १२४, ३०६, ३३८
हरकतिल मज़बूही १०३, २५८
हलाल ७१
हवाली ११७
हसब नसब ३६४
हाकिम ३१, ६७, ६८, ६९, ७०, ७२, ७५, ७६, ७७, ७९, ८५, ८६, ८७, ८९, ९५, ९८, १००, १०५, ११०, १११, ११३, ११५,

११८, ११६, १२३, १२४, १२६, १२७, १२६, १३१, १३४ १३६, १४४, १४५, १४६, १५१, १५३, १५५, १६१, १६७, १६५, १६६, २०२, २०६, २११, २१२, २१५, २२२, २२३, २३२, २५३, २५५, २६०, २६२, २६४, २६६, २८०, २८१, २८३, २८४, २८६, २६०, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, ३०२, ३०६, ३०८, ३०६, ३१२, ३१३, ३३७, ३३८, ३४३, ३४५, ३५६, ३६०, ३६२, ३६४, ३८४, ३६१, ३६३, ३६५, ३६६, ४०३, ४१३, ४१५, ४४८, ४५३, ४५६, ४६४, ४६५, ४६६

हाजिब २६, ४४५, ४४६, ४४७, ४५०, ४६५
हाफिज २३
हासिल १७३
हिरावल १२८, १३४, १३६, २४७, २५४, ३२६, ३५७, ३६७, ३७८, ४१४, ४२४, ४२६
हिलाल ३६२
हिलाली ३८३
हुमा १५६
हुरल ३५२

नामानुक्रमणिका

(अ)

अदली १६७
अइजवार खा २४३
अक्बर शाह १५, ३६, ६४, ६६, ७५, ८५, ८६, ८८, ८९, ९०, ११५, ११६, ११७, १२३, १२५, १२६, १३२, १३३, १३६, १४४, १५४, १५७, १६६, १७१, १७२, २११, २२१, २२८, २३०, २३४, २४०, २५२, २७८, २८३, २८६, २८७, २९३, ३००, ३३०, ३४२, ३४६, ३५८, ४१०, ४४३, ४५३, ४७८
अक्बर नामा ३, २६, ४९, ७२, ९९, ११७, ११८, १२१, १२३, १४४, २२३, २४६, २४९, २५४, २६०, २६२, २६८, २७०, २७२, २७३, २८५, २८९, २९१, ३०४, ३२१, ३२४, ३५२, ३५४, ३६६, ३७३, ३७४, ३७९, ३८६, ३८९, ३९०, ३९५, ३९७, ३९९, ४४९, ४५३, ४५४, ४५७, ४६२
अकवा १३१
अकरा ४५३
अखच बुर्ज ३२७
अख्बारुल अखियार १४४
अगज़वार खा ४४, ४७१
अगरवार २४३
अगरवार खा ९६
अजम ६, ३३, ३३२, ४०९, ४४२
अजमेर २८९, ४४३, ४५३
अजरवाईजान ३५
अजल इस्तजलू ३१३
अज़ीज खा ३६२
अत्का खा ६२, ६६, ११४, ११७, १५३, १५५, ३१८, ३२५, ३३८, ३५८, ३८३, ३९२, ४००, ४०२, ४०४
अदहम खा ३१८
अदहम मीर्जा ३१३
अनतोलिया ४१४
अनवरी १८७
अनवारुत् तज़ील १५१
अन्दराव ८३, १३१, २२३, २९३, ३३३, ३३४, ३५०, ३५१, ३६०, ३६१, ३७०, ३७२, ४०४
अन्हिलवाडा ४
अफगानिस्तान ६, ६७, ७७, २९६, ३३२, ३७४
अफज़ल खा ३६०, ४४०
अफज़ल खा अब्दुस्समद ४५२
अफज़ल खा मीर बख्शी ३९८
अफज़ल बेग ४२८
अफजलुद्दीन इबराहीम १६२
अबजद १११, १८०, ३३२
अबहर २१७, ३१०
अबुल क़ासिम २८४, ३३६
अबुल क़ासिम ख़लफा ६६, १२०, ३१२
अबुल क़ासिम जुर्जानी ३९८
अबुल क़ासिम मीर्जा २३०

अबुल ख़ालिक ३२५
अबुल ख़ैर २८७
अबुल फ़ज़ल ३, २६, ७५, १५७, २५०, २६६, २६१
अबुल फ़तह सुल्तान अफ़शार ७४, १२१, २२०, ३१३
अबुल हसन ७४, १२१
अबुल हसन बेग ३२४
अबू अब्बास ४५४
अबू जिया तांक ४४८
अबू नस्र अहमद जाम ज़िन्दापील ५
अबूजी नानक ४३२, ४३३
अब्दाल ३७५
अब्दाल कोका ३८५
अब्दाल माकरी २७६, २६१, २६२
अब्दुर्रशीद २४०
अब्दुर्रशीद ख़ा ३५६
अब्दुर्रहमान ३२२
अब्दुर्रहमान कस्साब ३३८
अब्दुर्रहमान जामी २५२
अब्दुर्रहमानी कबीला ३८४
अब्दुल अजीज ३६१, ४६०
अब्दुल अज़ीज ख़ा ८२, १२६, १६१, २२६
अब्दुल कादिर १८
अब्दुल कुद्दूस ४७०
अब्दुल गफ़र ६०, ११२
अब्दुल जब्बार, शेख़ ३३२
अब्दुल मालिक ४५५
अब्दुल वह्हाब ३५४, ३६८
अब्दुल वह्हाब यसाउल ३७६
अब्दुल वहाब रूमी ३६४
अब्दुल वह्हाब साहिबे तबाक़ ३१८
अब्दुल हई ३८६
अब्दुल्लाह १७३, २१६, २७५, ३४७
अब्दुल्लाह ख़ा ७४, ८८, १६१, २५५, ४६६
अब्दुल्लाह ख़ा ऊज़बेक १३६, १६८, २३३, ३६७, ४२५
अब्दुल्लाह ख़ा इस्तजलू ३१२
अब्दुल्लाह बिन जुबैर ४५५
अब्दुल्लाह मीर्ज़ा ३४५
अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर अल मक्की अल आसफ़ी उलुग़ख़ानी अल हाजुद्दबीर ४०७, ४५५
अब्दुल्लाह सुल्तान ३४७
अब्दुल्लाह हातिफ़ी २५२
अब्बास सुल्तान ३५६, ३६०,
अमर कोट ६३, ६४, ६५, ११४, ११५, ११६, १५३, १५४, २१०, २११, २८३ ४७८, ४७६
अमीर अबुल बका ५६, १५०
अमीर ख़लीफ़ा १४१
अमीर ख़ुसरो १०, १७७, २०२
अमीर गयासुद्दीन १०
अमीर तरदीबेग ३०
अमीर निज़ामुद्दीन अली ख़लीफ़ा ६१, ६३
अमीर फ़क़ अली ११
अमीर बेग २६७, ४७६
अमीर हिन्दू बेग १०
अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी लखनऊ ४१
अम्बर नाज़िर २८६, ३२७
अम्बाला २६६
अम्बेर २६०
अयाज ४१६
अरगन्दाब २८८, २६६, ३२१, ३२४
अरगन्दी ३२६
अरगवान ३३१
अरगसान २६६
अरगून ६६, ४७०
अरजन १५७
अरफ़ातुल आरेफ़ीन २२५
अरब ४, ५

अरल ५६
अर्ज ४२३
अर्दबेल ३५, ६६, १२०, १५७, २२०, ३१४
अर्सलिन ३८५
अल कामिल फितारीख १८६
अल महदी २१६
अल मोतसिम बिल्लाह १५७
अल हसन २१६
अल हसन अल अस्करी २१६
अल हुसैन २१६
अलरूद ७६
अलवर ४, १०, ५४, १०६, १०७, १४८, २०६, २०७, २४०, २६६, २७३
अलिफ खा दुर्रानी ४२५
अलाउद्दीन १६६, ४४५
अलाउद्दौला बिन यहया कजवीनी ३
अलाउल खा २६१
अली १५७
अली अल रिजा २१६
अली अल हादी २१६
अली कुली ३१३, ३२०, ४०२
अली कुली अन्दराबी ३४७, ३६१, ३६७, ३६८
अली कुली ऊगली ३३८
अली कुली तोपची १६, ३२
अली कुली खा ८८, १३६, १६८, १७०, ३२०, ३५२, ३५६, ३६२, ४०२
अली कुली खा शैबानी ८७, ८६, १३७, १६७, ४०३
अली कुली खा सीस्तानी १३४, १३५, १३७, १६६, २३१, २३२, २३३, ३६७, ३६८, ४००
अली कुली गुरुची ३२६
अली कुली सुल्तान ३५०
अली खां महाधनी २६३
अली जैनुल आबेदीन (आब्दीन) २१६
अली नगाई १५, १६
अली दोस्त बारबेगी १३३, ३१६, ३८७
अली बेग २२७
अली बेग कोलाजी ८३
अली बेग जुल्फेकार कुश ३१३
अली मुरतजा ३५६
अली मुहम्मद ३६२, ३७५
अली मुहम्मद अस्प ३८५
अली मुहम्मद कुकुल्ताश ४७५
अली मूसी रिजा ६
अली शीरवानी खाकानी १६२
अली सुल्तान जुलाक ३१३
अली सुल्तान तकल ३१६
अलीगढ ४३२
अलीगढ विश्वविद्यालय ३, ३३
अलीगार ३७५
अलीशग दर्रा ३७५
अवध १५, ७०, १०६, २६०, २६४
अशरफ खा ३६८, ३६६
अशरफ खा मीर मुंशी ३६८
असावल १०२, २०२, ४२६, ४६७
अमीर ५१, २१५, ४४३, ४४४
अस्करी ६, १०
अस्करी मीर्जा ४, २६, ३०, ४६, २२०, २२३, २२६, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८
अस्तरजी १५०
अस्फरायन ३०७
अहमद ८३, १३०, २२७
अहमद खां ६७, ३६५, ४०२
अहमद जल जामी ६
अहमद बेग ३३४
अहमद सुल्तान २६६, २६७, ३०८, ३१२
अहमद सुल्तान अगाम उगली इस्तजलू ३१३

अहमद सुल्तान शामलू ३५, ६७, ११८, २११, २६६, ३१२
अहमदाबाद ४, २६, ३०, ४६, ४८, ४६, ५०, ५१, ६४, ६६, १०१, १०२, १०३, १४३, १४४, १८०, १६६, २००, २०२, २५३, २५४, २५५, २५६, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४४२, ४४३, ४४४, ४५३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४७०

(आ)

आईने अक्बरी १५, ५८, ६५, १००, २४५, २४६, २८४, २६१, ३१७
आईने करकीराक खाना ३१७
आक़ ३१३
आक सुल्तान ३२६, ४४५, ३७३, ३७५
आक़िल सुल्तान ऊजबेक ३१५
आक़मस ५, ३५१, ३५७
आक़मस नदी ७६, ७७, ७६, ३३५
आख़ुन्द मुल्ला ३२५
आगरा ३, ४, ६, १०, १२, १६, २३, ३०, ३१, ३३, ४१, ४६, ५०, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ७२, ७३, ६१, ६३, १०३, १०५, १०६, १०७, १०८, १०६, ११४, १४२, १४४, १४६, १४८, १४६, १५७, १७०, १७७, १८१, १६४, १६५, १६६, २०३, २०५, २०६, २०७, २०८, २१३, २१४, २१५, २१६, २३१, २३३, २३४, २३६, २४५, २४८, २५७, २६०, २६१, २६४, २६५, २६६, २६७, २६६, २७०, २७१, २७२, २७३, २७६, २८६, ३६५, ४०२, ४१३, ४१५, ४२७, ४३१, ४३३, ४३७, ४४२, ४४६, ४५४, ४५८, ४७१
आदम १३
आदम कक्कर ८७
आदम खां ४०२
आदम गक्खर १३४, १६७
आदाबुल शरीफ १५१
आदिल खां ३६३
आदिल सुल्तान ३१५
आदीना तुक्बाई ३८१
आबदरा ७७, ३३६, ३४०
आबे इस्तादा ३२१
आमोरिया ४५८
आमू नदी ५, ३३५
आमेर २६०
आरिफ तूशकची ३१७
आरिफ बेग ३८६, ३६७
आरिफुल्लाह ४०३
आलम खां २४५, ३८६, ४६४
आलम खां लोदी ६८, २५४, ४६४
आलम शाह ३८५
आवाज खां ३८५
आसफ १५०
आसफ खां २८, ४१, ४६०
आसाम २६३
आसाहीर २१५
आसीर १६६
आहिनी दरवाज़ा ३७४, ३७७

(इ)

इक़बाल खां ३६३, ३६४
इक़बाल नामये जहांगीरी १३६, २३६
इक़बाल नामा २७०, ३२१
इण्डियागज़ा २८, ४७, ६६, १००, २००, २५२, २५३, ४२०, ४२२, ४२८, ४३६, ४४०, ४४१, ४४२, ४५१, ४५२, ४६२

इख्तियार खां मिट्ठीको ४५६
इजहारे मुअमर १७४
इटावा १०८, १४६, १६७, २७०
इमाम हुसेन ४५५
इन्द्रकोल २६१
इबराहीम २१६
इबराहीम इब्ने जरीर ३
इबराहीम इशक आका ६६, ११८, २७१, ३१६, ३३२
इबराहीम खां ३६५
इबराहीम खा ऊजबेक ४०१
इबराहीम वेग ५३, २०५, २०७
इबराहीम वेग जावूक २६३, २६४
इबराहीम मीर्जा ७६, १२७, १६१, २२०
इबराहीम शेराखेल २६०
इबराहीम सूर १६७, १७०, ३६४, ३६५
इब्नुजुबैर ४५५
इब्ने अली करावल वेगी २६७
इब्ने अमीर जजरी १८६
इब्ने हैदर १८६
इब्ने हौकल ६८
इमाम कुली कुरची ३३१
इमाम मूसी अरिजा ३४, ३०१
इमाम रिजा ६, १५७, २२०, ३०६
इमाम हुसेन १८५, २१०
इमामिया २३५
इश्किमीश ८०, ३३४, ३५७, ४०४
इस्कन्दर ५५, १०८, ३६५
इस्कन्दर अफगान ६६, ८८, १३५, १६६
इस्कन्दर खा ऊजबेक ८६, ८८, १३३, १६८, ३६४, ३६७
इस्कन्दर मुल्तान ८७, १३४, १४६, २६१, ३४०
इस्तालीफ ३६०
इसफन्दियार ३८, ८८
इस्फहान ३००
इस्माईल २१६, ३४८
इस्माईल कूज ३४१
इस्माईल खा ११०, २१७
इस्माईल खा दूल्दी ३६८
इस्माईल वेग ३२८
इस्माईल वेग दूल्दी १२८, ३४३, ३४७, ३५२, ३६१, ३६७, ४०१
इस्माईल सुल्तान ३२०, ३२१
इस्लाम खा २६१
इस्लाम शाह १४५, १६१, १६४, १६७
इस्लाम शाह अफगान ४८१
इस्हाक वेग मुल्तान ३५२
इस्हाक सुल्तान ३६४

(ई)

ईदी रैना २६२
ईरान ५, २५, ३३, ३४, ३५, ४४, ४६, ६७, ६८, ८६, ८८, ११८, ११६, १२०, १५५, १६३, २११, २१७, २८८, २६५, २६६, २६७, २६८, ३०६, ३११, ३३५
ईल मीर्जा ३६१
ईलदरम बायजीद १६, २४४
ईसा ६
ईसा खा हाजिब २१३
ईसान तीमूर ६२

(उ)

उईकन ऊगलान ३६२
उकावैन ३४१, ३४२
उच्च २८१, ४७०, ४७७
उजक ४२३
उज्जैन २४६, २४७, २५५, ४५५
उड़ीसा ७२, २१३, २६१

उत्तर तैमूर कालीन भारत भाग २ ३८४, ४११, ४३२, ४३४
उत्तर प्रदेश ४, १४, १५, १६, १७०, २५७, २७३, २६०, ४०३
उबैद खां ३६२
उबैदुल्लाह एहरार ३०८
उबैदुल्लाह खां ८२, १२१, २२६ ३२१
उबैदुल्लाह खां ऊजबेक ३६१
उमर शाह ४७८, ४७६
उमर शत्रु १७४
उरता बाग ३३१ ३४१
उलग ७७, १२५
उलग यूरत चालाक ७७
उलुग खां ४२६
उलुग बेग ३२२, ३६२
उलुग बेग मीर्जा २५७, २६०
उलुग मीर्ज़ा ४२, ७३, ६४, १०५, १२१, १४२, १४६, १५८, १६५, २२०, २२१, २४१, २५७, २७१, २७६, २६३, ३२२, ३२७, ३२८, ३३८, ४७२
उस्तर, पहलवान ३३८
उस्तुर गराम ७६, ८४, १३१
उस्तुर गराम (ग्राम) ७६, १३१, ३५८, ३५६, ३७२, ३७५
उस्ताद अली कुली २७२
उस्ताद अहमद रूमी २७२
उस्ताद बेहज़ाद २५२, ४६२
उस्ताद यूसुफ मौदूदी ३०४
उस्ताद सुल्तान अली ४६२
उस्तादपुर ४२६

(ऊ)

ऊद ६७, २६७
ऊजबेक, शाह अबुल मआली ८८
ऊनाव ३५१, ३६७

(ए)

एडवर्ड्साबाद ३८५
एतबार खां ३१७
एमाद शाह २०१
एमादुलमुल्क ४८, ५१, १०१, २०१, २४८, २५०, २५३, २५४, २५६, ४१०, ४१८, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२६, ४५३, ४५७, ४५८, ४६०, ४६४, ४६५
एमादुलमुल्क चरकस १०१
एमादुल मुल्क मलिक जियु अस्सुल्तानी ४६३
एराक ६, ५०, ६७, ६८, १०३, ११८, ११६, १२२, १२४, १४४, १५०, १५५, १५६, १५७, १५६, १८५, १८६, १८८, २१२, २१७, २२१, २२२, २३५, २८५, २६४, ३१८, ३३६, ३७०, ४०६, ४८१

(ऐ)

ऐबक ८१, १२६, ३४७, ३६१

(औ)

औरठो ४१८
औगनीपा ३५७
औलिया खिनजान ३७०

(क)

कबर ५८
कजा ३६२
कज़वीन ६७, ११६, २१२, २१७, २१८, २६३, ३१०
कज़ाक सुल्तान ३००, ३०३
कनूर ३५२

कनार २४३
कनेज
कन्दिकान द्वार ३२७
कन्वार ३, ४, ६, १०, ३५, ३६, ४४, ४८, ५०, ५३, ५७, ५६, ६१, ६५, ६६, ६६, ७३, ७४, ७५, ८४, ८६, ८७, ६३, १०३, १०६, १११, ११३, ११४, ११६, ११७, १२०, १२१, १२२, १२३, १२६, १३१, १३३, १३४, १४४, १४८, १५१, १५४, १५५, १५७, १५८, १५६, १६४, १६६, १६७, १६४, २०६, २११, २२०, २२१, २२३, २२५, २२७, २३१, २४०, २४१, २४३, २७८, २७६, २८३, २८५, २८७, २८८, २६४, २६८, ३१३, ३२०, ३२२, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३३१, ३३७, ३३८, ३४०, ३४४, ३४८, ३६६, ३७३, ३७६, ३७८, ३६०, ३६१, ३६२, ४६३, ४७१, ४७४, ४७६, ४७८, ४८०, ४८१
कन्धियारा ५८
कन्नौज १४, ४२, ७३, ६४, १०८, १४२, १४६, १६५, २०७, २०८, २१६, २५७, २६१, २६५, २७१, २८३, ४४४
कपलान बेग २२१
कपूर ३८६
कपूरथला ५७
कफश अली १७४
कबा खान गुंग १७०
कमहर्द २२३, ३३६
कमाल ख़ा ३८४
कमाल दूनी २६२
कमालुद्दीन शाह कुली बेग २६८
कम्बर ४०३
कम्बर अली मन्धाई २२४
क़म्बर अली सहारी ८४, १३१
कम्बर दीवाना ८६, १३७, १७०, २३४, ४०२
कम्बर बेग अरगून ४७६
कम्बायत २८, २६, ३०, ४६, ६४, ६६, २५१, २५२, २५४, २५५
कम्बाया ४५३, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६६
करजी ४२७
करनाल ४७०
करवला १८५, २१०, ४५५
करशू ३०६
करा यूसुफ तुर्कमान १६, २४४
क़रा सुल्तान शामलू २६८
कराकुरम ५५
कराचा करावख्त ३६७, ३७३, ३७४
कराचा ख़ा ६१, ७४, ७६, ७७, ७६, ८०, ८३, ८४, १११, ११३, १२१, १२४, १२५, १२७, १२८, १३०, १३१, १६१, १६३, २०६, २२३, २२४, २२७, ३२४, ३२६, ३३१, ३३२, ३३४, ३३५, ३४०, ३४१, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३५५, ३५८, ४७४
क़रावा बेग ७८, १२६, १५१, २४२, २४३
कराची १५१
कराचीन ३३४
कराजा ख़ा २६४
करातिगीन ३५७
करावख्त ३४८
करावाग ८०, १२७, ३४८, ३४६, ३६४, ३६७, ३७७
कर्मनामा ५३, २६८
कलकत्ता ६१, १०७, २३१, २८२, ४०६
कलमती ४७०
कलमाक ३७६
कलाउकान ३३५
कलागान ३३५
कलानकान ३३५
कलानूर ६०, १३७, ३६८, ४०५
कशवकान ३३५

कलावगान ३३५
कलोल तालुका २८
कश्मीर ५६, ५७, ८६, १०६, ११०, १३३, १५०, २२५, २२६, २३०, २७५, २७६, २८८, २९०, २९१, २९२, ३३०, ३५८, ३८४, ३८८, ३९३, ४०६
कहमर्द ३३६, ३३९, ३५७, ३६६, ३७०
कहलूर ३८६
कहलगांव २६३
कहलगाम २६३
काकरिया हौज़ २५४
काकर अली ३५६
काकर अली ख़ां ३६७
कापुल १८४
काची चक २९१
काजियान ३५१
काज़ी अब्दुल्लाह २७५, २७७
काज़ी ईसा ४८१
काज़ी एमाद ४३४
काज़ी काज़न ४८१
काज़ी कादिर २१
काज़ी जहां कज़वीनी ६८, १२०, २१८
काज़ी जालधर पूरी ४३४
काज़ी तुकबाई ३५१
काज़ी महमूद ३४३
काज़ी मुहम्मद असम २२२
काज़ी यहया कज़वीनी १८६
काज़ी शम्सुद्दीन अली ३२०
काज़ी हामिद ३८६
कात करख़ी ४९
कादिर शाह ४५, ९८, २५०, २५७, ४१७, ४१८
कादिरशाह मन्दवाली ४१५
कानूने हुमायूनी १०, ३६, १९३, २०२, २३१, २८२
कान्तगोला १७०, ४०३
कावा १७८, १८६, २३६, २९६, ३५८, ३८८
काबुल ३, ४, ६, ७, १०, ११, ३५, ३६, ३७, ३९, ४३, ५४, ५६, ५७, ६१, ६६, ६९, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ९३, १०९, ११०, ११४, ११७, १२०, १२१, १२२, १२४, १२६, १२८, १२९, १३०, १३२, १३३, १३४, १५०, १५४, १५५, १५८, १५९, १६०, १६२, १६३, १६६, १६७, १७४, १८१, १८२, १८८, १९४, २०७, २०८, २१७, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २३०, २३१, २३५, २३६, २४०, २४१, २४३, २४५, २७४, २७५, २७६, २७९, २८८, २९२, २९३, २९६, ३१४, ३१८, ३१९, ३२१, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५७, ३५८, ३६१, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६९, ३७२, ३७३, ३७४, ३७७, ३७८, ३८०, ३८२, ३८३, ३८४, ३८६, ३८८, ३९०, ३९१, ३९२, ३९६, ४०२, ४७२, ४८१
काबुली ८२, १२९
काबुली ख़ां ३६२
कामरान मीर्ज़ा ४, ७, १०, ११, ३६, ४४, ५८, ६५, १०७, १२०, १४८, १६२, १६४, २०६, २०७, २०८, २११, २१६, २२६, २३६, ३६१, ४६६, ४७२ (मीर्ज़ा कामरान भी देखिये)
कामिउत्तवारीख़ १८६
कार्मी २८९
क़ारीज़ गाह ३०५, ३०८
कारून २३७

कालगोग २६३
काल्पी ४, ४१, ५५, १०८, १४६, १६८, २०८, २४२, २४५, २६१, २६४, २६६, ४४६
कालिंजर ४१, ६३, १४१, १६४, २१२, २४०, २४४, ४५४
कालियावा नदी ४४४
काल्का २६६
काशगर २६१, ३५६, ३६४
काशान ३००
कासिम अली २०
कासिम अली सद्र १७, १८
कासिम चगी ३५६
क़ासिम खा ६६, १६५
कासिम बरलास २८३, ३२५, ३२६, ३४२, ३७१
कासिम बेग ३३४, ४४३, ४५३
कासिम मुखलिस ३४२, ३६१, ३६८, ४०३
कासिम मुखलिस तुरबती ३२६
क़ासिम सुल्तान ४५७
कासिम सुल्तान ऊज़बेक ५५
कासिम हुसेन ४६, २५४, ४६६
क़ासिम हुसेन खा २२७, २५४, २५५, २५६, २७२, ३४६, ४१८, ४२४, ४२५, ४२६, ४५६, ४६४, ४६६
कासिम हुसेन खा ऊज़बेक २६०, २७०
कासिम हुसेन खा सीस्तानी ३४४
कासिम हुसेन मीर्ज़ा २६, ३०, ७३, २०१, २२०
कासिम हुसेन सुल्तान ४६, ७८, ८३ १०१, १०२, १०८, १२१, १२६, १३०, २०२, २०३, २०८, २२३, २४५, २४८, २५०, २७७, २८१, २८५, ३२३, ३५०, ३७१, ४७६
कासिम हुसेन सुल्तान सीस्तानी ३५६
किचिग बेग ४७२
किजिक ५३
किबचाक ८३, १३०, २२७, ३६७ ३७३, ३७४
किरमान ६७, ३१२
किलये जफर ३, ३६, ७६, ७७, १२४, २४५, २६३, ३२५ ३३५, ३३६, ३५०, ३५१, ३६५
किलात ३२८, ३३८, ३६४
किश्म ७६ ८०, ८१, १२३, १२७ १२८, १२६, १३०, २२४, २२७ ३३५, ३४७, ३४८, ३५१, ३५७
कीम नदी ४६
कीस्तन करा ३६०
कुआ ४६५
कुतलुक कदम ३७५
कुतुब खा ५२ ५५, १०८, १४५, १४६, १६४, २०८, २१३ २६२, २७०, ४६६
कुतुब शाह ७२
कुतुबुद्दीन शुक्रुल्लाह २५६
कुदसी १८६
कुन्दुज ७७, ८०, ८१, ८३, १२४, १३०, २२३, ३३३, ३३५, ३३६, ३४०, ३५१, ३५७, ३६४, ३६५
कुबाद अली हुसैनी ६
कुरकुरम २०२
कुरबान करावल ३१८, ३४७, ३५५
कुरान ६, २१, १०७, १६०, १७४, १८०, २०६, २३६ ३२२, ३२८, ४१२, ४२०, ४४१
कुरानी १४७
कुरेज १८७
कुली खा सीस्तानी २३४
कुरतुनतुनिया ६७ १००
कूच बेग २६८, ३३६
कूज बेग २६१

क़मीस ६८
कैकुबाद १६८
कैदार नग़ो २१७, २१८
कैम्बे २८, ४६, १४३, २५१, ४५३
कैम्बे की खाडी २८
कैरा २८
कैसर ४५, ६७, १६८, २४४, ३२७
कैस्पियन २६६
कोएटा ११७
कोकजा नदी ३३५
कोका ग़ज़न्फ़र १०२
कोका तरख़ान ४७६
कोका बहादुर २८७
कोका मुज़फ़्फ़र ३३२
कोका रफी ३२१
कोचक गिवकी ३५६
कोजक ख़्वाजा ३६७
कोतल मीनार ३४७, ३५६, ३७७
कोदुक सुल्तान ३७५, ३६७
कोल जलाली २६५
कोलाब ७६, ८१, ८३, १२७, १२८, १३०, २२४, ३४७, ३५७, ३६०, ३६४, ३६५
कालाबा ३७
कोलीवारा ४१६
कोह दाब ८४
कोहिस्तान २४
कोहे जर ६८
कोहे बाबा २६६
कौमर २३
क्यानी वश ८८

(ख)

ख़जर बेग ३८६, ३६७
ख़ता (ख़िता) १००
ख़म्बायत २८, ४६, १४३, १६६, २००, २५१, ४१८, ४१६, ४२५, ४३६, ४४२
ख़र्ज़ बेल ३१४
ख़लग़ाल ३१४
ख़लमान ३५१
ख़लीद ३८१
ख़लीफा मामून ६
ख़लील १०७, ३७५, ३७६
ख़लील सुल्तान ३६२
ख़ाक़ान १७६
ख़ाक़ान जहाँ शीराज़ी ४६
ख़ाक़ानी १६२
ख़ान मीर्ज़ा ४, १०, १२०, १२३, ३५७
ख़ानज़ादा बेगम ६६, ७३, १२०, ३२२, ३२५
ख़ानपुर २६२, ४६४
ख़ानम ३२५, ३७६
ख़ानये ख़ान ३३६
ख़ाने आलम ३८६
ख़ाने ख़ाना ३८, २३३, २७७, ४०२, ४१६
ख़ाने ज़मान १६७
ख़ाने जहाँ १०२, २७७, ४०१, ४३६, ४७२
ख़ाने जहाँ शीराज़ी ४६, १०१, २०३, २५५, ४२५
ख़ान्देश २०१, २१५
ख़ान्देस २४८
ख़ाफ ३०२, ३०६
ख़ारिस्तान ४२०, ४२१
ख़ालदीन ३६४
ख़ालिक बीरदी ३४७
ख़िज्र ख़ा २३२, ३४१, ३६३, ३८३, ४६६, ४७०
ख़िज्र ख़ा हजारा ३१८, ३३७, ३६७, ३६६
ख़िज्र ख़्वाजा ३२४, ३२६
ख़िज्र ख़्वाजा ख़ा ८७, १२१, १३४, १६७, ३४३, ३७५, ३६१, ३६७
ख़िज्र ख़्वाजा सुल्तान ३६३

खिता ४७, २०१, ४०६
खिरलची ८४
खिर्म ३४८
खुतन ४०६
खुतलान ३५७
खुदा दोस्त ३४३
खुदावन्दा खां २४८
खुदावन्द खा १०२, ४१५, ४१६, ४२४, ४२५, ४५८, ४६६
खुदावन्द खा लाडजी ४६५
खुन्दवारे रूम ४१४
खुरासान ५, ३३, ३४, ६७, ६८, ७७, ८०, ११८, १५५, १६५, १८८, २११, २३६, २७४, २६७, २६६, ३०७, ३०८, ३०६, ३३६, ३६३, ४३०
खुरासान खा २१, २७, ४५, ६७, २४७, २४८, ४१४, ४५७
खुल्म ३६१
खुशहाल ४५०
खुशहाल बेग ४३८, ४५०
खुशाब ११० २८८, २६२
खुसरो ३३५
खुसरो द्वितीय ४४१
खुसरो कुकुल्ताश २५७, २६१, २६५
खुशियानी ८४
खुस्त ८३, २२३, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३५०, ३५८, ३६६
खुस्त घाटी ३३४
खैबर २२८, ३८५
खैराबाद नदी ३५१
खैहल मुलूक ६३
ख्वावान ३०३, ३०५, ३४१
ख्वन्दमीर १०, १३४, २०२, २३१, २८२
ख्वर शाह ६
ख्वाजा अताउल्लाह दीवान ब्यूतात २६२
ख्वाजा अबुल कासिम ३६८
ख्वाजा अबुल बरकात १८८
ख्वाजा अब्दुल खालिक ३३०
ख्वाजा अब्दुल ग़नी ३१०
ख्वाजा अब्दुल बारी ३६७
ख्वाजा अब्दुल मजीद दीवान ३६८
ख्वाजा अब्दुल हक २७४, २७६, ४७१, ४७२
ख्वाजा अब्दुल्लाह ३६७
ख्वाजा अब्दुल्लाह अनसारी ३०८
ख्वाजा अब्दुस्समद ८४, ३६४, ३७३, ३७८
ख्वाजा अब्दुस्समद मन्सूर १३१
ख्वाजा अब्दुस्समद शीरी कलम ३१४, ३६७
ख्वाजा अमीनुद्दीन महमूद हरवी ३१६
ख्वाजा अम्बर नाजिर ३१७
ख्वाजा अयूब २५, २६, १८८
ख्वाजा इख्तियार ३७६
ख्वाजा इबराहीम ३७६
ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरार ५४
ख्वाजा कमाल ४४
ख्वाजा कमालुद्दीन हुसेन ३५६
ख्वाजा कलाँ ४४, ५५
ख्वाजा कला बेग ४८, ५४, ५७, ६६, १०३, १०८, १०६, ११०, १४२, १४४, १५०, २०७, २०८, २४३, २७०, २७६, २७७, २६०, ३२६
ख्वाजा कासिम ७६, १२७, २२४
ख्वाजा कासिम सूली ३४७
ख्वाजा कासिम ब्यूतात ३६०, ३७२, ३७४
ख्वाजा क़ासिम मशहदी ३८८
ख्वाजा क़ासिम मुख़लिस ४०२
ख्वाजा खावन्द महमूद २७४, २७६, २६३, ३२६, ३३५, ४७१
ख्वाजा खावन्द मुहम्मद ४७२
ख्वाजा खिज्र १२६, ३२०
ख्वाजा खिज्र मुल्तान ३५६

ख्वाजा गयास वजीर १७४
ख्वाजा गयासुद्दीन जामी २८०, ४७६
ख्वाजा गाजी ६६, ७६, ११८, १२७, २७४, ३४४, ३६०, ३७८, ३६१
ख्वाजा गाजी तबरेजी ३१६
ख्वाजा गाजी दीवान ३४७
ख्वाजा गाजी वजीर २२४
ख्वाजा जलालुद्दीन २६५ ४०४
ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद ६६, ११८, १३२, १३३ १६३ ३५६ ३६४, ३७७, ३८३, ३८६
ख्वाजा जलालुद्दीन महमूद चलवी वेग ३६७
ख्वाजा जलालुद्दीन महमद वजीर २३०
ख्वाजा जलालुद्दीन मुहम्मद ८४, ८६, ३७५
ख्वाजा जहा ३१६
ख्वाजा ताहिर मुहम्मद ४०४
ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद ६१, १३६
ख्वाजा दोस्त खावन्द ३२३, ३६०
ख्वाजा दोस्त मुंशी २७४
ख्वाजा नाक ३६१
ख्वाजा नासिरुद्दीन अली मुस्तौफी ३६४
ख्वाजा नूर ३४६
ख्वाजा पुन्ना ३२६, ३४०
ख्वाजा बाग १२६
ख्वाजा बादशाह मरीज ३६७
ख्वाजा मक्सूद ३१६
ख्वाजा मारू १२६
ख्वाजा मीर्ज़ा बेग ३६०
ख्वाजा मुअज्ज़म ६३, ६६, ७६, ११५, ११७, ११८, १२४, १५४, १५५, २२२, २८६, ३१६, ३२०, ३२१, ३२६, ३३०, ३३४, ३३६, ३३८, ३५६, ३६७, ३६६, ४००, ४०१
ख्वाजा मुईन ३३५
ख्वाजा मुईनुद्दीन महमूद ३६८
ख्वाजा मुसाफिरी ४०१
ख्वाजा मुहम्मद अमीन कक ३६४
ख्वाजा मुहम्मद फरन्खुदी ३८७
ख्वाजा मुहिब्ब बदख्शी २८०
ख्वाजा रशीद १७४, २२२
ख्वाजा रशीदी १२८
ख्वाजा रिवाज ७८, ७६, १२८
ख्वाजा रुहुल्लाह ३६०
ख्वाजा रेग रवा ३३१
ख्वाजा सफर सलमानी ४६०
ख्वाजा सय्यारान ३३१, ३४०, ३६४
ख्वाजा सुल्तान अली ३६०
ख्वाजा सुल्तान अली दीवान ३७२
ख्वाजा सुल्तान मुहम्मद रशीदी ३३६
ख्वाजा सह यारान ३४०
ख्वाजा हाजी २७६
ख्वाजा हाजी बक्काल २६२
ख्वाजा हुसामुद्दीन मुहम्मद १०
ख्वाजा हुसेन मरवी २६३, ३८८, ३६१
ख्वाजी ऊज़बेक ६५
ख्वास खा ५१, ५२, १०४, १०५, ११०, १४५, २१३, २६३, २६८, २७२, २७७, २६३

(ग)

गगा नदी १४, १५, २४, ५२, ५३, ५४, १०५, १०८, १४६, १४६, २०४, २०८, २१६, २४१, २५७, २६१, २६३, २६७, २७१, २६५
गडमक ३७८
गज ४४४
गज ५
गज़दरी ८२, २२६, २२७, ३६३
गज़नी ७५, ७६, ७७, ८४, ८६, ११४, १२२, १२३, १२४, १३१, १३२, १३३, १५४,

१६०, १६४, २२२, २२८, २३०, २७६, ३२६, ३३०, ३३७, ३३८, ३४३, ३४८, ३५६, ३६०, ३६६, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३८०, ३८४, ३६१, ३६२, ४८१
गज़न्फर २५६, ४६७
गज़न्फर खा २०३
गज़न्फर बेग २०३, ४२८
गवबे शहीद ३७५
गढ़ी १०५, १०७, २०४, २०५, २१४, २१६, २६३
गन्दुम २८१
गयासपुर ४४२, ४४३, ४५३
गयासुद्दीन कूरची १७, १८, २०, ४०६
गरमसीर ४, ६६, १२०, १५८, २२०, २६८, ३१५, ३१६
गश्तास्प ८८
गाज़ी खा ११०, १७०, २१७, २६२, ३६५
गाज़ी खा सूर १०४, २०४, २१४
गालिब खा ३८५
गिजिक बेग २७७
गिरदीज ८४, ८५, १३१, १३२, २२८, ३२६, ३७६, ३८३
गिरवन २६०
गिरिस्ख २६६
गीलान ४०६
गुआ ४६५
गुजरवान ४१६
गुजरात ३, ४, १०, १६, १७, १६, २३, २५, २७, २८, २६, ३०, ३१, ४२, ४३, ४६, ४७, ४८, ४६, ५०, ५१, ५२, ५६, ५८, ६५, ७२, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६६, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, ११०, ११६, १४२, १४४, १५१, १५४, १७०, १६०, १६५, १६६, १६७, १६८, २०१, २०२, २०३, २०६, २११, २१४, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४६, २५०, २५३, २५४, २५५, २५८, २५६, २६१, २७५, २७८, २८०, २८३, ३१६, ४०६, ४११, ४१२, ४१६, ४१७, ४१८, ४२२, ४२४, ४२५, ४२७, ४२८, ४२६, ४३२, ४३७ ४३८, ४३६, ४४२, ४४४, ४४६, ४५३, ४५८, ४५६, ४६३, ४६६, ४६८, ४६६, ४७०, ४७१, ४७३, ४७६, ४८०
गुजराती, कोताह सलाह ६८
गुर्ग अली २६३
गुलगूना २३७
गुलचेहरा बेगम ३५६
गुलबदन बेगम ३, १२१, ३२४, ३२६, ३५७, ३५६
गुलबहार ३४६, ३५०
गुलरग बेगम २६१
गुलरुख बेगम २२८
गुलशने इबराहीमी १३६, १६३
गुलाम अली शश अगुश्त ८५, १३३, ३८७
गुलिस्ता २०
गूर २२३, ३३६
गूरबन्द ७७, ८०, १२४, १२५, १२६, १२७, २२२, २२३, ३३६, ३४८, ३६४, ३६७, ३७२
गूरियान ३०६
गूरी ७६, ८०, १२६, १२७, २२३, ३३६, ३४६, ३५१, ३५७
गेनी गिलानी ३३३ (देखिये 'बाबर भी')
गोमती १५
गोसवारा १७६, १७८
गौड़ ५२, ५३, १०५, १०६, १४५, १४६, २१५, २१६, २६१, २६३
ग्वालियर १६, २१, ४२, ६५, १६५, २३०, २८४, २८६, ३६३, ४३३, ४३५

(घ)

घक्कर ४८१
घाटी चादा २५७

(च)

चगता ४१४
चग़ताई सुल्तान ३३२
चचक्तू ३६०
चनाब नदी ४७२
चन्देरी १६८, २८६, ४६६
चपर गता ३६६
चम्पानीर २८ २६ ३०, ३१, ४६, ४८, ४६, ५०, ६६, १०१, १०२, १०३, १०४, १४३, १४४, १६६, २००, २०१, २०३, २५०, २५१, २५२, २५३, २५५, २५६, २५७, २५८, ४१८, ४२०, ४२३, ४२४, ४२६, ४२७, ४३६, ४४०, ४४२, ४४४, ४५१, ४५२, ४५३, ४५६, ४६०, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७
चम्बाग ७०
चरखम २०१
चराग़ ३०४
चार (चरख़) १७६, ३७५
चन्मा बेग २६७
चहार चश्मे ३६४
चहार ताक़बन्दी ३०५
चहार दरा ३२३
चहारबाग ३०६, ३२२, ३२४, ३७६
चहारदा ३२३
चांद खां ४१०
चाकर अली बेग कोलाबी १३०
चाकर खां ३५३, ३८७
चाकर बेग ३६५
चाकर बेग कोलाबी ३६४
चावतान २७८, ४७३
चामर्ग २६७
चारबाग ३०५, ४७१, ४७२
चारी कारान ७८, ३४०, ३४२, ३६७, ३७१, ३७४
चालीपान ३५१
चिंगीज खां मकबूल १०१ २०१
चित्तौड १४, २३, २४, २५, २६, ४२, ४३, ४४, ४५, ६४, ६५, ६६, ६७, १४२, १४३, १६५, १६६, १६७, १६८, २४३, २४५, २४६, २४७, २४६, २५७, २८१, ४१४, ४१७, ४३३, ४३४, ४३५, ४४३, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४६६
चिल्मा कोका ३८६, ३६०
चिल्मा बेग ३४१
चित्राल २६३
चीन १००
चुनाव २७६, ३८५
चुनार १६, ३२, ५१, ५३, ७०, १०२, १०४, १०६, १४५, १४६, १७८, १६६, २०४, २१३, २१४, २६१, २६२, ३६५, ४६६
चुनारन ७०
चाचक बेगम ४८१, ४८५
चोल २६४
चोग्री ११७
चोग्री बहादुर १५४, २६५, ३३८
चोग्री महेगुर २४६
चौर १५४
चौल १५४
चौसा ५४, १०७, १४६, १४८, २०५, २१५, २१६, २६६, २७६, ४७१, ४७२

(छ)

छारखड १४५
छोटा नागपुर ७२, ७३
छोटिया ७२

(ज)

जगवार १८३, १८४
जजान ३१०
जतुई ४७०
जनपूर ४८०
जन्नत आशियानी २४२, २४३, २४४, २६१, २६४, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७२, २७३, २७४, २७७, २८०, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २९५, २९६, ३०१, ३०७, ३०८, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३७, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३८०, ३८२, ३८३, ३८४, ३८७, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९६, ३९७, ३९९, ४०१, ४०२, ४०४, ४०५, ४०६, ४०९, ४१२, ४१६, ४१७, ४१८, ४२२, ४२५, ४२६, ४२९, ४३१, ४३२, ४३३, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४१, ४७५, ४८१
जन्नत मकानी ४१३, ४१४, ४१६, ४१७
जन्नताबाद ५३, १०६, १४६, २०५
जफर अली २८०
जफरुल वालेह बे मुजफ्फर व आलेह ४०७, ४४५
जवर कना ३९६
जवर कन्ना ३९६
जवली जवल ४२१
जवाई बहादुर ३१८
जम २५, ३३, १७९, ३१३, ४४३
जमजम ३२७
जमशेद २५, ३०, १४३, ४७१
जमा ३८३
जमाली खा ७०, २४०
जमाली कम्बोह देहलवी १४४
जमालुद्दीन मुहद्दिस १६५
जमालुद्दीन सलमान सावजी १५६
जमीनदावर ४, १०, ४८, ७६, ८६, १२३, १३४, १६७, २२२, २३१, २९६, ३२१, ३२८, ३२९, ३३७, ३३८, ३४४, ३५६, ३९१, ३९२
जमील बेग ७४, ७५, १२१, १२२, ३२९, ३४२, ३८५, ३८६
जयपुर २९०
जरज ६७, २९६
जरह ३०४
जरिन्दा ३७९
जरियार ३७८
जलाल खा १०४, १०५, १४५, २०४, २०५, २१४, २६३, २६८, २९०
जलाल खा अफगान लोहानी ७०
जलालाबाद २९३, ३७१, ३७६, ३७७, ३८४
जलालुद्दीन ७८, ११६
जलालुद्दीन उर्वेम १३
जलालुद्दीन बेग १२५, २८५, ३४३
जलालुद्दीन मुहम्मद मीर स्पताल ३५५
जवाने ११७

जहाँ आरा ३०७
जहाँगीर ६, ७३, ८५, ३०२, ३७२
जहाँगीर कुली ५, २६६
जहाँगीर कुली बग १४८, २१४, २१६, २६१, २६३, २६७
जहाँगीर कुली मीर्ज़ा ३३
जहाँगीर बेग मुग़ुल ५२, ७२, १०५, १०६, १४६, २०४, २०५, २०७
जहाँगीर मीर्ज़ा ३५७
जहान शाह मीर्ज़ा ३१३
जाजवान ६५, २७८
जान अली पेश कराक ४७०
जान तरखान ४७३
जान मुहम्मद तूकचाई ३८१
जानी बेग ३४७
जाफर अली सादिक २१६
जाफर गा ३००
जाफर खा हज़ारा ३६८
जाफर बग ३३४, ३३५
जाफर मुल्तान ३००
जाफरा १८६
जाम ३४, ३०६, ३०७, ३०८, ३२०
जाम फीरोज़ ४६, ६६, ४१६, ४२०
जामा मस्जिद ३. ६
जामी, अब्दुर्रहमान १४४, २५२
जारीजा ४७०
जालधर ८७, १३४, १६७, ३६८, ३६६
जालौन ४
जावहरू ३०६
जाहिद ७३
जाहिद बेग ७७, १२४, २२२, २४५, २६१, २६५, २६७, ३३८
जाही मनमान १८२
जिन्दापील, अहमद जाम ३०८
जिवरील १७३, २२५, २३६
जिया उद्दीन नख़्शबी ६२, ४३७
जियारत गाह ३०७
जी वहादुर ऊज़्बेक २८६, २८७
जोजी अनका २८८, ३१८
जुनैद ४७०
जुनैद बरलास ७०, २६४
जुनैद बेग २७६
जुमऊतुल मुल्क १८६
जुरजान ५
जुहाक ७७, ७६, ८३, १२४, १२५, १२६, १३०, २२३, २२७, ३२६, ३४५, ३६६, ३६७, ३७१
जूकी बहादुर १५५
जूजूक मीर्ज़ा ३६१, ३६०
जून ६५, २८३, २८५
जूनाक्र ४६४
जूनागढ ५०, २५३, ४२५, ४६४
जूये शाही ३७१, ३७८, ३८०, ४०५
जेरवाद ४०६
जैन खा ३१६
जैनुद्दीन सुल्तान शामलू ३१३
जैसलमीर ६१, ११३, १५०, १५३, १५४, २०६, २८३, ४७८
जैहून ५, १५६
जोगी खा ३७५, ३८४, ३८८
जोधपुर ६१, ६२, ७०, ११३, १५३, २८२, २८५, ४७७, ४७८
जौन (जून) ६५, ११६, २६०, ४७६
जौन्द २६०
जोली बेगम २२२
जोली महेमुर २४६
जोहरा ४७६
जौनपुर ४, १०, १४, ५३, ६६, ७०, ६४, १०४,

१०६, १४१, १४५, १४६, १६४, २०४, २१२, २४१, २६४, २६५, २६७, ३४३, ३६६, ४७१
जौमा १४६
जौहर १५, ५८, १०४, १११, १७६, ३१७

(झ)

झारखंड ७२, १०५, १४५, २१४, २६३, २६४, २६७
झेलम नदी ५७, ८६, ३८४

(ट)

टर्की १६, ४५, १०२, ४१४
टाडो गुलाम हैदर ६५, ११६
टोलमी ४६

(ठ)

ठट्टा ४६, ११६
(देखिये थत्ता, तत्ता भी)

(ड)

डा० ईश्वरी प्रसाद ३३, २५२
डा० नूरुल हसन १५
डा० माखन लाल राय चौधरी २६८
डा० हादी हसन २२५
डियू २८, ६६, १४३, २०१, २५०, २५१, २५८, ४५६
डीव २०२
डे ११०

(त)

तकलू अवामीक ३०३
तक्लीद २६१
तकिया किमार ३२६
तकी औहदी २२५
तज़किरतुल वाक़ेआत १५, १११, ३१७
तत्ता ४६, ५६, ५८, ५६, ६०, ६५, १४६, १५१, १५३, २७६, २८५, २६४, ३३७, ३३८, ३६०
तबकाते अकबरी ४८, ५५, ६१, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, १०५, १०७, ११०, १५५
तबकाते अकबरी भाग–२ १०५, १०६, १०७, ११०, १३६
तबक़ाते अक्बरी भाग–३ ३८४
तबकाते नासिरी ६७, २६६, २६७
तबरिस्तान ३३
तबरेज़ ६, ३५, ६६, १२०, १५७, १६२, २२०, ३१३, ३१४
तवबा ४४२
तबस कीलकी ६७
तबस कीलगी ११८
तबस गीलकी ६७
तबस तमर ६७
तबसे बिलकी ६७
तम्बान १८२
तरखना ५६
तरख़ान ३१६, ४७०
तरदी बेग २४, ४८, ४६, ६२, ६३, ६६, १०१, १०३, ११४, ११५, ११७, १४८, १४५,

१५३, १५४, १५५, २०३, २१०, २२७, २६८, ३५०, ३५२, ४२४, ४२७, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८
तग्दी बेग अफगान ३६६
तरदी बेग खा ६८, ८२, ८७, ८८, ११६, १३०, १३४, १६७, २३२, २३३, २३४, २५३, २५६, २५७, २६१, २८२, २८६, २८७, ३४७, ३५५, ३५६, ३६२, ३६३, ३८६, ३६७, ३६८, ४०२, ४०४, ४२६, ४७६
तरदी बेग खा इतावा २६१
तरदी बेग बकावल ४७६
तरदी बेग मुग़ल २०१
तरदी मुहम्मद खा ३५६
तरदी मुहम्मद जगजग ३४२, ३५०
तरशीज़ ३०६
तरस बेग २७६
तरसून बरलास २८६
तरसून बेग २८२, ४७५
तरसून मीर्ज़ा ३४५
तर्क बन्दरगाह ४६५
तवाची बेग ३५६
तशखुरगान ७७
तहमतन मीर्ज़ा ३१३
तहमास्प किज़िलबाश ४६३
ताक दर्रा ४३२
ताक़ियान ३६१
ताख्वी बेग ३५६
ताज खा २४७, ४०२, ४५६
ताज खा लोदी २६०
ताजुद्दीन महमूद बारबेगी ३८१
ताजुद्दीन ग़ोरी ४८०
तातार ३८४
तातार खा २३, २४, ४२, ४३, ८७, ६७, १३५, १४२, १६६, २३३, २४३, २४४, २४५, ३६५, ३६६, ४०२, ४१२, ४१३, ४३४, ४४५, ४५४
तातार खा अफगान २३२
तातार खा काशी १३४, १६७, ३६७
तातार खा लोदी ६५, ४३३
तामिया १८०, ३३२
तारनाक २६६
तारम ३१४
तारीखे अलफी ४१, ५५
तारीखे इबराहीमी ३
तारीखे एलचीये निज़ाम शाह ४१२, ४१३, ४३२
तारीखे गुजरात १६, २०, २५६, ४०७, ४०६
तारीखे फ़िरिश्ता १०१, ११६, १२३, १२६, १६३, १६५, १६६, १६७, १६८, १६६, २०१, २०३
तारीखे फ़ीरोज़शाही २८६
तारीखे मासूमी ४०७, ४६६
तारीखे रशीदी ५५, ७७, २७०, २६१
तारीखे शेरशाही १५
तारीखे सिंध २८८, ४०७, ४६६
तारीखे हुमायूनी ३
तारीखे हुमायूँ व अकबर ३०६
ताल पतन ४७०
तालीक़ १२३, ३६५
तालीक़ान ७६, ७६, ८०, ८१, १२७, १२८, २२२, २२४, ३३४, ३३५, ३३६, ३४७, ३५०, ३५१, ३५२, ३५५, ३६६
तालीक़ान नदी १२८, २२४
ताहिर मुहम्मद ३७०
ताहिर सद्र ४७३
तिब्बत २६२
तिमुर अली शिगाली ८०, १२७, ३४८, ३४६, ३५०
तिमुर ताश ३८१, ३८५
तिमुर ताश अतगा ३७५
तिरमिज़ २३२, ३७३, ३७८
तिरहुट (तिरहुत) २६३, २६७

तिलियागढ़ी १०५
तिमूर १६, २१, ३०, ११६, १४३, २१७, २२३, २६७, ३१३, ३६१
तीमूर जलायर ३१६
तीमूर नामा २५२, ४६२
तीमूर सुल्तान ११५
तीर गराँ २२२, ३३४
तीर गौराम १२३
तौरी ३२७, ३२८
तुजुके जहाँगीरी ८६
तुरबत ३०७
तुर्किस्तान ७६, २८०, ३६३
तुहफतुल एराकैन १६२
तूगान बेग ३३५
तूतीना ४३७
तूतीनामा ६२, ४५२
तूरान ८६
तूरी ८४
तूलक कूचीन ८३, १३१, ३५६
तूलक कूरची ३६६
तूलक खा ३६७
तूलक खा कूचीन ८२, १३०
तूलक यातिश नवीस ३१८
तूम ६, ६८, ६६
तेहरान ३०६
तोरी ३३७
तोलक खा कूचीन २२७, ३२४

(थ)

थट्टा ४६, ६५
थत्ता ६६, ११०, १११, ११२, ११५, ११६, ४७०, ४७५, ४७६, ४८०
थट्टा ६६
थानेश्वर १६७
योवर्न ३८५

(द)

दकिन ४, ३०, १८६, १६१, २०१, २५६
ददरा १५
ददा बेग ३२३
दन्कोट ८५, १३२
दन्कोत १३२
दन्दान शिकन ३३६
दयार खा ४६७
दरकरा ३०७
दरगश ४
दरताल ४
दरवेलने ५८
दरवेला ४७४
दरवाजय आहिनी ३३८, ३४२
दरवाजये नव ३२७
दरवेश अली २५५
दरवेश कोका ६३, ११५
दरवेश जमाली १४४
दरवेश मक़सूद वगाली ३१६
दरवेश महमूद दौलत खान ४८१
दरवेश मुहम्मद २५४
दरिया खाँ ७०, २५५, ४२५
दर्रा गज १२६, १३०
दवाई ११०
दस्त २८६
दनौर ४५६
दन्नौर २६
दम्मौर २६
दामगान ६८, ११६, २०६
दारा शिकोह ६५
दारल मुल्क रै ३०६

दावर जमीन १०
दिलदार आगा २६६
दिलदार बगम २६६, ३५६
दीदार बेग ३७४
दीन पनाह १६६
दीनदार बेग ३७४
दीप ६४, ६६, २५१, २५६, २५८
दीपाल पुर १६७, २३२
दीव २८, ४४४, ४४६, ४५६, ४६०, ४६१, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७
दीबालपुर ८७, १३४, ३६८
दीव बन्दर ४३६
दीवाला १६१, २३६
दूकी ३३२
दूल्का ४६०
दूल्दी बेग २६२
देव सुल्तान ३१३
देहली ४, ५, १०, ११, २३, ३३, ३८, ३६, ४१, ५३, ५४, ८७, ८८, ८६, १०६, १३५, १३६, १४४, १४६, १४८, १५७, १६८, १६६, १७१, १७२, १६५, १६६, १६७, २०५, २०६, २३१, २३२, २३३, २३४, २४१, २४३, २४४, २४५, २५०, २६१, २६४, २६६ २७३, २७५, ३८५, ४०१, ४०२, ४०५, ४१०, ४१७, ४३३, ४३४, ४३७, ४४५, ४४६, ४४६, ४५४, ४६३, ४६६
देहली द्वार ४१८, ४६०
देहे अफगानान ७७, १२४, ३४०
दोआब ८६, १३७, २३४
दोस्त खा बारबेगी ३५४
दोस्त बेग १०४, २१४, २४५, २६१
दोस्तबेग ईशक आका २५४
दोस्त मीर बर ३५८
दोस्त मुहम्मद ३६८, ४७६
दौरन १५
दौरा १५
दौलत खा २६०
दौलत खा की सराय २७४
दौलत खा पायदा ४७३
दौलत ख्वाजा १३४, २३१
दौलत ख्वाजा बरलास २००
दौलत चक २६२
दौलत सुल्तान ३३८
दौलताबाद ४२५

(ध)

धन्दोरा २६०

(न)

नखवत १६४
नखवत सुल्तान १६५
नखशब १५६
नहल १६४
नगज ३२६
नगर कोट २२८, २२६
नजर शेख चोली ८६, ६०, १३८
नजर शेख जना १३७
नजर शेख जोली १३७, १७२
नजरी ३७०
नजातुरंशीद १७६
नज्म १५६
नदीम कुकुल्ताश २८६, ३२७
नदीम कोका ६२, ६३, १५३, २१०, ३३८
नन्दना ११०, २१७
नन्दरा ४७६
नरवर ४३२

नरवल ४५८
नरहन २६७
नरियाद २५२, २५३, ४२४, ४६५
नवल किशोर १५, ६३, ६६, १०७, १२५, १३२
नवल किशोर प्रेस १६३, २३६,
नवशहर ५७, १०६, १५०, २३३, २६७, २६०
नवशहरा २०८
नसरिपा ४६
नसीब खा ३६४
नसीब खा तूगची १६७
नसीब खा पजभय्या ३६८
नसीब रम्माल ३५३
नसीब शाह १४५, २६१, २६२
नसीर खा २३०
नसीर खा अफगान १३४, १६७
नसीर खा नोहानी २६०
नसीर खा फारूक २१५
नसीरुद्दीन नुसरत शाह २६२
नसपुर ४६६
नसुल्लाह देवली टट्टवी ४१
नहरवान ३२२
नहरवाला ४६, १०१
नहरवाला पटन ४५३, ४६७
नागौर ६२, ११४, १५३, २४४, २८६, ४५४
नाजिर दीवान २१८
नादिरी १८०
नादे अली २१८
नारनौल २६०
नारी २६३, ३५७, ३६०
नारौन ३३४
नारी ३३४
नालचा २७, २४६, ४१६
नालपटन ४७०
नासिर २६४
नाजुक शाह २६०, २६२
नासिर क़ुली ३८१
निक्दोरी ३०२, ३२१
निजाम १०८, २०७, २६६
निजाम अस्तराबादी १८४
निजाम औलिया १७७
निजाम खा ३६४
निजाम शाह १६१
निजाम शाह दक्किनी १६०
निजाम शाह बहरी १८६
निजामुद्दीन ६१, १३४
निजामुद्दीन अली खलीफा २६४
निजामुद्दीन अहमद बख्शी १६४
निजामुद्दीन हैदर ५८
निजामुल मुल्क २५८
निसारी तूनी १८४
निहाल बेग २६१, २६३
नीलाब ८५, १३२, २२८, २२६, २३०, २३१, ३७७, ३७८, ३६७
नीली मबोल ४१६
नीशापुर ५, १८६, २६६, ३०६
नीशापुरी, मीर शहाबुद्दीन १७०
नुसरत खा ४६५
नुसरत शाह ७२
नूर बेग ७४, १२१, ३२४
नूर मुहम्मद खलील १८, १६, २०, ४१२, ४४७
नूरम कोका ३७६
नूरुद्दीन खाने जहाँ शीराजी ४६६
नूरुद्दीन मुहम्मद मीर्जा २६१, ४७२
नेक्नहार ३७८
नौसारी २६, ४६, १०१, २०३, २५४, २५५, ४५५, ४६६

(प)

पचगाह १८५
पजशीर ८०, १२७

पजहीर ३४८, ३४६, ३६०, ३६१
पजहीर नदी २२७
पजाव ५, ५७, ८६, ८७, ८८, ८६, ६०, ६३, १३४, १३५, १३७, १४८, १४६, १५१, १६८, १६६, १७०, १७२, १६४, २२६, २३०, २३३, २४१, २४२, २४४, २७५, ३८८, ३६३, ३६५, ४०१, ४०२, ४०४, ४५४
पकली २६२
पगमान २६३
पचेत ७२
पटन ४, ४६, १०१, १०२, २५६, ४२५, ४३१, ४४३, ४६७, ४६६, ४७०
पटना २१२, २१३, २२५, २६०, २६७
पमगान ४२६
परकाल ४३५
परियान ८०, १२६, २६३, ३५८
परशावर १६७
परहाला १३२, १६१, ३८६
पराना ८६
पहलवान दोस्त मीर बर ३६०
पाँदा २६३
पात ५७, १५१
पात कुहना ५८
पात सगार ४४८
पातर ५८, १५१, २७८, ४७४, ४८१
पाता ५८
पातुर ११०
पादशाह बेगम १५४
पानीपत ५४
पायदा मुहम्मद बँसी २८५
पावह १००
पीर मुहम्मद आख्ता बेगी ८३, १३०, २२७, ३६२, ३६८
पीर मुहम्मद खा ७६, ८२, १२७, १२६, १६१, २२३, २२६, ३४५, ३४६, ३५३, ३५६, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४
पीर मुहम्मद रोहतकी ४०२
पुरतुह २६७
पुरनिया २६३, २६७
पुरबिया ४२०
पुलेमालान ३०८
पूल ३३
पेशवा ४१२
पेशावर ८४, ८७, १३१, १३३, १३४, १६४, २२८, ३६०
पँक १६३
प्राइस २४८, २६७

(फ)

फखरुद्दीन अली कोतवाल २०६
फजलुल्लाह १४४
फज़ायल बेग १२१, १२४
फज़ील बेग ७३, ७७, २२०, २२२, २७६, २८२, ३३५, ३३६, ४७५
फतह खा ४००, ४१२
फतह खा बिलोच ११०, २१७
फतह शाह अफगान ३८४
फतहगढ़ २४१
फतहनामा १३६, २२५
फतहपुर सीकरी १७१
फतहबाज़ ४०१
फतहुल्लाह बेग ३५२
फरजन्द ३७८
फरसाफा ४५३
फरहगे नव ६१
फरह ६७, २६७, ३०७, ३१२, ३६५
फरहत खा ३६८, ४०४
फरहत खा खासाखेल ३६८

फरीद ७०, १४७, २६०, ३७६, ४७१
फ़रीदी ४३१, ४३२, ४३८, ४४०, ४४४
फ़रीदूं १६८
फ़रीदूं खां ३६०
फर्कंदैन ३१०
फर्रुख़ फ़ाल ४०२
फ़र्रुखाबाद १४, २४१
फलौदी २८२, ४७८
फारस ४, ६, ३००, ४०६
फ़िरंग ४७, १००, २०१, २५१, ३००, ३०५
फ़िरंग खा ४४०
फ़िरंगियों ४४४
फिरंगी ४५१
फिरदौस मकानी २१, २०७, २६०, २६१, २७०, २७४, २७८, २८८, ३११, ३१५, ३१८, ३२४, ३३६, ३४०, ३४५, ३५७, ३८०, ३८४ (देखिये 'बाबर' भी)
फ़िरदौसी १४८
फिरिश्ता ५३, १०१, १६४, १६५
फ़ीरोज़ खां ३६४
फ़ीरोज़ा १७०
फीरोज़ाबाद २३
फ़ल ३३
फ़ूशंज ३०६

(ब)

बंकीपुर २२५
बंगश ८४, ८५, १३१, १३२, २२८, ३२६, ३४६, ३७६, ३८३
बंगाल (बंगाला) ५, ३१, ३२, ३३, ५१, ५२, ५३, ६५, ७१, ७२, ७३, १०५, १०६, १०७, १४५, १४६, १४७, १४८, १५७, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २१३, २१४, २१६, २५६, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६६, २८६, ३६५, ३६६, ४४६, ४६५, ४७१
बंगी ३५१, ३७०
बकलान ७६, १२७, २२३, ३५७
बक्कर ५, ४८, ५६, ५७, ५८, ५६, ६०, ६३, ६४, ६६, १५१, १५२, २७५, २७७, २७८, २७६, २८०, २८१, २८८, २६४, ३३८
बक्सर ५३
बख़्शी बानो बेगम ३१८, ३७५
बख़्शू लंगाह ५७, ११०, २७७, ४७२, ४८०, ४८१
बगदाद १५७, १७४
बगनीन ४
बचका बहादुर २४७, २६३
बचवारा २३२
बजरा ३६६
बड़ौदा ४, १७, २८, ४६
बतवा ४२३, ४२४, ४२५, ४५३
बतूरा ४७३, ४७६
बतूल १८५
बतौरा ४८२
बथमकापुर २७३
बदख़्शाँ ३, ४, १०, ३६, ७४, ७६, ७७, ७८, ७६, ८०, ८१, ८३, ६३, १२१, १२३, १२४, १२६, १२७, १२६, १३१, १३२, १३४, १५६, १६०, १६१, १६३, १७४, १७६, २१८, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२७, २४०, २४५, २६३, ३११, ३१७, ३२५, ३३१, ३३३, ३३५, ३३६, ३३६, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४६, ३५०, ३५१, ३५७, ३५६, ३६०, ३६१, ३६४, ३६५, ३६६, ३६६, ३७२, ३७५, ३७६, ४८१

बदायूँ १३७, १७०, १७१, ४०३
बदायूनी १०५
बदी उज्जमान मीर्जा ४२, ५३, ६४, १०६, १४२, २४०, २७४, ३०७
बदीह १७७
बद्र खा इस्तजलू ३१२
बनारस १६, ४१, २६०, २६४, २६५
बनी अब्बास ४५४
बन्दगुशा चश्मा ३५७
बन्दर ४६६
बन्दर दीव २१, २६, ३०, ३८, ४६, ५०, ५१, ४१८, ४२३, ४२७, ४२८
बन्दर दीप १४३, २५०, २५४, ४२५
बम्रू ३८५
बबरलो ५८
बबरलू ४७१, ४७२, ४७३
बम्बई ४६, ४३१, ४६६,
बरदा ३११
बरदी बेग २४
बरमज़ीद क़बीला ३८४
बरमज़ीद गोर २७२
बरमज़ीद गरमस्त खा २६३
बरबर ४३२
बरौच २६, ४६
बरौज २६, १०१, २५४, २५५
बरोदा १०१, २०१, २५४, २५५, ४२५
बल्गाजुरी ६७
बलोदरा १७
बल्ख ५, ७६, ७७, ७६, ८०, ८१, ८२, ८३, ८५, ६४, १२७, १२६, १३०, १६१, २२३, २२६, २२८, ३०६, ३३६, ३४२, ३४६, ३४७, ३५७, ३५६, ३६१, ३६३, ३६५, ३७६
बसरा १४५, १४६
बरबादों ३७७
बहदा १६५
बहदाएन १६५
बहमन १८७
बहराम १४, २३
बहराम खा ६
बहराम मीर्जा ३६, ६८, ६६, ११६, १२०, १५५, २१७, २१८, ३१०, ३१२
बहरी ३०४
बहलोल लोदी १६५, १६६
बहादुर ३१३, ३२६, ४२२, ४६५
बहादुर खा १३४, १३६, १६६, १६७, १६८, २३१, २३३, २६३, २७२, ३२०, ३३४, ३३८, ३५६, ३६७, ३७५, ३७८, ३६२
बहादुर खा शैबानी ८६
बहादुर शाह ६७, ६६, १६५, १६६, १६७, १६८, १६६, २०१, ४५२
बहादुर शाह गुजराती १६६, २००, २०२, २०३, २०४, २०५, २१३, २४१
बहादुर शाही (तोप) २७
बहादुर शाही तोप ४३६
बहादुर सुल्तान ४
बहार ४४६
बहार खा ३१७
बहारिस्तान १८७
बहारी १३१
बहारे अजम ६१, ३५२
बाकीपुर २२५
बादा २६०
बाकी जलायर ६३, ११५
बाकी बेग कूशबेगी ३६७
बाक़ी बेग यासीन बेगी ३६७
बाकी मुहम्मद परवानची ३६४
बाकी नासिह ७८, १२५, ३४२
बाग्रर्च ३०५

बागे खुसरो शाह ३४०
बागे जहाँनुमा ३०८
बागे जागान ३०८
बागे फतह ४८२
बागे मक्तब ३२२
बागे मुराद ३०८
बागे सफेद ३०८
बाजारक ३५०
बातर ५८
बादपज ३७४
बादाम दर्रा ३५५
बाबार (देखिये फिरदौस मकानी भी) ४, ६, १०, १५, ५४, ७७, ८०, ६१, १२०, १३६, १५६, १६६, १७७, २२१, २२२, २२८, २३१, २६४, ३०६, ३०७, ३२१, ३५७, ३५६, ४१०, ४१२, ४३१, ४७३
बाबर कुली २८०
बाबर नामा ४, १६, ३५, ५४, ५७, ७७, ८०, ८४, १३६, ३०२, ३०६, ३०७, ३२१, ३२६, ३५७
बाबा कश्का ७४, ७८, १२२, १२६, १६१, २२८, २६१, २६६ ३२०, ३५०
बाबा कक्चार ३७७
बाबा खिजारी ३८२
बाबा चूचक ३५२, ३७२, ३८५, ४८१
बाबा जूचक २७६
बाबा दोस्त बख्शी ६६, ११८, ३१६
बाबा दोस्त यसावल ३२०, ३७१
बाबा बिलास ३८२
बाबा बेग कोलाबी ३६८
बाबा बेग जलायर २६४, २६८, २८२, ४४३
बाबा शशपर ३४०
बाबा सईद ३६७, ३८६
बाबा सईद कराचा करावस्त ३७१
बाबा सईद किबचाक ३४१, ३७५, ३८५
बाबा साहू ३६१
बाबा हसन अब्दाल २८८, ३२८
बाबा हाजी ६६, ११८
बाबाये सरहिन्दी ३२०
बाबुल ४५६
बाबूस ८१, ३२१, ३३५, ३४३ ३४८, ३५६, ३६५
बाबूस ख्वाजा ३८६
बाबूस बेग ७५ ७८, १२६, १२८, २२३, २२४, ३२२, ३२५, ३२६, ३४७ ३६५, ३६७, ४००
बामियान ७६, ८३, १२६ १३०, १६४, २२७ ३३६, ३६६, ३६७, ३७०
बायजीद १५, ४१ ७०, ६४, २१२, २१३, २४१, २६६ ३०६ ३४२, ४३१
बायजीद अफगान १४
बायजीद बुस्तामी ६
बारा २६
बारान नदी ३६७
बारावकी १५
बालनाथ ११०, २१७
बाल्तू खा ३६६
बाल्तू बेग ३५६, ३५६
बाल्तू सुल्तान ३६४
बावली नदी ४३४
बाशह ३०४
बाशी ३२८
बिकरमाजीत १६५
बिकराम ८६ १३३, २३०, ३६०, ४०२
बिजली खा ४०२
बिबन ४७, ७०, ६४, १६४ २१२, २१३, २४१, ४३१
बिलग्राम २५७

बिलाद ४, २६
बिलोचिस्तान २४५, ३३२
बिलोची ११८, ३५१
बिल्कीम २६४
बिस्ताम ३०६
बिहार ३, १०, ५२, ५३, ७०, ७१, ७२, ७३, १०४, १०५, १०७, १४५, २०४, २१२, २१३, २१४, २१६, २६०, २६३, ३६६, ४४३
बिहिया २६८
बीकानेर २८१, ४७७
बीनी हिसार ७५, १२२, ३३०
बीब ३८५
बीबी फातेमा ३७५
बीर ३८४
बीरपुर ४३४
बीराना ८६, १३३
बीलाक मुरलीक ११६
बुखारा १८२, ३६१
बुदाग खां ४८, ७४, ७५, १२१, १२२, १३०, १४४, १५७, १५८, ३२६
बुदाग खां अफशार ६६, १२०
बुदाग खां काचार २१६, २२०, २२१
बुरहान अल मलिक ४५४
बुरहान निजाम शाह २०१
बुरहानपुर ४५, ४८, ५१, ६८, १०१, १६६, २०१, २५५, २५८, २८४, ४२५, ४४३, ४६६
बुरहानुलमुल्क ४३, ६५, १६६, २४४, ४१३
बुर्ज बावरी ४६७
बुस्त ४, २६६, २६७, ३१६, ३२०
बुस्ताम ६
बूजक बेग २६१
बूरी ३४०, ४१८
बेकरा बेग ३६१
बेकंदो १८८
बेग बाबा कोलाबी ३७१
बेग मीरक २६१, २७३, २७७, ३५२, ३५८
बेग मुलूक ३८२, ३८७, ३६०
बेग मुहम्मद आल्ला बेगी ३१४, ३६४, ३६७
बेग मुहम्मद ईशक आका ४०२
बेग मुहम्मद बकावल २७७, ४७२
बेजरी ४६५
बेजा नगर ३०
बेदार बेग ३७४
बेबीलोनियन १८५
बेबरिज ७२, २६७, २८५, २८६, २६२, २६३, ३०२, ३२४, ३५७, ३८५
बेहक २६६
बेहत नदी ३८४
बेहसूद ३८०, ३८१, ३८२
बैन ३८५
बैरम खां ६, १२६, १८४, २००, २१८, २१६, २५२, ३१०
बैरम खां तुर्कमान २२०, २२१, २२३, २२५, २२६, २२८, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६
बैराम ६६
बैराम ऊगलान ३६०
बैराम खां ३८, ४७, ६६, ६८, ७३, ७४, ७५, ७८, ८४, ८६, ८७, ८८, ६०, १००, ११६, ११७, ११६, १२०, १३१, १३२, १३४, १५४, १५५, १५८, १५६, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १७०, २११, २१२, २१७, २६१, २६३, २८४, २८५, २८६, ३०१, ३१२, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२७, ३२८, ३३१, ३३७, ३३८, ३४४, ३७६, ३७७, ३७८, ३६०, ३६१, ३६२, ३६६, ३६७, ३६८, ३६६, ४००, ४०४, ४०५, ४१६, ४२१, ४८०

बैरामखा खाने खाना १३६, १३८
बोस्तॉ २०
ब्याना १५, १६, २३, २४, ४३, ८४, ६५, १४२, १७०, १६४, १६५, १६६, २४३, २४५, ३०२, ३४२, ३६५, ४०२, ४१३, ४३३, ४५४
ब्यास नदी ५७, १०६, २७६
ब्रिटिश म्युजियम ६, ४१
ब्लाखमैन ७२, ७३

(भ)

भक्कर (भक्खर) ५, १०६, ११०, १११, ११२, ११३, ११५, ११६, १२०, १२३, १२४, १४६, १५३, १५४, १५८, १६०, २०८, २०६, २२२, ४६६, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७८, ४७६, ४८०, ४८१, ४८२
भडौच ४६, १०१, २५५
भमिया २०६
भरकन्दा १०४
भरतपुर १६
भरौंच १०२, २०१, २०२, २०३, ४२५, ४४३, ४४४, ४५३, ४६६
भरौंज ४६६
भागलपुर २६३
भावल्पुर २३३
भीरा ५७, ११०, १५०, ४७२
भूपत २५०, ४४६
भूपतराय ४३८, ४४८
भूपत सलहदी ४५६
भूपाल राय २५७
भोजपुर २४१, २६८, २७१
भोपाल २४
भौगाँव २७३

(म)

मभू ४३६, ४४६, ४५०, ४५१
मभू कलावन्त ४३८
मदराएल २४५
मदरावर १३१, ३७५
मदरौद ८४
मदलायर २४५
मदसौर २६, १४३, १६८, २४७, २६२, ४१४, ४१५, ४२४, ४५६
मदूर ४६१
मआसिरे रहीमी २८५
मकसूद कूरची ३७५
मकसूद बेग आख्ता ३५६
मकसूद मीर्जा आख्ता बेगी ३१३
मक्का ३४, ३८, १३२, १३३, १४४, १६१, १६३, २२४, २२८, २२६, २८५, ३७६, ४५५, ४८२
मख्दूमुल मुल्क ३६३
मचवारा २३२
मजनूँ १८३, २४२, ४३६
मजनूँ काकशाल ८३, १३१, ३६६
मजनूँ खा २२७
मझौज ४६७
मतहीन खा १८६
मदीना ३८, ११३, २२४, २२८, २८५, ४८२
मध्य भारत ७२
मन्दरूद १३१
मन्दावर ८४
मन्दू २६, २८, ३०, ३१, ४५, ४६, ४७, ६७, ६८, १०१, १०२, १४४, १६६, २०१, २०३, २४८, २४६, २५०, २५५, २५७, ४१०, ४११, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८,

४२६, ४२७, ४४४, ४४६, ४४८, ४४६, ४५२, ४५८, ४६२, ४६३, ४६८
मन्दू का किला २५७
मरवान ४५५
मरियम मकानी ६६, ६७, ७५, ७६, १११, ११५, ११७, ११८, १२४, २११, २७८, २८३, २८६, २६६, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३३१, ३५०
मर्व ५, ६८, ३०८
मलकान २२८
मलसूर ४६१
मलाऊ १७०
मलिक अमीन नस ३४३, ४३२
मलिक अली पजहीरी ३४६, ३५०
मलिक अहमद ४१६, ४६१
मलिक अहमद लाद २५१
मलिक कला ३८४
मलिक किद ३८४
मलिक जियु ४४४, ५५३
मलिक नसन ४५३, ४५५
मलिक बुरहान अल मलिक वनबानी ४५३
मलिक बुरहानुलमुल्क बनयान ४४३
मलिक पीर मुहम्मद ३४७
मलिक मुख्तार ३६८
मलिक मुहम्मद ३३८, ३७५
मलिक मुहम्मद मन्दरावी ३८२
मलिक मुहम्मद लाद ४६१
मलिक राजी ४३८, ४४६
मलिक शमशीरुल मुल्क ४४३
मलिक सगी ३८२
मलिक हाती २६४
मल्लावाँ १७०
मल्लू खा २४६, २५४, ४१५, ४५८, ४५६, ४६३, ४६५
मस्तंग ११७, २८५, २८६, ३३२
मशहद ५, ६, ६४, ६७, ६६, १५५, १५७, २२०, २६६, २६६, ३००, ३०२, ३०६, ३१५
मशहदे मुक़द्दस ३४, ११६, १२०, २१२, ३०१, ३०६, ३१४
मस्जिदे सफा २५६
मस्तग १५४
मस्त अली कूरची ३७४
महदवियो १८६
महदी १६५
महदी कासिम खा १०२, २१२, २८५
महदी खा ३४१
महदी मौऊद १५६
महदी सुल्तान ३५०
महमदाबाद ४६, २०३, २५४, ४१८, ४६१
महमन्द ३७५, ३७६
महमिल २८७
महमूद २१२, २१३, २१४
महमूद अन्सारी ४६५
महमूद खल्जी २१
महमूद खा ४७६
महमूद शाह १०५
महमूद शाह शहीद ४१०
महमूदाबाद १०१, २०१, २५४, २५६, ४२४, ४२६, ४४४, ४५३, ४६०, ४६५, ४६७
महरम कोका ३१६
महब्वलात ३०६
महामिद खा २५३
महेन्द्री ४४४, ४६१
महेन्द्री नदी २५३, २५६, २५७, ४२४, ४२६, ४२७, ४५३, ४६०, ४६७
माडू ६७, २४६, ४२५, ४३१, ४४६
माचीवाडा २३३
माचीवारा २३३

माछीवारा १६६, २३३, ३८५, ३८६, ३६६, ४०१
मानकोट ३८६, ३९३
मानिकपुर ७२, २१२
मानूम बेग २२४
मान्दू ४६, ४३१, ४३३, ४३६, ४३७, ४३८, ४५७, ४६५ देखिये 'मन्दू' तथा मांडू भी
मारकुन्ड ७२
मारको १८५
मारवाड १५०, १५२, १५३, २८५
मारी २६३
मालदेव ६१, ६२, ११३, ११४, १५२, १५३, २०६, २१०, २८२, २८३, २८५, २८६
मालवा २४, ४५, ९५, ९७, ६८, १०४, १४३, १६५, १६९, २०३, २०६, २४०, २४६, २४७, २४६, २५४, २५५, २५६, २६१, ३६५, ४१०, ४११, ४४४
मालान नदी ३०७
मावराउन्नहर ५, १५६, १८८, ३६१, ३६३, ३६३
माशूर द्वार ३२७
मासूम इमामो २१६
मासूमा सुल्तान बेगम २६१, ४३१
माह चूचक बेगम ३६०, ४०२
माहम अनवा १२५, १६०, २०७, २८८, ३१८
माहम अली ३८२
माहिम बेगम २३६
माही ४४४
माही नदी ४६
माहीचा ३०६
मिदनापुर ७२
मियाँ हसन ६६
मियाँ वाली ५
मियाना ३१३
मिरआते सिकन्दरी २०, ४०७, ४३१, ४३२, ४३४, ४४६, ४५०, ४५१
मिर्जापुर १६
मिस्र २२१
मित्र सेन २८४
मीनार ३२४
मीर अबुल कवका १११, २७७
मीर अबुल कासिम २८६
मीर अबुल कासिम सद्र २८६
मीर अबुल बका ११०, १११, २७४, २७६, ४७१, ४७५
मीर अबुल मआली १३५, १३६
मीर अबुल हसन २८७
मीर अबू तुराब वली २५६, ४०७, ४०६
मीर अब्दुल हई २६५, ३१५, ३७६, ३६५, ४०५
मीर अब्दुल हई सद्र १३८, २३५
मीर अब्दुल्लाह ३८६
मीर अब्दुल्लाह कानूनी ३६७
मीर अमानी ३८०
मीर अमानी काबुली १८०
मीर अलीका ४७५
मीर अलीका अरगन ४७१
मीर अल्लाह दोस्त ४८१
मीर कम्बर अली ४
मीर कुली ४०१
मीर कुली मुहरदार ४७६
मीर कोचक बहादुर २५४
मीर खलीफा ६२, ३३७, ३३८, ३६१, ४२६
मीर खल्ज ३१६
मीर खुर्द ३७०, ४०४
मीर खुश मुहम्मद अरगून ४७१
मीर गजनवी २८६, २८७
मीर गनी शाह ३१६

मीर जमाल ३८१
मीर जमालुद्दीन सद्र अस्तराबादी १८६
मीर जान बेग ३६४
मीर जिलमा अरगून ४७३
मीर तरदी बेग २९
मीर ताहिर २२३
मीर ताहिर सद्र ४७, ११०, २८०, ४७६
मीर दोस्त मीर बर ३४२
मीर नज़र अली ३२५
मीर पहलवान बख्शी २६८
मीर फ़क़ीर अली २४५
मीर फख्र अली ५३, १०६, १४८, २६१, २६४, २६५, २६६, २७३
मीर फज़ली २६४
मीर फज़्ल ४७०, ४७३, ४८१
मीर बरका २८०, ३४१, ३६७, ३७३, ४७६
मीर बाबा दोस्त २७७
मीर महमूद काशी ३६४
मीर मुईन ३९७
मीर मुक़ीम ९२
मीर मुरतज़ा सद्र ३०७
मीर मुहम्मद बख्शी २६१
मीर मुहम्मद मुंशी ३५६
मीर मुहम्मद सारबान ४७५
मीर मुहसिन दाई ३९७
मीर यूनुस अली २४२
मीर रफ़ी उद्दीन २७३
मीर लतीफ़ ३५०, ४०२
मीर वली बेग २७४
मीर शम्सुद्दीन अली सुल्तान ३०६, ३१४
मीर शम्सुद्दीन मुहम्मद गज़नवी २८८
मीर शरीफ़ बख्शी ३६४
मीर शहाबुद्दीन नीशापुरी १७०
मीर शाह मुहम्मद अरगून ४७५, ४८१
मीर सन्जर अरगून ४७५
मीर सुल्तान कुली बेग ४७५
मीर सैयिद अली ३३२, ३६४
मीर सैयिद अली मुसव्विर ३९७
मीर सैयिद अली सब्ज़वारी ३७०
मीर सैयिद जुल्फ़िक़ार शिरवानी १७४
मीर सैयिद शरीफ़ १५१
मीर हज़ारा पेशगानी ३२५
मीर हब्शी ३७६
मीर हसन दागी ३९७
मीर हिन्दू बेग १४५, २१३, २५१
मीर हुसेन ३१७
मीरान मुहम्मद २५७
मीरान मुहम्मद शाह फ़ारूक़ी २४८
मीरान शाह मुहम्मद ५१
मीर्ज़ा अज़ीज़ कुकुल्ताश ३१८
मीर्ज़ा अबुल क़ासिम ५९, १५७
मीर्ज़ा अबुल बक़ा ५७, १५१
मीर्ज़ा अबुल मआली ८७, ८९
मीर्ज़ा अब्दुर्रहमान मुग़ुल २३०
मीर्ज़ा अब्दुल्लाह २९३, ३५१, ३५५, ३६५, ३९७
मीर्ज़ा अब्दुल्लाह मग़ुल २७०
मीर्ज़ा अमानी १६४
मीर्ज़ा अस्करी २४, ३६, ३८, ४८, ५७, ६१, ६५, ६६, ६७, ७३, ७५, ७६, ७८, ८१, ८३, ८४, ८५, ९३, १०१, १०२, १०३, ११०, ११४, ११६, ११७, ११८, १२१, १२४, १२६, १२९, १३०, १३२, १४४, १५०, १५४, १५५, १५८, १५९, १६३, २०२, २०३, २०८, २११, २२४, २२८ २५४, २५५, २५६, २५८, २६१, २६९, २७१, २७३, २७४, २७६, २८५, २८६, २८७, २८९, २९३, २९५, २९६, २९८, ३३२, ३५६, ३५७, ३६०, ३६६, ३७१, ३७३, ३७४, ३७६, ४६५, ४६६, ४७१, ४८१
मीर्ज़ा इबराहीम ८०, ८१, १२८, १२९, १३०,

१३१, २२४, २६३, ३१८, ३१६, ३२५, ३३०, ३४५, ३४७, ३४६, ३५०, ३५१, ३५३, ३५४, ३५५, ३५७, ३६०, ३६५, ३६६, ३७०, ३७३, ३७४, ३७५
मीर्ज़ा इबराहीम बेग चाबूक २६१
मीर्ज़ा इबराहीम हुसेन २३०
मीर्ज़ा ईसा तरख़ान ४७६
मीर्ज़ा उलुग बेग ७४, ७६, ७८, १२३, १२६, १५६, २२३, ३३७, ३४४, ३५६
मीर्ज़ा कामरान ३६, ३७, ३८, ४३, ५०, ५३, ५४, ५५-५७, ६१, ६६, ७३, ७५-८५, ६०, ६३, ६६, १०६, १०८, १०६, ११०, ११३, ११४, ११६, १२१, १२२-१३१, १३३, १३७, १४२, १४६, १५०, १५४, १५८, १६०, १६१, १६३, १६४, २०५, २१६, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२७, २२८, २२६-३०, २३५, २४०, २४१, २४३, २६५, २६६, २६६, २७०, २७३, २७४, २७५, २७६, २७६, २८५, २८८, २६२, २६३, २६४, ३१६, ३१८, ३१६, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२८, ३२६, ३३०, ३३१, ३३६, ३३७, ३३६, ३४०, ३४१, ३४२-३४६, ३५१-३५६, ३६२-३६६, ३७१, ३७३-३७६, ३८१-३८४, ३८७, ३८८, ३६०, ४६२, ४७१, ४८१, ४८२
मीर्ज़ा क़ासिम ४७५
मीर्ज़ा कासिम गोनाबादी ३१०
मीर्ज़ा कासिम तगाई ४७३
मीर्ज़ा कासिम बेगलार ४७०
मीर्ज़ा कुली ८३, ११८, १३०, २२७, ३३४, ३६८
मीर्ज़ा कुली जलायर ३३४
मीर्ज़ा कुली बेग ६६
मीर्ज़ा ख़ान ६६, ७६
मीर्ज़ा जानी तरख़ान ४८१
मीर्ज़ा नजर २६५
मीर्ज़ा नजात ३६८
मीर्ज़ा नजात खा ३६७
मीर्ज़ा नूरुद्दीन मुहम्मद २६५, २६६
मीर्ज़ा बेग बरलास ७६, १२६, ३३४, ३४५
मीर्ज़ा बेग बिलोच ३१७
मीर्ज़ा मीरक २२०
मीर्ज़ा मीरान शाह ३१३
मीर्ज़ा मुराद ७४, १२१ १२२, १५८, १५६, ३१२
मीर्ज़ा मुहम्मद जमान २६७, २६६, ४६३
मीर्ज़ा मुहम्मद सुल्तान ३५६
मीर्ज़ा मुहम्मद हकीम ३६, ३६६
मीर्ज़ा यादगार नासिर ५३, ५६, ५६, ६१, ६६, ७५, ७६, १०१, १०२, १०६, ११०, १११, ११२, ११३, १२०, १२२, १२३, १४८, १५२, १५८, १६०, २०६, २२१, ४७४, ४७६, ४७८
मीर्ज़ा शाह ३५८, ४००
मीर्ज़ा शाह बेग अरगून २७८
मीर्ज़ा शाह हसन ४६६, ४७०, ४७१, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७८, ४७६, ४८०, ४८१, ४८२
मीर्ज़ा शाह हुसेन ५६, ६०, ६५, १११, ११२, ११३, १५२, १५४, २८०, २८१, ३७३
मीर्ज़ा शाह हुसेन अरगून ११, ३६, ५६, ६३, १२३, १५१, २०६, २११, २२२, २२६, २७८
मीर्ज़ा संजर २६४, ३४१
मीर्ज़ा सजर बरलास ३४०
मीर्ज़ा साम १०३
मीर्ज़ा सुलेमान ६६, ७६, ७८, ७६, ८०, ८१, ८२, ८३, ८५, १२०, १२३, १२४, १२६, १२८, १२६, १३०, १३१, १३५, १३६

२२२, २२४, २२८, २६३, ३२२, ३२५, ३३२ ३३३, ३३४, ३३५, ३४५, ३४७, ३४८, ३५०, ३५३, ३५६, ३५७, ३५८, ३६०, ३६२ ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६६, ३७०, ३७५, ३७६, ४०४
मीर्ज़ा सुलेमान बदख्शी १५८
मीर्ज़ा सुल्तान मुहम्मद ३५६
मीर्ज़ा सुल्तान हुसेन ५६
मीर्ज़ा हसन २८०, ४७६
मीर्ज़ा हसन ख़ा ३६७, ३६७
मीर्ज़ा हिन्दाल २३, ३२, ३३, ३७, ५३, ५४, ५६, ५८, ६१, ६६, ७५, ७७, ८०, ८३, ८५, ६३ ६५, ६६, १०६, १०६, ११०, १११, ११३, ११४, १२०, १२२, १२४, १२५, १२७, १२८, १२६, १३०, १३१, १४२, १४६, १४८, १४६, १५१, १५४, १६०, १६३, १६४, १६६, २०६, २२१, २२४, २२७, २४०, २४५, २५७, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६६, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७६, २८८, २६३, २६४, ३२२, ३२८, ३२६, ३३०, ३३१, ३३४, ३३५–३४०, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३५१, ३५२, ३५६, ३५७, ३५८, ३६०, ३६२, ३६५, ३६६, ३६६, ३७०, ३७२, ३७५, ३७८, ३७६, ३८०, ३८१, ३८३, ४१३, ४३३, ४४३, ४५३, ४५४, ४६६
मीर्ज़ा हिन्दू बेग २०१, ४६६
मीर्ज़ा हुसेन ख़ा ७३, १२१, १५८
मीर्ज़ा हैदर ५५, ५७, १०६, ११०, १५०, २३०, २७२, २७३, २७५, २७७, २८८, २६०, २६१, २६२, ३२१, ३५८, ३८८
मीर्ज़ा हैदर दूगलात ५५, ५६, १०८, १४६, २०७, २२६
मीर्ज़ा हैदर बदख्शी ४३
मीर्ज़ाई का मदरसा ४७३
मुंगेर ७२, १०५, १४६, २६३
मुअज्जम सुल्तान ३६२
मुआविया ३२२
मुआविया द्वितीय ४५५
मुईद बेग ७४, १२१, ३२४, ३२७
मुईद बेग दूलदाई २६२
मुईन ख़ा फरन्खुदी ३६८
मुकद्दम बेग २७२
मुकद्दम कोका ३६७, ३७१
मुकद्दस बेग ३३०
मुकीम ख़ा ३२४, ४०४
मुकीम बेग ७४
मुख़लिस कुबजी ३५६
मुगुल कालीन भारत—बाबर ३, ५, १०, ७७, १५५, २०२, २२८, ३२१
मुगुल कालीन भारत-हुमायूं ३, १०, १५, ५५, ७५, १११, १२३, १६३, २०२, २२३, २३१, २४४, २४६, २४६, २५०, २५२, २५४, २६०, २६२, २६८, २७२, २८२, २८५, २८६, २६१, २६२, २६३, ३०२, ३०४, ३०८, ३१५, ३२१, ३२३, ३२४, ३५४, ३५१, ३६६, ३७३, ३७४
मुगुल बेग २६१
मुगुल बेग किजिक ५२
मुगुली ४५०, ४५१
मुजफ्फर उद्दीन ६
मुजफ्फर तुर्कमान २७६
मुजफ्फर तापची २६०
मुजाहिद ख़ा २५३, ४६४
मुजाहिद ख़ा ४६४
मुनईम ख़ा ६१, ६२, ६५, ७३, ८२, ८५, ८६, ११३, ११५, ११६, १२१, १३२, १३३, १५२, १५३, १५४, १६६, २११, २२०,

२२९, २३१, २७९, २८०, २८१, ३३५, ३४७, ३५२, ३५६, ३६०, ३६२, ३६३, ३६४, ३६७, ३८४, ३८६, ३८७, ३८९, ३९१, ३९२, ३९६, ४७५
मुनइम बेग खां १३०
मुनव्वर बेग ३२४
मुनव्वरुल मुल्क बुखारी ४४० ४५२
मुन्तखबुत्तवारीख भाग-१ १३९, १४०
मुन्तखबुत्तवारीख भाग-३ ३३
मुबारक खा ३९९
मुबारक शाह फारुकी १९९
मुबारिज खां २७२, ३५२, ३९४, ३९५, ३९६
मुरतजा ३३
मुराद ख्वाजा १३५, २३१
मुर्शिद शेख खलील २०६
मुलजिम, नौ ३२२
मुल्तान ५८, २७६, २७८, २९३, ४८०
मुल्ला अब्दुल कादिर ३६, १३९, १४१, ३८१, ३८२, ३९७
मुल्ला अहमद ४१
मुल्ला कादिर शाह ४६६
मुल्ला कुतुबुद्दीन जलजू बगदादी ३१४
मुल्ला कुतुबुद्दीन शीराजी २५९
मुल्ला खिरद जरगर ३५०, ३८०
मुल्ला गयासुद्दीन ४०३
मुल्ला जलालुद्दीन मुहम्मद यूसुफ २९१
मुल्ला जाही १८४
मुल्ला ताजुद्दीन २८२
मुल्ला दरवेश महमूद अम्बारदार ४७९
मुल्ला पीर मुहम्मद ३९९
मुल्ला बहलोल ४७९
मुल्ला बायजीद ३८१, ३८२
मुल्ला बिलाल किताबदार ३१७
मुल्ला महमूद मुंशी ४३२, ४४७
मुल्ला मीर किताबदार ३४६
मुल्ला मुब्तलाई ३४१
मुल्ला मुहम्मद १४७
मुल्ला मुहम्मद अजीज १४६
मुल्ला मुहम्मद लारी ४१२
मुल्ला शफाई ३७२, ३८५
मुल्ला शहीदी ४४१
मुल्लाजादा इमामुद्दीन ३८१
मुसाफिर खाना १५
मुसाहिब बेग ३२९, ३३१, ३३७, ३४३, ३४४, ३४७, ३५०, ३५१, ३५३, ३५५, ३५८, ३६४, ३६६, ३६७, ३९७, ४०१, ४०४
मुसाहिब मुनाफिक ३६७
मुस्तफा ७१
मुस्तफा फरमुली ७०
मुस्तफाबाद १९९
मुस्तौफी कजवीनी ६८
मुहमदाबाद १९९, २००, २०१
मुहम्मद २१९
मुहम्मद अमीन ३६८
मुहम्मद अल जवाद २१९
मुहम्मद अल बाकिर २१९
मुहम्मद अल मुन्तजर २१९
मुहम्मद अली १२४, ३३८
मुहम्मद अली तगाई ७७, २२२, ३३३' ३३६, ३३९
मुहम्मद अली काबुची २८०
मुहम्मद आदिल ३९४
मुहम्मद कामरान ३६४
मुहम्मद कासिम १२३, ३४२
मुहम्मद कासिम खा नीशापुरी ३९९
मुहम्मद कासिम खा बरलास ३६६
मुहम्मद कासिम मीर्जा ७६, १२३, ३४३, ३५०
मुहम्मद कासिम मौजी ८२, १२९, ३१७, ३३३, ३६२, ३६४

मुहम्मद कासिम हिन्दू १३९, १६३
मुहम्मद कुरैश ४७३
मुहम्मद कुली ३५४
मुहम्मद कुली जलायर ३६३
मुहम्मद कुली कावुची ४७६
मुहम्मद कुली तगाई १२४
मुहम्मद कुली खा बरलास ३६०, ३६२, ३६७, ४०१, ४०४
मुहम्मद कुली दीवाना ३६७
मुहम्मद कुली बरलास ३४७, ३५०, ३५२, ३७५
मुहम्मद कुली मीर्जा ३६१
मुहम्मद खफी ३०४
मुहम्मद खलीफा ३१२
मुहम्मद खा ३४, २९८, ३००, ३०७, ३०८, ३१२, ३१३, ३६३, ३९१, ३९५, ३९६
मुहम्मद खा जलायर ३२४, ३६८, ३९७, ३९८
मुहम्मद खा तकलू १५५, २१२, ३०२
मुहम्मद खां बेग तुर्कमान ३३४, ३६२, ३६७
मुहम्मद खां रूमी २७२
मुहम्मद खा शरफुद्दीन ऊगली तकलू ६७, ११८
मुहम्मद खानी ३०४
मुहम्मद खुदावन्दा २९८
मुहम्मद गाजी तूगबाई २६५
मुहम्मद जमान ४४६, ४६६
मुहम्मद जमान मीर्जा १०, १४, १५, १६, १७-२०, २१, ४२, ५१, ५२, ५३, ५४, ६४, ६५, १०३, १०५, १०६, १०७, १४२, १४७, १६४, १६५, १६६, २०५, २०६, २४०, २४१, २४३, २४७, २५६, ४०६, ४१२, ४२७, ४२८, ४२६, ४३१, ४५७, ४६५, ४७२
मुहम्मद जुर्जानी १५१
मुहम्मद बख्शी २६४, २६५, २६६
मुहम्मद बिन अली ४५८
मुहम्मद बेग किताबदार ख़ाचार ३१३
मुहम्मद बेग तुर्कमान ४०३
मुहम्मद मुकीम १८, १६, ६२
मुहम्मद मुकीम हरवी ६१
मुहम्मद मुराद मीर्जा ३२४
मुहम्मद मोमिन फरन्खुदी २२६
मुहम्मद परगरी १४६
मुहम्मद यहिया १७३
मुहम्मद शाह ५१, २६१, ४४४, ४५७, ४५८
मुहम्मद शाह बुरहानपुरी ४१५
मुहम्मद सुल्तान १४८, १६५, २४१
मुहम्मद हकीम मीर्जा २३१, ३६०
मुहम्मद हुसेन ३४२
मुहम्मद हुसेन गूरगान २७०
मुहम्मदी मीर्जा ३१३, ३२१
मुहरदार हुसेन कुली सुल्तान ३७१
मुहाफिज खा २५५, ४६७
मुहाफिजुल मुल्क ४२५
मुहिब अली खा ३८१, ३६१
मूक ३५७
मूरी नदी ३७४
मूलिया ४७, १००, २५३, ४२१, ४२२, ४४१
मूसा अल काज़िम २१६
मूसी काज़िम ६
मेजर जनरल हेग ५८
मेनुएल डा० सोमा २५८
मेरठ ४०३
मेलानी ५८
मेवात १६४, ३६४, ४०२
मेस्कुइला ४४०
मेहतर अशरफ ४७२
मेहतर करा ३६१
मेहतर खा खजानादार ३१७
मेहतर जम्बूर २५५
मेहतर जौहर ३१७, ४००
मेहतर तीमूर शरबतची ३१७, ४०४

मेहतर फाखिर सुराकची ३१७
मेहतर वकील १२४, ३३८
मेहतर वकीलदर २२२
मेहतर वकीला ७७
मेहतर वकीला खजानची ३१७
मेहतर वासिल ३१८, ३३८
मेहतर सकाई ३६८
मेहतर सियाह ३७३
मेहतर सुम्बुल मीर आतश ३१८
मेह्दी ख्वाजा ४, १०, १५, ६१, ६२
मेहदे उलिया ६६
मैनपुरी २७३
मोतमद खाँ १३६, २३६
मौलवी अब्दुल गफूर लारी १६५
मौलवी जामी १६५
मौलाना अब्दुल बाकी २८०, ४७६
मौलाना अब्दुल बाकी सद्र ३५४, ३६०, ३७३, ३६१, ३६८
मौलाना अब्दुल्लाह ३८१
मौलाना अब्दुल्लाह सुल्तानपुरी ३८५, ३६३
मौलाना इलियास अर्दबेली ३१४, ३६७
मौलाना इसामुद्दीन इबराहीम ३४६
मौलाना कदम अरबाब ३४५
मौलाना कासिम अली ४०६
मौलाना कासिम अली सद्र २६६
मौलाना कासिम कानूनी ३०४
मौलाना कासिम काही १६२, १७२, ४०५
मौलाना चाँद ८२
मौलाना जलाल तलवी २६६
मौलाना जुनूनी बदख्शी मुअम्माई १७४
मौलाना जैनुद्दीन महमूद कमानगर १६५, ३६१
मौलाना नरशबी ४५२
मौलाना नवेदी ३३०
मौलाना नादिरी समरकन्दी १७८
मौलाना नूरुद्दीन ३१६
मौलाना नूरुद्दीन मुहम्मद तरखान ३१४
मौलाना पीर अली २४६
मौलाना बाकी यरगू ३४५
मौलाना बाबा दोस्त सद्र ३८१
मौलाना बायजीद ३३६, ३४६
मौलाना बेकमी १४२
मौलाना ममऊद हिसारी ४०५
मौलाना मसनदी २३६
मौलाना महमूद लारी ४२७
मौलाना मुईन वाएज १६६
मौलाना मुहम्मद ४१७
मौलाना मुहम्मद फरगली २६६, ४१७
मौलाना मुहम्मद लारी ४२४
मौलाना मुहम्मद शिहाबुद्दीन ६, १२
मौलाना सानी ३८१
मौलाना सुल्तान अजी २५२
मौलाना हसन अली खरास १६४
मौलाना हातिफ़ी ४६२
मौलाना हैरती ३१४

(य)

यक्का ऊलग ३६६
यजीद १८५
यज्द ३००, ३०२ ३०५
यतमीनान १८२
यमगान ३२६
यमीना १५०
यमुना ४, ५६, १७७, २४१, २६६
याकूत २१८
याकूब २६७
याकूब काजार ३५
याकूब बेग २६१
याकूब मीर्जा ३१२
यादगार २६४

यादगार नासिर मीर्ज़ा ४, १७, ४६, ५५, ५७, ६०, १०८, १४६, १५०, १५१, १५६, २०१, २०२, २०३, २०८, २२२, २४१, २४५, २४८, २५४, २५५, २५६, २६१, २६४, २६५, २६६, २७०, २७२, २७३, २७५, २७७, २७८, २७६, २८०, २८१, २८६, २६४, ३२२, ३२५, ३२८, ३३१, ३३२, ३३७, ४२५, ४२६, ४४३, ४५४, ४५७, ४६४, ४६६, ४६७, ४७२, ४७४, ४७५
यादगार बेग तगाई ४२, ६४, १६४, १६५, २४३
यादगार मीर्ज़ा २६
यादगार सुल्तान ३०७
यादगार सुल्तान मोसलू ३१३
यार अली १७४
यार अली सुल्तान तकलू ३१२
यारक द्वार ३४१, ३४४
यामीन दोस्त दौलत ३६५, ३६७, ३७१, ३७२
योलाक ६८, ११६, २१७, २१६
यूरत चालाक १२५, ३६०
यूसुफ आफ्ताबची ३८६
यूसुफ पैगम्बर २२१
यूसुफ खां मशहदी २२८
यूसुफ जुलेखा १६५
यूसुफ बेग २६४
यारप (यूरोप) १००, ३००

(र)

रणथम्बोर ४३, ६५, १७०, २४४, २८६, ३४३, ४१३, ४५३, ४५४
रतन सिंह ६५
रतनपुर ७२
रन २७८
रफ़ी कोका ३२१, ३४७
रशीद खां ३६४
रसूल १७३
रहमान कुली ३८५
रागान ३४
राजर्स २६२
राजपीपला ४६
राजपूताना ६१, ६२
राजपूताना गज़ेटियर ४
राजा कस राय ७१
राजा गणेश राय ७१
राजा चिन्तामन ब्राह्मण २६४
राजा नरसिंह ४३६, ४४०, ४५१
राजा पक्व् ३८५
राजा पूरनमल २८६
राजा मालदेव ४७०
राजा राणा २११
राजा विक्रमाजीत ३६५
राजा हर किशन २१४, २१५
राजौरी २७६, २६२
राणा ११५
राणा प्रशाद २८३
राणा सांगा २३, ६५, १४२, ३८४
राणा वीर साल ४७८
रादनपुर ४६६, ४७०
राय मल २६०
राय मल सूनी २८२
राय मालदेव २८१
राय सग २४, २६
राय साल दरबारी २६०
राय हुसेन जलवानी २७२, ४०३
रायसेन २४, ४१, १६८, १६६, २४६, २५५, २८६, ४२५, ४४६, ४४८, ४६७
रावलपिंडी २७५, २८६
रावी नदी २७६
रिज़वी २४४, २४६

३, ५, १५, ७५, १११, १२३, २२३, २२८, २३१, २४४, २४६, २४६, २५०, २५४, २६०, २६२, २६८, २७२, २८२, २८५, २८६, २६१, २६२, २६३, ३०२, ३०४, ३७६, ३८४, ४३२, ४३४
रुक़य्या बेगम २२५
रुक्न खा १७०, ४०३
रुक्न दाद २५१, ४६१
रुस्तम ३८, ८८
रुस्तम खा अफगान ४०२
रूम ४७, ६७, १००, १३२, १८३, १६८, २०१, २४४, २७४, ४१४, ४३५
रूमी ४५
रूमी खा ४५, ४६, ५१, ५२, ६७, १०२, १०४, १४५, १६८, २०३, २०४, २१४, २४७, २५५, २५८, २६२, ४१४, ४३३, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४४०, ४४६, ४४८, ४४६, ४५२, ४५५, ४५७, ४५८, ४६१, ४६५, ४६६, ४६८
रूस ३५
रूस्ताक ३७, ८३, १३०, ३४७, ३६५
रैकी चक ३७६
रैन नदी ११६
रैवक नाथ एजेन्सी ४३४
रैंकिंग १४४, १७०
रैंवर्टी ६७, २६६, २६७, ३८५
रैहान १७५, १७६
रोगनी दर्रा ३२१
रोशन कोका ३१२, ३१६, ३५२
रोशन बेग ६३, ११५, १५३, २६१, २६३
रोहतक २७३
रोहतास ५२, ७१, ७२, ८५, ८७, १०५, १०६, ११०, १३३, १३४, १४५, १६७, २०४, २०५, २०६, २१४, २१५, २१७, २३२, २६०, २६४, २६७, ३६३, ३६७
रोहरी ५, ५७, ५८, ११०, १५१, २७८

(ल)

लकनूर १५
लकी ३१५
लक्की की पहाड़िया ५६
लखनऊ १५, १६३, २८४
लखनोर २८४
लखनौती १०६, २१५
लतीफ खा ४१०
लनकूर १५
लन्द ४७६
लन्दन २२८, ४४५
लन्दर ८४
लमगान १६४, २२७, २२६, ३७५
लमगानात ८४, १३१, १३२, २२८, ३७७
ललन्दरी ३७७
लवग बिलोच ३३२
लवानी द्वार ४१७
लश्करी ३६७
लाड मुल्क २४०
लार दर्रा २६१, ४०६
लाल खा बदख्शी ३६७
लाहौर ३, ५, १०, ११, ३८, ४३, ४४, ५०, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ८७, ८८, ६६, १०३, १०६, १०८, १०६, ११०, १३४, १३५, १४२, १४४, १४८, १४६, १५०, १६६, १६७, १६८, १६६, २०५, २०६, २०७, २०८, २१७, २३२, २३५, २४२, २४८, २६६, २७०, २७१, २७४, २७५, २८८, २६१, ३६३, ३६८, ४००, ४०१, ४०४, ४२७, ४६३, ४६५, ४६६, ४७१, ४७२, ४७३
लाहौर नदी २७६, ४७२

लिसानुल गैब ३९६
लुत्फुल्लाह सरहिन्दी ३३४, ३५४, ३६४
लुदियाना नदी २४२
लुधियाना २३३
लुब्बुत्तवारीख़ १८६
लुहरी ५७ ५८ ११०, १११ १५१, २०६, २७८ २८०, २८१, २६४, ४७२, ४७३, ४७४, ४७६ ४७६, ४८१
लूतकी ६७
लूदी २५०
लूनावादा ४३४
लैला १८३ २४२, ४३६
लैला मजनूं २७, ४४८
लोहगढ़ २७६
लोहरी ४७८
लाहगुर (लाहूगुर) ३७५
लौनकरण २८३

(व)

वकाय ३५, ५४
वक्कास सुल्तान ३६२
वजरे २५८
वजरे फिरंग २५८
वर्जीहुल मुल्क ४३२, ४४८
वदाई ११०
वफाई १७७
वरस्क ३३४
वल्द बेग ३३२, ३३४, ३३६
वली ख़ब ४२, १६४
वली बग ३६२, ३६६, ४०१
वलीद दोस्त सहारी ३८७
विक्रमादित्य ६५, १६५, ३६५
विल्सन २४०
वीर भूमि ७२
वैस किबचाक ३५३
वैस सुल्तान ३०७
वैसी १६२, १६६
वोलैस्टन ३०२

(श)

शक्हा ३७६
शजावल खा ३६५
शमला २६०
शमशीहल मुल्क ४५३
शम्मुद्दीन अत्का ३३८
शम्सुद्दीन मुहम्मद गज़नवी १०६, १४६, २७२, २७४, ३१८, ३२५
शरफ अली बेग २८०
शरफुद्दीन ऊगली तकलू २६८
शरवान ४
शरीफाबाद ७२
शहशाह नामा ३१०
शहनाज़ खा १६७
शहबाज़ खा ३६८
शहर बानो बेगम २६४
शाखदान ३३५, ३३६
शादवला ४८२
शादियाबाद १६६, २०१
शादी बेग ३५

शापुर १८२
शाम १६३, २२८, ४५५
शाल ३२८, ३३२
शाल मर्लंग ६५
शाल मशाक १५४
शाल व मस्तान १५४
शाशान ३३४
शाह अबुल मआली १३६, १६७, १६८, १६९, १७०, २३२, २३३, २३४, ३७८, ३९१, ३९७, ३९८, ४००, ४०१, ४०२, ४०४
शाह अबू तुराब वली १९
शाह अब्बास सफवी ३०२
शाह इस्माईल १५६, ३१२
शाह इस्माईल सफवी ५, १२७, २९६, २९९, ३६७
शाह इस्माईल हुसेनी ३४
शाह कमालुद्दीन फतुहुल्लाह ४१६, ४१७
शाह कासिम तगाई ३३२
शाह कुतुबुद्दीन शुक्रुल्लाह ४१६, ४१७
शाह कुली नारंजी ३२०, ३३४, ३४१, ३६४, ३६७, ३९७
शाह कुली सीस्तानी ३२४
शाह कुली सुल्तान अफशार ३५
शाह कुली सुल्तान इस्तजलू ३४, ६८, ११९, ३०८, ३४४
शाह कुली सुल्तान मुहरदार ३१२
शाह तहमास्प ६, ३३, ३४, ३५, ३६, ४४, ४८, ५०, ६७, ६८, ६९, ७४, ९६, १०३, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १४२, १४४, १५०, १५५, १५७, २१७, २१८, २१९, २९५, २९८, ३२२, ३३२, ३३५, ३६४, ३७८, ३९१, ३९२
शाह तहमास्प हुसेनी २११
शाह ताहिर १८६
शाह ताहिर दक्खिनी ८९०
शाह ताहिर निजाम अस्तराबादी १८७
शाह फखुद्दीन ३९७
शाह फखुद्दीन मशहदी रिजवी २३०
शाह वरदी बेग ३१३
शाह बाबा २९९
शाह बुदाग १३१, २२७, ३६४
शाह बुदाग खां ८२, ८३, ३१२, ३६९, ३८५
शाह बेग अरगून ४६३
शाह मीर्जा ९५, १०५, १४२, १४६, १९५, २७१, २७६, ३२७, ४७२
शाह मुहम्मद १८२
शाह मुहम्मद सुरनाई ३०४
शाह मुहम्मद सुल्तान ८२, १२९, २२९
शाह मुहम्मद सुल्तान हिमारी ३६२
शाह वली अल्का ४०२
शाह वली बकावल बेगी ३९६
शाह वल्द २८७
शाह सीस्तानी ३२४
शाह सुलेमान १०
शाह हसन ४८०
शाह हुसेन ५८, ४६३
शाह हुसेन अरगून ५७, ११०, ११५, ११६, २२१, ३३७
शाहजादा मुराद १२०, २१९, २२०, २२१, ३१३
शाहजादा मुहम्मद हकीम २३०
शाहजहापुर १७०, ४०३
शाहपुर ५७
शाहम अली जलायर ३१९
शाहम खा २६४, २७९, ४७५
शाहम बेग जलायर ३५६, ३६४, ४४३
शाही बेग २७४, ३२१
शाहीन ३०४
शिनाव खा २५५
शिब्र दर्रा ३४०

शिरजा ४४८
शिहाब ख़ां ४०२
शिहाबुद्दीन अहमद ख़ां ३६८
शीराज़ २३, २५६
शुक्र तालाब २५१
शुजाऊत ख़ां २५४, ३६५
शुत्रगरां ७६, १२३
शेख़ अबुल कासिम जुर्जानी ३१४
शेख़ अबुल फ़ज़ल ४४६
शेख़ अबुल वाजिद १८१, १८२
शेख़ अबुल वाहिद १८१
शेख़ अबुल वाहिद फारिग़ी १८०
शेख़ अबुल हसन अली १८६
शेख़ अबुल हसन खरकानी ६
शेख़ अबू इस्माईल ख़्वाजा अब्दुल्लाह अनसारी ३०८
शेख़ अब्दुल गफ़ूर २८०
शेख़ अब्दुल वह्हाब पूरानी ४८१
शेख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी १४४
शेख़ अलाउद्दौला सिमनानी ३०६
शेख़ अली २११, २२३, २२४, ३२६, ४७६
शेख़ अली अकबर जामी ४७४
शेख़ अली बुरहान ४५३
शेख़ अली बेग ६२, ११५, ३६१, ४७६
शेख़ अली बेग जलायर २८२, २८३, २८४, ४७६
शेख़ अहमद सरहिन्दी ६
शेख़ इबराहीम १६
शेख़ कमान ३५४
शेख़ ख़लील १४६, २१६
शेख़ गदाई १४४
शेख़ जमाल कम्बोह ४४१
शेख़ जाम ४, ३४
शेख़ जैन १८१, १८२
शेख़ जैनुद्दीन ख़ाफ़ी १७७
शेख़ ताजुद्दीन लारी २८४
शेख़ निज़ामी ३८१
शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया १०, १७७, २०२
शेख़ पूरान २७८
शेख़ फ़रीद ७०
शेख़ फ़रीद गंजशकर १४७
शेख़ फ़रीदुद्दीन अत्तार ३३
शेख़ फूल २६५
शेख़ बहलूल ३१, ५३, १०६, १४६, २०५, २१६, ३१६, ३३४, ३६३, ३६७
शेख़ बायज़ीद १५, १६
शेख़ बायज़ीद अफ़ग़ान १४
शेख़ बायज़ीद बिस्तामी ३३, ३०६
शेख़ मीरक २७८, २७६
शेख़ मीरक पूरानी ४७५
शेख़ मुईनुद्दीन १६६
शेख़ मुहम्मद गौस ग्वालियरी ३३, १४७
शेख़ मुहीउद्दीन इब्ने अरबी ३०६
शेख़ यूसुफ़ ६६, ११८
शेख़ यूसुफ़ करीनी ३८२
शेख़ यूसुफ़ चोली ३१६
शेख़ रुक्नुद्दौला सिमनानी ६
शेख़ सफ़ी ३५, २२०
शेख़ समाउद्दीन १४४
शेख़ सलीम चिश्ती फ़तहपुरी १७१
शेख़ हबीब बदायूनी १७१
शेख़ हमीद ४२४
शेख़ हमीद मुफ़स्सिर १७४
शेख़ हसन जलायर १७४
शेख़ीम ख़्वाजा खिज़री १२८, ३४७
शेर अफ़गन ७४, ७८, १२१, १२४, १२५, २२०, २२३, ३२३, ३२८, ३२६, ३३६, ३४०
शेर अली ७७, ७८, ७६, ८०, १२५, १२६, १२७, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४५,

शेर खा १६, ३१, ३२, ३३, ३७, ३८, ५२, ५३, ५४, ५५, ५७, ६२, ६६, ७१, ७२, ७३, ८५, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११४, १४४, १४५, १४७, १४८, १४९, १९४, २०३, २०४, २०५, २०६, २०८, २१०, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २५६, २६०, २६२, २६३, २६४, २६८, २७१, २७५, २८४, ४१६, ४४३, ४७१, ४७२, ४७३
शेर खा मूरी ४६६
शेर दिलवाग ४७६
शेर मुहम्मद पकना ३६२
शेर शाह अफगान २१२, २३२
शेर शाह सूर ७३, १०५, ११०, १४८, १५३, २१३, २१४, २१६, २१७, २६०, २६१, २६२, २६६, २६७, २६८, २७०, २७१, २७५, २७६, २८८, २८९, २९१, ३८४, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ४२९, ४४३, ४५३, ४५४, ४६५
शेरक २६७
शैबाज़ खा ८७, १३४, २३२
शैबानी खा ५, ३२१
शोर अन्दाम ३९१
श्याम ३७६

(स)

सकाई नागौरी २८२
सगीअता ३९३
सजर १७३
सजाब सुल्तान अफशार ३१२
सआदत ख्वाजा १३४, २३१
सईद खा २९१, ३८४
सईद बेग ३६५
सक्ता ४५१
सक्कर ५, ५७, २०८, ४७८, ४७९, ४८०
सक्ता ४४०
सजवान दर्रा ३४३
सजावल खा ३९५
सतलज नदी ८७, १३५, १६८, २२३, २४२, ३९९
सद्र खा २९, ४४, ४६, ४७, ९६, ९७, ९८, ९९, १९८, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, ४१४ ४१६, ४१८, ४१९, ४२०, ४३८, ४४९, ४५५, ४५६, ४५९, ४७०
सद्रे जहा खा १९९
सन ४७५
सनजद दर्रा ३४५
सफर २५५
सफर सलमानी ४६६
सब्ज़वार २८८, २९९, ३०९
सब्जा १७५, १७६
सब्दल खा ३९८
समन्दर ५८, २८२, ३५८
समन्दर बेग ५८, ११०, ४७३, ४७७
समरकन्द १५६, ३०८
समराला २३३
सम्बल १०, ८९, ९३, १३७, १७०, १९४, २३४, २७३, २७४, २८४, ३९३, ४०२, ४०३
सम्भल २४०, २८४
सम्मासी ३१४
सर सैयिद (अहमद खा) ८६
सरकज १०२
सरक्ज १०२
सरकीज १०२, २०२, २५४, २५६
सरखज १०२
सरखीज ४२५, ४२६, ४६०, ४६५
सरम्स ५, ३०७
सरगज १०२

सरदार बेग ७८, १२६, ३५५
सरमस्त खां २७२
सरयू नदी २६०
सरहिंद ३८, ८७, ८८, १३४, १३५, १६७, १६८, २४५, २७३, २७५, ३९९, ४००, ४०२ ४०३
सराय फरहाद ३०६
सरे मैदान के द्वार २५०
सल्मान १५६, १५७
सल्मान सावजी १८८
सल्हदी (सलादी या सलाहदी) ४१७, ४३८, ४४८
सलाहुद्दीन २४, २६
सलाहुल मुल्क ४०६
सलीम खां ८५ ८६, १३२, १३३, २६३, ३८८
सलीम शाह ३७, ३८, २२८, २३०, २३१, ३८४, ३८५, ३८६, ३८८, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६
सलीमगढ़ ४०२
सलीमा सुल्तान बेगम २६१
सहबर ४६७
सहवाका ३०३
सहरिन्द ८८, ३१७
सहरी ४०२
सहसराम ७०, २१२, २६०
सहसवान २७९
सहार २४५
सहारन ४३२
साक़ल्मीर २८२
साकी खां ३८१
साग़र ४०६
साकियानी ४०१
साक़ी बनी सुल्तान समलू ३१३
साबरमती नदी २८
साम मीर्ज़ा ४४, ४८, ८६, १२८, १४२, १४४, २४३, २७६, ३१०, ३१२, ४६४
सामरा १५६
सामानची फरग़ानची ३८१
सामाना ८८, १३६, १३९, १६७, ४०१, ४०२
सारंग २७५
सारंग के पर्वत २७७, २९०, ४१४
सारंगपुर ४४, ९७, १४३, १९६, १९७, ४१४, ४५५
सार के हौज ४६०
सारन ७०
साल २९४
साल ऊजग ३६९, ३७०
साल जमिस्तान ११७
साल मस्तान ६५, १५४, २११
साल व हमनान २११
साल्काची ३५१, ३६६
साल्ह दीवाना ३८५
साल्‌ १८२
सावजा १७४
सावरी ३१४
साबूक बोलाक ३१२
सासान दर्रा ३३४
साहिर किरान १०, १६, २१७, २४४, २८३, २९९, ३१०, ३४८, ३६०, ४०६
सिकन्दर ३८, ५५, ८६ १३३, १४६, १९६, १७०, २९८, २९९, ४००, ४०१, ४०४, ४१०, ४३७
सिकन्दर इब्ने मुहम्मद उर्फ मंझू इब्ने अकबर ४०७, ४३१
सिकन्दर की दीवार ४४४
सिकन्दर अफ़ग़ान १२५, १६७
सिकन्दर खां ८८, १३६, १६८, २३३, २४८, ३९०, ३९३, ३९४, ३९९, ४००, ४०२,
सिकन्दर खां उज़बेक १९९, २३०, २३३, २३६, ४०१

सिकन्दर तोपची २७६, २७७
सिकन्दर लोदी ६६
सिकन्दर शाह २३२, २३३
सिकन्दर सुल्तान २०७, २०८, २३२, २७०, २६१
सिकन्दर सूर १६८, २६४
सिजिस्तान ५, ६७, २६६
सिनअत १७४, १७६
सिन्ध ३३२, ४६३
सिन्ध नदी ५, ३४, ८४, ८५, ८६, ८७, १३२, १३३, १५४, १६७, २४७, २७६, २७८, २८३, २६२, ३८८, ३६०, ३६५, ३६७, ४७६
सिपफीन ३२२
सियरल अरेफीन १४४
सियाल कोट ५७, १०६,१३२,१५०, २७७, ३८५
सियासत खा ४६६
सियाह आब ३७८
सियाह बान १५१
सियाह सग ३७७
सिराजद्दीन उमर ४६०
सिरीनगर २१२
सिलहदी २५०
सिवाना नदी २४७
सिवालीक १३२, १३६, १६६, २३३, ३६३
सिविस्तान ५८, ११०, २६७, ४७१, ४७३, ४७५, ४७६, ४७६
सीकरी ४१३
सीकरी ४१३
सीन ४२३
सीवा २६४
सीरिया १६३, ४५५
सील सील ४५८
सीवा का किला ४७५
सीवी ५६ २८५
सीस्तान ६७, ६६, ११८, १५५, २११, २६६, २६८, २६६, २६७, ३०८, ३१२, ३१५
सुंकर ६८, ६६
सुंकर का किला ४५८, ४६०
सुंगर ४६, ४७, २५०, ४१८, ४४६
सुख यलदुज ३७३
सुनखेरा ४३८
सुम्बुल खा ३४२, ३४४
सुरखाब ३३४, ३७८
सुरख्या ३०
सुर्ग मन रा १५६
सुलेमान १२, १४, १७, ७६, १५०, १६८, २६८, ३०३
सुलेमान मीर्जा ४, १२७, १६०, १६१, २२३, २२६, २२७
सुल्तान अल मलिक ४५४
सुल्तान अला उद्दीन १६, ४२, ६५, १६६, २४४, २४५, २८६, ४१२, ४१३
सुल्तान अला उद्दीन लोदी ४१३
सुल्तान अली अफशार ३१२
सुल्तान अहमद जलायर ११, २४४
सुल्तान अहमद द्वितीय ४३२
सुल्तान आदम २७५, २८८, ३८४
सुल्तान आदम गक्खर (या कक्खर) ८५, १३८, १६१, २२६, ३८४, ३८६
सुल्तान आलम ४१, ४६, ६८, १४१, १६६, २५०, ४४०, ४६०
सुल्तान आलम अफगान ४१८
सुल्तान आलम लोदी १४३, ४३८, ४४६
सुल्तान इबराहीम ३५, २४०, २४५, २८२, ३६०, ४१०
सुल्तान उवैस १७४
सुल्तान कुली अत्का ३४५
सुल्तान कुली कूर्ची बाशी ३१२

सुल्तान गयासुद्दीन आजम शाह ५३
सुल्तान चगर्गी ३३६
सुल्तान जलालुद्दीन ३६६
सुल्तान जनैद ३४१
सुल्तान जनैद बरलास १६४, २०४, २४१, २६०, ३४०
सुल्तान जैनुल आबदीन ३८४
सुल्तान नासिरुद्दीन ४४४
सुल्तान बहलोल ४२, ६५, ४१०, ४१२
सुल्तान बहादुर १८, २०, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २६, ४१, ४३, ४४, ४५, ४६, ४६, ५०, ५१, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६६, १००, १०४ १४३, १४५, १६७, १६८, २०१, २४०, २४१, २४३, २४४, २४६, २४७, २४८, २४६, २५१, २५२, २५३, २५५, २५६, २५८, २५६, २६२, ३४३ ४०६, ४१०, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१६, ४२०, ४२३, ४२५, ४२६, ४२७, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४४०, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४५०, ४५१, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४६०, ४६३, ४६४, ४६६ ४६८, ४७०
सुल्तान बहादुर गुजराती १४२, १८०, १६८, २६०, ४६१, ४६८
सुल्तान बेगम ६६, ११७, ११६, १५५, १५६, २१८, २१६, २८८
सुल्तान महमूद ६४, १०५, १४५, २०४ २७८, ४१६
सुल्तान महमूद खलजी ६५, १६५, ४१०, ४११
सुल्तान महमूद खां ४६६, ४७०, ४७२, ४७३, ४७६, ४७७, ४७६, ४८०
सुल्तान महमूद गुजराती २८४
सुल्तान महमूद बक्करी २७८
सुल्तान महमूद बहादुर ४६६
सुल्तान महमूद मुहरदार ४८२
सुल्तान मुअज्जम खां ३६१
सुल्तान मुज़फ्फर १८, २१, २४४, २४८, ४१०, ४११ ४२४
सुल्तान मुराद मीर्ज़ा ३५, ३६, ३२६
सुल्तान मुहम्मद २३०, ३४८
सुल्तान मुहम्मद करावल बेगी ३१८
सुल्तान मुहम्मद खुदाबन्दा ३१२
सुल्तान मुहम्मद बख्शी ३३६
सुल्तान मुहम्मद बवाक ३३४
सुल्तान मुहम्मद मीर्ज़ा ५६, ६७, १५५, २६८, ३०२, ३०७, ३२३
सुल्तान वैस बेग ३६४
सुल्तान शामलू ३२१
सुल्तान सईद खां ५६, ३५६
सुल्तान सारंग २७५, २८८, ३८४
सुल्तान सिकन्दर १८, १४१, ३८४
सुल्तान सिकन्दर लोदी ६४, १४४, १६४, २४४, २४५, २६०, ४३६, ४४६
सुल्तान हसन खां ३६७
सुल्तान हसन मीर्ज़ा बाईकरा ६४, ४३१
सुल्तान हुसेन कुली शामलू ३१२
सुल्तान हुसेन खां ३३४, ३६४
सुल्तान हुसेन बाईकरा ३६२
सुल्तान हुसेन बेग जलायर ३६२
सुल्तान हुसेन मीर्ज़ा ३६, ४२, १४२, १६४, २४०, २७४, ३१५, ३२३
सुल्तानपुर १५, ५७, २७६
सुल्तानपुर नदी ५७, १०६, २०८, २८८, ४०४
सुल्तानम ६८, ११६

सुल्तानिया ६, ३५, ६८, २१७, ३१०, ३११
सुनुदुक सुल्तान कूरची बाशी अफशार ३१२
सूनी नदी १५
सूदा ४७०
सूफियान खलीफा ४४, ६६
सूफियाबाद ३०६
सूफी वली सुल्तान रूमलू ७४
सूफी वली सुल्तान शामलू १२१, २२०
सूरजगढ २६०
सूरत २६, ५०, १०२, २०२, २०३, २५४, २८५, ४२५, ४३६, ४६६
सूरलीक ३१, ६८, ३१३
सूरलीक यॉलाक १५५
सेह दरवाजा ४१७
सेहवान ५६, ६५, ११०, १११, ११२, १५१, २०६
सैफ खा ३१६
सैयिद अली खा ४५, ६७, २४७, ४१४
सैयिद अली खा खुरासानी १६८
सैयिद इस्हाक २५५, ४२५
सैयिद कासिम ४१६
सैयिद कासिम हुसेन सुल्तान २७३
सैयिद जलाल मख्दूम जहानियाँ ४४२
सैयिद बरखा ३२८
सैयिद बुरहानुद्दीन ४४२
सैयिद बुरहानुद्दीन बुखारी ४३४
सैयिद महमूद ४३४, ४४२
सैयिद मुबारक ४२६
सैयिद मुबारक बुखारी २५६, ४४४, ४५३, ४६७
सैयिद मुहम्मद अली ३१७
सैयिद मुहम्मद जौनपुरी १८६,
सैयिद मुहम्मद पक्ना ८५, १३३, ३१७, ३४४, ३६०, ३६२, ३८७
सैयिद मुहम्मद बाकिर हुसेनी २७७
सैयिद मुहम्मद मासूम बक्करी २८८, ४०७, ४६९
सैयिद शख मीरक पूरानी ४७३
सैयिद लाद जियु ४२५
सैयिद शरीफ गीलानी ४१६
सोनगढ ४६, ४१८
सोनपत १४४
सोरठ २६६
स्टेइनगेस ६१, ३५२

(ह)

हकीम नूरुद्दीन ६८, १२०, २१८,
हजरत अली २३, १८५, २१८, २१६, २६८
हजरत खाकानी ३२०, ३३१, ३३३, ३३६, ३३८, ३४४, ३४६, ३५०, ३७१, ३७३, ३७४, ३७५, ३८०, ३८१, ३८३, ३८६, ३८८, ३६२, ३६५, ३६६, ४००, ४०१, ४०२, ४०५
हजरत जहाबानी ७
हजरत फातेमा १८५
हजरत फिरदौस मकानी २४२
हजरत बेगम ३२३
हजरत मुहम्मद ४, २०, २१, २४, ८७, १५७, १६६, १७४, १८५, २१०, २१८, २१६, २४६, २६६, २६७, ३५४, ३५५, ३५६, ४०६, ४८७
हजरत यूसुफ २६
हजरत शेख जियु ४३८
हजरत सैयिद जलाल ४८०
हजरे असवद ३४
हजारा २२७, ३२१
हजाराजात ३४३, ३४८
हजारिस्तान २६६

हज्जाम ४५५
हथियार लग २८६
हथियापुर २८६
हदीस १६५, ४०६, ४१६, ४२०, ४६३
हदीसे मुतवातिर १८०
हबीब खाँ १३५ १६७ ३६५, ३६६
हबीबा ३२६
हबीबुल्लाह १६५
हबीबुस्सियर १०, २०२
हमज़ा बेग ४८१
हमीदा १५१
हमीदा बानो बेगम ५८, ६१, १११, २११, २२२, २२८, २८३, ४७४, ४७८
हमून २६६
हम्दुल्लाह मुस्तौफ़ी क़ज़वीनी ३४
हरबज १०२
हरदोई १७०, २५७
हरम बेगम ३२५
हरहाना ३६८, ४०५
हरिद्वार २८५
हलमन्द २६६
हलीम खाँ ४६०
हवेली चुनार १६
हसर १७५
हसन १४७, २६०, ३१६
हसन अफगान ४७१
हसन अली ईशक आका ६६, ११८, ३१६, ३४८
हसन कुली सुल्तान २२७
हसन कुली सुल्तान मुहरदार १३०
हसन कोका २१६, ३१२
हसन तीमूर सुल्तान ४७६
हसन बिन मख्तार ३५२
हसन बुज़ुर्ग १७४
हसन बेग कोका ३३८
हसन सुल्तान ३५
हसन सुल्तान शामलू ३१३
हसन सूर २१२
हाजगान २७८
हाजी पराचा ३६३
हाजी बेगम २६८
हाजी मुहम्मद ७८, ८५, २६६, ३२०, ३२७, ३२८, ३४८, ३५०, ३५२, ३७७
हाजी मुहम्मद अमस ३३८
हाजी मुहम्मद कोकी ६७, ८०, ११८, १२८, २२४, ३१२, ३१५, ३१६, ३७२
हाजी मुहम्मद खाँ ७४, ७७, ७८, ८३, ८४, १२२, १२५, १२६, १३१, १३२, १५६, १६१, १६३, २२१, २२८, २६१, ३२६, ३३४, ३४०, ३४१, ३४२, ३४५, ३४६, ३५१, ३६०, ३६२, ३६३, ३६७, ३६६, ३७५, ३७६
हाजी मुहम्मद बाबा कश्का २६५
हाजी मुहम्मद सीस्तानी ३६२
हाजी मुहम्मद सुल्तान १२६
हाजी यूसुफ ३८५, ३८८, ३८६
हाजीपुर ७०, ७२, ३१३
हातिया २८६
हानी बिलोच ११८
हाबोल २५२
हाफिज दमिश्की ४४७
हाफिज मक़सूद ३४५
हाफिज दोस्त मुहम्मद ख़ाली ३०४
हाफिज मुहरी कूर ३५६
हाफिज शोगाजी ३६६
हाफिज साबिर क़ाक़ ३०४, ३०७
हाफिज सुल्तान क़ुली रख़ना ३१७
हाफिज सुल्तान मुहम्मद ३५६
हामिद १४८
हाग २८२, ४७८, ४७६

हाली ८६
हाशियये कश्शाफ १५१
हाशियये तफसीर १५१
हाशिम ६१
हिजाज २८४, २६६, ३५४, ३५८, ३७६, ३८८, ४७७
हिन्द ३, ४, ५, १०, १५, ३६, ५३, ६१, १०३, १८१, १८६, १६४, २०१, २०७, २०६, २२६, २६४, ३१६
हिन्दाल मीर्जा ४, १०, ५२, ६५, १०५, १०७, १५६, १६४, २०५, २०६, २०७, २११, २१५, २२३, २२६, ३२५, ४७२, ४७४ (देखिये 'मीर्जा हिन्दाल' भी)
हिन्दुस्तान ४, १०, १२, १६, १७, ३४, ३७, ३८, ३६, ४१, ४८, ५१, ५४, ५५, ५७, ६१, ६२, ६८, ६६, ७०, ७१, ८५, ८६, ८७, ८८, ८६, ६०, १०३, १०६, १०८, ११०, ११३, ११४, ११६, १३२, १३३, १३४, १३५, १३७, १४६, १५०, १५३, १६४, १६७, १६६, १७३, १७४, १७७, १७८, १८२, १८४, १६१, १६३, २०६, २१४, २१७, २२४, २२५, २३१, २३५, २४१, २४५, २६५, २६७, २७०, २७४, २७५, २७८, २७६, २८६, २६७, ३००, ३०६, ३११, ३२८, ३५८, ३५६, ३६१, ३६३, ३७०, ३७२, ३८२, ३८४, ३८५, ३८८, ३६२, ३६३, ३६५, ३६८, ४०४, ४१०, ४१३, ४२७, ४३३, ४३६, ४५५, ४६६, ४७१, ४८१
हिन्दू अली काबुली ४७६
हिन्दूकुश ४, ५, ७६, ७७, ८०, २२२, २२७, २६६, ३२१, ३३६, ३३६, ३५८
हिन्दू कोह १५३, ३४६, ३४८, ३७२
हिन्दू बेग ४, २६, २६, ४६, १०१, १०२, १०३, ११५, २०२, २४८, २५४, २५५, २५६, ४२५, ४२६, ४२७, ४५३, ४५७, ४६१, ४६४
हिरमन्द २६६
हिरात ४, ३४, ४४, ४८, ६७, ७८, ६१, ६६, ११६, २१२, २६७, २६८, २६६, ३०२, ३०६, ३०७, ३०८, ३०६, ३१४, ३१६,
हिरात नदी ३४
हिलमन्द २६६
हिसार ८२, ८७, १२६, २२६, ३३६, ४०२, ४०४
हिसार फीरोजा ८८, ८६, १३५, १३६, १६८, १६६, २४२, ४०४
हीमू ३६४, ३६५, ३६६
हीरमन्द २६६
हीरापुर २६२
हुमायूं ३, ६, ६, १०, ११, १३, १५, १७, १८, २३, २५, २६, २७, २८, ३१, ३३, ३६, ४१, ५३, ५८, ६५, ६८, ६१, ६५, ६७, ६६, १०२, १०४, १०६, ११३, ११४, ११६, ११८, १२०, १२१, १२२, १२३, १२६, १३०, १३३, १३४, १३७, १४१, १४२, १४३, १४५, १४८, १५०, १५५, १५८, १५६, १६४, १६५, १६७, १६६, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७६, १८२, १८४, १८७, १६३, १६५, १६६, १६७, १६८, १६६, २०१, २०३, २०४, २०५, २०६, २०८, २११, २२४, २२६, २२७, २२८, २३०, २३१, २३२, २३४, २३६, २३६, २४२, २४३, २६६, २७४, २७५, २७७, २८३, २६२, २६४, २६६, २६६, ३०३, ३०७, ३०८, ३०६, ३१३, ३१५, ३२१, ३२२, ३३७, ३५७, ४०५, ४०६, ४१०, ४१२, ४१५, ४१८, ४१६, ४२०, ४२४, ४२५, ४२७, ४३१, ४३२, ४३६, ४३८, ४३६, ४४०, ४४१, ४४२,

४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४६, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५६, ४६०, ४६१, ४६२, ४६६, ४७१, ४७६, ४७८, ४७६, ४८१
हुमायूँ नामा ३, १११,
हुमामुद्दीन २२२
हुसामुद्दीन अली ३३७, ३३८
हुमामुद्दीन मीरक ४२६
हुसेन १८५
हुसेन कुली मोर्ज़ा २६६
हुसेन कुली सुल्तान ३६०
हुसेन कुली सुल्तान मुहरदार ८२, ३३५, ३५२, ३५५, ३५६, ३६३
हुसेन खलफात २७२
हुसेन खां १६५
हुसेन खां मरवानी २६१
हुसेन बेग ३३५
हुसेन मरवी ३८६
हुसेन माकरी २६२
हुसेन मईदबई ३६१
हुसेन सुल्तान ४६
हूली ११७
हेग ११६
हेरी २६७, २६८, ३०८, ३६०, ३६३
हेलमन्द २६६, २६७
हेलमन्द नदी ४, ३६
हैदर अली १७३
हैदर कासिम कोहबर ३६७
हैदर कुली बेग शामलू ३६८
हैदर खां १६८
हैदर तूनियाई १८४, १८५
हैदर दोस्त मुग़ुल ३४७, ३७४
हैदर बख्शी २६३
हैदर मुहम्मद ३३४, ३५६
हैदर मुहम्मद आख्ता बेगी ६६, ११८, १७०, ३१६, ३२८, ३७८, ३६१, ३६७, ४०२
हैदर मुहम्मद चोली ३५०
हैदर सुल्तान ३२०, ३२१, ३२७, ३२८, ३.६
हैदर सुल्तान शैबानी ३१३
हैबत खां ८७, १३५, २६३, ३६३
हैबत खां अफ़ग़ान २३२, २३३
हैबत खां नियाज़ी ११०
होडीवाला ७२, ६२, २६२
हौजे कुत २५४
हौजे सुलेमान ३१२

(त्र)

त्रिपुलिया १६०

By the Same Author

Source Book of Medieval Indian History in Hindi

[History of Early Turkish Rule in India] (1206—1290)

(A) *Tabaqat-i-Nasiri, Tarikh-i-Firuz Shahi*
(B) *Tarikh-i-Fakhr-ud-Din Mubarak Shah, Adab-ul-Harb Wash-Shujaat, Taj-ul-Maasir, Diwan-i-Wasi-ul-Hayat, Qiran-us-Sadain*
(C) *Futuh-us-Salatin, Travels of Ibn-i-Battuta.*

[History of the Khaljis (1290-1320)]

(A) *Tarikh-i-Firuz Shahi*
(B) *Miftah-ul-Futuh, Khazain-ul-Futuh, Diwal Rani Khizr Khan, Nuh Sipehr, Tughluq Nama, Futuh-us-Salatin, Travels of Ibn-i-Battuta*
(C) *Tarikh-i-Mubarak Shahi, Tarikh-i-Firishta, Zafar-ul-Waleh*

[History of the Tughluqs, Part I (1320-1351)]

(A) *Tarikh-i-Firuz Shahi, Futuh-us-Salatin, Qasaid-i-Badr-i-Chach, Siyar-ul-Auliya*
(B) *Travels of Ibn-i-Battuta, Masalik-ul-Absar Fi Mamalik-ul-Amsar.*
(C) *Tarikh-i-Mubarak Shahi, Tarikh-i-Muhammadi, Tabaqat-i-Akbari, Muntakhab-ut-Tawarikh, Burhan-i-Maasir, Tarikh-i-Sindh, Tarikh-i-Firishta*

History of the Tughluqs, Part II (1351-1398)]

A) *Tarikh-i-Firuz Shahi (Barani), Tarikh-i-Firuz Shahi(Afif), Tarikh-i-Mubarak Shahi, Tarikh-i-Muhammadi, Zafar Nama Part II.*
3) *Fatawa-i-Jahandari, Futuhat-i-Firuz Shahi.*
C) *Tabaqat-i-Akbari, Tarikh-i-Sindh*

APPENDICES

Khair-ul-Majalis, Insha-i-Mahru, Diwan-i-Muthar, Coins of Firuz Shah and his descendants

[History of the Post-Timur Sultans of Delhi, Part I (1399-1526)]

) *Tarikh-i-Mubarak Shahi, Tabaqat-i-Akbari Waqiat-i-Mushtaqi, Tabaqat-Akbari, Tarikh-i-Daudi, Tarikh-i-Shahi, Afsana-i-Shahan*

History of the Independent Provincial Dynasties of North India (1399-1526)]

unpur, Kalpi, Malwa, Gujrat, Sindh, Multan, Kashmir and Bengal

Tabaqat-i-Akbari, Tarikh-i-Firishta, Tarikh-i-Muhammadi, Waqiat-i-Mushtaqi, Mirat-i-kandari, Zafar-ul-Waleh, Tarikh-i-Sindh, yaz-us-Salatin

ory of the Mughul Rule in India (Babur)]

abar Nama
ifais ul-Maasir, Humayun Nama, Akbar ia, Tabaqat-i-Akbari, Waqiat-i-Mushtaqi, ikh i-Daudi, Tarikh-i-Shahi, Habib us-Siyar, kh i-Rashidi, Tarikh-i-Alfi, Tarikh-i-Sindh

ory of the Mughul Rule in India (Humayun Part I)]

ar Nama Part I.
in-i-Humayuni, Tarikh-i-Rashidi, Nafais-iasir.
ayun Nama, Tazkirat-ul-Waq'at, ra-i-Humayun Wa Akbar.

) BY THE DEPARTMENT OF HISTORY
RH MUSLIM UNIVERSITY, ALIGARH